

لَا يَمْسَأُ إِلَّا الْمَطَهَرُونَ



पवित्र
कुरआन
का
हिन्दी अनुवाद

सूरः परिचय और संक्षिप्त टीका सहित

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के चतुर्थ खलीफ़ा
हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब
रहिमहुल्लाहु तआला के
उर्दू अनुवाद का हिन्दी रूपान्तरण

पवित्र कुरआन

का

हिन्दी अनुवाद

सूरः परिचय और संक्षिप्त टीका सहित

मूल अनुवाद (उर्दू) : हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहिमहुल्लाहु तआला
विश्वव्यापी अहमदिय्या मुस्लिम जमाइत के चतुर्थ ख्लीफ़ा

उर्दू से हिन्दी : क़मरूल हक़ खाँ
अतिथ्यतुल क़य्यूम नासिरा

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाआत, सदर अंजुमन अहमदिय्या,
क़ादियान - 143516, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

PAVITRA QUR'AN

(The Holy Qur'an)

with

Hindi Translation,

Introduction of Chapters & Brief Explanatory Notes

Translated in Urdu : **Hadhrat Mirza Tahir Ahmad^(rh)**
Fourth Khalifa of Ahmadiyya Muslim Jama'at

Urdu to Hindi : Qamarul Haque Khan
Atiyatul Qayyum Nasira

1st Edition : 2010

2nd Edition : 2014

Copies : 2000

Published by : **Nazarat Nashr-o-Isha'at,**
Sadr Anjuman Ahmadiyya,
Qadian - 143516
Distt. Gurdaspur, Punjab (INDIA)

Printed by : Fazle Umar Printing Press, Qadian

ISBN : 978 81 7912 293 8

क्रम

| | पृष्ठ |
|--|---------------|
| प्रकाशकीय | iv |
| परिचय | v-viii |
| पवित्र कुरआन की सूरः सूची | ix-x |
| पवित्र कुरआन की पारः सूची | xi |
| पवित्र कुरआन मूलपाठ हिन्दी अनुवाद सहित | 1-1306 |
| कुरआन पढ़ने के बाद की दुआ | 1307 |
| पारिभाषिक शब्दावली | 1309-1316 |
| विषय सूची | 1317-1395 |
| नाम सूची | 1396-1430 |
| स्थान सूची | 1431-1434 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

प्रकाशकीय

पवित्र कुर्�आन सार्वभौमिक धर्मविद्यान है। जो समस्त लोकों के सज्जा और प्रतिपालक अल्लाह की वाणी है। जिसके अनुसरण से मानव जीवन पापमुक्त और सफल हो जाता है। इस ईश्वरीय ग्रन्थ में मनुष्य की समस्त समस्याओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया गया है और उसे सन्मार्ग पर परिचालित करने तथा पथभ्रष्टता से बचने के लिए नैसर्गिक उपाय बताये गये हैं।

दिव्यज्योति से परिपूर्ण इस ज्ञानसागर का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद करके इसकी सुधा को संसार के कोने कोने तक पहुँचाने का काम विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया कर रही है। इससे पूर्व जमाअत के द्वितीय खलीफा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब रज़ि. के द्वारा उर्दू भाषा में पवित्र कुर्आन का जो अनुवाद किया गया था उसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है जिससे सुधी पाठकलम्बे समय से उपकृत होते रहे हैं। इसके उपरांत जमाअत के चतुर्थ खलीफा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहि. ने एक नूतन शैली में पवित्र कुर्आन का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया है, जिसमें वर्तमान युग के नये वैज्ञानिक आविष्कारों का पवित्र कुर्आन की आयतों से एक अनूठे रंग में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस महान कृति का हिन्दी रूपान्तरण बहुत दिनों से अपेक्षित था। जिसे पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए सीमातीत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तरण जमाअत के वर्तमान खलीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब की अनुमति से किया गया है। आदरणीया अतिष्यतुल क़़़यूम नासिरा साहिबा ने कुछ भाग का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद किया है जिसको मौलवी क़मरुल हक्क खाँ साहब शास्त्री ने बड़ी मेहनत से परिमार्जित करते हुए अवशिष्ट भाग का हिन्दी अनुवाद किया है। प्रस्तुत अनुवाद की समीक्षा मौलवी अताउर रहमान साहब खालिद, मौलवी अली हसन साहब एम.ए. और मौलवी तबरेज अहमद साहब दुर्रानी ने की है। अल्लाह तआला इन सभी की मेहनत को कुबूल फ़रमाये और इन्हें अपनी अपार कृपा प्रदान करे।

अल्लाह के निकट हमारी दुआ है कि वह इस अनुवाद को मानवजगत के लिए लाभदायक एवं पथ-प्रदर्शक बनाए। आमीन

प्रकाशक
ناज़िर نशْر و إِشْٰةِ اَتَ
سَدَرِ اَنْجُومَنِ اَهْمَادِيَّا، كَانِدِيَاَن

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला और बार बार दया करने वाला है।

परिचय

कुरआन करीम शाश्वत और सदा जीवंत अल्लाह की पुस्तक है जो महाप्रलय तक मानवजगत की हिदायत और मार्गदर्शन का प्रमाणपत्र है। इसकी जड़ें मनुष्य की प्रकृति में दृढ़ता पूर्वक गड़ी हैं और इसकी शाखें आकाश की ऊँचाइयों को छूती हैं। यह पवित्र वृक्ष हर समय और हर युग में ज्ञान-विज्ञान के ताज़े फल मनुष्य समाज को उपलब्ध कराता है। हिदायत और कृपा के ये खंजाने मनुष्य समाज की आवश्यकता, मनुष्य की बुद्धि और अनुभूति की क्षमता और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में उसके ज्ञान के विस्तार और गहराई के आधार पर कुरआनी आयत हम उसे एक निश्चित अनुमान के अनुसार ही उतारते हैं (अल-हित्र, आयत 22) के अनुसार, हर युग में दुनिया को प्राप्त होते रहते हैं और क्यामत तक प्राप्त होते रहेंगे।

अंत्ययुग के धर्माचार्य, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलै. पर अल्लाह तआला ने कुरआन करीम के ज्ञान, उसकी गूढ़ता, उसके भेद और रहस्य तथा आध्यात्मिक मर्म इस अधिकता के साथ प्रकट किये हैं कि आप अलै. के लेख और वाणी इस ज्ञान से ओतप्रोत होकर छलकर रहे हैं। इन्हीं आकाशीय ज्ञान-सुधाओं से सिंचित होकर वह प्रतिभाएँ उभरी हैं जो जमाअत अहमदिया के खलीफ़ाओं के द्वारा किये गये कुरआन करीम के अनुवाद और व्याख्याओं में स्पष्ट दिखाई देती हैं। तथापि “‘हर एक फूल का रंग और सुगंध भिन्न होता है’” जमाअत अहमदिया के प्रथम खलीफ़ा हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ि. के अनुवाद और व्याख्या की शैली भिन्न है और द्वितीय खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब रज़ि. के अनुवाद और व्याख्या की महत्ता भिन्न है जो आप रज़ि. की अप्रतिम कृति ‘तफ्सीर सरीर’ और ‘तफ्सीर कबीर’ में उजागर है। इसी प्रकार तृतीय खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहब रहि. की व्याख्या के मर्म एक पृथक रंग रखते हैं।

कुरआन मजीद का प्रस्तुत अनुवाद चतुर्थ खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब रहि. के गहन अध्ययन, चिंतन-मनन और वर्षों की अर्थक मेहनत के फलस्वरूप सामने आया है। इस अनुवाद में अनेक ऐसे कठिन स्थल थे जिन के समाधान के लिये आप

रहीं ने अल्लाह तआला से मार्गदर्शन चाहा और अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से आप को ऐसे अर्थ समझाये जिन से उन कठिनाइयों का समाधान हो गया ।

प्रस्तुत अनुवाद सरल, सुबोध होने के साथ-साथ अपने आप में एक नयापन रखता है । इस में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद कुरआन करीम के मूलपाठ के अनुरूप हो और किसी प्रकार से भी उसका अतिक्रमण न हो । इस प्रकरण में यह सावधानी बरती गई है कि यदि मूलपाठ के किसी शब्द का अनुवाद करते हुए उसका अर्थ स्पष्ट न होता हो तो अनुवाद को समझने के लिये स्पष्टीकरण स्वरूप जो शब्द अनुवाद में जोड़े गये हैं कुरआन करीम की शुद्धता को ध्यान में रख कर उन्हें कोष्ठक में लिखा गया है ताकि पाठक जान लें कि ये मूलपाठ के अनुवाद नहीं हैं बल्कि अनुवादक के अपने शब्द हैं । इस दृष्टि से यह एक प्रकार का शाब्दिक अनुवाद होते हुए सरल, सुगम और प्रचलित मुहावरा के अनुरूप भी है ।

अनेक स्थान पर अरबी भाषा का संयोजक वर्ण बाब और फ़ का अनुवाद छोड़ दिया गया है क्योंकि अरबी भाषा में बाब प्रत्येक क्षेत्र में संयोजन का अर्थ नहीं देता बल्कि कई स्थान पर अर्थ पर ज़ोर देने के लिये इसे एक अतिरिक्त वर्ण के रूप में प्रयोग किया जाता है । इसलिए यदि ऐसे स्थल पर बाब का अनुवाद और किया जाए तो अनुवाद के प्रवाह और निरन्तरता में केवल बाधा ही उत्पन्न नहीं होगी बल्कि पाठक कुरआन करीम के माध्यम से यथोचित आनन्द प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

उदाहरण स्वरूप सूरः अज़-जुखरूफ़, आयत 22 में अरबी वर्ण फ़ का अनुवाद छोड़ दिया गया है । क्योंकि वहाँ पर अरबी भाषा में तो फ़ विषयवस्तु को स्पष्ट कर देता है परन्तु यदि उसके अनुवाद को उर्दू/हिन्दी बाक्य में जोड़ दिया जाए तो वह बाक्य अस्पष्ट हो जाता है । **अतः** कुरआन करीम के प्रति निष्ठा के लिए ऐसे स्थल पर बाब या अन्य संयोजक वर्णों का अनुवाद छोड़ दिया जाना आवश्यक था ।

प्रस्तुत अनुवाद में कुरआन करीम के जिन स्थलों का प्रचलित और प्रसिद्ध अर्थ से हट कर अनुवाद किया गया है वहाँ नये अनुवाद के प्रमाण स्वरूप अरबी शब्दकोश तथा अन्यान्य पुस्तकों का संदर्भ उल्लेख किया गया है ।

इन विशेषताओं से युक्त यह अनुवाद एक पृथक शैली अपने अंदर रखता है। आधुनिक ज्ञानोद्घाटन की दृष्टि से इस अमरग्रंथ के एक एक शब्द को फिर से समझने की चेष्टा की गई है और जिन स्थलों पर भी अरबी भाषा और उसके व्याकरण ने अनुमति दी वहाँ पूर्ववर्ती अनुवादों को छोड़ कर नये और अनूठे अर्थ अपनाये गये हैं । इस के कुछ उदाहरण निम्नवत् हैं :-

1. सूरः आले इम्रान की आयत संख्या 195 में आयतांश रब्बना व आतिना मा

बअत्तना अला रसुलि क का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि “हे हमारे रब्ब ! हमें वह प्रदान कर जिस का तूने अपने रसूलों के हाथों पर हमारे सम्बन्ध में वादा किया था ।”

अरबी भाषा में बअ द शब्द के साथ संबंधवाचक सर्वनाम अला प्रयोग होने का संभवतः यह अकेला उदाहरण है । अला का अनुवाद शब्दकोश में “किसी के हाथों पर” नहीं मिलता । तथापि वास्तविकता यह है कि अला के प्रयोग से यह बात स्पष्ट होती है कि रसूलों पर कोई बात अनिवार्य कर दी गई थी जिसका पालन करना उनके अनुयायिओं का दायित्व था और इस दायित्व के पालन में सुस्ती होने पर क्र्यामत के दिन अपमानित होने का भय था । इन सारी बातों को ध्यान में रखकर, मूलपाठ के शब्दों को देखते हुए यहाँ यह अनुवाद किया गया :-

“हे हमारे रब्ब ! और हमें वह वचन प्रदान कर जो तूने अपने रसूलों पर हमारे पक्ष में अनिवार्य कर दिया था (अर्थात् नबियों से ली गई प्रतिज्ञा*)”

2 . आयतांशः इन्नल्ला ह ला यस्तह्यी ऐ यन्नि ब मसलम्मा बऊज्जतन फ़मा फ़ौ कहा (अल-बक्करः, आयत 27) का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि “अल्लाह तआला किसी मच्छर या उससे भी कमतर (जीवधारी) का उदाहरण वर्णन करने से नहीं जिज्ञकता” ।

यद्यपि यह अनुवाद भी अरबी भाषा के अनुरूप है, यथापि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहि. ने इस स्थल पर निम्नांकित अनूठा अर्थ किया है :-

“अल्लाह कोई भी उदाहरण प्रस्तुत करने से कदापि नहीं जिज्ञकता, चाहे मच्छर का हो अथवा उसका भी जो उसके ऊपर हो ।”

अर्थात् ऊपर शब्द का प्रयोग करके उन कीटाणुओं का भी उल्लेख कर दिया जिन्हें मच्छर अपने साथ उठाये फिरता है । इसका विशद विवरण हुजूर रहि. की पुस्तक Revelation Rationality, Knowledge and Truth में देखा जा सकता है । यहाँ केवल यह बताना अभिप्राय है कि इस आयत में अपनाया गया अनुवाद कुरआन करीम के मूलपाठ, अरबी भाषा और उसके व्याकरण के अनुरूप होने के साथ-साथ उस अर्थ का भी द्योतक है जिस में प्रकृति के एक गुप्त रहस्य पर से पर्दा उठाया गया है ।

3. स्वर्ग के प्रकरण में कुरआन करीम में सैंकड़ों स्थल पर तजरी मिन तहतिहल अन्हारु के वाक्य आते हैं । अरबी शब्दों के अनुसार इस वाक्य का साधारणतया यह अनुवाद किया जाता है कि :-

* देखिये सूरः आले इम्रान, आयत 82 और सूरः अल-अहजाब, आयत 8

“उन (स्वर्गों) के नीचे नहरें बहती हैं”

परंतु इससे पाठकों के मन में यह स्पष्ट नहीं होता कि स्वर्गों (बागों) के नीचे नहरें बहने का क्या अर्थ है? क्या वे भूमिगत नहरें हैं? हालांकि अरबी में तहत शब्द का अनुवाद “नीचे” के अतिरिक्त “निचली ओर” तथा “दामन में” भी हो सकता है। कुरआन करीम में इस अर्थ का एक उदाहरण सूरः मरियम में आता है जिस में हजरत मरियम अलैहा, को सम्बोधित करके एक फ़रिशता कहता है क़द जअ ल रब्बुकि तहतकि सरिच्चा फ़िलिस्तीन की पहाड़ी भूमि के परिप्रेक्ष्य में इस आयतांश का यह अर्थ बनता है कि तेरे रब्ब ने तेरी निचली ओर एक स्रोत जारी किया है। अतः हुजूर रहि. ने अनुवाद की इस विलष्टता को दृष्टि में रखकर तजी मिन तहतिहल अनुहारु का अनुवाद “उन के दामन में नहरें बहती हैं” किया है।

4 . कुरआन करीम में अग्निवृक्ष का कई स्थल पर वर्णन आया है। साधारणतया इस से यह अर्थ समझा जाता है कि वृक्ष लकड़ी उत्पन्न करता है और लकड़ी से अग्नि बनती है जो मनुष्य के लिये एक दैनिक आवश्यक की वस्तु है। परंतु प्रस्तुत अनुवाद में इस का “वृक्ष (सदृश लपट)” अनुवाद किया गया है। आग अपने आप में गर्मी तो पैदा करती है जिसकी मनुष्य को हर क्षण आवश्यकता रहती है परंतु आग की एक विशेषता यह है कि उस में लपटें बनती हैं। इस प्रकार लपटें उठती हुई आग जहाँ वृक्ष सदृश हो जाती है वहाँ उसकी इस विशेषता के कारण ही आजकल यातायात और मालदुलाई में काम आने वाले यंत्र जैसे जेट इंजन और राकेट इत्यादि काम करते हैं। इस तथ्य को सामने रखकर ही कुरआन करीम की आयतों (सूरः अल वाकिअः आयत संख्या 72 से 74) का एक नया अर्थ प्रकट होता है कि अग्निवृक्ष यात्रा करने वालों के लिये प्रकृति का एक वरदान है जिस के द्वारा उनकी यात्रा सुखद और तेज़ रफ़तार बन गयी है।

ये कुछ अनुपम विशेषतायें उदाहरण स्वरूप उल्लेख किये गये हैं, अन्यथा प्रस्तुत अनुवाद में अल्लाह की कृपा से पाठकों को असंख्य विशेषतायें दिखेंगी जो वर्तमान समय के प्रचलित अनुवादों में उपलब्ध नहीं हैं। अल्लाह करे कि यह अनुवाद सर्वप्रकारेण जनहितकर सिद्ध हो और इस का वास्तविक उद्देश्य लाभ हो अर्थात् इसे पढ़ने वाला कुरआन करीम के ध्येय और संदेश को समझे तथा अपनी समझ और सामर्थ्य के अनुसार इससे लाभ उठाये। आमीन

पवित्र कुरआन की सूरः सूची

| सूरः संख्या | नाम | पृष्ठ | सूरः संख्या | नाम | पृष्ठ |
|----------------|-------------|-------|----------------|-----------------|-------|
| 1. | अल-फातिहः | 1 | 28. | अल-क़स्स | 729 |
| 2. | अल-बक़रः | 3 | 29. | अल-अन्कबूत | 749 |
| 3. | आले इम्रान | 85 | 30. | अर-रूम | 765 |
| 4. | अन-निसा | 132 | 31. | लुक़मान | 779 |
| 5. | अल-माइदः | 185 | 32. | अस-सज्दः | 789 |
| 6. | अल-अन्भाम | 223 | 33. | अल-अहज़ाब | 796 |
| 7. | अल-आ'राफ़ | 265 | 34. | सबा | 818 |
| 8. | अल-अन्फ़ाल | 312 | 35. | फ़ातिर | 833 |
| 9. | अत-तौबः | 332 | 36. | यासीन | 845 |
| 10. | यूनुस | 367 | 37. | अस-साफ़ि़ात | 858 |
| 11. | हूद | 392 | 38. | साद | 876 |
| 12. | यूसुफ़ | 419 | 39. | अज़-ज़ुमर | 889 |
| 13. | अर-राद | 445 | 40. | अल-मु'मिन | 907 |
| 14. | इब्राहीम | 458 | 41. | हा मीम अस-सज्दः | 926 |
| 15. | अल-हिज़ | 471 | 42. | अश-शूरा | 940 |
| 16. | अन-नहल | 484 | 43. | अज़-ज़ुख्रूफ़ | 955 |
| 17. | बनी इस्राइल | 512 | 44. | अद-दुखान | 969 |
| 18. | अल-कहफ़ | 536 | 45. | अल-जासियः | 976 |
| 19. | मरियम | 559 | 46. | अल-अहकाफ़ | 984 |
| 20. | ताहा | 574 | 47. | मुहम्मद | 994 |
| 21. | अल-अम्बिया | 595 | 48. | अल-फ़त्ह | 1003 |
| 22. | अल-हज्ज | 614 | 49. | अल-हुजुरात | 1013 |
| 23. | अल-मु'मिनून | 634 | 50. | क़ाफ़ | 1020 |
| 24. | अन-नूर | 651 | 51. | अज़-ज़ारियात | 1027 |
| 25. | अल-फुर्क़ान | 670 | 52. | अत-तूर | 1036 |
| 26. | अश-शुअरा | 685 | 53. | अन-नज्म | 1043 |
| 27. | अन-नम्ल | 708 | 54. | अल-क़मर | 1051 |

| सूरः संख्या | नाम | पृष्ठ | सूरः संख्या | नाम | पृष्ठ |
|----------------|-----------------|-------|----------------|----------------|-------|
| 55. | अर-रहमान | 1058 | 85. | अल-बुरूज | 1238 |
| 56. | अल-वाकिअः | 1069 | 86. | अत-तारिक | 1242 |
| 57. | अल-हदीद | 1080 | 87. | अल-आ'ला | 1245 |
| 58. | अल-मुजादलः | 1090 | 88. | अल-शाशियः | 1248 |
| 59. | अल-हथ्र | 1098 | 89. | अल-फ़ज्ज | 1251 |
| 60. | अल-मुस्ताहिनः | 1106 | 90. | अल-बलद | 1255 |
| 61. | अस-सफ़क | 1112 | 91. | अश-शास्त्र | 1258 |
| 62. | अल-जुमउः | 1117 | 92. | अल-लैल | 1261 |
| 63. | अल-मुनाफ़िकून | 1122 | 93. | अज्ज-जुहा | 1264 |
| 64. | अत-तशाबून | 1126 | 94. | अलम नश्रह | 1267 |
| 65. | अत-तलाकः | 1131 | 95. | अत-तीन | 1269 |
| 66. | अत-तहरीम | 1136 | 96. | अल-अलक़ | 1272 |
| 67. | अल-मुल्क | 1143 | 97. | अल-कद्र | 1275 |
| 68. | अल-क़लम | 1149 | 98. | अल-बय्यिनः | 1277 |
| 69. | अल-हाक़क़ः | 1155 | 99. | अज्ज-ज़िल्ज़ाल | 1280 |
| 70. | अल-मआरिज | 1161 | 100. | अल-आदियात | 1282 |
| 71. | नूह | 1167 | 101. | अल-कारिइः | 1285 |
| 72. | अल-जिन्न | 1173 | 102. | अत-तकासुर | 1288 |
| 73. | अल-मुज़्ज़म्मिल | 1180 | 103. | अल-अस्त्र | 1290 |
| 74. | अल-मुहसिसर | 1184 | 104. | अल-हुमज़ः | 1291 |
| 75. | अल-क़ियामः | 1190 | 105. | अल-फ़ील | 1293 |
| 76. | अद-दहर | 1196 | 106. | कुरैश | 1295 |
| 77. | अल-मुर्सलात | 1201 | 107. | अल-माऊन | 1296 |
| 78. | अन-नबा | 1207 | 108. | अल-कौसर | 1297 |
| 79. | अन-नाज़िआत | 1212 | 109. | अल-काफ़िरून | 1299 |
| 80. | अ ब स | 1218 | 110. | अन-नस्त्र | 1300 |
| 81. | अत-तक्वीर | 1222 | 111. | अल-लहब | 1301 |
| 82. | अल-इन्फ़ितार | 1227 | 112. | अल-इज़लास | 1302 |
| 83. | अल-मुतफ़िक़फ़ीन | 1230 | 113. | अल-फ़लक़ | 1303 |
| 84. | अल-इन्शिकाक़ | 1234 | 114. | अन-नास | 1305 |

पवित्र कुरआन की पारः सूची

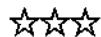
| पारः संख्या | पृष्ठ | पारः संख्या | पृष्ठ | पारः संख्या | पृष्ठ |
|-------------|-------|-------------|-------|-------------|-------|
| पारः 1 | 4 | पारः 11 | 357 | पारः 21 | 760 |
| पारः 2 | 38 | पारः 12 | 395 | पारः 22 | 807 |
| पारः 3 | 72 | पारः 13 | 433 | पारः 23 | 850 |
| पारः 4 | 107 | पारः 14 | 473 | पारः 24 | 898 |
| पारः 5 | 142 | पारः 15 | 515 | पारः 25 | 938 |
| पारः 6 | 176 | पारः 16 | 553 | पारः 26 | 985 |
| पारः 7 | 212 | पारः 17 | 597 | पारः 27 | 1032 |
| पारः 8 | 250 | पारः 18 | 636 | पारः 28 | 1091 |
| पारः 9 | 287 | पारः 19 | 676 | पारः 29 | 1144 |
| पारः 10 | 323 | पारः 20 | 723 | पारः 30 | 1208 |

1- सूरः अल-फ़ातिहः

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई थी । कुछ विश्वसनीय वर्णन के अनुसार यह सूरः मदीना में दोबारा अवतरित हुई । बिस्मिल्लाह समेत इसकी 7 आयतें हैं।

यह सूरः कुरआन करीम की समग्र विषयवस्तु का सार है । इसी लिए हडीसों में इस का एक नाम उम्मुल-किताब (पुस्तक का मूल) है । इसके अतिरिक्त और भी अनेक नाम उल्लेखित हैं । यथा :- फ़ातिहतुल-किताब (पुस्तक का उपक्रम), अस-सलात (प्रार्थना), अल-हम्द (स्तुति), उम्मुल-कुरआन (कुरआन का मूल), अस-सब्डल मसानी (बार-बार पढ़ी जाने वाली सात आयतें), अश-शिफ़ा (आरोग्यकारी), अल-कन्ज (खज्जाना) इत्यादि ।

अल्लाह तआला ने विशेष रूप से हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस सूरः की व्याख्या समझाई । अतः उन्होंने इस सूरः की विशेष रूप से अरबी भाषा में व्याख्या की है ।



سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكَيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَ رُشْكُوْعٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ॥ ॥

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है। [3]

کرمफل دیواس کا مالیک ہے । ۱۴۱

ہم تیری ہی عپاسنا کرتے ہیں اور تujh
ہی سے ہم سہا�تہ چاہتے ہیں ۱۵۱

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝

हमें सीधे रास्ते पर चला । १६।

صِرَاطُ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ[ۖ]
غَيْرُ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الصَّالِحُونَ[ۖ]

(रुक्त १)

2- सूरः अल-बक्रः

यह सूरः मदीना जाने पर प्रथम और द्वितीय वर्ष में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह समेत इसकी 287 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही अल्लाह तआला, वह्इ और ईश्वराणी तथा परलोक पर ईमान जैसे मौलिक आस्थाओं का वर्णन है । सूरः अल-फातिहः में पुरस्कृत, प्रकोपग्रस्त और पथभ्रष्ट तीन समूहों का उल्लेख किया गया था । सूरः अल-बक्रः में ‘पुरस्कृत’ समूह का वर्णन करने के पश्चात् ‘प्रकोपग्रस्त’ समूह की बुरी-आस्थाओं, कु-कर्मों और दुराचारों का विस्तार से उल्लेख किया गया है ।

यह सूरः एक आश्चर्यजनक चमत्कार है, जिसने सृष्टि के आरम्भ के वर्णन से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वर्णन तक विभिन्न नवियों की घटनाओं को प्रस्तुत किया है और क्रयामत तक के लिए इस्लाम के लिए जो खतरे हैं, उनको भी चिह्नित किया है । हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के वर्णन के पश्चात विभिन्न महान धर्मों के रसूलों का वर्णन किया गया है, जिन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हैं । इस सूरः को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि मानो शरीअत (धर्म-विधान) पूर्णतः अवतरित हो चुकी है और इस्लामी शरीअत का कोई पहलू बाकी छूटा हुआ नहीं दिखता । यद्यपि बाद की सूरतों में कुछ और पहलू भी मिलते हैं, परन्तु अपने आप में यह सूरः प्रत्येक विषय पर व्यापित दिखाई देती है । हदीस में वर्णित है कि, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया, प्रत्येक वस्तु का एक शीर्ष भाग होता है और कुरआन का शीर्ष भाग सूरः अल-बक्रः है । इस में एक ऐसी आयत है जो कुरआन की सभी आयतों की सरदार है और वह आयतुल-कुर्सी है । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह विशेष महिमा है कि उन को यह सूरः प्रदान की गई । इस में नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ ज के विषय भी वर्णित हैं । हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उन दुआओं का विशेष रूप से उल्लेख है जो खाना का’वा के नव निर्माण के समय उन्होंने किया ।

इसी सूरः में उस प्रतिज्ञा का भी वर्णन है जिसे अल्लाह तआला ने बनी इस्माईल के साथ बाँधी थी, जिसे दुर्भाग्यवश उन्होंने तोड़ दिया और फिर यही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आविर्भाव का कारण सिद्ध हुई । इस सूरः के अंत पर एक ऐसी आयत है जिस से यूँ प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रकार की दुआओं का सार भी इस में आ गया है और मानो दुआओं का एक अन्तहीन खजाना प्रदान कर दिया गया है ।

سُورَةُ الْقَرْأَةِ مَدْيَيْهُ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ مَا تَانَ وَ سَنَعَ وَ لَمَانُونَ إِلَهٌ وَ أَزْبَعُونَ رَسْكُونَ عَا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सब से
अधिक जानने वाला हूँ । । ।

यह “वह” पुस्तक है। इसमें कोई संदेह
नहीं। (यह) मुत्तकियों को हिदायत देने
वाली है । । ।

जो लोग अदृश्य पर ईमान लाते हैं और
नमाज़ को कायम करते हैं तथा जो कुछ
हम उन्हें जीविका देते हैं, उस में से खर्च
करते हैं । । ।

और वे लोग जो उस पर ईमान लाते हैं
जो तेरी ओर उतारा गया और उस पर
जो तुझ से पूर्व उतारा गया, और वे
परलोक पर विश्वास रखते हैं । । ।

यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब की ओर से
हिदायत पर कायम हैं और यही वे हैं जो
सफल होने वाले हैं । । ।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया
(इस अवस्था में) चाहे तू उन्हें सतर्क करे
या न करे, उनके लिए एक समान है। वे
ईमान नहीं लाएँगे । । ।

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उनकी
श्रवणशक्ति पर भी मुहर लगा दी है और
उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके लिए
बड़ा अज्ञान (निश्चित) है । । । (रुकूं ।)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

الْهُمَّ

ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَبَّ لَهُ فِيهِ هُدًى
لِّلْمُتَّقِينَ ①

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَ يَقِيمُونَ
الصَّلَاةَ وَ مَمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ①

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۝ وَ إِلَّا أُخْرَى
هُمْ يُؤْفِقُونَ ①

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۝ وَ أُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ①

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوْءٌ عَلَيْهِمْ
إِنَّذَرْتَهُمْ أَمَّا مَلَكُوتُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ①

خَتَمَ اللّٰهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَ عَلَى سَمْعِهِمْ ۝
وَ عَلَى أَبْصَارِهِمْ غَشَاوَةٌ ۝ وَ لَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ④

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर भी ईमान ले आए, हालाँकि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं। 19।
वे अल्लाह को और उन लोगों को जो ईमान लाए, धोखा देने की चेष्टा करते हैं। जबकि वे अपने सिवा किसी अन्य को धोखा नहीं देते, और वे समझ नहीं रखते। 10।

उनके दिलों में बीमारी है। अतः अल्लाह ने उनको बीमारी में बढ़ा दिया। और उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है, क्योंकि वे झूठ बोलते थे। 11।

और जब उन्हें कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो वे कहते हैं हम तो केवल सुधार करने वाले हैं। 12।

सावधान ! निश्चित रूप से कही उपद्रवी हैं, परन्तु वे समझ नहीं रखते। 13।

और जब उन्हें कहा जाता है, ईमान ले आओ जैसा कि लोग ईमान ले आए हैं। कहते हैं, क्या हम ईमान ले आएँ जैसे मूर्ख ईमान लाए हैं ? सावधान ! वे स्वयं ही तो मूर्ख हैं। परन्तु वे जानते नहीं। 14।

और जब वे उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं, हम भी ईमान ले आए और जब अपने शैतानों की ओर पृथक होकर जाते हैं तो कहते हैं, निश्चित रूप से हम तुम्हारे साथ हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ أَمْتَابِ اللَّهِ وَيَأْتِيْ يَوْمَ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ۖ

يَحْدِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُواۚ وَمَا يَحْدِعُونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۖ

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَرَأَدُهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْنِبُونَ ۖ

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۖ

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَمْنُوا كَمَا أَمْنَى النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ بِكَمَا أَمْنَى السَّفَهَاءُ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السَّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ

وَإِذَا قَوَى الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا أَمْتَابٌ وَإِذَا خَلَوْا إِلَى شَيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ

हम तो (उन से) केवल उपहास कर रहे थे । 15।

अल्लाह उनके उपहास का (अवश्य) उत्तर देगा । और उन्हें कुछ समय तक ढील देगा ताकि वे अपनी उद्दण्डता में भटकते रहें । 16।

यहीं वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले पथभ्रष्टता को खरीद लिया । अतः उनका व्यापार लाभजनक नहीं हुआ और वे हिदायत पाने वाले न हो सके । 17।

उनका उदाहरण उस व्यक्ति की अवस्था के अनुरूप है जिस ने आग भड़काई । फिर जब उस (आग) ने उस के माहौल को आलोकित कर दिया, अल्लाह उन (भड़काने वालों) की ज्योति को ले गया और उन्हें अन्धकारों में छोड़ दिया कि वे कुछ देख नहीं सकते थे । 18।

वे बहरे हैं, वे गँगे हैं, वे अन्धे हैं । अतः वे (हिदायत की ओर) नहीं लौटेंगे । 19।

अथवा (उनका उदाहरण) उस वर्षा की भाँति है जो आकाश से बरसती है । उसमें अंधेरे भी हैं और कड़क भी और बिजली भी । वे बिजली के कड़कों के कारण, मृत्यु के भय से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं । और अल्लाह काफिरों को घेरे में लिए हुए हैं । 20।

सम्भव है कि बिजली उनकी दृष्टिशक्ति को उचक ले जाये । जब कभी वह उन (को राह दिखाने) के लिए चमकती है, वे

إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ⑩

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمْدُهُمْ فِي
طَغْيَانِهِمْ يَعْمَلُونَ ⑪

أُولَئِكَ الَّذِينَ اسْتَرَوُ الْأَصْلَةَ بِإِنْهَلْدَىٰ
فَمَا رَبِحُتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ⑫

مَثَلُهُمْ كَمَلَ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًاٰ فَلَمَّا
أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ
وَرَرَكُهُمْ فِي ظُلْمَتِ لَا يُبَصِّرُونَ ⑬

صَدِقُ بِكُمْ عَنِّي فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ⑯

أُوکَصَّبَ بِقَرْبِ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلْمَتٌ
وَرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي
أَذَانِهِمْ قَرْبَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ
وَاللَّهُ مَحِيطٌ بِالْكُفَّارِينَ ⑭

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطُفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا

उसमें (कुछ) चलते हैं । और जब वह उन पर अन्धेरा कर देती है तो रुक जाते हैं । और यदि अल्लाह चाहे तो उनकी श्रवणशक्ति को और उनकी दृष्टिशक्ति को भी ले जाए । निःसन्देह अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 21। (रुक् ½)

हे लोगो ! तुम अपने रब्ब की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उनको भी जो तुमसे पहले थे । ताकि तुम तक़वा अपनाओ । 22।

जिसने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना और आकाश को (तुम्हारे अस्तित्व का) आधार बनाया और आकाश से पानी उतारा और उसके द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल तुम्हारे लिए जीविका-स्वरूप उत्पन्न किए । अतः जानते बूझते हुए अल्लाह के साझीदार न बनाओ । 23।

और यदि तुम इस के बारे में संदेह में हो जो हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो इस जैसी कोई सूरः ला कर दिखाओ और अपने संरक्षकों को भी बुला लाओ जो अल्लाह के सिवा (तुम ने बना रखे) हैं, यदि तुम सच्चे हो । 24।*

أَصَّاءٌ لَهُمْ مَشْوَافِيهُ وَإِذَا أَظْلَمَ
عَلَيْهِمْ قَامُواٰ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَدَهَبَ
إِسْمِعِيهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقَوْنَ

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ
بِلَائِهِ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِ
مِنَ الْأَرْضِ رِزْقًا لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ
أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَرَنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا
فَأْتُوْا بِسُورَةٍ مِنْ مِثْلِهِ وَأَذْعُوْا
شَهِدَاءَكُمْ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِيْنَ

* कुरआन करीम में कई स्थान पर कुरआन की केवल एक सूरः का उदाहरण लाने की चुनौती दी गई है और कुछ स्थान पर दस सूरतों का और कुछ स्थानों पर पूरे कुरआन का उदाहरण प्रस्तुत करने की चुनौती दी गई है । जहाँ तक एक सूरः का उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रश्न है इससे अभिप्राय सूरः अल्-बक्रः भी हो सकती है । इस से यूँ लगता है कि मानो सारे कुरआन के विषय इस सूरः में वर्णन कर दिये गये हैं । जहाँ दस सूरतों का वर्णन है, तो उससे अभिप्राय यह है कि कुरआन की कोई भी दस सूरतें कहीं से भी इकट्ठी कर लें, चाहे अन्तिम भाग की छोटी सूरतें हों या बड़ी, उनके उदाहरण प्रस्तुत करने से मनुष्य सर्वथा असमर्थ रहेगा । पूरे कुरआन के उदाहरण लाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।

अतः यदि तुम ऐसा न कर सको और कदापि न कर सकोगे, तो उस आग से डरो जिसका ईधन मनुष्य और पत्थर हैं। वह काफिरों के लिए तैयार की गई है। 125।

और जो लोग ईमान लाए और सत्-कर्म किए, उन्हें शुभ-समाचार दे दे कि उनके लिए ऐसे बाग हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। जब भी उन्हें उन (बागों) में से कोई फल जीविका स्वरूप दिया जाएगा, तो वे कहेंगे यह तो वही है जो हमें पहले भी दिया जा चुका है। हालाँकि इस से पूर्व उनके निकट केवल उससे मिलती-जुलती (जीविका) लाई गयी थी और उनके लिए उन (बागों) में पवित्र बनाये हुए जोड़े होंगे और वे उनमें सदा रहने वाले हैं। 126।

अल्लाह कोई भी उदाहरण प्रस्तुत करने से कदापि नहीं झिझकता, चाहे मच्छर का हो अथवा उस का भी जो उस के ऊपर हो। अतः जहाँ तक ईमान लाने वालों का सम्बन्ध है तो वे जानते हैं कि यह उनके रब्ब की ओर से सत्य है। और जहाँ तक इनकार करने वालों का सम्बन्ध है, तो वे कहते हैं, (आखिर) इस उदाहरण को प्रस्तुत करने से अल्लाह का उद्देश्य क्या है? वह इस (उदाहरण) के द्वारा अनेकों को पथभ्रष्ट ठहराता है और अनेकों को हिदायत देता है और वह इसके द्वारा

فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِي وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ
أَعْذَّتُ لِلْكُفَّارِينَ ⑩

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ أَنَّ
لَهُمْ جَنَّتٌ تَجْرِيْفُ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ
كُلُّمَا زَرِقُوا مِنْهَا مِنْ شَرَقٍ وَرِزْقًا قَالُوا
هَذَا الَّذِي رَزَقْنَا مِنْ قَبْلٍ وَأَتُوَاهُمْ
مُّسْتَأْلِهِمَا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ
وَهُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑪

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحِيْقُ أَنْ يَصْرِيبَ مَثَلًا مَا
بَعْوَذَةً فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْكَيْفَ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَمَّا
الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهِذَا مَثَلًا مَيْضَلٌ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِيْ بِهِ

दुराचारियों के अतिरिक्त किसी को पथभ्रष्ट नहीं ठहराता । 27।*

अर्थात् वे लोग जो अल्लाह से दृढ़ प्रतिज्ञा करने के पश्चात् उसे तोड़ देते हैं और उन (सम्बन्धों) को काट देते हैं जिनको जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। यही वे लोग हैं जो घाटा पाने वाले हैं । 28।

तुम किस प्रकार अल्लाह का इनकार करते हो ? जबकि तुम मृत थे, फिर उसने तुम्हें जीवित किया । वह फिर तुम्हें मारेगा और फिर तुम्हें जीवित करेगा । फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे । 29।

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती में है । फिर उस ने आकाश की ओर ध्यान दिया और उसे सात आकाशों के रूप में संतुलित कर दिया और वह प्रत्येक विषय का स्थायी ज्ञान खनने वाला है । 30।

(स्कू - ३)

और (याद रख) जब तेरे रब्ब ने फरिश्तों से कहा कि निश्चित रूप से मैं धरती में एक उत्तराधिकारी बनाने वाला हूँ । उन्होंने कहा, क्या तू उसमें वह बनाएगा जो उसमें उपद्रव करे और रक्तपात करे ? जबकि हम तेरी प्रशंसा

كَثِيرًاٰ وَمَا يُقْسِلُهُ إِلَّا الْفَسِيقُونَ ﴿٦﴾

الَّذِينَ يُقْصُدُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيَاهَقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۝ أُولَئِكَ هُمُ
الْخُسْرَوْنَ ﴿٧﴾

كَيْفَ تُكَفِّرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا
فَأَحْيَاكُمْ ۝ ثُمَّ يُمْسِكُمْ ثُمَّ يُخْبِيْكُمْ
ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا ۝ ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّيْهَا
سَيْعَ سَمَوَتٍ ۝ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِ حِلْدٌ ﴿٩﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ
فِي الْأَرْضِ حَلِيقَةً ۝ قَالَتْ كَوَافِرُ
مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيُنْفِكُ الدِّمَاءَ ۝

* जो उसके ऊपर हो से अभिप्राय मच्छर जो वस्तु उठाये हुए है, जो उसके ऊपर है अर्थात मलेरिया के जीवाणु हैं । संसार में सर्वाधिक लोग मलेरिया और मलेरिया जनित बीमारियों से मरते हैं। “अल्लाह नहीं ज़िज़ाकता” से यह अभिप्राय है कि इस अवसर पर ज़िज़ाकने की कदापि कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह बहुत ही श्रेष्ठ उदाहरण है ।

के साथ गुणगान करते हैं और हम तेरी पवित्रता का बखान करते हैं। उसने कहा, निःसन्देह मैं वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। 31।

और उस ने आदम को सब नाम सिखाए, फिर उन (पैदा की हुई चीजों) को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा, यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बतलाओ। 32।*

उन्होंने कहा, तू पवित्र है। जो तू हमें सिखाये उस के सिवा हमें किसी बात का कोई ज्ञान नहीं। निःसन्देह तू ही है जो स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है। 33।

उस ने कहा, हे आदम ! तू इनको उनके नाम बता। अतः जब उसने उन्हें उनके नाम बताए तो उसने कहा, क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि निश्चित रूप से मैं ही आकाशों और धरती के अदृश्य (विषय) को जानता हूँ और मैं उसे (भी) जानता हूँ जो तुम प्रकट करते हो और उसे (भी जानता हूँ) जो तुम छिपाते हो। 34।

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के

* यहाँ नाम शब्द से अभिप्राय कई बातें हो सकती हैं। जैसे 1. पदार्थों के भेद (देखें पुस्तक सिर्फ़ल खिलाफ़ः)। 2. अरबी भाषा की संज्ञाएँ (देखें पुस्तक मिन्नु-र्हमान)। 3. वे गुण जो फ़रिश्तों में नहीं थे। 4. उन नवियों के नाम जो आदम के वंश में पैदा होने वाले थे। जिनका फ़रिश्तों को कुछ भी ज्ञान नहीं था और आदम ने जब उन नवियों का नाम लिया तो वे चकित हो गये। नवियों के आगमन के परिणामस्वरूप रक्तपात का विषय सत्य सिद्ध होता है परन्तु भिन्न प्रकार से। फ़रिश्तों को यह तो अनुमान था कि यदि अल्लाह के प्रतिनिधि (नवी) का आगमन हुआ तो धरती में रक्तपात होगा, परन्तु उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि इस में नवियों का दोष नहीं होगा, बल्कि नवियों के विरोधियों का दोष होगा।

وَنَحْنُ نُسِيَّعُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ
قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ①

وَعَلِمَ آدَمُ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُ
عَلَى الْمَلِكَةِ فَقَالَ أَتَيْتُنِي بِاسْمَاءَ
هُولَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ②
قَالُوا سُبْحَنَكَ لَا يَعْلَمُ لَنَا إِلَّا مَا
عَلِمْنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ③

قَالَ يَا آدَمُ أَتَيْتُهُمْ بِاسْمَاءِهِمْ
فَلَمَّا آتَيْتَهُمْ بِاسْمَاءِهِمْ قَالَ أَلَمْ
أَقْلِلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبَدِّدُونَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْسُبُونَ ④

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلِكَةِ اتَّجَدُوا لِادَمَ

सिवा वे सब सजदः में गिर गये । उस ने इनकार किया और अहंकार किया और वह काफिरों में से था । 35।

और हमने कहा, हे आदम ! तू और तेरी स्त्री स्वर्ग में रहो और तुम दोनों उसमें जहाँ चाहो भरपूर खाओ, परन्तु उस विशेष वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा तुम दोनों अत्याचारियों में से हो जाओगे । 36।*

अतः शैतान ने उन दोनों को उस (वृक्ष) के विषय में फुसला दिया, फिर उन्हें उस से निकाल दिया, जिस में वे पहले थे । और हम ने कहा, तुम निकल जाओ (इस अवस्था में) कि तुम में से कुछ, कुछ और के शत्रु होंगे और तुम्हारे लिए (इस) धरती में एक अवधि तक रहना और लाभ उठाना (निश्चित) है । 37।

फिर आदम ने अपने रब्ब से कुछ वाक्य सीखे । अतः वह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए उस पर झुका । निःसन्देह वही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 38।

हम ने कहा, तुम सबके सब इसमें से निकल जाओ । अतः जब कभी भी तुम्हारे निकट मेरी ओर से हिदायत

فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْرِيزٌ أَلَيْ وَاسْتَكَبَرَ^۱
وَكَانَ مِنَ الْكُفَّارِ^۲

وَقُلْنَاتِيَاً أَدْمَرَ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
وَكَلَامِنْهَا رَغْدَاحِيَّ شِئْمَأْ وَلَا تَقْرَبَا
هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونُنَا مِنَ الظَّالِمِينَ^۳

فَأَزَّنَهُمَا الشَّيْطَنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا
كَانَا فِيهِ^۴ وَقُلْنَا اهِيَطْلُو ابْعَضَكُمْ
لِعَضِ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ
مُسْتَقْرٌ وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ^۵

فَتَلَقَّى أَدْمَرُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ^۶
إِنَّهُ هُوَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ^۷

قُلْنَا اهِيَطْلُو امْنَهَا جَمِيعًا^۸ فَإِمَّا يَأْتِيَكُمْ
مِنْ هَذِي فَمِنْ تَبَعَ هَذَا فَلَا خَوْفٌ

* यहाँ वृक्ष से अभिप्राय वह धर्मदिश हैं जो निषेधात्मक विषयों से सम्बन्धित हैं । यदि उन नियमों को तोड़ा जाये तो फिर संसार में मनुष्य के लिए शांति उठ जाती है । इस आयत में दो व्यक्तियों को सम्बोधित किया गया है, परन्तु इससे यह अभिप्राय नहीं है कि केवल आदम और हब्बा स्वर्ग में रहते थे, क्योंकि आगे की आयतों में तुम सब के सब इस में से निकल जाओ इस बात को प्रकट करता है कि वहाँ आदम के और भी वंशज थे ।

आयी तो जिन्होंने मेरी हिदायत का अनुसरण किया, उन को कोई भय नहीं होगा और न ही वे दुःखी होंगे। 39।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारे चिह्नों को झुठलाया, वही हैं जो आग में पड़ने वाले हैं। वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं। 40।

(सू. ٤)

हे बनी इसाई ! उस नेमत को याद करो जो मैं ने तुम पर की और मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करो, मैं भी तुम्हारी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा और केवल मुझ ही से डरो। 41।

और उस पर ईमान ले आओ, जो मैंने उसकी पुष्टि करते हुए उतारा है जो तुम्हारे निकट है। और उसका इनकार करने में पहल न करो और मेरे चिह्नों के बदले अल्प मूल्य ग्रहण न करो और केवल मेरा ही तक़वा अपनाओ। 42।

और सत्य को असत्य के साथ गहू-महू न करो और सत्य को न छिपाओ जबकि तुम जानते हो। 43।

और नमाज को कायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। 44।

क्या तुम लोगों को नेकी का आदेश देते हो और स्वयं अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम पुस्तक भी पढ़ते हो। आखिर तुम क्यों बुद्धि से काम नहीं लेते ? 45।

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرَثُونَ ③

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِاِيمَانِنَا اُولَئِكَ
اَصْحَابُ الشَّارِقَةِ قَهْمَةُ خَلِدُونَ ④

يَسِّيْفَ اِسْرَاءِيلَ اذْكَرُوا نِعْمَتَنَا اَتَيْ
اَنْعَمْتَ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِنَا اَوْفِ
بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّاَيَ فَارْهَبُونَ ⑤
وَامْتَوْا بِمَا اَنْزَلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ
وَلَا تَكُونُو اَوْلَى كَافِرِيهِمْ وَلَا شَرِّوْ
بِإِيْتِيْ شَمَّا قَلِيلًا وَإِيَّاَيَ فَائِقُونَ ⑥

وَلَا تَلِسُو الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْنِمُوا
الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑦
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوْةَ وَأَرْكَمُوا
مَعَ الرِّكَعِينَ ⑧

اَتَأْمَرُونَ النَّاسَ بِاِيمَرِ وَتَنْسُونَ
اَنْسَكُرْ وَأَنْتُمْ تَشُونَ الْكِتَبَ
اَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑨

और धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता माँगो और निश्चित रूप से यह (काम) विनम्रता अपनाने वालों के सिवा सब के लिए भारी है । 46।

(अर्थात्) वे लोग जो विश्वास रखते हैं कि वे अपने रब्ब से मिलने वाले हैं और यह भी कि वे उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं । 47। (रुकू ٥)

हे बनी इस्माईल ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की और यह भी कि मैंने तुम्हें समग्र जगत पर प्रधानता दी । 48।

और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान के कोई काम नहीं आएगी और न उससे (उसके पक्ष में) कोई सिफारिश स्वीकार की जाएगी और न उससे कोई बदला ग्रहण किया जाएगा और न उन (लोगों) की किसी प्रकार सहायता की जाएगी । 49।

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फिरौन की जाति से मुक्ति प्रदान की, जो तुम्हें कठोर यातना देते थे । वे तुम्हारे पुत्रों की हत्या कर देते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे लिए तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत बड़ी परीक्षा थी । 50।

और जब हम ने तुम्हारे लिए समुद्र को फाइ दिया और तुम्हें मुक्ति दी, जबकि हमने फिरौन की जाति को दुबो दिया और तुम देख रहे थे । 51।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا
كَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَشِعِينَ ①

الَّذِينَ يَظْنُونَ أَنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ
وَأَنَّهُمْ رَاهِيُّوْرِجَمُونَ ②

يَدْعُوْفَ اسْرَاءْعَلِيْلَ الْأَكْرَرَ وَانْعَمَّتِيْلَتِيْ
أَنْعَمْتَ عَلَيْكُمْ وَأَنْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى
الْعَلِمِينَ ③

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَنْهَرُ فَنْفُسُ عَنْ نَفْسٍ
شَيْئًا وَلَا يَقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةً وَلَا يُؤْخَدُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُصْرَوْنَ ④

وَإِذْ تَجْئِنَكُمْ مِنْ إِلٰ فِرْعَوْنَ
يَوْمَ مُؤْنَكُمْ سَوْءَ الْعَذَابِ يُدَبِّحُونَ
أَبْسَاءَكُمْ وَيَسْحِيُونَ إِسَاءَكُمْ وَفِي
ذِكْرِكُمْ بِلَا عِلْمٍ قُنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑤

وَإِذْ فَرَقْتَكِمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْتَكُمْ وَأَغْرَقْنَا
أَلٰ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَسْتَلِرُونَ ⑥

और जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा किया । फिर उसके (जाने के) बाद तुम बछड़े को (उपास्य) बना बैठे और तुम अत्याचार करने वाले थे । ५२।

फिर इसके बावजूद हमने तुम को क्षमा कर दिया ताकि संभवतः तुम कृतज्ञता प्रकट करो । ५३।

और जब हम ने मूसा को पुस्तक और फुर्कान (सत्य और असत्य का भेद-ज्ञान) प्रदान किया ताकि संभवतः तुम हिदायत पा जाओ । ५४।

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! तुमने बछड़े को (उपास्य) बनाकर निःसन्देह अपनी जानों पर अत्याचार किया । अतः प्रायश्चित करते हुए अपने पैदा करने वाले की ओर लौ लगाओ और अपनी जानों की हत्या करो । यह तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट तुम्हारे लिए अत्युत्तम है ।

अतः वह प्रायश्चित स्वीकार करते हुए तुम पर दयावान हुआ । निःसन्देह वही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला है (और) बार-बार दया करने वाला है । ५५।*

और जब तुम ने कहा कि हे मूसा ! हम कदापि तुम्हारी नहीं मानेंगे, जब तक कि हम अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से देख न

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَى أَرْبَعِينَ لَيْلَةً فَمَّا
الْحَدَّثْنَا الْعِجْلُ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَلِمُونَ ⑦

لَمَّا عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذِلِّكَ لَعْلَكُمْ
تَشْكُرُونَ ⑧

وَإِذَا تَبَيَّنَ مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ
لَعْلَكُمْ تَهَمَّدُونَ ⑨

وَإِذْ قَاتَلَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقُولُ إِنَّكُمْ
ظَلَمَّمْتُمْ أَنفُسَكُمْ بِإِلَّا حَادَّكُمُ الْعِجْلُ
فَتَوَبُّوا إِلَىٰ بَارِيَكُمْ فَاقْتُلُوا
أَنفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ عِنْدَ
بَارِيَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ رَبُّكُمْ إِنَّهُ هُوَ
الْتَّوَابُ الرَّحِيمُ ⑩

وَإِذْ قَلْسَمْتُمْ مُوسَى لَئِنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ
نَرَى اللَّهَ جَهَنَّمَ فَأَخَذْتُمْ كُمُ الصِّعْدَةَ

* यहाँ अपनी जानों की हत्या करने से यह अर्थ नहीं कि परस्पर एक दूसरे की हत्या शुरू कर दो, जैसा कि साधारणतः विद्वान् यही समझते हैं । बस्तुतः इसका अर्थ यह है कि अपने पापों के प्रति प्रायश्चित करो और अपने तामसिक आवेगों का दमन करो ।

لے । ات: تुम्हें آکाशीय بیجاتی نے آ پکड़ा اور تुम دेखते رہ گئے । ۱۵۶ ।

فیر ہم نے تुमھاری مृत्यु (کی سی ایسٹا) کے پश्चात تुम्हें ٹھाया تاکہ تुم کृتज्ञता پ्रکट کرو । ۱۵۷ ।

اور ہم نے تुم پر بادلوں کی ڈایا بنارہ اور تुم پر ہم نے ملن اور سلوا عتارے । جو جیवیکا ہم نے تुम्हें دی ہے عس میں سے پیش و سُن خا آؤ । اور عنہوں نے ہم پر ایسا چار نہیں کیا، بلکہ وہ سُب اپنے ٹھپر ہی ایسا چار کرنے والے�ے । ۱۵۸ ।

اور جب ہم نے کہا کہ اس بستی میں پ्रवेश کرو اور اس میں سے جہاں سے بھی چاہو بھرپور خا آؤ اور (معیث) د्वार میں آج्ञापालन کرتے ہوئے پ्रवेश کرو اور کہو کہ بوجھ ہلکے کیا جائے । ہم تुमھارے اپارادھوں کو ک्षमا کر دے گے اور عپکار کرنے والوں کو ہم ایسا شیع اور بھی اधیک دے گے । ۱۵۹ ।

ات: جن لوگوں نے ایسا چار کیا، عنہوں نے اس بات کو جو عنہوں کہی گई تھی، کسی اور بات میں بدل دیا । ات: ہم نے ایسا چار کرنے والوں پر آکا ش سے اک ایسا چار عتارا، کیونکہ وہ ایسا چار کرتے�ے । ۱۶۰ । (رک ۶)

اور جب موسیٰ نے اپنی جاتی کے لیے پانی مانگا تو ہم نے کہا کہ چڑھاں پر اپنی لاثی مارو । تب اس میں سے بارہ سو سو فٹ پडے اور سب لوگوں نے اپنے اپنے پانی پینے کے س्थان کو جان

وَأَنْتُمْ تَسْتَطِرُونَ ۝

لَعْنَةَ بَعْضَكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعْنَكُمْ
تَشْكِرُونَ ۝

وَظَلَّلَنَا عَلَيْكُمُ الْعَمَامَ وَأَنْزَلَنَا عَلَيْكُمْ
الْمَرْءَ وَالسَّلْوَىٰ ۝ كُلُّوْمَنْ طَيْبَتِ مَا
رَزَقْنَكُمْ ۝ وَمَا أَظْلَمْنَا وَلِكُنْ كَانُوا
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

وَإِذْ قُلْنَا دُخُلُوا هَذِهِ الْقُرْيَةَ فَكُلُّوْمَنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ رَغْدًا وَإِذْ خُلُوا الْبَابَ
سُجَدًا وَقُولُوا حَطَّةً لَعْفُرْ لَكُنْ
حَطَّيْكُمْ ۝ وَسَزِيْدُ الْمُحْسِنِينَ ۝

فَبَدَلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قُيلَ
لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا
مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُدُونَ ۝

وَإِذَا شَتَّلَ مُوسَى لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا
اُخْرِبْ بِعَصَالِ الْحَجَرِ ۝ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَعَشَرَةَ عَيْنًا ۝ قَدْ عِلْمَ كُلُّ أَنَّا إِسْ

लिया। (हमने कहा) अल्लाह प्रदत्त जीविका में से खाओ और पियो तथा धरती में उपद्रवी बनकर अशांति न फैलाओ। 161।

और जब तुमने कहा हे मूसा ! हम एक ही भोजन पर कदापि धैर्य नहीं रख सकेंगे । अतः हमारे लिए अपने रब्ब से दुआ कर कि वह हमारे लिए ऐसी चीज़ें निकाले जो धरती उगाती है, जैसे सब्जियाँ और ककड़ियाँ और गेहूँ और दालें और प्याज़ । उसने कहा, क्या तुम न्यून वस्तु को लेना चाहते हो उत्तम के बदले ? तुम किसी शहर में प्रवेश करो, निश्चित रूप से तुम्हें वह मिल जाएगा जो तुमने माँगा है । और उन पर अपमान और गरीबी की मार डाली गई और वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे । यह इसलिए हुआ क्योंकि वे अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया करते थे और नवियों की अन्यायपूर्वक हत्या करते थे । (हाँ) यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन किया करते थे । 162।

(स्कूल 7)

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाये और वे जो यहूदी और ईसाई और अन्य ईश-ग्रंथों को मानने वाले हैं, जो भी अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर ईमान लाये और नेक-कर्म करे, उन सब के लिए उन का प्रतिफल उनके रब्ब के निकट है और

مَشْرِبُهُمْ كَلْوَا وَأَشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ
وَلَا تَعْثُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ⑤

وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَى لَنِّي نَصِيرٌ عَلَى
طَعَامِ رَبِّي فَادْعُ لِنَارَبِّكَ يُخْرِجُ
لَنَا مِمَّا تَنْتَهِي الْأَرْضُ مِنْ بَقْلَاهَا
وَقِتَّاهَا وَقُومَاهَا وَعَدَسَهَا وَبَصَلَاهَا ۖ
قَالَ أَتَسْتَبِيلُونَ إِلَيْنِي هُوَ أَدْنِي
بِإِلَيْنِي هُوَ خَيْرٌ إِهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنْ
لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ ۖ وَصُرِبْتُ عَلَيْهِمْ
الذِّلَّةُ وَالْمُسْكَنَةُ ۖ وَبَاءُو بِغَضَبٍ
مِنَ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ
بِإِيمَانِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ
ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۖ ⑥

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالظَّرِي
وَالظَّرِيْفِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالنَّيْمِ الْآخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحَاتٍ لَهُمْ أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

उन्हें कोई भय नहीं और न वे दुःखित होंगे । ६३।*

और जब हमने (तुम से) तुम्हारी दृढ़ प्रतिज्ञा ली और तूर (पर्वत) को तुम पर ऊँचा किया । (और कहा) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़तापूर्वक पकड़ लो और जो उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम (तबाही) से बच सको । ६४।**

फिर इसके बाद भी तुम पलट गये । अतः यदि अल्लाह की (विशेष) कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो तुम अवश्य घाटा उठाने वालों में से हो जाते । ६५।

और निःसन्देह तुम उन लोगों को जान चुके हो जिन्होंने तुम में से सब्त के विषय में उल्लंघन किया तो हम ने उन से कहा कि नीच बंदर बन जाओ । ६६।***

وَلَا خُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَخْرُنُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا أَحَدْنَا مِنْتَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ
الظُّورَ طَ حَذَّرُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ
وَأَذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعْلَكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١١﴾

ثُمَّ تَوَلَّتُمُوهُ مِنْ بَعْدِ إِذْلِكَ فَلَوْلَا قَضَى
اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً لَكُنْتُمْ مِنَ
الْخَسِيرِينَ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي
السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُنُوتُوا قِرَدَةً حُسْنِينَ ﴿١٣﴾

- * यह आयत और इससे मिलती जुलती अन्य आयतें कुरआन करीम के न्याय के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इस में कोई सन्देह नहीं है कि मुकित सर्वप्रथम उन्हीं को मिलेगी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सच्चा ईमान लायें। परन्तु ऐसे अनेक लोग हो सकते हैं जिन तक इस्लाम का वास्तविक सदेश न पहुँचा हो। बल्कि दुनिया में अरबों लोग ऐसे हैं जिन तक इस्लाम का सदेश नहीं पहुँचा। इसलिए कुरआन करीम घोषणा करता है कि यदि ऐसे लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हों और यह विश्वास रखते हों कि मरने के बाद हम उठाये और पूछे जाएंगे, तो यदि वे अपने ईश्वरीय धर्म-विधान पर चलें जो उन पर उत्तरा और जिसका उन्हें ज्ञान है, तो जो नेकियाँ वे अल्लाह के लिए करेंगे उन्हें उन का उत्तम प्रतिफल दिया जाएगा और उन्हें कोई शोक और दुःख नहीं होगा।
- ** इस आयत में और हमने तूप पर तूर पर्वत को ऊँचा किया वाक्य से कुछ भाष्यकारों का यह विचार है कि तूर पर्वत को धरती से उखाइ कर ऊँचा कर दिया गया था। हालांकि इसका अर्थ केवल यह है कि वे उस समय तूर पर्वत की छाया के नीचे थे। कई स्थान पर पहाड़ कुछ आगे को बढ़ा हुआ होता है और निकट से गुज़रने वालों को यूँ लगता है कि जैसे वह उन पर झुका हुआ हो। कई बार ऐसे पहाड़ों की छाया के नीचे एक समूची सेना आ सकती है।
- *** यहाँ नीच बंदर से अभिप्राय वास्तविक बंदर नहीं। बल्कि बिगड़े हुए उलेमा हैं जिन को अपनी पूर्वावस्था की ओर लौट जाने का आदेश दिया गया है। डारविन के सिद्धान्त में वर्णन किया गया है कि मनुष्य पहले बंदर था। अतः यह भी कुरआन की सच्चाई का एक प्रमाण है कि मनुष्य से पूर्व→

अतः हमने उस (सब्त के अपमान) को उस की पृष्ठभूमि और भावी (अवमाननाओं) के कारण पकड़ का आधार बना दिया तथा मुत्क्रियों के लिए एक बड़ा उपदेश (बनाया) । 67।

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम एक (विशिष्ट) गाय को ज़िवह करो । उन्होंने कहा, क्या तू हमें उपहास का पात्र बना रहा है ? उसने कहा कि मैं इस बात से अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मैं मूर्खों में से बन जाऊँ । 68।

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हमारे लिए स्पष्ट कर दे कि वह क्या है ? उसने कहा, निश्चित रूप से वह कहता है कि वह एक गाय है, (जो) न बहुत बूढ़ी और न बहुत कम आयु, (बल्कि) इस के बीच-बीच मध्यम आयु की है । अतः वही करो जो तुम्हें आदेश दिया जाता है । 69।

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हमारे लिए स्पष्ट कर दे कि उसका रंग क्या है ? उस ने कहा, निश्चित रूप से वह कहता है कि वह अवश्य एक पीले रंग की गाय है जिसका

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ⑯

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمَهُ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ كُمْ
أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً فَالْتَّوَأْتُ عَلَيْنَا
هُرُونًا ۝ قَالَ أَغْوِنُّ بِاللَّهِ وَآتُنْ أَكْوُنَ مِنَ
الْجَهَنَّمِ ⑯

قَالُوا اذْعُ لِنَارِكَ يَبْيَسْ لَنَا مَا هَيْ
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِصٌ وَلَا
بِشْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَلِكَ ۝ فَافْعَلُوا مَا
تُؤْمِنُونَ ⑯

قَالُوا اذْعُ لِنَارِكَ يَبْيَسْ لَنَا مَا لَوْنَهَا
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ ۝

←की अवस्था को बंदर के रूप में प्रकट किया गया । निश्चित रूप से इससे अभिप्राय बिगड़े हुए उलेमा हैं । अतएव हज़रत मुहम्मद सलललाहु अलैहि व सल्लम ने भी यही भविष्यवाणी की है कि मेरे अनुगामियों में एक घबराहट और बेचैनी उत्पन्न होगी, जिस पर लोग अपने उलेमाओं की ओर जाएंगे तो देखेंगे कि वहाँ तो बंदर और सूअर बैठे हैं । ('कंज़-उल्-उम्माल' भाग 16, पृष्ठ 80 हदीस संख्या 387227 प्रकाशक, मु'सिसतुर्रिसाल:, बैरूत 1985ई.)

रंग बहुत गहरा है। वह देखने वालों को प्रसन्न कर देती है। 170।

उन्होंने कहा, अपने रब्ब से हमारे लिए दुआ कर कि वह हम पर (और अधिक) स्पष्ट करे कि वह क्या है ? निश्चित रूप से सब गायें हमारे लिए संदिग्ध हो गई हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य हिदायत पाने वाले हैं। 171।

उसने कहा, निःसन्देह वह कहता है कि वह अवश्य एक ऐसी गाय है जो धरती में हल चलाने के उद्देश्य से जोती नहीं गई और न वह खेतों की सिंचाई करती है। वह सही-सलामत है। उसमें कोई दाग नहीं है। उन्होंने कहा कि अब तू सच्ची बात लाया है। अतः उन्होंने उसे ज़िबह कर दिया। जबकि वे (पहले ऐसा) करने वाले न थे। 172। (रुक् ٨)

और जब तुम ने एक जान का वध किया और फिर उसके बारे में मतभेद किया, और अल्लाह ने उस भेद को प्रकट करना ही था जिसे तुम छिपाये हुए थे। 173।

अतः हमने कहा, (खोज लगाने के उद्देश्य से) इस जैसी दूसरी घटना पर इस (घटना) को मिला कर देखो। इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को (उनके हत्यारों की पकड़ करके) जीवित करता है और तुम्हें अपने चिह्न दिखाता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो। 174।*

* भाष्यकारों ने इस आयत का भी गलत अर्थ निकाला है। अर्थात् यदि किसी व्यक्ति की हत्या की गयी हो तो उस ज़िबह की हुई गाय के माँस के टुकड़ों को उस मृत व्यक्ति के शरीर पर मारो इससे जात हो जायेगा कि हत्यारा कौन है। (तफसीर फतहुल-बयान) हालाँकि यहाँ सुस्पष्ट रूप से कुरआन→

فَاقِعٌ لَوْنَهَا تَسْرُّ النَّظَرِينَ ⑦

قَالُوا اذْعُ لَنَارِبَكَ يَبْيَلُنَ نَأَمَاهِيْ إِنَّ
الْبَقَرَ شَبَّةَ عَلَيْنَا مُوْإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ
لَمْهَدُونَ ⑧

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ شَيْرٌ
الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا
شَيْةَ فِيهَا ۖ قَالُوا أَلَّا بَقَرَ جُنْتَ بِالْحَقِّ ۖ
فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ⑨

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَأَذْرَعْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ
مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْسُمُونَ ⑩

فَقُلْنَا أَصْرِبُوْهُ بِعَضْهَا ۖ كَذَلِكَ يَعْنِي اللَّهُ
الْمَوْقِفُ ۖ وَيُرِيكُمْ أَيْتَهُ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ⑪

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गये । मानो वे पत्थरों की भाँति थे अथवा फिर उससे भी बढ़कर कठोर । जबकि पत्थरों में से भी निश्चित रूप से कुछ ऐसे होते हैं कि उन से नहरें फूट पड़ती हैं और निश्चित रूप से उन में से ऐसे भी हैं कि जो फट जायें तो उन में से पानी निकलता है । फिर उनमें ऐसे भी अवश्य हैं जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं है । 75।

क्या तुम यह आशा लगाए बैठे हो कि वे लोग तुम्हारी बात मान जाएँगे ? जबकि उन में से एक गिरोह अल्लाह की वाणी को सुनता है और उसे अच्छी प्रकार समझने के बावजूद उसमें उलट-फेर करता है और वे भली भाँति जानते हैं । 76।

और जब वे उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाये, तो कहते हैं कि हम भी ईमान ले आये । और जब उनमें से कई, कुछ दूसरों की ओर अलग हो जाते हैं तो वे (उनसे) कहते हैं कि क्या तुम उन को वह बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर प्रकट की हैं ताकि इन्हीं बातों के द्वारा वे तुम्हारे रब्ब के समक्ष तुम से झगड़ा करें । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते । 77।

←करीम कहता है कि जिसकी हत्या हुई है, उसकी हालतों पर ध्यान देते हुए उस जैसी और घटनाओं की जाँच पढ़ाताल करो कि यह काम कौन कर सकता है ? क्योंकि साधारणतया हत्यारे का हत्या करने का ढंग एक ही होता है । आजकल की जासूसी दुनिया इस बात पर बहुत अधिक निर्भर करती है ।

شَرَّ قَسْطٍ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ
كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَقْبَرْ مِنْهُ الْأَنْهَرُ وَإِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَقْبَرْ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَقْبَرْ مِنْ حَشْيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ
يُغَافِلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ⑦

أَفَتَظْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِالْحُكْمِ وَقَدْ كَانَ
فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلْمَانِ اللَّهِ ثُمَّ
يَحْرِفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقْلَوْهُ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ⑧

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ جَاءُوكُمْ قَاتُلُوكُمْ إِنَّمَا
وَإِذَا خَلَّا بِعَصْمَهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَاتُلُوكُمْ
أَتَحِلُّ لَهُمْ بِمَا فَعَلُوكُمْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ
لِمَاجِنَجُوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ⑨

क्या वे नहीं जानते कि जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं (उसे) अल्लाह निश्चित रूप से जानता है । 178।

और उनमें ऐसे अज्ञान भी हैं जो (अपनी) इच्छाओं के अतिरिक्त पुस्तक का कोई ज्ञान नहीं खोते और वे केवल अनुमान लगाते हैं । 179।

अतः उनके लिए सर्वनाश है जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है ताकि वे उसके बदले कुछ थोड़ा सा मूल्य प्राप्त कर लें । अतः जो उनके हाथों ने लिखा उसके परिणाम स्वरूप उनके लिए सर्वनाश है और जो वे कमाते हैं, उसके कारण उनके लिए सर्वनाश है । 180।

और वे कहते हैं, कुछ गिनती के दिनों के अतिरिक्त हमें आग कदापि नहीं छूएगी। तू कह दे, क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन ले रखा है ? अतः अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा अथवा तुम अल्लाह की ओर ऐसी बातें सम्बन्धित करते हो जिनकी तुम्हें कोई जानकारी नहीं । 181।

वास्तविकता यह है कि जिस ने भी बुराई अर्जित की, यहाँ तक कि उसके अपराधों ने उसको घेरे में ले लिया हो तो यही लोग ही आग वाले हैं । वे उसमें एक लम्बे समय तक रहने वाले हैं । 182।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, यही लोग स्वर्ग वाले हैं । वे

أَوْلَىٰ يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَسِّرُونَ
وَمَا يَعْلَمُونَ ⑩

وَمِنْهُمْ أَفَيَقُولُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَبَ إِلَّا
آمَانَتِي وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظْلَمُونَ ⑪

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْكِتَبَ
بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
لَيَشْرَوْا بِهِ شَمَائِلًا فَوَيْلٌ لِّلَّهِمْ مَمَّا
كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لِّلَّهِمْ مَمَّا
يَكْسِبُونَ ⑫

وَقَاتُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا آيَاتِا
مَعْدُودَةً قُلْ أَلْخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا
فَلَنْ يَحْلِفَ اللَّهُ عَهْدًا آمُّ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑬

بَلِّيْ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ
نَعْنَيْئَةٌ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ
فِيهَا خَلِدُونَ ⑭

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ أُولَئِكَ

उसमें सदा रहने वाले हैं 183।

(रुक् ۹)

और जब हमने बनी-इस्साईल से दृढ़ प्रतिज्ञा ली कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करोगे और माता-पिता से और निकट सम्बन्धियों से और अनाथों से और दरिद्रों से भी दयापूर्ण व्यवहार करोगे । और लोगों से अच्छी बात कहा करो और नमाज को क्रायम करो और ज़कात अदा करो । इसके बावजूद तुम में से कुछ के सिवा तुम सब (इस प्रतिज्ञा से) पीछे हट गये और तुम मुँह फेरने वाले थे 184।

और जब हमने तुम से प्रतिज्ञा ली कि तुम (परस्पर) अपना रक्त नहीं बहाओगे और अपने ही लोगों को अपनी आबादी से नहीं निकालोगे, इसको तुम ने स्वीकार किया और तुम इसके साक्षी थे 185।

इसके बावजूद तुम वे हो कि अपने ही लोगों की हत्या करते हो और तुम अपने में से एक समूह को उन की बस्तियों से निकालते हो । तुम पाप और अत्याचार के द्वारा उनके विरुद्ध एक दूसरे का पृष्ठपोषण करते हो और यदि वे बन्दी बन कर तुम्हारे निकट आयें तो मुक्तिमूल्य लेकर उनको छोड़ देते हो जबकि उन को निकालना ही तुम्हारे लिए निषिद्ध था । अतः क्या तुम पुस्तक के कुछ भागों पर ईमान लाते हो और

اَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ قِيهَا خَلِدُونَ ﴿٦﴾

وَإِذَا أَخَذْنَا مِنْهُمْ بَنِيَّ اسْرَاءَعْلَى لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
وَذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينَ
وَقُولُوا لِلشَّايسِ مُحْسِنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَأَتُوا الرِّزْكَوَةَ ثُمَّ تَوَيَّثُمُ إِلَّا قَلِيلًا
مِنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُغْرِضُونَ ﴿٦٦﴾

وَإِذَا أَخَذْنَا مِنْهُمْ كُمْ لَا شَفِيكُونَ
دِمَاءَ كُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ
دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَفْرَزْتُمْ وَأَنْتُمْ
تَشَهَّدُونَ ﴿٦٧﴾

ثُمَّ أَنْتُمْ هُوَلَاءُ تُقْتَلُونَ أَنْفُسَكُمْ
وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ
دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْأَثْرِ
وَالْعَدُوَانِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ مُسْرِى
تُفْدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ
إِخْرَاجُهُمْ أَقْتُؤُمُونَ بِعِصْكِ الْكِتَبِ

कुछ का इनकार करते हो ? अतः तुम में से जो ऐसा करे उसका प्रतिफल सांसारिक जीवन में घोर अपमान के सिवा और क्या हो सकता है ? और क्यामत के दिन वे कठोरतम अज्ञाब की ओर लौटाये जाएँगे । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं । 186।

यही वे लोग हैं जिन्होंने परलोक के बदले सांसारिक जीवन को खरीद लिया । अतः न उन से अज्ञाब को कम किया जाएगा और न ही उनकी सहायता की जाएगी । 187। (रुक् 10)

और निःसन्देह हम ने मूसा को पुस्तक दी और उसके बाद भी लगातार रसूल भेजते रहे । और हमने मरियम के पुत्र ईसा को खुले-खुले चिह्न प्रदान किये और हमने रूह-उल-कुदुस के द्वारा उसका समर्थन किया । अतः जब भी तुम्हरे पास कोई रसूल ऐसी बातें लेकर आयेगा, जो तुम्हें पसन्द नहीं तो क्या तुम अहंकार करोगे ? और उनमें से कुछ को तुम झुठला दोगे और कुछ की तुम हत्या करोगे ? । 188।

और उन्होंने कहा, हमारे दिल साक्षात पर्दा (में) हैं । वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर लानत डाल रखी है । अतः वे कम ही ईमान लाते हैं । 189।

और जब अल्लाह की ओर से उनके निकट एक ऐसी पुस्तक आयी जो उस (शिक्षा) की पुष्टि कर रही थी जो उनके

وَتَكْفِرُونَ بَيْعِضٌ فَمَا جَزَاءُ مَنْ
يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خُرُقٌ فِي الْحَيَاةِ
الْدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى آشْدَى
الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ④

أُولَئِكَ الَّذِينَ اسْتَرَوُ الْحَيَاةَ
الْدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يَخْفَى عَهُمْ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَصْرُونَ ⑤

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ
بَعْدِهِ بِالرَّسُلِ وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبُشِّرَتِ وَأَيَّدَنَاهُ رُوحُ الْقَدْسِ أَفَكُلَّمَا
جَاءَهُ كَمْرَسُولٌ بِمَا لَا تَهُوَى أَنْفُسُكُمْ
إِسْكَرْبَرَتِمْ قَفْرِيَّقَكْدَبَتِمْ وَفَرِيَّقَا
تَقْتَلُونَ ⑥

وَقَالُوا قُلْوَبُنَا غَلْفٌ بَلْ لَعْنَهُمْ اللَّهُ
بِكُفَّرِهِمْ فَقَلِيلًا مَا يُؤْمِنُونَ ⑦

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَبٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ
مَصْلِحٌ لِّمَامَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلِ

पास थी। जबकि हाल यह था कि इससे पूर्व वे उन लोगों के विरुद्ध जिन्होंने कुफ किया (अल्लाह से) सहायता मांगा करते थे। अतः जब वह उनके पास आ गया जिसे उन्होंने पहचान लिया तो (फिर भी) उस का इनकार कर दिया। अतः काफिरों पर अल्लाह की लाभ न त हो। 190। बहुत बुरा है जो उन्होंने अपनी जानों को बेच कर उन के बदले में प्राप्त किया, कि जो अल्लाह ने उतारा है उस (सत्य) का इनकार कर रहे हैं, इस बात के विरुद्ध विद्रोह करते हुए कि अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा उतारता है। अतः वे (अल्लाह का) प्रकोप पर प्रकोप लिए हुए लौटे और काफिरों के लिए अपमान जनक अजाब (निश्चित) है। 191।

और जब उन से कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उस पर ईमान ले आओ, वे कहते हैं कि जो हम पर उतारा गया है हम उस पर ईमान ले आये हैं, जबकि जो उसके अतिरिक्त (उतारा गया) है वे उसका इनकार करते हैं। हालाँकि वह सत्य है, जो उनके निकट है (वह) उसकी पुष्टि कर रहा है। तू कह दे, यदि वस्तुतः तुम मोमिन हो तो इससे पूर्व अल्लाह के नवियों की क्यों हत्या किया करते थे? 192।

और निःसन्देह मूसा तुम्हारे निकट स्पष्ट चिह्न लाया था। फिर उसकी अनुपस्थिति में तुम ने बछड़े को

يَسْتَقْبِلُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا
جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ
اللَّهِ عَلَى الْكُفَّارِ ⑥

إِنَّمَا اشْرَوْا هُنَّ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِعِنْدِهِ أَنْ يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فَبِأَمْرِ
يُغْصِبُ عَلَىٰ غَصَبٍ وَلِلْكُفَّارِ
عَذَابٌ مُّهِمُّ ⑦

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَمْبُوا إِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ قَاتِلُوا
نُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيُكْفِرُونَ بِمَا
وَرَأَءُوا وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقاً لِمَا مَعَهُمْ
فَلِمَ تَقْتَلُونَ أَنْيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلِ إِن
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ⑧

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُّوسَى بِالْبَيِّنَاتِ فَمَنْ
الْحَدُثُمُ الْوَجْلُ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ

(उपास्य) बना लिया और तुम
अत्याचारी थे । 93।

और जब हमने (तुम से) तुम्हारी दृढ़
प्रतिज्ञा ली और तूर पहाड़ को (यह
कहते हुए) तुम्हारे ऊपर ऊँचा किया कि
जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे दृढ़ता
पूर्वक पकड़ लो और सुनो । उन्होंने
(उत्तर में) कहा, हम ने सुना और हमने
अवज्ञा की । और उनके इनकार के
कारण उनके दिलों को बछड़े का प्रेम
पिला दिया गया । तू (उन से) कह दे
कि तुम्हारा ईमान तुम्हें जिसका आदेश
देता है, यदि तुम मोमिन हो तो (वह)
बहुत ही बुरा है । 94।

तू कह दे कि यदि अल्लाह के निकट
परलोक का घर सब लोगों को छोड़
कर केवल तुम्हारे ही लिए हैं तो यदि
तुम सच्चे हो तो मृत्यु की कामना
करो । 95।

और उनके हाथों ने जो कुछ आगे भेजा,
उसके कारण वे कदापि उसकी कामना
नहीं करेंगे । और अल्लाह अत्याचारियों
को भली-भाँति जानता है । 96।

और तू उन्हें सब लोगों से अधिक यहाँ
तक कि उन से भी (अधिक) जिन्होंने
शिर्क किया, जीवन के प्रति लोलुप
पायेगा । उन में से प्रत्येक यह चाहता है
कि काश ! उसे एक हज़ार वर्ष की आयु
मिल जाती, हालाँकि उसका दीर्घायु
प्राप्त करना भी उसे अज्ञाब से बचाने
वाला नहीं । और जो वे करते हैं अल्लाह

ظَلِمُونَ ④

وَإِذَا أَخْدَنَا مِنْتَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ
الظُّرُورَ طَهَّرْنَا مَا أَتَيْتُكُمْ بِقُوَّةٍ
وَأَسْمَعْنَا قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأَشْرِبَوْا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ
قُلْ يَسْمَا يَا مُرْكَمْ بِهِ إِيمَانَكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑤

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ
خَالِصَةً مَنْ دُونَ النَّاسِ قَسَمْنَا الْمَوْتَ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑥

وَلَئِنْ يَسْمُوْهُ أَبَدًا إِمَّا قَدَّمْتَ أَيْدِيهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑦

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسَ عَلَى حَيَاةٍ
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يُوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ
يُعْمَرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمَرْجِحِهِ
مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعْمَرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا

उस पर गहन दृष्टि रखे हुए है 197।

(रुकू ١١)

तू कह दे कि जो भी जिब्रील का शत्रु है, तो (वह जान ले कि) निःसन्देह उसी (अर्थात् जिब्रील) ने अल्लाह के आदेश से इस (वाणी) को तेरे दिल पर उतारा है जो अपने से पूर्ववर्ती (वाणी) की पुष्टि कर रहा है। और मोमिनों के लिए हिदायत और शुभ समाचार स्वरूप है 198।

अतः जो भी अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल का शत्रु हो तो निःसन्देह अल्लाह काफिरों का शत्रु है 199।

और निःसन्देह हमने तेरी ओर सुस्पष्ट चिह्न उतारे हैं और दुराचारियों के सिवा कोई उनका इनकार नहीं करता । 100।

क्या जब कभी भी वे कोई प्रतिज्ञा करेंगे, उनमें से एक गिरोह उस (प्रतिज्ञा) को परे फेंक देगा ? बल्कि उन में से अधिकांश ईमान ही नहीं रखते । 101।

और जब भी उनके पास अल्लाह की ओर से कोई रसूल आया जो उसकी पुष्टि करने वाला था जो उनके पास था तो उनमें से एक समूह ने जिन्हें पुस्तक दी गई, अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे डाल दिया । मानो वे (उसकी) जानकारी ही न रखते हैं । 102।

और उन्होंने उसका अनुसरण किया जो शैतान सुलैमान के साम्राज्य के विरुद्ध

عَيْ

يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مَصِدِّقاً لِّمَا بَيْنَ
يَدِيهِ وَهَذِهِيَ وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّاللَّهِ وَمَلِكَتِهِ وَرَسُولِهِ
وَجِبْرِيلَ وَمِنْكُلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ
لِّلْكُفَّارِينَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بِسْتِٰنٍ وَمَا
يُكَفِّرُ بِهَا إِلَّا الْفَسِقُونَ ﴿١٢﴾
أَوْ كَلَمًا أَعْهَدُوا أَعْهَدًا أَبَدَّهُ فَرِيقٌ
مِنْهُمْ بِلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ
مَصِدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ بَذَلَ فَرِيقٌ مِّنَ الظَّاهِرِينَ
أَوْ تُوَالِي الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَأَءَهُ
ظَهُورُهُمْ كَانُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

وَاتَّبَعُوا مَا شَتَّلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكِ

पढ़ा करते थे और सुलैमान ने इनकार नहीं किया बल्कि उन शैतानों ने ही इनकार किया । वे लोगों को जादू सिखाते थे । और (इसके विपरीत) बाबिल में हारूत और मारूत दो फरिश्तों पर जो उतारा गया (उसकी कहानी यह है कि) वे दोनों किसी को भी कुछ नहीं सिखाते थे जब तक वे (उसे) यह न कह देते कि हम तो केवल एक परीक्षा स्वरूप हैं, अतः तू इनकार न कर । अतः वे लोग उन दोनों से ऐसी बात सीखते थे जिसके द्वारा वे पति-पत्नी के बीच जुदाई डाल देते थे और अल्लाह की आज्ञा के बिना वे इस के द्वारा किसी को हानि पहुँचाने वाले नहीं थे । और (इसके विपरीत जो लोग शैतानों से सीखते थे) वे वही बातें सीखते थे जो उनको हानि पहुँचाने वाली थीं और लाभ नहीं पहुँचाती थीं । हालाँकि वे खूब जान चुके थे कि जिस ने भी यह सौदा किया, उसके लिए परलोक में कुछ भाग नहीं रहेगा । अतः वह (अस्थायी लाभ) जिसके बदले में उन्होंने अपनी जानें बेच दीं बहुत ही बुरा था । काश ! कि वे जानते ॥103॥*

سَلِيمٌ۝ وَمَا كَفَرَ سَلِيمٌ۝ وَلَكُنَّ
الشَّيْطَنَ۝ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسَ
السُّخْرَ۝ وَمَا أُنْزَلَ عَلَى الْمُلْكَنِ۝ بِإِلَٰهٖ
هَارُوتَ وَمَارُوتَ۝ وَمَا يَعْلَمُونَ مِنْ
أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولُ إِلَّا مَا نَحْنُ فَيَسْأَلُ
تَكْفِيرٌ۝ فَيَعْلَمُونَ مِنْهُمَا مَا يَقْرِئُونَ۝ بِهِ
بَيْنَ الْمُرْءَ وَزَوْجِهِ۝ وَمَا هُنَّ
يُضَارُّينَ۝ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ۝
وَيَعْلَمُونَ مَا يَصْرِهُمْ وَلَا يَفْعَمُونَ۝
وَلَقَدْ عَلِمُوا مَنِ اشْتَرَبَ مَالَهُ فِي
الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ۝ وَلَيُئْسِنَ مَا شَرَوْا إِلَيْهِ
أَنفُسُهُمْ۝ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

* ‘हारूत’ और ‘मारूत’ वस्तुतः दो फरिश्ता-समान मनुष्य थे और वे क्रान्ति लाने के लिए कुछ ऐसी बातें लोगों को सिखाते थे जिन के सम्बन्ध में यह निर्देश था कि ये बिल्कुल गुप्त रहें, यहाँ तक कि पत्नी को भी न बताया जाये । उन्होंने तो यह अल्लाह के आदेश से किया था । परन्तु उनका अनुकरण करके बाद में दृढ़ साम्राज्यों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए यह शैली अपनाई गई । कुरआन करीम हारूत और मारूत को इससे दोषमुक्त करता है । क्योंकि उन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार ऐसा किया था परंतु बाकी लोग अपने अहंकार के कारण ऐसा करते हैं ।

और यदि वे ईमान ले आते और तक्वा धारण करते तो अल्लाह की ओर से (उसका) प्रतिफल निश्चित रूप से बहुत अच्छा होता । काश !

वे जानते ॥104॥ (रुकू ١٢)

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! (हमारे रसूल को) राइना न कहा करो बल्कि यह कहा करो कि हम पर कृपादृष्टि डाल और ध्यानपूर्वक सुना करो और काफिरों के लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है ॥105॥*

अहले किताब और मुश्तिकों में से जिन लोगों ने इनकार किया, वे कदापि नहीं चाहते कि तुम पर तुम्हारे रब्ब की ओर से कोई भलाई उतारी जाये । हालाँकि अल्लाह जिसको चाहता है अपनी कृपा के लिए विशेष कर लेता है और अल्लाह बहुत बड़ा कृपालु है ॥106॥

जो आयत भी हम निरस्त कर दें अथवा उसे भुला दें, उससे उत्कृष्ट अथवा उस जैसी अवश्य ले आते हैं । क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ? ॥107॥**

* इस आयत में राइना (हमारी ओर ध्यान दो) कहने से मना करने का यह कारण है कि वे राइना के बदले रायीना कहते थे जिसका अर्थ है, हे हमारे चरवाहे । जबकि संभवतः वे कह रहे हों कि हम पर कृपादृष्टि डाल । अतः कुरआन करीम ने उन को आदेश दिया कि यथार्थ वाक्य का प्रयोग करो और उन्नुर्ना (हम पर कृपादृष्टि डालो) कहा करो ।

** इस आयत में भी साधारणतया भाष्यकार धोखा खाते हैं जो यह अनुवाद करते हैं कि जो आयत अल्लाह ने कुरआन करीम में उतारी है वह निरस्त भी हो सकती है । और हम उससे उत्कृष्ट आयत ला सकते हैं । इसी के कारण 'नासिख मनसूख' (निरस्त कारिणी और निरसित) आयतों के बारे में बड़ा लम्बा झगड़ा चल पड़ा । भाष्यकारों ने लगभग पाँच सौ आयतों को निरस्तकारिणी और पाँच→

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَأَتَقَوْا لَمْ يَكُنْ يَمْنَةً مِّنْ
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِيَّا
وَقُولُوا أُنْظَرُنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكُفَّارِينَ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

مَا يَوْدُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَلَا الْمُشْرِكُونَ أَنَّ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
خَيْرٍ مِّنْ رِبِّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ بِرَحْمَتِهِ
مَنْ يَسْأَءُ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَا نَنْسَخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَاتِ بِخَيْرٍ
مِّنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۖ أَلَمْ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

क्या तू नहीं जानता कि वह अल्लाह ही है जिसका आकाशों और धरती पर साम्राज्य है ? और अल्लाह को छोड़कर तुम्हरे लिये कोई संरक्षक और सहायक नहीं । 108।

क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने रसूल से भी उसी प्रकार प्रश्न करते रहो जिस प्रकार पहले मूसा से प्रश्न किये गये ? अतः जो भी ईमान को कुफ़ से परिवर्तित करे निश्चित रूप से वह सीधे रास्ते से भटक चुका है । 109।

अहले किताब में से बहुत से ऐसे हैं जो चाहते हैं कि काश ! तुम्हें तुम्हरे ईमान लाने के बाद (एक बार फिर) काफिर बना दें । उस द्वेष के कारण जो उनके अपने दिलों से उत्पन्न होता है (वे ऐसा करते हैं) जबकि सत्य उन पर प्रकट हो चुका है । अतः (उन को) क्षमा करो और छोड़ दो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय प्रकट कर दे । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 110।

और नमाज़ को कायम करो और ज़कात अदा करो और जो भी भलाई तुम स्वयं

الَّمْ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ⑩

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَنَا كَمَا
سَأَلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلٍ ۖ وَمَنْ يَسْأَلْ
الْكُفَّارَ بِالْأَيْمَانِ فَقَدْ صَلَ سَوَاء
السَّيْلٌ ⑪

وَذَكَرَ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يَرَدُونَكُمْ مِّنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا
حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْحَقُّ فَاغْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِي
اللَّهُ بِإِمْرِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑫

وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوَةَ ۖ وَمَا

←सौ आयतों को निरसित घोषित किया है । हालाँकि कुरआन करीम की एक बिंदी भी निरसित नहीं है । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पूर्व हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहाम्मद देहलवी रह. के समय तक केवल पाँच आयतों के सिवा शेष सभी नासिल्ल-मनसूब आयतों का समाधान हो चुका था । हज़रत मसीह मौऊद अलै. की व्याख्या के फलस्वरूप इन पाँच आयतों का भी समाधान हो गया । जमाअत-ए-अहमदिया का मानना है कि कुरआन करीम की एक बिंदी भी निरसित नहीं है । प्रस्तुत कुरआनी आयत में ‘आयत’ शब्द से पूर्वकालीन धर्म-विधान अभिप्रेत हैं, जब भी उन्हें निरस्त किया गया या भुला दिया गया तो वैसे या उनसे उत्कृष्ट धर्म-विधान अवतरित किये गये ।

अपने लिए आगे भेजते हो, उसे तुम अल्लाह के निकट मौजूद पाओगे । जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उस पर दृष्टि रखे हुए है । 1111 ।

और वे कहते हैं कि जो यहूदी अथवा ईसाई हैं उनके सिवा कदापि कोई स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं होगा । यह केवल उनकी इच्छाएँ हैं । तू कह कि यदि तुम सच्चे हो तो अपना कोई दुःख तर्क तो प्रस्तुत करो । 1112 ।

नहीं नहीं, सच यह है कि जो भी स्वयं को अल्लाह के समक्ष समर्पित कर दे और वह उपकार करने वाला हो तो उसका प्रतिफल उसके रब्ब के निकट है । और उन (लोगों) को कोई भय नहीं और

न वे दुःखी होंगे । 1113 । (रुक् ١٣)

और यहूदी कहते हैं कि ईसाइयों (का आधार) किसी बात पर नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों (का आधार) किसी बात पर नहीं, हालाँकि वे पुस्तक पढ़ते हैं । इसी प्रकार उन लोगों ने भी जो कुछ ज्ञान नहीं रखते, उनकी बातों के अनुरूप बात की । अतः अल्लाह क्यामत के दिन उन के बीच उन बातों का निर्णय करेगा जिन में वे मतभेद करते थे । 1141 ।

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन है जिस ने अल्लाह की मस्जिदों में उसका नाम लेने से मना किया और उन्हें उजाइने का प्रयास किया । (हालाँकि)

تَقْدِمُوا لَا تُفْسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجَدُّوْهُ
عِنْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑩

وَقَالُوا إِنَّمَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ الْأَمْنُ كَانَ هُوَدًا
أَوْ نَصَارَىٰ ۖ تُلَكَّ أَمَا نَيْمَهُ ۖ قُلْ هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ⑪

بَلْ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَلَهُ أَجْرٌ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا حَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْرُثُونَ ۖ

وَقَاتَ الْيَهُودَ لَيْسَ النَّصَارَىٰ عَلَى
شَيْءٍ ۖ وَقَاتَ النَّصَارَىٰ لَيْسَ الْيَهُودَ
عَلَى شَيْءٍ ۖ وَهُمْ يَشْكُونَ الْكِتَابَ
كَذِيلَكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مُثْلَ
قَوْلِهِمْ ۖ قَالَ اللَّهُ يَعْلَمُ بِيَتَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
قِيمًا كَانُوا فِيهِ يَعْلَمُونَ ⑫

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسِيْدَ اللَّهِ أَنْ
يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي حَرَابِهَا

उनके लिए उन (मस्जिदों) में ढरते हुए प्रवेश करने के सिवा और कुछ उचित न था । उनके लिए संसार में अपमान और परलोक में बहुत बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है ॥115॥

और पूर्व भी और पश्चिम भी अल्लाह ही का है । अतः जिस ओर भी तुम मुँह फेरो वहीं अल्लाह की झलक पाओगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत विस्तार प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ॥116॥

और वे कहते हैं, अल्लाह ने पुत्र बना लिया है । पवित्र है वह । बल्कि (उसकी शान तो यह है कि) जो कुछ आकाशों और धरती में है उसी का है । सब उसी के आज्ञाकारी हैं ॥117॥

वह आकाशों और धरती की उत्पत्ति का आरम्भ करने वाला है । और जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो वह उसे केवल “हो जा” कहता है तो वह होने लगता है और होकर रहता है ॥118॥

और वे लोग जो कुछ ज्ञान नहीं रखते, कहते हैं कि आखिर अल्लाह हमसे क्यों बात नहीं करता अथवा हमारे पास कोई चिह्न क्यों नहीं आता ? इसी प्रकार उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, इनकी बातों के समान बात की थी । उनके दिल परस्पर एक समान हो गये हैं । हम विश्वास करने वाले लोगों के लिए चिह्नों को सुस्पष्ट करके वर्णन कर चुके हैं ॥119॥

أُولَئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا
خَالِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خَرْجٌ وَلَهُمْ فِي
الآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑯

وَإِلَهُ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۖ فَإِيَّمَا تُؤْتُوا
فَتَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ ۷

وَقَالُوا إِنَّهُمْ هُنَّا بَشَرٌ ۖ بَلْ لَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلُّ لَهُ
قُلْتُوْنَ ۸

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَصَى
أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ مَنْ فِي كُونِ ۹

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يَكْلِمَ اللَّهُ
أَوْ تَأْتِيَنَا آيَةٌ ۖ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلُ قَوْلِهِمْ ۖ تَسَاءَلُهُ
قُلُوبُهُمْ ۖ قَدْ بَيَّنَا الْآيَاتِ لِقَوْنِ
لَيْوَقُونَ ۱۰

निश्चित रूप से हमने तुझे सत्य के साथ शुभ-समाचार देने वाला और सतर्क कारी के रूप में भेजा है और तुझ से नरकगामियों के बारे में पूछा नहीं जाएगा ॥120॥

और यहूदी और ईसाई तुझ से कदापि प्रसन्न नहीं होंगे जब तक तू उन के धर्म का अनुसरण न करे । तू कह दे कि निश्चित रूप से अल्लाह की (प्रदत्त) हिदायत ही वास्तविक हिदायत है । और यदि तेरे पास ज्ञान आ जाने के बाद भी तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करे (तो) अल्लाह की ओर से तेरे लिए कोई संरक्षक और कोई सहायक नहीं रहेगा ॥121॥

वे लोग जिन को हमने पुस्तक दी वस्तुतः वे उसका इस प्रकार पाठ करते हैं जिस प्रकार उसका पाठ करना उचित है । यहीं वे लोग हैं जो (वास्तव में) उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई भी उसका इनकार करे वही अवश्य घाटा उठाने वाले हैं ॥122॥ (रुकू ١٤)

हे बनी इस्माईल ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की और इस बात को भी कि मैंने तुम्हें समग्र जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की ॥123॥

और उस दिन से फ्रो जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम नहीं आयेगी । और न उससे कोई बदला स्वीकार किया जायेगा और न कोई सिफारिश उसे लाभ देगी । और न

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحُقْقِيْبَشِيرًا وَ نَذِيرًا ۝

وَ لَا تَسْأَلْ عَنْ أَصْحَابِ الْجَهَنَّمِ ۝

وَ لَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَمُونَ وَ لَا النَّصْرُى
حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مَا تَمَمَ ۝ قُلْ إِنَّ هَدَى اللَّهِ
هُوَ الْهَدَىٰ ۝ وَ لَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ
بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۝ مَالِكٌ مِنْ
اللَّهِ مَنْ وَلَيْ ۝ وَ لَا نَصِيرٌ ۝

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتَلَوَّنُهُ حَقًّا
تِلَاقُتِهِ ۝ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۝ وَ مَنْ
يَكْفُرُ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّرُورُونَ ۝

يَنِيفُ إِسْرَائِيلَ اذْكُرْ وَ انْعَمْتَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيْكُمْ وَ أَنِّي فَضَلَّتُكُمْ عَلَى
الْعَلِمِينَ ۝

وَ انْقُوْيُومَا لَا تَهْرِيْ نَفْسَ عَنْ لَفْسِ
شَيْئًا وَ لَا يَقْبَلْ مِنْهَا عَذْلٌ وَ لَا شَفْعَهَا

ही उन लोगों की कोई सहायता की जाएगी । 124।

और जब इब्राहीम की उसके रब्ब ने कुछ वाक्यों के द्वारा परीक्षा ली और उसने उन सब को पूरा कर दिया तो उसने कहा, निःसन्देह मैं तुझे लोगों के लिए एक महान इमाम बनाने वाला हूँ । उसने कहा, और मेरी संतान में से भी । उसने कहा, (हाँ परन्तु) अत्याचारियों को मेरा वादा नहीं पहुँचेगा । 125।*

और जब हमने (अपने) घर को लोगों के बार-बार इकट्ठा होने का और शांति का स्थान बनाया । और इब्राहीम के स्थान को नमाज़ का स्थान बनाओ । और हमने इब्राहीम और इस्माईल को निर्देश दिया कि तुम दोनों मेरे घर को परिक्रमा करने वालों और ए'तिकाफ़ करने वालों और रूकू करने वालों (तथा) सजदः करने वालों के लिए अत्यंत स्वच्छ एवं पवित्र बनाये रखो । 126।

और इब्राहीम ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! इसको एक शांतिमय और शांतिप्रद

شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنَصَّرُونَ ⑩

وَإِذَا بَتَّلَ إِبْرَاهِيمَ رَبَّهُ بِكَلِمَتٍ
فَأَتَمَّهُ ۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ
إِمَامًا ۖ قَالَ وَمَنْ ذُرَّ يَقِنِي ۖ قَالَ لَا يَئَالُ
عَهْدِ الظَّلِيمِينَ ⑪

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَنَابَةً لِلنَّاسِ وَأَمْنًا ۖ
وَالْخُدُوْا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مَصَلًّى ۖ
وَعِنْدَنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَنْ طَهَرَا
بَيْتَ لِلَّهِ لِغَفَرَانِ وَالْعَكْفِينَ وَالرَّئِعِ
السَّجُودُ ⑫

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمَ رَبِّي اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا

* इस आयत में हज़रत इब्राहीम अलै. की उस समय की परीक्षा का वर्णन किया गया है जब वे नवी बन चुके थे । जब इस परीक्षा में वे खेर उतरे तो उन्हें कहा गया कि आपको बहुत से लोगों का इमाम बनाया जायेगा । शीया सम्प्रदाय के लोग इसकी अशुद्ध व्याख्या करते हुए यह कहते हैं कि इमामत का दर्जा नुबुव्वत से भी ऊँचा है । क्योंकि एक नवी को यह कहा जा रहा है कि तुम्हें हम इमाम बना देंगे । यह केवल एक ढकोसला है ताकि इसके द्वारा शीया सम्प्रदाय के इमामों का दर्जा ऊँचा करके दिखाया जाये । वस्तुतः निरी इमामत नुबुव्वत से बड़ी नहीं होती, बल्कि वह इमामत जो नुबुव्वत से मिलती है वह बड़ी होती है । यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. को लोगों के लिए इमाम कहा गया है जिस का यह अभिप्राय है कि उन परीक्षाओं में खरा उतरने के कारण क़्यामत तक आने वाले लोगों के लिए उनको उदाहरण के रूप में पेश किया जायेगा ।

शहर बना दे और इसके निवासियों को जो अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाये प्रत्येक प्रकार के फलों में से जीविका प्रदान कर। उस ने कहा कि जो इनकार करेगा, उसे भी मैं कुछ अस्थायी लाभ पहुँचाऊँगा। फिर मैं उसे आग की अजाब की ओर जाने पर बाध्य कर दूँगा और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ॥127॥

और जब इब्राहीम उस विशेष घर की नींव को ऊँचा कर रहा था और इस्माईल भी (यह दुआ करते हुए कि) हे हमारे रब ! हमारी ओर से स्वीकार कर ले । निःसन्देह तू ही बहुत सुनने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है ॥128॥

और हे हमारे रब ! हमें अपने दो आज्ञाकारी भक्त बना दे और हमारी संतान में से भी अपना एक आज्ञाकारी समूह (पैदा कर दे) और हमें अपनी उपासनाओं और कुर्बानियों के ढंग सिखा और प्रायश्चित स्वीकार करते हुए हम पर झुक जा । निश्चित रूप से तू ही बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥129॥

और हे हमारे रब ! तू उनमें उन्हीं में से एक महान रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाये और उन्हें पुस्तक की शिक्षा दे और (उसका) तत्त्वज्ञान भी सिखाये और उनकी शुद्धि कर दे ।

إِنَّا وَأَرْزَقْنَا أَهْلَهُ مِنَ الشَّمَرْتِ مَنْ أَمْنَى
مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالنَّيْمَ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ
كَفَرَ فَأَمْتَعْنَاهُ قَلِيلًا ثُمَّ أُضْطَرَهُ إِلَى
عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمُصِيرُ ﴿١٧﴾

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمَ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ
وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ
الْسَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٨﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرَيْتَنَا^{۱۸}
أَمَّةً مُّسْلِمَةً لَكَ وَأَرْنَا مَنَاسِكَنَا وَثَبَّتْ
عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ ﴿١٩﴾

رَبَّنَا وَأَبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَسْلُوا
عَلَيْهِمْ أَيْتَكَ وَيَعْلَمُهُمْ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَيُرَزِّكُهُمْ إِنَّكَ أَنْتَ

نِإِسْنَدِهِ تُوْلِيٌّ هِيَ بُرْنَجِيٌّ بِرْمُوتِيٌّ وَالْوَالِيٌّ
(और) परम विवेकशील है । 130।

۱۶

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(रुक् ۱۵)

और जिसने अपने आप को मूर्ख बना दिया, उसके सिवा कौन इब्राहीम के धर्म से विमुख होता है ? और निःसन्देह हमने उस (अर्थात् इब्राहीम) को दुनिया में भी चुन लिया और निश्चित रूप से परलोक में भी वह सदाचारियों में से होगा । 131।

(याद करो) जब अल्लाह ने उससे कहा कि आज्ञाकारी बन जा । तो (सहसा) उसने कहा, मैं तो समस्त लोकों के रब्ब के लिए आज्ञाकारी हो चुका हूँ । 132।

और इसी बात का इब्राहीम ने अपने पुत्रों को और याकूब ने भी ज़ोर के साथ उपदेश किया कि हे मेरे प्यारे बच्चो ! निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम्हरे लिए इस धर्म को चुन लिया है । अतः तुम आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरना । 133।

क्या तुम उस समय उपस्थित थे, जब याकूब पर मृत्यु आयी ? जब उसने अपने बच्चों से पूछा कि तुम मेरे बाद किसकी उपासना करोगे ? उन्होंने कहा, हम आपके उपास्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इस्माइल और इसहाक के उपास्य की उपासना करते रहेंगे जो एक ही उपास्य है और हम उसी के आज्ञाकारी रहेंगे । 134।

وَمَنْ يَرْعَبْ عَنْ مَلَأَ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ
سَفَهَ نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَيْتَهُ فِي الدُّنْيَا
وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لِمَنِ الصَّلِحُونَ

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَشْلَمْتُ
لِرَبِّ الْعَلَمِينَ

وَوَضَعْتُ بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَنَيْهِ وَيَعْقُوبَ
إِبْرَاهِيمَ كَمْ الَّذِينَ
فَلَادَمُوتُنَ الْأَوَّلُوْنَ مُسْلِمُونَ

أَمْ كُنْتُمْ شَهِدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ
الْمَوْتَ إِذْ قَالَ لِتَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مَنْ
بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ الْهَكَ وَاللهُ أَبْلَكَ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَاسْحَقَ إِلَهًا وَاحِدًا
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ

यह एक सम्प्रदाय था जो गुजर चुका । जो उसने कमाया उसके लिये था और जो तुम कमाते हो तुम्हरे लिए है । और जो वे किया करते थे तुम उसके सम्बन्ध में पूछे नहीं जाओगे । 135।

और वे कहते हैं कि यहूदी अथवा ईसाई बन जाओ तो हिदायत पा जाओगे । तू कह दे (नहीं) बल्कि (अल्लाह की ओर) जुके हुए इब्राहीम के धर्मानुयायी बन जाओ (यही हिदायत प्राप्ति का साधन है) और वह शिर्क करने वालों में से कदापि नहीं था । 136।

तुम कह दो, हम अल्लाह पर ईमान ले आये और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो इब्राहीम और ईस्माईल और इसहाक और याकूब और (उसकी) संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा और ईसा को दिया गया और उस पर भी जो सब नवियों को उनके रब्ब की ओर से प्रदान किया गया । हम उनमें से किसी के बीच भेद-भाव नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं । 137।

अतः यदि वे उसी प्रकार ईमान ले आयें जैसे तुम इस पर ईमान लाये हो तो निःसन्देह वे भी हिदायत पा गये और यदि वे (इससे) मुँह फेर लें तो वे (आदत के अनुसार) सदैव मतभेद में लगे रहते हैं । अतः उनसे (निपटने के लिए) अल्लाह तेरे लिए

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْلُونَ عَمَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑩

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى تَهَذَّبُوا
قُلْ بُلْ مَلَةٌ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ⑪

قُولُوا أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزَلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنْزَلَ إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُنْزِلَ مُؤْسِى
وَعِيسَى وَمَا أُنْزِلَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ
لَا تَفَرَّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَلَا هُنْ
لَهُ مُسْلِمُونَ ⑫

فَإِنْ أَمْتَنُوا بِمِثْلِ مَا أَمْتَنُ بِهِ فَقَدْ اهْتَدُوا
وَإِنْ تَوَلُّوا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شَقَاقٍ

पर्याप्त होगा और वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 138।

अल्लाह का रंग अपनाओ और रंग में अल्लाह से उत्कृष्ट कौन हो सकता है और हम उसी की उपासना करने वाले हैं । 139।

तू कह दे कि क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ा करते हो ? जबकि वह हमारा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । और हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं और हम तो उसी के प्रति निष्ठावान हो गये हैं । 140।

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और (उसकी) संतान यहूदी थे अथवा ईसाई थे ? तू कह दे, क्या तुम अधिक जानते हो या अल्लाह ? और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो उस साक्ष्य को छिपाये, जो अल्लाह की ओर से उसके पास (अमानत) है और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं है । 141।

ये (भी) एक समुदाय था जो गुजर चुका । जो उसने कमाया उसके लिए था और जो तुमने कमाया तुम्हारे लिए है । और जो वे करते रहे, उसके बारे में तुमसे पूछ-ताछ नहीं की जाएगी । 142।

(रुक् 16/16)

فَيَكُفِّرُنَّهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ

صِبْغَةُ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنَ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً

وَنَحْنُ لَهُ عِدُّونَ ۝

قُلْ أَتَحَاجُجُنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَغْمَانًا وَلَكُمْ أَغْمَالُكُمْ
وَنَحْنُ لَهُ مُحْلِصُونَ ۝

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَتَّقُوبَ وَالْأَنْبَاطَ كَانُوا
هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۝ قُلْ إِنَّمَا أَعْلَمُ أَمَّا
اللَّهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَفَمْ شَهَادَةَ
عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِعَافٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ۝

إِنْكَ أَمَّةٌ قَدْ خَلَتٌ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

लोगों में से मूर्ख अवश्य कहेंगे कि उनको उस किला से किस बात ने हटा दिया है जिस पर वे (पहले) कायम थे ? तू कह दे पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं । वह जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है । 143।

और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यमार्ग सम्प्रदाय^{*} बना दिया ताकि तुम लोगों पर निरीक्षक बन जाओ और रसूल तुम पर निरीक्षक बन जाये । और जिस किला पर तू (पहले) था उसे हमने केवल इसलिए निर्धारित किया था ताकि हम उसे जान लें जो रसूल का आज्ञापालन करता है उसके मुकाबिले पर जो अपनी एडियों के बल लौट जाता है । और यद्यपि यह बात बहुत भारी थी परन्तु उन पर (नहीं) जिन को अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमानों को नष्ट कर दे । निःसन्देह अल्लाह लोगों पर परम कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है । 144।

तेरे चेहरे का आकाश की ओर बार-बार फिरना निश्चित रूप से हम देख चुके थे । अतः आवश्यक था कि हम तुझे उस किला की ओर फेर दें जिसे तू पसंद करता था । अतएव अपना मुँह मस्जिद-ए-हराम की ओर फेर ले और तुम जहाँ

سَيَقُولُ الْسَّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وُلْفَهُ
عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ
الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهُدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى
صِرَاطِ مُسْتَقِيمٍ ⑩

وَكَذِلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أَمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
شَهَادَةَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونُ الرَّسُولُ
عَلَيْهِ كُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي
كُنْتُ عَلَيْهَا إِلَّا لِتَعْلَمَ مَنْ يَتَبَعُ
الرَّسُولَ مِمَّنْ يَتَقْلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ وَإِنْ
كَانَتْ لَكِبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ
وَمَا كَانَ اللَّهُ يُضِيعُ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑪

قَدْرَى تَقْلِبَ وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ
فَلَوْلَيْلَكَ قِبْلَةَ تَرْضَهَا فَوْلَ وَجْهَكَ
شَطَرَ الْمَسْجِدِ الْعَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ

* प्रत्येक कार्य में मध्यमार्ग उत्तम है । (हदीस)

कहीं भी हो उसी की ओर अपने मुँह फेर लो । और निःसन्देह जिन लोगों को पुस्तक दी गई है वे अवश्य जानते हैं कि यह उनके रब्ब की ओर से सत्य है और जो वे करते हैं अल्लाह उससे अनजान नहीं है ॥145॥

और जिन्हें पुस्तक दी गई थी यदि तू उन लोगों के पास सभी चिह्न ले आता तब भी वे तेरे क़िब्ला का अनुसरण न करते और न ही तू उनके क़िब्ला का अनुसरण करने वाला है । और उन में से कई, कई अन्यों के क़िब्लों का भी अनुसरण नहीं करते । और इसके बाद भी कि तेरे पास ज्ञान आ चुका है, यदि तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करेगा तो अवश्य अत्याचारियों में से हो जाएगा ॥146॥

वे लोग जिन्हें हमने पुस्तक दी है वे उसे (अर्थात् रसूल को, उसमें ईश्वरीय संकेतों को देखकर) उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं । और निश्चित रूप से उनमें एक ऐसा गुट भी है (जिसके सदस्य) सत्य को छिपाते हैं हालाँकि वे जानते हैं ॥147॥

तेरे रब्ब की ओर से (निःसन्देह यह) सत्य है । अतः तू सन्देह करने वालों में से कदापि न बन ॥148॥ (रुक् ١٧)

और हर एक के लिए एक लक्ष्य है जिसकी ओर वह ध्यान देता है । अतः पुण्यकर्म में एक दूसरे से आगे बढ़

فَوَلُوا وَجْهَكُمْ شَطَرَةً وَإِنَّ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رِّبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَايَةٍ عَمَّا يَعْلَمُونَ ⑩

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ
إِيمَانِكَ مَا تَبْعُدُوا قِبْلَتَكَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ
قِبْلَتَهُمْ ۝ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۝
وَلَئِنْ أَتَبْعَثَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۝ إِنَّكَ إِذَا لَمْ
الظَّلِمِينَ ⑪

الَّذِينَ أَتَيْتَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا
يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۝ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ
لِيَكُمُونَ الْحَقُّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ⑫

الْحَقُّ مِنْ رِّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ⑬
وَلِكُلِّ ۝ وِجْهَةٌ هُوَ مَوْلَيْهَا فَاسْتِقْوَا

जाओ। तुम जहाँ कहीं भी होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करके ले आयेगा। निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 149।

और जहाँ कहीं से भी तू निकले अपना ध्यान मस्जिद-ए-हराम ही की ओर फेर और वह निःसन्देह तेरे रब्ब की ओर से सत्य है। और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं। 150।

और जहाँ कहीं से भी तू निकले अपना ध्यान मस्जिद-ए-हराम ही की ओर फेर और जहाँ कहीं भी तुम हो उसी की ओर अपना ध्यान फेरो ताकि तुम्हारे चिरूद्ध लोगों के लिए कोई तर्क न बने। सिवाय उन लोगों के जिन्होंने उन में से अत्याचार किया। अतः उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत को पूरा करूँ और तुम हिदायत पा जाओ। 151।

जैसा कि हमने तुम्हारे अंदर तुम्हीं में से रसूल भेजा है जो तुम्हें हमारी आयतों को पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पवित्र करता है और तुम्हें पुस्तक और (उसका) तत्त्वज्ञान सिखाता है और तुम्हें उन बातों की शिक्षा देता है जिनका तुम्हें पहले कुछ ज्ञान नहीं था। 152।

अतः मेरा स्मरण किया करो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा और मेरी कृतज्ञता करो और मेरी कृतज्ञता न करो। 153।

(रुक् 18)

الْخَيْرَتِ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ۝
اللَّهُ جَمِيعًا۝ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ۝ ۱۴۹

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوْلٌ وَجْهَكَ سَطْرٌ
الْمَسْجِدُ الْعَرَامٌ۝ وَإِذْهَ لَهُ عَقْقٌ مِنْ رَيْكٌ۝
وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ۝ ۱۵۰

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوْلٌ وَجْهَكَ سَطْرٌ
الْمَسْجِدُ الْعَرَامٌ۝ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوْلُوا
وَجُوهَكُمْ سَطْرَةٌ۝ لَكُلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَيْكُمْ حَجَةٌ۝ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْهُمْ۝ فَلَا تَحْشُرُهُمْ وَاقْتُلُونَ۝
وَلَا تَقْتُلْ نَعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ۝ ۱۵۱

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا۝ وَنَذَرْنَاهُ
عَلَيْكُمْ أَيْتَنَا وَيَزَّنَاهُمْ وَيَعْلَمُهُمْ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيَعْلَمُهُمْ مَا لَمْ
تَكُونُوا تَعْلَمُونَ۝ ۱۵۲

فَاذْكُرُونِيْ أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا إِنِّي
وَلَا تَكْفُرُونِيْ ۝ ۱۵۳

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो !
(अल्लाह से) धैर्य और नमाज के साथ
सहायता माँगों । निःसन्देह अल्लाह धैर्य
करने वालों के साथ है ॥154॥

और जो अल्लाह की राह में वध किये
जायें उनको मुर्दे न कहो बल्कि (वे
तो) जीवित हैं, परन्तु तुम समझ नहीं
रखते ॥155॥

और हम तुम्हें अवश्य कुछ भय और
कुछ भूख और कुछ धन और जन
तथा फलों की हानी के द्वारा परीक्षा
करेंगे। और धैर्य करने वालों को सु-
समाचार दे दे ॥156॥

वे लोग जिन पर जब कोई विपत्ति
आती है तो वे कहते हैं, निश्चित
रूप से हम अल्लाह ही के हैं और
निःसन्देह हम उसी की ओर लौटकर
जाने वाले हैं ॥157॥

यही लोग हैं, जिन पर उनके रब्ब
की ओर से बरकतें हैं और कृपा है
और यही वे लोग हैं जो हिदायत
पाने वाले हैं ॥158॥

निःसन्देह सफा और मर्वा अल्लाह के
चिह्नों में से हैं । अतः जो कोई भी इस
गृह का हज्ज करे अथवा उम्रा करे तो
उसे इन दोनों की परिक्रमा करने पर
कोई पाप नहीं । और जो अतिरिक्त
उपासना स्वरूप नेकी करना चाहे तो
निश्चित रूप से अल्लाह परम
गुणग्राही (और) स्थायी ज्ञान रखने
वाला है ॥159॥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِيْنُوا بِالصَّابِرِ
وَالصَّلُوةُ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ⑩

وَلَا تَقُولُوا إِنَّمَّا يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَفْوَاتٌ بَلْ أَحْيَا عَوْلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ⑪

وَلَئِنْ بُلُوْنَكُمْ بِشُعْرٍ مِّنَ الْخَوْفِ
وَالْجُحْرِ وَتَقْصِيسٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفَسِ
وَالثَّمَرَاتِ ۖ وَبَيْسِرُ الصَّابِرِينَ ⑫

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ لَا قَالُوا
إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَجُعُونَ ⑬

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۗ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهَمَّدُونَ ⑭

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَابِ اللَّهِ فَمَنْ
حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اغْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ
يَطَوَّفَ بِهِمَا ۖ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ
اللَّهَ شَاكِرٌ عَلَيْهِمْ ⑮

निश्चित रूप से वे लोग जो उसे छिपाते हैं जिसे हम ने सुस्पष्ट चिह्नों और पूर्ण हिदायत में से उतारा है, इस के बाद भी कि हमने उसको पुस्तक में लोगों के लिए सुस्पष्ट करके वर्णन कर दिया था। यही वे हैं जिन पर अल्लाह ला'नत करता है और उन पर सभी ला'नत करने वाले भी ला'नत करते हैं। 160।

उन लोगों के सिवा जिन्होंने प्रायश्चित किया और सुधार किया और (अल्लाह के चिह्नों को) खोल-खोल कर वर्णन किया। अतः यही वे लोग हैं जिन पर मैं प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक़ूँगा और मैं बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला हूँ। 161।

निश्चित रूप से वे लोग जिन्होंने इनकार किया और इनकार ही की अवस्था में मर गये, यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह की और फरिश्तों की और सब लोगों की ला'नत है। 162।

इस (ला'नत) में वे एक लम्बे समय तक रहने वाले होंगे। उन पर से अज्ञाब को हल्का नहीं किया जाएगा और न ही उन्हें छूट दी जाएगी। 163।

और तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है। वही रहमान (और) रहीम के सिवा कोई उपास्य नहीं। 164। (रुक् ١٩)

निःसन्देह आकाशों और धरती की सृष्टि में और रात और दिन के अदलने-बदलने में और उन नौकाओं में जो समुद्र में उस

إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبُيْتِ
وَالْهَلْدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَهُ لِلنَّاسِ فِي
الْكِتَابِ ۖ أُولَئِكَ يَلْعَبُونَ اللَّهَ وَيَلْعَبُونَ
الْعَنُونَ ۖ

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَئِكَ
أَتُؤْتُبْ عَلَيْهِمْ ۝ وَأَنَا التَّوَابُ الرَّحِيمُ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَا نَوْا وَهُمْ كُفَّارٌ
أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

خَلِدِينَ فِيهَا لَا يَخْفَفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

وَالْهَكْمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَآخِرَلَافِ الْأَيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْقَلْمَلَثِ الَّتِي

(सामान) के साथ चलती हैं जो लोगों को लाभ पहुँचाता है। और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृतावस्था के बाद जीवित कर दिया और उसमें प्रत्येक प्रकार के चलने फिरने वाले जीवधारी फैलाये और इसी प्रकार हवाओं की दिशा बदल-बदल कर चलाने में और बादलों में जो आकाश और धरती के बीच सेवा में नियुक्त हैं, बुद्धि से काम लेने वाले लोगों के लिए चिह्न हैं । 1165।

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के मुकाबले पर (उसका) साज्जीदार बना लेते हैं। वे अल्लाह से प्रेम करने की भाँति उनसे प्रेम करते हैं। जबकि वे लोग जो ईमान लाये, (प्रत्येक प्रेम से) अल्लाह के प्रेम में अधिक दृढ़ हैं। और काश ! वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया समझ सकें, जब वे अज्ञाब को देखेंगे कि समस्त शक्ति (सदा से) अल्लाह ही की है और यह कि अल्लाह अज्ञाब (देने) में बहुत कठोर है । 1166।

जिन लोगों का अनुसरण किया गया, जब वे उन लोगों से विरक्ति प्रकट करेंगे जिन्होंने (उनका) अनुसरण किया और वे अज्ञाब को देखेंगे जबकि (मुक्ति के) सब साधन उनसे कट चुके होंगे । 1167।

और वे लोग जिन्होंने अनुसरण किया, कहेंगे, काश ! हमें एक और अवसर मिलता तो हम उनसे उसी प्रकार

تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَخْيَاهُ
الْأَرْضُ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَ فِيهَا مِنْ كُلِّ
ذَآبَةٍ ۝ وَ تَصْرِيفُ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ
الْمَسْحَرُ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَرَى
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑩

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحِبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ
أَمْوَالُهُمْ أَشَدُ حِبَّةً لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ
ظَلَمُوا إِذَا يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا ۝ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ⑪

إِذْ تَبَرَّا الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا
وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَنَقَطَعَتْ بِهِمْ
الْأَسْيَابُ ⑫

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَكَ كَرَّةً

विरक्ति प्रकट करते जिस प्रकार उन्होंने हमसे विरक्ति प्रकट की है। इसी प्रकार अल्लाह उनके कर्मों को उनके लिए खेद (का कारण) बनाकर दिखाएगा और वे (उस) आग से निकल नहीं सकेंगे ॥168। (रुकू 20)

हे लोगो ! जो धरती में है उसमें से हलाल और पवित्र खाओ और शैतान के पदचिह्नों के पीछे न चलो । निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ॥169।

निश्चित रूप से वह तुम्हें केवल बुराई और अश्लील बातों का आदेश देता है तथा यह भी कि तुम अल्लाह के विरुद्ध ऐसी बातें कहो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं ॥170।

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसका अनुसरण करो तो वे कहते हैं, हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया । क्या ऐसी अवस्था में भी (वे उनका अनुसरण करेंगे) जबकि उनके पूर्वज कोई बुद्धि नहीं रखते थे और हिदायत प्राप्त नहीं थे ? ॥171।

और जिन लोगों ने इनकार किया उनका उदाहरण उस व्यक्ति की भाँति है जो चीख-चीख कर उसे पुकारता है जो सुनता नहीं । (यह केवल) एक पुकार और आवाज़ (के अतिरिक्त कुछ भी नहीं) है । (ऐसे लोग) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं । अतः वे कोई बुद्धि नहीं रखते ॥172।

فَتَبَرَّأُ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُ وَمِنْهُمْ كَذَلِكَ
يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَتِ عَلَيْهِمْ
وَمَا هُمْ بِخَرْجِينَ مِنَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُّ أُمَّةٍ فِي الْأَرْضِ حَلَّاً
صَطِيبًا ۝ وَلَا تَشْبِعُوا بِحَطْوَتِ الشَّيْطَنِ ۝ إِنَّهُ
لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوُءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَتَتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا
بِلْ نَتَّبِعُ مَا أَقْرَبَنَا عَلَيْهِ أَبَأْنَا ۝ أَوْ لَوْ كَانَ
أَبَا وَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا ۝ وَلَا يَهْتَدُونَ ۝

وَمَثُلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثُلِ الَّذِي يَسْعَى
بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَادُعَاءَ ۝ وَنِدَاءَ ۝ صَرْخَاءَ
بِكُمْ عَنِّي فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! जो हमने तुम्हें जीविका दी है उसमें से पवित्र वस्तुओं को खाओ और अल्लाह की कृतज्ञता प्रकट करो, यदि तुम उसी की उपासना करते हो । 173।

उसने तुम पर केवल मुदर्दर और खून और सूअर का मांस तथा उसे हराम किया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो । हाँ, जो (भूख से) अत्यधिक विवश हो गया हो, लालच रखने वाला न हो और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो, उस पर कोई पाप नहीं । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 174।

निःसन्देह वे लोग जो उसे छिपाते हैं जिसे अल्लाह ने पुस्तक में से उतारा है और उसके बदले अल्प मूल्य ग्रहण कर लेते हैं, यही वे लोग हैं जो अपने पेटों में आग के सिवा कुछ नहीं झोकते और क्यामत के दिन अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और न ही उनको पवित्र करेगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । 175।

यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले पथब्रष्टता को और क्षमा के बदले अज्ञाब को खरीद लिया । अतः आग पर ये क्या ही धैर्य करने वाले होंगे ! 176।

यह इस लिए होगा कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा है और जिन लोगों ने पुस्तक के बारे में मतभेद

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُّوا مِنْ طَيْبَاتِ
مَا رَزَقْنَاكُمْ وَأَشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
إِيمَانَهُ تَعْبِدُونَ ⑭

إِنَّمَا حَرَمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْسَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخُنْزِيرِ وَمَا أَهْلَبَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ
أُضْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ ۖ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَأَ
عَلَيْهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑯

إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ
الْكِتَابِ وَيُشَرِّفُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ
أُولَئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بَطْوَنِهِمْ إِلَّا
الثَّارِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمةِ
وَلَا يُرِيكُنْهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑯

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُ الْأَصْلَةَ بِالْهَلْدِي
وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۖ فَمَا أَصْبَرَهُمْ
عَلَى التَّارِ ⑯

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَرَأَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۖ
وَإِنَّ الَّذِينَ احْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي

किया है, वे घोर विरोध में (लगे हुए) हैं । 177। (रुक्त 21)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरों को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेरो । बल्कि नेकी उसी की है जो अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर और फरिश्तों पर और पुस्तक पर तथा नवियों पर ईमान लाये । और उससे प्रेम करते हुए निकट सम्बन्धियों को और अनाथों को और दरिद्रों को और यात्रियों को और याचकों को तथा दासों को मुक्त करने के लिए धन दे । और जो नमाज को कायम करे और ज़कात दे और वे जो जब प्रतिज्ञा करते हैं तो अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और (वे जो) दुःखों और कष्टों में तथा युद्ध के बीच में भी धैर्य करने वाले हैं । यही वे लोग हैं जिन्होंने सच्चाई को अपनाया और यही वास्तविक मुत्तकी हैं । 178।

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! हत्या किये गये व्यक्तियों के बारे में क़िसास (न्यायोचित बदला लेना) तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है । स्वतंत्र व्यक्ति का बदला स्वतंत्र व्यक्ति के समान, दास का बदला दास के समान और स्त्री का बदला स्त्री के समान (लिया जाये) । और वह जिसे उसके भाई की ओर से कुछ क्षमा कर दिया जाये तो फिर न्यायपूर्ण शैली का अनुसरण करते हुए और उपकार पूर्वक उसको (क्षतिपूर्ति की राशि) चुकाई

لِعْنٌ

شَقَاقٍ بَعْيَدٍ

لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُؤْتُوا وَجْهَكُمْ قَبْلَ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ أَمْنَى
بِاللَّهِ وَإِلَيْهِ الْيَوْمُ الْآخِرُ وَالْمَلِكَةُ وَالْكِتَابُ
وَالثَّرَيْقَنْ وَأَتَى الْمَالَ عَلَى حَمْدِهِ ذَوِي
الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمُسْكِينَ وَابْنَ
السَّيْئِلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَأَتَى الرَّكْوَةَ وَالْمُؤْمَنُ
بِعَهْدِهِ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرُونَ فِي
الْبُلَاسَاءِ وَالضَّرَاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ
أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُتَّقُونَ ⑤

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ
فِي الْقَتْلِ إِنَّ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ
وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عَفَنَ لَهُ مِنْ أَخْيَهُ
شَيْءٌ فَإِنَّمَا يُعَذِّبُ بِالْمَعْرُوفِ وَآذِنَ اللَّهِ
بِإِحْسَانِ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ

जानी चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से छूट और कृपा है। अतः इसके बाद जो व्यक्ति अत्याचार करे तो उसके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है। 179। और हे बुद्धिमान लोगो ! किसास (की व्यवस्था) में तुम्हारे लिए जीवन है। ताकि तुम तक़वा धारण करो। 180।

जब तुम में से किसी पर मृत्यु आये, यदि वह (उत्तराधिकार में) कोई धन-सम्पत्ति छोड़ रहा हो तो माता-पिता और निकट सम्बन्धियों के पक्ष में नियमानुसार वसीयत करना तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है। मुत्तकियों के लिए यह आवश्यक है। 181।

अतः जो उस को सुन लेने के बाद उसे परिवर्तित करे तो जो उसे परिवर्तित करते हैं उसका पाप उन्हीं पर होगा। निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 182।

अतः जो किसी वसीयत किये हुए व्यक्ति से (उसके) अनुचित झुकाव अथवा पाप में पड़ जाने की आशंका रखता हो, फिर वह उन (उत्तराधिकारियों) के बीच समझौता कर दे तो उस पर कोई पाप नहीं। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है। 183। (रुकू 22)

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं जिस प्रकार तुम से पूर्ववर्ती लोगों पर

وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَيْمُونٌ^⑩

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَأْوِي
الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقَوْنَ^⑪
كَتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمْ
الْمَوْتَ أَنْ تَرَكَ حَيْرًا^⑫ الْوَصِيَّةَ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ
حَشَاعِلَ الْمُتَّقِينَ^⑬

فَمَنِ بَدَأَهُ بَعْدَ مَا سِمَعَهُ فَإِنَّمَا إِنْمَاءُ عَلَى
الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِ^⑭

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُؤْسِى جَنَّفًا أَوْ أَنْجَما
فَأَصْلَحَ بَيْتَهُ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ^⑮ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ^⑯

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كَتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ

अनिवार्य कर दिये गये थे ताकि तुम
तकवा धारण करो । 184।

गिनती के कुछ दिन हैं । अतः जो भी
तुम में से रोगी हो अथवा यात्रा पर हो
तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े
दूसरे दिनों में पूरे करे । और जो लोग
इसकी शक्ति रखते हों, उन पर एक
दरिद्र को भोजन कराना फ़िद्यः
(प्रायश्चित्त स्वरूप) है । अतः जो कोई
भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह
उसके लिए बहुत अच्छा है । और यदि
तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े
रखना तुम्हारे लिए उत्तम है । 185।*

रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति
के लिए कुरआन को महान् हिदायत के
रूप में और ऐसे स्पष्ट चिह्नों के रूप में
उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण
और सत्य और असत्य में प्रभेदक विषय
हैं । अतः जो भी तुम में से इस महीने को
देखे तो इसके रोज़े रखे और जो रोगी हो
अथवा यात्रा पर हो तो दूसरे दिनों में
गिनती पूरी करनी होगी । अल्लाह
तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और
तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और
चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती
को पूरा करो और उस हिदायत के कारण

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١﴾

آيَاتِ مَعْدُودَاتِ فَمَنْ كَانَ مُنْكِرٌ
مَرِيْضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةُ مِنْ آيَاتِ
أَخْرَى وَعَلَى الَّذِينَ يَطْبِقُونَهُ فِدْيَةٌ
طَعَامٌ مُشْكِرٌ فَمَنْ تَكَوَّعَ حَيْرًا فَهُوَ
حَيْرَ لَهُ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنَّ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢﴾

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ
هُدًى لِلنَّاسِ وَبِئْسَتِ مِنَ الْمُهَاجِرَ
وَالْفُرَقَانِ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلِيُصْمِنْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ
فَعِدَّةُ مِنْ آيَاتِ أَخْرَى يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ
الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ
وَلِتُكْمِلُوُا الْعِدَّةَ وَلِتُكْبِرُوا اللَّهَ عَلَى مَا

* इस आयत में अरबी शब्द *بُرْتीकُون* न हूँ के दो अर्थ हैं । एक वे जो शक्ति रखते हैं और एक वे जो
शक्ति नहीं रखते । क्योंकि इस शब्द में करने और छोड़ देने के दोनों अर्थ पाये जाते हैं । इसका अर्थ
यह है कि प्रथम वे लोग जो सामयिक विवशता अथवा रोग के कारण रोज़ः न रख सकें, परं वैसे रोज़े
की शक्ति रखते हैं, उनको फ़िद्यः देना चाहिए, हाँ उन्हें दूटे हुए रोज़े बाद में रखने होंगे । द्वितीय वे
लोग जो शक्ति ही नहीं रखते, उनके लिए फ़िद्यः पर्याप्त होगा तथा बाद में रोज़े नहीं रखने होंगे ।

अल्लाह की बड़ाई खान करो जो उसने तुम्हें प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ॥186।

और जब मेरे भक्त तुझ से मेरे बारे में प्रश्न करें तो निश्चित रूप से मैं (उनके) निकट हूँ । जब दुआ करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ का उत्तर देता हूँ । अतः चाहिए कि वे मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लायें ताकि वे हिदायत पायें ॥187।

रोज़ों (के महीने) की रातों में अपनी पत्नियों से सम्बन्ध बनाना तुम्हारे लिए वैध किया गया है । वे तुम्हारे वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो । अल्लाह जानता है कि तुम अपनी इच्छाओं का दमन करते रहे हो । अतः वह तुम पर कृपापूर्वक झुका और तुम्हें क्षमा कर दिया । अतएव अब उनके साथ (निस्संकोच) दांपत्य सम्बन्ध स्थापित करो और जिसे अल्लाह ने तुम्हारे पक्ष में लिख दिया है उसकी कामना करो और खाओ पियो, यहाँ तक कि प्रभात (उदय) के कारण तुम्हारी दृष्टि में (सुबह की) सफेद धारी (रात की) काली धारी से पृथक हो जाये । फिर रोज़ः को रात तक पूरा करो । और जब तुम मस्जिदों में ऐंतिकाफ बैठे हो तो उन से दांपत्य सम्बन्ध स्थापित न करो । ये अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं, अतः उनके निकट भी न जाओ । इसी प्रकार अल्लाह अपनी

هَذِئُكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑩

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ^٦
أَجِيبُ دُغْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ^٧
فَلَيَسْتَحِيْوَا لِّيٌ وَلَيُؤْمِنُوا بِيٌ لَعَلَّهُمْ^٨
يَرْسَدُونَ ⑨

أَحَلَّ لَكُمْ يَلِةَ الصِّيَامِ الرَّفِقَ إِلَى
نِسَاءِكُمْ ۝ هُنَّ لِيَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِيَاسُ
لَهُنَّ ۝ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَحْتَانُونَ
أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَاهُنَّكُمْ^٩
فَإِذَا نَبَشَرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ
لَكُمْ وَكُلُّوْا وَأَشْرَبُوا حَتَّىٰ يَسْبِئَنَ لَكُمْ
الْخِيطَ الْأَبِيسَ مِنَ الْخِيطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۝ لَمَّا أَتَيْمُوا الصِّيَامَ إِلَى الْيَلِٰ وَلَا
تَبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَكْفُونَ ۝ فِي
الْمَسْجِدِ ۝ تِلْكَ حَدُودُ اللَّهِ فَلَا
تَقْرَبُوهَا ۝ كَذَلِكَ يَبْيَسُ اللَّهُ أَيْتَهُ

आयतों को लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि वे तकन्वा धारण करें । 188।*

और अपने ही धन को परस्पर एक दूसरे के बीच झूठ और छल से न खाया करो । और न तुम उन्हें (इस उद्देश्य से) अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करो कि तुम पाप पूर्वक लोगों के (अर्थात् राष्ट्रीय) धन-सम्पत्ति में से कुछ खा सको हालाँकि तुम (भली-भाँति) जानते हो । 189। (रुकू 23)

वे तुझ से प्रथम तीन रातों की चन्द्रमाओं के सम्बन्ध में पूछते हैं । तू कह दे कि ये लोगों के लिए समय निर्धारण और हज्ज (के निर्धारण) के भी साधन हैं । और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में उनके पिछवाड़ों से प्रवेश करो बल्कि नेकी उसी की है जो तकन्वा धारण करे । और घरों में उनके दरवाजों से प्रवेश किया करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम सफल हो जाओ । 190।

और अल्लाह के मार्ग में उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हैं और अत्याचार न करो । निःसन्देह अल्लाह अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता । 191।

* तुम अपनी इच्छाओं का दमन करते रहे हो से यह अभिप्राय है कि सहाबा रजि. रमजान की रातों में दाम्पत्य सम्बन्ध को भी त्याग देते थे । इस आयत में इसकी अनुमति दी गई है । दूसरी आयत में केवल ए'तिकाफ़ में इसका निषेध किया गया है ।

इसी प्रकार यहाँ सफेद धागे और काले धागे का उल्लेख किया गया है । इसका यह अर्थ नहीं कि अन्धेरे में जाकर सफेद और काले धागे में प्रभेद करो । बल्कि इसका यह अभिप्राय है कि उषाकाल में जो उजाला फैलता है, जब उसकी पहली रश्मि दिखनी शुरू हो जाये तो उस समय सहरी (रोज़ः आरम्भ करने के लिए प्रातः पूर्व का शोजन) का समय समाप्त हो जाएगा ।

لِلثَّالِثِ لَعَلَمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَ كُنْجُرَاتِكُمْ بِإِنْبَاطِ
وَتَدْلُوْا بِهَا إِلَى الْحَكَامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيْقًا
مِنْ أَمْوَالِ الثَّالِثِ بِالْأَثْمِ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

يَئِلُونَكَ عَنِ الْأَهْلَةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ
لِلثَّالِثِ وَالْحَيْثِ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
بِالْبِيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مِنْ
إِنْقَاعٍ وَأُتُوا بِالْبِيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَأَتَقْوَا
اللَّهَ لَعَلَكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿٦﴾

وَقَاتِلُوْا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَقْاتِلُونَكُمْ
وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِلِينَ ﴿٧﴾

और (युद्ध के समय) जहाँ कहीं भी तुम उनको पाओ उनकी हत्या करो और उन्हें वहाँ से निकाल दो जहाँ से तुम्हें उन्होंने निकाला था और फितना (उपद्रव) हत्या से अधिक भारी होता है। और उन से मस्जिद-ए-हराम के निकट युद्ध न करो जब तक कि वे तुम से वहाँ युद्ध न करें। अतः यदि वे तुम से युद्ध करें तो फिर तुम उनकी हत्या करो। काफिरों का ऐसा ही प्रतिफल होता है। |192|

अतः यदि वे रुक जायें तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। |193|

और उन से युद्ध करते रहो, यहाँ तक कि उपद्रव बाकी न रहे और धर्म (स्वीकार करना) अल्लाह के लिए हो जाए। अतः यदि वे रुक जाएँ तो (ज्यादती करने वाले) अत्याचारियों के सिवा किसी पर ज्यादती नहीं करनी। |194|*

इज्जत वाला महीना इज्जत वाले महीने का बदल है और सभी इज्जत वाली चीज़ों (के अपमान) का बदला लिया जाएगा। अतः जो तुम पर ज्यादती करे तो तुम भी उस पर वैसी ही ज्यादती करो जैसी उसने तुम पर की हो और अल्लाह से डरो और जान लो कि निःसन्देह अल्लाह मुत्तकियों के साथ है। |195|**

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ شَقَقْتُمُوهُ
وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ
وَالْفَتْنَةُ أَشَدُّ مِنِ الْقَتْلِ وَلَا
تُقْتَلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ
يُقْتَلُوكُمْ فِيهِ فَإِنْ قُتْلُوكُمْ
فَاقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكُفَّارِ^⑩

فَإِنِ اتَّهَمُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ^⑪

وَقْتَلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الْدِينُ لِلَّهِ فَإِنِ اتَّهَمُوا فَلَا عَذَابَ
إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ^⑫

الْشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ
وَالْحُرْمَةُ قِصَاصٌ مَّنْ اغْتَلَى
عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اغْتَلَى
عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُقْتَيِّنَ^⑬

* इस आयत में उन लोगों से युद्ध करने का आदेश है जो लोगों को धर्मत्याग करने पर बाध्य करते हैं। अतः जो तलवार के बल पर धर्मत्याग करने पर बाध्य करें उनसे प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना उचित है, यहाँ तक कि वे इस से रुक जाएँ।

** जिन महीनों में युद्ध करना हराम ठहराया गया है, यदि कोई विरोधी अथवा गैर मुस्लिम इन का→

और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों से तबाही में न डालो और उपकार करो । निःसन्देह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है । 196।

और अल्लाह के लिए हज्ज और उम्रा को पूरा करो । अतः यदि तुम रोक दिये जाओ तो जो भी कुर्बानी उपलब्ध हो (कर दो) और अपने सिरों को न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपनी (ज़िवह होने के) निर्धारित स्थान तक पहुँच न जाए । अतः यदि तुम में से कोई बीमार हो अथवा उसके सिर में कोई कष्ट हो तो कुछ रोजे रखकर अथवा दान देकर या कुर्बानी पेश करके फ़िदयः (बदला) देना होगा । अतः जब तुम निरापद (स्थिति) में आ जाओ तो जो भी उम्रा को हज्ज से मिलाकर लाभ उठाने का इरादा करे तो (चाहिए कि) जो भी उसे कुर्बानी उपलब्ध हो (कर दे) और जो (सामर्थ्य) न रखे तो उसे हज्ज के बीच तीन दिन के रोजे रखने होंगे और जब तुम वापस चले जाओ तो सात (रोजे रखने होंगे) ये दस (दिन) पूरे हुए । ये (आदेशावली) उसके लिए हैं जिसके परिवार वाले मस्जिद-ए-हराम के निकट निवास न करते हों । और अल्लाह का तक़वा धारण करो और

وَأَنْتُقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُنْقُوا
بِإِيمانِكُمْ إِلَى الظُّلْمَةِ وَأَحِسْنُوا
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ⑯

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمَرَةَ إِلَيْهِ فَإِنْ
أَخْصَرْتُمْ فَمَا أَشْيَسَرَ مِنَ الْهَدِيِّ
وَلَا تُحِلِّقُوا رُؤْءِيَّ وَسَكُونَ حَتَّىٰ يَبْلُغَ
الْهَدِيِّ مَحِلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مُّرِنِّصًا
أُوبِهَ آذِي قُنْزَاسِهِ فَقِدْيَهُ مِنْ صِيَامِ
أُوْصَدَقَةِ أُوْنُسَلِكٍ فَإِذَا أَمْسَتُمْ
فَمَنْ تَمَّشَ بِالْعُمَرَةِ إِلَى الْحَجَّ فَمَا
أَشْيَسَرَ مِنَ الْهَدِيِّ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ
صِيَامَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجَّ وَسَبْعَةَ إِذَا
رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشَرَةَ كَامِلَهُ ذَلِكَ
لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلَهُ حَاضِرِيَ الْمَسْجِدِ
الْعَرَامِ وَأَتَقْوَالَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

←समान न करते हुए मुसलमानों से युद्ध करेगा तब इन महीनों में भी युद्ध करना उचित होगा । क्योंकि मुसलमानों के लिए यह कदायि आवश्यक नहीं कि वे बिना अपनी प्रतिरक्षा किए बैठे रहें ।

जान लो कि दण्ड देने में अल्लाह बहुत कठोर है । 197। (रुकू 24)

कुछ जाने-माने महीनों में हज्ज होता है। अतः जिसने इन (महीनों) में हज्ज का संकल्प कर लिया तो हज्ज के बीच किसी प्रकार की कामुक बात और दुराचरण तथा झगड़ा (उचित) नहीं होगा । और जो भी नेकी तुम करो । अल्लाह उसे जान लेगा और पाथे इकट्ठा करो । अतः निःसन्देह तकवा ही सर्वोत्तम पाथे है और हे बुद्धिमानो ! मुझ ही से डरो । 198।

तुम पर कोई पाप तो नहीं कि तुम अपने रब से कृपा कामना करो । अतः जब तुम अरफात से लौटो तो मशअर-ए-हराम के निकट अल्लाह का स्मरण करो । और उसको उसी प्रकार स्मरण करो जिस प्रकार उसने तुम्हें निर्देश दिया है और इससे पूर्व निश्चित रूप से तुम पथभ्रष्टों में से थे । 199।

फिर तुम (भी) वहाँ से लौटो जहाँ से लोग लौटते हैं और अल्लाह से क्षमा याचना करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 200।

अतः जब तुम अपने (हज्ज के) अनुष्ठान संपन्न कर चुको तो अल्लाह का स्मरण करो । जिस प्रकार तुम अपने पूर्वजों को स्मरण करते हो, बल्कि उससे बहुत अधिक स्मरण (करो) अतः लोगों में से ऐसा भी

٤٦

شَدِيدُ الْعِقَابِ

الْحَجَّ أَشْهُرٌ مَعْلُومٌ۝ فَمَنْ فَرَضَ
فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَأَرْفَثَ وَلَا فُسُوقَ۝ وَلَا
جُدَالَ فِي الْحَجَّ۝ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ حَيْرٍ۝
يَعْلَمُهُ اللَّهُ۝ وَتَرَوَدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الرَّازِدِ۝
الْتَّقُوَىٰ وَالْقَوْنَ يَاوِلِ الْأَلْبَابِ۝

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جَمَاعٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَصَلَامٌ
رِبِّكُمْ۝ فَإِذَا آتَيْتُمْ مِنْ عَرْفَتٍ
فَادْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمُשْعَرِ الْحَرَامِ۝
وَادْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ
مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الظَّالِمِينَ۝

شَعَرًا قَصُوًا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاَسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ۝

فَإِذَا قَصَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ
كَذِكْرِكُمْ أَبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا۝ فَمِنْ

(व्यक्ति) है जो कहता है, हे हमारे रब ! हमें (जो देना है) इहलोक में ही दे दे और उसके लिए परलोक में कोई भाग नहीं होगा । 201।

और उन्हीं में से वह भी है जो कहता है, हे हमारे रब ! हमें इहलोक में भी भलाई प्रदान कर और परलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें आग के अज्ञाब से बचा । 202।

यही वे लोग हैं जो उन्होंने कमाया, उसमें से उनके लिए एक बड़ा प्रतिफल होगा और अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है । 203।

और इन गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को (बहुत) याद करो । अतः जो भी दो दिनों में शीघ्र निवृत्त हो जाए तो उस पर कोई पाप नहीं और जो पीछे रह जाए तो उस पर (भी) कोई पाप नहीं (अर्थात्) उसके लिए जो तक्रवा धारण करे । और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उसी की ओर एकत्रित किए जाओगे । 204।

और लोगों में से ऐसा (व्यक्ति) भी है जिसकी सांसारिक जीवन सम्बन्धी बात तुझे पसन्द आती है जबकि वह उस पर अल्लाह को साक्षी ठहराता है जो उस के दिल में है, हालाँकि वह बहुत झगड़ालू होता है । 205।

और जब वह अधिकार-संपन्न हो जाए तो धरती में फसाद फैलाने और खेती और जाति को बर्बाद करने के उद्देश्य से

النَّاسُ مَنْ يَقُولُ رَبِّنَا أَتَيْنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا
لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ①

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبِّنَا أَتَيْنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقَاتَ
عَذَابَ النَّارِ ②

أُولَئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِمَّا كَبُوا ۚ وَاللَّهُ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ③

وَأَذْكُرُ وَاللَّهُ فِي آيَاتِهِ مَعْدُودٌ ۖ فَمَنْ
تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۖ وَمَنْ
تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۖ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَأَشْقَى
اللَّهُ وَأَعْلَمُ أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُخْرَجُونَ ④

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِلُكَ قَوْلَةً فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَيَسْهُدُ اللَّهَ عَلَى مَا فِي قُلُوبِهِ ۖ وَهُوَ
اللَّهُ الْحَسَامِ ⑤

وَإِذَا تَوَلَّتِ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِتُفْسِدَ
فِيهَا وَيَهْلِكُ الْحَرْثَ وَالسَّلَ ۶

دیڈتا فیرتا ہے، جبکہ اللہ فساد کو پسند نہیں کرتا । 2061

اور جب اسے کہا جاتا ہے کہ اللہ کا تکوا دھارن کر تو پریष्ठا (کا انہ) اسے پاپ پر س्थیر رکھتا ہے । ات: اسکے لیے نرک پرداشت ہے اور وہ بہت ہی بُرا تھکانہ ہے । 2071

اور لوگوں میں سے اس (بُرکت) بھی ہے جو اللہ کی پ्रسانتا پ्रاپتی کے لیے اپنی جان بُنھ ڈالتا ہے اور اللہ بُکتوں کے پرداشت بہت کھڑانا میں ہے । 2081

ہے وہ لوگو، جو ایمان لایے ہو ! تُم سب کے سب آزمائشیت (کے بُرے) میں پرویٹ ہو جاؤ اور شیطان کے پدھریوں پر مٹ چلو । نی: ساندھ وہ تُمھارا خُلُل-خُلُل شُرُع ہے । 2091

ات: تُمھارے نیکٹ سپٹ چیزیں آ جانے کے بُاد بھی یہ دی تُم فیصل جاؤ تو جان لو کہ اllerah پُری پ्रभوت وَالله (اور) پرم ویکشیل ہے । 2101

ک्या وہ کے ول یہ پرتفیکش کر رہے ہے کہ اllerah بادلوں کی چایا میں ہنکے نیکٹ آئے اور فریشتو بھی (آئے) اور ماملا نیپتا دیا جائے । اور اllerah ہی کی اور سبھی ماملوں لے ٹاٹا ا جاتے ہے । 2111 (رکو ۲۵)

بنی اسرائیل سے پُوچھ لے کہ ہم نے ہنکے کیتنے ہی خُلے-خُلے چیزیں دیے ہے । اور جو بھی اllerah کی نِمَت کو بدل دے جبکہ وہ اسکے پاس آ چکی ہو تو

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

وَإِذَا قِيلَ لَهُ أَتَقْرَبُ اللَّهَ أَخْدُثُهُ الْعَزَّةُ
إِلَّا إِنِّي فَكِبَرْتُ جَهَنَّمَ وَلَبِسْتُ الْمَهَادَ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُشْرِكُ نَفْسَهُ أَبْتَغِيَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ حُلُوا فِي السُّلُمِ
كَافَّةً وَلَا تَتَبَعُوا حُطُوطَ الشَّيْطَنِ
إِنَّهُ لَكُمْ عَذَّابٌ أَمِينٌ

فَإِنْ زَلَّتُمْ فَمَنْ بَعْدَ مَا جَاءَكُمْ
الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

هُلْ يُنْظَرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي
ظُلَّلٍ مِّنَ الْعَمَامِ وَالْمَلِكَةِ وَقَضَى
الْأَمْرَ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

سُلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ أَتَيْنَاهُمْ مِّنْ أَيْمَانِ
بَيْنَهُمْ وَمَنْ يُبَدِّلُ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

निःसन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है। 1212।

जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए सांसारिक जीवन सुन्दर करके दिखाया गया है। और वे उन लोगों का उपहास करते हैं जो ईमान लाये। और वे लोग जिन्होंने तक़वा धारण किया, वे क़यामत के दिन उन से ऊँचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहे वे-हिसाब जीविका प्रदान करता है। 1213।

सभी मनुष्य एक ही संप्रदाय (के रूप में) थे। अतः अल्लाह ने नवियों को शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी बना कर भेजा और उनके साथ सत्य पर आधारित पुस्तक भी उतारी ताकि वह लोगों के बीच उन विषयों में निर्णय करे जिनमें उन्होंने मतभेद किया। और उन्हीं लोगों ने परस्पर विद्रोह के कारण उस (पुस्तक) में मतभेद किया जिन्हें वह दी गई थी, इसके बावजूद कि उनके पास स्पष्ट चिह्न आ चुके थे। अतः जो लोग ईमान लाये थे, अल्लाह ने उन को अपने आदेश से हिदायत दे दी, इसलिए कि उन्होंने सत्य के कारण उसमें मतभेद किया था और अल्लाह जिसे चाहे सीधे रास्ते की ओर हिदायत देता है। 1214।*

* किसी नबी के आने से पूर्व सब लोग एक जैसे हो जाते हैं। चाहे वे पहले नवियों पर ईमान भी लाते हों परन्तु दुष्कर्म और दुराचरण की दृष्टि से उनमें कोई अंतर नहीं रहता। अतः यह एक सर्वमान्य नियम है कि नबी के आने से पूर्व सब लोग चाहे वे मोमिन हों अथवा न हों, सभी एक ही अवस्था में होते हैं। जब नबी की ओर से पुस्तक और कर्तव्य अकर्तव्य विषयों का स्पष्टीकरण हो जाता है तब उनका नबी को अस्वीकार करना लोगों को दो भागों में बाँट देता है। एक वे जो नबी पर ईमान लाते हैं और एक वे जो उसका अस्वीकार करते हैं।

مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑩

رِّئَنَ لِلّذِينَ كَفَرُوا وَالْحَيَاةُ الدُّنْيَا
وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ
اتَّقُوا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرَزُقُ
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑪

كَانَ النَّاسُ أَمَةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ
النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحُكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
فِيمَا احْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا احْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا
الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْهُ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ
الْبَيِّنَاتُ بَعْدًا بِيَمِنِهِ فَهَذِهِ اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا مَا احْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ
وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ⑫

क्या तुम सोचते हो कि तुम स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे जबकि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसी अवस्था नहीं आई जो तुम से पहले बीत चुके हैं ? उन्हें कठिनाइयाँ और कष्ट पहुँचे और वे हिला कर रख दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और वे जो उसके साथ ईमान लाये थे, पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी ? सुनो ! निश्चय ही अल्लाह की सहायता निकट है | 2151 |

वे तुझ से पूछते हैं कि वे क्या खर्च करें ? तू कह दे कि तुम (अपने) धन में से जो कुछ भी खर्च करना चाहो तो मातापिता के लिए और निकट सम्बन्धियों के लिए और अनाथों के लिए और दरिद्रों के लिए तथा यात्रियों के लिए करो । और जो नेकी भी तुम करो तो निःसन्देह अल्लाह उसकी भली-भाँति जानकारी रखता है | 2161 |

तुम पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया है जबकि वह तुम्हें पसन्द नहीं था । और संभव है कि तुम एक बात को पसन्द न करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और संभव है कि एक बात को तुम पसन्द करो परन्तु वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो । और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते | 2171 |

(रुकू 26)
10

वे तुझ से इज्जत वाले महीने अर्थात् उसमें युद्ध करने के बारे में प्रश्न करते हैं। (उनसे) कह दे कि उसमें युद्ध करना

أَمْ حِبْتُمْ أَنْ تَذْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا
يَا تَكُمْ مَثْلُ الَّذِينَ خَلُوا مِنْ قِبْلَكُمْ
مَسْهِمٌ الْبَاسَاءُ وَالْقَرَاءُ وَرُزْلِئُوا
حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
مَثْلُ نَصْرِ اللَّهِ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ
قَرِيبٌ ⑩

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۝ قُلْ مَا آنفَقْتُمْ
مِنْ خَيْرٍ فَلَلَوِ الَّذِينَ وَالْأَقْرِبُونَ
وَالْيَتَّمَى وَالْمَسْكِينَ وَابْنِ السَّبِيلِ ۝ وَمَا
تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ⑪

كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالَ وَهُوَ كُرُهٌ لَكُمْ ۝
وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ
لَكُمْ ۝ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ
لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ ۱۲

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۝

बहुत बड़ा (पाप) है। और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उसका इनकार करना और मस्जिद-ए-हराम से रोकना और उन लोगों को वहाँ से निकाल देना जो उसके (वास्तविक) अधिवासी हैं अल्लाह के निकट उससे भी बड़ा (पाप) है और फितना (उपद्रव) हत्या से भी बढ़कर है। और यदि उन्हें शक्ति प्राप्त हो तो वे तुम्हें अपने धर्म से हटा देने तक तुमसे सदा युद्ध करते रहेंगे। और तुम में से जो भी अपने धर्म से हट जाए फिर वह काफिर होने की अवस्था में मरे तो यही वे लोग हैं जिन के कर्म इहलोक में और परलोक में भी व्यर्थ हो गये और यही वे लोग हैं जो आग वाले हैं। उसमें वे बहुत लम्बे समय तक रहने वाले हैं। 1218।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाये और वे लोग जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही वे लोग हैं जो अल्लाह की कृपा की आशा रखते हैं और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 1219।

वे तुझ से शराब और जुए के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि इन दोनों में बड़ा पाप (भी) है और लोगों के लिए लाभ भी। और दोनों के पाप (का पहलू) उनके लाभ से बढ़कर है। और वे तुझ से (यह भी) पूछते हैं कि वे क्या खर्च करें? उनसे कह दे कि (आवश्यकताओं में से) जो भी बचता है। इसी प्रकार अल्लाह

قُلْ قَاتُلُوكَ فِيهِ كَيْرٌ وَ صَدْعَنْ سَبِيلٌ
اللَّهُ وَ كُفُرُهُ وَ الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ وَ اخْرَاجُ
أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَ الْفِتْنَةُ
أَكْبَرُ مِنَ القُتْلِ وَ لَا يَرَأُونَ
يَقَاوِلُونَكُمْ حَتَّى يَرَدُو كُمْ عَنْ دِينِكُمْ
إِنْ اسْتَطَاعُوا وَ مَنْ يَرَدْمِنْكُمْ عَنْ
دِينِهِ فَمُتْ وَ هُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَوْكُثُ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ وَ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ الَّذِينَ هَاجَرُوا
وَ جَهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ يَرْجُونَ
رَحْمَتَ اللَّهِ وَ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

يَسْأَلُوكَ عَنِ الْحَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ قُلْ
فِيهِمَا إِثْمٌ كَيْرٌ وَ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَ إِنَّهُمْ مَا أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا
وَ يَسْأَلُوكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلِ الْعَفْوُ

तुम्हारे लिए (अपने) चिह्न खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम सोच-विचार करो । १२२०।*

इहलोक के बारे में भी और परलोक के बारे में भी और अनाथों के बारे में वे तुझ से पूछते हैं । तू कह दे उनका सुधार अच्छी बात है और यदि तुम उनके साथ मिल जुल कर रहो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं । और अल्लाह फ़साद करने वाले का सुधार करने वाले से प्रभेद जानता है । और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में अवश्य डाल देता । निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । १२२१।

और मुश्किल स्त्रियों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न ले आयें और निश्चित रूप से एक मोमिन दासी एक (स्वतंत्र) मुश्किल स्त्री से उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कैसी ही प्रिय हो । और मुश्किल पुरुषों से (अपनी लड़कियों का) विवाह न कराओ जब तक कि वे ईमान न ले आयें । और निश्चित रूप से एक मोमिन दास एक (स्वतंत्र) मुश्किल से उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कैसा ही प्रिय हो । ये वे लोग हैं जो आग की ओर बुलाते हैं और

كَذِلِكَ يَبِينُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَتِ لَعَلَّكُمْ
سَفَكُرُونَ ﴿١٢٢٠﴾

فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ ۖ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ
إِيمَانِهِ ۖ قُلْ إِاصْلَاحُ لِهِمْ خَيْرٌ ۖ وَإِنْ
تَحْلِطُهُمْ فَإِلَّا هُوَ أَنْجَاهُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَا عَنْتَكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑯

وَلَا سَكِّحُوا الْمُشْرِكِتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنُ ۖ
وَلَا مَأْمُونَهُ مُؤْمِنَهُ خَيْرٌ مِّنْ مُشْرِكَتِهِ ۖ وَلَوْ
أَعْجَبْتُكُمْ ۖ وَلَا سَكِّحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ
يُؤْمِنُوا ۖ وَلَعَبْدُ مُؤْمِنٍ خَيْرٌ مِّنْ مُشْرِكٍ
وَلَوْ أَعْجَبْتُكُمْ ۖ أَوْلَئِكَ يَدْعُونَ إِلَىٰ

* इस आयत में हलाल और हराम (वैध-अवैध) का एक स्थायी सिद्धान्त वर्णन किया गया है कि वे वस्तुयें जिनके उपयोग में लाभ अधिक हैं और हानि कम हैं, वे हलाल हैं और वे वस्तुयें जिनके लाभ तो हैं परन्तु उन में हानिकारक तत्त्व अधिक हैं, वे हराम हैं । एल्कोहॉल को यदि पिया जाए तो हानिकारक है इसलिए उसका थोड़ा पीना भी हराम है । परन्तु चिकित्सा क्षेत्र में एल्कोहॉल का बहुत महत्व है । इसके अतिरिक्त यदि इन्हें के रूप में एल्कोहॉल के घोल में सुगंध को मिला दिया जाए तो उसे जितना चाहो कपड़ों पर छिड़क लो, इससे नशा चढ़ना असंभव है ।

अल्लाह अपनी आज्ञा से (तुम्हें) स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और वह लोगों के लिए अपने चिह्न खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि वे उपदेश ग्रहण करें। 1222। (रुकू ٢٧)

और वे तुझ से मासिक धर्म की अवस्था के बारे में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि यह एक कष्टदायक (अवस्था) है। अतः मासिक धर्म के समय स्त्रियों से पृथक रहो और उन से दापत्य संबंध स्थापित न करो जब तक कि वे शुद्ध न हो जायें। फिर जब वे शुद्ध-पूत हो जायें तो उनके निकट उसी प्रकार जाओ जैसा कि अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है। निःसन्देह अल्लाह अधिकता पूर्वक प्रायश्चित करने वालों से प्रेम करता है और शुद्ध-पूत रहने वालों से (भी) प्रेम करता है। 1223।

तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेतियाँ हैं। अतः अपनी खेतियों के निकट जैसे चाहो आओ और अपने लिए (कुछ) आगे भेजो। और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उससे अवश्य मिलने वाले हो और मोमिनों को (इस बात की) शुभ-सूचना दे दे। 1224।*

और अल्लाह को इस उद्देश्य से अपनी क़समों का लक्ष्य न बनाओ ताकि तुम

السَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُوَا إِلَى الْجَنَّةِ
وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ وَيَبْيَّنُ أَيْتَهُ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيطِ قُلْ هُوَ أَذْيَٰٰ
فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيطِ وَلَا
تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهَرْنَ فَإِذَا تَطْهَرْنَ
فَأُتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمْرَكُمُ اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ التَّوَابِينَ وَيَحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿٢٨﴾

نِسَاءٌ كُمْ حَرَثٌ لَّكُمْ فَأُتُوهُنَّ حَرَثَكُمْ
أَنْ شَيْشَمُ وَقَدِيمُوا لِأَنْفُسِكُمْ
وَأَنْقُوا اللَّهُ وَأَعْلَمُوا أَنْكُمْ مُّلْقُوَةٌ
وَبَيْسِرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عَرْضَةً لِّا يُمَانِكُمْ أَنْ

* इस आयत के अर्थ को बिगाड़ कर कई अत्याचारी प्रवृत्ति के लोगों ने स्त्रियों से अस्वभाविक रूप से सम्बन्ध स्थापित करने का औचित्य निकाला है। (इस प्रकार की मानसिकता से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं), यह भारी अत्याचार है। खेती से यह अभिप्राय है कि स्त्री संतानोत्पत्ति का साधन है परन्तु अस्वभाविक सम्बन्ध के परिणाम स्वरूप कदापि संतानोत्पत्ति नहीं हो सकती।

भलाई करने अथवा तक्कवा धारण करने या लोगों के बीच सुधार करने से बच जाओ और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 225।

तुम्हारी व्यर्थ कसमों पर अल्लाह तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा । परन्तु जो तुम्हारे दिल (पाप) कमाते हैं, उस पर तुम्हारी पकड़ करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) सहनशील है । 226।

जो लोग अपनी पत्नियों से सम्बन्ध स्थापित न करने की कसम खाते हैं, उनके लिए चार महीने तक प्रतीक्षा करना (उचित) होगा । अतः यदि वे (संधि की ओर) लौट आएँ तो अल्लाह निःसन्देह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 227।

और यदि वे तलाक का पक्का निर्णय कर लें तो निश्चित रूप से अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 228।

और तलाक शुदा स्त्रियों को तीन मासिक धर्म की अवधि तक स्वयं को रोके रखना होगा । यदि वे अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाती हैं तो अल्लाह ने जो कुछ उनके गर्भाशयों में पैदा कर दी है, उस को छिपाना उनके लिए उचित नहीं और इस परिस्थिति में यदि उनके पति सुधार चाहते हैं तो वे उन्हें वापस लेने के अधिक हकदार हैं ।

٢٠١ تَبَرُّو وَتَنْقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ^{۱۳}
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ^{۱۴}

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ
وَلَكُنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ
فُلُونِكُمْ^{۱۵} وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ^{۱۶}

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَاءِهِمْ تَرْبُصٌ
أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ^{۱۷} فَإِنْ فَآتُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ^{۱۸}

وَإِنْ عَزَمُوا الظَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ
سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ^{۱۹}

وَالْمَطَّلَقُتْ يَرَبَضُ بِإِنْفَسِهِنَّ قَلْثَةً
فَرْوَعَ^{۲۰} وَلَا يَحْلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمُنَ مَا
خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ^{۲۱} وَبَعْدَ لَهُنَّ أَكْثَرُ
بِرَدَهُنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا^{۲۲}

और उन (स्त्रियों) का विधि के अनुसार (पुरुषों पर) उतना ही अधिकार है जितना (पुरुषों का) उन पर है । हालाँकि पुरुषों को उन पर एक प्रकार की प्रधानता भी है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 1229। (रुकू 28)

तलाक दो बार है । अतः (इसके बाद स्त्री को) या तो समुचित ढंग से रोक रखना होगा अथवा उपकार पूर्वक विदा करना होगा । और जो तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ भी वापस लेना तुम्हारे लिए उचित नहीं । सिवाय इसके कि वे दोनों डरें कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं का पालन नहीं कर सकेंगे और यदि तुम डरों कि वे दोनों अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का पालन नहीं कर सकेंगे तो वह स्त्री (झगड़ा निपटाने के उद्देश्य से जो धन पुरुष के पक्ष में) छोड़ दे उसके बारे में उन दोनों पर कोई पाप नहीं । ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं, अतः उनका उल्लंघन न करो और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो वस्तुतः वही लोग अत्याचारी हैं । 1230।

फिर यदि वह (पुरुष) उसे तलाक दे दे तो इसके बाद उस के लिए पुनः उस पुरुष के निकाह में आना वैध नहीं होगा जब तक कि वह उसके सिवा किसी अन्य पुरुष से विवाह न कर ले । फिर

وَلَهُنَّ مُثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ

الظَّلَاقُ مَرَتِنٌ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ
تَسْرِيعٌ بِإِحْسَانٍ لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا مِمَّا أَيْمَنُوهُنَّ بِئْسًا إِلَّا أَنْ
يَخَافُوا أَلَا يَقِيمُوا حَدُودَ اللَّهِ فَإِنْ
خُفْتُمْ أَلَا يَقِيمُوا حَدُودَ اللَّهِ فَلَا جَنَاحَ
عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حَدُودُ اللَّهِ
فَلَا تَعْنَدُوهَا وَمَنْ يَعْنَدُ حَدُودَ اللَّهِ
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَثْيٍ
شَكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا

यदि वह (भी) उसे तलाक़ दे दे तो फिर उन दोनों का एक दूसरे की ओर लौटने पर कोई पाप नहीं, यदि वे यह धारणा रखते हों कि (इस बार) वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं का पालन कर सकेंगे। और ये अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं जिन्हें वह उन लोगों के लिए सुस्पष्ट रूप से वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हैं। 1231।

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी निश्चित अवधि को पूरी कर लें (तो चाहो) तो तुम उन्हें विधि पूर्वक रोक लो अथवा (चाहो तो) समुचित ढंग से विदा करो। और तुम उन्हें कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से न रोको ताकि तुम उन पर अत्याचार कर सको। और जो भी ऐसा करे तो निश्चित रूप से उसने अपनी ही जान पर अत्याचार किया। और अल्लाह की आयतों को उपहास का पात्र न बनाओ और अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो तुम पर है और जो उस ने तुम पर पुस्तक और तत्त्वज्ञान में से उतारा, वह उसके द्वारा तुम्हें उपदेश देता है। और अल्लाह का तक्ता धारण करो और जान लो कि अल्लाह प्रत्येक विषय का भली भाँति ज्ञान रखता है। 1232। (रुकू॑ ٢٩)

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी अवधि पूरी कर लें तो उन्हें अपने (भावी) पतियों से विवाह करने से न रोको, जब वे समुचित ढंग से परस्पर

جَنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجِعُوا إِنْ ظَنَّا أَنْ
يُقِيمُكَا حَدُودَ اللَّهِ وَتَلْكَ حَدُودُ اللَّهِ
يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑤

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيَغْلُبُنَّ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِحُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضَرَارًا
لِتَعْتَدُوْا وَمَنْ يَفْعُلُ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ ۝ وَلَا تَتَحْذِّفُوا أَيْتَ اللَّهُ هُرْقَا ۝
وَأَذْكُرُوا إِنْعَمَتِ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةُ يَعْلَمُكُمْ
بِهِ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلَيْهِمْ ۝

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيَغْلُبُنَّ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْصُلُوهُنَّ أَنْ يُتَكَحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

इस बात पर सहमत हो जायें। यह उपदेश उसे किया जा रहा है जो तुम में से अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान लाता है। ये तुम्हें अधिक नेक और अधिक पवित्र बनाने वाला उपाय है और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते। 1233।

और माँएँ अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें, उस (पुरुष) के लिए जो दुग्धपान (की अवधि) को पूरा करना चाहता है। और जिस (पुरुष) का बच्चा है, उसके ज़िम्मे ऐसी स्त्रियों के खाद्य और वस्त्र (की व्यवस्था) समुचित ढंग से करना है। किसी जान पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ डाला नहीं जाता। माँ को उसके बच्चे के सम्बन्ध में कष्ट न दिया जाये और न ही बाप को उसके बच्चे के सम्बन्ध में। और उत्तराधिकारी पर भी ऐसा ही आदेश लागू होगा। अतः यदि वे दोनों परस्पर सहमति और विचार-विमर्श से दूध छुड़ाने का निर्णय कर लें तो उन दोनों पर कोई पाप नहीं और यदि तुम अपनी संतान को (किसी और से) दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कोई पाप नहीं, बशर्तेकि तुम ने समुचित ढंग से जो कुछ (उन्हें) देना था, (उनके) सुपुर्द कर चुके हो। और अल्लाह का तक्रवा धारण करो और जान लो कि जो तुम करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है। 1234।

تَرَاضُوا بِيَمِّهِمْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ ذَلِكَ
يُوَعظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ ذَلِكُمْ أَزْكِيٌّ لَكُمْ
وَأَظْهَرُ ۖ وَاللهُ يَعْلَمُ وَأَنَّهُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَالَّذِينَ يُرِضِّعُنَّ أُولَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتَمَّ الرَّضَاعَةَ ۖ
وَعَلَى الْمَوْلُودِكُلُّ رِزْقُهُنَّ وَكُسُورُهُنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۖ لَا تَكُلُّنَفْسُ إِلَّا
وَسَعَهَا ۖ لَا تَصَارِرُ وَالدَّهُ بِوَلْدَهَا وَلَا
مَوْلُودَهُ بِوَلَدِهِ ۖ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ
ذَلِكَ ۖ فَإِنْ أَرَادَ افْصَالًا عَنْ تَرَاضِ قِيمَهَا
وَتَشَوِّرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۖ وَإِنْ أَرَدَهُ
أَنْ تَتَرِضُّهُمْ أُولَادُكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَمْتُمْ مَا أَتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَأَئْتُمُ اللهَ وَاعْلَمُو أَنَّ
اللهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और तुम में से जो मृत्यु प्राप्त करें और पत्नियाँ छोड़ जाएँ तो वे (विधवाएँ) अपने आप को चार महीने और दस दिन तक रोके रखें । अतः जब वे अपनी (निश्चित) अवधि को पहुँच जायें तो फिर वे (स्त्रियाँ) अपने बारे में समुचित ढंग से जो भी करें, उस बारे में तुम पर कोई पाप नहीं और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है । 235।

और इस बारे में तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम (उन) स्त्रियों से विवाह के प्रस्ताव सम्बन्धी कोई इशारा करो या (उसे) अपने दिलों में छिपाये रखो । अल्लाह जानता है कि तुम्हें अवश्य उनका विचार आयेगा । परन्तु तुम कोई अच्छी बात कहने के सिवा उनसे गुप्त वादे न करना । और जब तक निर्धारित इहत अपनी अवधि को न पहुँच जाये, निकाह करने का संकल्प न करो और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उसकी जानकारी रखता है । अतः उस (की पकड़) से बचो और जान लो कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) सहनशील है । 236।

(रुकूः 30/4)

तुम पर कोई पाप नहीं कि यदि तुम स्त्रियों को तलाक दे दो जबकि तुम ने अभी उन्हें स्पर्श न किया हो अथवा अभी तुमने उनके लिए हक महर निश्चित न किया हो और उन्हें कुछ लाभ भी

وَالَّذِينَ يَسْوَقُونَ مِنْكُمْ وَيَدْرُونَ
أَرْوَاجًا يَتَرَبَّصُ بِإِنْسَهِنَّ أَرْبَعَةَ
أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغُنَّ أَجْلَهُنَّ فَلَا
جَنَاحَ عَلَيْكُمْ قِيمًا فَعَلِمْتُمْ فِي أَنفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ يُعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ حَسْنٌ ⑩

وَلَا جَنَاحَ عَلَيْكُمْ قِيمًا عَرَضْتُمْ بِهِ مِنْ
خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَتْمُ فِي أَنفُسِكُمْ ۖ
عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتُذَكَّرُ وَنَهَنَ وَلَكِنَّ لَا
تُوَاعِدُوهُنَّ بِسِرِّ إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا
مَعْرُوفًا ۗ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاقْحُذُرُوهُ ۖ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۖ ۱۴

لَا جَنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا
لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيَضَةً ۗ

पहुँचाओ । संपन्न व्यक्ति पर उसकी सामर्थ्य के अनुसार और निर्धन व्यक्ति पर उसकी सामर्थ्य के अनुसार अनिवार्य है । (यह) विधिसंगत कुछ माल-सामान हो । उपकार करने वालों पर तो (यह) अनिवार्य है । 1237।

और यदि तुम उन्हें स्पर्श करने से पूर्व तलाक़ दे दो जबकि तुम उनका हक्क महर निश्चित कर चुके हो, तो फिर जो तुम ने निश्चित किया है, उसका आधा (देना) होगा सिवाय इसके कि वे (स्त्रियाँ) क्षमा कर दें अथवा वह व्यक्ति क्षमा कर दे जिसके हाथ में निकाह का बंधन है । और तुम्हारा क्षमा कर देना तक़वा के अधिक निकट है और परस्पर उपकार (पूर्ण व्यवहार) को भूल न जाया करो । जो तुम करते हो, निःसन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 1238।

(अपनी) नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेष रूप से मध्यवर्ती नमाज़ की । और अल्लाह के समक्ष आज्ञापालन करते हुए खड़े हो जाओ । 1239।*

अतः यदि तुम्हें कोई भय हो तो चलते फिरते अथवा सवारी की अवस्था में ही (नमाज़ पढ़ लो) । फिर जब तुम निरापद (स्थिति) में आ जाओ तो फिर (उसी प्रकार) अल्लाह को याद करो

وَمِنْهُ عَلَى الْمُؤْسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى
الْمُقْتَرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَتَّا
عَلَى الْمُحْسِنِينَ ⑩

وَإِنْ طَلَقُوهُنَّ مِنْ قَبْلٍ أَنْ تَمْوَهُنَّ
وَقَدْ فَرَضْنَا لَهُنَّ فَرِيَضَةً فِصْفَ مَا
فَرَضْنَا إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَغْفِلُوا إِذْنَى
بِيَدِهِ عَهْدَةَ التِّكَاجِ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ وَلَا تَنْسُو الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑪

حَفِظُوا عَلَى الصَّلَاةِ وَالصَّلَاةُ
الْوَسْطىٰ وَقَوْمُوا لِللهِ قَتِيْنَ ⑫

فَإِنْ خَفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكَبًا فَإِذَا
أَمْتَثَمْ فَادْكُرُ وَاللَّهُ كَمَا عَلَمْكُمْ مَالِمُ

* अरबी शब्द सलातुल उस्ता (मध्यवर्ती नमाज) का अर्थ साधारणतया अस की नमाज किया गया है। हालाँकि सलातुल उस्ता प्रत्येक वह नमाज है जो बिल्कुल काम-काज के बीच में पढ़नी पड़े। उस्ता जितनी अधिक हो उस नमाज का महत्व उतना बढ़ जाता है।

जिस प्रकार उसने तुम्हें सिखाया है, जो तुम (इससे पूर्व) नहीं जानते थे । 240।
और तुम में से जो लोग मृत्यु प्राप्त करें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ रहे हों, उनकी पत्नियों के पक्ष में यह वसीयत है कि वे (अपने घरों में) एक वर्ष तक लाभ उठायें और (उन्हें) न निकाला जाये । हाँ, यदि वे स्वयं निकल जायें तो जो वे अपने सम्बन्ध में स्वयं कोई समुचित निर्णय करें तो तुम पर कोई पाप नहीं और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 241।

और तलाकशुदा स्त्रियों को भी विधिपूर्वक कुछ लाभ पहुँचाना है । (यह) मुत्तकियों पर अनिवार्य है । 242।

इसी प्रकार अल्लाह अपने चिह्नों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो । 243।

(रुकू ۳۱)

क्या तुझे उन लोगों की सूचना नहीं मिली जो मृत्यु के भय से अपने घरों से निकले और वे हज़ारों की संख्या में थे । तो अल्लाह ने उन से कहा, तुम मृत्यु को स्वीकार करो । और फिर (इस प्रकार) उन्हें जीवित कर दिया । निश्चित रूप से अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है परन्तु अधिकतर लोग (उसकी) कृतज्ञता प्रकट नहीं करते । 244।*

تَكُونُو أَعْلَمُونَ ⑩

وَالَّذِينَ يَسْوَقُونَ مِنْكُمْ وَيَدْرُونَ
أَرْوَاجًاٌ وَصَيَّةً لِأَرْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى
الْحَوْلِ غَيْرَ اخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا
جَنَاحٌ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي آنِهِمْ
مِنْ مَعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑪

وَلِلْمُطَّلِقِتِ مَسَاعٍ بِالْمَعْرُوفِ هُنَّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ⑫

كَذَلِكَ يَبِينُ اللَّهُ لَكُمْ آيَتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ⑬

الْحُرْثَرَ إِلَى الَّذِينَ حَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَهُمْ أَلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتَ ۝ فَقَالَ لَهُمْ
اللَّهُ مُؤْتَوْا نُحْمَّ أَحْيَاهُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَدُورٌ
فَضِلٌّ عَلَى النَّاسِ وَلَكُنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ⑭

* इस आयत में भी अरबी शब्द मूतू (तुम मृत्यु को स्वीकार करो) से अभिप्राय भौतिक मृत्यु नहीं है, क्योंकि आत्महत्या तो हराम है । इसी प्रकार कुरआन स्पष्ट रूप से बार-बार यह घोषणा करता →

और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 1245।

कौन है जो अल्लाह को उत्तम ऋण दे ताकि वह उसके लिए उसे कई गुना बढ़ाये ? और अल्लाह (जीविका को) रोक भी लेता है और खोल भी देता है और तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे। 1246।

क्या तू ने मूसा के बाद बनी इस्लाइल के मुखिआओं का हाल नहीं देखा ? जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा कि हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर ताकि हम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। उसने कहा, कहीं ऐसा तो नहीं कि यदि तुम पर युद्ध अनिवार्य कर दिया जाये तो तुम युद्ध न करो। उन्होंने कहा, आखिर हमें हुआ क्या है कि अल्लाह के मार्ग में (हम) युद्ध न करें!! जबकि हमें अपने घरों से निकाल दिया गया है और अपनी संतान से अलग कर दिया गया है। अतः जब (अंततोगत्वा) उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से कुछ एक के सिवा सभी ने पीठ फेर ली और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है। 1247।

←है कि जो लोग एक बार इस दुनिया से विदा हो जायेंगे वे दोबारा कभी इसमें लौटकर आ नहीं सकते। यहाँ मूतू शब्द से अभिप्राय अपने तामसिक आवेगों को मारना है। जैसा कि सूफीवाद का कथन है : मूतू कब ल अन तमूतू अर्थात् मृत्यु आने से पूर्व तुम स्वयं ही मर जाओ।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

سَمِيعٌ عَلَيْهِ ④

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْصَاحَنَا
فِي صِيفَةِ لَهَّ أَصْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ
يَقْرِضُ وَيَعْصُمُ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑤

الْحُرَّةِ إِلَى الْمَلَائِكَةِ إِنَّهُمْ أَنْزَلْتُمْ مِنْ
بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا إِنَّنِي لَهُمْ أَبْعَثْتُكَ
مَلِكًا لِّقَاتَلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هُلْ
عَيْتُمْ أَنْ كَتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالَ أَلَا
تَقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا نَنْهَا أَلَا نَقَاتِلَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا
وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كَتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالَ
تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلَيْهِ
بِالظَّلَمِينَ ⑥

और उनके नबी ने उनसे कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को राजा नियुक्त किया है । उन्होंने कहा कि उस को हम पर राजत्व करने का कैसे अधिकार मिल गया ? जबकि हम उसकी तुलना में राजत्व के अधिक हक़दार हैं और उसे तो अर्थिक समृद्धि (भी) नहीं दी है। उस (नबी) ने कहा, निश्चित रूप से अल्लाह ने उसे तुम पर श्रेष्ठता प्रदान की है और उसे ज्ञान और शारीरिक अभिवृद्धि की दृष्टि से बढ़ोतरी दी गई है और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करता है और अल्लाह समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 1248।

और उनके नबी ने उनसे कहा कि उसके राजत्व का चिह्न यह है कि वह संदूक तुम्हारे पास आयेगा जिसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से शांति होगी और (उस चीज़ का) अवशिष्टांश होगा जिसे मूसा के वंशज और हारून के वंशज ने (अपने पीछे) छोड़ा । उसे फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे । यदि तुम ईमान रखते हो तो निश्चित रूपसे इसमें तुम्हारे लिए (एक बड़ा) चिह्न है। 1249। (रुकू 32/16)

अतः जब तालूत सेना लेकर निकला तो उसने कहा कि निःसन्देह अल्लाह एक नदी के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है । अतः जिसने उस में से (पानी) पिया उसका मुझ से सम्बन्ध नहीं रहेगा और जिसने उसे (जी

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَائُوتَ مَلِكًاٌ قَاتَلُوا أُنَيْ كُونَ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْهَا وَنَحْنُ أَخْلَقُ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالٌِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَهُ عَلَيْكُمْ وَرَأَدَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِنِّٰمِ وَاللَّهُ يُؤْتِ مَلِكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ ⑩

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ أَيَّةً مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ الْثَابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هُرُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلِكَةُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِكُفَّارٍ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ

فَلَمَّا فَصَلَ طَائُوتَ بِالْجَنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيَكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيَسْ مِنِّيٌّ وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّيٌّ

भरके) नहीं पिया तो निःसन्देह वह मेरा है, सिवाय इसके जो एक-आध बार चुलू भर कर पी ले । तथापि गिनती के कुछ के सिवा उन में से अधिकतर ने उस में से पी लिया । अतः जब वह और वे भी जो उसके साथ ईमान लाये थे उस नदी के पार पहुँचे तो वे (अवज्ञाकारी) बोले कि आज जालूत और उसकी सेना से निवटने की हम में कोई शक्ति नहीं । (तब) उन लोगों ने, जो विश्वास रखते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं, कहा कि कितने ही अल्पसंख्यक समुदाय हैं जो अल्लाह के आदेश से बुहसंख्यक समुदायों पर विजयी हो गये और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ होता है । 1250।

अतः जब वे जालूत और उसकी सेना से मुठभेड़ के लिए निकले तो उन्होंने कहा, हे हमारे रब ! हमें धैर्य प्रदान कर और हमारे पैरों को दृढ़ता प्रदान कर और काफ़िर लोगों के विरुद्ध हमारी सहायता कर । 1251।

अतः उन्होंने अल्लाह के आदेश से उन्हें पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत का वध कर दिया । और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वज्ञान प्रदान किये और जो चाहा उसे उसकी शिक्षा दी । और यदि अल्लाह की ओर से लोगों को एक दूसरे के हाथों बचाने का उपाय न किया जाता तो

إِلَّا مِنْ اغْتَرَفَ عُرْفَةً بِيَدِهِ فَسَرِّبُوا
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاءَ زَهْرَةُ هُوَ
وَالَّذِينَ أَمْوَأْمَعْتُهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ
لَكُمْ يَوْمٌ بِجَاهُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ
الَّذِينَ يَظْلَمُونَ أَنَّهُمْ مُلْقُو اللَّهِ كَمْ مِنْ
فَتَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبْتُ فَتَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ
اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ⑩

وَلَمَّا بَرَزَ رُوْاجَاهُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا
أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَبِّعْ أَقْدَامَنَا
وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكُفَّارِينَ ۝

فَهَرَمْتُهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَلَّ دَاؤُهُ
جَاهُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَمَهُ مَا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعَ اللَّهِ الْمَأْسَ
بَعْضُهُ بِعَضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ

धरती फ़साद से अवश्य भर जाती ।
परन्तु अल्लाह समस्त लोकों पर बहुत
कृपा करने वाला है । 252।*

ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम
तेरे समक्ष सत्य के साथ पढ़ते हैं और
निःसन्देह तू पैगम्बरों में से है । 253।

وَلِكُنَّ اللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ④

تِلْكَ آيَتُ اللَّهِ الْمُتَنَزَّهُ عَنِ الْحَقِيقَةِ ۖ

وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑤

* आयत सं. 248 से 252 तक को यदि ध्यान पूर्वक पढ़ा जाये तो ज्ञात होता है कि तालूत हज़रत दाऊद अलै. ही हैं, जिनका विरोधी जालूत था । अतः इन आयतों को क्रमशः पढ़ें तो आगे चल कर दाऊद ने जालूत का वध कर दिया उल्लेख है । अतः जिस जालूत का वर्णन है वह हज़रत दाऊद अलै. का शत्रु था, जिसे उन्होंने पराजित कर दिया । उनको इससे पहले दाऊद के नाम से सम्बोधित न करने का यह कारण प्रतीत होता है कि संभवतः इस विजय के उपरांत उन्हें नुबुव्वत और तत्त्वज्ञान प्रदान किया गया । जैसा कि आगे आयत में कहा गया और अल्लाह ने उसे राज्य और तत्त्वज्ञान प्रदान किये तत्त्वज्ञान से शरीअत (धर्म-विधान) विहीन नुबुव्वत होती है ।

ये वे रसूल हैं जिनमें से कुछ को हमने कुछ (अन्य) पर श्रेष्ठता दी। उनमें से कुछ वे हैं जिनसे अल्लाह ने (आमने-सामने) बात की और उनमें से कुछ को (कुछ अन्य से) पदवी में ऊँचा किया। और हम ने मरियम के पुत्र ईसा को खुले-खुले चिह्न दिये और रुह-उल-कुदुस के द्वारा उसका समर्थन किया। और यदि अल्लाह चाहता तो वे लोग जो उनके बाद आये, उनके निकट सुस्पष्ट चिह्न आने के बाद परस्पर मार-काट न करते। परन्तु उन्होंने (आपस में) मतभेद किया। अतः जो ईमान लाये वे उन्हीं में से थे और जो इनकार किये वे भी उन्हीं में से थे। और यदि अल्लाह चाहता तो वे परस्पर मार-काट न करते। परन्तु अल्लाह जो चाहता है वही करता है। 1254। (रुकू 33)

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! जो हमने तुम्हें दिया है उसमें से उस दिन के आने से पूर्व खर्च करो जिस में न कोई व्यापार होगा और न कोई मित्रता और न कोई सिफारिश। और काफिर ही हैं जो अत्याचार करने वाले हैं। 1255।

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं, (वह) सदा जीवित रहने वाला (और) स्वयं प्रतिष्ठित है। उसे न तो ऊँच आती है न नींद। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी के लिए है। कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके समक्ष

تِلْكَ الرَّسُولُ فَصَلَنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ
بَعْضٍ مِّنْهُمْ مَنْ كَلَمَ اللَّهُ وَرَفَعَ
بَعْضَهُمْ دَرَجَتٍ وَاتَّيَّا عِنْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ الْبَيْتِ وَأَيَّدَنَهُ بِرُوحِ الْقَدِيسِ
وَلُؤْشَاءَ اللَّهِ مَا أُقْتَلَ الَّذِينَ مِنْ
بَعْدِهِمْ قُرْبَانٌ بَعْدَمَا جَاءُهُمْ الْبَيْتُ
وَلَكِنَّ اخْتَلَفُوا فِيمِنْهُمْ مَنْ أَمَنَ
وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ وَلُؤْشَاءَ اللَّهِ مَا
أُقْتَلُوا وَلَكِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَرِيدُ
يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا أَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُ
مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا يَبْيَغُ فِيهِ وَلَا خَلَةٌ
وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمْ
الظَّالِمُونَ ⑩

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْقَيُّومُ لَا
تَأْخُذُهُ سَنَةٌ وَلَا نُومٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَلِكَ الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ
إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا

सिफारिश करे ? जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है वह (सब) जानता है । और जितना वह चाहे उसके सिवा वे उसके ज्ञान में से कुछ भी पा नहीं सकते । उसका साम्राज्य आकाशों और धरती पर व्याप्त है और उन दोनों की सुरक्षा उसे थकाती नहीं और वह अत्युच्च प्रतिष्ठा युक्त (और) बड़ा गौरवशाली है । 1256।

धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं । निश्चित रूप से हिदायत पथभ्रष्टता से खुलकर स्पष्ट हो चुकी है । अतः जो कोई शैतान का इनकार करे और अल्लाह पर ईमान लाये तो निःसन्देह उसने एक ऐसे सशक्त कड़े को पकड़ लिया जिसका टूटना संभव नहीं । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 1257।*

अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाये । वह उनको अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालता है और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके मित्र शैतान हैं । वे उनको प्रकाश से अन्धकारों की ओर निकालते हैं । यही लोग आग वाले हैं, वे उसमें लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं । 1258।

(रुक् 34)
२

خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ
إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسَعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَلَا يَوْدَهُ حَفْظُهُمَا وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ⑤

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرَّشْدُ مِنَ
الْغَيْرِ فَمَنْ يَكْفُرُ بِالظَّاغُوتِ وَيُؤْمِنُ
بِاللَّهِ فَقَدْ أَسْتَمْسَكَ بِالْعَرْوَةِ الْوُثْقَى
لَا فِيْصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ ⑥

اللَّهُ وَلِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ
الظُّلْمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
أُولَئِكُمُ الظَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِّنَ
النُّورِ إِلَى الظُّلْمَاتِ أُولَئِكَ أَخْبَرَ
الثَّارِيْهُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑦

* इस आयत में बलपूर्वक किसी का ईमान बदलने की विल्कुल मनाही है । आयतांश ला इका ह फ़िद्दीन का अर्थ धर्म के विषय में लेश मात्र जबरदस्ती उचित नहीं । हाँ, जिस पर सच्चाई खुल जाये, उसका उदाहरण तो ऐसा है कि जिसने सशक्त कड़े पर हाथ दिया है । वह हाथ काटा तो जा सकता है परन्तु उस कड़े से पृथक नहीं किया जा सकता ।

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जिसने इब्राहीम से उसके रब्ब के बारे में इस लिए झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे राजत्व प्रदान किया था । जब इब्राहीम ने कहा, मेरा रब्ब वह है जो जीवित करता है और मारता भी है । उसने कहा, मैं (भी) जीवित करता हूँ और मारता हूँ । इब्राहीम ने कहा, निःसन्देह अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ले आ, तो वह व्यक्ति जिसने इनकार किया था, भौचक रह गया और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । 1259।*

अथवा फिर उस व्यक्ति के उदाहरण (पर तूने ध्यान दिया ?) जिस का एक बस्ती से गुजर हुआ, जबकि वह अपनी छह्तों के बल गिरी हुई थी । उसने कहा, अल्लाह इसके उजड़ने के बाद इसे कैसे बसायेगा ? तो अल्लाह ने उसे एक सौ वर्ष तक मृत्यु (जैसी अवस्था में) ढाल दिया । फिर उसे उठाया (और) पूछा, तू (इस अवस्था में) कितना समय रहा है ? उसने कहा, मैं एक दिन या दिन का कुछ भाग रहा हूँ । उस ने कहा, बल्कि तू सौ वर्ष रहा है । अतः तू अपने खाद्य और पेय को देख कि वे गले-सड़े नहीं और अपने गधे की ओर

الْمُرْتَأَى إِلَيْهِ حَاجَ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ
أَنَّ اللَّهَ أَللَّهُ الْمُكْرَمُ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمَ رَبِّي
الَّذِي يَعْلَمُ وَيَعْلَمُ إِنِّي قَالَ أَنَا أَخْبُرُ
وَأَمِينُ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمَ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي
بِالشَّمْسِ مِنْ الْمَسْرِقِ فَأَتَ بِهَا مِنْ
الْمَغْرِبِ فَهَذِهِ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي النَّقْوَمَ الظَّلِيمِينَ

أُوكَلَذِنْ مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ
عَلَى عَرْوَشَهَا قَالَ أَلِي يَعْلَمُ هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ
مُؤْتَهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةً عَامِ شَمَّ
بَعْثَهُ قَالَ كَمْ لَيْسَتْ قَالَ لَيْسَتْ يَوْمًا
أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بِلَيْسَتْ مِائَةَ
عَامٍ فَانْتَرِ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرِابِكَ لَمْ

* हजरत इब्राहीम अलै. का प्रतिपक्षी सूर्य को खुदा मानता था । आप अलै. की तर्कशीली यह थी कि आप अलै. ने कहा कि सूर्य को अपने अधीन कर के दिखाओ । मेरा खुदा तो उसे पूर्व से निकालता है, तू उसे पश्चिम से लाकर दिखा । इस पर वह भौचक रह गया । क्योंकि वह अपने धर्म के विरुद्ध दावा भी नहीं कर सकता था ।

भी देख। यह (प्रदर्शन) इसलिए है ताकि हम तुम्हे लोगों के लिए एक चिह्न बना दें। और हड्डियों की ओर देख कि किस प्रकार हम उनको उठाते हैं और उन पर माँस चढ़ा देते हैं। अतः जब उस पर बात खुल गई तो उसने कहा, मैं जान गया हूँ कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है। 1260।*

और (क्या तूने उस पर भी ध्यान दिया?) जब इब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब्ब मुझे दिखला कि तू मुर्दों को कैसे जीवित करता है। उसने कहा, क्या तू ईमान नहीं ला चुका? उस ने कहा, क्यों नहीं? परन्तु इसलिए (पूछा है) ताकि मेरा दिल संतुष्ट हो जाये। उस (अल्लाह) ने कहा, तू चार पक्षी पकड़ ले और उन्हें अपने साथ सिधा ले। फिर उनमें से एक-एक को प्रत्येक पहाड़ पर छोड़ दे। फिर उन्हें बुला, वे शीघ्रता पूर्वक तेरी ओर चले आयेंगे। और जान ले कि अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 1261।**

(रुक् 35)

يَسْتَأْتِيْهُ وَانْظُرْ إِلَى حَمَالِكَ وَلِنَجْعَلَكَ
أَيَّهَ لِلثَّاَسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعَظَامِ كَيْفَ
تُنْشَرُ هَا لَمَّا نَكْسُوْهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ
لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ⑤

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمَ رَبِّ أَرْنِي كَيْفَ تَعْلَمُ
الْمَوْتَ ۝ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۝ قَالَ بَلِي
وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۝ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةَ
مِنَ الطَّيْرِ فَصَرْهُنَّ إِلَيَّكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى
كُلِّ جَبَلٍ مِّثْهَنَ جُرْعًا لَّمَّا دَعَهُنَ يَاتِينَكَ
سَعْيًا ۝ وَاعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ ۶

* इस आयत से ऐसा प्रतीत होता है और व्याख्याकारों ने भी यही व्याख्या की है कि एक व्यक्ति को अल्लाह ने सौ वर्ष तक के लिए मृत्यु दे दी। फिर सौ वर्ष पश्चात उसे जीवित किया तो उसका खाद्य और पेय तथा उसका गधा आदि सब ठोक-ठाक थे। यह बिल्कुल असंगत व्याख्या है जो कुरआन का अपमान है। इस आयत से केवल यही अभिप्राय है कि एक रात की नींद में उस व्यक्ति को आने वाले सौ वर्ष में घटित होने वाली घटनाएँ दिखाई गई। परन्तु जब उसकी आँख खुली तो अल्लाह ने उसे कहा, देख! तेरा गधा उसी प्रकार है और खाद्य भी उसी प्रकार तरो-ताज़ा है जैसा रात को रहा गया था।

** इस आयत के सम्बन्ध में भी भाष्यकारों ने आमक कल्पना की है कि हज़रत इब्राहीम अलै. को आदेश दिया गया था कि चार पक्षी पालो, फिर उनके छोटे-छोटे टुकड़े करके उत्तर, दक्षिण, पूर्व→

जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपना धन खर्च करते हैं उनका उदाहरण ऐसे बीज सदूश हैं जो सात बालियाँ उगाता हो । प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे (इससे भी) बहुत बढ़ा कर देता है । और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 1262।

वे लोग जो अपने धन को अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर जो वे खर्च करते हैं उसका उपकार जताते हुए अथवा कष्ट पहुँचाते हुए पीछा नहीं करते, उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दुःखी होंगे । 1263।

अच्छी बात कहना और क्षमा कर देना ऐसे दान से अधिक उत्तम है जिसके पीछे कोई कष्ट आ रहा हो । और अल्लाह निस्पृह (और) सहनशील है । 1264।

हे लोगों जो ईमान लाये हो ! अपने दान को उपकार जता कर अथवा कष्ट देकर उस व्यक्ति के सदूश नष्ट न करो जो अपना धन लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है और न तो अल्लाह पर और

مَثُلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سِبِيلٍ
اللَّهُو كَمَثُلٍ حَبَّةٌ أَنْبَتَ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ
سَبْنَابِلٍ مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُصْعِفُ لِمَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِ ④

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سِبِيلِ اللَّهِ
شَهْرًا لَا يُتِيمُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنْ أَذْى
لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرُنُونَ ⑤

قُولٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ
يَسْعَهَا أَذْىٌ وَاللَّهُ عَنِّيْ حَلِيمٌ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا أَصْدَقَكُمْ
بِالْمُسْتَكْفِيْنَ وَالْأَذْىٌ لِكَلِّ ذِيْنِيْكُمْ مَا لَهُ رَئَاءٌ
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ إِنَّ النَّاسَ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ⑦

← और पश्चिम में थोड़ा-थोड़ा रख दो । फिर उन को बुलाओ तो वे आ जायेंगे । अरबी शब्दकोश इस प्रकार का अर्थ करने की कदापि अनुमति नहीं देता । आयतांश सुर हुन्न इलैक में सुर शब्द की क्रिया सौन् धातु से बनी है जिस का अर्थ है आकृष्ट करना । अतः आयतांश का अर्थ है उन्हें अपने साथ सिधा लो । कई विद्वानों ने कहा है कि सुर हुन्न इलैक का अर्थ है उन्हें आवाज़ देकर अपनी ओर बुलाओ । (मुफ्रदात इमाम राशिद राहि ।) अतः इसी प्रकार जो आत्मायें अल्लाह से अनुरक्त होना चाहती हैं, जब अल्लाह उन्हें आवाज़ देता है तो वे तुरन्त उसकी की ओर वापस लौट आती हैं ।

न अन्तिम दिवस पर ईमान रखता है । अतः उसका उदाहरण एक ऐसे बदून के सदृश है जिस पर मिट्टी (की परत) हो । फिर उस पर मुसलाधार वर्षा हो तो उसे चटियल बना दे । जो कुछ वे कमाते हैं उसमें से किसी चीज़ पर वे कोई अधिकार नहीं रखते और अल्लाह काफिर लोगों को हिदायत नहीं देता । 265।

और जो लोग अपने धन को अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए और अपनों में से कइयों को दृढ़ता प्रदान करने के लिए खर्च करते हैं, उनका उदाहरण ऐसे उद्यान सदृश है जो उच्च स्थान पर स्थित हो और उस पर तेज़ वर्षा हो तो वह बढ़-चढ़ कर अपना फल दे, और यदि उस पर तेज़ वर्षा न हो तो ओस ही पर्याप्त हो । और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 266।

क्या तुम में से कोई पसन्द करेगा कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग हो, जिसके दामन में नहरें बहती हों । उसके लिए उसमें प्रत्येक प्रकार के फल हों । इसी प्रकार उस पर बुढ़ापा आ जाए जबकि उसके बच्चे अभी कमज़ोर (और छोटे) हों । तब उस (बाग) पर एक बबंडर चल पड़े जिस में आग (की ताप) हो, फिर वह जल जाये । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपने (चिह्न) खूब स्पष्ट करता है ताकि तुम सोच-विचार करो । 267। (रुकू 36)

فَمَثُلَهُ كَمَثِيلٍ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تَرَابٌ
فَأَصَابَهُ وَابْنُ فَتَرَكَهُ صَلْدًا
لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ قَمَّا كَسْبُوا
وَاللَّهُ لَا يَعْدِي النَّقْوَمَ الْكُفَّارِينَ ④

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ إِيمَانًا
مَرْضَاتٍ اللَّهُ وَشَيْئًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ
كَمَثِيلٍ جَنْقَعٍ بِرَبُوَةٍ أَصَابَهَا وَابْنٌ فَاتَّ
أَكْلَهَا ضَعْقَيْنِ ۝ فَإِنْ لَمْ يَصْبِهَا وَابْنٌ
فَطَلْ ۝ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ④

أَيُوْذٌ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِنْ
تَخْيِيلٍ وَأَغْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَرُ ۝ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الشَّمَرَاتِ
وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذِرِيَّةٌ صَفَاءٌ
فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَ
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَتِ لَعَلَّكُمْ
تَسْكُرُونَ ۝

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो ! जो कुछ तुम करते हो उसमें से और जो हमने तुम्हारे लिए धरती में से निकाला है, उसमें से भी पवित्र वस्तुओं को खर्च करो और (अल्लाह के रास्ते में) खर्च करते समय उसमें से ऐसे अपवित्र वस्तु का इरादा न किया करो कि जिसे तुम (अपने लिये) कदापि स्वीकार करने वाले न हो, सिवाएँ इसके कि तुम (अपमान के भय से) उससे अनदेखा कर लो और जान लो कि अल्लाह निस्पृह (और) अति प्रशंसनीय है । 1268।

शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है और तुम्हें अश्लीलता का आदेश देता है । जबकि अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से क्षमा और कृपा का बचन देता है और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 1269।

वह जिसे चाहता है तत्त्वज्ञान प्रदान करता है और जिसे तत्त्वज्ञान दिया जाये तो निश्चित रूप से उसे अत्यधिक भलाई प्रदान किया गया और बुद्धिमानों के सिवा कोई उपदेश ग्रहण नहीं करता । 1270।

और खर्च करने योग्य वस्तुओं में से जो भी तुम खर्च करो अथवा किसी प्रकार की कोई मन्त्र मानो तो निःसन्देह अल्लाह उसे जानता है और अत्याचारियों के लिए कोई सहायक नहीं । 1271।

यदि तुम दान को प्रकट करो तो यह भी अच्छी बात है और यदि तुम उन्हें छिपाओ और अभावग्रस्तों को दो तो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّفَقُوا مِنْ طَبِيعَتِ مَا كَسَبُوكُمْ وَمِمَّا أَخْرَجَنَّكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْحَيْثُ مِنْ شَيْقَوْنَ وَلَسْتُمْ بِإِخْزِيْهِ إِلَّا أَنْ تُعْصِمُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَنِّيْ حَمِيدٌ ⑤

أَتَشْيَطُنَّ يَعْدَكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعْدُكُمْ مَعْفَرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِ ⑥

يُؤْقِنُ الْحِكْمَةَ مَنْ يَتَّسِعُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتَى خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا يَدْكُرُ إِلَّا أُولَوِ الْأَلْبَابِ ⑦

وَمَا آنْفَقُوكُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذْرٍ ثُمَّ قُنْ شَدِّرْ قَوْنَ اللَّهُ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلْقَلِيلِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ⑧

إِنْ تُبْدِو الصَّدَقَاتِ فَعِمَّا هِيَ وَإِنْ تَخْفِيْهَا وَتُؤْتُهَا الْفُقَرَاءُ فَهُوَ خَيْرٌ

यह तुम्हारे लिए उत्तम है और वह (अल्लाह) तुम्हारी बहुत सी बुराइयाँ तुम से दूर कर देगा और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। 1272।

उनको हिदायत देना तेरा दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जो भी धन तुम खर्च करो तो वह तुम्हारे अपने ही हित में है। जबकि तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के सिवा (कभी) खर्च नहीं करते और जो भी तुम धन में से खर्च करो वह तुम्हें भरपूर वापस कर दिया जाएगा और तुम पर कदापि कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा। 1273।

(यह खर्च) उन अभावग्रस्तों के लिए है जिन्हें अल्लाह के रास्ते में घेर दिया गया है (और) वे धरती में चलने फिरने की शक्ति नहीं रखते। एक अज्ञान (उनकी) याचना न करने (की अभ्यास) के कारण उन्हें धनवान समझता है। (परन्तु) तू उनके लक्षणों से उन्हें पहचानता है। वे लोगों से पीछे पढ़ कर नहीं माँगते और जो कुछ धन में से तुम खर्च करो तो अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है। 1274।

(रुकू ٣٧)

वे लोग जो अपने धन रात को भी और दिन को भी, छिप कर भी और खुले-आम भी खर्च करते हैं, तो उनके लिए उनका प्रतिफल उनके

لَكُمْ وَيَكْفِرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ⑩

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدًى لَّهُوَ الَّذِي يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَمَا تُشْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ
فَلَا نَنْهَاكُمْ وَمَا تُشْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُشْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤْفَ
إِلَيْكُمْ وَأَنَّمَا لَا تُظْلَمُونَ ⑪

لِلْفَقَرَاءِ الَّذِينَ أَخْصَرُوا فِي سَيِّئِ الْأَعْمَالِ
لَا يَسْطِيعُونَ صَرْبًا فِي الْأَرْضِ
يَحْسِبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعْفُفِ
تَعْرُفُهُمْ بِسِيمَهُمْ لَا يَسْلُونَ النَّاسَ
إِلَحَافًا وَمَا تُشْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ ۝

الَّذِينَ يُشْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِإِلَيْلٍ وَالنَّهَارِ
سِرًا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ

रब्ब के निकट है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दुःखित होंगे। 1275।

वे लोग जो ब्याज खाते हैं वे उसी प्रकार खड़े होते हैं जैसे वह व्यक्ति खड़ा होता है जिसे शैतान ने (अपने) स्पर्श से भौचक कर दिया हो। यह इसलिए है कि उन्होंने कहा, निश्चित रूप से व्यापार ब्याज ही के सदृश है। जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अतः जिसके पास उसके रब्ब की ओर से उपदेश आ जाये और वह रुक जाये तो जो पहले हो चुका वह उसी का रहेगा और उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है। और जो कोई पुनः ऐसा करे तो यही लोग ही आग वाले हैं। वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं। 1276।

अल्लाह ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है और अल्लाह प्रत्येक बड़े कृतघ्न (और) महापापी को पसंद नहीं करता। 1277।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाये और नेक कर्म किये और उन्होंने नमाज को कायम किया और ज़कात दी, उनके लिए उनका प्रतिफल उनके रब्ब के निकट है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दुःखित होंगे। 1278।

हे वे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और यदि तुम (वस्तुतः) मोमिन हो तो ब्याज में से जो बाकी रह गया है छोड़ दो। 1279।

رَبِّهِمْ وَلَا حَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرَثُونَ ﴿٢﴾
 الَّذِينَ يُكَلِّفُونَ الرَّبِّ بِالْأَيْقُومُونَ إِلَّا
 كَمَا يَقُولُ الَّذِي يَسْجُّطُهُ السَّيْطَنُ مِنَ
 الْمَسِّ لِذِلِّكَ بِإِنَّهُمْ قَاتُلُوا إِلَمَا بَيْعَ مِثْلُ
 الرَّبِّ بِأَمْلَى وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَمَ الرَّبِّ بِأَمْلَى
 فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ
 مَا سَلَفَ وَأَمْرَةٌ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ
 فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا حَلِيلُونَ ﴿٣﴾

يَمْحَقُ اللَّهُ الرَّبِّ بِأَوْيُرِي الصَّدَقَتِ وَاللَّهُ
 لَا يُحِبُّ كُلَّ كُفَّارٍ أَشِيجُ ﴿٤﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
 وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَتَوْا الزَّكُوَةَ لَهُمْ
 أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا حَوْفٌ عَلَيْهِمْ
 وَلَا هُمْ يَحْرَثُونَ ﴿٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ لَغُنْثُمْ مُؤْمِنُينَ ﴿٦﴾

और यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से युद्ध की घोषणा सुन लो । और यदि तुम प्रायश्चित करो तो तुम्हारे मूल धन तुम्हारे ही रहेंगे । न तुम अत्याचार करोगे, न तुम पर अत्याचार किया जाएगा । 280।

और यदि कोई अभावग्रस्त हो तो (उसे) सम्पन्नता प्राप्ति तक छूट देनी चाहिए और यदि तुम कुछ ज्ञान खत्ते हो तो तुम दान (स्वरूप मूलधन को भी छोड़) दो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है । 281।

और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे । फिर हर जान को जो उसने कमाया पूरा-पूरा दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 282। (रुक् 38)

हे लोगो जो ईमान लाये हो ! जब तुम एक निश्चित अवधि तक के लिए ऋण का आदान प्रदान करो तो उसे लिख लिया करो । और चाहिए कि तुम्हारे बीच लिखने वाला न्याय पूर्वक लिखे और कोई लिपिक लिखने से इनकार न करे । अतः वह लिखे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया है और वह व्यक्ति लिखवाये जिस के ज़िम्मे (दूसरे का) देय है, और अपने रब्ब अल्लाह का तक़वा धारण करे, और उसमें से कुछ भी कम न करे । अतः यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे (दूसरे

فَإِنْ لَمْ تَقْعُلُوا فَأَذْتُو بِهِرْبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتَمِ فَلَا كُفْرُهُ مُؤْسَسٌ
أَمْوَالِكُمْ لَا تَنْظِلُمُونَ وَلَا تُظْلِمُونَ ④

وَإِنْ كَانَ ذُو عَسْرَةً فَنَظِرْهُ إِلَى مَيْسَرَةٍ
وَأَنْ تَصْدِقُوا حَيْرَلَكُمْ أَنْ تُبْتَمِ
تَعْلَمُونَ ⑤

وَأَئُنَّهُمْ مَا تُرْجِعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ
ثُوْقٌ كُلُّ نَفِسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُنَّ
لَا يُظْلِمُونَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا يَسْتَحْمِلُونَ إِلَيْ
أَجَلٍ مُّسَعٍ فَإِنَّكُبُوهُ وَلَيَكْتُبَ يَكْتُمُ
كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْبُ كَاتِبٌ أَنْ
يَكْتُبَ كَمَا عَلِمَ اللَّهُ فَلَيَكْتُبَ
وَلَيُمْلِلَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلَيُسْقِطَ اللَّهُ رَبَّهُ
وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنَّ كَانَ الَّذِي

का) देय है, ना-समझ हो अथवा दुर्बल हो अथवा लिखवाने से असमर्थ हो तो उसका संरक्षक (उसका प्रतिनिधित्व करते हुए) न्याय पूर्वक लिखवाये । और अपने पुरुषों में से दो को साक्षी ठहरा लिया करो । और यदि दो पुरुष उपलब्ध न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ जिन्हें तुम चाहो, साक्षी ठहरा लो । (यह) इसलिए (है) कि उन दो स्त्रियों में से यदि एक भूल जाये तो दूसरी उसे याद करवा दे । और जब साक्षियों को बुलाया जाये तो वे इनकार न करें और (लेन-देन) चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे उसकी निश्चित अवधि तक (अर्थात् संपूर्ण अनुबंधन) लिखने से न उकताओ । तुम्हारी यह कार्यशैली अल्लाह के निकट अत्यन्त न्यायसंगत ठहरेगी और साक्ष्य स्थापित करने के लिए ठोस प्रमाण होगा, और इस बात के अधिक निकट होगा कि तुम सन्देहों में न पड़ो । (लिखना अनिवार्य है) सिवाय इसके कि वह हाथों-हाथ व्यापार हो जिसे तुम (उसी समय) आपस में ले-दे लेते हो, इस अवस्था में उसे नहीं लिखने से तुम पर कोई पाप नहीं । और जब तुम कोई (लम्बा) क्रय-विक्रय करो तो साक्षी ठहरा लिया करो । और लिपिक को तथा साक्षी को (किसी प्रकार का कोई)

عَلَيْهِ الْحُكْمُ سَفِينًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا
يَسْتَطِعُ أَنْ يُمْلَى هُوَ فَلِيمُلُّ وَلِهُ
بِالْعَدْلِ وَانْسَهَدُوا شَهِيدُنِ مِنْ
رِجَالِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَأُمْرَأَتِنِ مِمْنُ تَرْضُونَ مِنْ
الشَّهَدَاءِ أَنْ تَقْسِيلَ إِخْدَلَهُمَا فَذَكَرَ
إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى وَلَا يَأْبَ الشَّهَدَاءِ
إِذَا مَا دُعُوا وَلَا تَسْمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ
صَغِيرًا أَوْ كَيْرًا إِلَى آجِلِهِمْ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ
عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَذْلَى الْأَلاَ
تُرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُؤْيِرُ وَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جَمَاحٌ
إِلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهُدُوا إِذَا تَبَيَّنَ
وَلَا يَضَأَ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفْعَلُوا

कष्ट न दिया जाये। यदि तुम ने ऐसा किया तो निश्चित रूप से यह तुम्हारे लिए बड़े पाप की बात होगी। और अल्लाह से डरो, जबकि अल्लाह ही तुम्हें शिक्षा देता है और अल्लाह प्रत्येक विषय का भली-भाँति ज्ञान रखता है। 1283।

और यदि तुम यात्रा पर हो और तुम्हें लिपिक न मिले तो बंधक के रूप में कोई वस्तु ही सही कब्जा में ले लो। अतः यदि तुम में से कोई किसी दूसरे के पास अमानत रखे तो जिस के पास अमानत रखवाई गई है उसे चाहिए कि वह उसकी अमानत को अवश्य वापस करे और अपने रब अल्लाह का तकब्बा धारण करे। और तुम साक्ष्य को न छिपाओ और जो कोई भी उसे छिपायेगा तो निश्चित रूप से उसका दिल पापी हो जाएगा और जो तुम करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। 1284।

(स्कू 39)

जो कुछ आकाशों में है और जो धरती में है, अल्लाह ही का है। और जो तुम्हारे दिलों में है चाहे तुम उसे छिपाओ या प्रकट करो, अल्लाह उसके बारे में तुम से हिसाब लेगा। अतः वह जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसे चाहेगा अज्ञाब देगा और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 1285।

فَإِنَّهُ قُتُّقٌ بِكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ۝

وَيَعْلَمُكُمُ اللَّهُ۝ وَاللَّهُ۝ يَعْلَمُ شَيْءًا عَلَيْمٌ ۝

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا
فَرِهْنَج مَقْبُوضَة ۝ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُمْ
بَعْضًا فَلْيُؤْذِنَ الَّذِي أُوتِمَ أَمَانَتَهُ وَيُشَقِّ
اللَّهُ رَبَّكَهُ ۝ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۝ وَمَنْ
يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ أَئِمَّ قَلْبَهُ ۝ وَاللَّهُ۝ بِمَا
تَعْمَلُونَ عَلَيْهِمْ ۝

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۝ وَإِنْ

تَبْدُوا مَا فِي قُلُوبِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ

يُحَاسِبُكُمْ بِهِ اللَّهُ۝ فَيَعْلَمُ لِمَنْ يَشَاءُ

وَيَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ۝ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيرٌ ۝

रसूल उस पर ईमान ले आया जो उसके रब्ब की ओर से उस की ओर उतारा गया और मोमिन भी । (उन में से) हर एक अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके रसूलों पर (यह कहते हुए) ईमान ले आया कि हम उसके रसूलों में से किसी के बीच प्रभेद नहीं करेंगे और उन्होंने कहा कि हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया । हे हमारे रब्ब ! हम तुझ से क्षमा याचना करते हैं और (हमें) तेरी ओर ही लौट कर जाना है । 1286।

अल्लाह किसी जान पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता । जो उसने कमाया उसके लिए है और जो उसने (बुराई) अर्जित की उसका दुष्परिणाम भी उसी पर है । हे हमारे रब्ब ! यदि हम भूल जायें अथवा हमसे कोई अपराध हो जाए तो हमारी पकड़ न कर । और हे हमारे रब्ब ! हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा हमसे पहले लोगों पर (उनके पापों के परिणाम स्वरूप) तू ने डाला । और हे हमारे रब्ब ! हम पर कोई ऐसा बोझ न डाल जो हमारी शक्ति से बढ़कर हो । और हम से ढिलाई बरत और हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर । तू ही हमारा संरक्षक है । अतः काफिर लोगों के विरुद्ध हमें सहायता प्रदान कर । 1287। (रुकू 40/8)

أَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ
وَالْمُؤْمِنُونَ طَمْئِنُونَ طَمْئِنُونَ أَمَنَ بِاللَّهِ وَمَلِكِهِ
وَكُتُبِهِ وَرَسُولِهِ لَا تُفَرقُ بَيْنَ أَحَدٍ قُنْ
رَسُولِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمُصِيرُ ⑥

لَا يَكْلُفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسْعَهَا لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ طَرِبَّا لَا
نُؤَاخِذُنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَلْنَا رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْنَا عَلَى
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا
كَانَ لَنَا يَهُ وَاغْفُرْنَا وَاغْفِرْنَا
وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَنَا فَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكُفَّارِينَ ⑦

3- सूरः आले इम्रान

यह सूरः हिजरत के तीसरे वर्ष अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 201 आयतें हैं।

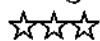
इस सूरः में सूरः अल फ़ातिहः में वर्णित तीसरे गिरोह ज़ाल्लीन (पथभ्रष्टों) का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इस पहलू से ईसाई धर्म का आरंभ, हज़रत मरियम का जन्म और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारिक जन्म का वर्णन किया गया है। हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के साथ अल्लाह तआला का जो असाधारण दया और कृपापूर्ण बर्ताव था और जिस प्रकार अल्लाह तआला परोक्ष रूप से उन्हें जीविका प्रदान करता था, उसका भी इस सूरः में वर्णन मिलता है। मालूम होता है कि हज़रत मरियम अलैहस्सलाम की पवित्रता को देख कर ही हज़रत ज़करिया अलै. के मन में पवित्र संतान प्राप्ति की उत्कट इच्छा जगी थी।

इस सूरः में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारों का भी इस रंग में उल्लेख मिलता है कि बाइबिल पढ़कर दिल में जो भ्रम उत्पन्न होते हैं, उन सब का कुरआन करीम ने चमत्कारों की वास्तविकता का वर्णन करते हुए खंडन कर दिया है। इस सूरः में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की स्वभाविक मृत्यु की भी चर्चा की गई है।

इस सूरः में यहूदियों की प्रतिज्ञा के मुकाबले पर नवियों की प्रतिज्ञा का उल्लेख मिलता है, जो सब नवियों से ली गई थी, जिस का सार यह है कि यदि तुम्हारे पश्चात अल्लाह के ऐसे रसूल पैदा हों, जो तुम्हारी नेक शिक्षाओं की पुष्टि करने वाले और उनका पालन करने वाले हों तो तुम्हारी जाति के लिए उनकी सहायता करना अनिवार्य है। यह वह प्रतिज्ञा है जिसका सूरः अल अह्जाब में भी वर्णन है और यही प्रतिज्ञा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ली गई थी।

इस सूरः में अनेक विषयों के साथ-साथ अर्थदान के सिद्धांत का भी उल्लेख हुआ है और कहा गया कि जब तक तुम अल्लाह के रास्ते में उसे खर्च न करो जिस से तुम प्रेम करते हो और जो तुम्हें अच्छा लगे, तब तक तुम्हारा दान स्वीकार्य नहीं हो सकता।

इस सूरः में बद्र युद्ध के समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस चमत्कारिक विजय का भी उल्लेख है जिस के पश्चात इस्लाम की विजय यात्रा आरंभ होती है। इसी प्रकार उहद युद्ध का भी वर्णन है कि हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम की कुर्बानी की याद को ताज़ा करते हुए किस प्रकार सहाबा रज़ि. भेड़ बकरियों की भाँति मारे गये, परन्तु उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ नहीं छोड़ा।



شُورَةُ الْعَمْرَنِ مَدِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَأْتِيَ أَيْةٌ وَعَشْرُونَ رُكُونًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे
अधिक जानने वाला हूँ । 12

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य
नहीं । सदा जीवित रहने वाला (और)
स्वयं प्रतिष्ठित है । 13

उसने तुझ पर सत्य के साथ पुस्तक
उतारी है, उसकी पुस्ति करती हुई जो
उसके सामने है । और उसी ने तौरात
और इंजील को उतारा है । 14

इससे पहले, लोगों के लिए हिदायत के
रूप में और उसी ने फुर्कान उतारा ।
निस्सदेह वे लोग जिन्होंने अल्लाह की
आयतों का इनकार किया उनके लिए
कठोर अज्ञाब (निश्चित) है । और
अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
प्रतिशोध लेने वाला है । 15

निस्सन्देह अल्लाह वह है जिस पर धरती
या आकाश में स्थित कोई वस्तु छिपी
नहीं रहती । 16

वही है जो तुम्हें गर्भाशयों में जैसे रूप में
चाहे ढालता है । उसके सिवा कोई
उपास्य नहीं, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
परम विवेकशील है । 17

वही है जिसने तुझ पर पुस्तक उतारी
उसी में से मुहकम (निश्चायक) आयतें

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ

اللَّهُمَّ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ إِنْهَى الْقَوْمُ مِنْ

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مَصِيقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ الشَّوْرَى وَالْأَخْيَلَ ۖ

مِنْ قَبْلِ هَذِهِ لِتَأْتِيَ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۖ
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقامَةٍ ۖ ۷

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفِي عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاوَاتِ ۖ

هُوَ الَّذِي يَصُورُ كُمْ فِي الْأَرْضَ كَيْفَ
يَسْأَمُ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۷

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ أَيُّ

हैं, जो पुस्तक के मूल हैं और कुछ अन्य मुतशाबिह (अनेकार्थक) हैं। अतः वे लोग जिन के दिलों में टेढ़ापन है वे फसाद करने की इच्छा से उसका भावार्थ करते हुए उसमें से उसका अनुसरण करते हैं जो मुतशाबिह है। हालाँकि अल्लाह और परिपक्व ज्ञानियों के सिवा कोई उसका भावार्थ नहीं जानता। वे कहते हैं हम इस पर ईमान ले आए, सब हमारे रब्ब की ओर से है और बुद्धिमान व्यक्तियों के सिवा कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता।¹

हे हमारे रब्ब ! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे। और हमें अपनी ओर से कृपा प्रदान कर। निस्संदेह तू ही महादानी है।¹⁹

हे हमारे रब्ब ! निस्संदेह तू लोगों को उस दिन के लिए एकत्रित करने वाला है जिसमें कोई संदेह नहीं। निस्संदेह अल्लाह वचन भंग नहीं करता।¹⁰

(रुक् ١)

वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके धन और उनकी संतान अल्लाह के मुकाबिले पर उनके किसी काम नहीं आएँगे और यही लोग आग का ईंधन हैं।¹¹

फिर औन की जाति की कार्यशैली की भाँति और उन लोगों की भाँति जो

مُحْكَمٌ هُنَّ أَمْرُ الْكِتَبِ وَأَخْرُ
مُشَبِّهُتُ فَإِمَّا مَا إِلَيْنَا فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ
فَيَقُولُونَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَبْيَعَ الْفِتْنَةَ
وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ وَالرَّسُولُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ
إِنَّمَا يَهِيءُ كُلُّ مَنْ عَذَرَ بِنَا وَمَا يَذَكَّرُ إِلَّا
أُولُو الْأَلْبَابِ ⑥

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْهَبْنَا وَهُبْ
لَكَ مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَابُ ①

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَبِّ
فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْلُفُ الْمِيعَادَ ④

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تَعْنِي عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنْ أَنَّ اللَّهَ يُعْلِمُ
وَأُولَئِكُمْ هُمْ وَقُوْدُ التَّارِ ③
كَذَابُ أَلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ

* कुरआन करीम की कुछ आयतें इस अर्थ में मुहकम हैं कि उनके किसी प्रकार से गलत अर्थ किए ही नहीं जा सकते। परन्तु कुछ मुतशाबिह आयतों के भावार्थ में यह संदेह रहता है कि उनके गलत अर्थ न निकाल लिए जाएँ। यदि मुहकम आयतों की ओर उस गलत भावार्थ को लौटाया जाए तो मुहकम आयतें उसको नकार देती हैं। इसी कारण उनको उम्मुल किताब (पुस्तक का मूल) कहा गया।

उनसे पहले थे । उन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उनको पकड़ लिया और अल्लाह दंड देने में अत्यन्त कठोर है । 121

जिन्होंने इनकार किया उनसे कह दे कि तुम अवश्य पराजित किए जाओगे और नरक की ओर इकट्ठे ले जाए जाओगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है । 131

निस्सदेह उन दो गिरोहों में तुम्हरे लिए एक बड़ा चिह्न था, जिनकी मुठभेड़ हुई । एक गिरोह अल्लाह के लिए लड़ रहा था और दूसरा काफिर था । वे उन्हें भौतिक दृष्टि से अपने से दुगना देख रहे थे और अल्लाह जिसे चाहे अपनी सहायता के साथ समर्थन देता है । निस्सदेह इसमें ज्ञान-दृष्टि रखने वालों के लिए अवश्य एक बड़ी सीख है । 141

लोगों के लिए स्वभाविक रूप से पसन्द की जाने वाली चीज़ें यथा :- स्त्रियों और संतान और ढेरों-ढेर सोने चाँदी और विशेष चिह्न अंकित किये गये घोड़ों और चौपायों तथा खेतियों का प्रेम सुन्दर करके दिखाया गया है । यह सांसारिक जीवन का अस्थायी सामान है और अल्लाह वह है जिस के पास बहुत उत्तम लौटने का स्थान है । 151

तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इन से उत्तम वस्तुओं की सूचना दूँ ? उनके लिए जो तकब्बा अपनाते हैं उनके रब्ब के पास ऐसे बागान हैं जिनके दामन में नहरें

قَبِيلْهُمْ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخْذَهُمُ اللَّهُ
بِمَا نَوْبَهُمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑩

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْلَبُونَ وَتَحْسَرُونَ
إِلَى جَهَنَّمَ وَإِنَّ الْمَهَادَ ⑪

قَدْ كَانَ لَكُمْ أَيَّهُ فِي قِتَائِنِ التَّقَتَّا فِئَةٌ
تَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَى كَافِرَةٌ
يَرَوْنَهُمْ مُثْلِيهِمْ رَأَى الْعَيْنَ وَاللَّهُ
يُؤْتِدِ بِنَصْرٍ مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لِعْرَةً لِأُولَى الْأَبْصَارِ ⑫

رُئِيَتْ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَتِ مِنَ النَّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقْتَرَةِ مِنَ
الدَّهِبِ وَالْفَضَّةِ وَالْحَبِيلِ الْمُسَوَّمَةِ
وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الَّذِيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ⑬

قُلْ أَوْ نَسِيْكُمْ بِخَيْرٍ مِنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ
أَتَقْوَى عَنْ دَرِيْهُمْ جَهْنَمْ تَجْرِيْ فِيْ مِنْ

बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले हैं और (उनके लिए) पवित्र किए हुए जोड़े हैं और अल्लाह की ओर से प्रसन्नता है । और अल्लाह भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है ॥16॥

(यह उन लोगों के लिए है) जो कहते हैं, हे हमारे रब ! निस्सदेह हम ईमान ले आए । अतः हमारे पाप क्षमा कर दे और हमें आग के अज्ञाब से बचा ॥17॥

(ये बागान उनके लिए हैं) जो धैर्य रखने वाले हैं और सच बोलने वाले हैं और आज्ञापालन करने वाले हैं और खर्च करने वाले हैं तथा प्रातःकाल क्षमायाचना करने वाले हैं ॥18॥

अल्लाह न्याय पर स्थित होकर गवाही देता है कि उसके अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं और फ़रिश्ते और ज्ञानी जन भी (यही गवाही देते हैं) । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ॥19॥

निश्चित रूप से धर्म अल्लाह के निकट इस्लाम ही है । और उन लोगों ने जिन्हें पुस्तक दी गई उन्होंने केवल परस्पर विद्रोह करते हुए मतभेद किया, जबकि उनके पास ज्ञान आ चुका था । और जो अल्लाह की आयतों का इनकार करता है तो निस्सदेह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है ॥20॥

अतः यदि वे तुझ से झगड़ा करें तो कह दे कि मैं तो अपना ध्यान विशुद्ध रूप से

تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ فِيهَا وَأَرْوَاحُ
مَطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ يَصِيرُ
بِالْعِبَادِ ⑯

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمْنًا فَاغْفِرْنَا
ذُنُوبَنَا وَقِنَاعَدَابَ التَّارِ ⑰

الْأَصْرِيْنَ وَالصِّدِّيقِيْنَ وَالْفَتَيْتِيْنَ
وَالْمُتَّقِيْنَ وَالْمُسْعَفِيْرِيْنَ بِالْأَشْجَارِ ⑱

شَهَدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلِكُ
وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقُسْطَ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑲

إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۝ وَمَا
أَخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۝ وَمَنْ
يُكَفِّرُ بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَانَ اللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ⑳

فَإِنْ حَاجَوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِي لِلَّهِ

अल्लाह की इच्छा के अधीन कर चुका हूँ और वे भी जिन्होंने मेरा अनुसरण किया । और जिन्हें पुस्तक दी गई उन्हें और उन अज्ञानियों से भी कह दे कि क्या तुम इस्लाम स्वीकार कर लिये हो ? अतः यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लिये हैं तो निस्संदेह वे हिदायत पा चुके और यदि वे पीठ फेर लें तो तुझ पर केवल (संदेश) पहुँचाना अनिवार्य है । और अल्लाह भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 211 (रुकू २/१०)

निस्संदेह वे लोग जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं और नवियों का अकारण घोर विरोध करते हैं और लोगों में से उनका भी घोर विरोध करते हैं जो न्याय का आदेश देते हैं । तू उन्हें पीड़ाजनक अज्ञाब का समाचार देदे । 221 *

यही वे लोग हैं जिनके कर्म इहलोक में और परलोक में भी नष्ट हो गए । और उनके कोई सहायक नहीं होंगे । 231

क्या तूने उनकी ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्हें पुस्तक में से एक भाग दिया गया था । उन्हें अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच फैसला करे, फिर भी उनमें से एक पक्ष पीठ फेर कर चला जाता है और वे विमुख होने वाले होते हैं । 241

(उनकी) यह दशा इस लिए है कि उन्होंने कहा कि हमें गिनती के कुछ दिन

وَمِنْ أَتَّبَعِنَ وَقُلْ لِلّٰهِ دِيْنُ أَوْ تُوَاكِبُ الْكِتَابَ
وَالْأَمْرِينَ إِذَا سَلَّمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمْتُمْ فَقَدْ
اَهْمَدْتُمْ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكُمُ الْبُلْغَةُ
وَاللّٰهُ بِصِيرٌ بِالْعِبَادَةِ

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ وَيَقْتَلُونَ
الثِّئَرَ بِعَيْرِ حُقٍّ وَيَقْتَلُونَ الَّذِينَ
يَأْمُرُونَ بِالْقُسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَيْسِرُهُمْ
بِعَذَابِ الْيَوْمِ

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَطَّتْ أَعْمَانُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نُصْرٍ نِّينَ
الْمُرْتَأَى الَّذِينَ أَوْتَوْا نَصِيبَامِنَ
الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ
بِيَنْهُمْ ثُمَّ يَوْمَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ وَهُمْ
مُعْرِضُونَ

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَاتُلُوا إِنْ تَمَسَّكُوا إِلَّا

* अरबी शब्द क़त्तल का अर्थ घोर विरोध और सामाजिक बहिष्कार के भी हैं । (लिसान-उल-अरब)

के सिवा आग कदापि नहीं छुएगी, और जो वे झूठ बोला करते थे उसने उनको उनके धर्म के विषय में धोखे में डाल दिया । 25।

अतः क्या दशा होगी उनकी जब हम उन्हें एक ऐसे दिन के लिए एकत्रित करेंगे जिसमें कोई संदेह नहीं और प्रत्येक जान को जो उसने कमाया उसका पूरा प्रतिफल दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा । 26।

तू कह दे हे मेरे अल्लाह ! राज्य के अधिपति ! तू जिसे चाहे सत्ता प्रदान करता है और जिससे चाहे सत्ता छीन लेता है । और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है । भलाई तेरे हाथ ही में है । निस्संदेह तू हर चीज पर जिसे तू चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है । 27।

तू रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और तू मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है । और तू जिसे चाहता है वे-हिसाब जीविका प्रदान करता है । 28।

मोमिन, मोमिनों को छोड़ कर काफिरों को मित्र न बनाएँ और जो कोई ऐसा करेगा तो वह अल्लाह से बिल्कुल कोई सम्बंध नहीं रखता । सिवाए इसके कि तुम उनसे पूरी तरह सतर्क रहो और अल्लाह तुम्हें अपने आप से सावधान

أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑩

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبٌ
فِيهِ وَوْقِيْتٌ كُلُّ نَّسِيْنَ مَا كَسَبُتُ
وَهُمْ لَا يَظْلَمُونَ ⑪

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِ الْمُلْكَ مَنْ
تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ
وَتُعْزِّزُ مَنْ تَشَاءُ وَتُنْذِلُ مَنْ تَشَاءُ بِسْمِكَ
الْحَمْرَاءِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑫

تَوْلِيجُ الَّيلِ فِي النَّهَارِ وَتَوْلِيجُ النَّهَارِ فِي
الَّيلِ وَتَخْرِيجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَتَخْرِيجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑬

لَا يَئْتِي خَدِيْنَ الْمُؤْمِنُونَ الْكُفَّارِينَ أَوْ لِيَأْتِ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَعْلَمُوا
مِنْهُمْ تَفْسِيْهٌ وَيَحْذَرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ

करता है और अल्लाह ही की ओर लौट
कर जाना है । 29।

तू कह दे, जो तुम्हारे सीनों में है चाहे
तुम उसे छिपाओ या प्रकट करो अल्लाह ह
उसे जान लेगा । और वह जानता है जो
आसमानों में है और जो धरती में है ।
और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे
स्थायी सामर्थ्य रखता है । 30।

जिस दिन प्रत्येक जान, जो भी नेकी
उसने की होगी उसे अपने सामने
उपस्थित पाएगी और उस बुराई को भी
जो उसने की होगी । वह इच्छा करेगी
कि काश ! उसके और उस (बुराई) के
मध्य बहुत दूर का फासला होता । और
अल्लाह तुम्हें अपने आप से सावधान
करता है । हालाँकि अल्लाह भक्तों से
बहुत दया पूर्वक पेश आने वाला है । 31।

(रुकू ٣١)

तू कह दे यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो
तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम
करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और
अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 32।

तू कह दे अल्लाह का और रसूल का
आज्ञापालन करो । फिर यदि वे मुँह फेर
लें तो अल्लाह काफिरों को निश्चित रूप
से पसन्द नहीं करता । 33।

निसंदेह अल्लाह ने आदम और नूह और
इब्राहीम के वंशज तथा इम्रान के वंशज
को समग्र जगत के मुकाबले पर चुन
लिया । 34।

وَإِنَّ اللَّهَ الْمَصِيرُ ⑩

قُلْ إِنَّنِي لَمْ يَعْلَمْ مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تَبْدُؤُهُ
يَعْلَمُ اللَّهُ طَ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ طَ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

يَوْمَ تَجْدَدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُّخْسِرًا طَ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوْدِعُ
لَوْ آنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَهَا أَمْدَادًا طَ
وَيَحْدِرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ طَ وَاللَّهُ رَءُوفٌ
بِالْعِبَادِ ⑪

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحْبِبُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي
يَعْبُدُكُمُ اللَّهُ طَ وَيَعْفُرُ لَكُمْ ذُنُوبُكُمْ طَ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑫

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ طَ فَإِنْ تَوَلُوا
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكُفَّارِينَ ⑬

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى أَدَمَ وَنُوحًا وَآلَ
ابْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ طَ

उनमें से कुछ, कुछ की संतान में से हैं और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 135।

जब इम्रान की एक स्त्री ने कहा, हे मेरे रब ! जो कुछ भी मेरे पेट में है निस्संदेह उसे मैंने (संसार के ज्ञमेलों से) मुक्त करते हुए तुझे भेट कर दिया । अतः तू मुझ से स्वीकार कर ले । निस्संदेह तू ही बहुत सुनने वाला (और) बहुत जानने वाला है। 136।

फिर जब उसने उसे जन्म दिया तो उसने कहा है मेरे रब ! मैंने तो पुत्री को जन्म दिया है । जबकि अल्लाह बेहतर जानता है कि उसने किसे जन्म दिया था और नर मादा की भाँति नहीं होता और (उस इम्रान की स्त्री ने कहा) मैंने इसका नाम मरियम रखा है, और मैं इसे और इसकी संतान को धुतकारे हुए शैतान से तेरी शरण में देती हूँ। 137।*

अतः उसके रब ने उसे अच्छी प्रकार से स्वीकार कर लिया और उसका उत्तम ढंग से पालन-वर्धन किया और ज़करिया को उसका अभिभावक ठहराया । जब कभी भी ज़करिया ने उसके पास मेहराब (उपासना-कक्ष) में प्रवेश किया तो उसने उसके पास कोई

ذِرْيَةٌ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ^۱ وَ اللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ^۲

إذْ قَالَتْ امْرَأَتُ عُمَرَ رَبِّيْ إِنِّي
نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَقَبَّلَ
مِنْيَهُ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ^۳

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَاتُرَبِّيْ إِنِّي وَضَعَتْهَا
أَنْثَى^۴ وَ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ^۵ وَ لَيْسَ
الدُّكَرُ كَالْأَنْثَى^۶ وَ لَيْسَ سَمِيْعَهَا مَرِيَمَ
وَ لَيْسَ أَعْيُدُهَا إِلَكَ وَ ذِرْيَةَهَا مِنَ الشَّيْطَنِ
الرَّجِيمِ^۷

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا يَقْبُولُ حَسَنٌ وَ أَنْبِهَا نَبَاتًا
حَسَنًا^۸ وَ كَفَّلَهَا زَكَرِيَّا^۹ كَلْمَادَ حَلَّ عَلَيْهَا
رَكْرِيَّا الْمُحَرَّابُ^{۱۰} وَ جَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا^{۱۱}
قَالَ يَمْرِيَّا أَنِّي لَكِ هَذَا^{۱۲} قَاتُرَبِّيْ هُوَ مِنْ

* जब इम्रान की स्त्री ने अपने हाँ पैदा होने वाली बच्ची (हज़रत मरियम) के विषय में कहा कि यह तो लड़की है हालाँकि मैंने अल्लाह से लड़का माँगा था । अल्लाह तआला उत्तर देता है कि, अल्लाह भली-भाँति जानता है कि लड़का और लड़की अलग-अलग होते हैं । परन्तु यह लड़की जो तुम्हें प्रदान की गई है, यह साधारण लड़कियों की भाँति नहीं है इसमें अल्लाह तआला ने यह क्षमता रख दी है कि बिना दांपत्य सम्बन्ध के इसका बच्चा पैदा हो सकता है ।

भोजन पाया । उसने कहा हे मरियम ! तेरे पास यह कहाँ से आता है ? उसने (उत्तर में) कहा यह अल्लाह की ओर से है । निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के जीविका प्रदान करता है । 138।

इस अवसर पर ज़करिया ने अपने रब्ब से दुआ की, हे मेरे रब्ब ! मुझे अपनी ओर से पवित्र संतान प्रदान कर । निस्संदेह तू बहुत दुआ सुनने वाला है । 139।

अतः फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी जबकि वह मेहराब में खड़ा उपासना कर रहा था, कि अल्लाह तुझे यहाँ की खुशखबरी देता है जो अल्लाह की एक महान वाक्य की पुष्टि करने वाला होगा और वह सरदार और अपने अन्तःकरण की पूरी सुरक्षा करने वाला, और सदाचारियों में से एक नबी होगा । 140।

उसने कहा हे मेरे रब्ब ! मेरा कैसे पुत्र होगा जबकि मुझ पर बुढ़ापा आ गया है और मेरी पत्नी बांझ है । उसने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है करता है । 141।

उसने कहा हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए कोई चिह्न निश्चित कर दे । उसने कहा तेरा चिह्न यह है कि केवल इशारों के अतिरिक्त तू तीन दिन लोगों से बात न करे और अपने रब्ब को बहुत अधिकता से याद कर और शाम को और सुबह को उसका गुणगान कर । 142। (रुू० १२)

عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ④

هَنَالِكَ دَعَازٌ كَرِيَارَبَّهُ فَالْرَّبِّ هُبْ
لِمْ مِنْ لَدُنْكَ ذُرِيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ
سَوِيعُ الدُّعَاءِ ⑤

فَنَادَاهُ الْمَلِكَ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي
الْمُحْرَابِ إِنَّ اللَّهَ يَسِّرْكَ بِيَعْيَى
مَصْدِيقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَسِيدًا وَحَصُورًا
وَنَبِيًّا مِنَ الصَّلِحِينَ ⑥

قَالَ رَبِّي أَنِّي يَكُونُ لِي عَلَمٌ وَقَدْ بَلَغْتِي
الْكِبْرُ وَأُمْرَأٌ فِي عَاقِرٍ ⑦ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ
يَعْلَمُ مَا يَسِّأْمُ ⑧

قَالَ رَبِّي اجْعَلْنِي أَيَّةً ⑨ قَالَ أَيْتَكَ أَلَا
تَكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ آيَاتٍ إِلَّا رَمَزاً
وَإِذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَيَخْ بِالْعَشَّ
وَالْأَنْكَارِ ⑩

और जब फरिश्तों ने कहा, हे मरियम ! निससंदेह अल्लाह ने तुझे चुन लिया है और तुझे पवित्र कर दिया है और तुझे समग्र जगत की स्त्रियों पर श्रेष्ठता प्रदान की है । 43।

हे मरियम ! अपने रब्ब की आज्ञाकारिणी हो जा और सजदः कर और झुकने वालों के साथ झुक जा । 44।

यह अदृष्ट समाचारों में से है जो हम तेरी ओर वहइ कर रहे हैं और तू उनके पास नहीं था जबकि वे इस विषय पर पर्ची डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरियम का भरण-पोषण करेगा और तू उनके पास नहीं था जब वे (इस विषय में) झगड़ रहे थे । 45।

जब फरिश्तों ने कहा हे मरियम ! निससंदेह अल्लाह तुझे अपनी ओर से एक पवित्र कलिमा का शुभ-समाचार देता है जिसका नाम मरियम का पुत्र ईसा मसीह होगा । (जो) इहलोक और परलोक में प्रतिष्ठित और (अल्लाह के) निकटस्थों में से होगा । 46।*

और वह लोगों से पालने में और अधेड़ आयु में भी बातें करेगा और पाकबाज़ों में से होगा । 47।**

وَإِذْ قَاتَ الْمَلِكَةُ لِمَرْيَمَ إِنَّ اللَّهَ
أَصْطَفَكِ وَظَهَرَكِ وَأَصْطَفَكِ عَلَى
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ⑪

لِمَرْيَمَ اقْتُنِي لِرِثَاتِكِ وَأَجْعِدِي وَأَرْكَعِي
مَعَ الرُّكَعِينَ ⑫

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ تُؤْخِيدُهُ الْيَالِكُ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقَوْنَ أَقْلَامَهُمْ
أَتَهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۝ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ يَحْصِمُونَ ⑬

إِذْ قَاتَ الْمَلِكَةُ لِمَرْيَمَ إِنَّ اللَّهَ
يَبْشِرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ ۝ أَسْمَهُ الْمُسْتَخِ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِئْهَا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقْرَرِ بِينَ ⑭

وَيَكْلِمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلَوْنَ
الصَّلِحِينَ ⑮

* यहाँ कलिमा (वचन) से अभिप्राय अल्लाह तआला का कुन (हो जा) कहना है परन्तु ईसाईयों की ओर से यह अर्थ किया जाता है कि केवल मसीह अल्लाह के कलिमा थे, शेष सारे नबी उनसे कमतर थे । वे बाइबिल की इस आयत से तर्क देते हैं कि “आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था” (युहन्ना 1:1) कुरआन करीम इसका ज्ञोरदार खण्डन सूरः अल कहफ़ के अन्त में करता है कि अल्लाह तआला के तो इतने कलिमे हैं कि यदि समुद्र सियाही बन जाए और उसी प्रकार के और समुद्र भी आ जाएँ तो अल्लाह तआला के कलिमे समाप्त नहीं हो सकते । अतः कलिमा के गलत अर्थ निकाल कर हजरत मसीह अलै. को मनुष्य से ऊँचा दिखाया गया है ।

** इस आयत की एक व्याख्या यह की जाती है कि वह पालने में भी बात किया करता था और नबी →

उस ने कहा है मेरे रब ! मुझे कैसे बेटा होगा, जबकि किसी मनुष्य ने मुझे नहीं छुआ । उसने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है । जब वह किसी बात का निर्णय कर ले तो उसे केवल यह कहता है कि “हो जा” तो वह होने लगता है और हो कर रहता है । 148।

और वह उसे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और तौरात और इंजील की शिक्षा देगा । 149।

और वह बनी इस्माइल की ओर रसूल होगा (यह संदेश देते हुए) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक चिह्न ले कर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षियों के रूप में पैदा करूँगा । फिर मैं उसमें फुँकूँगा तो (साथ ही) वह अल्लाह के आदेश से पक्षी (अर्थात् आध्यात्मिक पक्षी) बन जाएगा । और मैं जन्म-जात अंधे और श्वेतकुष्ठ रोगियों को आरोग्य प्रदान करूँगा और मैं अल्लाह के आदेश से (आध्यात्मिक) मुर्दों को जिंदा करूँगा और मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या खाओगे और अपने घरों में क्या इकट्ठा करोगे । यदि तुम ईमान लाने

قَالَ رَبِّيْ أَفَلَا يَكُونُ لِي وَلَدٌ مِّنْ
يَمْسَنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَى أَمْرًا فَلَا يَقُولُ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ⑥

وَيَعْلَمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَةَ وَالثُّورَةَ
وَالْأُخْيَلَ ⑦

وَرَسُولًا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَفَلَا قَدْ
جَعَلْتُكُمْ بِإِيمَانِهِ مِنْ رَّبِّكُمْ أَفَلَا أَخْلَقْتُ
لَكُمْ مِّنَ الطَّيْنِ كَهْيَةً طَيِّرًا فَأَنْفَخْتُ فِيهِ
فِي كُوْنٍ طَيِّرًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَأَبْرَئَ
الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأَخْيَ الْمَوْتَى بِإِذْنِ
اللَّهِ وَأَنْسَكْتُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا
تَدْخِرُونَ فِي يَوْمٍ تَكُونُ إِنَّ فِي ذَلِكَ

←होने का दावेदार था । यदि ऐसी बात होती तो यहूदी उसका बचपन में ही वध कर देते । वास्तव में पालने में वह अपने स्वप्न बताता था तथा पालने में खेलने वाले छोटे बच्चे अच्छे स्वप्न देख भी सकते हैं और सुना भी सकते हैं । परन्तु नुबुव्वत उनको अधेड़ आयु में ही प्रदान की गई और उस समय यहूदियों ने विरोध आरम्भ कर दिया ।

वाले हो तो निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक बड़ा चिह्न है । ५०।*

और उसके सत्यापक के रूप में आया हूँ जो तौरात में से मेरे सामने है ताकि मैं उन चीज़ों में से जो तुम्हारे लिए हराम कर दी गई थीं कुछ तुम्हारे लिए हलाल घोषित कर दूँ । और मैं तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे पास एक (बड़ा) चिह्न लेकर आया हूँ । अतः अल्लाह का तक्वा अपनाओ और मेरा आज्ञापालन करो । ५१।

निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । अतः उसी की उपासना करो (और) यही सन्मार्ग है । ५२।

अतः जब ईसा ने उनमें इनकार (का सज्जान) अनुभव किया तो उसने कहा, कौन अल्लाह की ओर (बुलाने में) मेरे सहायक होंगे ? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के सहायक हैं, हम अल्लाह पर ईमान ले आए हैं और तू गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं । ५३।

हे हमारे रब्ब ! हम उस पर ईमान ले आए जो तूने उतारा और हमने रसूल का

لَايَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑥

وَمَصْدِقًا لِّاَبَيْنَ يَدَىٰ مِنَ الشَّوَّرْبَةِ
وَلِأَحْلَلْ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حَرَمَ عَلَيْكُمْ
وَجُنَاحُكُمْ بِإِيَّاهُ مِنْ رَبِّكُمْ فَالْئَقُوا اللَّهُ
وَأَطِيعُونِ ⑦

إِنَّ اللَّهَ رَبِّنَا وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ⑧

فَلَمَّا آتَحَنَ عَيْنِي مِنْهُمُ الْكُفَّارُ قَالَ مَنْ
أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ أَمْ أَنْصَارُ إِلَهَ وَإِنْ شَهَدُوا إِلَيْنا
مُسْلِمُونَ ⑨

رَبَّنَا أَمْتَابِمَا أَنْزَلْتَ وَأَشْبَعْنَا الرَّسُولَ

* इस आयत में सारी बातें व्याख्या के योग्य हैं । मिट्टी को फूँक कर उड़ने वाला पक्षी बना देना इस बात की उपमा है कि हज़रत मसीह अलै. की फूँक से संसारिक लोग आध्यात्मिक ऊँचाइयों में उड़ान भरने लगे । इसी प्रकार जन्म-जात श्वेतकुष्ठ रोगी और अंधे वे लोग हैं, जिनके मन कोढ़ ग्रस्त हो और कुछ न देख सकें जैसा कि कुर्�आन करीम की अधिकांश आयतों से पता चलता है कि अंधों से अभिप्राय भौतिक अंधे नहीं बल्कि दिल के अंधे हैं । मुर्दों को ज़िन्दा करने से भी यही अभिप्राय है कि आध्यात्मिक मुर्दों को आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया जाए । मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या खाओगे से अभिप्राय संभवतः खान-पान की शिक्षा है और यह वर्णन किया गया है कि हज़रत ईसा अलै. अपनी जाति को निर्देश दिया करते थे कि क्या चीज़ खाओ और किस चीज़ से बचो ।

अनुसरण किया । अतः हमें (सत्य की) गवाही देने वालों में लिख दे । ५४।

और उन्होंने (अर्थात् मसीह के इनकार करने वालों ने भी) योजना बनाई और अल्लाह ने भी योजना बनाई और अल्लाह योजना बनाने वालों में सर्वोत्तम है । ५५। (रुकूः ५)

जब अल्लाह ने कहा है ईसा ! निस्संदेह मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ और अपनी ओर तेरा उत्थान करने वाला हूँ और तुझे उन लोगों से निशार कर अलग करने वाला हूँ जो काफिर हुए, और उन लोगों को जिन्होंने तेरा अनुसरण किया है, उन लोगों पर जिन्होंने इनकार किया है क़्रायामत के दिन तक प्रभुत्व प्रदान करने वाला हूँ । फिर मेरी ही ओर तुम्हारा लौट कर आना है जिसके बाद मैं तुम्हारे बीच उन बातों का फैसला करूँगा जिनमें तुम मतभेद किया करते थे । ५६।*

अतः जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिन्होंने इनकार किया, तो उनको मैं इस लोक में भी और परलोक में भी कठोर अजाब दूँगा और उनके कोई सहायक नहीं होंगे । ५७।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो उनको वह उनके भरपूर

فَأَكْتُبْنَا مَعَ الشُّهِدِينَ ④

وَمَكْرُؤُوا وَمَكْرُ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ خَيْرٌ
إِنَّمَا يَعْمَلُونَ ۝

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْلَمُ إِنِّي مُتَوَقِّلٌ
وَرَافِعٌ إِنِّي وَمُطْهَرٌ مِّنَ الظَّنِّ
كَفَرُوا وَجَاءُ الظَّنِّ أَثْبَعُوكَ فَوْقَ
الظَّنِّ ۚ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۝ ثُمَّ إِنِّي
مَرْجِعُكُمْ فَأَخْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ
فِيهِ تَعْلِفُونَ ④

فَأَمَّا الظَّنِّ ۚ كَفَرُوا فَأَعْذِبُهُمْ عَذَابًا
شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نُصْرٍ ۝ ④

وَأَمَّا الظَّنِّ ۚ أَمْتُهُ وَعَمِلُوا الصِّلْحَتِ

* यहाँ मुतबफ़िका (मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ) पहले आया है और राफिउका (अपनी ओर तेरा उत्थान करूँगा) बाद में आया है । यद्यपि राफिउका शब्द से अभिप्राय दर्जेका बढ़ना होता है परन्तु जो ज़िद करते हैं कि इससे सशरीर उत्थान करना अभिप्राय है उनके विरुद्ध यह मज़बूत तर्क है कि पहले मृत्यु हुई, बाद में उठाए गए, अतः प्रमाणित हुआ कि यहाँ आध्यात्मिक उत्थान अभिप्रेत है ।

فَيُوْقِنُمْ أَجْوَرُهُمْ وَاللَّهُ لَا يَحِبُّ الظَّالِمِينَ ⑥
پریغیم اجوہرہم واللہ لا یحب الظالمین

کو پسند نہیں کرتا । 158 |
�ہ ہے وہ جسے ہم آیاتوں اور
تत्त्वज्ञान پूर्ण انुस्मरण مें سे تेरے سامने
پढ़ते ہیں । 159 |

نیسندہہم ایسا کا عداحرण اللہ کے
نیکٹ آدم کے عداحرण کے سماں ہے ।
उسے ہس نے میٹی سے پیدا کیا، فیر ہسے
کہا کہ ‘ہو جا’ تو وہ ہونے لگا
(اور ہو کر رہا) । 160 *

(نیشیت رूپ سے یہ) تے رब کی اور
سے سतھ ہے । ات: تُو سندہہ کرنے والوں مें
سے ن بن । 161 |

ات: جو تੁझ سے اس ویشیت مें تے پاس
�ਾਨ ਆ ਜਾਨੇ ਕے ਬਾਦ ਭੀ ਝਗੜਾ ਕਰੋ ਤੋ ਤੂ
ਕਹ ਦੇ, ਆਓ ਹਮ ਬੁਲਾਵੋ ਅਪਨੇ ਪੁਤ੍ਰਾਂ ਕੋ
ਔਰ ਤੁਮਹਰੇ ਪੁਤ੍ਰਾਂ ਕੋ ਭੀ ਔਰ ਅਪਨੀ
ਸ਼ਿਵਿਆਂ ਕੋ ਔਰ ਤੁਮਹਾਰੀ ਸ਼ਿਵਿਆਂ ਕੋ ਭੀ ਔر
(ਹਮ) ਅਪਨੇ ਆਪ ਕੋ ਔر ਤੁਮ ਅਪਨੇ ਆਪ
ਕੋ ਭੀ । ਫਿਰ ਹਮ ਸੁਵਾਹਲ: ਕਰੋ ** ਔਰ
ਜੂਠਾਂ ਪਰ ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਲਾ' ਨਤ ਡਾਲੋ । 162 |

نیسندہہم یہی سੰਚਾ ਵਰਨ ہے ਔر
ਅਲਲਾਹ ਕੇ ਸਿਵਾ ਔਰ ਕੋਈ ਉਪਾਸਥ ਨਹੀਂ ।

ذَلِكَ شَلُوٰةٌ عَلَيْكَ مِنَ الْأَيْتِ وَالْذُّكْرِ
الْحَكِيمِ ⑥
ذلک شلوہ علیک من الایت والذکر
الحکیم

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ⑦
ان مثلا عیسیا عند الله كمثل آدم ۖ خلقه
من تراب ثم قال له كن فيكون

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ⑦
الحق من ربک فلا تكن من
الممترین

فَمَنْ حَاجَكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَذْعُ أَبْشِرْنَا
وَأَبْشِرْنَا كُمْ وَنِسَاءً كُمْ وَأَنْفَسْنَا
وَأَنْفَسْكُمْ ۗ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ
اللَّهُ عَلَى الْكُذَّابِينَ ⑧
فمن حاجك فيه من بعد ما جاءك من
العلم فقل تعالوا نذع أبشرنا
وابشرنا كم ونساء كم وأنفسنا
وانفسكم ۗ ثم نبتھل فنجعل لعنة
الله على الكاذبين

إِنَّ هَذَا هُوَ الْقَصْصُ الْحَقُّ ۖ وَمَا مِنْ إِلَهٍ

* هجرت آدم الئے، کے ساتھ هجرت ایسا الئے، کا عداحرण اسے دیا گیا ہے کہ هجرت آدم الئے، بھی آرامش میں اللہ تھا اس کے واقع کون (ہو جا) کے پاریانام سے رूپ میٹی سے پیدا ہوئے ہے۔ اس کے باوجودہ آدم الئے، مانع ہی ہے । هجرت ایسا الئے، بھی خودا تھا اس کے واقع کون کے فلسفہ سے رہا ہوئے ہے । اسے آپ بھی مانع ہی ہے ।

yahān kūn fakhrūn (ہو جا تو وہ ہونے لگا) سے مانع جنم کے آرامش کی اور سکتہ ہے اور تاپریت یہ ہے کہ جب اللہ تھا اس نے مانع کو پیدا کرنے کا ایجاد کیا تو کہا ‘ہو جا’ تو وہ ہونے لگا اور اسکے لیے نیشیت ہے کہ وہ اپنی سُستی کی پورنیتہ کو پ्रاپت ہونے تک ہوتا رہے ।

** ار्थاًت اک دوسرے کے ویڑھ اسے گل کی دو آ کرئے ।

और निससदेह अल्लाह ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 163।

फिर यदि वे मुँह फेर लें तो अवश्य (जान लो कि) अल्लाह उपद्रवियों को भली-भाँति जानता है । 164। (रुकू⁶ ١٤)

तू कह दे हे अहले किताब ! उस बात की ओर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच साझी है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे और न ही किसी चीज़ को उसका साझीदार ठहराएँगे और हम में से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब्ब नहीं बनाएगा। अतः यदि वे फिर जाएँ तो तुम कह दो कि गवाह रहना कि निश्चित रूप से हम मुसलमान हैं । 165।

हे अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो ? हालाँकि तौरात और इंजील उसके बाद उतारी गई। अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 166।

सुनो ! तुम ऐसे लोग हो कि उस विषय में झगड़ते हो जिसका तुम्हें ज्ञान है। तो फिर ऐसी बातों में क्यों झगड़ते हो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान ही नहीं । और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते । 167।

इब्राहीम न तो यहूदी था न ईसाई बल्कि वह तो (सदा अल्लाह की ओर) झुकने वाला आज्ञाकारी था और वह (कदापि) मुश्कियों में से नहीं था । 168।

إِلَّا اللَّهُ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑤

فَإِنْ تَوَلُّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۖ ۶

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَبِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلْمَةٍ
سَوَاءٌ مَّيَسِرًا وَيَئِنَّكُمْ أَلَا نَعْبُدُ إِلَّا اللَّهُ
وَلَا تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا ۖ وَلَا يَئِنْجُذَ بَعْضًا
بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۖ فَإِنْ تَوَلُّوا
فَقُولُوا الشَّهَدُوا إِنَّا مُسْلِمُونَ ⑥

يَا أَهْلَ الْكِتَبِ لَمْ تَحَاجُونَ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَمَا أَنْزَلْتِ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑦

هَآئُنَّمْ هُؤُلَاءِ حَاجِجُمْ قِيمَالْكُمْ بِهِ
عِلْمٌ فَلِمَ تَحَاجُونَ قِيمَالْيَسْ لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنَّمْ لَا تَعْلَمُونَ ⑧

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصَارَائِيًّا
وَلِكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ⑨

निस्सदेह इब्राहीम के अधिक निकट तो वही लोग हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया और यह नवी भी और वे लोग भी जो (इस पर) ईमान लाए। और अल्लाह मोमिनों का मित्र है 169।

अहले किताब मैं से एक गिरोह चाहता है कि काश वह तुम्हें पथभ्रष्ट कर सके। और वे स्वयं अपने सिवा किसी और को पथभ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और वे समझ नहीं रखते 170।

हे अहले किताब ! तुम अल्लाह के चिह्नों को क्यों झुठलाते हो जबकि तुम देख रहे हो 171।

हे अहले किताब ! तुम सच को झूठ के साथ क्यों संदिग्ध बनाते हो और तुम सच छिपाते हो हालाँकि तुम जानते हो 172। (एकू 7)

और अहले किताब मैं से एक गिरोह ने कहा कि जो मोमिनों पर उतारा गया है उस पर दिन के पहले भाग में ईमान ले आओ और उसके अंत में इनकार कर दो ताकि संभवतः वे लौट आयें 173।

और किसी की बात पर ईमान न लाओ सिवाय उसके जो तुम्हारे धर्म का अनुसरण करे। तू कह दे कि वास्तविक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है। यह (आवश्यक नहीं) कि किसी को वही कुछ दिया जाए जैसा तुम्हें दिया गया अथवा (यदि न दिया जाए तो मानो उनका अधिकार हो जाएगा कि) वे

إِنَّ أُولَئِكَ السَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لِلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ
وَهُذَا الشَّيْءُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِي
الْمُؤْمِنِينَ ⑦

وَذَاتُ طَائِفَةٍ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يَنْصُونَكُمْ وَمَا يَنْصُونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ⑦

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمْ تَكُفُّرُونَ بِأَيْتِ اللَّهِ
وَأَنْتُمْ تَشَهَّدُونَ ⑦

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمْ تَلِسُونَ الْحَقَّ
بِإِبْرَاطِلِ وَتَكْسِمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ⑦

وَقَاتُ طَائِفَةٍ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أَمْنُوا
بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا
وَجْهَ النَّهَارِ وَأَكْفَرُ قَوْمًا خَرَّهُ
بِرَجْعَوْنَ ⑦

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا مَنْ يَعْدِيَكُمْ قُلْ إِنَّ
الْهُدَى هُدَى اللَّهِ أَنْ يُؤْتِيَ أَحَدًا مِثْلَ مَا
أُوتِيَتُمْ أَوْ يَحْكُمُكُمْ عَنْدَ رِبِّكُمْ قُلْ

तुम्हारे रब्ब के समक्ष तुम से झगड़ा करो।
तू कह दे दया करना निश्चित रूप से
अल्लाह के हाथ में है। वह उसे जिसको
चाहता है देता है और अल्लाह बहुत
समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी
ज्ञान रखने वाला है। 174।

वह अपनी दया के लिए जिसको चाहे
चुन लेता है और अल्लाह बहुत बड़ा
दयावान है। 175।

और अहले किताब में से वह व्यक्ति भी
है कि यदि तू ढेरों ढेर अमानत उसके
पास रखवा दे तो वह अवश्य तुझे वापस
कर देगा और उन में ऐसा व्यक्ति भी है
कि यदि तू उसको एक दीनार भी दे तो
वह उसे तुझे वापस नहीं करेगा, सिवाए
इसके कि तू उस पर निगरान स्वरूप
खड़ा रहे। यह इस कारण है कि वे कहते
हैं कि हम पर अनपढ़ों के बारे में कोई
(आरोप लगाने का) रास्ता नहीं और वे
अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं जबकि वे (इस
बात को) जानते हैं। 176।

हाँ, क्यों नहीं! जिस ने भी अपने
वचन को पूरा किया और तकवा
अपनाया तो अल्लाह मुत्कियों से प्रेम
करने वाला है। 177।

निस्सदेह वे लोग जो अल्लाह के वचनों
और अपनी कऱ्समों को थोड़ी सी कीमतों
में बेच देते हैं, यही हैं जिनका परलोक में
कोई भाग न होगा और अल्लाह न उनसे
बात करेगा और न कऱ्यामत के दिन उन
पर दृष्टि डालेगा और न उन्हें पवित्र

إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتَ إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ ⑦

يَحْكُمُ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ⑧

وَمَنْ أَهْلِ الْكِبَرِ مَنْ إِنْ تَأْمَنُهُ
يُقْتَلُ أَبْيُودَةً إِلَيْكَ ۖ وَمَنْ هُمْ مَنْ إِنْ
تَأْمَنُهُ يُدْيَنَارًا لَا يُبُودَةً إِلَيْكَ إِلَّا مَادَمْتَ
عَلَيْكُو قَائِمًا ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا يَسَّ
عَلَيْنَا فِي الْأُمَّةِ سَيِّئُ ۖ وَيَقُولُونَ عَلَىٰ
اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ⑨

بَلِّي مَنْ أَوْفَ بِعَهْدِهِ وَاتَّقِ فَرَانَ اللَّهَ
يَحِبُّ الْمُسْتَقِينَ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرِئُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَآيَمَانِهِ
ثُمَّنَا قَلِيلًا أَوْ إِلَيْكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَسْتَهِنُ
إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ

करेगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । 78।

और निसंदेह उन (अहले किताब) में एक गिरोह ऐसा भी है जो पुस्तक पढ़ते समय अपनी जबानों को मरोड़ देता है ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो हालाँकि वह पुस्तक में से नहीं और वे कहते हैं कि वह अल्लाह की ओर से है जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं जबकि वे जानते हैं । 79।

किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह उसे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत दे, फिर वह लोगों से यह कहे कि अल्लाह के सिवा मेरी उपासना करने वाले बन जाओ । बल्कि (वह तो यही कहता है कि) रब्ब वाले हो जाओ, इस कारण कि तुम पुस्तक पढ़ते हो और इस कारण कि तुम (उसे) पढ़ते हो । 80।

और न वह तुम्हें यह आदेश दे सकता है कि तुम फरिश्तों और नवियों को ही रब्ब बना बैठो । क्या वह तुम्हें इनकार की शिक्षा देगा जबकि तुम आज्ञाकारी हो चुके हो । 81। (रुकूः ८६)

और जब अल्लाह ने नवियों से दृढ़ प्रतिज्ञा ली कि यद्यपि मैं तुम्हें पुस्तक और तत्त्वज्ञान दे चुका हूँ, फिर यदि कोई ऐसा रसूल तुम्हारे पास आए जो उस बात की पुष्टि करने वाला हो जो तुम्हारे पास है तो तुम अवश्य उस पर ईमान ले आओगे और अवश्य उसकी सहायता

عَذَابٌ أَلِيمٌ^⑦

وَإِنْ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُونَ أَلْسِنَتَهُمْ
بِالْكِتَبِ لِتَحْسِبُوهُ مِنَ الْكَاشِ وَمَا هُوَ
مِنَ الْكَاشِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ^⑦

مَا كَانَ لِشَرِّ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَبَ
وَالْحُكْمَ وَالثِّبَوَةَ ثُمَّ يَقُولُ لِلنَّاسِ
كُوئُنُوا عِبَادًا إِنْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِكُنْ
كُوئُنُوا رَبِّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ
الْكِتَبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَذَرُّسُونَ^٨

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَخَذُوا الْمَلِكَةَ
وَالثِّيْنَ أَرْبَابًا أَيْأَمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
إِذَا أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ^٩

وَإِذَا أَخْذَ اللَّهُ مِئَاقَ الثِّيْنَ لَمَّا أَتَيْتُكُمْ
مِنْ كِتَبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ
مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتَشُوَّمُنَّ بِهِ
وَلَتَنْصُرُنَّ^{١٠} قَالَ ءَا قَرْزُفُ

करोगे । कहा, क्या तुम स्वीकार करते हो और इस बात पर मुझ से प्रतिज्ञा करते हो ? उन्होंने कहा, (हाँ) हम स्वीकार करते हैं । उसने कहा, अतः तुम गवाही दो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ ।^{1821*}

अतः जो कोई इसके बाद फिर जाए तो यही दुराचारी लोग हैं ।¹⁸³¹

क्या अल्लाह के धर्म के सिवा वे कुछ (और) पसंद करेंगे जबकि जो कुछ आकाशों और धरती में है स्वेच्छा पूर्वक और अनि�च्छा पूर्वक उसका आज्ञाकारी हो चुका है और वे उसी की ओर लौटाए जाएँगे ।¹⁸⁴¹

तू कह दे अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो इब्राहीम पर उतारा गया और इसमाईल पर और इसहाक पर और याकूब पर और (उसकी) संतानों पर और जो मूसा और ईसा को और जो नवियों को उनके रब्ब की ओर से दिया गया, हम ईमान ले आए । हम उनमें से किसी के बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम उसी की आज्ञा का पालन करने वाले हैं ।¹⁸⁵¹

* कुरआन करीम में दो प्रतिज्ञाओं का वर्णन है । एक बनी इस्माईल की प्रतिज्ञा का और एक नवियों की प्रतिज्ञा का, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी ली गई थी । (सूरः अल् अहज़ाब : 8) इसका केन्द्रबिन्दु यह है कि जब तुम्हारे पास रसूल आएं जो वही बातें कहें जो तुम कहते थे तो वचन दो कि कदापि उनका इनकार नहीं करोगे, बल्कि उनकी पुष्टि करोगे । यहाँ यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि नवियों की ओर तो रसूल भेजे नहीं जाते, उनकी जातियों के पास रसूल आते हैं । अतः यही अभिप्राय है कि अपनी जाति को उपदेश देते रहें कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल आएं जो मुझे सच्चा जानने वाला हो तो उसका इनकार नहीं करना बल्कि अवश्य उसकी सहायता करनी है ।

وَأَحَدْتُمْ عَلَى ذَلِكُمْ أَصْرِيٍّ ۖ قَالُوا
أَقْرَبْنَا ۖ قَالَ فَأَشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ
مِّنَ الْفَهِيدِينَ ⑦

فَمَنْ تَوْلَى بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمْ
الْفَسِقُونَ ⑧

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْعُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ⑨

فَلْ أَمْثَلْنَا إِلَهًا وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَمَا أَنْزَلَ
عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ
مُوسَى وَعِنْدِي وَالنَّبِيُّونَ مِنْ
رَّبِّهِمْ لَا نَفِرُّ بَيْنَ أَهْدِ
مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ⑩

और जो भी इस्लाम के सिवा कोई धर्म पसन्द करे तो कदापि उससे स्वीकार नहीं किया जाएगा और परलोक में वह घाटा पाने वालों में से होगा । 86।

भला कैसे अल्लाह ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गए हों और वे गवाही दे चुके हों कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास खुले-खुले प्रमाण आ चुके हों और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । 87।

यही वे लोग हैं जिनका प्रतिफल यह है कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की लान नहीं है । 88।

वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं। उनसे अज्ञाब को हल्का नहीं किया जाएगा और न वे कोई ढील दिए जाएँगे । 89।

सिवाए उनके, जिन्होंने इसके बाद प्रायश्चित किया और सुधार कर लिया तो निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 90।

निस्संदेह वे लोग जिन्होंने अपने ईमान लाने के बाद इनकार किया, फिर इनकार में बढ़ते गए, उनका प्रायश्चित कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और यही वे लोग हैं जो पथभ्रष्ट हैं । 91।

निस्संदेह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और मर गए जबकि वे काफिर थे। उनमें से किसी से धरती के बराबर भी सोना

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ
مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑦

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ
إِيمَانِهِمْ وَشَهَدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ
وَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ ⑧

أُولَئِكَ جَرَأَ وَهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ
وَالْمَلِكَةِ وَالثَّايسِ أَجْمَعِينَ ⑨
خَلِدِينَ قِيهَا لَا يَخْفَى عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ⑩

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ
أَزْدَادُوا كُفْرًا لَّئِنْ تُقْبَلَ تُوبَتُهُمْ
وَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑫

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَا تَوَأَوا وَهُمْ
كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدٍ هُمْ مُّلْءُ

الْأَرْضَ ذَهَبًاً وَلَوِ افْتَدَى بِهِ أُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَصْرٍ إِنَّ
كَدَّا فِي سَهْلٍ كَمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

کدھی کار نہیں کیا جائے گا
یہاپنی وے اسے مुکتی مولیٰ کے رूپ میں دینا
چاہے । یہی وے لوگ ہیں جنکے لیے ۹۱
پیڈا جنک انجام (نیشیت) ہے اور
उنکے کوئی سہا�ک نہیں ہونے گے । ۱۹۲۱

(رکو ۹)

तुम कदापि नेकी प्रात नहीं कर सकोगो
जब तक कि तुम उन वस्तुओं में से
खर्च न करो जिनसे तुम प्रेम करते हो
और तुम जो कुछ भी खर्च करते हो तो
निसंदेह अल्लाह उसको खूब जानता
है 193।

समस्त प्रकार के भोजन बनी इसाईल के
लिए वैध थे सिवाए उनके जिन्हें स्वयं
इसाईल ने अपने ऊपर अवैध कर लिए
इससे पहले कि तौरात उतारी जाती ।
तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो
तौरात ले आओ और उसे पढ़ (कर
देख) लो 194।

अतः जो भी इसके बाद अल्लाह पर झूठ
गढ़े तो यही लोग ही अत्याचारी हैं 195।

तू कह, अल्लाह ने सच्च कहा । अतः
(अल्लाह की ओर) झुकने वाले इब्राहीम
के धर्म का अनुसरण करो और वह
मुश्कियों में से नहीं था 196।

निसंदेह पहला घर जो मानव जाति
(के लाभ) के लिए बनाया गया वह
बक्का में है । (वह) समस्त जगत के
लिए मंगलमय और हिदायत का कारण
बनाया गया 197।*

इसमें खुले-खुले चिह्न हैं (अर्थात्)
इब्राहीम का स्थान । और जो भी इसमें

لَئِنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ شَفَقُوا مِمَّا لَجَبُونَ ﴿١٩٣﴾

وَمَا أَشْفَقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿١٩٤﴾

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا
مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ
تَنَزَّلَ السُّورَةُ ﴿١٩٥﴾ قُلْ فَأَتُوْا بِالسُّورَةِ
فَأَثْلُوْهَا إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ﴿١٩٦﴾

فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ
بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١٩٧﴾

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
خَيْرًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُسْرِكِينَ ﴿١٩٨﴾

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلْكَاسِ لِلَّذِي بِنَكَةَ
مُبَرَّغًا وَهَدَى لِلْعُلَمَاءِ ﴿١٩٩﴾

فِيهِ أَيْتُ بَيْنَتِي مَقَامُ إِبْرَاهِيمَ

* यहाँ अब्ब-ल बैतिन् (प्रथम गृह) को लोगों के लाभ लिए कहा गया है, अल्लाह के लिए नहीं कहा गया । इसमें यह संकेत है कि मनुष्य गुफाओं से निकल कर जब धरती के ऊपर बसने लगा तो खाना का 'बा' का प्रथम निर्माण ही उसको सम्भवा और शिष्टाचार सिखाने का साधन बना । इसी कारण यहाँ मक्का नहीं कहा बल्कि बक्का कहा, जो मक्का का प्राचीनतम नाम है ।

प्रविष्ट हुआ वह शांति पाने वाला बन गया । और लोगों पर अल्लाह का अधिकार है कि वे (उसके) घर का हज्ज करें (अर्थात्) जो भी उस (घर) तक जाने का सामर्थ्य रखता हो । और जो इनकार कर दे तो निस्सन्देह अल्लाह समस्त संसार से बे-परवाह है । 198।

(उनसे) कह दे, हे अहले किताब ! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इनकार करते हो जबकि अल्लाह उस पर गवाह है जो तुम करते हो । 199।

(और) कह दे, हे अहले किताब ! जो ईमान लाया है तुम उसे अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो, यह चाहते हुए कि इस (मार्ग) में कुटिलता पैदा कर दो जबकि तुम (वास्तविकता पर) गवाह हो और जो तुम करते हो अल्लाह उससे अनजान नहीं । 100।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुमने उन लोगों में से जिन्हें पुस्तक दी गई किसी गिरोह का आज्ञापालन किया तो वे तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद (एक बार फिर) काफिर बना देंगे । 101।

और तुम कैसे इनकार कर सकते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उसका रसूल (मौजूद) है । और जो दृढ़ता से अल्लाह को पकड़ ले तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग की ओर हिदायत दिया गया । 102।

(रुपू 10)

وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ إِيمَانًا وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ
حِجُّ الْبَيْتِ مِنْ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُكَفِّرُونَ بِاِيتِ
اللَّهُ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ ⑦

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصْدِّقُونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ أَمَنَ شَهَادَةً نَّاهِيًّا عَوْجَانِيًّا
شَهَدَ أَمْ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ⑧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ تَطْبِيعًا فِرِيقًا مِنَ
الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ يَرْدُدُوكُمْ بَعْدَ
إِيمَانِكُمْ كُفَّارِينَ ⑨

وَكَيْفَ تُكَفِّرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَى عَلَيْكُمْ
إِيَّاهُ اللَّهُ وَفِيْكُمْ رَسُولُهُ ۖ وَمَنْ يَعْصِمْ
بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَى صَرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ ۱۰

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का ऐसा तकवा धारण करो जैसा उसके तकवा का अधिकार है और पूर्ण आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरो । 103।*

और अल्लाह की रस्सी को सब के सब दृढ़ता से पकड़ लो और मतभेद न करो और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो कि जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे तो उसने तुम्हारे दिलों को परस्पर बांध दिया और फिर उसकी नेमत से तुम भाई-भाई हो गए । और तुम आग के गढ़े के किनारे पर (खड़े) थे तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करता है । ताकि सम्भवतः तुम हिदायत पा जाओ । 104।

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअत हो । वे भलाई की ओर बुलाते रहें और अच्छी बातों की शिक्षा दें और बुरी बातों से रोकें । और यही वे हैं, जो सफल होने वाले हैं । 105।

और उन लोगों की भाँति न बनो जो अलग-अलग हो गए और उन्होंने मतभेद किया, इसके बाद भी कि उनके पास स्पष्ट चिह्न आ चुके थे । और यही वे हैं जिन के लिए बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है । 106।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا تَقْوَى اللَّهُ حَقَّ تَقْوَتِهِ
وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ⑩

وَاعْصَمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا ۖ وَلَا
تَفَرَّقُوا ۖ وَادْكُرُوا إِنْعَمَتَ اللَّهُ عَلَيْنِكُمْ
إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَالْفَلَقُ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ
فَاصْبِحُوهُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۖ وَكُنْتُمْ
عَلَى شَفَاقٍ فَرِّهَةٌ مِّنَ النَّارِ فَانْقَذَكُمْ
مِّنْهَا ۖ كَذَلِكَ يَبْيَّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَهَمَّدُونَ ⑪

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أَمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ
وَيَأْمُرُونَ بِالْمُعْرُوفِ وَيَنْهَا عَنِ
الْمُنْكَرِ ۖ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑫

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَقَرَّقُوا وَاحْتَلَفُوا
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنُاتُ ۖ وَأُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑬

* तुम पूर्ण आज्ञाकारी होने की अवस्था के बिना कदापि न मरो का यह अर्थ नहीं है कि मरने से पूर्व मुसलमान (आज्ञाकारी) हो जाओ क्योंकि मृत्यु तो मनुष्य के वश में नहीं है । इससे यह अभिप्राय है कि कभी भी जीवन के किसी भाग में भी इस्लाम को नहीं छोड़ना ताकि जब भी तुम पर मृत्यु आए इस्लाम पर ही आए ।

जिस दिन कुछ चेहरे उज्ज्वल हो जाएंगे और कुछ चेहरे काले पड़ जाएंगे । अतः वे लोग जिनके चेहरे काले पड़ गए (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम ईमान लाने के बाद काफिर हो गए थे ? अतः अज़ाब को चखो, इस कारण कि तुम इनकार किया करते थे । 107।

और जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिनके चेहरे उज्ज्वल हो गए तो वे अल्लाह की करुणा में होंगे । वे उसमें सदा रहने वाले हैं । 108।

ये अल्लाह की आयतें हैं । हम इन्हें तेरे सामने सच्चाई के साथ पढ़ते हैं और अल्लाह समस्त लोकों के लिए कोई अत्याचार नहीं चाहता । 109।

और अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है और जो धरती में है और अल्लाह ही की ओर समस्त मामले लौटाए जाएंगे । 110। (रुकू 11)

तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत (जाति) हो जो समस्त मनुष्यों के लाभ के लिए उत्पन्न की गई हो । तुम अच्छी बातों का आदेश देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो । और यदि अहले किताब भी ईमान ले आते तो यह उनके लिए बहुत अच्छा होता । उनमें मोमिन भी हैं परन्तु अधिकतर उन में पापी लोग हैं । 111।

वे तुम्हें मामूली कष्ट के अतिरिक्त कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे । और यदि वे तुम से युद्ध करेंगे तो अवश्य तुम्हें

يَوْمَ تَبَيَّضُ وُجُوهٌ وَتَسُودُ وُجُوهٌ
فَإِنَّمَا الظِّينَ اسْوَدَتْ وُجُوهُهُمْ
أَكْفَرُتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذَوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ⑩

وَأَمَّا الظِّينَ إِنْ يَضْعُتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي
رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑪
تِلْكَ آيَتُ اللَّهِ شَتَّوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا
اللَّهُ يَرِيدُ دُخْلَمَّا لِلْعَلَمَيْنَ ⑫

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑬

كَيْنَمْ حَيْرَ أَمَّةٍ أَخْرِجَتْ لِلثَّالِثِ
تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْا مِنَ أَهْلِ
الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ مِنْهُمْ
الْمُؤْمِنُونَ وَأَنْتُمْ هُمُ الْفَسِقُونَ ⑭

لَئِنْ يَصْرُوْكُمْ إِلَّا آذِيَ ۖ وَإِنْ
يُقَاتِلُوكُمْ يَوْمَ لَوْكُمْ الْأَذْبَارُ ۖ نُحَمَّ

पीठ दिखा जाएँगे । फिर उन्हें सहायता
नहीं दी जाएगी । 1121

जहाँ कहीं भी वे पाए गए उन पर
तिरस्कार (की मार) डाली गई । सिवाएं
उनके जो अल्लाह के बचन और लोगों के
बचन (की शरण) में हैं और वे अल्लाह
के प्रकोप के साथ वापस लौटे और उन
पर विवशता (की मार) डाली गई । यह
इस कारण हुआ कि वे अल्लाह के चिह्नों
का इनकार किया करते थे और वे
नवियों का अकारण घोर विरोध करते
थे । यह इसलिये हुआ क्योंकि उन्होंने
अवज्ञा की और वे सीमा का उल्लंघन
किया करते थे । 1131*

वे सब एक समान नहीं । अहले किताब
में से एक समुदाय (अपने सिद्धान्त पर)
स्थित है । वे रात के समय अल्लाह की
आयतों का पाठ करते हैं और वे सजदः
कर रहे होते हैं । 1141

वे अल्लाह पर और अन्तिम दिवस पर
ईमान लाते हैं और अच्छी बातों का
आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं
और नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने
का प्रयत्न करते हैं और यही वे लोग हैं
जो सदाचारियों में से हैं । 1151

और जो भी नेकी वे करेंगे कदापि उनसे
उसके विषय में कृतधनता का व्यवहार
नहीं किया जाएगा और अल्लाह मुत्तकियों
को भली-भाँति जानता है । 1161

لَا يُصْرُونَ^④

صَرِيْثٌ عَلَيْهِمُ الْذِلْلَةُ اَيْنَ مَا تَقْفُوا اَلَا
يُحَبِّلٌ مِنَ اللَّهِ وَحْبَلٌ مِنَ النَّاسِ وَبَأْمُوْ
يُغَضِّبٌ مِنَ اللَّهِ وَصَرِيْثٌ عَلَيْهِمُ
الْمُسْكَنَةُ ذَلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوا اِيْكُفَرُونَ
بِاِيمَانِ اللَّهِ وَيَقْشُلُونَ اَلْأَئِمَّةَ بِغَيْرِ حَقٍّ
ذَلِكَ بِمَا عَصَمُوا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ^{۱۴۵}

لَيْسُوا سَوَاءٌ مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ اَمْ^{۱۴۶}
قَلِيلٌ مَنْ يَتَّلَوَنَ اِيمَانَ اللَّهِ اَنَّهُمْ اَلْيَنِ وَهُمْ
يَسْجُدُونَ^{۱۴۷}

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْاُخِرِ وَيَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَا عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيَسْأَلُونَ فِي الْخَيْرِاتِ^{۱۴۸} وَأُولَئِكَ مِنَ
الصَّالِحِينَ^{۱۴۹}

وَمَا يَفْعَلُو اَمْرٌ خَيْرٌ قَلَّ مَنْ يُكَفِّرُهُ^{۱۵۰}
وَاللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمُتَّقِينَ^{۱۵۱}

* अरबी शब्द क़तल का अर्थ घोर-विरोध करने और सामाजिक बहिष्कार करने के भी होते हैं ।
(देखें लिसान-उल-अरब)

निस्सन्देह जिन लोगों ने इनकार किया उनके धन और उनकी संतान उन्हें अल्लाह से बचाने में कुछ भी काम नहीं आएँगे । और यही वे लोग हैं जो आग वाले हैं । वे इसमें एक बहुत लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं ॥117॥

इस संसार के जीवन में वे जो भी खर्च करते हैं उसका उदाहरण एक ऐसी हवा की भाँति है जिसमें खूब सर्दी हो जो ऐसे लोगों की खेती पर (विपत्ति बन कर) पढ़े जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया हो और वह उसे नष्ट कर दे । और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वे स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं ॥118॥

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने लोगों को छोड़ कर दूसरों को अंतरंग मित्र न बनाओ । वे तुमसे बुराई करने में कोई कमी नहीं करते । वे पसन्द करते हैं कि तुम कठिनाई में पड़ो । निस्सन्देह द्वेषभाव उनके मुहों से प्रकट हो चुका है और जो कुछ उनके दिल छिपाते हैं वे उससे भी बढ़कर हैं । यदि तुम विवेक रखते हो तो निस्सन्देह हम तुम्हारे लिए आयतों को खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं ॥119॥

तुम ऐसे विचित्र (लोग) हो कि उनसे प्रेम करते हो जबकि वे तुमसे प्रेम नहीं करते और तुम पूरी पुस्तक पर ईमान लाते हो । और जब वे तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ تَعْنِي عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنْ اللَّهِ يُحِبُّهُ
وَأَوْلَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَلِدُونَ ⑩

مَثَلُ مَا يَنْفَقُونَ فِي هَذِهِ الْخَيْوَةِ الْدُّنْيَا
كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صَرْأَاصَابُتْ حَرْثَ
قُوَّمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكُتْهُ ۚ وَمَا
ظَلَمُهُمْ اللَّهُ وَلَكُنْ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَشْجُنُو ابْطَانَهُ
مِنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَ كُمْ خَبَالًا ۚ وَذُو امَا
عِنْتُمْ ۝ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ
أَفْوَاهِهِمْ ۝ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ
قَدْ بَيَّنَاهُ لَكُمُ الْأَيْتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ⑫

هَآنُتُمْ أُولَئِكُمْ تُحْبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ
وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۝ وَإِذَا قَوْمًا
قَاتُوا أَمْنًا ۝ وَإِذَا خَلَوْا عَصُوا عَلَيْكُمْ

और जब अलग होते हैं तो तुम्हारे विरुद्ध क्रोध से अपनी उंगलियों के पोरों को काटते हैं। तू कह दे कि अपने ही क्रोध से मर जाओ। निस्सन्देह अल्लाह सीनों की बातों का खूब ज्ञान रखता है। 120।

यदि तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है और यदि तुम पर कोई विपत्ति पड़े तो उससे प्रसन्न होते हैं। और यदि तुम धैर्य धरो और तक़वा धारण करो तो उनकी योजना तुम्हें कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगी। जो वे करते हैं निस्सन्देह अल्लाह उसको धेरे हुए है। 121।

(रुक् 12)

और (याद कर) जब तू मोमिनों को (उनकी) लड़ाई के ठिकानों पर बिठाने के लिए सवेरे अपने घर वालों से अलग हुआ और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 122।

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि वे कायरता दिखाएँ हालाँकि अल्लाह दोनों का मित्र था। और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए। 123।

और निस्सन्देह अल्लाह बद्र (की लड़ाई) में तुम्हारी सहायता कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर थे। अतः अल्लाह का तक़वा धारण करो ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट कर सको। 124।

जब तू मोमिनों से यह कह रहा था कि क्या तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं

الآنَ أَتَأْمِلُ مِنَ الْغَيْظِ ۝ قُلْ مُؤْمِنُوا بِعِنْدِكُمْ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصَّدُورِ ۝

إِنْ تَمْسَحُكُمْ حَسَنَةٌ سَوْهُمْ ۝ وَ إِنْ
تُصْبِحُكُمْ سَيِّئَةً يَفْرَحُوا بِهَا ۝ وَ إِنْ
تُصْبِرُوا وَ اتَّقُوا لَا يَصْرِكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا ۝ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مَحِيطٌ ۝

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوَّئُ
الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۝ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلَيْهِمْ ۝

إِذْ هَمَّتْ طَآءِقَتِنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْسَلَ
وَاللَّهُ وَلِيَهُمَا ۝ وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَسْوَكِلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ ۝ وَأَنْتُمْ آذَلُّهُ
فَأَنْقُوا اللَّهَ لَعْلَكُمْ شَكْرُونَ ۝

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَكُنْ يَكْفِيَنِكُمْ أَنْ

होगा कि तुम्हारा रब्ब तीन हजार उतारे जाने वाले फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करे ? ||125||

क्यों नहीं ! यदि तुम धैर्य धरो और तक्कवा धारण करो, जब वे अपने इसी जोश में (उफनते हुए) तुम पर टूट पड़ें तो तुम्हारा रब्ब पाँच हजार अज्ञाब देने वाले फरिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करेगा ||126||

और अल्लाह ने यह (वादा) केवल तुम्हें शुभ संदेश देने के लिए किया है ताकि इससे तुम्हारे दिल संतुष्टि अनुभव करें और (वास्तविकता यह है कि) सहायता केवल अल्लाह ही की ओर से मिलती है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ||127||

ताकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वह उनके एक भाग को काट फैंके अथवा उनको घोर अपमानित कर दे, फिर वे असफल वापस लौटें ||128||

तेरे पास कुछ अधिकार नहीं, चाहे वह उन पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक जाए अथवा उन्हें अज्ञाब दे, हर हाल में वे अत्याचारी लोग हैं ||129||

और अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है । वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है अज्ञाब देता है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ||130||

(रुक् 13)

يَمْدُدُكُمْ بِكُمْ بِشَلَةٍ الْفِي مِنَ الْمَلِكَةِ
مَنْزَلِيْنَ ﴿١﴾

بَلْ إِنْ تَصِيرُوْا وَأَتَتَّقْوَا وَيَا تُوْكُمْ مِنْ
فُورِهِمْ هَذَا يَمْدُدُكُمْ بِكُمْ بِخَمْسَةِ
الْفِي مِنَ الْمَلِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿٢﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرًا لَكُمْ
وَلِتَظْمَئِنَ قُلُوبَكُمْ بِهِ وَمَا النَّصْرُ
إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٣﴾

لِيُقْطَعَ طَرَفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأُو
يُكِبِّرُهُ فَيُنَقْلِبُوا حَلَّيْنَ ﴿٤﴾

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ حَوْلَ يَوْمَ الْحِسْبَارِ
عَلَيْهِمْ أُو يَعْذِبُهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَلَمُونَ ﴿٥﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
يَعْفُرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦﴾

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! बढ़ा चढ़ा कर ब्याज न खाया करो और अल्लाह का तक्कवा धारण करो ताकि तुम सफल हो जाओ ॥131॥

और उस आग से डरो जो काफिरों के लिए तैयार की गई है ॥132॥

और अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो ताकि तुम पर दया की जाये ॥133॥

और अपने रब्ब की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर दौड़ो जिसका विस्तार आकाशों और धरती पर फैला है । वह मुत्तकियों के लिए तैयार किया गया है ॥134॥*

(अर्थात्) वे लोग जो खुशहाली में खर्च करते हैं और तंगी में भी । और क्रोध को पी जाने वाले और लोगों से क्षमापूर्ण व्यवहार करने वाले हैं और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ॥135॥

और वे लोग जो यदि कोई अश्लील कर्म कर बैठें अथवा अपने आप पर (कोई) अत्याचार करें, फिर वे अल्लाह का (बहुत) स्मरण करते हैं और अपने पापों के लिए क्षमा याचना करते हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْوَالَهَا تَأْكُلُوا الرِّبَا
أَصْحَافًا مَّضْعَفَةً وَ اتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِخُونَ ۝

وَ اتَّقُوا النَّارَ إِنَّمَا أَعْدَتْ لِلْكُفَّارِينَ ۝
وَ أَطْبِعُوا اللَّهُ وَ الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تَرَحَّمُونَ ۝

وَ سَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَبِّكُمْ وَ جَنَّةٌ
عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَ الْأَرْضُ أَعْدَتْ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

الَّذِينَ يُنِيبُونَ فِي السَّرَّاءِ وَ الظَّرَاءِ
وَ الْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِينَ عَنِ
النَّاسِ ۝ وَ اللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَ الَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاجْحَشَهُ أَوْ ظَلَمُوا
أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا
لِذَنْوِهِمْ وَ مَنْ يَغْفِرُ الذَّنْوَبَ إِلَّا

* इस आयत से ज्ञात होता है कि स्वर्ग कहीं आकाश के ऊपर कोई पृथक स्थान नहीं है । क्योंकि इस आयत में बताया गया है कि धरती और आकाश की जितनी चौड़ाई है स्वर्ग की चौड़ाई भी वैसी ही है । जब यह आयत हज़रत मुहम्मद सलललाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा के सामने पढ़ कर सुनाई तो एक सहाबी ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल ! यदि धरती और आकाश पर स्वर्ग ही छाया है तो फिर नरक कहाँ है ? तो आप सल्ल. ने वर्णन किया सुब्जानल्लाहि फैनल्लै लु इज़ा जाअन्नहार (मसनद अहमद बिन हम्बल, मसनद-उल-मकीन, हदीस सं. 15100, और तफसीर कबीर, इसाम राजी रहि.) अर्थात् पवित्र है अल्लाह ! जब दिन आता है तो रात कहाँ होती है । अर्थात् नरक भी वही है परन्तु तुम्हें इसकी समझ नहीं । अतः यह कल्पना झूठ है कि स्वर्ग और नरक के लिए अलग-अलग क्षेत्र हैं । एक ही ब्रह्मांड में स्वर्गवासी भी रह रहे हैं और नरक वासी भी ।

और अल्लाह के सिवा कौन है जो पाप क्षमा करता है । और जो कुछ वे कर बैठे हों उस पर जानते बूझते हुए हठ नहीं करते । 136।

यही वे लोग हैं जिनका प्रतिफल उनके रब्ब की ओर से क्षमादान है और ऐसे स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं और कर्म करने वालों का क्या ही अच्छा प्रतिफल है । 137।

निस्सन्देह तुम से पहले कई सुन्नतें (आचार-पद्धतियाँ) गुजर चुकी हैं । अतः धरती में भ्रमण करो और देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा था । 138।

यह लोगों के लिए (खोटे-खरे में अन्तर कर देने वाला) एक वर्णन है और मुत्क्रियों के लिए हिदायत और उपदेश है । 139।

और यदि तुम मोमिन हो तो कमज़ोरी न दिखाओ और शोक न करो जबकि तुम ही (अवश्य) विजय पाने वाले हो । 140।

यदि तुम्हें कोई आघात लगा है तो वैसा ही आघात (प्रदिद्धंद्वी) जाति को भी तो लगा है । और ये वे दिन हैं जिन्हें हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं ताकि अल्लाह उनको जाँच ले जो ईमान लाए और तुम में से कुछ को शहीदों के रूप में अपना ले । और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता । 141।

اللَّهُ وَلَمْ يَصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ⑩

أُولَئِكَ جَزَآءٌ وَهُمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ
وَجَئْتُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ
خَلِدِينَ فِيهَاٰ وَنَعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ۖ

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سَنَنٌ فَسَيِّرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَبِّرِينَ ⑪

هَذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًىٰ وَمَوْعِظَةٌ
لِّلْمُتَّقِينَ ⑫

وَلَا تَهْمُوا وَلَا تَخْرُنُوا وَأَنْتُمْ
الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑬

إِنْ يَمْسِسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِثْلُهُ وَتُلْكَ الْأَيَّامُ نَذَارَةٍ لِهَايَنْ
النَّاسُ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَيَتَّخِذُ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۖ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ
الظَّالِمِينَ ⑭

और ताकि अल्लाह उन लोगों को जो मोमिन हैं खूब पवित्र कर दे और काफिरों को मिटा डाले । 142।

क्या तुम समझते हो कि तुम स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे जबकि अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को अभी परखा नहीं और (अल्लाह का यह नियम इस कारण है) ताकि वह धैर्य धरने वालों को जाँच ले । 143।

और निस्सन्देह तुम मृत्यु को प्राप्त करने से पूर्व ही उस की इच्छा किया करते थे । अतः अब तुमने उसे इस अवस्था में देख लिया है कि (स्तब्ध होकर) देखते रह गए हो । 144। (रुक् 14)

और मुहम्मद केवल एक रसूल है । निस्सन्देह इससे पूर्व रसूल गुजर चुके हैं । अतः क्या यदि यह भी मृत्यु पा जाए अथवा वध कर दिया जाए तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे ? और जो भी अपनी एड़ियों के बल फिर जाएगा तो वह कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा । और निस्सन्देह अल्लाह कृतज्ञों को प्रतिफल देगा । 145।*

और अल्लाह के आदेश के बिना किसी जीवधारी के लिए मरना सम्भव नहीं है ।

* इस आयत में हजरत ईसा अलै. की मृत्यु की निश्चित रूप से घोषणा की गई है जैसा कि वर्णन किया कि मुहम्मद भी अल्लाह के रसूल हैं और रसूल से बढ़ कर कुछ नहीं और आप सल्ल. से पहले जितने भी रसूल थे, सब मृत्यु पा चुके हैं । अरबी में खला शब्द जब निश्चित रूप से किसी के सम्बन्ध में बोला जाए तो उससे अभिप्राय ऐसा गुजरना नहीं जैसे यात्री गुजरता है बल्कि गुजर जाने से अभिप्राय मृत्यु को प्राप्त करना है । अतः यदि ईसा अलै. अल्लाह के रसूल थे तो अवश्य मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं ।

وَلِيَمْحَصَ اللَّهُ الَّذِينَ أَمْسَأْوا وَيَمْحَقَ
الْكُفَّارِينَ ⑯

أَمْ حَبَّبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ جَهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ
الصَّابِرِينَ ⑯

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمْتَوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ
تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَسْتَطِرُونَ ⑯

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَقَ مِنْ
قَبْلِهِ الرَّسُولَ أَفَإِنْ مَا تَأْتِيَ
أَنْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَتَّقِلِبْ
عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضْرِرَ اللَّهُ شَيْئًا
وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّكِّرِينَ ⑯

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمْوَتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ

यह एक निश्चित लेख है और जो कोई संसारिक प्रतिफल चाहे हम उसे उसमें से प्रदान करते हैं और जो कोई परकालीन प्रतिफल चाहे हम उसे उसी में से प्रदान करते हैं और हम कृतज्ञों को निस्सन्देह प्रतिफल देंगे । 146।

और कितने ही नबी थे कि जिन के साथ मिल कर बहुत से ईश्वरनिष्ठ लोगों ने युद्ध किया । फिर वे उस संकट के कारण कदापि कमज़ोर नहीं पड़े जो अल्लाह के मार्ग में उन्हें पहुँचा । और उन्होंने कमज़ोरी नहीं दिखाई और वे (शत्रु के सामने) ज़ुके नहीं और अल्लाह धैर्य धरने वालों से प्रेम करता है । 147।

और उनका कहना इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने विनती की, हे हमारे रब्ब ! हमारे पाप और निजी मामलों में हमारे ज्यादती भी क्षमा कर दे और हमारे क़दमों को ढूढ़ता प्रदान कर और हमें काफिर लोगों के विरुद्ध सहायता प्रदान कर । 148।

तो अल्लाह ने उन्हें संसार का प्रतिफल और परकाल का बहुत उत्तम प्रतिफल भी प्रदान किया और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है । 149।

(रुक् 15)

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुमने उन लोगों का आज्ञापालन किया जो काफिर हुए तो वे तुम्हें तुम्हारी एङ्गियों के बल लौटा देंगे । फिर तुम हानि उठाते हुए लौटोगे । 150।

كِتَبَاهُ مَوْجَلًاٌ وَمَنْ يُرِدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
نُؤْتِهِ مِنْهَاٌ وَمَنْ يُرِدُ ثَوَابَ الْآخِرَةِ
نُؤْتِهِ مِنْهَاٌ طَوَّافَ سَجْرِ الْشَّكَرِينَ ⑩

وَكَائِنٌ مِنْ بَيِّنِ قَتَلٍ مَعَهُ رِبِّيُونَ
كَيْبِيرٌ فَمَا وَهُنَّ إِلَّا صَاحِبُهُمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعَفُوا وَمَا أُسْتَكَانُوا
وَاللَّهُ يُحِبُ الصَّابِرِينَ ⑪

وَمَا كَانَ قُولَهُمْ إِلَّا أَنْ قَاتَلُوا رَبَّنَا
أَغْفِرْنَا ذَنْبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا
وَثَبَّتْ أَقْدَامَنَا وَأَنْصَرْنَا عَلَى النَّقْوَمِ
الْكُفَّارِينَ ⑫

فَأَشَهَمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ
الْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يُحِبُ الْمُحْسِنِينَ ⑬

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْوَالَنَا تُطْبِعُوا الَّذِينَ
كَفَرُوا يَرِدُونَ كُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ
فَتَنْقِبُوا الْخَسِرِينَ ⑭

बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा मित्र है और
वह सब सहायता करने वालों में सर्वश्रेष्ठ
है । 1151।

हम अवश्य उन लोगों के दिलों में रोब
डाल देंगे जिन्होंने इनकार किया, क्योंकि
उन्होंने उसको अल्लाह का समकक्ष
ठहराया जिसके विषय में उसने कोई भी
दलील नहीं उतारी और उनका ठिकाना
आग है और अत्याचारियों का क्या ही
बुरा ठिकाना है । 1152।

और निस्सन्देह अल्लाह ने तुमसे अपना
वादा सच कर दिखाया जब तुम उसके
आदेश से उनका सर्वनाश कर रहे थे ।
यहाँ तक कि जब तुमने कायरता दिखाई
और तुम वास्तविक आदेश के विषय में
परस्पर झगड़ने लगे और तुमने इस के
बावजूद भी अवज्ञा की कि उसने तुम्हें
वह कुछ दिखला दिया था जो तुम पसन्द
करते थे । तुम में ऐसे भी थे जो संसार
की चाहत रखते थे और तुम में ऐसे भी थे
जो परलोक की चाहत रखते थे । फिर
उसने तुम्हें उनसे परे हटा लिया ताकि
तुम्हें परखे और (जो भी हुआ)
निस्सन्देह वह तुम्हें क्षमा कर चुका है
और अल्लाह मोमिनों पर बहुत कृपा
करने वाला है । 1153।

जब तुम भाग रहे थे और किसी की ओर
भी मुँड कर नहीं देखते थे और रसूल
तुम्हारे दूसरे जल्थे में (खड़ा) तुम्हें बुला
रहा था, तो अल्लाह ने तुम्हें एक शोक
के बदले बड़ा शोक पहुँचाया ताकि तुम

بِاللَّهِ مُولَكُمْ وَهُوَ حَيْرُ
الظَّرِيرِينَ ⑩

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّغْبَ
بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ
سُلْطَنًا وَمَا وَهْمَ النَّارِ وَإِنَّ
مَثْوَى الظَّلَمِيْنَ ⑪

وَلَقَدْ صَدَقْتُمُ اللَّهَ وَعْدَهُ إِذْ تَحْسُونُهُمْ
بِإِذْنِهِ حَتَّى إِذَا فَشَلْتُمْ وَتَأْزَعْتُمْ فِي
الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا أَرَيْتُكُمْ مَا
تُحِبُّونَ ۖ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ
مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ لَمَّا صَرَفْتُمْ
عَنْهُمْ لِيَتَكَبَّرُوكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَ عَنْكُمْ ۖ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ⑫

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلُونَ عَلَى أَحَدٍ
وَالرَّسُولُ يَذْكُرُكُمْ فِي أُخْرَيْكُمْ
فَأَثَابَكُمْ عَمَّا يَعْمَلُونَ لِكِبَالَ تَحْرِزُونَ

उस पर जो तुम से जाता रहा और उस पीड़ा पर जो तुम्हें पहुँची, दुःखी न हो और अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है जो तुम करते हो । 154।

फिर उसने तुम पर शोक के पश्चात् सांत्वना प्रदान करने के लिये ऊंच उतारी जो तुम में से एक समूह पर छा रही थी । जबकि एक वह समूह था कि जिन्हें उनके जानों ने चिंतित कर रखा था । वे अल्लाह के विषय में अज्ञानता पूर्वक धारणा करने की भाँति भूल धारणा कर रहे थे । वे कह रहे थे, क्या महत्वपूर्ण निर्णयों में हमारा भी कोई हस्तक्षेप है ? तू कह दे कि निस्सन्देह निर्णय का अधिकार पूर्णतया अल्लाह ही का है । वे अपने दिलों में वह बातें छिपाते हैं जो तुम्ह पर प्रकट नहीं करते । वे कहते हैं यदि हमें कुछ भी निर्णय का अधिकार होता तो हम कभी यहाँ (इस प्रकार) मारे न जाते । कह दे, यदि तुम अपने घरों में भी होते तो तुम में से वे जिनका वध होना निश्चित हो चुका होता, अवश्य अपने (पछाड़ खा कर) गिरने के स्थानों की ओर निकल खड़े होते और (यह इस कारण है) ताकि अल्लाह उसे खंगाले जो तुम्हारे सीनों में (छूपा) है और उसे खूब निथार दे जो तुम्हारे दिलों में है और अल्लाह सीनों की बातों को खूब जानता है । 155।

निस्सन्देह तुम में से वे लोग जो उस दिन फिर गए जिस दिन दो गिरोह भिड़ गये ।

عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۝ وَاللّٰهُ خَيْرٌٰ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑩

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْعُمَرَ آمِنَةً
لِعَاسًا يَغْشِي طَبِيقَةً مِّنْكُمْ
وَطَبِيقَةً قَدْ أَهْمَمْتُمُ الْأَقْسَمَ
يَطْلُونَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ طَنَ الْجَاهِلِيَّةَ
يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ
قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّٰهِ يَحْفُونَ فِي
أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يَبْدُونَ لَكُمْ يَقُولُونَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شُنْعُرٌ مَا قَتَلْنَا هُنَّا
قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي يَوْمٍ تُكْمَلُونَ لَبَرَزَ الْذِينَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقُتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ
وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِي صَدُورِكُمْ
وَلِيَمْحَصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۝ وَاللّٰهُ عَلَيْهِ
بِذَاتِ الصَّدُورِ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلُّوا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَّقْوَىٰ

निस्सन्देह शैतान ने उन्हें फुसला दिया, कुछ ऐसे कर्मों के कारण जो उन्होंने किए। और निस्सन्देह अल्लाह उनको क्षमा कर चुका है। निश्चित रूप से अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत सहनशील है। 1156। (रूप 16)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की भाँति न बन जाओ जिन्होंने इनकार किया और अपने भाइयों के सम्बन्ध में जब उन्होंने धरती में कोई यात्रा की अथवा युद्ध के लिए निकले कहा, यदि वे हमारे साथ होते तो (यूं) न मरते और न वध किए जाते। (उन्हें ढील दी जा रही है) ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में पश्चाताप बना दे। और अल्लाह ही है जो जीवित भी करता है और मारता भी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस पर गहरी नज़र रखने वाला है। 1157।

और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में वध किए जाओ अथवा (स्वभाविक रूप से) मर जाओ तो निस्सन्देह अल्लाह की क्षमा और दया उससे अत्युत्तम है जो वे इकट्ठा करते हैं। 1158।

और यदि तुम मर जाओ अथवा वध किए जाओ तो अवश्य अल्लाह ही की ओर इकट्ठे किए जाओगे। 1159।

अतः अल्लाह की विशेष दया के कारण तू उनके प्रति नरम हो गया और यदि तू कुद्दू स्वभाव (और) कठोर हृदयी होता तो वे अवश्य तेरे पास से दूर भाग जाते।

الْجَمِيعُ إِلَّا مَا اسْتَرْهَمُ الشَّيْطَانُ
بِعَضٍ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ
عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ عَفْوُرٌ حَلِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَاذِبِينَ
كَفَرُوا وَأَقَالُوا لِلْحُوَالِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا
فِي الْأَرْضِ أُوْكَانُوا غَرَّى لَوْكَانُوا
عِنْدَنَا مَا مَأْتُوا وَمَا قُتِلُوا لَيَجْعَلَ اللَّهُ
ذَلِكَ حَسْرَةٌ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُعْلِمُ
وَيَعْلَمُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُمَّثِّمُ
لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ

وَلَئِنْ مُتَمَّمٌ أَوْ قُتِلْتُمْ لَا إِنَّ اللَّهَ
يُحِسِّنُ مَوْرِنَ

فَإِنَّ رَحْمَةً مِّنَ اللَّهِ لِنَبَتَ لَهُمْ وَلَوْ
كَنْتَ فَطَّا غَلِيظَ الْقُلُبِ لَا نَفَضُّلُوا

अतः उन्हें माफ कर और उनके लिए क्षमा की दुआ कर और (प्रत्येक) महत्वपूर्ण विषय में उनसे परामर्श कर। फिर जब तू (कोई) निर्णय कर ले तो फिर अल्लाह पर ही भरोसा कर। निससन्देह अल्लाह भरोसा करने वालों से प्रेम करता है। 160।*

यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो कोई तुम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता और यदि वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो उसके विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा? और चाहिए कि मोमिन अल्लाह पर ही भरोसा करें। 161।

और किसी नवी के लिए संभव नहीं कि वह ख्यानत करे और जो भी ख्यानत करेगा वह अपनी ख्यानत का (कुपरिणाम) क़्यामत के दिन अपने साथ लाएगा। फिर प्रत्येक जान को पूरा-पूरा दिया जाएगा जो उसने कमाया और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा। 162।

क्या वह व्यक्ति जो अल्लाह की इच्छा का अनुसरण करे उस की भाँति हो

مِنْ حَوْلِكَ فَاغْفِرْ عَنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ
فَإِذَا أَعْرَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ
يَحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ⑯

إِنْ يَصْرُكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ
وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا أَنْذِي
يَصْرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلَيَسْتَوْكِلُ الْمُؤْمِنُونَ ⑯

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَعْلَمُ مَنْ يَعْلَمُ يَأْتِ
بِمَا كَعَلَلْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝ تُحَمَّلُ فِي كُلِّ نَفْسٍ
مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑯

أَفَمِنْ أَثَيْ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ

* इस पवित्र आयत में सर्वप्रथम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कोमल हृदयी होने का उल्लेख है जैसा कि दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है, मोमिनों के लिए अत्यन्त कृपातु और बार-बार दया करने वाला है (अत तौब: 128) द्वितीयतः इस बात की घोषणा की गई है कि सहाबा रज़ि, किसी लालच के कारण हज़रत मुहम्मद सल्ल, दुनिया भर का ख़ज़ाना उन पर खर्च करते तो भी कदापि वे परवानों की भाँति इकट्ठा नहीं हो सकते थे। इस के बावजूद यह कहा गया कि महत्वपूर्ण विषयों में उनसे परामर्श भी कर लिया कर परन्तु निर्णय तेरा होगा और आवश्यक नहीं कि उनका परामर्श माना जाए। और जब तू निर्णय करे तो अल्लाह पर भरोसा रख कि वह अवश्य तेरा सहायक होगा।

सकता है जो अल्लाह की नाराजगी ले कर लौटे और उसका ठिकाना नरक हो? और वह तो लौट कर जाने का बहुत बुरा स्थान है। 1163।

वे अल्लाह के निकट विभिन्न श्रेणियों में बटे हुए (लोग) हैं और जो वे करते हैं अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है। 1164।

निस्सन्देह अल्लाह ने मोमिनों पर उपकार किया जब उसने उनके अंदर उन्हीं में से एक रसूल आविर्भूत किया। वह उन के समक्ष उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें पुस्तक और तत्त्वज्ञान सिखाता है। जबकि इससे पहले वे निश्चित रूप से खुली-खुली पश्चाप्तता में पढ़े थे। 1165।

क्या जब भी तुम्हें कोई ऐसी विपत्ति पहुँचे कि तुम उससे दुगनी विपत्ति (शत्रु को) पहुँचा चुके हो, तो फिर भी यही कहोगे कि यह कहाँ से आ गई? तू कह दे कि यह स्वयं तुम्हारी ही ओर से है। निश्चित रूप से अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 1166।

और जो कष्ट तुम्हें उस दिन पहुँचा, जब दो गिरोह (परस्पर) भिड़ गये थे तो वह अल्लाह के आदेश से था, ताकि वह मोमिनों को विशिष्ट कर दे। 1167।

और उन लोगों को भी जाँच ले जिन्होंने कपट किया और (जब) उनसे कहा

بِسْخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَاوِلَةِ جَهَنَّمَ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ^④

هُمْ دَرَجَتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ^⑤

لَقَدْ هُنَّ عَلَى النُّورِ مِنْ يَوْمٍ إِذْ بَعَثَ
فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتَلَوَّ عَلَيْهِمْ
أَيْتَهُمْ وَإِرْكَيْتَهُمْ وَيَعْلَمُهُمُ الْكِتَابُ
وَالْحُكْمَةُ^٦ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ
نَفْيِ ضَلَالٍ مُّسِيْنِ^٧

أَوْ لَمَّا أَصَابَكُمْ مُّصِيْبَةً قَدْ أَصَبَّتُمْ
مُّثْلِيَّهَا قَلْمَمَأْلِيَّهَا قَلْمَمَأْلِيَّهَا
أَنْفَسِكُمْ^٨ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^٩

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقَىِ الْجَمْعُونِ
فِي إِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنُونَ^{١٠}

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا^{١١} وَقَبْلَهُمْ تَعَالَوْا

गया, आओ अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो अथवा प्रतिरक्षा करो तो उन्होंने कहा कि यदि हम लड़ा जानते तो अवश्य तुम्हरे पीछे आते । वे उस दिन ईमान की तुलना में इनकार के अधिक निकट थे । वे अपने मुँह से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं और अल्लाह सबसे अधिक जानता है जो वे छिपा रहे हैं ॥168।

वे लोग जो स्वयं बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहा कि यदि ये हमारी बात मानते तो वध न किए जाते । तू कह, यदि तुम सच्चे हो तो स्वयं अपने ऊपर से मृत्यु को टाल कर तो दिखाओ ॥169।

और जो लोग अल्लाह के मार्ग में वध किए गए उनको कदापि मृत न समझ, बल्कि (वे तो) जीवित हैं (और) उन्हें उनके रब्ब के पास जीविका प्रदान की जा ही है ॥170।

उस पर बहुत प्रसन्न हैं जो अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें दिया है और वे अपने पीछे रह जाने वालों के सम्बन्ध में, जो अभी उनसे नहीं मिले शुभ-समाचार पाते हैं कि उन्हें भी कोई भय नहीं होगा और वे शोकग्रस्त नहीं होंगे ॥171।

वे अल्लाह की नेमत और करुणा के सम्बन्ध में शुभ समाचार पाते हैं और यह (शुभ-समाचार भी पाते हैं) कि अल्लाह मोमिनों का प्रतिफल नष्ट नहीं करेगा ॥172। (रुक् 17)

قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ اذْفَعُوا طَالُوا وَ
نَعْلَمُ مَا قَاتَلُوا لَا اتَّبَعْنَاهُمْ هُمْ لِكُفْرٍ
يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ
يَقُولُونَ يَا فَوَاهِمُهُمْ مَا لَيْسَ فِي
قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝

الَّذِينَ قَاتَلُوا إِخْرَانِهِمْ وَقَعَدُوا وَلَوْ
أَطَاعُونَا مَا قَاتَلُوا ۝ قُلْ فَادْرِءُوهُمْ وَاعْنُ
أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ۝

وَلَا تَحْسِبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَمْوَالًا بَلْ أَحْيَا أَجْعَنَدَ رِبِّهِمْ يُرِزَّقُونَ ۝

فَرِحِينٌ بِمَا أَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَيَسْتَبِشُرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ
مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَا خُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَخْرُجُونَ ۝

يَسْتَبِشُرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ
وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

वे लोग जिनको आघात पहुँचने के बाद भी उन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार का जवाब दिया, उनमें से उन लोगों के लिए जिन्होंने उपकार किया और तक्कवा धारण किया, बहुत बड़ा प्रतिफल है । 173।

(अर्थात) वे जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे विरुद्ध लोग एकत्रित हो गए हैं अतः उनसे डरो, तो इस बात ने उनको ईमान में बढ़ा दिया और उन्होंने कहा हमें अल्लाह पर्याप्त है और (वह) क्या ही अच्छा कार्य-साधक है । 174।

अतः वे अल्लाह की नेमत और करुणा ले कर लौटे, उन्हें कष्ट ने हुआ तक नहीं और उन्होंने अल्लाह की इच्छा का अनुसरण किया और अल्लाह अत्यधिक करुणा वाला है । 175।

निस्सन्देह यह शैतान ही है जो अपने मित्रों को डराता है । अतः तुम उनसे न डरो और यदि तुम मोमिन हो तो मुझ से डरो । 176।

और तुझे वे लोग दुःख में न डालें जो इनकार करने में तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं । निस्सन्देह वे कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे । अल्लाह यह चाहता है कि परलोक में उनका कुछ भी भाग न रखे और उनके लिए बहुत बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है । 177।

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने ईमान के बदले इनकार को खरीद लिया, वे कदापि अल्लाह को कोई हानि नहीं

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مِنْ بَعْدِ
مَا أَصَابَهُمُ الْفَرَّاجُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقُوا الْجُرُوحَ عَظِيمًا ۝

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ
جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشُوْهُمْ فَرَأَدُهُمْ
إِيمَانًا ۝ وَقَالُوا حَسِبَنَا اللَّهُ وَنَعِمَ الْوَكِيلُ ۝

فَأَنْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ
يَمْسِهُمْ سُوءٌ ۝ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝

إِنَّمَا ذِلِّكُمُ الشَّيْطَنُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ
فَلَا تَحْقُمُوهُمْ وَحَاقُونَ إِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِينَ ۝

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي
الْكُفَّارِ إِنَّهُمْ لَنْ يَصِرُّوا اللَّهَ شَيْئًا
يُرِيدُ اللَّهُ أَلَا يَجْعَلَ لَهُمْ حَطَافَ
الْآخِرَةِ ۝ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ اشْرَكُوا الْكُفَّارَ بِالْإِيمَانِ لَنْ

पहुँचा सकेंगे और उनके लिए बहुत कष्ट दायक अज्ञाब (निश्चित) है । 178।

और जिन्होंने इनकार किया, वे कदापि यह धारणा न रखें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं, यह उनके लिए उत्तम है । हम तो उन्हें केवल इस कारण ढील दे रहे हैं ताकि वे पाप में और भी बढ़ जाएँ और उनके लिए अपमान जनक अज्ञाब (निश्चित) है । 179।

अल्लाह ऐसा नहीं कि वह मोमिनों को इस अवस्था में छोड़ दे जिस पर तुम हो, यहाँ तक कि अपवित्र को पवित्र से निराकरण कर अलग कर दे और अल्लाह का यह विधान नहीं कि तुम (सब) को अदृष्ट (विषय) से अवगत करे । बल्कि अल्लाह अपने पैगम्बरों में से जिसको चाहता है उन लेता है । अतः अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यदि तुम ईमान ले आओ और तक्वा धारण करो तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है । 180।

और वे लोग जो उसमें कृपणता करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया है, कदापि न सोचें कि यह उन के लिए उत्तम है । बल्कि यह तो उनके लिए बहुत बुरा है । जिस (धन) में उन्होंने कृपणता से काम लिया क्रयामत के दिन अवश्य उन्हें उसके तौक पहनाए जाएँगे । और अल्लाह ही के लिए आसामानों और धरती का स्वामित्व है । और जो तुम

يَضْرُّ وَاللَّهُ شَيْءًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^(۱۷)

وَلَا يَحْسَبُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا تَمَلِّى
لَهُمْ خَيْرٌ لَا تَنْسِمُ إِلَّا مَا تَمَلِّى لَهُمْ
لَيَرَدُّ دُّولَةٍ إِلَيْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ^(۱۸)

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَدْرَأَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا
أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَعْلَمَ الرَّحِيمُ مِنْ
الظَّيْبٍ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَىٰ
الغَيْبِ وَلَكُنَّ اللَّهُ يَعْلَمُ مَنْ رَسَّلَهُمْ مِنْ
يَقِنَاءٍ فَإِمْنُوا بِاللَّهِ وَرَسُلِهِ وَإِنْ
تُؤْمِنُوا وَتَنْقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ^(۱۹)

وَلَا يَحْسَبُنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا أَنْتُمْ
اللَّهُمَّ مِنْ قَصْلِهِ هُوَ خَيْرُ الْمُهْمَدِ لِمَنْ هُوَ شَرٌّ
لَهُمْ سَيِّطَوْقُونَ مَا بَخْلُوا بِهِ يَوْمَ
الْقِيَمةِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ

وَالْأَرْضُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ۝

करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 181। (रुकू १४)

अल्लाह ने निश्चित रूप से उन लोगों का कथन सुन लिया जिन्होंने कहा कि अल्लाह दरिद्र है और हम धनवान हैं । हम अवश्य उसे जो उन्होंने कहा और उनके (द्वारा) नवियों का अन्यायपूर्वक घोर विरोध करने को भी लिख रखेंगे और हम कहेंगे, जलन वाला अज्ञाब भुगतो । 182।

यह इस कारण है कि जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और जबकि अल्लाह (अपने) भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं । 183।

वे लोग जिन्होंने कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ने हमसे वचन ले रखा है कि हम तब तक कदापि किसी रसूल पर ईमान नहीं लाएँगे जब तक वह हमारे पास ऐसी कुर्बानी न ले आए जिसे आग खा जाए, * तू (उन से) कह दे कि मुझ से पहले भी तो रसूल तुम्हारे पास खुले-खुले चिह्न और वह बात भी ला चुके हैं जो तुम कहते हो । फिर तुमने क्यों उन्हें कठोर यातनाएँ दी, यदि तुम सच्चे हो । 184। **

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ ۖ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۖ سَكَنَبَ مَا قَاتَلُوا ۝
وَقَتَلُهُمُ الْأَنْتِيَاءُ ۖ يَعْلَمُ حَقٌّ ۖ وَنَقُولُ ۝
ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

ذِلِّكَ بِمَا قَدَّمْتَ أَيْدِيهِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَيْدِ ۝

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهْدَ إِئْيَاهُ أَلَا
نُؤْمِنُ بِرَسُولِهِ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ ثَانِيَّهُ
النَّارُ ۝ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ
قَبْلِيٍ بِالْبِيْتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلَمَّا
قَتَلْتُمُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَدِّيقِينَ ۝

* यहूदियों की आस्था यह थी कि जो भी कुर्बानी अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत की जाए उसके स्वीकार होने का लक्षण यह है कि आकाश से आग बरसती है और उस कुर्बानी को खा जाती है । अतः इसके अनुसार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की गई कि ऐसी कुर्बानी करके दिखा जिस पर सीधे आकाश से आग उतरे और उसे खा जाए । इसके उत्तर में अल्लाह तआला ने कहा है कि यदि सच्चे रसूल की यही निशानी है तो तुम्हारे कथनातुसार पहले रसूलों के समय भी कुर्बानियाँ होती थीं और आग आकाश से उतर कर उसे खा जाती थी तो इसके बावजूद तुमने उन नवियों का घोर विरोध क्यों किया ?

** अरबी शब्द क़तल का अर्थ गम्भीर आघात के भी होते हैं । (तस्सीर रूह-उल-मआरी, सूरः अल फ़त्ह)

अतः यदि उन्होंने तुझे झुठला दिया है तो तुझ से पहले भी तो रसूल झुठला ए गए थे । वे खुले-खुले चिह्न और (ईश्वरीय) ग्रंथ और सुस्पष्ट पुस्तक लाए थे ॥185॥

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है और क्रयामत के दिन ही तुम्हें अपने (कर्मों का) भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा । अतः जो आग से दूर रखा गया और स्वर्ग में प्रविष्ट किया गया तो निस्सन्देह वह सफल हो गया और संसार का जीवन तो धोखा-पूर्ण अस्थायी लाभ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ॥186॥

तुम अवश्य अपने धन और अपनी जानों के विषय में परखे जाओगे और तुम अवश्य उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले पुस्तक दी गई और उनसे जिन्होंने शिर्क किया, बहुत दुःख-दार्द बातें सुनोगे और यदि तुम धैर्य धरो और तक़वा धारण करो तो निस्सन्देह यह एक बड़ा साहसिक कार्य है ॥187॥

और जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें पुस्तक दी गई दृढ़ वचन लिया कि तुम लोगों की भलाई के लिए इसको खोल-खोल कर बताओगे और इसे छुपाओगे नहीं । फिर उन्होंने इस (दृढ़ वचन) को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसके बदले मामूली कीमत वसूल कर ली । अतः जो वे खरीद रहे हैं, बहुत ही बुरा है ॥188॥

तू उन लोगों के सम्बन्ध में जो अपने कर्मों पर खुश हो रहे हैं और पसन्द

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رَسُولٌ
مِّنْ قَبْلِكَ جَاءُو بِالْبَيِّنَاتِ وَالرَّبُّرِ
وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ④

كُلُّ نَفِيسٍ ذَا إِيقَادَةَ الْمَوْتِ ۖ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ
أَجْوَرَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَنْ رَحِمَ
عَنِ النَّاسِ وَأَدْخَلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۖ وَمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغَرُورِ ⑤

لَتَبْلُوَنَ فَتَأْمُوا إِلَكُمْ وَأَنْفِسِكُمْ ۖ
وَلَتَسْمَعُنَ مِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قِبْلَكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوْا آذِيَّا ۖ
وَإِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَقْوُا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ
عَزْمِ الْأَمْوَارِ ⑥

وَإِذَا حَدَّ اللَّهُ مِنَّا قَالَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ
لَتَبْيَنَنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكُونُونَهُ
فَنَبْذُؤُهُ وَرَأَءَ طَهُورُهُمْ وَأَشْتَرُوا بِهِ
كُمَّا قَلِيلًا ۖ فَمِنْ مَا يُشَرِّفُونَ ⑦

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا

करते हैं कि उनके उन कामों की भी प्रशंसा की जाए जो उन्होंने नहीं किए। (हाँ) कदापि उन के सम्बन्ध में धारणा न रख कि वे अज़ाब से बच सकेंगे जबकि उनके लिए पीड़िजनक अज़ाब (निश्चित) है। 1189।

और आसमानों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 1190। (रुकू ١٩)

निस्सन्देह आसमानों और धरती की उत्पत्ति में और रात और दिन के अदलने-बदलने में बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं। 1191।

वे लोग जो खड़े हुए भी और बैठे हुए भी और अपने पहलुओं के बल भी अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और धरती की उत्पत्ति में चिन्तन-मनन करते रहते हैं। (और सहसा कहते हैं) हे हमारे रब्ब ! तू ने कदापि इसे बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया। पवित्र है तू। अतः हमें आग के अज़ाब से बचा ले। 1192।

हे हमारे रब्ब ! जिसे तू अग्नि में प्रविष्ट कर दे तो निस्सन्देह उसे तू ने अपमानित कर दिया और अत्याचारियों के कोई सहायक नहीं होंगे। 1193।

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब्ब पर

وَيَحْبُّونَ أَنْ يُحَمِّدُوا إِيمَانَهُمْ يَفْعَلُوا
فَلَا تَحْسِنُهُمْ بِمَفَازٍ وَمَنْ الْعَذَابُ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^(١٩)

وَإِلَهُكُمْ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ مُوَالُهُ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^(٢٠)

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالْخُلُقِ لِيَتِي وَالنَّهَارِ لَا يَتِي لِأَوْلَى
الْأَلْبَابِ^(٢١)

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيمًا وَقُعُودًا وَعَلَى
جُمُوِّهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبَّا مَا حَلَقَ هَذَا بَاطِلًا
سَبِّحْنَاهُ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ^(٢٢)

رَبَّنَا إِلَكَ مَنْ شَدَّدَ الدَّارَ فَقَدْ
أَخْرَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ^(٢٣)

رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مَنَادِيًّا يَنْادِي لِلْإِيمَانِ

ईमान ले आओ । तो हम ईमान ले आए। हे हमारे रब्ब ! अतः हमारे पाप क्षमा कर दे और हमसे हमारी बुराइयाँ दूर कर दे और हमें सदाचारियों के साथ मृत्यु दे ॥194॥

हे हमारे रब्ब ! और हमें वह वचन प्रदान कर दे जो तू ने अपने रसूलों पर हमारे पक्ष में अनिवार्य कर दिया था (अर्थात् नवियों से ली गई प्रतिज्ञा) और हमें क्यामत के दिन अपमानित न करना । निस्सन्देह तू वचनभंग नहीं करता ॥195॥*

अतः उनके रब्ब ने उनकी दुआ स्वीकार कर ली (और कहा) कि मैं तुम में से किसी कर्म करने वाले का कर्म कदापि निष्फल नहीं करूँगा चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री । तुम में से कुछ, कुछ से सम्बन्ध रखते हैं । अतः वे लोग जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरे रास्ते में दुःख दिए गए और उन्होंने युद्ध किया और उनका वध किया गया मैं अवश्य उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूँगा और अवश्य उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करूँगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । (यह) अल्लाह की ओर से पुण्यफल स्वरूप (है) और अल्लाह ही के पास सर्वोत्तम पुण्यफल है ॥196॥

* नवियों की प्रतिज्ञा के लिए देखें सूरः आले इम्रान आयत 82 और सूरः अल अहजाब आयत-8 । इस आयत में अला (पर) शब्द के पश्चात् लिसानि रसुलिका (तेरे नवियों की जुबानी) नहीं कहा गया है बल्कि केवल 'रसुलिका' (तेरे सब रसूल) शब्द है । यह अला शब्द अनिवार्यता का सूचक है और तात्पर्य यह है कि नवियों पर जिस प्रकार तूने अनिवार्य कर दिया था कि वे अर्थात् उनकी जातियाँ आने वाले रसूल की अवश्य सहायता करें और यदि उन्होंने ऐसा न किया तो उनकी गलती होगी । अन्यथा अल्लाह तो प्रत्येक अवस्था में अपने वचनानुसार अपने रसूलों को विजयी किया करता है ।

أَنْ أَمْوَالِنَا وَكُلُّ كِفْرٍ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوْقِيَاتِنَا
ذَنْبُنَا وَكَلْمَانَةٌ لِلْأَبْرَارِ^{۱۵}

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْنَا عَلَى رُسُلِنَا وَلَا
تَخْرِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةَ إِنَّكَ لَا تَخْلُفُ
الْمِيعَادَ^{۱۶}

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيقُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى
بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا
وَأَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَوْدُوا فِي
سَيِّئَاتِهِمْ وَقَتَلُوا وَقَتَلُوا لَا كُفَّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخْلَهُمْ جَنَّتٍ
تَجْرِيْ فِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ^{۱۷} نَوَابًا مِّنْ
عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْوَابِ^{۱۸}

उन लोगों का जिन्होंने इनकार किया, बस्तियों में आना-जाना तुझे कदापि धोखा में न डाले । 197।

थोड़ा सा अस्थायी लाभ है । फिर उनका ठिकाना नरक होगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है । 198।

परन्तु वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब का तक्रवा धारण किया उनके लिए स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं । (यह) अल्लाह की ओर से उनके आतिथ्य स्वरूप (होगा) और वह जो अल्लाह के पास है वह नेक लोगों के लिए बहुत ही अच्छा है । 199।

और निस्सन्देह अहले किताब में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह के समक्ष विनम्रता पूर्वक झुकते हुए अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर भी जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया था । वे अल्लाह की आयतों को मामूली कीमत के बदले नहीं बेचते । यही वे लोग हैं जिनके लिए उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है । निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है । 200।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! धैर्य धरो और धैर्य का उपदेश दो और सीमाओं की सुरक्षा पर चौकन्ने रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम सफल हो जाओ । 201।* (रुक् २० ॥)

* यहाँ शब्द से अभिप्राय सीमाओं पर घोड़े बांधना है । जिसका अर्थ यह है कि कभी भी शत्रु के आक्रमण से असावधान न रहो बल्कि जैसे सीमा पर खड़े होने से सीमा पार के समाचार पता चलते रहते हैं इसी प्रकार अपनी सीमाओं की सुरक्षा करो और शत्रु को सहसा अपने ऊपर आक्रमण करने का अवसर न दो।

لَا يَعْرِلُك تَقْلِبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
الْبَلَادِ ⑩

مَتَّاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَا وَيْهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمَهَادُ ⑪

لَكِنِ الَّذِينَ أَنْقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ بَشَّرٌ
تَجْرِيْفٌ مِّنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيلُّهُنَّ فِيهَا
نُزَّلَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ
خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ⑫

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ
وَمَا أُنْزَلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزَلَ إِلَيْهِمْ
لَهُ شَيْءٌ إِلَّا وَلَكُمْ ۖ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
مَمَّا قَلِيلًا ۖ أَوْ لِكَ لَهُمْ أَجْرٌ هُنَّ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ⑬

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا
وَرَأَيْطُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ⑭

4- सूरः अन-निसा

यह सूरः हिजरत के तीसरे और पाँचवें वर्ष के बीच अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 177 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ एक ऐसी आयत से होता है जिसमें एक ही जान से मनुष्य जन्म के चमत्कारिक आरम्भ का वर्णन मिलता है। इस प्रकार आदम शब्द की एक और व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

इस सूरः का इससे पूर्ववर्ती सूरः के अंतिम भाग से गहरा संबंध है। पिछली सूरः के अंत पर धैर्य धरने की शिक्षा के अतिरिक्त यह शिक्षा भी दी गई थी कि एक दूसरे को धैर्य धरने का उपदेश भी करते रहो और अपनी सीमाओं की सुरक्षा भी करो। इस सूरः में शत्रु के साथ भयानक युद्धों का वर्णन है जिसके परिणाम स्वरूप अधिकता से स्त्रियाँ विधवा और बच्चे अनाथ हो जाएँगे। युद्धों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों और विधवाओं तथा अनाथों के अधिकारों के सम्बन्ध में इस समस्या का एक समाधान एक से अधिक विवाह करने के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बशर्ते मोमिन न्याय पर अटल रह सके। यदि न्याय पर अटल नहीं रह सकता तो केवल एक विवाह पर ही संतुष्ट होना पड़ेगा।

इस सूरः में इस्लामी उत्तराधिकार व्यवस्था के मौलिक सिद्धान्त और उनके विवरण का उल्लेख हुआ है।

इसी सूरः में यहूदियत और ईसाइयत के परस्पर संबंध और हज़रत ईसा अलै. के आविर्भाव का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि जब यहूदियों ने अपने समस्त वचन तोड़ दिये और कठोर दिल हो गए और हज़रत ईसा अलै. को सूली पर चढ़ा कर मारने का प्रयत्न किया तो किस प्रकार अल्लाह तआला ने सूली के द्वारा हज़रत ईसा अलै. का वध करने की उनकी चेष्टा को असफल कर दिया और हज़रत ईसा अलै. का उन सभी आरोपों से मुक्त होना साबित किया जो आप पर और आपकी माता पर यहूदियों की ओर से लगाए गए थे।

इस सूर में हज़रत ईसा अलै. की हिजरत का भी वर्णन मिलता है और यह भविष्यवाणी भी वर्णित है कि अहले किताब में से कोई भी गिरोह ऐसा नहीं रहेगा जो हज़रत ईसा अलै. की सत्यता और आप की स्वभाविक मृत्यु पर ईमान न ले आया हो। यह भविष्यवाणी अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते कश्मीर में आप के प्रवास से अक्षरशः पूरी हो गई।



سُورَةُ النِّسَاءِ مُلْكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ مَا تَرَأَفَتْ سَبْعَةٌ وَسَبْعَةٌ أَيْمَانُهُ وَأَيْمَانُهُ عَشْرُونَ رُكُونًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे लोगो ! अपने रब का तक़वा धारण करो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और फिर उन दोनों में से पुरुषों और स्त्रियों को बहुसंख्या में फैला दिया । और अल्लाह से डरो जिसके नाम की दुहाई दे कर तुम एक दूसरे से माँगते हो और निकट सम्बंधियों (की आवश्यकताओं) का भी ध्यान रखो । निस्सन्देह अल्लाह तुम पर निगरान है । । ।

और अनाथों को उनके धन दे दो और अपवित्र चीज़ें पवित्र चीज़ों के बदले में न लिया करो और उनके धन अपने धन से मिला कर न खा जाया करो । निस्सन्देह यह बहुत बड़ा पाप है । । । और यदि तुम डरो कि तुम अनाथों के विषय में न्याय नहीं कर सकोगे तो स्त्रियों में से जो तुम्हें पसन्द आएं उनसे निकाह करो । दो-दो और तीन-तीन और चार-चार । परन्तु यदि तुम्हें भय हो कि तुम न्याय नहीं कर सकोगे तो फिर केवल एक (पर्याप्त है) अथवा वे जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक बन गये । यह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِّنْ نُفُسِّisْ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا
وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسْأَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ②

وَأَتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْحَسِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُو أَمْوَالَهُمْ
إِلَى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حَنُوْبًا كَثِيرًا ③
وَإِنْ خُفْتُمُ الْأَلْآتِقْسِطْوَافِ الْيَتَامَىٰ
فَإِنْ كُحُومًا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ
وَثَلَاثَ وَرَبْعَ فَإِنْ خُفْتُمُ الْأَلْآتِقْسِطْوَافِ
فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ

(उपाय इस बात के) अधिक निकट है कि तुम अन्याय से बचो । १४।*

और स्त्रियों को उनके महर हार्दिक प्रसन्नता से अदा करो । फिर यदि वे अपनी हार्दिक प्रसन्नता से उसमें से कुछ तुम्हें देने के लिए सहमत हों तो उसे बिना असमंजस के चाव से खाओ । १५।

और अपने वह धन बुद्धिहीनों के सुपुर्द न किया करो जिनको अल्लाह ने तुम्हारे लिए (आर्थिक) स्थिरता का साधन बनाया है । और उन्हें उस (धन) में से खिलाओ और पहनाओ और उनसे अच्छी बात कहा करो । १६।

और अनाथों को जाँचते रहो यहाँ तक कि वे निकाह (की आयु) को पहुँच जाएँ । अतः यदि तुम उनमें बुद्धि (के लक्षण) देखो तो उनके धन उनको वापस कर दो और इस डर से अपव्यय और शीघ्रता के साथ उनको न खाओ कि कहीं वे बड़े न हो जाएँ । और जो धनवान् हो तो

اَذْلَى آلاً تَعُولُوا ۖ

وَأَنُو الِّنِسَاءَ صَدَقْتُهُنَّ بِنُخْلَةٍ ۗ فَإِنْ
طَبِّنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مُّنْهَنَّ نَفْسًا فَكُلُّهُ
هِنْيَّا مَرِيًّا ۝

وَلَا تُؤْتُوا السَّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ قِيمًا وَأَرْزَقُوهُمْ فِيهَا
وَأَكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا الْإِكْمَاحَ
فَإِنْ أَنْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوهَا
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا
وَبِذَلِكَ أَنْ يُكَبِّرُوا ۝ وَمَنْ كَانَ غَيْبَيًا
فَلِيُسْتَعْفِفُ ۝ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلِيُأْكُلُ

* इस आयत में यह आदेश नहीं दिया गया है कि अवश्य दो-दो, तीन-तीन, चार-चार विवाह करो । बल्कि तात्पर्य यह है कि एक समय में अधिक से अधिक चार पत्नियाँ रख सकते हो । जबकि इससे पूर्व अरबवासियों में शादियों की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती थी । अतः इस प्रकार अनिर्धारित संख्या में शादियों करने के विपरीत शादियों की पावंदी कराने वाली यह आयत है । विशेषकर ऐसी परिस्थितियों में जबकि युद्धों के कारण बहुत सी कैदी औरतें हाथ आती हैं और अनाथों के पालन-पोषण के लिए भी एक ही पत्नी पर्याप्त नहीं हो सकती । इस कारण ऐसी परिस्थिति में एक से अधिक शादी करने की आज्ञा है बशर्ते न्याय पर अटल रह कर ऐसा किया जाए । इस आयत के दोनों छोर पर न्याय की शर्त को प्राथमिकता दी गई है । वे लोग जो इस बहाने से, कि एक से अधिक विवाह की अनुमति है, पहली पत्नी को अधर में लटकती हुई वस्तु की भाँति छोड़ देते हैं, वे कदापि इस्लाम के आदेश का पालन नहीं करते बल्कि वासना-पूर्ति के लिए ही एकाधिक विवाह करते हैं ।

चाहिए कि वह (उनका धन खाने से) पूर्णतया परहेज़ करे । हाँ जो निर्धन हो तो वह उचित रूप से खाए । फिर जब तुम उनको उनका धन लौटाओ तो उन पर गवाह बना लिया करो । और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है । 71

पुरुषों के लिए उस तरका में से एक भाग है जो माता-पिता और निकट सम्बंधियों ने छोड़ा । और स्त्रियों के लिए भी उस तरका में एक भाग है जो माता-पिता तथा निकट सम्बंधियों ने छोड़ा । चाहे वह थोड़ा हो चाहे अधिक । (यह एक) निश्चित किया गया भाग (है) । 81

और जब (तरका के) विभाजन के समय पर (ऐसे) निकट सम्बंधी (जिनको विधि के अनुसार भाग नहीं मिलता) और अनाथ और निर्धन भी आ जाएँ तो कुछ उसमें से उनको भी दो और उनसे अच्छी बात कहा करो । 91

और वे लोग इस बात से डरें कि यदि वे अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ जाते, तो उनके विषय में डरते । अतः चाहिए कि वे अल्लाह से डरें और साफ़-सीधी बात कहें । 101

निस्सन्देह वे लोग जो अनाथों का धन अत्याचार पूर्वक खाते हैं वे अपने पेटों में केवल आग झोकते हैं और निश्चित रूप से वे धधकती हुई अग्नि में पड़ेंगे । 111

(रुकू १२)

بِالْمَعْرُوفٍ فَإِذَا دَفَعْتُمُ إِلَيْهِمْ
أَمْوَالَهُمْ فَأَشِدُّوا عَيْنَهُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ
حَسِيبًا ⑦

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدُونَ
وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا
تَرَكَ الْوَالِدُونَ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلِّ مِنْهُ
أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ⑧

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولَئِكَ الْقُرْبَى
وَالْيَتَامَى وَالْمَسِكِينُ فَأَزْرِقُوهُمْ مُّمْهَّدُّهُ
وَقُولُوا لَهُمْ قُوْلًا مَعْرُوفًا ⑨

وَلْيَخُشَّ الَّذِينَ لَوْتَرُوكُونَ مُؤْمِنُونَ خَلِفُهُمْ
ذُرِّيَّةً ضُعْفًا حَافُوا عَلَيْهِمْ قَلِيلُهُمْ
اللَّهُ وَلِيَقُولُوا قُوْلًا سَدِيدًا ⑩

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا
وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ⑪

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान के बारे में वसीयत करता है । पुरुष के लिए दो स्त्रियों के भाग के समान (भाग) है । और यदि वे दो से अधिक स्त्रियाँ हों तो उनके लिए दो तिहाई है, उसमें से जो उस (मरने वाले) ने छोड़ा । और यदि वह अकेली हो तो उसके लिए आधा है । और यदि उस (मृतक) की संतान हो तो उस के माता-पिता में से प्रत्येक के लिए उसके तरका में से छठा भाग है । और यदि उसकी संतान न हो और उसके माता-पिता ही उसके उत्तराधिकारी हों तो उसकी माता के लिए तीसरा भाग है और यदि उस (मृतक) के भाई (बहन) हों तो फिर उसकी माता के लिए छठा भाग होगा, वसीयत के अदा करने के बाद जो उसने की हो अथवा कर्ज़ चुकाने के बाद । तुम्हारे पूर्वज और तुम्हारी संतान, तुम नहीं जानते कि उन में से कौन लाभ पहुँचाने में तुम्हारे अधिक निकट है । यह अल्लाह की ओर से (निर्धारित) कर्तव्य है । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥121॥

और जो तुम्हारी पत्नियों ने तरका छोड़ा है, यदि उनकी कोई संतान न हो तो तुम्हारे लिए उसमें से आधा होगा । अतः यदि उनकी कोई संतान हो तो तुम्हारे लिए उसमें से चौथा भाग होगा जो उन्होंने छोड़ा, वसीयत के अदा करने के बाद जो उन्होंने की हो अथवा कर्ज़

يُؤْصِنِكُمُ اللَّهُ فِي أُولَادِكُمْ لِلَّذِكْرِ
مِثْلُ حَظِّ الْأَنْثَيَيْنِ فَإِنْ مُنْ نِسَاءً
فَوْقَ اثْتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلَاثًا مَا تَرَكَ وَإِنْ
كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلَا بَوِيهُ
لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّمْهَا السَّدُسُ مِمَّا تَرَكَ
إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ
وَوَرِثَةً أَبَوَاهُ فَلِأَمْمَهِ الشُّلُثُ فَإِنْ كَانَ
لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأَقْرَبِهِ السَّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَةٍ
يُؤْصِنُ بِهَا أَوْ دَيْنِ لَبَابُكُمْ
وَأَبَابُكُمْ لَا تَنْدِرُونَ أَيْمَمُ أَقْرَبَ
لَكُمْ نَفْعًا فَرِيْضَةٌ مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑩

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ
لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ
فَلَكُمُ الرُّبْعُ هَاتَرُكُنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَةٍ

चुकाने के बाद । और उनके लिए उसमें से चौथा भाग होगा जो तुमने छोड़ा यदि तुम्हारी कोई संतान न हो । और यदि तुम्हारी कोई संतान हो तो उन (पल्लियों) का उसमें से आठवां भाग होगा, उसमें से जो तुमने छोड़ा, वसीयत के अदा करने के बाद जो तुमने की हो अथवा कऱ्ज चुकाने के पश्चात् । और यदि किसी ऐसे पुरुष अथवा स्त्री के छोड़े हुए धन को विभाजित किया जा रहा हो जो कलालः हो (अर्थात् न उसके माता-पिता हों न ही कोई संतान हो) परन्तु उसका भाई अथवा बहन हो तो उन दोनों में से प्रत्येक के लिए छठा भाग होगा । और यदि वे (बहन भाई) इससे अधिक हों तो वे सब तीसरे भाग में भागीदार होंगे, वसीयत के अदा करने के बाद जो की गई हो अथवा कऱ्ज चुकाने के पश्चात् बिना किसी को कष्ट में डाले (ये) वसीयत है अल्लाह की ओर से । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला और बड़ा सहनशील है । 13।

यह अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाएँ हैं और जो अल्लाह का और उसके रसूल का आज्ञापालन करे तो वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे उनमें एक लम्बे समय तक रहने वाले होंगे और यह बहुत बड़ी सफलता है । 14।

और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे और उसकी सीमाओं का

يُوصِّيْنَ بِهَا أَوْدَيْنَ وَلَهُنَ الرُّبْعُ طَّا
تَرْكُتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ
لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَ الْقُمْ حَتَّى تَرْكُتُمْ مِنْ
بَعْدِ وِصْيَةٍ تَوْصِيْنَ بِهَا أَوْدَيْنَ وَإِنْ
كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كُلَّهُ أَوْ امْرَأَهُ وَلَهُ
أَخٌ أَوْ أَخْتٌ فَلِكُلٍّ وَاحِدٍ مِمْهَا
السَّدِّسُ فَإِنْ كَانُوا أَكْفَرَ مِنْ ذَلِكَ
فَهُمْ شَرَكَاءٌ فِي الشُّلْثِ مِنْ بَعْدِ وِصْيَةٍ
يُوْضِي بِهَا أَوْدَيْنَ لَا يَعْرِفُ مَصَارِ
وِصْيَةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ حِلْمٌ ⑯

تِلْكَ حَدَّوْدُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعُ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلُهُ جَنَّتٍ تَعْرِفُ مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَرَ حَلِيلِنَ فِيهَا وَذَلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑯

وَمَنْ يَعْصِي اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ

उल्लंघन करे तो वह उसे एक (ऐसी) अग्नि में डालेगा, जिसमें वह एक लम्बे समय तक रहने वाला होगा और उसके लिए अपमानित कर देने वाला अज्ञाब (निश्चित) है ॥15॥ (रुक् ٢٣)

और तुम्हारी स्त्रियों में से वे जिन्होंने कुर्कम किया हो, उन पर अपने में से चार गवाह बना लो । अतः यदि वे गवाही दें तो उनको घरों में रोके रखो यहाँ तक कि उन पर मौत आजाए अथवा उनके लिए अल्लाह कोई (और) मार्ग निकाल दे ॥16॥*

और तुम में से वे दो पुरुष जो इस (कुर्कम) को किए हुए हों उन्हें (शारीरिक) दंड दो । फिर यदि वे प्रायश्चित कर लें और सुधार कर लें तो उनको छोड़ दो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥17॥**

* अल्लाह उनके लिए मार्ग निकाल दे से दो बातें अभिप्राय हो सकती हैं । प्रथम यह कि पति पहले मर जाए और पत्नी स्वतः स्वतन्त्र हो जाए तथा दूसरा यह कि पति उसे तलाक दे दे ताकि वह किसी और पुरुष से विवाह कर ले ।

** आयत संख्या 16,17 का उस यौनविकृति से सम्बन्ध है जिसे आज कल समलैंगिकता (Gay Movement) कहते हैं । अर्थात् स्त्रियों का स्त्रियों के साथ और पुरुषों का पुरुषों के साथ दुष्कर्म करना । स्त्रियों पर आरोप सिद्ध करने के लिए तो चार गवाह आवश्यक हैं परन्तु पुरुषों के विषय में चार गवाहों की कोई शर्त नहीं । यह स्त्रियों के इज्जत की सुरक्षा और उन्हें आरोप से बचाने के लिए है । ऐसी स्त्रियों के विषय में यह जो कहा गया है कि उन्हें घरों में रखो, इसका तात्पर्य यह नहीं कि उन्हें कैद कर दो और घरों से बाहर ही न निकलने दो, बल्कि यह अर्थ है कि उन्हें अकेला बाहर न जाने दो और बिना आज्ञा के निकलने न दो ताकि यह अश्लीलता न फैले । प्रश्न यह है कि ऐसे पुरुषों पर पाबन्दी क्यों नहीं ? इसका कारण स्पष्ट है । कुर्�आन करीम पुरुषों पर घर को चलाने और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का दायित्व डालता है । यदि पुरुषों को घरों में कैद कर →

حَدُّوْدَةٌ يَذْخُلُهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

وَالنَّقْرُ يَأْتِيَنَّ الْفَاجِحَةَ مِنْ نَسَاءٍ كُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۝ فَإِنْ شَهَدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَوْمَ هُنَّ بِالْمَوْتِ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۝

وَالنَّذِنْ يَأْتِيَنَّهَا مِنْكُمْ فَأَذْوَهُمَا ۝ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَغْرِضُو عَنْهُمَا ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَابًا أَرْحَيمًا ۝ ⑩

निस्सन्देह उन्हीं लोगों का प्रायश्चित्त स्वीकार करना अल्लाह के जिम्मे है जो (अपनी) अज्ञानतावश बुराई कर बैठते हैं, फिर शीघ्र प्रायश्चित्त कर लेते हैं । अतः यही लोग हैं जिन पर अल्लाह प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए झुकता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥18॥

और उन लोगों का कोई प्रायश्चित्त नहीं जो कुकर्म करते हैं यहाँ तक कि उनमें से जब किसी को मृत्यु आ जाए तो वह कहता है मैं अब अवश्य प्रायश्चित्त करता हूँ । और न उन लोगों का प्रायश्चित्त है जो काफिर होने की दशा में मर जाते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए हमने पीड़ाजनक अज्ञाब तैयार कर रखा है ॥19॥

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम जबरदस्ती करते हुए स्त्रियों का उत्तराधिकार प्राप्त करो । और उन्हें इस उद्देश्य से तंग न करो कि जो कुछ तुम उन्हें दे बैठे हो उसमें से कुछ (फिर) ले भागो, सिवाय इसके कि वे खुल्लम-खुल्ला कुकर्म में पढ़ चुकी हों और उनके साथ सद्व्यवहार करते हुए जीवन बिताओ । और यदि

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ
فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا^⑯

وَلَيَسْتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ ۚ حَقٌّ إِذَا حَضَرَ أَحَدُهُمْ
الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تَبَّأْتُ إِلَيْنِي وَلَا إِلَيْنِي
يَمُوْتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۖ أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا^⑰

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحْلُّ لَكُمْ أَنْ تَرْثِقُوا
النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْصُلُوهُنَّ لِتَذَهَّبُوا
بِعَضُ مَا أَتَيْمُوْهُنَّ ۖ إِلَّا أَنْ يُبَيِّنُنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۖ وَعَاسِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ
فَإِنْ كَرِهْمُوْهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوْا

←दिया जाता तो उनके घर कैसे चलते और गुज़ारा कैसे होता ? इसके स्थान पर कहा कि पुरुषों को शारीरिक दंड दो और दंड में 80 या 100 कोडे लगाना नहीं कहा बल्कि परिस्थिति के अनुसार दंड निर्धारित हो सकता है । साथ ही पकड़े जाने के बाद उनकी निगरानी करनी है । इसके बाद यदि वे प्रायश्चित्त करें और भविष्य में सुधार का बचन दें तो फिर उनको बार-बार अपनी दृष्टि में रख कर अथवा कोई और प्रतिबंध लगा कर तंग नहीं करना चाहिए ।

तुम उन्हें नापसन्द करो तो संभव है कि
तुम एक वस्तु को नापसन्द करो और
अल्लाह उसमें बहुत भलाई रख दे । 120।

और यदि तुम एक पत्नी को दूसरी
पत्नी के स्थान पर बदलने की इच्छा
करो और तुम उन में से एक को ढेरों
धन भी दे चुके हो तो उसमें से कुछ
वापस न लो । क्या तुम उसे आरोप
लगाते हुए और खुल्लम-खुल्ला पाप
में पड़ते हुए लोगे ? । 121।

और तुम उसे कैसे ले लोगे जब कि तुम
एक दूसरे से (एकांत में) मिल चुके हो
और वे तुम से (वफादारी का) पक्का
बचन ले चुकी हैं । 122।

और स्त्रियों में से उनसे निकाह न करो
जिनसे तुम्हारे बाप-दादे निकाह कर
चुके हों । सिवाय इसके जो पहले गुजर
चुका (सो गुजर चुका) निस्सन्देह यह
बड़ा अश्लील और घृणा योग्य (कर्म) है
और बहुत ही बुरा मार्ग है । 123।

(रुकू 3/4)

तुम पर तुम्हारी माताएँ हराम (अवैध)
कर दी गई हैं । और तुम्हारी बेटियाँ और
तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियाँ और
तुम्हारी मौसियाँ और भाई की बेटियाँ
और बहिन की बेटियाँ और तुम्हारी बे
माताएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है
और तुम्हारी दूध-बहनें और तुम्हारी
पत्नियों की माताएँ और जिन पत्नियों से
तुम दांपत्य सम्बन्ध स्थापित कर चुको
उनकी बे पिछलग बेटियाँ भी जो तुम्हारे

شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ①

وَإِنْ أَرْدَقْتُمْ أَسْبَدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ
زَوْجٍ وَأَتَيْتُمْ لِحْدِهِنَ قِنْطَارًا فَلَا تَخْذُلُوا
مِنْهُ شَيْئًا أَتَأْخُذُونَهُ بِهَتَائِنَ وَإِنْمَا مُؤْنَنَ ②

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْصُكُمْ
إِلَى بَعْضٍ وَأَخَذُنَ مِنْكُمْ مِنْ شَيْئًا قَاغِلِيظًا ③

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ أَبَاوْيَ كُمْ مِنَ النِّسَاءِ
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۖ إِنَّهُ كَانَ فَاجِشَةً
وَمَقْتَأً ۖ وَسَاءَ سَيْنِلَلًا ۶

حَرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أَمْهَلْكُمْ وَبَنْكُمْ
وَأَخْوَيْكُمْ وَعَمْلَكُمْ وَخَلْكُمْ وَبَنْتَ
الْأَخِ وَبَنْتَ الْأُخْتِ وَأَمْهَلْكُمْ الَّتِي
أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخْوَيْكُمْ مِنَ الرَّصَاعَةِ
وَأَمْهَلْتْ نِسَاءِكُمْ وَرَبَّيْكُمْ الَّتِي فِي
حَجَّوْرِكُمْ مِنْ نِسَاءِكُمْ الَّتِي دَخَلْتُمْ

घर में पली हों तुम पर हराम हैं । हाँ यदि तुम उन (अर्थात् पत्नियों) से दांपत्य सम्बन्ध स्थापित न कर चुके हो तो फिर तुम पर कोई पाप नहीं । इसी प्रकार तुम्हारे उन औरस पुत्रों की पत्नियाँ भी तथा यह भी (तुम पर हराम है) कि तुम दो बहिनों को (अपने निकाह में) इकट्ठा करो । सिवाय इसके जो पहले हो चुका (सो हो चुका) । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 124 ।

بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُتُو أَدْخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جَمَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَالٌ أَبْسَأِيْكُمْ
الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمِعُوا بَيْنَ
الْأَخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ لِإِنَّ اللَّهَ كَانَ
غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٢٤﴾

और स्त्रियों में से वे (भी तुम पर हराम हैं) जिनके पति मौजूद हों, सिवाय उनके जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हों। यह अल्लाह की ओर से तुम पर अनिवार्य है और तुम्हारे लिए हलाल (वैध) कर दिया गया है जो इसके अतिरिक्त है कि तुम (उन्हें) अपनाना चाहो, अपने धन के द्वारा, अपने चरित्र की सुरक्षा करते हुए न कि कुकर्म का मार्ग अपनाते हुए। अतः उनके महर इस आधार पर कि तुम उनसे लाभ उठा चुके हो, अनिवार्य रूप से अदा करो। और तुम पर इस विषय में कोई दोष नहीं कि तुम महर निर्धारित होने के बाद (किसी परिवर्तन पर) परस्पर सहमत हो जाओ। निससंदेह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है। 125।

और तुम में से जो कोई आर्थिक रूप से सामर्थ्य न रखते हों कि स्वतंत्र मोमिन स्त्रियों से निकाह कर सकें तो वे तुम्हारी मोमिन दासियों में से जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए (किसी से) निकाह कर लें। और अल्लाह तुम्हारे ईमानों को भली-भाँति जानता है। तुम में से कुछ, कुछ के साथ सम्बन्ध रखते हैं। अतः उनके मालिकों की आज्ञा से उनसे निकाह करो तथा उनको उनके हक महर विधि पूर्वक अदा करो, ऐसी अवस्था में कि वे अपनी इज़ज़त को बचाने वालियाँ हों न कि अश्लील कृत्य करने वालियाँ और न ही छिपे मित्र

وَالْمُحَصَّنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كِتَابُ اللَّهِ عَلَيْنَكُمْ
وَأَحَلَّ لَكُمْ مَا وَرَأَءُتُمُّكُمْ أَنْ تَبْتَغُوا
بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مَسْفِحَاتٍ
فَمَا اسْتَعْمَلْتُمْ بِهِ مَئُونٌ فَإِنَّهُنَّ
أَجْوَرُهُنْ قَرِيْضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
قِيمَاتِ رَضِيْمَةٍ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ⑩

وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مُنْكِرُ طُولًا أَنْ يَنْكِحَ
الْمُحَصَّنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتَاهِكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ
بَعْضٍ فَإِنْ كَحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ
وَإِنَّهُنَّ أَجْوَرُهُنْ بِالْمَعْرُوفِ
مُحَصَّنَاتٍ غَيْرَ مَسْفِحَاتٍ وَلَا مَئُونَاتٍ

बनाने वालियाँ हों । अतः जब वे निकाह कर चुकीं, फिर यदि वे अशलीलता में पड़ें तो उनका दंड स्वतन्त्र स्त्रियों की तुलना में आधा होगा । यह (छूट) उस के लिए है जो तुम में से पाप से डरता हो । और तुम्हारा धैर्य धरना तुम्हरे लिए बेहतर है । और अल्लाह बहुत ज़मा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 126। (रुू. 4)

अल्लाह चाहता है कि वह तुम पर बात ख़ूब स्पष्ट कर दे और उन लोगों के तरीकों की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करे जो तुमसे पहले थे और प्रायश्चित स्वीकार करते हुए तुम पर झुके और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 127।

और अल्लाह चाहता है कि तुम पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुके । और वे लोग जो तामसिक इच्छाओं के पीछे लगे रहते हैं, चाहते हैं कि तुम बड़े ज़ोर से (उनकी ओर) आकर्षित हो जाओ । 128।

अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हल्का कर दे और मनुष्य दुर्बल पैदा किया गया है । 129।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने धन को परस्पर अवैध ढंग से न खाया करो । हाँ यदि वह ऐसा व्यापार हो जो तुम्हारी परस्पर सहमती से हो और तुम अपने आप की (आर्थिक रूप से) हत्या

اَخْدَانٍ ۝ فَإِذَاً أَحْصِبَ فَإِنَّ آتَيْنَ
بِقَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى
الْمُحْسَنِينَ مِنَ الْعَذَابِ ۝ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
الْعَنْتَ مِنْكُمْ ۝ وَأَنْ تَصِيرُوا حَيْرَ
لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يُرِيدُ اللَّهُ لِيَتَّيَّنَ لَكُمْ وَيَهْدِي كُمْ سَبََّنَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَوْبَ عَلَيْكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۝ وَيُرِيدُ
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمْيِلُوا
مِيلًاً عَظِيمًاً ۝

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخْفِفَ عَنْكُمْ وَحَلَقَ
الْإِنْسَانَ صَعِيفًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْتَوْلَاتُكُوْا أَمْوَالَكُمْ
بِيَنْكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً
عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۝ وَلَا تَقْتَلُوا

न करो । निस्सन्देह अल्लाह तुम पर बार-बर दया करने वाला है । 30।

और जो सीमा का उल्लंघन करते हुए और अत्याचार करते हुए ऐसा करे तो हम उसे शीघ्र एक आग में डालेंगे और यह बात अल्लाह पर आसान है । 31।

यदि तुम उन बड़े पापों से बचते रहो जिनसे तुम्हें रोका गया है तो हम तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और हम तुम्हें एक बड़े प्रतिष्ठित स्थान में प्रविष्ट करेंगे । 32।

और अल्लाह ने जो तुम में से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है, उसकी लालच न किया करो । पुरुषों के लिए उसमें से भाग है जो वे अर्जित करें तथा स्त्रियों के लिए उसमें से भाग है जो वे अर्जित करें और अल्लाह से उसकी कृपा को माँगो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय का ख़ूब ज्ञान रखता है । 33।

और हमने प्रत्येक के लिए उस (धन) के उत्तराधिकारी बनाए हैं जो माता-पिता और निकट सम्बन्धी छोड़े । * और वे जिनसे तुमने पक्के बचन लिए हैं, उनको भी उनका भाग दो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय पर निरीक्षक है । 34।

(रुक् ۵)

पुरुष स्त्रियों पर उस श्रेष्ठता के कारण निगरान हैं जो अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ पर प्रदान की है और इस कारण

آنفَسُكُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ⑦

وَمَنْ يَفْعُلْ ذَلِكَ عَدُوًا نَّا وَظُلْمًا فَسَوْفَ
نُصْلِيهِنَا رَأً ۝ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ⑧

إِنْ تَجْتَبِيْوَا كَبَائِرَ مَا شَهَوْنَ عَنْهُ
لَكَفَرْ عَنْكُمْ سَيِّاتِكُمْ وَنَذْخُلُكُمْ
مَدْخَلًا كَرِيمًا ⑨

وَلَا تَتَمَنُوا مَا فَضَلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى
بَعْضٍ ۝ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ۝
وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۝ وَسُئُلُوا
اللَّهُ مَنْ فَضَّلَهُ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ⑩

وَلِكُلِّ جَعْلَنَا مَوَالِي هَمَّا تَرَكَ الْوَالِدُونَ
وَالْأَقْرَبُونَ ۝ وَالَّذِينَ عَدَدُتُ أَيْمَانَكُمْ
فَإِنَّهُمْ نَصِيبُهُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

الرِّجَالُ قُوُّمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَلَ

* यह अनुवाद हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहिब रजियल्लाहु अन्हु के कुरआन अनुवाद से उद्धृत किया गया है ।

से भी कि वे अपने धन (उन पर) खर्च करते हैं । अतः नेक स्त्रियाँ आज्ञाकारिणी और (उनकी) अनुपस्थिति में भी उन वस्तुओं की सुरक्षा करने वाली होती हैं, जिनकी सुरक्षा का अल्लाह ने आदेश दिया है और वे स्त्रियाँ जिनसे तुम्हें विद्रोह-पूर्ण व्यवहार का भय हो तो उनको (पहले तो) नसीहत करो, फिर उनको बिस्तरों में अलग छोड़ दो और फिर (आवश्यकतानुसार) उन्हें शारीरिक दंड भी दो । अतः यदि वे तुम्हारा आज्ञापालन करें तो फिर उनके विरुद्ध कोई तर्क न खोजो । निस्सन्देह अल्लाह उत्युच्च (और) बहुत बड़ा है ।^{1351*}

और यदि तुम्हें उन दो (पति-पत्नी) के बीच अत्यधिक मतभेद का भय हो तो

اللَّهُ بِعَصْمَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا
مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالصِّلَاحُ قِنْثُتُ
حِفْظُكُلِّغَيْرِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ
وَالْأَنْقُوفُ تَخَافُونَ نُسُورَهُنَّ فَعَظُوهُنَّ
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاصْبُرُوهُنَّ
فَإِنْ أَطْعَنُكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَيِّلًا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْهَا كَيْرِيرًا

وَإِنْ خُفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنَهُمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا

- * अर्द्जालु क़व्वामून (पुरुष निगरान हैं) का एक सीधा अर्थ तो यह है कि साधारणतया पुरुष स्त्रियों से अधिक सबल और उनको सीधे रास्ते पर स्थित रखने वाले होते हैं । यदि पुरुष क़व्वाम (निगरान) नहीं होंगे तो स्त्रियों के बहकने की सम्भावना अधिक है । दूसरा यह कि वे पुरुष क़व्वाम हैं जो अपनी पत्नियों के खर्चे उठाते हैं । वे निखटू जो पत्नियों की कमाई पर पलते हैं वे कदापि क़व्वाम नहीं होते । आयत के अन्तिम भाग में यह वर्णन किया गया है कि यदि तुम क़व्वाम हो और इसके बाद भी तुम्हारी पत्नी बहुत अधिक विद्रोहपूर्ण सोच रखती हो तो इस अवस्था में यह अनुमति नहीं है कि उसको तुरन्त शारीरिक दंड दो, बल्कि पहले उसे नसीहत करो । यदि नसीहत न माने तो दांपत्य सम्बन्ध स्थापित करने से कुछ समय तक परहेज़ करो । (वास्तव में यह दंड स्त्री से अधिक पुरुष को मिलता है) । यदि इस पर भी उसकी विद्रोहपूर्ण सोच दूर न हो तब जाकर तुम्हें उस पर हाथ उठाने की अनुमति है । परन्तु इसके सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है कि ऐसी चोट न लगे जो चेहरे पर हो और जिससे उस पर कोई दाग लग जाए । इस आयत का संदर्भ देकर बहुत से लोग अपनी पत्नियों पर अनुचित सख्ती करते हैं, कि पुरुष को अपनी पत्नी को मारने की अनुमति है । हालांकि यदि उपरोक्त शर्तें पूरी करें तो प्रबल सम्भावना है कि किसी प्रकार सख्ती करने की आवश्यकता ही न पड़े । यदि सख्ती करना उचित होता तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में आपकी पत्नियों को शारीरिक रूप से दण्ड देने का कोई भी उदाहरण मिल जाता । हालांकि कई पत्नियाँ कई बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाराज़गी का पात्र भी बन जाती थीं ।

उस (अर्थात् पति) के घर वालों में से एक विवेकशील फैसला करने वाला व्यक्ति और उस (अर्थात् पत्नी) के घर वालों में से एक विवेकशील फैसला करने वाला व्यक्ति निश्चित करो । यदि वे दोनों (अपना) सुधार चाहें तो अल्लाह उन दोनों के बीच सहमति उत्पन्न कर देगा । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) खूब खबर रखने वाला है । 36।

और अल्लाह की उपासना करो और किसी वस्तु को उसका साझीदार न ठहराओ और माता-पिता के साथ भलाई करो और निकट सम्बंधियों से और अनाथों से और निर्धन लोगों से और नातेदार पड़ोसियों से और उन पड़ोसियों से भी जो नातेदार न हों तथा अपने साथ उठने बैठने वालों से और यात्रियों से और उनसे भी जिनके तुम्हरे दाहिने हाथ मालिक हुए (भलाई करो) । निस्सन्देह अल्लाह उसको पसन्द नहीं करता जो अभिमानी (और) ढांग हाँकने वाला हो । 37।

(अर्थात्) वे लोग जो (स्वयं भी) कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं और उसको छिपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से दिया है । और हमने काफिरों के लिए घोर अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार किया है । 38।

और वे लोग जो अपने धन को लोगों के सामने दिखावे के लिए खर्च करते हैं और

ٌمِنْ أَهْلِهِ وَحَكِيمًا مِنْ أَهْلِهَا
إِنْ يُرِيدُ إِلَّا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْهِمَا خَيْرًا ⑩

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَبِالْأُولَاءِ الدَّيْنَ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَى
وَإِلِيَّشِى وَالْمَسِكِينُ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى
وَالْجَارُ الْجَنْبُ وَالصَّاحِبُ بِالْجَنْبِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ⑪

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ
وَيَكْسِمُونَ مَا أَنْتُمْ اللَّهُ مِنْ قَضِيمٍ
وَأَغْنَيْنَا الْكُفَّارِ بِعَذَابًا مُّهِينًا ⑫

وَالَّذِينَ يُفْقِدُونَ آمَوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ

न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न अंतिम दिवस पर । और वह जिसका शैतान साथी हो तो वह बहुत ही बुरा साथी है । 39।

और उन पर क्या कठिनाई थी यदि वे अल्लाह पर ईमान ले आते और अंतिम दिवस पर भी और उसमें से खर्च करते जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया और अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है । 40।

निस्सन्देह अल्लाह कण भर भी अत्याचार नहीं करता । और यदि कोई नेकी की बात हो तो वह उसे बढ़ाता है तथा अपनी ओर से भी बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है । 41।

अतः क्या हाल होगा, जब हम प्रत्येक उम्मत में से एक गवाह ले कर आएँगे । और हम तुझे उन सब पर गवाह बना कर लाएँगे । 42।

उस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया और रसूल की अवज्ञा की, चाहेंगे कि काश ! (वे गाइ दिये जाते और) धरती उन पर बराबर कर दी जाती । और वे अल्लाह से कोई बात छिपा न सकेंगे । 43। (रुकू ٦)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम नमाज़ के निकट न जाओ जब तुम बेसुधपने की हालत में हो । यहाँ तक कि इस लायक हो जाओ कि तुम्हें ज्ञान हो कि तुम क्या कह रहे हो । और न ही जुब्बी होने की दशा में (नमाज़ के निकट

وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا يَأْتِيُونَ الْآخِرَةَ
وَمَنْ يَكُنْ الشَّيْطَنُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ أَمْوَالًا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ
وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِنْ قَالَ ذَرْرَةً وَإِنْ
تَكُ حَسَنَةً يُضَعِّفُهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ
أَجْرًا عَظِيمًا ①

فَكَيْفَ إِذَا حِنْنَاهُ مِنْ كُلِّ أَمْمَةٍ بِشَهِيدٍ
وَحِنْنَاهُ بِكَ عَلَى هُولَاءِ شَهِيدًا ②

يَوْمٌ يُبَدِّلُ الظِّلْمَ كَفَرُوا وَعَصُوا
الرَّسُولُ لَوْ تُسْوِيَ بِهِمُ الْأَرْضُ
وَلَا يَكُنُّ مُؤْمِنَوْنَ اللَّهُ حَدِيثًا ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ
وَأَنْتُمْ سَكُرٌ حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقْوَلُونَ
وَلَا جُنْبًا إِلَّا عَابِرٌ سَبِيلٌ حَتَّى

न जाओ) जब तक कि स्नान न कर लो सिवाय इसके कि तुम यात्री हो । और यदि तुम बीमार हो अथवा यात्रा पर हो अथवा तुम में से कोई शौचादि करके आया हुआ हो अथवा तुमने स्त्रियों से संभोग किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो शुष्क पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो । अतएव तुम अपने चेहरों और हाथों पर मसह करो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत मार्जना करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 144।

क्या तूने ऐसे लोगों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें पुस्तक में से एक भाग दिया गया, वे पथभ्रष्टा को खरीद लेते हैं और चाहते हैं कि तुम (सीधे) रास्ते से हट जाओ । 145।

और अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को सबसे अधिक जानता है और अल्लाह मित्र होने की दृष्टि से पर्याप्त है और अल्लाह ही सहायक के रूप में पर्याप्त है । 146।

यहूदियों में से ऐसे भी हैं जो कलिमों (धर्मवाक्यों) को उनके वास्तविक स्थानों से बदल देते हैं । और वे कहते हैं हमने सुना और हमने अवज्ञा की । और इस अवस्था में वात सुन, कि तुझे कुछ भी न सुनाई दे और वे अपनी जिह्वा को मरोड़ते हुए और धर्म में व्यंग कसते हुए राझा कहते हैं । * और यदि ऐसा होता कि वे कहते कि हमने सुना और हमने

تَعْتَسِلُواۡ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ
لِسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُواۡ مَاءً فَتَيَمَّمُواۡ
صَعِيدًا طَيْبًا فَامْسَحُواۡ بِوَجْهِهِمْ
وَأَيْدِيهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفْوًاۡ أَغْفُورًاۡ ④

الْمُتَرَابَ الَّذِينَ أَوْتُواۡ نِصْيَارًا مِّنَ
الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الْفَضْلَةَ وَيَرِيدُونَ
أَنْ تَنْصُلُواۡ السَّيِّئَاتِ ۖ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَآءِكُمْ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
وَلِيَّا ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ⑤

مِنَ الَّذِينَ هَادُواۡ يَحْرِفُونَ الْكَلِمَاتَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَنَا
وَاسْمُعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَرَأَيْنَا لَيْتَاً
بِالْسَّنَتِهِمْ وَطَعْنَانِ الدِّينِ ۖ وَلَوْأَنَّهُمْ

* मानो वे रायीना कह रहे हों अर्थात् हे हमारे चरवाहे ।

आज्ञापालन किया और सुन और हम पर दृष्टि डाल, तो यह उनके लिए उत्तम और सबसे अधिक दृढ़ (वाक्य) होता । परन्तु अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर ला'नत् कर दी है । अतः वे बहुत ही कम ईमान लाते हैं । 47।

हे वे लोगों जिन्हें पुस्तक दी गई है ! उस पर ईमान ले आओ, जो हमने उतारा है उसकी पुष्टि करता हुआ जो तुम्हारे पास है । इससे पहले कि हम कुछ चेहरों को दाग दें और उन्हें उनकी पीठों के बल लौटा दें अथवा उन पर इसी प्रकार ला'नत डालें जिस प्रकार हमने सब्ल बालों पर ला'नत डाली थी । और अल्लाह का निर्णय तो पूरा हो कर रहने वाला है । 48।

निस्सन्देह अल्लाह (यह) क्षमा नहीं करेगा कि उसका कोई साझीदार ठहराया जाए और उसके अतिरिक्त सब कुछ क्षमा कर देगा, जिसके लिए वह चाहे । और जो अल्लाह का साझीदार ठहराए तो निस्सन्देह उसने बहुत बड़ा पाप गढ़ा है । 49।

क्या तूने उन लोगों पर ध्यान नहीं दिया, जो अपने आप को पवित्र ठहराते हैं । वास्तविकता यह है कि अल्लाह ही है जिसे चाहे पवित्र घोषित कर दे । और उन पर खजूर की गुठली की लकीर के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । 50।

देख वे अल्लाह पर किस प्रकार झूठ गढ़ते हैं और यह बात एक खुल्लम-खुल्ला

قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطْعَنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا
لَكَانَ حَيْرَالْهُمْ وَأَقْوَمْ^١ وَلَكِنْ لَعْنَهُمْ
اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَمَّا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا^٢

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَوْتُوا الرِّكْبَةَ أَمْنُوا بِمَا أَنْزَلْنَا
مَصْدِيقًا لِمَا مَعَكُمْ قَبْلِ أَنْ نُطْمِسَ
وَجْهًا فَنَرَدَهَا عَلَى آذْبَارِهَا أَوْ
لَعْنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ الشَّيْبِ^٣
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا^٤

إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْفُرُ أَنْ يُشْرِكَ بِهِ وَيَعْفُرُ مَا
دُونَ ذِلْكَ لِمَنْ يَشَاءُ^٥ وَمَنْ يُشْرِكُ بِاللَّهِ
فَقَدْ أَفْتَرَى إِنْمَاعَ عَنِيهِمَا^٦

أَلْمُرْقَرَأْيَ الَّذِينَ يُرَكِّبُونَ أَنْفُسَهُمْ^٧ بَلْ
اللَّهُ يُرْزِقُ مَنْ يَشَاءُ^٨ وَلَا يُظْلِمُ مُؤْمِنَ فَتَنِلَّا^٩

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ

पाप के रूप में पर्याप्त है । 51।

(रुक् 7/4)

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई जिनको पुस्तक में से एक भाग दिया गया था । वे मूर्तियों और शैतान पर ईमान लाते हैं और उन लोगों के सम्बन्ध में जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि ये लोग पंथ की दृष्टि से ईमान लाने वालों से अधिक सही हैं । 52।

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की है और जिस पर अल्लाह ला'नत करे उसके लिए तू कोई सहायक नहीं पाएगा । 53।

क्या उनका राजत्व में से कोई भाग है । तब तो वे लोगों को (कदापि उसमें से) खजूर की गुठली की लकीर के समान भी नहीं देंगे । 54।

क्या वे उस पर लोगों से ईर्ष्या करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया है । तो निस्सन्देह इब्राहीम के वंशज को भी हम पुस्तक और तत्त्वज्ञान प्रदान कर चुके हैं तथा हमने उन्हें एक बड़ा साम्राज्य प्रदान किया था । 55।

अतः उन्हीं में से वे थे जो उस पर ईमान लाए और उन्हीं में से वे भी थे जो उस (पर ईमान लाने) से रुक गए । और (ऐसे लोगों को) जलाने के लिए नर्क पर्याप्त है । 56।

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया है हम उन्हें

الْكَنْبَطُ وَكَفِي بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا^٦
الْحُرْثَرُ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا نِصْيَارًا
الْكِتَبِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْرِ وَالظَّاغُوتِ
وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هُوَ لَاءُ أَهْدِي
مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَيِّئًا^٧

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ
اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا^٨

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذَا لَا
يُؤْتُونَ النَّاسَ تَقْيِيرًا^٩

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا أَتَاهُمُ اللَّهُ
مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ أَتَيْنَا أَلَى إِبْرَاهِيمَ
الْكِتَبَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُّلْكًا عَظِيمًا^{١٠}

فِيهِمْ مَنْ: أَمَنَ بِهِ وَمَنْهُمْ مَنْ صَدَ
عَنْهُ وَكَفِي بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا^{١١}

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِاِيمَانِنَا سُوفَ نُصِّلِهِمْ

आग में प्रविष्ट करेंगे । जब कभी उनकी त्वचाएँ गल जाएँगी हम उन्हें बदल कर दूसरी त्वचाएँ देंगे ताकि वे अज्ञाब को चखें । निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है 157।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनको हम अवश्य ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे उनमें सदा सर्वदा रहने वाले हैं । उनमें उन के लिए पवित्र किए हुए जोड़े होंगे । तथा हम उन्हें धनी छावों में प्रविष्ट करेंगे 158।

निस्सन्देह अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम अमानतें उनके हक्कदारों के सुपुर्द किया करो और जब तुम लोगों के बीच शासन करो तो न्याय के साथ शासन करो । निस्सन्देह अल्लाह तुम्हें जो उपदेश देता है, सर्वोत्तम है । निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है 159।*

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो तथा अपने शासकों का भी । और यदि तुम किसी विषय में (शासकों) से मतभेद करो तो ऐसे

نَارًاٌ كُلُّمَا نِصْجَتْ جَلُوْدُهُمْ بَدْلُنَهُمْ
جَلُوْدًا غَيْرَهَا لَيْدُوْقُوا العَذَابَ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ⑩

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلْحَتِ
سَنَدْخَلُهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا
أَرْوَاحٌ مُّطَهَّرَةٌ وَنَذْخَلُهُمْ ظَلَّا
ظَلِيلًا ⑪

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ كُمْ أَنْ تَوْذُوْ وَالْأَمْنَتِ إِلَى
أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ
تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعْمًا يَعْلَمُكُمْ
بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بِصَيْرَ ⑫

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
رَسُولَ وَأُولَى الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ

* यहाँ अमानत से तात्पर्य निर्वाचन का अधिकार है जिसके परिणामस्वरूप किसी को शासन करने का अधिकार मिलता है । अतः वोट भी एक अमानत है जिसे उसी को देना चाहिए जो उसका योग्य हो । यही सच्चा लोकतन्त्र है और जब सत्ता मिले तो फिर न्याय से काम करना अनिवार्य है न कि पार्टीबाज़ी का ध्यान करना है । आजकल के झूठे लोकतन्त्रों में अपनी पार्टी के सदस्यों के साथ तो न्याय किया जाता है परन्तु विपक्षी पार्टी से न्याय नहीं किया जाता ।

विषय अल्लाह और रसूल की ओर लौटा दिया करो, यदि (वास्तव में) तुम अल्लाह पर और अन्तिम दिवस पर ईमान लाने वाले हो । यह अत्युत्तम (उपाय) है और परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छा है । 1601* (रुकूं ٤)

क्या तूने उन लोगों की दशा पर दृष्टि डाली है जो विचार करते हैं कि वे उस पर ईमान ले आए हैं जो तुझ पर उतारा गया तथा उस पर भी जो तुझ से पूर्व उतारा गया है । वे चाहते हैं कि शैतान से फैसले करवाएँ जबकि उन्हें आदेश दिया गया था कि वे उसका इनकार करें । और शैतान यह चाहता है कि वह उन्हें घोर पथभ्रष्टता में बहका दे । 161।

और जब उनसे कहा जाता है कि उसकी ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है और रसूल की ओर आओ तो मुनाफ़िकों को तु देखेगा कि वे तुझ से बहुत परे हट जाते हैं । 162।

फिर उन्हें क्या हो जाता है जो उनके हाथों ने आगे भेजा है, उसके कारण

شَاءَ عَذَابٌ فِي شَيْءٍ فَرُدْدُوْهُ إِلَى اللَّهِ
وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ لِذِلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا

أَكْفَرَ إِلَى الَّذِينَ يَرْجُمُونَ أَئْمَانَهُمْ أَمْنَوْا
بِمَا أُنْزَلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزَلَ مِنْ قَبْلِكُمْ
يُرِيدُونَ أَنْ يَعْرَكُوكُمْ إِلَى الصَّاغُوتِ
وَقَدْ أَمْرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ
الشَّيْطَنُ أَنْ يُضْلِلَهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أُنْزَلَ اللَّهُ
وَإِنَّ الرَّسُولَ رَأَيْتَ الْمُتَفَقِّينَ
يَصَدِّدُونَ عَنْكَ صَدُودًا

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ بِمَا

* इस आयत में ऊलिल अप्रिय मिनकुम (अपने शासकों) में मिनकुम शब्द का अनुवाद करते हुए कुछ विद्वान् यह अर्थ करते हैं कि मुसलमानों ही में से अपना शासक बनाओ और गैर मुस्लिम शासक के आज्ञापालन की आवश्यकता नहीं । यह एक अनर्थ विचार है जो सरसरी नज़र डालने से ही गलत प्रमाणित होता है । सब मुसलमान जो गैर-मुस्लिम राज्य में बसते हैं अथवा वहाँ हिजरत कर जाते हैं वे उन राज्यों के कानून के अधीन होते हैं । दूसरा यह कि जो मुसलमान शासक हो उससे किसी विषय में मतभेद का प्रश्न ही नहीं है, जिसको अल्लाह और रसूल की ओर लौटाया जाए । यहाँ अल्लाह और रसूल से स्पष्टतया कुरआन की शिक्षा अभीष्ट है । अतः कोई भी शासक हो, मुस्लिम हो अथवा गैर मुस्लिम, यदि कुरआन की मौलिक शिक्षा के विशद् कार्य करने का आदेश दे तो ऐसी अवस्था में कुरआन की बात मान्य होगी न कि शासक की ।

जब उन पर कोई विपत्ति पड़ती है, तब वे तेरे पास अल्लाह की कसमें खाते हुए आते हैं कि हमारा तो उपकार करने और सुधार करने के अतिरिक्त कोई उद्देश्य नहीं था । 163।

यह वे लोग हैं जिनके दिलों का हाल अल्लाह भली-भाँति जानता है । अतः उनसे विमुख हो जा और उन्हें उपदेश कर और उन्हें ऐसी बात कह जो उनकी अंतरात्माओं पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाली हो । 164।

और हमने हर एक रसूल को केवल इसलिए भेजा ताकि अल्लाह के आदेश से उसका आज्ञापालन किया जाए । और जब उन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया यदि उस समय वे तेरे पास उपस्थित होते और अल्लाह से क्षमा माँगते और रसूल भी उनके लिए क्षमा माँगता तो वे अवश्य अल्लाह को बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला पाते । 165।

नहीं ! तेरे रब्ब की सौगन्ध ! वे कभी ईमान नहीं ला सकते जब तक वे तुझे उन विषयों में न्यायकर्ता न बना लें जिनमें उनके बीच झगड़ा हुआ है । फिर तू जो भी निर्णय करे उसके सम्बन्ध में वे अपने मन में कोई तंगी न पाएँ और पूर्ण रूप से आज्ञापालन करें । 166।

और यदि हमने उन पर यह अनिवार्य कर दिया होता कि तुम अपनी जानों की हत्या करो अथवा अपने घरों से निकल

قَدَّمْتُ أَيْدِيهِمْ نَحْنُ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ^٤
بِإِنَّهُ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا^٥

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ^٦
فَأَغْرِضُ عَنْهُمْ وَعِظَمُهُ وَقُلْ لَهُمْ فِي
أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بِلِيْعًا^٧

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيَطَاعَ
بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَذْلَلُهُمْ أَنفُسُهُمْ
جَاءُوكَ فَاسْتَغْفِرُوا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرَ
لَهُمُ الرَّسُولُ لَوْجَدُوا اللَّهَ تَوَابًا رَحِيمًا^٩

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ
قِيمَاتِ شَجَرٍ يَهُمْ نَحْنُ لَا يَحْدُثُونَ فِي أَنفُسِهِمْ
حَرَجٌ عَلَىٰ مَا قَضَيْتَ وَيَسِّرْ مَا وَسِّلْيَمًا^{١٠}

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا
أَنفُسَكُمْ أَوْ اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا

खड़े हो, तो उन में से कुछ एक के सिवा कोई ऐसा न करता । और यदि वे वही करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उनके लिए बहुत बेहतर होता तथा उनकी स्थिरता के लिए एक मजबूत उपाय सिद्ध होता । 167।

और ऐसी दशा में हम उन्हें अपनी ओर से बड़ा प्रतिफल अवश्य प्रदान करते । 168। और हम अवश्य उन्हें सीधे मार्ग की ओर हिदायत देते । 169।

और जो भी अल्लाह का और इस रसूल का आज्ञापालन करे तो यही वे लोग हैं, जो उन लोगों के साथ होंगे जिन को अल्लाह ने पुरस्कृत किया है । (अर्थात्) नवियों में से, सिद्दीकों (सत्यनिष्ठों) में से, शहीदों में से और सालेहों (सदाचारियों) में से । और ये बहुत ही अच्छे साथी हैं । 170।*

فَعَلُوْهُ اَلَا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْا نَهَمُ
فَعَلُوْمَا يُؤْعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
وَأَشَدَّ شَفَاعَاتًا ﴿١٧﴾

وَإِذَا لَآتَيْهِمْ مِّنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٨﴾
وَلَهُمْ بِئْمُ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٩﴾

وَمَنْ يَطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ
الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيِّنَ
وَالصِّدِّيقِينَ وَالشَّهَدَاءِ وَالصَّلِحِينَ
وَحَسْنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا ﴿٢٠﴾

* इस आयत में ध्यान देने योग्य बहुत से विषय हैं । पहला यह कि अर्सूल से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं अर्थात् यह विशेष रसूल । दूसरा यह कि यदि तुम इस रसूल का आज्ञापालन करोगे तो उन लोगों में से हो जाओगे जिन में नवी भी हैं और सिद्दीक भी और शहीद भी और सालेह भी हैं । इसका अर्थ यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आनुगत्य में नवी भी आ सकता है, अर्थात् वह जो इस रसूल का आज्ञापालन करने वाला हो । इस स्थान पर अरबी शब्द म अ का कुछ विद्वानों की ओर से हठधर्मिता के साथ यह अर्थ किया जाता है कि वे उनके साथ होंगे उन में से नहीं होंगे । इसके समर्थन में वे कहते हैं कि आयतांश हसु न उलाइ क रफीका (वे अच्छे साथी हैं) कहा गया है । अर्थात् वे नवियों के साथ होंगे, स्वयं नवी नहीं होंगे । इस आयत का यह अनुवाद करना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घोर अपमान है । क्योंकि इस प्रकार इस आयत का अर्थ यूँ होगा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करने वाले नवियों के साथ होंगे परन्तु स्वयं नवी नहीं होंगे । वे सिद्दीकों के साथ होंगे परन्तु स्वयं शहीद नहीं होंगे । वे सालेहों के साथ होंगे परन्तु स्वयं शहीद नहीं होंगे । कुरआन मजीद की कई आयतों में म अ शब्द मिन (में से) के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है उदाहरणार्थ देखें सूरः आले इम्रान : 194, सूरः अन निसा 147, सूरः अल हिज़ : 32 ।→

यह अल्लाह की विशेष दया है और अल्लाह सर्वज्ञ होने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है । 711 (रुकू - ६)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने बचाव का सामान रखा करो । फिर चाहे छोटे-छोटे गिरोहों में निकलो अथवा बड़े समूह के रूप में । 721

और निससन्देह तुम में ऐसे भी हैं जो अवश्य देर करेंगे और जब तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े तो ऐसा व्यक्ति कहेगा कि अल्लाह ने मुझ पर अनुग्रह किया कि मैं उनके साथ (यह विपत्ति) देखने वाला नहीं बना । 731

मानो तुम्हारे और उसके बीच कोई प्रेम का सम्बन्ध ही नहीं और यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से कोई कृपा प्राप्त हो तो वह अवश्य इस प्रकार कहेगा कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करता । 741

अतः अल्लाह के मार्ग में वे लोग युद्ध करें जो परलोक के बदले सांसारिक जीवन (को) बेच डालते हैं । और जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करे, फिर (उसकी) हत्या हो जाए अथवा वह विजयी हो जाए तो (प्रत्येक दशा में) हम अवश्य उसे बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे । 751

←इसके अतिरिक्त यहाँ आयतांश मअल्लजी न अन्अमल्लाहु अलैहिम के पश्चात मिन्नदिव्यीन कहा गया है । यह मिन बयानिया कहलाता है । तात्पर्य यह है कि 'उनके साथ' अर्थात् 'उन में से' ।

ذِلِّكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ عَلِيِّمًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا حَذِيرَةٌ فَاقْتُرُوا ثُبَاتٍ أَوْ اتْفَرُوا جَمِيعًا ⑦

وَإِنْ مِنْكُمْ لَئِنْ تَبِطَّئَ كُلَّ بَعْدٍ فَإِنْ أَصَابَكُمْ مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَى إِذْلَمِ رَأْسَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ⑧

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ يَقُولُنَّ كَانَ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يُلِيهِنِّي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَقُولُ فَوْزًا عَظِيمًا ⑨

فَلِيَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَسْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلُ أَوْ يَغْلِبُ فَسُوفَ تُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ⑩

और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के मार्ग में ऐसे पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए युद्ध नहीं करते जिन्हें दुर्बल बना दिया गया था (और) जो हुआ करते हैं कि हे हमारे रब्ब ! तू हमें इस बस्ती से निकाल जिसके रहने वाले अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपनी ओर से कोई संरक्षक बना दे तथा हमारे लिए अपनी ओर से कोई सहायक नियुक्त कर दे । 176। वे लोग जो ईमान लाए हैं वे अल्लाह के रास्ते में युद्ध करते हैं और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे शैतान के रास्ते में युद्ध करते हैं । अतः तुम शैतान के मित्रों से युद्ध करो । शैतान की योजना अवश्य दुर्बल होती है । 177।

(रुक् 10)

क्या तूने उन लोगों की ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्हें कहा गया था कि अपने हाथ रोक लो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो । फिर जब युद्ध करना उन पर अनिवार्य किया गया तो सहसा उनमें से एक गिरोह लोगों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरा जाता है या उससे भी बढ़ कर और उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! तूने क्यों हम पर युद्ध (करना) अनिवार्य कर दिया ? क्यों न तूने हमें थोड़े समय के लिए ढील दी ? तू कह दे कि सांसारिक लाभ योड़ा है और परलोक उसके लिए अत्युत्तम है जिसने तक़वा धारण किया । और तुम पर ख़ज़ूर की गुठली

وَمَا لَكُمْ لَا تَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوُلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرُجْنَا
مِنْ هَذِهِ الْقُرْيَةِ الطَّالِمِ أَهْلَهَا
وَاجْعَلْنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْنَا
مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا
الَّذِينَ أَمْسَا يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ
الصَّاغُوتِ فَقَاتَلُوا أُولَئِكَ الشَّيْطَنِ إِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطَنِ كَانَ ضَعِيفًا

الْعَرَرَ إِلَى الَّذِينَ قَيَّلَ لَهُمْ كُفُّوًا أَيْدِيهِمْ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوَةَ فَلَمَّا كُتِبَ
عَلَيْهِمْ الْقِسْطَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشُونَ
النَّاسَ كَحْشِيَّةَ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ حَشِيشَةً
وَقَالُوا إِنَّا لِمَا كُتِبَتْ عَلَيْنَا الْقِسْطَالُ لَوْلَا
آخْرَتْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ
الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى

की लकीर के समान भी अत्याचार
नहीं किया जाएगा । 78।

तुम जहाँ कहीं भी हो मृत्यु तुम्हें पकड़
लेगी, चाहे तुम अत्यन्त सुदृढ़ बुज्जों में ही
हो । और यदि उन्हें कोई भलाई पहुँचती
है तो वे कहते हैं कि यह अल्लाह की
ओर से है और यदि उन्हें कोई बुराई
पहुँचती है तो कहते हैं (हे मुहम्मद !)
यह तेरी ओर से है । तू कह दे कि सब
कुछ अल्लाह ही की ओर से होता है ।
अतः उन लोगों को क्या हो गया है कि
कोई बात समझने के निकट ही नहीं
आते । 79।

जो भलाई तुझे पहुँचे तो वह अल्लाह
ही की ओर से होती है और जो
हानिकारक बात तुझे पहुँचे तो वह
तेरी अपनी ओर से होती है । और
हमने तुझे समस्त मनुष्यों के लिए रसूल
बना कर भेजा है और अल्लाह गवाह
के रूप में पर्याप्त है । 80।

जो इस रसूल का आज्ञापालन करे तो
उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया
और जो फिर जाए तो हमने तूझे उन पर
संरक्षक बना कर नहीं भेजा । 81।

और वे (केवल मुँह से) आज्ञापालन का
दम भरते हैं । फिर जब वे तुझ से अलग
होते हैं तो उनमें से एक गिरोह ऐसी
बातें करते हुए रात गुजारता है, जो
तेरी कहीं हुई बात से भिन्न होती है
और अल्लाह उनकी रात की बातों को
लिपिबद्ध कर लेता है । अतः उन से

وَلَا تُظْلِمُونَ فَتَيْلًا^⑦

أَئِنْ مَا تَكُونُوا يَدِكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ
كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مَّسَيَّدَةٌ وَإِنْ تُصْبِهُمْ
حَسَنَةً يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ
تُصْبِهُمْ سَيِّئَةً يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ
فَلْ كُلُّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَا لَهُؤُلَاءِ الْقَوْمُ
لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا^⑧

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فِيمَنِ اللَّهُ وَمَا
أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فِيمَنِ نَفْسِكَ
وَأَرْسَلْنَاكَ لِتَأْمِنَ رَسُولًا وَكَفِيلًا
شَهِيدًا^⑨

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ
تَوَلَّ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا^⑩

وَيَقُولُونَ طَاغِيٌّ فَإِذَا أَبْرَزُوا مِنْ
عِنْدِكَ بَيْتَ طَايِفَةٍ مِّنْهُمْ عَيْرَ
الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يُكْتَبُ مَا يَبْيَثُونَ
فَأَغْرِضُ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ^{۱۱}

विमुख हो जा और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है । 82।

अतः क्या वे कुरआन पर चिंतन-मनन नहीं करते ? हालाँकि यदि वह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो (वे) अवश्य उसमें बहुत विभेद पाते । 83।*

और जब भी उनके पास कोई शांति अथवा भय की बात आए तो वे उसे फैला देते हैं । और यदि वे उसे (फैलाने के स्थान पर) रसूल की ओर अथवा अपने में से किसी अधिकारी के सामने प्रस्तुत कर देते तो उनमें से जो उसका निष्कर्ष निकालते वे अवश्य उस (की वास्तविकता) को जान लेते । और यदि तुम पर अल्लाह की दया और उसकी कृपा न होती तो तुम, कुछ एक के सिवा अवश्य शैतान का अनुसरण करने लगते । 84।

अतः अल्लाह के मार्ग में युद्ध कर । तुझ पर तेरी अपनी जान के सिवा किसी और का बोझ नहीं डाला जाएगा और मोमिनों को भी (युद्ध करने की) प्रेरणा दे । असम्भव नहीं कि अल्लाह उन लोगों के युद्ध को रोक दे जिन्होंने इनकार किया तथा अल्लाह युद्ध करने में सबसे

وَكَفِي بِاللَّهِ وَكِيدْلًا^①

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۖ وَلَوْ كَانَ
مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ
اخْتِلَافًا كَثِيرًا^②

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنْ الْأَمْنِ أَوْ
الْخُوفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى
الرَّسُولِ وَاللَّهُ أَوْلَى الْأَمْرِ مِنْهُمْ
لَعِلْمَةُ الَّذِينَ يَسْتَنْطِطُونَهُ مِنْهُمْ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً
لَا تَبْعَثُنَّ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَيْلَلًا^③

فَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تَكُلُّ إِلَّا
نَفْسَكَ وَحْرِضَ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى
اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بِأَسَدَ الَّذِينَ كَفَرُوا^۴

* इस आयत में कुरआन की सत्यता की यह दर्ताल दी गई है कि इसकी आयतों में कोई विभेद नहीं पाया जाता हालाँकि यह तेर्वेस वर्षों तक एक निरक्षर नबी पर अवतरित होता रहा है । तेर्वेस वर्ष की अवधि में कितनी ही बातें अधिकतर ज्यादा पढ़े लिखे व्यक्तियों को भी भूल जाती हैं, तो एक निरक्षर नबी के लिए कैसे संभव था कि वह अपनी ओर से पुस्तक बनाता और उसमें कोई विभेद न होता ।

अधिक कठोर और शिक्षाप्रद दंड देने में अधिक कठोर है। 185।

जो कोई अच्छी सिफारिश करे उसमें से उसका भी भाग होगा और जो कोई बुरी सिफारिश करे उसका कुछ बोझ उसके लिए भी होगा । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर बहुत सामर्थ्य रखने वाला है। 186।

और यदि तुम्हें कोई शुभ-कामना की भेट दी जाए तो उससे बढ़िया दिया करो अथवा वही लौटा दो । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु का हिसाब लेने वाला है। 187।*

अल्लाह ! उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह अवश्य तुम्हें क्यामत के दिन तक एकत्र करता चला जाएगा, जिसमें कोई संदेह नहीं । और वात में अल्लाह से अधिक कौन सच्चा हो सकता है। 188। (रुकू 11)

अतः तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिकों के बारे में दो गिरोह में बटे हुए हो, हालाँकि अल्लाह ने उसके कारण जो उन्होंने अर्जित किया उन्हें औंधा कर दिया है । क्या तुम चाहते हो कि उसे हिदायत दो जिसे अल्लाह ने पश्चभृष्ट घोषित कर दिया है और जिसे अल्लाह

وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ⑩

مَنْ يُشَفِّعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يُكَنْ لَهُ نَصِيبٌ
مِنْهَا وَمَنْ يُشَفِّعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يُكَنْ لَهُ
كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
مُّقِيْتًا ⑪

وَإِذَا حَيَّشَرْ بِتَحْيَيَةٍ فَحَيُوا بِأَحْسَنِ
مِنْهَا أَوْ رَدُّوهَا ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ⑫

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَبِّ فِيهِ ۖ وَمَنْ أَصْدَقُ
مِنَ اللَّهِ وَهُدِيَّا ۖ ⑬

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنْفَقِينَ فَتَرَيْنِي وَاللَّهُ
أَكْسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۖ أَتَرِيدُنَّ أَنْ
تَهْدُوا مَمْنَ أَصْلَلَ اللَّهُ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ

* इस आयत में यह भी बताया गया है कि जब भेट दी जाए तो कम से कम उतना ही भेट देने वाले को वापस किया जाए अथवा उससे बेहतर दिया जाए । इससे तात्पर्य यह नहीं कि वही भेट लौटा दो उसके बदले अवश्य ही कोई उत्तम वस्तु दो । बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हमें ज़ज़ाकु मुल्लाहु खैरन् कहने की शिक्षा दी है, यह सर्वोत्तम भेट है । परन्तु कुछ लोग इसे अपने लोभ को छिपाने का साधन भी बना लेते हैं । वे भेट स्वीकार तो करते हैं परन्तु भेट देते नहीं और ज़ज़ाकु मुल्लाह कहने को ही पर्याप्त समझते हैं ।

पथभ्रष्ट घोषित कर दे तो उसके लिए कदापि तू कोई रास्ता नहीं पायेगा । 89। वे चाहते हैं कि काश तुम भी उसी प्रकार इनकार करो जिस प्रकार उन्होंने इनकार किया । फलतः तुम एक जैसे हो जाओ । अतः उनमें से कोई मित्र न बनाया करो यहाँ तक कि वे अल्लाह के मार्ग में हिजरत करें । फिर यदि वे पीठ दिखा जाएँ तो उनको पकड़ो और उनकी हत्या करो जहाँ कहीं भी तुम उनको पाओ । और उनमें से किसी को मित्र अथवा सहायक न बनाओ । 90।

सिवाय उन लोगों के जो ऐसी जाति से सम्बन्ध रखते हैं जिनके और तुम्हारे बीच समझौते हुए हैं । अथवा वे इस हालत में तुम्हारे पास आएँ कि उनके मन इस बात पर तंगी अनुभव करते हों कि वे तुम से लड़ें अथवा स्वयं अपनी ही जाति से लड़ें । और यदि अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर हावी कर देता फिर वे अवश्य तुम से युद्ध करते । अतः यदि वे तुमसे अलग रहें, फिर तुमसे युद्ध न करें और तुम्हें शांति का संदेश दें तो फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके विरुद्ध कोई औचित्य प्रदान नहीं किया । 91।

तुम कुछ दूसरे लोग ऐसे भी पाओगे जो चाहते हैं कि वे तुम से भी शांति में रहें और अपनी जाति से भी शांति में रहें । जब कभी भी उनको उपद्रव की ओर ले जाया जाए तो वे उसमें औधे मुँह गिराये जाते हैं । अतः यदि वे तुम्हारा पीछा न

फ्लَنْ تَجِدَلَهُ سَيِّئَلًا^④

وَذُو الْوَتْكُفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا
فَتَكُونُونَ سَوَاءٌ فَلَا تَتَحْذِفُهُمْ
أُولَيَاءَ حَتَّىٰ يَهَا جَرِفَا فِي سَيِّئِ اللَّهِ
فَإِنْ تَوَلُّوْا فَخَذُّهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ
وَجَذَّمُوهُمْ وَلَا تَتَحْذِفُهُمْ مِنْهُمْ
وَلِيَأَوْلَانِصِيرًا^۶

إِلَّا الَّذِينَ يَصْلُوْنَ إِلَى قُوَّةٍ يَتَسَعَكُمْ
وَبَيْتَهُمْ مِيَّاتُكُمْ أُوْجَاءُكُمْ حَصَرَتْ
صَدْفُرَهُمْ أَنْ يَقَاتِلُوْكُمْ أَوْ يَقَاتِلُوْا
قُوَّمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَطَهُمْ
عَلَيْكُمْ فَلَقْتَلُوْكُمْ فَإِنْ اغْتَرَلُوْكُمْ
فَلَمْ يَقَاتِلُوْكُمْ وَأَنْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ
فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَيِّئَلًا^۷

سَتَجِدُونَ أَخْرِيْنَ يَرِيدُونَ أَنْ
يَأْمُنُوكُمْ وَيَأْمُنُوا قُوَّمَهُمْ لَكُمْ مَا دَرَدَّوا
إِلَى الْفِتْنَةِ أَرْكَسُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ
يَعْتَرِلُوكُمْ وَيَلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ

छोड़े और तुम्हें शांति का संदेश न दें और अपने हाथ न रोकें तो उनको पकड़ो और उनकी हत्या करो, जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ। और यही वे (तुम्हारे शत्रु) हैं जिनके विरुद्ध हमने तुम्हें खुला-खुला तर्क प्रदान किया है 1921 (रुकू ۱۲)

और किसी मोमिन के लिए उचित नहीं कि किसी मोमिन की हत्या करे सिवाय इसके कि गलती से ऐसा हो जाये। और जो कोई गलती से किसी मोमिन की हत्या कर बैठे तो एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना है और (निर्धारित) दिव्यत (मुवावज़ा) उसके घर वालों को अदा करनी होगी, सिवाय इसके कि वे क्षमा कर दें और यदि वह (जिसकी की हत्या हुई हो) तुम्हारी शत्रु जाति से सम्बन्ध रखता हो और मोमिन हो तब (भी) एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना है। और यदि वह ऐसी जाति से सम्बन्ध रखने वाला हो कि तुम्हारे और उनके बीच समझौते हुए हों तो उसके घर वालों को (निर्धारित) दिव्यत देना और एक मोमिन दास को स्वतन्त्र करना भी अनिवार्य है। और जिसको इसका सामर्थ्य न हो तो (उसे) दो महीने लगातार रोज़े रखने होंगे। अल्लाह की ओर से यह प्रायश्चित्त स्वरूप (अनिवार्य किया गया) है। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है 1931।

وَيَكْفُوا أَيْدِيهِمْ فَخَذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ
حِينَ تُقْتَمُوهُمْ ۝ وَأُولَئِكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا
خَطًّا ۝ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطًّا فَتَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسْلَمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ
إِلَّا أَنْ يَصْنَعُوا ۝ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ
عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ
مُّؤْمِنَةٍ ۝ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ يَنْكِمُ
وَبَيْتَهُمْ مُّبِينًا فَدِيَةٌ مُّسْلَمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ
وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ
فِصَامًا شَهْرَيْنِ مُّتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ
اللَّهِ ۝ وَكَانَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا حَكِيمًا ۝

और जो जान-बूझ कर किसी मोमिन की हत्या करे तो उसका प्रतिफल नरक है । वह उसमें बहुत लम्बा समय रहने वाला है और अल्लाह उस पर क्रोधित हुआ और उस पर लान्त की, तथा उसने उसके लिए बहुत बड़ा अज्ञाब तैयार कर रखा है । 194।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम अल्लाह के मार्ग में यात्रा कर रहे हो तो भली-भाँति छान बीन कर लिया करो और जो तुम पर सलाम भेजे उससे यह न कहा करो कि तू मोमिन नहीं है । तुम सांसारिक जीवन के धन चाहते हो अल्लाह के पास ग्रनीत के बहुत सामान हैं । इससे पूर्व तुम इसी प्रकार हुआ करते थे फिर अल्लाह ने तुम पर दया की । अतः भली-भाँति छान बीन कर लिया करो । निस्सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे बहुत अवगत है । 195।*

मोमिनों में से, बिना किसी रोग के घर बैठे रहने वाले और (दूसरे) अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपनी जानों के साथ जिहाद करने वाले समान नहीं हो सकते । अल्लाह ने अपने धन और अपनी जानों के द्वारा जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर एक विशेष पद प्रदान किया है । जबकि प्रत्येक से अल्लाह ने

وَمَنْ يَقْتُلُ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءُهُ
جَهَنَّمُ خَلِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ
وَلَعْنَةُ وَأَعْذَلَهُ عَذَابًا عَنِّيْنِمَا ④

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا صَرَبْتُمُ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۝ تَبَغُونَ
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ فَعِنْدَ اللَّهِ مَعَانِيمَ
كَثِيرَةٌ ۝ كَذَلِكَ كَثُنُمٌ مِّنْ قَبْلِ فَمَنْ
اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَيِيرًا ⑤

لَا يَسْتَوِي الْقَعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولَئِي الصَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فَضَلَّ
اللَّهُ أَمْجَهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ
عَلَى الْقُعَدِينَ دَرَجَةٌ وَكَلَّا وَعَذَالَهُ

* इस आयत से स्पष्ट है कि प्रत्येक राह चलते व्यक्ति को शत्रु समझ कर उस पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं है । किसी को पहचानने के लिए यहीं पर्याप्त है कि वह तुम्हें सलाम कहे । आश्चर्य है कि इस बिंगड़े हुए युग में बिंगड़े हुए उल्टेमा सलाम कहने के फलस्वरूप अत्याचार करते हैं ।

भलाई का ही वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर महान प्रतिफल स्वरूप एक श्रेष्ठता प्रदान की है । 96।

(यह) उसकी ओर से दर्जे और पुरस्कार तथा कृपा स्वरूप (है)। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है । 97। (रुक् 13/10)

निस्सन्देह वे लोग जिनको फरिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे अपनी जानों पर अत्याचार करने वाले हैं वे (उनसे) कहते हैं कि तुम किस अवस्था में रहे ? वे (उत्तर में) कहते हैं, हम तो स्वदेश में बहुत कमज़ोर बना दिए गए थे। वे (फरिश्ते) कहेंगे कि क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते ? अतः यही लोग हैं जिनका ठिकाना नरक है और वह बहुत बुरा ठिकाना है । 98।

सिवाय उन पुरुषों और स्त्रियों तथा बच्चों के जिन्हें कमज़ोर बना दिया गया था, जिनको कोई साधन उपलब्ध नहीं था और न ही वे (निकलने) की कोई राह पाते थे । 99।

अतः यही वे लोग हैं, सम्भव है कि अल्लाह उन की मार्जना करे और अल्लाह बहुत मार्जना करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 100।

और जो अल्लाह के मार्ग में हिजरत करे तो वह धरती में (शत्रु को) असफल करने के बहुत से अवसर और खुशहाली

الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجْهِدِينَ عَلَىٰ
الْقَعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ⑪

دَرَجَتِهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَّحِيمًا ⑫

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّهُ الْمَلِكَةُ طَالِبِي
أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فَيُمْكَنُ ۖ كَنْتُمْ قَاتِلُوا أَكْثَارًا
مَسْتَصْعِفِينَ فِي الْأَرْضِ قَاتِلُوا أَلْمَرْ
تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتَهَا جَرُوا فِيهَا
فَأُولَئِكَ مَا وَبَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءُتْ
مَصِيرًا ⑬

إِلَّا الْمَسْتَصْعِفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوُلْدَانِ لَا يَسْتَطِعُونَ حِيلَةً وَلَا
يَهْسَدُونَ سَيِّلًا ⑭

فَأُولَئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوا أَغْفُورًا ⑮

وَمَنْ يَهْاجِرْ فِي سَيِّلِ اللَّهِ يَجِدُ فِي الْأَرْضِ
مَرْغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ

पाएगा । और जो अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की ओर हिजरत करते हुए निकलता है फिर (इस अवस्था में) उस पर मृत्यु आ जाती है तो उसका प्रतिफल अल्लाह पर अनिवार्य हो गया है। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 101। (रुक् 14)

और जब तुम धरती में (जिहाद करते हुए) यात्रा पर निकलो तो तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम नमाज़ क़सर (छोटी) कर लिया करो, यदि तुम्हें भय हो कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया है तुम्हें परीक्षा में डालेंगे । निस्सन्देह काफिर तुम्हारे खुले-खुले शत्रु हैं । 102।

और जब तू भी उनमें हो और तू उन्हें नमाज़ पढ़ाए तो उनमें से एक गिरोह (नमाज़ के लिए) तेरे साथ खड़ा हो जाए। और चाहिए कि वे (जिहाद करने वाले) अपने शस्त्र साथ रखें । अतः जब वे सजदः कर लें तो वे तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरा गिरोह आ जाए जिन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर वे तेरे साथ नमाज़ पढ़ें और वे अपने बचाव के सामान और शस्त्र साथ रखें । जिन लोगों ने इनकार किया है वे चाहते हैं कि काश तुम अपने हथियारों और सामान से असावधान हो जाओ तो वे सहसा तुम पर टूट पड़ें और यदि तुम्हें वर्षा के कारण कोई कठिनाई हो अथवा तुम बीमार हो, तुम पर कोई पाप नहीं कि अपने शस्त्र

بِيَتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ
يُدْرِكُهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا

وَإِذَا أَضَرَّتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جَنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الْصَّلَاةِ
إِنْ خَفَشْتُمْ أَنْ يَقْتَنِسْكُمُ الظَّالِمُونَ كَفَرُوا
إِنَّ الْكُفَّارِينَ كَانُوا لَكُمْ عَذَّابًا مُّبِينًا

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَاقْمَتْ لَهُمُ الصَّلَاةَ
فَلْتَقْسِمْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلَيُكُوِّنُوا مِنْ
قَرَآءِكُمْ وَلَتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَى لَهُ
يَصْلُوَا فَلَيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَهُمْ وَذَلِكَ الظَّالِمُونَ
لَوْ تَعْفَلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتَعَتُكُمْ
فَيَمْلِئُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا
جَنَاحٌ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذْى قُنْ

रख दो और अपने बचाव का साधन (हर हाल में) धारण किए रहो । निस्सन्देह अल्लाह ने काफिरों के लिए घोर अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है ॥103॥

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो, खड़े होने की अवस्था में भी और बैठे हुए भी और अपने पहलुओं पर भी । फिर जब तुम निश्चिंत हो जाओ तो नमाज़ को क़ायम करो । निस्सन्देह नमाज़ मोमिनों पर एक निर्धारित समय की पाबन्दी के साथ अनिवार्य है ॥104॥

और (विरोधी) लोगों का पीछा करने में कमज़ोरी न दिखाओ । यदि तुम कष्ट उठा रहे हो तो तुम्हारी भाँति निश्चित रूप से वे भी कष्ट उठा रहे हैं । और तुम अल्लाह से उसकी आशा रखते हो जिसकी वे आशा नहीं रखते । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥105॥ (रुक् 15/12)

निस्सन्देह हमने तेरी ओर पुस्तक को सत्य के साथ अवतरित किया है ताकि तू लोगों के बीच उसके अनुसार फैसला करे जो अल्लाह ने तुझे समझाया है । और ख्यानत करने वालों के पक्ष में बहस करने वाला न बन ॥106॥

और अल्लाह से क्षमा याचना कर । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है ॥107॥

مَطَرِّأً وَكُنْتُمْ مَرْضَى أَنْ تَضْعُوا
أَسْلِحَتُكُمْ وَخُدُودًا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ
أَعْدَى لِلْكُفَّارِينَ عَذَابًا مُّمِيَّزًا

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيمًا
وَقُعُودًا وَعَلَى جُوبِكُمْ فَإِذَا
أَطْمَأْنَتُمْ فَاقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ
كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مُّوْقُوتًا

وَلَا تَهْنُوْا فِي ابْيَاءِ الْقَوْمِ إِنْ تَكُونُوا
تَائِمُونَ فَإِنَّهُمْ يَالْمُؤْمِنِينَ كَمَاتَ الْمُؤْمِنُونَ
وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ
اللَّهُ عَلَيْهِمَا حَكِيمًا

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ
بَيْنَ النَّاسِ إِنَّمَا أَرْسَلْنَاكَ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ
لِلْحَاجِينَ حَسِينًا

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا
رَّحِيمًا

और उन लोगों की ओर से बहस न कर जो अपने आप से ख्यानत करते हैं । निस्सन्देह अल्लाह अत्यधिक ख्यानत करने वाले महापापी को पसन्द नहीं करता ॥108॥

वे लोगों से तो छिप जाते हैं परन्तु अल्लाह से नहीं छिप सकते और वह उनके साथ होता है जब वे ऐसी बातें करते हुए रात गुज़ारते हैं जिसे वह पसन्द नहीं करता । और जो वे करते हैं अल्लाह उसे धेरे हुए है ॥109॥

देखो, तुम वे लोग हो कि तुम सांसारिक जीवन में तो उनके पक्ष में बहसें करते हो । परन्तु क्रयामत के दिन उनके पक्ष में अल्लाह से कौन बहस करेगा अथवा कौन है जो उनका समर्थक होगा ? ॥110॥

और जो भी कोई कुकर्म करे अथवा अपनी जान पर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करे, वह अल्लाह को बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला पाएगा ॥111॥

और जो कोई पाप कमाता है तो निस्सन्देह वह उसे अपने ही विरुद्ध कमाता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥112॥

और जो कोई अपराध कर वैठे अथवा पाप करे, फिर किसी निरपराध पर उसका आरोप लगा दे तो उसने बहुत

وَلَا تُجَادِلُ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ^٤
إِنَّ اللَّهَ لَا يِحِبُّ مَنْ كَانَ حَوَّاً نَّاسِيْمًا^٥

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ
مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّنُونَ مَا لَا
يُرْضِي مِنَ الْقُولِ^٦ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا
يَعْمَلُونَ مُحِيطًا^٧

هَانِئِمْ هَوْلَاءِ جَدَلُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الَّذِيْنَا^٨ فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا^٩

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ
يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا^{١٠}

وَمَنْ يَكْسِبْ اثْمًا فَإِنَّمَا يُكَسِّبُهُ عَلَى
نَفْسِهِ^{١١} وَكَانَ اللَّهُ عَلِيْمًا حَكِيمًا

وَمَنْ يَكْسِبْ حَطِيشَةً أَوْ اثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ

बड़ा आरोप और खुल्लम-खुल्ला पाप
(का बोझ) उठा लिया ॥113।

(रुक् १६)

और यदि तुझ पर अल्लाह की दया
और उसकी कृपा न होती तो उनमें
से एक गिरोह ने तो ठान लिया था
कि वे अवश्य तुझे पथभ्रष्ट कर देंगे ।
परन्तु वे अपने अतिरिक्त किसी को
पथभ्रष्ट नहीं कर सकते । वे तुझे
कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे ।
और अल्लाह ने तुझ पर पुस्तक और
तत्त्वज्ञान उतारे हैं और तुझे वह कुछ
सिखाया है जो तू नहीं जानता था
और तुझ पर अल्लाह की दया बहुत
बड़ी है ॥114।

उनके अधिकतर गुप्त मन्त्रणाओं में कोई
भलाई की बात नहीं । सिवाय इसके
कि कोई दान अथवा भलाई की बात
अथवा लोगों के बीच सुधार की सीख
दे । और जो भी अल्लाह की प्रसन्नता
प्राप्त करने की इच्छा से ऐसा करता है
तो अवश्य हम उसे एक बड़ा प्रतिफल
प्रदान करेंगे ॥115।

और जो रसूल का विरोध करे इसके
बावजूद कि हिदायत उस पर स्पष्ट हो
चुकी हो और मोमिनों के मार्ग के
अतिरिक्त कोई और मार्ग अपनाए तो
हम उसे उसी ओर फेर देंगे जिस ओर
वह मुड़ गया है और हम उसे नरक में
प्रविष्ट करेंगे । और वह बहुत बुरा
ठिकाना है ॥116। (रुक् १७)

بِرِّيَّا فَقَدْ أَحْمَلَ بِهَتَّانًا وَإِنَّمَا مُبْيَنًا ۝

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَةً لَهُمْ
طَالِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضْلُوكُ ۝ وَمَا
يُضْلُونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا يَصْرُونَ
مِنْ شَيْءٍ ۝ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةُ وَعِلْمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ
وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

لَا خَيْرٌ فِي كَثِيرٍ مِنْ نَجْوَيْهِمْ إِلَّا مَنْ
أَمْرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ اصْلَاحٍ
بَيْنَ النَّاسِ ۝ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسُوفَ تُؤْتَيْهِ أَجْرًا غَنِيمَ ۝

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ
الْهَدَى وَيَتَّبِعْ عَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ
نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّ ۝ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ
مَصِيرًا ۝

निस्सन्देह अल्लाह क्षमा नहीं करता कि इसका साझीदार ठहराया जाए और जो इसके अतिरिक्त (पाप) है जिसके लिए चाहे क्षमा कर देता है। और जो अल्लाह का साझीदार ठहराए तो निस्सन्देह वह घोर पथभ्रष्टा में बहक गया ॥117॥

वे उसको छोड़कर स्त्रियों (अर्थात् मूर्तियों) के सिवा किसी को नहीं पुकारते और वे उदंडी शैतान के सिवा (किसी को) नहीं पुकारते ॥118॥

अल्लाह ने उस पर ला'नत की जबकि उसने कहा कि मैं तेरे भक्तों में से अवश्य एक निर्धारित भाग को ले लूँगा ॥119॥

और मैं अवश्य उन को पथभ्रष्ट कहूँगा और उन्हें अवश्य आशाएँ दिलाऊँगा और ज़रूर उन्हें आदेश दूँगा तो वे अवश्य पशुओं के कानों पर आधात लगाएँगे और मैं ज़रूर उन्हें आदेश दूँगा तो वे अवश्य अल्लाह की सृष्टि में परिवर्तन कर देंगे। और जिसने भी अल्लाह को छोड़ कर शैतान को मित्र बनाया तो निस्सन्देह उसने खुला-खुला घाटा उठाया ॥120॥*

* इस आयत में एक महान भविष्यवाणी की गई है कि एक समय आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) का आविष्कार होगा अर्थात् वैज्ञानिक अल्लाह की सृष्टि को परिवर्तन करने की चेष्टा करेंगे, जैसा कि आजकल हो रहा है। चूँकि यह शैतानी आदेश से होगा अतः उन को खुला-खुला घाटा उठाने वाला कहा गया है और उन को नरक का दंड मिलेगा। विभिन्न आविष्कारों के संबंध में केवल यही एक भविष्यवाणी है जो अपने साथ भयानक चेतावनी भी रखती है। इसके इतर कुरआन करीम ऐसी अनेक भविष्यवाणियों से भरा पड़ा है। परन्तु किसी अन्य भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप भयानक चेतावनी नहीं दी गई। अतः आनुवंशिकी इंजीनियरिंग उसी सीमा तक उचित है जिस सीमा तक उसे अल्लाह तआला की सृष्टि की रक्षार्थ उपयोग किया जाये। यदि सृष्टि को परिवर्तित करने के लिए इसका उपयोग किया जाये तो इससे बहुत क्षति हो सकती है। आजकल के वैज्ञानिकों का एक बड़ा गिरोह भी आनुवंशिकी इंजीनियरिंग के द्वारा अल्लाह की सृष्टि को परिवर्तित करने का विरोध करता है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْفُرُ أَنْ يُشْرِكَ بِهِ وَيَعْفُرُ مَا
دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكُ بِاللَّهِ
فَقَدْ صَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ⑩

إِنْ يَذْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَّهُ وَإِنْ
يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۖ

لَعْنَةُ اللَّهِ ۝ وَقَالَ لَا تَخْدُنَ مِنْ عَبَادِكَ
تَصِيبَأَمْفَرُوْصًا ۝

وَلَا يُضْلِلُهُمْ وَلَا مُتَبَّهُمْ وَلَا مَرْئَهُمْ
فَلَيَبْيَتَكُنْ أَذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرْئَهُمْ
فَلَيَعْجِزُنَ حَلْقَ اللَّهِ ۝ وَمَنْ يَتَخْذِلْ
الشَّيْطَنَ وَلَيَأْقُنْ دُونَ اللَّهِ فَقَدْ خَسَرَ
خُسْرَانًا مُّبِينًا ۝

वह उन्हें बचन देता है और आशाएँ दिलाता है और धोखे के अतिरिक्त शैतान उनसे कोई वादा नहीं करता । 1121।

यहीं वे लोग हैं जिनका ठिकाना नरक है और वे उससे बचने का कोई स्थान नहीं पाएँगे । 1122।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, हम अवश्य उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं । यह अल्लाह का सत्यवचन है । और (अपने) कथन में अल्लाह से अधिक सत्यवादी और कौन है ? । 1123।

(निर्णय) न तो तुम्हारी आकांक्षाओं के अनुसार होगा और न अहले किताब की आकांक्षाओं के अनुसार होगा । जो भी कुकर्म करेगा उसे उसका प्रतिफल दिया जाएगा और वह अपने लिए अल्लाह को छोड़ कर न कोई मित्र पाएगा, न कोई सहायक । 1124।

और पुरुषों में से अथवा स्त्रियों में से जो नेक कर्म करे और वह मोमिन हो तो यहीं वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर खजूर की गुठली के छेद के समान भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । 1125।

और धर्म में उससे बेहतर कौन हो सकता है जो अपना सारा ध्यान अल्लाह के लिए अर्पित कर दे और वह उपकार करने वाला हो तथा उसने सत्यनिष्ठ इब्राहीम के धर्म का अनुसरण किया हो । और अल्लाह ने इब्राहीम को मित्र बना लिया था । 1126।

يَعِدُهُمْ وَيُمْنِئُهُمْ ۝ وَمَا يَعِدُهُمْ
الشَّيْطَنُ إِلَّا غُرُورًا ⑩

أُولَئِكَ مَا أُوهِمُ جَهَنَّمُ ۝ وَلَا يَجِدُونَ
عَنْهَا مَحِيصًا ⑪

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
سَدَدَ خَلْمَهُمْ جَنَاحُهُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝ وَعَدَ اللَّهُ
حَثَّا ۝ وَمَنْ أَضَدَّ مِنَ اللَّهِ قِنِيلًا ⑫

لَئِنْ كَيْمَانَتِكُمْ وَلَا أَمَانَتِ أَهْلِ
الْكُلُوبِ ۝ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزِيهُ ۝ وَلَا
يَجِدُ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا ۝ وَلَا نَصِيرًا ⑬

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّلِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ
أَنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۝ فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ⑭

وَمَنْ أَحْسَنَ دِينًا هُنَّ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُحْسِنٌ ۝ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۝
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالْأَفْعَالِ ۝ إِبْرَاهِيمَ حَلِيلًا ⑮

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु को धेरे हुए है। 1127।

(रुकू ۱۸)

और वे तुझ से स्त्रियों के विषय में फतवा पूछते हैं। तू कह दे कि अल्लाह तुम्हें उनके सम्बन्ध में फतवा देता है और उस ओर (ध्यान आकर्षित करता है) जो तुम्हारे समक्ष पुस्तक में उन अनाथ स्त्रियों के सम्बन्ध में पढ़ा जा चुका है जिनको तुम वह (सब) नहीं देते जो उनके पक्ष में अनिवार्य किया गया है, हालाँकि तुम इच्छा रखते हो कि उनसे निकाह करो। इसी प्रकार बच्चों में से (असहाय) कमज़ोरों के सम्बन्ध में (अल्लाह फतवा देता है) और (ताकीद करता है) कि तुम अनाथों के पक्ष में न्याय के साथ दृढ़ता पूर्वक खड़े हो जाओ। अतः जो नेकी भी तुम करोगे तो निस्सन्देह अल्लाह उसका भली-भाँति ज्ञान रखता है। 1128।

और यदि कोई स्त्री अपने पति से कलहपूर्ण व्यवहार अथवा उपेक्षा भाव का भय करे तो उन दोनों पर कोई पाप तो नहीं कि अपने बीच सुधार करते हुए मेल कर लें। और मेल करना (हर हाल में) बेहतर है। और मानव (स्वभाव में) कंजूसी रख दी गई है और यदि तुम उपकार करो और तक़वा से काम लो तो निस्सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे भली-भाँति अवगत है। 1129।

وَإِلَهٌ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ^۱
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا^۲

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ^۳ قُلِ اللَّهُ
يَعْلَمُ مَا فِيهنَّ لَوْمَةٌ عَلَيْهِنَّ فِي
الْكِتَابِ فِي يَشْمَى النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تُنْكِحُوهُنَّ
وَالْمُسْتَصْعِفُونَ مِنَ الْوِلْدَانِ^۴ وَأَنْ
تَقُومُوا إِلَيْسِي بِالْقُسْطِ^۵ وَمَا تَفْعَلُو
مِنْ حَيْثُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا^۶

وَإِنْ امْرَأً حَافَتْ مِنْ بَعْلِهِ هَاشُورًا
أَوْ إِغْرَاضًا فَلَا جَنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ
يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا مَا صَلَحَا^۷ وَالصَّلْحُ حَيْرٌ^۸
وَأَخْضَرَتِ الْأَنْفُسُ الشَّجَاعَ^۹ وَإِنْ تَحْسِنُوا
وَتَتَقْوَافُ^{۱۰} إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ حَسِيرًا^{۱۱}

और तुम यह सामर्थ्य नहीं रख सकोगे कि स्त्रियों के बीच पूर्ण रूप से न्याय का मामला करो चाहे तुम कितना ही चाहो। इस कारण (यह तो करो कि किसी एक की ओर) पूर्णतया न झुक जाओ कि उस (दूसरी) को मानो लटकता हुआ छोड़ दो और यदि तुम सुधार करो तथा तकबा धारण करो तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 130।*

और यदि वे दोनों अलग हो जाएँ तो अल्लाह प्रत्येक को उसके सामर्थ्य के अनुसार धनवान् कर देगा और अल्लाह बहुत विस्तार प्रदान करने वाला (और) परम विवेकशील है। 131।

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है। और निस्सन्देह हम ने उन लोगों को जिनको तुमसे पूर्व पुस्तक दी गई थी ताकीदी आदेश दिया था और स्वयं तुम्हें भी, कि अल्लाह का तकबा अपनाओ और यदि तुम इनकार करो तो निस्सन्देह अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है (और) अल्लाह निस्पृह और स्तुति योग्य है। 132।

और अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और

وَلَنْ تُسْتَطِعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ
وَلَوْ حَرَضْتُمْ فَلَا تَمْلِئُوا كُلَّ الْمَيْلِ
فَتَذَرُّوهَا كَالْمَعْكَفَةِ طَ وَإِنْ تُشْلِمُوهَا
وَتَتَقْوَى فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا رَّحِيمًا ③

وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يَعْنِ اللَّهِ كُلَّاً مِنْ سَعْيِهِ ط
وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ④

وَإِنَّمَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ آتُقُو اللَّهُ ط وَإِنْ
تُكَفِّرُوا فَإِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ⑤

وَإِنَّمَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط

* एक से अधिक विवाहों के फलस्वरूप यह तो असम्भव है कि प्रत्येक पत्नी से एक समान ग्रेम हो। प्रेम का संबंध तो दिल से है। परन्तु न्याय का संबंध मनुष्य के वश में है। इस कारण ताकीद की गई कि यदि एक से अधिक पत्नियाँ हों तो न्याय से काम लेना है और किसी एक को ऐसे न छोड़ दिया जाए कि तुम उसकी देखभाल ही न करो।

अल्लाह कार्यसाधक के रूप में बहुत पर्याप्त है । 133।

हे मानव जाति ! यदि वह चाहे तो तुम्हें नष्ट कर दे और दूसरों को ले आए । और अल्लाह इस बात पर स्थायी सामर्थ्य रखता है । 134।

जो सांसारिक प्रतिफल चाहता है तो अल्लाह के पास संसार का प्रतिफल भी है और परलोक का भी । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) बहुत देखने वाला है । 135। (रुकू 19/16)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए न्याय को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करने वाले बन जाओ । चाहे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देनी पड़े अथवा माता-पिता और निकट सम्बंधियों के विरुद्ध ।* चाहे कोई धनवान हो अथवा निर्धन, दोनों का अल्लाह ही उत्तम निरीक्षक है । अतः अपनी अभिलाषाओं का अनुसरण न करो ऐसा न हो कि न्याय से हट जाओ । और यदि तुमने गोल-मोल बात की अथवा मुँह फेर लिया तो निस्सन्देह जो तुम करते हो उससे अल्लाह बहुत अवगत है । 136। हे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उस पुस्तक पर भी जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस पुस्तक पर भी जो

وَكَفِي بِاللَّهِ وَكِيلًا^①

اَنْ يَسِأِلُ دُهْبِكُمْ اِيَّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ
بِاَخْرِيْنَ^٢ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذِلِّكَ قَدِيرًا^٣

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنَّ اللَّهِ
ثَوَابَ الدُّنْيَا وَالاُخْرَةِ^٤ وَكَانَ اللَّهُ
سَمِيعًا بِصَيْرًا^٥

يَا اَيُّهَا الَّذِينَ اَمْنَوْا كُوْنَوْا قُوْمِينَ بِالْقُسْطِ
شَهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى اَنْفُسِكُمْ اَوْ
الْوَالِدِينَ وَالْاقْرَبِينَ^٦ اَنْ يَكُنْ غَنِيًّا اَوْ
فَقِيرًا فَاللَّهُ اَوْلَى بِهِمَا^٧ فَلَا تَتَبَعِّمُوا
الْهَمَوْيَ اَنْ تَعْدِلُوا^٨ وَإِنْ تَأْتُوا اُوْتَعْرِضُوا
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرًا^٩

يَا اَيُّهَا الَّذِينَ اَمْنَوْا اِمْنَوْا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ

* कुरआन करीम की यह आयत गवाही देने के अवसर पर भी न्याय की शिक्षा लागू करती है । अर्थात् प्रत्येक गवाह पर अनिवार्य है कि न्यायपूर्ण गवाही दे, चाहे स्वयं अपने विरुद्ध अथवा माता-पिता या सभे सम्बंधियों के विरुद्ध गवाही देनी पड़े ।

उसने पहले उतारी थी । और जो अल्लाह का इनकार करे और उसके फ़रिश्तों का और उसकी पुस्तकों का और उसके रसूलों का और अंतिम दिवस का, तो निस्सन्देह वह बहुत ही घोर पथभ्रष्टता में (पड़कर) भटक चुका है । 137।

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए फिर इनकार कर दिया फिर ईमान लाए फिर इनकार कर दिया फिर इनकार में बढ़ते चले गए, अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें क्षमा कर दे और उन्हें सन्मार्ग की हिदायत दे । 138।*

मुनाफ़िकों को खुशखबरी दे दे कि उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है । 139।

(अर्थात्) उन लोगों को जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र बना लेते हैं । क्या वे उनके निकट सम्मान के अभिलाषी हैं ? अतः निश्चित रूप से सम्मान सब का सब अल्लाह के क़ब्जे में है । 140।

और निस्सन्देह उसने तुम पर पुस्तक में यह आदेश उतारा है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इनकार किया जा रहा है अथवा उनसे उपहास किया जा रहा है तो उन लोगों के पास न

وَالْكِتَابِ الَّذِي أُنْزَلَ مِنْ قَبْلٍ وَمِنْ
يَكُفُّرُ بِاللَّهِ وَمَلِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرَسُولِهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
@

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ كَفَرْ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ
كَفَرُوا لَهُمْ أَزْدَادُوا كُفُّارًا لَمْ يَكُنْ اللَّهُ
لِيَعْفُرَ لَهُمْ وَلَا لِهُمْ يَعْفُرُ سَيِّلًا
†

بَشِّرِ الْمُتَفَقِّئِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا
†

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكُفَّارِ إِنَّ أَوْلَيَاءَ مِنْ
دُونِ الْمُؤْمِنِينَ † أَيَّنْتَعُونَ عِنْ دُهْمَ
الْعَزَّةِ فَإِنَّ الْعَزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا
†

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنِّإِذَا
سَمِعْتُمْ أَيْتَ اللَّهُ يَكُفُّرُ بِهَا وَيُسْتَهْزِئُ بِهَا
فَلَا تَقْعُدُوا وَامْعَمْ مَحْثُونَ يَخُوضُوا فِي

* यह आयत इस विचारधारा को नकारती है कि मुर्तद (धर्मत्यागी) का दंड हत्या है । अतः कहा कि यदि कोई मुर्तद हो जाए, फिर ईमान ले आए । पुनः मुर्तद हो जाए पुनः ईमान ले आए तो उसका फैसला अल्लाह तआला के सुपुर्द है और यदि इनकार की अवस्था में मरेगा तो निश्चित रूप से नरकगामी होगा । यदि मुर्तद का दंड हत्या होती तो उसके बार-बार ईमान लाने और इनकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता था ।

बैठो यहाँ तक कि वे उसके सिवा किसी और बात में लग जाएँ। ज़रूर है कि इस अवस्था में तुम सहसा उन जैसे ही हो जाओ। निसन्देह अल्लाह सब मुनाफ़िकों और काफ़िरों को नरक में एकत्रित करने वाला है। 141।*

(अर्थात्) उन लोगों को जो तुम्हारे सम्बंध में (बुरे समाचारों) की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अतः यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त हो तो कहेंगे, क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? और यदि काफ़िरों को (विजय) प्राप्त हो तो (उनसे) कहते हैं क्या हमने तुम पर (पहले) प्रभुत्व नहीं पाया था और तुम्हें मोमिनों से बचाया नहीं था? अतः अल्लाह ही क्यामत के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफ़िरों को मोमिनों पर कोई अधिकार नहीं देगा। 142। (रुकू²⁰)

निसन्देह मुनाफ़िक अल्लाह से धोखा-धड़ी करते हैं जबकि वह उन्हीं को धोखे में डाल देता है। और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं सुस्ती के साथ खड़े होते हैं। लोगों के सामने दिखावा करते हैं और अल्लाह का बहुत ही थोड़ा स्मरण करते हैं। 143।

حَدِيثٌ غَيْرٌ إِنَّكُمْ إِذَا مُشْلَهُمْ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنْفِقِينَ وَالْكُفَّارِ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿١﴾

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكُفَّارِ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْخُوذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْتَعَكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَعْلَمُ بِمَا كُنْتُمْ يَعْمَلُونَ الْقِيمَةُ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكُفَّارِ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سِيلًا ﴿٢﴾

إِنَّ الْمُنْفِقِينَ يَحْدِمُونَ اللَّهَ وَهُوَ حَادِغُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالٍ لَّا يَرَأُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٣﴾

* इस आयत में स्पष्ट रूप से आदेश है कि वे लोग जो नवियों और ईश्वराणी से उपहास करते हैं, उनके साथ न बैठा करो अन्यथा तुम उन जैसे ही हो जाओगे। परन्तु उन लोगों का स्थायी रूप से बहिष्कार करने का यहाँ अदेश नहीं है। उनमें से जो लोग अपने इस कृत्य का प्रायश्चित कर लें उन से मेल-मिलाप की अनुमति है।

वे इसके बीच दुविधा में पड़े रहते हैं । न उनकी ओर होते हैं न उनकी ओर । और जिसे अल्लाह पथश्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए तू कोई (हिदायत की) राह नहीं पाएगा ॥144॥

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! मोमिनों को छोड़ कर काफिरों को मित्र न बनाओ । क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने विरुद्ध खुली-खुली दलील दे दो ॥145॥

निस्सन्देह मुनाफ़िक़ नरक की अत्यन्त गहराई में होंगे और तू उनके लिए कोई सहायक न पाएगा ॥146॥

परन्तु वे लोग जिन्होंने प्रायश्चित किया और सुधार किया और अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ लिया और अपने धर्म को अल्लाह के लिए विशिष्ट कर लिया, तो यहीं वे लोग हैं जो मोमिनों के साथ हैं और शीघ्र ही अल्लाह मोमिनों को एक बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ॥147॥

यदि तुम कृतज्ञता प्रकट करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हें दंड दे कर क्या करेगा । और अल्लाह कृतज्ञता का बहुत हक्क अदा करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ॥148॥

مُذَبِّدِينَ بَيْنَ ذَلِكُّ لَا إِلِي
هُوَلَاءِ وَلَا إِلِي هُوَلَاءِ وَمَنْ يُضْلِلُ
اللَّهُ قَلْتُ تَجَدَّلَهُ سَيِّلًا ⑯

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَعْذِذُوا
الْكُفَّارُ أُولَئِكَ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ أَتَرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا اللَّهَ
عَلَيْكُمْ سُلْطَنًا مُّنِيبًا ⑯

إِنَّ الْمُنْفِقِينَ فِي الدُّرُجِ الْأَسْقُلِ مِنَ
الثَّارِ وَلَنْ تَجَدَ لَهُمْ نَصِيرًا ⑯
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَأَعْتَصُمُوا
بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسُوفَ يُؤْتَ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ⑯

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ
شَكُرْتُمْ وَأَمْشَرْتُ وَكَانَ اللَّهُ
شَاكِرًا عَلَيْمًا ⑯

अल्लाह खुले आम बुरी बात कहने को पसन्द नहीं करता परन्तु वह (व्यक्ति इससे) अलग है, जिस पर अत्याचार किया गया हो । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 149।*

यदि तुम कोई नेकी प्रकट करो अथवा उसे छिपाए रखो अथवा किसी बुराई की अनदेखी करो तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है । 150।

निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच भेद-भाव करें और कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान लाएँगे और कुछ का इनकार कर देंगे और चाहते हैं कि उसके बीच का कोई रास्ता अपनाएँ । 151।**

यही लोग हैं जो पक्के काफिर हैं और हमने काफिरों के लिए अपमानित करने वाला अज्ञाब तैयार कर रखा है । 152।

और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के बीच भेद-भाव नहीं किया, यही वे लोग हैं जिन्हें वह अवश्य उनके

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهَرُ بِالسُّوءِ مِنْ
الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلِمَ وَكَانَ اللَّهُ
سَمِيعًا عَلَيْهِما④

إِنْ شَدُّوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ
سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفْوًا قَدِيرًا⑤

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَيَرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِيَهُنْسِ وَنُكَفِّرُ بِيَهُنْسِ
وَيَرِيدُونَ أَنْ يَمْحُدُوا بَيْنَ ذَلِكَ سِيِّلًا⑥

أُولَئِكَ هُمُ الْكُفَّارُ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا
لِلْكُفَّارِ عَذَابًا مُّهِينًا⑦

وَالَّذِينَ أَمْنَوْا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا
بَيْنَ أَحَدِ مِنْهُمْ أُولَئِكَ سُوفَ يُؤْتَى هُنْ

* ऊँची आवाज से खुले आम किसी को बुरा-भला कहना उचित नहीं । सिवाय इसके कि उसने उस पर अत्याचार किया हो ।

** इस आयत में हदीस के इनकारी (अहले-कुरआन सम्प्रदाय) का खंडन है । वे अल्लाह के कथन और रसूल के कथन में अन्तर करते हैं और हदीस को नहीं मानते । आयत 153 में इसी विषय को और पक्का किया गया है कि जो लोग अल्लाह और रसूल पर सच्चा ईमान लाते हैं वे अल्लाह के कथन और रसूल के कथन में कोई अन्तर नहीं करते ।

प्रतिफल प्रदान करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 153। (रुकू ۲۱)

तुम्ह से अहले किताब प्रश्न करते हैं कि तू उन पर आकाश से (प्रत्यक्ष रूप से) कोई पुस्तक उतार लाये । अतः वे मूसा से इस से भी बड़ी बातों की माँग कर चुके हैं । अतः उन्होंने (उससे) कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से दिखा दे । अतः उनके अत्याचार के कारण उन्हें आकाशीय विजली ने आ पकड़ा । फिर उन्होंने बछड़े को (उपास्य के रूप में) अपना लिया, बावजूद इसके कि उनके पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं । इसके बावजूद हमने इस विषय में क्षमा से काम लिया और हमने मूसा को सुस्पष्ट युक्ति प्रदान की । 154।

और हमने उनकी प्रतिज्ञा के कारण उन पर तूर को ऊँचा किया और हमने उनसे कहा कि (अल्लाह का) आज्ञापालन करते हुए द्वार में प्रविष्ट हो जाओ और हमने उन्हें कहा कि सब्ल के बारे में किसी प्रकार सीमा का उल्लंघन न करो । और उनसे हमने एक बहुत पक्का वचन लिया । 155।

अतः उनके अपना वचन तोड़ने के कारण और अल्लाह की आयतों के इनकार और नवियों का अकारण घोर-विरोध करने के कारण तथा उनके यह कहने के कारण कि हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने

أَجْوَرُهُمْ طَوْكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

يَسْأَلُكُ أَهْلَ الْكِتَابَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
كِتَابًا فِي الْمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَى أَكْبَرَ
مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهَرًا فَأَخَذَنَاهُمْ
الصُّعْقَةَ بِطَلْبِهِمْ ۝ ثُمَّ أَخَذُوا الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبُيْتَ فَعَفَوْنَاعْنَ
ذِلِكَ ۝ وَاتَّيْنَا مُوسَى سَلْطَنًا مُّبِينًا ۝

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الْقُلُوْرَ بِمِنْتَاقَهُمْ وَقُلْنَا
لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَ قُلْنَا لَهُمْ
لَا تَخْدُوا فِي السَّبِيْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ
مِّئَاتًافَاعِلِيْظًا ۝

فِيمَا تَضَعُهُمْ مِّئَاتَهُمْ وَكُفُرُهُمْ بِاِيْتِ
اللَّهِ وَقَتْلُهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقُولُهُمْ
قُلُوبُنَا عَلَفَ ۝ بِلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا

उनके इनकार के कारण उन (दिलों) पर मुहर लगा रखी है । अतः वे बहुत ही कम ईमान लाएँगे ॥156॥

और उनके इनकार के कारण और मरियम के विरुद्ध एक बहुत बड़े आरोप की बात कहने के कारण ॥157॥

और उनके इस कथन के कारण कि निस्सन्देह हमने मरियम के पुत्र ईसा मसीह की जो अल्लाह का रसूल था, हत्या कर दी है । और निस्सन्देह वे उसकी हत्या नहीं कर सके और न उसे सूली दे (कर मार) सके बल्कि उन पर (यह) विषय संदिग्ध कर दिया गया और निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इस विषय में मतभेद किया है, इसके सम्बन्ध में संदेह में पड़े हैं । उनके पास भ्रम का अनुसरण करने के अतिरिक्त कोई ज्ञान नहीं है । और वे निश्चित रूप से उसकी हत्या न कर सके ॥158॥*

* इस आयत में यहूदियों के गलत दावे का खण्डन किया गया है कि हमने मसीह का वध किया है । हालांकि न उन्होंने मसीह को हत्या करके मारा, न सूली देकर मारा । सलबूह शब्द से अभिप्राय केवल सूली पर चढ़ाना नहीं है बल्कि सूली पर चढ़ाने का उद्देश्य प्राप्त करना है अर्थात् सूली पर मार देना है । बहुत से लोग सूली पर चढ़ा कर जीवित भी उतार लिए जाते हैं । उनकी मृत्यु पर कभी नहीं कहा जाता कि वे सूली दिए गए । अन्तिम परिणाम इस आयत में यह निकाला गया है कि निस्सन्देह वे मसीह की हत्या करने में सफल नहीं हो सके ।

शुब्बिहा लहुम शब्द (उन पर विषय संदिग्ध कर दिया गया) की गलत व्याख्या यह की जाती है कि कोई और व्यक्ति मसीह का समरूप हो गया और फिर उसे सूली दे दी गई । हालांकि निश्चित रूप से यह अरबी भाषा के मुहावरे के विपरीत है अन्यथा उस व्यक्ति का उल्लेख होना चाहिए था जिसने मसीह का रूप धारण किया और मसीह का समरूप बन गया । शुब्बिहा लहुम के स्पष्ट रूप से यह अर्थ हैं कि वे शंका में पड़ गए, उन पर यह विषय संदिग्ध हो गया । हजरत इमाम राजी रह. ने इस आयत की व्याख्या में लिखा है : वलाकिन वकअ लहुमशुब्बह (लेकिन उनके लिए संदेह उत्पन्न हो गया) तफसीर कवीर, इमाम राजी रहि ।

بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا

وَبِكُفْرِهِمْ وَقُولِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ
بِهَتَّانًا عَظِيمًا

وَقُولِهِمْ إِنَّا قَاتَلْنَا الْمُسِيحَ عِيسَى ابْنَ
مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَاتَلُوهُ وَمَا
صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شَيْءٌ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ
أَخْتَلُوا فِيهِ لَفِي شَيْءٍ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ
عِلْمٍ إِلَّا إِثْيَاعَ الظُّنُنِ وَمَا قَاتَلُوهُ يَقِيْنًا

बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका उत्थान कर लिया और निस्संदेह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 159।*

और अहले किताब में से कोई (गिरोह ऐसा) नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व निश्चित रूप से उस पर ईमान न ले आयेगा और क्यामत के दिन वह उन पर गवाह होगा । 160।**

अतः वे लोग जो यहूदी थे उनके अत्याचार के कारण और अल्लाह के मार्ग में उनके द्वारा बहुत रोक ढालने के कारण हमने उन पर वह पवित्र वस्तुएँ भी हराम (अवैध) कर दीं जो (इससे पूर्व) उनके लिए हलाल (वैध) की गई थीं । 161।

और उनके सूद लेने के कारण, हालाँकि वे इससे रोक दिए गए थे और लोगों के धन अनुचित ढंग से

بِلْ رَفِعَةُ اللَّهِ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ①

وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَ بِهِ قَبْلِ
مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ كُونَ عَلَيْهِ حُكْمٌ شَيِّدَهُ ۝

فِيظَلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَمَ مِنَ أَعْيُهُمْ
طَيْبَاتٍ أَحِلَّتْ لَهُمْ وَبَصَّرَهُمْ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ كَثِيرًا ②

وَأَخْذِهِمْ الرِّبَا وَقَدْ نَهَا عَنْهُ وَأَكْلَهُمْ
آمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۝ وَأَعْتَدْنَا

* यह आयत कुछ विद्वानों के इस दावे का खण्डन करती है कि हज़रत ईसा अलै. का उत्थान आकाश की ओर किया गया था । यह आयत स्पष्ट रूप से कह रही है कि बरफ़अहुल्लाहु इलैहि अल्लाह ने उनका रक़अ (उत्थान) अपनी ओर किया था । प्रश्न उठता है कि कौन सा स्थान अल्लाह से खाली है जिसकी ओर मसीह उठाए गए ? वास्तविकता यह है कि जहाँ मसीह उपस्थित थे वहाँ अल्लाह भी था । अतः रक़अ शब्द का अर्थ दर्जों का उत्थान है ।

** आयतांश इम्पिन अहलिल किताबि (अहले किताब में से) के दो अर्थ हो सकते हैं । एक यह कि अहले किताब में से एक व्यक्ति भी नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व उस पर ईमान न लाए । दूसरा यह कि अहले किताब में से एक भी गिरोह नहीं जो उसकी मृत्यु से पूर्व उस पर ईमान न लाए और यही ठीक है । यदि पहला अर्थ किया जाए अर्थात् उसकी मृत्यु से यदि मसीह की मृत्यु समझी जाए तो यह केवल एक दावा है । करोड़ों यहूदी मर गए जो न अपनी मृत्यु से पूर्व मसीह पर ईमान लाए और न मसीह की मृत्यु से पहले उस पर ईमान लाए । ‘गिरोह’ वाला अर्थ इस कारण ठीक लगता है कि हज़रत मसीह अलै. गुमशुदा कबीलों की ओर हिजरत के पश्चात् उस समय मृत्यु पाए जब इन सभी गुमशुदा कबीलों में से प्रत्येक कबीला के कुछ न कुछ व्यक्तियों ने आपको स्वीकार कर लिया । यह घटना करमीर में घटी ।

खाने के कारण (उनको यह दंड दिया)। और उनमें से जो काफिर थे उनके लिए हमने अत्यन्त पीड़ाजनक अज्ञाब तैयार कर रखा है ॥162॥

परन्तु उन (यहूदियों) में से जो ज्ञान में परिपक्व और (सच्चे) मोमिन हैं वे उस पर ईमान लाते हैं जो तेरी ओर उतारा गया और उस पर भी जो तुझ से पूर्व उतारा गया तथा नमाज़ को कायम करने वाले और ज़कात अदा करने वाले और अल्लाह और अंतिम दिवस पर ईमान लाने वाले हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें हम अवश्य एक बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ॥163॥ (रुक् ٢٢)

निस्सन्देह हमने तेरी और वैसे ही वहइ की जैसा नूह की ओर वहइ की थी और उसके बाद आने वाले नबियों की ओर। और हमने वहइ की इब्राहीम और इसमाईल और इस्हाक और याकूब की ओर, और (उसकी) संतान की ओर तथा ईसा और अब्दूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर। और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान किया ॥164॥

और कई रसूल हैं जिनका वर्णन हम तेरे समक्ष पहले ही कर चुके हैं और कई रसूल हैं जिनकी कथाएँ हमने तेरे समक्ष नहीं पढ़ीं और मूसा से अल्लाह ने अत्यधिक वार्तालाप किया ॥165॥*

لِلْكُفَّارِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَوْيَمًا ①

لِكِنَ الرَّسُولُ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ
وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقْرِئِينَ الْأَصْلُوَةَ
وَالْمُؤْتَوْنَ الزَّكُوَةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۝ أُولَئِكَ سَلَوْتُ لَهُمْ
أَجْرًا عَظِيمًا ②

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ
وَالنَّبِيِّنَ مِنْ بَعْدِهِ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَى
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَى وَأَلْيُوبَ وَيُونُسَ
وَهَرُونَ وَسَلِيمَنَ ۝ وَاتَّبَيَادَوَدَ رَبُورَ ۝

وَرَسُلًا قَدْ قَضَصُهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلٍ
وَرَسُلًا لَمْ نَقْضُهُمْ عَلَيْكَ ۝ وَكَلَّ اللَّهُ
مُؤْسِى تَكْلِيمًا ③

* हरीसों से प्रमाणित होता है कि पूरे संसार में नबियों की संख्या एक लाख चौबीस हजार थी। उन सब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्वश्रेष्ठ रसूल हैं। कुरआन करीम में केवल →

कई शुभ-समाचार देने वाले और सतर्ककारी रसूल (भेजे) ताकि लोगों के पास रसूलों के आने के बाद अल्लाह के विरुद्ध कोई तर्क न रहे और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 166।

परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि जो उसने तेरी ओर उतारा है उसे अपने (निश्चित) ज्ञान के आधार पर उतारा है तथा फरिश्ते भी (यही) गवाही देते हैं, जबकि गवाह के रूप में अल्लाह ही बहुत पर्याप्त है । 167।

निस्सन्देह वे लोग जो काफिर हुए और उन्होंने अल्लाह के मार्ग से रोका निस्सन्देह वे घोर पथब्रष्टता में पड़ चुके हैं । 168।

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अत्याचार किए, हो नहीं सकता कि अल्लाह उन्हें क्षमा कर दे और न ही यह सम्भव है कि वह उन्हें किसी मार्ग पर डाले । 169।

परन्तु नरक के मार्ग पर, जिसमें वे लम्बी अवधि तक रहने वाले हैं और अल्लाह के लिए ऐसा करना सरल है । 170।

हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सत्य के साथ रसूल आ चुका है । अतः ईमान ले आओ (यह) तुम्हारे लिए बेहतर होगा । फिर भी यदि तुम इनकार करो तो निस्सन्देह अल्लाह ही का है जो

رَسُّلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُّنذِرِينَ لَعْلًا
يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حِجَّةٌ بَعْدَ الرَّسُّلِ
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ⑩

لَكِنَّ اللَّهَ يَسْهُدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكُمْ أَنْزَلَهُ
يَعْلَمُهُمْ وَالْمَلِكَ يَسْهُدُونَ وَكَفَى بِاللَّهِ
شَهِيدًا ⑪

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا أَضَلُّا لَبِيعِدًا ⑫

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا الْمُرْيَكُنُ اللَّهُ
لِيغْفِرْ لَهُمْ وَلَا يَغْفِرُ لَهُمْ طَرِيقًا ⑬

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ⑭

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ
مِنْ رَبِّكُمْ فَامْتُوا خَيْرَ الْكُمْ وَإِنْ
تَكُفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ

← कुछ नवियों का उदाहरण के रूप में वर्णन किया गया है और उन पर और उनकी जातियों पर जो परिस्थितियाँ गुजरीं, पूरे संसार के नवियों और उनकी जातियों पर ऐसी ही परिस्थितियाँ गुजरीं हैं ।

आसमानों और धरती में है और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 171।

हे अहले किताब ! अपने धर्म में सीमा का उल्लंघन न करो और अल्लाह के सम्बन्ध में सत्य के सिवा कुछ न कहो । निस्सन्देह मरियम का पुत्र ईसा मसीह केवल अल्लाह का रसूल है और उसका कलिमा (वाक्य) है जो उसने मरियम की ओर उतारा और उसकी ओर से एक रुह है । अतः अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ । और तीन मत कहो । (इससे) रुक जाओ कि इसी में तुम्हारी भलाई है । निस्सन्देह अल्लाह ही एक उपास्य है । वह इस से पवित्र है कि उसका कोई पुत्र हो । उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और कार्य-साधक के रूप में अल्लाह बहुत पर्याप्त है । 172।* (रुक् 23)

मसीह तो कदापि नापसंद नहीं करता कि वह अल्लाह का भक्त हो और न ही निकटस्थ फ़रिश्ते (नापसंद करते हैं)

وَالْأَرْضُ طَوْكَانَ اللَّهَ عَلَيْمًا حَكِيمًا^(١)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَعْلُوْا فِي دِينِكُمْ وَلَا
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ إِنَّمَا الْمُسْبِحُ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ
الْفَقِهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُفْعَةَ مُهَمَّةٍ قَاتَمُوا
بِاللَّهِ وَرَسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ إِنْتُمْ
خَيْرٌ الْكُفَّارُ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ
أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ طَوْكَافِي بِاللَّهِ وَكَيْلَانِ^(٢)

لَنْ يَسْتَكْفِفَ الْمُسْبِحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ
وَلَا الْمَلِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ طَوْكَافِي
وَمَنْ يَسْتَكْفِفُ

* ईसाई इस आयत से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मसीह साधारण रसूल नहीं थे बल्कि अल्लाह के कलिमा थे और बाइबिल के उस प्रसंग का उल्लेख करते हैं जिसमें कहा गया कि “आदि में वचन था और वचन ईश्वर के साथ था और वचन ईश्वर था” (यूहन्ना 1:1) वे हज़रत मसीह को कलिमतुल्लाह अथवा कलामुल्लाह (अल्लाह का वाक्य या वचन) घोषित करते हैं । इसका खण्डन सूरः कहफ़ की अन्तिम दस आयतों में मौजूद है । विशेषकर इस आयत में कि यदि सारे समुद्र सयाही बन जाएँ तथा उन जैसे और समुद्र भी उनकी सहायता को आएँ तो अल्लाह तआला के कलिमे समाप्त नहीं हो सकते । अतः अल्लाह के कलिमा से अभिप्राय अल्लाह का कुन (हो जा) कहना है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त जीवधारी और निर्जीव चीज़ें अस्तित्व में आईं । मसीह भी उनमें से एक थे ।

और जो भी उसकी उपासना को नापसंद करे और अहंकार से काम ले, उन सभी को वह अपनी ओर अवश्य इकट्ठा करके ले आएगा । 173।*

अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो वह उनको उनके भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने अनुग्रह से उनको अधिक देगा । और वे लोग जिन्होंने (उपासना को) नापसंद किया और अहंकार किया तो उन्हें वह पीड़ाजनक अज्ञाब देगा और अल्लाह के सिवा वे अपने लिए कोई मित्र और सहायक नहीं पाएँगे । 174।

हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक बड़ी युक्ति आ चुकी है और हमने तुम्हारी ओर एक प्रकाशित कर देने वाला नूर उतारा है । 175।

अतः वे लोग जो अल्लाह पर ईमान ले आए और उसको दृढ़ता से पकड़ लिया तो वह अवश्य उन्हें अपनी दया और अपने अनुग्रह में प्रविष्ट करेगा और उन्हें अपनी ओर से सन्मार्ग प्रदर्शित करेगा । 176।

वे तुझ से फतवा माँगते हैं । कह दे कि अल्लाह तुम्हें कलालः के विषय में फतवा देता है । यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाए, जिसकी संतान न हो परन्तु उसकी बहन हो तो जो (तरका) उसने छोड़ा

عَنِّ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكِبُرُ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ
جَمِيعًا ﴿١٧٣﴾

فَآمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلَاحَ
فَيُوَقِّمُهُ أَجُورُهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِّنْ
فَضْلِهِ وَآمَّا الَّذِينَ اسْتَكْفَرُوا وَاسْتَكْبَرُوا
فَيَعْذِبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ
لَهُمْ قُنْدُونَ لِلَّهِ وَلِيَّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا أَمْبَيْنَا

فَآمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ
فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةِ مِنْهُ وَفَضْلِ
وَيَقْدِيْهُمُ الْيَوْمَ صَرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلَّةِ
إِنْ أَمْرُ وَأَهْلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ

* इस आयत में हज़रत मसीह अलै, पर लगे इस आरोप का खण्डन किया गया है कि वह अल्लाह के भक्त होने से इनकार करते थे । क्योंकि यह एक बहुत गंभीर आरोप है जो हज़रत मसीह का दर्जा नहीं बढ़ाता बल्कि उनको अहंकारी साबित करता है ।

उस बहन के लिए उसका आधा भाग होगा, परन्तु वह उस (पूरे तरका) के (पूर्णांश) का उत्तराधिकारी होगा यदि उसकी कोई संतान न हो । और यदि वे (बहनें) दो हों तो उनके लिए उसमें से दो तिहाई भाग होगा जो उस (भाई ने तरका) छोड़ा और यदि बहन-भाई पुरुष और महिलाएँ (मिले जुले) हों तो (प्रत्येक) पुरुष के लिए दो महिलाओं के समान भाग होगा । अल्लाह तुम्हारे लिए (वात) खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि ऐसा न हो कि तुम गुमराह हो जाओ और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का खूब ज्ञान रखता है । 177। (रुकू 24)

أَخْتُ فَلَهَا نِصْفٌ مَا تَرَكَ ۝ وَهُوَ
يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۝ فَإِنْ كَانَتَا
أَشْتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّلْثَنُ مِمَّا تَرَكَ ۝
وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّهِ كُلُّ
مُثْلِحٍ أَنْ شِئْنِ ۝ يَبْيَسْنِ اللَّهُ لَكُمْ
أُنْ تَصْلُوْا ۝ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

5- सूरः अल-माइदः

यह सूरः मदीना निवास-काल के अन्त में उतरी थी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 121 आयतें हैं।

इस सूरः में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बहुत से चमत्कारों की वास्तविकता का उल्लेख किया गया है। भाष्यों में जो यह उल्लेख किया गया है कि उनपर आसमान से भौतिक रूप में भोज्य वस्तुओं से परिपूर्ण थाल उतरा था, उसकी वास्तविकता पर से यह कह कर पर्दा उठाया गया है कि वस्तुतः यह भविष्यवाणी थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआओं और कुर्बानियों के फलस्वरूप ईसाइयों को अपार जीविका दी जाएगी परन्तु यदि उन्होंने इस का अनादर किया, जिसके चिह्न दुर्भाग्यवश प्रकट हो चुके हैं, तो फिर उनको दंड भी ऐसा भयंकर दिया जाएगा कि ऐसा दंड कभी संसार में किसी को नहीं दिया गया होगा।

प्रतिज्ञा भंग करने के फलस्वरूप जो बुराइयाँ यहूदियों व ईसाइयों में उत्पन्न होती रहीं उनको ध्यान में रखकर इस सूरः के आरम्भ में ही मुस्लिम जगत को सावधान कर दिया गया है। इससे पूर्व सूरः अल-बक्रः में विभिन्न भोज्य वस्तुओं की वैधता व अवैधता का वर्णन हो चुका है परन्तु यहाँ एक नई बात कही गई है जो इस्लाम को दूसरे धर्मों से अलग करती है। वह यह कि भोजन केवल हलाल (वैध) ही नहीं बल्कि पवित्र भी होना चाहिए। अतः एक भोजन यदि हलाल भी हो तो बेहतर यही है कि जब तक वह अत्यन्त पवित्र और स्वास्थ्य वर्धक न हो, उससे परहेज़ किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व हर हाल में न्याय पर अड़िग रहने की शिक्षा दी जा चुकी है। अब इस सूरः में गवाही का विषयवस्तु आरम्भ होता है और गवाही देने में पूर्णतया न्याय पर स्थित रहने का उपदेश इस प्रकार उत्तम ढंग से वर्णन किया गया है कि यदि किसी जाति से शत्रुता भी हो तब भी उसके अधिकारों का ध्यान रखो और उसके साथ अपने झगड़े निपटाते हुए न्याय का पहलू कदापि न छोड़ो।

इस सूरः में प्रतिज्ञापालन का एक बार फिर उल्लेख मिलता है कि किस प्रकार यहूदियों ने जब प्रतिज्ञा भंग की थी तो वे परस्पर द्वेष और शत्रुता के शिकार हो गए और बहतर सम्प्रदायों में विभाजित हो गए। इस पर हज़रत ईसा अलै. का आगमन हुआ जिन्होंने तेहतरवां मुक्तिगमी सम्प्रदाय की नींव डाली। परन्तु भविष्यवाणी के रूप में इस बात का भी उल्लेख हुआ है कि उन की जाति भी उपदेश से लाभ नहीं उठाएगी और गिरोह दर गिरोह बँटती चली जाएगी स्वयं उनके बीच भी ईर्ष्या द्वेष और स्वार्थपरता के फलस्वरूप बड़े-बड़े विश्व युद्धों की नींव पड़ेगी जिनमें स्वयं ईसाई जातियाँ, ईसाईं

जातियों के विरुद्ध भिड़ेंगी ।

इस सूरः में जातियों के परस्पर युद्ध और रक्तपात का वर्णन होने के साथ-साथ एक ऐसे गिरोह का भी उल्लेख हुआ है जो अत्याचार और क्रूरता में सीमा से बढ़ जाएगा (आयत सं. 34) जैसा कि आजकल छोटे छोटे बच्चों पर पशुओं जैसे अत्याचार का वर्णन पश्चिमी जगत में मिलता है और पूर्वी जगत तो ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी है और ऐसे भयानक अपराध भी हो रहे हैं जिनका दंड अत्यन्त कठोर होना चाहिए ताकि फ़ शर्िद बिहिम् मन खलफहुम् सूरः अल अनफ़ाल : 58 (अर्थात् उन के पीछे आने वालों को भी तितर-वितर कर दे) वाली विषयवस्तु चरितार्थ हो और उनके अत्यन्त भयानक अन्त को देख कर शेष अपराधी भी अपराध करने से रुक जाएँ ।

यह सूरः हर प्रकार के अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाती है । इसी प्रसंग में यह कहा गया है कि बलपूर्वक किसी का धर्म परिवर्तित करने की कदापि अनुमति नहीं दी जा सकती । यदि बल प्रयोग के फलस्वरूप कुछ लोग इस्लाम धर्म त्याग दें तो अल्लाह तआला उनके बदले बड़ी-बड़ी जातियाँ प्रदान करेगा जो संख्या में उन धर्मत्यागियों से बहुत अधिक होंगे तथा मोमिनों से बहुत प्रेम करने वाले और काफिरों के प्रति बहुत कठोर होंगे ।

इस सूरः में कुरआनी शिक्षा की न्यायप्रणाली का एक ऐसा विवरण मिलता है जो संसार की किसी और पुस्तक में मौजूद नहीं है, जिसमें यह कहा गया है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वालों के अतिरिक्त दूसरे धर्मों के अनुयायी जो अपनी धार्मिक शिक्षाओं का पालन करने में सञ्चो हों, नेक कर्म करने वाले हों तथा परलोक अर्थात् अपने कर्मों की जवाबदेही के सिद्धान्त पर दृढ़ता से स्थित हों । अल्लाह तआला उनको उनके नेक कर्मों का उत्तम प्रतिफल प्रदान करेगा । उनको चाहिए कि वे अपने अन्त के बारे में कोई भय और शोक न करें ।

पारस्परिक द्वेष और शत्रुता का जो वर्णन इस सूरः में चल रहा है इस प्रकरण में और कारणों का भी उल्लेख किया गया है, जो घोर द्वेष एवं शत्रुता उत्पन्न करने का कारण बनते हैं । उनमें एक शराब और दूसरा जुआ है । यद्यपि उनमें कुछ मामूली लाभ भी हैं परन्तु उनके हानिकारक तत्त्व उन लाभ के मुक़ाबले में बहुत अधिक हैं ।

इस सूरः के अन्त पर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु का स्पष्ट उल्लेख किया गया है तथा आपको एक पूर्ण एकेश्वरवादी रसूल के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसने कभी भी अपनी जाति को तस्लीस (त्रीश्वरवाद) अथवा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की शिक्षा नहीं दी और न ही यह कहा कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो ।



سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدْنِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَرَى وَ أَخْذَنِي وَ عِشْرُونَ آيَةً وَ سِتَّةَ عَشَرَ كَوْنِعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनन्त कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! प्रतिज्ञाओं का पालन करो । तुम्हारे लिए चरने वाले चौपाये हलाल ठहराए गए । सिवाए इसके जिनका (विवरण) तुम्हारे समझ पढ़ा जाता है । परन्तु शिकार को हलाल न ठहराना जबकि तुम एहराम की अवस्था में हो । निस्सन्देह अल्लाह वही निर्णय करता है जो वह चाहता है । । ।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! शाएरल्लाह (अल्लाह के चिह्नों) का अपमान न करो और न ही सम्मान योग्य महीने का और न कुर्बानी के पशुओं का और न ही कुर्बानी के चिह्न स्वरूप पट्ट पहनाए हुए पशुओं का और न ही उन लोगों का जो अपने रब्ब की ओर से कृपा और प्रसन्नता की अभिलाषा खेते हुए सम्मान योग्य घर का संकल्प कर चुके हों । और जब तुम एहराम खोल दो तो (भले ही) शिकार करो । और तुम्हें किसी जाति की शत्रुता इस कारण से कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोका था, इस बात पर न उकसाये कि तुम अत्याचार करो । और नेकी और तकबा में एक दूसरे का सहयोग करो

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِذْ يَعْلَمُونَ
أَجْلَتْ لَكُمْ بِهِمْهُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يَتْلُى
عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحْلِّي الصَّيْدِ وَإِنَّمَا خَرْفُ
إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يَرِيدُ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَابِ اللَّهِ
وَلَا الشَّهْرُ الْحَرَامُ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقُلَبِ
وَلَا آمِينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا
مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَّتِ
فَاصْطَادُوا وَلَا يَجِرْ مَئِكَ شَنَانَ
قَوْمٍ أَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ
تَعْتَدُوا وَتَعَاوِنُوا عَلَى الْبَرِّ وَالْتَّعْوَى ③

और पाप और अत्याचार (वाले कामों) में सहयोग न करो और अल्लाह से डरो। निसन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है।^{31*}

तुम पर मुरदार हराम कर दिया गया है और रक्त एवं सूअर का माँस और जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो तथा दम घुट कर मरने वाला और चोट लग कर मरने वाला और गिर कर मरने वाला तथा सींग लगने से मरने वाला और वह भी जिसे हिंस-जन्तुओं ने खाया हो, सिवाय इसके कि जिसे तुम (उसके मरने से पूर्व) ज़िबह कर लो और वह (भी हराम है) जो झूठे उपास्यों के बलि-स्थानों पर ज़िबह किया जाए और यह बात भी कि तुम तीर चला कर परस्पर भाग बाँटो। यह सब दुष्कर्म हैं। आज के दिन वे लोग जो काफ़िर हुए तुम्हारे धर्म (में हस्तक्षेप) करने से निराश हो चुके हैं। अतः तुम उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो। आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म सम्पूर्ण कर दिया और तुम पर मैंने अपनी नेमत पूरी कर दी है तथा मैंने इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म के रूप में पसन्द कर लिया है। अतः जो भ्र

وَلَا تَعَاوِنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُلُوَانِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑦

حَرَمْتُ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمْ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ
وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ
وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبَعُ إِلَّا مَا دَيْنَشَ
وَمَا ذَبَحَ عَلَى النَّصْبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا
بِالْأَزْلَامِ ذِلِّكُمْ فَسْقٌ ۚ أَلَيْوَمَ يَوْمَ يَسِّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشُوهُمْ
وَاحْسُنُوا ۖ أَلَيْوَمَ أَكْمَلَتْ لَكُمْ دِيْنَكُمْ
وَأَتَمَّتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيَتْ

* इस सूरः की आयत सं. 3 और सं. 9 में शत्रु से भी न्यायपूर्ण व्यवहार करने का आदेश दिया गया है चाहे शत्रुता सांसारिक कारणों से हो अथवा धार्मिक कारणों से, अतएव आयत सं. 3 में कहा है कि यद्यपि किसी शत्रु ने आपको खाना का 'बा में जाने से रोक दिया हो तब भी इस धार्मिक शत्रुता के कारण उस से अन्याय करने की अनुमति नहीं है। इन दो आयतों का यदि मुस्लिम जगत सच्चे मन से पालन करता तो कभी पथभ्रष्ट न होता।

की अधिकता के कारण (निषिद्ध वस्तु खाने पर) विवश हो चुका हो, इस दशा में कि वह पाप की ओर झुकने वाला न हो तो अल्लाह अवश्य बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 14।

वे तुझ से पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल किया गया है ? तू कह दे कि तुम्हारे लिए समस्त पवित्र वस्तुएँ हलाल की गई हैं । और शिकारी पशुओं में से जिन को सिधाते हुए जो तुम शिक्षा देते हो तो (याद रखो कि) तुम उन्हें उस (ज्ञान) में से सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है । अतः तुम उस (शिकार) में से खाओ जिसे वे तुम्हारे लिए रोक रखें और उस पर अल्लाह का नाम पढ़ लिया करो और अल्लाह का तक्रवा अपनाओ । निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है । 15।

आज के दिन तुम्हारे लिए समस्त पवित्र वस्तुएँ हलाल घोषित की गई हैं और अहले किताब का (पवित्र) भोजन भी तुम्हारे लिए हलाल है जबकि तुम्हारा भोजन उनके लिए हलाल है । और पवित्र मोमिन महिलायें भी और उन लोगों में से पवित्र महिलायें भी जिनको तुम से पहले पुस्तक दी गई, तुम्हारे लिए वैध हैं । जब कि तुम उन्हें निकाह में लाते हुए उनके हक्क महर अदा करो, न कि कुकर्म में पड़ते हुए और न ही गुप्त मित्र बनाते हुए । और जो ईमान ही का

لَكُمُ الْإِسْلَامُ دِينًا فَمَنِ اضطُرَّ فِي
مَحْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَافِ لِلشِّرِّ فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَحِلَّ لَهُمْ قُلْ أَحِلَّ لَكُمْ
الظَّلِيقَاتُ وَمَا عَلِمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مَا عَلِمْتُمُ اللَّهُ
فَكُلُّوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْنِكُمْ وَادْكُرُوا
أَسْمَرَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ②

الْيَوْمَ أَحِلَّ لَكُمُ الظَّلِيقَاتُ وَطَعَامُ
الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ
وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْسَنُونَ
الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُحْسَنُونَ مِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا أَتَيْتُمُوهُنَّ
أَجُورَهُنَّ مُحْصِنُونَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ
وَلَا مُتَخْلِفُ أَخْدَانٍ ۖ وَمَنْ يَكُفُرُ

इनकार कर दे उसका कर्म निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है और वह परलोक में घाटा पाने वालों में से होगा । ६।

(रुक् ١)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम नमाज़ की ओर जाने के लिए उठो तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को भी कुहनियों तक धो लिया करो । तथा अपने सिरों का मसह करो और टखनों तक अपने पाँव भी धो लिया करो । और यदि तुम जुम्बी हो तो (पूरा स्नान करके) भली-भांति शुद्ध-पूत हो जाया करो । और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा पर हो अथवा तुम में से कोई शौचादि करके आया हो अथवा तुमने स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित किया हो और इस अवस्था में तुम्हें पानी न मिले तो शुष्क पवित्र मिट्टी का तयम्मुम करो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लिया करो । अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले परन्तु चाहता है कि तुम्हें बहुत पवित्र करे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करे ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट किया करो । ७।

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके बचन को भी, जिसे उसने तुम्हारे साथ दृढ़ता से बाँधा, जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया और अल्लाह से डरो । निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बातें खूब जानता है । ८।

بِالْأَيَّمَانِ فَقَدْ حِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيهِكُمْ إِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرِءُوفُوسَكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ
جُنَاحًا فَاقْطَهِرُوا ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ
عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَكُمْ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَابِطِ
أَوْ لَمْ شُتَّمُ النِّسَاءُ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً
فَتَبَيَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا
بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيهِكُمْ فِي مَا يَرِيدُ
اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَاجٍ ۖ وَلَكُنْ
يُرِيدُ لِيُظْهِرَكُمْ وَلَيُتَمَّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ شَكُرُونَ ⑦

وَادْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِنْهَا
الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ ۗ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَأَطْخَنَا ۗ وَاثَقُوا اللَّهَ أَنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصَّدُورِ ⑧

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो । न्याय करो, यह तकन्वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो । जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । १।

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, (कि) उनके लिए क्षमादान और एक बहुत बड़ा प्रतिफल है । १०।

और वे लोग जो काफिर हुए और उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, यही हैं जो नरक वाले हैं । ११।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो । जब एक जाति ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह तुम्हारी ओर अपने (शारात के) हाथ लम्बे करेगी परन्तु उसने तुमसे उनके हाथों को रोक लिया । और अल्लाह से डरो और चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन भरोसा करें । १२। (रुक् २/६)

और निस्सन्देह अल्लाह बनी इसाईल से (भी) दृढ़ प्रतिज्ञा ले चुका है और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त कर दिए थे । और अल्लाह ने कहा निस्सन्देह मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुमने नमाज कायम की और ज़कात दी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُوْنُوا قُوْمٌ مِّنْ بَلَه
شَهَدَاءِ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَانٌ
قَوْمٌ عَلَى الْأَلْتَعْدِلَوْا إِغْدِلُوا هُوَ
أَقْرَبُ لِلشَّقْوَى وَاتَّقُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ①

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ②

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِإِيمَانِ
أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نَعْمَلَ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ
آيَدِيهِمْ فَكَفَ أَيْدِيهِمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا
اللَّهُ وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَسْتُوكُلِ الْمُؤْمِنُونَ ④

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِنْهَا قَبْنَى اسْرَاعِيلَ ⑤
وَبَعْثَنَا مِنْهُمْ أَنْفَعَ عَشَرَ تَقْبِيَّاً وَقَالَ
اللَّهُ إِنَّ مَعَكُمْ مُّلِئْكُمْ إِنَّ أَقْمَمْ الصَّلَاةَ
وَأَنْتُمْ الرَّكُوعَ وَأَمْشَمْ بِرَسْلِي

और मेरे रसूलों पर ईमान लाए और तुमने उनकी सहायता की और अल्लाह को उत्तम ऋण दिया तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयों को तुम से दूर कर दूँगा । और तुम्हें अवश्य ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करूँगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । अतः तुम में से जिसने इसके बाद इनकार किया तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग से भटक गया । 13।

अतएव उनके अपने वचन भंग करने के कारण हमने उन पर लान्त की और उनके दिलों को कठोर कर दिया । वे वाक्यों को उनके वास्तविक स्थानों से हटा देते थे और वे उसमें से जिसकी उन्हें खूब नसीहत की गई थी, एक भाग भूल गए । और उनमें से कुछ एक के सिवा तू सर्वदा उनकी किसी न किसी ख्यानत पर अवगत होता रहेगा । अतः उन्हें क्षमा कर और अनदेखा कर । निस्सन्देह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है । 14।

और उन लोगों से (भी) जिन्होंने कहा कि हम ईसाई हैं, हमने उनका दृढ़ वचन लिया । फिर वे भी उसमें से एक भाग भूला बैठे जिसकी उन्हें विशेष नसीहत की गई थी । अतः हमने उनके बीच क्यामत के दिन तक परस्पर शत्रुता और द्वेष निश्चित कर दिए हैं और अल्लाह अवश्य उनको उस (के कुपरिणाम) से अवगत करायेगा जो (उद्योग) वे बनाया करते थे । 15।

وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَفْرَضْتُمُ اللَّهَ قُرْضاً
حَسَا لَا كِفَرَنَ عَنْكُمْ سَيِّاتُكُمْ
وَلَا دُخْلَنَكُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَرُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ
صَلَّ سَوَاءَ الشَّيْئِلَ⁽¹⁵⁾

فِيمَا نَقْضَيْتُمْ مِّنْ أَقْرَبَهُمْ لَعْنَهُمْ وَجَعَلْنَا^ه
قُلُوبَهُمْ قَسِيَّةً يُكَحَّرُونَ الْكَلِمَعَنْ^ه
مَوَاضِعِهِمْ وَسُوَاحَطًا مَمَادِعَكَرْوَايَهُ^ه
وَلَا تَرَأَنَ تَطْلِيعَ عَلَى حَائِنَهُ مِنْهُمْ إِلَّا
قَلِيلًا مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ^ه إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ⁽¹⁶⁾

وَمِنَ الظَّالِمِينَ قَاتَلُوا إِنَّا نَصْرَى أَهْذَنَا^ه
مِنْ أَقْرَبَهُمْ فَنَسُوا حَاطَّا مَمَادِعَكَرْوَايَهُ^ه
فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَعْصَاءَ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يَتَبَيَّنُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ⁽¹⁷⁾

हे अहले किताब ! निस्सन्देह तुम्हारे पास हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने बहुत सी बातें, जो तुम (अपनी) पुस्तक में से छिपाया करते थे ख़बूब खोल कर वर्णन कर रहा है। और बहुत सी ऐसी हैं जिनको वह छोड़ देता है। निस्सन्देह तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक नूर आ चुका है और एक सुस्पष्ट पुस्तक भी ॥16॥

अलाह इसके द्वारा उन्हें, जो उसकी प्रसन्नता का अनुसरण करें, शांति के रास्तों की ओर मार्ग दर्शन करता है और अपने आदेश से उन्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल लाता है और उन्हें सीधे रास्ते की ओर हिदायत देता है ॥17॥

निस्सन्देह उन लोगों ने इनकार किया जिन्होंने कहा कि निश्चित रूप से अल्लाह ही मरियम का पुत्र मसीह है। तू कह दे कि कौन है जो अल्लाह के मुकाबले पर कुछ भी अधिकार रखता है, यदि वह निर्णय करे कि मरियम का पुत्र मसीह को और उसकी माता को तथा जो कुछ धरती में है, सब को नष्ट करे। और आसमानों और धरती की बादशाहत अल्लाह ही की है और उसकी भी जो उन दोनों के बीच है। वह जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ॥18॥

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يَبْرِئُ
لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُحْقِنُونَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ كَذِبْجَاءَ كُمْ مِنَ اللَّهِ
نُورٌ وَكِتَابٌ مِبِينٌ ﴿١٦﴾

يَهُدِّيُّ بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سَبِيلَ
السَّلِيمِ وَيَرْجِعُ جَهَنَّمَ مِنَ الظُّلْمَتِ إِلَى الثُّورِ
بِإِذْنِهِ وَيَهُدِّيُّهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٧﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَاتَلُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمُسِيَّخُ
ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَعْمَلُكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنَّمَا أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمُسِيَّخَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَأَمَّةً وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَيِّعًا وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٨﴾

और यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह की संतान हैं और उसके प्रिय हैं। तू कह दे, फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण अज्ञाब क्यों देता है ? नहीं, बल्कि तुम उनमें से जिनको उसने पैदा किया, केवल मनुष्य हो। वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है अज्ञाब देता है और आसमानों और धरती की बादशाहत अल्लाह ही की है और उसकी भी जो उन दोनों के बीच है। और अन्ततः उसी की ओर लौट कर जाना है। 19।

हे अहले किताब ! रसूलों के एक लम्बे अन्तराल के बाद तुम्हारे पास निस्सन्देह हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने (महत्वपूर्ण विषयों को) खोल कर वर्णन कर रहा है ताकि ऐसा न हो कि तुम यह कहो कि हमारे पास न कोई सुसमाचार दाता आया और न कोई सतर्ककारी आया। अतएव निस्सन्देह तुम्हारे पास सुसमाचार दाता और सतर्ककारी आ चुका है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 20। (रुकू 3/7)

और (याद करो) वह समय जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो जब उसने तुम्हारे बीच नबी बनाए और तुम्हें शासक बनाया और उसने तुम्हें वह कुछ दिया जो समग्र जगत में किसी और को नहीं दिया। 21।

وَقَاتِ الْيَمُودُ وَالنَّصْرَى نَحْنُ أَبْلُوُ اللَّهُ
وَأَجْبَاؤُهُ ۝ قُلْ فَلَمَ يَعْذِبْكُمْ
بِذُنُوبِكُمْ بِلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّنْ حَلَقٍ ۝
يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ ۝ وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ ⑯

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يَبْيَّنُ
لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرَّسُولِ أَنْ تَقُولُوا مَا
جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۝ فَقُدْ
جَاءَكُمْ بِشِيرٍ وَنَذِيرٍ ۝ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ ⑯

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَقُومُ إِذْ كُرِّوا
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ أَنْبِيَاءً
وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۝ وَاتَّكَمَ مَالَمْ يُؤْتَ
أَحَدًا مِنَ الْعَلَمِينَ ۝ ⑯

हे मेरी जाति ! पवित्र भूमि में प्रविष्ट हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख रखी है और अपनी पीठ दिखाते हुए मुड़न जाओ, अन्यथा तुम इस अवस्था में लौटोगे कि घाटा उठाने वाले होगे । 221

उन्होंने कहा, हे मूसा ! निश्चित रूप से उसमें अति निर्दीयी लोग रहते हैं और हम कदापि उसमें प्रविष्ट नहीं होंगे जब तक कि वे उसमें से न निकल जाएँ । अतः यदि वे उसमें से निकल जाएँ तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे । 231

उन लोगों में से जो डर रहे थे, दो ऐसे पुरुषों ने जिन को अल्लाह ने पुरस्कृत किया था कहा, इन पर मुख्य-द्वार से चढ़ाई करो । फिर जब तुम (एक बार) इस (द्वार) से प्रविष्ट हो गए तो तुम अवश्य विजयी होगे और अल्लाह पर ही भरोसा करो, यदि तुम मोमिन हो । 241

उन्होंने कहा, हे मूसा ! हम तो कदापि इस (बस्ती) में प्रवेश नहीं करेंगे जब तक वे इसमें उपस्थित हैं । अतः जा तू और तेरा रब्ब दोनों लड़ो हम तो यहीं बैठे रहेंगे । 251

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निस्सन्देह मैं किसी पर अधिकार नहीं रखता सिवाय अपने आप और अपने भाई के । अतः हमारे और दुराचारी लोगों के बीच अन्तर कर दे । 261

उस (अर्थात् अल्लाह) ने कहा, अतएव यह (पवित्र भूमि) उन पर निश्चित रूप से चालीस वर्षों तक हराम कर दी गई है।

يَقُومٌ ادْخَلُوا الْأَرْضَ الْمَقَدَّسَةَ الَّتِي
كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُو عَلَى أَذْبَارِكُمْ
فَتَنَقْلِبُوا حِسَرِينَ ④

قَالُوا يَا مُوسَى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَارِينَ
وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلُهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَخْلُونَ ⑤

قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الَّذِينَ يَحْافَظُونَ آنَعَمَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمْ الْبَابَ ۝ فَإِذَا
دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ عَلَيْهِنَّ ۝ وَعَلَى اللَّهِ
فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ⑥

قَالُوا يَا مُوسَى إِنَّا لَنْ نَدْخُلُهَا أَبْدَأْمَادَمُو
قِيَهَا فَإِذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّاهُمْ
قُعَدُونَ ⑦

قَالَ رَبِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَآخِي
فَأَفْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَسِيقِينَ ⑧

قَالَ فَإِنَّهَا مَحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً
يَتَعَمَّدُونَ فِي الْأَرْضِ ۝ فَلَا تَأْسِ عَلَى

वे धरती में मारे मारे फिरेंगे । अतः
दुराचारी लोगों पर कोई खेद न कर । 127।

(स्कू ४)

और उनके सामने सच्चाई के साथ
आदम के दो पुत्रों की घटना पढ़ कर
सुना । जब उन दोनों ने कुर्बानी पेश की
तो उनमें से एक की स्वीकार कर ली गई
और दूसरे से स्वीकार न की गई । उसने
कहा, मैं अवश्य तेरा वध कर दूँगा
(उत्तर में) उसने कहा, निस्सन्देह
अल्लाह मुत्तकियों की ही (कुर्बानी)
स्वीकार करता है । 128।

यदि तूने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया
ताकि तू मेरा वध करे (तो) मैं
(मुकाबले में) तेरी ओर अपना हाथ
बढ़ाने वाला नहीं, ताकि तेरा वध करूँ ।
निस्सन्देह मैं अल्लाह से डरता हूँ जो
समस्त लोकों का रब्ब है । 129।

निस्सन्देह मैं चाहता हूँ कि तू मेरे और
अपने पाप उठाए हुए लौटे । फिर तू
अग्निगामियों में से हो जाए और
अत्याचार करने वालों का यही प्रतिफल
होता है । 130।

तब उसके अंतःकरण ने उसके लिए
अपने भाई का वध करना अच्छा बना
कर दिखाया । अतएव उसने उसका वध
कर दिया और वह हानि उठाने वालों में
से हो गया । 131।

फिर अल्लाह ने एक कौवे को भेजा जो
धरती को (पंजों से) खोद रहा था ताकि
वह (अर्थात् अल्लाह) उसे समझा दे कि

الْقَوْمِ الْفَسِيقِينَ ④

وَأَنْلَى عَلَيْهِمْ بَأْبَنَى أَدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَبَا
قُرْبَانًا فَتَقْبَلَ مِنْ أَحَدٍ هُمْ مَا وَلَمْ يَتَقْبَلْ
مِنَ الْأَخْرِ ۝ قَالَ لَا فَتَلَكَ ۝ قَالَ إِنَّمَا
يَتَقْبَلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَقْبِلِينَ ⑤

لِئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتَلَنِي مَا أَنَا
بِبَاسِطٍ يَدِي إِلَيْكَ لَا قْتَلَكَ إِنِّي
أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ⑥

إِنَّمَا أَرِيدُ أَنْ تَبُوأْ بِإِثْنَيْ وَالْأَمْكَ
فَلَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّارِ وَذَلِكَ جَزْوًا
الظَّلِيمِينَ ⑦

فَطَوَعَتْ لَهُ نَفْسَهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ
فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑧

فَبَعَثَ اللَّهُ عُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ
لِيُرِيكَ كَيْفَ يُوَارِي سُوْءَةَ أَخِيهِ ۝ قَالَ

किस प्रकार वह अपने भाई के शव को ढाँप दे । वह बोल उठा, हाय ! क्या मैं इस बात से भी विवश हो गया कि इस कौवे जैसा ही हो जाता और अपने भाई का शव ढाँप देता । अतः वह पछताने वालों में से बन गया । 132।

इसी आधार पर हमने बनी इस्साइल पर यह अनिवार्य कर दिया कि जिसने भी किसी ऐसे व्यक्ति का वध किया जिसने किसी दूसरे की जान न ली हो अथवा धरती में उपद्रव न किया हो, तो मानो उसने समस्त मनुष्यों का वध कर दिया । और जिसने उसे जीवित रखा तो मानो उसने समस्त मनुष्यों को जीवित कर दिया और निस्सन्देह उनके पास हमारे रसूल खुले-खुले चिह्न ले कर आ चुके हैं । फिर उसके बाद भी उनमें से अधिकतर लोग धरती में सीमा का उल्लंघन करते हैं । 133।

निस्सन्देह उन लोगों का प्रतिफल, जो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में उपद्रव फैलाने का प्रयत्न करते हैं, यह है कि उन्हें कठोरता पूर्वक वध कर दिया जाए अथवा सूली पर चढ़ाया जाए या उनके हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएं अथवा उन्हें देश निकाला कर दिया जाए । यह उनके लिए संसार में अपमान और निन्दा का कारण है और परलोक में तो उनके लिए बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है । 134।

يُوَيْلَىٰ أَعْجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا
الْغُرَابِ فَأَوَارِيَ سَوْءَةَ أَخْيَٰ فَاصْبَحَ
مِنَ النَّدِيمِينَ ﴿١٣٢﴾

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِعَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادَ فِي
الْأَرْضِ فَكَانَ مَاقْتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ
أَحْيَاهَا فَكَانَمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا
وَلَقَدْ جَاءَنَّهُمْ رَسُولُنَا بِالْبُيُّنَتِ لَهُمْ أَنَّ
كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ
لَمْسِرِفُونَ ﴿١٣٣﴾

إِنَّمَا جَزَّ وَالَّذِينَ يَحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقْتَلُوا أَوْ
يُصْلَبُوا أَوْ تُقْطَعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ
مِنْ خَلَافٍ أَوْ يُنْقَوَمْ مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ
لَهُمْ خَرْجٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٣٤﴾

सिवाय उन लोगों के जो इससे पूर्व कि
तुम उन पर विजय प्राप्त कर लो,
प्रायश्चित कर लें। अतः जान लो कि ۱۳۵
अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 135।

(स्कू ۵)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह
का तक़वा अपनाओ और उसकी
निकटता प्राप्ति का माध्यम हूँढो और
उसके रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम
सफल हो जाओ । 136।*

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया
यदि वह सब कुछ जो धरती में है,
उनका होता बल्कि इसके अतिरिक्त इस
जैसा और भी (होता) ताकि वे उसे
क्यामत के दिन के अज़ाब से बचने के
लिए मुक्तिधन के रूप में दे सकते तो भी
उनसे वह स्वीकार न किया जाता । और
उनके लिए अत्यन्त पीड़ाजनक अज़ाब
(निश्चित) है । 137।

वे चाहेंगे कि अग्नि से निकल जाएँ,
जबकि वे कदापि उससे निकल न
सकेंगे । और उनके लिए एक ठहर
जाने वाला अज़ाब (निश्चित) है । 138।

और चोर पुरुष और चोर महिला, अतः
दोनों के हाथ काट दो उसके प्रतिफल
स्वरूप, जो उन्होंने कमाया (यह)

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا
عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ
الْوَسِيلَةَ وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ⑤

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَأْنَ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلُهُ مَعَهُ لِيُفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابٍ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا تَقْبِلَ مِنْهُمْ ۝ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑥

يُرِيدُونَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنَ التَّارِوْمَا هُمْ
يُخْرِجُونَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ⑦

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيهِمَا
جَزَاءً بِمَا كَسَبُوا نَكَالًا مِنَ اللَّهِ ۝ وَاللهُ

* अल्लाह की निकटता प्राप्ति के लिए माध्यम हूँढने से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं । अब सीधे अल्लाह तआला से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता जब तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को माध्यम के रूप में अपनाया न जाए । अज़ान के बाद की दुआ भी, जिसमें माध्यम (वर्सालः) का उल्लेख है, इसी विषयवस्तु का समर्थन करती है ।

अल्लाह की ओर से सीख स्वरूप (है) ।
और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
परम विवेकशील है । 39।*

अतः जो भी अपने अत्याचार करने के पश्चात् प्रायश्चित करे और सुधार करे तो निस्सन्देह अल्लाह उस पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुकेगा । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 40।

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही है जिसकी आसमानों और धरती की बादशाही है । वह जिसे चाहता है अज्ञाब देता है और जिसे चाहता है क्षमा कर देता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 41।

हे रसूल ! तुम्हे वे लोग दुःखी न करें जो इनकार में तीव्रता से बढ़ रहे हैं, अर्थात् वे जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान ले आए हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए थे । इसी प्रकार वे लोग भी जो यहूदी हुए । ये झूठ को बड़े ध्यान से सुनने वाले हैं (और) एक दूसरी जाति की बातों को भी, जो तेरे पास नहीं आए, बड़े ध्यानपूर्वक सुनते हैं । वे कलिमों (वाक्यों) को उनके उचित स्थानों पर रखे जाने के बाद

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ضُلُومِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ

يَتُوبُ عَلَيْهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪

الَّمْ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ يَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لَمَنْ
يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑫

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْرِنْكَ الظَّالِمُونَ
يَسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الظَّالِمِينَ قَاتَلُوا أَمْهَلًا
بِإِفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ
الظَّالِمِينَ هَادُوا سَمْعُونَ لِلْكَنْبِ
سَمْعُونَ لِقَوْمٍ أَخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ
يَحْرِفُونَ الْكَلِمَاتَ مِنْ بَعْدِ مَا أَضَعُوهُ

* आयतांश असू सारिकु वसू सारिकन्तु से अभ्यस्त और पेशावर पुरुष चोर और महिला चोर अभीष्ट हैं । निर्धनता के कारण जीवन यापन के लिए अत्यावश्यक खाने पीने की वस्तु की चोरी करना इस आदेश के अन्तर्गत नहीं । असह्य भूख के समय तो सूअर भी हलाल हो जाता है । भूखे का बिना अनुमति के कुछ खा लेना, कदापि उसको हाथ काटने योग्य अपराधी नहीं बनाता ।

परिवर्तित कर देते हैं। वे (अपने साथियों से) कहते हैं कि यदि तुम्हें यह दिया जाए तो स्वीकार कर लो और यदि तुम्हें यह न दिया जाए तो बच कर रहो। और जिसको अल्लाह परीक्षा में डालना चाहे तू उसके लिए अल्लाह से (बचाने का) कोई अधिकार नहीं रखता। यही वे लोग हैं कि अल्लाह कदापि नहीं चाहता कि उनके दिलों को पवित्र करे। उनके लिए संसार में अपमान है और परलोक में उनके लिए एक बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है। 142।

झूठ को बड़े ध्यान से सुनने वाले, बहुत बढ़-चढ़ कर अवैध धन खाने वाले। अतः यदि वे तेरे पास आएँ तो चाहे तू उनके बीच निर्णय कर अथवा उनसे विमुख हो जा। और यदि तू उनसे विमुख हो जाए तो वे कदापि तुझे कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे और यदि तू निर्णय करे तो उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है। 143।

और वे तुझे कैसे निर्णयकर्ता बना सकते हैं जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का आदेश मौजूद है। फिर वे उसके बाद भी पीठ फेर लेते हैं और ये लोग कदापि ईमान लाने वाले नहीं। 144।

(रुक् ٦)

निस्सन्देह हमने तौरात उतारी, उसमें हिदायत थी और नूर भी था। उससे नबी जिन्होंने अपने आप को (पूर्णतया

يَقُولُونَ إِنَّا أَوْتَيْنَا هَذَا فَحَذَّرُوهُ وَإِنَّمَا
تُؤْتَهُ فَاحْذَرُواۤ وَمَنْ يُرِدُ اللَّهُ فِتْنَةً
فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًاۤ أَوْ لِلَّهِ الْدِينُ
لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قَلْبَهُمْۤ لَهُمْ فِي
الْدُّنْيَا خَرْجٌۤ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌۤ

سَمِعُونَ لِلْكَنِبِ أَكْلُونَ لِلسُّخْتِۤ
فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ بِمَا يَعْلَمُ أَوْ
أَعْرِضْ عَنْهُمْۤ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْۤ
فَلَنْ يَضْرُوكَ شَيْئًاۤ وَإِنْ حَكَمْتَۤ
فَاحْكُمْ بِمَا يَعْلَمُ بِالْقُسْطِۤ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَۤ

وَكَيْفَ يُحِكِّمُونَكَ وَعِنْهُمُ الشُّورَةُۤ
فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ تُمَّ يَوْلَوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَۤ
وَمَا أَوْلَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَۤ

إِنَّا أَنْزَلْنَا الشُّورَةَ فِيهَا هَدَىٰ وَنُورٌۤ
يُحَكِّمُ بِهَا الْبَيْسُونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا إِلَيْنَا

अल्लाह का) आज्ञाकारी बना दिया था, यहूदियों के लिए निर्णय करते थे। और इसी प्रकार अल्लाह वाले लोग और विद्वान भी, इस कारण से कि उनको अल्लाह की पुस्तक की सुरक्षा का भार सौंपा गया था (निर्णय करते थे) और वे इस पर गवाह थे। अतः तुम लोगों से न डरो और मुझ से डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य के बदले न बेचो। और जो उसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो वही लोग काफिर हैं।¹⁴⁵¹

और हमने उन पर उस (अर्थात् तौरात) में अनिवार्य कर दिया था कि जान के बदले जान (होगी) और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और धावों का भी बराबर का बदला लेना होगा। अतः जो कोई (अपनी ओर से) दान स्वरूप उस (बदला) को क्षमा कर दे तो यह उसके लिए (उसके पापों का) प्रायश्चित बन जाएगा और जो कोई इसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो वही लोग अत्याचारी हैं।¹⁴⁶¹

और हमने उन्हीं के पद चिह्नों पर उनके पीछे मरियम के पुत्र ईसा को उसके पुष्टिकर्ता स्वरूप भेजा जो तौरात में से उसके सामने था। और हमने उसे इंजील प्रदान की जिस में हिदायत थी और नूर था। और वह उसकी पुष्टि करने वाली

هَادُوا وَالرَّبِّيُّونَ وَالْأَجْبَارُ بِمَا
إِسْتَخْفَطُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ
شَهَدَاءٌ فَلَا تَخْسُسُ النَّاسَ وَأَخْسُونَ
وَلَا تَشْتَرُوا إِلَيْقَ شَمَانًا قَلِيلًا وَمَنْ لَمْ
يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْكُفَّارُ^⑩

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا آنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ^١
وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ
وَالْأَذْنَ بِالْأَذْنِ وَالسِّنَ بِالسِّنِ^٢
وَالْجَرْوُعَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ
فَهُوَ كَفَارَةٌ لَهُ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ^③

وَقَفَّيْنَا عَلَى أَثَارِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مَصْدِيقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ^٣
وَأَتَيْنَاهُ الْأَنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ^٤
وَمَصْدِيقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ

थी जो तौरात में से उसके सामने था और मुत्कियों के लिए एक हिदायत और उपदेश (स्वरूप) था । 47।

अतः इंजील वाले उसके अनुसार निर्णय करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है । और जो उसके अनुसार निर्णय न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो यही लोग दुराचारी हैं । 48।

और हमने तेरी ओर सत्य पर आधारित पुस्तक उतारी है, उसकी पुष्टि करने वाली है जो (पहले की) पुस्तक में से उसके समक्ष है और उस पर निरीक्षक स्वरूप है । अतः उनके बीच उसके अनुसार निर्णय कर जो अल्लाह ने उतारा है । और जो तेरे पास सत्य आया है उसे छोड़ कर उनकी कामनाओं का अनुसरण न कर । तुम में से प्रत्येक के लिए हमने एक पंथ और एक धर्म बनाया है और यदि अल्लाह चाहता तो अवश्य तुम्हें एक ही समुदाय बना देता परन्तु वह उसके द्वारा जो उसने तुम्हें दिया, तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है । अतः तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे निकल जाओ । अल्लाह ही की ओर तुम सबका लौट कर जाना है । अतः वह तुम्हें उन बातों की वास्तविकता से अवगत कराएगा जिनमें तुम मतभेद किया करते थे । 49।

और (फिर ताकीद है) कि जो भी अल्लाह ने उतारा है उसके अनुसार उनके बीच निर्णय कर और उनकी

وَهُدًى وَمُوعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ⑯

وَلَيَحْكُمُ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكُمْ هُمُ الْفَسِيقُونَ ⑯

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مَصِّلِقاً لَّمَ بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَمِّنَا عَلَيْهِ فَلَا حُكْمَ بِيَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَبَعُ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۖ لِكُلِّ جَعْلَتْنَا مِنْكُمْ شُرُعَةً وَمِنْهَا جَاءَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أَمَّةً وَاحِدَةً وَلَكُنْ لَّيَبْلُووكُمْ فِي مَا أَنْكُرْ فَاسْتَقِوا بِالْحَيْثِ ۖ إِلَى اللَّهِ مُرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيَنْتَكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْلِقُونَ ⑯

وَأَنْ احْكُمْ بِيَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَبَعُ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرُهُمْ أَنْ

कामनाओं का अनुसरण न कर और उनसे बच कर रह कि (वे) उस शिक्षा के किसी भाग के सम्बन्ध में तुझे फसाद में डाल न दें, जो अल्लाह ने तेरी ओर उतारा । अतः यदि वे पीठ फेर लें तो जान ले कि अल्लाह अवश्य इरादा रखता है कि उनके कुछ पापों के कारण उन पर कोई विपत्ति डाल दे और निस्सन्देह लोगों में से बहुत से दुराचारी हैं । १०।

अतः क्या वे मूर्खतापूर्ण निर्णय (शैली) पसन्द करते हैं । और विश्वास करने वालों के लिए निर्णय करने में अल्लाह से बेहतर कौन हो सकता है ? । ११।

(रुकू ٧)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यहूदियों और ईसाइयों को मित्र न बनाओ । वे (परस्पर ही) एक दूसरे के मित्र हैं । और तुम में से जो उनसे मित्रता करेगा वह उन्हीं का होकर रहेगा । निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । १२।

अतः जिनके दिलों में रोग है तू उनको देखेगा कि वे उन लोगों में दौड़े फिरते हैं वे कहते हैं कि हमें डर है कि हम पर समय की कोई मार न पड़ जाए । अतः सम्भव है कि अल्लाह विजय (का दिन) ले आए अथवा अपना कोई निर्णय लागू कर दे तो उस पर जो वे अपने दिलों में छिपा रहे हैं, लज्जित हो जाएँ । १३।

और वे जो ईमान लाए कहते हैं, क्या यहीं वे लोग हैं जिन्होंने अपनी (ओर

يَقْتَنِيُوكَ عَنْ بَعْضٍ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ
إِلَيْكَ فَإِنْ تَوْلُوا فَاعْلَمُ أَنَّمَا يَرِيدُ اللَّهُ
أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضٍ ذُنُوبُهُمْ وَلَنَ
كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفِسْقُونَ ⑥

أَفَحُكْمُ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۝ وَمَنْ
أَحْسَنَ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُؤْقِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَخَذُوا الْيَهُودَ
وَالنَّصَارَى أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أُولَئِكَ بَعْضٍ
وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مُّنْكَرٌ فَإِنَّهُمْ مِّنْهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهِيءِ لِلنَّاسِ الْقُومَ الظَّلِيمِينَ ⑦

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرْضٌ
يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَحْنُ أَنْ
تُصِيبَنَا دَآءِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ
بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عَنْدِهِ فَيَصِبِّحُوا عَلَى
مَا أَسْرَوْا فِي أَنفُسِهِمْ ثَدِيمِينَ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهُؤُلَاءِ الَّذِينَ

से) अल्लाह की पक्की क़समें खाई थी कि निस्सन्देह वे तुम्हारे साथ हैं । उनके कर्म नष्ट हो गए । अतः वे घाटा उठाने वाले बन गए । 54।

أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُ
لَمْعَكُمْ طَحْطُتْ أَعْمَالَهُمْ فَاصْبَحُوا
خُسْرِينَ ⑩

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम में से जो अपना धर्म त्याग कर दे तो अल्लाह (उसके बदले) अवश्य एक ऐसी जाति ले आएगा जिससे वह प्रेम करता हो और वे उससे प्रेम करते होंगे । मोमिनों पर वे बहुत मेहरबान (और) काफिरों पर बहुत कठोर होंगे । वे अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे और किसी भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना का कोई भय न करते होंगे । यह अल्लाह का अनुग्रह है, वह जिसे चाहता है इसको देता है और अल्लाह बहुत समृद्धि प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 55।*

निस्सन्देह तुम्हारा मित्र अल्लाह और उस का रसूल और वे लोग हैं जो ईमान लाए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वे (अल्लाह के समक्ष) झुके रहने वाले हैं । 56।

और जो अल्लाह को और उसके रसूल को और उन लोगों को मित्र बनाये जो ईमान लाए, तो अल्लाह ही का गिरोह निश्चित रूप से विजयी होने वाला है । 57। (रुक् 8/12)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرِيدُ دِينَهُ
فَسَوْفَ يَأْتِيَ اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ
وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعْرَةٌ
عَلَى الْكُفَّارِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَا يُرِيدُونَ ذِلْكَ فَضْلُ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِ ⑪

إِنَّمَا وَلِيَكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوْةَ
وَهُمْ رَكِعُونَ ⑫

وَمَنْ يَسْأَلَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَلِيْبُونَ ⑬

* इस आयत में इस विचार का खण्डन है कि मुर्तद (धर्मत्यागी) का दंड मृत्यु है और कहा गया है कि यदि कोई तुम में से मुर्तद हो जाए तो अल्लाह तआला उसके बदले एक बड़ा गिरोह तुम्हें प्रदान करेगा जो मोमिनों से प्रेम करने वाले और काफिरों के प्रति कठोर होंगे ।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुम मोमिन हो तो जिन्हें तुम से पूर्व पुस्तक दी गई उन लोगों में से उनको जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास का पात्र और खेल तमाशा बना रखा है और काफिरों को अपना मित्र न बनाओ और अल्लाह से डरो । १५८।

और जब तुम नमाज़ के लिए बुलाते हो तो वे उसे उपहास और खेल-तमाशा बना लेते हैं । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि नहीं रखते । १५९।

तू कह दे, हे अहले किताब ! क्या तुम हम पर केवल इस लिए कटाक्ष करते हो कि हम अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो हमसे पहले उतारा गया था ईमान ले आए ? और सत्य यह है कि तुम में अधिकतर दुराचारी लोग हैं । १६०।

तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इससे भी अधिक बुरी चीज़ का समाचर दूँ जो (तुम्हारे लिए) अल्लाह के पास प्रतिफल स्वरूप है ? वह जिस पर अल्लाह ने ला'नत की और उस पर क्रोधित हुआ और उनमें से कुछ को बन्दर और सूअर बना दिया, जब कि उन्होंने शैतान की उपासना की । यही लोग पद की दृष्टि से निकृष्ट और सीधे राह से सर्वाधिक भटके हुए हैं । १६१।

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हालाँकि वे इनकार के साथ ही (तुम्हारे अन्दर)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْخِدُوا الَّذِينَ
إِنَّهُمْ دُنْدُبُونَ هُرُوا وَلَعْبًا مِّنَ الظَّفَرِ
أُولَئِنَّا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارُ
أُولَئِيَاءٌ وَّأَنَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ⑩

وَإِذَا نَادَيْتُمُ إِلَى الصَّلَاةِ إِنَّهُمْ هَا هَرُوقًا
وَلَعْبًا ذُلِّكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ⑪

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنْ أَلَا
أَنْ أَمْنَى بِاللَّهِ وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْنَا وَمَا أَنْزَلَ
مِنْ قَبْلِهِ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فُسِّقُونَ ⑫

قُلْ هَلْ أَتَتْكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذُلِّكَ مَنْتُوبَةً
عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَغَضَبُ عَلَيْهِ
وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ
الظَّاغُوتَ طَوْلِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَصْلَى
عَنْ سَوَاء السَّيِّلِ ⑬

وَإِذَا جَاءَهُمْ كُمْ قَالُوا أَمْنَأَ وَقَدْ دَحَلُوا
بِالْكُفَّارِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

प्रविष्ट हुए थे और उसके साथ ही बाहर निकल गए । और अल्लाह उसको सबसे अधिक जानता है जो वे छिपाते हैं । 162। और तू उनमें से अधिकतर को पापों और अनियमितताओं तथा हराम के धन को खाने में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर प्रयत्न करता हुआ पाएगा । जो वे कर्म करते हैं, निस्सन्देह बहुत ही बुरा है । 163।

क्यों न अल्लाह वालों ने और (अल्लाह की वाणी की सुरक्षा पर नियुक्त) विद्वानों ने उन्हें पाप की बात कहने और हराम खाने से रोका ? निस्सन्देह बहुत ही बुरा है, जो वे किया करते हैं । 164।

और यहूदियों ने कहा, अल्लाह का हाथ बन्द किया हुआ है । (वास्तव में) स्वयं उन्हीं के हाथ बन्द किए गए हैं और जो उन्होंने कहा उसके कारण उन पर ला'नत डाली गई है । बल्कि उसके तो दोनों हाथ खुले हैं । वह जैसे चाहे खर्च करता है । और जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया, वह उनमें से बहुतों को विद्रोह और इनकार करने में निश्चित रूप से बढ़ा देगा । और हमने उनके बीच क़्यामत के दिन तक शत्रुता और द्वेषभाव डाल दिए हैं । जब भी वे युद्ध की अग्नि भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है । और वे धरती में उपद्रव फैलाने के लिए दौड़े फिरते हैं और अल्लाह उपद्रव फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता । 165।

بِمَا كَانُوا يَكْسِمُونَ ⑩

وَتَرَى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَسَارِعُونَ فِي الْأُفُورِ
وَالْعَدُوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّخْتَ طِبْسَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑪

لَوْلَا يَئِمُّهُمُ الرَّبِّيْنِيُّونَ وَالْأَحْجَارُ عَنْ
قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّخْتَ طِبْسَ
مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ⑫

وَقَاتَ الْيَهُودِ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةً عَلَى
آيَدِيهِمْ وَلَعْنَوْا بِمَا قَاتَلُوا مُلْيَدَهُ
مَبْسُوطَتِنْ لَيْتَفَقُ كَيْفَ يَسَاءُ
وَلَيَزِيدَنْ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَمَّا أُنْزَلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ طُغِيَانًا وَكُفْرًا وَأَلْقَيْنَا
بِيَمِّهِمُ الْعَدَاؤَ وَالْبُغْضَاءُ إِلَى يَوْمِ
الْقِيَامَهُ كُلُّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ
أَطْفَاهَا اللَّهُ وَيَسِّعُونَ فِي الْأَرْضِ
فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ⑬

और यदि अहले किताब ईमान ले आते और तक्रात को अपनाते तो हम अवश्य उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और हम अवश्य उन्हें नेमतों वाले स्वर्गों में प्रविष्ट कर देते । 166।

और यदि वे तौरात और इंजील (की शिक्षा) को तथा जो कुछ उनकी ओर उनके रब्ब की ओर से उतारा गया, स्थापित करते तो वे अपने ऊपर से और अपने पाँव के नीचे (धरती) से भी खाते। उनमें से ही एक समुदाय मध्यमार्गी है जबकि उनमें से बहुत हैं कि जो वे करते हैं वह बहुत बुरा है । 167।

(रुकू ٩)
(उत्तर)

हे रसूल ! (उसे) भली-भाँति पहुँचा दे जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है । और यदि तूने ऐसा न किया तो मानो तूने उसके संदेश को नहीं पहुँचाया । और अल्लाह तुझे लोगों से बचाएगा । निस्सन्देह अल्लाह काफिर लोगों को हिदायत नहीं देता । 168।

कह दे, हे अहले किताब ! तुम किसी बात पर भी नहीं जब तक तौरात और इंजील को तथा उसे कायम न करो जो तुम्हारी ओर तुम्हारे रब्ब की ओर से उतारा गया है । और जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है वह उनमें से बड़ी संख्या को निश्चित रूप से विद्रोह और इनकार में बढ़ाएगा । अतः तू काफिरों पर खेद न कर । 169।

وَلَوْاَنَّ أَهْلَ الْكِتَبِ أَمْنُوا وَأَنْقُوا
لَكَفَرُنَا عَنْهُمْ سَيِّاتِهِمْ وَلَا دُخْلُنَّهُمْ
جَهَنَّمَ التَّعْيِيرُ ⑯

وَلَوْاَنَّهُمْ أَقَامُوا الشَّوْرَى وَالْأَنْجِيلَ وَمَا
أَنْزَلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رِبِّهِمْ لَا كَلُوا مِنْ
فُوقِهِمْ وَمَنْ تَحْتَ أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ
أَمْمَةٌ مُقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ
مَا يَعْمَلُونَ ⑯

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغُ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ
رِبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ
رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكُفَّارِ ⑯

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَبِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ عَلَى
تَقْيِيمِهِمَا الشَّوْرَى وَالْأَنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلَ
إِلَيْكُمْ مِنْ رِبِّكُمْ وَلَيَزِيدُنَّ كَثِيرًا
مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رِبِّكَ طَغْيَانًا
وَكُفَّارًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكُفَّارِ ⑯

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी और साबी और ईसाई हुए, जो भी (उनमें से) अल्लाह पर और अंतिम दिवस पर ईमान लाया और नेक कर्म किए, उन्हें कोई भय नहीं और वे कोई शोक नहीं करेंगे । 70।

निस्सन्देह हमने बनी-इस्लाम से दृढ़ वचन लिया और उनकी ओर कई रसूल भेजे । जब भी कोई रसूल ऐसी चीज़ के साथ उनके पास आता जिसको उनके दिल पसन्द नहीं करते थे, तो एक पक्ष को तो वे झुठला देते थे और एक पक्ष का अत्याचार पूर्वक विरोध करते थे । 71।

और उन्होंने सोच लिया कि कोई उपद्रव नहीं होगा । अतएव वे अंधे और बहरे हो गए । इसके पश्चात् अल्लाह प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए उन पर झुका । फिर भी उनमें से अधिकतर लोग अंधे और बहरे ही रहे । और जो वे करते थे अल्लाह उस पर गहरी नज़र रखने वाला था । 72।

निस्सन्देह उन लोगों ने इनकार किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही मरियम का पुत्र मसीह है । जबकि मसीह ने तो यही कहा था, हे बनी इस्लाम ! अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । निस्सन्देह वह जो अल्लाह का साज्जीदार ठहराए उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना अग्नि है । और अत्याचारियों के कोई सहायक नहीं होंगे । 73।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالظَّبِيئُونَ
وَالْتَّصْرِي فِيْ مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَعَوْلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَخْرُجُونَ ④

لَقَدْ أَخْدَنَا مِيقَاتٍ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ رُسُلًا مُّكَلَّمًا جَاءَهُمْ مُّرْسُولٌ بِمَا
لَا تَهْوَى أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَبُوا
وَفَرِيقًا يَقْتَلُونَ ⑤

وَحِسِبُوا أَلَا يَكُونُ فِتْنَةٌ فَعَمِّلُوا
وَصَنْوَاعَمْ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمِّلُوا
وَصَنْوَاعَمْ كَثِيرٌ مِّنْهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ بِمَا
يَعْمَلُونَ ⑥

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمُسِيحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمُسِيحُ يَسُوعُ
إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ
مَنْ يُشْرِكُ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ
وَمَا أُولَئِكَ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
أَنصَارٍ ⑦

निस्सन्देह उन लोगों ने (भी) इनकार किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में से एक है। हालाँकि एक ही उपास्य के अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं। और जो वे कहते हैं यदि उससे न रुके तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया उन लोगों को पीड़ाजनक अज़ाब अवश्य आ पकड़ेगा। 174।

अतः क्या वे अल्लाह की ओर प्रायश्चित्त करते हुए झुकते नहीं और उससे क्षमा नहीं माँगते। जबकि अल्लाह बहुत ही क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 175।

मरियम का पुत्र मसीह एक रसूल ही तो है। उससे पहले जितने रसूल थे सब के सब गुजर चुके हैं। और उसकी माँ सत्यवती थी। दोनों भोजन किया करते थे। देख, किस प्रकार हम उनके लिए अपनी आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं। फिर देख, वे किधर भटकाए जा रहे हैं। 176।*

तू कह दे, क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर उसकी उपासना करते हो जो तुम्हें न हानि पहुँचाने पर सक्षम है और न लाभ

لَقْدُ كَفَرَ الظِّلِّيْنَ بِقَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثٌ
ثَلَثَةٌ وَمَا مِنَ الْإِلَهِ إِلَّا إِلَهٌ وَاحِدٌ
وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمْسَسَنَّ
الظِّلِّيْنَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑩

أَفَلَا يَتَبَوَّءُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ هُنَّ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑪

مَا الْمُسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ
خَلَّتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَآمَّهُ صَلَيْقَةٌ
كَانَ يَأْكُلُنَّ الطَّعَامَ أَنْظُرْ كَيْفَ
نُبَيْنَ لَهُمُ الْأَيْتِ فَمَأْنَطْرَأْنِيْ يُؤْفَكُونَ ⑫

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ

* इस आयत में भी निश्चित रूप से हजरत ईसा अलै. की मृत्यु का वर्णन है। क्योंकि शब्द क़द खलत (सब गुजर चुके) जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, किसी के गरस्ते पर से गुजरने के लिए नहीं कहा जाता बल्कि मृत्यु पर बोला जाता है। इसकी और दलील यह दी गई है कि वह और उनकी माँ दोनों भोजन किया करते थे अर्थात् अब वे दोनों भोजन नहीं करते क्योंकि अब वे दोनों मर चुके हैं। यदि हजरत मसीह अलैहिस्सलाम ने आसमान की ओर उठाये जाने के कारण भोजन करना छोड़ा हो, तो हजरत मरियम तो आकाश पर नहीं चढ़ीं, उन्होंने फिर भोजन करना क्यों छोड़ दिया? स्पष्ट है, मृत्यु के कारण। अतः हजरत मसीह भी अब अपनी माँ की भाँति इसलिए भोजन नहीं करते क्योंकि वह भी मर चुके हैं।

الْعَلِيُّمُ^⑦

पहुँचाने पर । और अल्लाह वह है, जो बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 77।

तू कह दे, हे अहले किताब ! तुम अपने धर्म में अनुचित अतिशयोक्ति न करो और ऐसे लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो पहले पथभ्रष्ट हो चुके हैं और उन्होंने और भी बहुतों को पथभ्रष्ट किया और वे संतुलित रास्ते से भटक गए । 78। (रुक् 10 14)

वनी इस्लाइल में से जिन लोगों ने इनकार किया उन पर दाऊद की जुबान से और मरियम के पुत्र ईसा की जुबान से भी ला'नत ढाली गयी । उनके अवज्ञाकारी हो जाने के कारण और सीमा का उल्लंघन करने के कारण ऐसा हुआ । 79। वे उस बुराई से रुकते नहीं थे जो वे करते थे । जो वे किया करते थे निश्चित रूप से बहुत बुरा था । 80।

तू उनमें से बहुतों को देखेगा कि वे उन को मित्र बनाते हैं जो काफिर हुए । निस्सन्देह बहुत ही बुरा है वह जो उनकी जानों ने अपने लिए आगे भेजा है, कि अल्लाह उन पर खूब नाराज़ हो गया और वे अज्ञाब में बहुत लम्बे समय तक रहने वाले हैं । 81।

और यदि वे अल्लाह पर और इस नवी पर तथा उस पर ईमान रखते जो इसकी ओर उतारा गया तो उन (काफिरों) को मित्र न बनाते ।

قُلْ يَا أَكْفَالَ الْكِتَابِ لَا تَعْلُوْا فِي دِينِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَنْتَبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ فَذَلِكُمْ
صَلَوَاتُهُمْ قَبْلُ وَأَصْلُوْا كَثِيرًا وَصَلَوَاتُهُمْ
عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ^⑧

لَعْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى
لِسَانِ دَاؤَدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ طَذِلَكَ بِمَا
عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ^⑨

كَانُوا لَا يَتَّهَوُنَ عَنْ مُنْكِرٍ فَعَلُوْهُ
لَيْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ^⑩
تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَسْوَلُونَ الَّذِينَ
كَفَرُوا طَلَبَ لَيْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ
أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي العَذَابِ
هُمْ خَلِدُونَ^⑪

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ
وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَا أَتَّخَذُوهُمْ أَوْ لِيَأْءِ

परन्तु उनमें से बड़ी संख्या दुराचारियों
की है 182।

निसन्देह तू मोमिनों से शत्रुता करने में
सबसे अधिक कटूर यहूदियों को और
उनको पाएगा जिन्होंने शिर्क किया ।
और निसन्देह तू मोमिनों से प्रेम करने
में अधिक निकट उन लोगों को पाएगा
जिन्होंने कहा कि हम ईसाई हैं । यह इस
कारण है कि उनमें से अनेक साधक और
वैराग्य अपनाने वाले हैं और इसलिए कि
वे अहंकार नहीं करते । 183।

وَلِكُنْ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فِي سَقْوَنَ ⑥

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ الظَّالِمِينَ عَذَابَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا
أَيْمُونَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۝ وَلَتَجِدَنَّ
أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَاتَلُوا
إِنَّا نَصْرُى ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسْيَسِينَ
وَرُهْبَانًا ۝ وَآتَهُمْ لَا يَسْتَكِرُونَ ⑦

और जब वे उसे सुनते हैं जो इस रसूल की ओर उतारा गया, तो तू देखेगा कि उनकी आँखें इसलिए आँसू बहाने लगती हैं कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया । वे कहते हैं, हे हमारे रब ! हम ईमान लाए । अतः हमें गवाही देने वालों में लिख ले । 184।

और हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह और उस सत्य पर ईमान न लाएं जो हमारे पास आया । जबकि हम यह अभिलाषा रखते हैं कि हमारा रब हमें नेक लोगों के समूह में सम्मिलित करेगा । 185।

अतः अल्लाह ने इस आधार पर जो उन्होंने कहा, उनको पुण्यफल स्वरूप ऐसे स्वर्ग दिए जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे सदा उनमें रहने वाले हैं और उपकार करने वालों का यही प्रतिफल हुआ करता है । 186।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, यही लोग हैं जो नरक वाले हैं । 187। (रुक् 11)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! उन पवित्र वस्तुओं को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कर दी हैं, हराम न ठहराया करो और सीमा का उल्लंघन न करो । निस्सन्देह अल्लाह सीमा लांघने वालों को पसन्द नहीं करता । 188।

और जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है उसमें से हलाल (और) पवित्र खाया करो और अल्लाह का

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَيَ الرَّسُولِ
تَرَى أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا
عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَمْنَا
فَاقْتُلُنَا مَعَ الشَّهِيدِينَ ④

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنْ
الْحَقِّ وَنَطَعَ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ
الْقَوْمِ الصَّلِحِينَ ⑤

فَأَئَ أَبْهَمَ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ حَلِيلِينَ فِيهَا وَذِلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ⑥

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ
أَصْحَبُ الْجَنَّمِ ⑦
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا طَبِيبَتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِلِينَ ⑧

وَلَكُلُّوْمَى رَزْقَكُمْ اللَّهُ حَلَّا طَبِيبَا ۝

तक्कवा अपनाओ जिस पर तुम ईमान लाते हो । 89।

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ की क़समों पर नहीं पकड़ेगा परन्तु वह तुम्हें उन पर पकड़ेगा जो तुमने क़समें खा कर वायदे किए हैं । अतः इसका प्रायश्चित दस दरिद्रों को (ऐसा) भोजन कराना है, जो मध्यम दर्जे का तुम अपने घर बालों को भोजन कराते हो । अथवा उन्हें कपड़े पहनाना है या एक दास को स्वतन्त्र करना है । और जो इसका सामर्थ्य न रखे तो तीन दिन के रोजे (उसको रखने होंगे) । यह तुम्हारी प्रतिज्ञा का प्रायश्चित है जब तुम क़सम खा लो । और (जहाँ तक वश चले) अपनी क़समों की सुरक्षा किया करो । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो । 90।*

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! मतवाला करने वाली चीज़ और जुआ खेलना और मूर्ति (पूजा) तथा तीर चलाकर भाग्य आज़माना, निस्सन्देह ये सब अपवित्र शैतानी कर्म हैं । अतः इनसे पूर्णतया बचो ताकि तुम सफल हो जाओ । 91।

शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुआ के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष उत्पन्न कर दे और

وَأَتَقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑥

لَا يَوْا خِذْكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ
وَلَكُنْ يُؤْخِذْكُمْ بِمَا عَفَدْتُمْ
الْأَيْمَانَ ۝ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسِكِينٍ مِّنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ
أَهْلِيْكُمْ أَوْ كِسْوَتِهِمْ أَوْ تَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ ۝ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيمَرْ شَلَفَةً
آيَامِ ۝ ذَلِكَ كَفَارَةً أَيْمَانِكُمْ إِذَا
حَافَثُتُمْ ۝ وَاحْفَظُوا أَيْمَانِكُمْ ۝ كَذَلِكَ
يَبْيَسْ اللَّهُ لَكُمْ أَيْمَانِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْأَصَابُ وَالْأَزْلَامُ رُجُسٌ مِّنْ
عَمَلِ الشَّيْطَنِ فَاجْتَنِمُوهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ⑧

إِنَّمَا يَرِيدُ الشَّيْطَنُ أَنْ يُؤْقِعَ بَيْنَكُمْ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَعْضَاءِ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

* व्यर्थ की क़सम का तात्पर्य यह है कि दैनिक वार्तालाप में अल्लाह क़सम कहना या खुदा की क़सम का मुहावरा जिसे कुछ लोग अभ्यासतः प्रयोग करते हैं, इस पर अल्लाह तआला की ओर से कोई पकड़ नहीं होगी । परन्तु यदि सोच समझ कर झूठी क़सम खाई जाए तो इस पर पकड़ होगी ।

तुम्हें अल्लाह के स्मरण और नमाज़ से रोके रखे । तो क्या तुम रुक जाने वाले हो ? 1921

और अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और (बुराई से) बचते रहो । और यदि तुम पीठ फेर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट संदेश पहुँचाने (की ज़िम्मेदारी) है 1931

वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उन पर इसमें कोई पाप नहीं जो वे खाते हैं, इस शर्त के साथ कि वे तकब्बा अपनाएँ और ईमान लाएँ और नेक कर्म करें । फिर (और अधिक) तकब्बा अपनाएँ तथा (और अधिक) ईमान हैं । पुनः और भी तकब्बा अपनाएँ और उपकार करें । और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है 1941

(रुक् ١٢)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह कुछ ऐसे शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथों और भालों की पहुँच होगी ताकि अल्लाह उन लोगों को स्पष्ट करे जो एकान्त में उससे डरते हैं । अतः जो उसके बाद सीमा का उल्लंघन करेगा उसके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) होगा 1951

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम एहराम की अवस्था में हो शिकार न किया करो और तुम में से जो उसे जान बूझ कर मारे तो उसका दंड यह है कि

وَيُصَدِّدَ كُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الْمُسْلِمَةِ
فَهُلْ أَنْتُمْ مُسْتَهْوَنُونَ ④

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ
وَاحْذَرُوا ۝ فَإِنْ تَوَلَّنَمْ قَاعِلَمُوا
أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ⑤

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
جَمَاعٌ قِيمًا طَعَمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ
اتَّقَوْا وَأَخْسَنُوا ۝ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَهَيْتُمْ كُمْ اللَّهُ يُشْعِي
مِنَ الصَّيْدِ تَسَأَلُهُ أَيْدِيهِ كُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لَيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۝ فَمَنْ
أَعْتَدَنِي بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ۝ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ

वह खाना का'बा तक पहुँचने वाली ऐसी कुर्बानी पेश करे जो उस जानवर के समान हो जिसे उसने मारा है, जिसका निर्णय तुम में से दो न्याय-कर्ता करें। या फिर इसका प्रायश्चित दरिद्रों को भोजन कराना है। या फिर उसके समान रोजे (खेड़े) ताकि वह अपने कर्म का कुपरिणाम भोगे। जो गुजर चुका अल्लाह ने उसे क्षमा किया है। फिर जो दोबारा करेगा तो अल्लाह उससे प्रतिशोध लेगा और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला है। 196।

तुम्हारे लिए समुद्री शिकार करना और उसको खाना हलाल कर दिया गया है। यह तुम्हारे और यात्रियों के लाभ के लिए है। और तुम पर स्थल भाग पर शिकार उस समय तक हराम कर दिया गया है जब तक तुम एहराम बाँधे हुए हो। और अल्लाह का तक़वा अपनाओ जिस की ओर तुम एकत्रित किए जाओगे। 197।

अल्लाह ने सम्माननीय गृह का'बा को और सम्माननीय महीने को और कुर्बानी के पशुओं को और कुर्बानी के चिह्न स्वरूप पट्टे पहनाए हुए पशुओं को लोगों के (धार्मिक और आर्थिक) दृढ़ता का साधन बनाया है। यह (चेतावनी) इस लिए है कि तुम जान लो कि अल्लाह उसे खूब जानता है जो भी आसमानों में है और जो धरती में है। और यह कि अल्लाह प्रत्येक विषय का खूब ज्ञान रखने वाला है। 198।

مُتَعِمِّدًا فَجَرَأَ مِثْلُ مَا قَاتَلَ مِنَ الْتَّعْرِ
يَحْكُمُ بِهِ ذَوَاعْدُلٍ مِنْكُمْ هَذِهِ أَبْلَغُ
الْكَعْبَةَ أَوْ كَفَارَةً طَعَامَ مَسِكِينٍ أَوْ
عَدْلٌ ذَلِكَ صِيَامًا مَالِيْدُوقَ وَبَالْأَمْرِ
عَفَّا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ
اللَّهُمَّ إِنْ هُنْ بِغَرِيرٍ دُوَائِقَامٍ ⑤

أَحَلَ لَكُمْ صَيْدَ الْبَحْرِ وَطَعَامَةَ مَتَاعًا
لَكُمْ وَلِلسَّيَارَةَ وَحَرَمٌ عَلَيْكُمْ صَيْدُ
الْبَرِّ مَا دَفَتَمْ حُرْمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُخْرَجُونَ ⑥

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرُ الْحَرَامُ وَالْهُدَى
وَالْقَلَابِدُ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ
يَكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِ ⑦

जान लो कि अल्लाह पकड़ करने में बहुत कठोर है और यह भी कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 99।

रसूल पर भली-भाँति संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त और कोई ज़िम्मेदारी नहीं ।

और अल्लाह जानता है जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो । 100।

तू कह दे कि अपवित्र और पवित्र समान नहीं हो सकते, चाहे तुझे अपवित्र की अधिकता कैसी ही पसन्द आए । अतः हे बुद्धिमानो ! अल्लाह का तक़वा अपनाओ ताकि तुम सफल हो जाओ । 101। (रुक् ١٣)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! ऐसी वस्तुओं के बारे में प्रश्न न किया करो कि यदि उन्हें तुम पर प्रकट कर दिया जाए तो वे तुम्हें कष्ट में डाल दें । और यदि तुम उन के बारे में प्रश्न करोगे जब कुर्�आन उत्तर रहा हो तो वे तुम पर खोल दी जाएँगी । अल्लाह ने उनसे आँख फेर ली है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत सहनशील है । 102।*

तुम से पहले भी एक जाति ने ये बातें पूछी थीं । फिर वे उनके इनकार करने वाले हो गए । 103।

* बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनको स्पष्ट रूप से निषिद्ध नहीं ठहराया गया और यह मानव जाति के लिए एक कृपा स्वरूप है और स्वयं अपने दिमाग से परिस्थिति के अनुसार निर्णय करने की छूट है । परन्तु कुछ लोगों का यह स्वभाव था कि वहह अवतरण के समय उल्टे-पुल्टे प्रश्न करते रहते थे । उस समय आवश्यक था कि उनका उत्तर दिया जाता अन्यथा वे यह समझते कि जो प्रश्न मन में उत्पन्न होते हैं, वहह उनका उत्तर नहीं देती । इससे अगली आयत में अर्तीत की एक जाति का उल्लेख है जिसने इसी प्रकार वहह उत्तरने के समय प्रश्न करके अपने आप को कठिनाई में डाल दिया था ।

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ
اللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑩

مَا عَلِيَ الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ مَا يَعْلَمُ
مَا تَبَدُّلُونَ وَمَا كَثُمُونَ ⑪

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَيْرُ وَالظَّيْرُ وَلَوْ
أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَيْرِ فَاتَّقُوا اللَّهَ
يَا أُولَئِكَ لَعْلَكُمْ تَفْلِحُونَ ⑫

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْكُنُوا عَنْ أَشْيَاءِ
إِنْ تَبَدَّلْكُمْ سُوْكُمْ ۝ وَإِنْ تَسْكُنُوا عَنْهَا
جِئْنَ يَنْزَلُ الْقُرْآنَ تَبَدَّلْكُمْ ۝ عَفَا اللَّهُ
عَنْهَا ۝ وَاللَّهُ عَفُورٌ حَلِيمٌ ⑬

فَذَسَّأَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا
بِهَا كُفَّارِينَ ⑭

अल्लाह ने न तो कोई बहीरः बनाया है, न साइबः, न वसीलः और न हाम (बनाया है) । परन्तु वे लोग जिन्होंने इनकार किया, अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं और उनमें से अधिकतर समझ नहीं रखते । 104।*

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी ओर आओ और रसूल की ओर आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही बहुत पर्याप्त है जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया । (उनसे पूछो कि) क्या इस दशा में भी (पर्याप्त है) जब कि उनके पूर्वज कुछ भी नहीं जानते थे और न हिदायत प्राप्त करते थे ? । 105।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम अपनी ही जानों के उत्तरदायी हो । जो पथभ्रष्ट हो गया तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा यदि तुम हिदायत पर रहो । अल्लाह ही की ओर तुम सब का

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحْيٍ رِّئِسًا لَا سَائِبٌ إِلَّا وَلَا
وَصِيلَةٌ وَلَا حَامِلٌ وَلِكِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذَبَ
وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ④

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ
وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسِبَنَا مَا وَجَدْنَا
عَلَيْنَا أَبَاءُنَا ۖ أَوْلَوْ كَانَ أَبَاؤُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ④

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْتُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ
لَا يَصْرُكُمْ مَنْ صَلَّى إِذَا اهْتَدَيْتُمْ
إِلَى اللَّهِ مَرْجَعُكُمْ جَمِيعًا فَيَنْسِكُمْ

* बहीरः - अरबी शब्दकोश के अनुसार बहरुल् बईर का अर्थ है मैंने ऊंट के कान को अच्छी तरह फाड़ दिया । (मुफरदात) बहीरः उस ऊंटनी को कहते हैं जिसके कान फाड़ दिए गए हों । इस्लाम से पूर्व यह रीती थी कि जब कोई ऊंटनी दस बच्चे दे चुकती तो उसके कान छेद दिये जाते और उसे स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता था । न तो उस पर कोई सवार होता और न कोई उस पर बोझ लादता था (मुफरदात) ।

साइबः - वह ऊंटनी जो चरागाह में खुली छोड़ दी जाए । न जलकुँड से उसे रोका जाए और न चारे से । इस्लाम से पूर्व लोग ऐसा उस समय करते थे जब कोई ऊंटनी पाँच बच्चे दे चुकी होती ।

वसीलः - इस्लाम से पूर्व एक रीति यह भी थी कि जब बकरी नर और मादा इकट्ठे दो बच्चे देती तो उन को ज़िबह नहीं किया जाता था ताकि एक के ज़िबह होने से दूसरे को कष्ट न हो ।

हाम - वह सांड जिसकी नस्ल से दस बच्चे हो जाएँ उसको छोड़ दिया जाता था । न उस पर कोई सवार होता था और न उससे और कोई काम लिया जाता था तथा उसे चरागाह और पानी से नहीं रोका जाता था ।

लौट कर जाना है। फिर वह तुम्हें उससे सूचित करेगा जो तुम किया करते थे। 106।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो! जब तुम में से किसी तक मृत्यु आ पहुँचे तो तुम्हारे बीच गवाही के रूप में वसीयत (इच्छापत्र लेखन) के समय अपने में से दो न्यायपरायण साक्षियों की नियुक्ति आवश्यक है। हाँ यदि तुम धरती पर यात्रा कर रहे हो और तुम पर मृत्यु का संकट आ जाये तो अपनों के स्थान पर परायों में से दो गवाह बना सकते हो। तुम उन दोनों को किसी नमाज़ के बाद रोक लो। और यदि तुम्हें संदेह हो तो वे दोनों अल्लाह की क़सम खा कर यह प्रतिज्ञा करें कि हम इस (गवाही) के बदले कदापि कोई कीमत वसूल नहीं करेंगे चाहे कोई (हमारा) निकट संबंधी ही क्यों न हो। और हम अल्लाह की निर्धारित की हुई गवाही को नहीं छिपाएँगे अन्यथा हम तो अवश्य पापियों में से हो जाएँगे। 107।

फिर यदि यह ज्ञात हो जाए कि वे दोनों पाप में पड़ गये हैं, तो उनके स्थान पर उन लोगों में से दो अन्य खड़े हो जाएँ, जिनका अधिकार पहले दो ने हड्डप लिया हो। अतः वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्ची है और हमने (न्याय का) कोई उल्लंघन नहीं किया। (यदि ऐसा करें) तब तो

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةً بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ أَخْرَى مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَاصَابَكُمْ مُّصِيَّةُ الْمَوْتِ تَحْسِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الْأَصْلُوَةِ فَيُقْسِمُنَ بِاللَّهِ إِنَّ إِرْبَتَنِي لَا نَشَرِّبُ مِنْ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَاقَ زَلْبِيٌّ وَلَا نَكْتُمْ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذَا أَلْئِمَنَا الْأَثِيمِينَ ⑦

فَإِنْ عَثَرَ عَلَى أَنَّهُمَا اسْتَحْقَقَا إِنْمَا فَآخَرُنِ يَقُولُنِ مَقَامُهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحْقَقُ عَلَيْهِمُ الْأُولَئِينَ فَيُقْسِمُنَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا

اعْتَدِيْنَا إِنَّا إِذَا لَمْ يَلْمِمُنَّ الظَّالِمِينَ ۝

हम निस्सन्देह अत्याचारियों में से हो जाएँगे । 108।

यह (उपाय इस बात के) अधिक निकट है कि वे (पहले के साक्षी) ज्यों की त्यों सच्ची गवाही प्रस्तुत करें, अन्यथा उन्हें भय लगा रहे कि उन (दूसरों) की क़समों के बाद उनकी क़समें नकार दी जाएँगी । और अल्लाह का तकन्वा अपनाओ और ध्यानपूर्वक सुना करो और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । 109। (स्कू 14)

जिस दिन अल्लाह समस्त रसूलों को एकत्रित करेगा और पूछेगा कि तुम्हें क्या उत्तर दिया गया ? वे कहेंगे हमें कोई (वास्तविक) जानकारी नहीं । निस्सन्देह तू ही समस्त अज्ञात विषयों का बहुत ज्ञान रखने वाला है । 110।

जब अल्लाह ने कहा, हे मरियम के पुत्र ईसा ! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरी नेमत को याद कर, जब मैंने रूह-उल-कुदुस से तेरा समर्थन किया । तू लोगों से पालने (अर्थात् बाल्यकाल) में और अधेड़ आयु में भी बातें करता था । और उस समय को भी (याद कर) जब मैंने तुझे पुस्तक और तत्त्वज्ञान और तौरात और इंजील भी सिखाई । और जब तू मेरे आदेश से मिट्टी से पक्षियों की आकृति के सदृश पैदा करता था, फिर तू उनमें फूंकता था तो वे मेरे आदेश से पक्षी बन जाते थे । और तू जन्मजात अंधों और श्वेतकुण्ठों को मेरी आज्ञा से ठीक करता

ذَلِكَ أَذْفَنَ آتُ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ
وَجْهِهَا أَوْ يَحَافُوا آتُ تَرَدَّدَ أَيْمَانَ
بَعْدَ أَيمَانِهِمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا
وَاللَّهُ لَا يَهِيْدِ الْقَوْمَ الْفُسِيقِينَ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرَّسُولَ فَيَقُولُ مَاذَا
أَجْبَتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ
أَنْتَ عَلَّامُ الْغَيْوبِ ⑤

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ
نَعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالدِّيْنِكَ إِذْ أَيَّدْنِكَ
بِرُوحِ الْقَدِيسِ ۖ تَكَلَّمُ النَّاسُ فِي
الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَمْتُكَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَالثَّوْرَةَ وَالْأَخْيَلَ ۖ وَإِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطَّلَبِينَ كَهْيَةَ الطَّلَبِرِ بِإِذْنِي
فَتَسْقُطُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتَبَرِّئُ
الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ

था। और जब तू मेरे आदेश से मृतकों को (जीवित) निकालता था और जब मैंने बनी इसाईल को तुझ से रोके रखा, जब तू उनके पास उज्ज्वल चिह्नों को ले कर आया तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया कहा, निस्सन्देह यह एक खुल्लम-खुल्ला जादू के सिवा कुछ नहीं ॥111॥

और जब मैंने हवारियों की ओर वहइ की कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान ले आओ तो उन्होंने कहा हम ईमान ले आए, अतः गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हो चुके हैं ॥112॥

जब हवारियों ने कहा, हे मरियम के पुत्र ईसा ! क्या तेरे रब्ब के लिए संभव है कि हम पर आकाश से (नेमतों से परिपूर्ण) थाल उतार दे ? उस (अर्थात् ईसा) ने कहा, यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह का तक्रवा अपनाओ ॥113॥

उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएँ और हमारे मन संतुष्ट हो जाएँ और हम जान लें कि तूने हम से सच कहा है और इस पर हम गवाह बन जाएँ ॥114॥

मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे अल्लाह हमारे रब्ब ! हम पर आकाश से (नेमतों से परिपूर्ण) थाल उतार जो हमारे पूर्ववर्तियों और हमारे परवर्तियों के लिए ईद बन जाए और तेरी ओर से एक महान चिह्न स्वरूप हो । और हमें जीविका प्रदान कर और तू जीविका प्रदान करने वालों में सबसे बेहतर है ॥115॥

الْمَوْتُ يِلْدُنٌ وَإِذْ كَفَتْ بَنَقَ
إِسْرَاءٌ إِلَيْكَ عَنْكَ إِذْ جَهَّمُ بِالْبَيْتِ
فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُّبِينٌ^(۱۱)

وَإِذْ أَوْحَيْتَ إِلَى الْحَوَارِيْنَ أَنْ أَمْتَوْا بِي
وَبِرَسُولِيْ^(۲) قَالُوا أَمْتَأْ وَأَشَهَّدُ بِإِنَّا
مُسْلِمُوْنَ^(۳)

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيْوْنَ يَعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَا إِلَيْهِ
مِنْ السَّمَاءِ^(۴) قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِيْنَ^(۵)

قَالُوا أَتَرِيدُّ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَنْظِيْمَ
قُلُوبِنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ
عَلَيْهَا مِنَ الشَّهِيْدِيْنَ^(۶)

قَالَ يَعِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا
أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَا إِلَيْهِ مِنَ السَّمَاءِ تَكُونَ لَنَا
عِيْدًا لَا وَلِنَا وَآخِرَنَا وَآيَةً مِنْكَ^(۷)
وَأَرْزَقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرُّزْقِيْنَ^(۸)

अल्लाह ने कहा कि मैं उसे तुम पर अवश्य उतारूँगा । अतः जो कोई इसके बाद तुम में से कृतज्ञता करे तो मैं उसे अवश्य ऐसा अज्ञाब ढूँगा जैसा समग्र जगत में किसी और को नहीं ढूँगा ॥116॥

(रुकू 15)

और (याद करो) जब अल्लाह मरियम के पुत्र ईसा से कहेगा कि क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो उपास्य बना लो ? वह कहेगा, पवित्र है तू। मुझ से हो ही नहीं सकता कि मैं ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार न हो । यदि मैंने वह बात कही होती तो अवश्य तू उसे जान लेता । तू जानता है जो मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है । निससन्देह तू सभी अज्ञात विषयों को ख़बू़ जानने वाला है ॥117॥*

मैंने तो उन्हें इसके सिवा कुछ नहीं कहा जो तूने मुझे आदेश दिया था कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । और जब तक मैं उनमें रहा मैं उन का निरीक्षक था । फिर जब तूने

قَالَ اللَّهُ أَنِّي مُنْزَلٌ لَّهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرُ بَعْدَ مِنْكُمْ فَإِنَّى أَعْذِبُهُ عَذَابًا لَا أَعْذِبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْصِي ابْنَ مَرْيَمَ إِنَّكَ قُلْتَ لِلنَّاسِ أَتَخْدُلُونِي وَأَمِّي إِلَهُيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِقَدْ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِنْ كُنْتَ قُلْتَهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمَ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٦﴾

مَا قُلْتَ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمْرَتُنِي بِهِ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّيْنِ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتَ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دَمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا

* इस आयत में उल्लेख हुआ है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क्र्यामत के दिन कहेंगे कि “मैंने कभी भी लोगों को यह शिक्षा नहीं दी कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो” यह बात बाइबिल से निश्चित रूप से प्रमाणित है । एक भी आयत इंजील में ऐसी नहीं जिसमें मसीह अलैहिस्सलाम ने कहा हो कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा उपास्य बना लो । बल्कि जब शैतान ने उनको परीक्षा करने के लिए कहा कि मुझे सजदः करो तब भी उन्होंने उत्तर में यह नहीं कहा कि तुम मुझे सजदः करो ।

मुझे मृत्यु दे दी, केवल एक तू ही
उन का निरीक्षक रहा और तू हर
चीज़ पर गवाह है ॥1181॥*

यदि तू इन्हें अज्ञाब दे तो अन्ततः यह तेरे
भक्त हैं। और यदि तू इन्हें क्षमा कर दे
तो निस्सन्देह तू पूर्ण प्रभुत्व वाला
(और) परम विवेकशील है ॥1191॥**

अल्लाह ने कहा, यह वह दिन है कि
सच्चों को उनका सच्च लाभ पहुँचाने
वाला है। उनके लिए स्वर्ग हैं जिनके
दामन में नहरें बहती हैं। उनमें वे
सदा-सर्वदा रहने वाले हैं। अल्लाह
उनसे प्रसन्न हो गया और वे उनसे
प्रसन्न हो गए। यह बहुत बड़ी
सफलता है ॥120।

आसमानों और धरती की बादशाही
अल्लाह ही की है और उसकी भी जो
उनके अन्दर है। और वह प्रत्येक वस्तु
पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य
रखता है ॥121। (रुक् १६)

تَوَفَّيْتَنِي كُثْرَأَنْتَ الرَّقِيبُ عَلَيْهِمْ
وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑪
إِنْ تَعْرِبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ
وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑫

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمَ يَتَقَعَّدُ الصَّدِيقُونَ
صِدْقُهُمْ لَهُمْ جُنُاحٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ⑬

إِلَهُ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑭

* इस आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का स्पष्ट रूप से उल्लेख है और इससे यह भी प्रमाणित होता है कि जब तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित रहे उनकी अपनी जाति (बनी इस्माईल) में शिर्क नहीं फैला। जब आप अलै. फिलिस्तीन से हिजरत कर गए तो सेंट पॉल ने यूनानियों को जो बनी इस्माईल नहीं थे, पथग्रष्ट कर दिया और उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को अपना उपास्य बना लिया। बनी इस्माईल जिनके सुधार के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आये थे, उनमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन में शिर्क नहीं फैला।

** इस आयत की दृष्टि से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने बड़ी बुद्धिमत्ता पूर्वक पापियों की क्षमा के लिए दुआ की है कि यदि तू इन्हें दंड दे तो वे तेरे भक्त हैं और यदि क्षमा कर दे तो तू पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है।

6- सूरः अल-अन्‌आम

यह सूरः मक्का निवास काल में अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 166 आयतें हैं।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत में यह वर्णन किया गया है कि समस्त लोकों और जो कुछ भी उनके बीच है उनका स्वामी अल्लाह है और इस सूरः के आरम्भ में और अधिक स्पष्ट और शान के साथ यही वर्णन किया गया है। अर्थात् समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिसने धरती और आकाश को उत्पन्न किया और उनके भेद को ज्ञात करने के मार्ग में कई प्रकार के अंधकार होने के बावजूद उसने बुद्धि रूपी प्रकाश भी प्रदान किया, जिसके द्वारा वे अंधकार छटते चले जाएँगे। अतएव आज विज्ञान की प्रगति ने धरती और आकाश की उत्पत्ति के रहस्य पर से इस प्रकार पर्दा उठाया है कि उन की वास्तविकता का और उनके अन्दर जो कुछ है उनका अधिक से अधिक ज्ञान मनुष्य को प्राप्त होता चला जा रहा है। जिस प्रकार प्रारम्भ में आकाश के अंधकारों को दूर किये जाने का उल्लेख मिलता है इसी प्रकार भू-गर्भ और समुद्र के अंधकारों को प्रकाश में परिवर्तित किए जाने का भी उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार आकाश से मनुष्यों पर अज्ञाब भी उतरते हैं, जिनको मनुष्य के भीतरी अंधकार खींचते हैं। इस विषयवस्तु का वर्णन इस सूरः की आयत संख्या 66 में मिलता है।

एक तो वैज्ञानिक हैं, जिनपर धरती और आकाश के अंधकार उनके अन्वेषणों के फलस्वरूप प्रकाशित किए जाते हैं। और दूसरे अल्लाह के वे महान भक्त हैं, जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, जिनको अल्लाह तआला धरती और आकाश के शासनतन्त्र का दर्शन करा देता है तथा आकाश से उन पर नूर बरसता है, जैसा कि आयत संख्या 76 में वर्णन किया गया है।

इस सूरः में नवियों और उन पर पुस्तकों के उत्तरने और हिदायत की रौशनी अवतरित होने का बार-बार वर्णन मिल रहा है।

इसी सूरः में बंद बीजों और गुठलियों को फाइकर उन के अन्धकारों में से जीवन के लहलहाते हुए पौधे निकालने का उल्लेख भी है। इसी प्रकार नक्षत्रों का वर्णन है कि किस प्रकार वे जल, स्थल के अन्धकारों को दूर करके यात्रियों के मार्गदर्शन का साधन बनते हैं।

आयत संख्या 96 से आरम्भ होने वाले रुकू में एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयत इस विषयवस्तु पर आधारित है कि हरियाली से परत दर परत हर प्रकार के बीज फूटते हैं और फिर प्रत्येक प्रकार के फल उगते हैं। इन फलों के पकने की प्रक्रिया पर ध्यान दो।

वे लोग जो अल्लाह तआला की आयतों पर ईमान रखते हैं, उनके लिए इस में अनगिनत चिह्न हैं।

क्लोरोफिल (Chlorophyll) से हरियाली बनती है जो अपने आप में एक बड़ा चिह्न है जिस में वैज्ञानिकों को कोई भी विकासपरक पड़ाव दिखाई नहीं दिये। यह एक बड़ा ही जटिल रासायनिक तत्त्व है जो अन्य रासायनिक तत्त्वों से अधिक जटिल है। जीवन के आरम्भ में ही क्लोरोफिल की आवश्यकता होती है, जिससे मनुष्य उत्पन्न हुआ। उस समय क्लोरोफिल कौन कौन से विकासपरक पड़ावों को पार करके उत्पन्न हुआ, इस प्रश्न का अभी तक समाधान नहीं मिला है। विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्लोरोफिल नूर (प्रकाश) से जीवन बनाता है, अग्नि से नहीं। वही नूर का विषयवस्तु कि उसने धरती और आकाश में क्या-क्या उलटफेर किये हैं, इस सूरः के अन्त पर अपने उत्कर्ष को पहुँच जाती है।

इस सूरः में मुश्कियों की ऐसी धिसी-पिटी भ्रान्त धारणाओं का उल्लेख है जिनका सम्बन्ध अन्नाम अर्थात् मवेशियों से है, जिन्हें अल्लाह ने मानव जीवन यापन का साधन बनाया है। परन्तु उन्होंने भाँति-भाँति की मुश्किक-रीतियों के द्वारा मवेशियों से सम्बन्धित समस्त तत्त्वपूर्ण बातों को नष्ट कर दिया।

इस सूरः के अन्त पर न केवल मवेशियों से सम्बन्धित हलाल-हराम का स्पष्टीकरण किया गया है अपितु शिष्टाचार सम्बन्धी हलाल और हराम की बातें भी वर्णन कर दी गईं। इस प्रकार भौतिक भोज्य-वस्तुओं के हलाल और हराम के साथ आध्यात्मिक हलाल और हराम का भी उल्लेख कर दिया। तथा माँ-बाप के प्रति सदयभाव प्रदर्शन करने की शिक्षा दी गई जो अपने बच्चों के लिए अनेक कष्ट सहन करते हैं।

इस सूरः के अन्त पर एक ऐसी आयत है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपने रब्ब के समक्ष पूर्ण आज्ञाकारी होने का इस सुन्दरता से उल्लेख करती है कि इस से उत्तम ढंग से उल्लेख करना असंभव है। और सारी दुनिया की ईश्वरीय पुस्तकों में इस विषय की कोई आयत मौजूद नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने का आदेश दिया गया है कि मेरी नमाजें और मेरी समस्त कुर्बानियाँ अर्थात् केवल चौपायों की कुर्बानियाँ नहीं अपितु अपने हार्दिक भावनाओं की कुर्बानियाँ तथा मेरा जीवन और मेरी मृत्यु विशुद्ध रूप से अपने अल्लाह के लिए समर्पित हो चुकी हैं।



سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ النِّسْمَةِ مَا تَرَى وَسُورَةُ عَشْرُونَ رُكْوَعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार बार दया करने वाला है । । ।

समस्त स्तुति अल्लाह ही की है, जिसने
आसमानों और धरती को पैदा किया
और अन्धकार और प्रकाश बनाए । फिर
भी वे लोग जिन्होंने इनकार किया अपने
रब्ब का साझीदार ठहराते हैं । । ।

वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा
किया । फिर एक अवधि निश्चित की
और निश्चित अवधि का (ज्ञान) उसी
के पास है । फिर भी तुम संदेह में
पड़ते हो । । । *

और वही अल्लाह आसमानों में भी है
और धरती में भी है । वह तुम्हारे छिपे
हुए को जानता है और तुम्हारे प्रकाश्य
को भी । और जो तुम कमाई करते हो
उसे भी जानता है । । ।

और उनके पास उनके रब्ब की आयतों
में से जब भी कोई आयत आती है वे
उससे मुँह फेरने लगते हैं । । ।

अतः उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब
वह उनके पास आया । अतः अवश्य

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلْمَةَ وَالنُّورَ ۗ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ②

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ۗ
قَضَى أَجَلًا ۖ وَأَجَلُ مُسَعًّى عِنْدَهُ
ۗ أَنَّتُمْ تَمْتَرُونَ ③

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ
يَعْلَمُ سَرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ
مَا تَكُسِبُونَ ④

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ أَيْتَ رَبِّهِمْ إِلَّا
كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ⑤

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لِمَاجَأَهُمْ ۖ قَسْوَفٌ

* इस आयत में जो पहला अजल (निश्चित अवधि) शब्द आया है इस से अभिप्राय दुर्घटना में होने वाली मृत्यु अथवा बीमारी से होने वाली मृत्यु है जो उस निश्चित अवधि से पहले घटित हो सकती है जो किसी की अन्तिम सम्बावित आयु निश्चित होती है । संसार में मनुष्य भी अपने उत्पादों के सम्बन्ध में एक विशेष अवधि निश्चित करता है । उदाहरण स्वरूप अमुक पुल अधिक से अधिक इतने वर्ष तक ठीक रह सकता है । इसके बाद उसको नष्ट करना होगा । परन्तु दुर्घटनाओं के परिणाम स्वरूप वह अपनी निर्धारित अवधि से पूर्व भी नष्ट हो सकता है ।

उन्हें उन (बातों के पूरा होने) के समाचार मिलेंगे जिनकी वे खिल्ली उड़ाया करते थे । 61।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितनी ही जातियाँ तबाह कर दीं जिनको हमने धरती में ऐसी दृढ़ता प्रदान की थी जैसी दृढ़ता तुम्हें प्रदान नहीं की। और हमने उन पर मुसलाधार वर्षा करते हुए बादल भेजे और हमने ऐसी नदियाँ बनाईं जो उनके अधीन बहती थीं। फिर हमने उनको उनके पापों के कारण हलाक कर दिया और उनके बाद हमने दूसरी जातियों को उन्नति प्रदान की । 7। और यदि हम तुझ पर किसी कागज़ में कोई लिखित प्रमाण उतारते फिर वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तो फिर भी काफिर अवश्य कहते कि यह तो एक खुले-खुले जादू के सिवा कुछ नहीं । 8।

और वे कहते हैं कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया ? और यदि हम कोई फरिश्ता उतारते तो अवश्य मामला निपटा दिया जाता । फिर उन्हें कोई ढील न दी जाती । 9।

और यदि हम उस (रसूल) को फरिश्ता बनाते तो हम उसे फिर भी मनुष्य (के रूप में) बनाते और हम उन पर वह (विषय) संदिग्ध रखते जिसे वे (अब) संदिग्ध समझ रहे हैं । 10।

और निस्सन्देह तुझ से पहले भी रसूलों से उपहास किया गया । अतएव जिन्होंने उन (रसूलों) से उपहास किया, उन्हें

يَا تَبِعُهُمْ أَثْبَوْا مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ①

الْرَّيْرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ
قُرْنِ مَكْنُنُهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نَمْكُنْ
لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مَذْرَارًا
وَجَعَلْنَا الْأَنْهَرَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ
فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قَرْنَى أَخَرِينَ ②

وَلَوْ نَرَنْتُنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَائِis
فَلَمْسُؤْهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ③

وَقَالُوا إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْهِ مَلَكًا
وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَقَضَى الْأَمْرَ
لَمْ لَا يَنْظَرُونَ ④

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا
وَلَلْكَبْسَنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ⑤

وَلَقَدِ اسْتَهْزَئَ بِرَسُولِ مِنْ قَبْلِكَ

उन्हीं बातों ने घेर लिया जिन के द्वारा वे उपहास किया करते थे । 111।

(स्कू ١)

तू कह दे धरती में खूब भ्रमण करो फिर ध्यान दो कि झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अंत हुआ था । 12।

पूछ कि किसका है जो आसमानों और धरती में है ? कह दे कि अल्लाह ही का है । उसने दया करना अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है । वह अवश्य तुम्हें क़्यामत के दिन तक इकट्ठा करता चला जाएगा जिसमें कोई सदेह नहीं । वे लोग जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला अतः वे तो ईमान नहीं लाएँगे । 13।

और उसी का है जो रात में और दिन में ठहर जाता है । और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 14।

तू कहदे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी अन्य को मित्र बना लूँ जो असामानों और धरती की उत्पत्ति का आरम्भ करने वाला है और वह (सब को) खिलाता है जबकि उसे खिलाया नहीं जाता । तू कह दे कि निस्सन्देह मुझे आदेश दिया गया है कि मैं हर एक से जिसने आज्ञापालन किया, प्रथम रहूँ । और तू कदापि मुश्किलों में से न बन । 15।

तू कह दे कि यदि मैंने अपने रब्ब की अवज्ञा की तो निस्सन्देह मैं एक महान दिवस के अज्ञाब से डरता हूँ । 16।

فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهِزُونَ ⑩

قُلْ سَيْرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ⑪

قُلْ لِمَنْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلْ
لِلَّهِ ۖ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ
لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ
الَّذِينَ حَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑫

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيلِ وَالنَّهَارِ ۖ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑬

قُلْ أَعْيَرَ اللَّهُ أَتَخِدُ وَلِيًّا فَاطِرِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يَطْعَمُ وَلَا
يَطْعَمُ ۖ قُلْ إِنِّي أَمْرَتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ
مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑭

قُلْ إِنِّي أَحَادُ إِنْ عَصَيْتَ رَبِّي عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑮

जिससे उस दिन वह (अज्ञाब) टाल दिया जाएगा, तो उस पर उसने दया की और यह बहुत खुली-खुली सफलता है । 17।

अतः यदि तुम्हे अल्लाह कोई हानि पहुँचाए तो उसके सिवा उसे कोई दूर करने वाला नहीं और यदि वह तुम्हे कोई भलाई पहुँचाए तो वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 18।

और वह अपने भक्तों पर बड़ी शान के साथ प्रभुत्व रखता है और वह परम विवेकशील और (सदा) अवगत रहने वाला है । 19।

तू पूछ कि कौन सी बात गवाही के रूप में सब से बड़ी हो सकती है । कह दे कि अल्लाह ही तुम्हारे और मेरे बीच गवाह है । और मेरी ओर यह कुरआन वहाँ किया गया है ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें सतर्क करूँ और प्रत्येक उस व्यक्ति को भी जिस तक यह पहुँचे । क्या तुम निश्चित रूप से गवाही देते हो कि अल्लाह के अतिरिक्त भी कोई दूसरे उपास्य हैं ? तू कह दे कि मैं (यह) गवाही नहीं देता । कह दे कि निस्सन्देह वही एक ही उपास्य है और मैं निश्चित रूप से उससे बरी हूँ, जो तुम शिक करते हो । 20।

वे लोग जिन्हें हमने पुस्तक दी वे इस (पुस्तक और इस रसूल) को उसी प्रकार पहचानते हैं जिस प्रकार अपने बेटों को पहचानते हैं । वे लोग जिन्होंने अपने

١- مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يُوْمٌ فَقَدْ رَحِمَهُ
وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ⑫

وَإِنْ يُمْسِكَ اللَّهُ بِصُرُّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ
إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يُمْسِكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑬

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْخَبِيرُ ⑭

قُلْ أَعُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ
شَهِيدٌ بِيَنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَأَوْحَى إِلَيَّ
هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ يَأْتِعَ
أَكْثَرُكُمْ لَتَشْهَدُونَ ۖ أَنَّ مَعَ اللَّهِ الْأَمْانُ
آخْرَىٰ ۖ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۖ قُلْ إِنَّمَا هُوَ اللَّهُ
وَاحِدٌ ۖ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۶

الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا
يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ الَّذِينَ خَسِرُوا ۷

आप को घाटे में डाला वे तो ईमान नहीं
लाएँगे । १२१। (रुक् ۲)

और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन हो सकता है जिसने अल्लाह पर कोई झूठ गढ़ा अथवा उसकी आयतों को झुठलाया। निस्सन्देह अत्याचारी सफल नहीं होते । १२२।

और (याद करो) जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर हम उन्हें जिन्होने शिर्क किया, पूछेंगे कि तुम्हारे वे उपास्य कहाँ हैं जिन्हें तुम (अल्लाह के साझीदार) समझा करते थे । १२३।

फिर उनका (गढ़ा हुआ) षड्यन्त्र कुछ शेष नहीं रहेगा, परन्तु इतना कि वे कहेंगे हमारे रब्ब अल्लाह की क़सम । हम कदापि मुश्रिक नहीं थे । १२४।

देख कैसे वे अपने ही विरुद्ध झूठ बोलते हैं । और जो वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनसे गुम हो जाएगा । १२५।

और उनमें से ऐसे भी हैं जो देखने में तेरी बातों पर कान धरते हैं, जबकि हमने उनके दिलों पर पर्दे ढाल रखे हैं (जिनके कारण सम्भव नहीं) कि वे उसको समझ जाएँ । और उनके कानों में एक बहरापन सा रख दिया है । और यदि वे सभी चिह्न देख भी लें तो उन पर ईमान नहीं लाएँगे। इस सीमा तक (वे मुँह फट हैं) कि जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से झगड़ते हैं । जो लोग काफिर हुए कहते हैं यह तो पहले लोगों की कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं । १२६।

أَنفُسُهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَبَ بِإِيمَانِهِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ
الظَّالِمُونَ ﴿٦﴾

وَيَوْمَ حُسْرُهُمْ جَمِيعًا لَمْ يَقُولُ لِلَّذِينَ
أَشْرَكُوا أَيْنَ شَرَكَا وَلَمْ الَّذِينَ شَرَكُوا
تَرْكُمُونَ ﴿٧﴾

لَمْ يَلْمِمْ تَكُنْ فَتَشَهِّمْ إِلَّا أَنْ قَاتُوا وَاللَّهُ
رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٨﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَى آنفُسِهِمْ وَصَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٩﴾
وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتِمْعُ إِلَيْكَ وَجَعَلَنَا
عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكْثَرَهُ أَنْ يَفْقَهُهُ وَفِي
أَذَانِهِمْ وَقُرَاءً وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ أَيْةٍ
لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ
يَجَادِلُوكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا
إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾

और वे उससे रोकते भी हैं और स्वयं भी उससे दूर रहते हैं और वे अपने सिवा और किसी का विनाश नहीं करते और वे समझ नहीं रखते । 27।

और काश तू देख सकता कि जब वे अग्नि के पास (थोड़ा) ठहराए जाएँगे तो कहेंगे काश ! हमें वापस लौटा दिया जाता, फिर हम अपने रब्ब की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनों में से हो जाते । 28।

सत्य यह है कि जो इससे पूर्व वे छिपाया करते थे वह उन पर प्रकट हो चुका है । और यदि वे लौटा भी दिए जाएँ तो अवश्य दोबारा वही करेंगे जिससे उनको रोका गया था । और निश्चित रूप से वे झूठे हैं । 29।

और वे कहते थे कि हमारा यह (जीवन) सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं और हमें कभी उठाया नहीं जाएगा । 30। और काश ! तू देख सकता जब वे अपने रब्ब के समक्ष ठहराए जाएँगे । वह (उनसे) पूछेगा, क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे क्यों नहीं ! हमारे रब्ब की कसम (यह सत्य है) । वह कहेगा, तब तुम उस इनकार के कारण जो तुम किया करते थे अज्ञाब को चखो । 31। (रुक् ۳)

निस्सन्देह उन लोगों ने घाटा उठाया जिन्होंने अल्लाह से मिलने का इनकार किया । यहाँ तक कि जब अचानक उनके पास (वह) घड़ी आ गई तो कहने लगे हाय अफसोस, उस भूल पर जो हम

وَهُمْ يَنْهُونَ عَنْهُ وَيَسْتَوْنَ عَنْهُ ۚ وَإِنْ
يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ۖ ۱۷

وَلَوْتَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَلَيْتَنَا نَرَدَ وَلَا نَكَبْ ۖ بِإِيمَانِ رَبِّنَا
وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ ۱۸

بِلْ بَدَأَهُمْ مَا كَانُوا يَحْفَوْنَ مِنْ قَبْلٍ ۖ
وَلَوْرَدُوا لَعَادُ وَالْمَانُهُوَاعْنَهُ وَإِنَّهُمْ
لَكَذِيبُونَ ۖ ۱۹

وَقَالُوا إِنْ هُوَ إِلَّا حَيَا شَاءَ الدُّنْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۖ ۲۰

وَلَوْتَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَى رَبِّهِمْ ۖ قَالَ
آكِيرَ هَذَا إِلَى الْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا
قَالَ فَذُو قُوَّا العَذَابُ بِمَا كَسَبُوكُمْ
تَكْفُرُونَ ۖ ۲۱

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا إِلَيْقَاءَ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ
إِذَا جَاءَهُمُ السَّاعَةُ بَعْثَةٌ قَالُوا
يَخْسِرُ شَأْلَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطُوا فِيهَا ۖ وَهُمْ

इस बारे में किया करते थे ! और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे । सावधान ! क्या ही बुरा है, जो वे उठाए हुए हैं । 132।

और सांसारिक जीवन केवल खेल-कूद और मन की इच्छाओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो श्रेष्ठ उद्देश्य से असावधान कर दे । और निस्सन्देह परलोक का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़वा अपनाते हैं । अतः क्या तुम समझते नहीं ? 133।

निस्सन्देह हम जानते हैं कि जो वे कहते हैं, तुझे अवश्य दुःख में डालता है । अतः निश्चित रूप से वे तुझे ही नहीं झुठलाते बल्कि अत्याचारी लोग अल्लाह की आयतों का ही इनकार करते हैं । 134।

और निश्चित रूप से तुझ से पहले भी रसूल झुठलाए गए थे । और बावजूद इसके कि वे झुठलाए गए और बहुत सताए गए उन्होंने धैर्य रखा, यहाँ तक कि उन तक हमारी सहायता आ पहुँची । और अल्लाह की बातों को कोई परिवर्तित करने वाला नहीं । और निश्चित रूप से तेरे पास रसूलों की खबरें आ चुकी हैं । 135।

और यदि उनका मुँह फेरना तुझ पर नागवार गुज़रता है तो यदि तुझ में सामर्थ्य है तो धरती में कोई सुरंग अथवा आकाश में कोई सीढ़ी खोज ले । फिर (उसके द्वारा) उनके पास कोई चिह्न ला सके (तो ऐसा करके देख ले) । और यदि

يَحْمِلُونَ أَوْرَارَهُمْ عَلَى ظَهُورِهِمْ
أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ④

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعْبٌ وَلَهُو
وَلَلَّدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑤

قُدْنَعْلَمَ إِنَّهُ لَيَحْرُكُنَّكُمْ إِنَّمَا يَقُولُونَ
فَإِنَّمُّمْ لَا يَكِنْدِبُونَكُمْ وَلِكُنَّ الظَّالِمِينَ
بِإِيمَانِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ⑥

وَلَقَدْ كُنْدِبَتْ رَسُّلٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ فَصَبَرُوا
عَلَىٰ مَا كُنْدِبُوا وَأَوْدُوا حَتَّىٰ آتَاهُمْ
نَصْرًا وَلَا مَبْدِلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ وَلَقَدْ
جَاءَكُمْ مِّنْ بَيْنِ أَيْمَانِ الْمُرْسَلِينَ ⑦

وَإِنْ كَانَ كَبَرَ عَيْنَكُمْ أَعْرَاضُهُمْ فَإِنْ
اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَبْتَغِي نَفَقًا فِي الْأَرْضِ
أَوْ سَلَمًا فِي السَّمَاءِ فَمَا تَيَّمْمَمْ بِإِيمَانِهِمْ وَلَوْ

अल्लाह चाहता तो उन्हें अवश्य हिदायत पर एकत्रित कर देता । अतः तू कदापि मूर्खों में से न बन । ३६ ।

वही स्वीकार करते हैं जो सुनते हैं । और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर उसी की ओर वे लौटाए जाएँगे । ३७ ।

वे कहते हैं कि क्यों न उसके रब्ब की ओर से उस पर कोई बड़ा चिह्न उतारा गया ? तू कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह इस बात पर समर्थ है कि वह कोई बड़ा चिह्न उतारे । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । ३८ ।

और धरती में जो भी चलने फिरने वाला जीवधारी है और हर एक पक्षी जो अपने दो परों के द्वारा उड़ता है, वे तुम्हारी ही भाँति समुदाय हैं । हमने पुस्तक में किसी चीज़ का उल्लेख नहीं छोड़ा । अन्ततः वे अपने रब्ब की ओर एकत्रित किए जाएँगे । ३९ ।

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया वे अन्धकारों में (भटकते हुए) बहरे और गूँगे हैं । जिसे अल्लाह चाहता है पथश्रम्पष्ट ठहरा देता है और जिसे चाहे सीधे मार्ग पर (अग्रसर) करा देता है । ४० ।

तू कह दे कि क्या तुमने कभी विचार किया है कि यदि तुम पर अल्लाह का अज्ञाब आ जाए अथवा तुम पर (निश्चित) कठिन घड़ी आ जाए, यदि

شَاءَ اللَّهُ لِجَمِيعِهِمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا
تَكُونُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ⑦

إِنَّمَا يَسْتَحِيْبُ الظَّالِمُونَ يَسْمَعُونَ
وَالْمُؤْمِنُ يَسْعَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى إِلَيْهِ
يُرْجَعُونَ ⑦

وَقَالُوا وَلَا تَنْزِلْ عَلَيْهِ أَيْةً مِّنْ رَبِّهِ قُلْ
إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَنْزِلَ أَيْةً وَلَكُنَّ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑦

وَمَا مِنْ دَآبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا
طَيْرٌ يَطِيرُ بِجَنَاحِيهِ إِلَّا أَمْرٌ
أَمْثَالُكُمْ مَا فَرَّطَنَافِ الْكِتَابِ مِنْ
شَيْءٍ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُخْسِرُونَ ⑦

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاِسْتِأْصَمْ وَبِكُمْ فِي
الظَّلَمَاتِ مَنْ يَشَاءُ اللَّهُ يُضْلِلُهُ وَمَنْ
يَشَاءُ يَجْعَلُهُ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ⑦

قُلْ أَرَيْتَكُمْ إِنْ أَشْكُمْ عَذَابَ اللَّهِ
أَوْ أَتَشْكُمُ السَّاعَةَ أَغَيْرَ اللَّهِ تَلْكُونُ

तुम सच्चे हो तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को भी पुकारोगे ? । 41।
 (नहीं) बल्कि उसी को तुम पुकारोगे ।
 अतः यदि वह चाहे तो उस (विपत्ति) को दूर कर देगा, जिसकी ओर तुम उसे (सहायता के लिए) बुलाते हो । और तुम भूल जाओगे उन वस्तुओं को, जिनको तुम (अल्लाह का) साज्जीदार ठहराते रहे हो । 42। (रुक् ۴۰)

और निस्सन्देह हमने तुझ से पहले कई समुदायों की ओर (रसूल) भेजे । फिर हमने उनको (कभी) कठिनाई और (कभी) तंगी में डाला ताकि वे विनम्रता अपनाएँ । 43।

अतः जब हमारी ओर से उन पर कठिनाई (की विपत्ति) आई तो क्यों न वे गिरिगिड़ाए, परन्तु उनके दिल कठोर हो चुके थे और शैतान ने उनको वे कर्म सुन्दर करके दिखाए जो वे किया करते थे । 44।

अतः जब वे उसे भूल गए जो उन्हें बार-बार याद दिलाया गया था तो हमने उन पर हर चीज़ के द्वार खोल दिए । यहाँ तक कि जब वे उस पर जो उन्हें दिया गया इतराने लगे तो हमने अच्छाक उन्हें पकड़ लिया तो वे एक दम बहुत निराश हो गए । 45।

अतः उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया था । और समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है । 46।

إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ①

بُلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْسِفُ مَا تَدْعُونَ
 إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتُنْسَوْنَ مَا تُشَرِّكُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ مِنْ قَبْلِكُمْ
 فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ
 يَتَّصَرَّعُونَ ④

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بِالْأَسْنَاتِ ضَرَّ عَوْا وَلَكُنْ
 فَسْطُ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
 مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑩

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذَكَرْنَا بِهِ فَتَحَنَّعَ عَلَيْهِمْ
 أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا
 أُوتُوا أَخْذَنَاهُمْ بِغُثَّةٍ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ⑪

فَقْطَعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۷
 وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑫

तू पूछ कि क्या कभी तुमने विचार किया है कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने और देखने की शक्ति को ले जाए और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन सा उपास्य है जो उन (खोई हुई शक्तियों) को तुम्हारे पास (वापस) ले आए। देख कि हम किस प्रकार आयतों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं फिर भी वे मुख फेर लेते हैं । 47।

तू कह दे, क्या तुमने कभी विचार किया है कि यदि तुम्हारे पास अल्लाह का अज्ञाब अचानक अथवा स्पष्ट रूप से (दिखाई देता हुआ) आ जाए तो क्या अत्याचारी लोगों के अतिरिक्त भी कोई तबाह किया जाएगा ? । 48।

और हम पैगम्बरों को केवल इस हैसियत से भेजते हैं कि वे शुभ-समाचार देने वाले और सतर्क करने वाले होते हैं। अतः जो ईमान ले आए और सुधार करे तो उन को कोई भय नहीं और न वे कोई शोक करेंगे । 49।

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया उनको अवश्य उस कारण अज्ञाब आ पकड़ेगा, जो वे कुर्कम करते थे । 50।

तू कह दे, मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं और न ही मैं अदृश्य का ज्ञान रखता हूँ और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिशता हूँ। मैं उसके अतिरिक्त, जो मेरी ओर वहाँ की जाती है, किसी का अनुसरण नहीं

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخْذَ اللَّهَ سَمْعَكُمْ
وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ مَنْ
إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهُ يَأْتِي شَكْرَبَهُ اَنْظَرْ كَيْفَ
نَصَرْ فَالْأَلْيَتِ شَعَرْهُمْ يَصْدِقُونَ ⑦

قُلْ أَرَأَيْتُمْ كُفَّارُ إِنْ أَشْكُمْ عَذَابَ اللَّهِ
بَعْتَهُ اَوْ جَهَرَهُ هَلْ يَهْلِكُ اِلَّا الْقَوْمُ
الظَّلِيمُونَ ⑧

وَمَا نُرِسِلُ الْمُرْسَلِينَ اِلَّا مُبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ ۝ فَمَنْ امْنَ وَأَصْلَحَ فَلَا
حَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرُثُونَ ⑨

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاِيْتَنَا يَمْسِهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوا يَفْسُدُونَ ⑩

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَرَآءِنَ اللَّهُ وَلَا
أَعْلَمُ اَغْيَبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ اِنْ مَلَكٌ
إِنْ اَتَيْتُ اَلْامَاتِ بِحَقِّ اَنْ قُلْ هَلْ يَشْتَوِي

करता। कह दे, क्या अंधा और देखने वाला समान होते हैं ? फिर क्या तुम सोचते नहीं 151। (रुकूः ۱۱)

और इस (कुरआन) के द्वारा तू उन्हें सतर्क कर जो भय रखते हैं कि वे अपने रब्ब की ओर एकत्रित किए जाएँगे । इस (कुरआन) के अतिरिक्त उनका कोई मित्र और कोई सिफारिश करने वाला नहीं होगा । ताकि वे तक़वा अपनाएँ 152।

और तू उन लोगों को न धुतकार, जो अपने रब्ब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए प्रातः काल और सायंकाल भी पुकारते हैं । तेरे ज़िम्मे उनका कुछ भी हिसाब नहीं और न ही तेरा कुछ हिसाब उनके ज़िम्मे है । अतः यदि फिर भी तू उन्हें धुतकार देगा तो तू अत्याचारियों में से हो जाएगा 153।

और इसी प्रकार हम उनमें से कुछ को कुछ के द्वारा परीक्षा में डालते हैं । यहाँ तक कि वे कहने लगते हैं कि क्या हमारे बीच (बस) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने अनुग्रह किया है । क्या अल्लाह कृतज्ञों को सबसे अधिक नहीं जानता 154।

और जब तेरे पास वे लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो (उनसे) कहा कर, तुम पर सलाम हो । (तुम्हारे लिए) तुम्हारे रब्ब ने दया करना अपने ऊपर अनिवार्य कर दिया है। (अर्थात्) यह कि तुम में से जो कोई अज्ञानता वश कुर्कम कर बैठे फिर

الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ۝ أَفَلَا سَقَرُونَ۝

وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحَسِّرُوا
إِلَى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌ
وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ①

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ
وَالْعَشِيِّ يَرِيدُونَ وَجْهَهُ۝ مَا عَلَيْكَ مِنْ
حِسَابٍ هُمْ قَمْ شَيْءٌ وَمَا مِنْ حِسَابٍ كَعَلَيْهِمْ
مِنْ شَيْءٌ فَتَطْرُدُهُمْ فَتَكُونُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ②

وَكَذِلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِيَعْصِي لِيَقُولُوا
أَهُؤُلَاءِ مَنْ أَنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ قَمْ بَيَّنَاهَا
أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّكِيرِينَ③

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِإِيمَانِكَ فَقُلْ
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ
الرَّحْمَةُ أَنَّهُ مَنْ عَمَلَ مِنْكُمْ سُوءًا

उसके बाद प्रायश्चित कर ले और सुधार कर ले तो (याद रखें कि) वह (अल्लाह) निस्सन्देह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 55।

और इसी प्रकार हम आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं और (यह) इस लिए है कि अपराधियों का रास्ता ख़बूब खुल कर प्रकट हो जाए । 56।

(रुक् ٦٢)

तू कह दे कि निश्चित रूप से मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो । तू कह दे मैं तो तम्हारी इच्छाओं का अनुसरण नहीं करूँगा (अन्यथा) मैं उसी समय पथभ्रष्ट हो जाऊँगा और मैं हिदायत पाने वालों में से न बन सकूँगा । 57।

तू कह दे कि निस्सन्देह मैं अपने रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल प्रमाण पर हूँ और तुम उसको झुठला बैठे हो । मेरे अधीन वह नहीं है जिस की तुम जल्दी करते हो । फैसले का अधिकार अल्लाह के सिवा किसी को नहीं । वह सत्य ही वर्णन करता है और वह सर्वोत्तम फैसला करने वाला है । 58।

तू कह दे कि यदि वह बात जिसकी तुम जल्दी करते हो, मेरे हाथ में होती तो (अब तक) अवश्य मेरे और तुम्हारे बीच फैसला हो चुका होता और अल्लाह अत्याचारियों को सबसे अधिक जानने वाला है । 59।

بِجَهَالَةٍ لَمْ تَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَأَصْلَحَ فَانَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑦

وَكَذَلِكَ تَفْصِلُ الْآيَتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَيِّئَاتِ الْمُجْرِمِينَ ۝

قُلْ إِنَّ نَهْيَتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ لَا أَتَبِعُ آهْوَاءَ كُفَّارٍ
قَدْ صَلَّتْ إِذَاً وَمَا آتَاهُنَّ مِنَ الْمُهَمَّدِينَ ⑦

قُلْ إِنَّ فَعَلَىٰ بَيْتِهِ مِنْ رِّزْقٍ وَكَذَبُنَّهُ بِهِ
مَا عِنْدِيٌّ مَا تَسْعَجِلُونَ بِهِ
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۚ يَعْلَمُ الْحَقَّ وَهُوَ
خَيْرُ الْفَصِيلَيْنَ ⑧

قُلْ لَوْا نَّعْدِيٌّ مَا تَسْعَجِلُونَ بِهِ
لَقَضَى الْأَمْرَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ⑨

और उसके पास अदृश्य की कुंजियाँ हैं* जिन्हें उसके सिवा और कोई नहीं जानता । और वह जानता है जो जल और स्थल में है । कोई पता भी गिरता है तो वह उसका ज्ञान रखता है । और कोई दाना धरती के अन्धकारों में (छिपा हुआ) नहीं और कोई आद्र अथवा शुष्क वस्तु ऐसी नहीं (जिसका वर्णन) एक सुस्पष्ट पुस्तक में न हो । 160।

और वही है जो रात को (नींद के रूप में) तुम्हें मृत्यु देता है, जबकि वह जानता है जो तुम दिन के समय कर चुके हो और फिर वह तुम्हें उसमें (अर्थात् दिन के समय) उठा देता है ताकि (तुम्हारा) निर्धारित समय पूरा किया जाए । फिर उसी की ओर तुम्हारा लौट कर जाना है । फिर जो भी तुम किया करते थे वह उससे तुम्हें सूचित करेगा । 161। (रुकू 7)

और वह अपने भक्तों पर बड़ी शान के साथ प्रभुत्व रखता है और वह तुम पर सुरक्षा करने वाले (निरीक्षक) भेजता है । यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मृत्यु आजाए तो उसे हमारे रसूल (फ़रिश्ते) मौत दे देते हैं और वे किसी पहलू की अनदेखी नहीं करते । 162।

फिर वे अल्लाह की ओर लौटाए जाते हैं जो उनका वास्तविक मालिक है ।

وَعِنْهُ مَقَاتِعُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا
هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا
تَسْقُطُ مِنْ وَرْقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ
فِي ظُلْمَتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ وَلَا
يَابِسٌ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ⑦

وَهُوَ الَّذِي يَسْوِفُكُمْ بِإِلَيْلٍ وَيَعْلَمُ مَا
جَرَحْتُمُ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ
لِيُقْضِي أَجَلَ مَسَىٰ ثُمَّ إِلَيْهِ
مُرْجَعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑧

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيَرْسِلُ
عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ كُمْ
الْمَوْتُ تَوْقُتُهُ رَسَلْنَا وَهُمْ لَا يَفِرُّونَ ⑨

لَمْ يَرْدُوا إِلَى اللَّهِ مُؤْلِمُهُمْ الْحَقِّ إِلَّا هُنَّ

* इस अर्थ के लिए देखें मुकरदात इमाम राशिव रहि ।

सावधान ! शासन उसी का है और वह हिसाब लेने वालों में सबसे तेज़ है । 63।

पूछ कि कौन है जो तुम्हें जल और स्थल के अन्धकारों से मुक्ति देता है, जब तुम उसे गिर्गिड़ा कर पुकार रहे होते हो और गुप्त रूप से भी कि यदि उसने हमें इस विपत्ति से मुक्ति दे दी तो हम अवश्य कृतज्ञों में से हो जाएँगे । 64।

कह दे अल्लाह ही है जो तुम्हें इससे भी मुक्ति प्रदान करता है और प्रत्येक बेचैनी से भी । फिर भी तुम शिर्क करने लगते हो । 65।

कह दे कि वह समर्थ है कि तुम्हारे ऊपर से अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे से तुम पर अज्ञाब भेजे या तुम्हें शंकाओं में डाल कर गिरोहों में बाँट दे और तुम मैं से कुछ को कुछ अन्य की ओर से अज्ञाब का स्वाद चखाए । देख किस प्रकार हम चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं ताकि वे किसी प्रकार समझ जाएँ । 66।

और तेरी जाति ने उसको झुठला दिया है हालाँकि वही सत्य है । तू कह दे कि मैं तुम पर कदापि निरीक्षक नहीं हूँ । 67।

प्रत्येक भविष्यवाणी का एक समय और स्थान निश्चित है और शीघ्र ही तुम जान लोगे । 68।

और जब तू उन लोगों को देखे, जो हमारी आयतों से उपहास करते हैं तो फिर उनसे अलग हो जा, यहाँ तक कि वे किसी दूसरी बात में लग जाएँ ।

الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَسِيبِينَ ⑤

قُلْ مَنْ يَتَجْيِيْكُمْ مِنْ ظُلْمَتِ الْبَرِّ
وَأَنْبَرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً
لَئِنْ أَنْجَيْنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الشَّكِيرِينَ ⑥

قُلِ اللَّهُ يَتَجْيِيْكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ
ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ⑦

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَعْلَمَ عَلَيْكُمْ
عَذَابًا مِنْ فُوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ
أَوْ يُلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ
بَأْسَ بَعْضٍ ۖ اْنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْأَيْتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ⑧

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمٌكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۖ قُلْ
لَئِنْتَ عَلَيْكُمْ بِوْرَكِيلٌ ۖ
لِكُلِّ بَيْ بِمُسْتَقْرٍ ۖ وَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ⑨

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوضُوْنَ فِيِّيْتَنَا
فَأَغْرِيْهُمْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوْا فِيِّ
حَدِيْثٍ غَيْرِهِ ۖ وَإِمَامًا يُسَيِّدُكَ الشَّيْطَنُ

और यदि कभी शैतान तुझ से इस मामले में भूल-चूक करवा दे तो यह याद आ जाने पर अत्याचारी लोगों के साथ न बैठ* । 69।

और जो लोग तक़वा अपनाते हैं उन पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं । परन्तु यह केवल एक बड़ा उपदेश है, ताकि वे तक़वा अपनाएँ । 70।

और तू उन लोगों को छोड़ दे जिन्होंने अपने धर्म को खेल-कूद और मनोकामनाओं को पूरा करने का साधन बना रखा है और उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया है । और तू इस (कुरआन) के द्वारा उपदेश दे ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई जान अपनी कमाई के कारण नष्ट हो जाए । जबकि उसके लिए अल्लाह के सिवा न कोई मित्र होगा और न कोई सिफारिश स्वीकार करने वाला । और यदि वह बराबर का बदला प्रस्तुत भी कर दे तब भी उससे कुछ नहीं लिया जाएगा । यहीं वे लोग हैं कि जो कुछ उन्होंने कमाया उसके कारण वे हलाक किए गए । जो वे इनकार करते थे उसके कारण उनके लिए पेय-पदार्थ स्वरूप खौलता हुआ पानी और पीड़ाजनक अज्ञाब होगा । 71।

(रुकू ४/८)

فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ
الظَّلِيمِينَ ﴿٦﴾

وَمَا عَلِيَ الَّذِينَ يَتَّقَوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ
شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرِي لَعَلَّهُمْ يَتَّقَوْنَ ﴿٧﴾

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهُوَا
وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَذَكَرْبِهِ أَنْ
تَبَسَّلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ
دُورٍ اللَّهُ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلُ
كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا أُولَئِكَ الَّذِينَ
أَبْسُلُوا بِمَا كَبَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ
حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ﴿٨﴾

* इसका अर्थ सदा के लिए उनसे पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना नहीं बल्कि यह अर्थ है कि इस्लाम के लिए शैरत दिखाते हुए उनसे उस समय तक मेल-जोल न रखा जाए जब तक कि वे अपनी उन निंदनीय गतिविधियों से रुक नहीं जाते ।

तू पूछ क्या हम अल्लाह के सिवा उसको पुकारें जो न हमें लाभ पहुँचा सकता है न हानि ? और क्या इसके बाद भी कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी है, हमें एक ऐसे व्यक्ति की भाँति अपनी एड़ियों पर लौटा दिया जाए जिसे शैतानों ने संज्ञाहीन करके धरती पर हैरान और परेशान छोड़ दिया हो ? उसके ऐसे मित्र हों जो उसे हिदायत की ओर बुलाते हुए पुकारें कि हमारे पास आ जा । तू कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह की (दी हुई) हिदायत ही वास्तविक हिदायत है । और हमें आदेश दिया गया है कि हम समस्त लोकों के रब्ब के आज्ञाकारी हो जाएँ । 72।

और यह (कह दे) कि नमाज को क्रायम करो और उसका तक़वा अपनाओ और वही है जिसकी ओर तुम एकत्रित किए जाओगे । 73।

और वही है जिसने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया और जिस दिन वह कहता है 'हो जा' तो वह होने लगता है और हो कर रहता है । उसका कथन सच्चा है और उसी की बादशाही होगी जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा । अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है और वह परम विवेकशील (और) सदा अवगत रहने वाला है । 74।

और (याद कर) जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा, क्या आप मूर्तियों को उपास्य बना बैठे हैं ? निस्सन्देह मैं

قُلْ أَكَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَقْعُدُ
وَلَا يَصْرُكُ وَنَرُدُ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ
هَذَّلَ اللَّهُ كَانَ ذِي اسْتِهْوَةِ الشَّيْطَنِ
فِي الْأَرْضِ حَيْرَانٌ لَّهُ أَصْحَبُ
يَدْعُونَهُ إِلَىٰ الْمَهْدَىٰ أَئْتَنَا طَقْلَ إِنَّ هَذِي
اللَّهُو هُوَ الْمَهْدِىٰ وَأَمْرُنَا لِتَسْلِيمٍ لِرَبِّ
الْعَلَمِينَ ﴿٦﴾

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ طَوْهُوَ الَّذِي
إِلَيْهِ يَخْشَرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ طَوْهُوَ يَقُولُ مَنْ فَيَكُونُ طَوْهُهُ قَوْلُهُ
الْحَقُّ طَوْهُهُ الْمُلْكُ طَوْهُهُ يَوْمٌ يَقْبَحُ فِي الصُّورِ طَبْعُ
عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ طَوْهُهُ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْحَبِيرُ ۝

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمٌ لَّا يَسِهُ أَزْرَ أَتَتَّخِذُ
أَصْنَامًا لِّهُ طَوْهُهُ إِنِّي أَرِبَّ وَقَوْمَكَ

आपको और आपकी जाति को खुली-
खुली पथभ्रष्टता में पाता हूँ। 175।

और इसी प्रकार हम इब्राहीम को
आसमानों और धरती की बादशाहत
(की वास्तविकता) दिखाते रहे ताकि
वह (और अधिक) विश्वास करने वालों
में से हो जाए। 176।

अतः जब उस पर रात छा गई, उसने
एक सितारे को देखा तो कहा, सम्भवतः
यह मेरा रब्ब है। फिर जब वह डूब गया
तो कहने लगा, मैं डूबने वालों से प्रेम
नहीं करता*। 177।

फिर जब उसने चन्द्रमा को चमकते हुए
देखा तो कहा, सम्भवतः यह मेरा रब्ब
है। फिर जब वह (भी) डूब गया तो
उसने कहा यदि मेरे रब्ब ने मुझे हिदायत
न दी होती तो मैं अवश्य पथभ्रष्ट लोगों
में से हो जाता। 178।

फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ
देखा तो कहा, सम्भवतः यह मेरा
रब्ब है। यह (उन) सबसे बड़ा है।

* आयत संख्या 77 से 79 तक में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपनी जाति के साथ एक शास्त्रार्थ का उल्लेख है जो यदा-कदा तीन दिन तक जारी रहा। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति को झूठा साबित करने के लिए सितारों का उल्लेख किया कि तुम इनको उपास्य बनाते हो जबकि वे तो डूब जाते हैं। फिर इससे बढ़ कर चन्द्रमा का वर्णन किया कि तुम में से कुछ चन्द्रमा को उपास्य बनाते हैं जबकि वह भी डूब जाने वाली वस्तु है और अन्ततः सूर्य का वर्णन किया, क्योंकि उस जाति के बहुसंख्यक लोग सूर्य के उपासक थे। आपने कहा, यद्यपि यह बहुत बड़ा है और इसको तुम रब्ब मान कर इसका सम्मान करते हो। परन्तु देख लो यह भी डूब जाता है। अतः तुम्हारा अल्लाह के सिवा किसी अन्य को उपास्य बनाना केवल झूठ है।

इस आयत के सम्बन्ध में इस युग में कई व्याख्याकार आश्चर्यजनक कहानी वर्णन करते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पिता ने उन को एक गुफा में कैद कर दिया था। जब वह वहाँ से बाहर निकले तो पहली बार सितारा देखा, फिर चन्द्रमा और फिर सूर्य को देखा और पहली बार उनको ज्ञात हुआ कि ये तीनों डूब जाने वाली वस्तुएँ हैं। परन्तु यह व्याख्या सही नहीं है।

فِي صَلَلٍ مُّبِينٍ ⑦

وَكَذِلِكَ تُرِى إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَيَكُونَ مِنَ
الْمُؤْقِنِينَ ⑦

فَلَمَّا جَرَ عَلَيْهِ الْيَلْ رَاكُوكَابًا قَالَ
هَذَا رَبِّيْ ۝ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أَحِبُّ
الْأَفْلَيْنَ ⑦

فَلَمَّا أَلْقَمَرَ بَازِغَةً قَالَ هَذَا رَبِّيْ ۝
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْثٌ لَمْ يَهِدِنِي رَبِّيْ
لَا كُوئَنَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑦

فَلَمَّا أَلْقَمَرَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَذَا رَبِّيْ

अतः जब वह भी डूब गया तो उसने कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं उस शिर्क से जो तुम करते हो, बहुत विरक्त हूँ। 179।

मैं तो निश्चित रूप से अपने ध्यान को उसी की ओर सदा मायल रहते हुए फेर चुका हूँ, जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। 180।

और उसकी जाति उससे झगड़ती रही। उसने कहा, क्या तुम अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ते हो जबकि वह मुझे हिदायत दे चुका है और मैं उन वस्तुओं (की हानि पहुँचाने) से बिल्कुल नहीं डरता जिन्हें तुम उसका साझीदार बना रहे हो। (मैं वही चाहता हूँ) जो कुछ मेरा रब्ब चाहे। जानकारी रखने की दृष्टि से मेरा रब्ब प्रत्येक वस्तु पर हावी है। अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? 181।

और मैं उससे कैसे डूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझीदार बना रहे हो, जबकि तुम नहीं डरते कि तुम उनको अल्लाह के साझीदार ठहरा रहे हो जिनके पक्ष में उसने तुम पर कोई युक्ति नहीं उतारी। अतः यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो (तो बताओ कि) दोनों में से कौन सा गिरोह सलामती का अधिक हक्कदार है। 182।

वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान को किसी अत्याचार के

هذا اَكْبَرٌ فَلِمَا أَفْلَتْ قَالَ يَقُولُ إِنِّي

بِرِّيٌّ مِّمَّا شَرِّكُونَ ④

إِنِّي وَجَهْتُ وَجْهِي لِلَّذِي فَطَرَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ خَيْرًا وَمَا أَنَا
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَحَاجَةً قَوْمَهُ قَالَ أَتَهَا جُوْنِي فِي اللَّهِ
وَقَدْهَدِينْ ۖ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّيْنْ شَيْئًا وَسَعَرَبِيْنْ كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ۖ أَفَلَا تَسْذَكُرُونَ ⑤

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا
تَخَافُونَ أَنْكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ
يَنْزِلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۖ فَآتَى
الْفَرِيقَيْنِ أَكْثَرَ إِلَّا مُؤْمِنِينَ ۗ إِنْ كُلُّمُ
تَعْلَمُونَ ۝

الَّذِينَ أَمْنَوْا وَلَمْ يُلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ

द्वारा संदिग्ध नहीं बनाया, यही वे लोग हैं जिन्हें शान्ति प्राप्त होगी और वे हिदायत प्राप्त हैं 1831। (खू. १५)

यह हमारी युक्ति थी जो हमने इब्राहीम को उसकी जाति के विरुद्ध प्रदान की। हम जिसको चाहते हैं दर्जे में ऊँचा कर देते हैं। निस्सन्देह तेरा रब्ब परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है 184।

और उसको हमने इसहाक और याकूब प्रदान किए। सबको हमने हिदायत दी और उससे पूर्व नूह को हमने हिदायत दी थी और उसकी संतान में से दाऊद को और सुलैमान को और अब्यूब को और यूसुफ को और मूसा को और हारून को भी (हिदायत दी थी)। और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल प्रदान किया करते हैं 185।

और ज़करिया और यह्या और ईसा और इलियास (को भी हिदायत दी)। ये सबके सब सदाचारियों में से थे 186।

और इस्माईल को और अल्-यसअ को और यूनुस और लूत को भी। और इन सब को हमने समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की 187।

और उनके पूर्वजों में से और उनके वंशजों में से और उनके भाइयों में से (भी कुछ को श्रेष्ठता प्रदान की) और उन्हें हमने चुन लिया और सीधी राह की ओर उन्हें हिदायत दी 188।

يُظْلِمُ أَوْلَئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ﴿١﴾
وَتِلْكَ حَجَّتَا أَتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَى
قَوْمِهِ نَرْفَعُ دَرَجَتِ مَنْ نَشَاءُ
إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلَيْهِ ﴿٢﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ اسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ طَّيْلًا
هَذَيْنَا وَنُوحًا هَذَيْنَا مِنْ قَبْلِ وَمِنْ
ذُرْيَتِهِ دَاؤَدَ وَسَلِيمَنَ وَأَيُّوبَ
وَيُوسَفَ وَمُوسَى وَهَرُونَ طَوْكَذِلَكَ
لَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٣﴾

وَزَكَرِيَاً وَيَحْيَى وَعِنْدِي وَالْيَاسَ طَيْلًا
مِنَ الصَّلِحِينَ ﴿٤﴾
وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُوسَفَ وَلَوْطًا
وَكَلَّا فَضَلَّنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾

وَمِنْ أَبَابِهِمْ وَذُرْيَتِهِمْ وَأَخْوَانِهِمْ
وَاجْتَبَيْهِمْ وَهَذَيْهِمْ إِلَى صَرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦﴾

यह है अल्लाह की हिदायत, जिसके द्वारा वह अपने भक्तों में से जिसको चाहता है पथ प्रदर्शित करता है। और यदि वे शिर्क कर बैठते तो उनके वे कर्म नष्ट हो जाते जो वे करते रहे। 189।

ये वे लोग थे जिनको हमने पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की। अतः यदि ये लोग उसका इनकार कर दें तो हम यह (मामला) ऐसे लोगों के सुर्पुर्द कर देंगे जो कदापि उसके इनकारी नहीं होंगे। 190।

यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी। अतः उनकी (उस) हिदायत का अनुसरण कर (जो अल्लाह ही ने प्रदान की थी)। तू कह दे कि मैं तुम से इसका कोई प्रतिफल नहीं माँगता यह तो समस्त लोकों के लिए एक उपदेश है। 191। (रुक् ١٦)

और उन्होंने अल्लाह का मान नहीं किया जैसा कि उसका मान होना चाहिए था, जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ भी नहीं उतारा। तू पूछ वह पुस्तक किसने उतारी थी जिसे रौशनी और हिदायत के रूप में मूसा लोगों के लिए लाया था। तुम उसे पन्ना पन्ना कर बैठे। (तुम) कुछ उसमें से प्रकट करते थे और बहुत कुछ छिपा जाते थे हलाँकि तुम्हें वह कुछ सिखाया गया था जो न तुम और न तुम्हरे पूर्वज जानते थे। कह दे, अल्लाह (ही मेरा सब कुछ है) फिर उन्हें अपनी लचर बातों में खेलते हुए छोड़ दे। 192।

ذِلِّكَ هُدَى اللَّهُ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَلَوْ أَشْرَكُوا لِحِطْعَةً عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑩

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبِيَّةَ فَإِنْ يُكَفِّرُوا بِهَا هُوَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَقَدْ وَكَلَّا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكُفَّارِيْنَ ⑪

أُولَئِكَ الَّذِينَ هُدَى اللَّهُ فِيهِمْ دِيْنُهُ افْتَدَهُ قُلْ لَا إِلَّا سُلْكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَلِمِيْنَ ⑫

وَمَا قَدَرُوا اللَّهُ حَقًّا قُدْرَةً إِذْ قَاتَلُوا مَا آتَنَا اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيْسَ تَبَدُّؤُهَا وَتَخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا أَبَاوُكُمْ قُلِ اللَّهُ لَمْ يَذْرُهُمْ فِي خَوْضِهِ فَيَلْعَبُونَ ⑬

और यह एक मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने उतारा । (वह) उसकी पुस्ति करने वाली है जो उसके सामने है ताकि तू बस्तियों की जननी (मक्का) और उसके इर्द-गिर्द बसने वालों को सतर्क करे । और वे लोग जो परलोक पर ईमान रखते हैं वे इस (पुस्तक) पर ईमान लाते हैं और वे अपनी नमाज़ की सदा सुरक्षा करते हैं । 1931

और उससे अधिक अत्याचारी कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ घड़ा या कहा कि मेरी ओर वहइ की गई है जबकि उसकी ओर कुछ भी वहइ नहीं की गई । और जो यह कहे कि मैं वैसी ही वाणी उताहँगा जैसी अल्लाह ने उतारी है । और काश ! तू देख सकता, जब अत्याचारी मृत्यु के आक्रमणों के घेरे में होंगे और फरिशते उनकी ओर अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे (और कह रहे होंगे कि) अपनी जानों को बाहर निकालो । आज के दिन तुम्हें घोर अपमानजनक अज्ञाब उन बातों के कारण दिया जाएगा जो तुम अल्लाह पर अकारण कहा करते थे और उसके चिह्नों से अहंकार पूर्वक बर्ताव करते थे । 1941

और निस्सन्देह तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ पहुँचे हो जैसा कि हमने तुम्हें पहली बार (अकेले-अकेले ही) पैदा किया था । और तुम अपनी पीठों के पीछे उन नेमतों को छोड़ आये हो जो हमने तुम्हें प्रदान की थीं । और (क्या कारण है कि) हम तुम्हारे साथ तुम्हारे

وَهَذَا كِتْبٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَرَّكٌ مُصَدِّقٌ
الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أَفْرَادَ الْقَرْبَى
وَمَنْ حَوْلَهَا طَوَّافِ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ
يَحَافِظُونَ ④

وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ إِفْرَارِ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أُوْقَالَ أُوْجَى إِلَى وَلْمَدِيْوَحِ الْيَهُوشِيْعِ
وَمَنْ قَالَ سَائِرِ مُثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ
وَلَوْتَرِيْ إِذَا الْفَلَمِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلِكَةُ بَاسْطُوا أَيْدِيهِمْ
أَخْرِجُوا أَنْفَسَكُمْ ۝ أَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ عَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنِ الْيَتِيمِ
تَسْتَكِبِرُونَ ④

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فَرَادِيْ ۝ كَمَا خَلَقْنَكُمْ
أَوْلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا حَوَلْنَكُمْ وَرَأَءَ
ظَهُورِكُمْ ۝ وَمَا نَرَى مَعَكُمْ

उन सिफारिश करने वालों को नहीं देख रहे जिन के बारे में तुम विचार करते थे कि वे तुम्हारे स्वार्थ की रक्षा करने में (अल्लाह के) समकक्ष हैं। तुम परस्पर पृथक हो चुके हो और तुम से वह खोया गया है जिसे तुम (अल्लाह का समकक्ष) समझा करते थे। 195। (रुक् ۱۱)

निस्सन्देह अल्लाह बीजों और गुठलियों का फ़ाइने वाला है। वह जीवित को मृतक से निकालता है और मृतक को जीवित से निकालने वाला है। यह है तुम्हारा रब। फिर तुम कहाँ बहकाए जा रहे हो। 196।

वह सुबहों को निकालने वाला है और उसने रात को स्थिर बनाया है। जबकि सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के अनुसार परिक्रमणशील हैं। यह पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) ज्ञान वाले का (जारी किया हुआ) विधान है*। 197।

और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके द्वारा स्थल और जल के अन्धकारों में हिदायत (अर्थात् रास्ता) पा जाओ। हमने निश्चित रूप से उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं चिह्नों को खूब खोल-खोल कर वर्णन कर दिया है। 198।

और वही है जिसने तुम्हें एक जान से उत्पन्न किया। फिर अस्थायी ठहरने का स्थान और स्थायी सुरक्षा का स्थान (बनाया)।

* यहाँ सूर्य, चन्द्रमा के परिक्रमण के मुकाबले पर धरती के बदले रात के लिए साकिन (स्थिर) शब्द प्रयुक्त किया गया है। क्योंकि उस युग के लोग धरती को स्थिर ही समझते थे। रात्रि के लिए अरबी में प्रयुक्त सकनन् शब्द में यह अर्थ भी है कि वह संतोष प्राप्ति का साधन है।

شَفَاعَاءِكُمْ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيْكُمْ
شَرِكُواۡ لَقَدْ تَقْطَعَ بَيْنَكُمْ وَصَلَّ
عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَرْغَمُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبْ وَالثَّوَىٰ ۚ يُخْرِجُ
الْحَمَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ
الْحَقِّ ۚ ذَلِكَمُ اللَّهُ فَإِنَّى تُؤْفَكُونَ ۝

فَالِقُ الْأَصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الْيَلَى سَكَنًا
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ حَسْبَانًا ۚ ذَلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا
بِهَا فِي ظُلْمَتِ الْبَرِّ وَالْبَرِّ ۚ قَدْ فَصَلَّنَا
الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ لَفَّٰنَ قَادِهٰ

निस्सन्देह हमने चिह्नों को उन लोगों के लिए खूब खोल-खोल कर वर्णन कर दिया है जो समझदारी से काम लेते हैं। 199।

और वही है जिसने आकाश से पानी उतारा। फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार का अंकुर पैदा किया। फिर हमने उसमें से एक हरियाली निकाली जिसमें से हम परत दर परत बीज निकालते हैं। और खजूर के वृक्षों में से भी उनके गुच्छों से भरपूर झुके हुए तह ब तह फल और इसी प्रकार अंगूरों के बाग और ज़ैतून और अनार एक दूसरे से मिलते जुलते को भी और न मिलते जुलते को भी (पैदा किया)। उनके फलों की ओर जब वह फल दें और उनके पकने की ओर ध्यान से देखो। निस्सन्देह उन सब में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़े चिह्न हैं। 100।

और उन्होंने जिन्नों को अल्लाह के साझीदार बना लिया है जबकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और उन्होंने बिना किसी ज्ञान के उसके लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लिए हैं। वह पवित्र है और उससे बहुत ऊँचा है जो वे वर्णन करते हैं। 101। (रुक् 12)

वह आसमानों और धरती को अनस्तित्वता से पैदा करने वाला है। उसकी कोई संतान कहाँ से हो गई जबकि उसकी कोई पत्नी ही नहीं। और उसने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु का भली-भाँति ज्ञान रखता है। 102।

فَمُسْتَقْرٌ وَمُسْتَوْدِعٌ ۖ قَدْ فَصَلَنَا
الْأُلْيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجَنَا بِهِ نَبَاتٌ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجَنَا
مِنْهُ خَضْرًا ثُمَّ خَرِجَ مِنْهُ حَبَّاً فَتَرَكَاهُ
وَمِنَ التَّنْحُلِ مِنْ طَلْعِهَا قَنْوَانٌ دَانِيَةٌ
وَجَنَّتٌ مِنْ أَغْنَابٍ وَالْزَيْتُونَ
وَالرُّمَانَ مُشَتَّبِهَا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٌ
أَنْطَرْفَوْا إِلَى ثَمَرَةٍ إِذَا آتَمْرَوْيَنْعَمْ
إِنَّ فِي ذَلِكُمْ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَجَعَلُوا اللَّهَ شَرِكَاءَ الْجِنِّ وَخَلَقُوهُ
وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنْتَتِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
سُبْحَاهُ وَتَعْلَى عَمَّا يَصْفُونَ ۝

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَلِيْيَكُونُ
لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ
كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

यह है अल्लाह तुम्हारा रब्ब । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता है । अतः उसी की उपासना करो और वह हर चीज़ पर निरीक्षक है । 103।

आँखें उसको नहीं पा सकतीं, हाँ वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है । और वह बहुत सूक्ष्मदर्शी और सदा अवगत रहने वाला है । 104।*

निस्सन्देह तुम तक तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत सी ज्ञानपरक बातें पहुँच चुकी हैं । अतः जो ज्ञान प्राप्त करे तो स्वयं अपने लिए ही करेगा और जो अंधा रहे तो स्वयं अपने विश्व ही अंधा रहेगा और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ । 105।

और इसी प्रकार हम चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं ताकि वे कह उठें कि तूने खूब सीखा और खूब सिखाया । और ताकि हम जानी लोगों पर इस (विषय) को खूब स्पष्ट कर दें । 106।

तू उसका अनुसरण कर जो तेरे रब्ब की ओर से तेरी ओर वहह किया गया है । उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और शिर्क करने वालों से मुँह फेर ले । 107।

और यदि अल्लाह चाहता तो वे शिर्क न करते और हमने तुझे उन पर रक्षक नहीं बनाया और न ही तू उन पर

ذِلِّكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
خَالقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَوِيلٌ ۝

لَا تَذْرِكَهُ الْأَبْصَارُ ۝ وَهُوَ يَدْرِكُ
الْأَبْصَارَ ۝ وَهُوَ الْأَطِيفُ الْحَبِيرُ ۝

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَارِرُ مِنْ رَّيْكُمْ ۝ فَمَنْ
أَبْصَرَ فِي نَفْسِهِ ۝ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلِيهَا
وَمَا آتَانَا عَلَيْكُمْ بِحَفِظٍ ۝

وَكَذَلِكَ نَصَرِفُ الْأَيْتَ وَلِيَقُولُوا
دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّعِمًا أَوْ حَرًّا إِلَيْكَ مِنْ رَّيْكُكَ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ ۝ وَأَغْرِضُ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۝ وَمَا جَعَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيفًا ۝ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ

* जन साधारण समझते हैं कि नज़र आँख की पुतली से निकल कर दूर की वस्तुओं को देखती है। हालाँकि इस आयत में इसका स्पष्ट रूप से खंडन किया गया है और बताया गया है कि रौशनी स्वयं आँख तक पहुँचती है । और यही विषयवस्तु अल्लाह तआला के बारे में ज्ञान रखने वालों के लिए सत्य सिद्ध होती है । किसी को सामर्थ्य प्राप्त नहीं कि वह स्वयं अल्लाह तआला को अपने दिल की आँख से भी देख सके । हाँ अल्लाह तआला जब स्वयं चाहे तो अपने नेक भक्तों पर प्रकट होता है ।

निगरान है । 108।

بُوْكِيْل ⑯

और तुम उन को गालियाँ न दो जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं । अन्यथा वे शत्रुता करते हुए अज्ञानता के कारण अल्लाह को गालियाँ देंगे । इसी प्रकार हमने प्रत्येक जाति को उनके कर्म सुन्दर बना कर दिखाए हैं । फिर उनको अपने रब्ब की ओर लौट कर जाना है । तब वह उन्हें उससे सूचित करेगा जो वे किया करते थे । 109।*

और वे अल्लाह की पक्की कसमें खा कर कहते हैं कि यदि उनके पास एक भी चिह्न आ जाए तो वे उस पर अवश्य ईमान ले आएँगे । तू कह दे कि प्रत्येक प्रकार के चिह्न अल्लाह के पास हैं परन्तु तुम्हें क्या समझाया जाये कि जब वे (चिह्न) आते हैं, वे ईमान नहीं लाते । 110।

और हम उनके दिलों को और उनकी नज़रों को उलट-पुलट कर देते हैं, जैसे वे पहली बार इस (रसूल) पर ईमान नहीं लाए थे और हम उन्हें उनकी उद्दण्डताओं में भटकता छोड़ देते हैं । 111।

(रुकू 13)

وَلَا تَسْبُو الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
فَإِنَّمَا يَسْبُو اللَّهَ عَدُوًّا لِّأَعْيُرِ عِلْمٍ ۝ كَذَلِكَ
رَبَّنَا لَكُلُّ أَمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۝ ثُمَّ إِلَى رَبِّهِمْ
مَّرْجِعُهُمْ فَيَنَتَّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدَ أَيْمَانِهِمْ لَيْلَةَ
جَاءَتْهُمْ أَيَّهُ لَيْلَةُ مِنْ كُلِّ لَيْلَةٍ
الْأَيَّتِ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يَشْعُرُ كُلُّ أَنْهَا ۝ إِذَا
جَاءَتْ لَآيُّ لَيْلَةٍ مُّنْوَنَ ۝

وَنَقْلِبُ أَفْدَتَهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ كَحَالَمْ
لَيْلَةُ مُنْوَابِةٍ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَذَرَّهُمْ فِي
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَلُونَ ۝

* इस आयत में महानतम न्याय की शिक्षा दी गई है कि अपने विरोधियों के झूठे उपास्यों को भी गालियाँ न दो क्योंकि तुम तो उन्हें झूठा जानते हो परन्तु वे नहीं जानते । इस लिये यदि उत्तर में उन्होंने अपनी अज्ञानतावश अल्लाह को गालियाँ दीं तो तुम ज़िम्मेदार होगे । फिर यह निश्चित नियम वर्णन किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना ईमान ही अच्छा दिखाई देता है । अल्लाह तआला क्रयामत के दिन निर्णय करेगा कि कौन सच्चा था और कौन झूठा । परन्तु क्रयामत से पूर्व भी इस संसार में यह निर्णय हो जाता है, केवल झूठों को इसका पता नहीं लगता ।

और यदि हमने उनकी ओर फरिश्तों को उतारा होता और उनसे मुद्दे बातचीत करते और हम उनके समक्ष समस्त वस्तुओं को एकत्रित कर देते तब भी वे ऐसे न थे कि ईमान ले आते, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहता। परन्तु उनमें से अधिकतर अज्ञानता प्रकट करते हैं ॥112॥

और इसी प्रकार हमने प्रत्येक नवी के लिए जिन और मनुष्य रूपी शैतानों को शत्रु बना दिया। उनमें से कुछ, कुछ अन्य की ओर चापलूसी की बातें धोखा देते हुए वहाँ करते हैं। और यदि तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न करते। अतः तू उनको छोड़ दे और उसे भी जो वे झूँ गढ़ते हैं ॥113॥

ताकि उनके दिल जो परलोक पर ईमान नहीं लाते इस (धोखे की) ओर आकर्षित हो जाएँ और वे उसे पसन्द करने लगें और (कुर्कम) करते रहें जो वे करते ही रहते हैं ॥114॥

क्या मैं अल्लाह के सिवा अन्य को न्यायकर्ता बनाना पसन्द कर लूँ। हालाँकि वह (अल्लाह) ही है जिसने तुम्हारी ओर एक ऐसी पुस्तक उतारी है जिसमें समस्त विवरण उल्लेख कर दिए गये हैं। और वे लोग जिनको हमने पुस्तक दी जानते हैं कि यह तेरे रब की ओर से सत्य के साथ उतारी गई है। अतः तू कदापि संदेह करने वालों में से न बन ॥115॥

وَلَوْ أَنَّا نَرَنَا إِلَيْهِ الْمُلِّكَةَ
وَكَلَمْهُمُ الْمُؤْتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمُ كُلَّ شَيْءٍ
قَبْلًا مَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ
وَلِكُنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ^⑩

وَكَذِلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطَانِ
الْأَنْسَسِ وَالْجِنِّ يُوَحِّي بِعَصْمَهُ إِلَى بَعْضِ
زُخْرُفِ الْقَوْلِ غَرْفَرًا^{۱۱} وَلُوشَاءَ رَبِّكَ
مَا فَعَلْنَاهُ فَدَرْهُمٌ وَمَا يَقْتَرُونَ^{۱۲}

وَلَتَصْغِي إِلَيْهِ أَفْيَدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضُوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ
مُفْتَرِفُونَ^{۱۳}

أَفَعَيْرَ اللَّهُ أَبْتَغَى حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ
إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا^{۱۴} وَالَّذِينَ أَتَيْتُمُ
الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِنْ رَبِّكَ
بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونُنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ^{۱۵}

और तेरे रब्ब की बात सच्चाई और न्याय की दृष्टि से पूर्णता को पहुँची । कोई उसके वाक्यों को परिवर्तित करने वाला नहीं और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ॥116॥

और यदि तू धरती वासियों में से अधिकतर का आज्ञापालन करे तो वे तुझे अल्लाह के पथ से भटका देंगे । वे तो भ्रम के अतिरिक्त किसी बात का अनुसरण नहीं करते और वे तो केवल अटकल पच्चू से काम लेते हैं ॥117॥

निस्सन्देह तेरा रब्ब सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके पथ से भटक गया है और वह हिदायत पाने वालों को भी सबसे अधिक जानता है ॥118॥

अतः यदि तुम उसकी आयतों पर ईमान लाने वाले हो तो उसी में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो ॥119॥

और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो जबकि वह तुम्हारे लिए विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुका है जो उसने तुम पर हराम किया है । सिवाय इसके कि तुम (असहनीय भूख से) उसकी ओर (आकर्षित होने पर) विवश कर दिए गए हो । और निस्सन्देह बहुत से ऐसे हैं जो बिना किसी ज्ञान के केवल निजी लालसाओं से (लोगों को) पथभ्रष्ट करते हैं । निस्सन्देह तेरा रब्ब सीमा से बढ़ने वालों को सबसे अधिक जानता है ॥120॥

وَتَمَتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا
لَا مَبْدِئٌ لِكَلِمَتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑩

وَإِنْ تُطْعِنْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ
يُضْلُوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَبَيَّنُونَ
إِلَّا الظَّنُّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ⑪

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يُضْلِلُ عَنْ
سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ⑫

فَكُلُّوْ اِمَّاْذِكْرَ اِسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ اِنْ
كُنْتُمْ بِاِلْيَهِ مُؤْمِنِينَ ⑬

وَمَا لَكُمْ أَلَا تَكُوْنُوا مَمَادِكْرَ اِسْمُ اللَّهِ
عَلَيْهِ وَقَدْ فَضَلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ
إِلَّا مَا اضْطَرَرْتُمْ لَيْهُ ۝ وَإِنْ كَثِيرًا
يُضْلُلُونَ بِآهُوَآهِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝ إِنَّ
رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ⑯

और तुम पाप के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (दोनों रूप) को छोड़ दो । निस्सन्देह वे लोग जो पाप अर्जित करते हैं उन्हें अवश्य उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो (कुकर्म) वे करते थे ॥121॥

और उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो । निस्सन्देह वह अपवित्र है और निश्चित रूप से शैतान अपने मित्रों की ओर बहाइ करते हैं ताकि वे तुमसे झगड़ा करें । और यदि तुम उनका आज्ञापालन करोगे तो तुम अवश्य मुश्किल हो जाओगे ॥122॥

(रुक् ١٤)

और क्या वह जो मुर्दा था फिर हमने उसे जीवित किया और हमने उसके लिए वह नूर बनाया जिसके द्वारा वह लोगों के बीच फिरता है, उस व्यक्ति की भाँति हो सकता है जिसका उदाहरण यह है कि वह अन्धकारों में पढ़ा हुआ हो (और) उनसे कभी निकलने वाला न हो । इसी प्रकार काफ़िरों के लिए वह कर्म सुन्दर करके दिखाया जाता है, जो वे किया करते थे ॥123॥

और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती में उसके अपराधियों के मुखिया बनाए कि वे उसमें छल और कपट करते रहें । और वे अपनी जानों के अतिरिक्त किसी से छल नहीं करते और वे समझ नहीं रखते ॥124॥

और जब उन के पास कोई चिह्न आता है वे कहते हैं हम कदापि ईमान नहीं लाएंगे

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْأُثْرِ وَبِاَطِنَةًۖ إِنَّ
الَّذِينَ يُكْسِبُونَ الْأَثْمَ سَيْجُرُونَ بِمَا
كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ⑩

وَلَا تَأْكُلُوا مَا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ
وَإِنَّهُ لِفُسْقٌ ۖ وَإِنَّ الشَّيْطَنَ لَيُؤْخُونَ
إِنَّ أُولَئِِهِمْ لَيَجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنَّ
أَطْعَمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۖ

أَوْ مَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي
الظُّلْمَمِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۖ كَذَلِكَ
رُزِّيْنَ لِلْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑪

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرَ
مَجْرِيْمِنِهِ إِنْمَكَرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ
إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَسْعُرُونَ ⑫

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا إِنَّنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ

जब तक कि हमें वैसा ही (चिह्न) न दिया जाए जैसा (पहले) अल्लाह के रसूलों को दिया गया था । अल्लाह सबसे अधिक जानता है कि अपने रसूल का चयन कहाँ से करे । जो लोग अपराध करते हैं निस्सन्देह अल्लाह के समक्ष उन्हें उनके छल कपट के कारण अपमान और एक कठोर अज्ञाब भी पहुँचेगा । 125।

अतः जिसे अल्लाह चाहे कि उसे हिदायत दे उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है । और जिसे चाहे कि उसे पथभ्रष्ट ठहराए उसका सीना तंग, घुटा हुआ कर देता है, मानो वह ज़ोर लगाते हुए आकाश (की ऊँचाई) की ओर चढ़ रहा हो । इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते अपवित्रता डाल देता है । 126।

और यहीं तेरे रब्ब का सीधा रास्ता है । निस्सन्देह हम उन लोगों के लिए जो उपदेश ग्रहण करते हैं, आयतों को भली-भाँति खोल खोल कर वर्णन कर रहे हैं । 127।

उनके लिए उनके रब्ब के पास शान्ति का घर है । और वह उन (पुण्य) कर्मों के कारण जो वे किया करते थे उनका मित्र हो गया है । 128।

और (याद रख) उस दिन जब वह उन सब को एकत्रित करेगा (और कहेगा) हे जिन्हों के समूह ! तुमने जन-साधारण का शोषण किया । और जन-साधारण में से उनके मित्र कहेंगे, हे हमारे रब्ब !

نَوْلَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رَسُولُ اللَّهِ أَعْلَمُ
حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ سَيِّصِبُ الَّذِينَ
آخْرَمُوا صَعَارًا عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ
إِمَّا كَانُوا يَمْكُرُونَ ⑩

فَمَنْ يُرِدُ اللَّهُ أَنْ يَهُدِيهِ يُشَرِّحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ ۝ وَمَنْ يُرِدُ أَنْ يُضْلِلَهُ يَجْعَلُ
صَدْرَهُ ضَيْقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصْعَدُ فِي
السَّمَاءِ ۝ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ⑪

وَهَذَا اِصْرَاطُرِبِكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَلَنَا
الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَذَكَّرُونَ ⑫

لَهُمْ دَارُ الْسَّلَمِ عِنْدَ رِبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيَهُمْ
إِمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑬

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا إِيمَاعًا مُعَشَّرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرُ شُمُّرٌ مِّنَ الْأَنْسِ ۝ وَقَالَ
أُولَئِكُمْ هُمُّ مِنَ الْأَنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْعَ

हम में से कुछ ने कुछ दूसरों से लाभ उठाया और हम अपनी इस निर्धारित घड़ी तक आ पहुँचे जो तूने हमारे लिए निश्चित की थी । वह कहेगा, तुम्हारा ठिकाना आग है (तुम) उसमें लम्बे समय तक रहने वाले होगे, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे । निस्सन्देह तेरा रब्ब परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 129।

और इसी प्रकार हम कुछ अत्याचारियों को कुछ पर उनकी उस कर्माई के कारण जो वे करते हैं प्रभुत्व प्रदान कर देते हैं । 130। (रुक् 15)

हे जिन्नों और जन साधारण के समूहो ! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए जो तुम्हारे सामने मेरी आयतें वर्णन किया करते थे और तुम्हें तुम्हारी इस दिन की भेट से सतर्क किया करते थे ? तो वे कहेंगे कि (हाँ) हम अपनी ही जानों के विरुद्ध गवाही देते हैं । और उन्हें संसार के जीवन ने धोखा में डाल दिया था और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे इनकार करने वाले थे* । 131।

यह इस लिए (होगा) कि अल्लाह किसी वस्ती को अत्याचार पूर्वक तबाह नहीं करता जब कि उसके निवासी बेखबर हों । 132।

* मअशरल जिन्न शब्द से तात्पर्य मनुष्य से भिन्न कोई सुन्दरी नहीं है बल्कि जिन्न और इन्स शब्द बड़े लोगों अथवा बड़ी जातियों और छोटे लोगों और छोटी जातियों की ओर संकेत करते हैं । यदि यह भावार्थ ठीक नहीं है तो फिर जिन्नों की ओर जो रसूल, जिन्नों में से आते थे उनकी बात मानने पर उनको स्वर्ग का शुभ-समाचार क्यों न दिया गया । कुरआन की किसी आयत अथवा किसी ही दोस में स्वर्ग में जिन्नों की उपस्थिति का कोई विवरण नहीं मिलता ।

بَعْضًا يَغْصِ وَبَلَغُنَا أَجَلَنَا لَذِي أَجَلْتَ
لَنَا قَالَ النَّارُ مَنْوَكُمْ خَلِدِينَ فِيهَا إِلَّا
مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلَيْهِمْ

وَكَذِلِكَ نُوَلِّ بَعْضَ الظَّلَمِينَ بَعْضًا
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

يَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسُ الْمُرْيَأْتُكُمْ
رَسُلُّ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ أَيْتُنِي
وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقاءَ يَوْمَكُمْ هَذَا قَاتُوا
شَهْدَنَا عَلَى أَنفُسِنَا وَغَرَّنَا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَشَهَدُوا عَلَى أَنفُسِهِمْ أَهُمْ كَانُوا كُفَّارِينَ

ذَلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرْبَى
بِظُلْمٍ وَآهَلُهَا غَافِلُونَ

और सबके लिए जो उन्होंने कर्म किए
उनके अनुसार दर्जे हैं और तेरा रब
उससे वे खबर नहीं जो वे किया करते
हैं ॥133॥

और तेरा रब निस्पृह और दयावान है।
यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और
तुम्हारे बाद जिसे चाहे उत्तराधिकारी
बना दे । जिस प्रकार उसने तुम्हें भी
एक दूसरी जाति के वंश से उत्पन्न
किया था ॥134॥

जिससे तुम्हें डराया जाता है निश्चित
रूप से वह आकर रहेगा और तुम कदापि
(हमें) विवश नहीं कर सकते ॥135॥

तू कह दे हे मेरी जाति ! तुम अपनी
जगह जो करना है करते फिरो, मैं भी
करता रहूँगा । अतः तुम अवश्य जान
लोगे कि घर का (सर्वोत्तम) परिणाम
किसके पक्ष में होता है । निस्सन्देह
अत्याचार करने वाले कभी सफल नहीं
होते ॥136॥

और उन्होंने अल्लाह के लिए उसमें से
जो उसी ने खेतियों और पशुओं में से
पैदा किया, वस एक भाग निर्धारित
कर रखा है । और वे अपनी धारणा के
अनुसार कहते हैं, यह अल्लाह के लिए
है और यह हमारे उपास्यों के लिए है ।
अतः जो उनके उपास्यों के लिए है वह
तो अल्लाह को नहीं पहुँचता । हाँ जो
अल्लाह का है वह उनके उपास्यों को
मिल जाता है । क्या ही बुरा है, जो वे
निर्णय करते हैं ॥137॥

وَلِكُلٍّ دَرْجَتٌ مِمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبَكَ
بِعَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ⑩

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ إِنْ يَشَا
يُذْهِبُكُمْ وَيَسْتَحْلِفُ مِنْ بَعْدِ كُمْ مَا يَشَاءُ
كَمَا آنَشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ أَخْرَى ⑪

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَاتِ ۝ وَمَا آنَتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ⑫

قُلْ يَقُومُ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَا كَانُتُمْ إِنِّي
عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ مَنْ تَكُونُ لَهُ
عَاقِبَةُ الدَّارِ ۝ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ⑬

وَجَعَلُوا اللَّهَ مَذَرًا أَمِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ
نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِرَعْمَهُ وَهَذَا
لِشَرِكَائِنَا ۝ فَمَا كَانَ لِشَرِكَائِهِمْ فَلَا
يَصْلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصْلَ
إِلَى شَرِكَائِهِمْ ۝ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ⑭

और इसी प्रकार मुश्किलों में से एक बड़ी संख्या को उनके (कल्पित) उपास्यों ने उनकी संतान की हत्या करना सुन्दर बना कर दिखाया ताकि वे उन्हें बर्बाद करें और उन का धर्म उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। अतः उन्हें अपनी अवस्था पर छोड़ दे और उसे भी जो वे झूठ गढ़ते हैं। 1138।

और वे अपनी सोच के अनुसार कहते हैं, ये मवेशी और खेतियाँ निषिद्ध हैं। (अर्थात्) उन्हें केवल वही खाये जिसके बारे में हम चाहें। और इसी प्रकार ऐसे चौपाय हैं जिनकी पीठें (सवारी के लिए) हराम कर दी गई और ऐसे चौपाय भी जिन पर वे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए उस का नाम नहीं पढ़ते। वह उन्हें अवश्य उसका दंड देगा जो वे झूठ गढ़ते हैं। 1139।

और वे कहते हैं जो कुछ इन चौपायों के पेटों में है यह केवल हमारे पुरुषों के लिए विशिष्ट है और हमारी पत्नियों पर हराम किया गया है। हाँ यदि वह मुर्दा हो तो उस (के लाभ) में वे सब सम्मिलित हैं। अतः वह उन्हें उनके (इस) कथन का अवश्य दंड देगा। निस्सन्देह वह परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 1140।

निस्सन्देह बहुत हानि उठाई उन लोगों ने जिन्होंने मूर्खता से बिना किसी ज्ञान के आधार पर अपनी संतान का वध कर

وَكَذَلِكَ زَيَّنَ لِكُثُرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
قُتْلُ أَوْلَادِهِمْ شَرَكَ أُولَئِكُمْ لِيُرْدُو هُمْ
وَلَيُنْسُوا عَلَيْهِمْ دِيَنَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا فَعَلَوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ⑩

وَقَالُوا هَذِهِ آنْعَامٌ وَّحَرْبٌ حِجْرٌ لَا
يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءَ بِرَغْمِهِمْ
وَآنْعَامٌ حِرْمَنٌ طَهُورٌ هَا وَآنْعَامٌ لَا
يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتَرَأَ عَلَيْهِ
سَيْجِزِيهِ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑪

وَقَالُوا مَا فِي بَطْوُنِ هَذِهِ الْآنْعَامِ
حَالِصَةٌ لِلْكُوْرِنَا وَمَحَرَّمٌ عَلَى
أَرْوَاحِنَا وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ
شَرَكَاءُ سَيْجِزِيهِ وَصَفَّهُمْ إِنَّهُ
حِكْيَمٌ عَلَيْهِ ⑫

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَاتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ

दिया और उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए उसको हराम घोषित कर दिया जो अल्लाह ने उनको जीविका प्रदान की थी। निस्सन्देह ये लोग पथभ्रष्ट हुए और हिदायत पाने वाले न हुए ॥141॥

(रुक् ١٦)

और वही है जिसने ऐसे बागान उगाए जो सहारों के द्वारा उठाये जाते हैं और ऐसे भी जो सहारों के द्वारा उठाये नहीं जाते, और खजूर और फसलें जिनके फल भिन्न-भिन्न हैं, और जैतून तथा अनार परस्पर एक मेल के हैं और बेमेल भी हैं। जब वह फलें तो उनके फल में से खाया करो और उसकी फसल प्राप्ति के दिन उसका हक्क अदा किया करो और अपव्यय से काम न लो। निस्सन्देह वह अपव्यय करने वालों को पसन्द नहीं करता ॥142॥

और चौपायों में से भार उठाने वाले और सवारी ढोने वाले (पैदा किए)। उसमें से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है और शैतान के पदचिह्नों का अनुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ॥143॥

(अल्लाह ने) आठ जोड़े बनाए हैं। भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो। तू पूछ, क्या (उनमें से) दो नर उस (अल्लाह) ने हराम किए हैं अथवा दो मादाएँ, या वह जिन पर आधारित उन दो मादाओं का गर्भ है ? मुझे किसी ज्ञान के आधार पर बताओ, यदि तुम सच्चे हो ॥144॥

أَفْتَرَأَهُ عَلَى اللَّهِ قَدْ صَلَوَ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ⑩

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّتِ مَعْرُوفَتِ
وَغَيْرَ مَعْرُوفَتِ وَالثَّخْلَ وَالرَّزْرَعَ
مُخْلِفًا أَكْلَهُ وَالرَّيْتُونَ وَالرَّمَانَ
مَسَابِهَا وَغَيْرَ مَسَابِهِ لَكُوامِنْ نَمَرَةَ
إِذَا آتَمَ رَوَانَهُ حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا
تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ⑪

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا لَكُوَا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَسْبِعُوا بَحْطُوتَ
الشَّيْطِنِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّنِيبُونَ ⑫

لَمْنِيَةَ أَرْوَاجٍ مِنَ الصَّانِ ائْنِينَ وَمِنَ
الْمَعْرِاثِنَينَ قُلْ إِنَّ اللَّذِكَرَنِ حَرَمَ أَمِ
الْأَنْثِيَنِ امَّا اشْتَمَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْأَنْثِيَنِ تَبَرُّونَ بِعِلْمٍ اَنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ⑬

और ऊँटों में से भी दो और गाय बैल में से भी दो हैं। पूछ कि क्या दो नर उसने हराम किए हैं अथवा दो मादाएँ अथवा वह जिन पर उन दो मादाओं के गर्भ आधारित हैं ? क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसकी ताकीद की थी ? अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ताकि बिना किसी ज्ञान के लोगों को पथभ्रष्ट कर दे । निस्सन्देह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता ॥145॥

(रुक् 17)

तू कह दे कि मैं उस वहइ में जो मेरी ओर की गई है किसी खाने वाले पर वह भोजन हराम घोषित किया हुआ नहीं पाता जो वह खाता है । सिवाय इसके कि मुरदार हो अथवा बहाया हुआ खून अथवा सूअर का माँस । अतः वह तो हर हाल में अपवित्र है । अथवा ऐसी ब्रष्ट चीज़ जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर ज़िवह की गई हो । परन्तु जो भूख से विवश कर दिया गया हो जबकि वह इच्छा न रखता हो और न ही सीमा का उल्लंघन करने वाला हो तो निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार बार दया करने वाला है ॥146॥

जो यहूदी हुए उन लोगों पर हमने प्रत्येक नाखून वाला पशु हराम कर दिया था और गायों में से और भेड़ बकरियों में से

وَمِنَ الْأَبْلِيلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ
إِذَاذَكَرَيْنِ حَرَمٌ أَمِ الْأَنْثَيْنِ أَمَا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ أَمْ
كَعْنَمْ شَهَدَاءٌ إِذَا وَضَعَكُمُ اللَّهُ بِهِذَا
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
لَيُنْضِلَ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ
لَا يَهِيدُ الْقَوْمَ الظَّلْمِيْنَ ۝

قُلْ لَا إِجْدِ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى
طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً
أَوْ دَمًا مَسْفُوْحًا أَوْ لَحْمَ خَنْزِيرٍ فَإِنَّهُ
رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أَهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ
أَصْطَرَ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمَنَا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنِمِ حَرَمَنَا عَلَيْهِمْ

उनकी चर्वियाँ उन पर हराम कर दी थीं। सिवाय इसके जो उनकी रीढ़ की हड्डी पर चढ़ी हुई हो अथवा अंतिमियों के साथ लगी हो अथवा हड्डी के साथ मिली जुली हो । हमने उन्हें उनके विद्रोह का यह प्रतिफल दिया और हम निस्सन्देह सच्चे हैं । 147।

अतः यदि वे तुझे झुठला दें तो कह दे कि तुम्हारा रब्ब बहुत अपार कृपाशील है जबकि उसका अज्ञाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता । 148।

और वे लोग जिन्होंने शिर्क किया वे अवश्य कहेंगे, यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे पूर्वज और न ही हम किसी चीज़ को हराम ठहराते । इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अज्ञाब को चख लिया । तू पूछ कि क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तो उसे हमारे सामने निकालो तो सही । तुम तो भ्रम के अतिरिक्त और किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते और तुम तो केवल अटकल पच्चू करते हो । 149।

तू कह दे कि पूर्णता को प्राप्त युक्ति तो अल्लाह ही की है । अतः यदि वह

شَحُونَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلْتُ ظَهُورُهُمَا
أَوْ الْحَوَالِيَا أَوْ مَا تَخَطَّطٌ بِعَظِيمٍ ۖ ذَلِكَ
جَرِيَّهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۗ وَإِلَّا الصِّدْقُونَ ۝

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ
وَاسِعَةٍ ۗ وَلَا يَرْدُدُ بَأْسَهُ عَنِ النَّقْوَمِ
الْمُجْرِمِينَ ۝

سَيَقُولُ الَّذِينَ آشَرُكُوا وَلُوْشَاءَ اللَّهَ مَا
آشَرَكُنَا وَلَا أَبَاوْنَا وَلَا حَرَمَنَا مِنْ
شَيْءٍ ۖ كَذَلِكَ كَذَبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۖ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ
عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ۝

قُلْ فَلِلَّهِ الْحَجَّةُ الْبَالِغَةُ ۗ فَلَوْ شَاءَ

* इस आयत में पहले तो यह सैद्धांतिक प्रश्न उठाया गया है कि यह कहना कि यदि अल्लाह तआला हमें शिर्क की अनुमति न देता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा ऐसा करते । बाप-दादा के वर्णन के साथ ही यह समस्या हल हो जाती है कि वे बाप-दादों का अनुसरण कर रहे हैं । अन्यथा अल्लाह तआला ने शिर्क की कोई शिक्षा नहीं दी । इसके तुरन्त बाद कहा कि यदि शिर्क से सम्बन्धित तुम्हारे पास कोई ईश्वरीय पुस्तक है जिसमें इसका वर्णन मिलता हो तो लाकर दिखाओ ।

चाहता तो तुम सब को अवश्य हिदायत
दे देता ॥150॥

तू कह दे, तुम अपने उन गवाहों को बुलाओ तो सही जो यह गवाही देते हैं कि अल्लाह ने इन चीजों को हराम कर दिया है । अतः यदि वे गवाही दें तो तू कदापि उनके साथ गवाही न दे और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया और जो परलोक पर ईमान नहीं लाते और वे अपने रब्ब का साझीदार ठहराते हैं ॥151॥ (रुक् ١٨)

तू कह दे, आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब्ब ने तुम पर हराम कर दिया है (अर्थात्) यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और (आवश्यक कर दिया है कि) माता-पिता के साथ भलाई के साथ पेश आओ और जीविका की तंगी के भय से अपनी संतान का वध न करो । हम ही तुम्हें जीविका प्रदान करते हैं और उनको भी । और तुम अश्लीलताओं के जो उन में प्रकट हों और जो उनके अन्दर छुपी हुई हों (दोनों के) समीप न फटको और न्यायोचित ढंग के सिवा किसी ऐसी जान की हत्या न करो जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की है । यही है जिसकी वह तुम्हें सख्त ताकीद करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो* ॥152॥

لَهُدِكُمْ أَجْمَعِينَ ⑩

فُلْهَلْمَ شَهَدَ أَكْمَ الَّذِينَ يَشَهَدُونَ أَنَّ
اللَّهَ حَرَمَ هَذَا فَإِنْ شَهَدُوا فَلَا شَهَدُ
مَعَهُمْ وَلَا تَتَبَعُ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِإِيمَانِهِمْ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝

فُلْتَحَلُو أَتْلُ مَا حَرَمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ
أَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئاً وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
وَلَا تَقْتُلُو أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ
نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا
تَقْتُلُو النَّفْسَ الَّتِي حَرَمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِيقَ
ذِلِّكُمْ وَصَلَّكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

* संतान का वध वास्तव में जीविका की कमी के डर से बच्चे पैदा न करने पर कहा गया है । अन्यथा चिकित्सा संबंधी मजबूरियों के आधार पर गर्भनिरोध वैध है ।

और सिवाए ऐसे ढंग के जो बहुत अच्छा हो, अनाथ के धन के निकट न जाओ यहाँ तक कि वे अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ और माप और तौल को न्याय के साथ पूरे किया करो। हम किसी जान पर उसके सामर्थ्य से बढ़ कर जिम्मेदारी नहीं डालते। और जब भी तुम कोई बात करो तो न्याय से काम लो चाहे कोई निकट संबंधी ही (क्यों न) हो और अल्लाह के (साथ किए गए) वचन को पूरा करो। यह वह विषय है जिसकी वह तुम्हें सख्त ताकीद करता है ताकि तुम उपदेश ग्रहण करो। 153।

और यह (भी ताकीद करता है) कि यही मेरा सीधा रास्ता है। अतः इसका अनुसरण करो और विभिन्न रास्तों का अनुसरण न करो अन्यथा वह तुम्हें उसके रास्ते से हटा देंगे। यह है वह, जिसकी वह तुम्हें ताकीदी नसीहत करता है ताकि तुम तक़वा अपनाओ। 154।

फिर मूसा को भी हमने पुस्तक दी जो प्रत्येक उस व्यक्ति की आवश्यकता पर पूरी उत्तरती थी जो उपकार पूर्वक काम लेता, और प्रत्येक विषय की व्याख्या पर आधारित थी और हिदायत थी और करुणा थी। ताकि वे अपने रब्ब से भेट करने पर ईमान ले आएँ। 155।

(स्कू. 19)

और यह बहुत मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने उतारा है। अतः इसका अनुसरण

وَلَا تَقْرِبُوا مَا أَنْهَا مِنْ إِيمَانٍ إِلَّا بِإِيمَانٍ هِيَ
أَحْسَنُ حَتَّى يَئِلَغَ آثَمَهُ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا تُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا
وَسِعَهَا وَإِذَا قُلْسُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَى وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذِلِّكُمْ وَصُكْمُ
بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا
تَشْيِعُوا السَّبِيلَ فَقَرَرَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ
ذِلِّكُمْ وَصُكْمُ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقَوْنَ ④

لَمْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي
أَخْسَرَ وَتَقْصِيْلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهَذِي
وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءَ رِبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبِّرِكٌ فَاتَّبِعُوهُ

करो और तक़वा अपना ओ ताकि तुम पर
दया की जाये ॥156॥

ताकि तुम यह न कह दो कि हमसे पहले
बस दो बड़े गिरोहों पर पुस्तक उतारी
गई । जबकि हम उनके पढ़ने से बिल्कुल
अनजान रहे ॥157॥

अथवा यह कह दो कि यदि हम पर
पुस्तक उतारी जाती तो अवश्य हम उन
की तुलना में अधिक हिदायत पर होते ।
अतः (अब तो) तुम्हारे पास तुम्हारे
रब्ब की ओर से एक खुली-खुली दलील
आ चुकी है और हिदायत भी और दया
भी । अतः उससे अधिक अत्याचारी
कौन हो सकता है जो अल्लाह की
आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह फेर
ले । हम उन लोगों को जो हमारे चिह्नों
से मुँह फेरते हैं अवश्य एक कठोर
अज़ाब के (रूप में) प्रतिफल देंगे
क्योंकि वे विमुख हो गये थे ॥158॥

क्या वे इसके सिवा भी कोई प्रतीक्षा कर
रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ
अथवा तेरा रब्ब आ जाए या तेरे रब्ब के
कुछ चिह्न आएँ । (परन्तु) उस दिन जब
तेरे रब्ब के कुछ चिह्न प्रकट होंगे किसी
ऐसी जान को उसका ईमान लाभ नहीं
देगा जो इससे पहले ईमान न लाई हो
अथवा अपने ईमान की अवस्था में कोई
नेकी न अर्जित की हो । तू कह दे कि
प्रतीक्षा करो निस्सन्देह हम भी प्रतीक्षा
करने वाले हैं ॥159॥

وَاتَّقُوا الْعَلَكَمْ تَرَحَمُونَ ﴿٦﴾

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَبُ عَلَى
طَالِبِيَتِنَ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ
دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ﴿٧﴾

أُو تَقُولُوا لَوْ أَنَا أُنْزِلَ عَلَيَّا الْكِتَبُ
لَكُنَّا أَهْدِي مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ
بِيُّنَّةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةً فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بِإِيمَانِ اللَّهِ وَصَدَفَ
عَنْهَا سَنْجِرِيَ الَّذِينَ يَصْدِقُونَ عَنْ
إِيمَانِهِمْ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَصْدِقُونَ ﴿٨﴾

هُلْ يُشَرِّرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيهِمُ الْمُلِّكَةُ أَوْ
يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ اِلْيَتِ رَبِّكَ طَوْمَ
يَأْتِيَ بَعْضُ اِلْيَتِ رَبِّكَ لَا يَسْقُعُ نَفْسًا
إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ أَمْتَثِ مِنْ قَبْلُ أَوْ
كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا حَيْرًا قُلِ اسْتَطِرُوا
إِنَّمَّا نَتَظَرُ فُوقَ

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोह दर गिरोह हो गये, तेरा उनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं। उनका मामला अल्लाह ही के हाथ में है। फिर वह उनको उसकी सूचना देगा जो वे किया करते थे। 160।

जो नेकी करे तो उसके लिए उसका दस गुना प्रतिफल है और जो बुराई करे तो उसे उसके बराबर ही प्रतिफल दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा। 161।

तू कह दे कि निस्सन्देह मेरे रब्ब ने मुझे सन्मार्ग की ओर हिदायत दी है (जिसे) एक क्रायम रहने वाला धर्म, सत्यनिष्ठ इब्राहीम का धर्म (बनाया है) और वह कदापि मुश्कियों में से नहीं था। 162।

तू कह दे कि मेरी उपासना और मेरी कुर्बानियाँ और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही के लिए है, जो समस्त लोकों का रब्ब है। 163।

उसका कोई समकक्ष नहीं और इसी का मुझे आदेश दिया गया है और मैं मुसलमानों में सर्वप्रथम हूँ। 164।

तू (उनसे) कह दे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब्ब पसन्द कर लूँ? जबकि वही है जो प्रत्येक वस्तु का रब्ब है। और कोई जान (बुराई) नहीं कमाती परन्तु अपने ही विरुद्ध और कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ

إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شَيْعَةً
لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى
اللَّهِ لَمْ يَمْنَعْهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ⑯

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرًا مِثْلَهَا
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يَجُزُّ إِلَّا
مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑯

قُلْ إِنَّمَا هَذِهِنَّ رَبِّيَّ إِلَى صَرَاطِ
مُسْتَقِيمٍ دِيَنًا قِيمًا مِلَّةً إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑯

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي
لِلّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ ⑯

لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذِلِّكَ أَمْرَتُ وَأَنَا أَوَّلُ
الْمُسْلِمِينَ ⑯

قُلْ أَعْيُّهُ اللَّهُ أَبْغِيْ رَبِّيَّ وَهُوَ رَبُّ كُلِّ
شَيْءٍ وَلَا تُكَسِّبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا
وَلَا تَنْزِرُ وَازِرَةً وَزْرَ أَخْرَى ۝ تَعَالَى

नहीं उठाती। फिर तुम्हारे रब्ब ही की ओर तुम्हारा लौट कर जाना है। अतः वह तुम्हें उस की जानकारी देगा जिस के सम्बन्ध में तुम परस्पर मतभेद किया करते थे। 165।

और वही है जिसने तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बना दिया और तुम में से कुछ को कुछ पर दर्जों में ऊँचाई प्रदान की ताकि वह तुम्हें उन चीज़ों से जो उसने तुम्हें प्रदान की हैं परीक्षा ले। निस्सन्देह तेरा रब्ब बदला देने में बहुत तेज़ है और निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है। 166। (रुक् २०)

رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَيِّسُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
فِيهِ تَعْلَمُونَ ۖ

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلِيفَ الْأَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ
لِيَنْبُلوُكُمْ فِي مَا أَنْتُمْ ۖ إِنَّ رَبَّكَ
سَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ

7- सूरः अल-आ'राफः

यह सूरः कुछ आयतों को छोड़कर मक्का में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 207 आयतें हैं ।

इससे पहले दो सूरतों अर्थात् सूरः अल-बक्रः एवं सूरः आले-इम्रान का आरम्भ मुक्त्तआत-ए-कुरआन* अलिफ़-लाम-मीम से हुआ था । इस सूरः में अलिफ़-लाम-मीम के साथ साद भी है जिससे ज्ञात होता है कि जो विषयवस्तु पहली सूरतों में गुज़र चुके हैं उन के साथ कुछ और विषयों की वृद्धि होने वाली है जो अल्लाह के सादिक (सत्यवादी) होने से सम्बन्ध रखते हैं ।

इस सूरः में साद से सत्यवादी होने का भाव भी लिया जाता है । परन्तु आयत सं. 3 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र हृदय का वर्णन अरबी शब्द सद्र के रूप में मिलता है जिससे ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अलिफ़-लाम-मीम से आरम्भ होने वाली सूरतों के विषयवस्तुओं और उनके अल्लाह तआला की ओर से होने पर पूर्ण विश्वास था ।

इस सूरः में पहली सूरतों से एक अतिरिक्त विषय यह वर्णन हुआ है कि केवल वे लोग ही नहीं पूछे जाएँगे जो नवियों का इनकार करते हैं, बल्कि नबी भी पूछे जाएँगे कि उन्होंने किस सीमा तक अपने उत्तरदायित्व को पूरा किया ।

इस सूरः में हज़रत आदम अलै. का फिर से वर्णन किया गया है जो अल्लाह तआला के आदेश से पैदा किये गये और जब उनमें अल्लाह तआला ने अपनी रूह (आत्मा) फूँकी, तो फिर मानव जाति को उनके आज्ञापालन का आदेश दिया । यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वर्णन इन अर्थों में है कि अल्लाह तआला के समक्ष सबसे महान सजदः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया था और इसी सम्बन्ध से समस्त मानव जाति को आप सल्ल. के आज्ञापालन का आदेश दिया गया । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सजदः का वर्णन पिछली सूरः के अन्तिम भाग पर इन शब्दों में मिलता है :- तू कह दे कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानियाँ और मेरा जीवन मरण अल्लाह ही के लिए है; जो समस्त लोकों का रब्ब है । अतः जिसका सब कुछ अल्लाह तआला के लिए समर्पित हो जाए उसके समक्ष

* मुक्त्तआत के अर्थ छाटे और तराशे हुए के हैं, यह ऐसे खण्डाक्षरों को कहा जाता है जो कुरआन मजीद की कुछ सूरतों के आरम्भ में आए हैं । जैसे अलिफ़, लाम, मीम, साद इत्यादि । इन में से प्रत्येक अक्षर एक एक शब्द का संक्षिप्त रूप होता है । इन खण्डाक्षरों के द्वारा सूरतों में वर्णित अल्लाह के गुणों की ओर संकेत होता है ।

झुकना कोई शिर्क नहीं बल्कि उसका आज्ञापालन वस्तुतः अल्लाह का आज्ञापालन करना होगा ।

इसके पश्चात् उस वस्त्र का वर्णन है जिसे पत्तों के रूप में आदम अलै. ने ओढ़ा था परन्तु इससे तात्पर्य तक़वा रूपी वस्त्र के अतिरिक्त और कोई वस्त्र नहीं था । इसी प्रकार मानवजाति को चेतावनी दी गई है कि जिस प्रकार एक बार शैतान ने आदम अलै. की जाति को फुसलाया था वह आज भी उसी प्रकार नवियों के अनुयायियों को फुसला रहा है । स्वर्ग से निकलने का वास्तविक अर्थ शरीअत के घेरे से बाहर निकलने का है, क्योंकि शरीअत के घेरे में ही स्वर्ग है और इससे बाहर नरक के अतिरिक्त कुछ नहीं । आज भी कुरआन करीम की शरीअत के घेरे से बाहर निकलने के फलस्वरूप समस्त मानव जाति को प्रत्येक प्रकार के भौतिक और आध्यात्मिक नरक में डाल दिया गया है । इसी विषय को कि 'सुन्दरता वास्तव में तक़वा की सुन्दरता है' इस आयत में वर्णन किया गया कि मस्जिद में जाने से तुमको तब तक कोई शोभा नहीं मिलेगी जब तक तुम अपनी सुन्दरता अर्थात् तक़वा को साथ ले कर नहीं जाओगे ।

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर्वोच्च पद का वर्णन मिलता है जो किसी और नबी को प्राप्त नहीं हुआ । अर्थात् आप सल्ल. और आप के सहाबा रजि. को स्वर्ग निवासियों का ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ था कि वे अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता के द्वारा क़्रायामत के दिन प्रत्येक आत्मा को पहचान लेंगे कि वह स्वर्गगामी आत्मा है अथवा नरकगामी ।

इसके पश्चात् इस सूरः में पिछले कई नवियों का वर्णन है जो अपनी जातियों के पथपर्देशन के लिए ही भेजे गए थे और उन्होंने अपनी अपनी जातियों के लिए अपार त्याग दे कर उनकी हिदायत के उपाय किए थे । परन्तु उन समस्त नवियों से बढ़ कर हिदायत का उपाय करने वाले नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे ।

इसके पश्चात् विस्तार से इस बात का वर्णन किया गया कि पिछले नबी भी बड़े-बड़े आध्यात्मिक पदों पर आसीन थे । परन्तु उनका उपकार सीमित था और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले कोई विश्वव्यापी स्तर पर भलाई पहुँचाने वाला नहीं आया । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सब नवियों के सरदार के रूप में इस लिए निर्वाचित किया गया कि आप सल्ल. समग्र विश्व के लिए साक्षात् दया और कृपा थे । अर्थात् पूर्व और पश्चिम के लिए भी कृपा स्वरूप थे तथा अरब और अरब से भिन्न लोगों के लिए भी कृपा स्वरूप थे । मनुष्यों के लिए भी कृपा स्वरूप थे और जानवरों के लिए भी कृपा स्वरूप थे । यह वह विषय है जिसका वर्णन हदीस के ग्रन्थों में अधिकता पूर्वक मिलता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा जो क़्यामत होने वाली थी, इसमें से पहली क़्यामत तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में ही घटित हो गई थी जिसका वर्णन आयत निश्चित घड़ी आ गई है और चाँद फट गया । (सूरः अल-क़मर : 2) में मिलता है । दूसरी क़्यामत अंत्ययुगीनों में (अर्थात् इमाम महदी के समय) होने वाली थी कि वे मुर्दे जो जीवित किए जाने के पश्चात् फिर मुर्दे बन गए, उनको नए सिरे से जीवित किया जाना था । फिर एक वह भी क़्यामत है जो दुष्ट लोगों पर आनी थी । यह सभी क़्यामतें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के साथ गहरा सम्बन्ध रखती हैं ।



سُورَةُ الْأَعْرَافِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَانَ وَسِعْ أَيَّاتٍ وَأَرْبَعَةٌ وَعَشْرُونَ رَسْكُوْغَا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगें देने वाला (और)
बार बार दया करने वाला है ॥

अनल्लाहु आ'लमु, सादिकुल कौलि :
मैं अल्लाह सब से अधिक जानने वाला हूँ,
बात का सच्चा हूँ। १२।

(यह) एक महान पुस्तक है जो तेरी ओर उतारी गई है। अतः तेरे सीने में इससे कोई तंगी का आभास न हो कि तू इसके द्वारा (लोगों को) सतर्क करे। और मोमिनों के लिए यह एक बड़ा उपदेश है। 1।

उसका अनुसरण करो जो तुम्हारे रब्बी
की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है
और उसे छोड़ कर दूसरे संरक्षकों का
अनुसरण न करो । तुम बहुत कम
उपदेश ग्रहण करते हो । ४।

और कितनी ही बस्तियाँ हैं कि उन्हें
हमने नष्ट कर दिया । अतः उन पर
हमारा अज्ञाब रात को (सोते समय)
आया अथवा जब वे दोपहर के समय
आराम कर रहे थे ।

जब उनके पास हमारा अङ्गाब आया तो
फिर उनकी पुकार इसके अतिरिक्त कुछ
न थी कि निस्संदेह हम ही अत्याचार
करने वाले थे । १।

अतः हम अवश्य उनसे पूछेंगे जिनकी
ओर रसूल भेजे गए थे । और हम रसूलों
से भी अवश्य पूछेंगे । ७।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

القصص

كِتَابُ أَنْزَلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ
حَرَجٌ مِّنْهُ لِتَذَكَّرَ بِهِ وَذِكْرًا
لِلْمُؤْمِنِينَ ⑦

اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ مِّنْ رِّبْكُمْ وَلَا
تَتَّبِعُوا مِنْ دُوَنِهِ أُولَيَاءٌ قَلِيلًا مَا
تَذَكَّرُونَ ①

وَكُمْ مِنْ قَرِيْةٍ أَهْلَكُنَّهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا
بِيَاتٍ أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ⑥

فَمَا كَانَ دَعْوَةُهُمْ إِذْ جَاءُهُمْ بِأَسْنَاءِ الْأَرْضِ
أَنْ قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَلَمِينَ⑤

فَلَنْسَأَلَّكَ الَّذِينَ أُرْسَلَ إِلَيْهِمْ
وَلَنْسَأَلَّ الْمُرْسَلِينَ لَكَ

और हम उन के समक्ष ज्ञान के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएँ पढ़ेंगे और हम कभी भी अनुपस्थित नहीं रहे । १।

और सत्य ही उस दिन भारी सिद्ध होगा। अतः वे जिनके पलड़े भारी होंगे वही सफल होने वाले हैं । १।

और जिनके पलड़े हल्के होंगे तो उन्हीं लोगों ने अपने आप को घाटे में डाला। इस कारण कि वे हमारी आयतों के साथ अन्याय किया करते थे । १०।

और निस्सन्देह हमने तुम्हें धरती में दृढ़ता प्रदान की और तुम्हारे लिए उसमें जीविका के साधन बनाए । पर तुम बहुत कम कृतज्ञता प्रकट करते हो । १।

(एकू । ४)

और निस्सन्देह हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें आकृतियों में डाला। फिर हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के अतिरिक्त उन सबने सजदः किया । वह सजदः करने वालों में से न बना । १।

उस (अल्लाह) ने कहा तुझे सजदः करने से किस ने रोका ? जबकि मैं ने तुझे आदेश दिया था । उसने कहा कि मैं उससे श्रेष्ठ हूँ । तूने मुझे तो अग्नि से पैदा किया है और उसे गीली मिट्टी से पैदा किया है । ३।

उसने कहा अतः तू इस (स्थान) से निकल जा । तुझे इसमें अहंकार

فَلَنْقَصُّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كَنَّا
عَانِيْدِيْنَ ①

وَالْوَرْزَبْ يَوْمِئِنِ الرَّجْعَ فَمَنْ تَقْلَتْ
مَوَازِيْنَهُ فَأَوْلَىْكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ
وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنَهُ فَأَوْلَىْكَ الظَّيْنَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِإِيمَانِنا
يَظْلِمُونَ ②

وَلَقَدْ مَكَنْتُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعْلْنَاكُمْ
فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ③

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَرْنَاكُمْ ثُمَّ قَلَنَا
لِلْمَلِكَةِ ابْجَدُوا إِلَادَمْ فَسَجَدُوا إِلَاهَا
إِنَّلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ④

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَا تَسْجُدَ إِذَا أَمْرُنِيْكَ
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتِيْ فَمِنْ نَارِ
وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينِ ⑤

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ

करने का सामर्थ्य न होगा । अतः निकल जा, निस्सन्देह तू नीच लोगों में से है ॥14॥

उसने कहा, मुझे उस दिन तक ढील प्रदान कर जब वे उठाए जाएँगे ॥15॥

उसने कहा, तू अवश्य ढील दिए जाने वालों में से है ॥16॥

उसने कहा कि तूने मुझे पथभ्रष्ट घोषित किया है, इसलिए मैं अवश्य उनकी धात में तेरे सन्मार्ग पर बैठूँगा ॥17॥*

फिर मैं अवश्य उन तक उनके सामने से भी और उनके पीछे से भी और उनके दाईं ओर से भी और उनकी बाईं ओर से भी आँऊँगा । और तू उनमें से अधिकांश को कृतज्ञ नहीं पाएगा ॥18॥

उसने कहा, तू यहाँ से निन्दित और तिरस्कृत होकर निकल जा । उनमें से जो भी तेरा अनुसरण करेगा मैं निस्सन्देह तुम सब से नरक को भर दूँगा ॥19॥

और हे आदम ! तू और तेरी पत्नी स्वर्ग में निवास करो और दोनों जहाँ से चाहो खाओ । हाँ तुम दोनों इस वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे ॥20॥

फिर शैतान ने उनके मन में दुविधा डाली ताकि वह उनकी ऐसी दुर्बलताओं में से कुछ को उन पर प्रकट कर दे जो उनसे छुपाई गई थीं । और उसने कहा कि तुम्हें

تَكَبَّرَ فِيهَا فَأُخْرَجَ إِلَكَ مِنَ
الصَّفَرِينَ ⑪

قَالَ أَنْظُرْنِي إِلَى يَوْمِ يَبْعَثُونَ ⑫

قَالَ إِلَكَ مِنَ الْمُنْتَرِينَ ⑬

قَالَ فِيمَا أَغْوَيْتُكُلَّا لَقَعْدَنَ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ⑭

شَرَّ لَا يَتَّهِمُونَ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ
وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَكِيرِينَ ⑮

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَذْحُورًا
لَمَنْ تَبَعَكَ مِنْهُمْ لَا مَلَئَنَ جَهَنَّمَ
مُنْكَرٌ أَجْمَعِينَ ⑯

وَيَا آدَمَ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا
مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ
فَتَكُونُوا مِنَ الظَّالِمِينَ ⑰

فَوَسُوسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ بِلِبْدَى لَهُمَا
مَأْوَى رَى عَنْهُمَا مِنْ سَوْاتِهِمَا وَقَالَ مَا

* जब तक अल्लाह तआला की विशेष सुरक्षा न हो सन्मार्ग पर चलने वाले भी शैतान के बहकावे से सुरक्षित नहीं होते । कुरआन करीम ने जिनके सम्बन्ध में प्रकोपग्रस्त और पथभ्रष्ट कहा है, वे सन्मार्ग पर ही चलने वाले थे, परन्तु भटक गए ।

तुम्हारे रब्ब ने इस वृक्ष से केवल इस लिए रोका कि कहीं तुम दोनों फरिशते ही न बन जाओ अथवा अमर न हो जाओ । 21।

और उसने उन दोनों से कसम खा कर कहा कि निस्सन्देह मैं तुम दोनों के पक्ष में केवल (नेक) नसीहत करने वालों में से हूँ । 22।

अतः उसने उन्हें एक बड़े धोखे से बहका दिया । फिर जब उन दोनों ने उस वृक्ष को चखा तो उनकी दुर्बलताएँ उन पर प्रकट हो गई और वे दोनों स्वर्ग के पत्तों में से कुछ अपने ऊपर ओढ़ने लगे । और उनके रब्ब ने उनको आवाज़ दी कि क्या मैंने तुम्हें उस वृक्ष से मना नहीं किया था और तुमसे यह नहीं कहा था कि निस्सन्देह शैतान तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ? 23।

उन दोनों ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमने अपनी जानों पर अत्याचार किया है । और यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की तो निस्सन्देह हम घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे । 24।

उसने कहा कि तुम सब (यहाँ से) इस दशा में निकल जाओ कि तुम में से कुछ, कुछ के शत्रु होंगे । और तुम्हारे लिए धरती में कुछ समय का निवास और कुछ समय के लिए मामूली लाभ उठाना (तय) है । 25।

उसने कहा तुम उसी में जिओगे और उसी में मरोगे और उसी में से तुम निकाले जाओगे । 26। (रुक् २)

لَهُمْ كَمَا رَبُّكُمَا عَنْ هِنْدِو الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ
تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَلِيلِينَ ①

وَقَاسَمَهُمَا إِلَى لَكُمَا لِمَنِ التِّصْحِينَ ②

فَذَلِكُلَّهُمَا بِعَرْوِرٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَأْتُ لَهُمَا سُوَاتِهِمَا وَطَفِقَا يَحْصِلُونَ
عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمْ رَبُّهُمَا
إِلَّا أَنَّهُمْ كَمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقْلَى
لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّنِينٌ ③

قَالَ أَرَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ
تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا نَكُونَنَّ مِنَ
الْخُسْرِيْنَ ④

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِيَعْضِ عَدُوٌّ
وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقْرٌ وَمَتَاعٌ إِلَى
حِلْيَنِ ⑤

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا
تُخْرَجُونَ ⑥

हे आदम की संतान ! निस्सन्देह हमने तुम पर वस्त्र उतारा है जो तुम्हारी दुर्बलताओं को ढाँपता है और शोभा स्वरूप है । और रहा तक्कवा का वस्त्र तो वह सबसे उत्तम है । ये अल्लाह की आयतों में से कुछ हैं ताकि वे उपदेश ग्रहण करें । 127।

हे आदम की संतान ! शैतान कदापि तुम्हें भी परीक्षा में न डाले जैसे उसने तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकलवा दिया था । उसने उनसे उनके वस्त्र छीन लिए ताकि उनकी बुराइयाँ उनको दिखाए । निस्सन्देह वह और उसके गिरोह तुम्हें देख रहे हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते । निस्सन्देह हम ने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है जो ईमान नहीं लाते । 128।

और जब वे कोई अश्लील बात करें तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी पर पाया और अल्लाह ही ने हमें इसका आदेश दिया है । तू कह दे निस्सन्देह अल्लाह अश्लीलता का आदेश नहीं देता । क्या तुम अल्लाह पर वह बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते ? 129।

तू कह दे कि मेरे रब्ब ने न्याय का आदेश दिया है । और यह (आदेश दिया है) कि तुम प्रत्येक मस्जिद में अपना ध्यान (अल्लाह की ओर) लगाए रखो । और धर्म को उसके लिए विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारा करो । जिस प्रकार उसने तुम्हें पहली

يَبْنِيَّ أَدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِيَأْسَأَ
يُوَارِيْ سَوْا نِكْمَ وَرِيشَاطْ وَلِيَائِسْ
الشَّقْوَى ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكَ مِنْ أَيْتِ اللَّهِ
لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُونَ ⑭

يَبْنِيَّ أَدَمَ لَا يَقْتِنَشَكُمُ الشَّيْطَانُ كَمَا
أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا
لِيَاسِهِمَا لِيَرِيهِمَا سَوْا تِهِمَاءِ إِنَّهُ
يَرِيْكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا
تَرَوْنَهُمْ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطَيْنَ أَوْلِيَاءَ
لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ⑮

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَاتُلُوا وَجَذَنَا عَلَيْهَا
أَبْأَءَنَا وَاللَّهُ أَمْرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ
بِالْفَحْشَاءِ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

قُلْ أَمْرَ رَبِّنَا بِالْقُسْطِ وَأَقِيمُوا
وَجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ
مُخْلِصِينَ لِهِ الدِّينَ كَمَا بَدَأَكُمْ

बार पैदा किया उसी प्रकार तुम (मृत्यु के बाद) लौटोगे । 30।

एक गुट को उसने हिदायत प्रदान की और एक गुट के लिए पथभ्रष्टता अनिवार्य हो गई । निस्सन्देह ये वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को मित्र बना लिया और यह विचार करते हैं कि वे हिदायत प्राप्त हैं । 31।

हे आदम की संतान ! प्रत्येक मस्जिद में अपनी शोभा (अर्थात् तक़वा का वस्त्र) साथ ले जाया करो । और खाओ और पिओ परन्तु सीमा का उल्लंघन न करो । निस्सन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता । 32। (रुकू 3/10)

तू पूछ कि अल्लाह की (उत्पन्न की हुई) सुन्दरता को किसने हराम किया है जो उसने अपने भक्तों के लिए निकाली है । और जीविका में से पवित्र चीजों को भी । तू कह दे कि ये इस संसार के जीवन में भी उनके लिए हैं जो ईमान लाए (और) क्यामत के दिन तो विशेष कर (बिना किसी की साझेदारी के केवल उन्हीं के लिए होंगी) । इसी प्रकार हम चिह्नों को खोल-खोल कर ऐसे लोगों के लिए वर्णन करते हैं जो ज्ञान रखते हैं । 33।

तू कह दे कि मेरे रब्ब ने केवल अश्लीलता की बातों को हराम घोषित

تَعْوِدُونَ ﴿٧﴾

فَرِيقًا هُدِيَ وَ فَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الظُّلْمَةُ
إِنَّمَا الْحَدُودُ لِلشَّيْطَانِ أَوْ لِيَأْءِمُ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَ يُحْسِبُونَ أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ⑦

يَبْنَىَ أَدَمَ حُدُودًا زِينَتُكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَ كُلُّوَا شَرَبُوا وَ لَا تُسْرِفُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِينَ ﴿٨﴾

قُلْ مَنْ حَرَمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ
وَ الظِّلِّيْلَتِ مِنَ الرِّزْقِ ﴿٩﴾ قُلْ هَذِهِ لِلَّذِينَ
أَمْوَالِفِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
كَذَلِكَ تُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑨

قُلْ إِنَّمَا حَرَمَ رِفْقَ الْفَوَاحِشِ مَا ظَهَرَ

किया है, उसे भी जो उसमें से प्रकट हो और उसे भी जो गुप्त हो । इसी प्रकार पाप और अनैतिक विद्रोह को भी और इस बात को भी कि तुम उसको अल्लाह का साझीदार ठहराओ जिसके पक्ष में उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा । और यह (भी) कि तुम अल्लाह की ओर ऐसी बातें आरोपित करो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है । 134।

और प्रत्येक समुदाय के लिए एक समय निर्धारित है । अतः जब उनका निर्धारित समय आ जाए तो एक पल भी न वे उससे पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं । 135।

हे आदम की संतान ! यदि तुम्हारे पास तुम में से रसूल आएँ जो तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें पढ़ते हों तो जो भी तक़वा धारण करे और (अपना) सुधार करे तो उन लोगों को कोई भय नहीं होगा और वे दुःखी नहीं होंगे । 136।*

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया और उनसे अहंकार पूर्वक व्यवहार किया, वही लोग आग वाले हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं । 137।

अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े अथवा उसके चिह्नों को झुठलाए । यही वे लोग हैं जिन्हें भाग्य के लेखों में से उनका

ِمُهَاوَمَابَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبُعْيِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَأَنْ شُرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يَرِزُّ لِهِ سُلْطَنًا
وَأَنْ تَقُولُوا أَعْلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑥

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجْلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقِدُمُونَ ⑦

يَنْفَقُ أَدَمَ إِمَامًا يَأْتِيَنَّكُمْ مُّرْسَلٌ مِّنْكُمْ
يَعْصُمُونَ عَلَيْكُمُ الْأَبْيَانِ فَمَنِ اتَّقَى وَأَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرَنُونَ ⑧

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاِيمَانِنَا وَاسْتَكَبَرُوا
عَنْهَا أَوْلَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَلِدُونَ ⑨

فَمَنْ أَظْلَمَ مِنْ إِنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِإِيمَانِهِ أَوْلَئِكَ يَنَّا لَهُمْ نَصِيبُهُمْ

* यह आदम के वंशज के लिए सार्वजनिक उद्दोधन है कि जब भी उनके पास रसूल आएँ और अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाएँ तो वे उनसे विमुख न हों ।

(निश्चित) भाग मिलेगा यहाँ तक कि जब हमारे दूत उन्हें मृत्यु देते हुए उनके पास पहुँचेंगे तो वे उन्हें कहेंगे कि कहाँ हैं वे, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते रहे हो । (उत्तर में) वे कहेंगे, वे सब हमसे खो गए । और वे (स्वयं) अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे काफिर थे । 138।

(तब) वह (उनसे) कहेगा कि उन जातियों के साथ जो जिन्हों और मनुष्यों में से तुम से पहले गुज़र गई हैं, तुम भी अग्नि में प्रविष्ट हो जाओ । जब भी कोई जाति (उसमें) प्रवेश करेगी वह अपने जैसे चाल-चलन वाली जाति पर ला'नत डालेगी । यहाँ तक कि जब वे सब के सब उसमें एकत्रित हो जाएंगे तो उनमें से बाद में आने वाली (जाति) अपने से पहली के बारे में कहेगी, हे हमारे रब्ब ! यही वे लोग हैं जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया । अतः उनको आग का दुगना अज्ञाब दे । वह कहेगा कि प्रत्येक को दुगना (अज्ञाब) ही मिल रहा है परन्तु तुम जानते नहीं । 139।

और उनमें से पहला (समुदाय) दूसरे से कहेगा तुम्हें हम पर कोई श्रेष्ठता नहीं थी । अतः जो तुम अर्जित किया करते थे उसके कारण अज्ञाब चखो । 140। (रुक् ۴۱)

निससन्देह वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया और उनसे अहंकार किया, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले

مِنْ الْكِتَبِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولًا
يَوْقِنُهُمْ لَا قَالُوا إِنَّمَا مَا كُنْنَا
مِنْ دُونِ اللَّهِ لَقَالُوا أَصْلُوْا عَنَّا وَشَهِدُوا
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا أَكْفَارِينَ ⑩

قَالَ ادْخُلُوْا فِي أَمْوَالِهِمْ قَدْخَلْتُ مِنْ قَبْلِكُمْ
مِنَ الْجِنِّ وَالْأَنْسِ فِي التَّارِيْخِ كُلُّمَا دَخَلْتُ
أَمْمَةً تَعْنَتُ أَحْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا اذَارَكُوْا
قِبَّاهَا جَمِيعًا لَقَالَتْ أَخْرِيْهُمْ لَا وَلَهُمْ
رَبٌّ بَّا هُوَ لَاءٌ أَصْلُوْنَا فَإِنَّهُمْ عَذَابًا
ضِعْفًا قِبَّلَ التَّارِيْخِ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٍ
وَلِكُلِّ لَا تَعْلَمُونَ ⑪

وَقَاتَ أُولَئِمْ لَا خَرِيْهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ قَدْرُهُمْ قَوْالِعَدَابِ إِمَّا
كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۱۲

إِنَّ الَّذِينَ كَذَبُوا إِيمَانَهُمْ وَأَسْكَبُرُوا عَنْهَا لَا
تَفْتَحَ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ

जाएंगे और वे स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं होंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके से निकल जाए । और इसी प्रकार हम अपराधियों को प्रतिफल दिया करते हैं । 41।

उनके लिए नरक में तैयार की हुई एक जगह होगी और उनके ऊपर परत दर परत (अन्धकार के) पढ़े होंगे । और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिफल दिया करते हैं । 42।

और वे लोग जो ईमान लाए और सत्कर्म किए हम (उन में से) किसी पर उसके सामर्थ्य से बढ़ कर बोझ नहीं डालेंगे । यही वे लोग हैं जो स्वर्गगामी हैं वे उसमें सदैव रहने वाले हैं । 43।

और हम उनके सीनों से देषभाव को खींच निकालेंगे । उनके नियंत्रणाधीन नहरें बहती होंगी । और वे कहेंगे कि समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिस ने हमें यहाँ पहुँचने का मार्ग दिखाया । जबकि हम कभी हिदायत पा नहीं सकते थे यदि अल्लाह हमें हिदायत प्रदान न करता । निस्सन्देह हमारे पास हमारे रब्ब के रसूल सत्य के साथ आए थे । और उन्हें आवाज़ दी जाएगी कि जो तुम कर्म करते थे उसके फलस्वरूप यह वह स्वर्ग है जिसका तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया गया है । 44।

और स्वर्गवासी अग्नि (नरक) वासियों को आवाज़ देंगे कि हमने उस वायदा को जो हमारे रब्ब ने हमसे किया था सत्य पाया है तो क्या तुमने भी उस वायदा को

الْجَنَّةَ حَتَّى يَلْعَجُ الْجَمَلُ فِي سَعِ الْخَيَاطِ
وَكَذِلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ①

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مَهَادِّوْهُمْ فَوْقَهُمْ
غَوَائِشٌ ۝ وَكَذِلِكَ نَجْزِي الظَّلَمِينَ ②

وَالَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ لَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا ۝ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۝ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ③

وَنَرْعَانًا مَا فِي صَدُورِهِمْ مِنْ غُلٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَرُ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ
الَّذِي هَدَنَا إِلَيْهَا ۝ وَمَا كُنَّا لِنَهْمَدِي
لَوْلَا أَنْ هَدَنَا اللَّهُ ۝ لَقَدْ جَاءَتْ رَسُولُ رَبِّنَا
بِالْحَقِّ ۝ وَنَوْدَأْنُ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ
أَوْرِثُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ④

وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ الشَّارِأْنَ
قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدْنَا رَبَّنَا حَقًّا فَهُلْ

सत्य पाया जो तुम्हारे रब्ब ने (तुम से) किया था । वे कहेंगे हाँ, तब एक घोषणा करने वाला उनके मध्य घोषणा करेगा कि अत्याचारियों पर अल्लाह की लानत हो । 45।

जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (देखना) चाहते हैं और वे परलोक का इनकार करने वाले हैं । 46।

और उनके मध्य पर्दा पड़ा होगा और ऊँचे स्थानों पर ऐसे पुरुष होंगे जो सबको उनके लक्षणों से पहचान लेंगे और वे स्वर्ग वासियों को आवाज़ देंगे कि तुम पर सलाम हो, जबकि अभी वे उस (स्वर्ग) में प्रविष्ट नहीं हुए होंगे और (उसकी) इच्छा रख रहे होंगे । 47।

और जब उनकी नज़रें अग्नि गामियों की ओर फेरी जाएँगी तो वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! हमें अत्याचारी लोगों में से न बनाना । 48। (रुक् ١٢)

और ऊँची जगहों वाले ऐसे लोगों से सम्बोधित होंगे जिनको वे उनके लक्षणों से पहचान लेंगे । और कहेंगे तुम्हारा समूह और जो तुम अहंकार किया करते थे, तुम्हारे काम न आ सके । 49।

क्या यहीं वे लोग हैं कि जिनके बारे में तुम क़समें खाया करते थे कि अल्लाह उन पर दया नहीं करेगा । (फिर स्वर्गगामियों से कहा जाएगा, हे मोमिनो !) स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ ।

وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۝ قَالُوا نَعَمْ
فَأَذْنِ بِمُؤْذِنٍ بِيَتَّهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى
الظَّلِيمِينَ ۝

الَّذِينَ يَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا
عَوْجًا ۝ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كُفَّارُونَ ۝
وَبَيْتَهُمَا حِجَابٌ ۝ وَعَلَى الْأَعْرَافِ
رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًاً بِسِيمَهُمْ ۝ وَنَادَوْا
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِمْ عَلَيْكُمْ
لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۝

وَإِذَا صَرَفْتُ أَبْصَارَهُمْ تِلْقَاءَ
أَصْحَابِ النَّارِ ۝ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
الْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ ۝

وَنَادَى أَصْحَابَ الْأَعْرَافِ رِجَالًا
يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَهُمْ قَالُوا مَا أَعْنَى
عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ
تَشْتَكِيرُونَ ۝

أَهُولَاءِ الَّذِينَ أَفْسَمْتُمْ لَا يَأْتِيهِمُ اللَّهُ
بِرَحْمَةٍ ۝ أَدْخَلُوا الْجَنَّةَ لَا خُوفٌ

तुम पर कोई भय नहीं होगा और न तुम कभी दुःखी होगे । 50।

और अग्निगामी, स्वर्गवासियों को आवाज़ देंगे कि उस पानी में से या उस जीविका में से जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है हमें भी कुछ प्रदान करो । वे उत्तर देंगे निस्सन्देह अल्लाह ने यह दोनों काफ़िरों के लिए हराम कर दिए हैं । 51।

(उन के लिए) जिन्होंने अपने धर्म को दिल्लगी और खेल कूद बना रखा था और उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया । अतः आज के दिन हम भी उन्हें उसी प्रकार भुला देंगे जैसे वे अपने इस दिन की भेट को भुला बैठे थे । और इस लिए कि वे हमारी आयतों का इनकार किया करते थे । 52।

और निस्सन्देह हम उनके पास एक ऐसी पुस्तक लाए थे जिसे हमने ज्ञान के आधार पर विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया था । वह उन लोगों के लिए हिदायत और दया (स्वरूप) थी जो ईमान ले आते हैं । 53।

क्या वे केवल उसके परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं । जिस दिन उसका परिणाम आ जाएगा तो वे लोग जो इससे पहले उस (पुस्तक) को भुला बैठे थे, कहेंगे कि निस्सन्देह हमारे रब्ब के रसूल सत्य के साथ आए थे । अतः क्या कोई हमारी सिफारिश करने वाले हैं जो हमारी सिफारिश करें या फिर हमें

عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْرِزُونَ ⑥

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ
أَقْصُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مَارِزُ قَمَّةَ اللَّهِ
قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَمَ مِمَّا عَلَى الْكُفَّارِينَ ⑦

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهُوَا وَ لَعْبًا
وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنْسِمُهُ
كَمَا نَسِيَ الْقَاعَدِيُّوْ مِهْرَهُذَا وَمَا كَانُوا
بِإِيمَانٍ يَجْحَدُونَ ⑧

وَلَقَدْ جِئْنَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَلَّيْهُ عَلَى عِلْمٍ
هَذِي وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑨

هَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ طَيْمَ يَأْتِي
تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُواهُ مِنْ قَبْلِ فَكُذْ
جَاءَتْ رَسْلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ
شَفَعَاءَ فَيَشْفَعُونَا أَوْ نَرَدُ فَنَعْمَلُ

वापिस लौटा दिया जाए तो हम उन कर्मों के बदले जो हम किया करते थे कुछ और कर्म करेंगे । निस्सन्देह उन्होंने अपने आप को घाटे में डाल दिया । और जो भी वे झूठ गढ़ा करते थे, (वह) उनसे खोया गया । १५४। (रुक् ६/३)

निस्सन्देह तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया । वह रात के द्वारा दिन को ढाँप देता है जबकि वह उसे शीघ्रता पूर्वक चाह रहा होता है । और सूर्य और चन्द्रमा और सितारे (पैदा किए) जो उसके आदेश से काम पर लगाए गए हैं । सावधान ! पैदा करना और शासन चलाना भी उसी का काम है । बस एक वही अल्लाह बरकत वाला सिद्ध हुआ जो समस्त लोकों का रब है । १५५।*

अपने रब को विनम्रता पूर्वक और अप्रकाश्य रूप से पुकारते रहो । निस्सन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता । १५६।

और धरती में उसके सुधार के बाद उपद्रव न फैलाओ और उसे भय और अभिलाषा रखते हुए पुकारते रहो । निस्सन्देह अल्लाह की दया उपकार करने वालों के निकट रहती है । १५७।

غَيْرَ الَّذِي كَنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يُفْتَرُونَ

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سَتَةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى
الْعَرْشِ يَعْشِي الْيَلَى اللَّهَارَ يَظْلِبُهُ
حَثِيقًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنَّجْوَمَ
مَسْخَرِيٍّ بِإِمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْأَمْرُ تَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

أَدْعُوكَمْ تَصْرِعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ
لَا يُحِبُّ الْمُعَذَّبِينَ

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا
وَادْعُوهُ حَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَةَ اللَّهِ
قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ

* छः दिनों से अभिप्राय छः युग हैं और एक युग करोड़ों वर्ष का भी हो सकता है । अर्श पर विराजमान होने से भाव यह है कि सब कुछ सृष्टि करने के पश्चात् अल्लाह तआला अपनी सृष्टि से सम्बन्ध नहीं तोड़ता बल्कि जिस प्रकार एक शासक प्रजा की निगरानी करता है, इसी प्रकार अल्लाह अपनी समस्त सृष्टि की निगरानी करता है ।

और वही है जो अपनी कृपा (वृष्टि) के आगे आगे हवाओं को शुभ-समाचार देते हुए भेजता है। यहाँ तक कि जब वे भारी बादल उठा लेती हैं तो हम उसे एक मृत भू-भाग की ओर हाँक कर ले जाते हैं। फिर उससे हम पानी उतारते हैं और उस (पानी) से प्रत्येक प्रकार के फल उगाते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को (जीवित करके) निकालते हैं ताकि तुम उपदेश ग्रहण करो । १५८।

और पवित्र भू-भाग (वह होता है) जिसकी हरियाली उसके रब्ब के आदेश से (पवित्र ही) निकलती है और जो अपवित्र हो (उसमें से) बेकार चीजों के सिवा कुछ नहीं निकलता। इसी प्रकार हम चिह्नों को उन लोगों के लिए फेर-फेर कर वर्णन करते हैं जो कृतज्ञता प्रकट किया करते हैं । १५९। (रुक् 7/4)

निस्सन्देह हमने नूह को भी उसकी जाति की ओर भेजा था। अतः उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा और कोई उपास्य नहीं। निस्सन्देह मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज्ञाब से डरता हूँ। । १६०।

उसकी जाति के सरदारों ने कहा, हम तो तुम्हे निश्चित रूप से एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ देखते हैं । १६१।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मैं किसी पथभ्रष्टता में पड़ा नहीं हूँ बल्कि मैं तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ। । १६२।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقْلَتْ سَحَابًا ثُقَالًا
سَقَلَةً لِبَلَدٍ مَيْتَ فَأَنْزَنَا بِهِ الْمَاءَ
فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الشَّمَرِتِ كَذَلِكَ
يُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ⑥

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ
رَبِّهِ وَالَّذِي خَبَثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا
كَذَلِكَ كَذَلِكَ نُصْرِفُ الْأَيْتِ لِقَوْمٍ
يَشْكُرُونَ ⑦

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمٍ فَقَالَ يَقُولُمْ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٌ غَيْرُهُ ۖ إِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑧

قَالَ الْمَلَائِمُونَ قَوْمَهُ إِنَّا نَرِيكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑨

قَالَ يَقُولُمْ لَيْسَ بِنِ صَلَلَهُ وَلَكِنِ
رَسُولُ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑩

मैं तुम्हें अपने रब्ब के संदेश पहुँचाता हूँ
और तुम्हें उपदेश देता हूँ और मैं अल्लाह
से वह ज्ञान प्राप्त करता हूँ जो तुम नहीं
जानते । 163।

क्या तुमने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त
किया है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की
ओर से एक अनुस्मारक-ग्रन्थ आया है
जो तुम ही मैं से एक पुरुष पर उत्तरा है
ताकि वह तुम्हें सतर्क करे । और ताकि
तुम तक्वा धारण करो और ताकि
संभवतः तुम पर दया की जाए । 164।

अतः उन्होंने उसे झुठला दिया और हमने
उसे और उनको जो नौका में उसके साथ
(सवार) थे, मुक्ति प्रदान की । और
उन्हें डुबो दिया जिन्होंने हमारे चिह्नों
को झुठलाया था । निस्सन्देह वे अंधे
लोग थे । 165। (रुकू़ ١٣)

और आद (जाति) की ओर उनके भाई
हूद को (हमने भेजा) । उसने कहा, कि
हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना
करो । उसके सिवा तुम्हारा और कोई
उपास्य नहीं । क्या तुम तक्वा धारण
नहीं करोगे ? । 166।

उसकी जाति मैं से उन सरदारों ने
जिन्होंने कुफ़ किया था कहा, निस्सन्देह
हम तुझे एक बड़ी मूर्खता में पढ़े देखते हैं
और हम समझते हैं कि तू अवश्य झूठे
लोगों में से है । 167।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझ मैं कोई
मूर्खता नहीं बल्कि मैं तो समस्त लोकों के
रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ । 168।

أَبْلَغُكُمْ رِسْلِتِ رَبِّيْ وَأَنْصَحُكُمْ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ④

أَوْ عَجِّلْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرُ مِنْ رَبِّكُمْ
عَلَى رَجُلٍ مِنْكُمْ لِتُنْذِرُكُمْ وَلَتَقْفَوا
وَلَعَلَّكُمْ تُرَحَّمُونَ ④

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي
الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا إِلَيْنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ④

وَالَّذِي عَادَ أَخَاهُمْ هُوَدًا ۚ قَالَ يَقُولُ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٌ غَيْرَهُ ۚ أَفَلَا
تَشْكُفُونَ ④

قَالَ الْمَلَائِكَةُ كَفَرُوا مِنْ قَوْمَهُ إِنَّا
لَنَرِيكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَنْظُنُكَ
مِنَ الْكَذَّابِينَ ④

قَالَ يَقُولُ نَيْسَكَ فِي سَفَاهَةٍ وَلَكِنِّي
رَسُولُ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ④

मैं तुम्हें अपने रब्ब के संदेश पहुँचाता हूँ
और मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त
उपदेश देने वाला हूँ। 169।

क्या तुमने आश्चर्य व्यक्त किया है कि
तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक
अनुस्मारक-ग्रन्थ आया है जो तुम ही मैं
से एक पुरुष पर अवतरित हुआ है ताकि
वह तुम्हें सतर्क करे ? और याद करो
जब उसने नूह की जाति के बाद तुम्हें
उत्तराधिकारी बना दिया था और तुम्हें
वंशवृद्धि के द्वारा बहुत बढ़ाया । अतः
अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि
तुम सफलता पा जाओ । 170।

उन्होंने कहा क्या तू इस कारण हमारे
पास आया है कि हम केवल एक अल्लाह ही
ही की उपासना करें और उनको छोड़ दें
जिनकी हमारे पूर्वज उपासना किया
करते थे । अतः यदि तू सच्चों में से है तो
हमारे पास उसे ले आ जिससे तू हमें
डराता है । 171।

उसने कहा, तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम
पर अपवित्रता और प्रकोप अनिवार्य हो
चुके हैं । क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के
विषय में झगड़ते हो जो तुमने और
तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं जबकि
अल्लाह ने उनके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं
उतारा । अतः प्रतीक्षा करो । निस्सन्देह
मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में
से हूँ । 172।

अतः हमने उसे अपनी कृपा से मुक्ति
प्रदान की और उनको भी जो उसके साथ

أَبْلِغُكُمْ رِسْلِتِ رَبِّيْ وَأَنَّا لَكُمْ نَاصِحٌ
أَمِينٌ ④

أَوْ عَجِيْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرُ مِنْ رَبِّكُمْ
عَلَى رَجْلِ مِنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۖ وَإِذْكُرُوا
إِذْ جَعَلَكُمْ حَلَفَاءً مِنْ بَعْدِ قُومٍ نُوحٍ
وَرَأَدُكُمْ فِي الْخَلْقِ بِضَطَّةٍ ۖ فَادْكُرُوا
اللَّهُ أَعْلَمُ تَقْلِيْحُونَ ⑤

قَالُوا أَجِئْتَنَا إِلَيْنَا اللَّهُ وَحْدَهُ وَنَذَرْنَا
كَانَ يَعْبُدُ أَبَا وَنَاهًا ۖ فَأَتَيْنَا بِمَا عَدْنَا إِنَّ
كُنْتَ مِنَ الصَّدِيقِينَ ⑥

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ
وَغَصْبٌ ۖ أَتَجَادُلُونَ خَفِيْ فَآسِمَاءٌ
سَمَيْمُونَ هَا آنِثَمُ وَأَبَا وَكُمْ مَائِزَلَ اللَّهُ
بِهَا مِنْ سُلْطَنٍ ۖ فَاتَّسِرُوا إِلَيْيِ مَعْكُمْ
مِنَ الْمُسْتَظْرِيْنَ ⑦

فَأَنْجِيْنَاهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنْا

थे और हमने उन लोगों की जड़ काट डाली जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया था और वे (किसी प्रकार) ईमान लाने वाले नहीं थे । 173। (रुकू १६)

और समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) । उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । तुम्हारे लिए उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । निस्देह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल प्रमाण आ चुका है । यह अल्लाह की ऊंटनी है, जो तुम्हारे लिए एक चिह्न है, अतः इसे छोड़ दो कि यह अल्लाह की धरती में खाती फिरे और इसे कोई कष्ट न पहुँचाओ । अन्यथा इसके परिणाम स्वरूप तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब पकड़ लेगा । 174।*

और (उस समय को) याद करो जब उसने तुम को आद (जाति) के बाद उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें आबाद किया । तुम उसके मैदानों में दुर्गों का निर्माण करते हो और घर बनाने के लिए पहाड़ तराशते हो । अतः अल्लाह की नेमतों को याद करो और उपद्रवी बनते हुए धरती में तोड़फोड़ न करो । 175।

* नाक़तुल्लाह (अल्लाह की ऊंटनी) से तात्पर्य हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की वह ऊंटनी है जिस पर सवार हो कर वह लोगों को अपना संदेश पहुँचाया करते थे । जब कुछ दुष्ट सरदारों ने उस ऊंटनी की कूँचे काट दीं और उनके संदेश प्रसारण का साधन समाप्त कर दिया तो उसके परिणामस्वरूप अज़ाब के पात्र हो गए । कहा जाता है कि नौ सरदार थे जिन्होंने इस बात पर सहमति बनाई थी ।

وَقَطْعَنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا إِلَيْنَا
وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَلِحًا قَالَ يَقُومٌ
أَعْبَدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ اللَّهِ غَيْرُهُ قَدْ
جَاءَكُمْ بِكِتَابٍ مِنْ رَبِّكُمْ هُنْ مُنَاكِفُ
اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ
وَلَا تَمْسُوهَا سُوءٌ فَيَا أَخَذُكُمْ عَذَابٌ
الْيَوْمُ ۝

وَإِذْ كَرُوا إِذْ جَعَلْنَاكُمْ خَلْقَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ
وَبَوَّأْنَاكُمْ فِي الْأَرْضِ شَهِدُونَ مِنْ
سَهْوِ لَهَا فَصُورًا وَتَنْحِيَتُونَ الْجِبَالَ
بِيَوْمًا فَإِذْ كَرُوا إِلَآءَ اللَّهُ وَلَا تَعْنَوْا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

उसकी जाति में से उन सरदारों ने जिन्होंने अहंकार किया था, उन लोगों को जो निर्बल समझे जाते थे अर्थात् उनको जो उनमें से ईमान लाए थे कहा, क्या तुम ज्ञान रखते हो कि सालेह अपने रब्ब की ओर से पैगम्बर बनाया गया है। उन्होंने उत्तर दिया कि वह जिस (संदेश) के साथ भेजा गया है हम उस पर अवश्य ईमान लाते हैं । 171।

उन लोगों ने जिन्होंने अहंकार किया था, कहा कि जिस पर तुम ईमान लाते हो निस्सन्देह हम उसका इनकार करने वाले हैं । 171।

अतः उन्होंने ऊंटनी की कूँचें काट दीं और अपने रब्ब के आदेश की अवज्ञा की। और कहा, हे सालेह ! यदि तू वास्तव में (अल्लाह का) भेजा हुआ है तो हमारे पास उसे ले आ जिसका तू हमें डरावा देता है । 178।

अतः उन्हें एक प्रबल भूकम्प ने आ पकड़ा। अतः वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए । 179।

अतः उसने उनसे मुख मोड़ लिया और कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं तुम्हें अपने रब्ब का संदेश पहुँचा चुका हूँ और तुम्हें उपदेश दे चुका हूँ । परन्तु तुम उपदेश देने वालों को पसन्द नहीं करते । 180।

और लूट को (भी भेजा) जब उसने अपनी जाति से कहा, क्या तुम ऐसी अश्लीलता करते हो जैसी तुम से

قَالَ الْمَلَائِكَةُ إِنَّكَ بُرُّ وَأَمِنْ قَوْمٌ
لِلَّذِينَ اسْتَصْعَفُوا مِنْ أَمْنَ مَهْمَ
أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَلِحًا مَرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ
قَاتُوا إِنَّا بِمَا أَرْسَلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑦

قَالَ الْذِينَ اسْتَكَبُرُوا إِنَّا بِاللَّذِي أَمْسَرَ بِهِ
كُفَرُونَ ⑧

فَعَقَرُوا الشَّاقَةَ وَغَتَّوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
وَقَاتُوا يَصْلِحُ ائْتِتَابِمَا تَعْذَنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ ⑨

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جَثِيمِينَ ⑩

فَتَوَلَّتِ عَنْهُمْ وَقَالَ يَقُومُ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ
رِسَالَةَ رَبِّنِيْ وَنَصَّحْتُكُمْ وَلَكِنْ لَا
تَحْمِلُونَ الصِّحَّيْنَ ⑪

وَلَوْطًا إِذَا قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاجِهَةَ

पहले समस्त जगत में किसी ने नहीं की । 181।

निस्सन्देह तुम काम-वासना के लिए स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास आते हो । बल्कि तुम सीमा उल्लंघनकारी लोग हो । 182।

और उसकी जाति का इसके सिवा कोई उत्तर न था कि उन्होंने कहा, इनको अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो । निस्सन्देह ये वे लोग हैं जो बहुत पवित्र बनते हैं । 183।

अतः हमने उसे और उसके परिवार को मुक्ति प्रदान की सिवाय उसकी पल्नी के, वह पीछे रहने वालों में से हो गई । 184।

और हमने उन पर एक प्रकार की बारिश बरसाई । अतः देख कि अपराधियों का कैसा अंत होता है ? । 185।

(रुकू ۱۰)

और मद्यन (जाति) की ओर उनके भाई शुएब को (भेजा) । उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं । निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से खुली-खुली निशानी आ चुकी है। अतः नाप और तौल पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो । और धरती में उसके सुधार के पश्चात उपद्रव न फैलाया करो । यदि तुम ईमान लाने वाले होते तो यह तुम्हारे लिए अच्छा होता । 186।

مَا سَبَقُكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَلَمِينَ ⑩

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ
النِّسَاءِ ۖ بِلْ آنِئُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ⑪

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمٍ إِلَّا أَنْ قَاتَلُوا
آخِرَ جُوْهُمْ مِّنْ قَرِيْتُكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أَنَّاسٌ
يَتَظَاهِرُونَ ⑫

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَةٌ ۖ كَانَتْ مِنَ
الغَيْرِ بْنَنَ ⑬

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ⑭

وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شَعِيْنَ ۖ قَالَ يَقُومُ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِّنَ الْوَعِيْرَةِ ۖ قَدْ
جَاءَكُمْ بِكُمْ بِيَتَةً مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ
إِصْلَاحِهَا ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ⑮

और प्रत्येक मुख्यमार्ग पर उस व्यक्ति को धमकाते हुए और अल्लाह के मार्ग से रोकते हुए न बैठा करो जो उस पर ईमान लाया है, जबकि तुम उस (मार्ग) को टेढ़ा (देखना) चाहते हो । और याद करो जब तुम बहुत थोड़े थे फिर उसने तुम्हारी संख्या वृद्धि कर दी । और विचार करो कि उपद्रव मचाने वालों का अंत कैसा था ? 187।

और यदि तुम में से एक गिरोह उस हिदायत पर ईमान ले आया है जिसे दे कर मुझे भिजवाया गया । और एक गिरोह ऐसा है जो ईमान नहीं लाया, तो धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे और वह निर्णय करने वालों में सबसे अच्छा है । 188।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ ثُوِّيدُونَ
وَتَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ أَمْنَى بِهِ
وَتَبْعُدُوهَا عَوْجًا وَادْكُرْ قَوْاْذِعَكُنُّمْ
قَلِيلًا فَكَثُرَ كُمْ وَانْظُرْ رُواْكِيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ⑦

وَإِنْ كَانَ طَالِيفَةٌ مِنْكُمْ أَمْنَوْا بِالَّذِي
أَرْسَلْتَ بِهِ وَطَالِيفَةٌ لَمْ يُؤْمِنُوا
فَاصْبِرْ وَاحْتَىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ
خَيْرُ الْحَكِيمِينَ ⑧

उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने अहंकार किया था कहा, हे शुएब ! हम अवश्य तुझे अपनी बस्ती से निकाल देंगे और उन लोगों को भी जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अथवा तुम अवश्य हमारे धर्म में वापस आ जाओगे । उसने कहा, क्या तब भी जब कि हम अत्यन्त घृणा कर रहे हों ? 189।

यदि हम इसके बाद भी तुम्हारे धर्म में लौट आएँ जब कि अल्लाह हमें उससे मुक्ति प्रदान कर चुका है तब निस्सन्देह हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे । और हमारे लिए कदापि संभव नहीं कि हम उसमें वापस आएँ सिवाएँ इसके कि हमारा रब्ब अल्लाह ऐसा चाहे । हमारा रब्ब ज्ञान की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु पर हावी है । अल्लाह पर ही हम भरोसा करते हैं । हे हमारे रब्ब ! हमारे और हमारी जाति के बीच सत्य के साथ निर्णय कर दे । और तू निर्णय करने वालों में सर्वोत्तम है । 190।

और उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने इनकार किया, कहा कि यदि तुमने शुएब का अनुसरण किया तो तुम निस्सन्देह हानि उठाने वाले होगे । 191।

तो उन्हें (भी) एक प्रबल भूकम्प ने आ पकड़ा । अतः वे अपने घरों में औंधे मुँह जा गिरे । 192।

वे लोग जिन्होंने शुएब को झुठलाया मानो वे कभी उस (धरती) में बसे ही न थे । जिन लोगों ने शुएब को झुठलाया

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْكَبْرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَتُخْرِجَنَّكَ لِشَعِيبَ وَالَّذِينَ أَمْنَوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعْوِذُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ قَالَ أَوْلَوْ كُنَّا كِرْهِينَ ⑩

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ وَكَذَبَاهُ إِنْ عَذَنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذَا جَنَّدَنَا اللَّهُ مِنْهَا ۖ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَئِسَّ اللَّهُ رَبُّنَا ۖ وَسَعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۖ رَبُّنَا افْتَحْ يَسِّنَا وَبَيِّنْ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَتَحِينَ ⑪

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِئِنْ اتَّبَعْتُمْ شَعِيبًا إِلَّا كُمْ إِذَا لَخِسِرْتُونَ ⑫

فَأَخَذْنَاهُمُ الرَّجْفَةَ فَأَصْبَحُوْا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ⑬

الَّذِينَ كَذَبُوا شَعِيبًا كَانُ لَمْ يَعْنُوا فِيهَا ۖ الَّذِينَ كَذَبُوا شَعِيبًا كَانُوا

वही हानि उठाने वाले थे 1931।

अतः उसने उनसे मुख मोड़ लिया और कहा, हे मेरी जाति ! निस्सन्देह मैं तुम्हें अपने रब्ब के सभी संदेश भली भाँति पहुँचा चुका हूँ और तुम्हें उपदेश दे चुका हूँ। अतः मैं इनकार करने वाले लोगों पर कैसे खेद प्रकट करूँ ? 1941।

(रुक् 11)

और हमने किसी बस्ती में जब भी कोई नवी भेजा, उसके रहनेवालों को कभी तंगी और कभी पीड़ा के द्वारा पकड़ लिया ताकि वे गिड़गिड़ाएँ । 1951।

फिर हमने बुरी हालत को अच्छी हालत से बदल दिया। यहाँ तक कि उन्होंने (उसे) अनदेखा कर दिया और कहने लगे कि (पहले भी) हमारे पूर्वजों को कष्ट और आराम पहुँचा करता था। अतः हमने उनको सहसा पकड़ लिया जबकि वे कुछ समझ नहीं पाये थे । 1961।

और यदि बस्तियों वाले ईमान ले आते और तकन्वा धारण करते तो हम अवश्य उन पर आसमान से भी और धरती से भी बरकतों के द्वार खोल देते। परन्तु उन्होंने झुठला दिया। अतः हमने उनको उसकी दण्ड के रूप में जो वे कर्माई किया करते थे पकड़ लिया । 1971।

तो क्या बस्तियों के रहने वाले इस बात से सुरक्षित हैं कि हमारा अज्ञाब उनको

هُمُ الْخَيْرِينَ ⑩

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ وَقَالَ يَقُومٌ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسْلِتِ رَبِّيْ وَنَصَّحْتُكُمْ فَكَيْفَ أُسِّي عَلَى قَوْمٍ كُفَّارِيْنَ ⑪

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قُرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخْذَنَا أَهْلَهَا بِالْبُأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَصْرَعُونَ ⑫

لَمْ يَدْلِنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَ أَبَاءُنَا الضَّرَّاءُ وَالشَّرَّاءُ فَآخَذْنَاهُمْ بَعْثَةً وَ هُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑬

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ أَمْتَوْا وَأَنْقُوْا لَفَتَحَنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَتٍ مِنْ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنْ كَذَبُوا فَآخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑭

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بِأَسْنَا

रात्रि के समय पकड़ ले जबकि वे सोए हुए हों । 98।

और क्या बस्तियों वाले इस बात से सुरक्षित हैं कि हमारा अज्ञाब उन्हें ऐसे समय आ पकड़े कि (जब) दिन चढ़ आया हो और वे खेल कूद में व्यस्त हों । 99।

अतः क्या वे अल्लाह की योजना से सुरक्षित हैं । अतः अल्लाह की योजना से सिवाय हानि उठाने वाले लोगों के कोई सुरक्षित बोध नहीं करता । 100।

(रुक् 12)

और जिन्होंने धरती को उसमें बसने वालों के पश्चात् उत्तराधिकार में प्राप्त किया, क्या उन लोगों को यह बात हिदायत न दे सकी कि यदि हम चाहें तो उन्हें उनके पापों के परिणाम स्वरूप दंड दें और उनके दिलों पर मुहर कर दें । फिर वे कुछ सुन (और समझ) न सकें । 101।

ये वे बस्तियाँ हैं जिनके समाचारों में से कुछ हम तेरे सामने वर्णन करते हैं । और निस्सन्देह उनके पास उनके रसूल खुले खुले चिन्ह ले कर आए थे । परन्तु वे इस योग्य नहीं बन पाए कि उन पर ईमान लाएँ, क्योंकि वे इससे पहले (भी रसूलों को) झुठला चुके थे । इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है । 102।

और हमने उनमें से अधिकांश को किसी प्रतिज्ञा की रक्षा करते नहीं देखा और

بِيَأْنًا وَهُمْ نَاءِيمُونَ ۝

أَوْ أَمِنَ أَهْلُ الْقَرَىٰ أَنْ يَأْتِيهِمْ بِأَسْنَا
صُحَّىٰ وَهُمْ يُلْعَبُونَ ۝

أَفَأَمْنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۝ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ
إِلَّا الْقَوْمُ الْخَسِرُونَ ۝

أَوْ لَمْ يَهْدِ لِلّذِينَ يَرْجُونَ الْأَرْضَ مِنْ
بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ تُؤْنَشَاءَ أَصْبَنَهُمْ
بِدُنُورِهِمْ ۝ وَنَظِيعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ۝

تُلْكَ الْقُرَىٰ نَقْصٌ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَابِهَا ۝
وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۝ فَمَا
كَانُوا إِلَيْو مُنْوَأِمَا كَذَبُوا مِنْ قَبْلِ ۝
كَذِيلَكَ يَنْطِيعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ
الْكُفَّارِ ۝

وَمَا وَجَدْنَا إِلَّا كُثِرَ هُمْ مِنْ عَاهِدٍ ۝ وَإِنْ

निस्सन्देह हमने उनमें से अधिकांश को दुराचारी पाया । 103।

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपने चिह्नों के साथ फिराउन और उसके सरदारों की ओर भेजा तो उन्होंने उन (चिह्नों) के साथ अन्याय किया । अतः देख कि उपद्रवियों का अंत कैसा था । 104।

और मूसा ने कहा, हे फिराउन ! निस्सन्देह मैं समस्त लोकों के रब्ब की ओर से एक रसूल हूँ । 105।

मुझ पर अनिवार्य है कि अल्लाह के बारे में सत्य के अतिरिक्त कुछ न कहूँ । निस्सन्देह मैं तुम्हारे रब्ब की ओर से एक उज्ज्वल चिह्न ले कर आया हूँ । अतः तू मेरे सथ बनी-इस्माइल को भेज दे । 106।

उसने कहा, यदि तू एक भी चिह्न लाया है तो उसे पेश कर यदि तू सच्चों में से है । 107।

तब उसने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह स्पष्ट दिखाई देने वाला अजगर बन गया । 108।

और उसने अपना हाथ निकाला तो सहसा वह देखने वालों को सफेद दिखाई देने लगा । 109।* (रुक् 13)

وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفْسِقِينَ ⑯

لَئِنْ بَعْثَانَمُنْ يَعْدِهِمْ مُؤْسِيٌ بِإِيتَارٍ
فِرْعَوْنَ وَمَلَائِيْهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۝ قَاتِلُّ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ⑯

وَقَالَ مُؤْسِيٌ لِفِرْعَوْنَ إِنِّي رَسُولُ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا
الْحَقُّ ۝ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِنْ رَبِّكُمْ
فَأَرِسِلْ مَعِيَ بَنِيَّ إِسْرَائِيلَ ۝

قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِأَيْقَوْنَاتٍ بِهَا إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑯

فَأَلْقَيْتُ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَعْبَانٌ مُبِينٌ ۝

وَنَزَّعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ يَضَاءٌ لِلْتَّنْطِرِينَ ۝

* आयत 108-109 में वर्णित दो चिह्न उन नौ चिह्नों में से हैं जो हजरत मूसा व हारून अलै. को अल्लाह तआला की ओर से प्राप्त हुए थे । अन्य आयतों से पता चलता है कि निश्चित रूप से लाठी साँप नहीं बनी थी बल्कि देखने वालों की दृष्टि अल्लाह तआला के चमत्कार के फलस्वरूप लाठी को साँप देख रही थी । यही हाल हाथ का भी था कि हजरत मूसा अलै. के हाथ का रंग वही था जो उसका प्राकृतिक रूप से था परन्तु चिह्न स्वरूप देखने वालों को दमकता हुआ दिखाई दिया ।

फिरओैन की जाति के सरदारों ने कहा, निस्सन्देह यह एक कुशल जादूगर है । ॥110॥

वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे । (इस पर फिरओैन बोला) तो फिर तुम क्या परामर्श देते हो ? ॥111॥

उन्होंने कहा कि इसे और इसके भाई को कुछ ढील दे और विभिन्न शहरों में एकत्र करने वालों को भेज दे ॥112॥

वे तेरे पास हर एक प्रकार के कुशल जादूगर ले आएँ ॥113॥

और फिरओैन के पास जादूगर आए और उन्होंने कहा, यदि हम ही विजयी हो गए तो निश्चित रूप से हमारे लिए कोई बड़ा प्रतिफल होगा ॥114॥

उसने कहा, हाँ ! अवश्य तुम निकटस्थों में भी हो जाओगे ॥115॥

उन्होंने कहा, हे मूसा ! या तो तू (पहले) फेंक अथवा हम (पहले) फेंकने वाले बनें ॥116॥

उसने कहा तुम फेंको । अतः जब उन्होंने फेंका तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें बहुत डरा दिया । और वे एक बहुत बड़ा जादू लाए ॥117॥

और हमने मूसा की ओर वहाँ की कि तू अपनी लाठी फेंक । अतः सहसा वह उस झूठ को निगलने लगा जो वे गढ़ रहे थे ॥118॥*

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمٍ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا
سَاحِرٌ عَلَيْهِمْ^{١٩}

يُرِيدُ أَنْ يَخْرُجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ^{٢٠}
فَمَاذَا تَأْمُرُونَ^{٢١}

قَالُوا أَرْجِهُ وَأَحَاهُ وَأَرْسِلْ فِي
الْمَدَائِنِ حُشْرِينَ^{٢٢}

يَأْتُوكُمْ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلَيْهِمْ^{٢٣}

وَجَاءَ السَّاحِرُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّا
لَأَجْرَإِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغُلَمِينَ^{٢٤}

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ^{٢٥}

قَالُوا يَمْوَسِي إِمَّا أَنْ تُنْقِيَ وَإِمَّا أَنْ
نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ^{٢٦}

قَالَ الْقُوَّا فَلَمَّا أَقْوَاسَحَرَ وَأَغْنَى
النَّاسَ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُهُمْ وَسِحْرٌ
عَظِيمٌ^{٢٧}

وَأُوحِيَتِ إِلَيْهِ مُوسَى أَنَّ الْقِيَعَصَالَكَ
فَإِذَا هِيَ تَلْقَفَ مَا يَأْفِيكُونَ^{٢٨}

* आयत सं. 117-118 में अरबी शब्द सिह (जादू) की वास्तविकता स्पष्ट कर दी गई है । सहरु अ'यनन्नासि (लोगों की आँखों पर जादू कर दिया) कह कर बताया गया है कि उन की आँखों→

अतः सत्य सिद्ध हो गया और जो कुछ वे करते थे झूठ निकला ॥119।

इस प्रकार वे पराजित कर दिए गए और अपमानित हो कर लौटे ॥120।

और जादूगर सजदः की अवस्था में गिरा दिए गए ॥121।

उन्होंने कहा, हम समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान ले आए हैं ॥122।

जो मूसा और हारून का भी रब्ब है ॥123।

फिर औन ने कहा, क्या तुम इस पर ईमान ले आए हो इसके पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा देता । निस्सन्देह यह एक घट्यन्त्र है जो तुमने नगर में रचा है ताकि उसके निवासियों को उसमें से निकाल ले जाओ । अतः शीघ्र ही तुम जान लोगे ॥124।

मैं अवश्य तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा फिर अवश्य तुम सब को इकट्ठा सूली पर चढ़ा दूँगा ॥125।

उन्होंने कहा, निस्सन्देह हम अपने रब्ब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं ॥126।

और तू हम पर केवल यही व्यंग कसता है कि हम अपने रब्ब के निशानों पर

فَوْقَعَ الْحُقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

فَغَلَبُوا هَنَالِكَ وَأَنْقَلَبُوا أَصْغَرِينَ ۝

وَأَلْقَى السَّحْرَةُ سَجِدِينَ ۝

قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَى وَهَرُونَ ۝

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمْتَثُلُ بِهِ قَبْلَ أَنْ أَذَنَ
لَكُمْ إِنَّ هَذَا الْمَكْرُ مَكْرُ شَمْوَةٍ فِي
الْمَدِيَّةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا
فَسُوفَ تَعْلَمُونَ ۝

لَا قِطْعَنَّ أَيْدِيْكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ فِي
خِلَافِ نَمَاءِ لَا صِلْبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

قَالُوا إِنَّا إِلَى رِبِّنَا مُنْقَلَبُونَ ۝

وَمَا تَنْقِرُ مِنَّا إِلَّا أَنْ أَمَّا بِإِيمَانِ رِبِّنَا فَمَا

←पर एक प्रकार का सम्मोहन सा हो गया था जबकि उनकी रसियाँ उसी प्रकार रसियाँ ही थीं। हजरत मूसा अलै. पर भी उसका प्रभाव था, परन्तु जब अल्लाह तआला ने लाठी फेंकने का आदेश दिया तो सहसा उन जादूगरों का जादू टूट गया और देखने वालों के मस्तिष्कों से उनका प्रभाव समाप्त हो गया।

ईमान ले आए जब वे हमारे पास आए ।
हे हमारे रब्ब ! हमें धैर्य प्रदान कर और
हमें मुसलमान होने की अवस्था में मृत्यु
दे ॥1271। (रुकू 14)

और फिर औन की जाति के सरदारों ने
कहा, क्या तू मूसा और उसकी जाति को
खुला छोड़ देगा कि वे धरती में उपद्रव
करते फिरें और वे तुझे और तेरे उपास्यों
को भी छोड़ दें । उसने कहा, हम अवश्य
निर्दयता पूर्वक उनके पुत्रों का वध करेंगे
और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे
और निस्सन्देह हम उनके प्रति अत्यन्त
निष्ठुर हैं ॥128।

मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह
से सहायता चाहो और धैर्य रखो ।
निस्सन्देह राज्य अल्लाह ही का है, वह
अपने भक्तों में से जिसे चाहेगा उसका
उत्तराधिकारी बना देगा और शुभ-अंत
मुत्तकियों का ही हुआ करता है ॥129।

उन्होंने कहा, हमारे पास तेरे आने से
पहले भी और हमारे पास तेरे आ जाने के
बाद भी हमें दुःख दिया गया । उसने
कहा, संभव है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हारे
शत्रुओं का विनाश कर दे और तुम्हें
राज्य में उत्तराधिकारी बना दे, फिर वह
देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो ॥130।

(रुकू 15)

और निस्सन्देह हमने फिर औन के वंशज
को अकाल के द्वारा और फलों में हानि
के द्वारा पकड़ लिया ताकि वे उपदेश
ग्रहण करें ॥131।

جَاءَ شَيْطَانٌ رَّبِّنَا أَفْرِغُ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوْفِيقًا
مُسْلِمِينَ ﴿١﴾

وَقَالَ الْمَلَائِكَةُ قَوْمٌ فِرْعَوْنٌ أَشَدُّ
مُؤْلِسٍ وَقَوْمٌ لَّا يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
وَيَذَرُكُمْ وَإِلَهَتُكُمْ قَالَ سَبَقْتُكُمْ
أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا
فِوْقَهُمْ قُهْرُونَ ﴿٢﴾

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ
وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣﴾

فَأَلَوْا أَوْذِيَّا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ
مَا جِئْنَا بِهِ قَالَ عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يَهْلِكَ
عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَحْلِكُمْ فِي الْأَرْضِ
فَيَنْظَرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿٤﴾

وَلَقَدْ أَخْذَنَا آلُ فِرْعَوْنَ بِالسِّينِ
وَنَقِصَّ مِنْ الشَّمَرِ لَعَلَّهُمْ
يَدْكُرُونَ ﴿٥﴾

अतः जब उनके पास कोई भलाई आती थी तो वे कहते थे, यह हमारे लिए ही है और जब उन्हें कोई संकट पहुँचता तो वे उसे मूसा और उसके साथियों का अमंगल ठहराते । सावधान ! उनके अमंगल का आज्ञापत्र अल्लाह ही के पास है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 132।

और उन्होंने कहा, तू जो भी चाहे चिह्न ले आ ताकि तू उसके द्वारा हमें सम्मोहित कर दे तब भी हम तुझ पर कदापि ईमान लाने वाले नहीं । 133।

अतः हमने उन पर तूफान भेजा और टिह्ही दल और जूँए और मेंढक और खून भी, (भेजा) जो पृथक-पृथक चिह्न थे । तब भी उन्होंने अहंकार किया और वे अपराधी लोग थे । 134।

और जब भी उन पर अज्ञाब आता वे कहते हैं मूसा ! हमारे लिए अपने रब्ब से उस वादा के नाम पर जो उसने तेरे साथ किया है, दुआ कर । अतः यदि तूने हमसे यह अज्ञाब टाल दिया तो हम अवश्य तेरी बात मान लेंगे और अवश्य बनी-इस्लाल को तेरे साथ भेज देंगे । 135।

अतः जब हमने उनसे अज्ञाब को एक निर्धारित अवधि तक टाल दिया जिस तक उन्हें हर हाल में पहुँचना था, तो सहसा वे वचन-भंग करने लगे । 136।

अतः हमने उनसे प्रतिशोध लिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया । क्योंकि

فِإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا نَاهِيَّهُ
وَإِنْ تُصْبِحُهُمْ سَيِّئَةً يَطْهِرُونَ وَإِيمُوسِي
وَمَنْ مَعَهُ أَلَا إِنَّمَا تُطْهِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ
وَلِكُنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑩

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِيَهُمْ مِنْ أَيِّهِ لِتُسْحِرَنَّ إِبَاهَا
فَمَانَخْنَ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ⑪

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الظُّفُوقَابَ وَالْجَرَادَ
وَالْقَمَلَ وَالضَّفَادِعَ وَاللَّدَمَ اِيٍّ
مُفَضَّلٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
مُّجْرِمِينَ ⑫

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا إِيمُوسِي
ادْعُ لَنَارِبَلَكَ بِمَا عَهِدْتَ عِنْدَكَ لَئِنْ
كَشْفْتَ عَنِّي الرِّجْزَ لَئِنْ مَنَّ لَكَ
وَلَنْرِسَلَنَّ مَعَكَ بَنِي اسْرَأْعِيلَ ⑬

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَى أَجَلِهِمْ
بِلِغْوَةٍ إِذَا هُمْ يُكْثُرُونَ ⑭

فَأَنْتَقْمَنَا مِنْهُمْ فَأَغْرِقْنَهُمْ فِي الْيَمِّ

उन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया था और वे उनसे बेपरवाह थे ॥137॥

और हमने उन लोगों को जो (धरती में) निर्बल समझे गए थे उस धरती के पूर्व और पश्चिम का उत्तराधिकारी बना दिया जिसे हमने बरकत दी थी । और बनी-इस्माइल के पक्ष में तेरे रब्ब की अच्छी बातें उस धैर्य के कारण पूरी हुईं जो वे किया करते थे । और जो फिर औन और उसकी जाति (के लोग) बनाया करते थे और जो ऊँचे भवन वे निर्माण किया करते थे उनको हम ने नष्ट कर दिया ॥138॥

और हम बनी-इस्माइल को समुद्र के पार ले आए । फिर एक ऐसी जाति के निकट से उनका गुज़र हुआ जो अपनी मूर्तियों के समक्ष (उन की उपासना करते हुए) बैठी थी । उन्होंने कहा, हे मूसा ! हमारे लिए भी वैसा ही उपास्य बना दे जैसे उनके उपास्य हैं, उसने उत्तर दिया कि निस्सन्देह तुम बड़े मूर्ख लोग हो ॥139॥

निस्सन्देह ये लोग जिस अवस्था में हैं वह नष्ट हो जाने वाली है और जो कर्म वे करते हैं वह मिथ्या है ॥140॥

उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई उपास्य पसन्द कर सकता हूँ? जबकि वही है जिसने तुम्हें समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की है ॥141॥

और (याद करो) जब हमने तुम्हें फिर औन की जाति से मुक्ति प्रदान की जो तुम्हें

بِإِنْهُمْ كَذَّابُوا إِسْتَأْوَ كَانُوا عَنْهَا لَغْلِيلٌ ⑤

وَأُورْثَنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا
يُسْتَصْعِفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ
وَمَعَابِدَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَتَمَّ
كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَى عَلَى بَنَقَ
إِسْرَائِيلُ بِمَا صَبَرُوا وَدَهْرَنَا مَا كَانَ
يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا
يَعْرِشُونَ ⑥

وَجَوْزُنَا بِنَيَّ إِسْرَائِيلُ الْبَحْرَ فَأَتَوْا
عَلَى قَوْمٍ يَعْكِفُونَ عَلَى أَصَابِيرِ
لَهُمْ ۝ قَالُوا يَمْوَسِي اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا
لَهُمْ إِلَهٌ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ⑦

إِنَّ هُوَ لَا يَعْمَلُ مُتَبَّرًا مَا هُمْ فِيهِ وَبِطْلٌ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑧

قَالَ أَعْيُنَ اللَّهُ أَبْغِيْكُمْ إِلَهًا وَهُوَ
فَضْلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ⑨

وَإِذْ أَنْجِيْكُمْ مِنْ إِلِيْ فِرْعَوْنَ

बहुत कठोर यातना देती थी । वे तुम्हारे पुत्रों की निर्दयता पूर्वक हत्या करते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और उसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से बहुत बड़ी परीक्षा थी । 142। (रुक् 16)

और हमने मूसा के साथ तीस रातों का बादा किया और उन्हें दस (अतिरिक्त रातों) के साथ सम्पूर्ण किया । अतः उसके रब्ब की निर्धारित अवधि चालीस रातों में पूरी हुई । और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरी जाति में मेरा कार्यवाहक बन और (उनका) सुधार कर तथा उपद्रवियों के पथ का अनुसरण न कर । 143।

और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर उपस्थित हुआ और उसके रब्ब ने उससे वार्तालाप किया तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे दिखला दे कि मैं तेरी ओर आँख भर देखूँ । उसने कहा, तू कदापि मुझे न देख सकेगा । परन्तु तू पर्वत की ओर देख, यदि यह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो फिर तू भी मुझे देख सकेगा । अतः जब उसके रब्ब ने पर्वत पर जल्दा दिखाया तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया और मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़ा । अतः जब वह होश में आया तो उसने कहा, पवित्र है तू । मैं तेरी ओर प्रायश्चित करते हुए आता हूँ और मैं मोमिनों में सर्वप्रथम हूँ । 144*.

يَسُوْمُونَكُمْ سَوْءَالْعَذَابِ ۝ يَقْتَلُونَ
اَبْشَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۝ وَفِي
ذِلِّكُمْ بَلَاجٌ مِّنْ رِبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝
وَعَدْنَا مُوسَى تَلِيلَةً وَأَثْمَمَهَا
بِعَشْرِ فَتَمَرِ مِيقَاتٍ رَبِّهِ اَرْبَعِينَ تَلِيلَةً ۝
وَقَالَ مُوسَى لَا خِيَهُ هُرُونَ اخْلَفُنِي
فِي قَوْمٍ وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَبَيَّغْ سَيِّنَلَ
الْمُفْسِدِينَ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَمَةُ رَبِّهِ ۝
قَالَ رَبِّيْ أَرِنِيْ أَنْطَرِ إِلَيْكَ ۝ قَالَ كُنْ
تَرِنَخْ وَلَكِنْ أَنْطَرْ إِلَى الْجَبَلِ فَقَانِ
اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَنِيْ ۝ فَلَمَّا
تَجَلَّ رَبِّهِ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكَّاً وَخَرَّ
مُوسَى صَعَقاً ۝ فَلَمَّا آفَاقَ قَالَ
سَبِّحْكَ تَبَثَّ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوْلَى
الْمُؤْمِنِينَ ۝

* हजरत मूसा अलैहिस्सलाम अपने सरल स्वभाव के कारण यह विचार करते थे कि यदि अल्लाह चाहे तो वह अल्लाह तआला को भौतिक आँख से भी देख सकेंगे । अतः इस माँग पर अल्लाह तआला ने →

उसने कहा, हे मूसा ! निस्सन्देह मैंने तुझे अपने संदेशों और बाणी के द्वारा सब लोगों पर श्रेष्ठता प्रदान की है । अतः उसे पकड़े रख जो मैंने तुझे दिया और कृतज्ञों में से होजा । 145।

और हमने उसके लिए तख्तियों में हर चीज़ लिख रखी थी (जो) उपदेश के रूप में थी और हर चीज़ की विवरण प्रस्तुत करने वाली थी । अतः दुष्टा पूर्वक उसे पकड़ ले और अपनी जाति को आदेश दे कि इस शिक्षा के सर्वोत्तम पहलुओं को थामे रखें । मैं शीघ्र तुम्हें दुराचारियों का घर भी दिखा दूँगा । 146।

मैं उन लोगों (के ध्यान) को अपनी आयतों से फेर दूँगा जो अनुचित धरती में अहंकार करते हैं । और यदि वे प्रत्येक चिह्न को भी देख लें तो उस पर ईमान नहीं लाते । और यदि वे हिदायत का मार्ग देखें तो उसे मार्ग के रूप में नहीं अपनाते । हालाँकि यदि वे पथभ्रष्टा का मार्ग देख लें तो उसे मार्ग के रूप में अपना लेते हैं । यह इस कारण है कि उन्होंने हमारे चिह्नों को झुठला दिया और वे उनसे बे-परवाह रहने वाले थे । 147।

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और परलोक की भेट को झुठला दिया,

قَالَ يَمُوسَى إِنِّي أَصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسْلَتِي وَبِكَلَامِي فَخَدَّ مَا أَتَيْتُكَ وَكُنْ مِنَ الشَّكَرِينَ ⑩

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ فَخَدَّهَا
بِقُوَّةٍ وَأَمْرَ قَوْمَكَ يَا خَذُوا بِأَحْسَنِهَا
سَأُورِيْكُمْ دَارَ الْفَسِيقِينَ ⑪

سَاصِرِفُ عَنِ الْأَيْتَى الَّذِينَ يَسْكَبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرْفَا كُلُّ أَيْتَى لَا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَرْوَا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرْوَا سَبِيلَ الْغَفْرَى يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِإِيمَانِهَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ⑫

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِإِيمَانِهَا لِقاءُ الْآخِرَةِ

←कहा कि मनुष्य तो विजली की कड़क को भी सहन कर नहीं सकता तो अल्लाह तआला का चेहरा कैसे देख सकता है । अतः एक चिह्न स्वरूप जब पर्वत पर विजली गिरी तो हजरत मूसा मूर्छित हो गए । फिर जब होश आई तो प्रायश्चित करते हुए अल्लाह तआला की ओर झुके ।

उनके कर्म नष्ट हो गए। उन्हें अपने कर्म के सिवा अन्य कोई प्रतिफल नहीं दिया जाएगा ॥148॥ (स्कू 17)

और मूसा की जाति ने उसके पीछे अपने आभूषणों से एक ऐसे बछड़े को (उपास्य) बना लिया जो एक (निर्जीव) शरीर था, जिससे बछड़े की सी आवाज निकलती थी। क्या उन्होंने विचार नहीं किया कि वह न उनसे बात करता है और न उन्हें (सीधे) मार्ग की हिदायत देता है। वे उसे पकड़ बैठे और वे अत्याचार करने वाले थे ॥149॥

और जब वे लज्जित हो गए और उन्होंने जान लिया कि वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं तो उन्होंने कहा, यदि हमारे रब्ब ने हम पर दया न की और हमें क्षमा न किया तो हम अवश्य हानि उठाने वालों में से हो जाएँगे ॥150॥

और जब मूसा अपनी जाती की ओर अत्यन्त क्रोधित होकर खेद प्रकट करता हुआ लौटा तो उसने कहा, मेरे पश्चात् तुम लोगों ने मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया है। क्या तुमने अपने रब्ब के आदेश के बारे में शीघ्रता से काम लिया ? और उसने तख्तियाँ (नीचे) डाल दीं और उसने अपने भाई को अपनी ओर खींचते हुए उस के सिर को पकड़ा। उसने कहा, हे मेरी माँ के बेटे ! निस्सन्देह जाति ने मुझे विवश कर दिया और संभव था कि वे मेरा वध कर देते । अतः मुझे शत्रुओं की हँसी

حِيطُتْ أَعْمَالَهُمْ ۝ هَلْ يُجَزِّوْنَ إِلَّا
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَاللَّهُذَا قَوْمٌ مُؤْسَىٰ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ حَلَيْهِمْ
عِجْلًا جَسَدًا لَهُ حَوَارٌ ۝ الْفَيَرْقَانُ
لَا يَكُلُّهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَيِّلًا ۝
إِنَّهُدُوهُ وَكَانُوا اظْلَمِينَ ۝

وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأُوا أَنَّهُمْ قُدْ
ضَلُّوا ۝ قَالُوا لَيْسَ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا
وَيَعْفُرْلَنَا النُّكُونَنَّ مِنَ الْخَسِيرِينَ ۝

وَلَمَّا رَاجَعَ مُوسَىٰ إِلَى قَوْمِهِ غَصْبَانَ
أَسْفًا ۝ قَالَ يُسَسْمَا حَلَقْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۝
أَعِجلْتُمْ أَمْرَرِبِّكُمْ ۝ وَالْقَى الْأَلْوَاحَ
وَأَخْدَبَرِ أَسِ أَخِيهِ يَجْرِي إِلَيْهِ ۝ قَالَ ابْنَ
أَمْرَانَ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا
يُقْتَلُونِي ۝ فَلَا تُشْمِتُ بِالْأَعْدَاءِ وَلَا

का पात्र न बना और मुझे अत्याचारियों
की श्रेणी में न गिन ॥151॥

उसने कहा, हे मेरे रब ! मुझे और मेरे
भाई को भी क्षमा कर दे और हमें अपनी
दया में प्रविष्ट कर । और तू दया करने वाला
वालों में सबसे बढ़ कर दया करने वाला
है ॥152॥ (रुक् ١٨)

निस्सन्देह वे लोग जो बछड़े को पकड़
बैठे उन्हें अवश्य उनके रब्ब का क्रोध
और भौतिक जीवन में अपमान भी
पहुँचेगा । और इसी प्रकार हम झूठ गढ़ने
वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ॥153॥

और वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ कीं फिर
उसके बाद प्रायश्चित्त कर लिया और
ईमान लाए । निस्सन्देह तेरा रब्ब उसके
बाद भी अत्यन्त क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ॥154॥

और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो
उसने तख्लियाँ पकड़ लीं और उनकी
लिखितों में हिदायत और कृपा उन लोगों
के लिए थी जो अपने रब्ब का भय रखते
हैं ॥155॥

और मूसा ने हमारे निर्धारित समय के
लिए अपनी जाति के सतर व्यक्तियों का
चयन किया । अतः जब उनको भूकम्प
ने पकड़ा तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब !
यदि तू चाहता तो इससे पूर्व ही इन सब
को और मुझे भी नष्ट कर देता । क्या तू
उस कर्म के कारण जो हमारे मूर्खों से हो
गया, हमें नष्ट कर देगा ? निस्सन्देह यह
तेरी ओर से एक परीक्षा है । तू इस

تَجْعَلُنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ ⑩

قَالَ رَبِّي أَغْفِرْ لِي وَلَا خَيْرٌ وَأَذْخُلْنِي
رَحْمَتِكَ ۝ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا أَعْجَلَ سَيَّئَاتِهِمْ
خَسْبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ
الْدُّنْيَا ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ⑩

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ
بَعْدِهَا وَأَمْتَوْا ۝ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا
لَعْقَوْرَ رَحِيمٌ ⑩

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ
الْأَلْوَاحَ ۝ وَفَتَسْخَتْهَا هَذَيْ وَرَحْمَةً
لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ⑩

وَاحْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا
لِمِيقَاتِنَا ۝ فَلَمَّا آخَذْتُهُمْ الرَّجْفَةَ قَالَ
رَبِّي لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتُهُمْ مِنْ قَبْلِ
وَإِيَّاَيْ ۝ أَتَهْلِكُكَ بِمَا فَعَلَ السَّفَهَاءِ مِنْهَا
إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُنْصِلُ بِهَا مِنْ شَاءَ

(परीक्षा) के द्वारा जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत प्रदान करता है। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर। और तू क्षमा करने वालों में सर्वोत्तम है। 1156।

और हमारे लिए इस संसार में भी भलाई लिख दे और परलोक में भी। निस्सन्देह हम तेरी ओर (प्रायश्चित करते हुए) आ गए हैं। उसने कहा, मेरा अज्ञाब वह है कि जिस पर मैं चाहूँ उसे डाल देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक वस्तु पर छाई है। अतः मैं उस दया को उन लोगों के लिए निश्चित कर दूँगा जो तक्वा धारण करते हैं और ज़कात देते हैं। और वे जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। 1157।

जो इस रसूल, निरक्षर नबी पर ईमान लाते हैं जिस का (वर्णन) वे अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उनको नेक बातों का आदेश देता है और उन्हें बुरी बातों से रोकता है। और उनके लिए पवित्र चीज़ें हलाल घोषित करता है और उनपर अपवित्र चीज़ें हराम घोषित करता है। और उनसे उनके बोझ और तौक उतार देता है जो उन पर पढ़े हुए थे। अतः वे लोग जो उस पर ईमान लाते हैं और उसे सम्मान देते हैं और उसकी सहायता करते हैं और उस नूर का अनुसरण करते हैं जो उसके साथ उतारा गया है। यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं। 1158। (रुक् 19)

وَتَهْدِي مَنْ شَاءُ أَنْتَ وَلِنَا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغُفْرِينَ ⑦

وَأَخْتَبِرْ لَنَا فِي هُذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ إِنَّا هُدَنَا إِلَيْكَ قَالَ عَذَابِي
أَصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءَ وَرَحْمَتِي
وَسَعَثْ كُلُّ شَيْءٍ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الرَّزْكَوَةَ وَالَّذِينَ هُمْ
بِإِيمَانِهِمْ مُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ يَتَّقُونَ الرَّسُولَ الَّذِي أُمِّيَ
الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ
فِي التُّورَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَا مَرْهُمْ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَا مَعْنَى الْمُنْكَرِ
وَيَحْلِلُ لَهُمْ الظَّيْبَاتِ وَيَحْرِمُ عَلَيْهِمْ
الْخَبَيِثَ وَيَضْعِفُ عَنْهُمْ اصْرَهُمْ
وَالْأَعْلَلُ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۝ قَالَ الَّذِينَ
أَمْتَوْبِهِ وَعَزَّرْوَهُ وَنَصَرَوْهُ وَأَبْعَدُوا
الْتُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ اُولَئِكَ هُمْ
الْمُفْلِحُونَ ۝

तू कह दे कि हे लोगो ! निस्सन्देह मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ जिसके अधीन आसमानों और धरती की बादशाही है । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह जीवित करता है और मारता भी है । अतः अल्लाह पर और उसके रसूल, निरक्षर नबी पर ईमान ले आओ जो अल्लाह पर और उसकी बातों पर ईमान रखता है । और उसी का अनुसरण करो ताकि तुम हिदायत पा जाओ ॥159॥

और मूसा की जाति में भी कुछ ऐसे लोग थे जो सच्चाई के साथ (लोगों को) हिदायत देते थे और उसी के द्वारा न्याय करते थे ॥160॥

और हमने उनको बारह कबीलों अर्थात् जातियों में विभाजित कर दिया और जब मूसा से उसकी जाति ने पानी माँगा तो हमने उसकी ओर वहाँ की कि चट्टान पर अपनी लाठी से प्रहार कर, तो उससे बारह सोत फूट पड़े और सब लोगों ने अपने अपने पीने का स्थान ज्ञात कर लिया । और हमने उन पर बादलों की छाया की और उन पर मन्न और सल्वा उतारे । (और कहा कि) जो कुछ हमने तुम्हें जीविका प्रदान की है उसमें से पवित्र चीज़ें खाओ । और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करने वाले थे ॥161॥

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ
جَمِيعًا إِنَّمَا لَهُ مَلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يَعْلَمُ وَيَمْبَغِي
فَامْتُنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ الرَّبِّيِّ الْأَجْمَعِيِّ الَّذِي
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَتِهِ وَاتَّبَعَهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْدَدُونَ ⑤

وَمِنْ قَوْمٍ مُّوسَى أَمْمَةٌ يَقْدُمُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ⑥

وَقَطَّعْنَاهُمْ أَثْنَتِ عَشَرَةَ أَسْبَاطًا أَمْمًا
وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى إِذَا سَتَّسْقَهُ
قَوْمَهُ أَنِ اصْرِبْ بِعَصَالِ الْحَجَرِ
فَانْبَجَسَثِ مِنْهُ أَثْنَتِ عَشَرَةَ عَيْنًا قَدْ
عَلِمَ كُلُّ أَنَّاسٍ مَّقْرَبَهُمْ وَظَلَّلَنَا عَلَيْهِمْ
الْعَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ الْمَنَّ وَالسَّلُوِيَّ
كُلُّ أَوْمَانٍ طَيْبَاتٍ مَارَزَ قَنْكُمْ وَمَا
ظَلَمْنَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنفَسَهُمْ
يَطْلَمُونَ ⑦

और (याद करो) जब उनसे कहा गया कि इस बस्ती में रहो और इसमें से जहाँ से चाहो खाओ । और कहो (हे अल्लाह!) हमें क्षमा कर दे और आज्ञापालन करते हुए मुख्यद्वार में प्रवेश कर जाओ । हम तुम्हारी गलियाँ क्षमा कर देंगे, हम उपकार करने वालों को अवश्य बढ़ाएँगे ॥162॥

तो उनमें से जिन लोगों ने अत्याचार किया, (उसे) एक ऐसे कथन से बदल दिया जो उन्हें नहीं कहा गया था । इस पर हमने उन पर उस अत्याचार के कारण जो वे किया करते थे आकाश से अज्ञाब उतारा ॥163॥ (रुक्ं 20/10)

और तू उनसे उस बस्ती (वालों) के बारे में पूछ जो समुद्र के किनारे स्थित थी जब वे (बस्ती वाले) सब्ल के विषय में (आदेश का) उल्लंघन किया करते थे । जब उनके पास उनके सब्ल के दिन उनकी मछलियाँ झुँड के झुँड आती थीं और जिस दिन वे सब्ल नहीं करते थे वे उनके पास नहीं आती थीं ।

वे जो कुकर्म किया करते थे उसके कारण इसी प्रकार हम उनकी परीक्षा करते रहे ॥164॥

और (याद करो) जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, तुम क्यों ऐसे लोगों को उपदेश देते हो जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला है अथवा कठोर अज्ञाब देने वाला है । उन्होंने कहा, तुम्हारे रब्ब के समक्ष दोषमुक्त होने के लिए (हम ऐसा करते

وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ أَسْكُنُوا هَذِهِ الْقُرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حَظَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سَجَدًا نَعْفُرْ لَكُمْ خَطَّبْتُكُمْ سَرِيرِ الْمُحْسِنِينَ ⑯

فَبَدَأَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْرًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ⑭

وَسَلَّمُهُمْ عَنِ الْقُرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي الشَّبَّ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شَرَّاعًا وَيَوْمًا لَا يُسْتَقِنُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذِلِكَ تَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُدُونَ ⑯

وَإِذْ قَاتَلَتْ أَمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعْظُلُونَ قَوْمًا إِنَّ اللَّهَ مُهْلِكٌ كُمُّهُمْ أَوْ مَعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَغْنِزَةً إِلَى رَبِّكُمْ

हैं) और इस उद्देश्य से कि संभवतः वे तकन्वा धारण करें। 1165।

अतः जब उन्होंने उसे भुला दिया जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो हमने उनको बचा लिया जो बुराई से रोका करते थे। और जिन्होंने अत्याचार किया उनके कुकर्मों के कारण उन लोगों को एक कठोर अज्ञाब में जकड़ लिया। 1166।

जब फिर भी उन्होंने इस विषय में अवज्ञा की, जिससे उनको रोका गया था तो हमने उन्हें कहा तुम नीच बन्दर बन जाओ। 1167।

और (याद करो) जब तेरे रब्ब ने यह सार्वजनिक घोषणा की कि वह अवश्य उन पर क्यामत तक ऐसे लोग नियुक्त करता रहेगा जो उन्हें कठोर अज्ञाब देते रहेंगे। निस्सन्देह तेरा रब्ब दंड देने में बहुत तेज़ है। हालाँकि वह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 1168।

और हमने उन्हें धरती पर विभिन्न जातियों में विभाजित कर दिया। उनमें नेक लोग भी थे और उन्हीं में इस से भिन्न भी थे। और हमने उनकी अच्छी और बुरी दशा से परीक्षा ली ताकि वे (हिदायत की ओर) लौट आएं। 1169।

अतः उनके पश्चात् ऐसे उत्तराधिकारियों ने उनका प्रतिनिधित्व किया जिन्होंने पुस्तक को उत्तराधिकार में पाया। वे इस संसार के अस्थायी लाभ

وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ⑯

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذِكْرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ
يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخْذَنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعِدَّابٍ بِئْسٌ إِيمَانُ الْكَافِرِ ⑯

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَآتِهِمْ وَاعْنَهُ فَلَنَّا لَهُمْ
كُونُوا قِرَدَةً لَّحِينَ ⑯

وَإِذَا تَأْذَنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمٍ
الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُ سُوءُ العَذَابِ ۖ إِنَّ
رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَافِرٌ
رَّحِيمٌ ⑯

وَقَطَعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَمْمًا مِنْهُمْ
الصَّلِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ
وَبَلَوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ⑯

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرَثُوا
الْكِتَابَ يَاخْذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى

को पकड़ बैठे । और कहते थे, हमें क्षमा कर दिया जाएगा । यदि इसी प्रकार का धन उनके पास आता वे उसे ले लेते थे । क्या उनसे पुस्तक की प्रतिज्ञा नहीं ली गई थी जो उन पर अनिवार्य थी, कि वे अल्लाह के बारे में सत्य के अतिरिक्त कोई बात नहीं कहेंगे । और जो उस में था वे उसे पढ़ चुके थे । और उन लोगों के लिए जो तकवा धारण करते हैं परलोक का घर उत्तम है । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लोगे ? ॥170॥

और वे लोग जो पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ लेते हैं और नमाज़ को कायम करते हैं, हम निस्सन्देह सुधार करने वालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं किया करते ॥171॥ और (याद करो) जब हमने पर्वत को उन पर ऊँचा किया, मानो वह एक सायबान था और उन्होंने सोचा कि वह उन पर गिरने ही वाला है । (हे इस्लाम के वंशज !) जो हमने तुम्हें प्रदान किया है उसे दृढ़ता से पकड़ लो और जो उसमें है (उसे) याद रखो ताकि तुम मुत्की बन जाओ ॥172॥* (रुकू ٢١)

और (याद करो) जब तेरे रख्ब ने आदम की संतान की पीठों से उनकी पीढ़ियों (की सुष्टि के मूल-तत्त्व) को ग्रहण

وَيَقُولُونَ سَيْغَفِرُنَا وَإِنْ يَأْتِهُمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ^۱ إِنَّ اللَّهَ يُؤْمِنْ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَاقِ الْكِتَبِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ^۲ وَالَّذَّارِ الْآخِرَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقَوْنَ^۳ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑭

وَالَّذِينَ يَمْسِكُونَ بِالْكِتَبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ⑮

وَإِذْ سَقَنَا الْجَبَلَ فَوَقَهُمْ كَآتَهُ ظَلَّهُ^۱ وَظَلَّوْا أَثَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ^۲ حَذَّرُوا مَا أَتَيْنَاهُمْ بِقُوَّةٍ وَإِذْ كَرُوا مَا فِيهِ لَعْنَهُ^۳ تَمَّوْنَ ⑯

وَإِذَا أَخْذَرْبِكَ مِنْ بَيْنِ أَذْمَمْ^۱ ظَهُورِهِمْ ذَرِّيَّهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى

* यहाँ पर्वत के उन पर ऊँचा करने का कदापि यह अर्थ नहीं कि पर्वत उछड़ कर उनके सिरों पर तन गया था । कई पर्वत इतने अधिक सड़क पर झुके हुए होते हैं कि मनुष्य उस सड़क से गुज़रते हुए उनकी छावों के नीचे आ जाता है । इस जगह भी यही भाव है । परन्तु उस समय उन पर जो भय की अवस्था छाई थी उसको उनके हित में प्रयोग करते हुए अल्लाह तआला ने उनको दृढ़ता के साथ तौरत की शिक्षा को पकड़ने का निर्देश दिया ।

किया और स्वयं उन्हें अपने अस्तित्व पर साक्षी बना दिया । (और पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं हूँ ? उन्होंने कहा, क्यों नहीं ! हम गवाही देते हैं । ऐसा न हो कि तुम क्रयामत के दिन यह कहो कि हम तो इससे अनजान थे । 173।*

अथवा तुम कह दो कि शिर्क तो पहले हमारे पूर्वजों ने ही किया था और हम तो उनके बाद आने वाली पीढ़ी हैं । तो क्या जूँठे लोगों ने जो किया उसके कारण तू हमें नष्ट कर देगा ? । 174।

और इसी प्रकार हम आयतों को खूब खोल-खोल कर वर्णन करते हैं ताकि संभवतः वे (सत्य की ओर) लौट आएँ । 175।

और तू उन्हें उस व्यक्ति की घटना पढ़ (कर सुना) जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान की थीं । अतः वह उनसे बाहर निकल गया । फिर शैतान ने उसका पीछा किया और वह पथभ्रष्टों में से हो गया । 176।

और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) के द्वारा अवश्य उसका उत्थान करते परन्तु वह धरती की ओर झुक गया और अपनी वासना का अनुसरण किया । अतः उसका उदाहरण कुत्ते के समान है कि यदि तू उस

* जब आदम की संतान से उनके जन्म से भी पूर्व उनकी संतान के सम्बन्ध में आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह तआला के अस्तित्व पर साक्षी रहें । जो संतान अभी पैदा भी नहीं हुई उससे किस प्रकार वचन लिया जा सकता था ? इससे केवल यही तात्पर्य निकलता है कि मनुष्य के स्वभाव में ही अल्लाह तआला के अस्तित्व पर ईमान लाना शामिल है । अतः समस्त संसार में अल्लाह तआला की जो कल्पना पाई जाती है वह आकस्मिक घटना नहीं है । बल्कि इसे मनुष्य के स्वभाव में ही अंकित कर दिया गया है ।

أَنْفِسُهُمْ إِنَّهُمْ بِرِبِّكُمْ لَا يُؤْمِنُونَ قَالُوا بَلِّي
شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا
عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٣﴾

أُولَئِنَّوْ إِنَّمَا أَشْرَكَ أَبَاءُهُمْ نَأْمَنُ قَبْلَ
وَكُنَّا ذَرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ إِنَّا فَتَهَلَّكَنا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطَلُونَ ﴿١٧٤﴾
وَكَذِلِكَ نَفْصُلُ الْآيَتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿١٧٥﴾

وَإِنْ عَلَيْهِمْ بِنَا الْذِي أَتَيْنَاهُ أَيْتَنَا فَانْسَلَخَ
مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَنُ فَكَانَ مِنَ
الْغُوَيْنَ ﴿١٧٦﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلِكَنَّهُ أَخْلَدَ
إِلَى الْأَرْضِ وَأَتَيْعَهُ هُوَهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهُثُ أَوْ

पर हाथ उठाए तो हाँफते हुए जीभ निकाल देगा और यदि उसे छोड़ दे तब भी हाँफते हुए जीभ निकाल देगा । यह उन लोगों का उदाहरण है जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया । अतः तू (इनके सामने) यह (ऐतिहासिक) घटनाएँ पढ़ कर सुना ताकि वे सोच-विचार करें ॥77॥*

उन लोगों का उदाहरण बहुत बुरा है जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया । और वे अपनी ही जानों पर अत्याचार किया करते थे ॥78॥

जिसे अल्लाह हिदायत प्रदान करे तो वही हिदायत प्राप्त किया हुआ होता है और जिसे वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो यही हैं वे जो घाटा उठाने वाले हैं ॥79॥

और निस्सन्देह हमने नरक के लिए जिन्हों और मनुष्यों में से एक बड़ी संख्या को उत्पन्न किया है । उनके दिल ऐसे हैं जिनसे वे समझते नहीं और उनकी आँखें ऐसी हैं कि जिनसे वे देखते नहीं और उनके कान ऐसे हैं जिनसे वे सुनते नहीं । ये लोग तो पशुओं की भाँति हैं बल्कि ये (उनसे भी) अधिक भट्के हुए हैं । ये ही असावधान लोग हैं ॥80॥

और अल्लाह ही के सब सुन्दर नाम हैं । अतः उसे उन (नामों) से पुकारा करो

تَشْرِيكَةٌ يَلْهَمُ طَذِيلَكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ
كَذَّبُوا إِيمَانَنَا فَاقْصُصُ الْقَصَصَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٧﴾

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الظَّالِمِينَ كَذَّبُوا إِيمَانَنَا
وَأَنفَسَهُمْ كَانُوا يَطْلَمُونَ ﴿٨﴾

مَنْ يَعْدُ اللَّهَ فَهُوَ الْمُهْتَدِيُّ وَمَنْ
يُضْلِلُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٩﴾

وَلَقَدْ ذَرَانَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسَنِ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يُفَقِّهُونَ بِهَا
وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يَبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ
أَذْانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠﴾

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا

* इस पवित्र आयत में जिस व्यक्ति का वर्णन है, भाष्यकार उसका नाम “बल्जम बा’ऊर” बताते हैं। यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे अल्लाह तआला ने इस प्रकार के आध्यात्मिक गुण प्रदान किए थे जिनके द्वारा वह अल्लाह के निकट हो सकता था । परन्तु दुर्भाग्य से उसने संसार की ओर झुकना अपने लिए स्वीकार कर लिया । फिर उसका उदाहरण एक ऐसे कुत्ते से दिया गया है जिस पर चाहे कोई पथर उठाए या न उठाए उसने भाँकते भाँकते थक कर चूर हो जाना है । अतः यह व्यक्ति भी सन्मान से बिदक कर सत्य के विरुद्ध अनर्गल बकने लगा था ।

और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के विषय में कुटिलता अपनाते हैं। जो कुछ वे करते रहे उसका उन्हें अवश्य प्रतिफल दिया जाएगा । 181।

और उनमें से जिन्हें हमने पैदा किया ऐसे लोग भी थे जो सत्य के साथ (लोगों को) हिदायत देते थे और उसी के द्वारा न्याय करते थे । 182। (रुक् ٢٢)

और वे लोग जिन्होंने हमारे चिह्नों का इनकार किया, हम अवश्य उन्हें क्रमशः उस ओर से पकड़ेंगे जिसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं होगा । 183।

और मैं उन्हें छूट देता हूँ निस्सन्देह मेरा उपाय बहुत सुदृढ़ है । 184।

क्या उन्होंने कभी विचार नहीं किया कि उनके साथी को कोई पागलपन नहीं । वह तो केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी है । 185।

क्या उन्होंने आसमानों और धरती की बादशाहत में तथा प्रत्येक वस्तु में जो अल्लाह ने पैदा की है कभी सोच विचार नहीं किया (और इस बात पर भी) कि संभव है कि उनका निर्धारित समय निकट आ चुका हो । तो इसके पश्चात फिर वे और किस बात पर ईमान लाएँगे । 186।

जिसे अल्लाह पथब्रष्ट ठहराए उसे कोई हिदायत प्रदान करने वाला नहीं और वह उन्हें अपनी उद्दण्डताओं में भटकता हुआ छोड़ देता है । 187।

वे तुझसे क्यामत के बारे में प्रश्न करते हैं कि कब उसे घटित होना है ? तू

وَذُرُوا إِلَيْهِنَّ يَلْهُدُونَ فِي أَسْمَائِهِ^{٤٣}
سَيِّجُرُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ^{٤٤}

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أَمَّةً يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ^{٤٥}
يَعْدِلُونَ^{٤٦}

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِإِلَيْتَنَا سَنَسْتَدِرُ جَهَنَّمَ^{٤٧}
مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ^{٤٨}

وَأَمْلِنْ لَهُمْ إِنْ كَيْدُ مَتِينُ^{٤٩}

أَوْلَمْ يَقْتَرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ^{٥٠}
جِنَّةٌ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مِنْ^{٥١}

أَوْلَمْ يَسْتَرْوَافِ مَلَكُوتِ السَّمَوَاتِ^{٥٢}
وَالْأَرْضِ وَمَا حَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ^{٥٣} وَأَنْ
عَسَى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ^{٥٤}
فِيَأْيِ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ^{٥٥}

مَنْ يُصْلِلِ اللَّهَ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ^{٥٦}
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَلُونَ^{٥٧}

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِهَا^{٥٨} قُلْ

कहदे कि उसका ज्ञान केवल मेरे रब्ब के पास है। उसे अपने समय पर उसी के अतिरिक्त कोई प्रकट नहीं करेगा। वह आसमानों और धरती पर भारी है। वह तुम पर अकस्मात् आएगी। वे (इस विषय में) तुम से इस प्रकार प्रश्न करते हैं मानो तू इसके सम्बन्ध में सब कुछ जानता है। तू कह दे कि इसका ज्ञान केवल अल्लाह ही के पास है। परन्तु अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते। 1881

तू कह दे कि मैं अल्लाह की इच्छा के अतिरिक्त अपनी जान के लिए (एक कण भर भी) लाभ अथवा हानि का अधिकार नहीं रखता। और यदि मैं अदृश्य को जानने वाला होता तो निसन्देह मैं बहुत धन एकत्रित कर सकता था और मुझे कभी कोई कष्ट न पहुँचता। परन्तु मैं तो केवल उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं एक सरकारी और एक शुभ-समाचार देने वाला हूँ। 1891 (रुकू ٢٣)

वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह सन्तुष्टि के लिए उसकी ओर आकृष्ट हो। फिर जब उसने उसे ढाँप लिया तो उसने एक हल्का सा बोझ उठा लिया। फिर वह उसे उठाए हुए चलने लगी। अतः जब वह बोझत हो गई तो उन दोनों ने अपने रब्ब को पुकारा कि यदि तू हमें एक स्वस्थ (पुत्र) प्रदान

إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّهِ لَا يَجِدُهَا
لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ تَقْلِبُ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيهِ كُمْ إِلَّا بُعْثَةً
يَسْأَلُونَكَ كَانَكَ حَفِيْظٌ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلِكُنَّ أَكْثَرُ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ١٩٠

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي تَقْعِيدًا لَا ضَرًا
إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَغْلَمُ
الْغَيْبَ لَا شَكْرُتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا
مَسَنَى السَّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ١٩١

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نُقْسٍ وَاحِدَةٍ
وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجًا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا
تَعْشَمَا حَمَلَتْ حَمْلًا حَفِيْظًا فَمَرَّتْ بِهِ
فَلَمَّا آتَيْتَهُنَّ دُعَوْا اللَّهَ رَبَّهُمَا لِئِنْ أَتَيْتَنَا

करेगा तो निस्सन्देह हम कृतज्ञों में से होंगे । 190।

अतः जब उन दोनों को उस (अर्थात् अल्लाह) ने एक स्वस्थ (पुत्र) प्रदान किया तो जो उसने उन्हें प्रदान किया उस (वरदान) में वे उसके साझीदार बनाने लगे । अतः जो वे शिर्क करते हैं अल्लाह उससे बहुत ऊँचा है । 191।

क्या वे उसे (अल्लाह का) साझीदार बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकता बल्कि वे स्वयं पैदा किए गए हैं । 192।

और वे उनकी किसी प्रकार की सहायता करने की शक्ति नहीं रखते । और वे तो स्वयं अपनी सहायता भी नहीं कर सकते । 193।

और यदि तुम उन्हें हिदायत की ओर बुलाओ तो वे कभी तुम्हारा अनुसरण नहीं करेंगे । चाहे तुम उन्हें बुलाओ या चुप रहो तुम्हारे लिए बराबर है । 194।

निस्सन्देह वे लोग जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं । अतः तुम उन्हें पुकारते रहो, यदि तुम सच्चे हो तो चाहिए कि वे तुम्हें उत्तर भी तो दें । 195।

क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं अथवा उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हैं अथवा उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हैं अथवा उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं ? तू कह दे कि तुम अपने साझीदारों को बुलाओ और फिर मेरे विश्वद्व प्रत्येक प्रकार की

صَالِحًا لَنْ تَكُونَنَّ مِنَ الشَّكِرِينَ ⑪

فَلَمَّا آتَهُمَا صَالِحًا جَعَلَاهُ شَرَكَاءَ فِيمَا
أَشْهَمَا ۝ فَتَعَلَّمَ اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑫

أَيْشِرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُنَّ
يَخْلَقُونَ ۝

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا
أَنْفُسَهُمْ يَصْرُونَ ۝

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ
لَا يَتَبَعُونَ ۝ سَوْءَاءٌ عَلَيْهِمْ
أَدْعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ⑬
إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ
أَمْ كَالَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فَلَيُسْتَحْيِبُوا إِلَيْكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ۝

أَلَمْ هُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۝ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ
يَبْطِشُونَ بِهَا ۝ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يَبْصُرُونَ
بِهَا ۝ أَمْ لَهُمْ أَذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۝ قُلْ
إِذْعُوا شَرَكَاءَ كُمْثُدَةٍ كِيدُونِ فَلَا

चाल चल कर देखो और मुझे कोई
ढील न दो । 196।

निस्सन्देह मेरा संरक्षक वह अल्लाह है
जिसने पुस्तक उतारी और वह नेक
लोगों ही का संरक्षक बनता है । 197।

और वे लोग जिन्हें तुम उसके सिवा
पुकारते हो वे तुम्हारी सहायता की कोई
शक्ति नहीं रखते और न वे स्वयं अपनी
सहायता कर सकते हैं । 198।

और यदि तुम उनको हिदायत की ओर
बुलाओ तो वे सुनेंगे नहीं और । तू उन्हें
देखेगा कि मानो वे तेरी ओर देख रहे हैं
जबकि वे देख नहीं रहे होते । 199।

क्षमाशीलता को अपनाओ और नैतिकता
का आदेश दो और मूर्खों से किनाराकशी
कर लो । 200।

और यदि तुम्हे शैतान की ओर से किसी
दुविधा में डाला जाये तो अल्लाह की शरण
माँग । निस्सन्देह वह बहुत सुनने वाला
(और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 201।

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने तकवा
धारण किया जब शैतान की ओर से
उन्हें कोई कष्टदायक विचार पहुँचे तो
वे (अल्लाह का) बहुत अधिक स्मरण
करते हैं । फिर अचानक वे दिव्य-दृष्टि
वाले हो जाते हैं । 202।

और इन (काफिरों) के (शैतानी) भाई
उन्हें पथभ्रष्टता की ओर खींचे लिए जाते
हैं, फिर वे कोई कमी नहीं छोड़ते । 203।

और जब कभी तू उनके पास कोई चिह्न
नहीं लाता तो कहते हैं कि तू क्यों न उसे

شَظِّرُون् ⑩

إِنَّ وَلِيَّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۝ وَهُوَ
يَوْلَى الصَّالِحِينَ ⑪

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ
نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يُنْصَرُونَ ⑫

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهَلَقِ لَا يَسْمَعُوا
وَتَرَهُمْ يَعْتَرُفُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا
يُبَصِّرُونَ ⑬

خُذِ الْعُفْوَ وَأْمُرْ بِالْمَرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ
الْجَهِيلِينَ ⑭

وَإِمَّا يَنْزَغَنَكَ مِنَ الشَّيْطَنِ نَرْعَ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۝ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ ⑮

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقُوا إِذَا مَسَّهُمْ طَيْفٌ مِّنَ
الشَّيْطَنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبَصِّرُونَ ⑯

وَأَخْوَانُهُمْ يَمْدُونَهُمْ فِي الْغَيَّ شَمَّ
لَا يُقْصِرُونَ ⑰

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِإِيَّاهُ قَاتُوا لَوْلَا

चुन लाया। तू कह दे कि मैं वस उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब्ब की ओर से मेरी ओर वहाँ की जाती है। ये ज्ञानपूर्ण बातें तुम्हारे रब्ब की ओर से हैं। और उन लोगों के लिए जो ईमान ले आते हैं हिंदायत और दया है। 1204।

और जब कुर्झान पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और चुप रहो ताकि तुम पर दया की जाए। 1205।

और तू अपने रब्ब को अपने मन में कभी गिर्गिड़ते हुए और कभी डरते डरते और बिना ऊँची आवाज किए प्रातः और सायंकालों में स्मरण किया कर और बेपरवाहों में से न बन। 1206।

निस्सन्देह वे लोग जो तेरे रब्ब के समक्ष उपस्थित रहते हैं, उसकी उपासना करने में अहंकार नहीं करते और उसकी स्तुति करते हैं और उसी के सामने सजदः करते हैं। 1207। (रुक् 24)

اجْتَبَيْتَهَا تُقْلِل إِنَّمَا أَتَتْبِعُ مَا يُوحَى
إِنَّمَا مِنْ رَبِّنِي هَذَا بَصَارٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑩

وَإِذَا قِرِئَ الْقُرْآنُ فَانسَمِعُوا لَهُ وَأَصْتَوْا
لَعَلَّكُمْ تُرَحَّمُونَ ⑪

وَإِذْ كُرِّبَكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرَّعًا
وَخَفْقَةٌ وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ القَوْلِ بِالْغَدْوِ
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَفِيلِينَ ⑫

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ
لَا يَسْتَكِبُرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَيُسْتَحْوِنُهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ⑬

8 – सूरः अल–अन्फ़ाल

यह सूरः मदीना में अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 76 आयतें हैं। युद्ध के फलस्वरूप अल्लाह तआला जो आर्थिक लाभ प्रदान करता है उनको अन्फ़ाल कहा जाता है।

पिछली सूरः अल-आ'रफ (आयत : 188) में काफिरों की ओर से जिस घड़ी अथवा क्रयामत के प्रकट होने का समय पूछा गया था उस घड़ी के प्रथम प्रकटीकरण का इस सूरः में विस्तार से वर्णन है और बताया गया है अरब-निवासियों पर वह घड़ी आ चुकी है जिसके फलस्वरूप इनकार और शिर्क का युग समाप्त होगा।

पिछली सूरः के अंत पर यह चेतावनी दी गई थी कि बहुत कठिन परिस्थितियाँ प्रकट होने वाली हैं। इसलिए अभी से अल्लाह तआला के समक्ष विनम्रता से झुकते हुए गुप्त रूप से और ऊँची आवाज़ से गिर्गिड़ाते हुए दुआएँ कर क्योंकि तेरी दुआओं के द्वारा ही सब कठिनाइयाँ दूर होंगी।

इस सूरः के आरम्भ में ही यह शुभ समाचार दे दिया गया है कि इन कठिनाइयों के फलस्वरूप मोमिनों की निर्धनता दूर कर दी जाएगी। पुनः कठिनाइयों के प्रकरण में सबसे पहले बद्र युद्ध का वर्णन किया और जैसा कि इससे पहली सूरः के अंत पर दुआओं की ओर विशेष ध्यान दिलाया गया था, हम देखते हैं कि बद्र युद्ध में मुसलमानों को मिलने वाली विजय भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेष दुआओं ही के परिणामस्वरूप मिली थी। अन्यथा 313 सहाबा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस युद्ध में सम्मिलित थे, उनके मुकाबले पर मक्का के मुश्तिकों की आक्रामक सेना आध्यात्मिक क्षेत्र के सिवा अन्य समस्त प्रकार से उन पर भारी थी। उत्तम सवारियाँ उनको प्राप्त थीं। उत्तम अस्त्र-शस्त्र उन्हें उपलब्ध थे। तीर-अन्दाज़ी की कला में निपुण सैन्य टुकड़ियाँ उनकी सेना में सम्मिलित थीं। इसके अतिरिक्त युद्ध की भावनाओं को भड़काने के लिए ऐसी राग अलापने वाली दक्ष स्त्रियाँ भी थीं जिनके गीतों के परिणाम स्वरूप सेना में एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न हो जाता था। इसके मुकाबले पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह दुआएँ ही सफल हुईं जो आपने अपने खेमे में अत्यन्त अनुनय-विनय के साथ इस अवस्था में माँगीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे से चादर बार-बार गिर जाती थीं और हज़रत अबुबकर सिद्दीक रज़ि, उसे संभालते रहते थे। इस दुआ की चरमावस्था तब हुई जब आप सल्ल, ने बार-बार यह प्रार्थना की :-

अल्लाहु-म्म इन तुहलिक हाज़िहिल इसाबतु मिन अहलिल इस्लामि ला

तु'बद फ़िल अरूजि (मुस्लिम, किताबुल जिहाद)

अर्थात् (हे अल्लाह !) जिन्नों और मनुष्यों के जन्म का उद्देश्य तो उपासना करना ही है और ये भक्तजन जिन्हें मैंने शुद्ध रूप से तेरी ही उपासना की शिक्षा दी है, यदि ये मारे गए तो फिर कभी संसार में तेरी सच्ची उपासना करने वाली कोई जाति पैदा नहीं होगी । अतः बद्र युद्ध की सफलता का समस्त श्रेय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं को ही प्राप्त था ।

इसके अतिरिक्त मोमिनों को यह भी समझा दिया गया कि सच्चों और झूठों के बीच भारी फ़र्क़ कर देने वाला हथियार तो तक़वा ही है । यदि आगे भी तुम संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों पर विजयी होने का विचार संजोये बैठे हो तो वह केवल इस दशा में पूरा होगा कि तुम तक़वा पर स्थिर रहो ।

यहाँ यह भी समझा दिया गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी कदापि युद्ध न करते जब तक युद्ध के द्वारा आप का धर्म परिवर्तन करने का प्रयास न किया जाता । सबसे बड़ा उपद्रव संसार में सदैव इसी प्रकार उत्पन्न होता रहा है और होता रहेगा कि शस्त्रबल के द्वारा लोगों के धर्म परिवर्तित करने का प्रयास किया जाता रहेगा । इस दशा में केवल उस समय तक प्रतिरक्षा की अनुमति है जब तक कि यह उपद्रव पूर्णतया समाप्त न हो जाए ।

इसी प्रकार बताया कि दृढ़ता के लिए अधिकता से अल्लाह को स्मरण करने की आवश्यकता है । अतः भयंकर युद्धों के समय भी लगातार अल्लाह को स्मरण करने वालों को यह शुभ-समाचार दिया जा रहा है कि तुम ही सफलता प्राप्त करोगे । क्योंकि प्रत्येक सफलता ईश्वर स्मरण (ज़िक्र-ए-इलाही) से संबद्ध है ।

इस सूरः की अन्तिम दो आयतों में इस विषय का वर्णन है कि यदि शत्रु का दबाव बहुत बढ़ जाए और विवश हो कर तुम्हें अपने देश को त्यागना पड़े तो अल्लाह के मार्ग में यह त्याग स्वीकार होगा और इसके बदले में अल्लाह तआला की ओर से सहायता प्रदान की जाएगी और (अतीत के दोषों को) क्षमा करने के अतिरिक्त अल्लाह तआला देशत्याग करने वालों की जीविका में भी बहुत बढ़ोत्तरी प्रदान करेगा । यह भविष्यवाणी सदा से बड़ी शान के साथ पूरी होती रही है और जीविका में जिस बढ़ोत्तरी का वर्णन इस सूरः के आरम्भ में अन्फ़ाल (युद्धलब्ध धन) प्रदान किए जाने के रूप में किया गया था उसके अब और अनेक रूप यहाँ वर्णन कर दिए गए कि हिजरत (देशत्याग) के फलस्वरूप मुहाजिरीन (देशत्याग करने वालों) के जीविका के मार्ग बहुत प्रशस्त किए जाएँगे ।



سُورَةُ الْأَنْفَالِ مَدْنَىٰ وَ هِيَ مَعَ الْبِشَّارَةِ وَ عَشَرَةُ رُكُونَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11।

वे तुझ से युद्धलब्ध धन के बारे में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि युद्धलब्ध धन अल्लाह और रसूल के हैं । अतः यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह का तक्कवा धारण करो और अपने बीच सुधार करो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । 12।

मोमिन केवल वही हैं कि जब अल्लाह की चर्चा की जाती है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब उन के समक्ष उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह उनको ईमान में बढ़ा देती हैं और वे अपने रब्ब पर ही भरोसा करते हैं । 13।

वे लोग जो नमाज को कायम करते हैं और जो हमने उनको प्रदान किया उसमें से ही वे खर्च करते हैं । 14।

यही हैं जो (खरे और) सच्चे मोमिन हैं । उनके लिए उनके रब्ब के निकट ऊँचे दर्जे हैं और क्षमादान तथा बहुत सम्मान जनक जीविका भी है । 15।

(उनका ईमान ऐसा ही सत्य है) जैसे तेरे रब्ब ने तुझे सत्य के साथ तेरे घर से निकाला था जबकि मोमिनों में से एक गुट इसे निश्चित रूप से नापसंद करता था । 16।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ
وَالرَّسُولِ فَإِنَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ
بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّ
كُلَّنَا مُؤْمِنٌ ②

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ
وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تَلَيَّتْ عَلَيْهِمْ أَيْمَانُهُمْ
زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ③

الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمَمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُفْقِدُونَ ④

أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ لَهُمْ
دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ⑤

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكُرْهُونَ ⑥

वे सत्य के बारे में तुझ से बहस कर रहे थे जब कि सत्य (उन पर) खुल चुका था। मानो उन्हें मृत्यु की ओर हाँक कर ले जाया जा रहा था और वे (उसे अपनी आँखों से) देख रहे थे । १।

और (याद करो) जब अल्लाह तुम्हें दो गिरोहों में से एक का वादा दे रहा था कि वह तुम्हारे लिए है और तुम चाहते थे कि तुम्हारे भाग में वह आए जिसमें हानि पहुँचाने की शक्ति न हो और अल्लाह चाहता था कि वह अपने कथनों के द्वारा सत्य को सिद्ध कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे । १।

ताकि वह सत्य को प्रमाणित कर दे और असत्य का खंडन कर दे चाहे अपराधी कैसा ही नापसंद करे । १।

(याद करो) जब तुम अपने रब से विनती कर रहे थे तो उसने तुम्हारी विनती को (इस वचन के साथ) स्वीकार कर लिया कि मैं अवश्य एक हजार पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करूँगा । १।

और अल्लाह ने उसे (तुम्हारे लिए) केवल एक शुभ-समाचार बनाया था और इस कारण कि तुम्हारे मन इससे संतुष्ट हो जाएँ जबकि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की ओर से कोई सहायता नहीं (आती) । निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । १। (रुू० १३)

يَجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا^١
يَسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يُنْظَرُونَ

وَإِذْ يَعْدُكُمُ اللَّهُ إِلَّا حَدَى الظَّاهِرَتَيْنِ أَنَّهَا
لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ عَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ
تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحَقِّ الْحَقَّ
بِكَلِمَتِهِ وَيُقْطِعَ دَابِرَ الْكُفَّارِينَ^٢

لِيُحَقِّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْكَرَةُ
الْمُجْرِمُونَ^٣

إِذْ تَسْتَغْيِيْنُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ
أَنِّي مُمْدَدُكُمْ بِالْفِلِّ مِنْ الْمَلِكَةِ
مَرْدُوفِيْنَ^٤

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشَّارِي وَلَتَطْمَئِنَّ بِهِ
فَلَوْبَكُمْ^٥ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ^٦

(और याद करो) जब वह अपनी ओर से शांति देते हुए तुम पर ऊँच उतार रहा था और तुम्हारे लिए आकाश से एक पानी उतार रहा था ताकि वह तुम्हें उसके द्वारा ख़बूब पवित्र कर दे और शैतान की अपवित्रता तुमसे दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को दृढ़ता प्रदान करे और इसके द्वारा पैरों को स्थिरता प्रदान करे । 12।

(याद करो) जब तेरा रब्ब फ़रिश्तों की ओर वहश कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ । अतः उन लोगों को जो ईमान लाए हैं दृढ़ता प्रदान करो । मैं अवश्य उन लोगों के दिलों में जिन्होंने इनकार किया रोब जमा दूँगा । अतः (उनकी) गर्दनों पर प्रहार करो और उनके जोड़-जोड़ पर चोटें लगाओ । 13।

यह इस कारण है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का घोर विरोध किया और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है तो निस्सन्देह अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है । 14।

यह है (तुम्हारा दंड) अतः इसे चखो और (जान लो) कि काफिरों के लिए निश्चय ही आग का अज्ञाब है । 15।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब उनकी किसी विशाल सेना से जिन्होंने इनकार किया तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उन्हें पीठ न दिखाओ । 16।

और जो उस दिन उन्हें पीठ दिखाएगा सिवाए इसके कि रणनीति के रूप में

إذْيَعْشِيْكُمُ التَّعَاسَ أَمَّنَهُ وَيَنْزَلُ
عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَا لَيْسَ بِظَهَرٍ كُمْ بِهِ
وَيَدْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزُ الشَّيْطَنِ
وَلَيَرْبِطَ عَلَى قَلُوبِكُمْ وَيُنَيِّثَ بِهِ
الْأَقْدَامَ ⑩

إذْيَوْحِنْ رَبِّكَ إِلَى الْمُلِّكَةِ آتَيْ مَعْنَفَهُ
فَكَتَبْتُوا الَّذِينَ أَمْنَوْا سَائِقَ فِي قُلُوبِ
الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّغْبَ فَاصْرَبُوا فَوْقَ
الْأَعْنَاقِ وَاصْرِبُوا مِنْهُمْ كُلُّ بَنَانِ ⑪

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ
يُشَاقِقَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ⑫

ذَلِكُمْ فَدْرُقُوهُ وَأَنَّ لِلْكُفَّارِينَ عَذَابَ
الثَّارِ ⑬

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا إِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُؤْتُوهُمُ الْأَذْبَارَ ⑭

وَمَنْ يُوَلِّهُمْ يَوْمَ إِذْ دُبَرَهُ أَلَا مَتَّخِرٌ فَأَ

पहलू बदल रहा हो अथवा (अपने ही) किसी दल से मिलने का प्रयत्न कर रहा हो तो निश्चित रूप से वह अल्लाह के क्रोध के साथ वापस लौटेगा और उसका ठिकाना नरक् होगा और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ॥17।

अतः तुमने उन्हें वध नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें वध किया है । और (हे मुहम्मद !) जब तूने (उनकी ओर कंकर) फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह ने फेंके । और यह इस कारण हुआ ताकि वह अपनी ओर से मोमिनों को एक अच्छी परीक्षा में डाले । निसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ॥18।*

यह थी तुम्हारी दशा और यह (भी सच है) कि अल्लाह ही काफिरों की चाल को कमज़ोर करने वाला है ॥19।

(अतः हे मोमिनो !) यदि तुम विजय-कामना करते थे तो विजय तो तुम्हारे पास आ गई । और (हे इनकार करने वालो ! अब भी) यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा है और यदि तुम (शरारत की) पुनरावृत्ति करोगे तो हम

* इस आयत में बढ़ युद्ध की शानदार विजय का वर्णन है जो देखने में सहावा के द्वारा प्राप्त हुई परन्तु जब वे काफिरों का वध कर रहे थे तो वास्तव में अल्लाह की शक्ति से ऐसा कर रहे थे । इस विजय लाभ का एक बड़ा प्रत्यक्ष कारण यह बना कि जब हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने कंकर उठा कर काफिरों की ओर फेंके तो उसके साथ ही एक तेज़ आँधी मुसलमानों की सेना की ओर से काफिरों की सेना की ओर चल पड़ी । इसी बात में अल्लाह तआला का उन्हें वध करने का रहस्य छिपा है कि शत्रुओं की आँखें इस आँधी के कारण से लगभग दृष्टिहीन हो गई और उनका वध करना मुसलमानों की सेना के लिए बहुत सरल हो गया । फरिश्तों की सहायता से भी यही अभिप्राय है ।

لِقَاتٍ أَوْ مُتَحِيزًا إِلَى فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ
بِعَضٌ مِّنَ الظُّلُمَوْمَاوِيَةِ جَهَنَّمُ وَبِسْ
الْمُصِيرِ ⑦

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلِكَنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلِكَنَّ اللَّهَ
رَمَى وَلَيَبْلُو الْمُؤْمِنُونَ مِنْهُ بَلَاءً
حَسَّاً إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِ ⑧

ذِلِّكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوْهِنٌ كَيْدِ الْكُفَّارِينَ ⑨

إِنَّ شَفَّتِهِ حُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفُتُوحُ وَإِنْ
تَنْهَوْا فَهُوَ حَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا

भी (अज्ञाब की) पुनरावृत्ति करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे किसी काम न आएगा चाहे (वह) कितना ही अधिक हो और यह (जान लो) कि अल्लाह मोमिनों के साथ है । 120। (रुकू 2/16)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और उससे मुँह न मोड़ो जब कि तुम सुन रहे हो । 121।

और उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने कहा था, हमने सुन लिया । जबकि वास्तव में वे सुन नहीं रहे थे । 122।

निस्सन्देह अल्लाह के निकट समस्त प्राणियों में सबसे बुरे वे बहरे और गँगे हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते । 123।

और यदि अल्लाह उनके अन्दर कोई भी अच्छी बात देखता तो उन्हे अवश्य सुना देता और यदि उन्हे सुना भी देता तो अवश्य वे उपेक्षा भाव दिखाते हुए पीठ फेर जाते । 124।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ को जब वह तुम्हें बुलाए स्वीकार करने आ जाता । ताकि वह तुम्हें जीवित करे और जान लो कि अल्लाह मनुष्य और उसके दिल के बीच आ जाता है और यह भी (जान लो) कि तुम उसी की ओर एकत्रित किए जाओगे । 125।*

نَعْدٌ وَلَنْ تُغْنِي عَنْكُمْ فِتْنَكُمْ شَيْئًا
وَلَوْ كَثُرْتُ لَوْ أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِّعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَا تَوَلُّوَاعْنَةً وَأَنَّمَّا تَسْمَعُونَ ﴿٧﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ﴿٨﴾

إِنَّ شَرَ الدُّوَّابَٰتِ عِنْدَ اللَّهِ الصُّصُّ
الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٩﴾

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَا سَمَعُوهُ
وَلَوْ أَسْمَهُمْ لَتَوَلُّوَّا وَهُمْ مُغْرِضُونَ ﴿١٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِئُوا إِلَيْهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاهُمْ لِمَا يُحِبِّبُكُمْ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ النِّرْءَ
وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُخْشِرُونَ ﴿١١﴾

* इस आयत में मृतकों के जीवित होने की स्पष्ट व्याख्या मौजूद है । भ्रम वश ईसाई हज़रत ईसा अलै. के द्वारा मृतकों को जीवित करने से प्रत्यक्ष रूप से मृतकों को जीवित करना विचार करते हैं । अतः जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आध्यात्मिक मुर्दों को अपनी ओर बुलाया कि →

और उस फ़साद से डरो जो केवल उन लोगों को ही आक्रान्त नहीं करेगा जिन्होंने तुम में से अत्याचार किया और जान लो कि अल्लाह पकड़ करने में बहुत कठोर है । 126।

और याद करो जब तुम बहुत थोड़े थे (और) धरती में दुर्बल माने जाते थे (और तुम) डरा करते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएँ तो उसने तुम्हें शरण दी और अपनी सहायता के साथ तुम्हारा समर्थन किया और तुम्हें पवित्र चीजों में से जीविका प्रदान किया ताकि तुम कृतज्ञ बनो । 127।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और (उसके) रसूल से ख़्यानत न करो अन्यथा इसके फलस्वरूप तुम स्वयं अपनी अमानतों से ख़्यानत करने लगोगे जबकि तुम (इस ख़्यानत को) जानते होगे । 128। और जान लो कि तुम्हारे धन-दौलत और तुम्हारी संतान केवल एक परीक्षा स्वरूप हैं और यह (भी) कि अल्लाह के पास एक बहुत बड़ा प्रतिफल है । 129।

(रुकू ۳۷)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह से डरो तो वह तुम्हारे लिए एक विशेष चिह्न बना देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा प्रदान करेगा और अल्लाह अपार कृपा का स्वामी है । 130।

←आओ मैं तुम्हें जीवित करूँ तो यह बात खुल गई कि वे कब्रों में पढ़े हुए मुर्दे नहीं थे बल्कि अरब के आध्यात्मिक मुर्दे थे ।

وَأَتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ حَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدٌ
الْعِقَابِ ⑩

وَأَذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلُ مُسْتَضْعَفُونَ
فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَسْخَطَكُمُ
النَّاسُ فَأُولَئِكُمْ وَآيَدَكُمْ بِنَصْرِهِ
وَرَزَقَكُمْ مِنْ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ
وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمْرِيَّكُمْ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ⑫

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ
فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ⑬

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
لَكُمْ فُرْقَانًا وَيَعْلَمُ عَنْكُمْ سَيِّئَاتُكُمْ
وَيَعْلَمُ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ⑭

और (याद करो) वे लोग जो काफिर हुए जब तेरे विश्वास बद्यन्त्र कर रहे थे ताकि तुझे (एक ही स्थान) पर घेर दें अथवा तेरी हत्या कर दें अथवा तुझे (देश से) निकाल दें। और वे योजना में व्यस्त थे और अल्लाह भी उनकी योजना का तोड़ निकाल रहा था और अल्लाह योजना करने वालों में से सबसे अच्छा है । 31।

और जब हमारी आयतें उन के समक्ष पढ़ी जाती हैं तो वे कहते हैं बस हम सुन चुके, हम भी यदि चाहें तो ऐसी ही बातें कह सकते हैं। ये तो पुराने लोगों की कहानियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं । 32।

और (याद करो) जब वे कह रहे थे कि हे अल्लाह ! यदि यही तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर अथवा हम पर एक पीड़ादायक अज्ञाब ले आ । 33।

और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज्ञाब दे जब कि तू उनमें उपस्थित हो । और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज्ञाब दे जबकि वे क्षमा याचना कर रहे हों । 34।

और अधिकार उनमें क्या बात है जो अल्लाह उन्हें अज्ञाब न दे जबकि वे इज्जत वाली मस्जिद से लोगों को रोकते हैं हालाँकि वे उसके (वास्तविक) संरक्षक नहीं हैं । उसके (वास्तविक) संरक्षक तो मुत्तकियों के

وَإِذْ يُمْكِرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِيُشْبِهُوكُمْ أَوْ يَقْتُلُوكُمْ أَوْ يُخْرِجُوكُمْ
وَيُمْكِرُونَ وَيُمْكِرُ اللَّهُ مَا وَاللَّهُ خَيْرُ الْمُكَرِّينَ
⑩

وَإِذَا شَأْتُ عَلَيْهِمْ أَيْتَنَا قَاتِلًا وَأَقْدَسْمَعْنَا
لَوْنَشَاءِ لَقْلُنَامِثْ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ
⑪

وَإِذْ قَاتَلُوا اللَّهَمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ
مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنْ
السَّمَاءِ أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ
⑫

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَعْذِبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ
وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ
يَسْتَغْفِرُونَ
⑬

وَمَا لَهُمْ أَلَا يَعْذِبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ
يَصْدُدُونَ عَنِ المسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا
أُولَيَاءَ إِنْ أُولَيَاءُ أَلَا اسْقُونَ

अतिरिक्त और कोई नहीं परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते। ३५।*

और (अल्लाह के) घर के निकट उनकी उपासना सीटियाँ और तालियाँ बजाने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अतः (हे इनकार करने वालो ! अल्लाह के) अज़ाब को चखो क्योंकि तुम इनकार किया करते थे। ३६।

निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया अपने धन को इसलिए खर्च करते हैं ताकि अल्लाह के मार्ग से रोकें। अतः वे उनको (इसी प्रकार) खर्च करते रहेंगे फिर वह (धन) उन के लिए खेद का विषय बन जाएगा, फिर वे परास्त कर दिए जाएँगे। और वे लोग जिन्होंने इनकार किया नर्क की ओर इकट्ठे करके ले जाए जाएँगे। ३७।

ताकि अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक कर दे और अपवित्रता के एक भाग को दूसरे पर डाल दे। फिर इस सारे को (देर के रूप में) परत दर परत इकट्ठा कर दे फिर उसे नर्क में झोक दे। यही लोग हैं जो घाटा उठाने वाले हैं। ३८।

(रुकू ٤)

जिन्होंने इनकार किया उनसे कह दे कि यदि वे रुक जाएँ तो जो कुछ गुजर चुका उसके लिए उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा परन्तु यदि वे (अपराध की) पुनरावृत्ति करें तो निस्सन्देह (इन जैसे लोगों का

وَلِكُنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑦

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَبَّلٌ
وَنَصْدِيَةٌ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ⑧

إِنَّ الظَّالِمِينَ كَفَرُوا يَتَفَقَّدُونَ أَمْوَالَهُمْ
لِيَصْدُدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنَقْضَقُونَ
لَهُمْ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ثُمَّ يُعَلَّبُونَ
وَالظَّالِمِينَ كَفَرُوا إِلَى جَهَنَّمَ يُحَشَّرُونَ ⑨

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ
الْخَيْثَ بَعْصَهُ عَلَى بَعْضِ فَيَرْكِمُهُ
جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ أَوْ إِلَكَ
هُمُ الْخَسِرُونَ ⑩

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَتَهْمُوا
يُغَرِّلُهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا

* मस्जिद-ए-हराम पर मुश्किलों का जब तक कब्ज़ा रहा वह केवल अवैध कब्ज़ा था। वास्तविक रूप से मस्जिद-ए-हराम के अधिकारी मोमिन ही रहे, कब्ज़े से पहले भी और कब्ज़े के बाद भी।

वही हाल होगा) जो पहलों के साथ हो चुका है।¹³⁹

और तुम उनसे युद्ध करते रहो यहाँ तक कि कोई उपद्रव वाकी न रहे और धर्म विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए हो जाए। यदि वे रुक जाएँ तो जो कर्म वे करते हैं निस्सन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है।¹⁴⁰*

और यदि वे पीठ फेर लें तो जान लो कि अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है। क्या ही अच्छा संरक्षक और क्या ही अच्छा सहायक है।¹⁴¹

فَقَدْ مَضَتْ سُلْطَنُ الْأَوْلِيُّنَ^④

وَقَاتِلُهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ
وَيَكُونُ الدِّينُ لِلَّهِ بِلِهِ فَإِنِ اسْتَهْوَا
فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ^⑤

وَإِنْ تَوْلُوا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَىٰكُمْ
نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرٌ^⑥

* यह आयत धर्मान्तरण के विरुद्ध एक दृढ़ प्रमाण है। यहाँ उपद्रव का तात्पर्य बलपूर्वक अपने धर्म से किसी को हटाना है। अतः जब तक धर्म पूर्णतया अल्लाह के लिए स्वतन्त्र न हो जाए उस समय तक ऐसे बल प्रयोग करने वालों के विरुद्ध उन्हीं हथियारों से जिहाद करना उचित है जिन हथियारों से वे ज़बरदस्ती मोमिनों को धर्मच्युत करने का प्रयत्न करते हैं। फितना (उपद्रव) से तात्पर्य आग पर भुतना भी है।

और तुम जान लो कि जो भी युद्धलब्ध धन तुम्हारे हाथ लगे तो उसका पाँचवां

भाग अल्लाह (अर्थात् धर्म-कार्यों के लिए) और रसूल के लिए और निकट सम्बन्धियों के लिए और अनाथों और दीन-दुखियों एवं यात्रियों के लिए है, यदि तुम अल्लाह पर और उस पर ईमान लाते हो जो हमने अपने भक्त पर निर्णय कर देने वाले दिन में उतारा था जिस दिन दो समूहों की मुठभेड़ हुई थी। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 142।

(याद करो) जब तुम (घाटी के) इस ओर थे और वे दूसरी ओर थे और यात्री दल तुम दोनों से नीचे की ओर था। और यदि तुम (किसी गिरोह से युद्ध की) परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा भी कर लेते तब भी उसका (समय) निर्धारित करने में तुम मतभेद करते। परन्तु यह इस कारण (हुआ) कि अल्लाह उस कार्य का फैसला कर दे जो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला था। ताकि सुस्पष्ट तर्क के आधार पर जिसके विनाश का औचित्य हो वही विनष्ट हो। और सुस्पष्ट तर्क के आधार पर जिसे जीवित रहना चाहिए वही जीवित रहे। और निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 143।

(याद करो) जब अल्लाह तुझे तेरी नींद की अवस्था में उन (शत्रुओं) को कम करके दिखा रहा था और यदि

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَإِنَّ
لِلّٰهِ خَمْسَةٌ وَلِرَسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينَ وَابْنِ السَّيْلِ إِنْ
كُنْتُمْ أَمْتَحِنُ بِاللّٰهِ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ
يَوْمَ الْفَرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعُونِ ۝ وَاللّٰهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑩

إِذَا نَتَمْ بِالْعُدُوَّةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوَّةِ
الْقُصُوْىِ وَالرَّكْبَ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۝ وَلَوْ
تَوَاعَدْتُمْ لَا خَلَقْتُمْ فِي الْمِيَاعِ ۝ وَلِكُنْ
لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۝ لِيَهْلِكَ
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيْتَهُ ۝ وَيَحْيَيِ مَنْ حَيَ
عَنْ بَيْتَهُ ۝ وَإِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيعٌ عَلَيْهِ مُعْلِمٌ ۝

إِذَا يُرِيكُمُ اللّٰهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًاٰ
وَلَوْ أَرَكُمْ كَثِيرًا لَفَشَلْتُمْ

वह तुझे उनको अधिक संख्या में दिखाता तो (हे मोमिनो !) तुम अवश्य कायरता दिखाते और इस महत्वपूर्ण विषय में मतभेद करते । परन्तु अल्लाह ने (तुम्हें) बचा लिया । निसन्देह वह दिलों के भेदों को खूब जानता है । 44।

और (याद करो) जब तुम्हारी उनसे मुठभेड़ हुई, वह तुम्हारी दृष्टि में उनको बहुत कम करके दिखा रहा था और उनकी दृष्टि में तुम्हें बहुत कम करके दिखा रहा था । ताकि अल्लाह उस कार्य का फैसला कर दे जो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला था । और अल्लाह ही की ओर समस्त विषय लौटाए जाते हैं । 45।* (रुकू ۱۵)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब भी किसी सैन्य टुकड़ी से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो पाँव जमाये रखो और बहुत अधिक अल्लाह को याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ । 46।

* आयत संख्या 43 से 45 : बद्र युद्ध से पूर्व मुसलमानों को किसी लड़ाई का विचार नहीं था बल्कि मक्का वालों के व्यापारिक दल का समाचार मिला था जिसको रोकने के उद्देश्य से मुसलमान निकले हुए थे । क्योंकि कुरैश का यह उद्देश्य था कि इस व्यापारिक दल का सारा लाभ मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध में उपयोग किया जाए । यह अल्लाह तआला की ओर से एक विशेष योजना थी कि मुसलमानों को अपनी संख्या बहुत थोड़े होने पर भी एक बड़े समूह से मुकाबले का साहस पैदा हुआ अन्यथा बहुत से दुर्बलमन इतनी बड़ी सेना के मुकाबले के लिए घर से ही न निकलते । आयतांश लि यह लि क मन ह ल क अम बच्यनतिन (अर्थात् खुले-खुले तर्क के आधार पर जिसके विनाश का औचित्य हो वही विनष्ट हो) यहाँ बहुत ही गृह्ण मर्म की बात यह वर्णन की गई है कि जो खुले-खुले स्पष्ट तर्क रखते हों जिसे बच्यनः कहा गया है वे इस तर्क के बल पर अवश्य विजय प्राप्त करते हैं । जिनके पास कोई तर्क न हो तो वे हर हाल में नष्ट कर दिए जाते हैं । इस कारण प्रत्यक्ष लड़ाई हो अथवा विचार-धारा की लड़ाई हो जिनके पास बच्यनः (स्पष्ट तर्क) हो वे अवश्य विजयी होंगे । जिनके पास यह न हो वे अवश्य पराजित हो जाते हैं ।

وَلَتَنَزَّلَ عَنْهُمْ فِي الْأَمْرِ وَلِكَنَّ اللَّهَ

سَلَّمَ طَرَاثَهُ عَلَيْهِ بِدَاتِ الصَّدُورِ ④

وَإِذْ يَرِيْكُمُوهُمْ إِذَا تَقِيْسِمُونَ فِي

أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي

أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۱

وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأَمْوَارُ ۶

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيْسِمُ فَهُنَّ

فَالْبُشِّرُوا وَإِذْ كَسَرُوا اللَّهُ كَثِيرًا الْعَلَّامُ

تَفْلِحُونَ ۷

और अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो और परस्पर मत झगड़ो अन्यथा तुम कायर बन जाओगे और तुम्हारा रोब जाता रहेगा। और धैर्य से काम लो। निस्सदेह अल्लाह धैर्य करने वालों के साथ होता है। 147।

और उन लोगों की भाँति न बनना जो इतराते हुए और लोगों को दिखाने के लिए अपने घरों से निकले और वे अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोक रहे थे और जो वे करते थे अल्लाह उसे घेरे में लिए हुए था। 148।

और (याद करो) जब (एक) शैतान (तुल्य मनुष्य) ने उनके कर्म उन्हें सुन्दर करके दिखाए और कहा कि आज के दिन लोगों में से तुम पर कोई विजयी नहीं हो पाएगा और निस्सन्देह मैं तुम्हें शरण देने वाला हूँ। फिर जब दोनों गुट आमने-सामने हुए तो वह अपनी एडियो के बल फिर गया। और उसने कहा निस्सन्देह मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ। मैं अवश्य वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे। मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह दंड देने में बहुत कठोर है। 149। (रुकू ٦)

(याद करो) जब मुनाफ़िक और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कहने लगे कि इन लोगों को इनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है। हालाँकि जो भी अल्लाह पर भरोसा करता है तो निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 150।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا
فَتَفْسِلُوا وَتَذَهَّبَ رِيْحَكُمْ
وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ⑦

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ حَرَجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ بَطْرَأً وَرِئَاءَ النَّاسِ
وَيَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا
يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ⑧

وَإِذْرَى لَهُمُ الشَّيْطَنُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا
غَالِبٌ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي
جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا قَرَأَهُمُ الْفَقَهَنِ نَكَصَ
عَلَى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكُمْ
إِنِّي آرَى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑨

إِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرْضٌ غَرَّ هُوَ لِأَعْدَى بِهِمْ
وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ
غَرِيرٌ حَكِيمٌ ⑩

और यदि तू देख सके (तो यह देखेगा) कि जब फरिश्ते उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया मृत्यु देते हैं तो वे उनके चेहरों और उनकी पीठों को चोटें लगाते हैं। और (यह कहते हैं कि) खूब जलन वाले अज़ाब को चखो । 51।

यह उसके कारण है जो तुम्हरे (अपने ही) हाथों ने आगे भेजा। जबकि अल्लाह कदापि ऐसा नहीं कि अपने भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला हो । 52।

फिरौन की जाति और जो उनसे पहले थे उन की रीति के अनुरूप (तुम्हारी भी रीति है)। उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया था। अतः अल्लाह ने उन्हें उनके पापों के कारण पकड़ लिया। निस्सन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) दंड देने में बहुत कठोर है । 53।

यह इसलिए कि अल्लाह कभी उस नेमत को परिवर्तित नहीं करता जिसे उसने किसी जाती को प्रदान किया हो। यहाँ तक कि वे स्वयं अपनी अवस्था को परिवर्तित कर दें। और (याद रखो) कि निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 54।

फिरौन की जाति और जो उन से पहले थे उन लोगों की रीति के अनुरूप (तुम्हारी भी रीति है)। उन्होंने अपने रब्ब की आयतों को झुठला दिया तो

وَلَوْ تَرَى إِذَا يَوْمَ الْدِينَ كَفَرُوا
الْمَلَائِكَةُ يُصْرِيبُونَ وَجْهَهُمْ
وَأَذْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرَقِ ①
ذَلِكَ بِمَا فَعَلُوكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَامٍ لِّلْعَيْدِ ②

كَذَابٌ أَلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوا بِاِلٰهٍ وَّاَخْذَهُمُ اللَّهُ بِدُنُوْبِهِمْ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ③

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُنْ مُغَيِّرًا لِّعْمَةً
أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يَعْيِرُوا مَا
بِأَنفُسِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ ④

كَذَابٌ أَلِ فِرْعَوْنٌ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَبُوا بِاِلٰهٍ رَبِّهِمْ

हमने उन्हें उनके पापों के कारण नष्ट कर दिया। और फिर औन की जाति को हमने डुबो दिया और वे सब के सब अत्याचारी थे । १५१।

निस्सन्देह अल्लाह के निकट निकृष्टम जीवधारी वे हैं जिन्होंने इनकार किया और वे किसी प्रकार से ईमान नहीं लाते । १५१।

(अर्थात्) वे लोग जिनसे तूने समझौता किया फिर वे हर बार अपना वचन तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं । १५१।

अतः यदि तू उनसे लड़ाई में भिड़ जाए तो उन (की दुर्गत) से उनके पिछलों को भी तितर-बितर कर दे ताकि संभवतः वे शिक्षा ग्रहण करें । १५१।

और यदि किसी जाति से तू खयानत का भय करे तो उनसे वैसा ही कर जैसा उन्होंने किया हो। अल्लाह खयानत करने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता । १५१। (रुकू । ३)

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कदापि इस भ्रम में न पड़े कि वे आगे बढ़ गए हैं। वे कदापि विवश नहीं कर सकेंगे । १६०।

और जहाँ तक तुम्हारी समार्थ्य हो उनके लिए तैयारी रखो, कुछ शक्ति संचय करके और कुछ सीमाओं पर घोड़े बांध कर। इससे तुम अल्लाह के शत्रु और अपने शत्रु तथा उनके अतिरिक्त दूसरों पर भी रोब डालोगे। तुम उन्हें नहीं जानते अल्लाह उन्हें जानता है। और जो

فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا
أَلْفِرْعَوْنَ وَكُلُّ كَانُوا أَظْلَمِيْنَ ⑦

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑧

الَّذِيْنَ عَاهَدُتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ
عَاهَدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقْبَلُوْنَ ⑨
فَلَمَّا تَشَقَّقُهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِدُهُمْ
مِّنْ خَلْفِهِمْ لَعْلَهُمْ يَذَكَّرُوْنَ ⑩

وَإِمَّا تَخَافَ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَائْبُدُ
إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَحِبُّ
الْحَاسِدِيْنَ ⑪

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا سَبَقُوْا
إِنَّهُمْ لَا يَعْجِزُوْنَ ⑫

وَأَعِذُّ وَالْهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ
وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهِ عَدُوِّ اللَّهِ
وَعَدُوُّكُمْ وَآخَرِيْنَ مِنْ دُوُّنِيْمَ لَا
تَعْلَمُوْنَهُمْ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا شَفَقُوْا

कुछ भी तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च करोगे तुम्हें पूर्णरूप से वापस किया जाएगा और तुम्हारा अधिकार हनन नहीं किया जाएगा । 61।

और यदि वे संधि के लिए ज्ञुक जाएँ तो तू भी उसके लिए ज्ञुक जा और अल्लाह पर भरोसा कर । निस्सन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 62।

और यदि वे इरादा करें कि तुझे धोखा दें तो निस्सन्देह अल्लाह तेरे लिए पर्याप्त है । वही है जिसने अपनी सहायता और मोमिनों के द्वारा तेरी सहायता की । 63।

और उसने उनके दिलों को परस्पर बांध दिया । यदि तू वह सब कुछ खर्च कर देता जो धरती में है तब भी तू उनके दिलों को परस्पर बांध नहीं सकता था । परन्तु यह अल्लाह ही है जिसने उन (के दिलों) को परस्पर बाँधा । वह निस्सन्देह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 64।

हे नबी ! तेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है और उनके लिए भी जो मोमिनों में से तेरा अनुसरण करें । 65। (रुक् 8/4)

हे नबी ! मोमिनों को युद्ध की प्रेरणा दे । यदि तुम में से बीस धैर्य धारण करने वाले होंगे तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे । और यदि तुम में से एक सौ (धैर्य धारण करने वाले) होंगे तो वे इनकार करने वालों के एक हजार पर

مِنْ شَيْءٍ فِي سَيِّئِ اللَّهِيْوَفِ إِلَيْكُمْ
وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ①

وَإِنْ جَعَلُوا إِلَيْكُمْ فَاجْجُمُ لَهَا وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ②

وَإِنْ يُرِيدُوْا أَنْ يَخْدُعُوكَ فَإِنَّ
حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ
وَبِالْمُؤْمِنِينَ ③

وَأَنَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْأَنْقَفْتَ مَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلْفَتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ أَنَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ④

يَا أَيُّهَا الَّتِيْ حَسْبَكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑤

يَا أَيُّهَا الَّتِيْ حَرَّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى
الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشَرُونَ
صَبِرُونَ يَعْلَمُوْا مَا شَاءُنَّ وَإِنْ يَكُنْ
مِنْكُمْ مِائَةً يَعْلَمُوْا الْفَاقِهِنَ الَّذِينَ

विजय पा जाएँगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं
जो कुछ समझते नहीं । १६६।*

इस समय अल्लाह ने तुमसे बोझ हल्का
कर दिया है क्योंकि वह जानता है कि
तुम में अभी कमज़ोरी है । अतः यदि
तुम में से एक सौ धैर्य धारण करने वाले
हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर
लेंगे । और यदि तुम में से एक हज़ार
(धैर्य धरने वाले) हों तो वे अल्लाह के
आदेश से दो हज़ार पर विजयी हो
जाएँगे । और अल्लाह धैर्य धरने वालों
के साथ होता है । १६७।**

किसी नबी के लिए उचित नहीं कि
धरती में रक्तपात-पूर्ण युद्ध किए बिना
(किसी को) कैदी बनाए । तुम
सांसारिक धन सम्पत्ति चाहते हो जब
कि अल्लाह परलोक को पसंद करता है ।
और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
परम विवेकशील है । १६८।

यदि अल्लाह की ओर से (तुम से
क्षमापूर्ण व्यवहार करने का) पहले से
विधान जारी न किया गया होता तो

كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ⑯

أَئُنْ خَفَّافَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيهِمْ
صَعْفَاءً ۖ فَإِنْ يَكُنْ مُّنْكَرٌ مَائِهٌ صَابِرَةٌ
يَعْلَمُوْا مَائِتَيْنِ ۖ وَإِنْ يَكُنْ مُّنْكَرًا فَ
يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ ۖ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ ⑯

مَا كَانَ نَبِيٌّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّىٰ
يُشْخَصٌ فِي الْأَرْضِ ۖ تُرِيدُونَ عَرَضَ
الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ وَاللَّهُ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑯

لَوْلَا كَتَبَ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَكُمْ فِيمَا

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि मोमिनों को युद्ध के लिए प्रेरित करें । यद्यपि वे थोड़े हैं परन्तु अल्लाह तआला का यह वादा है कि वे अपने से दस गुना अधिक संख्या पर विजयी हो सकते हैं । परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक अकेला व्यक्ति अपने से दस गुना अधिक संख्या के लोगों पर विजय प्राप्त कर लेगा । यह एक निश्चित संख्या वर्णन की गई है कि यदि सौ हों तो हज़ार पर विजय प्राप्त कर लेंगे जो बिल्कुल संभव है ।

** इस आयत में यह वर्णन है कि इस समय तुम्हारी दुर्बलता की स्थिति है । न तो पर्याप्त भोजन उपलब्ध है और न ही हथियार उपलब्ध है । इस कारण तुम यदि सौ होगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त करोगे । परन्तु जब तुम्हारा रोब जम जाएगा तो आने वाली पीढ़ियों में एक हज़ार, दस हज़ार की संख्या पर भी विजय प्राप्त कर सकेंगे । आने वाली पीढ़ियों के लिए जिस वृहत विजय की भविष्यवाणी की गई है उसकी नींव आरम्भिक युगीन मोमिनों ने ही डाली थी ।

जो तुम ने प्राप्त किया उसके प्रतिफल
स्वरूप अवश्य तुम्हें बहुत बड़ा अज्ञाव
मिलता । 69।

अतः जो युद्धलब्ध धन तुम प्राप्त करो
उसमें से हलाल और पवित्र खाओ और
अल्लाह का तक्का धारण करो ।
निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है । 70। (रुक् ۴)

हे नबी ! तुम्हारे हाथों में जो कैदी हैं उन
से कह दे कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे
दिलों में कोई भर्लाई देखी तो तुम्हें उससे
भी उत्तम देगा जो तुम से ले लिया गया
है । और तुम्हें क्षमा कर देगा और
अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 71।

और यदि वे तुझ से ख्यानत का
इरादा करें तो वे इस से पूर्व अल्लाह
से भी ख्यानत कर चुके हैं । अतः
उसने उनको लाचार कर दिया । और
अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला
(और) परम विवेकशील है । 72।

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और
उन्होंने हिजरत (देशत्याग) की और
अपने धन और जीवन के साथ अल्लाह
के मार्ग में जिहाद किया और वे लोग
जिन्होंने (इन देशत्यागियों को) शरण दी
और (उनकी) सहायता की, यही लोग
हैं जिनमें से कुछ, कुछ अन्य के मित्र हैं ।
और वे लोग जो ईमान लाए परन्तु
उन्होंने हिजरत न की तुम्हारे लिए (तब

اَخْذُتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑦

فَكُلُوا مِمَّا عَيْمَنْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قُلْ لِمَنْ فِي آيَيْدِينِكُمْ مِّنَ
الْأَسْرَى إِنَّمَا يَعْلَمُ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ
خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخْذَمْتُمْ
وَيَغْفِرُ لَكُمْ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

وَإِنْ يُرِيدُوا أَخْيَانَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ
مِنْ قَبْلِ فَآمَنُكَ مِنْهُمْ ۝ وَاللَّهُ عَلَيْهِ
حِكْمَةٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَا جَرَوا وَجَهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَآنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ أَوْفُوا وَأَنْصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ
أُولَئِكَ بَعْضٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ
يَهَا جِرَوا مَا لَكُمْ مِّنْ وَلَا يَتَّهِمُونَ شَيْءٍ

तक) उनसे मित्रता का कोई औचित्य नहीं यहाँ तक कि वे हिजरत कर जाएँ। यहाँ यदि वे धर्म के विषय में तुमसे सहायता चाहें तो सहायता करना तुम पर अनिवार्य है। सिवाय इसके कि किसी ऐसी जाति के विरुद्ध (सहायता का प्रश्न) हो जिसके और तुम्हारे बीच समझौता हो चुका हो। और जो कुछ तुम करते हो उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखने वाला है। 173।

और वे लोग जो काफिर हुए उनमें से कुछ, कुछ अन्य के मित्र हैं। यदि तुम ने उसका पालन न किया (जिसकी तुम्हें शिक्षा दी गई) तो धरती में उपद्रव और बड़ा दंगा होगा। 174।

और वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और वे लोग जिन्होंने (उनको) शरण दी और सहायता की यही लोग सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए क्षमा और सम्मानजनक जीविका है। 175।

और वे लोग जो बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो वे तुम ही में से हैं। और जहाँ तक सगे सम्बन्धियों की बात है, तो अल्लाह की पुस्तक में उनमें से कुछ कुछ अन्य के अधिक निकट हैं। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय की खूब जानकारी रखता है। 176। (रुकू 10/6)

حَتَّىٰ يَهَا حِرُواٰ وَإِنْ اسْتَصْرُوْكُمْ فِي
الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ الْأَصْرَرُ لَا عَلَىٰ قَوْمٍ
يَنْكُمْ وَبِيْهِمْ مِيْنَاقٌ طَّوَّلَ اللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ^{٧٧}

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلَيَاءُ بَعْضٍ طَّ
إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ
وَفَسَادٌ كَيْزِيرٌ^{٧٨}

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَا حِرُوا وَجَهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَوْفُوا وَ نَصَرُوا
أَوْلَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًا لَّهُ
مَعْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ^{٧٩}

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدِ وَهَا حِرُوا
وَجَهَدُوا مَعَكُمْ فَأَوْلَئِكَ مُنْكَمُ
وَأَوْلَوَ الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بَعْضٍ فِي
كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ^{٨٠}

9 – सूरः अत-तौबः

यह सूरः मदीना में सूरः अल अन्फाल के तुरन्त पश्चात् अवतरित हुई । इसकी 129 आयतें हैं ।

जिन युद्धों और उनके परिणामस्वरूप संकटपूर्ण स्थितियों और फिर पुरस्कारों का विवरण सूरः अल अन्फाल के अन्त पर मिलता है उनके कारण उत्पन्न होने वाले विषयों का इस सूरः के आरम्भ में ही वर्णन कर दिया गया कि शत्रु अवश्य पराजित होगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि. से संधि करने पर विवश हो जाएगा । अतः न्याय संगत यह है कि जब तक वे अपनी संधियों पर अटल रहें मुसलमानों की ओर से कदापि प्रतिज्ञाभंग नहीं होनी चाहिए ।

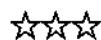
प्रतिज्ञाभंग के कुपरिणामों का विवरण जो सूरः अल-फ़ातिहः से आरम्भ हो कर पिछली समस्त सूरतों में विभिन्न रूपों में मिलता है उसका वर्णन इस सूरः में भी मौजूद है । परन्तु जिस प्रकार शत्रु प्रतिज्ञाभंग करता है और दण्ड पाता है, मोमिनों को भी चेतावनी है कि उन्हें भी प्रत्येक अवस्था में प्रतिज्ञा का पालन करना होगा ।

इस सूरः में बार-बार यह वर्णन मिलता है कि मोमिनों की कोई भी विजय प्राप्ति हथियारों की अधिकता अथवा संख्या बल के कारण नहीं होती और न हो सकती है । इसी प्रकरण में हुनैन युद्ध का वर्णन किया गया है जबकि मुसलमानों को काफ़िरों पर भारी संख्याधिक्यता प्राप्त थी और कुछ मुसलमान इस भ्रम में थे कि जब हम अल्पसंख्या में थे तो उनके विशाल समूहों पर विजयी होते रहे हैं, अब काफ़िर हम पर कैसे विजयी हो सकते हैं ? उन्हें चेताया गया कि जब तुम अल्प संख्या में थे तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं से विजयी होते रहे हो । इस कारण अब तुम्हारी संख्याधिक्यता का भ्रम तोड़ा जा रहा है, परन्तु अत्यन्त भयंकर पराजय के पश्चात् दोबारा तुम इसी रसूल सल्ल. की दुआओं और धैर्य व हिम्मत के फलस्वरूप पुनः विजयी किए जाओगे ।

इसके पश्चात् अधिकता पूर्वक धन-दौलत प्राप्त होने का वर्णन है जिसके फलस्वरूप ईर्ष्यालि मुनाफ़िक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आरोप लगाने से भी बाज़ न आए कि आप धन के बटवारे में अन्याय करते हैं । जबकि जो भी धन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाँटते थे वह अपने प्रियजनों में नहीं अपितु मुहाजिरों (देशत्यागियों) दीन दुःखियों, दरिद्रों, कठिनाइयों में फ़ंसे हुए, क़र्ज़ों के बोझ तले दबे हुए निर्धन लोगों की भलाई के लिए बाँटते थे । अतः चेतावनी दी गई है कि यदि तुम इस सत्यनिष्ठ रसूल पर भी बेर्इमानी का आरोप लगाओगे तो नष्ट कर दिए

जाओगे । वास्तव में ऐसे आरोप लगाने वाले स्वयं ही बेईमान और ख्यानत करने वाले होते हैं ।

इस सूरः के अंत पर यह आयत आती है कि यह वह रसूल है जो केवल तुम्हारी भलाई के लिए दुःख उठाता है । तुम अल्लाह के मार्ग में जो भी कष्ट उठाते हो उस से वह बहुत व्यथित होता है और काफिरों पर सख्ती करना उसके दिल की कठोरता का परिचायक नहीं है । उसका दिल तो इतनी दया और कृपा करने वाला है कि वह दयालु और कृपालु अल्लाह का एक जीवंत नमूना है ।



नोट :- यह बात वर्णन योग्य है कि सूरः अत्-तौबः से पूर्व बिस्मिल्लाह नहीं है । कुरआन मजीद की कुल 114 सूरतें हैं और बिस्मिल्लाह का केवल 113 सूरतों के आरम्भ में उल्लेख है । परन्तु कुरआन करीम की यह विशेषता है कि अन्यत्र सूरः अन-नम्ल में हजरत सुलैमान अलै. के महारानी सवा के नाम पत्र में बिस्मिल्लाहिरहमाननिरहीम पूरा लिखा है । इस प्रकार बिस्मिल्लाह की संख्या सूरतों की संख्या के समान 114 हो जाती है ।

سُورَةُ التُّوْبَةِ مَدْبِيَّةٌ وَهِيَ مَا تَوَسَّعُ وَعَشْرُونَ آيَةٌ وَسِتُّ عَشَرَ رُكُونًا

अल्लाह है और उसके रसूल की ओर से उन मुश्किलों की ओर विमुखता (का सन्देश प्रेरित किया जा रहा) है जिनसे तुमने समझौता किया है । । ।

अतः चार महीने तक तुम धरती में खूब चलो फिरो और जान लो कि तुम अल्लाह को कदापि विवश नहीं कर सकोगे । और यह (भी जान लो) कि निससन्देह अल्लाह काफिरों को अपमानित कर देगा । । ।

और हज्जे-अकबर के दिन सब लोगों के सामने अल्लाह है और उसके रसूल की ओर से सार्वजनिक घोषणा की जाती है कि अल्लाह है और उसका रसूल भी मुश्किलों से पूर्णतया विमुख है । अतः यदि तुम प्रायश्चित कर लो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है । और यदि तुम विमुख हो जाओ तो जान लो कि तुम कदापि अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे । अतः वे लोग जो काफिर हुए उन्हें एक पीड़ाजनक अज्ञाब का शुभ समाचार दे दे । । । ।

मुश्किलों में से ऐसे लोगों को छोड़कर जिनके साथ तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुमसे कोई प्रतिज्ञाभंग नहीं किया और तुम्हारे विरुद्ध किसी और की सहायता भी नहीं की । अतः तुम उनके साथ समझौते को तय की हुइ अवधि

بِرَأْءَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الظِّنْنِ
عَهْدُكُمْ مِّنَ الْمُسْرِكِينَ

فَسِيَحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ عَيْرَ مُعْجِزِي اللَّهِ
وَأَنَّ اللَّهَ مُعْجِزِي الْكُفَّارِ

وَأَذَانَ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ
الْحِجْجَ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِئٌ مِّنْ
الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ لَفَانْ شَيْئَمْ فَهُوَ
خَيْرٌ لَكُمْ وَإِنْ تَوَلَّنَمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَبَشِّرِ الْذِينَ
كَفَرُوا بِعِذَابِ الْيَمِّ

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُكُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ لَمْ
لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا
عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَاتَّمُوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ

तक पूरा करो । निस्सन्देह अल्लाह मुत्तकियों से प्रेम करता है । 41

अतः जब इज्जत वाले महीने गुज़र जाएं तो जहाँ भी तुम (प्रतिज्ञाभंग करने वाले) मुश्कियों को पाओ तो उनसे लड़ो और उन्हें पकड़ो और उनका धेराव करो और प्रत्येक घात लगाने के स्थान पर उनकी घात में बैठो । अतः यदि वे प्रायश्चित करें और नमाज़ कायम करें और ज़कात अदा करें तो उनका रास्ता छोड़ दो । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 51

और मुश्कियों में से यदि कोई तुझ से शरण माँगे तो उसे शरण दे । यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले फिर उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दे । यह (छूट) इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो ज्ञान नहीं रखते । 61 (रुक् ١)

अल्लाह और उसके रसूल के निकट मुश्कियों का वचन कैसे सही माना जा सकता है सिवाय उनके जिनसे तुमने मस्जिद-ए-हराम में वचन लिया हो । अतः जब तक वे तुम्हारे हित में (अपने वचन पर) अटल रहें तुम भी उनके हित में अटल रहो । निस्सन्देह अल्लाह मुत्तकियों से प्रेम करता है । 71

कैसे (उनका वचन भरोसे योग्य) हो सकता है जबकि परिस्थिति यह है कि यदि वे तुम पर विजयी हो जाएं तो तुम

إِلَيْكُمْ مَدْتَحُمُّونَ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ①

فَإِذَا أَسْلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرُمَ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدُوكُمْ
وَخُذُولُهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ فَإِنْ تَابُوا وَأَقامُوا
الصَّلَاةَ وَأَتَوْا الزَّكُوَةَ فَلْخُلُوْ
سِلِيلُهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ②

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ
فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلْمَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلَغْهُ
مَا مَأْمَنَهُ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۖ

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ
اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوكُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْعَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا كُمْ
فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۷

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقِبُوا
فِيهِمْ إِلَّا وَلَا ذَمَّةٌ ۖ يُرْضُونَكُمْ

से सम्बन्धित किसी वचन अथवा कर्तव्य की परवाह नहीं करते । (केवल) वे तुम्हें अपने मुँह की बातों से प्रसन्न कर देते हैं जबकि उनके दिल (उन बातों के) इनकारी होते हैं और उनमें से अधिकतर दुराचारी लोग हैं । १।

उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तुच्छ मोल को ग्रहण कर लिया । फिर उसके मार्ग से (लोगों को) रोका । जो वे करते हैं निस्सन्देह बहुत बुरा है । १।

किसी मोमिन के विषय में वे न किसी प्रतिज्ञा की परवाह करते हैं और न किसी उत्तरदायित्व का । और यही लोग सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं । १०।

अतः यदि वे प्रायश्चित कर लें और नमाज को कायम करें और ज़कात अदा करें तो धर्म की दृष्टि से तुम्हरे भाई हैं । और हम ऐसे लोगों के लिए चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जो ज्ञान रखते हैं । १।

और यदि वे अपनी प्रतिज्ञा के पश्चात् अपनी क़समों को तोड़ दें और तुम्हारे धर्म पर कटाक्ष करें तो इनकार करने वालों के मुखियाओं से लड़ाई करो । निस्सन्देह वे ऐसे हैं कि उनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं (अतः उनसे लड़ाई करो । इस प्रकार) हो सकता है कि वे बाज़ आजाएँ । १२।

क्या तुम ऐसे लोगों से युद्ध नहीं करोगे जो अपनी क़समों को तोड़ बैठे हों । और रसूल को (देश से) निकाल देने का

بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَابُلَ قُلُوبُهُمْ
وَأَكْثَرُهُمْ فُسِقُونَ ⑩

إِشْرَقُوا بِآيَاتِ اللَّهِ تَمَنَّا قِيلَّا فَصَدُّوا عَنْ
سَيِّئِهِمْ إِنَّهُمْ سَاءُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑪

لَا يَرْقِبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَذِمَةٌ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ⑫

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوْةَ
فَلَا خَوْاْنَكُمْ فِي الدِّينِ ۖ وَنَفْصُلُ الْأُلْيَٰ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑬

وَإِنْ تَكُنُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَظَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَيْمَانَهُمْ
الْكُفَّارُ إِنَّهُمْ لَا يَمِنُّ لَهُمْ لَعْنَهُمْ
يَنْتَهُونَ ⑯

أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا تَكُنُوا أَيْمَانَهُمْ
وَهُمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ

संकल्प किए हुए हों । और वही हैं जिन्होंने पहले-पहल तुम पर (अत्याचार का) आरम्भ किया । क्या तुम उनसे डर जाओगे ? यदि तुम मेमिन हो तो अल्लाह अधिक हक्कदार है कि तुम उससे डरो ॥13॥

उनसे लड़ाई करो । अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से अज्ञाब देगा और उन्हें अपमानित कर देगा । और तुम्हें उनके विरुद्ध सहायता प्रदान करेगा और मोमिनों के दिलों को आरोग्य प्रदान करेगा ॥14॥

और उनके दिलों से क्रोध टूट कर देगा । और अल्लाह जिस पर चाहे प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए झुकता है । और अल्लाह बहुत जानने वाला (और) परम विवेकशील है ॥15॥

क्या तुम यह विचार करते हो कि तुम इसी प्रकार छोड़ दिए जाओगे जबकि अभी तक अल्लाह ने (परीक्षा में डाल कर) तुम में से ऐसे लोगों को छाँट कर अलग नहीं किया जिन्होंने जिहाद किया और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के अतिरिक्त किसी को गहरा मित्र नहीं बनाया । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है ॥16॥ (रुकू ٢)

मुश्कियों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें जबकि वे स्वयं अपने विरुद्ध इनकार के साक्षी हैं । यहीं वे हैं जिनके कर्म नष्ट हो गए और वे अग्नि में दीर्घ काल तक पड़े रहने वाले हैं ॥17॥

بَدَءَ وُكْمٌ أَوَّلَ مَرَّةً ۖ أَتَخْسُونَهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ أَحَقُّ أَنْ تَخْسُونَهُ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ⑦

قَاتِلُوهُمْ يَعْذِبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيهِنَّ
وَيُخْزِهِمْ وَيَصْرُكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ
صَدْرَ رَقُورٍ مُّؤْمِنِينَ ⑧
وَيَدِهِبُ غَيْظَ قَلُوبِهِمْ ۖ وَيَتَوَبُ اللَّهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَيْهِ حِكْمٌ ⑨

أَمْ حَبَّتْمَ أَنْ شَرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمُ اللَّهُ
الَّذِينَ جَهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَحْدُّوا مِنْ
دُوْنِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِيَجَةً ۖ وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑩

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمَرُوا مَسَاجِدَ
اللَّهِ شَهِيدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ
أَوْ لِئِكَ حَطَّتْ أَعْمَالُهُمْ ۖ وَفِي النَّارِ
هُمْ خَلِدُونَ ⑪

अल्लाह की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर ईमान लाए और नमाज़ कायम करे और ज़कात दे और अल्लाह के सिवा किसी से भय न करे । अतः सम्भव है कि ये लोग हिदायत प्राप्त लोगों में गिने जाएँ । 118।

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद-ए-हराम की देख भाल करना ऐसा ही समझ रखा है जैसे कोई अल्लाह पर और परकाल के दिन पर ईमान ले आए और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करे । वे अल्लाह के निकट कदापि एक समान नहीं हो सकते । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता । 119।

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और जीवन के साथ जिहाद किया वे अल्लाह के निकट पदवी में बहुत बड़े हैं और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं । 120।

उनका रब्ब उन्हें अपनी ओर से दया, प्रसन्नता और ऐसे स्वर्ग का शुभ समाचार देता है जिनमें उनके लिए सदा रहने वाली नेमतें होंगी । 121।

वे सदा-सदा के लिए उनमें रहने वाले हैं। निस्सन्देह अल्लाह के पास एक बड़ा प्रतिफल है । 122।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुम्हरे पूर्वजों और भाइयों ने ईमान

إِنَّمَا يَعْمَرُ مَسَجِدُ اللَّهِ مِنْ أَمْنٍ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَأَقَى
الرَّزْكَوَةَ وَلَمْ يَرْخُشْ إِلَّا اللَّهُ فَعَسَى
أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ⑯

أَجَعَلْتُمْ سَقَائِيَّةَ الْحَاجِ وَعَمَارَةَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ كَمَنْ أَمْنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَجَهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوْنَ عِنْدَ
اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي النَّقْوَمَ الظَّلِيمِينَ ⑯

الَّذِينَ أَمْنَوْا وَهَاجَرُوا وَجَهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ
دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاغِرُونَ ⑯

يَسِيرُ هُمْ بِهِمْ بِرَحْمَةِ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ
وَجَنَّتِ لَهُمْ فِيهَا نَعِيْمٌ مَّقِيمٌ ⑯

خَلِدِينَ فِيهَا آبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ⑯

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا لَا تَنْهَذُوا أَبَاءَكُمْ

की अपेक्षा इनकार को पसन्द कर लिया है तो तुम उन्हें (अपना) मित्र न बनाओ । और तुम में से जो भी उन्हें मित्र बनाएंगे तो यही हैं जो अत्याचारी हैं । 23।

तू कह दे कि यदि तुम्हारे पूर्वज और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे वंश तथा वह धन जो तुम कमाते हो और वह व्यापार जिसमें हानि का भय रखते हो और वे घर जो तुम्हें पसन्द हैं अल्लाह और उसके रसूल से तथा अल्लाह के मार्म में जिहाद करने की अपेक्षा तुम्हें अधिक प्रिय हैं तो फिर प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय ले आए । और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता । 24। (रुकू ۳)

निस्सन्देह अल्लाह बहुत से रणक्षेत्रों में तुम्हारी सहायता कर चुका है और (विशेषकर) हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी अधिकता ने तुम्हें अहंकार में डाल दिया था । अतः वह तुम्हारे किसी काम न आ सकी और धरती विस्तृत होने के बावजूद तुम पर तंग हो गई । फिर तुम पीठ दिखाते हुए भाग खड़े हुए । 25।

फिर अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनों पर अपनी शांति उतारी और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिन्हें तुम देख नहीं सकते थे । और उसने उन लोगों को अज्ञाब दिया जिन्होंने इनकार किया था । और काफिरों का ऐसा ही प्रतिफल हुआ करता है । 26।

وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلَيَاءِ إِنَّا سَمَحْبُوا الْكُفَّارَ
عَلَى الْإِيمَانِ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَمُنْكَرٌ
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

قُلْ إِنْ كَانَ أَبَاكُمْ وَأَبْنَائُكُمْ
وَإِخْوَانَكُمْ وَأَزْوَاجَكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ
وَأَمْوَالُ أُفْتَرَقْتُمُوهَا وَتِجَارَةً تَخْسُنَ
كَسَادَهَا وَمَسِكِنَ تَرْصُونَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي
سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَسِيقِينَ ۝

لَقَدْ نَصَرَ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُيَّنِ ۖ إِذَا أَعْجَبَكُمْ كُثْرَتُكُمْ
فَلَمْ يُثْغِرْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا قَاتَلُوكُمْ
الْأَرْضُ بِمَا رَحِبَتْ ثُمَّ وَيَئِمْ
مُذْبِرِينَ ۝

تُحَرَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ
وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ
تَرُوهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَذَلِكَ
جَزَاءُ الْكُفَّارِينَ ۝

फिर उसके बाद भी अल्लाह जिस पर चाहेगा प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुक जाएगा । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है । २७।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! मुश्किल तो अपवित्र हैं । अतः वे अपने इस वर्ष के बाद मस्जिद-ए-हराम के निकट न फटकें । और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हें अपनी कृपा के साथ धनवान बना देगा । निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । २८।*

अहले किताब में से उन से युद्ध करो जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न परकालीन दिवस पर और न ही उसे हराम ठहराते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम घोषित किया है । और न ही सत्यधर्म को धर्म के रूप में अपनाते हैं । यहाँ तक कि वे (अपने)

لَمْ يَتُوبْ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ لِكَ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑩

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُسْرِكُونَ
نَجْسٌ فَلَا يَقْرَبُو الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هَذَا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ عِنْلَهُ قَسْوَفَ
يَعْنِي كُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ ۝ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيهِمْ حَكِيمٌ ⑪

قَاتُلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا يَأْتُوْمِ
الْآخِرَةِ وَلَا يَحْرِمُونَ مَا حَرَمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَكْثِرُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعَظِّلُوا

* मुश्किलों के अपवित्र होने का तात्पर्य उनकी आस्था का अपवित्र होना है । शारीरिक अपवित्रता भाव नहीं । अतः मुश्किलों को हज्ज से रोकने का तात्पर्य यह है कि उनको अपनी मुश्किलाना रीतियों का पालन करते हुए हज्ज न करने दिया जाए । क्र्योंकि हज्जरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व अज्ञानता के समय में वे कई बार वस्त्रहीन हो कर और अपने आराध्य मूर्तियों आदि को साथ ले कर हज्ज किया करते थे । अतएव हज्जरत इमाम अबु-हनीफा रह. और दूसरे हनफी फुकहा (धर्मज्ञों) के अनुसार मुश्किल मुसलमानों की प्रत्येक मस्जिद में यहाँ तक कि मस्जिद-ए-हराम में भी प्रवेश कर सकते हैं । हाँ उन्हें वहाँ अपनी मुश्किलाना रीतियों के अनुसार हज्ज या उमरा करने की आज्ञा नहीं । अतः लिखा है : आयत (मुश्किल तो अपवित्र हैं । अतः वे मस्जिद-ए-हराम के निकट न फटकें) से यह अभिप्राय नहीं कि मस्जिद-ए-हराम में उनका प्रवेश निषिद्ध है बल्कि इससे यह अभिप्राय है कि उनका उन रीति रिवाजों के साथ हज्ज या उमरा करना मना है, जिन का पालन वे (इस्लाम से पूर्व) अज्ञानता के दिनों में करते थे । (अल-फ़िकः-अल-इस्लामी व अदिलतुह, तालीफ-उद-दक्कूर वहबतुज़ज़ुहैली भाग ६ पृष्ठ 434, 435, दार-उल-फ़िक़, दमिश्क़)

हाथ से जिज्या अदा करें और वे लाचार हो चुके हों । १२९। (रुक् ४/१०)

और यहूदियों ने कहा कि उज़ेर अल्लाह का पुत्र है और ईसाइयों ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है । यह केवल उनकी मौखिक बातें हैं । ये उन लोगों के कथन का नक़ल कर रहे हैं जिन्होंने (उनसे) पहले इनकार किया था। अल्लाह उन्हें नष्ट करे । ये कहाँ उल्टे फिराए जाते हैं । ३०।

उन्होंने अपने धर्मज्ञों और राहिबों (अर्थात् सन्तों) और इसी प्रकार मरियम के पुत्र मसीह को भी अल्लाह के अतिरिक्त रब्ब बना रखा है । हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया था कि वे एक ही उपास्य की उपासना करें । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । जो वे शिर्क करते हैं उससे वह पवित्र है । ३१।

वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुहों से बुझा दें । और अल्लाह अपने नूर को सम्पूर्ण करने के सिवा (हर दूसरी बात) को रद्द करता है चाहे काफिर कैसा ही नापसंद करें । ३२।

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे समस्त धर्मों पर विजय प्रदान करे चाहे मुश्किल कैसा ही नापसंद करें । ३३।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! निस्सन्देह धार्मिक विद्वानों और

الْجِزِيَّةَ عَنْ يَدِهِ وَهُمْ صَغِرُونَ ﴿١٢﴾
وَقَاتَ الْيَهُودُ عَزِيزٌ أَبْنُ اللَّهِ وَقَاتَ
النَّصَارَى الْمُسِيَّخَ أَبْنَ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يَصَاحِهُونَ قَوْلُ الظَّنِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَبْلٍ قَتَلَهُمُ اللَّهُ أَفَ
يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾

إِنَّهُمْ دَنَّوْا أَحْبَارَهُمْ وَرَهَبَانَهُمْ أَرْبَابًا
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمُسِيَّخَ أَبْنَ مَرْيَمَ وَمَا
أَمْرَوْا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

يُرِيدُونَ أَنْ يُظْفِعُوا نُورَ اللَّهِ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتَمَّمَ نُورَهُ
وَلَوْكِرَهُ الْكُفَّارُونَ ﴿٣٢﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينٍ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الْدِينِ كُلِّهِ وَلَوْكِرَهُ
الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْأَجْبَارِ

राहिबों में से बहुत से ऐसे हैं जो लोगों का धन अवैध ढंग से खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। और जो लोग सोना और चाँदी इकट्ठा करते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते तू उन्हें पीड़ाजनक अज्ञाब का शुभ-समाचार दे दे । 34।

जिस दिन नरक की आग उस (सोने चाँदी) पर भड़काई जाएगी। फिर उससे उनके माथे और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएंगी (तो कहा जाएगा) यह है जो तुमने अपनी जानों के लिए इकट्ठा किया था। अतः जो तुम इकट्ठा किया करते थे उसे छोड़ो । 35।

निस्सन्देह अल्लाह के निकट, जब से उसने आसमानों और धरती को पैदा किया है, अल्लाह की पुस्तक में महीनों की गिनती बारह ही हैं। उनमें से चार इज्जत वाले हैं। यही क्रायम रहने वाला और क्रायम रखने वाला धर्म है। अतः इन (महीनों) में अपनी जानों पर अत्याचार न करना। और (दूसरे महीनों में) मुश्किलों से इकट्ठे हो कर लड़ाई करो जिस प्रकार वे तुमसे इकट्ठे होकर लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तकियों के साथ है । 36।

निस्सन्देह नसी इनकार में एक बढ़त है। इससे उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, गुमराह कर दिया जाता है। किसी वर्ष तो वे उसे वैध घोषित करते हैं और किसी वर्ष उसे अवैध घोषित कर-

وَالرُّهْبَانِ لَيَاكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
إِلَيْهَا طِيلٌ وَيَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الْذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ
وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرُهُمْ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ①

يَوْمَ يُحْكَمُ عَلَيْهِمَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكَوَّى بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُوْبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَذَا
مَا كَنَّتُمْ لَا تَنْسِكُمْ فَذُوقُوا مَا
كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ②

إِنَّ عِدَّةَ الشَّهْوُرِ عِنْدَ اللَّهِ إِثْنَا عَشَرَ
شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةُ حُرُمَرْ ۝ ذَلِكَ
الَّذِينَ الْقِيمُ ۝ فَلَا تَظْلِمُوا قِيمَ
النَّفَسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُسِرِّيَّنَ كَافِةً
كَمَا يَقَاتِلُوكُمْ كَافِةً ۝ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهُ مَعَ الْمُتَّقِينَ ③

إِنَّمَا النَّسَى زِيَادَةً فِي الْكُفْرِ يَضْلِلُ
بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَحْلُونَهُ عَامًا
وَيَعْرِمُونَهُ عَامًا لَيْوَاطُوا عِدَّةَ مَا

देते हैं। ताकि जिनको अल्लाह ने इज़ज़त वाला (महीना) घोषित किया है उनकी गिनती पूरी करें, ताकि वे उसे वैध बना दें जिसे अल्लाह ने अवैध घोषित किया है। उनके लिए उनके कर्मों की बुराई सुन्दर करके दिखाई गई है। और अल्लाह काफ़िर लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता। ३७।* (रुक् ۱۱)

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम्हें क्या हो जाता है जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह के मार्ग में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम बोझल बन कर धरती की ओर झुक जाते हो। क्या तुम परलोक के बदले संसार के जीवन से संतुष्ट हो गए हो ? अतः सांसारिक जीवन की सामग्री परलोक में किंचित मात्र के सिवा कुछ भी (प्रमाणित) न होगी। ३८।

यदि तुम (जिहाद के लिए) न निकलोगे तो वह तुम्हें एक पीड़ाजनक अज़ाब देगा और तुम्हरे स्थान पर एक और जाति को बदल कर लाएगा और तुम उसे (अर्थात अल्लाह को) कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह प्रत्येक विषय पर जिसे वह चाहे सदा सामर्थ्य रखता है। ३९।

यदि तुम इस (रसूल) की सहायता न भी करो तो अल्लाह (पहले भी) इसकी सहायता कर चुका है जब इनकार करने

حَرَمَ اللَّهُ فِي حِلْوَامَا حَرَمَ اللَّهُ زَيْنٌ
لَهُمْ سُوءٌ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكُفَّارِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ
إِنْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَتَأْقَلِسُمْ إِنَّ
الْأَرْضَ ۖ أَرَضِيْسُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ
الْآخِرَةِ ۖ فَمَا مَنَعَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا فِي
الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝

إِلَّا تَشْرُفُوا يَعْذِبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا
وَيَسْتَبْدِلُ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَصْرُوْهُ
شَيْغًا ۖ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

إِلَّا تَصْرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذَا أَخْرَجَهُ
الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِي اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ

* नसी का तात्पर्य यह है कि इस्लाम से पूर्व अरब वाले इज़ज़त वाले महीनों को अपनी मर्जी से आगे पीछे कर देते थे। ताकि इज़ज़त वाले महीनों में लड़ाई आदि जो अवैध कर्म हैं उन्हें कर सकें और बाद में कुछ अन्य महीनों को इज़ज़त वाले महीने घोषित कर दें।

वालों ने उसे (देश से) इस स्थिति में निकाल दिया था कि वह दो में से एक था । जब वे दोनों गुफा में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि दुःखी न हो, निस्सन्देह अल्लाह हमारे साथ है । अतः अल्लाह ने उस पर अपनी शांति अवतरित की और ऐसी सेनाओं से उसकी सहायता की जिनको तुम ने कभी नहीं देखा । और उसने उन लोगों की बात नीची कर दिखायी जिन्होंने इनकार किया था । और अल्लाह ही की बात सर्वोपरि होती है । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील वाला है । 40।

(तुम) हल्के भी और भारी भी निकल खड़े हो और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करो । यदि तुम ज्ञान रखते हो तो यही तुम्हारे लिए उत्तम है । 41।

यदि दूरी कम होती और यात्रा आसान होती तो वे अवश्य तेरे पीछे चलते । परन्तु कठिनाइयाँ झेलना उन के लिए बहुत दूर (की बात) है । वे अवश्य अल्लाह की सौगंध खाएँगे कि यदि हमें सामर्थ्य होता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते । वे अपनी ही जानों को नष्ट कर रहे हैं । और अल्लाह जानता है कि निस्सन्देह ये झूठे लोग हैं । 42। (सूरा ٩)

अल्लाह तुझे माफ़ कर । तूने उन्हें आज्ञा ही क्यों दी ? यहाँ तक कि उन लोगों का तुझे भली-भाँति पता लग जाता जो सच

إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَخْرُجْ إِنَّ اللَّهَ
مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَآيَدَهُ
بِحُجُودِ لَمْ تَرُوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ
كَفَرُوا السُّفْلَى وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ
الْعَلِيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ①

إِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفَسِكُمْ فِي سَيِّلِ اللَّهِ
ذِلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

لَوْكَانَ عَرَضَ أَقْرِبِيَا وَسَفَرَ أَقْاصِدًا
لَا تَبْغُوكَ وَلَكِنْ بَعْدَتْ عَيْهِمْ
الشَّفَةُ وَسَيَخْلُقُونَ بِاللَّهِ لَوْا سَطْعَنَا
لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يَهْمِلُكُونَ أَنْفُسَهُمْ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ②

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَا ذَنَثَ لَهُمْ حَتَّى
يَسْبِئَنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمُ

कहते थे और तू झूठों को भी पहचान लेता। 143।

जो लोग अल्लाह और परकाल के दिन पर ईमान लाते हैं, वे तुझ से अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करने से छूट नहीं माँगते। और अल्लाह मुत्कियों को खूब जानता है। 144।

केवल वही लोग तुझ से छूट माँगते हैं जो अल्लाह और परकाल के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शंका में घिरे हैं और वे अपनी शंका के कारण असमंजस में पड़े हुए हैं। 145।

और यदि उनका (जिहाद के लिए) निकलने का इरादा होता तो वे अवश्य उसकी तैयारी भी करते। परन्तु अल्लाह ने पसंद ही नहीं किया कि वे (इस विशेष उद्देश्य के लिए) निकल खड़े हों। और उसने उन्हें (वहीं) पड़ा रहने दिया। और (उन्हें) कहा गया कि बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो। 146।

यदि वे तुम में सम्मिलित होकर (जिहाद के लिए) निकलते तो अव्यवस्था फैलाने के सिवा तुम्हें किसी चीज़ में न बढ़ाते। और तुम्हारे लिए उपद्रव की कामना करते हुए तुम्हारे बीच तेज़ तेज़ सवारियाँ दौड़ाते। जबकि तुम्हारे बीच उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनने वाले भी हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को खूब जानता है। 147।

निस्सन्देह पहले भी वे उपद्रव चाहते थे और उन्होंने तेरे सामने मामले उलट-

الْكُنْدِيرُونَ ⑤

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا إِنْ مَا لَهُ
وَأَنفُسِهِمْ ۖ وَاللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمُسْتَقِيمِ ⑥

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَإِنْ تَأْبَثْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي
رَيْبٍ مُّهْمَدٍ يَرَدَّدُونَ ⑦

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَا عَدُوَّ اللَّهِ عَذَّةٌ
وَلِكُنْ كَرِهَ اللَّهُ أَنْ يُعَانِهِمْ فَتَبَطَّهُمْ
وَقَلِيلٌ أَفْعَدُوا مَعَ الْقَعْدِينَ ⑧

لَوْ خَرَجُوا فِي كُمْ مَازَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَلَا أُوْصَعُوا خَلَلَكُمْ يَبْغُونَ كُمْ
الْفِتْنَةَ وَفِي كُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ
عَلَيْهِ بِالظَّالِمِينَ ⑨

لَقَدِ ابْتَغَوُ الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلٍ وَقَلَبُوا إِلَكَ

पुलट कर प्रस्तुत किए । यहाँ तक कि सत्य आ गया और अल्लाह का निर्णय प्रकट हो गया जबकि वे (उसे) बहुत नापसंद कर रहे थे । 148।

और उन में वह भी है जो कहता है मुझे छूट दे दे और मुझे परीक्षा में न डाल । सावधान ! वे तो परीक्षा में पड़ चुके हैं । और निस्सन्देह नरक काफिरों को प्रत्येक ओर से घेर लेने वाला है । 149।

यदि तुझे कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है । और यदि तुझ पर कोई विपत्ति आ पड़े तो कहते हैं कि हम तो अपना मामला पहले ही (अपने हाथ में) ले बैठे थे । और वे (खुशी से) इठलाते हुए पीठ फेर कर चले जाते हैं । 150।

तू (उनसे) कह दे कि हमें तो कोई विपत्ति नहीं पहुँचेगी सिवाय उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख रखा है । वही हमारा मालिक है । अतएव चाहिए कि अल्लाह पर ही मोमिन भरोसा करें । 151।

तू कह दे कि क्या तुम हमारे लिए दो अच्छी बातों में से एक के सिवा भी किसी और की आशा रख सकते हो । जबकि हम तुम्हारे लिए इस प्रतीक्षा में हैं कि अल्लाह स्वयं अपनी ओर से या फिर हमारे हाथों से तुम पर अज्ञाब भेजे । अतः तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी निश्चित रूप से तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाले हैं । 152।

الْأَمْوَارِ حَتَّى جَاءَ الْحُقُوقُ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كُفَّارٌ هُوْنَ ⑩

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ إِنَّنِي وَلَا تَقْبِقُ^١
آلَافِ الْفِتْنَةِ سَقَطُوا^٢ وَإِنَّ جَهَنَّمَ
لَمْ يُحِيطَ بِالْكُفَّارِينَ ⑩

إِنْ تُصْبِكَ حَسَنَةً تَسْوِهُمْ^٣ وَإِنْ
تُصْبِكَ مُصِيْبَةً يَقُولُوا قَدْ أَخْذَنَا آمْرَنَا
مِنْ قَبْلٍ وَيَسْوَلُونَهُمْ فَرِحُونَ ⑩

قُلْ لَنْ يُصِيبُنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا^٤
هُوَ مَوْلَانَا^٥ وَعَلَى اللَّهِ فَيَسِّرْكُلِ
الْمُؤْمِنُونَ ⑩

قُلْ هُلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا أَخْدَى
الْحُسْنَيْنِ^٦ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ
يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ
بِأَيْدِيهِنَا^٧ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ
مُتَرَبَّصُونَ ⑩

तू कह दे कि चाहे तुम इच्छापूर्वक खर्च करो या अनिच्छापूर्वक । तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा । निस्सन्देह तुम दुराचारी लोग हो । १५३।

और उन के धन को स्वीकार किये जाने से उन्हें किसी चीज़ ने वंचित नहीं किया सिवाय इसके कि वे अल्लाह और उसके रसूल का इनकार कर बैठे थे । और इसी प्रकार नमाज़ के निकट अत्यन्त आलस्य के साथ आते थे और अत्यन्त घृणा भाव अनुभव करते हुए (अल्लाह के लिए) खर्च करते थे । १५४।

अतः उनके धन और उनकी संतान तेरे लिए कोई आर्कषण उत्पन्न न करें । निस्सन्देह अल्लाह की यही इच्छा है कि उनको उन्हीं के द्वारा इस संसार के जीवन ही में अज्ञाब दे । और उनके प्राण ऐसी अवस्था में निकलें कि वे काफिर हों । १५५। और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं कि निस्सन्देह वे तुम्हीं में से हैं । हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं । परन्तु वे कायर लोग हैं । १५६।

यदि वे कोई शरणस्थल या गुफा अथवा कोई छिपने का स्थान पाएँ तो वे अवश्य उसकी ओर इस प्रकार मुड़कर दौड़ेंगे कि तेज़ी से झपट रहे होंगे । १५७।

और उनमें से ऐसे भी हैं जो तुम्ह पर दान के बारे में आरोप लगाते हैं । यदि उन (दान समूह) में से कुछ उन्हें दे दिया जाए तो खुश हो जाते हैं । और यदि उन्हें उन में से न दिया जाए तो वे तुरन्त रुठ जाते हैं । १५८।

قُلْ أَنِفِقُوا طُوعًا أَوْ كَرْهًا لَّنْ يُسْتَقْبَلَ مِثْكُمْ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَسِيقِينَ ⑥

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتْهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كُرْهُونَ ⑦

فَلَا تَعْجِبْكَ أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يَرِيدُ اللَّهُ لِيَعْذِبَهُمْ بِمَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقُ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كُفَّارُونَ ⑧

وَيَخْلُفُونَ بِإِلَهِ إِنَّهُمْ لَمْ يُنْكِمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ⑨

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرِبٍ أَوْ مَدْخَلًا لَّوْلَوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ⑩

وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أَعْطُوهُمْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوهُمْ مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ⑪

और काश वे उस पर संतुष्ट हो जाते जो अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें प्रदान किया । और (वे) कहते हैं कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है (और) अल्लाह अवश्य हमें अपनी कृपा से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा और उसका रसूल भी । निस्सन्देह हम अल्लाह ही की ओर हार्दिक इच्छा से आकृष्ट हैं । १५९।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا أَتَاهُمُ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسِبَنَا اللَّهُ سَيِّدُنَا
اللَّهُ مِنْ فَصِيلَةٍ وَرَسُولُهُ إِلَى اللَّهِ
رَغِبُونَ ﴿١٥٩﴾

(रुकू ۷/۳)

दान (के रूप में प्राप्त धन) तो केवल अभावग्रस्तों और दीन दुःखियों तथा उन (दान) की व्यवस्था करने वालों और जिन की दिलजोई की जा रही हो और दासों को मुक्त कराने और चट्ठी में दबे हुए लोगों तथा अल्लाह के मार्ग में साधारणतया खर्च करने वालों एवं यात्रियों के लिए हैं । यह अल्लाह की ओर से एक कर्तव्य है और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । १६०।

और उन में से ऐसे लोग भी हैं जो नबी को दुःख पहुँचाते हैं और कहते हैं यह तो कान ही कान है । तू कह दे, हाँ वह सिर से पाँव तक कान तुम्हारी भलाई के लिए है । वह अल्लाह पर ईमान लाता है और मेमिनों की मानता है । और तुम में से जो ईमान लाए हैं उनके लिए कृपा (स्वरूप) है । और वे लोग जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उनके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । १६१।

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ
وَالْعُمَلَيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤْلَفَةُ قُلُوبُهُمْ وَفِي
الرِّقَابِ وَالْعُرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَابْنِ السَّيِّدِ فَرِيقَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
عَلِيهِ حَكِيمٌ ﴿١٦٠﴾

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذَنُونَ اللَّهُ
هُوَ أَذْنٌ ۝ قُلْ أَذْنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً
لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
رَسُولُ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٦١﴾

वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें संतुष्ट करें हालाँकि यदि वे मेमिन थे तो अल्लाह और उसके रसूल इस बात के अधिक हकदार हैं कि वे उन्हें संतुष्ट करते । 162।

क्या उन्हें जानकारी नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल से शत्रुता करता है तो उसके लिए नरक की आग है जिसमें वह बहुत लम्बे समय तक रहने वाला है । वह बहुत बड़ी रुसवाई है । 163।

मुनाफ़िक डरते हैं कि उनके विरुद्ध कोई सूरः अवतरित न कर दी जाए जो उनको उसकी जानकारी दे दे जो उनके दिलों में है । तू कह दे कि (चाहे) खिल्ली उड़ाते रहो । जिसका तुम्हें डर है, अल्लाह उसे अवश्य प्रकट करके रहेगा । 164।

और यदि तू उनसे पूछे तो अवश्य कहेंगे हम तो केवल गप-शप में व्यस्त थे और खेलें खेल रहे थे । तू पूछ, क्या अल्लाह और उसके चिह्नों और उसके रसूल से तुम हँसी ठट्ठा कर रहे थे ? । 165।

कोई बहाना न बनाओ । निस्सन्देह तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो चुके हो । यदि हम तुम में से किसी एक गिरोह को क्षमा कर दें तो किसी दूसरे गिरोह को अज्ञाब भी दे सकते हैं । इस कारण कि वे अवश्य अपराधी हैं । 166। (रुकू 84)

मुनाफ़िक पुरुष और मुनाफ़िक स्त्रियाँ एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं । वे बुरी बातों का आदेश देते हैं और अच्छी बातों से रोकते हैं । और अपनी

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لِمَا لَمْ يُرْضُوْكُمْ وَاللَّهُ
وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضُوْهُ إِنْ كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ⑩

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدُ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا
ذَلِكَ الْخَرْقُ الْعَظِيمُ

يَحْذَرُ الْمُنْفِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُورَةُ شَتِّيْهِمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ
إِسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ⑪

وَلَيْسَ سَائِهِمْ لِيَقُولُوا إِنَّمَا كُنَّا
نَحْوَصُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَأَلِيهِ
وَرَسُولُهُ كُنُّمْ تَشَهِّدُونَ ⑫

لَا تَعْتَدُرُوا قَدْ كَفَرُتُمْ بَعْدَ
إِيمَانِكُمْ إِنْ لَعْفٌ عَنْ طَايِفَةٍ
مِنْكُمْ نَعِذُّبْ طَايِفَةً بِإِنْهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ⑬

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَتْ بَعْضُهُمْ مِنْ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنْ

मुट्ठियाँ (अल्लाह के मार्ग में खर्च करने से) बन्द रखते हैं। वे अल्लाह को भूल गए तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निस्सन्देह मुनाफ़िक ही हैं जो दुराचारी लोग हैं। 167।

अल्लाह ने मुनाफ़िक पुरुषों और मुनाफ़िक स्त्रियों और काफ़िरों से नरक की आग का वायदा किया है। वे लम्बे समय तक इस में (पड़े) रहने वाले हैं। यह उनके लिए पर्याप्त होगा। और अल्लाह ने उन पर लान्त डाली है और उनके लिए एक ठहर जाने वाला अज्ञाब (निश्चित) है। 168।

उन लोगों की भाँति जो तुम से पहले थे। वे शक्ति में तुम से अधिक और धन एवं संतान में बढ़ कर थे। उन्होंने अपने भाग्य से जितना लाभ उठाना था उठा लिया। तुम भी अपने भाग्य से लाभ उठा चुके हो। जिस प्रकार उन लोगों ने जो तुमसे पहले थे अपने भाग्य से लाभ उठाया। और तुम भी व्यर्थ की बातों में तल्लीन हो जैसे वे व्यर्थ की बातों में तल्लीन रहे। यहीं वे लोग हैं जिनके कर्म इहलोक में भी और परलोक में भी नष्ट हो गए। और यहीं वे लोग हैं जो वास्तव में घाटा पाने वाले हैं। 169।

क्या उनके पास उन लोगों का समाचार नहीं आया जो उनसे पहले थे। (अर्थात्) नूह की जाति का और आद एवं समूद की (जाति) का तथा इन्नाहीम की जाति और मद्यन वालों

الْمَعْرُوفُ وَيَقِنُصُونَ أَيْدِيهِمْ لَا نَسَا
اللَّهُ فَلَسِيَهُمْ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمْ
الْفَسِقُونَ ⑯

وَعَدَ اللَّهُ الْمُتَفَقِّيْنَ وَالْمُنْفِقِتِ وَالْكُفَّارَ
نَارَ جَهَنَّمَ حَلِيْدِيْنَ قِبَهَا لَهِ حَسْبُهُمْ
وَلَعْنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ⑯

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَسْدَ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَأَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخَصْصُمْ كَالَّذِيْ خَاصُوا أَوْلَيْكَ
جِئْتُ أَعْمَالَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَأَوْلَيْكَ هُمُ الْحَسِرُونَ ⑯

الْمُرْيَا تِهْمَنَبَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قُومٍ
نُوحٌ وَعَادٍ وَثَمُودٍ وَقَوْمٌ ابْرَاهِيمَ
وَأَصْحَبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَتِ أَتَهُمْ

का और उन बस्तियों का जो उलट-पुलट हो गई। उनके पास भी उनके रसूल खुले-खुले निशान ले कर आए। अतः अल्लाह तो ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करता, परन्तु वे स्वयं ही अपनी जानों पर अत्याचार किया करते थे। 170।

मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ एक दूसरे के मित्र हैं। वे अच्छी बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं। और नमाज़ को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। तथा अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। यही हैं जिन पर अल्लाह अवश्य कृपा करेगा। निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 171।

अल्लाह ने मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों से ऐसे स्वर्गों का वायदा किया है जिनके दामन में नहरें बहती होंगी। वे उनमें सदा रहने वाले हैं। इसी प्रकार बहुत पवित्र निवास स्थानों का भी जो सदा रहने वाले स्वर्गों में स्थित होंगे। तथापि अल्लाह की प्रसन्नता सब से बढ़ कर है। यही बहुत बड़ी सफलता है। 172।

(रुक् ٩)
१५)

हे नबी ! काफिरों एवं मुनाफिकों से जिहाद कर और उन पर सख्ती कर। और उनका ठिकाना नरक है और क्या ही बुरा ठिकाना है। 173।

رَسُّلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ^{الله}
لِيَظْلِمُهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفَسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ①

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلَاءُ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَا
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ
الزَّكُوةَ وَيَطْبِعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَئِكَ سَيِّدُ حَمْمَهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ②

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا
وَمَسِكَنٌ طِيْبَةٌ فِيْ جَنَّتٍ عَذْنٍ
وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ③

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنُ جَاهَدُوا لِكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِينَ
وَأَغْلَظُ عَلَيْهِمْ ۝ وَمَا أُولَئِكُمْ جَهَنَّمَ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ④

वे अल्लाह की कसमें खाते हैं (कि) उन्होंने (कुछ) नहीं कहा। हालाँकि वे निश्चित रूप से कुफ्र का कलिमा (इन्कारोक्ति) कह चुके हैं जबकि वे इस्लाम स्वीकार करने के बाद काफिर हो गए। और वे ऐसे दृढ़ संकल्प रखते थे जिन्हें वे प्राप्त न कर सके। और उन्होंने (मोमिनों से) केवल इस कारण शत्रुता की कि अल्लाह और उसके रसूल ने उनको अपनी अनुकंपा से मालामाल कर दिया। अतः यदि वे प्रायश्चित कर लें तो उनके लिए अच्छा होगा। हाँ यदि वे लौट जाएँ तो अल्लाह उन्हें इहलोक और परलोक में पीड़ाजनक अज्ञाब देगा। और उनके लिए सारी धरती में न कोई मित्र होगा और न कोई सहायक। 174।

और उन्हीं में से ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से प्रण किया था कि यदि वह हमें अपनी अनुकंपा से कुछ प्रदान करे तो हम अवश्य दान देंगे और हम अवश्य नेक लोगों में से हो जाएँगे। 175।

अतः जब उसने अपनी अनुकंपा से उन्हें प्रदान किया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और वे विमुख होकर (अपनी प्रतिज्ञा से) पीछे हट गये। 176।

अतः परिणामस्वरूप अल्लाह ने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटता डाल दी जब वे उस से मिलेंगे। क्योंकि उन्होंने अल्लाह से वचन-भंग किया और वे झूठ बोलते थे। 177।

يَخْلُفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَاتَلُوا
كَلِمَةَ الْكُفَّارِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ
وَهُمْ مُوَابِينَ مَا لَمْ يَأْتُوا وَمَا نَقْمَدُ أَلَّا
أَنْ أَغْنِنَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ
فَإِنْ يَئُوبُوا إِلَيْكُمْ خَيْرٌ أَلَّهُمْ وَإِنْ يَتُوَلُوا
يَعْذِبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا
وَالآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا نَصِيرٌ ⑦

وَمِنْهُمْ مَنْ: عَاهَدَ اللَّهَ لِيَنْ: أَشَاءَ مِنْ
فَضْلِهِ لَنَصْدِقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنْ
الصَّالِحِينَ ⑦

فَلَمَّا آتَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخْلُوَاهُمْ وَتَوَلُوا
وَهُمْ مُعْرِضُونَ ⑦

فَأَعْنَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمٍ
يُلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهُ مَا وَعَدُوهُ
وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ⑦

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उनके रहस्यों और उनके गुप्त परामर्शों को जानता है। और अल्लाह समस्त अप्रत्यक्ष (विषयों) का बहुत अधिक ज्ञान रखता है। 178।

वे लोग जो मोमिनों में से हार्दिक रुचि से नेकी करने वालों पर दान के विषय में आरोप लगाते हैं और उन लोगों पर भी जो अपने परिश्रम के अतिरिक्त (अपने पास) कुछ नहीं पाते। अतः वे उनसे उपहास करते हैं। अल्लाह उनके उपहास का उत्तर देगा और उनके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है। 179।

तू उनके लिए क्षमायाचना कर अथवा न कर। यदि तू उनके लिए सत्तर बार भी क्षमायाचना करे तब भी अल्लाह कदापि उन्हें क्षमा नहीं करेगा। क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया। और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत प्रदान नहीं करता। 180।

(रुकू 10/16)

पीछे छोड़ दिए जाने वाले अल्लाह के रसूल के विरुद्ध अपने बैठे रहने पर प्रसन्न हो रहे हैं। और उन्होंने नापसंद किया कि अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपने जीवन के साथ जिहाद करें। और वे कहते थे कि तेज़ गर्मी में यात्रा पर न निकलो। तू कह दे कि नरक की अग्नि जलन की दृष्टि से अधिक तेज़ है। काश ! वे समझ सकते। 181।

الَّمَّا يَعْلَمُوَا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجُونِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغَيْوَبِ۝

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَوْعِينَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ
لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ
مِنْهُمْ ۖ سَخْرَةُ اللَّهِ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

إِسْتَغْفِرَلَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرَلَهُمْ ۖ إِنَّ
تَسْتَغْفِرَلَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ
اللَّهُ لَهُمْ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَنْهَا قَوْمٌ
الْفَسِيقِينَ ۝

فَرِحَ الْمُخْلَفُونَ بِمَقْعِدِهِمْ خَلْفَ
رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَاتَلُوا
لَا شَفِرُوا فِي الْحَرِّ ۖ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُ
حَرًّا ۖ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

अतः जो वे कमाई किया करते थे उसके प्रतिफल स्वरूप चाहिए कि वे थोड़ा हँसें और अधिक रोयें 182।

अतः यदि अल्लाह तुझे उनमें से किसी गिरोह की ओर दोबारा ले जाए और वे तुझ से (साथ) निकलने की आज्ञा माँगे, तो तू उन्हें कह दे कि कदापि तुम भविष्य में मेरे साथ (जिहाद के लिए) नहीं निकलोगे और कदापि मेरे साथ होकर शत्रु से युद्ध नहीं करोगे । निस्सन्देह तुम पहली बार (घर) बैठे रहने पर संतुष्ट हो गए थे । अतः अब पीछे रहने वालों के साथ ही बैठे रहो 183।

और तू उन में से किसी मरने वाले की कभी (जनाजः की) नमाज न पढ़ और उसकी कङ्ग पर (दुआ के लिए) कभी खड़ा न हो । निस्सन्देह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार कर दिया है और वे इस दशा में मरे कि वे दुराचारी थे 184।

और उनके धन और उनकी संतान तेरे लिए कोई आर्कषण उत्पन्न न करें । अल्लाह केवल यह चाहता है कि उन ही के द्वारा उन्हें इस संसार में ही अज्ञाब दे । और उनकी जानें इस दशा में निकलें कि वे काफिर हों 185।

और जब भी कोई सूरः उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान ले आओ और उसके रसूल के साथ सम्मिलित होकर जिहाद करो तो उन में से धनवान तुझ

فَلِيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا
جَرَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ④

فَإِنْ رَجَعْتَ إِلَى طَاغِيَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْأَذْنُوكَ لِلْخَرْوَجِ فَقُلْ لَنْ
تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَكُنْ تَقَاتِلُوا مَعِيَ
عَدُوًا إِنَّكُمْ رَضِينَمِنْ قَعْدَوْدَأَوْلَ
مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَلِفِينَ ⑤

وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّا تَأْبِدًا
وَلَا تَقْعُدْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللهِ
وَرَسُولِهِ وَمَا تُؤْتُوا وَهُمْ فِسْقُونَ ⑥

وَلَا تَغْبِيَكَ أَمْوَالَهُمْ وَأَلَادَهُمْ إِنَّمَا
يَرِيدُ اللَّهُ أَنْ يَعِذَّبَهُمْ بِمَا فِي الدُّنْيَا
وَتَرْهِقَ أَنفُسَهُمْ وَهُمْ كَفَرُونَ ⑦

وَإِذَا أَنْزَلْتَ سُورَةً أَنْ أَمْتُوا بِاللهِ
وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذِنْكَ أَوْلَى

से छूट चाहते हैं। और कहते हैं हमें छोड़, ताकि हम बैठे रहने वालों के साथ हो जाएँ। 186।

वे इस बात पर संतुष्ट हो गए हैं कि वे पीछे बैठे रह जाने वाली स्त्रियों के साथ हो जाएँ। और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है। अतः वे समझ नहीं सकते। 187।

परन्तु रसूल और वे लोग जो उसके साथ ईमान लाए, वे अपने धन और जीवन के साथ जिहाद करते हैं। और यही हैं जिनके लिए समस्त भलाइयाँ (निश्चित) हैं और ये ही हैं जो सफल होने वाले हैं। 188।

अल्लाह ने उनके लिए ऐसे स्वर्ग तैयार कर रखे हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं। वे सदा उनमें रहने वाले हैं। यह बहुत बड़ी सफलता है। 189।

(रुकू ۱۱)

और मरम्भमि निवासियों में से भी बहाने करने वाले आए ताकि उन्हें (पीछे रहने की) आज्ञा दी जाए। और (इस प्रकार) वे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से ज्ञूठ बोला, वे पीछे बैठे रहे। उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया अवश्य पीड़ाजनक अज्ञाब पहुँचेगा। 190।

न दुर्बलों पर आपत्ति है और न रोगियों पर और न उन लोगों पर जो (अपने पास) खर्च करने के लिए कुछ नहीं पाते। बशर्ते कि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति निष्ठावान हों। उपकार

الْطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُونَ مَعَ
الْقَعِدِينَ ⑩

رَضُوا بِأَيْمَانِهِ كَوْنُوا مَعَ الْخَوَالِفِ
وَطَبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْهَمُونَ ⑪

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
جَهَدُهُمْ وَآمَنُوا بِهِمْ وَآتَنَاهُمْ ۖ وَأُولَئِكَ
لَهُمُ الْحَيْرَةُ ۝ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ⑫

أَعَدَ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا ۝ ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ⑬

وَجَاءَ الْمُعَذَّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ
لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝
سَيِّئِصِبْ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ
الْأَيْمَرُ ⑭

لَيْسَ عَلَى الصُّفَّاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضِى
وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْتَقُونَ
حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ مَا

करने वालों पर पकड़ का कोई औचित्य नहीं। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 191।

और न उन लोगों पर कोई आपत्ति है कि जब वे तेरे पास आते हैं ताकि तू उन्हें (जिहाद के लिए) किसी सवारी पर बिठा ले। तो तू उन्हें उत्तर देता है मैं तो कुछ नहीं पाता जिस पर तुम्हें सवार करा सकूँ। इस पर वे इस प्रकार वापस होते हैं कि उनकी आँखें इस दुःख में आँसू बहा रही होती हैं कि वे कुछ नहीं रखते जिसे वे (अल्लाह के मार्ग में) खर्च कर सकें। 192।

पकड़ का औचित्य तो केवल उन लोगों के विरुद्ध है जो तुझ से छूट माँगते हैं हालाँकि वे धनवान हैं। वे इस बात पर संतुष्ट हो गए कि वे पीछे बैठे रह जाने वाली स्त्रियों के साथ हो जाएँ। और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी। अतः वे कोई ज्ञान नहीं रखते। 193।

عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ⑩

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوكَ لَتَحْمِلُهُمْ
قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَخْمَلُكُمْ عَلَيْهِ
تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ
حَزَنًاً أَلَا يَجِدُونَا مَا يُشْفَقُونَ ⑪

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَعْيُنَاءٌ رَّضُوا بِآنْ يَكُونُوا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑫

जब तुम उनकी ओर वापस आओगे तो वे तुम से क्षमा याचना करेंगे । तू कह दे कोई बहाना न करो । हम कदापि तुम पर भरोसा नहीं करेंगे । अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात से अवगत करा दिया है । और अल्लाह निस्सन्देह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है, इसी प्रकार उसका रसूल भी। फिर (ऐसा होगा कि) तुम अदृश्य एवं दृश्य का ज्ञान रखने वाले की ओर लौटाए जाओगे । फिर वह तुम्हें उसकी सूचना देगा जो तुम किया करते थे । 194। वे निस्सन्देह तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएँगे जब तुम उनकी ओर लौटोगे ताकि तुम उन्हें छोड़ दो । अतः (अवश्य) उन्हें छोड़ दो । वे निश्चित रूप से अपवित्र हैं । और जो वे अर्जित करते थे उसके प्रतिफल स्वरूप उनका ठिकाना नरक है । 195।

वे तुम्हारे सामने कसमें खाएँगे ताकि तुम उन से राजी हो जाओ । अतः यदि तुम उन से राजी भी हो जाओ तो भी अल्लाह दुराचारी लोगों से कदापि राजी नहीं होता । 196।

मरम्भूमि निवासी इनकार करने एवं कपटता करने में सबसे अधिक बढ़े हुए हैं । और अधिक झुकाव (इस ओर) रखते हैं कि जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल पर अवतरित किया है उसकी सीमाओं को न पहचानें । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 197।

يَعْتَذِرُونَ إِنْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ
إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا إِنَّ نُورَ مَنْ لَكُمْ
قَدْبَانَ اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرِيَ اللَّهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ لَمَّا تَرَدُونَ إِلَى عِلْمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيَنْسِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑩

سَيَخْلُفُونَ يَأْلُو لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ
إِلَيْهِمْ لَتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا
عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رُجُسٌ وَمَا لَوْيَهُمْ
جَهَنَّمُ جَرَاءٌ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑪

يَخْلُفُونَ لَكُمْ لَتُرَضُوا عَنْهُمْ فَإِنْ
تُرَضُوا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضِي عَنِ
الْقَوْمِ الْفَسِيقِينَ ⑫

أَلَا أَعْرَابٌ أَشَدُ كُفُرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَارٌ
أَلَا يَعْلَمُوا حَدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى
رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑬

और मरुभूमि निवासियों में से ऐसे भी हैं कि जो भी वे (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते हैं उसे बोझ समझते हैं। और तुम पर समय की मारों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समय की मारों तो उन्हीं पर पड़ने वाली हैं। और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 198।

और (इन) मरुभूमि निवासियों में से ऐसे भी हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाते हैं। और जो कुछ अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं उसे अल्लाह के सान्निध्य प्राप्ति का उपाय और रसूल की दुआएँ लेने का एक माध्यम समझते हैं। सुनो ! कि निस्सन्देह यह उन के लिए सान्निध्य प्राप्ति का उपाय ही है।

अल्लाह अवश्य उन्हें अपनी करणा में प्रविष्ट करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 199। (रुकू 12)

और मुहाजिरों और अन्सार में से आगे निकल जाने वाले प्रथम श्रेणी के तथा वे लोग जिन्होंने अच्छे कर्मों के साथ उनका अनुसरण किया। अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया और वे उस से प्रसन्न हो गए और उसने उनके लिए ऐसे स्वर्ग तैयार किए हैं जिन के दामन में नहरें बहती हैं। वे सदा उन में रहने वाले हैं। यह बहुत बड़ी सफलता है। 200।

और तुम्हरे इर्द-गिर्द के मरुभूमि निवासियों में से मुनाफिक भी हैं और इसी प्रकार मदीना में बसने वालों में से

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يَفِقَ
مَعْرِمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَابِرَ
عَلَيْهِمْ دَاءِرَةُ السَّوْءَ^١ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلَيْهِمْ^٢

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَئُونُ مِنْ إِلَلَهٍ وَإِلَيْهِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يَفِقَ قُرْبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ^٣ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ
لَّهُمْ^٤ سَيِّدُ خَلْمَمَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ^٥ إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ^٦

وَالشِّقُونُ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ
وَالْأَصْارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ
رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضَوْا عَنْهُ وَأَعْدَ
لَهُمْ جَهَنَّمُ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ
فِيهَا آكِدًا^٧ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ^٨

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ
مُنْقِطُونَ^٩ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِيْنَةِ شَرَدُوا^{١٠}

भी हैं। वे कपटता पर जम चुके हैं। तू उन्हें नहीं जानता (परन्तु) हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दो बार अज्ञाब देंगे, फिर वे बड़े अज्ञाब की ओर लौटा दिए जाएँगे। 101।

और कुछ दूसरे हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया। उन्होंने अच्छे कर्मों के साथ दूसरे बुरे कर्म मिला जुला दिए। संभव है कि अल्लाह उन पर प्रायशिचित स्वीकार करते हुए जुके। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 102।

तू उनके धन में से दान स्वीकार कर लिया कर। इसके द्वारा तू उन्हें पवित्र करेगा एवं उनकी शुद्धि करेगा। और उनके लिए दुआ किया कर। निस्सन्देह तेरी दुआ उनके लिए शांति का कारण होगी। और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 103।

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि बस अल्लाह ही अपने भक्तों का प्रायशिचित स्वीकार करता है। और दान स्वीकार करता है। और अल्लाह ही बहुत प्रायशिचित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 104।

और तू कह दे कि तुम कर्म करते रहो। अतः अल्लाह तुम्हारे कर्म को देख रहा है और उसका रसूल भी और सब मोमिन भी (देख रहे हैं)। और तुम (अन्ततः) अदृश्य और दृश्य का ज्ञान रखने वाले की ओर लौटाए जाओगे फिर वह तुम्हें

عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ طَرَحْ
نَعْلَمُهُمْ سَيْئَاتِهِمْ مَرَّتَيْنِ شَرَّ
يَرَدُونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

وَأَخْرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا
عَمَلًا صَالِحًا وَأَخْرَسِيًّا ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ
يَعْوِبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

خُدُمنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُظْهِرُهُمْ
وَتُرْكَتِيهِمْ بِهَا وَصَلَّى عَلَيْهِمْ ۝ اَنَّ
صَلَوَاتُكَ سَكُنٌ لَّهُمْ ۝ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلَيْهِمْ ۝

الَّمَنْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبِلُ التَّوْبَةَ
عَنِ عَبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ
التَّوَابُ الرَّحِيمُ ۝

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسِيرِيَ اللَّهُ عَمَلَكُنْ
وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۝ وَسَرَدُونَ إِلَى
عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيَسْتَعْكِفُ بِمَا

उससे सूचित करेगा जो तुम किया करते थे ॥105।

और कुछ दूसरे लोग हैं जो अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा में छोड़े गए हैं । चाहे वह उन्हें अज्ञाब दे अथवा उन पर प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए झुक जाए । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥106।

और वे लोग जिन्होंने कष्ट पहुँचाने और कुफ्र फैलाने और मोमिनों के मध्य फूट डालने और ऐसे व्यक्ति को जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले ही से लड़ाई कर रहा है घात लगाने का स्थान उपलब्ध कराने के लिए एक मस्जिद बनाई । वे ज़रूर क़स्में खाएँगे कि हम भलाई के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते थे । जबकि अल्लाह गवाही देता है कि निस्सन्देह वे झूठे हैं ॥107।*

तू उस में कभी खड़ा न हो । निस्सन्देह वह मस्जिद जिसकी नींव पहले दिन ही से तक़वा पर रखी गई हो अधिक हक्कदार है कि तू उसमें (नमाज़ के लिए) खड़ा हो । उस में ऐसे पुरुष हैं जो इच्छा रखते हैं कि वे पवित्र हो जाएँ । और अल्लाह पवित्र होने वालों से प्रेम करता है ॥108।

अतः जिसने अपने भवन की नींव अल्लाह के तक़वा और (उसकी) प्रसन्नता पर रखी हो क्या वह उत्तम है

كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

وَآخِرُونَ مَرْجُونَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا
يَعْذِبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۖ وَاللَّهُ
عَلِيهِ الْحِكْمَةُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مسجِدًا ضَرَارًا وَكُفْرًا
وَتَفْرِيًقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا
لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلِ
وَلِيَخْلُقَنَّ أَنَّ أَرْدُنَا إِلَّا الْحَسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ
يَسْهُدُ إِلَهَمْ لَكَذِبُونَ ۝

لَا تَقْمِدْ فِيهِ أَبَدًا لِمَسجِدِ أَسَسَ عَلَىٰ
الشَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقْوَمْ فِيهِ
فِيهِ رِجَالٌ يَجِدُونَ أَنْ يَسْطَهْرُوا ۖ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمَطْهَرِينَ ۝

أَفَمَنْ أَسَسَ بَيْانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانِ خَيْرِ أُمَّةٍ مِنْ أَسَسَ بَيْانَهُ عَلَىٰ

* मस्जिद-ए-ज़िरार (कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से निर्मित मस्जिद) को गिराने का स्पष्ट रूप से आदेश इस लिए दिया गया है कि वह इस्लाम के विरुद्ध मुश्किलों की गुप्त कार्यवाहियों के लिए एक अड़ा बना हुआ था । अन्यथा मस्जिदों का सम्मान अनिवार्य है ।

अथवा वह जिसने अपने भवन की नींव एक खोखले, धराशायी हो जाने वाले छोर पर रखी हो ? अतः वह उसे नरक की अग्नि में साथ ले गिरेगी । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ॥109॥

उन का भवन जो उन्होंने बनाया है सदा उनके दिलों में शंका उत्पन्न करता रहेगा। सिवाय इसके कि उनके दिल (अल्लाह के भय से) टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और परम विवेकशील है) ॥110॥ (रुक् 13)

निस्सन्देह अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके धन खरीद लिए हैं ताकि इसके बदले में उन्हें स्वर्ग मिले । वे अल्लाह के मार्ग में लड़ाई करते हैं, फिर वे वध करते हैं और वध किए जाते हैं । उसके ज़िम्मे यह पक्का वायदा है जो तौरात और इंजील और कुरआन में (वर्णित) है । और अल्लाह से बढ़ कर कौन अपने वचन को पूरा करने वाला है। अतः तुम अपने उस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने उसके साथ किया है और यही बहुत बड़ी सफलता है ॥111॥

प्रायश्चित करने वाले, उपासना करने वाले, स्तुति करने वाले, (अल्लाह के मार्ग में) यात्रा करने वाले, (अल्लाह के लिए) रुक् करने वाले, सजदः करने वाले, नेक बातों का आदेश देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की सुरक्षा करने

شَفَاقِ حُرْفٍ هَارِفَانُهَا رِبِّهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ ⑩

لَا يَرَأُنَّ بُشِّيَّاتِهِمْ الَّذِي سَوَّا رِبِّيَّةً
فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقْطَعَ قُلُوبُهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمْ الْجَنَّةَ
يَقَاتَلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتَلُونَ
وَيُقْتَلُونَ وَعَدَ اللَّهُ عَلَيْهِ حَقًا فِي التَّورَةِ
وَالْأَنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أُولَئِكُمْ بِعِهْدِهِ
مِنَ اللَّهِ فَإِنَّمَا يُشَرِّبُونَ مِنْ عَيْنِكُمُ الَّذِي
بِإِيمَنِهِمْ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

الثَّالِمُونَ الْعِدُونَ الْحَمِيدُونَ السَّاجِحُونَ
الرَّكِعُونَ الشَّاجِدُونَ الْأُمْرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَالثَّابِهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَفَظُونَ لِعَذَوْدِ اللَّهِ وَبَشِّرُونَ

वाले (सब सच्चे मोमिन हैं) और तू मोमिनों को शुभ-समाचार देदे । ॥112॥

नबी के लिए संभव नहीं और न ही उनके लिए जो ईमान लाए हैं कि वे मुश्किलों के लिए क्षमायाचना करें । चाहे वे (उनके) निकट सम्बन्धी ही क्यों न हों, जबकि उन पर प्रकट हो चुका हो कि वे नरकगामी हैं । ॥113॥

और इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमायाचना करना केवल उस वादा के कारण था जो उसने उस से किया था । अतः जब उस पर यह बात खूब खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विमुख हो गया । निस्सन्देह इब्राहीम बहुत कोमल हृदयी (और) शहनशील था । ॥114॥*

और अल्लाह ऐसा नहीं कि लोगों को हिदायत देने के बाद पश्चाट ठहरा दे । यहाँ तक कि उन पर खूब खोल दिया हो कि वे किस किस चीज़ से पूरी तरह बचें । निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय को खूब जानने वाला है । ॥115॥

निस्सन्देह अल्लाह ही है जिसकी आसमानों और धरती की बादशाही है । वह जीवित करता है और मरता भी है ।

الْمُؤْمِنُونَ ⑩

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ
يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَئِ
قُرْبٍ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ
أَخْبَطُ الْجَحِيمَ ⑪

وَمَا كَانَ اسْتِغْفارًا إِبْرَاهِيمَ لَا يَبْغِي إِلَّا
عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِلَيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ
أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۝ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ
لَا يَوْمَ أَخْلَقَ ⑫

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضْلِلُ قَوْمًا بَعْدَ إِذْهَدْنَاهُمْ
حَتَّىٰ يَبْيَسُ لَهُمْ مَا يَتَقَوَّنُ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُكْلِلُ
شَيْءٍ عَلَيْمٌ ⑬

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝
يَعْلَمُ وَيَعْصِيٌّ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ

* अयत सं. 113-114 किसी नबी अथवा मोमिनों के लिए उचित नहीं है कि वे ऐसे व्यक्ति के लिए दुआ-ए-मगाफिरत (अल्लाह से क्षमाप्रार्थना) करें जो शिर्क की अवस्था में मर गया हो । जहाँतक हज़रत इब्राहीम अलै, के अपने पिता के लिए क्षमाप्रार्थना करने का सम्बन्ध है तो चूँकि उन्होंने अपने पिता को बचन दिया था कि मैं आपके लिए क्षमा प्रार्थना करूँगा । इस कारण कुछ समय तक अल्लाह तआला ने उन्हें अपना बचन पूरा करने का अवसर प्रदान किया । परन्तु जब उन पर प्रकट कर दिया गया कि वह अल्लाह का शत्रु था तो हज़रत इब्राहीम अलै, उस के लिए क्षमा प्रार्थना करने से रुक गए ।

और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई
मित्र और सहायक नहीं । 1116।

निस्सन्देह अल्लाह नबी पर और
मुहाजिरों एवं अन्सार पर प्रायश्चित्त
स्वीकार करते हुए ज्ञुका । जिन्होंने तंगी
के समय उसका अनुसरण किया था ।
संभव था कि इसके बाद उनमें से एक
पक्ष के दिल टेढ़े हो जाते, फिर भी उसने
उनका प्रायश्चित्त स्वीकार किया ।
निस्सन्देह वह उनके लिए बहुत ही
दयालु (और) बार-बार कृपा करने
वाला है । 1117।

और उन तीनों पर भी (अल्लाह
प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए ज्ञुका) जो
पीछे छोड़ दिए गए थे । यहाँ तक कि
जब धरती उन पर विस्तृत होते हुए भी
संकुचित हो गई । और उनकी जानें तंगी
का अनुभव करने लगीं । और उन्होंने
समझ लिया कि अल्लाह (के अज्ञाव) से
(बचने के लिए) उसी की ओर (जाने
के अतिरिक्त) कोई शरणस्थान नहीं ।
फिर वह स्वीकृति देने की ओर प्रवृत्त
होते हुए उन पर ज्ञुक गया ताकि वे
प्रायश्चित्त कर सकें । निस्सन्देह अल्लाह
ही बार-बार प्रायश्चित्त स्वीकार करने
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है । 1118।* (रुकू 14)

٩٦١ ﴿ وَلَا نَصِيرٌ

لَقْدَ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ
وَالْأَصْحَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةٍ الْعَسْرَةِ
مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَرِيْغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ
لَمْ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ يَهْمِرُ بِهِمْ
رَّحِيمٌ ۝

وَعَلَى الْفَلَقَةِ الَّذِينَ حَلَقُوا ۝ حَقِّيْإِذَا
ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحَبَتْ
وَضَاقَتْ عَلَيْهِمُ أَنْفُسُهُمْ وَظَلَمُوا أَنْ لَا
مُلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ۝ لَمَّا تَابَ عَلَيْهِمْ
لَيَتُوْبُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ ۝

* यहाँ उन तीन सहाबा रजि. का वर्णन है जो तबूक युद्ध से पीछे रहे और जब उन से इसका कारण
पूछा गया तो उन्होंने झूठ का सहारा नहीं लिया । अन्यथा कई मुनाफ़िक थे जिन्होंने झूठे बहाने बना
लिए थे । उन को तो कोई सज्जा नहीं दी गई केवल उन तीनों को सामाजिक बहिष्कार की सज्जा
मिली और फिर अल्लाह के आदेश से यह सज्जा माफ़ कर दी गई । →

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्बा धारण करो और सत्यवादियों के साथ हो जाओ । 1119

मदीना वासियों के लिए और उनके इर्द-गिर्द बसने वाले ग्रामीणों के लिए उचित न था कि अल्लाह के रसूल को छोड़ कर पीछे रह जाते । और न ही यह उचित था कि उस के मुकाबले में अपने आप को पसन्द कर लेते । (यह प्राणों का बलिदान आवश्यक था) क्योंकि वास्तविकता यही है कि उन्हें अल्लाह के मार्ग में जो व्यास और कठिनाई और भूख की विपत्ति पहुँचती है और वे ऐसे मार्गों पर चलते हैं जिन पर (उनका) चलना काफिरों को गुस्सा दिलाता है । और वे शत्रु से (युद्ध के समय) जो कुछ प्राप्त करते हैं उसके बदले उनके हक्क में एक नेक-कर्म अवश्य लिख दिया जाता है ।

अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता । 1201

इसी प्रकार वे न कोई छोटा खर्च करते हैं और न कोई बड़ा और न ही किसी घाटी की दूरी लाँघते हैं परन्तु (यह कर्म) उनके हक्क में लिख दिया जाता है । ताकि जो उत्तम कर्म वे किया करते थे अल्लाह उन्हें उनके अनुसार प्रतिफल प्रदान करे । 1211

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ قَوَّا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصِّدِّيقِينَ^(۱۱)

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَحَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغِبُوا بِآنفِسِهِمْ عَنْ تَقْسِيمِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَاءً وَلَا نَصْبٌ وَلَا مَحْمَصَةً فِي سَيِّئِ الْأَعْمَالِ وَلَا يَطْعُونَ مَوْطَأً يَغْيِطُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ شَيْلاً إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ^(۱۲)

وَلَا يَنْفَقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًّا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَعْزِيزُهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ^(۱۳)

←इस प्रसंग में इस आयत से यह भी जात होता है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला के अस्तित्व और क्यामत पर पवक्का विश्वास था, वरना इन तीनों से मुनाफिक अधिक सज्जा के योग्य थे जिन्होंने झूठे बहाने प्रस्तुत किए । परन्तु आप सल्ल. ने उनको कोई सज्जा नहीं दी बल्कि उन की सज्जा का मामला परकाल के दिन पर छोड़ दिया ।

मोमिनों के लिए संभव नहीं कि वे सब के सब इकट्ठे निकल खड़े हों। अतः ऐसा क्यों नहीं होता कि उन के हर समुदाय में से एक गिरोह निकल खड़ा होता कि वह धर्म का ज्ञान प्राप्त करे और जब वे अपनी जाति की ओर वापस लौटें तो उन्हें सर्वकं कर सकें जिससे संभवतः वे (विनाश से) बच जायें। 122।

(रुक् ۱۵)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने उन निकट सम्बन्धियों से भी लड़ो जो काफिरों में से हैं। और चाहिए कि वे तुम्हारे अन्दर दृढ़ता अनुभव करें और जान लो कि अल्लाह मुत्तकियों के साथ है। 123।

और जब भी कोई सूरः उतारी जाती है तो उनमें से कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि तुम में से कौन है जिसे इस (सूरः) ने ईमान में बढ़ा दिया हो। अतएव वे लोग जो ईमान लाए हैं उन्हें तो उस ने ईमान में बढ़ा दिया है। और वे (भविष्य के सम्बन्ध में) शुभ-समाचार प्राप्त करते हैं। 124।

हाँ वे लोग जिनके दिलों में रोग है यह (सूरः) उनकी अपवित्रता में और अपवित्रता की बढ़ोत्तरी कर देती है और वे काफिर होने की दशा में मरते हैं। 125।

क्या वे नहीं देखते कि प्रत्येक वर्ष उनकी एक दो बार परीक्षा ली जाती है। परन्तु फिर भी प्रायश्चित नहीं

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَسْتَهِنُوا كَافِةً
فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَابِقَةً
لَيَسْتَفْقَهُوا فِي الدِّينِ وَلَيُبَدِّرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا
رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَخْدَرُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتَلُوا الَّذِينَ يَلُونُكُمْ
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلَيُجِدُوا فِيْكُمْ غُلْطَةً
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُسْتَقِيمِ

وَإِذَا مَا أَنْزَلْتُ سُورَةً فِيْكُمْ مَنْ يَقُولُ
أَيْكُمْ زَادَهُ هَذِهِ إِيمَانًا ۝ فَآمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا فَرَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ
يُسْتَبَشِّرُونَ

وَآمَّا الَّذِينَ فِيْ قَلُوبِهِمْ مَرْضٌ
فَرَادَتْهُمْ رِجَالٌ رِجْسِهِمْ وَمَائِنَا
وَهُمْ كُفَّارُونَ

أَوْلَئِرُونَ أَنَّهُمْ يُفْسَدُونَ فِيْ كُلِّ عَامٍ
مَرْءَةً أَوْ مَرْءَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ

करते और न ही वे उपदेश ग्रहण
करते हैं । 126।

और जब भी कोई सूरः उतारी जाती है
तो उनमें से कुछ, कुछ दूसरों की ओर
देखते हैं । (मानों संकेतों से कह रहे
हों कि) तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा ।
फिर वे उल्टे लौट जाते हैं । अल्लाह ने
उनके दिलों को उलट दिया है । इस
लिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते
नहीं । 127।

निस्सन्देह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक
रसूल आया । तुम जो कष्ट उठाते हो
उस के लिए बड़ा भारी गुज़रता है
(और) वह तुम्हारे लिए (भलाई का)
अभिलाषी (रहता) है । मोमिनों के लिए
अत्यन्त कृपालु (और) बार-बार दया
करने वाला है । 128।

अतः यदि वे पीठ फेर लें तो कह दे, मेरे
लिए अल्लाह पर्याप्त है । उसके
अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं । उसी
पर मैं भरोसा करता हूँ और वही महान
अर्श का रब्ब है । 129। (रुक् ۱۶)

يَدَكُرُونَ ⑩

وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نُظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى
بَعْضٍ هَلْ يَرَى كُمْرُونَ مِنْ أَحَدٍ شَاءَ
أَنْصَرَ قَوْا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِإِنْهُمْ
قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ⑪

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنفُسِكُمْ
عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عِنْتُمْ حَرِيصٌ
عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ

فَإِنْ تَوَلُّوْا فَقْلُ حَسِيْبِ اللَّهِ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكِّلُتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ⑫

10 – सूरः यूनुस

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 110 आयतें हैं।

सूरः अल-बकरः और सूरः आले इम्रान में अलिफ़ लाम मीम खण्डाक्षर वर्णित हुए हैं। जबकि इस सूरः में मीम के बदले रा आया है। इस प्रकार पिछली अनुवाद शैली को अपनाते हुए यहाँ यह अनुवाद किया जा सकता है कि मैं अल्लाह हूँ, मैं देखता हूँ।

हजरत यूनुस अलै. पर आने वाली विपत्ति इस सूरः का मुख्य विषय है। इस लिए इस सूरः का नाम 'सूरः यूनुस' रखा गया है। इस के आरम्भ में ही अल्लाह तआला ने एक प्रश्न उठाया है कि क्या लोगों के लिए यह बात विस्मयजनक है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर वहइ की है ? इसका उत्तर जो इस सूरः में निहित है, वह यह है कि लोगों के विस्मय का कारण स्वयं उनकी अपनी जानों की गवाही है। क्योंकि वे लोग संसार के कीड़े बन गये हैं। इसलिए अल्लाह तआला उन पर वहइ नहीं उतारता। वास्तव में वे अपने बनाये हुए मापदण्ड के आधार पर यह समझते हैं कि अल्लाह तआला किसी मनुष्य पर वहइ अवतरित नहीं कर सकता।

इसके तुरन्त बाद अल्लाह तआला यह वर्णन करता है कि वह अल्लाह जिस ने समग्र ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया और प्रत्येक विषय में एक उत्तम योजना बनाई, क्या वह इस कार्य को व्यर्थ जाने देगा ? इस योजना का चरम उद्देश्य एक ऐसा सिफारिश करने वाला अर्थात् हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा करना है जो अल्लाह तआला की अनुमति से उसके समक्ष केवल अपने योग्य अनुयायियों की ही सिफारिश नहीं करेंगे अपितु पिछले धर्मानुयायियों में से नेक व्यक्तियों के पक्ष में भी सिफारिश करेंगे।

इसके बाद हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उदाहरण एक सूर्य के रूप में दिया गया है जिसके प्रकाश से संसार में जीवन व्यवस्था उपकृत हो रही है और इस के फलस्वरूप एक पूर्ण-चन्द्रमा ने जन्म लेना है, जो रात्रि के अंधकार में भी उस प्रकाश के किरणों को पृथ्वी तक पहुँचाता रहेगा। यह विषय अत्यन्त विस्मयकर है कि भौतिक जगत में भी चन्द्रमा की ज्योति में कई सज्जियाँ इस वेग से बढ़ती हैं कि उनके बढ़ने की आवाज सुनाई देती है। अतएव ककड़ियों के बारे में वैज्ञानिक कहते हैं कि उनके बढ़ने की वेग के कारण एक आवाज उत्पन्न होती है जिसे मनुष्य सुन सकता है। अतः वही अल्लाह है जिसने दिन को भी जीवन का आधार बनाया और रात को भी जीवन का आधार बनाया है।

सूरः यूनुस में एक ऐसी जाति का वर्णन है जिसे संसार में उस अज्ञाब से पूर्णरूपेण बचा लिया गया जिस की चेतावनी उन्हें दी गई थी। इस सूरः के बाद आने वाली सूरः हूँ में उन जातियों का उल्लेख है जिन्हें इनकार करने के कारण संपूर्ण रूप से तबाह कर दिया गया।

سُورَةُ يُونُسَ مَكِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْسَّمَلَةِ مَا تَهُوَ وَ عَشْرُ آيَاتٍ وَ أَحَدُ عَشَرَ رُكْزَعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं हूँ
देखता हूँ । ये एक तत्त्वज्ञान पूर्ण पुस्तक
की आयतें हैं । 12।

क्या लोगों के लिए विस्मयकर (विषय)
है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति की
ओर (इस आदेश के साथ) वहाँ उतारी
कि लोगों को सतर्क कर । और उन हृषि
लोगों को जो ईमान लाये हैं शुभ-
समाचार दे कि उन का कदम उनके रब्ब
के निकट सच्चाई पर है । काफिरों ने
कहा, निःसन्देह यह तो एक खुला-खुला
जादूगर है । 13।

निःसन्देह तुम्हारा रब्ब अल्लाह है
जिसने आकाशों और धरती की छः
दिनों में सृष्टि की । फिर वह अर्श पर
विराजमान हुआ । वह प्रत्येक कार्य
को योजनाबद्ध रूप से करता है ।
उसकी अनुमति के बिना कोई
सिफारिश करने वाला नहीं । यह है
तुम्हारा रब्ब अल्लाह । अतः उसी की
उपासना करो । क्या तुम उपदेश ग्रहण
नहीं करोगे ? । 14।

उसी की ओर तुम सब को लौटकर
जाना है । यह अल्लाह का सच्चा वादा
है । निश्चित रूप से वह सृष्टि का

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّ رَبَّكَ أَلْيَتِ الْكِتَابَ الْحَكِيمَ ①

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَباً أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ
مِّنْهُمْ أَنَّ أَنْذِرَ النَّاسَ وَبَيْسِرَ النَّذِينَ أَمْنَوْا
أَنَّ لَهُمْ قَدْمٌ صَدِيقٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ قَالَ ۝
الْكُفَّارُونَ إِنَّ هَذَا السِّحْرُ مُبِينٌ ⑤

إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى
عَلَى الْعَرْشِ ۝ يَدِيرُ الْأَمْرَ ۝ مَا مِنْ شَفِيعٍ
لِأَمْرٍ بَعْدِ رَبِّنَمْ ۝ ذُلِّكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ
فَأَعْبُدُوهُ ۝ أَفَلَا تَرَأَوْنَ ⑥

إِنَّهُ مَرْجُعُكُمْ جَمِيعًا ۝ وَعْدُ اللَّهِ حَقٌّ ۝
إِنَّهُ يَبْدُو الْحَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَغْزِيَ

आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है, ताकि जो लोग ईमान लाये और नेक कर्म किये, उन्हें न्यायपूर्वक प्रतिफल प्रदान करे। और जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए खौलता हुआ पानी पेय स्वरूप और पीड़ाजनक अज्ञाब होगा क्योंकि वे इनकार किया करते थे। 15।

वही है जिसने सूर्य को प्रकाश का साधन और चन्द्रमा को ज्योति (विशिष्ट) बनाया और उसके लिए पीड़ाब निश्चित किये ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब सीख लो। अल्लाह ने यह (सब कुछ) नितांत सत्य के साथ पैदा किया है। वह आयतों को ऐसे लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है जो ज्ञान रखते हैं। 16।

निश्चित रूप से रात और दिन के अदलने बदलने में और उसमें जो अल्लाह ने आकाशों और धरती में पैदा किया है तक्ता धारण करने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं। 17।

निश्चित रूप से वे लोग जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते और सांसारिक जीवन पर प्रसन्न हो चुके हैं और उसी पर संतुष्ट हो गये हैं और वे लोग भी जो हमारे चिह्नों से बेपरवाह हैं। 18।

यही वे लोग हैं जो वे कमाते रहे उसके कारण उनका ठिकाना आग है। 19।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ بِالْقُطْطُ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ
وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ①

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ
نُورًا وَقَدَرَ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السَّيْنِينَ
وَالْجَنَابَ ۝ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِيقَةِ
يُفَضِّلُ الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ②

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ الْأَيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ
اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَلِيقُ
بِيَقْوُنَ ③

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقاءَنَا وَرَضُوا
بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَأَطْمَأْنُوا بِهَا وَالَّذِينَ
هُمْ عَنِ ابْيَاتِنَا غَافِلُونَ ④

أُولَئِكَ مَا أُولِمَّ الثَّارِ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ⑤

निश्चित रूप से वे लोग जो ईमान लाये और नेक कर्म किये, उनके ईमान के फलस्वरूप उनका रब्ब उन्हें हिदायत देगा । नेमतों वाले स्वर्गों के बीच उनके आदेशाधीन नहरें बह रही होंगी ॥10॥

वहाँ उनकी घोषणा यह होगी कि हे (हमारे) अल्लाह ! तू पवित्र है । और वहाँ उनका आशीर्वचन सलाम होगा और उनकी अंतिम घोषणा यह होगी कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो समग्र लोकों का रब्ब है ॥11॥

(स्कू 1/6)

और यदि अल्लाह लोगों को उनकी शरारत का बदला उसी प्रकार शीघ्रता पूर्वक दे देता जिस शीघ्रता से वे भलाई चाहते हैं तो उन्हें उनके अंत का निर्णय सुना दिया जाता । अतः जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते हम उनको उनकी उद्दण्डता में भटकता हुआ छोड़ देते हैं ॥12॥

और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचे तो वह अपने करवट के बल (लेटे हुए) अथवा बैठे हुए या खड़े हुए हमें पुकारता है । परन्तु जब हम उससे उसका कष्ट दूर कर देते हैं तो वह यूँ गुज़र जाता है जैसे उसने उस दुःख के लिए जो उसे पहुँचा हो, कभी हमें बुलाया ही न हो । इसी प्रकार सीमा उल्लंघन करने वालों को उनका कर्म सुन्दर करके दिखाया जाता है ॥13॥

إِنَّ الَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
يَهُدِيهِمُ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّتِ التَّعْيِيرِ ⑥

دَعَوْهُمْ قَبْرًا سُبْخَنَكَ اللَّهُمَّ
وَتَحْشِيهِمْ قَبْرًا سَلَمٌ ۝ وَآخِرُ دَعَوْهُمْ
۝ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَلَا يُعْجِلَ اللَّهُ لِلْأَسَاسِ السَّرَّ اسْتَعْجَلَهُمْ
بِالْخَيْرِ لَقَضَى إِلَيْهِمْ أَجَلَهُمْ فَنَذَرَ
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طَغْيَانِهِمْ
يَعْمَلُونَ ⑦

وَإِذَا مَسَ الْأَنْسَانُ الضُّرُّ دَعَانَ إِلَيْجِئِهِ
أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
ضُرَّةً مَرَّ كَانُ لَمْ يَدْعُنَا إِلَى ضُرِّ مَشَّةٍ
كَذَلِكَ زَرِّيْنَ لِلْمُسْرِ فِينَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ⑧

और निश्चित रूप से हमने तुम से पहले कितने ही युगों के लोगों को विनष्ट कर दिया था जब उन्होंने अत्याचार किया, हालाँकि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न ले कर आये और वे ऐसे थे ही नहीं कि ईमान ले आते । इसी प्रकार हम अपराधी लोगों को प्रतिफल दिया करते हैं । 114।

फिर उनके बाद हमने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बना दिया ताकि हम देखें कि तुम कैसा कर्म करते हो । 115।

और वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, जब उनके समक्ष हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे कहते हैं, इसके बदले कोई अन्य कुरआन ले आ अथवा इसे ही परिवर्तित कर दे । तू कह दे कि मुझे अधिकार नहीं कि मैं इसे अपनी ओर से बदल दूँ । मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वहइ किया जाता है । यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो अवश्य एक बड़े दिन के अज्ञाब से मैं डरता हूँ । 116।

तू कह दे, यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हारे समक्ष इसको नहीं पढ़ता और न वह (अल्लाह) तुम को इसकी सूचना देता । अतः इस (नुबुव्वत) से पूर्व भी मैं तुम्हारे बीच एक लम्बी आयु गुजार चुका हूँ, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 117।*

وَلَقَدْ أَهْلَكَنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا
ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبُشِّرَاتِ
وَمَا كَانُوا إِيمَانُهُمْ بِهَا كَذِيلَكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ⑩

لَئِنْ جَعَلْنَاكُمْ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ
بَعْدِهِمْ لِتَنْظَرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ⑪
وَإِذَا شَلَى عَلَيْهِمْ أَيَّاً تَأْتِيَنِي ۝ قَالَ الَّذِينَ
لَا يُرْجَحُونَ لِقَاءَنَا أَئْتُ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا
أَوْ بَيْلَهُ ۝ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبْدِلَهُ مِنْ
تِلْقَائِنَفِسِي ۝ إِنْ أَتَيْتُ أَلَامَائِيْوَحِي
إِنَّمَّا أَخَافُ إِنْ عَصَيْتَ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمِ عَظِيمٍ ⑫

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا كَلَوْهُ عَلَيْكُمْ وَلَا
أَدْرِكُمْ بِهِ ۝ فَقَدْ لَيْسَ فِيْكُمْ عَمَّرَاقِمْ
قَبْلِهِ ۝ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑬

* मुश्रिक लोग हज़रत मुहम्मद सल्ललाहू अलैहि व सल्लम पर आरोप लगाते थे कि आप सल्ल. ने →

अतः उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा अथवा उसकी आयतों को झुठलाया । वास्तविकता यही है कि आपराधी कभी सफल नहीं हुआ करते ॥18।

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जो न उन्हें हानि पहुँचा सकता है और न लाभ पहुँचा सकता है । और वे कहते हैं कि ये (सब) अल्लाह के समक्ष हमारी सिफारिश करने वाले हैं । तू पूछ कि क्या तुम अल्लाह को वह समाचार देते हो जिस (के अस्तित्व) का न उसे आकाशों में और न धरती में कोई ज्ञान है । परिव्रत्र है वह । और जो वे शिर्क करते हैं वह उससे बहुत ऊँचा है ॥19।

और सब लोग एक ही समुदाय थे । फिर उन्होंने मतभेद आरम्भ कर दिया और यदि तेरे रब्ब की ओर से (नियति का) आदेश जारी न हो चुका होता तो जिस में वे मतभेद किया करते थे उनके बीच उसका निर्णय कर दिया जाता ॥20।

और वे कहते हैं, उस पर उसके रब्ब की ओर से क्यों कोई आयत नहीं उतारी जाती ? तू कह दे, निःसन्देह अल्लाह ही का अदृश्य (पर प्रभुत्व) है । अतः प्रतीक्षा करो, निश्चित रूप से

فَمِنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أُوْكَدَ بِإِيمَانِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ⑯

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يُصْرِهُ
وَلَا يُغْنِهُمْ وَيَقُولُونَ هُؤُلَاءِ
شَفَاعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَبْتَعُونَ اللَّهَ بِمَا
لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ
سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشَرِّكُونَ ⑯

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أَمَمَةٌ وَاحِدَةٌ
فَالْخَلَقُوا وَلَوْلَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ
رَبِّكَ لَفِضَى بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑯

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّنْ
رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْعَيْبُ بِلِلَّهِ فَإِنْتَظِرُوا

←अल्लाह पर झूठ बोलते हुए अपनी ओर से कुरआन गढ़ लिया है । आयतांश फ़क़द लबिस्तु फ़ीकुम उमुरन (मैं तुम्हारे बीच एक लम्बी आयु गुज़ार चुका हूँ) में इस आरोप का पूर्णतः खण्डन किया गया है कि वह रसूल जिस को तुम सत्यवादी और विश्वस्त कहा करते थे, उसके नवी होने की घोषणा करने से पूर्व चालीस वर्ष की आयु तक तो उसने कभी किसी के बारे में झूठ नहीं बोला, अब अचानक अल्लाह के बारे में कैसे झूठ बोलने लग गया ?

मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों
में से हूँ। 121। (रुक् ٢)

और जब हम लोगों को किसी ऐसे कष्ट
के पश्चात जो उन्हें पहुँचा हो अनुग्रह
का स्वाद चखाते हैं तो अचानक हमारी
आयतों में छल-कपट करना उनकी रीति
बन जाती है। उन से कह दे कि
(प्रतिकारात्मक) उपाय करने में
अल्लाह अधिक तेज़ है। जो तुम छल
कर रहे हो हमारे भेजे हुए दूत उसे
अवश्य लिख रहे हैं। 122।

वही है जो तुम्हें स्थल भाग और जल
भाग पर चलाता है। यहाँ तक कि जब
तुम नौकाओं में होते हो और वे अनुकूल
हवाओं की सहायता से उन्हें लिये हुए
चलती हैं। और वे (लोग) उससे बहुत
प्रसन्न होते हैं तो अचानक बहुत तेज़
हवा उन्हें आ घेरती है और हर ओर से
लहर उन की ओर बढ़ती है और वे
धारणा करने लगते हैं कि वे घिर चुके हैं,
तब वे अल्लाह के प्रति अपनी आस्था
को विशुद्ध करते हुए उसी को पुकारते हैं
कि यदि तू हमें इससे मुक्ति दे दे तो
निश्चित रूप से हम कृतज्ञों में से हो
जाएँगे। 123।

फिर जब वह उन्हें मुक्ति दे देता है तो वे
धरती में अनुचित रूप से विद्रोह करने
लगते हैं। हे लोगो ! तुम्हारा विद्रोह
निश्चित रूप से तुम्हारे अपने ही विरुद्ध
है। (तुम्हें) सांसारिक जीवन का
अल्पमात्र लाभ उठाना है। फिर तुम्हें

۶ ﴿إِنَّ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُسْتَظْرِفِينَ﴾

وَإِذَا آذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرًّاءَ
مَسْتَهِمُوا إِذَا لَهُمْ مَكْرُورٌ فِي أَيَّاتِنَا قُلِّ اللَّهُ
أَشَدُّ عَمَّا يَمْكُرُونَ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتَبُونَ مَا
تَمْكِرُونَ

هُوَ الَّذِي يَسِيرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَرْ^١
حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفَلْكٍ وَجَرَيْنَ بِهِمْ
بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ
عَاصِفٌ وَجَاءَهُمْ الْمُؤْجَعُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُونُهُمْ أَحِيطَ بِهِمْ لَدَعْوَاهُ
اللَّهُ مُخْلِصُينَ لَهُ الدِّينُ لَئِنْ أَجْنَبْتَنَا
مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ

فَلَمَّا آتَيْنَاهُمْ إِذَا هُمْ يَنْبَغِيْنَ فِي الْأَرْضِ
يَغْتَرِيْنَ بِالْحَقِّ^٢ يَا يَا النَّاسُ إِنَّمَا يَغْتَرِيْنَ
عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ مِّنْ مَتَاعِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا نَعَمْ

हमारी ओर ही लौटकर आना है। फिर हम तुम्हें उन कर्मों के बारे में सूचित करेंगे जो तुम किया करते थे । 124।

निःसन्देह सांसारिक जीवन का उदाहरण तो उस पानी के सदृश है जिसे हम ने आकाश से उतारा। फिर उसमें धरती की हरियाली घुल-मिल गई। जिसमें से मनुष्य और पशु भी खाते हैं। यहाँ तक कि जब धरती अपना शुंगार धारण करती है और खूब सज जाती है। और उसके निवासी यह धारणा करने लगते हैं कि वे उस पर पूरा अधिकार रखते हैं तो हमारा निर्णय रात या दिन (किसी भी समय) उसे आ पकड़ता है। और हम उसे एक ऐसे कटे हुए खेत के समान बना देते हैं (जो फल देने से पहले ही कट गिरा हो) मानो कल तक उसका कोई अस्तित्व न था। इसी प्रकार हम चिंतन-मनन करने वालों के लिए चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं। 125।

और अल्लाह शांति के घर की ओर बुलाता है और जिसे चाहता है उसका सीधे रास्ते की ओर मार्ग-दर्शन करता है। 126।

जिन लोगों ने उपकार किया उनके लिए सर्वोत्कृष्ट प्रतिफल तथा उससे भी अधिक है। और उनके चेहरों पर कभी कालिमा और रुसवाई नहीं छाएंगी। यही स्वर्ग के निवासी हैं, वे उसमें सदा रहने वाले हैं। 127।

إِنَّمَا مِنْ حُكْمِنَا مَا نَتَمَّ
تَعْمَلُونَ ⑩

إِنَّمَا مِثْلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا إِنَّرُنَّهُ مِنَ
السَّمَاءِ فَاحْتَلَظُ بِهِ سَبَاثُ الْأَرْضِ هَيَّا يُكْلِ
النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا آتَدْتِ
الْأَرْضَ رُخْرُفَهَا وَأَرْيَيْتَ وَطْنَ
أَهْلَهَا أَنَّهُمْ قَدْرُونَ عَلَيْهَا أَشْهَادًا
أَمْرَنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَسِيدًا
كَانَ لَهُ تَعْنَى بِالْأَمْمِينِ ۖ كَذِلِكَ تَفَصِّلُ
الْآيَتِ لِقَوْمٍ يَسْكُنُونَ ⑪

وَاللَّهُ يَدْعُوا إِلَى دَارِ السَّلَامِ ۖ وَيَهْدِي مَنْ
يُشَاءُ إِلَى صِرَاطِ الْمُسْتَقِيمِ ⑫

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةً ۖ وَلَا
يَرْهُقُ وَجْهَهُمْ قَتْرٌ وَلَا ذِلْلَةٌ ۖ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑬

और वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ अर्जित कीं (उनके लिए) हर बुराई का प्रतिफल उस के समान होगा और उन पर स्सवाई छा जाएगी । उनको अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं होगा । मानो अंधकार कर देने वाली रात्रि के एक टुकड़े के द्वारा उनके चेहरे ढाँप दिये गये हैं । यही अग्नि वासी है, वे उसमें लम्बा समय रहने वाले हैं । 128।

और (याद रखो) उस दिन जब हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर जिन्होंने शिर्क किया हम उनसे कहेंगे, तुम (भी) और तुम्हारे (बनाए हुए) उपास्य भी अपने स्थान पर ठहर जाओ । फिर हम उनके बीच प्रभेद कर देंगे और उनके (कल्पित) उपास्य कहेंगे, तुम हमारी उपासना तो नहीं किया करते थे । 129।

अतः अल्लाह ही हमारे और तुम्हारे बीच साक्षी के रूप में पर्याप्त है । निःसन्देह हम तुम्हारी उपासना करने से अनजान थे । 130।

प्रत्येक आत्मा जो कुछ करती रही है वह वहाँ जान लेगी और वे अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह की ओर लौटाये जायेंगे और जो वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनसे छूटता रहेगा । 131।

(स्कू 3/8)

पूछ कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती में से जीविका प्रदान करता है ? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर अधिकार रखता है और जीवित को मृत

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السُّيُّورَ جَزَاءً سُيُّورٍ
بِمِثْلِهَا وَتَرَهُقُهُمْ ذِلْلَةٌ مَا لَهُمْ مِنْ
اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَانُوا أَغْيَثِيَّتٍ
وَجُوْهُهُمْ قِطْعًا مِنْ أَئِلِّ مُظْلِمِمًا
أُولَئِكَ أَصْحَابُ التَّارِهُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑩

وَيَوْمَ نَحْشِرُهُمْ جَمِيعًا مَنْ نَقُولُ لِلَّذِينَ
أَشْرَقْنَا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشَرِكَا وَكُفُّرٌ
فَرَيَّنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شَرِكَا وَهُمْ
مَا كُنْنَا إِلَيْنَا تَعْبُدُونَ ⑪

فَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ
كُنَّا عَنِ عِبَادَتِكُمْ لَغَفِيلُونَ ⑫

هَنَالِكَ تَبْلُو اكْلُ نَقِيسٍ مَا أَسْلَفْتُ
وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمْ الْحَقُّ وَصَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑬

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
آمَنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ

से निकालता है और मृत को जीवित से निकालता है । और कौन है जो सृष्टि-प्रबंधन को योजनाबद्ध रूप से चलाता है ? अतः वे कहेंगे कि अल्लाह । तू कह दे कि फिर क्या तुम तकवा धारण नहीं करोगे ? 132।

अतः वही है अल्लाह, तुम्हारा वास्तविक रब । फिर सच्चाई के बाद पथभ्रष्टता के अतिरिक्त और क्या रह जाता है ? अतः तुम कहाँ फिराये जा रहे हो ? 133।

इसी प्रकार तेरे रब का आदेश उन लोगों पर सत्य सिद्ध होता है जिन्होंने दुराचरण किया । वे कदापि ईमान नहीं लायेंगे । 134।

पूछ, कि क्या तुम्हारे उपास्यों में से भी कोई है जो सृष्टि का आरम्भ करता हो फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता हो ? तू (उनसे) कह दे, अल्लाह ही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति भी करता है । अतः तुम कहाँ भटकाये जा रहे हो ? 135।

पूछ, कि क्या तुम्हारे उपास्यों में से कोई ऐसा भी है जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन कराये ? कह दे, अल्लाह ही है जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन करता है । अतः क्या वह जो सच्चाई की ओर मार्ग-दर्शन करता है अधिक अनुकरण योग्य है ? अथवा वह जो स्वयं सन्मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसका मार्ग-दर्शन न कराया जाये ? अतः तुम्हें

يُخْرِجُ الْحَىٰ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَىٰ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ
اللَّهُ أَكْلَ أَفَلَا تَشْكُونَ ⑩

فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ
الْحَقِّ إِلَّا الصَّلَلُ فَإِنَّمَا تُصَرِّفُونَ ⑪

كَذَلِكَ حَفَظْتَ كَلِمَتَ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑫

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِّ كَآءِكُمْ مَنْ يَبْدُو
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدُو الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيدُهُ فَإِنِّي شُوفْتُكُونَ ⑬

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِّ كَآءِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى
الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ
يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحُّ أَنْ يَتَبَعَ أَمْنًا لَا
يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِي فَمَا لَكُمْ

क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ? 136।

और उनमें से अधिकतर लोग अनुमान के सिवा किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते (जबकि) अनुमान सच्चाई के सामने कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता। जो वे करते हैं निःसन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है 137।

और यह कुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह से अलग रह कर (केवल) झूठ के रूप में गढ़ लिया जाये। परन्तु यह उसकी पुष्टि (करता) है जो उसके सामने है। और उस पुस्तक का विवरण है जिस में कोई सन्देह नहीं। (यह) समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है 138।

क्या वे यह कहते हैं कि इसने इसे झूठे रूप से गढ़ लिया है। तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो फिर इस (की सूरः) जैसी कोई सूरः तो बना लाओ। और अल्लाह के सिवा जिन को बुलाने की शक्ति रखते हो, बुला लो 139।

वास्तविकता यह है कि वे उसे झुठला रहे हैं जिस के ज्ञान को वे पूर्णतः पा नहीं सके और अभी तक उसका अर्थ उन पर प्रकट नहीं हुआ। इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे। अतः तू देख कि अत्याचारियों का कैसा अन्त हुआ 140।

और उनमें से वह भी है जो उस पर ईमान लाता है। और उन में से वह भी

كَيْفَ تَحْكُمُونَ ④

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًا ۝ إِنَّ الظَّنَّ
لَا يَعْلَمُ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا
يَفْعَلُونَ ④

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ
دُوْنِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي يَبْيَنُ
يَدِيهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبٌ فِيهِ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ④

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْهِ ۝ قُلْ فَأَنْوَاعُ سُورَةٍ
مِّثْلِهِ وَأَدْعُو أَمِنٍ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
إِنْ كُنْتُمْ صَدِقِينَ ④

بِلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحْمِلُوا بِعِلْمٍ وَلَمَّا
يَأْتِهِمْ تَأْوِيلَهُ ۝ كَذَلِكَ كَذَبَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ④

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا

है जो उस पर ईमान नहीं लाता । और तेरा रब्ब उपद्रवियों को सर्वाधिक जानता है । 141। (रुक् ४)

और यदि वे झुठला दें तो कह दे कि मेरे लिए मेरा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा कर्म है । जो मैं करता हूँ तुम उसके लिए उत्तरदायी नहीं हो और जो तुम करते हो मैं उसके लिए उत्तरदायी नहीं हूँ । 142।

और उनमें से ऐसे भी हैं जो तेरी ओर कान लगाये रखते हैं । अतः क्या तू बहरों को भी सुना सकता है यद्यपि वे बुद्धि भी न रखते हों ? । 143।

और उनमें से वह भी है जो तुझ पर नजर लगाए हुए है । अतः क्या तू अंधों को भी हिदायत दे सकता है यद्यपि वे ज्ञान-दृष्टि न रखते हों ? । 144।

निःसन्देह अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता । परन्तु लोग स्वयं अपनी ही जानों पर अत्याचार करते हैं । 145।

और (याद करो) वह दिन जब वह उन्हें इकट्ठा करेगा, उनको लगेगा कि वे (धरती पर) दिन की एक घड़ी से अधिक नहीं रहे । वे एक दूसरे का परिचय प्राप्त करेंगे । जिन्होंने अल्लाह की भेंट का इनकार कर दिया था वे अवश्य घाटे में रहे और वे हिदायत पाने वालों में से न हो सके । 146।

और यदि हम तुझे उस (चेतावनी) में से कुछ दिखा दें जिससे हम उन्हें सतर्क

يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ⑥

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ فِي عَمَلِي وَلَا كُمْ
عَمَلَكُمْ ۝ إِنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلْ
وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ⑦

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۝ أَفَأَنْتَ
تُشْعِرُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ⑧

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۝ أَفَأَنْتَ
تَهْدِي الْعُمَى وَلَوْ كَانُوا لَا يَصْرُونَ ⑨

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ ۝ يَسْأَلُكَ
النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ⑩

وَيَوْمَ يَحْسِرُهُمْ كَانُ لَمْ يَلْبُسُوا إِلَّا
سَاعَةً ۝ مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ يَسْأَلُهُمْ
قَدْ حَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءَ اللَّهِ
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ⑪

وَإِمَّا نُرِيَّكَ بَعْضَ الَّذِي تَعْدُهُمْ أَوْ

किया करते थे अथवा तुझे मृत्यु दे दें तो
(अवश्यमेव) हमारी ओर ही उन को
लौट कर आना है । फिर जो वे करते हैं
अल्लाह ही उस पर साक्षी है । 147।*

और प्रत्येक संप्रदाय के लिए कोई न
कोई रसूल होता है । अतः जब उनका
रसूल उनके निकट आ जाये तो उनके
बीच न्यायपूर्ण ढंग से निर्णय कर दिया
जाता है और उन पर कदापि अत्याचार
नहीं किया जाता । 148।

और वे कहते हैं, यदि तुम सच्चे हो
तो यह वादा कब पूरा होगा ? । 149।

तू कह दे कि जितनी अल्लाह की इच्छा
हो (उससे अधिक) मैं तो अपने आप के
लिए भी न किसी हानि का और न किसी
लाभ का कोई अधिकार रखता हूँ ।
प्रत्येक जाति के लिए एक समय
निश्चित है । जब उनका निश्चित समय
आ जाये तो न वे क्षण भर पीछे हट
सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं । 150।
तू कह दे, बताओ तो सही कि यदि
तुम्हारे पास उसका अज्ञाब रात को
अथवा दिन को आ पहुँचे तो अपराधी
किस के बल पर उससे भागने में शीघ्रता
करेंगे ? । 151।

شَوَّفْتُكَ فَإِنَّا مَرْجِعُهُمْ إِلَيْنَا هُنَّ الَّذِينَ شَهَدُوا
عَلَى مَا يَفْعَلُونَ ⑩

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۝ فَإِذَا جَاءَهُ
رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقُسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ⑪

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑫

قُلْ لَاٰمُكُلُّ لِنَفْسِيٍّ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا لَاٰ
مَا شَاءَ اللَّهُ بِلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۝ إِذَا جَاءَهُ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا
يَسْتَقْدِمُونَ ⑬

قُلْ أَرَعِيْتُمْ إِنْ أَشْكُمْ عَذَابَهُ بَيَانًاً أَوْ
نَهَارًاً مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ⑭

* इस आयत से ज्ञात होता है कि यह आवश्यक नहीं कि नबी के जीवनकाल में ही उसकी समस्त भविष्यवाणियाँ पूरी हों । हाँ कुछ उसके जीवनकाल में अवश्य पूरी होती हैं । कुरआन करीम जो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उत्तरा, क़्यामत तक के लिए अनगिनत ऐसी भविष्यवाणियों का वर्णन कर रहा है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के पश्चात पूरी होनी आरम्भ हुई और जब तक पूरी होती रहीं और क़्यामत तक पूरी होती रहेंगी ।

तो फिर क्या जब वह घटित हो चुका होगा उस समय तुम उस पर ईमान लाओगे ? क्या अब (भाग निकलने का कोई रास्ता है ?) और तुम तो उसे शीघ्र लाने की माँग करते थे । 52।

फिर जिन्होंने अत्याचार किया उनसे कहा जायेगा कि (अब) स्थायी अज्ञाब को चखो । जो तुम कमाई किया करते थे क्या तुम्हें उनके सिवा भी प्रतिफल दिया जा रहा है ? । 53।

और वे तुझ से पूछते हैं कि क्या वह सत्य है ? तू कह दे, हाँ ! मुझे अपने रब्ब की कसम कि निःसन्देह वह सत्य है और तुम (उसे) असमर्थ करने वाले नहीं बन सकोगे । 54। (रुकू 50)

और धरती में जो कुछ है यदि वह सब कुछ प्रत्येक उस व्यक्ति का होता जिसने अत्याचार किया तो वह उसे मुक्तिमूल्य स्वरूप दे देता । और जब वे अज्ञाब को देखेंगे तो अपने शर्मिंदगी को छिपाते फिरेंगे और उनके बीच न्याय पूर्वक निर्णय किया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 55।

सावधान ! जो आकाशों और धरती पर है निश्चित रूप से अल्लाह ही का है। सावधान ! निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 56।

वही जीवित करता है और मारता भी है और उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा । 57।

أَئُمْرٌ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْشَمْ بِهِ الْأَنْ وَقْدٌ
كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ⑩

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا دُوْقُوا عَذَابٍ
الْخَلُوٰهُ هُلْ تَجْزُفُ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُونَ ⑩

وَيَسْتَبِعُونَكَ أَحَقُّهُ هُوَ قُلْ إِذْ وَرَبِّي
إِنَّهُ لَحَقٌ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ⑩

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي
الْأَرْضِ لَأُفْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا اللَّدَامَةَ
لَمَارًا أوَّالْعَذَابَ وَقُضِيَ بِيَهُمْ بِالْقُطْطِ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑩

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ⑩

هُوَ يَعْلَمُ وَيَمْيِنُهُ وَإِلَيْهِ تُرْجَمُونَ ⑩

हे लोगो ! निःसन्देह तुम्हारे निकट तुम्हारे रब्ब की ओर से उपदेश की बात और सीनों में जो (रोग) है उसका उपचार तथा मोमिनों के लिए हिदायत और करुणा भी आ चुकी है । 158।

तू कह दे कि (यह) केवल अल्लाह का अनुग्रह और उसकी कृपा से है । अतः उन्हें इस पर अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिए । जो वे इकट्ठा करते हैं वह उससे उत्तम है । 159।

तू कह दे, क्या तुम नहीं सोचते कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका उतारी है, उसमें से तुम ने स्वयं ही हराम और हलाल बना लिये हैं । तू (उनसे) पूछ कि क्या अल्लाह ने तुम्हें (इन बातों की) अनुमति दी है या तुम केवल अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ? । 160।

और वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं क्यामत के दिन उनकी क्या सोच होगी ? निःसन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है परन्तु उनमें से अधिकतर कृतज्ञता प्रकट नहीं करते । (रुकू ٦١)

और तू जब भी किसी विशेष परिस्थिति में होता है और उस परिस्थिति में कुरआन का पाठ करता है, इसी प्रकार (हे मोमिनो !) तुम किसी (सत्) कर्म करने में तल्लीन होते हो (तब) हम तुम पर साक्षी होते हैं । और तेरे रब्ब से एक कण भर कोई वस्तु छुपी नहीं रहती, न धरती में और न आकाश में । और न ही

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَشَفَاعَةٌ إِمَامٌ فِي الصَّدُورِ ۖ وَهُدًىٰ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ⑥

قُلْ يَقْصِلِ اللَّهُ وَبِرَحْمَتِهِ فَيَذْلِكَ فَيُفِرَّحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ⑦

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّنْ زِرْقَىٰ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلَالًا ۖ قُلْ اللَّهُ أَذْنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَقْرَبُونَ ⑧

وَمَا أَطْلَقَ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَدُوْقَصِلٍ عَلَى النَّاسِ وَلِكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۙ ⑨

وَمَا تَكُونُ فِي شَاءٍ ۖ وَمَا تَسْتَلِوْمَهُ مِنْ قُرَاءِنٍ ۖ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْهِ كَمْ شَهُودًا لَا تَقْيِضُونَ فِيهِ ۖ وَمَا يَعْرِبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مُنْقَالٍ ذَرَرَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ

उससे कोई छोटी और न कोई बड़ी चीज़ है जिसका खुली-खुली पुस्तक में (उल्लेख) न हो । 162।

मुनो कि निःसन्देह अल्लाह के मित्र ही हैं जिन्हें कोई भय नहीं होगा और न वे दुःखित होंगे । 163।

वे लोग जो ईमान लाये और वे तक़वा का पालन करते थे । 164।

उनके लिए सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी शुभ-समाचार है। अल्लाह के वाक्यों में कोई परिवर्तन नहीं । यही बहुत बड़ी सफलता है । 165।

और तुझे उनकी बात दुःखित न करे । निश्चित रूप से समस्त सम्मान अल्लाह के ही अधिकार में है । वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 166।

सावधान ! जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं निश्चित रूपेण अल्लाह ही के हैं । और जो लोग अल्लाह के सिवा (अन्य किसी) को पुकारते हैं वे (कल्पित) उपास्यों का अनुसरण नहीं करते, वे तो केवल अनुमान का अनुसरण करते हैं और केवल अटकलों से काम लेते हैं । 167।

वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम प्राप्त करो और दिन को प्रकाशदायक बनाया । निःसन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो (बात को) सुनते हैं । 168।

ذِلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ⑦

أَلَا إِنَّ أُولَئِي الْأَعْيُونَ لَا يَحْوِفُ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرُثُونَ ⑧

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَقَوَّنَ ⑨

لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑩

وَلَا يَحْرُثُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعَرَةَ لِلَّهِ بِهِ ⑪
جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑫

أَلَا إِنَّ اللَّهَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَبَعِّجُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شَرِكَاءٌ إِنَّ يَتَبَعِّجُونَ إِلَّا الظَّلَّنَ وَإِنَّ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ⑬

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْيَلَى لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبِيرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ⑯

वे कहते हैं अल्लाह ने पुत्र बना लिया। (हालाँकि इससे) वह पवित्र है, वह निस्पृह है। जो आकाशों में है और जो धरती में है उसी का है। तुम्हारे पास इस (दावा) का कोई भी प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी (बात) कहते हो जिस की तुम्हें जानकारी नहीं। 169।

तू कह दे निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं सफल नहीं होंगे। 170।

(उनको) दुनिया में कुछ लाभ उठाना है। फिर हमारी ओर ही उनका लौटना है। फिर उनके इनकार करने के कारण हम उन्हें कठोर अज्ञाब चखाएँगे। 171।

(रुकू 7/12)

और तू उन के समक्ष नूह का वृत्तांत पढ़। जब उसने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति! यदि मेरा मत और अल्लाह के चिह्नों के द्वारा मेरा उपदेश देना तुम्हारे लिए कष्टप्रद होता है तो मैं अल्लाह पर ही भरोसा करता हूँ। अतः तुम अपनी सारी शक्ति और अपने साज्जीदारों को भी इकट्ठा कर लो फिर अपनी शक्ति पर तुम्हें कोई संदेह न रहे, फिर मुझ पर जो करना है कर गुज़रो और मुझे कोई ढील न दो। 172।

अतः यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो मैं तुम से कोई प्रतिफल तो नहीं माँगता। मेरा प्रतिफल अल्लाह के सिवा किसी पर

قَاتُوا اللَّهَنَّ خَذَ اللَّهَ وَلَدًا سَبِّحَتْهُ مُهَوَّ
الْغَفُورُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَنٍ بِهَذَا
أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑭
قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
لَا يُعْلِمُونَ ⑮
مَتَاعُ فِي الدُّنْيَا لَمَّا أَتَاهُمْ رِحْمَةً مُهُومُونَ
شُذُّوقُهُمُ الْعَذَابُ الشَّدِيدُ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ⑯

وَالْئُلُّ عَلَيْهِمْ بِنَارٍ نُوحٌ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ
يَقُولُونَ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقْامِي
وَتَذَكَّرُنِي بِإِيمَانِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلُ
فَاجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا
يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَمَةٌ ثُمَّ اقْصُوَا
إِلَيَّ وَلَا شِظِرُونَ ⑰

فَإِنْ تَوَيَّنُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرٍ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأَمْرُتُ أَنْ أَكُونَ

नहीं। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से बन जाऊँ । 73।

अतः उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उसे और उनको जो उसके साथ नौका में थे, बचा लिया । और उनको उत्तराधिकारी बना दिया और हमने उन लोगों को जिन्होंने हमारे चिह्नों को झुठलाया था, डुबो दिया । अतः जिनको चेतावनी दी गई थी, देख ! कि उनका अन्त कैसा था ? । 74।

फिर उसके बाद हमने कई रसूलों को उनकी अपनी-अपनी जाति की ओर भेजा । अतः वे उनके पास खुले-खुले चिह्न लेकर आये । परन्तु जिसे वे पहले से झुठला चुके थे वे उस पर ईमान लाने वाले नहीं बने । इसी प्रकार हम सीमा का उल्लंघन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं । 75।

फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को फिर औन और उसके मुखियाओं की ओर अपने चिह्नों के साथ भेजा तो उन्होंने अहंकार किया और वे अपराधी लोग थे । 76।

अतः जब हमारी ओर से उनके पास सत्य आया तो उन्होंने कहा, निःसन्देह यह एक खुला-खुला जादू है । 77।

मूसा ने कहा, जब तुम्हारे निकट सत्य आ गया तो क्या तुम उस के सम्बन्ध में (यह) कह रहे हो कि क्या यह जादू है ? जबकि जादूगर तो सफल नहीं हुआ करते । 78।

منَ الْمُسْلِمِينَ ⑦

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْقُلُكِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِإِيمَانِهِ فَأَنْظَرْنَا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُسْدَرِينَ ⑧

شَرَّ بَعْثَانًا مِنْ بَعْدِهِمْ رَسْلًا إِلَى قَوْمِهِمْ
فَجَاءُهُمْ وَهُمْ بِالْبَيْتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلِهِ كُلُّ ذَلِكَ نَظِيْحَ عَلَى
قُلُوبِ الْمُعْتَدِلِينَ ⑨

شَرَّ بَعْثَانًا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى وَهُرُونَ
إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِكَهِ بِإِيمَانِهِ فَأَسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا أَقْوَمَ أَمْجَرِ مِنْهُنَّ ⑩

فَلَمَّا جَاءَهُمْ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ
هَذَا إِسْخَرُ مِنْنَا ⑪

قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا
جَاءَكُمْ أَسْخَرُ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ
السَّحْرُونَ ⑫

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास इसलिये आया है ताकि तू हमें उस (पंथ) से हटा दे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया, और (ताकि) तुम दोनों का धरती में मानवर्धन हो । जबकि हम तो तुम दोनों पर कभी ईमान लाने वाले नहीं । 79।
और फिर औन ने कहा, मेरे पास प्रत्येक कुशल जादूगर ले आओ । 80।

अतः जब जादूगर आ गये तो मूसा ने उनसे कहा, जो भी तुम डालने वाले हो डाल दो । 81।

अतः (जो डालना था) जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा, तुम जो कुछ लाये हो वह केवल दृष्टि का भ्रम है । अल्लाह उसे अवश्य रद्द कर देगा । निःसन्देह अल्लाह उपद्रवियों के कर्म को उचित नहीं ठहराता । 82।

और अल्लाह अपने वाक्यों के द्वारा सत्य को सत्य सिद्ध कर दिखाता है । चाहे अपराधी कैसा ही नापसन्द करें । 83।

(रुकू ۸۳)

अतः मूसा की जाति में से थोड़े ही युवक इस भय के बावजूद कि फिर औन और उनके मुखिया उन्हें किसी कष्टदायक परीक्षा में न डाल दें, उस पर ईमान लाये । और निःसन्देह फिर औन धरती में बहुत उद्घट्टा करने वाला और निश्चित रूप से वह सीमा उल्लंघन करने वालों में से था । 84।

قَاتُوا أَجِئْتَنَا إِلَيْهِ مَاعْجَذَنَا عَلَيْهِ
أَبَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمَا الْكَبِيرَ يَأْمُدُ فِي
الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ④

وَقَالَ فِرْعَوْنُ إِسْتُوْنِيْ بِكُلِّ سِحْرِ
عَلِيْمِيْ ⑤

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةَ قَالَ لَهُمْ مُوسَى
أَلْقُوْمَا آنِتُمْ مُلْقُوْنَ ⑥

فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْنُكُمْ بِهِ
السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيِّطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا
يَصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ⑦

وَيَحْقِقُ اللَّهُ الْحَقُّ بِكَلِمَتِهِ وَلَوْكَرَهُ
الْمُجْرِمُوْنَ ⑧

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذِرَيْهُ مِنْ قَوْمِهِ
عَلَى حَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَائِيْمِهِ
يَقْتَلُهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ
وَإِنَّهُ لَمَنِ الْمُسْرِفِيْنَ ⑨

और मूसा ने कहा, हे मेरी जाति ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो यदि (वस्तुतः) तुम आज्ञाकारी हो तो उसी पर भरोसा करो । 85।

तो उन्होंने (उत्तर में) कहा, अल्लाह पर ही हम भरोसा रखते हैं । हे हमारे रब्ब ! हमें अत्याचारी लोगों के लिए परीक्षा (का कारण) न बना । 86।

और हमें अपनी कृपा से काफिर लोगों से मुक्ति प्रदान कर । 87।

और हमने मूसा और उसके भाई की ओर वहइ की कि तुम दोनों अपनी जाति के लिए मिस्र में घरों का निर्माण करो और अपने घरों को किल्ला-मुखी बनाओ और नमाज़ को क़ायम करो । और तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे । 88।*

और मूसा ने कहा, हे हमारे रब्ब ! निःसन्देह तूने फिरआैन और उसके मुखियाओं को इस सांसारिक जीवन में एक बृहद् शोभा और धन-सम्पदा दिये हैं, हे हमारे रब्ब ! (क्या) इसलिए कि वे तेरे रास्ते से (लोगों को) भटका दें । हे हमारे रब्ब ! उनकी धन-सम्पदा को बर्बाद कर दे और उनके दिलों को कठोर बना दे । अतः जब तक वे

وَقَالَ مُوسَىٰ يَقُومٌ إِنْ كُنْتُمْ أَمْسَمُ بِاللَّهِ
فَعَلَيْهِ تَوَكُّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ⑩

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكُّلُنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّلَمِينَ ⑪

وَنَجْعَلْنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكُفَّارِينَ ⑫

وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبْوَأَا
لِقَوْمَكُمَا بِمُصَرَّ بَيْوَاتًا وَاجْعَلُوهَا
بَيْوَاتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرْ
الْمُؤْمِنِينَ ⑬

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِلَكَ أَتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَأَهُ زِيَّةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
رَبَّنَا إِنَّصُلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا أَطْمِسْ
عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَأَشَدُّ ذَعْلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا

* इस आयत में एक ऐसी बात का उल्लेख है जिसकी कल्पना भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं नहीं कर सकते थे और न ही बाइबिल में इसका वर्णन है । अतः यह अरोप भी झूठा है कि बाइबिल के जानकारों का वर्णन सुन कर आप सल्ल. को इसका ज्ञान हुआ । परन्तु अब पुरातत्त्वविदों ने मिस्र में बनी इस्माइल के गढ़े हुए आवासों को खोज निकाला है जिनसे स्पष्ट हो चुका है कि बनी इस्माइल के घर एक ही दिशा में अर्थात् किल्ला-मुखी बने थे ।

पीड़ाजनक अज्ञाब को देख न लें, ईमान नहीं लायेंगे । १९।*

उसने कहा, तुम दोनों की दुआ स्वीकार कर ली गई । अतः तुम दोनों दृढ़ता दिखाओ और कदापि उन लोगों के रास्ते का अनुसरण न करो जो कुछ नहीं जानते । १०। और हमने बनी इसाईल को समुद्र पार कराया तो फिरओैन और उस की सेना ने विद्रोह और अत्याचार करते हुए उनका पीछा किया । यहाँ तक कि जब उसे जलप्लावन ने आ घेरा तो उसने कहा, मैं उस पर ईमान लाता हूँ जिस पर बनी-इसाईल ईमान लाये हैं, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं और मैं (भी) आज्ञाकारियों में से हूँ । ११।

क्या अब (ईमान लाया है) ! जब कि इससे पूर्व तू अवज्ञा करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से था । १२।

अतः आज के दिन हम तुझे तेरे शरीर के साथ बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक (शिक्षाप्रद) चिह्न बन जाये । जब कि लोगों में से अधिकांश हमारे चिह्नों से बिल्कुल बेखबर हैं । १३।** (रुक् १४)

* इन अर्थों के लिए देखें पुस्तक 'इम्ला मा मन्ल बिहिरहमान'

** यह आयत भी सिद्ध करती है कि कुरआन मर्जीद अदृश्यवेत्ता (अल्लाह) की ओर से अवतरित हुआ है। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो फिरओैन की लाश के बारे में सांकेतिक वर्णन भी नहीं था। परन्तु वर्तमान युग में हज़रत मूसा अलै. के विरुद्ध खड़े होने वाले फिरओैन की लाश को पुरातत्त्वविदों ने ढूँढ़ लिया है। इस लाश से ज्ञात होता है कि फिरओैन डूबने के बावजूद मने से पहले बचा लिया गया था। इस के बाद लगभग साठ वर्ष तक अपाहिज होकर शव्याग्रस्त रहा। इस प्रकार उसने कुल नव्वे वर्ष की आयु प्राप्त की। (अधिक जानकारी के लिए देखें Ian Wilson : Exodus Enigma 1985)

يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ⑯

قَالَ قَدْ أَجِبْتُ دُعَوَتُكُمَا فَأَسْتَقِيمَا
وَلَا تَتَّبِعُنِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑯

وَجُوزُنَا بِنَيِّ اسْرَاءَ عَيْنَ الْبَحْرِ فَأَشْبَعْهُمْ
فِرْعَوْنَ وَجُودُهُ بَعِيًّا وَعَدْوًا طَحْنَى إِذَا
أَذْرَكَهُ الْفَرْقَ ۝ قَالَ أَمْتَثَ أَنَّهُ لَا إِلَهَ
إِلَّا إِلَّذِي أَمْتَثِ بِهِ بَنُوا اسْرَاءَ عَيْنَ وَأَنَا
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ⑯

الْئَنْ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ⑯

فَإِنْ يُؤْمِنُ سَجِيلَكَ بِيَدِنِكَ لَتَكُونَ لِمَنْ
خَلَقَكَ أَيَّةً ۝ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الظَّالِمِينَ عَنْ
عِلْمٍ
إِيَّنَا نَغْفِلُونَ ⑯

और हमने बनी इस्माईल को एक सच्चाई का ठिकाना प्रदान किया और उन्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान किया । जब तक उनके निकट ज्ञान नहीं आ गया उन्होंने मतभेद नहीं किया । निःसन्देह तेरा रब्ब क्रयामत के दिन उनके बीच में उन बातों का निर्णय करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे । 194।

अतः जो हमने तेरी ओर उतारा है यदि तू उस के बारे में किसी असमंजस में पड़ा है तो उन से पूछ ले जो तुझ से पहले (भेजी हुई) पुस्तक को पढ़ते हैं। जो तेरे रब्ब की ओर से तेरे पास आया है निःसन्देह वह सत्य ही है । अतः तू सन्देह करने वालों में से कदापि न बन । 195।

और तू कदापि उन लोगों में से न बन जिन्होंने अल्लाह के चिह्नों को झुठला दिया अन्यथा तू हानी उठाने वालों में से हो जायेगा । 196।

निश्चित रूप से वे लोग जिन पर तेरे रब्ब का आदेश लागू हो चुका है, ईमान नहीं लायेंगे । 197।

यद्यपि उनके पास प्रत्येक चिह्न आ चुका हो यहाँ तक कि वे पीड़ाजनक अज्ञाब को देख लें । 198।

अतः यूनुस की जाति के सिवा क्यों ऐसी कोई वस्ती वाले नहीं हुए जो ईमान लाये हों और जिनको उनके ईमान ने लाभ पहुँचाया हो । जब वे ईमान लाये तो

وَلَقَدْ بَوَأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَا صُدُّقٍ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الظَّبِيبَتِ فَمَا احْتَلَفُوا
حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ لَمَّا آتَنَاكُمْ يَقْضِي
بِيَمِّهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ④

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ
فَسُكِّلِ الَّذِينَ يَقْرَئُونَ الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ⑤

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَتَكُونَ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑥

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑦

وَلَوْ جَاءَهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ ⑧

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَقَعَهَا آيَاتُهَا
إِلَّا قَوْمٌ يُوَسَّ ۖ لَمَّا آمَنُوا كَسْفَنَا عَنْهُمْ

हमने उनसे इस सांसारिक जीवन में अपमानजनक अज्ञाब को दूर कर दिया और उन्हें एक समय तक जीवन यापन के साधन प्रदान किये । १९९।

और यदि तेरा रब्ब चाहता तो जो भी धरती पर बसते हैं इकट्ठे सब के सब ईमान ले आते । तो क्या तू लोगों को वाध्य कर सकता है, यहाँ तक कि वे ईमान लाने वाले बन जायें । १००।

और अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी व्यक्ति को ईमान लाने का अधिकार नहीं । और जो बुद्धि से काम नहीं लेते वह (अल्लाह उनके दिल की) गंदगी को उन (के चेहरों) पर थोप देता है । १०१।

तू कह दे कि जो कुछ भी आकाशों और धरती में है उस पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालो । और जो लोग ईमान नहीं लाते चिह्न समूह और चेतावनी की बातें उनके कुछ काम नहीं आतीं । १०२।

अतः क्या वे उसी प्रकार के दौर की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं जैसा उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों पर आया था । तू कह दे कि प्रतीक्षा करते रहो, निश्चित रूप से मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ । १०३।

फिर (अज्ञाब के समय) हम अपने रसूलों को और उनको जो ईमान लाये, इसी प्रकार बचा लेते हैं । ईमान लाने वालों को बचाना हम पर अनिवार्य है । १०४।

(रुपू १०
१५)

عَذَابُ الْخَرْيٍ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا^٦
وَمَتَعْنَهُمْ إِلَى حِينٍ^٧

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ
كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ شَيْرُهُ النَّاسَ حَتَّى
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ^٨

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ^٩
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ^{١٠}

قُلِ الْئَطْرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ^{١١} وَمَا تَعْنِي الْأَيْثُرُ وَالشَّدَرُ
عَنْ قُوَّمٍ لَا يَئُوْمِنُونَ^{١٢}

فَهُلْ يَنْتَظِرُونَ لِأَمْثَلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ^{١٣} قُلْ فَاقْتِلُرُوا إِنَّ
مَعْكُمْ مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ^{١٤}

لَمْ نُنْجِي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذِلِكَ^{١٥}
حَتَّىٰ عَلَيْنَا نَصْرٌ الْمُؤْمِنِينَ^{١٦}

तू कह दे कि हे लोगो ! यदि तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में किसी सन्देह में हो तो मैं तो उनकी उपासना नहीं करूँगा जिनकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । परन्तु मैं उसी अल्लाह की उपासना करूँगा जो तुम्हें मृत्यु देता है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मोमिनों में से बन जाऊँ ॥105॥

और सर्वदा (अल्लाह की ओर) झुकाव रखते हुए धर्म पर अपना ध्यान केन्द्रित रख और तू मुश्किलों में से कदापि न बन ॥106॥

और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे लाभ पहुँचाता है और न हानि पहुँचाता है और यदि तूने ऐसा किया तो निःसन्देह तू अत्याचारियों में से हो जायेगा ॥107॥

और यदि अल्लाह तुझे कोई हानि पहुँचाए तो उसी के सिवा उसे दूर करने वाला कोई नहीं । और यदि वह तेरे लिए किसी भलाई का इरादा करे तो उसकी कृपा को टालने वाला कोई नहीं । अपने भक्तों में से जिसे वह चाहता है वह (कृपा) प्रदान करता है । और वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥108॥

तू कह दे कि हे लोगो ! निश्चित रूप से तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सत्य आ चुका है । अतः जो हिदायत पा गया वह अपने लिए ही हिदायत

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ
دِينِنِ فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ
دُوْنِ اللَّهِ وَلَكُنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي
يَوْمَ الْحِسَابِ هُوَ وَأَمْرُتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنْ أَقْمَ وَجْهَكَ لِلَّذِينَ حَيْفَا
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَنْدُعْ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ
وَلَا يَصُرُكَ هُوَ فَلَمْ قَعْلَتْ قَائِلَكَ
إِذَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

وَإِنْ يَمْسِسْكَ اللَّهُ بِصَرِّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ
إِلَّا هُوَ هُوَ وَإِنْ يُرِذْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآءٌ
لِفَضْلِهِ طَيْصِيبٌ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكُمْ هُوَ مِنْ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي

पाता है और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपनी जान के विरुद्ध ही पथभ्रष्ट होता है। और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ। ॥109॥

और जो तेरी ओर वहइ किया जाता है उसका अनुसरण कर और धैर्य धारण कर, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और निर्णय करने वालों में वह सर्वोत्तम है। ॥110॥ (रुक् 11
16)

لِنَفْسِهِ وَمَنْ صَلَّى فَإِنَّمَا يَضْلُلُ عَلَيْهَا
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَأَنَّبِعُ مَا يُؤْخَذُ إِلَيْكَ وَأَصِيرُ حَتَّىٰ
يَحُكُّمَ اللَّهُ ۗ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكَمِينَ ۝

11 - सूरः हूद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 124 आयतें हैं।

इस सूरः का पिछली सूरः के साथ जो संबंध है उसे पिछली सूरः की टिप्पणी में स्पष्ट कर दिया गया है। इस सूरः की प्रमुख बातों में आयत संख्या 113 है। जिसमें आयतांश फ़स्तकिम कमा उमिर त व मन ता व मअक (जैसा तुझे आदेश दिया जाता है उस पर दृढ़ता पूर्वक डट जा और जिन्होंने तेरे साथ प्रायश्चित किया है, वे भी डट जायें) की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ऐसी भारी ज़िम्मेदारी आ पड़ी कि आप सल्ल. ने फ़रमाया शब्दवात नी हूद अर्थात् सूरः हूद ने मुझे बूढ़ा कर दिया। इसी प्रकार इस सूरः में उन जातियों का वर्णन है जिन्हें इनकार करने के कारण विनष्ट कर दिया गया। उन लोगों के शोक के कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी बहुत दुःख पहुँचा।

इस सूरः की आयत सं. 18 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्ष में एक साक्ष्य का उल्लेख करती है जो आप सल्ल. से पहले का है। अर्थात् हज़रत मूसा अलै. का साक्ष्य। इसी प्रकार एक ऐसे साक्षी का भी वर्णन है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पश्चात जन्म लेने वाला है। इस साक्षी का वर्णन 'सूरः अल-बुरूज' में इन शब्दों में मिलता है व शाहिदयों व मशहूद अर्थात् एक समय आयेगा जब एक महान साक्षी एक महानतम पुरुष अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्ष में उनकी सच्चाई की गवाही देगा।

इस सूरः के बाद सूरः यूसुफ का आरम्भ उस आयत से हुआ है जिसमें वृत्तांतों में से सर्वोत्तम वृत्तांत का वर्णन हुआ है। इसलिए इस सूरः के अंत पर अल्लाह तआला का यह कथन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष नवियों के वृत्तांत इसलिए वर्णन किये जा रहे हैं ताकि इन्हें सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्साहवर्धन हो। इसमें इस ओर भी इशारा है कि सूरः हूद में इन वृत्तांतों के वर्णन से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को ठेस पहुँचाना उद्देश्य नहीं था।



سُورَةُ هُدٌ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مَا تَأَذَّعَ وَعَشْرُونَ آيَةً وَعَشْرَةُ رُكُونَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं
देखता हूँ । (यह) एक ऐसी पुस्तक है
जिसकी आयतों को सुदृढ़ बनाया गया
है (और उन्हें) फिर परम विवेकशील
(और) सदा अवगत (अल्लाह) की
ओर से भली-भाँति स्पष्ट कर दिया
गया है । 12।

(सतर्क कर रही हैं) कि तुम अल्लाह के
सिवा किसी की उपासना न करो ।
निश्चित रूप से मैं उसकी ओर से तुम्हारे
लिए एक सतर्ककारी और एक सु-
समाचार दाता हूँ । 13।

और यह भी कि तुम अपने रब्ब से क्षमा
याचना करो और प्रायश्चित करते हुए
उसी की ओर झुको तो वह तुम्हें एक
निश्चित अवधि तक उत्कृष्ट जीवन-
साधन प्रदान करेगा । और वह प्रत्येक
गौरवशाली व्यक्ति को उसकी प्रतिष्ठा
के अनुरूप कृपा प्रदान करेगा । और यदि
तुम लौट जाओ तो निश्चित रूप से मैं
तुम्हारे संबंध में एक बहुत बड़े दिन के
अज्ञाब से डरता हूँ । 14।

अल्लाह ही की ओर तुम्हारा लौटकर
जाना है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे
वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 15।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّمَا كَتَبْتُ أُحْكَمَتْ آيَاتُهُ تُمَكِّنُ فَضْلَتْ
مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَيْرٍ ①

الْأَتَابَعْدُ وَالْأَلَّا إِلَهٌ إِنَّمَا لَكَمْرِمَةٌ
لَذِيرٌ وَبِشِيرٌ ①

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ تُمَكِّنُ تَوْبَةَ إِلَيْهِ
يُمْتَغِكُمْ مَتَاعًا حَسَانًا إِلَى أَجَلٍ مُسَمِّيٍّ
وَيُؤْتِيْكُمْ كُلُّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِنْ تَوَلُّنَا
فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابٌ يُؤْمِنُ بِكُبِيرٌ ①

إِنَّ اللَّهَ مَرْجِعَكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

सावधान ! निश्चित रूप से वे अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि वे उससे छिप सकें । सावधान ! जब वे अपने वस्त्र पहन रहे होते हैं तो जो वे छिपाते हैं और जो प्रकट करते हैं, वह उसे जानता है । निःसन्देह वह सीनों की बातों को भली-भाँति जानता है । १।

أَلَا إِنَّهُمْ يَتَّبُعُونَ صَدُورَهُمْ لَيَسْتَخْفُوا
مِنْهُ أَلَا هُنَّ يَسْغُطُونَ شَيَّابَهُمْ
يَعْلَمُ مَا تُسَرِّفُ وَمَا يَعْلَمُونَ
إِنَّهُ عَلِيهِمْ بِذَاتِ الصَّدُورِ ①

और धरती में चलने फिरने वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं जिसकी जीविका (का दायित्व) अल्लाह पर न हो । और वह उसके अस्थायी निवास-स्थान को और स्थायी निवास-स्थान को भी जानता है । प्रत्येक विषय एक सुस्पष्ट पुस्तक में है ।¹⁷

और वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया और उसका सिंहासन पानी पर था ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में से कौन उत्कृष्ट कर्म करने वाला है । और यदि तू कहे कि तुम मरने के बाद अवश्य उठाये जाओगे तो काफिर ज़खर कहेंगे कि यह तो खुले-खुले झूठ के सिवा कुछ नहीं ।¹⁸*

और यदि हम कुछ समय के लिए उन से अज्ञाब को टाल दें तो वे अवश्य कहेंगे कि किस बात ने उसे रोक रखा है । सावधान ! जिस दिन वह उन तक आयेगा तो उसे उनसे टाला जाना असंभव होगा और वही (चेतावनी) उन्हें घेर लेगी जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे ।¹⁹ (रुक् ۱)

और यदि हम अपनी ओर से मनुष्य को किसी कृपा का स्वाद चखायें फिर उसको उससे छीन लें तो निश्चित रूप से वह

وَمَا مِنْ دَآبَةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ يَتَّكِلُ
رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَوْدَعَهَا
كُلُّ فِي كِتْبٍ مُّبِينٍ^⑦

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشَهُ عَلَى الْمَاءِ
لَيَلْبُو كُمًا أَيْكُمْ أَحَسْنُ عَمَلًا وَلَئِنْ
قُلْتَ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ
لَيَقُولُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُّبِينٌ^⑧

وَلَئِنْ أَخْرَنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى أَمَةٍ
مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ^۹ أَلَا يَوْمٌ
يَأْتِيهِمُ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهِزُونَ^{۱۰}

وَلَئِنْ أَذْفَنَا إِلَى إِنْسَانٍ مِنَارَ حَمَّةً^{۱۱} لَمْ نَرَغَبْهَا

* आयतांश का न अर्थूँ अल्ल भाइ (उसका सिंहासन पानी पर था) से यह तात्पर्य नहीं है कि अल्लाह की आत्मा पानी पर विचरण कर रही थी । बल्कि इससे यह तात्पर्य है कि उसने पानी को समस्त प्राणियों के जीवन का आधार बनाया । आध्यात्मिक जीवन भी आध्यात्मिक पानी पर निर्भर है, जो आकाश से नवियों पर उतारा जाता है ।

बहुत निराश और बड़ा कृतच्छ हो जाता है । 10।

और यदि किसी कष्ट के बाद जो उसे पहुँचा हो हम उसे नेमत प्रदान करें तो वह अवश्य कहता है कि सारे कष्ट मुझ से दूर हो गये । निश्चित रूस से वह (छोटी सी बात पर) बहुत प्रसन्न हो जाने वाला (और) बढ़-बढ़ कर इतराने वाला है । 11।

सिवाय उन लोगों के जिन्होंने धैर्य धारण किया और नेक कर्म किये । यही वे लोग हैं जिनके लिए एक वृहद क्षमा और एक बहुत बड़ा प्रतिफल है । 12।

अतः क्या (किसी प्रकार भी) तेरे लिए संभव है कि तेरी ओर की जाने वाली वहाँ में से कुछ छोड़ दे । इससे तेरा सीना बहुत तंग होता है कि वे कहते हैं कि क्यों न इसके साथ कोई खजाना उतारा गया अथवा इसके साथ कोई फरिशता क्यों नहीं आया ? तू केवल एक सतर्कारी है और अल्लाह प्रत्येक विषय पर निरीक्षक है । 13।

अथवा वे कहते हैं कि इसने इसे गढ़ लिया है । तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो फिर इसके सदृश दस गढ़ी हुई सूरतें तो लाओ और अल्लाह के सिवा जिसे (सहायता के लिए) पुकार सकते हो पुकारो । 14।

अतः यदि वे तुम्हें इसका सकारात्मक उत्तर न दें तो जान लो कि इसे केवल अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है

۱۰ مِنْهُ إِنَّهُ لِيَئُوسٌ كَفُورٌ

وَلَيْرِبْ أَذْقَهَ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسْتَهْ
لَيَقُولُنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّيْنَ ۱۱ إِنَّهُ
لَفَرِحَ فَخُورٌ ۱۲

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّلَاحَتِ

أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَآجُورٌ كَبِيرٌ ۱۳

فَلَعْلَكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَى إِلَيْكَ
وَصَارِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا إِلَوْلَا
أَنْزَلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أُوْجَاءَ مَعْهَةً مَلَكٌ
إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۱۴ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
وَكَفِيلٌ ۱۵

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَبَ ۱۶ قُلْ فَأَنْوَا بِعَشِيرٍ
سُورٍ مِثْلِهِ مُفْتَرَبٍ وَادْعُوا مَنْ
اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ۱۷

فَإِنَّمَا يَسْتَجِيبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا

और यह भी जान लो कि उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः क्या तुम आज्ञापालन करने वाले बनोगे (भी या नहीं) ? । 15।

जो कोई सांसारिक जीवन और उसकी शोभा की इच्छा करे हम उन्हें उनके कर्मों का पूरा पूरा बदला इसी (लोक) में दे देंगे और इसमें उनका कोई अधिकार-हनन नहीं किया जाएगा । 16।

यही वे लोग हैं जिनके लिए परलोक में आग के सिवा कुछ नहीं और उन्होंने इस (लोक) में जो औद्योगिक काम किया होगा वह व्यर्थ हो जाएगा और जो कुछ भी वे किया करते थे ग़लत ठहरेगा । 17।

अतः क्या वह व्यक्ति जो अपने रब्ब की ओर से एक सुस्पष्ट युक्ति पर (स्थित) है और उसके पीछे उसका एक साक्षी आने वाला है और उससे पूर्व मूसा की पुस्तक मार्ग-दर्शक और कृपा स्वरूप मौजूद है, (वह झूठा हो सकता है ?) ये ही (उस प्रतिश्रुत रसूल के संबोध्य अंततः) उसे स्वीकार कर लेंगे । अतः (विरोधी) गुटों में से जो भी उसका इनकार करेगा तो उसका प्रतिश्रुत ठिकाना आग होगा । अतः इस विषय में तू किसी शंका में न पड़ । निःसन्देह यही तेरे रब्ब की ओर से सत्य है परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते । 18।

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े । यही लोग अपने रब्ब के समक्ष पेश किये

أَنْزِلَ بِعِلْمٍ اللَّهُوَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ⑩

مَنْ كَانَ يَرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِيَّتْهَا
تُؤْفَ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا
لَا يَبْخَسُونَ ⑪

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
الثَّارُ وَخَيْطٌ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَلِطْلُى مَا
كَانُوا إِعْمَلُونَ ⑫

أَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ وَيَشْلُوْهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمَنْ قَبْلَهُمْ كَتَبَ مُوسَى إِمَامًا
وَرَحْمَةً أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ
يُكَفِّرُ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالثَّارُ مَوْعِدُهُ
فَلَاتَّكُ فِي مُرْيَقَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ وَلَكُنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ⑬

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أُولَئِكَ يَعْرَضُونَ عَلَى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ

जाएंगे और साक्ष्य देने वाले कहेंगे, यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला था। सावधान ! अत्याचार करने वालों पर अल्लाह की लानत है । 119।

वे लोग जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (करना) चाहते हैं और वही परलोक का इनकार करने वाले हैं । 120।

यही वे लोग हैं जो धरती में (अल्लाह वालों को) कभी असमर्थ नहीं कर सकेंगे। और उनके लिए अल्लाह को छोड़ कर कोई और मित्र नहीं । 121। उनके लिए अज्ञाब को बढ़ा दिया जाएगा। न उन्हें कुछ सुनने की शक्ति होगी और न ही वे कुछ देख सकेंगे । 121।

यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और जो भी वे झूठ गढ़ा करते थे वह उनके हाथ से जाता रहा । 122।

निःसन्देह परलोक में वही सर्वाधिक घाटा उठाने वाले होंगे । 123।

निश्चित रूप से वे लोग जो ईमान लाये और उन्होंने नेक कर्म किये और वे अपने रब की ओर झुके। यही वे लोग हैं जो स्वर्गवासी हैं। वे उसमें सदा रहने वाले हैं । 124।

(इन) दोनों गिरोहों का उदाहरण अंधे और बहरे तथा खूब देखने वाले और खूब सुनने वाले के सदृश है। क्या ये दोनों

الْأَشْهَادُ هُوَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْأَنْعَمُ
كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ①

الْأَنْجَانُ يَصْدُدُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَيَبْغُونَهَا عَوْجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كُفَّارٌ ②

أُولَئِكَ لَمْ يَكُنُوا مُعْجِزِينَ فِي
الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ قُنْدُونَ اللَّهُ مِنْ
أُولَيَاءٍ يُطَعَّفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا
كَانُوا يَسْتَطِعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا
يُبَصِّرُونَ ③

أُولَئِكَ الْأَنْجَانُ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ④

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ
الْأَخْسَرُونَ ⑤

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
وَأَخْبَثُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑥

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَغْنَىٰ وَالْأَصْمَىٰ
وَالْبَصِيرُ وَالسَّمِيعُ ۚ هَلْ يَشْتَوِيْنَ

उदाहरण की दृष्टि से एक समान हो सकते हैं ? अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? 125। (रूप $\frac{2}{2}$)

और निःसन्देह हमने नूह को भी उसकी जाति की ओर भेजा था । (जिसने कहा) निश्चित रूप से मैं तुम्हारे लिए एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ । 126।

(और यह) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । निश्चित रूप से मैं तुम पर एक कष्टदायक दिन के अज्ञाब से डरता हूँ । 127।

अतः उसकी जाति में से उन मुखियाओं ने जिन्होंने इनकार किया कहा, कि हम तो तुझे केवल अपने समान ही एक मनुष्य समझते हैं । इसी प्रकार हम यह भी देखते हैं कि जिन लोगों ने तेरा अनुसरण किया है, सरसरी नज़र में वे हम में से निकृष्टतम लोग हैं । और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई श्रेष्ठता नहीं समझते बल्कि तुम्हें झूठा समझते हैं । 128।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! विचार तो करो कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक सुस्पष्ट युक्ति पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से कृपा प्रदान की है और यह बात तुम पर अस्पष्ट रह गई है । तो क्या हम बलपूर्वक तुम्हें उसका आज्ञाकारी बना सकते हैं जबकि तुम उससे धूणा करते हो ? 129।

और हे मेरी जाति ! इस पर मैं तुम से कोई धन नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो अल्लाह के सिवा किसी पर नहीं । और

۳۹۹

مَثَلًاٰ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ^{١٥}

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمَهُ أَتَيْنَا لَكُمْ
نَذِيرًا مُّبِينًا^{١٦}

أَنَّ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهُ أَنَّ أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابٌ يَوْمَ الْيَمِينِ^{١٧}

فَقَالَ الْمَلَائِكَةُ أَنَّ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا
نَرِبَكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نَرِبَكَ
الْبَعْلَكَ إِلَّا أَذِلِّينَ هُمْ أَرَادُنَا بَادِئَ
الرَّأْيِ وَمَا نَرِبَكَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
بِلْ نَظُنُّكُمْ كُذَبِينَ^{١٨}

قَالَ يَقُومٌ أَرَعَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ
مِنْ رَبِّيْ وَأَتَشْنَى رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ
فَعَمِيَّتْ عَلَيْكُمْ أَنْتُرِمَّ مَعْمُوهَا
وَأَنْتُمْ لَهَا كُرِهُونَ^{١٩}

وَيَقُومٌ لَا أَشْكُّ عَلَيْهِ مَا لَا^{٢٠}
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ

जो लोग ईमान लाये हैं मैं उनको कभी दुतकारने वाला नहीं । निःसन्देह वे लोग अपने रब्ब से भेंट करने वाले हैं । परन्तु मैं तुम्हें अज्ञानता बरतने वाले लोगों (के रूप में) देखता हूँ । 130 ।

और हे मेरी जाति ! यदि मैं इनको दुतकार दूँ तो मुझे अल्लाह से बचाने में कौन मेरी सहायता करेगा ? अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? 131 ।

और मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं । और न ही मैं अदृश्य (विषय) की जानकारी रखता हूँ । और न ही मैं कहता हूँ कि मैं एक फरिश्ता हूँ और न ही मैं यह कहता हूँ कि जिन लोगों को तुम्हारी आँखें तुच्छ और तिरस्कृत देखती हैं अल्लाह उन्हें कदापि कोई भलाई प्रदान नहीं करेगा । जो उनके दिलों में है उसे अल्लाह ही सर्वाधिक जानता है । (यदि मैं भी वह कहूँ जो तुम कहते हो) तब तो अवश्य मैं अत्याचारियों में हो जाऊँगा । 132 ।

उन्होंने कहा, हे नूह ! तूने हमसे झगड़ा किया और हमसे झगड़ने में बहुत बढ़ गया । अतः यदि तू सच्चों में से है तो जिसका तू हमें डरावा देता है अब उसे हमारे पास ले आ । 133 ।

उसने कहा, यदि अल्लाह चाहेगा तो वही उसे लिये हुए तुम्हारे पास आयेगा और तुम कभी (उसे) असमर्थ करने वाले नहीं बन सकते । 134 ।

الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ
وَلِكُنَّ أَرْبَعَمُ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ⑦

وَيَقُومُ مِنْ يَتَصَرَّفُ مِنَ الظُّلُمَاتِ
طَرَدُهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑧

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَرَائِنُ اللَّهِ وَلَا
أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لِرَبِّ مَلَكَ وَلَا
أَقُولُ لِلَّذِينَ تَرْدَرَى أَعْيُنُكُمْ لَنْ
يُؤْتَيْهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي
أَنفُسِهِمْ ۖ إِنَّمَا إِذَا لَمْ يَأْتِ الظَّلِيمُونَ ⑨

قَالُوا يَوْمَ حَقٌّ جَدَلْتُمَا فَأَكْرَرْتَ حِدَّاتَنا
فَأَتَتَابِعَمَا تَعْدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑩

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيْكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ
وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ⑪

और यदि अल्लाह चाहे कि तुम्हें पथभ्रष्ट ठहरा दे तो चाहे मैं तुम्हें उपदेश देने का इरादा भी करूँ तो मेरा उपदेश तुम्हें कोई लाभ नहीं देगा । वह तुम्हारा रब्ब है और तुम्हें उसी की ओर लौटाया जायेगा । 135।

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे (अपनी ओर से) गढ़ लिया है ? तू कह दे कि यदि मैं ने इसे गढ़ लिया होता तो मुझ पर ही मेरे अपराध का दुष्परिणाम पड़ता । और जो तुम अपराध किया करते हो मैं उससे बरी हूँ । 136। (रूू ٣)

और नूह की ओर वहइ की गई कि तेरी जाति में से जो ईमान ला चुका उसके सिवा कोई और ईमान नहीं लायेगा । अतः जो वे करते हैं उस पर खेद न कर । 137।

और हमारी आँखों के सामने और हमारी वहइ के अनुसार नौका बना और जिन लोगों ने अत्याचार किया उनके बारे में मुझ से कोई बात न कर । निश्चित रूप से वे दुबोये जाने वाले हैं । 138।

और वह नौका बनाता रहा और जब कभी उसकी जाति के मुखियाओं का उसके पास से गुज़र हुआ तो वे उसकी हँसी उड़ाते रहे । उसने कहा, यदि तुम हम से हँसी करते हो तो निश्चित रूप से हम भी तुम से उसी प्रकार हँसी करेंगे जैसे तुम कर रहे हो । 139।

अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे कि वह कौन है जिस पर वह अज्ञाब आएगा जो

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصْحِيَّةُ إِنْ أَرْدَتُ
أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ
أَنْ يُعَذِّبَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ
تُرْجَمَوْنَ ⑩

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْهِ طَبْعٌ إِنْ افْتَرَيْهُ
فَعَلَىٰ إِحْرَامٍ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا
تَبَرِّمُونَ ⑪

وَأَوْحَىٰ إِلَيْ تَوْجِ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ
قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ أَمَنَ فَلَا يَتَبَيَّنُ
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ⑫

وَاصْبِعِ الْفُلْكَ بِأَعْيِنِنَا وَوَحْيَنَا
وَلَا تَخَاطِبِ فِي الظَّالِمِينَ ظَلَمُوا
إِنَّهُمْ مُخْرِقُونَ ⑬

وَيَصْبِعِ الْفُلْكَ وَكُلُّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأْ
مِنْ قَوْمِهِ سَخْرُوا مِنْهُ طَقَالِ إِنْ
سَخْرُوا مِنَافِلًا أَنْسَخْرُ مِنْكُمْ كَمَا
سَخْرُونَ ⑭

فَسُوفَ تَعْلَمُونَ مِنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ

उसे अपमानित कर देगा और उस पर एक ठहर जाने वाला अज्ञाब उतरेगा । 40।

यहाँ तक कि जब हमारा निर्णय आ पहुँचा और भारी उफान के साथ सोत फूट पढ़े तो हमने (नूह से) कहा कि इस (नौका) में प्रत्येक (आवश्यक पशुओं) में से जोड़ा-जोड़ा और अपने परिवार को भी सवार कर । सिवाय उसके जिसके बिरहद्दु निर्णय हो चुका है और (उसे भी सवार कर) जो ईमान लाया है । और उसके साथ थोड़े लोगों के सिवा और कोई ईमान नहीं लाया । 41।*

और उसने कहा कि इस में सवार हो जाओ । अल्लाह के नाम के साथ ही इसका चलना और ठहरना है । निःसन्देह मेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 42।

और वह (नौका) उन्हें लिये हुए पहाड़ों के समान लहरों में चलती रही । और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा जबकि वह एक पृथक स्थान में था, हे मेरे पुत्र ! हमारे साथ सवार हो जा और काफिरों के साथ न हो । 43।

उसने उत्तर दिया, मैं शीघ्र ही एक पहाड़ पर आश्रय (दृঁढ) लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा । उसने कहा, आज के दिन अल्लाह के निर्णय से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह कृपा करे (केवल वही बचेगा) । अतः उनके बीच

يَعْزِيزٍ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ⑥

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ أَمْرًا نَا وَفَارَ الشَّنُورُ قُلْنَا
اَحْمَلْ قِيَمًا مِّنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
وَآهَلَكَ إِلَّا مَنْ سَلَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ
أَمْنَ ۖ وَمَا آمَنَ مَعْهَةً إِلَّا قَلِيلٌ ⑥

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِيَهَا
وَمَرْسَهَا ۖ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑦

وَهِيَ تَجْرِيُّ يَهُمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ
وَنَادَى نُوحٌ بْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ شَيْئَيْ
إِذْ كَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكُفَرِيْنَ ⑧

قَالَ سَاوِيَّ إِلَى جَبَلٍ يَعْصِمُ مِنَ
الْمَاءِ ۖ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ
إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۖ وَحَالَ بِيَنَهُمَا الْمَوْجُ

* यहाँ प्रत्येक पशु का जोड़ा अभिप्रेत नहीं है । अन्यथा नौका तो पशुओं के लिए ही अपर्याप्त थी । यहाँ तात्पर्य यह है कि मनुष्य के लिए जो आवश्यक पशु हैं उनके जोड़ों में से दो-दो को साथ ले लो।

एक लहर आ गई और वह डूबोये जाने वालों में से बन गया । 44।

और कहा गया कि हे धरती ! अपना पानी निगल जा । और हे आकाश ! थम जा । और पानी सुखा दिया गया और निर्णय पूरा कर दिया गया । और वह (नौका) जूटी (पहाड़) पर ठहर गई । और कहा गया कि अत्याचारी लोगों का सर्वनाश हो । 45।

और नूह ने अपने रब्ब को पुकारा और कहा, हे मेरे रब्ब ! निश्चित रूप से मेरा पुत्र भी मेरे परिवार में से है । और तेरा वादा अवश्य सच्चा है । और तू निर्णय करने वालों में से सर्वोत्कृष्ट है । 46।

उसने कहा, हे नूह ! वह तेरे परिवार में से कदापि नहीं । वह तो सिर से पैर तक असत् कर्म (करने वाला) था। अतः मुझ से वह न माँग जिसकी तुझे कोई जानकारी नहीं । मैं तुझे उपदेश देता हूँ ऐसा न हो कि तू अज्ञानों में से हो जाये । 47।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निश्चित रूप से मैं इस बात से तेरी शरण-याचना करता हूँ कि तुझ से वह बात पूछूँ जिस (के गुप्त रखने के कारण) का मुझे कोई ज्ञान नहीं । और यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया नहीं की तो मैं हानि उठाने वालों में से हो जाऊँगा । 48।

(तब) कहा गया, हे नूह ! तू हमारी ओर से शांति और उन बरकतों के साथ उत्तर

فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ⑩

وَقَيْلَ يَأْرُضُ ابْلَعُ مَاءَكَ وَسَمَاءَكَ
أَقْلَعُ وَغَيْضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ
وَاسْتَوْثَ عَلَى الْجُوَدِيَّ وَقَيْلَ بَعْدًا
لِلْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ ⑪

وَنَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ أَبْنِي
مِنْ أَهْلِنِ وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ
أَحْكَمُ الْحَكِيمِينَ ⑫

قَالَ يَوْمَ حِادَّةٌ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِذَا
عَمِلُ غَيْرَ صَالِحٍ فَلَا تَسْتَدِلُنَّ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعْظَمُكَ أَنْ تَكُونَ
مِنَ الْجَاهِلِينَ ⑬

قَالَ رَبِّي إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَشَكَكَ مَا
لَيْسَ لِيْ فِيهِ عِلْمٌ وَلَا أَتَعْفَرُ
وَتَرْحَمِنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑭

قَيْلَ يَنْوَحُ اهْبِطْ بِسَلِيمٍ مَنَّا وَبَرَكَتٍ

जो तुझ पर और उन जातियों पर भी हैं
जो तेरे साथ (सवार) हैं । कुछ और
जातियाँ (भी) हैं जिन्हें हम अवश्य लाभ
पहुँचाएँगे । (परन्तु) फिर उन्हें हमारी
ओर से पीड़ाजनक अजाब पहुँचेगा । 149।

यह उन अदृश्य समाचारों में से है जिन्हें
हम तेरी ओर बहादूर कर रहे हैं । इससे पूर्व
तू इसे नहीं जानता था और न तेरी जाति
(जानती थी) । अतः धैर्य धारण कर ।
निश्चित रूप से मुत्कियों का ही (शुभ)
अंत होता है । 150। (रुक् $\frac{4}{4}$)

और आद (जाति) की ओर उनके भाई
हूद को (हमने भेजा) । उसने कहा, हे
मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना
करो । उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य
नहीं और तुम तो केवल झूठ गढ़ने वाले
हो । 151।

हे मेरी जाति ! इस (सेवा) के लिए मैं
तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा
प्रतिफल तो उस के सिवा किसी पर नहीं
जिसने मुझे पैदा किया । अतः क्या तुम
बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 152।

और हे मेरी जाति ! अपने रब से क्षमा
याचना करो फिर प्रायश्चित करते हुए
उसी की ओर झुको । वह तुम पर निरंतर
वृष्टिकर बादल भेजेगा और तुम्हारी
शक्ति में और शक्ति वृद्धि करेगा । और
तुम अपराध करते हुए पीठ फेर कर चले
न जाओ । 153।

उन्होंने कहा, हे हूद ! तू हमारे पास कोई
स्पष्ट प्रमाण नहीं लाया है और हम

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أَمْمٍ مِّمْنُ مَعَكَ طَوَّافٌ
سَمْتَهُمْ نَحْنُ يَمْسِهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ
الْيَوْمِ ⑩

تِلْكَ مِنْ آنِبَاءِ الرَّحْمَنِ تَوْجِهُ إِلَيْكَ مَا
كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ
هُدًىٰ مُّقَصِّرٌ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَقْبِلِينَ ١٠

وَإِنَّ عَادًاٰ حَاهِمٌ هُوَدًاٰ قَالَ يَقُولُمْ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِّنَ الْوَغْيَرِ إِنَّ
أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ⑩

يَقُولُمْ لَا أَنْكِلُكُمْ عَلَيْوَ أَجْرًاٰ إِنَّ
أَجْرِيٰ إِلَّا عَلَى الْذِي فَطَرَنِيٰ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑩

وَيَقُولُمْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ نَحْنُ تُوبُوا إِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مُّدْرَارًا
وَيَرِدُكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ
وَلَا تَسْأَلُو أَمْجُرِ مِنِّيٰ ⑩

قَالُوا إِلَيْهُ دُمَّا جُنْتَنَا بِيَنَّةٍ وَمَا حَنْ

केवल तेरे कहने पर अपने उपास्यों को छोड़ने वाले नहीं और हम तुझ पर कदापि ईमान लाने वाले नहीं हो सकते । 154।

हम तो इसके सिवा कुछ नहीं कहते कि तुझ पर हमारे उपास्यों में से किसी ने कोई दुष्प्रभाव डाल दिया है । उसने कहा, निश्चित रूप से मैं अल्लाह को साक्षी ठहराता हूँ और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उनसे विरक्त हूँ जिन्हें तुम (अल्लाह का) साक्षीदार ठहराते हो । 155।

(अर्थात्) उसके सिवा । अतः तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध चालें चलो । फिर मुझे कोई छूट न दो । 156।

निश्चित रूप से मैं अल्लाह पर ही भरोसा करता हूँ जो मेरा रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । चलने फिरने वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं (जिसे) वह उसके माथे के बालों से पकड़े हुए न हो । निःसन्देह मेरा रब्ब सन्मार्ग पर (मिलता) है । 157।

अतः यदि तुम फिर जाओ तो जिन बातों के साथ मैं तुम्हारी ओर भेजा गया था वह सब मैं तुम्हें पहुँचा चुका हूँ और मेरा रब्ब तुम्हारे अतिरिक्त किसी और जाति को उत्तराधिकारी बना देगा और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे । निःसन्देह मेरा रब्ब हर चीज़ का रक्षक है । 158।

अतः जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने हूद और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे अपनी कृपा से बचा

بِتَارِكَةِ الْهَمَنَاعِنْ قُولِكَ وَمَا تَحْنَنْ
لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ⑩

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَى لَكَ بَعْضُ الْهَمَنَاعِنْ
بِسُوْءٍ ۝ قَالَ إِنِّي أَشْهِدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُوا
آتِيَ بِرِئَيْسٍ مِّمَّا تَشْرِكُونَ ۝

مِنْ دُونِهِ فَكَيْدُونَ جَمِيعًا لَّهُ
لَا يُنْظَرُونَ ⑩

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّيْنَ وَرَبِّيْكُمْ ۝
مَا مِنْ دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ أَخْذُ بِنَاصِيَّهَا
إِنَّ رَبِّيْنَ عَلَى صِرَاطِ مُّسْتَقِيمٍ ⑩

فَإِنْ تَوَلُّوْنَا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أَرْسَلْتُ بِهِ
إِنِّيْكُمْ ۝ وَيَسْتَحْلِفُ رَبِّيْنِ قَوْمًا غَيْرَ كُمْ
وَلَا تَصْرُّوْنَهُ شَيْئًا ۝ إِنَّ رَبِّيْنَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ⑩

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوَدًا وَالَّذِينَ
أَمْنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنْنَا ۝ وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ

लिया और हमने उन्हें कठिन अज्ञाव से मुक्ति प्रदान की । 59।

और ये हैं आद (जाति के लोग) । उन्होंने अपने रब्ब की आयतों का इनकार कर दिया और उसके रसूलों की अवज्ञा की और प्रत्येक घोर अत्याचारी (और) उद्धण्डी की आज्ञा का अनुसरण करते रहे । 60।

और इस लोक में भी और क्यामत के दिन भी उनके पीछे लानत लगा दी गई। सावधान ! निश्चित रूप से आद (जाति) ने अपने रब्ब का इनकार किया। सावधान ! हूद की जाति आद का सर्वनाश हो । 61। (रुक्त ५)

और समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) । उसने कहा है मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। उसी ने धरती से तुम्हें विकसित किया और तुम्हें उसमें बसाया। अतः उससे क्षमा याचना करते रहो, फिर प्रायश्चित्त करते हुए उसी की ओर झुको। निःसन्देह मेरा रब्ब समीप है (और दुआ) स्वीकार करने वाला है । 62।

उन्होंने कहा, हे सालेह ! इससे पूर्व निश्चित रूप से तू हमारे बीच आशाओं का केन्द्र था। क्या तू हमें उसकी पूजा करने से रोकता है जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे। और जिस ओर तू हमें बुलाता है उसके बारे में निश्चित रूप से हम बेचैन कर देने वाली शंका में (पड़े) हैं । 63।

عَذَابٌ غَلِيلٌ ①

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَمُوا
رُسُلَهُ وَأَتَّبَعُوا أَمْرَكُلٍ جَبَارٍ عَنِيدٍ ②

وَأَتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّرْبِيَا لَعْنَةً وَيَوْمًا
الْقِيَامَةِ ۖ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ
أَلَا بَعْدَ إِعْادِ قَوْمٍ هُوَ دِي ۖ ③

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَلِحًا ۖ قَالَ يَقُومُ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٌ غَيْرُهُ ۖ هُوَ
أَنْشَاكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَأَسْعَمْكُمْ
فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۖ
إِنَّ رَبِّيْ قَرِيبٌ تَحِيْبٌ ④

قَالُوا إِصْلَحْ قَدْ كُنْتَ فِي نَا مَرْجُوْا قَبْلَ
هَذَا آتَتْهُنَا آنَّ نَعْبُدُ مَا يَعْبُدُ أَبَا وَنَا
وَإِنَّا نَفْ شَلِّيْ مَمَاتَدْعُونَا إِلَيْهِ
مُرِيْبٌ ⑤

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझे बताओ तो सही कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक स्पष्ट तर्क पर स्थित हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से कृपा प्रदान की हो, यदि मैं उसकी अवमानना करूँ तो कौन मुझे अल्लाह से बचाने में मेरी सहायता करेगा । अतः तुम तो मुझे घाटे के अतिरिक्त किसी और बात में नहीं बढ़ाओगे । 164 ।

और हे मेरी जाति ! अल्लाह के (रास्ते में समर्पित) यह ऊँटनी तुम्हारे लिए एक चिह्न है । अतः इसे (अपने हाल पर) छोड़ दो कि यह अल्लाह की धरती में चरती फिरे और इसे कोई कष्ट न पहुँचाओ । अन्यथा एक शीघ्र पहुँचने वाला अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा । 165 ।

फिर (भी) उन्होंने उस की कूँचें काट दीं तो उसने कहा, अपने घर में बस तीन दिन तक अस्थायी लाभ उठा लो । यह एक वादा है जिसे झुठलाया जा नहीं सकता । 166 ।

अतः जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे, अपनी कृपा के साथ मुक्ति प्रदान की और उस दिन के अपमान से बचा लिया । निःसन्देह तेरा रब्ब ही स्थायी शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है । 167 ।

और जिन्होंने अत्याचार किया उन्हें एक तेज़ धमाकेदार आवाज़ ने आ पकड़ा ।

قَالَ يَقُومٌ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِنْ رَبِّيْ وَأَشْنَى مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِيْ
مِنْ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتَهُ فَمَا تَرْيِدُونِيْ
غَيْرَ تَخْسِيْرِيْ ⑯

وَيَقُومُ هُذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ أَيَّةٌ فَدَرُوْهَا
تَأْكُلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمُسُوهَا بِسُوءٍ
فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ⑯

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِيْ دَارِكُمْ
ثَلَاثَةَ آيَاتِهِ ذِلِّكَ وَعْدٌ غَيْرُ مُكَذُّبٍ ⑯

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرِنَا نَجَّيْنَا صِلْحًا وَالَّذِينَ
أَمْتَوْعَمُكُمْ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خَرْزِيْ
يُؤْمِنُونَ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ⑯

وَأَخْذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوْا

अतः वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े
रह गये । 168।

मानों वे उनमें कभी बसे न थे ।
सावधान ! समूद ने अपने रब्ब का
इनकार किया । सावधान ! समूद का
सर्वनाश हो । 169। (रुक् ६)

और निःसन्देह इब्राहीम के निकट हमारे
दूत सु-समाचार लेकर आये । उन्होंने
सलाम कहा । उसने भी सलाम कहा
और अविलंब उनके पास एक भूना हुआ
बछड़ा ले आया । 170।

फिर जब उसने देखा कि उनके हाथ उस
(भोजन) की ओर नहीं बढ़ रहे तो उसने
उन्हें अजनबी समझा और उन से भय का
आभास किया । उन्होंने कहा, भय न
कर निश्चित रूप से हमें लूट की जाति
की ओर भेजा गया है । 171।

और उसकी पत्ती (पास ही) खड़ी थी ।
अतः वह हँसी तो हमने उसे इसहाक का
सु-समाचार दिया और इसहाक के
पश्चात् याकूब का भी । 172।

उसने कहा, हाय मेरा दुर्भाग्य, क्या मैं
बच्चा जनूँगी !! जबकि मैं एक बुद्धिया
हूँ और यह मेरा पति बूढ़ा है ।
निश्चित रूप से यह तो बड़ी विचित्र
बात है । 173।

उन्होंने कहा, क्या तू अल्लाह के निर्णय
पर आश्चर्य व्यक्त करती है ? हे घर
वालो ! तुम पर अल्लाह की कृपा और
उसकी बरकतें हों । निःसन्देह वह
प्रशंसनीय और गौरवशाली है । 174।

فِي دِيَارِهِمْ جِنَّمِينَ ①

كَانَ لَمْ يَعْنُوا فِيهَا أَلَا إِنَّهُمْ وَدًا
كَفَرُوا رَبَّهُمْ أَلَا بَعْدًا لَتَمُودُ ۝

وَلَقَدْ جَاءَتْ رَسُلًا إِلَيْهِمْ
بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا سَلَّمًا ۝ قَالَ سَلِّمُ
فَمَا أَبْرَأَتْ أَنْ جَاءَءِ بِعِجْلٍ حَتَّىٰ ۝

فَلَمَّا رَأَاهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِنَّ كَرِهُ
وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِفَةً ۝ قَالُوا لَا تَخْفَ
إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ قَوْمٌ لَوْطٌ ۝

وَأَمْرَأُهُ قَابِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا
بِإِسْحَاقَ ۝ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ۝

قَالَتْ يُوَيْلَتِي إِلَيْدُو أَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا
بَعْلِي شَيْخًا ۝ إِنَّ هَذَا الشَّيْءُ عَجِيبٌ ۝

قَالُوا أَنْجَجِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ وَرَحْمَتِ اللَّهِ
وَبَرَكَاتِهِ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۝ إِنَّهُ
حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۝ ۱۶

फिर जब इब्राहीम से भय दूर हुआ और उसके पास सु-समाचार आ गया तो वह हमसे लूत की जाति के संबंध में बहस करने लगा । 75।

निःसन्देह इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदयी (और हमारे समक्ष) झुकने वाला था । 76।

हे इब्राहीम ! इस (बात) से पीछे हट जा । निश्चित रूप से तेरे रब्ब का निर्णय हो चुका है और उन पर एक न टाला जाने वाला अज्ञाब अवश्य आयेगा । 77।

और जब हमारे दूत लूत के निकट पहुँचे तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और उनके कारण बहुत उदास हुआ और कहा, यह बड़ा कठिन दिन है । 78।

और उसकी जाति उसकी ओर दौड़ी चली आई । जबकि इससे पूर्व भी वे कु-कर्म किया करते थे । उसने कहा, हे मेरी जाति ! ये मेरी पुत्रियाँ हैं । ये तुम्हारे निकट भी बहुत पवित्र हैं । अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मुझे मेरे अतिथियों के बीच अपमानित न करो । क्या तुम में एक भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं ? । 79।

उन्होंने (बात को मरोड़ते हुए) उत्तर दिया : तू तो भली-भाँति जानता है कि तेरी पुत्रियों के विषय में हमारा कोई अधिकार नहीं और निश्चित रूप से तू उस भी जानता है जो हम चाहते हैं । 80।*

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْغُ
وَجَاءَهُنَّةُ الْمُشْرِكِينَ يَجَادِلُنَّا فِي قَوْمٍ لَّوْطٍ

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَقَاهُ مُنِيبٌ ⑦

لَيَابْرَاهِيمَ أَغْرِضُ عَنْ هَذَا ۖ إِنَّهُ
قَدْ جَاءَ أَمْرَ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ أَنْتَهُمْ
عَذَابٌ عَيْرُ مَرْدُودٍ ⑧

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسْلَنَا لَوْطًا سَيِّعَ بِهِمْ
وَصَاقَ بِهِمْ ذُرْعًا ۖ وَقَالَ هَذَا يَوْمُ
عَصِيَّبٌ ⑨

وَجَاءَهُنَّةُ قَوْمَهُ يَهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ
قَبْلِ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۖ قَالَ يَقُولُ
هُوَ لَا يُؤْتَقُ هُنَّ أَظْهَرُ لَكُمْ فَأَنْقَلَوْا
اللَّهُ وَلَا تُخْرُقُنَّ فِي صَيْفِي ۖ أَلَيْسَ
إِنَّمَّا رَجُلٌ رَّشِيدٌ ⑩

قَالُوا لَقَدْ عِلِّمْتَ مَا لَنَا فِي بَيْتِكَ مِنْ حَقِّيٍّ
وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نَرِيدُ ⑪

* आयत संख्या 78-80 : कई भाष्यकारों का यह कहना है कि हज़रत लूत अलै. ने अपनी जाति के →

उसने कहा, काश ! तुम्हारा सामना करने की मुझ में शक्ति होती अथवा मैं किसी सशक्त सहारे का आश्रय ले पाता । 181।

उन्होंने कहा, हे लूट ! निश्चित रूप से हम तेरे रब्ब के भेजे हुए हैं । ये लोग कदापि तुझ तक पहुँच नहीं सकेंगे । अतः रात्रि के एक भाग में अपने परिवार समेत घर से निकल जा और तुम में से कोई मुझ कर न देखे । परन्तु तेरी पत्नी, निःसन्देह उस पर वही विपत्ति आयेगी जो उन पर आने वाली है । उन का प्रतिश्रुत समय प्रातः काल है । क्या प्रातः काल निकट नहीं है ? 182।

अतः जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने उस (बस्ती) को उलट-पुलट कर दिया और उस पर हमने परत दर परत सूखी मिट्टी से बने पत्थरों की बारिश बरसा दी । 183।

जो तेरे रब्ब के निकट चिह्नित किये हुए थे । और यह (बर्ताव) अत्याचारियों से दूर नहीं । 184। (रुक् 7)

और मद्यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (हमने भेजा) उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । उसके सिवा तुम्हारा

قَالَ لَوْأَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ أُوْتَ إِلَى
رُكْنٍ شَدِيدٍ ⑩

قَالَوْا يَا لُوَظَ إِنَّا رُسُلٌ رَّبِّكَ لَنْ يَصْلُوَا
إِلَيْكَ فَأَسْرِرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الْأَيْمَنِ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا مَرَأَتُكَ
إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ ۝ إِنَّ
مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۝ أَلَيْسَ الصُّبْحُ
بِقَرِيبٍ ⑪

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِيلٍ
مَّضْدُودٍ ⑫

مَسْوَمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هُوَ مِنْ
الظَّلِيمِينَ بِعَيْدٍ ⑬

وَإِلَى مَذْيَنَ أَخَاهُمْ شَعِيبًا ۝ قَالَ يَقُومُ
أَعْبُدُ وَاللَّهُ مَا لَكُمْ مِّنَ الْوَعِيرَةِ ۝ وَلَا

←समझ अपनी पुत्रियों को पेश किया था, यह ठीक नहीं है । (ऐसी सोच से अल्लाह बचाये) वास्तविकता यह है कि हजरत लूट अलै. का इनकार करने के पश्चात उनकी जाति यह सोचती थी कि संभवतः अब यह बाहर से लोग बुला कर हमारे विरुद्ध कोई पड़यन्त्र रच रहा है । इसलिए हजरत लूट अलै. ने अपनी जाति को शर्म दिलाई कि मेरी पुत्रियाँ तुम्हारे घरों में ब्याही हुई हैं । ऐसे में तुम्हारा अनिष्ट चाहते हुए मैं तुम्हारे विरुद्ध कैसे कोई पड़यन्त्र रच सकता हूँ ?

कोई उपास्य नहीं और नाप-तौल में कमी न किया करो । निश्चित रूप से मैं तुम्हें धनवान देखता हूँ और मैं तुम पर एक घेराव कर लेने वाले दिन के अज्ञाब से डरता हूँ । 185।

और हे मेरी जाति ! नाप और तौल को न्यायपूर्वक पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीजें कम करके न दिया करो और उपद्रवी बनकर धरती में अशांति न फैलाओ । 186।

यदि तुम (सच्चे) मोमिन हो तो अल्लाह की ओर से (व्यापार में) जो कुछ बचता है वही तुम्हरे लिए उत्तम है । और मैं तुम पर निरीक्षक नहीं हूँ । 187।

उन्होंने कहा, हे शुएब ! क्या तेरी नमाज तुझे आदेश देती है कि हम उसे छोड़ दें जिस की हमारे पूर्वज उपासना किया करते थे । अथवा हम अपनी इच्छानुसार अपनी धन-सम्पत्तियों का (उपयोग न) करें । निश्चित रूप से तू अवश्य बड़ा सहनशील (और) बुद्धिमान (बना फिरता) है । 188।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! मुझे बताओ तो सही कि यदि मैं अपने रब्ब की ओर से एक स्पष्ट युक्ति पर हूँ और वह मुझे अपनी ओर से पवित्र जीविका प्रदान करता है (क्या फिर भी मैं वही कहूँ जो तुम चाहते हो ?) जबकि मैं नहीं चाहता जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ, स्वयं मैं उसे करने लग जाऊँ । मैं तो केवल सामर्थ्यनुसार सुधार करना

تَقْصُو الْمِكَيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنَّ
أَرْبَكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنَّ أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ لَّمْ يُحِيطُ^⑩

وَيَقُومِ أُوْفُو الْمِكَيَالَ وَالْمِيزَانَ
بِالْقُسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءً هُنَّ
وَلَا تَعْنَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ^⑪

بِقَيْسَ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِينَ هُوَ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِظٍ^⑫

قَالُوا إِنَّ شَيْئَكَ أَصْلُوتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ
تَنْتَرِكَ مَا يَعْبُدُ أَبَا وَنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي
أَمْوَالِنَا مَا نَشَوْا إِنَّكَ لَا كُنْتَ الْحَلِيمُ
الرَّشِيدُ^⑬

قَالَ يَقُومِ أَرْعَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا
أَرِيدُ أَنْ أَحَاكِلَ فَكَمْ إِلَى مَا أَنْهَكَمْ
عَنْهُ إِنْ أَرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا

चाहता हूँ। और अल्लाह के समर्थन के सिवा मुझे कोई सहायता प्राप्त नहीं। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर झुकता हूँ। 189।

और हे मेरी जाति ! मेरी शत्रुता तुम्हें कदापि ऐसी बात पर आमादा न करे कि तुम पर भी वैसी विपत्ति आ जाये, जैसी नूह की जाति और हूद की जाति तथा सालेह की जाति पर आई थी। और लूट की जाति भी तुम से कुछ दूर नहीं। 190।

और अपने रब्ब से क्षमायाचना करो। फिर प्रायशिचित करते हुए उसी की ओर झुको। निःसन्देह मेरा रब्ब बार-बार दया करने वाला (और) बहुत प्रेम करने वाला है। 191।

उन्होंने कहा, हे शुणेब ! तू जो कहता है उसमें से बहुत सा हम समझ नहीं सकते। जबकि तुझे हम अपने बीच बहुत दुर्बल देखते हैं और यदि तेरा समुदाय न होता तो हम तुझे अवश्य संगसार कर देते और हमारे सामने तू कोई प्रभुत्व नहीं रखता। 192।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! क्या मेरा समुदाय तुम्हारे निकट अल्लाह से अधिक शक्तिशाली है और तुम ने उसे एक महत्वहीन वस्तु समझ कर पीठ पीछे फेंक रखा है। जो तुम करते हो निःसन्देह मेरा रब्ब उसे धेरे हुए है। 193। और हे मेरी जाति ! तुम अपने स्थान पर जो कर सकते हो करते रहो। निश्चित

اَسْتَطْعُتُ وَمَا تَوْفِيقٌ لِّا بِاللَّهِ
عَلَيْهِ تَوْكِلُتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ⑩

وَيَقُومُ لَا يَجِدُ مَنْكُمْ شَقَاقٌ أَنْ
يُصِيبَنِّكُمْ مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمًا نُوحَ أَوْ
قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَلِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ
مِّنْكُمْ بِيَعْنَى ⑪

وَاسْتَغْفِرُ رَبَّكُمْ لَهُ تَوْبَةٌ إِلَيْهِ ۝
رَبِّي رَحِيمٌ وَّدُودٌ ⑫

قَالَوْا يَا شَعِيبَ مَا نَفَقَهُ كَثِيرٌ أَقِمْ
تَقْوُلَ وَإِنَّا نَرِيكَ فِينَا صَعِيفًا وَلَوْلَا
رَهْطَكَ لَرَجْلَنَا ۝ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا
بِعَزِيزٍ ⑬

قَالَ يَقُومٌ أَرْهُطُّ أَعْزُ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ أَعْظَمُ مُؤْمِنٌ وَرَاءَ كَمْ ظَهَرَ ۝
إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ⑭

وَيَقُومُ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانِكُمْ أَنِّي

रूप से मैं भी करता रहूँगा। तुम शीघ्र ही जान लोगे कि किसे वह अज्ञाब आ पकड़ेगा जो उसे अपमानित कर देगा और (तुम जान लोगे कि) कौन है वह जो ज़ूठा है। और दृष्टि रखो, मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ दृष्टि रखने वाला हूँ। 1941

और जब हमारा निर्णय आ गया तो हमने शुएब को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे अपनी कृपा से मुक्ति प्रदान की। और जिन लोगों ने अत्याचार किया था उन्हें एक धमाकेदार अज्ञाब ने पकड़ लिया। अतः वे अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये। 1951

मानों वे उनमें कभी बसे ही न थे। सावधान! जिस प्रकार समूद की जाति विनष्ट हुई, उसी प्रकार मद्यन का भी सर्वनाश हो। 1961 (रुकू - ४)

और निश्चित रूप से हमने मूसा को अपने चिह्नों और एक सुस्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा। 1971

फिरौन और उसके मुखियाओं की ओर। तो उन्होंने फिरौन के आदेश का अनुसरण किया, जबकि फिरौन का आदेश उचित न था। 1981

क़यामत के दिन वह अपनी जाति के आगे आगे चलेगा और उन्हें आग के घाट पर ला उतारेगा और जिस घाट पर ले जाया जाता है (वह) बहुत ही बुरा है। 1991

और इस (लोक) में भी और क़यामत के दिन भी उनके पीछे ला'नत लगा दी

عَامِلٌ سُوْفَ تَعْلَمُونَ^١ مَنْ يَأْتِيهِ
عَذَابٌ يُخْرِيْهُ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ^٢
وَارْتَقِبُوا إِلَىٰ مَعْكُمْ رَقِيبٌ^٣

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَيَّنَا شَعِيْبًا وَالَّذِينَ
أَمْتَوْا مَعَهُ بِرَحْمَةِ مِنْا وَأَخْذَذْتِ الَّذِينَ
ظَلَمُو اَلصَّيْحَةَ فَاصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ
جِئْشِينَ^٤

كَانَ لَمْ يَغْنُوا فِيهَا^٥ اَلَا بَعْدَ الْمَذْيَنَ
كَمَا بَعْدَ ثَمُودٍ^٦

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِاِلْيَتِنَا وَسُلْطَنِ
مُّبِينِ^٧

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَائِيْهِ فَاتَّبَعُوا اَمْرَ
فِرْعَوْنَ^٨ وَمَا اَمْرَ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ^٩

يُقْدَمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمْ
الثَّارَ^{١٠} وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ^{١١}

وَأَتَيْعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً^{١٢} وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ^{١٣}

गई। क्या ही बुरा अनुदान है जो दिया गया। 100।

यह उन बस्तियों के समाचारों में से (एक समाचार) है जिस का वृत्तान्त हम तेरे समक्ष वर्णन करते हैं। उनमें से कई (अब तक) विद्यमान हैं और कई मलियामेट हो चुकी हैं। 101।

और हमने उनपर अत्याचार नहीं किया बल्कि उन्होंने स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार किया। अतः जब तेरे रब्ब का निर्णय आ गया तो उनके बैठके कुछ भी काम न आ सके जिनको बैठे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे और उन्होंने उन्हें तबाही के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाया। 102।

और तेरा रब्ब बस्तियों की तभी पकड़ करता है जब वे अत्याचारी होती हैं। उसकी पकड़ इसी प्रकार होती है। निःसन्देह उसकी पकड़ बड़ी कष्टदायक (और) बहुत कठोर है। 103।

जो व्यक्ति परकालीन आज्ञाव से डरता हो निश्चित रूप से उसके लिए इस बात में एक वृहत निहार है। यह वह दिन है जिसके लिए लोगों को इकट्ठा किया जाएगा। और यह वह दिन है जिसकी गवाही दी गई है। 104।

और हम उसे एक गिने हुए निश्चित समय तक ही पीछे ढालेंगे। 105।

जिस दिन वह आ जाएगा तो कोई भी जान उसकी आज्ञा के बिना बात न कर

بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ⑩

ذَلِكَ مِنْ أَبْيَاءِ الْقَرَىٰ نَقْصَهُ عَلَيْكَ مِنْهَا
قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ⑪

وَمَا أَظْلَمْنَاهُمْ وَلِكُنْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ
فَمَا آغْنَتْ عَنْهُمْ أَنفُسُهُمْ الَّتِي يَدْعُونَ
مِنْ دُورِنَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ لَمَّا جَاءَهُمْ رَأْمَرْ
رِيْكٌ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَشْبِيْبٍ ⑫

وَكَذِلِكَ أَخْدُرِيْكَ إِذَا أَخْدَدَ الْقَرَىٰ
وَهِيَ طَالِمَةٌ إِنَّ أَخْدَدَهُ أَلْيُورْ شَدِيدٌ ⑬

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَيْلَةً لِمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْآخِرَةِ ذَلِكَ يَوْمُ مَجْمُوعَ لَهُ
النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمُ مَسْهُودٌ ⑭

وَمَا تَوْجِرُهُ إِلَّا لِأَجْلِ مَعْدُودٍ ⑮
يَوْمٌ يَأْتِ لَا تَكُلُّ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ⑯

सकेगी। अतः उनमें से भाग्यहीन भी हैं और भाग्यशाली भी हैं। 106।

अतः वे लोग जो भाग्यहीन हुए तो वे आग में होंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना और चीखना है। 107।

जब तक आकाश और धरती शेष हैं वे उसमें रहने वाले हैं, सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे। निःसन्देह तेरा रब्ब जिस की इच्छा करता उसे अवश्य करके रहता है। 108।

और वे लोग जो भाग्यशाली बनाये गये तो वे स्वर्ग में होंगे जब तक कि आकाश और धरती शेष हैं। वे उसमें रहने वाले हैं सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे। यह एक अखण्ड प्रतिफल स्वरूप होगा। 109।*

अतः ये लोग जिस (असत्य) की उपासना करते हैं तू उसके संबंध में किसी शंका में न पड़। ये केवल उसी प्रकार उपासना करते हैं जैसे पहले से उनके पूर्वज करते रहे हैं और निश्चित रूप से हम उन्हें उनका भाग कम किये बिना पूरा-पूरा देंगे। 110। (रू. ११०)

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक दी थी तो उसमें भी मतभेद किया गया। और यदि तेरे रब्ब की ओर

فِئُهُمْ شَقِّيٌّ وَ سَعِيدٌ ④

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَ شَهِيقٌ ۝

خَلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَ الْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَالٌ لِمَا يُرِيدُ ۝

وَ أَمَّا الَّذِينَ سَعَدُوا فِي الْجَنَّةِ خَلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَ الْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاهُمْ غَيْرَ مَجُدُودٍ ۝

فَلَا تَكُنْ فِي مُرْيَةٍ مِمَّا يَعْبُدُ هُؤُلَاءُ^۱
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ أَبَاؤُهُمْ
مِنْ قَبْلٍ^۲ وَ إِنَّا لَمَوْفُوهُمْ نَصِيبُهُمْ
غَيْرَ مَقْوُصٍ ۝

وَ لَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ^۳

* आयत संख्या 108-109 : देखने में इन दोनों आयतों से यह शंका उत्पन्न होती है कि स्वर्ग की भाँति नरक भी चिरस्थायी है। परन्तु नरक के बारे में वर्णन करने वाली आयत में इल्लता मा शाअ रब्बुक (सिवाए इसके जो तेरा रब्ब चाहे) कह कर बात समाप्त कर दी गई है। जबकि स्वर्ग वाली आयत (सं. 109) में इसके अतिरिक्त अता अन् गै र मज़जूज़ भी कह दिया गया। अर्थात् वह एक ऐसा वरदान है जो कभी खण्डित नहीं होगा। इसी प्रकार अरबी में खुलूद् शब्द लम्बे समय के लिए कहा जाता है। अतः यहाँ चिरस्थायी रूप से रहने का अर्थ करना ज़रूरी नहीं।

से पहले से ही एक आदेश जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जाता । और वे अवश्य उसके संबंध में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हैं ॥111॥

और निःसन्देह तेरा रब्ब उन सब को उनके कर्मों का अवश्य पूरा-पूरा प्रतिफल देगा । जो वे करते हैं निश्चित रूप से वह उससे सर्वदा अवगत रहता है ॥112॥

अतः जैसे तुझे आदेश दिया जाता है (उस पर) दृढ़ता पूर्वक क्रायम हो जा । और वे भी (क्रायम हो जायें) जिन्होंने तेरे साथ प्रायश्चित किया है । और सीमा का उल्लंघन न करो । निःसन्देह जो तुम करते हो वह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ॥113॥

और उन लोगों की ओर न झुको जिन्होंने अत्याचार किया अन्यथा तुम्हें भी आग आ पकड़ेगी और अल्लाह को छोड़कर तुम्हारे कोई संरक्षक नहीं होंगे । फिर तुम्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी ॥114॥

और दिन के दोनों छोर पर और रात के कुछ भागों में भी नमाज़ को क्रायम कर । निःसन्देह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं । उपदेश करने वालों के लिए यह एक बहुत बड़ा उपदेश है ॥115॥

और धैर्य धारण कर । अतः अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता ॥116॥

وَلَوْلَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفَضَى
يَتَّهِمُ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرْيَبٌ ⑩

وَإِنْ كَلَّا لَمَالَيْوَ قَيَّنَهُمْ رَبِّكَ أَعْمَالَهُمْ
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَيِّرٌ ⑪

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغُوا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑫

وَلَا تَرْكُنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَمَسَكُمْ
الثَّارُ وَمَا الْكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أُولَيَاءِ
لَهُ لَا شَرُونَ ⑬

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِيَ النَّهَارِ وَرُكْنَافِنَ
إِنَّلِيْلَ إِنَّ الْحَسَنَتِ يَدْهِبُنَ السَّيِّلَاتِ
ذَلِكَ ذِكْرٌ لِلذِّكِيرِينَ ⑭

وَاصْبِرْ قَاتَ اللَّهُ لَا يُضِيغْ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ⑮

अतः तुम से पूर्व युगों में क्यों न कुछ ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति हुए जो धरती में उपद्रव को रोकते । परन्तु उन कुछ एक का मामला अलग है जिनको उनमें से हमने मुक्ति प्रदान की । और जिन लोगों ने अत्याचार किया, उन्होंने उसका अनुसरण किया जिसके कारण वे (पहले लोग) विद्रोही ठहराये गये । और वे अपराधी (लोग) थे ॥117॥

और तेरा रब्ब ऐसा नहीं कि बस्तियों को अत्याचारपूर्वक तबाह कर दे जबकि उनके निवासी सुधार-कार्य कर रहे हों ॥118॥

और यदि तेरा रब्ब चाहता तो लोगों को एक ही समुदाय बना देता । परन्तु वे सदैव मतभेद करते रहेंगे ॥119॥

सिवाए उसके जिस पर तेरा रब्ब कृपा करे और इसी उद्देश्य से उसने उन्हें पैदा किया था । और तेरे रब्ब की यह बात भी पूरी हुई कि मैं नरक को जिन्नों और जन-साधारण सब से अवश्य भर दूँगा ॥120॥

और नवियों के समाचारों में से वह सब जो हम तेरे समक्ष वर्णन करते हैं वह है जिस के द्वारा हम तेरे दिल को दृढ़ता प्रदान करते हैं । और उन (समाचारों) में तेरे पास सत्य आ चुका है और (वह) उपदेश की बात भी और मोमिनों के लिए एक बड़ी सीख भी है ॥121॥

और जो ईमान नहीं लाते तू उनसे कह दे कि अपने स्थान पर तुम जो कर सकते

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أَوْ لَوْا
بِقِيَّةٍ يَهْمُونَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا
قَبْلَ لِمَاقْمَنْ أَنْجَبَنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الظَّنِينَ
ظَلَمُوا مَا آتَرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا
مُجْرِمِينَ ⑯

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيَهْلِكَ الْقَرَى بِطَلْمِ
وَآهَلُهَا مَصْلِحُونَ ⑯

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً
وَاحِدَةً وَلَا يَرَوْنَ مُخْتَلِفِينَ ⑯
إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذِلِكَ حَلَقُهُمْ
وَتَمَثُّلَ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا مُلَائِقَ جَهَنَّمَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ⑯

وَكَلَّا لَنَفْصُ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرَّسِيلِ مَا
نَشِّتُ بِهِ فَوَادِكَ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ
الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ⑯

وَقُلْ لِلّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَى

हो करते रहो । निश्चित रूप से हम भी
कुछ करने वाले हैं ॥122॥

और प्रतीक्षा करो । निश्चित रूप से हम
भी प्रतीक्षा करने वाले हैं ॥123॥

और आकाशों और धरती का अदृश्य
(तत्त्व) अल्लाह ही का है और उसी की
और सारे का सारा मामला लौटाया
जाता है । अतः उसकी उपासना कर
और उस पर भरोसा कर । और जो तुम
लोग करते हो, तेरा रब्ब उससे अनजान
नहीं है ॥124॥ (रुक् १०)

مَكَانِتُكُمْ إِنَّا عَمِلْوَنَ ﴿١﴾

وَاسْتَطِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿٢﴾

وَإِلَهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ قَاعِدُهُ وَتَوَكَّلْ
عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣﴾

12- सूरः यूसुफः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 112 आयतें हैं।

इस सूरः का आरंभ भी अलिफ़ लाम रा खण्डाक्षरों से हो रहा है और वही अर्थ देता है जो पहले वर्णन किये जा चुके हैं।

इसके तुरंत बाद समस्त वृत्तान्तों (कसस) में से उस सर्वोत्तम वृत्तान्त का उल्लेख हुआ है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हार्दिक प्रसन्नता का कारण बनने वाला था, जो सूरः हूद में वर्णित घटनाओं से पहुँचे मानसिक आधात का सर्वोत्कृष्ट उपचार है। यहाँ पर कसस का स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। कसस से अभिप्राय साधारण कथा-कहानी नहीं बल्कि अतीत की वे घटनायें हैं जो खोज लगाने पर ज्यों की त्यों सटीक सिद्ध होती हैं।

इस सूरः का आरंभ हज़रत यूसुफ़ अलै. के एक स्वप्न के वर्णन के साथ किया गया है जिसमें उनके साथ घटने वाली समस्त घटनाओं का वर्णन है, जिसकी हज़रत याकूब अलै. ने यह व्याख्या की, कि हज़रत यूसुफ़ अलै. को उनके भाइयों से भारी क्षति पहुँचने का खतरा है। इसलिए उन्होंने यह उपदेश दिया कि यह स्वप्न अपने भाइयों को बताना नहीं।

हज़रत यूसुफ़ अलै. को स्वप्न-फल का जो ज्ञान दिया गया था, यह पूरी सूरः उससे संबद्ध है। उदाहरणार्थ उनके साथ जो दो बन्दी थे, उन दोनों के स्वप्न की हज़रत यूसुफ़ अलै. ने ऐसी व्याख्या की जो ज्यों की त्यों पूरी हुई और इसी के फलस्वरूप वह व्यक्ति राजा के उस स्वप्न की व्याख्या हज़रत यूसुफ़ अलै. से करवाने का माध्यम बन गया, जिसकी राजकीय विद्वानों ने मात्र निजी विचार के आधार पर व्याख्या की थी। हज़रत यूसुफ़ अलै. की व्याख्या ही के परिणाम स्वरूप वह महान घटना घटी कि मिस्र और उसके आस-पास के वे दरिद्र लोग जो भुखमरी के कारण अवश्य मर जाते, इस प्रकोप से बचाये गये और निरंतर सात वर्ष तक उन्हें खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया। हज़रत यूसुफ़ अलै. स्वयं इस व्यवस्था के निरीक्षक बनाये गये और इसी कारण अंततोगत्वा उनके माता-पिता और भाइयों को उनकी शरण में आना पड़ा और उनके लिए वे अल्लाह के समक्ष सजदः में गिर गये।

इतिहास की ये ऐसी घटनाएँ हैं जिन का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को व्यक्तिगत रूप से किसी प्रकार भी ज्ञान नहीं हो सकता था। इसलिए इस सूरः में कहा गया कि जब ये सब घट रहा था तब तू उन लोगों में मौजूद नहीं था।

यह केवल सर्वज्ञ और सर्व अवगत अल्लाह ही है जो तुझे इन घटनाओं की वास्तविकता बता रहा है ।

इस सूरः का अंत इस आयत से किया गया है कि इन घटनाओं का वर्णन ऐसा नहीं जैसे कथा-कहानियाँ वर्णन की जाती हैं, बल्कि बुद्धिमानों के लिए इन घटनाओं में बहुत सी शिक्षाएँ हैं । निःसन्देह सूरः यूसुफ अनगिनत शिक्षाओं की ओर ध्यानाकृष्ट करा रही है ।



سُورَةُ يُوسُفَ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَأَذَّى عَشَرَةً أَيَّةً وَأَثْنَا عَشَرَ رُكُونًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं
देखता हूँ । ये एक सुस्पष्ट पुस्तक की
आयतें हैं । 12

निःसन्देह हमने इसे अरबी कुरआन के
रूप में अवतरित किया ताकि तुम
समझो । 13

हमने जो यह कुरआन तुझ पर वहइ
किया इसके द्वारा हम तेरे समक्ष
प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यों में से
सर्वोत्तम (तथ्य का) वर्णन करते हैं ।
जबकि इससे पूर्व (इस के बारे में) तू
अनजान (लोगों) में से था । 14

(याद करो) जब यूसुफ ने अपने पिता
से कहा, हे मेरे पिता ! निश्चित रूप
से मैं ने (स्वप्न में) ग्यारह नक्षत्र तथा
सूर्य और चन्द्रमा को देखा है । (और)
मैं ने उन्हें अपने लिए सजदः करते हुए
देखा । 15

उसने कहा, हे मेरे प्रिय पुत्र ! अपना
स्वप्न अपने भाइयों के समक्ष वर्णन नहीं
करना । अन्यथा वे तेरे विरुद्ध कोई चाल
चलेंगे । निःसन्देह शैतान मनुष्य का
खुला खुला शत्रु है । 16

और इसी प्रकार तेरा रब तुझे (अपने
लिए) चुन लेगा और तुझे मामलों की

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ②

نَحْنُ نَقْصُ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْفَصَصِ بِمَا
أُوحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنُ ۝ وَإِنْ كُنْتَ
مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ③

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ
أَحَدَ عَشَرَ رُكُوبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَأَيْتَهُمْ فِي سُجْدَيْنِ ④

قَالَ يَا فُلَّى لَا تَقْصُصْ رُعَيَاكَ عَلَى
إِحْوَاتِكَ فِي كِيدُوا الَّكَ كَيْدًا ۝ إِنَّ
الشَّيْطَنَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّؤْمِنٌ ⑤

وَكَذَلِكَ يَعْتَبِرُكَ رَبُّكَ وَيَعْلَمُكَ مِنْ

तह तक पहुँचने की विद्या सिखा देगा । और तुझ पर तथा याकूब की संतान पर अपनी नेमत पूरी करेगा । जैसा कि उसने उसे तेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक पर इस से पहले पूरा किया था । निःसन्देह तेरा रब्ब स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ॥71॥

(रुक् ١١)

निश्चित रूप से यूसुफ और उसके भाइयों (की घटना) में जिज्ञासुओं के लिए कई चिह्न हैं ॥81॥

(याद करो) जब उन्होंने कहा कि निःसन्देह यूसुफ और उसका भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय हैं जबकि हम एक सशक्त टोली हैं । निश्चित रूप से हमारे पिता एक स्पष्ट भूल में पड़े हैं ॥91॥

यूसुफ की हत्या कर डालो अथवा उसे किसी स्थान पर फेंक आओ तो तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी ओर हो जाएगा । और तुम इसके बाद नेक लोग बन जाना ॥101॥

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ की हत्या न करो बल्कि उसे किसी अंधे कुएँ की तह में फेंक दो जो चरागाह के निकट स्थित हो । उसे कोई यात्रीदल उठा ले जायेगा । यदि तुम कुछ करने वाले हो (तो यही करो) ॥111॥

उन्होंने (अपने पिता से) कहा, हे हमारे पिता ! आप को क्या हुआ है कि आप यूसुफ के विषय में हम पर भरोसा नहीं

تَأْوِيلُ الْأَحَادِيثِ وَيَتَمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ
وَعَلَى إِلَيْكَ يَعْقُوبَ كَمَا آتَمَهَا عَلَى أَبَوِينِكَ
مِنْ قَبْلِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ
عَلِيهِمْ حَكِيمٌ ۝

لَقْدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ أَيُّكَ
لِلشَّائِلَيْنَ ۝

إِذْ قَالُوا لِيُوسُفَ وَآخِرَةُ أَحَبُّ إِلَيْ
أَيْتَنَا مِنَّا وَنَحْنُ عَصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَنْفَيْ
ضَلَلَ مُؤْيِنِينَ ۝

اَفْتَأْتُو اِيُوسُفَ اَوِ اُطْرَحُوهُ اَرْضًا يَجْهُلُ
لَكُمْ وَجْهُهُ اِيْسِكُمْ وَتَكُونُو اَمْنٌ بَعْدَمْ
قُومًا صَلِحِينَ ۝

قَالَ قَاتِلُ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ
وَالْقُوَّةُ فِي غَيْبَتِ الْجَبِ يَلْتَقِطُهُ
بَعْضُ السَّيَارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فَعَلِيْنَ ۝

قَالُوا يَا بَانَامَالِكَ لَا تَأْمَنَنَاعَلِيُوسُفَ

करते ? जबकि हम तो निश्चित रूप से उसके शुभ-चिंतक हैं । 12।

उसे कल हमारे साथ भेज दैजिये ताकि वह खाता फिरे और खेले-कूदे और हम अवश्य उसके रक्षक होंगे । 13।

उसने कहा, तुम्हारा इसे ले जाना निश्चित रूप से मुझे चिंतित करता है। और मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हारी असावधानी में उसे भेड़िया न खा जाये । 14।

उन्होंने कहा, हमारे एक सशक्त टोली होने पर भी यदि उसे भेड़िया खा जाये तब तो हम निश्चित रूप से बहुत घाटा उठाने वाले होंगे । 15।

अतः जब वे उसे ले गये और चरागाह के निकटस्थ अंधे कुएँ की तह में उसे फेंक देने पर सहमत हो गये तो हमने उसकी ओर वहाँ की कि तू (एक दिन) अवश्य उन्हें उनकी इस शरारत से अवगत कराएगा और उन्हें कुछ जानकारी नहीं होगी (कि तू कौन है) । 16।

और रात्रि के समय वे अपने पिता के निकट रोते हुए आये । 17।

उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! निश्चित रूप से हम दौड़ लगाते हुए एक दूसरे से (दूर) चले गये और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया । अतः उसे भेड़िया खा गया और आप हमारी (बात) कदापि मानने वाले नहीं चाहे हम सच्चे ही हों । 18।

وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ⑩

أَرْسَلْنَا مَعَنَا عَدًّا يَرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا
لَهُ لَخَفْطُونَ ⑩

قَالَ إِنِّي لَيَخْرُثُنَّ أَنْ تَذْهَبُوا إِلَيْهِ
وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الظِّبُّ وَأَنْتُمْ عَنْهُ
غَلِيلُونَ ⑩

قَالُوا إِنِّي أَكَلَهُ الظِّبُّ وَنَحْنُ عُصْبَةُ
إِنَّا إِذَا لَخَرَقُونَ ⑩

فَلَمَّا ذَهَبُوا إِلَيْهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي
غَيْبَتِ الْجَبَرِ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتَنْتِيَّهُمْ
بِإِمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑩

وَجَاءُوْ أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ⑩

قَالُوا يَا بَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَشْتَبِقُ وَتَرْكَنَا
يُوسُفَ عِنْدَ مَتَّا عِنَّا فَأَكَلَهُ الظِّبُّ وَمَا
أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَأْوَلُوْ كَنَّا صِدِّيقِينَ ⑩

और वे उसके कुर्ते पर झूठा खून लगा लाये । उसने कहा, (यह सच नहीं) बल्कि तुम्हारी आत्मा ने एक संगीन मामले को तुम्हारे लिए साधारण और सरल बना दिया है । अतः सम्यक रूपेण धीरज धरने (के अतिरिक्त मैं क्या कर सकता हूँ ?) और जो तुम वर्णन करते हो उस (बात) पर अल्लाह ही है जिस से सहायता माँगी जा सकती है ॥19॥

और एक यात्रीदल आया और उन्होंने अपने जलवाहक को (पानी लाने के लिए) भेजा तो उसने (कूएँ में) अपना डोल डाल दिया । उसने कहा, हे (यात्री दल !) खुशखबरी ! यह तो एक बालक है । और उन्होंने उसे एक पूंजी के रूप में छुपा लिया । और जो वे करते थे अल्लाह उसे भली-भाँति जानता था ॥20॥

और उन्होंने उसे अल्प मूल्य पर कुछ दिरहमों के बदले बेच दिया । और उनको इसके बारे में बिल्कुल अभिरुचि नहीं थी ॥21॥ (रुकू ٢٢)

और जिस ने उसे मिस्र से खरीदा अपनी पत्नी से कहा, इसे सम्मानपूर्वक रखो । संभवतः यह हमें लाभ पहुँचाये अथवा इसे हम अपना पुत्र बना लें । और इस प्रकार हमने यूसुफ के लिए धरती में ठिकाना बना दिया और (यह विशेष व्यवस्था इसलिए की) ताकि हम उसे मामलों की तह तक पहुँचने का ज्ञान सिखा दें और अल्लाह अपने निर्णय पर सामर्थ्य

وَجَاءَهُ عَلَى قَيْمِصِهِ بِدِيرِكَنْبِ طَقَانْ
بِلْ سَوْلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا طَقَبْرِ
جَبِيلْ طَوَّالَةِ الْمُسْتَعَانْ عَلَى مَا
تَصْفُونَ ⑯

وَجَاءَتْ سَيَارَةً فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ
فَأَذْلَلَ دَلْوَهُ طَقَانْ قَالْ يَبْشِرِي هَذَا عَلَمْ
وَأَسْرَوْهُ بِضَاعَةً طَوَّالَةِ الْمُسْتَعَانْ بِمَا
يَعْمَلُونَ ⑯

وَشَرَوْهُ بِشَمِينْ بَخِسْ دَرَاهِمْ
مَعْدُودَةً وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الرَّاهِدِينَ ١٦
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَهُ مِنْ مُصْرَ لَا مَرَأَيْهِ
أَكْرِمْ مَثُونَهُ عَسَى أَنْ يَقْعَدَا أَوْ
نَتَخِذَهُ وَلَدَا طَوَّالَةِ الْمُسْتَعَانْ
فِي الْأَرْضِ وَلِنَعْلَمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ
الْأَحَادِيثِ طَوَّالَةِ الْمُسْتَعَانْ عَلَى أَمْرِهِ

रखता है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 22।

और जब वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँचा तो हमने उसे विवेक और ज्ञान प्रदान किये। और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल प्रदान करते हैं। 23।

और जिस स्त्री के घर में वह था उसने उसे उसकी इच्छा के बिरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की और द्वार बंद कर दिये और कहा, तुम मेरी ओर आओ। उस (यूसुफ) ने कहा, अल्लाह बचाये! निःसन्देह मेरा रब्ब वह है जिसने मेरा बहुत अच्छा ठिकाना बनाया है। निश्चित रूप से अत्याचारी सफल नहीं हुआ करते। 24।

और निश्चित रूप से वह (स्त्री) उसका दृढ़ संकल्प कर चुकी थी और यदि वह (अर्थात् यूसुफ) अपने रब्ब का एक बृहद चिह्न न देख चुका होता तो वह भी उसकी कामना कर लेता। यह ढंग इसलिए अपनाया ताकि हम उससे बुराई और निर्लज्जता को दूर रखें। निःसन्देह वह हमारे शुद्ध किए गये भक्तों में से था। 25।*

और वे दोनों द्वार की ओर लपके और उस (स्त्री) ने पीछे से (उसे खींचते हुए)

وَلِكُنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑩

وَلَمَّا بَأْغَ أَشَدَّهَا أَتَيْنَاهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا

وَكَذِلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑪

وَرَأَوْدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهِ عَنْ تَقْسِيمِهِ

وَغَلَقْتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ رَبِّيْ أَحْسَنَ مَثَوَّايْ

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّلِمُونَ ⑫

وَلَقَدْ هَمَتْ بِهِ وَهَمَ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَ

بَرْهَانَ رَبِّهِ كَذِلِكَ لَنْصُرِفَ عَنْهُ

السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا

الْمُحْسِنِينَ ⑬

وَاسْتَبَقَ الْبَابَ وَقَدَّثَ قَمِيصَهُ مِنْ دُبْرِ

* इस आयत में अरबी शब्द हम्म चिह्न का यह अर्थ नहीं है कि हज़रत यूसुफ अलै. ने भी बुराई का इरादा किया था। बल्कि इसे आयतांश लौ ला अर्हा बुरहा न बिबिहि के साथ मिलाकर पढ़ना चाहिए। इसका यह अर्थ है कि यदि इससे पूर्व यूसुफ ने अल्लाह के चिह्न न देखे होते तो वह भी उसके साथ बुरी कामना कर लेते। चिह्न से अभिप्राय कोई ऐसा चिह्न नहीं जिसे उन्होंने उसी क्षण देखा था, जैसा कि कई भाष्यकारों ने लिखा है। बल्कि बचपन से ही हज़रत यूसुफ अलै. को अल्लाह के चिह्न दिखाये गये थे, जिसके पश्चात उन के किसी बुरी कामना करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था।

उसका कुर्ता फाइ दिया और उन दोनों ने उसके स्वामी को द्वार के निकट पाया । उस (स्त्री) ने कहा, जो तेरी घरवाली से दुष्कर्म का इरादा करे उसका प्रतिफल कैद किये जाने अथवा पीड़िजनक दण्ड के सिवा और क्या हो सकता है ? 126।

उस (अर्थात् यूसुफ) ने कहा, इसी ने मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की थी । और उसके घर वालों में से ही एक गवाह ने गवाही दी कि यदि उसका कुर्ता सामने से फटा है तो ये सच बोलती है और वह झूठों में से है । 127।

और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो ये झूठ बोल रही है और वह सच्चों में से है । 128।

अतः जब उस (अर्थात् पति) ने उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी पत्नी से) कहा, निश्चित रूप से यह (घटना) तुम्हारी चालाकी से घटी है । (हे स्त्रियो !) तुम्हारी चालाकी निश्चित रूप से बहुत बड़ी होती है । 129।

हे यूसुफ ! इससे विमुख हो जा और (हे स्त्री !) तू अपने पाप के लिए क्षमायाचना कर। निश्चित रूप से तू ही अपराधियों में से थी । 130। (रुकू^۳۱۳)

और नगर की महिलाओं ने कहा कि सरदार की पत्नी अपने दास को उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाती है । उस ने प्रेम की दृष्टि से उसके दिल में घर कर लिया है । निश्चित रूप से हम उसे

وَأَنْفِيَا سَيِّدَهَا لَدَالْبَابِ قَاتُّ مَا جَزَاءُهُ مَنْ أَرَادَ بِإِهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابُ أَلِيمٍ ⑤

قَالَ هِيَ رَاوِدُتُخْ فَعْنُوْنَقِيْسِي وَشَهِدَ شَاهِدُمِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيْصَهُ قَدَّ مِنْ قُبِيلِ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَذِيْبِينَ ⑥

وَإِنْ كَانَ قَمِيْصَهُ قَدَّ مِنْ دُبِرِ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّدِيقِيْنَ ⑦

فَلَمَّا رَأَقَمِيْصَهُ قَدَّ مِنْ دُبِرِ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدُكَنَ ۖ إِنَّ كَيْدُكَنَ عَظِيْمٌ ⑧

يُوسُفُ أَعْرُضْ عَنْ هَذَا ۖ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكَ ۖ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَطِيْبِيْنَ ۖ ۹

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيْزِ تُرَأِوِدُ فَتَهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا

अवश्य एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पाती हैं । 31।

अतः जब उस ने उनकी छलपूर्ण बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा । और उन के लिए एक टेक लगा कर बैठने का स्थान तैयार किया और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी पकड़ा दी और उस (अर्थात् यूसुफ) से कहा कि उनके सामने जा । अतः जब उन्होंने उसे देखा तो उसे बड़ा महात्मा पुरुष पाया और अपने हाथ काट लिये और कहा, पवित्र है अल्लाह । यह मनुष्य नहीं, यह तो एक सम्माननीय फ़रिश्ता के अतिरिक्त कुछ नहीं । 32।*

वह बोली, यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में तुम मेरी निंदा करती थीं और निश्चित रूप से मैं ने इसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की, पर वह बच गया और मैं इसे जो आदेश देती हूँ यदि इसने वह न किया तो वह अवश्य बंदी बना दिया जायेगा और अवश्य अपमानित जनों में से हो जाएगा । 33।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! जिस ओर वे मुझे बुलाती हैं उससे कारागार मुझे अधिक प्रिय है । और यदि तू उनकी योजना (का लक्ष्य) मुझ से न हटा दे तो मैं उनकी और झुक जाऊँगा और मैं अज्ञानों में से हो जाऊँगा । 34।

* आयतांश कृत्तअ न ऐदिथुन (उन्होंने अपने हाथ काट लिये) से यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत यूसुफ अलै. के सौदर्य पर मुर्ध हो कर उन महिलाओं ने अपने हाथों पर छुरियाँ चला दीं । बल्कि इसका एक अर्थ यह है कि उन्होंने उसे अपने हाथों की पहुँच से बहुत ऊपर पाया । अरबी वाक्य अकबर न हूँ (उन्होंने उसे बड़ा महात्मा पुरुष पाया) भी इस अर्थ का समर्थन करता है ।

حَبَّا إِنَّا نَرِبَهَا فِي صَلٰلٍ مُّبِينٍ ①

فَلَمَّا سِمِعْتِ بِمَكْرِهِنَ أَرْسَلْتُ
إِيْهِنَ وَأَعْنَدْتُ لَهُنَّ مُّنْكَأَوْ أَثَّ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَاتَتِ الْخُرْجَ
عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَأَيْتَهُ أَكْبَرْتَهُ وَقَطَعْنَ
أَيْدِيهِنَّ وَقُلْنَ حَاشِلُهُمَا هَذَا بَشَرًا
إِنْ هَذَا إِلَّا مَالِكٌ كَرِيمٌ ②

قَاتَثَ فَذِلِّكُنَّ الَّذِي لَمْ تَنْتَنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ
رَأَوْذَثَهُ عَنْ نُفْسِهِ فَأَسْعَصَمَ طَوْلَيْنَ
لَمْ يَقْعُلْ مَا أَمْرَهُ لَيُسْجَنَ ۖ وَلَيَكُونُنَا
مِنَ الصُّغَرِيْنَ ③

قَالَ رَبِّ السِّجْنِ أَحَبُّ إِلَيْكَ مِمَّا
يَذْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرُفَ عَنِي
كَيْدَهُنَّ أَصْبَرَ إِلَيْهِنَّ وَأَسْكَنَ مِنْ
الْجَهَلِيْنَ ④

अतः उसके रब्ब ने उसकी दुआ को सुना और उससे उनकी चाल को फेर दिया । निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 35।

फिर उसके बाद उन्होंने जो लक्षण देखे (तो) उन पर स्पष्ट हुआ कि कुछ समय के लिए उसे कारागार में अवश्य डाल दें । 36। (रुक् ٤)

और उसके साथ दो युवक भी कारागार में प्रविष्ट हुए । उनमें से एक ने कहा कि मैं (स्वप्न में) अपने आप को देखता हूँ कि मैं मदिरा बनाने के उद्देश्य से रस निचोड़ रहा हूँ । और दूसरे ने कहा कि मैं (स्वप्न में) अपने आप को देखता हूँ कि मैं अपने सिर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ जिस में से पक्षी खा रहे हैं । हमें इनके अर्थ बता । हम तुझे उपकार करने वाला समझते हैं । 37।

उसने कहा कि तुम्हें जो भोजन दिया जाता है, वह तुम्हारे पास आने से पहले ही मैं इन (स्वप्नों) के फलाफल से तुम दोनों को अवगत करा दूँगा । यह (अर्थ) उस (ज्ञान) में से है जो मेरे रब्ब ने मुझे सिखाया । मैं उन लोगों के धर्म को छोड़ बैठा हूँ जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते थे और परलोक का इनकार करते थे । 38।

और मैं ने अपने पूर्वज इब्राहीम और इसहाक और याकूब के धर्म का

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ
كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑩

لَمَّا بَدَأَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوْا أَلَا يَتَبَتَّلُ
لَيْسَ جَنَّةً حَتَّىٰ حِينِ ⑪

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ قَيْنِ ⑫ قَالَ
أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَيْنِي أَعْصَرَ حَمَراً
وَقَالَ الْأَخْرَىٰ إِنِّي أَرَيْنِي أَحْمَلَ فَوْقَ
رَأْسِي خُبْزًا تَأْكِلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ⑬
إِنَّا وَيْلٌ ⑭ إِنَّا نَرِيكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ⑮

قَالَ لَا يَأْتِيَكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنَّهُ إِلَّا
بِئْثَاثٍ كَمَا إِنَّا وَيْلٌ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا
ذِلِّكُمَا مِمَّا عَلِمْنَا رَبِّنَا ⑯ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ
قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كُفَّارُونَ ⑰

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ أَبَاءِي إِبْرَاهِيمَ وَأَسْخَقَ

अनुसरण किया । किसी वस्तु को अल्लाह का समकक्ष ठहराना हमारे लिए संभव न था । यह अल्लाह की कृपा ही से था जो उसने हम पर और (मोमिन) लोगों पर किया । परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता प्रकट नहीं करते । 39।

हे कारागार के मेरे दोनों साथियो ! क्या भिन्न-भिन्न कई रब्ब अच्छे हैं अथवा एक पूर्ण प्रभुत्वशाली अल्लाह ? । 40।

तुम उसे छोड़कर ऐसे नामों की उपासना करते हो जो तुम और तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं ही उन (काल्पनिक उपास्यों) को दे रखे हैं जिनके समर्थन में अल्लाह तआला ने कोई प्रबल प्रमाण नहीं उतारा । निर्णय का अधिकार अल्लाह के सिवा किसी को नहीं । उसने आदेश दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो । यह स्थायी रहने वाला और स्थायित्व प्रदानकारी धर्म है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 41।

हे कारागार के दोनों साथियो ! तुम दोनों में से एक तो अपने स्वामी को मदिरा पिलायेगा और दूसरा सूली पर चढ़ाया जायेगा । फिर उसके सिर में से पक्षी कुछ (नोच-नोच कर) खायेंगे । जिसके बारे में तुम पूछताछ कर रहे थे उस बात का निर्णय सुना दिया गया है । 42।

और जिस व्यक्ति के बारे में उसने सोचा था कि उन दोनों में से वह बच जायेगा,

وَيَعْقُوبٌ مَا كَانَ لَنَا أَنْ تُشَرِّكَ بِاللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ ۝ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ④

يَصَاحِبِ السَّجْنِ إِرَبَابُ مُتَقْرِّقُونَ
خَيْرُ أَمْ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝
مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوَنَةٍ إِلَّا أَسْمَاءً
سَمَيَّتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ
اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطَنٍ ۝ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا
لِلَّهِ ۝ أَمْرًا لَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَاهُ ۝ ذَلِكَ
الَّذِينَ الْقَيْمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ⑤

يَصَاحِبِ السَّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقُنِي
رَبَّهُ خَمْرًا ۝ وَأَمَّا الْأَخْرَ فَيُصْلَبُ قَاتِلُ
الظَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۝ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ
تَسْقِيلِينَ ۝

وَقَالَ لِلَّذِي ظَلَّ أَتَهُنَّاجِ مِنْهُمَا ذُكْرِي

उसने उससे कहा कि अपने स्वामी के निकट मेरी चर्चा करना । परन्तु अपने स्वामी के निकट (यह) चर्चा करने से उसे शैतान ने भुला दिया । अतः वह (यूसुफ) कई वर्षों तक कारागार में पड़ा रहा । 143। (रुकू ١٣)

और राजा ने (एक दिन राजसभा में) कहा कि मैं (स्वप्न में) सात हृष्ट-पुष्ट गायें देखता हूँ जिन्हें सात दुबली-पतली गायें खा रही हैं । और सात हरी-भरी बालियाँ और कुछ दूसरी सूखी हुई (बालियाँ भी देखता हूँ) । हे सभासदो ! यदि तुम स्वप्नफल बता सकते हो तो मुझे मेरा स्वप्नफल बताओ । 144।

उन्होंने कहा, ये निजी कल्पनाओं पर आधारित निरर्थक स्वप्न हैं और हम निरर्थक स्वप्नों के अर्थ का ज्ञान नहीं रखते । 145।

उन दोनों (बन्दियों) में से जो बच गया था और एक लम्बी अवधि के बाद उसने (यूसुफ को) याद किया और कहा, मैं आपको इस (स्वप्न) का अर्थ बताऊँगा । अतः मुझे (यूसुफ के पास) भेज दें । 146।

(उसने यूसुफ के पास जा कर कहा) हे सत्यवादी यूसुफ ! हमें सात हृष्ट-पुष्ट गायों को जिन्हें सात दुबली-पतली गायें खा रही हैं और सात हरी-भरी बालियों और सात सूखी हुई बालियों (को स्वप्न में देखने) का अर्थ समझा ताकि मैं लोगों की ओर वापस जाऊँ सम्भवतः वे (इस स्वप्नफल) को जान लें । 147।

عِنْدَرِّيْكَ فَأَنْسَهَ الشَّيْطَنُ ذِكْرَ رَبِّهِ
فَلَبِّيْتُ فِي السِّجْنِ بِضَعْ سِنِّيْنَ ⑤

وَقَالَ الْمُلِكُ اِنِّيْ أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ
سِمَانٌ يَا كَلْمَهَنَ سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ سُبْلَتٍ
خَسْرٍ وَأَخْرَى لِيْسَتِ ٦ يَا اِيْهَا الْمُلَأُ
اَفْتُوْنُ فِي رُؤْيَايِيْ اِنْ كُنْتُمْ لِرُؤْيَا
تَعْبُرُونَ ⑦

قَالُوا اَصْغَارُ اَحْلَامِ ٧ وَمَا نَحْنُ
بِتَأْوِيلِ الْاَحْلَامِ بِعِلْمِيْنَ ⑧

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَاهَنَهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اَمْرِهِ
اَنَا اَبِيْكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسَلُونَ ⑨

يُوسُفُ اِيْهَا الصِّدِّيقُ اَفْتَنَافِ سَبْعَ
بَقَرَاتٍ سِمَانٌ يَا كَلْمَهَنَ سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ
سُبْلَتٍ خَسْرٍ وَأَخْرَى لِيْسَتِ لَعْلَى
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَمُهُمْ يَعْلَمُونَ ⑩

उसने कहा कि तुम लगातार सात वर्ष तक खेती करोगे । अतः जो तुम काटो उसमें से अल्प मात्रा के सिवा जिसे तुम खाओगे (शेष) को उसकी बालियों में ही रहने दो । 148।

फिर इसके बाद सात अत्यन्त कठिन (वर्ष) आयेंगे, जो तुम उन (दिनों) के लिए संचय कर रखे होगे वे उसे निगल जायेंगे । सिवाय उसमें से अल्पांश के जिसे तुम (भविष्य में खेती करने के लिए) संभाल रखोगे । 149।

फिर उसके पश्चात एक (ऐसा) वर्ष आयेगा जिसमें लोग खूब तृप्त किये जायेंगे और उसमें वे रस निचोड़ेंगे । 150।

(रुक् ६)

राजा ने कहा, उसे मेरे पास लाओ । अतः जब दूत उस (अर्थात् यूसुफ) के पास पहुँचा तो उसने कहा, अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन महिलाओं का क्या हाल है जो अपने हाथ काट बैठी थीं । निःसन्देह मेरा रब्ब उन की चाल को भली-भाँति जानता है । 151।

उस (अर्थात् राजा) ने पूछा, (हे स्त्रियो !) बताओ, जब तुम ने यूसुफ को उसकी इच्छा के विरुद्ध फुसलाने की चेष्टा की थी तब तुम्हारा क्या मामला था ? उन्होंने कहा, पवित्र है अल्लाह ! हमें तो उसके विरुद्ध किसी बुराई की जानकारी नहीं । तब सरदार की पत्नी ने कहा, अब सच्चाई खुल चुकी है ।

قَالَ تُرْزَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبَأَ فَمَا
حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُبْلَةٍ إِلَّا قَلِيلًا
مِمَّا تَأْكُلُونَ ⑯

شَرَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شَدَادٍ يَكْلُمُ
مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا
تَحْصَنُونَ ⑯

شَرَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يَعَافُ
النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ⑯

وَقَالَ الْمُلْكُ أَشْوَنْ بْنُ فَلَمَّا جَاءَهُ
الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَعَلَهُ مَا
بِالسِّوَاءِ الْتِيْ قَطَعْنَ أَيْدِيهِنَّ إِنَّ
رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلَيْمُ ⑯

قَالَ مَا خَطَبْكَ إِذْ رَأَوْذَنَكَ يُوسَفَ
عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاقَ اللَّهُمَّ مَا عَلِمْتَ
عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَرِيزِ
الْتِيْ حَصَصَ الْحَقَّ أَذَارَأَوْذَنَهُ عَنْ

मैंने ही उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध
फुसलाना चाहा था और निःसन्देह वह
सत्यवादियों में से है । ५२।

(यूसुफ ने कहा) यह इसलिए हुआ
ताकि वह (अर्थात् सरदार) जान ले कि
मैं ने उसकी अनुपस्थिति में उसके साथ
कोई विश्वासघात नहीं किया । और
विश्वासघातियों की चाल को अल्लाह
कदापि सफल होने नहीं देता । ५३।

لَقَسِمَ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّدِيقِينَ ⑦

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخْنُهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ

اللَّهُ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَاسِنِينَ ⑧

और मैं अपनी आत्मा को निर्दोष नहीं ठहराता। आत्मा तो अवश्य बुराई का आदेश देने वाली है, सिवाए इसके जिस पर मेरा रब्ब कृपा करे। निःसन्देह मेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 154।

और राजा ने आदेश दिया कि उसे मेरे पास ले आओ। मैं उसे अपने लिए चुन लूँ। फिर जब उस ने उससे बात-चीत की तो कहा, निश्चित रूप से तू आज (से) हमारे निकट प्रतिष्ठित (और) विश्वासपात्र है। 155।

उस (अर्थात् यूसुफ) ने कहा, मुझे राज-कोषों पर नियुक्त कर दें। निश्चित रूप से मैं बहुत सुरक्षा करने वाला (और) जानकारी रखने वाला हूँ। 156।

और इस प्रकार हमने यूसुफ को देश में प्रतिष्ठा प्रदान की। वह उस में जहाँ चाहता ठहरता। हम जिसे चाहते हैं अपनी कृपा प्रदान करते हैं। और हम उपकार करने वालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं करते। 157।

और जो लोग ईमान ले आये और तकवा धारण करते रहे, निश्चित रूप से उनके लिए परकालीन प्रतिफल उत्तम है। 158।

(स्कृ. 7)

और (अकाल के दिनों में खाद्यान्न लेने) यूसुफ के भाई (वहाँ) आये और उसके समक्ष उपस्थित हुए। उसने तो उन्हें पहचान लिया, परन्तु वे उसे पहचान न सके। 159।

وَمَا أَبْرِئُ نَفْسِيٌّ إِنَّ النَّفْسَ
لَا مَارَأَهُ بِالْسَّوْءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّنَا
إِنَّ رَبِّنِي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑩

وَقَالَ الْمَلِكُ اتْسُونُ بِهِ أَشَطَّلْصَةَ
لِنَفْسِيٍّ فَلَمَّا كَلَمَهُ قَالَ إِنَّكَ أَنْيَوْمَ
لَدِينَ مَكِينُ أَمِينُ ⑪

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى حَزَآءِ الْأَرْضِ
إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْهِ ⑫

وَكَذَلِكَ مَكَنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ
يَسْبُوا مُهَاهَا حَيْثُ يَسْأَمُ تُصْبِيْبُ بِرَحْمَتِنَا
مَنْ نَشَاءُ وَلَا تُصْبِيْبُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑬

وَلَا جَرَّ الْأُخْرَةِ خَيْرُ الْلَّذِينَ امْنَوْا
وَكَانُوا يَسْتَقُونَ ⑭

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ
فَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ⑮

और जब उसने उन्हें उनके सामान के साथ (विदा करने के लिए) तैयार किया तो कहा, तुम्हारे पिता की ओर से जो तुम्हारा (एक और) भाई है उसे भी मेरे पास लाना । क्या तुम देखते नहीं कि मैं भरपूर माप देता हूँ और मैं सर्वोत्तम अतिथि-सेवक हूँ । 160 ।

अतः यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो फिर तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ माप (अर्थात् खाद्यान्न) नहीं होगा और तुम कदापि मेरे निकट नहीं आना । 161 ।

उन्होंने कहा, हम उसके बारे में उसके पिता को अवश्य फुसलायेंगे और निश्चित रूप से हम (ऐसा) करके रहेंगे । 162 ।

और उसने अपने कर्मचारियों से कहा कि इनकी पूँजी इनके सामान ही में रख दो ताकि जब वे अपने घर वालों की ओर वापस जायें तो इस बात का ध्यान रखें । संभवतः वे फिर लौट आये । 163 ।

अतः जब वे अपने पिता के पास लौटे तो उन्होंने कहा है हमारे पिता ! हमें माप से रोक दिया गया है । अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें ताकि हम माप प्राप्त कर सकें और निश्चित रूप से हम उसकी सुरक्षा करेंगे । 164 ।

उसने कहा, उसके संबंध में क्या मैं इस के सिवा भी तुम पर कोई भरोसा कर सकता हूँ जैसा कि (इससे) पहले मैं ने उसके भाई के संबंध में तुम पर

وَلَمَّا جَهَرَ هُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ أَنْشُوْنِي
بِأَخْ لَكُمْ مِنْ أَيْسِكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي
أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ⑤

فَإِنْ لَمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِنِي
وَلَا تَقْرَبُونِ ⑥

قَالُوا سَنَرُوا دُعْنَةً أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَعْلُونَ

وَقَالَ لِفَتَنِيهِ اجْعَلُوا إِصْاعَتَهُمْ فِي
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا اتَّقْلَبُوا
إِلَى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ⑦

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَى أَيْسِهِمْ قَالُوا يَا بَانَامِنْعِ
مِنَ الْكَيْلِ فَأَرْسَلَ مَعَنَا آخَانَا نَكْتُلِ
وَإِنَّا لَهُ لَحِفْظُونَ ⑧

قَالَ هَلْ أَمْنِكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمِنْتُكُمْ
عَلَى أَخِيهِ مِنْ قَبْلٍ ۝ قَالَ اللَّهُ خَيْرُ حَفَظًا

किया था ? अतः अल्लाह ही है जो सर्वोत्तम रक्षक और वही सभी कृपा करने वालों से बढ़कर कृपा करने वाला है । 165।

फिर जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपनी पूँजी को अपनी ओर वापस किया हुआ पाया । उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! हमें (और) क्या चाहिए ? यह है हमारी पूँजी जो हमें वापस लौटा दी गई है । और हम अपने घर वालों के लिए खाद्यान्न लायेंगे और अपने भाई की सुरक्षा करेंगे और एक ऊँट के भार (समान खाद्यान्न) अधिक प्राप्त करेंगे । यह सौदा बड़ा ही सरल है । 166।

उसने कहा, मैं उसे कदापि तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा जब तक कि तुम अल्लाह की दुहाई देकर मुझ से दृढ़ प्रतिज्ञा न कर लो कि तुम उसे अवश्य मेरे पास (वापस) ले आओगे, सिवाय इसके कि तुम को धेर लिया जाये । अतः जब उन्होंने उसे अपना दृढ़वचन दे दिया तो उसने कहा, जो हम कह रहे हैं अल्लाह उस का निरीक्षक है । 167।

और उसने कहा, हे मेरे पुत्रो ! (उस नगर में) एक ही द्वार से प्रवेश न करना । बल्कि भिन्न-भिन्न द्वारों से प्रवेश करना और अल्लाह (के निर्णय) से मैं तुम्हें लेश-मात्र भी बचा नहीं सकता । आदेश अल्लाह ही का चलता है । उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और फिर चाहिए कि

وَهُوَ أَرْحَمُ الرِّحْمَةِ ①

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا إِصْاعَتَهُمْ
رَدَّتِ الْيَمِّمُ ۝ قَالُوا يَا بَانَا مَا يَنْبَغِي
هَذِهِ إِصْاعَتُنَا رَدَّتِ إِلَيْنَا وَنَمِيزُ أَهْلَنَا
وَخَفَظَ أَخَانَا وَنَزَّدَ أَكِيلَ بَعْيَرٍ ۝ ذَلِكَ
كَيْنُ لَيْسَ يُرِيدُ ②

قَالَ لَنْ أَرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونَ
مَوْتَقَافِنَ اللَّهُ لَا تَأْتِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ
بِكُمْ ۝ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْتَقَهُمْ قَالَ اللَّهُ
عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكَيْنُ ③

وَقَالَ يَسِينَ لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ
وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّفَرَّقَةٍ ۝ وَمَا
أَغْنِيْتُ عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۝ إِنَّ
الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۝ عَلَيْهِ تَوْكِلْتُ ۝ وَعَلَيْهِ

सभी भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करें । 168।

अतः अपने पिता के आज्ञानुसार जब वे वहाँ से प्रविष्ट हुए (तो) अल्लाह के निर्णय से तो वह उन्हें कदापि बचा नहीं सकता था परन्तु (यह) याकूब के दिल की एक इच्छा थी जो उसने पूरी की। और निश्चित रूप से वह ज्ञानी पुरुष था। क्योंकि हमने उसे भली-भाँति ज्ञान सिखाया था। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 169। (रुक् ४)

अतः जब वे यूसुफ के समक्ष पेश हुए, उसने अपने भाई को अपने निकट स्थान दिया (और उसे) कहा, निश्चित रूप से मैं तेरा भाई हूँ। अतः जो कुछ वे करते रहे हैं उस पर तू दुःखित न हो । 170।

फिर जब उसने उन्हें उनके सामान समेत (विदा करने के लिए) तैयार किया तो उसने (अनजाने में) अपने भाई के सामान में पीने का बर्तन रख दिया। फिर एक ढढोरची ने घोषणा की कि हे यात्रीदल ! तुम अवश्य चोर हो । 171।

उन्होंने उनकी ओर मुड़ कर उत्तर दिया, तुम क्या गुम पाते हो ? । 172।

उन्होंने कहा, हम राजा के माप-तौल करने का बर्तन गुमशुदा पाते हैं और जो भी उसे लाएगा उसे एक ऊँट के भार (के समान खाद्यान्त पुरस्कार स्वरूप) दिया जाएगा और मैं इस बात का ज़िम्मेदार हूँ । 173।*

فَلِيُسْتَوْكِلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ⑦

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمْرَهُمْ أَبْوَهُمْ
مَا كَانَ يَعْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّوْمِ مَا شَاءَ إِلَّا
حَاجَةً فِي نَفْسٍ يَعْقُوبُ قَصْهَا وَإِنَّهُ
لَذُوقٌ لِمَنْ يَعْلَمُهُ وَلِكَنَّ أَكْثَرَ
الظَّالِمِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوْيَ إِلَيْهِ
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخْوَكَ فَلَاتَسْتَيْسِ
إِمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑨

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ
السِّقَايَةَ فِي رَحْمٍ أَخْيَهُ لَمَّا آذَنَ مُؤْذِنٌ
أَيَّهَا الْعِزِيزُ إِنَّكُمْ لَسَرِقُونَ ⑩

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَا ذَاقُقِدُونَ ⑪

قَالُوا إِنَّقِدْ صَوَاعِ الْمُلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ
حَمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ رَعِيمٌ ⑫

* राजा का माप-तौल का बर्तन जान बूझ कर नहीं रखा गया था बल्कि अनजाने में ऐसा हो गया →

उन्होंने (उत्तर में) कहा, अल्लाह की कसम ! तुम अवश्य जान चुके हो कि हम धरती में फ़साद करने नहीं आये और हम कदाचित् चोर नहीं हैं । 74।

उन्होंने पूछा, यदि तुम ज्ञाठे निकले तो उसका क्या दण्ड होगा ? । 75।

उन्होंने उत्तर दिया, इसका दण्ड यह है कि जिसके सामान में वह (नाप-तौल का पात्र) पाया जाये वही उसका बदला होगा । इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्डित करते हैं । 76।

फिर उस (ढंडोची) ने उस (अर्थात् यूसुफ) के भाई के बोरे से पूर्व उनके बोरों से (तलाशी) आरम्भ की । फिर उसके भाई के बोरे में से उस (नाप-तौल के पात्र) को निकाल लिया । इस प्रकार हमने यूसुफ के लिए उपाय किया । अल्लाह की इच्छा के बिना उसके लिए अपने भाई को राजा के शासन में रोक पाना संभव न था । हम जिसे चाहें उच्च पदस्थ बना देते हैं । और प्रत्येक ज्ञान रखने वाले से बढ़कर एक ज्ञानी है । 77।

उन्होंने कहा, यदि इसने चोरी की है तो इसके एक भाई ने भी इससे पूर्व चोरी की थी । तब यूसुफ ने इस (आरोप के प्रभाव) को अपने दिल में छिपा लिया और उसे उन पर प्रकट न किया । (हाँ मन ही मन में) कहा, तुम अत्यन्त निकृष्ट श्रेणि के (लोग) हो और जो तुम

قَالُوا تَاللَّهُ لَقَدْ عِلْمْتُمْ مَا جِئْنَا بِشَفَقَةٍ
فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا لَسِرِّيْنَ ⑦

قَالُوا فَمَا جَرَأَ أَوْهَ إِنْ كُنْتُمْ كَذِيْبِينَ ⑦

قَالُوا جَرَأَ أَوْهَ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ
جَرَأَ أَوْهَ كَذِلِكَ نَجْزِي الظَّلِيمِيْنَ ⑦

فَبَدَأَ أَبَا عِيَّتِهِمْ قَبْلَ وَعَاءَ أَخِيهِ شَفَقَةً
إِسْخَرَ حَهَا مِنْ وَعَاءَ أَخِيهِ كَذِلِكَ
كَذِنَاهَا يُوسَفَ مَا كَانَ لِي أَخْذَ أَخَاهَ فِي
دِيْنِ الْمُلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعَ
دَرْجَتِي مَنْ نَسَاءَ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ
عَلِيِّمُ ⑦

قَالُوا إِنْ يَسِرِقُ فَقَدْ سَرَقَ أَخْلَهُ مِنْ
قَبْلٍ فَأَسَرَهَا يُوسَفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ
يُبَدِّلَهَا لَهُ قَالَ أَنْتُمْ شُرُّ مَكَانًا وَاللَّهُ

←था । अन्यथा अल्लाह यह न कहता कि हमने यूसुफ के लिए उपाय किया (आयत : 77) यदि यह उपाय यूसुफ अलै, का होता तो उसे अल्लाह अपने साथ न जोड़ता ।

वर्णन करते हो उसे अल्लाह ही भली-भाँति जानता है । 78।

उन्होंने कहा, हे प्राधिकारी ! निःसन्देह इसके पिता अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति हैं । अतः इसके बदले हम में से किसी एक को रख लीजिये । हम आपको अवश्य परोपकारियों में से समझते हैं । 79।

उसने कहा, अल्लाह बचाये ! कि जिसके पास हम अपना सामान पायें उसके सिवा किसी और को पकड़ें । ऐसे में तो हम निश्चित रूप से अत्याचारी बन जायेंगे । 80। (रुक् ٩)

अतः जब वे उससे निराश हो गये तो (परस्पर) विचार-विमर्श के लिए अलग हो गये । उनमें से बड़े ने कहा, क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह की दुहाई देकर अनिवार्य रूप से दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी और (इससे) पूर्व भी तुम यूसुफ के मामले में ज्यादती कर चुके हो । अतः मैं इस देश को कदापि नहीं छोड़ूँगा जब तक कि मेरे पिता मुझे अनुमति न दें अथवा मेरे लिए अल्लाह कोई निर्णय न कर दे । और वह निर्णय करने वालों में सर्वोत्तम है । 81।

अपने पिता के पास जाओ और उन्हें कहो कि हे हमारे पिता ! निश्चित रूप से आप के पुत्र ने चोरी की है और हम केवल उसी की गवाही दे रहे हैं जिसकी हमें जानकारी है । और हम अप्रत्यक्ष विषय के कदापि रक्षक नहीं हैं । 82।

أَعْلَمُ بِمَا تَصْفُونَ ﴿٤﴾

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَرِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا
كَيْرَاءً فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَةً إِنَّا نَرِيكَ
مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥﴾

قَالَ مَعَاذَ اللَّهُ أَنْ نَّأْخُذَ إِلَامِنَ وَجَدْنَا
مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذَا لَظَلَمْوْنَ ﴿٦﴾

فَلَمَّا اشْتَيَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ
كَيْرَهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخْذَ
عَلَيْكُمْ مَوْتَقَافِنَ بِاللَّهِ وَمِنْ قَبْلِ مَا
فَرَّطْتُمْ فِي يُوسَفَ ﴿٨﴾ فَلَمْ أَبْرَحْ
الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أُو يَحْكُمَ اللَّهُ
لِي ﴿٩﴾ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِيمِينَ ﴿١٠﴾

إِرْجَعُوا إِلَى آبِيهِ كُمْ فَقُولُوا يَا بَانَا إِنَّ
ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ﴿١١﴾

अतः उस बस्ती (वालों) से पूछें जिस में हम थे और उस यात्रीदल से भी जिस के साथ हम आये हैं। और निश्चित रूप से हम सच्चे हैं । 183।

उसने कहा, (नहीं) बल्कि तुम्हारे मन ने एक गंभीर विषय को तुम्हारे लिए हल्का और साधारण बना दिया है। अतः सम्यक् रूपेण धीरज धरने (के अतिरिक्त मैं क्या कर सकता हूँ ?) बिल्कुल संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आये। निःसन्देह वही है जो स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 184।

और उसने उनसे मुँह फेर लिया और कहा, आह ! यूसुफ़ के लिए खेद है। और शोक के कारण उसकी आँखें भर आईं और वह अपना शोक दबाये रखने वाला था । 185।*

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! आप सदैव यूसुफ़ की ही चर्चा करते रहेंगे जब तक कि आप (शोक से) निदाल हो न जायें अथवा हलाक हो न जायें । 186।

उसने कहा, मैं तो अपने दुःख-दर्द की फरियाद केवल अल्लाह के समक्ष करता हूँ। और अल्लाह की ओर से मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते । 187।

* आयतांशः इब्न यज्जत ऐनाहु (उसकी आँखें सफेद हो गईं) यहाँ पर आँखें सफेद होने से अंधा हो जाना अभिप्राय नहीं है, बल्कि आँखों का आँसुओं से भर जाना है। हज़रत इमाम राजी रहि. ने लिखा है इब्न यज्जत ऐनाहु अत्यधिक रोने की ओर इग्निट करता है। फिर लिखते हैं अत्यधिक रोने के कारण आँखों में बहुत पानी भर आता है। उस पानी की सफेदी के कारण आँख सफेद हो जाती है। (तफ़सीर कबीर, इमाम राजी रहि.) इस आयत का क़ज़ीम शब्द भी इस अर्थ का समर्थन करता है। क्योंकि यह क़ज़म धातु से बना है, जिसका अर्थ है शोकपूर्ण भाव को सहन करना। इसी के कारण हज़रत याकूब अलै. की आँखें भर आई थीं।

وَسْأَلَ الْقُرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي
أَفْبَلْنَا فِيهَاٌ وَإِنَّا الصَّدِقُونَ ⑦

قَالَ بْنُ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْقَسْكُمْ أَمْرًاٌ
فَصَبِّرْ جَمِيلٌ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي
بِهِمْ جَمِيعًاٌ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ⑧

وَتَوْلِي عَنْهُمْ وَقَالَ يَأْسَفِي عَلَى
يُوسُفَ وَإِيَّاصَتْ عَيْنَهُ مِنَ الْحُرْنِ
فَهُوَ كَظِيمٌ ⑨

قَالُوا تَالَّهُ تَقْتُؤَ اتَذْكُرْ يُوسَفَ حَتَّى
تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْمُلْكِينَ ⑩

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوْبَاتِيٍّ وَحْرَنِيٍّ إِلَى اللَّهِ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑪

हे मेरे पुत्रो ! जाओ, और यूसुफ तथा उसके भाई के संबंध में खोज लगाओ और अल्लाह की कृपा से निराश मत हो । निःसन्देह काफिरों के सिवा अल्लाह की कृपा से कोई निराश नहीं होता । 188।

अतः जब वे उस (अर्थात् यूसुफ) के समक्ष (पुनः) उपस्थित हुए तो उन्होंने कहा, हे प्राधिकारी ! हमें और हमारे परिवार को बहुत कष्ट पहुँचा है और हम थोड़ी सी पूँजी लाये हैं । अतः हमें भरपूर तौल (अर्थात् खाद्यान्त) प्रदान करें और हमें (कुछ) दान दें । निश्चित रूप से दान-पुण्य करने वालों को अल्लाह प्रतिफल प्रदान करता है । 189।

उसने कहा, क्या तुम जानते हो कि जब तुम लोग अज्ञान थे तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था ? । 190।

उन्होंने कहा, क्या सचमुच तू ही यूसुफ है ? उसने कहा, मैं ही यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है । निश्चित रूप से अल्लाह ने हम पर भारी अनुग्रह किया है । निःसन्देह जो भी तकवा अपनाये और धैर्य धारण करे तो अल्लाह उपकार करने वालों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता । 191।

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! निःसन्देह अल्लाह ने तुझे हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है और हम ही अवश्य दोषी थे । 192।

يَسْأَلُ إِذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ
وَأَخِيهِ وَلَا تَأْتِسُوا مِنْ رُّوحِ اللَّهِ
إِنَّهُ لَا يَأْكُشُ مِنْ رُّوحِ اللَّهِ إِلَّا
الْقَوْمُ الْكُفَّارُونَ ⑥

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ
مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الصَّرْرَ وَجِئْنَا بِضَاعَةً
مُرْجِحَةً فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقَ
عَلَيْنَا ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ الْمُتَصَدِّقِينَ ⑦

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ
وَأَخِيهِ إِذَا أَنْتُمْ جِهْلُونَ ⑧

قَالُوا إِنَّا لَكُلَّتْ يُوسُفَ ۝ قَالَ أَكَا
يُوسُفَ وَهَذَا أَخِيٌّ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۝
إِنَّهُ مَنْ يَتَقَوَّلُ وَيَصِيرُ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَضِيعُ
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑨

قَالُوا إِنَّ اللَّهَ لَقَدْ أَثْرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا
لَخَطِيلِينَ ⑩

उसने कहा, आज के दिन तुम पर कोई दोषारोपण नहीं होगा । अल्लाह तुम्हें क्षमा कर देगा और वह सभी कृपा करने वालों से सर्वाधिक कृपा करने वाला है । 1931

मेरा यह कुर्ता साथ ले जाओ और मेरे पिता के समक्ष इसे रख दो, उन पर वास्तविकता खुल जायेगी और (बाद में) अपने सब घरवालों को मेरे पास ले आओ । 1941 (रुपू. $\frac{10}{4}$)

अतः जब यात्रीदल चल पड़ा तो उनके पिता ने कहा, मुझे निश्चित रूप से यूसुफ की महक आ रही है, चाहे तुम मुझे पागल ठहराते रहो । 1951

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! निश्चित रूप से आप अपने उसी पुराने भ्रम में पड़े हैं । 1961

फिर जब शुभ-समाचारदाता आया (और) उसने उस (कुर्ते) को उस के समक्ष रख दिया तो उस पर वास्तविकता खुल गई । उस ने कहा, क्या मैं तुम्हें नहीं कहता था कि मैं अल्लाह की ओर से उन बातों की निश्चित रूप से जानकारी रखता हूँ, जो तुम नहीं जानते ? । 1971

उन्होंने कहा, हे हमारे पिता ! हमारे लिए (अल्लाह से) हमारे पापों की क्षमायाचना करें । निश्चित रूप से हम दोषी थे । 1981

उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए अवश्य अपने रब से क्षमायाचना करूँगा । निःसन्देह

قَالَ لَا تُفْرِيَنَّ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ لَيَعْفُرُ اللَّهُ
كُلُّهُ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ⑩

إذْ هَبَوْا إِقْمِيسُونَ هَذَا فَلَقْوَةٌ عَلَى وَجْهِ
إِبْرَاهِيمَ يَأْتِ بَصِيرًا وَأَنْوَنِي بِأَهْلِكُمْ
أَجْمَعِينَ ⑪

وَلَمَّا فَصَلَّتِ الْعِزِيزُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي
لَا جِدَرٍ يَعْرِجُ يُوسَفُ لَوْلَا أَنْ تَقْنِدُونِي ⑫

قَالُوا إِنَّ اللَّهَ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيرِ ⑬

فَلَمَّا آتَنَا جَاءَ الْبَشِيرُ أَنْفُسَهُ عَلَى وَجْهِهِ
فَأَرْتَهُ بَصِيرًا قَالَ الْمُرْأَلْ لَكُمْ إِنِّي
أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑭

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَكَ مَا ذَنَوبَنَا إِنَّا
كُنَّا لَخَطِئِينَ ⑮

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ

वही बहुत क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दिया करने वाला है । 99।

अतः जब वे यूसुफ के समक्ष पेश हुए तो
उसने अपने माता-पिता को अपने
निकट स्थान दिया और कहा कि यदि
अल्लाह की इच्छा हो तो मिस्र में
शांतिपूर्वक प्रवेश करो । 100।

और उसने अपने माता-पिता को
सम्मान पूर्वक आसन पर बिठाया और
वे सभी उसके लिए (अल्लाह के
समक्ष) सजदः में गिर पड़े और उसने
कहा, हे मेरे पिता ! मेरे पहले से देखे
हुए स्वप्न का यह था स्वप्नफल । मेरे
रब्ब ने इसे निश्चित रूप से सच कर
दिखाया और मुझ पर बहुत कृपा की,
जब उसने मुझे कारागार से निकाला
और तुम्हें मरुभूमि से ले आया ।
जबकि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों
के बीच फूट डाल दी थी । निःसन्देह
मेरा रब्ब जिसके लिए चाहे बहुत दिया
और अनुकंपा करने वाला है ।
निःसन्देह वही स्थायी ज्ञान रखने वाला
(और) परम विवेकशील है । 101।

हे मेरे रब्ब ! तूने मुझे राज-कार्य में अंश
प्रदान किया और बातों की वास्तविकता
को समझने का ज्ञान दिया । हे आकाशों
और धरती के सृष्टिकर्ता ! तू इहलोक
और परलोक में मेरा मित्र है । मुझे
आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु दे ।
और मुझे सदाचारियों के वर्ग में शामिल
कर । 102।

هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ④

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ
أَبَوِيهِ وَقَالَ اذْخُلُوا مُضْرَابَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمْنِينَ ۝

وَرَفَعَ أَبَوِيهِ عَلَىٰ الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ
سَجَدًا ۝ وَقَالَ يَا بَتَ هَذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ
مِنْ قَبْلِ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۝ وَقَدْ
أَخْسَنَ فِيْ إِذَا حَرَجَنِيْ ۝ مِنَ السَّجْنِ
وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْءِ وَمِنْ بَعْدَ آنَ نَزَعَ
الشَّيْطَنُ بَيْنِيْ ۝ وَبَيْنَ أَخْوَتِيْ ۝ إِنَّ رَبِّيْ
لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ ۝ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

رَبِّيْ قَدْ أَتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَمْتَنِيْ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيْثِ ۝ فَأَطْرَفَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ ۝ أَنْتَ وَلِيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝
تَوَفَّيْتُ مُسْلِمًا وَأَنْحَقْتُ بِالصَّالِحِينَ ۝

यह (वृत्तांत) अज्ञात समाचारों में से है जिसे हम तेरी ओर बहह करते हैं और तू उनके पास नहीं था जब उन्होंने अपनी बात पर सहमति बना ली थी जब कि वे (बुरी) योजनाएँ बना रहे थे । 103।

और चाहे तू कितनी भी इच्छा करे अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं बनेंगे । 104।

और तू उनसे इस (सेवा) का कोई प्रतिफल नहीं माँगता । यह तो समस्त लोकों के लिए केवल एक उपदेश है । 105। (रुकू ١١)

और आकाशों और धरती में कितने ही चिह्न हैं जिन पर से वे मुँह फेरते हुए गुज़रते रहते हैं । 106।

और उनमें से अधिकतर अल्लाह पर केवल इस प्रकार ईमान लाते हैं कि वे (साथ ही) शिर्क भी कर रहे होते हैं । 107।

अतः क्या वे इस बात से निश्चिंत हो गये हैं कि अल्लाह के अज्ञाब में से कोई ढाँप देने वाली (विपत्ति) उन पर आये। अथवा (क्रांति की) घड़ी अकस्मात आ जाये, जबकि वे (उसके) बारे में कोई जानकारी न रखते हों । 108।

तू कह दे कि यह मेरा रास्ता है । मैं ^{हूँ} अल्लाह की ओर बुलाता हूँ । मैं और मेरे अनुगामी सुस्पष्ट ज्ञान पर स्थित हैं । और पवित्र है अल्लाह और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ । 109।

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ تُوَجِّهُ إِلَيْكَ وَمَا
كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذَا جَمَعُوا أَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُونَ ⑩

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَضَ
بِمُؤْمِنِينَ ⑪

وَمَا أَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَخْرِ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ⑫

وَكَأَيْنُ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَمْرُرُونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ⑬

وَمَا يُؤْمِنُ مِنْ أَكْثَرِهِمْ بِاللهِ إِلَّا وَهُمْ
مُشْرِكُونَ ⑭

أَفَلَمْ يَرَوْا أَنْ تَأْتِيهِمْ عَذَابٌ مِّنْ عَذَابِ
اللهِ أَوْ تَأْتِيهِمْ السَّاعَةُ بَعْتَدًا ۖ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ⑮

قُلْ هُنْدُمْ سَيِّلُو ۖ أَذْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَى
بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ
وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑯

और हम ने तुझ से पहले बस्तियों के वासियों में से केवल पुरुषों को ही (रसूल के रूप में) भेजा, जिनकी ओर हम वहाँ किया करते थे । अतः क्या वे धरती पर घूमे-फिरे नहीं ताकि वे देख सकते कि उनके पूर्ववर्ती लोगों का कैसा परिणाम हुआ था ? और जिन्होंने तक़वा धारण किया उनके लिए परलोक का घर ही उत्तम है । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ॥१०॥

यहाँ तक कि जब रसूल (उनसे) निराश हो गये और (लोगों ने) सोचा कि उनसे झूठ बोला गया है ।* तो हमारी सहायता उन तक पहुँची । अतः जिसे हमने चाहा वह बचा लिया गया और हमारा अज्ञाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता ॥111॥

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي
إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرْبَىٰۚ۝ أَفَلَمْ يَسِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۝ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ حَيْثُ
لَلَّذِينَ أَنْقَعُوا ۝ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا سَتَيَّسَ الرَّسُولُ وَظَلَمُوا أَنَّهُمْ
قَدْ كَذَّبُوا اجْعَاهُمْ نَصَرَنَا فَنُجِّيَ مَنْ
لَّمْ يَأْتِ بِإِيمَانٍ وَلَا يُرِدُ بِأَسْنَانِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ⑩

لَقَدْ كَانَ فِي قَصْصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولَى
الْآتَابِ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَى وَلَكِنْ
تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَقْسِيلُ كُلِّ
شَيْءٍ عَوْهَدَى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يَوْمَئِنَ ﴿١٤﴾

* अरबी शब्द कु़ज़िबू (उनसे झूठ बोला गया) का यह अभिप्राय है कि उन्होंने यह समझा कि हम से नवियों ने झूठ बोला है। जब अल्लाह की सहायता नवियों को प्राप्त हो गई तब उन लोगों को समझ आ गई कि उन नवियों ने जो भी कहा था वह सच था।

13- सूरः अर-राद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 44 आयतें हैं।

यहाँ अरबी खंडाक्षर अलिफ़-लाम-मीम के अतिरिक्त रा भी आया है और इस प्रकार अलिफ़-लाम-मीम-रा का अर्थ हुआ अनल्लाहु आ'लमु व अरा अर्थात् मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ और देखता हूँ।

इस सूरः में ब्रह्माण्ड के ऐसे छिपे रहस्यों पर से पर्दा उठाया गया है जिन की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रत्यक्ष रूप से कोई भी जानकारी नहीं थी। इसमें इस ओर भी संकेत है कि इससे पूर्व जो सूचनायें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने वर्णन की गई हैं वे भी निस्सन्देह एक सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से बताई गई थीं, जिनमें संदेह का कोई स्थान नहीं।

ब्रह्माण्ड के रहस्यों में से सबसे मौलिक विषय जिसे यहाँ बताया गया है वह है गुरुत्वाकर्षण (Gravity) की वास्तविकता। अल्लाह ने वर्णन किया कि धरती और आकाश अपने आप संयोगवश अपने कक्ष पर स्थित नहीं हो गये बल्कि समस्त आकाशीय पिंडों के मध्य एक ऐसी गुप्त शक्ति कार्य कर रही है जिसे तुम आँखों से देख नहीं सकते। इस शक्ति के परिणामस्वरूप अपने कक्ष पर स्थित समस्त आकाशीय पिंड मानो स्तंभों पर उठाए हुए हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के जानकार गुरुत्वाकर्षण का यही अर्थ करते हैं। इसके विस्तृत विवरण का यहाँ अवसर नहीं।

एक दूसरा महत्वपूर्ण विषय इस सूरः में यह वर्णित हुआ है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने स्वच्छ जल से धरती की प्रत्येक वस्तु को जीवन प्रदान किया है। समुद्र का जल तो अत्यन्त खारा होता है कि इससे स्थल भाग पर बसने वाले प्राणी और वनस्पति जीवन धारण करने के विपरीत मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। इसमें समुद्र के पानी को निथार कर ऊँचे पहाड़ों की ओर ले जाने और फिर वहाँ से इसके बरसने और समुद्र की ओर वापस पहुँचते पहुँचते चारों ओर जीवन बिखरने की व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। इस व्यवस्था का बहुत गहरा सम्बन्ध आकाशीय विजलियों से है जो समुद्र से वाष्प उठने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं और पानी भी बादलों के मध्य विजली की कौंध के बिना बूँदों के रूप में धरती पर नहीं बरस सकता। विजली की ये कड़के कई बार ऐसी भयंकर होती हैं कि कुछ के लिए वे जीवन दायक होने के बदले उनके विनाश का कारण बन जाती हैं। इस लिए कहा कि फ़रिश्ते ऐसे समय में अल्लाह तआला के समक्ष भय से काँपते हैं। इससे पूर्व अल्लाह तआला ने यह वर्णन भी कर दिया है कि प्रत्येक मनुष्य की सुरक्षा के लिए उसके आगे और पीछे ऐसे गुप्त रक्षक हैं जो

अल्लाह तआला के विधान और आदेशानुसार ही उसकी सुरक्षा करते हैं। यह एक बहुत ही गहरा विज्ञान संबंधी विषयवस्तु है जिसका विस्तृत उल्लेख करना यहाँ संभव नहीं परन्तु जिसको भी सामर्थ्य है वह इसके अर्थ-सामग्र में दुबकी लगा कर ज्ञान के मोती निकाल सकता है।

फिर इस सूरः में यह भी कहा गया कि हमने प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है। अरब वासी इतना तो जानते थे कि खनूर के जोड़े होते हैं। परन्तु अन्य वृक्षों और फलों के सम्बन्ध में उनकी कल्पना में भी नहीं था कि वे भी जोड़े-जोड़े हैं। अतः यह एक नया विषयवस्तु वर्णन कर दिया गया जिसको आज के वैज्ञानिकों ने इस गहराई से समझ लिया है कि उनके अनुसार केवल प्रत्येक जीवित वनस्पति के जोड़े नहीं हैं बल्कि अणु-परमाणु में भी जोड़े मिलते हैं। द्रव्य (Matter) के मुकाबले पर प्रतिद्रव्य (Anti-matter) का भी एक जोड़ा है। इस प्रकार यदि समस्त ब्रह्माण्ड को समेट दिया जाए तो उसका सकारात्मक तत्त्व उसके नकारात्मक तत्त्व से मिल कर समाप्त हो जाएगा और अनस्तित्व से अस्तित्व-निर्माण का सिद्धांत भी इन आयतों में छिपे अर्थों से सुलझ जाता है।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शत्रुओं पर तर्क पूरा करने के लिए एक ज़बरदस्त प्रमाण दिया जा रहा है कि यह महान नबी और इसके सहाबा रजि. कैसे पराजित हो सकते हैं जबकि उनका क्षेत्र बढ़ता चला जा रहा है और उनके शत्रुओं का क्षेत्र घटता चला जा रहा है। इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सांत्वना दी गई कि अन्ततः चाहे इस्लाम की भव्य विजय तू अपनी आँख से देख सके अथवा न देख सके, हम हर हाल में तेरे धर्म को समस्त संसार पर विजयी कर देंगे।



سُورَةُ الرَّعْدِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعَ وَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَ سِتُّهُ رُكُونَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु व अरा : मैं अल्लाह हूँ सबसे अधिक जानने वाला हूँ और मैं देखता हूँ । ये संपूर्ण पुस्तक की आयतें हैं। और जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया, सत्य है परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते । 12।

अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना ऐसे स्तंभों के ऊँचा किया जिन्हें तुम देख सको । फिर वह अर्श पर स्थिर हुआ और सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा पर नियुक्त किया । प्रत्येक वस्तु एक निश्चित अवधि तक के लिए गतिशील है। वह प्रत्येक काम को योजनापूर्वक करता है (और) अपने चिह्नों को खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम अपने रब्ब से मिलने का विश्वास करो । 13।

और वही है जिसने धरती को फैला दिया और इसमें पर्वत और नदियाँ बनाई और हर प्रकार के फलों में से उसने उसमें दो-दो जोड़े बनाए । वह रात के द्वारा दिन को ढाँप देता है । निस्सन्देह इसमें सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए चिह्न हैं । 14।

और धरती में एक दूसरे से जुड़े हुए क्षेत्र हैं और अंगूरों के बाग और खेतियाँ और

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْأَمْرٌ تِلْكَ أَيْتُ الْكِتَابِ ۖ وَالَّذِي
أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رِتْبِكَ الْحَقُّ ۖ وَلِكُنَّ
أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ②

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرْوِنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلُّ يَجْرِي لِأَجْلِ
مَسْحَىٰ ۖ يَدِيرُ الْأَمْرَ يَقْصِلُ الْأَيْتَ
لَعْلَكُمْ بِلِقَاءَ رَبِّكُمْ تُوقَنُونَ ③

وَهُوَ الَّذِي مَدَ الْأَرْضَ وَجَعَلَ قِبَّا
رَوَاسِيَ وَأَنْهَرًا ۖ وَمِنْ كُلِّ الشَّمَرَاتِ جَعَلَ
قِبَّاهَازَ وَجَيْنِ اثْنَيْنِ يَعْشِيَ الْأَئِلَّا التَّمَارَ ۖ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْتَكْرُونَ ④

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُتَجَوِّرٌ ۖ وَجَعَلَ

खजूर के वृक्ष भी, एक जड़ से एक से अधिक कोंपले निकालने वाले और एक जड़ से अधिक कोंपले न निकालने वाले हैं। ये (सब कुछ) एक ही पानी से सींचे जाते हैं। और हमने इनमें से कुछ को कुछ पर फलों की दृष्टि से महत्ता प्रदान की है। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं। १।

और यदि तू आश्चर्य करे तो उनका यह कथन भी तो बहुत आश्चर्यजनक है कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य एक नयी सृष्टि में ढाले जाएँगे? यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया और यही हैं वे जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे तथा यही आग वाले लोग हैं। वे उसमें दीर्घ काल तक रहने वाले हैं। १।

और वे तुझ से बुराई को भलाई से पहले शीघ्रतापूर्वक माँगते हैं। जबकि उनसे पहले बुहुत से शिक्षाप्रद उदाहरण गुज़र चुके हैं। और निस्सन्देह तेरा रब्ब लोगों के लिए उनके अत्याचार के बावजूद बहुत क्षमा करने वाला है। और निस्सन्देह तेरा रब्ब दंड देने में बहुत कठोर है। १।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कहते हैं, ऐसा क्यों न हुआ कि इसके रब्ब की ओर से इस पर कोई एक निशान ही उतारा जाता। निस्सन्देह तू केवल एक सतर्ककारी है। और प्रत्येक जाति के लिए एक पथ-प्रदर्शक होता है। १।

(रुक् १)

مِنْ أَغْنَابٍ وَرَزْعٍ وَنَخْلٍ صُوَانٌ
وَغَيْرٌ صُوَانٌ يَسْتُهْنُ بِمَا إِنْ وَاحِدٌ
وَنَفْضٌ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرٌ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ①

وَإِنْ تَجْعَلْ فَعَجَبٌ قَوْلَهُمْ إِذَا كَتَنَا
ثَرَبَاءَ إِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ أَوْ إِنْكَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأَوْ إِنْكَ
الْأَغْلَلُ فِيْ أَغْنَاقِهِمْ وَأَوْ إِنْكَ
أَحْبَبُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ①

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمُشْكُتُ ۖ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مُغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَيِيدُ الْعِقَابِ ⑦

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ
عَلَيْهِ أَيْكَهُ مِنْ رَبِّهِ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ
وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادِيٌ ۖ

अल्लाह जानता है जो प्रत्येक मादा (गर्भ के रूप में) उठाती है और (उसे भी) जिसे गर्भाशय कम करते हैं और जिसे बढ़ाते हैं। और प्रत्येक वस्तु उसके निकट एक विशेष अनुमान के अनुसार होती है। 19।

वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का जाता है, बहुत बड़ा (और) बहुत ऊँची शान वाला है। 10।

बराबर है तुम में से वह जिसने बात छिपाई और जिसने बात को प्रकट किया। और वह जो रात को छिप जाता है और दिन को (सरे आम) चलता फिरता है। 11।

उसके लिए उसके आगे और पीछे चलने वाले रक्षक (नियुक्त) हैं जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं। निस्सन्देह अल्लाह किसी जाति की अवस्था को नहीं बदलता जब तक वे स्वयं अपने आप को न बदलें। और जब अल्लाह किसी जाति के बुरे अन्त का निर्णय कर ले तो किसी प्रकार उसको टालना संभव नहीं। और उस के सिवा उनके लिए कोई कार्यसाधक नहीं। 12।*

वही है जो तुम्हें आसमानी विजली दिखाता है जिससे कभी तुम भय और कभी लालच में पड़ जाते हो और (वही) बोझल बादलों को (ऊँचा) उठा देता है। 13।

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغْيِضُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَرْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ
بِوْقَدَارٍ ①

عِلْمُ الْعَيْنِ وَالشَّهَادَةُ الْكَبِيرُ الْمُتَحَالٌ ②

سَوَّا عِنْدَكُمْ مَمْنُ أَسْرَ القَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ
بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخِفٌ بِإِلَيْلٍ وَسَارِبٍ
بِالنَّهَارِ ③

لَهُ مُعَقِّبُتُ مِنْ بَيْنِ يَدِيهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْبُرُ
مَا يَقُولُ حَتَّى يَغْيِرُ وَمَا يَأْنِسُهُ
وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرْدَلَهُ
وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٰ ④

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ حَوْفًا وَطَمَعًا
وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الشِّقَائِقَ ⑤

* अरबी वाक्य मिन् अप्रिल्लाहि यूँ तो अरबी मुहावरा की दृष्टि से वि अप्रिल्लाहि होना चाहिए था अर्थात् अल्लाह के आदेश से। परन्तु यह विशेष ढंग दो अर्थ रखता है कि अल्लाह के आदेश से, अल्लाह ही के विधान से बचाने के लिए अल्लाह का आदेश प्रकट होता है।

और विजली की घन-गरज उसकी स्तुति के साथ (उसका) गुणगान करती है और फरिश्ते भी उसके भय से (गुणगान कर रहे होते हैं)। और वह कड़कती हुई विजलियाँ भेजता है और उनके द्वारा जिसे चाहे विपत्ति में डालता है। जबकि वे अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं। और वह पकड़ करने में बहुत कठोर है ॥14॥

सच्ची दुआ उसी से माँगी जाती है। और जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं वे उनकी किसी बात का उत्तर नहीं देते। हाँ परन्तु (वे) उस व्यक्ति की भाँति (हैं) जो अपने दोनों हाथ जल की ओर बढ़ाए ताकि वह उसके मुँह तक पहुँच जाए। हालाँकि वह (जल) किसी प्रकार उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफिरों की दुआ पश्चाष्टा में भटकने के सिवा और कुछ नहीं ॥15॥

और जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह ही को सजदः करते हैं। चाहे खुशी से करें चाहे विवशता से और उनकी परछाइयाँ भी सुबह और शाम (के समय सजदः करती हैं) ॥16॥

तू पूछ, आकाशों और धरती का रब कौन है? (और) कह दे कि अल्लाह ही है। तू कह दे, क्या फिर तुम उसके सिवा ऐसे मित्र बना बैठे हो जो स्वयं अपने लिए भी न लाभ की और न हानि की कुछ शक्ति रखते हैं? तू पूछ, क्या अंधा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं?

وَيَسِّعُ الرَّعْدَ بِهِمْ وَالْمَلِكَةُ مِنْ
خِيقَتِهِمْ وَيُرِسِّلُ الصَّوَاعِقَ فِي صِيفِ
بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يَجَادِلُونَ فِي اللَّهِ
وَهُوَ شَدِيدُ الْعِحالِ ⑩

لَهُ دُعَوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ
دُوْنِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشُغُّ إِلَّا
كَبَاسِطٌ كَفَيْهُ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهَ وَمَا
هُوَ بِالْفِعْلِ وَمَا دُعَاءُ الْكُفَّارِ إِلَّا
فِي ضَلَالٍ ⑪

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
ظُنْوًا وَكَرْهًا وَظَلَّلُهُمْ بِالْغَدْوِ
وَالْأَصَالِ ⑫

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ
اللَّهُ قُلْ أَفَلَا يَحْذِثُ مِنْ دُوْنِهِ أُولَئِكَ لَا
يَمْلَكُونَ لَا نَفِيْهُمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ
هَلْ يَسْتَوِي الْأَغْنَى وَالْبَصِيرُ أَمْ هُلْ

और अंधकार और प्रकाश एक समान हो सकते हैं ? अथवा क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा ऐसे साज्जीदार बना रखे हैं जिन्होंने उसकी सुष्टि की भाँति सुष्टि रचना की है, फिर उन पर सुष्टि सन्दिग्ध हो गई ? तू कह दे कि अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का सष्टा है । और वह अद्वितीय (और) प्रतापवान् है । 17।

उसने आसमान से पानी उतारा तो घाटियाँ अपनी सामर्थ्य के अनुसार वह उठीं और बाढ़ ने ऊपर आजाने वाली ज्ञाग को उठा लिया । और वे जिस वस्तु को आग में डाल कर दहकाते हैं ताकि ज़ेबर या दूसरे सामान बनाएं उससे भी इसी प्रकार की ज्ञाग उठती है। इसी प्रकार अल्लाह सच और झूठ का उदाहरण वर्णन करता है । अतः जो ज्ञाग है वह तो बेकार चली जाती है । और जो लोगों को लाभ पहुँचाता है वह धरती में ठहर जाता है । इसी प्रकार अल्लाह उदाहरणों का वर्णन करता है । 18।

जो लोग अपने रब्ब की बात को स्वीकार करते हैं उनके लिए भलाई है और वे लोग जो उसकी (बात को) स्वीकार नहीं करते यदि वह सब का सब उनका हो जाये जो धरती में है और उसके बराबर और भी हो तो वे उसको देकर अवश्य अपनी जानें छुड़ाने का प्रयत्न करेंगे । ये वे लोग हैं जिनके लिए बहुत बुरा हिसाब (निश्चित) है और उनका

تَسْتَوِي الظُّلْمَتُ وَالنُّورُ ۚ أَمْ جَعَلُوا
لِلَّهِ شَرْكًا ظَاهِرًا ۖ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَسَابَّهُ
الْحَقُّ عَلَيْهِمْ ۖ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْفَهَارُ ۝

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَا يَعْلَمُ فَسَأَلَثُ أَوْ دِيَةً
إِقْدَرِهَا فَأَحْمَلَ السَّيْلَ زَبَدًا رَأْيَيَا ۖ وَمَا
يُوْقَدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ
مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلُهُ ۖ كَذَلِكَ يُضَرِّبُ اللَّهُ
الْحَقُّ وَالْبَاطِلُ ۖ فَمَمَّا الزَّبَدُ فَيَذَهَبُ
جَهَنَّمُ ۖ وَمَمَّا يَسْعُفُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي
الْأَرْضِ ۖ كَذَلِكَ يُضَرِّبُ اللَّهُ
الْأَمْثَالُ ۝

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَى ۝
وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْا نَهْمَمَ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فَتَدْرَأُهُ ۝
أُولَئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحُسَابِ وَمَا وَيْهُمْ

ठिकाना नरक है । और क्या ही बुरा ۲۹
ठिकाना है ॥ 191 (रुक् ۲)

तो क्या वह जो जानता है कि जो तेरे
रब्ब की ओर से तेरी ओर उतारा गया है
सत्य है, उसकी भाँति हो सकता है जो
अंधा हो ? निस्सन्देह उपदेश केवल
बुद्धिमान लोग ही ग्रहण करते हैं ॥ 201

(अर्थात्) वे लोग जो अल्लाह के (साथ
की हुई) प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और
दृढ़ प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ते ॥ 211

और वे लोग जो उसे जोड़ते हैं जिसे
जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया और
अपने रब्ब से ढरते हैं और बुरे हिसाब से
भय करते हैं ॥ 221

और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की
प्रसन्नता के लिए धैर्य धारण किया और
नमाज़ को क़ायम किया और जो कुछ
हमने उनको दिया उसमें से छुपा कर भी
और दिखा कर भी खर्च किया और जो
नेकियों के द्वारा बुराइयों को दूर करते
रहते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए
(परकालीन) घर का (सर्वोत्तम)
परिणाम है ॥ 231

(अर्थात्) स्थायी स्वर्ग है । उनमें वे
प्रविष्ट होंगे और वे भी जो उनके पूर्वजों
और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों
में से सुधर गए । और फरिश्ते उन के
पास प्रत्येक द्वार से आ रहे होंगे ॥ 241

(यह कहते हुए) सलाम हो तुम पर उस
कारण जो तुम ने धैर्य धारण किया ।

جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَهَادُ ۝

أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
الْحُقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۝ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

الَّذِينَ يُوقَنُ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ
الْمُيْمَانَ ۝

وَالَّذِينَ يَصْلُوْنَ مَا أَمْرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ
يُؤْصَلَ وَيَخْسُوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخْافُونَ
سُوءَ الْحِسَابِ ۝

وَالَّذِينَ صَبَرُوا وَابْتَغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمْ
سِرًا وَعَلَانِيَةً وَيَذْرِئُونَ بِإِلْحَاسَنَةِ
السَّيِّئَةِ أُولَئِكَ لَهُمْ عَقْبَى الدَّارِ ۝

جَثُثُ عَدِّنِ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ
مِنْ أَبَآءِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ
وَالْمُلْكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝

سَلَمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

अतः क्या ही अच्छा है (परकालीन) घर
का परिणाम । 25।

और वे लोग जो अल्लाह से की गई
प्रतिज्ञा को पक्का करने के बाद तोड़ देते
हैं और उसे काटते हैं जिसके जोड़ने का
अल्लाह ने आदेश दिया है और धरती में
फ़साद करते फिरते हैं । यही वे लोग हैं
जिनके लिए ला'नत है और उनके लिए
सबसे बुरा घर होगा । 26।

अल्लाह जिसके लिए चाहे जीविका बढ़ा
देता है और संकुचित भी करता है ।
और वे लोग सांसारिक जीवन पर ही
प्रसन्न हो गए हैं । और परलोक में
सांसारिक जीवन की वास्तविकता एक
तुच्छ सुख-साधन के सिवा कुछ (याद)
न रहेगी । 27। (रुकू ۳)

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया,
कहते हैं क्यों न इस पर इसके रब्ब
की ओर से कोई एक चिह्न ही उतारा
गया । तू कह दे निस्सन्देह अल्लाह
जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है
और अपनी ओर (केवल) उसे
हिदायत प्रदान करता है जो (उसकी
ओर) ज़ुकता है । 28।

(अर्थात्) वे लोग जो ईमान लाए और
उनके दिल अल्लाह की याद से संतुष्ट हो
जाते हैं । सुनो ! अल्लाह ही की याद से
दिल संतुष्टि पाते हैं । 29।

वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म
किए उनके लिए बहुत पवित्र स्थान और
बहुत ही उत्तम लौटने की जगह है । 30।

عَقْبَى الدَّارِ ⑩

وَالَّذِينَ يُنْقَصُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ
بَعْدِ مِيَاثِيقِهِ وَيَفْعَلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوَصِّلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
أُولَئِكَ لَهُمُ الْلَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ⑪
اللَّهُ يَسْطِعُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَفَرَحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ⑫

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ
إِيمَانٌ مِّنْ رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُعْلِمُ مَنْ يَشَاءُ
وَيَعْلَمُ إِلَيْهِ مَنْ أَنْابَ ⑬

الَّذِينَ أَمْتَوا وَتَطْمَئِنُ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ
اللَّهِ ۖ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُ الْقُلُوبُ ⑭
الَّذِينَ أَمْتَوا وَعَمِلُوا الصِّلَاحَ طَهُّرُ
لَهُمْ وَحْسُنُ مَا إِلَّا ⑮

इसी प्रकार हमने तुझे एक ऐसी उम्मत में भेजा जिससे पहले कई उम्मतें गुज़र चुकी थीं ताकि तू उन पर उसे पाठ करे जो हमने तेरी ओर वहाँ किया, हालाँकि वे रहमान का इनकार कर रहे हैं। तू कह दे, वह मेरा रब्ब है। उसके सिवा कोई उपास्य नहीं। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मेरा विनम्रता पूर्वक झुकना है। 131।

और यदि कुरआन ऐसा होता कि उससे पहाड़ चलाए जा सकते अथवा उससे धरती फाड़ी जा सकती अथवा उसके द्वारा मुर्दों से बात-चीत की जा सकती (तो भी वे संदेह करते)। वास्तविकता यह है कि फैसला पूर्णतया अल्लाह ही का होता है। अतः क्या वे लोग जो ईमान लाए हैं इस बात से अवगत नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सब के सब मनुष्यों को हिदायत दे देता ? और वे लोग जो काफिर हुए उन्हें उनके कर्मों के कारण (दिलों को) खटखटाने वाली एक विपत्ति पहुँचती रहेगी अथवा वह (चेतावनी) उनके घरों के निकट उतरेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ पहुँचे। निस्सन्देह अल्लाह वचन भंग नहीं करता। 132।*

(रुक् ४
१०)

كَذِلِكَ أَرْسَلْنَا فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهَا أُمَّمٌ لِتَشْتَوِّ عَلَيْهِمُ الَّذِي
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ
بِالرَّحْمَنِ ۖ قُلْ هُوَ رَبِّ الْأَلَّاهُمَّ هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكِّلُتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۖ ⑦

وَلَوْا نَّ قُرْآنًا سُيرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ
قِطْعَاتِ الْأَرْضِ أَوْ كَلْمَمَ بِهِ الْمَوْتَىُ
بِلِ اللَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۖ أَفَلَمْ يَأْيُسْ
الَّذِينَ أَمْوَأْنَ لَوْيَشَاءَ اللَّهُ لَهُدَى
النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَلَا يَرَى الَّذِينَ كَفَرُوا
تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أُوْتَخْلُ
قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدَ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْلُفُ الْمِيعَادَ ۖ

* कुरआन पाठ करने से न तो पहाड़ टलते हैं, न धरती फाड़ी जा सकती है, न मुर्दों से बात-चीत की जा सकती है, बल्कि ये बातें अल्लाह के आदेश से संभव हो सकती हैं। इसमें इस ओर भी संकेत है कि हज़रत मसीह अतै. के कहने पर न पहाड़ टलते थे, न धरती फाड़ी जाती थी, न मुर्दे जीवित किए जाते थे बल्कि अल्लाह ही का आदेश चलता था।

और निस्सन्देह तुझ से पहले रसूलों से भी उपहास किया गया । फिर मैंने उन्हें जिन्होंने इनकार किया, कुछ ढील दी फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया । तो मेरा दंड कैसा (शिक्षाप्रद) था ? 133।

तो क्या वह जो हर एक जान पर निरीक्षक है कि उसने क्या कमाया (सच्चाई के साथ जाँच-पड़ताल करने का अधिकारी नहीं ?) । और उन्होंने अल्लाह के साझीदार बनाये हैं । तू कह दे, उनके नाम तो गिनाओ । अथवा क्या फिर तुम उसे ऐसी बात से अवगत कराओगे जिसकी वह समग्र धरती में कोई जानकारी नहीं रखता ? अथवा (ये) केवल दिखावे की बातें हैं ? वास्तविकता यह है कि जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए उनके छल-कपट सुन्दर बना दिए गए और वे (हिदायत के) मार्ग से रोक दिए जाएँगे । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट घोषित कर दे उसे हिदायत देने वाला कोई नहीं । 34।

उनके लिए सांसारिक जीवन में अज्ञाब है और परलोक का अज्ञाब अत्यन्त कठोर है । और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई नहीं । 35।

उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका मुत्तकियों से बाद किया गया है (यह है) कि उसके दामन में नहरें बहती हैं । उसका फल और उसकी छाया भी

وَلَقَدِ اسْتَهْزَئَ بِرُسُلِنَا مِنْ قَبْلِكَ
فَأَمْلَيْتَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا لَمَّا آتَيْنَاهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابٌ ⑩

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ وَجَعَلُوا إِلَهَ شَرَكًا ۝ قُلْ
سَمْوَهُمْ أُمُّ شِبَّوْنَةَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْأَرْضِ أَمْ بِنَظَاهِرِ مِنَ الْقُولِ بْلُزْرِينَ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْاعُنَ
الشِّيْلِ ۝ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَاكَلَهُ
مِنْ هَادِ ⑩

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابٌ
الْآخِرَةِ أَشَفْ ۝ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ وَاقِ ⑩

مَثْلُ الْجَهَنَّمِ الَّتِي وُعِدَ الْمُشْكُونَ ۝ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ ۝ أَكُلُّهَا دَأْبٌ

चिरस्थायी हैं। यह उन लोगों का अंत है जिन्होंने तकवा धारण किया जबकि काफिरों का अंत आग है। 136।

और जिन लोगों को हमने पुस्तक दी वे उससे जो तेरी ओर उतारा जाता है प्रसन्न होते हैं। और विभिन्न गिरोहों में से कुछ ऐसे हैं जो इसके कुछ भागों का इनकार कर देते हैं। तू कह दे कि निस्सन्देह मुझे यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना करूँ और उसका कोई समकक्ष न ठहराऊँ। उसी की ओर मैं बुलाता हूँ और उसी की ओर मेरा लौटना है। 137।

और इसी प्रकार हमने उसे एक सरल और शुद्ध भाषा संपन्न आदेश के रूप में उतारा है। और तेरे पास ज्ञान आ चुकने बाद यदि तू उनकी इच्छाओं का अनुसरण करे तो तुझे अल्लाह की ओर से कोई मित्र और कोई बचाने वाला न मिलेगा। 138। (रुू. ١١)

और निस्सन्देह हमने तुझ से पहले बहुत से रसूल भेजे और हमने उनके लिए पत्तियाँ बनाईं और सन्तान भी (बनाये)। और किसी रसूल के लिए यह संभव नहीं कि कोई एक आयत भी अल्लाह की आज्ञा के बिना ला सके। और प्रत्येक निश्चित घड़ी के लिए एक लेखपत्र है। 139।

अल्लाह जो चाहे मिटा देता है और क्रायम भी रखता है और उसके पास सभी लेखपत्रों का मूल है। 140।

وَظِلْمَهَاٰ تِلْكَ عَقْبَى الَّذِينَ اتَّقُوا
وَعَقْبَى الْكُفَّارِ النَّارَ ⑩

وَالَّذِينَ أَتَيْهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا
أَنْزَلَ إِلَيْكَ وَمَنْ الْأَخْرَابِ مَنْ يُنْكَر
بَعْضُهُ ۝ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ
وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۝ إِلَيْهِ أَذْعُو وَإِلَيْهِ
مَأْبِ ⑪

وَكَذِلِكَ أَنْزَلْنَا حُكْمًا عَرِيشًا ۝ وَلِئِنْ
اَتَبْعَثْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ ۝ مَالِكٌ مِنَ اللَّهِ مِنْ ۝ وَلِيٌ
وَلَا وَاقٌِ ⑫

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رَسُولًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ آرْوَاحًا وَذِرَيَّةً ۝ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ
أَنْ يَأْتِي بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
لِكُلِّ أَجِلٍ كِتَابٌ ⑬

يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۝ وَعِنْدَهُ
أَمْرُ الْكِتَابِ ⑭

और यदि हम तुझे उन डरावने वादों में से कुछ दिखा दें जो हम उनसे करते हैं अथवा तुझे मृत्यु दे दें तो (प्रत्येक दशा में) तेरा काम केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है और हिसाब लेना हमारे जिम्मे है । 141।

क्या उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि निश्चित रूप से हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं और अल्लाह ही निर्णय करता है । उसके निर्णय को टालने वाला कोई नहीं और वह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है । 142।

और निस्सन्देह उनसे पहले लोगों ने भी योजना बनायी थी । अतः प्रत्येक योजना पूर्णतया अल्लाह ही के अधिकार में है । वह जानता है जो हर एक जान कमाती है और इनकार करने वाले अवश्य जान लेंगे कि (भावी) घर का (सर्वोत्तम) परिणाम किस के लिए है । 143।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि तू (अल्लाह की ओर से) भेजा हुआ नहीं है । तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है और वह भी (गवाह है) जिसके पास पुस्तक का ज्ञान है । 144।

(रुकू ६
१२)

وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعْدِهُمْ
أُوْتَوْ فَيَنْكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ
وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ①

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتَى الْأَرْضَ شَقَصَهَا
مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مَعَاقِبَ
لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ②

وَقَدْ مَكَرَ الظَّيْنُ ۚ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ
الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ
كُلُّ نَفْسٍ ۖ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ إِنْ مِنْ
عَقْبَى الدَّارِ ③

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مَرْسَلًا ۖ
قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ
وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَبِ ۖ ④

14- सूरः इब्राहीम

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी खंडाक्षरों से हुआ है। सूरः यूनुस में भी अलिफ़-लाम-रा आ चुका है वही व्याख्या यहाँ पर भी लागू होती है।

इससे पूर्ववर्ती सूरः का अंत इस आयत पर हुआ है :-

“‘और वे लोग जिन्होंने इनकार किया कहते हैं कि तू (अल्लाह की ओर से भेजा हुआ) नहीं है। तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है और वह भी (गवाह है) जिसके पास पुस्तक का ज्ञान है।’”

इस सूरः का आरम्भ भी पुस्तक की चर्चा से हुआ है और पुस्तक के उत्तरने का यह रहस्य वर्णन किया गया है कि यह तुझ पर इस कारण उतारी जा रही है ताकि लोगों को अन्धेरों से प्रकाश की ओर निकाला जाए। फिर यह भी चर्चा की गई है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी इसी उद्देश्य से पुस्तक दी गई थी। फिर हज़रत मूसा अलै. की उस चेतावनी का वर्णन है जिससे आपने अपनी जाति को सतर्क किया कि यदि तुम और वे सभी जो धरती में बसते हैं मेरा इनकार कर दोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे इनकार से बेपरवाह है और तुम उसकी स्तुति न भी करो तो वह अपने आप में स्वयं स्तुति के योग्य है।

उसके बाद विभिन्न नवियों का वर्णन है कि उनकी जातियों ने इनकार क्यों किया। उनके इनकार का आधार यही था कि वे रसूलों को अपने जैसा एक मनुष्य समझते थे जिन पर अल्लाह तआला की पवित्र वहाँ उतर ही नहीं सकती।

इस सूरः में एक नई बात यह भी पाई जाती है कि क़ल्ले मुर्तद (धर्मत्यागी की हत्या करना) के सिद्धान्त की बहस उठाई गई है और कहा गया है कि धर्मत्यागी की हत्या का सिद्धान्त रसूलों के इनकार करने वालों का साझा सिद्धान्त था। अतः उन्होंने प्रत्येक रसूल को अपनी सोच के अनुसार धर्मत्यागी समझते हुए उसके अन्त से सावधान किया कि हम धर्मत्यागी को अवश्य दंड दिया करते हैं जो कि अपनी धरती से तब तक निर्वासित होता है जब तक वह हमारे धर्म में न लौट आए। अतः अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर वहाँ की कि तुम्हारे विनाश का दावा करने वाले स्वयं ही नष्ट कर दिए जाएँगे, यहाँ तक कि जिन धरतियों के वे स्वामी बन बैठे हैं उनके बाद तुम उनके उत्तराधिकारी बना दिए जाओगे।

इसी सूरः में अरबी शब्द कलिमः (उक्ति) की एक शानदार व्याख्या की गई है और इसी प्रकार शब्द शजरः (वृक्ष) के अर्थ भी खूब खोल दिए गए हैं। पवित्र वृक्ष का

उदाहरण पवित्र व्यक्तियों अर्थात् नवियों की भाँति है जिनकी जड़ें देखने में धरती में गड़ी होती हैं परन्तु वे अपना आध्यात्मिक भोजन आसमान से प्राप्त करते हैं और हर हाल में उनको यह भोजन प्रदान किया जाता है चाहे सुख के दिन हों अथवा दुःख के दिन हों। और अपवित्र वृक्ष से अभिप्राय नवियों के विरोधी हैं, जो इस प्रकार धरती से उखाड़ फेंक दिए जाएँगे जैसे वे पौधे जो तेज़ हवाओं के कारण धरती से उखड़ जाते हैं और हवाएँ उन्हें उसी दशा में एक स्थान से दूसरे स्थान तक इधर-उधर करती रहती हैं। अतः नवियों के विरोधियों की भी यही दशा होगी। वे बार-बार अपने सिद्धान्त परिवर्तित करेंगे और अन्ततः मिट्टी में मिला दिए जाएँगे।

इसके बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह दुआ वर्णित हुई है जो खाना-का'वा से सम्बन्धित है और इसमें अल्लाह तआला से यह प्रार्थना की गई है कि खाना-का'वा के पास रहने वालों को दूर-दराज़ से हर प्रकार के फल प्रदान किए जाएँ। यह दुआ इसी प्रकार पूरी हुई। मक्का वालों को भौतिक फल भी दिये गए और आध्यात्मिक फल भी दिये गये और इसका संक्षिप्त वर्णन सूरः कुरैश में किया गया है। आध्यात्मिक फलों में सबसे बड़ा फल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूप में प्रकट हुआ अर्थात् आप वह पवित्र कलिमः बन कर उभे जो मानव समाज को आसमानी फल प्रदान करता है।

इस सूरः के अन्त पर वर्णन किया गया है कि काफिर इस्लाम के विरुद्ध या रसूलों के विरुद्ध जितने भी षड्यन्त्र करना चाहें, यहाँ तक कि उनके षड्यन्त्रों के द्वारा पहाड़ जड़ों से उखेड़ फेंके जाएँ तब भी वे अल्लाह के रसूलों को असफल नहीं कर सकते।

यहाँ पहाड़ों का उदाहरण इस लिए दिया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी विशाल पहाड़ के समान सर्वश्रेष्ठ रसूल के रूप में दर्शाया गया है। अतः इस सूरः का अंत इन शब्दों पर होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इनकार करने वालों की धरती और उनके आकाश परिवर्तित कर दिए जाएँगे और नयी धरती व आकाश बनाए जाएँगे जिसके परिणामस्वरूप पूर्ण प्रभुत्व वाले अल्लाह की ओर वे गिरोह-दर-गिरोह निकल खड़े होंगे।



سُورَةُ إِنْرَاهِيمَ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَحَمْسُونَ آيَةٍ وَسَبْعَةٌ رُّكْزُوكَاتٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ, मैं देखता हूँ । यह एक पुस्तक है जिसे हमने तेरी ओर उतारी है ताकि तू लोगों को उनके रब्ब के आदेश से अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालते हुए उस मार्ग पर डाल दे जो पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) स्तुतियों वाले का मार्ग है । 21

अर्थात् अल्लाह (का मार्ग) जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और धरती में है और काफिरों के लिए एक कठोर अज्ञाब से विनाश (निश्चित) है । 31

(अर्थात्) उनके लिए जो परलोक के मुकाबले पर सांसारिक जीवन से अधिक प्रेम रखते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा (करना) चाहते हैं । ये लोग घोर पथभ्रष्टा में लिप्त हैं । 41

और हमने प्रत्येक पैगम्बर को उसकी जातीय भाषा के साथ भेजा ताकि वह उन्हें खूब खोल कर समझा सके । अतः अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 51

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الرَّحْمَنُ كَثُبَجَ أَنْرَاهِيمَ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ
النَّاسَ مِنَ الظُّلْمَةِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ
رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ②

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۖ وَوَيْلٌ لِلْكُفَّارِ مِنْ
عَذَابٍ شَدِيدٍ ③

الَّذِينَ يَسْتَحْجُونَ عَنِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا عَلَى
الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَيَبْغُونَهَا عَوْجًا ۖ أُولَئِكَ فِي
ضَلَالٍ بَعِينٍ ④

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِإِنْسَانٍ
قَوْمَهُ لِيَبْيَسِنَ لَهُمْ ۖ فَيُقْسِمُ اللَّهُ مَنْ
يَشَاءُ ۖ وَيَعْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑤

और निस्सन्देह हमने मूसा को अपने चिह्नों के साथ (यह आदेश देकर) भेजा कि अपनी जाति को अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद करा । निस्सन्देह इसमें प्रत्येक धैर्य धारण करने वाले (और) बहुत कृतज्ञ व्यक्ति के लिए अनेक चिह्न हैं । १।

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह की नेमत को याद करो जो उसने तुम पर की, जब उसने तुम्हें फिरओन की जाति से मुक्ति प्रदान की । वे तुम्हें बहुत बुरी यातना देते थे और तुम्हारे बेटों की तो हत्या कर देते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे । और इसमें तुम्हारे रब्ब की ओर से (तुम्हारे लिए) बहुत बड़ी परीक्षा थी । २। (रुक् १३)

और जब तुम्हारे रब्ब ने यह घोषणा की कि यदि तुम कृतज्ञता प्रकट करोगे तो मैं अवश्य तुम्हें बढ़ाऊँगा । और यदि तुम कृतज्ञता करोगे तो निस्सन्देह मेरा अज्ञाब बहुत कठोर है । ३।

और मूसा ने कहा, यदि तुम और वे जो धरती में (बसते) हैं सब के सब कृतज्ञता करें तो निस्सन्देह अल्लाह बे-परवाह (और) स्तुति योग्य है । ४।

क्या तुम तक उन लोगों के समाचार नहीं आए जो तुम से पहले थे अर्थात् नूह की जाति के, और आद और समूद (जाति) के और उन लोगों के जे उनके बाद थे ।

وَلَقَدْ أَرَى سُلَيْمَانَ مُوسَىٰ بِإِيمَنِهِ أَنَّ أَخْرِجَ
قَوْمَكَ مِنَ الظُّلْمَةِ إِلَى النُّورِ
وَذَكَرْهُمْ بِإِيمَنِهِ اللَّهُ أَنَّ فِي ذَلِكَ
لَا يَلِيهِ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ①

وَإِذَا قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ أَذْكُرْ رَفِيعَهُ
اللَّهُ عَلَيْكُمْ أَذْكُرْ جُنُكُمْ مَنْ أَلِّ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سَوْءَ الْعَذَابِ وَيَدْعِيُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيِيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي
ذِلِكُمْ بَلَاؤُعْجُزٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ②

وَإِذَا دَأَدَ رَبِّكُمْ لَيْلَتِنَ شَكَرْتُمْ
لَا زِيَادَنَكُمْ وَلَيْلَتِنَ كَفَرْتُمْ
إِنَّ عَذَابِنِي لَشَدِيدٌ ③

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنْ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًاٌ فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ④

أَلْمُ يَأْتِكُمْ نَبْؤَ الْذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ
قَوْمٌ نُوحٌ وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَالْذِينَ مِنْ

उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता । उनके पास उनके रसूल सुस्पष्ट चिह्न ले कर आए तो उन्होंने (अहंकार करते हुए) अपने हाथ अपने मुहों में रख लिए और कहा, निस्सन्देह हम उस बात का जिसके साथ तुम भेजे गए हो, इनकार करते हैं । और निस्सन्देह हम उसके बारे में जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो बैचैन कर देने वाली शंका में पड़े हुए हैं ॥10॥

उनके रसूलों ने कहा, क्या अल्लाह के बारे में कोई सन्देह है जो आसमानों और धरती का पैदा करने वाला है ? वह तुम्हें बुलाता है ताकि वह तुम्हारे पाप क्षमा कर दे और तुम्हें अन्तिम निश्चित अवधि तक कुछ और ढील दे दे । उन्होंने कहा कि तुम हमारी तरह के मनुष्य ही हो । तुम चाहते हो कि हमें उन (मूर्तियों) से रोक दो जिनकी हमारे पूर्वज उपासना किया करते थे । अतः हमारे पास कोई सुस्पष्ट प्रबल तर्क तो लाओ ॥11॥

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम तुम्हारी तरह के मनुष्य होने के अतिरिक्त कुछ नहीं । परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे दया करता है । और हम में सामर्थ्य नहीं कि कोई बड़ा चिह्न अल्लाह के आदेश के बिना ले आयें । और फिर चाहिए कि अल्लाह ही पर मोमिन भरोसा करें ॥12॥

और हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें जब कि उसने हमारी राहों

بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَهُمْ
رَسُلُهُمْ بِالْبُيُّنَاتِ فَرَدُوا أَيْدِيهِمْ فِي
أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا
أَرْسَلْنَا بِهِ وَإِنَّا لَنَفْنَشْلِتُ مِمَّا
تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ①

قَالَتْ رَسُلُهُمْ أَفِ الْهُنَّشْلِتُ فَأَطْرِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَذْعُوكُمْ
لِيُغَفِّرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤْخِرُكُمْ
إِلَى أَجَلٍ مَسْمَى قَالُوا إِنَّا نَتَّمَ الْأَبْشُرُ
مِثْلَنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصْدُونَا عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ أَبَاؤُنَا فَأَتُؤْنَا بِسُلْطَنٍ مُمِينٍ ②

قَالَتْ لَهُمْ رَسُلُهُمْ إِنَّنَّكُمْ إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ وَلِكُنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تَأْتِيَكُمْ
بِسُلْطَنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلِيَتَوَكَّلَ الْمُؤْمِنُونَ ③

وَمَا كَانَ أَنْ تَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَى

की ओर (स्वयं) हमें हिदायत दी है। और जो तुम हमें कष्ट पहुँचाओगे हम निस्सन्देह उस पर धैर्य धारण करेंगे। और फिर चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा करने वाले भरोसा करें। 13।

(रुक् ۲/۴)

और उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया अपने रसूलों से कहा कि हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे अथवा तुम अवश्य हमारे धर्म में वापस आ जाओगे। तब उनके रब्ब ने उनकी ओर वहाँ की कि निस्सन्देह हम अत्याचारियों का विनाश कर देंगे। 14।

और अवश्य हम तुम्हें उनके बाद राज्य में बसा देंगे। यह उसके लिए है जो मेरी सत्ता से डरता है और मेरी चेतावनी से भयभीत होता है। 15।

और उन्होंने (अल्लाह से) विजय माँगी और प्रत्येक अत्याचारी शत्रु हलाक हो गया। 16।

उस से परे नरक है और उसे पीप मिला हुआ पानी पिलाया जाएगा। 17।

वह उसे घूँट-घूँट पिएगा और सरलता से उसे निगल न सकेगा। और प्रत्येक दिशा से मृत्यु उस की ओर लपकेगी जबकि वह मर नहीं सकेगा। और उससे परे एक और कठोर अज्ञाव है। 18।

उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया, यह है कि उनके कर्म उस राख की भाँति हैं जिस पर एक

سَبَلَتَاٌٰ وَنَصِيرَنَّ عَلَىٰ مَا أَذْيَمُوْنَاٰ
وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَسْتَوْكِلِ الْمُتَوْكُونَ ﴿١٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرَسُولِهِ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي
مِلَّتِنَا فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَهُمْ لَكُنْ
الظَّلِيمُّيْنَ ﴿١٣﴾

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَلِك
لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾

وَاسْتَقْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَارٍ عَنِيْدِ ﴿١٥﴾
قِنْ وَرَآءِهِ جَهَنَّمُ وَيُشْقَى مِنْ
مَاءِ صَدِيدِ ﴿١٦﴾

يَئَاجِرُّهُ وَلَا يَكُوْنُ يَسِيْغُهُ وَيَأْتِيهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيْتٍ
وَمِنْ وَرَآءِهِ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْلَمُ
كَرَمًا وَإِشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ

आँधी वाले दिन तेज़ हवा चले । जो कुछ उन्होंने कमाया उसमें से किसी चीज़ पर वे अधिकार नहीं रखते । यही वह घोर पथभ्रष्टा है ॥19॥

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । (हे मनुष्यो !) यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और नई सृष्टि ले आए ॥20॥*

और अल्लाह के लिए वह कुछ कठिन नहीं ॥21॥

और अल्लाह के समक्ष वे इकट्ठे निकल खड़े होंगे । अतः जिन्होंने अहंकार किया, दुर्बल लोग उनसे कहेंगे हम तो तुम्हारे ही पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम अल्लाह के अज्ञाब में से कुछ थोड़ा सा हम से टाल सकते हो । वे कहेंगे, यदि अल्लाह हमें हिदायत प्रदान करता तो हम तुम्हें भी अवश्य हिदायत दे देते । (अब) चाहे हम विलाप करे या धैर्य धरें हमारे लिए बराबर है । बच निकलने की हमें कोई राह उपलब्ध नहीं ॥22॥

(रुकू ٣/١٥)

और जबकि फैसला निपटा दिया जाएगा । शैतान कहेगा कि निस्सन्देह अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था जबकि मैं तुम से वादा करके फिर वादा तोड़ता रहा । और मुझे तुम पर कोई

عَاصِفٌ لَا يُقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا
عَلَى شَيْءٍ ذَلِكَ هُوَ الْأَصْلُ الْبَعِيدُ ⑦

الْمُتَرَأَنَ اللَّهُ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ إِنَّ رَبَّنَا يَعْلَمُ بِهِنَّكُمْ وَيَأْتِ
بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⑧

وَبَرَزُوا إِلَهٍ جَمِيعًا فَقَالَ الصَّفَّافُوا
لِلَّذِينَ اشْكَرُوا إِنَّا كَانَ الْكَفَرُ بَعْدًا
فَهُلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنْ آمِنَةِ عَذَابِ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ ۝ قَالُوا لَوْ هَذِهِنَا اللَّهُ
لَهَدَنَا كُفْرُنَا سَوَّاجِ عَلَيْنَا أَجْزِعَنَا آمِنَةً
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ⑨

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لِمَا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ
وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ
فَاخْلَفْتُكُمْ ۝ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ

* यहाँ इस बात की सम्भावना दर्शाई गई है कि यदि अल्लाह चाहे तो मनुष्य-जाति को पूर्णतया नष्ट करके एक नई सृष्टि को धरती का उत्तराधिकारी बना सकता है । और यह अल्लाह तआला के लिए कोई कठिन काम नहीं ।

प्रभुत्व प्राप्त न था सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरे निमंत्रण को स्वीकार कर लिया । अतः मुझे न धिक्कारो बल्कि अपने आप को धिक्कारो । न मैं तुम्हारी फरियाद को पूरा कर सकता हूँ न तुम मेरी फरियाद को पूरा कर सकते हो । निस्सन्देह मैं उसका इनकार करता हूँ जो तुम मुझे इससे पूर्व (अल्लाह का) साझीदार बनाया करते थे । निस्सन्देह अत्याचारियों के लिए ही पीड़ादायक अज्ञाब (निश्चित) है । 23।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए ऐसे बागों में प्रविष्ट किए जाएँगे जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे अपने रब्ब के आदेश के साथ उनमें सदा रहने वाले हैं । उन (स्वर्गों) में उनका उपहार सलाम होगा । 24।

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि किस प्रकार अल्लाह ने एक पवित्र उक्ति का एक पवित्र वृक्ष के साथ उदाहरण वर्णन किया है । उसकी जड़ मज़बूती से गड़ी है और उसकी छोटी आसमान में है । 25।

वह हर घड़ी अपने रब्ब के आदेश से अपना फल देता है । और अल्लाह मनुष्यों के लिए उदाहरण वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें । 26।

और अपवित्र उक्ति का उदाहरण अपवित्र वृक्ष के समान है जिसे धरती पर

سُلْطَنٌ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَأَسْتَجَبْتُمْ
لِيٌ فَلَا تَلُومُونِي وَلَوْمَوْا أَنفُسَكُمْ
مَا أَنَا بِمُصْرِخٍ كُمْ وَ مَا أَنْتُمْ
بِمُصْرِخٍ إِنْ كَفَرْتُ بِمَا
أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلٍ إِنَّ الظَّالِمِينَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑩

وَأَدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
جَنَّتِ تَجْرِيْفُ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ
خَلِيلُ الدِّينِ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحْيَيْهُمْ فِيهَا
سَلَمٌ ⑪

الْمُتَرْكِيفُ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِكَلْمَةً
طِبِّيَّةً كَشَجَرَةٍ طِبِّيَّةً أَصْلُهَا ثَابِتٌ
وَقَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ⑫

تُؤْتَقَ أَكْلَهَا كُلُّ حَيْيٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَمُهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ⑬

وَمَثَلٌ كَلْمَةٌ خَبِيئَةٌ كَشَجَرَةٍ خَبِيئَةٌ

से उखाइ दिया गया हो । उसके लिए (किसी एक स्थान पर) टिकना निश्चित न हो । 127।

अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए दृढ़वचन के साथ सांसारिक जीवन में और परलोक में स्थिरता प्रदान करता है। जबकि अल्लाह अत्याचारियों को पथभ्रष्ट ठहराता है और अल्लाह जो चाहता है करता है । 128। (एक $\frac{4}{16}$)

क्या तूने उन लोगों की ओर नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को इनकार में परिवर्तित कर दिया और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया । 129।

अर्थात् नरक में । वे उसमें प्रविष्ट होंगे और क्या ही बुरा ठहरने (का स्थान) है । 130।

और उन्होंने अल्लाह के लिए साझीदार बना लिए ताकि वे उसके मार्ग से (लोगों को) बहकाएँ । तू कह दे कि कुछ लाभ उठालो । फिर निश्चय तुम्हारी यात्रा आग ही की ओर है । 131।

तू मेरे उन भक्तों से कह दे जो ईमान लाए हैं कि वे नमाज़ को क्रायम करें और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से छुपा कर भी और दिखा कर भी खर्च करें । इस से पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें कोई क्रय-विक्रय नहीं होगा और न कोई मित्रता (काम आण्गी) । 132।

अल्लाह वह है जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और आसमान से

اجْتَمَعَ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا
مِنْ قَرَارٍ^④

يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقُوْلِ التَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيَعْلَمُ اللَّهُ
الظَّالِمِينَ طَوْبَانِ اللَّهُ مَا يَشَاءُ^⑤

الْمُرْتَرِ إِلَى الَّذِينَ بَدَلُوا إِنْعَمَتِ اللَّهُ كُفَّارًا
وَأَحَلُوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ^⑥

جَهَنَّمَ يَصْلُوْهَا طَوْبَانِ الْقَرَازِ^⑦

وَجَعَلُوا اللَّهَ أَنْدَادَ الْيَضْلُوْاعَنْ سَبِيلَهُ^⑧
قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى التَّارِ^⑨

قُلْ لِعِبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُنْفِقُوا مِثْمَارَ زَرْقَانَهُ سِرَّاً وَعَلَانِيَةً^⑩ مِنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِي يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خَلْلٌ^⑪

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ

पानी उतारा । फिर उसके द्वारा कई फल उगाए (जो) तुम्हारे लिए जीविका के रूप में (हैं) । और तुम्हारे लिए नौकाओं को सेवा में लगाया ताकि वे उसके आदेश से समुद्र में चलें । और तुम्हारे लिए नदियों को सेवा में लगा दिया । 33।

और तुम्हारे लिए सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में इस प्रकार लगाया कि वे दोनों सदा चक्कर काट रहे हैं । और तुम्हारे लिए रात और दिन को सेवा में लगा दिया । 34।

और उसने हर एक चीज़ तुम्हें दी जो तुमने उससे माँगी और यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो कभी उनकी गणना नहीं कर सकोगे । निस्सन्देह मनुष्य बहुत अत्याचार करने वाला (और) बड़ा कृतघ्न है । 35।

(रुक्^{۱۷})

और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा, है मेरे रब्ब ! इस शहर को शांति का स्थान बना दे । और मुझे और मेरे बेटों को इस बात से बचा कि हम मूर्तियों की उपासना करें । 36।

हे मेरे रब्ब ! इन्होंने लोगों में से अधिकतर को निश्चित रूप से पथश्रेष्ठ कर दिया है । अतः जिसने मेरा अनुसरण किया तो वह निस्सन्देह मुझ से है । और जिसने मेरी अवज्ञा की तो निस्सन्देह तू बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है । 37।

وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ
الشَّمْرَتِ رِزْقًا لَكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمْ
الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
دَأْبِئْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَيْلَ وَالثَّهَارَ

وَأَتَكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ
وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُخْصُوهَا
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَارٌ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيْ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا وَاجْتَنِبْ وَبَنِيَّ أَنْ تُعْبَدَ
الْأَصْنَامَ

رَبِّيْ إِنَّهُنَّ أَصْلَلُنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ
فَمَنْ تَعْنِي قَاتِلَهُ مِنْيَ وَمَنْ عَصَانِي
فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

हे हमारे रब्ब ! निश्चित रूप से मैंने अपनी संतान में से कुछ को एक अन्न-जल विहीन घाटी में तेरे आदरणीय घर के निकट बसा दिया है । हे हमारे रब्ब ! ताकि वे नमाज़ को क्रायम करें । अतः लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे । और उन्हें फलों में से जीविका प्रदान कर ताकि वे कृतज्ञता प्रकट करें । 38।

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो हम प्रकट करते हैं । और निश्चित रूप से अल्लाह से धरती और आकाश में कुछ छुप नहीं सकता । 39।

समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे बुद्धापे के बावजूद इस्माईल और इसहाक प्रदान किए । निस्सन्देह मेरा रब्ब दुआ को बहुत सुनने वाला है । 40।

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरी संतान को भी नमाज़ क्रायम करने वाला बना । हे हमारे रब्ब ! और मेरी दुआ स्वीकार कर । 41।

हे हमारे रब्ब ! मुझे (उस दिन) और मेरे माता-पिता को भी और मोमिनों को भी क्षमा प्रदान कर जिस दिन हिसाब-

किताब होगा । 42। (रुक् ٦٨)

और जो कर्म अत्याचारी करते हैं तू अल्लाह को कदापि उस से बे-ख्वर न समझ । वह उन्हें केवल उस दिन तक ढील दे रहा है जिस दिन आँखें फटी की फटी रह जाएँगी । 43।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادِغَيْرِ
ذُرْ زَرْ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمَحَرَّمِ رَبَّنَا
لِيَقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعُلْ أَفْيَدَةً هَنْ
النَّاسِ تَهْوِيَ إِلَيْهِمْ وَأَرْزُقْهُمْ
مِنَ الشَّهَرِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ⑥

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نَخْفِي وَمَا نَعْلَمُ
وَمَا يَغْنِي عَنِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ⑦

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكَبِيرِ
إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّنِي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ⑧

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةَ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقْبِيلَ دُعَاءِ ⑨

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ⑩

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ
الظَّالِمُونَ إِنَّمَا يَوْمَ حِرْهُمْ لِيَوْمِ
تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ⑪

वे अपने सिर उठाए हुए भय से दौड़ते फिर रहे होंगे । उनकी दृष्टि उनकी ओर लौट कर नहीं आएगी (अर्थात् कुछ दिखाई नहीं देगा) और उनके दिल बीराम होंगे । 44।

और लोगों को उस दिन से डरा जिस दिन उन पर अज्ञाब आएगा । तो वे लोग जिन्होंने अत्याचार किए, कहेंगे हे हमारे रब्ब ! हमें थोड़े समय तक ढील दे, हम तेरा निमंत्रण स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे । (उनसे कहा जायेगा) क्या तुम इससे पूर्व कसमें नहीं खाया करते थे कि तुम पर कभी पतन नहीं आएगा । 45।

और तुम उनके घरों में बस रहे थे जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया और तुम पर भली-भूति खुल चुका था कि हमने उनसे कैसा बर्ताव किया और हमने तुम्हारे सामने ख़ूब खोल कर उदाहरण वर्णन किए । 46।

और उन्होंने (यथाशक्ति) अपनी योजना कर देखी और उनकी चालाकी योजना के सामने है । चाहे उनकी योजना ऐसी होती कि उससे पहाड़ टल सकते । 47।

अतः तू कदापि अल्लाह को अपने रसूलों से किए हुए वादों को तोड़ने वाला न समझ । निस्सन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) कठोर प्रतिशोध लेने वाला है । 48।

مُهْطِعِينَ مُقْبِعِينَ رَمْعُوسِهِمْ لَا يُرَتَّدُ
إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْدَتُهُمْ هُوَ أَءُجُونُ^٦

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُولُ الظَّالِمُونَ ظَلَمْوَارَبَّنَا أَخْرَنَا إِلَى
أَجَلٍ قَرِيبٍ لَنْجَبْ دَعَوْتَكَ وَنَتَّبِعُ
الرَّسُلَ أَوْلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمُهُمْ مِنْ
قَبْلِ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ^٧

وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكِنِ الظَّالِمِينَ ظَلَمْوَا
أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ
وَضَرَبَنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ^٨

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ
مَكْرُهُمْ وَإِنَّ كَانَ مَكْرُهُمْ لَرْتَرْوَلَ
مِنْهُ انجِبَالٌ^٩

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا وَغَدِيمَ رُسْلَهُ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقامَةٍ^{١٠}

जिस दिन धरती एक दूसरी धरती में परिवर्तित करदी जाएगी और आसमान भी । और वे एक, अद्वितीय और पूर्ण प्रभुत्व वाले अल्लाह के समक्ष (उपस्थित होने के लिए) निकल खड़े होंगे । 49।

और तू उस दिन अपराधियों को ज़ंजीरों में ज़कड़े हुए देखेगा । 50।

उनके वस्त्र तारकोल से (बने हुए) होंगे । और उनके चेहरों को आग ढाँप लेगी । 51।

ताकि अल्लाह हर एक जान को (उसका) प्रतिफल दे जो उसने कमाया । निस्सन्देह अल्लाह हिसाब (लेने) में बहुत तेज़ है । 52।

यह लोगों के लिए एक खुला-खुला संदेश है और (उद्देश्य यह है) कि उन्हें इस के द्वारा सतर्क किया जाये । और वे जान सें कि वही है जो एक ही उपास्य है और बुद्धिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें । 53।

(रुकू ٧٩)

يَوْمَ تُبَدِّلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ
وَالسَّمَوَاتُ وَبَرَزَوا إِلَهُ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ ④

وَتَرَى الْمَعْجِرِ مِنْ يَوْمٍ مُّبِينٍ مُّقَرَّبِينَ
فِي الْأَصْفَادِ ⑤

سَرَابِئُهُمْ مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشَى
وَجْهَهُمْ الشَّارِلُ ⑥

لِيَعْرِزَ اللَّهُ كُلَّ نَفِيسٍ مَا كَسَبُ ۝
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْعِسَابِ ⑦

هَذَا بَلْعَ لِلنَّاسِ وَلِيَنْذَرُوا بِهِ
وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ
وَلِيَذَكَّرَ أُولُو الْأَبْيَابِ ⑧

15- सूरः अल-हिज्र

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 100 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ अलिफ़-लाम-रा खंडाक्षरों से होता है और इसके पश्चात् इन खंडाक्षरों को नहीं दोहराया गया है।

पिछली सूरः में वर्णित रौद्र और सौम्य चिह्नों के परिणामस्वरूप कई बार काफिरों के दिल भी भयभीत हो जाते हैं। इसका वर्णन इस सूरः में यूँ किया गया कि वे भी दिल ही दिल में कभी तो पश्चाताप करते हैं कि हाय ! हम सत्य को स्वीकार करने वालों में से हो जाते। परन्तु इसके पश्चात् फिर अपनी पहली अवस्था की ओर लौट जाते हैं और रसूलों के प्रभुत्व का इनकार तो नहीं कर सकते परन्तु आरोप यह लगाते हैं कि संभवतः यह हमारी आँखों पर जादू कर दिया गया है।

इसके अतिरिक्त इस सूरः में अल्लाह तआला बड़े ज़ोर से यह घोषणा करता है कि शत्रु चाहे कुछ भी कहे निस्सन्देह हमने ही इस पुस्तक को अवतरित किया है और भविष्य में भी इसकी सुरक्षा करते चले जाएँगे।

इसके बाद की आयतों में बुरूज़ (तारामण्डल) का उल्लेख किया गया है जो सूरः अल बुरूज़ की याद दिलाता है और आयतांश 'हम ही इस वाणी की सुरक्षा करेंगे' पर से पर्दा उठाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दासों में से अल्लाह तआला की ओर से ऐसे लोग जन्म लेते रहेंगे जो कुरआन करीम की सुरक्षा के लिए हर समय तत्पर रहेंगे। यहाँ बुरूज़ शब्द में इस ओर भी संकेत है कि जो मुजद्दीदीन (सुधारक) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् बारह नक्शत्रों के रूप में जन्म लेते रहे वे भी इसी कार्य पर नियुक्त थे।

जिस प्रकार कुरआन करीम के विषयवस्तु अंतहीन हैं इसी प्रकार मानवजाति की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला समय समय पर ऐसे ख़जाने प्रदान करता रहता है जो समाप्त होने वाले नहीं हैं। जैसा कि ईंधन की व्यवस्था इसका एक बड़ा उदाहरण है। कभी मनुष्य को चिंता थी कि लकड़ी समाप्त हो जाएगी तो क्या करेंगे ? कभी यह चिंता उत्पन्न हुई कि कोयला समाप्त हो जाएगा तो क्या करेंगे ? कभी यह चिंता सताने लगी कि तेल समाप्त हो जाएगा तो क्या करेंगे ? परन्तु इससे पहले कि तेल समाप्त होता अल्लाह तआला ने एक और न समाप्त होने वाली ऊर्जा के स्रोत की ओर मनुष्य का ध्यान आकर्षित करवा दिया है। अर्थात् परमाणु ऊर्जा। मनुष्य यदि इस ऊर्जा से पूरा लाभ उठाने के योग्य हो जाए और उसके दुष्प्रभावों से बचाव के उपाय खोज ले तो यह वह ऊर्जा है जो महाप्रलय तक कभी समाप्त नहीं हो

सकती । अतः कुरआन के आध्यात्मिक खज्जानों की भाँति मनुष्य जीवन यापन के भौतिक खज्जाने भी अंतहीन हैं ।

इसके पश्चात् यह भी वर्णन है कि यह दोनों प्रकार के खज्जाने जो मनुष्य के लिए क्यामत तक उतारे जाते रहेंगे । इनके परिणामस्वरूप शैतान भी नानाविध भ्रांतियाँ उत्पन्न करता रहेगा जिन का क्रम क्यामत तक समाप्त नहीं होगा ।

इसके बाद इस सूरः में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कुछ अन्य नवियों और उनकी जातियों का वर्णन मिलता है । इस क्रम में अस्हाब-उल-ऐकः (अरण्य निवासी) और अस्हाब-उल-हिज्ज़ (दुर्गवासी) जातियों का उदाहरण भी दिया गया है, यह बताने के लिए कि इसी प्रकार भविष्य में भी अल्लाह तआला रसूलों के विरोधियों को समाप्त करता चला जाएगा ।

इसी प्रकार इस सूरः में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को एक पुत्र के जन्म के शुभ-समाचार का भी विवरण है । इस भविष्यवाणी में यद्यपि हजरत इसहाक अलैहिस्सलाम और याकूब अलैहिस्सलाम का भी वर्णन है परन्तु प्राथमिक रूप से यह भविष्यवाणी हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम पर लागू होती है जिनकी शारीरिक और आध्यात्मिक संतान में से हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पैदा होना था ।

अतः हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह तसल्ली दी गई है कि जो तेरा उपहास करते हैं उन्हें क्षमा कर । हम स्वयं ही उनसे निपटने वाले हैं और जब भी तेरे दिल को उनकी बातों से पीड़ा पहुँचे तो धैर्य के साथ अपने रब्ब की प्रशंसा करता चला जा ।



سُورَةُ الْحِجْرِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَأْتِي وَ سَتَّةُ رُكُونَ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

अनल्लाहु अरा : मैं अल्लाह हूँ । मैं
देखता हूँ । यह पुस्तक और एक सुस्पष्ट
कुरआन की आयतें हैं । । ।

कभी-कभी वे लोग जिन्होंने इनकार
किया इच्छा करेंगे कि काश ! वे
मुसलमान होते । । ।

उन्हें (अपनी दशा पर) छोड़ दे । वे खाएँ,
पीएँ और अस्थायी लाभ उठाएँ और
(उनकी) आशा उन्हें असावधान किए
रखे । अतः वे शीघ्र ही जान लेंगे । । ।

और हमने किसी बस्ती का सर्वनाश नहीं
किया, परन्तु उसके लिए एक सुस्पष्ट
पुस्तक (चेतावनी स्वरूप) थी । । ।

कोई जाति अपनी निर्धारित अवधि से
आगे नहीं बढ़ सकती और न वे पीछे हट
सकते हैं । । ।

और उन्होंने कहा, हे वह व्यक्ति जिस
पर अनुस्मृति (अर्थात् कुरआन) उतारी
गई है । निस्सन्देह तू पागल है । । ।

तू हमारे पास फरिश्ते लिए हुए क्यों नहीं
आता, यदि तू सच्चों में से है । । ।

हम केवल सत्य के साथ ही फरिश्ते
उतारा करते हैं और उस समय वे ढील
नहीं दिए जाते । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اَتَرَ تِلْكَ اِيَّتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ
مُّبِينٍ ②

رَبَّمَا يَوْمَ الْذِينَ كَفَرُوا لَوْكَانُوا ۝
مُسْلِمِينَ ③

ذَرْهُمْ يَا كُلُّوا وَيَتَمَّلُوْا وَيُلْهِمُهُمْ
الْاَمْلُ قَسْوَفٌ يَعْلَمُونَ ④

وَمَا آهَلَكُنَا مِنْ قَرِيقٍ إِلَّا وَلَهَا
كِتَابٌ مَعْلُومٌ ⑤

مَا تَسْبِقُ مِنْ أَمْمَةٍ أَجْلَهَا وَمَا
يَسْتَأْخِرُونَ ⑥

وَقَاتُلُوا اِيَّاهَا الَّذِي نَزَّلَ عَلَيْهِ الْذِكْرُ
إِنَّكَ لَمَجْحُونٌ ⑦

لَوْمَاتٌ اتَّيْنَا بِالْمَلِكِيَّةِ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّدِيقِينَ ⑧

مَا نَزَّلَ الْمَلِكِيَّةَ إِلَّا بِالْحَقِّ
وَمَا كَانُوا اِذَا مُنْظَرِينَ ⑨

निस्सन्देह हमने ही इस अनुसृति को अवतरित किया और निस्सन्देह हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं । १०।*

और हमने तुझ से पूर्व भी पहले के गिरोहों में (रसूल) भेजे थे । ११।

और कोई रसूल उनके पास नहीं आता था परन्तु वे उससे उपहास ही किया करते थे । १२।

इसी प्रकार हम अपराधियों के मन में इस (ढिठाई) को प्रविष्ट कर देते हैं । १३।

वे इस (रसूल) पर ईमान नहीं लाते हालाँकि इससे पहले लोगों का परिणाम बीत चुका है । १४।

और यदि हम आसमान का कोई द्वार उन पर खोल देते, फिर वे उस पर चढ़ने भी लगते (ताकि स्वयं अपनी आँखों से रसूल की सच्चाई का चिह्न देख लेते) । १५।

तब भी वे अवश्य कहते कि हमारी आँखें तो (किसी नशे से) मदहोश कर दी गई हैं । बल्कि हम तो ऐसे लोग हैं जिन पर जादू कर दिया गया है । १६।

(रुक् ۱)

और निस्सन्देह हमने आकाश में तारामण्डल बनाये हैं और उस (आकाश) को देखने वालों के लिए सुसज्जित कर दिया है । १७।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الْذِكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفْظُونَ ①

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْءٍ
الْأَوَّلِينَ ②

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهِزُّونَ ③

كَذِلِكَ نَشْكُنُهُ فِي قُلُوبِ
الْمُجْرِمِينَ ④

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ
الْأَوَّلِينَ ⑤

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ
فَظُلُّوا فِيهِ يَعْرِجُونَ ⑥

لَقَاتُوا إِنَّمَا سُكِّرْتُ أَبْصَارُنَا بِلَنْحَنَ
قَوْمٌ مَسْخُورُونَ ⑦

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيْلَهَا
لِلنَّظِيرِينَ ⑧

* हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुरआन की सुरक्षा का जो वादा किया गया है वह चिरस्थायी वादा है । जब भी कुरआन करीम के भूल-अर्थ किए जाते हैं अल्लाह तआला अपनी कृपा से किसी आध्यात्मिक व्यक्तित्व को उनके सुधार के लिए अवतरित कर देता है ।

और हमने प्रत्येक धुतकारे हुए शैतान से उसकी सुरक्षा की है । 18।

सिवाए इसके जो सुनने की कोई बात उचक ले तो एक उज्ज्वल अग्निशिखा उसका पीछा करती है । 19।

और धरती को हमने बिछा दिया और उसमें हमने दृढ़तापूर्वक गड़े हुए (पर्वत) रख दिए और उसमें उचित अनुपात में प्रत्येक प्रकार की चीज़ उगाई । 20।

और हमने उसमें तुम्हारे लिए और उनके लिए भी जीविका के साधन बनाए हैं जिनके तुम अनन्दाता नहीं । 21।

और कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसका हमारे पास ख़ज़ाना न हो और हम उसे एक निश्चित अनुमान के अनुसार ही उतारते हैं । 22।

और हमने (पानी से) बोझिल हवाओं को भेजा । फिर आसमान से हमने पानी उतारा और तुम्हें उससे सिन्चित किया जबकि तुम उसको संचित कर लेने पर समर्थ नहीं थे । 23।

और निस्सन्देह हम ही हैं जो ज़िन्दा भी करते हैं और मारते भी हैं और हम ही हैं जो (प्रत्येक वस्तु के) उत्तराधिकारी होंगे । 24।

और हमने निस्सन्देह तुम में से आगे निकल जाने वालों को जान लिया है और उन को भी जान लिया है जो पीछे रहते हैं । 25।

और तेरा रब्ब उन्हें अवश्य इकट्ठा करेगा । निस्सन्देह वह परम विवेकशील

وَحَفَظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَنٍ رَّجِيمٍ ⑯

إِلَّا مِنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتَبْعَهُ شَهَابٌ
مُّبِينٌ ⑮

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَهَا وَالْقَيْنَاءِ قِيمَهَا رَوَاسِيَ
وَأَثْبَتَاهَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ عَمَّوْرُونِ ⑯

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ أَنْتُمْ لَهُ
بِرَزِقِينِ ⑯

وَإِنْ مَنْ شَئْنَ إِلَّا عِنْدَنَا خَرَآءِنَهُ وَمَا
نَزَّلْنَاهُ إِلَّا بِقَدِيرٍ مَعْلُومٍ ⑯

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنْ
السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَا كُمْوَةً وَمَا أَنْتُمْ لَهُ
بِخَرِينِ ⑯

وَإِنَّا لَنَحْنُ نَحْنُ وَنَمِيتُ وَنَحْنُ
الْوَرِثُونَ ⑯

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ
عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ⑯

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَعْلَمُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ

(और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 26।

(रुक् ۲)

और निसन्देह हमने मनुष्य को गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से पैदा किया है । 27।

और जिन्हों को हमने उससे पहले अत्यन्त उत्पत्त-वायु युक्त अग्नि से बनाया । 28।

और (याद कर) जब तेरे रब्ब ने फरिश्तों से कहा कि मैं गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई, शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से मनुष्य की सृष्टि करने वाला हूँ । 29।

अतः जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी वाणी प्रविष्ट करूँ तो उसकी आज्ञाकारिता के लिए सजदः में गिर जाना । 30।*

तो सभी फरिश्तों ने सजदः किया । 31।

सिवाय इब्लीस के, उसने सजदः करने वालों के साथ सम्मिलित होने से इनकार कर दिया । 32।

* आयत संख्या 27 से 30 :- इन पवित्र आयतों में दो बातें विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं । प्रथम यह कि मनुष्य को केवल गीली मिट्टी से पैदा नहीं किया गया । बल्कि ऐसी गीली मिट्टी से जिसमें सदायाँध उत्पन्न हो चुकी थी और फिर वह खनकती हुई ठीकरियाँ बन गई । यह वह विषय है जो स्वयं हज़रत अकदस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोच के किसी कोने में भी नहीं आ सकता था । किसी और ईश्वरीय पुस्तक में भी खनकती हुई ठीकरियों से मानव की उत्पत्ति का कोई उल्लेख नहीं मिलता । इस समस्या का इस युग में वैज्ञानिकों ने समाधान किया है । दूसरी बात यह है कि मनुष्य की उत्पत्ति के आरम्भ होने से पूर्व जिन्हों को आसमान से बरसने वाली ऐसी उत्पत्त वायु से जो अग्नि की भाँति गर्म थी, पैदा किया गया है । यह विषय भी ऐसा है जो हज़रत अकदस मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कल्पना में भी नहीं आ सकता था जब तक सर्वज्ञ अल्लाह इसकी जानकारी प्रदान न करता । नारुस्समूय (उत्पत्त वायु युक्त अग्नि) से उत्पन्न होने वाले जिन्हों से अभिराय बैकटीरिया हैं और इससे यह समस्या भी हल हो गई कि गला-सड़ा कीचड़ कैसे बना । जब तक बैकटीरिया उपस्थित न हों गीली मिट्टी में सदायाँध उत्पन्न नहीं हो सकती ।

٦

عَلَيْهِ

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَّا مَسْتُونٍ

وَالْجَانَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلٍ مِّنْ نَارٍ السَّمُومِ

وَإِذَا قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالقُ
بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَّا مَسْتُونٍ

فَإِذَا سَوَّيْتَهُ وَنَقْخَنْتَ فِيهِ مِنْ رُوْحِي
فَقَعُوا لَهُ سَجِدِينَ

فَسَجَدَ الْمَلِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ
إِلَّا إِبْلِيسُ لَا يَسْتَكُونُ
مَعَ الشَّاجِدِينَ

उस (अर्थात् अल्लाह) ने कहा, हे इब्लीस ! तुझे क्या हुआ कि तू सजदः करने वालों के साथ सम्मिलित नहीं हुआ ? 133।

उसने कहा, मैं ऐसा नहीं कि मैं एक ऐसे मनुष्य के लिए सजदः करूँ जिसे तूने गले-सड़े कीचड़ से बनी हुई शुष्क खनकती हुई ठीकरियों से पैदा किया है । 134।

उसने कहा, इस (स्थान) में से निकल जा । निस्सन्देह तू धुतकारा हुआ है । 135। और निस्सन्देह तुझ पर कर्मफल दिवस तक ला'नत रहेगी । 136।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे उस दिन तक ढील दे जब वे (मनुष्य) उठाए जाएँगे । 137।

उसने कहा, निस्सन्देह तू ढील दिए जाने वालों में से है । 138।

एक निश्चित समय के दिन तक । 139।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! क्योंकि तूने मुझे पथभ्रष्ट ठहरा दिया है । इस कारण मैं अवश्य धरती में (निवास करना) इनके लिए सुन्दर करके दिखाऊँगा और मैं अवश्य इन सबको पथभ्रष्ट कर दूँगा । 140। सिवाय उनमें से तेरे चुने हुए भक्तों के । 141।

उसने कहा, यह सीधा मार्ग (दिखाना) मेरे ज़िम्मे है । 142।

निस्सन्देह (जो) मेरे भक्त (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा सिवाय

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَا تَكُونَ
مَعَ السَّاجِدِينَ ④

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِتَّمِيرٍ خَلْقَتَهُ
مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَّاً مَسْنَوْنِ ④

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ④

قَالَ رَبِّيْ فَأَنْظُرْنِيْ إِلَى يَوْمِ
يُبَعَّثُونَ ④

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ④

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ④

قَالَ رَبِّيْ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَرْيَنَّكُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَا غُوَيْتَنِمْ أَجْمَعِينَ ④

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلَصِينَ ④

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَىٰ مُسْتَقِيمٍ

إِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ

उनके जो पथभ्रष्टों में से (स्वयं) तेरा
अनुसरण करेंगे । 143।

और निस्सन्देह नरक उन सब का
प्रतिश्रुत ठिकाना है । 144।

उसके सात द्वार हैं प्रत्येक द्वार के
लिए इन (पथभ्रष्टों) का एक
निश्चित भाग है । 145। (रुक् 3)

निस्सन्देह मुत्तकी बागों और जलस्रोतों
में (ठहरे हुए) होंगे । 146।

उनमें शान्ति के साथ संतुष्ट और निर्भय
होकर प्रविष्ट हो जाओ । 147।

और हम उनके दिलों से जो भी द्वेष
हैं निकाल बाहर करेंगे । भाई-भाई
बनते हुए आसनों पर आमने सामने
बैठे होंगे । 148।

उन्हें उनमें न कोई थकान छूएगी
और न वे कभी उनमें से निकाले
जाएँगे । 149।

मेरे भक्तों को सूचित कर दे कि निस्सन्देह
मैं ही बहुत क्षमा करने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला हूँ । 150।

और यह भी कि निस्सन्देह मेरा अज्ञाब
ही बहुत पीड़ादायक अज्ञाब है । 151।

और उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के
सम्बन्ध में सूचित कर दे । 152।

जब वे उसके पास आए तो उन्होंने
कहा, सलाम ! उसने कहा हम तो तुम
से भयभीत हैं । 153।

उन्होंने कहा, भय मत कर । हम
निस्सन्देह तुझे एक ज्ञानवन्त पुत्र का
शुभ-समाचार देते हैं । 154।

إِلَّا مِنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغُوَيْنَ ④

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ⑤

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَأْبِ مِنْهُمْ
جَرْحٌ مَقْسُومٌ ⑥

إِنَّ الْمَقْيَنَ فِي جَنَّتٍ وَغَيْنُونِ ⑦

أَذْخُلُوهَا إِسْلَوِيْ أَمْنِيْنَ ⑧

وَنَرْعَانًا مَا فِي صَدُورِهِمْ مِنْ غِلٍ
إِخْوَانًا عَلَى سَرِّ مَقْبِلِيْنَ ⑨

لَا يَمْسُهُمْ فِيهَا نَصْبٌ وَمَا هُمْ قِنْهَا
بِمُخْرَجِيْنَ ⑩

نَّبِيُّ عِبَادِيَ آتَيْتَ آنَا الْغَفُورَ الرَّحِيمَ ⑪

وَأَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ⑫

وَنَتِيْمَهُمْ عَنْ صَيْفِ إِبْرِهِيْمَ ⑬

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَّمًا ⑭ قَالَ إِنِّي
مِنْكُمْ وَجَلُونَ ⑮

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمِ
عَلِيِّيْمِ ⑯

उसने कहा, क्या तुमने मुझे शुभ-समाचार दिया है, जब कि मुझे बुढ़ापे ने घेर लिया है । अतः तुम किस आधार पर शुभ-समाचार दे रहे हो ? 155।

उन्होंने कहा, हमने तुझे सच्चा शुभ-समाचार दिया है । अतः निराश होने वालों में से न बन । 156।

उसने कहा, भला पथब्रष्टों के अतिरिक्त कौन है जो अपने रब्ब की कृपा से निराश हो जाए । 157।

उसने कहा, हे भेजे हुए दूतो ! तुम्हारा वास्तविक उद्देश्य क्या है ? 158।

उन्होंने कहा, निस्सन्देह हम एक अपराधी जाति की ओर भेजे गए हैं । 159।

सिवाय लूट के घरवालों के । हम उन सब को अवश्य बचा लेंगे । 160।

उसकी पत्नी के अतिरिक्त । हमने (उसका परिणाम) जाँच लिया है कि वह अवश्य पीछे रह जाने वालों में से होगी । 161। (रुक् 4)

अतः जब लूट के घरवालों के पास दूत पहुँचे । 162।

उसने कहा, तुम निस्सन्देह अपरिचित लोग हो । 163।

उन्होंने उत्तर दिया, बल्कि हम तो तेरे पास वह (समाचार) लाए हैं जिसके सम्बन्ध में वे सन्देहग्रस्त रहते थे । 164।

और हम तेरे पास सत्य के साथ आए हैं और निस्सन्देह हम सच्चे हैं । 165।

قَالَ أَبْشِرْتُمُونَ عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكَبَرُ
فِيمَ تَبْشِرُونَ ⑦

قَالُوا بَشَرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْقُنْطِينَ ⑧

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ
إِلَّا الضَّالُّونَ ⑨

قَالَ فَمَا حَطَبْتُكُمْ أَيْمَانُهَا الرُّسُلُونَ ⑩

قَالُوا إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ قُوَّةً
مُّجْرِمِينَ ⑪

إِلَّا لَوْطٍ إِلَّا مَنْجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ⑫

إِلَّا امْرَأَةٌ قَدْرُنَا إِنَّهَا لَمَنْ
الْغُرِيبُونَ ⑬

فَلَمَّا جَاءَهُمْ لَوْطٌ الْمُرْسَلُونَ ⑭

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ⑮

قَالُوا إِنْ جُنُكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ
يَمْتَرُونَ ⑯

وَأَتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَدِيقُونَ ⑰

अतः अपने परिवार को लेकर रात के एक भाग में निकल पड़। और उनके पीछे चल और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे। और तुम चलते रहो जिस ओर (चलने का) तुम्हें आदेश दिया जाता है। 166।

और हमने उसे यह निर्णय सुना दिया कि इन लोगों की जड़ सुबह होते ही काटी जा चुकी होगी। 167।

और नगर निवासी खुशियाँ मनाते हुए आए। 168।

उसने कहा, ये मेरे अतिथि हैं। अतः मुझे अपमानित न करो। 169।

और अल्लाह से डरो और मुझे अपमानित न करो। 170।

उन्होंने कहा, क्या हमने तुझे समग्र जगत (से मेल-मिलाप रखने) से मना नहीं किया था? 171।

उसने कहा (देखो) ये मेरी बेटियाँ हैं (इनकी शर्म करो), यदि तुम कुछ करने वाले हो। 172।

(अल्लाह ने वहाँ की कि) तेरी आयु की सौगन्ध! निस्सन्देह वे अपनी मदमस्ती में भटक रहे हैं। 173।

अतः उन्हें एक धमाकेदार अज्ञाब ने सवेरा होते ही आ पकड़ा। 174।

अतः हमने उस (बस्ती) को उथल-पुथल कर दिया और उन पर हमने कंकरों वाली मिट्टी से बने हुए पत्थरों की बारिश बरसाई। 175।

निस्सन्देह इस (घटना) में खोज लगाने वालों के लिए अनेक चिह्न हैं। 176।

فَأَسِرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنْ الْيَلِ وَاتْبِعْ
أَذْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ
وَامْضُوا حَيْثُ شُوَّمْ رُونَ ⑦

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ آنَ دَابِرَ هَؤُلَاءِ
مَقْطُوْعَ مُصْبِحِينَ ⑧

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِيْنَةَ يَشْبِهُونَ ⑨

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفُ فَلَا تَقْضَهُونَ ⑩
وَانْقُوْا اللَّهُ وَلَا تَخْرُونَ ⑪

قَالُوا أَوْلَمْ نَهَكَ عَنِ الْعَلَمِينَ ⑫

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنِتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ⑬
لَعْمَرْكَ إِنَّهُمْ لَفْنُ سَكُرَتِهِمْ
يَعْمَهُونَ ⑭

فَأَخَذْتُهُمْ الصَّيْحَةَ مُشْرِقِينَ ⑮
فَجَعَلْنَا عَالِيَّهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
حِجَارَةً مِنْ سِجِيلٍ ⑯

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ ⑰

और वह (बस्ती) निस्सन्देह एक स्थायी राजमार्ग पर (स्थित) है । 77।

निस्सन्देह इसमें मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ा चिह्न है । 78।

और घने वृक्षों के क्षेत्र (में बसने) वाले भी निश्चित रूप से अत्याचारी थे । 79।

अतः हमने उनसे बदला लिया और ये दोनों (बस्तियाँ) एक प्रमुख राजमार्ग पर (स्थित) हैं । 80। (रुक् ५)

और निस्सन्देह हिज्र (के रहने) वालों ने भी पैगम्बरों को झुठला दिया था । 81।

और हमने उनको अपने चिह्न दिए तो वे उनसे विमुखता प्रकट करते रहे । 82।

और वे पर्वतों में निर्भिक होकर घर तराशते थे । 83।

अतः उन्हें भी एक धमाकेदार अज्ञाब ने सुबह होते ही आ पकड़ा । 84।

अतः जो वे अर्जित किया करते थे वह उनके काम न आ सका । 85।

और हमने आसमानों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ पैदा किया है । और (निर्धारित) घड़ी अवश्य आने वाली है । अतः बहुत उत्तम ढंग से क्षमा कर । 86।

तेरा रब्ब ही निस्सन्देह अत्यन्त कुशल सष्टा और सर्वज्ञ है । 87।

और निस्सन्देह हमने तुझे सात बार-बार दोहराई जाने वाली (आयतें) और महानतम कुरआन प्रदान किया है । 88।*

وَإِنَّهَا لِسِيِّلٍ مُّقِيمٍ^④

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ^⑤

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَلَمِيْنَ^⑥

فَإِنَّهُمْ قَمْنَاكُمْ مِنْهُمْ وَإِنَّهُمْ لِيَامَاءِ^⑦
مُبِينِ^⑧

وَلَقَدْ كَذَبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ^⑨

وَإِنَّهُمْ لَيَتَّهَمُونَ كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ^⑩

وَكَانُوا يَعْجَلُونَ مِنَ الْجِبَالِ يُبْوَأُ
أَمْيَنِ^⑪

فَأَخَذَنَهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ^⑫

فَمَا آغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ^⑬

وَمَا حَكَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ
فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ^⑯

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلُقُ الْعَلِيُّمُ^⑯

وَلَقَدْ أَتَيْنَكَ سَبْعًا مِنْ الْمَئَافِنَ^⑰

وَالْقُرْآنَ الْعَظِيْمَ^⑱

* सठअप्प मिन्नल मसानी (सात बार-बार दोहराई जाने वाली) से अभिप्राय सूरः अल फ़ातिहः की→

अपनी आँखें इस अस्थायी सामग्री की ओर न पसार जो हमने इनमें से कुछ गिरोहों को प्रदान की है। और उन पर शोक न कर और मोमिनों के लिए अपने (दया के) पर झुका दे । 189।

और कह दे कि निस्सन्देह मैं तो एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ । 190।
(उस अज्ञाब से) जैसा हमने परस्पर बट जाने वालों पर उतारा था । 191।

जिन्होंने कुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया । 192।

अतः तेरे रब्ब की सौगन्ध ! निस्सन्देह हम उन सबसे अवश्य पूछेंगे । 193।

उस के सम्बन्ध में जो वे किया करते थे । 194।

अतः जो तुझे आदेश दिया जाता है खूब खोल कर वर्णन कर और शिर्क करने वालों से विमुख हो जा । 195।

निस्सन्देह हम उपहास करने वालों के मुकाबले पर तेरे लिए बहुत पर्याप्त हैं । 196।

जिन्होंने अल्लाह के साथ एक दूसरा उपास्य बना लिया है। अतः शीघ्र ही वे जान लेंगे । 197।

और निस्सन्देह हम जानते हैं कि उन वातों से जो वे कहते हैं तेरा सीना तंग होता है । 198।

لَا تَمْدَنْ عَيْنِكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعَبَاهُ
أَرْوَاجَاهُ مِنْهُ وَلَا تَحْرَثْ عَلَيْهِمْ

وَاحْفُظْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ⑩

وَقُلْ إِنَّمَا أَنَا اللَّهُذِيرُ الْمَمِينُ ⑪

كَمَا آتَنَا لَنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ⑫

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِصِيمِينَ ⑬

فَوَرِّبِكَ لَسْلَكَهُمْ أَجْمَعِينَ ⑭

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑮

فَاصْدِعْ بِمَا تُؤْمِنْ وَأَغْرِضْ

عَنِ الْمُشْرِكِينَ ⑯

إِنَّمَا كَفِيلَكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ⑰

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا أَخْرَىٰ

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ⑱

وَلَقَدْ تَعْلَمَ أَنَّكَ يَضْيقُ صَدْرُكَ بِمَا

يَقُولُونَ ⑲

←आयतें प्रतीत होती हैं जिनके अर्थ पवित्र कुरआन में अत्यधिक दोहराए गए हैं और सभी मुकत्तआत (खण्डाक्षर) भी सूरः अल फातिहः ही से लिए गए हैं। मुकत्तआत में एक अक्षर भी ऐसा नहीं जो सूरः अल फातिहः से बाहर हो। जबकि सूरः अल फातिहः में उनके अतिरिक्त सात अक्षर ऐसे हैं जिनको मुकत्तआत के रूप में प्रयोग नहीं किया गया।

فَسَيِّدُنَا مُحَمَّدُ رَبُّكَ وَكُنْ مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝
 अतः अपने रब्ब की स्तुति के साथ गुणगान कर और सजदः करने वालों में से हो जा । 99।

وَاعْبُدُرَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝
 और अपने रब्ब की उपासना करता चला जा यहाँ तक कि तुझे पूर्ण विश्वास हो जाए । 100। (रुक् ६)

16- सूरः अन-नहल

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 129 आयतें हैं।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत में जिस विश्वास का उल्लेख किया गया है उसका एक अर्थ मृत्यु भी माना गया है। परन्तु पहला अर्थ हर हाल में ‘विश्वास’ ही है। इस सूरः का आरम्भ भी इस बात से किया गया है कि जिस विश्वसनीय बात का तुझसे बादा किया गया था वह बस आने ही वाली है। अतः हे इनकार करने वालो ! तुम उसकी चाहत में जल्दी न करो और विश्वास रखो कि आकाश से अल्लाह तआला अपने भक्तों में से जिस पर चाहे अपने फरिश्ते उतारता है।

इसके बाद प्रत्येक प्रकार के पशुओं की सृष्टि का उल्लेख करने के पश्चात् यह महान भविष्यवाणी की गई है कि इस प्रकार यात्रा के साधन भी अल्लाह तआला उत्पन्न करेगा जिनका तुम्हें इस समय कोई ज्ञान नहीं। अतः वर्तमान युग में आविष्कृत नई-नई सवारियों की भविष्यवाणी इस आयत में कर दी गई है।

इसी तरह प्रत्येक प्रकार के प्राणियों के जीवित रहने के सम्बन्ध में वर्णन किया कि वे आसमान से उतरने वाले पानी ही के द्वारा जीवित रहते हैं। इस पानी के द्वारा धरती से हरियाली उगती है और हर प्रकार के वृक्ष और फल पैदा होते हैं। परन्तु आकाशीय पानी का एक पक्ष वह भी है जिसे वे अन्‌आम (चौपाय) नहीं जानते जो घास इत्यादि चरते तो हैं परन्तु इसके रहस्य को नहीं समझते। अतः आध्यात्मिक पानी से जो जीवन अल्लाह के रसूल पाते हैं और इस वरदान को आगे जारी करते हैं। उसे वे लोग नहीं समझ सकते जिनका उदाहरण पवित्र कुरआन ने चौपाय के साथ दिया है बल्कि उनको प्राणी-जगत में सर्वाधिक निकृष्ट ठहराया है। क्योंकि चौपाय तो उसको समझने की योग्यता ही नहीं रखते परन्तु ये धर्म को स्पष्ट रूप से समझने के उपरान्त भी उसके लाभ से वंचित रहते हैं।

इसके बाद अल्लाह तआला की असंख्य नेमतों का वर्णन करते हुए समुद्र में पाई जाने वाली नेमतों एवं समुद्र के खारे पानी में पलने वाली मछलियों इत्यादि का भी वर्णन कर दिया जो खारा पानी पीती हैं और उसी में जीवन व्यतीत करती हैं परन्तु उनके माँस में खारेपन का कोई मामूली सा भी चिह्न नहीं पाया जाता। और इस ओर भी ध्यान खींचा कि पानी के द्वारा यह जीवन-व्यवस्था उन पर्वतों पर निर्भर है जो बड़ी दृढ़ता पूर्वक धरती में गड़े होते हैं। यदि ये पर्वत न होते तो समुद्र से स्वच्छ जलकणों के ऊपर उठने और फिर नीचे बरसने की यह व्यवस्था जारी रह नहीं सकती थी।

पवित्र कुरआन ने छाँवों के धरती पर बिछे होने का वर्णन इस रंग में किया है मानो वे सजदः कर रहे हैं। परन्तु प्राणीवर्ग और फरिश्ते भी अल्लाह की बड़ाई के समक्ष सजदः

में पड़े रहते हैं। प्राणीवर्ग धरती से अपने जीवन का साधन प्राप्त करने के फलस्वरूप अपनी स्थिति से सदा अल्लाह के समक्ष सजदः करते हुए प्रतीत होते हैं। और फरिश्ते आकाश से उतरने वाले (आध्यात्मिक) पानी का रहस्य बोध करके सदा नतमस्तक रहते हैं।

आयत संख्या : 62 में यह आश्चर्यजनक विषय वर्णन किया गया है कि यदि अल्लाह मनुष्य के प्रत्येक दोष पर तुरन्त पकड़ना आरम्भ कर दे तो धरती पर चलने फिरने वाले प्राणियों की समाप्ति हो जाए। वास्तव में मनुष्य को इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि यदि प्राणीवर्ग न होते तो मनुष्य का जीवित रहना सम्भव ही न था। इसी लिए तुरन्त बाद यह कहा कि चौपायों में तुम्हारे लिए बहुत बड़ी शिक्षा है।

इसके पश्चात् वहइ की महानता का वर्णन मधुमक्खी का उदाहरण देकर किया गया। किसी दूसरे पशु पर वहइ के उतरने का उल्लेख नहीं मिलता। देखा जाए तो मधुमक्खी उसी प्रकार एक मक्खी ही है जैसे गंदगी पर पलने वाली कोई मक्खी होती है। अन्तर केवल यह है कि वहइ के द्वारा अल्लाह ने इसको हर गंदगी से पवित्र कर दिया है। यह अपने घर भी पर्वतों पर और ऊँचे वृक्षों तथा उन लताओं पर बनाती है जो ऊँचे सहारों पर चढ़ाई जाती हैं। फिर उस पर वहइ की गई कि वह हर फूल का रस चूसे। यद्यपि यहाँ समर (फल) शब्द का प्रयोग किया गया है परन्तु इसमें दोहरा भेद यह है कि मक्खी के उस फूल को चूसने के परिणाम स्वरूप ही उसमें से फल उत्पन्न होता है और हर फल का अर्क और निचोड़ भी वह फूल से ही चूसती है और इसके द्वारा जो मधु बनाती है उसमें मनुष्य के लिए आरोग्य प्राप्ति का एक चमत्कारिक गुण रख दिया गया है।

यहाँ यश्चक्षु मिन् बुतनिहा (जो उसके पेट से निकलता है) कह कर इस ओर संकेत कर दिया गया कि मधु केवल फूलों के रस से नहीं बनता बल्कि मधुमक्खी के पेट से जो लार निकलती है उसे वह फूलों के रस से मिलाकर और अपनी जिहा को बार-बार हवा में निकाल कर उसे गाढ़ा करके मधु में परिवर्तित करने के पश्चात् छतों में सुरक्षित करती है।

फिर इसके बाद दो दासों का उदाहरण दिया गया है। एक ऐसा मूर्ख दास जिसके कामों में कोई भी भलाई नहीं होती और दूसरा वह जिसे अल्लाह तआला उत्तम जीविका प्रदान करता है। और फिर वह उसे आगे मानव कल्याण के लिए खर्च करता है। उसका भी मधुमक्खी से एक बहुत गहरा सम्बन्ध है। साधारण मक्खी तो ऐसे दास की भाँति है जिसमें कोई लाभ नहीं परन्तु मधुमक्खी ऐसा दास है जिसे उत्तम जीविका प्रदान की जाती है और फिर वह आगे भी मानव कल्याण के लिए इसे बाँटती है।

इसके बाद विभिन्न प्रकार के दासों के उदाहरण-क्रम को आगे बढ़ा कर उसे मनुष्य पर लागू किया गया है। वह दास (मनुष्य) जो अल्लाह की वहइ से लाभान्वित नहीं होता और अल्लाह को गूँगा समझता है वह स्वयं ही गूँगा है। वह तो ऐसा ही है कि

जिस काम में भी हाथ डालेगा घाटे का ही सौदा करेगा । वह खसिरहुनिया बल्‌आखिरः (अर्थात् इहलोक और परलोक में घाटा उठाने वाला) है । दूसरे दास अल्लाह के नबी होते हैं, जो मानव जाति को न्याय की शिक्षा देते हैं और सदा सन्मार्ग पर चलते रहते हैं । याद रखना चाहिए कि मधुमक्खी के सम्बन्ध में भी यही कहा गया था कि अपने रब्ब के रास्तों पर चल । तो नबी इस पहलू से यह श्रेष्ठता रखते हैं कि वे उस एक सीधे मार्ग पर चलते हैं जो अवश्य अल्लाह तक पहुँचा देता है ।

इसके बाद इसी सूरः में पक्षियों के सम्बन्ध में यह कहा गया कि ये जो आकाश पर उड़ते फिरते हैं यह मत सोचो कि केवल संयोग से उनको पंख प्रदान किए गए हैं और उड़ने की क्षमता उत्पन्न हो गई है । केवल पंखों का उगाना ही पक्षियों में उड़ने की क्षमता पैदा नहीं कर सकता था जब तक उनकी खोखली हड्डियाँ, उनकी छाती की विशेष बनावट और छाती के दोनों ओर अत्यन्त मज़बूत मांसपेशियाँ न बनायी जातीं जो उन्हें भारी बोझ उठा कर ऊँची उड़ान का सामर्थ्य प्रदान करतीं हैं । यह एक ऐसा आश्चर्यजनक चमत्कार है कि भारी भरकम सारस भी लगातार कई हज़ार मील तक उड़ते चले जाते हैं और उड़ते समय उनकी जो आन्तरिक संरचना है वह इस प्रकार हवा का दबाव उन पर इस बनावट के कारण कम से कम पड़ता है । और जो सारस सबसे अधिक इस दबाव को सहन करने के लिए दूसरों से आगे होता है, कुछ देर के पश्चात् पीछे से एक ओर सारस आकर उसका स्थान ले लेता है । फिर यही पक्षी जल-पक्षी भी बनते हैं और दूबते नहीं हालाँकि उनको अपने भार के कारण दूब जाना चाहिए था । न दूबने का कारण यह है कि उनके शरीर के ऊपर छोटे-छोटे पंख हवा को समेटे हुए होते हैं और परों में आबद्ध हवा उनको दूबने से बचाती है । और ऐसा अपने आप हो ही नहीं सकता क्योंकि आवश्यक है कि उन पंखों के गिर्द कोई ऐसा चिकना पदार्थ हो जो पंखों को पानी से तर होने से बचाए । आप देखते हैं कि ये पक्षी अपने पंखों को अपनी चोंचों में से गुज़ारते हैं । यह अद्भुत बात है कि उस समय उनके मुँह से अल्लाह तआला ग्रीस (grease) की भाँति ऐसा पदार्थ निकालता है जिसे पंखों पर मलना आवश्यक है । वह पदार्थ अपने आप कैसे पैदा हुआ और उनके मुँह तक कैसे पहुँचा और उन पक्षियों को कैसे ज्ञात हुआ कि शरीर तक पानी के पहुँचने को रोकना आवश्यक है अन्यथा वे दूब जाएँगे ?

आगे पवित्र कुरआन के इस आश्चर्यजनक चमत्कार का वर्णन किया गया है कि वह प्रत्येक विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन कर रहा है । इस दृष्टि से दूसरी पुस्तकों पर पवित्र कुरआन को जो श्रेष्ठता प्राप्त है वही श्रेष्ठता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूसरे नवियों पर प्राप्त है । इसी कारण जैसे वे नबी अपनी जातियों पर साक्षी

थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन सब नवियों पर साक्षी नियुक्त किया गया है ।

पवित्र कुरआन की शिक्षा प्रत्येक विषय पर हावी है । इसका उदाहरण आयत संख्या 91 है जो स्वयं समस्त चारित्रिक और अध्यात्मिक शिक्षाओं को समेटे हुए है और उन पर हावी है । सबसे पहले न्याय का वर्णन किया गया है जिसके बिना संसार में कोई सुधार सम्भव नहीं । फिर उपकार का वर्णन किया गया जो मनुष्य को न्याय से एक ऊँचा दर्जा प्रदान करता है । फिर ईताइज़िल कुर्बा (निकट सम्बन्धियों से सदृश्यवहार) कह कर इस विषय को अन्तिम ऊँचाई तक पहुँचा दिया गया कि वे मानव समाज की सहानुभूति में इस प्रकार खर्च करते हैं कि जैसे माँ अपने बच्चों पर करती है और उसके बदले में किसी सेवा या श्रेय का अम ह तक उसके दिल में नहीं होता । यह सर्वोच्च दर्जा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रदान किया गया था कि आप प्रत्येक प्रकार के प्रतिफल की कल्पना से पवित्र हो कर समस्त मानव समाज को लाभ पहुँचा रहे थे ।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो एक व्यक्ति थे, पूरी उम्मत (समुदाय) के रूप में प्रस्तुत किया गया है । क्योंकि आप ही से बहुत सी उम्मतों ने पैदा होना था । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँच कर यह विषय अपने उत्कर्ष तक पहुँच जाता है । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यही वहइ की गई कि उस इब्राहीमी परम्परा का अनुसरण कर और इसका सारांश यह पेश कर दिया गया कि अपने रब्ब की ओर विवेकपूर्ण ढंग से और सदुपदेश के द्वारा बुलाओ । परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य अत्यन्त धैर्य धरने वाला हो । आयतांश ला तस्तअजिल (उसकी चाहत में जल्दी न करो) में जो आदेश है, इसमें भी इस विषय की ओर संकेत है । महान अध्यात्मिक परिवर्तन अकस्मात नहीं हुआ करते । बल्कि उसके लिए अत्यन्त धैर्य की आवश्यकता होती है । अतः यह धैर्य तो तकवा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता बल्कि इससे भी बढ़ कर उन लोगों को प्रदान किया जाता है जो उपकार करने वाले हैं ।

यहाँ एहसान (उपकार) का एक विषय तो आयतांश यअमुरु बिल अदलि बल इहसानि (वह न्याय और उपकार का आदेश देता है) में वर्णन कर दिया गया है और दूसरा उसकी वह व्याख्या है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं वर्णन कर दी है कि एहसान यह है कि जब तू उपासना के लिए खड़ा हो तो ऐसे खड़ा हो मानो तू अल्लाह को देख रहा है और एहसान के लिए कम से कम यह आवश्यक है कि तू इस प्रकार शिष्टतापूर्वक खड़ा हो, मानो वह तुझे देख रहा है ।

شُورَةُ النَّحْلِ مَكَيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ مَاذَةٌ وَ تِسْعَ وَ عَشْرُونَ آيَةً وَ سِتَّةُ عَشَرَ رُسُوْلًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11।

अल्लाह का आदेश आने ही को है, अतः उसकी चाहत में जल्दी न करो । पवित्र है वह और ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं । 12।

वह अपने आदेश से अपने भक्तों में से जिस पर चाहे फरिश्तों को रुह-उल-कुदुस के साथ उतारता है (और उन्हें कहता है) कि सावधान करो कि निश्चित रूप से मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः मुझ ही से डरो । 13।

उसने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । वह बहुत ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं । 14।

उसने मनुष्य को वीर्य से पैदा किया फिर सहसा वह (मनुष्य) खुला-खुला झगड़ालू बन गया । 15।

और चौपायों को भी उसने तुम्हारे लिए पैदा किया । उनमें गर्भी प्राप्त करने के साधन और बहुत से लाभ हैं । और उनमें से कुछ को तुम खाते (भी) हो । 16।

और जब तुम उन्हें शाम को चरा कर लाते हो और जब तुम उन्हें (सवेरे) चरने के लिए खुला छोड़ देते हो, तुम्हारे लिए उनमें शोभा होती है । 17।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَقْرَأَ أَمْرَ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ طَسْبِخَةً
وَتَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ②

يَنْزَلُ الْكِلِيلُ كَثَةً بِالرُّفُوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُهُ وَأَنَّهُ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاقْتَصُونَ ③

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
تَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ④

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا
هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ⑤

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءُ
وَمَنَافِعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ⑥

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيْخُونَ
وَحِينَ تَسْرُحُونَ ⑦

और वे तुम्हारे बोझ उठाए हुए ऐसी बस्ती की ओर चलते हैं जिस तक तुम स्वयं को कठिनाई में डाले बिना नहीं पहुँच सकते । निससन्देह तुम्हारा रब अत्यंत कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है । १८ ।

और घोड़े और खच्चर और गधे (पैदा किए) ताकि तुम उन पर सवारी करो और (वे) शोभा स्वरूप (भी) हों । इसी प्रकार वह (तुम्हारे लिए) उसे भी पैदा करेगा जिसे तुम नहीं जानते । १९ ।

और सीधा मार्ग दिखाना अल्लाह पर (भक्तों का) अधिकार है । जबकि उन (मार्गों) में से कुछ टेढ़े भी हैं । और यदि वह चाहता तो अवश्य तुम सब को हिदायत दे देता । १० । (रुक् । ।)

वही है जिसने तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा । उसमें पीने का सामान है और उसी से पौधे निकलते हैं जिनमें तुम (चौपाय) चराते हो । ११ ।

वह तुम्हारे लिए इसके द्वारा खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल उत्पन्न करता है । निससन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है जो सोच-विचार करते हैं । १२ ।

और उसने तुम्हारे लिए रात को और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में लगाया है । और नक्षत्र भी उसी के आदेश से सेवारत हैं । निससन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं बहुत बड़े चिह्न हैं । १३ ।

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَى بَلْدِنَمْ تَكُونُوا
بِلِعِيهِ الْأَبِشِقُ الْأَنْفِسُ ۝ إِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

وَالْخَيْلَ وَالْبَيْعَالَ وَالْحَمِيرَ لَتَرْكَبُوهَا
وَزِيَّةٌ ۝ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ①

وَعَلَى اللَّهِ قَضَى السَّبِيلُ وَمِنْهَا جَاءَ حِرْجٌ ۝
وَلَوْ شَاءَ لَهُ دِكْمٌ أَجْمَعِينَ ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءِلَكُمْ مِنْهُ
شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تِسْيِمُونَ ②

يَئِتُكُمْ بِالرِّزْعَ وَالرَّيْتُونَ
وَالثَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الشَّمَرِتِ ۝
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْكُرُونَ ۝
وَسَخَرَ لَكُمُ الْأَيْلُ وَالْأَهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالقَمَرُ ۝ وَالنَّجُومُ مَسَخَرُ
يَا مِرِهٌ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَتٍ لِّقَوْمٍ
يَعْقُلُونَ ۝

और उसने तुम्हारे लिए जो विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ धरती में पैदा की हैं (वे सब तुम्हारे लिए सेवारत हैं) । इसमें उपदेश ग्रहण करने वाले लोगों के लिए निस्सन्देह बहुत बड़ा चिह्न है ॥14॥

और वही है जिसने समुद्र को सेवा में लगाया ताकि तुम उसमें से ताज़ा माँस खाओ और उसमें से तुम सौन्दर्य की सामग्रियाँ निकालो जिन्हें तुम पहनते हो । और तू नौकाओं को देखता है कि वे उसमें जल को चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसकी कृपा को ढूँढो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो ॥15॥

और उसने धरती में पर्वत रख दिये ताकि तुम्हारे लिए (वे) भोजन के सामान उपलब्ध करें । और नदियाँ और रास्ते भी (बना दिये) ताकि तुम हिदायत पाओ ॥16॥

और बहुत से मार्गदर्शन करने वाले चिह्न । और वे नक्षत्रों से भी मार्ग-दर्शन लेते हैं ॥17॥

तो क्या वह जो पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता ? अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ॥18॥

और यदि तुम अल्लाह की नेमत की गणना करना चाहो तो उसे गिन नहीं सकोगे । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥19॥

और अल्लाह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रकट करते हो ॥20॥

وَمَا ذَرَ الْكُنْكُنَ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا
الْوَانَهُ^{١٩} إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَذَكَّرُونَ^{٢٠}

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا
طَرِيرًا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حُلَيَّةً تَلْبَسُوهَا
وَتَرَى الْفَلْكَ مَوَاضِعَهُ فِيهِ وَلَتَبْغِيَّ
مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشَكَّرُونَ^{٢١}

وَأَنْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَابِيًّا أَنْ
تَمْيِدَ بِكُنْكُنَ وَأَنْهَرًا وَسَبَلًا لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ^{٢٢}

وَعَلِمْتَ^{٢٣} وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ^{٢٤}
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ^{٢٥}

وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُخْصُوهَا^{٢٦}
إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ^{٢٧}

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ^{٢٨}

और जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे कुछ पैदा नहीं करते जबकि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं । 121।

मुर्दे हैं, जीवित नहीं । और समझ नहीं रखते कि वे कब उठाए जाएँगे । 122।*

(रुकूः २/४)

तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । अतः वे लोग जो परकाल पर ईमान नहीं लाते उनके दिल अस्वीकारी हैं । और वे अहंकार करने वाले हैं । 123।

कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह अवश्य जानता है जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं । निस्सन्देह वह अहंकार करने वालों को पसन्द नहीं करता । 124।

और जब उनसे पूछा जाता है कि वह क्या है जो तुम्हारे रब्ब ने उतारा है ? तो वे कहते हैं कि पहले लोगों की कथाएँ हैं । 125।

(मानो वे चाहते हैं) कि क्रामत के दिन अपने समस्त बोझ भी और उन लोगों के बोझ भी उठाएँ जिन्हें वे ज्ञान के बिना पथभ्रष्ट किया करते थे । सावधान ! बहुत ही बुरा है जो वे उठाते हैं । 126। (रुकूः ३/९)

निस्सन्देह उन लोगों ने भी जो उन से पहले थे षड्यन्त्र किए । तो अल्लाह ने उनके भवनों को नींव से उखेड़ दिया, तब उन पर छत उनके ऊपर से आ

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاٰءٌ وَمَا يَشْعُرُونَ
أَيَّانَ يُبَعْثُوْنَ

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُمْسِكَةٌ وَهُمْ
مُسْتَكِبُرُونَ

لَا جَرْمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَسِيرُونَ وَمَا
يَعْلَمُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكِبِرِينَ

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ

لِيَحْمِلُوا أُوزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمةِ
وَمِنْ أُوزَارِ الَّذِينَ يَضْلُّونَهُمْ بِغَيْرِ
عِلْمٍ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ
بِبِيَانِهِمْ مِنَ الْقَوْاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ

* इस आयत में उन मुश्त्रिकों का खंडन है जो काल्पनिक उपास्यों पर ईमान लाते थे । जो मुर्दे की भाँति थे और जीवन के कोई चिह्न उनमें नहीं पाए जाते थे ।

गिरी । और उनके पास अज्ञाब वहाँ से आया जहाँ से उनको अनुमान तक न था । 27।

फिर क्रयामत के दिन वह उन्हें अपमानित कर देगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन के लिए तुम विरोध किया करते थे ? वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया था कहेंगे कि निस्सन्देह आज के दिन अपमान और दुर्दशा काफ़िरों पर (पड़ रही) है । 28।

(उन पर) जिनको फरिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे लोग अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे होते हैं । और वे (यह कहते हुए) संधि का प्रस्ताव रखते हैं कि हम तो कोई बुराई नहीं किया करते थे । क्यों नहीं ! निस्सन्देह अल्लाह उसका भली-भाँति ज्ञान रखता है जो तुम किया करते थे । 29।

अतः नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ । लम्बे समय तक उसमें रहते चले जाओ । अतः अहंकार करने वालों का ठिकाना निश्चित रूप से बहुत बुरा है । 30।

और उन लोगों से जिन्होंने तकबा धारण किया कहा जाएगा कि वह क्या है जो तुम्हारे रब्ब ने उतारा है ? वे कहेंगे भलाई ही भलाई ! उन लोगों के लिए जिन्होंने इस संसार में पुण्यकर्म किए, भलाई (निश्चित) है । और परलोक का घर बहुत उत्तम है । और मुत्कियों का घर क्या ही उत्तम है । 31।

مِنْ فَوْقِهِمُ وَأَتَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ④

لَئِنْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمُ وَيَقُولُ أَيْنَ
شَرَكَاءِ إِلَّا دِينُكُنُمْ شَاكُونَ فِيهِمْ
قَالَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخَرْيَ
الْيَوْمَ وَالسَّوْءَ عَلَى الْكُفَّارِينَ ⑤

الَّذِينَ تَوَفَّهُمُ الْمَلِائِكَةُ ظَالِمِيَّ
أَنْفُسِهِمْ فَأَلْقَوُوا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِنْ سُوءٍ بَلِّي إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنَّا
نَعْمَلُونَ ⑥

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا
فَلَبِسُ مَهْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ⑦

وَقَيْلَ لِلَّذِينَ أَتَوْا مَا دَأَبُوا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ
قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا
خَيْرَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ
دَارُ الْمُتَّقِينَ ⑧

सदा रहने वाले बाग हैं जिनमें वे प्रविष्ट होंगे, जिनके दामन में नहरें बहती होंगी। उनके लिए उन में वही कुछ होगा जो वे चाहेंगे। इसी प्रकार अल्लाह मुत्तकियों को प्रतिफल दिया करता है । 132।

(अर्थात्) वे लोग जिनको फरिश्ते इस अवस्था में मृत्यु देते हैं कि वे पवित्र होते हैं। वे (उन्हें) कहते हैं, तुम पर सलाम हो। जो तुम कर्म करते थे उसके कारण स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ । 133।

क्या वे इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग देख रहे हैं कि फरिश्ते उनके पास आएँ अथवा तेरे रब्ब का निर्णय आ पहुँचे। इसी प्रकार उन लोगों ने किया था जो उनसे पहले थे। और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार किया करते थे । 134।

अतः उन्हें उनके कर्मों का कुपरिणाम पहुँचा और उन्हें उसने घेर लिया जिसके साथ वे उपहास किया करते थे । 135।

(रुकू ۴۰)

और उन लोगों ने जिन्होंने शिर्क किया कहा, यदि अल्लाह चाहता तो हमने उसके सिवा किसी चीज़ की उपासना न की होती न हमने न हमारे पूर्वजों ने। और न ही हमने उसके सिवा किसी वस्तु को सम्मान दिया होता। इसी प्रकार उन लोगों ने किया था जो उनसे पहले थे। अतः क्या पैगम्बरों पर खुला-खुला संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त भी कोई दायित्व है ? 136।

جَئْتُ عَدْنَ يَدْخُلُهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا^١
الْأَنْهَرُ لَهُمْ قِيهَا مَا يَسْأَءُونَ^٢ كَذَلِكَ
يَعْزِزُ اللَّهُ الْمُقْتَفِينَ^٣

الَّذِينَ شَوَّهُمُ الْمَلِكَةَ طَبِيعَتِينَ^٤
يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ^٥ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ^٦

هَلْ يَسْتَطِرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيهِمُ الْمَلِكَةُ^٧
أُوْيَاتِي أَمْرَ رِبِّكَ^٨ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ^٩ وَمَا ظَلَمُهُمُ اللَّهُ
وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ^{١٠}

فَاصَابُهُمْ سَيِّئَاتٌ مَا عَمِلُوا وَ حَاقَ بِهِمْ^{١١}
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهِمُونَ^{١٢}

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْشَاءَ اللَّهِ مَا
عَبَدُتُمْ دُوْنَهُ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا
أَبْأَوْنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهِ مِنْ شَيْءٍ^{١٣}
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ^{١٤}
فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا أَبْلَغَ الْمُبْيَنَ^{١٥}

और निश्चित रूप से हमने प्रत्येक जाति में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की उपासना करो और मूर्ति (पूजा) से परहेज़ करो । अतः उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी । और उन्हीं में ऐसे भी हैं जिन की पथभ्रष्टा निश्चित हो गई । अतः धरती में भ्रमण करो फिर देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा था । 37।

यदि तू उनकी हिदायत का लालसी है तो अल्लाह उनको हिदायत नहीं देता जो पथभ्रष्ट करते हैं । और उनके कोई सहायक नहीं होंगे । 38।

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़स्में खार्इ है कि जो मर जाएगा अल्लाह उसे फिर कभी नहीं उठाएगा । क्यों नहीं ! यह ऐसा वादा है जिसे पूरा करना उस पर अनिवार्य है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 39।

ताकि वह उन पर वह बात खूब खोल दे जिसमें वे मतभेद किया करते थे । और ताकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया जान लें कि वे झूठे हैं । 40।

जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो उस के लिए हमारा केवल यह कहना होता है कि 'हो जा' तो वह होने लगती है और हो कर रहती है । 41। (रुकू ١١)

और वे लोग जिन्होंने अत्याचार सहने के बाद अल्लाह के लिए हिजरत की हम अवश्य उन्हें संसार में उत्तम स्थान प्रदान

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الصَّاغُوتَ ۝ فَمِنْهُمْ مَنْ
هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ
الصَّلَةُ ۝ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْكَذَّابِينَ ⑦

إِنْ تَحْرِصُ عَلَىٰ هُدًىٰهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي مَنْ لَيُضْلِلُ وَمَا لَهُمْ
مِنْ نُصْرَفِينَ ⑧

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدَآيْمَانِهِمْ لَا يَبْغِي
اللَّهُ مَنْ يَمْوَثُ ۝ بَلِّي وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا
وَلِكُلِّ أَكْثَرِ الشَّաسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑨

لَيَسِّئُنَّ لَهُمُ الَّذِي يَحْتَلِفُونَ فِيهِ وَلَيَعْلَمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذَّابِينَ ⑩

إِنَّمَا قُولُنَا إِشْتِيٌّ ۝ إِذَا أَرْدَلَهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ
كُنْ فِي كُوْنَ ⑪

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مَنْ بَعْدِ مَا
ظَلِمُوا النَّبِيَّنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنةٌ ۝

करेंगे । और परलोक का प्रतिफल तो सब (प्रतिफलों) से बड़ा है । काश वे समझ रखते । 42।

(यह प्रतिफल उनके लिए है) जिन्होंने धैर्य धारण किया और वे अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं । 43।

और हमने तुझ से पहले केवल ऐसे पुरुषों को ही भेजा जिनकी ओर हम वहाँ किया करते थे । अतः यदि तुम नहीं जानते तो (पूर्ववर्ती) पुस्तक वालों से पूछ लो । 44।

(उन्हें हमने) खुले-खुले चिह्नों और धर्मग्रन्थों के साथ (भेजा) । और हमने तेरी ओर भी अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा है ताकि तू अच्छी प्रकार से लोगों पर उसका स्पष्टीकरण कर दे जो उनकी ओर उतारा गया था और ताकि वे सोच-विचार करें । 45।

क्या वे लोग जिन्होंने बुरी योजनाएँ बनाई (इस बात से) सुरक्षित हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धैंसा दे अथवा उनके पास अज्ञाब वहाँ से आ जाए जहाँ से (आने का) वे विचार तक न करते हों । 46।

अथवा उन्हें उनके चलने फिरने की अवस्था में आ पकड़े । अतः वे (अल्लाह को उसके उद्देश्य में) असमर्थ करने वाले नहीं । 47।

या (वह) उन्हें क्रमशः घटाते हुए पकड़ ले । अतः निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब बहुत ही मेहरबान (और) बार-बार दया करने वाला है । 48।

وَلَا جُرُّ الْآخِرَةِ أَكْبَرٌ لَّوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿١٥﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي
إِلَيْهِمْ فَسَعَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

بِالْبَيِّنِٰتِ وَالرِّبِّرِٰتِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ
تَسْبِيرٌ لِّلثَّالِثِ مَا نَزَّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَعْصِيَ
اللَّهَ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ مِنْ
حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

أَوْ يَأْخُذُهُمْ فِي تَقْلِيمِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُحْجِزِينَ ﴿١٩﴾

أَوْ يَأْخُذُهُمْ عَلَى تَخْوِيفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

क्या उन्होंने देखा नहीं कि जो वस्तु भी अल्लाह ने पैदा की है उसकी परछाइयाँ कभी दाहिनी ओर से और कभी बाईं ओर से स्थान बदलते हुए अल्लाह के समक्ष सजदः कर रही हैं । और वे विनम्रता करने वाली होती हैं । 149।

और आसमानों और धरती में जो भी जीवधारी हैं और सब फ़रिश्ते भी अल्लाह ही को सजदः करते हैं । और वे अहंकार नहीं करते । 150।

अपने ऊपर प्रभुत्व रखने वाले रब्ब से वे डरते हैं । और वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है । 151।

(रुकू ۶۲)

और अल्लाह ने कहा कि दो-दो उपास्य मत बना बैठो । निस्सन्देह वह एक ही उपास्य है । इसलिए केवल मुझ ही से डरो । 152।

और जो आसमानों और धरती में है उसी का है । और उसी का आज्ञापालन करना आवश्यक है । तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और से डरते रहोगे । 153।

और जो भी तुम्हारे पास नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है । फिर जब तुम्हें कोई कष्ट पहुँचता है तो उसी की ओर तुम गिङ्गिङ्गाते (हुए झुकते) हो । 154।

फिर जब वह तुम से कष्ट को दूर कर देता तो तुम में से एक गिरोह तुरन्त अपने रब्ब का साझीदार ठहराने लगता है । 155।

أَوْلَمْ يَرَوُ الْإِنْسَانُ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ
يَتَعَجَّبُ إِذَا لَمْ يَرَهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سَجَدًا
لِلَّهِ وَهُمْ لَا يُخْرُقُونَ ④

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَآبَةٍ وَالْمَلِكَةُ وَهُنَّ
لَا يَسْتَكِبُرُونَ ⑤

يَحَاقُّونَ رَبَّهُمْ مَنْ فَوْقُهُمْ وَيَقْعُلُونَ
مَانِئُ مَرْوَنَ ۝

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَخَذُوا إِلَهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا
هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَلَا يَأْتِيَ فَازَ هَبُونَ ⑥

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِلَّهِ الدِّينُ
وَاصْبِرْ ۝ أَفَعَيْرَ اللَّهُ تَعَالَى

وَمَا بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فِيمَنِ اللَّهُ وَمَا إِذَا
مَسَكَمُ الصَّرَرَ فَإِلَيْهِ تَجْرُّونَ ۝

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الصَّرَرَ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ
مِنْكُمْ يَرَيْهُمْ يُشْرِكُونَ ۝

ताकि जो हमने उन्हें प्रदान किया है उसकी कृतज्ञता करें। अतः कुछ लाभ उठा लो। तुम अवश्य (इसका परिणाम) जान लोगे । ५६।

और वे उसके लिए जिसे वे जानते नहीं उस जीविका में से जो हमने उनको प्रदान किया एक भाग निश्चित कर बैठते हैं। अल्लाह की सौगन्ध ! जो तुम झूठ गढ़ते रहे हो अवश्य उस विषय में पूछे जाओगे । ५७।

और उन्होंने अल्लाह के लिए बेटियाँ बना ली हैं। पवित्र है वह। जबकि उनके लिए वह कुछ है जो वे पसन्द करते हैं । ५८।

और जब उनमें से किसी को लड़की का शुभ-समाचार दिया जाए तो उसका चेहरा शोक से काला पड़ जाता है। और वह (शोक को) दबाने का प्रयत्न कर रहा होता है । ५९।

वह उस (सूचना) की पीड़ा के कारण जिस का शुभ-समाचार उसे दिया गया लोगों से छिपता फिरता है। क्या वह अपमानित होने पर भी (अल्लाह के) उस (अनुदान) को रोक रखे अथवा उसे मिट्टी में गाड़ दे ? सावधान ! बहुत ही बुरा है जो वे फैसला करते हैं । ६०।

उन लोगों के लिए जो परलोक पर ईमान नहीं लाते बहुत बुरा उदाहरण है। और सर्वोत्तम उदाहरण अल्लाह ही के लिए है। और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) तत्त्वज्ञ है । ६१। (रुक् ७)

لَيَكُفِّرُوا بِمَا أَنْيَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ⑦

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيَّاً مَّا
رَزَقْنَاهُمْ ۖ تَالَّهُ لَتَسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ
تَفْتَرُونَ ⑧

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنْتَ سَبَحَةً وَلَهُمْ مَا
يَشَاءُونَ ⑨

وَإِذَا بَشَرَ أَحَدُهُمْ بِالْأَنْتِيَاضِ ۖ وَجْهُهُ
مُسُودًا وَهُوَ كَظِيمٌ ⑩

يَوَارِى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سَوْءِ مَا بَشَرَ بِهِ
أَيْمَسِكَةٌ عَلَى هُونٍ أَمْ يَدْسَهُ فِي
الثَّرَابِ ۖ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ⑪

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثْلُ
السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثْلُ أَكْعَلٌ ۖ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑫

और यदि अल्लाह मनुष्यों की उनकी अत्याचारों के आधार पर पकड़-धकड़ करता तो इस (धरती) पर किसी जीवधारी को शेष न छोड़ता। परन्तु वह उन्हें एक निश्चित अवधि तक ढील देता है। अतः जब उनका समय आ पहुँचे तो न वे (उससे) एक क्षण पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं । 162।

और वे अल्लाह की ओर वह (बात) आरोपित करते हैं जिससे वे स्वयं घृणा करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ बोलती हैं कि अच्छी वस्तुएँ उन्हीं के लिए हैं। निस्सन्देह उनके लिए आग (निश्चित) है। और निस्सन्देह वे निस्सहाय छोड़ दिए जाएँगे । 163।

अल्लाह की सौगन्ध ! निस्सन्देह हमने तुझ से पहली जातियों की और रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कर्म उन्हें सुन्दर बनाकर दिखाए। अतः आज वह उनका संरक्षक (बन बैठा) है। हालाँकि उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है । 164।

और हमने केवल इसलिए तुझ पर पुस्तक उतारी कि जिस विषय में वे मतभेद करते हैं तू (उसे) उनके लिए ख़बू खोल कर वर्णन कर दे और (इस लिए कि यह पुस्तक) ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और अनुकंपा का साधन हो । 165।

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो इससे धरती को उसके मर जाने के पश्चात् जीवित कर दिया। निस्सन्देह

وَلَوْيُواخْذَ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمٍ مِّمَّا
تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَةٍ وَلَكِنْ يُؤْخِرُهُمْ
إِلَى أَجَلٍ مُّسَيًّّا فَإِذَا جَاءَهُمْ أَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ⑤

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يُكْرَهُونَ وَتَصُفُ
السِّنَّةِ هُمُ الْكَذِيبُ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَى لَا
جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ الثَّارَ وَأَنَّهُمْ مُفْرَطُونَ ⑥

تَاللهُ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى أُمُّ مِنْ قَبْلِكَ
فَرَيَّبْنَاهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ
وَلِيَّهُمُ الْيَوْمَ وَلِهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑦

وَمَا آنَزْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ
الَّذِي احْتَلَفُوا فِيهِ وَهُدَى وَرَحْمَةً
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑧

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ

इसमें उन लोगों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है जो (बात को) सुनते हैं । १६६।

(रुकू ٨)

और निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ा चिह्न है । हम तुम्हें उस में से जो उनके पेटों में गोबर और खून के बीच से उत्पन्न होता है वह शुद्ध दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट है । १६७।

और खजूरों के फलों और अंगूरों से भी (हम पिलाते हैं) । तुम इससे नशा^{*} और उत्तम जीविका भी बनाते हो । निस्सन्देह इसमें बुद्धि रखने वालों के लिए एक बड़ा चिह्न है । १६८।

और तेरे रब्ब ने मधुमक्खी की ओर वहाँ की कि पर्वतों में भी और वृक्षों में भी और उन (लताओं) में जिन्हें वे ऊँचे सहारों पर चढ़ाते हैं, घर बना । १६९।

फिर प्रत्येक प्रकार के फलों में से खा और अपने रब्ब के रास्तों पर विनम्रता पूर्वक चल । उनके पेटों में से ऐसा पेय निकलता है जिसके रंग भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं । और इसमें मनुष्यों के लिए एक बड़ी आरोग्य प्रदानकारी शक्ति है । निस्सन्देह इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए बहुत बड़ा चिह्न है । १७०।

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फिर वह तुम्हें मृत्यु देगा । और तुम ही में से वह भी है जिसे सुध-बुध खो देने की आयु

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً

لِقَوْمٍ يُسَمَّعُونَ ﴿٨﴾

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ عِزْرَةٌ نُسْقِيْكُمْ

مَيَافِ بَطْوَنٍ مِّنْ بَيْنِ قَرْبَتٍ وَدَفْرٍ

لِبَنًا خَالِصًا إِنَّا إِلَيْهِ لَشَرِبِينَ ﴿٩﴾

وَمِنْ ثَمَرَاتِ التَّحْمِيلِ وَالْأَغْنَابِ

تَمْخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي

ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

وَأَوْلَىٰ رَبِّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِّي أَنْجِذِي مِنْ

الْجِبَالِ بَيْوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا

يَعْرِشُونَ ﴿١١﴾

ثُمَّ كُلُّ مِنْ كُلِّ الشَّمَرَاتِ فَأَسْلِكُنِي سُبْلَ

رَبِّلِكِ ذُلْلَلَ لَيَخْرُجَ مِنْ بَطْوَنِهَا

شَرَابٌ مُّخْتَفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شَفَاءٌ لِلنَّاسِ

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَسْكُرُونَ ﴿١٢﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَوْفِيْكُمْ وَمِنْكُمْ

* मुहावरा है : “नशा उसने पिया खुमार तुम्हें चढ़ा” देखिए जामे-उल-लुगात ।

तक पहुँचाया जाता है ताकि ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् पूर्णतया ज्ञान विहीन हो जाए। निस्सन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है । 711। (रुकू^٩)

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ दूसरों पर जीविका में बढ़ोत्तरी प्रदान की है। अतः वे लोग जिन्हें बढ़ोत्तरी प्रदान की गई वे कभी अपनी जीविका को उनकी ओर जो उनके अधीन हैं इस प्रकार लौटाने वाले नहीं कि वे उसमें उनके समान हो जाएँ। फिर क्या वे (इस) वास्तविकता के जानने के बाद भी अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं? । 721

और अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही वर्ग में से जोड़े पैदा किए और तुम्हारे जोड़ों में से ही तुम्हें बेटे और पोते प्रदान किए और तुम्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान की। तो फिर क्या वे झूठ पर तो ईमान लाएँगे और अल्लाह की नेमतों का इनकार कर देंगे? । 731

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जो उनके लिए आसमानों और धरती में किसी जीविका पर कुछ भी आधिपत्य नहीं रखते और वे तो कोई सामर्थ्य नहीं रखते। 741

अतः अल्लाह के बारे में दृष्टान्त न दिया करो। निस्सन्देह अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। 751।

مَنْ يَرْدَأْتِي أَرْذَلِ الْعُمَرِ لَكَ لَا يَعْلَمُ
بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئاً إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ قَدِيرٌ

وَاللَّهُ فَضَلَّ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي
الرِّزْقِ فَمَا الَّذِينَ فُضِلُوا بِرَأْدِي
رِزْقَهُمْ عَلَى مَا مَلَكُتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنفُسِكُمْ أَرْوَاجًا
وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ بَنِينَ وَخَفَدَةً
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفِإِلْبَاطِيلِ
يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئاً
وَلَا يَسْتَطِعُونَ

فَلَا تَشْرِبُوا إِلَهًا أَمْكَانٌ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

इसी प्रकार अल्लाह एक भक्त का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो किसी का दास हो और किसी चीज़ पर कोई प्रभुत्व न रखता है और उसका भी (उदाहरण देता है) जिसे हमने अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है और वह उसमें से गुप्त रूप से और प्रकाश्य रूप से भी खर्च करता है। क्या वे समान हो सकते हैं? समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है। जबकि वास्तविकता यह है कि अधिकतर उनमें से नहीं जानते। 176।

इसी प्रकार अल्लाह दो व्यक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन दोनों में से एक गूँगा है जो किसी चीज़ पर कोई सामर्थ्य नहीं रखता और वह अपने स्वामी पर एक बोझ है। वह उसे जिस ओर भी भेजे वह कोई भलाई (का समाचार) नहीं लाता। क्या वह व्यक्ति और वह समान हो सकते हैं जो न्याय का आदेश देता है और सन्मार्ग पर (अग्रसर) है? 177। (रुकू 10/16)

और आसमानों और धरती की अदृश्य (बातें) अल्लाह ही की सम्पत्ति है। और (प्रतिश्रुत) घड़ी का मामला तो आँख झपकने के समान या इससे भी शीघ्रतर है। निससन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 178।

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों से निकाला जब कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ
عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا
فَهُوَ يُشْفَقُ مِنْهُ سِرًا وَجَهْرًا ۖ هَلْ
يَسْتَوْنَ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بِلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا
أَبْكَكُمْ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كُلُّ عَلَى
مَوْلَةٍ ۖ أَيْنَمَا يَوْجِهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ
هَلْ يَسْتَوْنَ هُوَ ۖ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ
وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا
أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلْمَحُ الْبَصَرِ أَوْهُو
أَقْرَبُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عَقِيدَرُ ۝

وَاللَّهُ أَحْرَجَكُمْ مِنْ بَطْوَنِ أَمْهِنِكُمْ
لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ الْأَسْمَعَ

और आँखें और दिल बनाए ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो । 79।

क्या उन्होंने पक्षियों को आकाश के वायुमण्डल में काम पर लगाए हुए नहीं देखा ? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई थामे हुए नहीं होता । निस्सन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं । 80।

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में शान्ति रख दी और तुम्हारे लिए पशुओं के चमड़ों से एक प्रकार के घर बना दिए जिन्हें तुम यात्रा के दिन और पड़ाव के दिन हल्का पाते हो । और उनकी पश्शम और उनकी ऊंठ और उनके बालों से अनेक साज़ो-सामान बनाया और एक समय तक लाभ उठाना निश्चित किया । 81।

और अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है उसमें से तुम्हारे लिए छायादार चीजें भी बनाईं । और तुम्हारे लिए पहाड़ों में आश्रयस्थल बनाए । और तुम्हारे लिए ओढ़ने का सामान बनाया जो तुम्हें गर्मी से बचाता है । और ओढ़ने का वह सामान भी जो युद्ध के समय तुम्हारा बचाव करता है । इसी प्रकार वह तुम पर अपनी नेमत को पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बन जाओ । 82।

अतः यदि वे फिर जाएँ तो तुझ पर तो केवल खुला-खुला संदेश पहुँचाना अनिवार्य है । 83।

وَالْأَبْصَارُ وَالْأُفْدَةُ لَعَلَّكُمْ تَشْكِرُونَ ⑦

الْمُرِيرُ وَإِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٌ فِي جَوِّ
السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۖ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لَّتَقُولُوا يُؤْمِنُونَ ⑧

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بَيْوَتِكُمْ سَكَنًا
وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جَلُودِ الْأَنْعَامِ بَيْوَتًا
تَشَخَّضُونَهَا يَوْمَ ظَعْنَكُمْ وَيَوْمَ
إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا
وَأَشْعَارِهَا آثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ⑨

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ
لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ
سَرَابِيلَ تَقْيِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ
تَقْيِيكُمْ بِأَسْكُمْ ۖ كَذَلِكَ يَتَمَّ نِعْمَتُهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ⑩

فَإِنْ تَوَلُّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكُمُ الْبَلْغُ الْمُبِينُ ⑪

वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर भी उसका इनकार कर देते हैं। और उनमें से अधिकतर काफिर लोग हैं 184।

(रुकू ۱۷)

और जब हम प्रत्येक जाति में से एक गवाह खड़ा करेंगे फिर वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनको (कुछ कहने की) अनुमति नहीं दी जाएगी। और न उन की पहुँच (अल्लाह की) चौखट तक होगी 185।

और वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया जब वे अज़ाब को देखेंगे तो वह उनसे हल्का नहीं किया जाएगा और न ही वे ढील दिए जाएंगे 186।

और जब वे लोग जिन्होंने शिर्क किया अपने (घड़े हुए) उपास्यों को देखेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब ! ये हैं हमारे उपास्य जिनको हम तेरे सिवा पुकारा करते थे। तो वे (उनकी) यह बात उन पर ही दे मारेंगे कि निस्सन्देह तुम झूठे हो 187।

अतः उस दिन वे अल्लाह से संधि के इच्छुक होंगे। और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, उन से खो चुका होगा 188।

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका हम उन्हें अज़ाब पर अज़ाब में बढ़ाते चले जाएंगे क्योंकि वे फ़साद किया करते थे 189।

और जिस दिन हम प्रत्येक जाति में उन्हीं में से उन पर एक गवाह खड़ा

يَعْرُفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ تُحَمَّلُ يَسْكُرُونَ
وَأَكْثَرُهُمُ الْكُفَّارُونَ^{۱۷}

وَيَوْمَ تَبَعَّثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا لَمَّا
يُؤَذَّنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُنْ
يُشَعَّبُونَ^{۱۸}

وَإِذَا رَأَى الظَّالِمُونَ ظَلَمًا وَالْعَذَابَ فَلَا يُحَقِّقُ
عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُتَظَرِّفُونَ^{۱۹}

وَإِذَا رَأَى الظَّالِمُونَ أَشْرَكُوا شَرَكًا لَهُمْ قَالُوا
رَبُّنَا هُوَ لَأَءْشَرَكَ وَنَا الظَّالِمُونَ كُلُّاً ذَدِغُوا
مِنْ دُونِكَ فَالْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكَمْ
لَكَذِبُونَ^{۲۰}

وَالْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَصَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ^{۲۱}

الظَّالِمُونَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
رِزْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا
يَعْسِدُونَ^{۲۲}

وَيَوْمَ تَبَعَّثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَيْهِمْ مَنْ

करेंगे और तुझे हम उन (सब) पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तेरी और ऐसी पुस्तक उतारी है जो कि प्रत्येक बात को खोल-खोल कर वर्णन करने वाली है। और हिदायत और कृपा स्वरूप है तथा आज्ञाकारियों के लिए शुभ-समाचार है 1901। (रुपू. 12)

निस्सन्देह अल्लाह न्याय और उपकार करने का और निकट सम्बन्धियों को दिया जाने वाला अनुदान के समान अनुदान करने का आदेश देता है। और निर्लज्जता और नापसंदीदा बातों और विद्रोह करने से मना करता है। वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो 1911।

और जब तुम प्रतिज्ञा करो तो अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा को पूरा करो। और क़समों को उनके पक्का करने के बाद न तोड़ो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर ज़ामिन बना चुके हो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह निश्चित रूप से जानता है 1921।

और उस स्त्री की भाँति मत बनो जिसने अपने काते हुए सूत को मजबूत हो जाने के बाद टुकड़े-टुकड़े कर दिया। तुम अपनी क़समों को परस्पर धोखा देने के लिए प्रयोग करते हो, ऐसा न हो कि एक जाति दूसरी जाति पर बढ़ोत्तरी प्राप्त कर ले। निस्सन्देह अल्लाह इसके द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है। और वह अवश्य तुम पर क्यामत के दिन उसे

أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هُوَ لَا يُعَلِّمُ
وَنَرَأَنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۖ

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ
ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَا عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۗ يَعْلَمُ لَعْلَكُمْ
تَذَكَّرُونَ ۝

وَأَوْفُوا بِعِهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمُوهُ لَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَائِنِي نَقَصْتُ غَزْلَهَا مِنْ
بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْ كَائِنًا تَتَخَذُونَ أَيْمَانَكُمْ
دَحَلًا يَسْكُنُ أَنْ تَكُونَ أَمَّةٌ هِيَ أَزْلَىٰ
مِنْ أَمَّةٍ ۗ إِنَّمَا يَبْلُو كَمَ الْلَّهُ بِهِ ۗ وَلَيَبْيَسَنَّ
كُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ

खोल देगा जिसके सम्बन्ध में तुम मतभेद किया करते थे । १३।

और यदि अल्लाह चाहता तो अवश्य तुम्हें एक समुदाय बना देता । परन्तु वह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । और तुम निस्सन्देह उन कर्मों के विषय में पूछे जाओगे जो तुम करते थे । १४।

और तुम अपनी कसमों को आपस में धोखा देने का साधन न बनाओ । ऐसा न हो कि (तुम्हारा) कदम जम जाने के बाद उखड़ जाए । और तुम बुराई (का दुष्परिणाम) चखो क्योंकि तुम अल्लाह के मार्ग से रोकते रहे और तुम्हारे लिए एक बड़ा अज्ञाब (निश्चित) हो । १५।

और अल्लाह की प्रतिज्ञा को थोड़ी कीमत पर बेच न दिया करो । निस्सन्देह जो अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम जानते । १६।

जो तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह शेष रहने वाला है । और अवश्य हम उन लोगों को जिन्होंने धैर्य धारण किया उनके उत्कृष्ट कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे जो वे किया करते थे । १७।

पुरुष या स्त्री में से जो भी पुण्यकर्म करेगा वशतोंकि वह मोमिन हो, तो उसे हम निस्सन्देह एक पवित्र जीवन के रूप में जीवित कर देंगे । और उन्हें अवश्य

تَخْتَلِقُونَ ⑦

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أَمَّةً وَاحِدَةً
وَلَكِنْ يُصِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيُهَدِّي مَنْ يَشَاءُ
وَلَتَسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧

وَلَا تَتَخَذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخْلًا بَيْتَكُمْ
فَتَرِزَّلَ قَدْمُكُمْ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذَوْقُوا
الشَّوَّءَ بِمَا صَدَّتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑨

وَلَا تَسْتَرُوا إِعْمَادَ اللَّهِ ثُمَّاً قَلِيلًا ۖ إِنَّمَا
عِنْدَ اللَّهِ هُوَ حَمِيرٌ لَّكُمْ أُنْكَثُ
تَعْلَمُونَ ⑩

مَا عِنْدَكُمْ يَنْقُدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۖ
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ
بِإِحْسَانٍ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑪

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ

उनका प्रतिफल उनके उत्कृष्ट कर्मों के अनुसार हो जो वे करते रहे । 98।

अतः जब तू कुरआन पढ़े तो धृतकरे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँग । 99।

निसन्देह उसे उन लोगों पर कोई प्रभुत्व नहीं जो ईमान लाए हैं और अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं । 100।

उसका प्रभुत्व तो केवल उन लोगों पर है जो उसे मित्र बनाते हैं । और उन पर है जो उस (अर्थात् अल्लाह) का साज्जीदार ठहराते हैं । 101। (रुकू 13)

और जब हम कोई आयत बदल कर उस के स्थान पर दूसरी आयत ले आते हैं, और अल्लाह अधिक जानता है जो वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तू केवल एक झूठ गढ़ने वाला है । जबकि वास्तविकता यह है कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 102।

तू कह दे कि इसे रूह-उल-कुदस ने तेरे रब्ब की ओर से सत्य के साथ उतारा है ताकि वह उन लोगों को दृढ़ता प्रदान करे जो ईमान लाए । और आज्ञाकारियों के लिए हिदायत और शुभ-समाचार हो । 103।

और निसन्देह हम जानते हैं कि वे कहते हैं इसे किसी मनुष्य ने सिखाया है । जिसकी ओर यह बात आरोपित करते हैं, उसकी भाषा अ'जमी (अर्थात् अस्पष्ट) है । जबकि यह (कुरआन की भाषा) एक स्पष्ट और उज्ज्वल अरबी भाषा है । 104।

أَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑩

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ ⑪

إِنَّمَا سُلْطَنَةُ اللَّهِ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ⑫

إِنَّمَا سُلْطَنَةُ اللَّهِ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ⑬

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَمْكَانَ آيَةً ۖ وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَا يَزِيلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٌ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑭

فَلَنَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدْسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِتَعْلَمَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ⑮

وَلَقَدْ تَعْلَمَ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يَعْلَمُهُ بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِي يَلْهُدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَجٌ وَهَذَا إِلَسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ⑯

निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देगा । और उनके लिए अति पीड़ादायक अज्ञाब (निश्चित) है ॥105॥

झूठ केवल वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते और यही लोग ही झूठे हैं ॥106॥

जो भी अपने ईमान लाने के पश्चात् अल्लाह का इनकार करे सिवाय इसके कि जो विवश कर दिया गया हो, जबकि उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो (वह दोषमुक्त है) । परन्तु वे लोग जो इनकार करने पर दिल से संतुष्ट हो गए उन पर अल्लाह का प्रकोप होगा । और उनके लिए एक बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है ॥107॥

यह इसलिए है कि उन्होंने सांसारिक जीवन को परलोक पर (प्राथमिकता देते हुए) पसन्द कर लिया । और इस कारण से (भी) है कि अल्लाह कदापि काफिर लोगों को हिदायत नहीं देता ॥108॥

यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी । और यही वे लोग हैं जो लापरवाह हैं ॥109॥

कोई सन्देह नहीं कि परलोक में निश्चित रूप से यही लोग घाटा पाने वाले होंगे ॥110॥

फिर निस्सन्देह तेरा रब्ब उन लोगों को जिन्होंने परीक्षा में डाले जाने के बाद

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاِيْتِ اللَّهِ
لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^{١٠٥}

إِنَّمَا يَقْتَرِي الْكَذِبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاِيْتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ^{١٠٦}
مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ اِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ
أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌ بِالْإِيمَانِ وَلَكُنْ
مَنْ شَرَحَ بِالْكُفُرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِ
غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ^{١٠٧}

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحْبُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكُفَّارِينَ^{١٠٨}

أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
وَسَمِعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ^{١٠٩}

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَسِرُونَ^{١١٠}

لَمَّا إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا

हिजरत की फिर उन्होंने जिहाद किया और वैर्य किया । तो निश्चित रूप से तेरा रब्ब उसके बाद बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥111॥ (रुकू 14/20)

जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी जान के बचाव में झगड़ता हुआ आएगा और प्रत्येक जान को जो कुछ उसने किया पूरा-पूरा दिया जाएगा । और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा ॥112॥

और अल्लाह एक ऐसी बस्ती का उदाहरण वर्णन करता है जो बड़ी शान्तिपूर्ण और संतुष्ट थी । उसके पास प्रत्येक दिशा से उसकी जीविका प्रचुर मात्रा में आती थी । फिर उस (के निवासियों) ने अल्लाह की नेमतों की कृतज्ञता की तो अल्लाह ने उन्हें उन कर्मों के कारण जो वे किया करते थे भय और भूख का वस्त्र पहना दिया ॥113॥

और निस्सन्देह उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया । अतः अज्ञाब ने उनको आ पकड़ा जबकि वे अत्याचार करने वाले थे ॥114॥

अतः जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने जीविका प्रदान की है उसमें से हलाल (और) पवित्र खाओ और अल्लाह की नेमत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करो यदि तुम उसी की उपासना करते हो ॥115॥

उसने तुम पर केवल मुर्दार और खून और सूअर का माँस और वह (भोजन) हराम किया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी

فَتَنْوِيْثُ اَنْجَهَدُوا وَصَبَرُوا لِّاَنَّ رَبَّكَ
مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

يَوْمَ تَأْتِيْنَ كُلُّ نَفْسٍ شَجَادَلَ عَنْ نَفْسِهَا
وَتَوْقِيْفٌ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ⑩

وَصَرَبَ اللَّهُ مَئَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اَمْنَةً
مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَعِدًا فِيْ كُلِّ
مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعَمِ اللَّهِ وَفَادَتْ اَنْعَمَ اللَّهِ
لِيَاسِ الْجَوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ⑪

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَبُوهُ
فَآخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَلِمُونَ ⑫

فَكَلُوْا مِمَّا رَزَقَنَّاهُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَأَشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيمَانَهُ
تَعْبُدُونَ ⑬

إِنَّمَا حَرَمَ عَلَيْهِمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمْ وَلَحْمَ
الْخِرْزِيرِ وَمَا أَهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ

और का नाम लिया गया हो । हाँ जो अत्यन्त विवश हो जाए, न (हराम भोजन की) चाहत रखने वाला और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो । तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥116॥

और तुम उन चीजों के बारे में जिनके बारे में तुम्हारी जुबानें झूठ वर्णन करती हैं यह न कहा करो कि यह हलाल है और यह हराम, ताकि तुम अल्लाह पर झूठे आरोप लगाओ । निस्सन्देह वे लोग जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं सफल नहीं हुआ करते ॥117॥

एक थोड़ा सा लाभ है और (फिर) उनके लिए एक बड़ा पीड़ादायक अज्ञाब (निश्चित) है ॥118॥

और जो यहां हुए उन लोगों पर भी हमने उन वस्तुओं को हराम ठहरा दिया था जिनका वर्णन हम तुझ से पहले कर चुके हैं । और उन पर हमने अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते थे ॥119॥

फिर तेरा रब्ब उन लोगों के लिए जिन्होंने अनजाने में अपकर्म किए फिर उसके पश्चात् प्रायश्चित कर लिया और सुधार किया । निस्सन्देह तेरा रब्ब इस (पवित्र परिवर्तन) के बाद बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥120॥ (रुक् ١٥)

निस्सन्देह इब्राहीम (अपने आप में) एक समुदाय (स्वरूप) था जो सदा अल्लाह

اَصْطَرَّ غَيْرَ بَاعِ وَلَا عَادِ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ^⑩

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ الْسِّتْحَكُمُ
الْكَذِبُ هَذَا حَلْلٌ وَهَذَا حَرَامٌ
تَفَتَّرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ إِنَّ الظَّنِينَ
يُفَتَّرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ لَا يُفَلِّخُونَ^{١١}

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^⑫

وَعَلَى الظَّنِينَ هَادُوا حَرَمٌ مَنْ أَقْصَصَنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلٍ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكُنْ
كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ^{١٣}

لَمَّا إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ
بِجَهَالَةٍ لَمَّا تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
لَمَّا رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ^{١٤}

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أَمَّةً قَاتَلَتِ اللَّهَ حَيْفًا

का आज्ञाकारी उसी की ओर झुका रहने वाला था । और वह मुश्तिकों में से नहीं था । 121।

उसकी नेमतों की कृतज्ञता प्रकट करने वाला था । उस (अल्लाह) ने उसे चुन लिया और उसे सन्मार्ग की ओर हिदायत दी । 122।

और हमने उसे संसार में भलाई प्रदान की और परलोक में वह निश्चित रूप से सदाचारियों में से होगा । 123।

फिर हमने तेरी ओर वहाँ की कि तू (अल्लाह की ओर) झुके रहने वाले इब्राहीम के पथ का अनुसरण कर । और वह मुश्तिकों में से न था । 124।

निस्सन्देह सब्ल उन लोगों के लिए (परीक्षा स्वरूप) बनाया गया जिन्होंने उसके बारे में मतभेद किया । और तेरा रब्ब निश्चित रूप से उनके बीच क्रयामत के दिन उन बातों का अवश्य फैसला करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे । 125।

अपने रब्ब के रास्ते की ओर विवेकशीलता और सदुपदेश के साथ बुला । और उनसे ऐसी दलील के साथ तर्क कर जो सर्वोत्तम हो । निस्सन्देह तेरा रब्ब ही उसे जो उसके रास्ते से भटक चुका हो सबसे अधिक जानता है । और वह हिदायत पाने वालों का भी सबसे अधिक ज्ञान रखता है । 126।

और यदि तुम दंड दो तो उतना ही दंड दो जितना तुम पर अत्याचार किया

وَلَمْ يَكُنْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑩

شَاكِرًا لِّا نَعْمَهُ أَجْبَلَهُ وَهَدَاهُ إِلَى
صَرَاطٍ مُّسْتَقِيٍّ ⑪

وَأَتَيْلَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ⑫

لَمْ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنَّ أَثْبَعَ مِلَّةً إِبْرَاهِيمَ
خَيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑬

إِنَّمَا جَعَلَ السَّبَبَ عَلَى الَّذِينَ احْتَلَفُوا
فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ بِيَوْمِ
الْقِيَامَةِ قِيمًا كَانُوا فِيهِ يَحْتَلِفُونَ ⑭

أَذْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحَكْمَةِ
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَاءَ لَهُمْ بِالْقِيَامَةِ
هُنَّ أَحْسَنُ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَنْ صَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ⑮

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا

गया था । और यदि तुम धैर्य धरो तो
निस्सन्देह धैर्य धरने वालों के लिए यह
उत्तम है ॥127॥

और तू धैर्य धर और तेरा धैर्य अल्लाह
के सिवा किसी और के लिए नहीं ।
और तू उन पर शोक न कर और जो वे
षड्यन्त्र रचते हैं तू उस से तंगी में न
पड़ ॥128॥

निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है
जो तक़वा धारण करते हैं और जो
उपकार करने वाले हैं ॥129॥

(सूक्त 16
खण्ड 22)

عُوْقِبَتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ
خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ⑩

وَاصْبِرْ ۚ وَمَا صَبَرْكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا
تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ
مِّمَّا يَمْكُرُونَ ⑪

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْأَذْيَانِ اتَّقُوا وَالْأَذْيَانِ
هُمْ مُحْسِنُونَ ⑫

17 – सूरः बनी इस्माईल

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 112 आयतें हैं। इसे सूरः अल-इस्मा भी कहा जाता है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक उत्थान का विषयवस्तु जो पिछली सूरः में जारी था उसी का वर्णन इस सूरः में भी है। इसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. को यह दिखाया गया कि जिन नुबुव्वतों का समापन फ़िलिस्तीन में हुआ तेरी यात्रा वहीं समाप्त नहीं होती बल्कि वहाँ से और ऊँचाइयों की ओर बढ़ती है। इस प्रकरण में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत का वर्णन किया। यद्यपि हज़रत मूसा अलै. भी बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचे परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्थान इससे भी उच्चतर था।

यह सूरः अब यहूदियों के वर्णन को इस प्रकार प्रस्तुत कर रही है कि उनको अपने अपराध के कारण अपने देश फ़िलिस्तीन से निकाल दिया गया था। और अल्लाह तआला के अत्यन्त कड़े निरीक्षक भक्त उन के ऊपर तैनात किए गए थे जो उनके शहर की गलियों में प्रवेश करके तीव्रता से आगे बढ़े और पूरे शहर को ध्वस्त कर दिया। परन्तु अल्लाह तआला फिर उन पर दया करेगा और एक और अवसर उन्हें देगा कि वे दोबारा फ़िलिस्तीन पर कब्ज़ा कर लें जैसा कि इस समय हो चुका है। परन्तु यह भी कहा है कि यदि उन्होंने प्रायश्चित न किया और अल्लाह के भक्तों के साथ दयापूर्ण व्यवहार न किया तो फिर अल्लाह तआला उन्हें फ़िलिस्तीन से स्वयं निकालेगा, न कि मुसलमानों से युद्ध के फलस्वरूप ऐसा होगा। फिर उनके स्थान पर अल्लाह तआला अपने सदाचारी भक्तों को फ़िलिस्तीन का शासक बना देगा। स्पष्ट है कि मुसलमानों को तब तक फ़िलिस्तीन पर विजय प्राप्त नहीं हो सकती जब तक वे इस शर्त को पूरा न करें अर्थात् अल्लाह के सदाचारी भक्त न बन जाएँ।

इसके बाद उन बुराइयों का वर्णन है जो यहूदियों में उस समय जड़े जमा चुकी थीं। जब उनके दिल कठोर हो गये थे। अर्थात् कंजूसी, अपव्यय, व्यभिचार, हत्या-लूटपाट, अनाथ का धन हड्पना, वचन भंग करना, अहंकार इत्यादि। मुसलमानों को इनसे बचे रहने की शिक्षा दी गई है।

फिर इस सूरः में वर्णन किया गया कि जब तू इस महान ग्रंथ कुरआन का पाठ करता है तो ये उसको समझने से वंचित रहते हैं। और इनमें शिर्क इतना घर कर चुका है कि जब तू केवल अल्लाह के अद्वितीय होने का वर्णन करता है तो पीठ फेर कर चले जाते हैं। इनको एकेश्वरवाद की बातों में कोई रुचि नहीं रहती। चूँकि इनके दिलों में

नास्तिकता घर कर जाती है इस कारण परकालीन दिवस पर से भी इनका विश्वास पूर्णतया उठ जाता है। और जो जाति परलोक पर विश्वास न रखे और अपनी जबाबदेही का अस्वीकारी हो वह अपने अपराध और पाप में सदा बिना रोक-टोक बढ़ती चली जाती है।

इसके बाद उस स्वप्न का उल्लेख किया गया है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. को फिलिस्तीन की अवस्था दिखाई गई। और फिर अधिक आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर आपका गमन हुआ।

फिर जिस शजर-ए-मलूनः (अभिशप्त वृक्ष) का वर्णन हुआ है इससे अभिप्राय यहदी हैं जिनका सूरः अल फातिहः की अन्तिम आयत में वर्णन है कि वे सदा अल्लाह के प्रकोप के नीचे रहेंगे और भक्तजनों के प्रकोप के नीचे भी रहेंगे। जो लोग क्रोध और प्रतिशोध के अभ्यस्त हों उनका उदाहरण अग्नि समान है जो प्रत्येक प्रकार की उन्नति को भस्म कर देती है। और जो नम्र स्वभाव के भक्त हैं वे मिट्टी की विशेषता रखते हैं प्रत्येक प्रकार की उन्नति उन्हीं के द्वारा होती है। अतः इस चर्चा का यह अर्थ निकलता है कि यहूदि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रचनात्मक प्रयासों को समाप्त करने की सदैव चेष्टा करते रहेंगे। और यह सोचेंगे कि ये मिट्टी से उठने वाले कैसे हमारा मुकाबला कर सकते हैं। परन्तु समस्त संसार की उन्नति इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की प्रकृति से उत्पन्न होने वाली हरियाली को आग कभी भस्म नहीं कर सकी। सभी लहलहाते हुए बाग और हरे भरे मैदान इस बात के साक्षी हैं।

इसके बाद कुरआन करीम की वह आयतें हैं जो आयत अक्फ़िरिस्सलात (नमाज़ को क़ायम कर) से आरम्भ होती हैं और हज़रत मुहम्मद सल्ल. के प्रशंसित पद का वर्णन करती हैं। अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल. के विरोधी आपको अपमानित करने का जो प्रयत्न कर सकते हैं करते चले जाएँगे। परन्तु इसके परिणामस्वरूप अल्लाह तआला आप सल्ल. को उच्चतर दर्जा की ओर उठाता चला जाएगा। इस प्रकार आपके आध्यात्मिक उत्थान को इस रंग में भी ऊँचा किया, यहाँ तक कि आप उस प्रशंसित पद तक पहुँच जाएँगे जिस तक किसी दूसरे की पहुँच नहीं हुई। परन्तु यह पद यूँ ही प्राप्त नहीं हुआ करता इसके लिए फ़तहज्जद् बिही ना फ़िलतल लक (इस कुरआन के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़, जो तेरे लिए अतिरिक्त पुरस्कार स्वरूप होगा) कह कर यह बताया कि इसके लिए रातों को उठ कर हमेशा दुआएँ करता चला जा।

यह दावा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में प्रशंसित पद तक पहुँचाएँ जाएँगे प्रत्यक्ष रूप से भी आप सल्ल. के जीवन में शत्रुओं ने पूरा होता हुआ देख लिया कि जब आप सल्ल. एक प्रकार से पराजित हो कर मक्का से निकले तो इसी

सूरः में एक दुआ के रूप में यह भविष्यवाणी थी कि तू दोबारा इस नगर में वापस लौटेगा। और यह घोषणा करेगा कि जाअल हक्कु व ज़हकल बातिलु इन्नल बाति ल का न ज़हूका अर्थात् सत्य आ गया और मिथ्या पलायन कर गया और मिथ्या के भाग्य में पलायन करना ही है। यह ऐसा ही है जैसा कि प्रकाश के आगमन पर अंधकार पलायन कर जाता है।

इसके बाद आयत सं. 86 आत्मा से सम्बन्धित है। हज़रत मुहम्मद सल्ल. से जब लोगों ने कहा कि हमें बता कि आत्मा क्या चीज़ है। अल्लाह तआला ने यह उत्तर बताया कि उनसे कह दे कि आत्मा मेरे रब्ब के आदेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को रूहुल्लाह (अल्लाह की आत्मा) मानते हैं और मुसलमान भी यही उपनाम उनको देते हैं परन्तु इस बात में हज़रत ईसा अलै. को कोई विशेषता प्राप्त नहीं। क्योंकि वह भी केवल उसी प्रकार अल्लाह के आदेश से पैदा हुए हैं जैसा कि सृष्टि के आरम्भ में समग्र जीवजगत अल्लाह के आदेश से उत्पन्न हुआ है।

सूरः के अन्त पर इस विषय को अधिक खोल दिया गया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को केवल इस कारण कि वे बिन बाप के थे, अल्लाह का पुत्र घोषित करना बहुत बड़ा अन्याय है। अतः समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जिसको किसी पुत्र की कोई आवश्यकता नहीं और न उसके प्रभुत्व में कोई साझीदार है। और उसे कभी ऐसे साथी की आवश्यकता नहीं पड़ी जो मानों दुर्बल अवस्था में उसका सहायक बनता।



سُبْحَانَ رَبِّنَا مَكَّةَ، هُنَّ مَعَ الْمُسْلِمَةِ مائَةٌ وَالْتِسْعَةِ أَلْفَ وَالْتِسْعَاعُشَ، مُكَفَّهُ عَلَيْهِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ॥ ।

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيَلَّا
مِنَ الْمَسْجِدِ الْعَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا
الَّذِي بَرَكَنَا حَوْلَهُ لِتُرِيهَ مِنْ أَيْمَانِ
إِلَهٌ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

और हमने मूसा को भी पुस्तक दी थी
और उसे बनी इसाईल के लिए हिदायत
बनाया था, कि तुम मेरे सिवा किसी को
अपना कार्य-साधक न बनाना। ३।

(ये लोग) उन की संतान थे जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था । निःसन्देह वह बड़ा ही कतर्ज भक्त था । 41

وَاتَّيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هَدًى
لِّبَّخْفٍ إِنَّ رَأِيَّنَا لَا تَشْدُدْ فَإِنْ دُوْنِي
وَكِنْ لَّا ۝

ذِرِيَّةٌ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْجٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا①

* कुरआन करीम में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक यात्रा की दो घटनाएं वर्णन हुई हैं। एक को इस्मा कहा जाता है और दूसरे को मेराज। 'इस्मा' की आध्यात्मिक यात्रा में आप सल्ल. को फ़िलिस्तीन का भ्रमण कराया गया जो भौतिक शरीर के साथ फ़िलिस्तीन जाने को सिद्ध नहीं करता। बल्कि इसका अभिप्राय आध्यात्मिक रूप से भ्रमण करना है। इसी कारण जब किसी ने खड़े हो कर पूछा कि बताएँ फ़िलिस्तीन का अमुक भवन किस-किस प्रकार का है तो हदीस में आता है कि हजरत मुहम्मद सल्ल. की आँखों के सामने उस समय वह भवन प्रकट हुआ और आप सल्ल. देख-देख कर उसके प्रश्नों के उत्तर देने लगे। अतः हदीस में लिखा है : - जब कुरैश के काफ़िरों ने मुझे झुठलाया तो मैं हिज़ (खाना का'बा से संलग्न स्थान) में खड़ा हुआ। अल्लाह तआला ने मुझ पर बैतुल मुक़द्दम को प्रकट किया। मैं उनको वहाँ की निशानियाँ बतलाने लगा और मैं उसे देख रहा था।

(बखारी, किताब-उत-तफसीर, सर; बनी इस्माईल की व्याख्या)

और हमने पुस्तक में बनी इस्माईल को इस फैसले से स्पष्ट रूप से अवगत कर दिया था कि तुम अवश्य धरती में दो बार फ़साद करोगे और घोर उद्धण्डता करते हुए छा जाओगे । १५।

अतः जब उन दोनों में से पहले वादे का समय आ पहुँचा, हमने तुम्हारे विरुद्ध अपने ऐसे भक्तों को खड़ा कर दिया जो बड़े योद्धा थे । अतः वे बस्तियों के बीचों-बीच तबाही मचाते हुए प्रविष्ट हो गए ।* और यह पूरा हो कर रहने वाला वादा था । १६।

फिर हमने तुम्हें दोबारा उन पर विजय प्रदान की और हमने धन और संतान के द्वारा तुम्हारी सहायता की । और तुम्हें हमने एक बहुत बड़ा जत्था बना दिया । १७।

यदि तुम अच्छे कर्म करोगे तो अपने लिए ही अच्छे कर्म करोगे । और यदि तुम बुरा करो तो स्वयं अपने लिए ही बुरा करोगे । अतः जब अन्तिम वादे (का समय) आएगा (तब भी यही निश्चित है) कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और वे मस्जिद में उसी प्रकार प्रविष्ट हो जाएँ जैसा कि पहली बार प्रविष्ट हुए थे । और ताकि वे जिस पर विजय प्राप्त करें उसे सर्वथा नष्ट कर दें । १८।

संभव है कि तुम्हारा रब्ब तुम पर दया करे । और यदि तुमने पुनरावृत्ति की तो हम भी पुनरावृत्ति करेंगे । और हमने

وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ
لِتُقْسِدَنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلَمَنَّ
عَلَوْا كَبِيرًا ⑥

فَإِذَا جَاءَهُ وَعْدُ أَوْلَاهُمَّا بَعْثَنَا عَلَيْكُمْ
عِبَادًا أَنَّا أَوْلَى بِأَسِشِيدِيْدِ فَجَاسُوا
خَلَلَ التَّيَارِ ۝ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا ⑦

لَمَّا رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ
وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ
أَكْثَرَ نَفِيرًا ⑧

إِنَّ أَحْسَنَتُمْ أَحْسَنَتُمْ لَا نُفَسِّرُكُمْ
وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَإِنَّا لَا فَوْزَنَّا بِأَجَاءَهُ وَعْدَ
الْآخِرَةِ لَيَسِّرُ ۝ إِلَّا وَجْهَكُمْ وَلَيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوا أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَلَيَتَبَرَّوْا مَا عَلَوْا تَتَبَرَّرًا ⑨

عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يَرُحْكُمْ ۝ وَإِنْ عَذَّلُوكُمْ

* इन अर्थों के लिए देखें 'अल-मुन्जिद' शब्दकोश ।

عَذْنَا وَجَعَلْنَا بِهِنْمَ لِلْكُفَّارِينَ حَصِيرًا ①
बनाया है । ११।*

निःसन्देह यह कुरआन उस (मार्ग) की ओर हिदायत देता है जो सबसे अधिक दृढ़ रहने वाला है । और उन मोमिनों को जो नेक काम करते हैं शुभ-समाचार देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल (निश्चित) है । १०।

और यह कि जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उनके लिए हमने पीड़ादायक अज्ञाब तैयार किया है । ११। (रुक् । ।)
और मनुष्य बुराई को ऐसे मांगता है जैसे भलाई मांग रहा हो और मनुष्य बहुत जल्दबाज़ है । १२।

और हमने रात और दिन के दो चिह्न बनाए हैं । फिर हम रात के चिह्न को मिटा देते हैं और दिन के चिह्न को प्रकाश दायक बना देते हैं ताकि तुम अपने रब्ब की कृपा को ढूँढ़ो और ताकि

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلّٰتِي هِيَ أَقْوَمُ
وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصَّلَاحَتَ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ②

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْنَدُنَا
لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ③
وَيَكْذِبُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ
وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ④

وَجَعَلْنَا اللَّيلَ وَالنَّهَارَ أَيْتَيْنِ فَمَحْوَنَا
أَيْتَةَ اللَّيلِ وَجَعَلْنَا أَيْتَةَ النَّهَارِ مُبْصَرَةً
لِتَبَيَّنُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا

* आयत सं. 5 से 9 :- बनी इस्माईल के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का यह विधान जारी हुआ था कि जब वे दुष्कर्मों में बहुत बढ़ गये तो उन पर बाबिल (बेबिलोनिया) के राजा नबू कद नजर को विजय प्रदान की गई । वे लोग उनकी गलियों में भी घुस गए और उनको नष्ट-ब्रह्म कर दिया अथवा हिजरत कर के बाहर चले जाने पर विवश कर दिया ।

फिर अल्लाह तआला ने जब पहली बार बनी इस्माईल को दोबारा फिलिस्तीन पर विजय प्रदान की तो उन पर दया करते हुए उनकी संख्या में भी वरकत दी और उनके धन में बढ़ोत्तरी की । और यह उपदेश दिया, कि यदि तुमने सद्-व्यवहार से काम लिया तो तुम्हारे अपने ही हित में है और यदि तुमने पिछले दुष्कर्मों की पुनरावृत्ति की तो स्वयं अपने हित के विपरीत ही ऐसा करोगे । अतः जब अन्तिम युग में उनको फिलिस्तीन पर दोबारा विजय प्रदान की जाएगी तो ऐसा फिलिस्तीन पर क्राबिज़ मुसलमानों के दुष्कर्म के कारण होगा । और यहूदियों को फिर परीक्षा में डाला जाएगा । यदि वे विजित क्षेत्रों में न्याय और दया पूर्ण व्यवहार करेंगे तो उनका यह विजय दीर्घकालीन हो जाएगा । और इसके विपरीत कर्मों के करने से संसार की कोई जाति उनको पराजित नहीं करेगी । बल्कि अल्लाह तआला अपनी शक्ति से ऐसे उपाय करेगा कि संसार की बड़ी शक्तियाँ यहूदियों को फिलिस्तीन में शरण देने से अस्वीकार करेंगी ।

तुम वर्षों की गणना और हिसाब सीख सको । और प्रत्येक बात हमने खूब खोल-खोल कर वर्णन कर दी है ॥13।

और प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा हमने उसकी गर्दन से चिमटा दिया है । और हम क़यामत के दिन उसके लिए उसे एक ऐसी पुस्तक के रूप में निकालेंगे जिसे वह खुली हुई पाएगा ॥14।*

अपनी पुस्तक को पढ़ ! आज के दिन तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है ॥15।

जो हिदायत पा जाए वह स्वयं अपनी जान ही के लिए हिदायत पाता है । और जो पथभ्रष्ट हो तो वह अपने हित के विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है । और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । और हम कदापि अज्ञाब नहीं देते जब तक कि कोई रसूल न भेज दें (और सत्य को सिद्ध न कर दें) ॥16।

और जब हम निश्चय कर लेते हैं कि किसी वस्ती को तबाह कर दें तो उसके खुशहाल लोगों को आदेश दे देते हैं (कि मनमानी करते फिरें) । फिर वे उसमें कू-कर्म करते हैं तो उस पर आदेश लागू हो जाता है । फिर हम उसको मलियामेट कर देते हैं ॥17।

عَدَّ السِّنِينَ وَالْمُسَابَطُ وَكُلُّ شَيْءٍ
فَصَلَّهُ تَقْصِيلًا ①

وَكُلُّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طِيرَةً فِي عَنْقِهِ
وَنَخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَبًا يَلْقَهُ
مَنْسُورًا ②

إِقْرَأْ كِتَبَكَ طَكْفَى بِنَفْسِكِ الْيَوْمَ عَلَيْكَ
حَسِيبًا ③

مَنِ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ
ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضْلُلُ عَلَيْهَا طَلَبَرْ وَازْرَةُ
قِرْزَ أَخْرَى طَ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّى
تَبَعَثَ رَسُولًا ④

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهَلِّكَ قُرْيَةً أَمْنَانًا
مُتَرَفِّهِمَا فَفَسَقُوا فَيَهَا فَحَقٌّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ
فَدَمَرْنَاهَا تَدْمِيرًا ⑤

* यहाँ पर अरबी शब्द ताइर से अभिप्राय पक्षी नहीं है कि मानो प्रत्येक मनुष्य की गर्दन में एक पक्षी लटक रहा है । बल्कि इससे अभिप्राय उसके कर्मों का लेखा-जोखा है जो दिखने में लटका हुआ तो नहीं है परन्तु क़यामत के दिन उसे प्रकट कर दिया जाएगा । यह ऐसा ही मुहावरा है जैसे कहा जाता है कि गिरेबान में मुँह डाल कर देखो कि तुम कैसे हो ।

और कितने ही युगों के लोग हैं जिन्हें हमने नूह के बाद तबाह किया । और तेरा रब्ब अपने भक्तों के पापों की जानकारी रखने (और) उन पर नज़र रखने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है ॥18॥ जो सांसारिक जीवन की इच्छा रखता है उसे हम इसी जीवन में (वह) जो हम चाहें और जिसके लिए हम निश्चय करें शीघ्र प्रदान करते हैं । फिर हमने उसके लिए नरक बना रखा है । वह उसमें तिरस्कृत किया हुआ (और) धिक्कारा हुआ प्रवेश करेगा ॥19॥

और वह जिसने परलोक की इच्छा की हो और उसके अनुरूप प्रयत्न किया हो वशर्तेकि वह मोमिन हो । तो यही वे लोग हैं जिनका प्रयत्न सत्कार योग्य होगा ॥20॥

हर एक को हम तेरे रब्ब के वरदान से सहायता देते हैं । उनको भी और इनको भी । और तेरे रब्ब का वरदान रोका नहीं जाता ॥21॥

देख हमने किस प्रकार उनमें से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी । और परलोक दर्जों की दृष्टि से भी बहुत बड़ा है और श्रेष्ठता प्रदान करने की दृष्टि से भी बहुत बड़ा है ॥22॥

तू अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न बना । अन्यथा तू तिरस्कार किया हुआ (और) असहाय बैठा रह जाएगा ॥23॥

(रुक् 2)

وَكُمْ أَهْلَكُنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ
نَوْجٍ وَكُلُّنَا بِرِبِّكَ بِذِنْبِ عِبَادِهِ
حَيْرًا بِصَيْرًا ⑩

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ قِيمَامَا
نَشَاءُ لِمَنْ نَرِيدُ شَفَعًا جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ
يُصْلِلَهَا مَذْمُومًا مَذْهُورًا ⑪

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَى لِهَا سَعْيَهَا
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأَوْتِلَكَ كَانَ سَعْيَهُمْ
مَشْكُورًا ⑫

كُلَّا نِمْدَهُولَاءُ وَهُولَاءُ مِنْ عَطَاءِ
رِبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ
مَخْلُورًا ⑬

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَلْنَا بِعَصَمِهِ عَلَى بَعْضٍ
وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ
تَفْضِيلًا ⑭

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَيْهَا أَخْرَ فَتَقْعُدْ
مَذْمُومًا مَمْذُولًا ⑮

और तेरे रब्ब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो और माता-पिता से उपकार पूर्वक बर्ताव करो । यदि तेरे सामने उन दोनों में से कोई एक अथवा वे दोनों ही वृद्धावस्था की आयु को पहुँचें तो उन्हें उफ तक न कह । और उन्हें ज़िङ्गिक नहीं और उन्हें विनम्रता और सम्मान के साथ सम्बोधित कर । 124।

और उन दोनों के लिए दया भाव से विनम्रता के पर झुका दे । और कह कि हे मेरे रब्ब ! इन दोनों पर दया कर, जिस प्रकार इन दोनों ने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया । 125।

तुम्हारा रब्ब सबसे अधिक जानता है जो तुम्हारे दिलों में है । यदि तुम नेक हो तो अधिकता के साथ प्रायश्चित्त करने वालों को वह निसन्देह बहुत क्षमा करने वाला है । 126।

और निकट संपर्कीय व्यक्ति को और निर्धन को भी और यात्री को भी उसका अधिकार प्रदान कर परन्तु फिजूल-खर्ची न कर । 127।

निःसन्देह फिजूल-खर्ची लोग शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब्ब का बड़ा कृतघ्न है । 128।

और यदि तुझे उनसे मुँह फेरना ही पड़े तो अपने रब्ब की कृपा प्राप्ति के लिए, जिसकी तू आशा रखता है, उनसे नम्रता पूर्वक बात कर । 129।

وَقُصِّيَ رَبُّكَ أَلَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ
وَإِلَوَالِدِينِ إِحْسَانًاٌ إِمَّا يُبَعَّثُ عِنْكَ
الْكُبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَّهُمَا فَلَا تَقْلِ
لَهُمَا أَفِٰفٌ وَلَا شَهْرَهُمَا وَقُلْ لَهُمَا
قُوَّلًا كَرِيمًا ⑭

وَاحْفُضْ لَهُمَا حَاجَاتَ الدُّلُّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِ
صَغِيرِاً ⑯

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِنْ
تَكُونُونَ أَصْلِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّلِينَ
غَفُورًا ⑯

وَاتِّذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمُسْكِنُ
وَابْنَ السَّيِّلِ وَلَا تَبْدِلْ تَبْدِيرًا ⑯

إِنَّ الْمُبَدِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ⑯

وَإِمَّا تُعْرِضَ عَنْهُمْ أَبْيَاءَ رَحْمَةٍ مِّنْ
رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قُوَّلًا مَيْسُورًا ⑯

और अपनी मुट्ठी (कंजूसी के साथ) बंद करते हुए गर्दन से न लगा ले । और न ही उसे पूरे का पूरा खोल दे कि उसके परिणाम स्वरूप तू धिक्कारा हुआ (और) पश्चाताप करता हुआ बैठा रह । 30।

निःसन्देह तेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को फैला होता है और संकुचित भी करता है । निःसन्देह वह अपने भक्तों से बहुत अवगत (और) गहन दृष्टि रखने वाला है । 31।

(रुक् ۳)

और कंगाल होने की भय से अपनी संतान का वध न करो । हम ही हैं जो उन्हें जीविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी । उनको वध करना निश्चित रूप से बहुत बड़ा अपराध है । 32।

और व्यभिचार के निकट न जाओ । निःसन्देह यह निर्लज्जता है और बहुत बुरा मार्ग है । 33।

और उस जान को अनुचित ढंग से वध न करो जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की हो । और जो अत्याचार सहन करता हुआ मारा जाए तो हमने उसके संरक्षक को (बदला लेने का) प्रबल अधिकार प्रदान किया है । अतः वह वध के मामले में ज्यादती न करे । निःसन्देह वह समर्थन-प्राप्त है । 34।

और उत्तम ढंग के बिना अनाथ के धन के निकट न जाओ, यहाँ तक कि वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाए और

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَى عَنْقِكَ
وَلَا تَبْسُطْهَا كُلُّ الْبَسْطِ فَقَعْدَ مَلُومًا
مَحْسُورًا ①

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ ۝ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ حَبِيرًا
بَصِيرًا ②

وَلَا تَقْتُلُوا أُولَادَكُمْ خَشْيَةً إِمْلَاقٌ
نَحْنُ نَرُزُ فِيهِمْ وَإِيَّاكُمْ ۝ إِنَّ قَاتَلَهُمْ
كَانَ خَطِئًا كَيْرِيًّا ③

وَلَا تَقْرِبُوا الزَّنْقَ ۝ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَسَاءَ مَسِيلًا ④

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ ۝ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لِوَلِيِّهِ سُلْطَنًا فَلَا يَسْرُفُ فِي الْقَتْلِ
إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ⑤

وَلَا تَقْرِبُوا مَالَ الْيَتَيِّمِ إِلَّا بِأَئْتِيٍّ هِيَ
أَحْسَنُ حَلٍّ يَسْلُغُ أَشَدَّهُ ۝ وَأَوْفُوا

प्रतिज्ञा को पूरा करो । निःसन्देह प्रतिज्ञा के बारे में पूछा जाएगा । 35।

और जब तुम मापा करो तो पूरा मापा करो । और सीधी डंडी से तौलो । यह बात अत्युत्तम और परिणाम की दृष्टि से सब से अच्छी है । 36।

और उस विचारधारा को न अपना जिसका तुझे ज्ञान नहीं । * निःसन्देह कान और आँख और दिल में से प्रत्येक के बारे में पूछा जाएगा । 37।

और धरती में अकड़ कर न चल । निःसन्देह तू धरती को फाइ नहीं सकता और न डील-डैल में पर्वतों की ऊँचाई तक पहुँच सकता है । 38।

ये सब ऐसी बातें हैं जिनकी बुराई तेरे रब्ब के निकट बहुत नापसंदीदा है । 39।

ये उन ज्ञानपरक बातों में से हैं जो तेरे रब्ब ने तेरी ओर वहाँ की । और तू अल्लाह के साथ किसी और को उपास्य न बना अन्यथा तू नरक में निन्दित (और) धुतकारा हुआ फेंक दिया जाएगा । 40।

क्या तुम्हें तो तुम्हारे रब्ब ने बेटों के लिए चुन लिया है और स्वयं फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना बैठा ? निःसन्देह तुम बहुत बड़ी बात कर रहे हो । 41। (रुक् ४)

* इस अर्थ के लिए देखिए मुफरदात इमाम राशिद रहि.

بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْؤُلًا

وَأُوفُوا بِالْكَيْلِ إِذَا كِلْمُ وَزِنُوا
بِالْقُسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ذَلِكَ خَيْرٌ
وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُوَادَ كُلُّ أُولَئِكَ
كَانَ عَنْهُ مَسْؤُلًا

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ تَنْ
تَخْرِقُ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغُ الْجِبَالَ
ظَوْلًا

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئَةً عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُرٌ وَهَا

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ
الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا أَخْرَ
فَلْلُهُ فِي جَهَنَّمَ مَلَوْمًا مَذْحُورًا

أَفَأَصْفِحُكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَيْنَنَ وَأَنْهَدَ
مِنَ الْمَلِكِ كَذِيرًا لِكُمْ تَسْقُطُونَ
فَوْلًا عَظِيمًا

और निःसन्देह हमने इस कुरआन में (आयतों को) बार-बार वर्णन किया है ताकि वे उपदेश प्राप्त करें। इसके उपरान्त भी यह उन्हें घृणा करते हुए दूर भागने के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाता । 142।

तू कह दे कि यदि उसके साथ कुछ और उपास्य होते जैसा ये कहते हैं, तो वे भी अवश्य अर्श के स्वामी तक पहुँचने की राह बड़ी चाह से ढूँढ़ते । 143।

पवित्र है वह और बहुत ऊँचा है उन बातों से जो वे कहते हैं । 144।

सात आसमान और धरती और जो भी उनमें है उसी का गुणगान कर रहे हैं। और कोई वस्तु (ऐसी) नहीं जो प्रशंसा पूर्वक उसका गुणगान न कर रही हो। परन्तु वास्तविकता यह है कि तुम उनके गुणगान को समझते नहीं । निःसन्देह वह बहुत सहनशील (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 145।

और जब तू कुरआन का पाठ करता है तो हम तेरे और उन लोगों के बीच जो परलोक पर ईमान नहीं लाते एक गुप्त पर्दा डाल देते हैं । 146।

और हम उनके दिलों पर पर्दे डाल देते हैं कि वे उसे समझ न सकें। और उनके कानों में बहरापन (है) और जब तू कुरआन में अपने अद्वितीय रब्ब का वर्णन करता है तो वे घृणा से पीठ फेरते हुए पलट जाते हैं । 147।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ
لِيَذَكُّرُواٌٰ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا تَفْوِرًا ⑩

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهُ اللَّهُ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا
لَا يَتَغُوا إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَيِّلًا ⑪

سَبِّحْهُ وَقُلْ عَمَّا يَقُولُونَ عَلَوْا كَيْرًا
شَيْخُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبِيعُ وَالْأَرْضُ
وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يَسْتَعْجِلُ
بِحَدْمٍ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ⑫

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا يَسِينَكَ وَبَيْنَ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا
مَسْتَوْرًا ⑬

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكْثَرَهُمْ أَنْ
يَفْقَهُوهُ وَفِي أَذْنِهِمْ وَقْرًاٌٰ وَإِذَا
ذَكَرْتَ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَخَدَّهُ
وَلَّوْا عَلَى آذْبَارِهِمْ تَفْوِرًا ⑯

हम सबसे अधिक जानते हैं कि वे क्या बात सुनना चाहते हैं जब वे तेरी ओर कान धरते हैं और जब वे गुप्त परामर्शों में व्यस्त होते हैं । जब अत्याचारी लोग कहते हैं कि तुम केवल एक ऐसे व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो जिस पर जादू किया गया है । 48।

देख तेरे बारे में वे कैसे कैसे उदाहरण वर्णन करते हैं । अतः वे मार्ग से भटक गए हैं और सीधे मार्ग तक नहीं पहुँच सकते । 49।

और वे कहते हैं कि जब हम केवल हड्डियाँ बन कर रह जाएँगे और कण-कण हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य एक नवीन सृष्टि के रूप में उठाए जाएँगे ? 50।

तू कह दे (चाहे) तुम पत्थर बन जाओ अथवा लोहा । 51।

अथवा ऐसी सृष्टि जो तुम्हारी समझ में (कठोरता में) इससे भी बढ़ कर हो । तो उस पर वे अवश्य कहेंगे कि कौन (है जो) हमें लौटाएगा ? तू कह दे, वही जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था । तो वे तेरी ओर (मुख करके) अपने सिर मटकाएँगे और कहेंगे, ऐसा कब होगा ? तू कह दे, हो सकता है कि शीघ्र ऐसा हो । 52।

जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा, तुम उसकी प्रशंसा करते हुए (उसके बुलावे को) स्वीकार करोगे और तुम धारणा करोगे कि तुम अल्प समय के अतिरिक्त नहीं ठहरे । 53। (रुक् ५)

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْمَعُونَ بِهٖ
إِذْ يَسْمَعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ تَجَوَّى
إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَنْتَعِمُونَ إِلَّا
رَجُلًا مَسْحُورًا ⑩

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّكَ الْأَمْثَالَ
فَضَلُّوا فَلَا يَسْطِيعُونَ سِيلًا ⑪
وَقَالَوْا إِذَا كُنَّا عَظَامًا وَرُفَاتًا إِنَّا
لَمْ يَنْعُوْنَ حَلْقًا جَدِيدًا ⑫

فُلُّ كُوْنُوا حِجَارَةً أَوْ حَرَبِيْدًا ⑬
أَوْ حَلْقًا مِمَّا يَكُبُّ فِي صَدْوَرِكُمْ
فَسِيقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا ⑭ قُلِ الَّذِي
فَطَرَكُمْ أَوْلَ مَرَّةً ⑮ فَسِيقُضُونَ
إِلَيْكَ رُمُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَّ هُوَ
قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ⑯

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْجِبُونَ بِحَمْدِهِ
وَتَنْظُلُونَ إِنْ لِيْشَ إِلَّا قَلِيلًا ⑰

और तू मेरे भक्तों से कह दे कि ऐसी बात किया करें जो सबसे अच्छी हो । निःसन्देह शैतान उनके बीच फ़साद डालता है । शैतान निःसन्देह मनुष्य का खुला-खुला शत्रु है । 154।

तुम्हारा रब्ब तुम्हें सबसे अधिक जानता है । यदि वह चाहे तो तुम पर दया करे और यदि चाहे तो तुम्हें अज्ञाब दे । और हमने तुझे उन पर प्रहरी बना कर नहीं भेजा । 155।

और तेरा रब्ब सबसे अधिक उसे जानता है जो आसमानों और धरती में है । और निःसन्देह हमने नवियों में से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की । और दाऊद को हमने ज़बूर प्रदान किया । 156।

तू कह दे उन लोगों को पुकारो जिन्हें तुम उसके सिवा (उपास्य) समझा करते थे । अतः वे तुमसे न पीड़ा दूर करने की कोई शक्ति रखते हैं और न उसे परिवर्तित करने की । 157।

यही लोग जिन्हें ये पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने रब्ब की ओर जाने का साधन ढूँढ़ेगे कि कौन है इनमें से जो (साधन बनने का) अधिक योग्य है । और वे उसकी दया की आशा रखेंगे और उसके अज्ञाब से डरेंगे । निःसन्देह तेरे रब्ब का अज्ञाब इस लायक है कि उससे बचा जाए । 158।

और कोई बस्ती नहीं जिसे हम क्रयामत के दिन से पहले नष्ट करने या उसे बहुत कठोर अज्ञाब देने वाले न हों । यह बात पुस्तक में लिपिबद्ध है । 159।

وَقُلْ لِعِبَادِيْ يَقُولُوا الَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ^٦
إِنَّ الشَّيْطَنَ يَنْرُغُ بَيْتَهُمْ^٧ إِنَّ الشَّيْطَنَ
كَانَ لِلْأَنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا^٨

رَبِّكَمْ أَعْلَمُ بِكُمْ^٩ إِنَّ يَسِّاً يَرْحَمُكُمْ أَوْ
إِنَّ يَسِّاً يَعِذِّبُكُمْ^{١٠} وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ
وَكَيْلًا^{١١}

وَرَبِّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ^{١٢} وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّنَ
عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاءَ رَبَوْرَا^{١٣}

قُلِ اذْعُوا الَّذِينَ زَعَمُتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا
يَمْلِكُونَ كَشْفَ الظُّرُورِ عَنْكُمْ وَلَا
تَخُوِّيْلًا^{١٤}

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْغُونَ إِلَى
رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيْمَمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ
رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ^{١٥} إِنَّ عَذَابَ
رِبِّكَ كَانَ مَحْدُورًا^{١٦}

وَإِنْ مِنْ قَرِيْبٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ
يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مَعَذِّبُوهَا عَذَابًا سَدِيدًا^{١٧}
كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا^{١٨}

और किसी बात ने हमें नहीं रोका कि हम अपनी आयतें भेजें, सिवाए इसके कि पहले लोगों ने उनका इनकार कर दिया था । और हमने समूद्र को भी एक सुस्पष्ट चिह्न के रूप में ऊँटनी प्रदान की थी । तो वे उससे अत्याचार के साथ पेश आए । और हम क्रमशः सतर्क करने के लिए ही चिह्न भेजते हैं । 160।

और (याद कर) जब हमने तुझे कहा निःसन्देह तेरे रब्ब ने मनुष्यों को धेर लिया है । और वह स्वप्न जो हमने तुझे दिखाया और उस वृक्ष को भी जिसे कुरआन में अभिषप्त घोषित किया गया है, उसे हमने लोगों के लिए केवल परीक्षा स्वरूप बनाया । और हम उन्हें क्रमशः सतर्क करते हैं । परन्तु वह उन्हें बड़ी उद्दण्डता के सिवा और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता । 161। (रुक् - ٦)

और जब हमने फरिश्तों से कहा, आदम के लिए सजदः में गिर जाओ तो उन्होंने सजदः किया सिवाए इब्लीस के । उसने कहा क्या मैं उसके लिए सजदः करूँ जिसे तूने गीली मिट्टी से पैदा किया है ? 162।

उसने कहा, मुझे बता तो सही कि क्या यह वह (चीज़) है जिसे तूने मुझ पर श्रेष्ठता प्रदान की है ? यदि तू मुझे क्यामत के दिन तक ढील दे दे तो मैं अवश्य उसकी संतान को कुछ एक के सिवा नष्ट कर दूँगा । 163।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ تُرِسَلَ بِالْأَلْيَتِ إِلَّا أَنْ
كَذَبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَأَتَيْنَاهُمُوا بِالثَّاقَةَ
مُبَصِّرَةً فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا تُرِسَلُ
بِالْأَلْيَتِ إِلَّا تُحِيْقَانَ ⑤

وَإِذْ قُلْنَا لِكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ^٣
وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا إِلَّا تَرَى كَمَا لَفِتَتْهُ
لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةُ الْمُلْعُونَةُ فِي الْقُرْآنِ^٤
وَنَحْوُهُمْ فَمَا يَرِيْدُهُمْ إِلَّا طُغِيَانًا
كَيْرًا ⑥

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلِكَةِ اسْجَدُوا لِادَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْرِيْسُ ⑦ قَالَ إِنَّمَا سَجَدَ لِمَنْ
خَلَقَتْ طِينًا ⑧

قَالَ أَرْءَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَمْتَ عَلَى
لِئِنْ أَخْرُتُنَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا حُتَّكَنَ
ذَرِيَّةً إِلَّا قَلِيلًا ⑨

उसने कहा, जा ! अतः जो भी उनमें से तेरा अनुसरण करेगा तो निःसन्देह नरक तुम सब का पूरा-पूरा बदला होगा । 164।

अतः अपनी आवाज से उनमें से जिसे चाहे बहका और उन पर अपने घुड़सवारों और पैदल सिपाहियों को चढ़ा ला । और धन-दौलत में और संतान में उनका साझीदार बन जा । और उनसे वादे कर और शैतान धोखे के सिवा उनसे कोई वादा नहीं करता । 165।

निःसन्देह (जो) मेरे भक्त (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा । और तेरा रब्ब ही कार्य-साधक के रूप में पर्याप्त है । 166।

तुम्हारा रब्ब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौकाएँ चलाता है ताकि तुम उसकी अनुकम्पाओं को ढूँढ़ो । निःसन्देह वह तुम्हारे प्रति बार-बार दया करने वाला है । 167।

और जब तुम्हें समुद्र में कोई कष्ट पहुँचता है तो उसके सिवा हर वह सत्ता जिसे तुम पुकारते हो साथ छोड़ जाती है । फिर जब वह तुम्हें स्थल-भाग की ओर बचा कर ले जाता है तो तुम (उससे) मुँह मोड़ लेते हो । और मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है । 168।

अतः क्या तुम इस बात से सुरक्षित हो कि वह तुम्हें स्थल-भाग के किनारे पर ले जाकर धंसा दे या तुम पर तेज आँधी

قَالَ أَذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنْ
جَهَنَّمَ جَزَاءً وَكُمْ جَزَاءٌ مَوْفُورًا ⑯

وَاسْتَفِرْ مَنْ اسْتَطِعْتَ مِنْهُمْ
بِصُوتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَلِكَ
وَرِحْلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأُولَادِ وَعِدْهُمْ ۖ وَمَا يَعْدُهُمْ
الشَّيْطَنُ إِلَّا غُرْفَرًا ⑯

إِنْ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ ۖ
وَكَفِيْ بِرَبِّكَ وَكَيْلًا ⑯

رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُرْجِعُ لَكُمُ الْفُلْكَ
فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَعُوا مِنْ قَصْلِمٍ ۖ إِنَّهُ كَانَ
يُكْمِرَ حِيمًا ⑯

وَإِذَا مَسَكْمُ الْفَرْسُ فِي الْبَحْرِ حَلَّ مَنْ
تَدْعُونَ إِلَآ إِيَاهُ ۖ فَلَمَّا خَبَقْكُمْ إِلَى الْبَرِّ
أَعْرَضْتُمْ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ⑯

أَفَمِثْمَ أَنْ يَحْسَفْ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ
يُرْسَلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبَةً لَا تَجِدُوا

चलाए । फिर तुम अपने लिए कोई कार्य-साधक न पाओ । 169।

अथवा क्या तुम सुरक्षित हो कि वह तुम्हें इसी में दोबारा लौटा दे और फिर तुम पर अत्यन्त तीव्र हवा चलाए और तुम्हें तुम्हारी कृतज्ञताओं के कारण ढुबो दे । फिर तुम हमारे विरुद्ध अपने लिए उसका कोई बदला लेने वाला न पाओ । 170।

और निःसन्देह हमने आदम की संतान को सम्मान दिया । और उन्हें स्थल-भाग और जल भाग में सवारी प्रदान की और उन्हें पवित्र चीजों में से जीविका प्रदान की । और जो हमने पैदा कीं उनमें से अधिकतर बस्तुओं पर उन्हें खूब श्रेष्ठता प्रदान की । 171। (रुक् 7)

वह दिन (याद करो) जब हम प्रत्येक जाति को उसके अगुआ के मार्फत बुलाएँगे । अतः जिस को उस के कर्मों का लेखा-जोखा दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो यही वे लोग होंगे जो अपने कर्मों का लेखा-जोखा पढ़ेंगे । और उन पर एक सूत के बराबर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । 172।

और जो इसी संसार में अंधा हो वह परलोक में भी अंधा होगा और रास्ते से सर्वाधिक भटका हुआ होगा । 173।*

और सम्भव था कि वे तुझे उसके विषय में जो हमने तेरी ओर बहइ की

لَكُمْ وَكِيلًا ﴿١﴾

أَمْ أَمْسِمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَى
فَيَرْسَلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ
فَيُغْرِقُكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ لَمْ يَلَّا تَجِدُوا
لَكُمْ عَذَابًا يَهْتَبُونَ ﴿٢﴾

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنَى آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الظَّلِيلِ وَفَضَلْنَاهُمْ
عَلَى كَثِيرٍ مِمَّا حَلَقْنَا تَقْضِيَلًا ﴿٣﴾

يَوْمَ نَدْعُو أَكْلَ أَنَاسٍ بِإِيمَانِهِ فَمَنْ
أُوتِيَ كِتَبَهُ يَسْمِينُهُ فَأُولَئِكَ يَقْرَءُونَ
كِتَبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتَيَلًا ﴿٤﴾

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ آغْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ
آغْمَى وَأَصْلَ سَيِّلًا ﴿٥﴾
وَإِنْ كَادُوا لَيُفْتَنُوكُمْ عَنِ الدِّينِ

* यहाँ आ'मा (अंधा) से अभिप्राय यह नहीं कि भौतिक आँखें से जो अंधा हो वह क्यामत के दिन भी अंधा ही होगा । बल्कि भौतिक आँखों वाले जो ज्ञान से वंचित हैं वे क्यामत के दिन भी ज्ञान से वंचित होंगे ।

है परीक्षा में डाल देते ताकि तू हमारे विरुद्ध उसके सिवा कुछ और गढ़ लेता । तब वे अवश्य तुझे अविलम्ब मित्र बना लेते । 74।

और यदि हमने तुझे दृढ़ता प्रदान न की होती तो हो सकता था कि तू उनकी ओर कुछ न कुछ झुक जाता । 75।

फिर हम अवश्य तुझे जीवन का भी दोहरा अज्ञाब और मौत का भी दोहरा अज्ञाब चखाते । तब तू हमारे विरुद्ध अपने लिए कोई सहायक न पाता । 76।

और उनसे असम्भव नहीं था कि वे देश से तेरे पाँव उखाइ देते ताकि तुझे उनसे बाहर निकाल दें । ऐसी अवस्था में वे भी तेरे बाद अधिक देर न रह सकते । 77।

यह विधान हमारे उन रसूलों के सम्बन्ध में था जिन्हें हमने तुझ से पहले भेजा । और तू हमारे विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा । 78। (रुकू^٨)

सूर्य के ढलने से आरम्भ हो कर रात के छा जाने तक नमाज़ को क़ायम कर । और प्रातः कालीन कुरआन पाठ को महत्व दे । निःसन्देह प्रातःकाल में कुरआन पाठ करना ऐसा (कर्म) है, जिसकी गवाही दी जाती है । 79।

और रात के एक भाग में भी इस (कुरआन) के साथ तहज्जुद (की नमाज़ पढ़ा कर) । यह तेरे लिए अतिरिक्त (उपासना) स्वरूप होगा । सम्भव है कि तेरा रब्ब तुझे प्रशंसित पद पर आसीन कर दे । 80।

أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَقْرِئَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ^٩
وَإِذَا لَا تَخْدُوكَ حَلِيلًا^{١٠}

وَلَوْلَا أَنْ شَبَّثْنَا لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنْ
إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا^{١١}

إِذَا لَا ذَقْنَكَ ضُعْفَ الْحَيَاةِ وَضُعْفَ
الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا^{١٢}

وَإِنْ كَادُوا لِيَسْتَفِرُونَكَ مِنَ الْأَرْضِ
لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبِسُونَ
خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا^{١٣}

سَيْئَةً مِنْ قَدْأَرْ سَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسْلَنَا^{١٤}
وَلَا تَجِدُ لِسْنَتَنَا تَخْوِيلًا^{١٥}

أَقِيمِ الصَّلَاةَ لِدَلْوِكَ السَّمْسِ إِلَى غَسِيقِ
الْيَلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ^{١٦} إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ
كَانَ مَشْهُودًا^{١٧}

وَمِنَ الْيَلِ فَتَمَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ عَسِي
أَنْ يَعْلَمَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا^{١٨}

और तू कह, हे मेरे रब्ब ! मुझे इस प्रकार प्रविष्ट कर कि मेरा प्रवेश करना सत्य के साथ हो और मुझे इस प्रकार निकाल कि मेरा निकलना सत्य के साथ हो और अपनी ओर से मेरे लिए शक्तिशाली सहायक प्रदान कर । 181।

और कह दे, सत्य आ गया और मिथ्या भाग गया । निःसन्देह मिथ्या भाग जाने वाला ही है । 182।

और हम कुरआन में से उसे उतारते हैं जो आरोग्य प्रदानकारी और मोमिनों के लिए कृपा है । और वह अत्याचारियों को घाटे के सिवा किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाता । 183।

और जब हम मनुष्य को पुरस्कृत करते हैं तो वह विमुख हो जाता है और अपना पहलू बचाते हुए परे हट जाता है । और जब उसे कोई अनिष्ट पहुँचे तो अत्यन्त निराश हो जाता है । 184।

तू कह दे कि प्रत्येक अपनी प्रकृति के अनुरूप कर्म करता है । अतः तुम्हारा रब्ब उसे सबसे अधिक जानने वाला है जो सबसे अधिक सन्मार्ग पर है । 185।

(रुक् ७)

और वे तुझ से रुह के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं । तू कह दे कि रुह मेरे रब्ब के आदेश से है । और तुम्हें अल्प ज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया गया । 186।

और यदि हम चाहते तो निःसन्देह उसे वापस ले जाते जो हमने तेरी ओर वहूँ

وَقُلْ رَبِّ اذْخُنِي مَذْخُلَ صَدْقٍ
وَآخِرِ جُنُفٍ مُخْرَجَ صَدْقٍ وَاجْعَلْ
لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَنًا نَصِيرًا ④

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ
الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ⑤

وَتَنْزَلَ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شَفَاؤُهُ وَرَحْمَةٌ
لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا يَرِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا
خَسَارًا ⑥

وَإِذَا آتَيْنَا عَلَى الْإِنْسَانَ أَغْرِضَ
وَنَأْبَجَانِيهُ ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ
يُؤْسَأًا ⑦

قُلْ كُلُّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرِبِّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدِي سَيِّلًا ⑧

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۝ قُلِ الرُّوحُ
مِنْ أَمْرِ رَبٍِّ وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ
إِلَّا قَلِيلًا ⑨

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنُذَهَّبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا

किया है। फिर तू अपने लिए हमारे विरुद्ध इस पर कोई कार्य-साधक न पाता । 87।

परन्तु केवल अपने रब्ब की दया के द्वारा (तू बचाया गया)। निःसन्देह तुझ पर उसकी कृपा बहुत बड़ी है। 88।

तू कह दे कि यदि जिन और मनुष्य सभी इकट्ठे हो जाएँ कि इस कुरआन के अनुरूप (ग्रंथ) ले आएँ तो वे इस के अनुरूप नहीं ला सकेंगे चाहे उनमें से कुछ, कुछ के सहायक हों। 89।

और निःसन्देह हम ने इस कुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक प्रकार के उदाहरण खूब फेर-फेर कर वर्णन किए हैं। अतः अधिकतर मनुष्यों ने केवल कृतञ्चता करते हुए अस्वीकार कर दिया। 90।

और वे कहते हैं कि हम कदापि तुझ पर ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि तू हमारे लिए धरती से कोई स्रोत निकाल लाए। 91।

या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का कोई बाग हो, फिर तू उसके बीचों-बीच खूब नहरें खोद डाले। 92।

या जैसा कि तू धारणा करता है हम पर आसमान को टुकड़ों के रूप में गिरा देया अल्लाह और फरिश्तों को सामने ले आए। 93।

या तेरे लिए सोने का कोई घर हो या तू आसमान में चढ़ जाए। परन्तु हम तेरे चढ़ने पर भी कदापि ईमान नहीं लाएँगे

إِلَيْكُمْ لَا تَحْدُّكُ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا

إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لَا إِنْ فَضْلَهُ
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ⑥

فَلَئِنِ اجْتَمَعَتِ الْأَنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ
أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنَ لَا يَأْتُونَ
بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُ لِيَعْضِ
ظَهِيرًا ⑦

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنَ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَآتَيْنَا كُلَّ النَّاسِ
إِلَّا كُفُورًا ⑧

وَقَاتُوا نَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجِرَنَا
مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوْعًا ⑨

أُوْتَكُونَ لَكَ جَنَّةً مِنْ تَخِيلٍ وَعَنْبٍ
فَتَفْجِرُ الْأَنْهَرَ خَلَلَهَا تَفْجِيرًا ⑩
أُوْتَسْقَطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا
كِسْفًا أُوتَقَ بِاللَّهِ وَالْمَلِكَةَ قِيلًا ⑪

أُوْتَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِنْ رُخْرُفٍ أُوْ
تَرْفُ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرَقِيقِكَ

यहाँ तक कि तू हम पर ऐसी पुस्तक उतारे जिसे हम पढ़ सकें। तू कह दे कि मेरा रब्ब (इन बातों से) पवित्र है। (और) मैं तो एक मनुष्य, रसूल के अतिरिक्त कुछ नहीं 1941 (रुकू¹⁰) और लोगों को, जब उनके पास हिदायत आई, इसके अतिरिक्त किसी चीज़ ने ईमान लाने से नहीं रोका कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है? 1951

तू कह दे कि यदि धरती में निश्चिन्त होकर चलने फिरने वाले फरिश्ते होते तो अवश्य हम उन पर आसमान से फरिश्ते ही रसूल के रूप में उतारते 1961

तू कह दे कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में पर्याप्त है। निःसन्देह वह अपने भक्तों से सदा अवगत (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है 1971

और जिसे अल्लाह हिदायत दे तो वही हिदायत पाने वाला है और जिसे वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो ऐसों के लिए तू उसके मुकाबिले पर कोई साथी न पाएगा और क़्यामत के दिन हम उन्हें अंधे, गँगे और बहरे (बनाकर) उनके मुँह के बल औंधे इकट्ठा करेंगे। उनका ठिकाना नरक होगा। जब कभी वह (उन पर) धीमा पड़ने लगेगा हम उन्हें जलन में बढ़ा देंगे 1981।

حَقِّيْ تَنْزِيلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرُوْهُ
قُلْ سُبْحَانَ رَبِّنَا هَلْ كَيْنَتْ إِلَّا
بَشَرًا رَسُولًا^④
وَمَا مَأْمَنَعَ النَّاسَ أَنْ يَؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ
الْهُدَى فَإِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ
بَشَرًا رَسُولًا^⑤

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلِكٌ يَمْشُونَ
مُطْمِئِنٌ تَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ مِنْ السَّمَاءِ
مَلَكًا رَسُولًا^⑥

قُلْ كَفِي بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ
إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَيْرًا بَصِيرًا^⑦

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهَ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضْلَلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أُولَيَاءَ مِنْ ذُوْنِهِ
وَنَخْسِرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى وُجُوهِهِمْ
غَمِيَّاً وَبَكْمَانًا وَصَمَّاً مَا أَوْنَهُمْ جَهَنَّمَ
كُلُّمَا خَبَثُ زَدْنَاهُمْ سَعِيرًا^⑧

यह उनका प्रतिफल है। क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा, जब हम हड्डियाँ हो जाएँगे और कण-कण बन जाएँगे तो क्या फिर भी हम अवश्य एक नई सृष्टि के रूप में उठाए जाएँगे ? 199।

क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया, इस बात पर समर्थ है कि उन जैसा और पैदा कर दे। और उसने उनके लिए एक ऐसी अवधि निर्धारित कर दी है जिस में कोई सन्देह नहीं। अतः अत्याचारियों ने केवल कृतज्ञता पूर्वक अस्वीकार कर दिया । 100।

तू कह दे कि यदि तुम मेरे रब्ब की कृपा के भण्डारों के स्वामी होते तब भी तुम उनके ख़र्च हो जाने के डर से उन्हें रोक रखते । और निःसन्देह मनुष्य बड़ा कंजूस बना है । 101। (रुक् ١١)

और निःसन्देह हमने मूसा को नौ सुस्पष्ट चिह्न प्रदान किए थे । अतः बनी इस्माईल से पूछ (कर देख ले) कि जब वह उनके पास आया तो फिरौन ने उसे कहा कि हे मूसा ! मैं तो तुझे केवल जादू का वशीभूत समझता हूँ । 102।

उसने कहा, तू जान चूका है कि ये चिह्न जो ज्ञानवर्धक हैं आसमानों और धरती के रब्ब के सिवा किसी ने नहीं उतारे । और हे फिरौन ! मैं निश्चित रूप से तुझे विनाशप्राप्त समझता हूँ । 103।

ذَلِكَ جَزَاءُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا إِبْرَيْتَنَا
وَقَالُوا إِعْذَابُنَا عَظِيمٌ وَرُفَاتٌ إِنَّا
لَمْ يَعْلَمُونَ حَلْقًا جَدِيدًا ⑤

أَوْلَادُ رَبِّنَا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ ۝ فَأَبَى
الظَّلِيمُونَ إِلَّا كُفُورًا ⑥

قُلْ تَوَانْتُمْ تَمْلِكُونَ حَرَّاً بِنَ رَحْمَةٍ
رَفِيقٌ إِذَا لَا مَسْكُنُهُ خَشِيَةُ الْإِلْفَاقِ ۝
وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ⑦

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بِسِنْتٍ
فَسَأَلَ بَنَى إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ
لَهُ فِرَعَوْنُ إِنِّي لَا أَطِلُكَ يَمْوُسِي
مَسْحُورًا ⑧

قَالَ لَقَدْ عِلِّمْتَ مَا آتَيْنَاهُ هُوَ لَاءُ إِلَّا
رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَارِرٌ وَلَيْلٌ
لَا طِلَكَ لِفِرَعَوْنَ مَتْبُورًا ⑨

अतः उसने इरादा किया कि उन्हें धरती से उखाड़ डाले तो हमने उसे और जो उसके साथ थे सब के सब को डुबो दिया ॥104॥

और इसके बाद हमने बनी-इस्माईल से कहा कि प्रतिश्रुत धरती में निवास करो। फिर जब अंतिम वादा आएगा तो हम तुम्हें फिर इकट्ठा करके ले आएँगे ॥105॥

और हमने सत्य के साथ इसे उतारा है और सच्ची आवश्यकता के साथ यह उतारा है। और हमने तुम्हे केवल एक शुभ-समाचार देने वाले और एक सावधान करने वाले के रूप में ही भेजा है ॥106॥

और कुरआन वह है कि उसे हमने टुकड़ों में विभाजित किया है ताकि तू उसे लोगों के समक्ष ठहर-ठहर कर पढ़े। और हमने इसे बड़ी शक्ति के साथ और क्रमशः उतारा है ॥107॥

तू कह दे कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा न लाओ। निःसन्देह वे लोग जिन्हें इससे पूर्व ज्ञान प्रदान किया गया था जब उन पर इसका पाठ किया जाता था, तो वे तुड़ियों के बल सजदः करते हुए गिर जाते थे ॥108॥

और वे कहते थे हमारा रब्ब पवित्र है। निःसन्देह हमारे रब्ब का वादा तो हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला है ॥109॥

فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِرْهُمْ مِّنَ الْأَرْضِ
فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ⑩

وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِيَنْهَا إِسْرَاءَعِيلَ اسْكَنُوا
الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَهُ وَعْدُ الْآخِرَةِ
جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ⑪

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ
وَمَا آرَسْلَنَا إِلَّا مَبْشِرًا وَنَذِيرًا ⑫

وَقَرَأْنَا فَرْقَنَهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى
مُكْثٍ وَنَزَلْنَاهُ تَنْزِيلًا ⑬

فِي أَمْوَالِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الظِّنَنَ
أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ
يَخْرُقُونَ لِلأَذْقَانِ سَجَدًا ⑭

وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا
لَمْفَعُولًا ⑮

वे तुड़ियों के बल रोते हुए गिर जाते थे और ये उन्हें विनम्रता में बढ़ा देता था ॥110॥

तू कह दे कि चाहे अल्लाह को पुकारो चाहे रहमान को । जिस नाम से भी तुम पुकारो सब अच्छे नाम उसी के हैं । और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ में पढ़ और न उसे बहुत धीमा कर और इनके बीच का रास्ता अपना ॥111॥

और कह कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने कभी कोई पुत्र नहीं अपनाया । और जिसके शासन में कभी कोई साझीदार नहीं बना और कभी उसे ऐसे साथी की आवश्यकता नहीं पड़ी जो (मानो) दुर्बलता की अवस्था में उसका सहायक बनता । और तू बड़े ज़ोर से उसकी बड़ाई वर्णन किया कर ॥112॥

(रुक् 12)

وَيَخْرُجُونَ لِلأَدْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ
خُشُوعًا ﴿١٥﴾

قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ
أَيَّاً مَا تَذَكَّرُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى
وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تَخَافِثْ بِهَا
وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا

وَقُلْ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَخَذِ وَلَدًا
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ
لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الدُّنْلِ وَكَبِيرٌ تَكْبِيرًا

18—सूरः अल—कहफः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 111 आयतें हैं। इसके अवतरण का समय नबुव्वत का चौथा या पाँचवाँ वर्ष है।

सूरः अल—कहफः का आरम्भ सूरः बनी इस्माईल के उसी विषय से हुआ है जिसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मनुष्य होना विस्तारपूर्वक और खूब ज़ोर देकर प्रस्तुत किया गया है। और बहुत ही सरल शब्दों में यह घोषणा की गई कि उन्हें (अर्थात् ईसाइयों को) ज्ञान ही कोई नहीं कि हज़रत ईसा अलै. कैसे पैदा हुए। और न यह ज्ञान है कि अल्लाह तआला प्रजनन प्रक्रिया से पूर्णतया पवित्र है। वे अल्लाह पर बहुत ही बड़ा झूठ बोलते हैं। उनके दावे का कोई महत्व नहीं।

इसके बाद आरंभिक युगीन ईसाइयों का वर्णन किया गया कि किस प्रकार वे एकेश्वरवाद की सुरक्षा के लिए जनपदों को छोड़ कर गुफा-कंदराओं में चले गए। गुफा निवासियों के उल्लेख से पूर्व इन आरंभिक आयतों में यह कहा गया था कि संसार की जो भौतिक सुख सुविधायें मानव जाति को प्रदान की गई हैं वह उनकी परीक्षा के लिए हैं। परन्तु एक ऐसा युग आने वाला है कि ये नेमतें उनसे छीन ली जाएँगी और उन लोगों को प्रदान कर दी जाएँगी जिन्होंने अल्लाह के लिए सांसारिक सुख सुविधाओं के बदले गुफाओं में जीवन व्यतीत करने को प्राथमिकता दी।

इसके बाद दो ऐसे स्वर्गी अर्थात् बागों का उदाहरण दिया गया है जिनके कारण एक व्यक्ति दूसरे पर अहंकार करता है कि मुझे तो यह सब कुछ मिला हुआ है और मेरे मुकाबले पर तुम ख़ाली हाथ हो। परन्तु साथ ही यह चेतावनी भी दी गई कि जब अल्लाह तआला की नाराज़गी की आग तुम्हारी संपन्नता पर भड़केगी तो तुम्हें मलियामेट कर देगी।

इसी सूरः में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का वर्णन मिलता है जिसमें उन्हें अपनी उम्मत की अन्तिम सीमायें दिखा दी गई। और उस स्थान को चिह्नित कर दिया गया जहाँ आध्यात्मिक आहार रूपी मछली वापस समुद्र में चली गई। और यह इस्लाम से पूर्व ईसाइयत के उस काल की ओर संकेत है जब वह आध्यात्मिकता खो चुकी थी।

इसके बाद उदाहरण स्वरूप हज़रत मुहम्मद सल्ल. को उस महात्मा के रूप में चित्रित किया गया है जिसे जन-साधारण हज़रत खिज़ा कहते हैं। और बताया गया कि जो तत्त्वज्ञान उनको प्रदान किए जायेंगे वह मूसा अलैहिस्सलाम की पहुँच से परे हैं और उसकी गहराई को पाने के लिए जिस धैर्य की आवश्यकता है वह हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम को प्राप्त नहीं था । हज़रत मुहम्मद सल्ल. को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर यह श्रेष्ठता भी प्राप्त है कि आप सल्ल. ईश्वरीय तत्त्वज्ञान के मर्मज्ञ बनाए गए ।

इसके बाद जुल कर्नेन का वर्णन आया है जो फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की ओर संकेत कर रहा है कि आपको दो युगों पर प्रभुत्व दिया जाएगा । एक प्रारम्भिक युगीनों का और एक अंत्ययुगीनों का । इसमें जुल कर्नेन की यात्राओं का जो वृत्तान्त वर्णन किया गया है अपने अन्दर बहुत से संकेत रखता है । जिसका विस्तारपूर्वक यहाँ उल्लेख नहीं किया जा सकता । परन्तु एक बात निश्चित है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उम्मत का विस्तार पश्चिमी जगत तक भी होगा जहाँ पश्चिम वासियों के झूठे विचारों के दूषित जल में सूर्य अस्त होता दिखाई देता है । और पूर्व में विस्तार उस भू-भाग तक होगा जिससे परे सूर्य और धरती के बीच कोई आइ नहीं ।

इस सूरः के अन्त में निश्चित रूप से प्रमाणित हो जाता है कि इसमें ईसाइयत के उत्थान और पतन का वर्णन किया गया है । उत्थान आरम्भिक एकेश्वरवादियों के कारण हुआ था और पतन उस समय हुआ जबकि एकेश्वरवाद का सिद्धान्त बिगड़ते बिगड़ते सैकड़ों बल्कि हजारों संतों को ईश्वर मानने तक जा पहुँचा । अतः व्यवहारिक रूप से आज काल्पनिक Saints (सन्तों) को जो ईश्वरत्व का पद दिया जा रहा है, उस का इस सूरः के अन्त पर यूँ वर्णन है कि अ फ़ हसिबल्लज्जी न क़फ़र्स ऐंयत्तखिज्जू इबादी मिन् द्वनी औलिया अर्थात् वे लोग जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. का इनकार कर रहे हैं क्या वे समझते हैं कि अल्लाह के भक्तों को उसके सिवा औलिया (मित्र) बना लेंगे ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इस बात का स्पष्ट ज्ञान दिया गया था कि इस सूरः का सम्बन्ध दज्जाल से है । अतः आपने यह उपदेश किया कि जो व्यक्ति इस सूरः की पहली दस आयतों और अंतिम दस आयतों का पाठ किया करेगा वह दज्जाल के षड्यन्त्र से सुरक्षित रहेगा । इसके उपरान्त हज़रत मुहम्मद सल्ल. से यह घोषणा करवाई गई कि मैं मनुष्य तो हूँ परन्तु प्रत्येक प्रकार के शिर्क से पवित्र । अतः यदि तुम भी चाहते हो कि अल्लाह तआला का साक्षात्कार तुम्हें प्राप्त हो तो अपने आप को प्रत्येक प्रकार के शिर्क से पवित्र कर लो । यहाँ वहइ के जारी रहने की भविष्यवाणी भी की गई है । अल्लाह के भक्त जो अपने आपको शिर्क से पवित्र रखेंगे, अल्लाह तआला उनसे भी वार्तालाप करेगा ।



سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَرَأَى وَ اخْدُلِي عَشَرَةً إِلَيْهِ وَ اتَّا عَشَرَ رُكُونًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने अपने भक्त पर पुस्तक उतारी और इसमें कोई कुटिलता नहीं रखी । । ।

दृढ़ता पूर्वक स्थित और स्थिर रखने वाला, ताकि वह उसकी ओर से कठोर अज्ञाब से सतर्क करे और मोमिनों को जो पुण्यकर्म करते हैं शुभ-समाचार दे कि उन के लिए बहुत अच्छा प्रतिफल (निश्चित) है । । ।

वे उसमें सदैव रहने वाले हैं । । ।

और वह उन लोगों को सतर्क करे जिन्होंने कहा, अल्लाह ने पुत्र बना लिया है । । ।

उनको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, न ही उनके पूर्वजों को था । बहुत बड़ी बात है जो उनके मुँह से निकलती है । वे झूठ के सिवा कुछ नहीं कहते । । ।

अतः यदि वे इस बात पर ईमान न लायें तो क्या तू गहरे शोक के कारण उनके पीछे अपनी जान को नष्ट कर देगा । । ।

निःसन्देह हमने जो कुछ धरती पर है उसके लिए शोभा स्वरूप बनाया है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ
وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوْجَانًا
فِيمَا لِي شَدَرَ بِأَسَاسَ دِينِهِ لَذْنَهُ
وَيَبْشِرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصِّلْحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ②

مَا كِثِيرٌ فِيهِ أَبَدًا ③

وَيَنْذِرُ الَّذِينَ قَالُوا أَنَّهُمْ خَدَّالَهُ وَلَدًا ④
مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَ لَا لَأَبَاهِيمُ
كَبَرَتْ كَلْمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ
إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ⑤

فَعَلَّكَ بَاخْرُجُ نُفْسَكَ عَلَى أَشَارِهِمْ
إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ⑥

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهُمْ

ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें से कौन सर्वोत्तम कर्म करने वाला है । १।

और निःसन्देह हम जो कुछ इस पर है उसे शुष्क बंजर मिट्टी बना देंगे । १।

क्या तू विचार करता है कि गुफाओं वाले और अभिलेखों वाले हमारे चिह्नों में से एक अद्भुत चिह्न थे ? । १०।*

जब कुछ युवकों ने एक गुफा में शरण ली तो उन्होंने कहा, हे हमारे रब ! हमें अपने निकट से कृपा प्रदान कर और हमारे मामले में हमारा मार्ग दर्शन कर । १।

अतः हमने गुफा के अन्दर उनके कानों को कुछ वर्षों तक (बाहर के हालात से) विच्छिन्न रखा । १२।**

फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम जान लें कि दोनों गिरोहों में से कौन अधिक सही गणना करता है कि वे कितना

समय (इसमें) रहे । १३। (रुक् । ३)

हम तेरे सामने उनका समाचार सच्चाई के साथ वर्णन करते हैं । निःसन्देह वे कुछ युवक थे जो अपने रब पर ईमान ले

لَبَلَوْهُمْ أَيْمَمْ أَحْسَنْ عَمَلاً ①

وَإِنَّا لَجَعَلْنَاهُ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جَرَزاً ②

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ
وَالرَّقْبَمْ ۝ كَانُوا مِنْ أَيْتَنَا عَجَبًا ۝

إِذَا أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَاتُوا
رَبَّنَا أَتَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيْئَى لَنَا
مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝

فَضَرَبَنَا عَلَى أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِينِينَ
عَدَدًا ۝

لَمْ يَعْشُوهُمْ لِتَعْلَمَ أَيُّ الْحُرْبَيْنِ أَحْصَى
لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۝

نَحْنُ نَقْصُ عَلَيْكَ بِأَهْمُ بِالْحَقِّ ۝ أَللَّهُمْ

* अस्हाबुर्स्कीम का अर्थ है अभिलेखों वाले । इन लोगों ने अपनी गुफा में अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख छोड़ थे जिन पर वर्तमान युग के युरोप वासियों ने बहुत खोज की है । यह आयत भी एक विशेषता रखती है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुफा वालों का तो ज्ञान हुआ होगा परन्तु, उनको अभिलेख वाले कहना यह बात सर्वज्ञ अल्लाह के अतिरिक्त कोई आप को बता नहीं सकता था।

** यहाँ सिनीन (कुछ वर्ष) शब्द से अभिप्राय नौ वर्षों की अवधि है । क्योंकि यह सनतुन शब्द का बहुवचन है जो तीन से नौ तक के अंक के लिए प्रयुक्त होता है । यद्यपि एकेश्वरवादी ईसाइयों का गुफाओं में जाकर अपने ईमान को बचाने की पूरी अवधि तीन सौ वर्षों से कुछ अधिक है । परन्तु वस्तुतः वे एक समय में लगातार नौ वर्षों से अधिक गुफाओं में नहीं रहे । क्योंकि इस तीन सौ वर्षों की अवधि में जब विरोध कम हो जाता था तो वे गुफाओं से बाहर आ जाते थे ।

आए और हमने उन्हें हिदायत में अग्रसर किया । 14।

और जब वे खड़े हुए, हमने उनके दिलों को दृढ़ता प्रदान की । फिर उन्होंने कहा कि हमारा रब्ब तो आसमानों और धरती का रब्ब है । हम कदापि उसके सिवा किसी को उपास्य (के रूप में) नहीं पुकारेंगे । यदि ऐसा हुआ तो निःसन्देह हम संगत बात कहने वाले होंगे । 15।

यह हैं हमारी जाति (के लोग), जिन्होंने उस (अल्लाह) के सिवा उपास्य बना रखे हैं । वे क्यों उनके पक्ष में कोई प्रभावशाली उज्ज्वल प्रमाण नहीं लाते ? अतः उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े । 16।

अतः जबकि तुमने उन्हें और उनको जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते हैं, त्याग दिया है, तो गुफा की ओर शरण लेने के लिए चले जाओ । तुम्हारा रब्ब तुम्हारे लिए अपनी कृपा को फैलाएगा और तुम्हारा काम तुम्हारे लिए आसान कर देगा । 17।

और तू सूर्य को देखता है कि जब वह चढ़ता है तो उनकी गुफा से दायरीं ओर हट जाता है । और जब वह छूबता है तो उनसे रास्ता कतराता हुआ बाईं ओर से गुज़रता है । और वे उसके बीच में एक खुले स्थान में हैं । यह अल्लाह के चिह्नों में से है । जिसे अल्लाह हिदायत दे तो वही हिदायत पाने वाला है । और जिसे

فِتْيَةٌ أَمْنَوْا بِرِبِّهِمْ وَزِدْنَهُمْ هَذِئِي ⑩

وَرَبَّطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَاتُوا
رَبُّتَارَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَئِنْ تَذْعُغُوا
مِنْ دُونَهُ لَمَّا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا شَطَطُوا ⑪

هُوَ لَا إِلَهَ إِلَّا قَوْمَنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونَهُ أَلْهَةً
لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَنٍ بَيْنِ^{١٢} فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ⑫

وَإِذْ اغْتَرَ لَسْمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا
اللَّهُ فَأَفَأُو إِلَى الْكَهْفِ يَسْرُلَكُمْ رَبِّكُمْ
مِّنْ رَحْمَتِهِ وَيَهْيَ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ
مِرْفَقًا ⑬

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا أَطَلَعَتْ تَرَوْرَعْنُ
كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ
تَقْرِصَهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجُوْءِ
مِئَةٍ ١٤ ذَلِكَ مِنْ أَيْتِ اللَّهُ ١٥ مَنْ يَعْدُ اللَّهَ

वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके पक्ष में तू कोई हिदायत देने वाला मित्र नहीं पाएगा ॥18। (रुक् ٢/٤)

और तू उन्हें जागा हुआ विचार करता है जबकि वे सोये हुए हैं । और हम उन्हें दाएँ और बाएँ अदलते-बदलते रहते हैं । और उनका कुत्ता चौखट पर अपनी अगली दोनों टांगे फैलाए हुए हैं । यदि तू उन्हें झांक कर देखे तो अवश्य पीठ फेर कर उनसे भाग जाए और उनके रोब में आ जाए ॥19।*

और इसी प्रकार हमने उन्हें (बेखबरी से) जगाया ताकि वे परस्पर एक दूसरे से प्रश्न करें । उनमें से एक कहने वाले ने प्रश्न किया, तुम कितनी देर रहे ? तो उन्होंने कहा, हम तो केवल एक दिन या उसका कुछ भाग रहे हैं । उन्होंने कहा, तुम्हारा रब्ब ही भलीभाँति जानता है कि तुम कितना समय रहे हो । अतः अपने में से किसी को यह अपना सिक्का दे कर शहर की ओर भेजो । फिर वह देखे कि सबसे अच्छा भोजन कौन सा है, तो फिर उसमें से वह तुम्हारे पास कुछ भोजन ले आए । और बहाना बनाते हुए उनके भेद मालूम करे और तुम्हारे बारे में कदापि किसी को जानकारी न दे ॥20।

* तू उन्हें जागा हुआ समझता है जबकि वे सोये हुए हैं इसका अभिप्राय व्याख्याकारों के निकट भौतिक नींद है, जो कि सही नहीं है । ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि वे (गुफा वाले) बाहर के हालात से अपरिचित थे । मानो यह अवधि उनके लिए नींद स्वरूप थी । यदि भौतिक रूप से सोया हुआ अभिप्राय होता तो यह उल्लेख न होता कि तू उनको देखे तो उनसे भयभीत हो जाए और तेरा दिल रोब में आ जाए । सोये हुए मनुष्य को देख कर कोई न तो रोब में आता है और न भयभीत→

فَهُوَ الْمُهَمَّدٌ وَمَنْ يُضْلِلُ فَلَنْ تَجِدَهُ
وَلَيَّا مُرْشِداً ⑯
وَتَخْبِئُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ
وَنَقْلِبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَاءِ
وَكَلِّبُهُمْ بَاسِطُ ذِرَاعِيهِ بِالْوَصِيدِ
لَا اظْلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوْلَيْتَ مِنْهُمْ فَرَارًا
وَلَمْلِثْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ⑯

وَكَذِلِكَ بَعَثْتَهُمْ لِپَسَاءَ لَوْابِيَهُمْ قَالَ
قَالَ إِلَيْنِي مِنْهُمْ كَمْ لِي شَمَّ قَالُوا بِشَنَا
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۝ قَالُوا رَبَّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَا لِي شَمَّ ۝ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ
بِوَرْقَكُمْ هَذِهِمْ إِلَى الْمَدِيَّةِ فَلَيُنَظِّرْ
إِلَيْهَا أَزْكِي طَعَامًا فَإِلَيْتَكُمْ بِرْزِقٍ مِنْهُ
وَلَيُسْلَطُفْ وَلَا يُشْعَرَنَ بِكُمْ أَحَدًا ⑯

निःसन्देह वे ऐसे लोग हैं कि यदि तुम पर विजयी हो गए तो तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें अपने धर्म में वापस ले जाएँगे और परिणामस्वरूप तुम कभी सफलता नहीं पा सकोगे । 21।

और इसी प्रकार हमने उनके हालात की जानकारी दी ताकि वे लोग जान लें कि अल्लाह का बादा सच्चा है और यह कि क्रांति की घड़ी वह है जिसमें कोई शंका नहीं । जब वे आपस में तर्क-वितर्क कर रहे थे तो उनमें से कुछ ने कहा कि इन पर कोई स्मारक भवन का निर्माण करो । उनका रब्ब उनके बारे में सबसे अधिक ज्ञान रखता है । उन लोगों ने जो अपने निर्णय में विजयी हो गये, कहा कि हम तो अवश्य इन पर एक मस्जिद का निर्माण करेंगे । 22।

अवश्य वे कहेंगे कि वे तीन थे और चौथा उनका कुत्ता था और वे बिना देखे अनुमान लगा कर कहेंगे कि वे पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था । और कहेंगे कि वे सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था । तू कह दे मेरा रब्ब ही उनकी संख्या को भली भाँति जानता है और (उसके सिवा) कोई एक भी उन्हें नहीं जानता । *

अतः तू उनके बारे में सरसरी बातचीत के सिवा बाद-विवाद न कर । और उनसे

←होता है । वास्तव में वे बड़े पराक्रमी लोग थे और जब भी रोम निवासियों ने गुफाओं में प्रवेश कर उन्हें पकड़ने की चेष्टा की तो गुफा के द्वार में एक कुत्ते को उनकी सुरक्षा करता हुआ पाया । उसके भौंकने से गुफावालों को समझ आ जाती थी कि आक्रमण हुआ है । और वे अपनी प्रतिरक्षा के लिए और छिपने के लिए पहले ही से तैयार हो जाते थे ।

* इल्ला क़लीलُن (उसके सिवा कोई एक) अर्थ के लिए देखें, शब्दकोश ‘अकरब-उल-मवारिद’ ।

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ
أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مُلْتَهِمْ وَلَنْ تُقْلِبُوهَا
إِذَا أَبَدًا ①

وَكَذَلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ
وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا
إِذْ يَتَسَاءَلُوكُمْ بِيَمِنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا
إِنَّمَا عَيَّنْنَا بَيْنَ أَرْبَعَهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ
قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ
لَنَتَّخَذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ②

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَابِعُهُمْ كُلُّهُمْ
وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كُلُّهُمْ
رَجُلًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ
وَثَامِنُهُمْ كُلُّهُمْ قُلْ رَبِّكَ أَعْلَمُ
بِعِدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا
ثَمَارٌ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءٌ ظَاهِرًا وَلَا

सम्बन्धित उनमें से किसी से भी कोई बात न पूछ । 23।* (रुकू ۲۵)

और कदापि किसी बात के बारे में यह न कहा कर कि मैं कल इसे अवश्य कहूँगा । 24।

सिवाए इसके कि अल्लाह चाहे । और जब तू भूल जाए तो अपने रब्ब को याद किया कर । और कह दे कि असम्भव नहीं कि मेरा रब्ब इससे अधिक सटीक बात की ओर मेरा मार्गदर्शन कर दे । 25।

और वे अपनी गुफा में तीन सौ साल के बीच गिनती के कुछ वर्ष रहे और इस पर उन्होंने और नौ की बढ़ोत्तरी की । 26।

तू कह दे कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितना समय रहे । आसमानों और धरती का अदृश्य (ज्ञान) उसी को है । क्या ही खूब देखने वाला और क्या ही खूब सुनने वाला है । उसके सिवा उनका कोई मित्र नहीं और वह अपनी सत्ता में किसी को साझीदार नहीं बनाता । 27।

और तेरे रब्ब की पुस्तक में से जो तेरी ओर वहाँ किया जाता है, उसका पाठ कर । उसके वाक्यों को कोई परिवर्तित

لَسْتَ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا^{۱۴}

وَلَا تَقُولَكَ لِشَاءٍ إِنِّي قَاعِلٌ ذَلِكَ^{۱۵}
عَدَّا^{۱۶}

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَأَذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا
نَسِيْتَ وَقُلْ عَلَىٰ أَنْ يَهْدِيَنَّ رَبِّيْ
لِأَقْرَبِ مِنْ هَذَا رَشَدًا^{۱۷}

وَلِسُوْافِ كَهْفُهُمْ ثَلَاثٌ مِائَةٌ سِنِينَ
وَأَرْدَادُوا تِسْعًا^{۱۸}

قَلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ عَيْبٌ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضُ أَبْصِرُهُ وَأَسْمِعُ
مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ قَلْبٍ وَلَا يُشِّرِكُ
فِي حُكْمِهِ أَحَدًا^{۱۹}

وَأَنْ لَمْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابٍ رَيْكَ^{۲۰}
لَا مُبَدِّلٌ لِكَلِمَتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ

* असहावे कहफ (गुफा निवासियों) की संख्या के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के वर्णन मिलते हैं परन्तु हर जगह स्पष्ट संख्या के साथ उनके कुत्ते का भी उल्लेख है । ईसाई लोग जो कुत्ते से प्रेम करते हैं उनको अभी तक यह ज्ञान नहीं कि वे कुत्ते से क्यों प्रेम करते हैं । बाइबिल में तो ऐसा कोई वर्णन नहीं मिलता । पवित्र कुर्�आन से पता चलता है कि एक बहुत लम्बे समय तक सच्चे ईसाई अपनी सुरक्षा के लिए कुत्ते का उपयोग करते रहे । इस कारण उनका अपने वफादार मित्र से प्रेम उत्पन्न होना एक स्वाभाविक बात है ।

जहाँ तक उनकी संख्या का सम्बन्ध है, इसके बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया कि असहावे-कहफ के बारे में विस्तृत जानकारी किसी को नहीं दी गई । इस कारण उनसे इस विषय में सरसरी बात किया कर, विस्तृत वाद-विवाद में न पड़ा कर ।

नहीं कर सकता । और तू उसके सिवा
कोई आश्रयस्थल नहीं पाएगा । 28।

और तू उन लोगों के साथ स्वयं भी धैर्य
धारण कर जो सुवह ही और शाम को
भी अपने रब्ब को उसकी प्रसन्नता
चाहते हुए पुकारते हैं । और तेरी निगाहें
इस कारण उनसे आगे न बढ़ें कि तू
संसारिक जीवन की शोभा चाहता हो ।
और उसका अनुसरण न कर जिसके
हृदय को हमने अपनी स्मरण से भुला
रखा है । और वह अपनी लालसा के
पीछे लग गया है और उसका मामला
सीमा से बढ़ा हुआ है । 29।

और कह दे कि सत्य वही है जो तुम्हारे
रब्ब की ओर से हो । अतः जो चाहे वह
ईमान ले आए और जो चाहे सो इनकार
कर दे । निःसन्देह हमने अत्याचारियों के
लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है
जिसकी दीवारें उन्हें घेरे में ले लेंगी ।
और यदि वे पानी माँगेंगे तो उन्हें ऐसा
पानी दिया जाएगा जो पिघले हुए तांबे
की भाँति होगा जो उनके चेहरों को
झुलसा देगा । बहुत ही बुरा पेय है और
बहुत ही बुरा विश्राम-स्थल है । 30।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान ले आए और
नेक कर्म किए (सुन लें कि) हम कदापि
उसका प्रतिफल नष्ट नहीं करते जिसने
कर्म को अच्छा बनाया हो । 31।

यही हैं वे जिनके लिए स्थायी बाग हैं ।
उनके (पैरों के) नीचे नहरें बहती हैं ।
उन्हें वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे

مُلْتَحَدًا ⑩

وَاصِرٌ نَفْسَكَ مَعَ الْذِينَ يَذْعُونَ
رَبَّهُمْ بِالْغَلْوَةِ وَالْعُشْقِ يَرِيدُونَ
وَجْهَهُ وَلَا تَعْدِ عَيْنَكَ عَنْهُمْ ۝ تَرِيدُ
زِيَّةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ وَلَا تُطِعْ مَنْ
أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَأَشَعَّ هَوْنَةً
وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ⑪

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيَكُفِرْ ۝ إِنَّا
أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ
سَرَادِقُهَا ۝ وَإِنْ يَسْتَعْيُوا يَعْلَمُوَا بِمَا
كَالَّمْهُلِ يَشُوِّى الْوَجْهَ ۝ بِئْسَ
الشَّرَابُ ۝ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ⑫

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ إِنَّا
لَا نُنْهِيَ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلاً ⑬

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَاحُ عَذَنِ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَرُ يَخْلُوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاورَ

और वे बारीक रेशम और मोटे रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे। उनमें वे तख्तों पर टेक लगाए होंगे। बहुत ही उत्तम प्रतिफल और बहुत ही अच्छा विश्रामस्थल है। 132। (रुक् ४/१६)

مِنْ ذَهَبٍ وَيُلْبَسُونَ شِيلَابًا حُخْرًا مِنْ
سُندُسٍ وَإِسْتَبْرٍ قِمْتِكِينَ فِيهَا عَلَى
الْأَرَائِكِ تُعْمَلُ التَّوَابُ وَحَسَنَتْ
مُرْتَفَقَاءٌ

और उनके सामने दो व्यक्तियों का उदाहरण वर्णन कर जिनमें से एक के लिए हमने अंगूरों के दो बाग बनाए थे और उन दोनों (बागों) को खजूरों से घेर रखा था और उन दोनों के बीच खेत बनाए थे। 133।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ
وَحَفَنَتْهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْتَهُمَا
زَرْعًا

वे दोनों बाग अपना फल देते थे और उसमें कोई कमी नहीं करते थे और उनके बीच हमने एक नहर जारी की थी। 134।

كُلُّ الْجَنَّاتِيْنِ أَتَتْ أَكْلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ
شَيْئًا وَفَجَرْنَا خِلْلَهُمَا نَهَرًا

और उसके बहुत फल (वाले बाग) थे। अतः उसने अपने साथी से जब कि वह उससे वार्तालाप कर रहा था, कहा कि मैं तुझ से धन में अधिक और जत्थे में अधिक शक्तिशाली हूँ। 135।

وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ
يَحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَا لَأَوْ أَعْزَ
نَفْرًا

और वह अपने बाग में इस अवस्था में प्रविष्ट हुआ कि वह अपनी जान पर अत्याचार करने वाला था। उसने कहा, मैं तो यह सोच भी नहीं सकता कि यह कभी नष्ट हो जाएगा। 136।

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ
مَا أَظْلَمُ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ آبَدًا

और मैं विश्वास नहीं करता कि क़्यामत आयेगी। और यदि मैं अपने रब्ब की ओर लौटाया भी गया तो अवश्य इससे उत्तम लौटने का स्थान प्राप्त करूँगा। 137।

وَمَا أَظْلَمُ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَيْسَ
رُدْدُثُ إِلَى رَبِّ لَأْجِدَنَ حَيْرًا مِنْهَا
مُمْقَلِبًا

उससे उसके साथी ने, जबकि वह उससे वार्तालाप कर रहा था कहा, क्या तू उस

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يَحَاوِرُهُ

सत्ता का इनकार करता है जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से बनाया फिर तुझे एक चलने फिरने वाले मनुष्य के रूप में पूर्णता प्रदान की ? । 38।

परन्तु (मैं कहता हूँ)* मेरा रब्ब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब्ब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराऊँगा । 39।

और जब तू ने अपने बाग में प्रवेश किया तो क्यों तूने माशा-अल्लाह** न कहा और यह (न कहा) कि अल्लाह के सिवा किसी को कोई शक्ति प्राप्त नहीं । यदि तू मुझे धन और संतान के आधार पर अपने से न्यूनतम समझ रहा है । 40।

तो असम्भव नहीं कि मेरा रब्ब मुझे तेरे से उत्तम बाग प्रदान कर दे और इस (तेरे बाग) पर आसमान से पकड़ के रूप में कोई अज्ञाब उतारे । फिर वह चटियल बंजर धरती में परिवर्तित हो जाए । 41।

अथवा उसका पानी बहुत नीचे उतर जाए । फिर तू कदापि सामर्थ्य नहीं रखेगा कि उसे (वापस) खींच लाए । 42। और उसके फल को (आपदाओं के द्वारा) घेर लिया गया । और वह उस पूँजी पर अपने दोनों हाथ मलता रह गया जो उसने उस में लगायी थी । जबकि वह (बाग) अपने सहारों समेत धरती में गिर चुका था । और वह कहने लगा,

أَكَفَرْتَ بِاللَّذِي خَلَقَ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوْلَكَ رَجْلًا ۝

لِكَانَهُوا لِلَّهِ رَبِّنَ وَلَا أَشْرِكَ بِرَبِّي
أَحَدًا ۝

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ
اللَّهُ أَكْبَرُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنْ تَرَنَ أَنَا أَقَلَّ
مِنْكَ مَا لَأُ وَلَدَأُ ۝

فَعَسِيَ رَبِّنَ أَنْ يُؤْتِنِنِ خَيْرًا مِنْ
جَنَّتِكَ وَمَرْسَلٌ عَلَيْهَا حَسْبًا مِنْ
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقاً ۝

أَوْ يُصْبِحَ مَأْوَاهَا غَورًا فَلَنْ تَسْتَطِعْ لَهُ
طَلْبًا ۝

وَأَجِطْ بِشَرِّهِ فَأَصْبَحَ يَقْلِبَ كَفَيهِ
عَلَى مَا أَنْفَقَ قِهَا وَهِيَ حَاوِيَةٌ عَلَى
عَرْوَشَهَا وَيَقُولُ يَلِيَّنِ لَمْ أَشْرِكْ

* यह अर्थ तफसीर रह-उल-मआनी से लिया गया है ।

** अर्थात् जो अल्लाह चाहेगा वही होगा

हाय ! मैं किसी को अपने रब्ब का साझीदार न ठहराता । 43।

और उसके लिए कोई जत्था न था जो अल्लाह के विरुद्ध उसकी सहायता कर सकता और वह किसी प्रकार का प्रतिशोध न ले सका । 44।

उस समय अधिकार पूर्णतया अल्लाह ही का था जो सत्य है । वह प्रतिफल देने में भी अच्छा और सुखद परिणाम तक पहुँचाने में भी अच्छा है । 45।

(रुकू ۱۷)

और उनके सामने सांसारिक जीवन का उदाहरण वर्णन कर जो ऐसे पानी की भाँति है जिसे हमने आकाश से उतारा फिर उसके साथ धरती की हरियाली मिल गई । फिर वह चूरा-चूरा हो गया जिसे हवाएँ उड़ाए लिए फिरती हैं । और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर पूर्णतया सामर्थ्य रखने वाला है । 46।

धन और संतान सांसारिक जीवन की शोभा हैं । और शेष रहने वाली नेकियाँ तेरे रब्ब के निकट पुण्यफल स्वरूप उत्तम और उमंग की दृष्टि से अत्युत्तम हैं । 47। और जिस दिन हम पहाड़ों को हिलाएँगे और तू धरती को देखेगा कि वह अपना अन्दरूना प्रकट कर देगी और हम (इस आपदा में) इन सब को इकट्ठा करेंगे और इनमें से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे । 48।

और वह तेरे रब्ब के समक्ष पंक्तिवद्ध हो कर उपस्थित किए जाएँगे । (वह उनसे

بِرَبِّنَّ أَحَدًا ⑯

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَتَصَرَّفُونَهُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ⑰

هَنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِيقِ هُوَ خَيْرُ شَوَّابًا
وَخَيْرُ عَفَّابًا ⑯

وَأَضِيبَ لَهُمْ مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا عَ
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنِ السَّمَاءِ فَاخْتَطَطِيهِ بَاتُ
الْأَرْضَ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوفَةً
الرِّيحِ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ⑯

الْمَالُ وَالْبَنُونُ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَالْأَقْيَلَتُ الصِّلْمَتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
شَوَّابًا وَخَيْرٌ أَمْلَا ⑯
وَيَوْمَ نَسِيرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ
بَارِزَةً وَحَسْرَتُهُمْ فَلَمْ نَعَاذُ مِنْهُمْ
أَحَدًا ⑯

وَغَرِصُوا عَلَى رَبِّكَ صَفَا لَقَذِيفَةٌ مُؤْنَةٌ

कहेगा) निःसन्देह तुम हमारे समक्ष उपस्थित हो गए हो जिस प्रकार हमने पहली बार तुम्हें पैदा किया था । परन्तु तुम विचार कर बैठे थे कि हम कदापि तुम्हारे लिए कोई प्रतिश्रुत दिवस निर्धारित नहीं करेंगे । 49।

और पुस्तक प्रस्तुत की जाएगी, तो अपराधियों को तू देखेगा कि जो कुछ इसमें है वे उससे डर रहे होंगे और कहेंगे ! हम पर खेद है ! इस पुस्तक को क्या हुआ है कि न यह कोई छोटी बात छोड़ती है और न कोई बड़ी बात । परन्तु इसने इन सब को समाहित कर लिया है । और वे जो कुछ करते रहे हैं, उसे मौजूद पाएँगे और तेरा रब्ब किसी पर अत्याचार नहीं करेगा । 50।

(रुकू ٦٨)

और जब हमने फ़रिश्तों को कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के सिवा सबने सजदः किया । वह जिन्नों में से था । अतः उसने अपने रब्ब के आदेश की अवमानना की । तो क्या तुम उसे और उसके चेलों को मेरे सिवा मित्र बनाओगे जबकि वे तुम्हारे शत्रु हैं ? अत्याचारियों के लिए यह तो बहुत ही बुरा विकल्प है । 51।

मैंने इन्हें आसमानों और धरती की उत्पत्ति पर साक्षी नहीं बनाया और न ही उनकी अपनी उत्पत्ति पर । और न ही मैं ऐसा हूँ कि पथभ्रष्ट करने वालों को सहायक बनाऊँ । 52।

كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ
بِإِنَّ رَعِيْسَ الْأَنْجَوْلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ④

وَوُضَعَ الْكِتَبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُشَفِّقِينَ حَافِيْهِ وَيَقُولُونَ يُوَيْلَتَنَامَالِ
هَذَا الْكِتَبِ لَا يَعَادُرْ صَغِيرَةً وَلَا
كَبِيرَةً إِلَّا أَخْطَسَهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا
حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ⑤

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلِكَةِ اتَّجَدُوا لِأَدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسُ كَانَ مِنَ الْجِنِّ
فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ
وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ ذُوْنِي وَهُمْ لَكُمْ
عَدُوُّ طِبْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ⑥

مَا أَشَهَدُهُمْ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقُ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضْلِلِينَ عَصْدًا ⑦

और जिस दिन वह कहेगा कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे तो वे उन्हें पुकारेंगे । परन्तु वे उन्हें उत्तर न देंगे । और हम उनके बीच एक विनाश की दीवार खड़ी कर देंगे । 153।

और अपराधी आग को देखेंगे तो समझ जाएंगे कि वे उसमें पड़ने वाले हैं । और वे उससे निकल भागने की कोई राह नहीं पाएंगे । 154। (छूट 7)

और हमने खूब फेर फेर कर लोगों के लिए इस कुर्�आन में प्रत्येक प्रकार के उदाहरण वर्णन किए हैं । जबकि मनुष्य सब से अधिक झगड़ालू है । 155।

और किसी चीज़ ने लोगों को नहीं रोका कि जब हिदायत उनके पास आ जाए तो ईमान ले आएं और अपने रब्ब से क्षमायाचना करें । सिवाए इसके कि (वे चाहते थे) उन पर पहलों के इतिहास की पुनरावृत्ति की जाए अथवा फिर उनकी ओर तीव्रता से बढ़ने वाला अज्ञाब उन्हें आ पकड़े । 156।

और हम पैगम्बरों को केवल शुभ-समाचार देने वाले और सतर्क करने वाले के रूप में ही भेजते हैं । और जिन लोगों ने अस्वीकार किया वे मिथ्या का सहारा लेकर झगड़ते हैं ताकि इसके द्वारा सत्य को झुठला दें । और उन्होंने मेरे चिह्नों को और उन बातों को जिनसे वे सतर्क किए गये उपहास का पात्र बना लिया । 157।

और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके रब्ब की आयतें याद दिलाई

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شَرِكَاءِ الَّذِينَ
رَأَعْمَمْ فَدَعُوهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِبُوْهُمْ
وَجَعَلُنَا بَيْتَهُمْ مَوْبِيًّا ⑥

وَرَا الْمُجْرِمُونَ التَّارِفَظُوا أَنَّهُمْ
مُوَاقِعُهَا وَلَمْ يَحِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ⑦

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَهُمْ
جَدَّلًا ⑧

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ
الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ
تَأْيِيْهُمْ سَيْئَةُ الْأَوْلَيْنَ أَوْ يَأْيِيْهُمْ
الْعَذَابَ قَبْلًا ⑨

وَمَا تُرِسْلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَيِّنِينَ
وَمُنْذِرِينَ ۖ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا
إِلَيْتِي وَمَا أَنْذِرُوا هُزُرًا ⑩

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَكَرَ بِالْيَتْرَبِهِ

गई फिर भी वह उनसे विमुख हो गया । और जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा है उसे भूल गया । निःसन्देह हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे समझ न सकें । और उनके कानों में बहरापन रख दिया है । और यदि तू उन्हें हिदायत की ओर बुलाए भी तो (वे) कदापि हिदायत नहीं पाएँगे 158।

और तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा दयालु है । जो वे कमाई करते हैं यदि वह उस पर उनकी पकड़-धकड़ करे तो उन पर तुरन्त अज्ञाब ले आये । परन्तु उनके लिए एक समय निश्चित है जिससे बच निकलने की वे कोई राह नहीं पाएँगे 159।

और ये वे बस्तियाँ हैं जिन्होंने जब भी अत्याचार किया तो हमने उन्हें नष्ट कर दिया । और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा है 160।

(रुकू ٢٠)

और जब मूसा ने अपने युवा साथी से कहा, जब तक दो समुद्रों के संगम स्थल तक न पहुँच जाऊँ, मैं नहीं रुकूँगा । चाहे मुझे शताब्दियों तक चलना पड़े । 161।

अतः जब वे दोनों उन समुद्रों के संगम तक पहुँचे तो वे अपनी मछली भूल गए । और उसने चुपके से समुद्र के अन्दर अपनी राह ले ली । 162।*

अतः जब वे दोनों आगे निकल गए तो उसने अपने युवा साथी से कहा, हमें

فَأَعْرَضْ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمْتُ يَدَهُ إِلَيْ
جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ
وَفِيَّ أَذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَذَعَّهُمْ إِلَى
الْهُدَى فَلَنْ يَمْتَدِّدُوا إِلَّا أَبَدًا ⑥

وَرَبِّكَ الْعَفْوُرُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ
يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلَ لَهُمْ
الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا
مِنْ دُونِهِ مَوْلِيًّا ⑦

وَتِلْكُ الْقَرَى أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا
وَجَعَلْنَا إِلَيْهِمْ كِهْمَ مَوْعِدًا ⑧

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتْلَةَ لَا أَبْرُخُ حَتَّى
أَبْلَغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حَقْبًا ⑨

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حَوْتَهُمَا
فَأَتَّخَذَ سَيْلَةً فِي الْبَحْرِ سَرَّبًا ⑩

فَلَمَّا جَاءَوْ زَاقَال لِفَتْلَةَ أَتَّسَعَ دَأْنَا

* आयत सं. 61-62 :- इन आयतों में हज़रत मूसा के एक कश्फ की ओर संकेत है जिसमें उनके →

हमारा भोजन ला दे । अपनी इस यात्रा से अवश्य हमें बहुत थकान हो गई है । 163।

उसने कहा, क्या तुझे पता चला कि जब हमने चट्टान पर शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया ? और यह बात याद रखने से मुझे शैतान के सिवा किसी ने न भुलाया । अतः उसने समुद्र में विचित्र ढंग से अपनी राह ले ली । 164।

उसने कहा, यहीं तो हम चाहते थे । अतः वे दोनों अपने पदचिह्नों का खोज लगाते हुए लौट गए । 165।

अतः वहाँ उन्होंने हमारे भक्तों में से एक महान् भक्त को पाया जिसे हमने अपनी ओर से बड़ी कृपा प्रदान की थी और उसे अपनी ओर से ज्ञान प्रदान किया था । 166।

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं इस उद्देश्य से तेरा अनुसरण कर सकता हूँ कि मुझे भी उस हिदायत में से कुछ सिखा दे जो तुझे सिखलाई गई है ? 167।

उसने कहा, निश्चित रूप से तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा । 168।

और तू कैसे उस पर धैर्य कर सकेगा जिसको तू अनुभव के द्वारा जान न सका । 169।

←अनुयायियों में प्रकट होने वाले ईसा अलै. को उनके साथ यात्रा करते हुए दिखाया गया । हूँत (मछली) से अभिप्राय आध्यात्मिक शिक्षा है जो आध्यात्मिक भोजन का कारण बनती है । मज्मउल बहून (दो समुद्रों के संगम) से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की उम्मत और मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का संगम है । अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वालों के समेत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग तक चलेगी । परन्तु इससे बहुत पहले ईसाइयत बिगड़ चुकी होगी । मछली के हाथ से निकल जाने से यही अभिप्राय है ।

لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصْبًا ⑩

قَالَ أَرْعَيْتَ إِذَا وَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ
فَإِنْ تَسْمَعُ الْمُحْوَتَ وَمَا آتَنِيَهُ إِلَّا
الشَّيْطَنُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۝ وَاتَّخَذَ سِبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ عَجَابًا ⑪

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَسْبِغُ فَارْتَدَاعَلَى
أَثَارِهِمَا فَصَاصًا ۝

فَوَجَدَ اعْبُدًا مِنْ عِبَادِنَا أَتَيْنَاهُ رَحْمَةً
مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَمْنَاهُ مِنْ لَدُنْنَا عِلْمًا ⑫

قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَتِعْلَكَ عَلَى أَنْ
تُعْلَمَ مِنَّا عِلْمٌ رُشْدًا ۝

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِعَ مَعِي صَبْرًا ۝

وَكَيْفَ تَصِيرَ عَلَى مَا لَمْ تَحْظُ بِهِ
خُبْرًا ۝

उसने कहा, यदि अल्लाह ने चाहा तो मुझे तू धैर्य धारण करने वाला पाएगा । और मैं किसी बात में तेरी अवज्ञा नहीं करूँगा । 70।

उसने कहा, फिर यदि तू मेरे पीछे चले तो मुझ से किसी चीज़ के बारे में प्रश्न नहीं करना जब न तक कि मैं स्वयं तुझ से उसकी कोई चर्चा न छेड़ूँ । 71।

(रुक् ٢١)

अतः उन दोनों ने प्रस्थान किया । यहाँ तक कि वे ऐसी नौका में सवार हुए जिसे (इसके पश्चात्) उस (अल्लाह के भक्त) ने तोड़-फोड़ दिया । उस (मूसा) ने कहा, क्या तूने इस लिए इसे तोड़-फोड़ दिया है कि तू इसकी सवारियों को ढूबो दे ? निस्सन्देह तूने एक बहुत बुरा काम किया है । 72।

उसने कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा । 73।

उस (मूसा) ने कहा, जो मैं भूल गया उसके लिए मेरी पकड़ न कर । और मेरे बारे में सख्ती करते हुए मुझे कठिनाई में न डाल । 74।

वे दोनों फिर आगे निकले, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के से मिले तो उस (ईश-भक्त) ने उस का वध कर दिया । उस (मूसा) ने कहा, क्या तूने एक अबोध जान का वध कर दिया है, जिसने किसी की जान नहीं ली ? निःसन्देह तूने एक अत्यन्त घृणित कर्म किया है । 75।

قَالَ سَتَجْدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا
وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ⑩

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتِنِي فَلَا تَسْلُفِي عَنْ شَيْءٍ
حَتَّىٰ أَخْبِثَ لَكَ مِنْهُ مِنْكُرًا ۖ ۷۳

فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَأَيَا فِي السَّفِينَةِ
خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخْرَقْتَهَا لِتُعْرِقَ أَهْلَهَا
لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا أَمْرًا ⑪

قَالَ أَلْمَأْقُلَ إِنَّكَ لَنْ تَشْتَطِنَعْ مَعِي
صَبِرًا ⑫

قَالَ لَا تَوَاحِذْنِي بِمَا نَسِيْتُ وَلَا
تُزْهَقْنِي مِنْ أَمْرِي عَسْرًا ⑬

فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا نَقِيَ عَلَمًا فَقَتَلَهُ
قَالَ أَقْتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِعَيْرِ نَفْسٍ ۖ
لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا مِنْكُرًا ⑭

उसने कहा, क्या तुझे मैंने नहीं कहा था कि तू कदापि मेरे साथ धैर्य का सामर्थ्य नहीं रख सकेगा । 76।

उस (मूसा) ने कहा, यदि इसके बाद मैं तुझ से कोई प्रश्न करूँ तो फिर मुझे अपने साथ न रखना । मेरी ओर से तू अवश्य प्रत्येक प्रकार का औचित्य प्राप्त कर चुका है । 77।

वे दोनों फिर आगे बढ़े । यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो उन से उन्होंने भोजन माँगा । इस पर उन्होंने इनकार कर दिया कि (वे) उनका आतिथ्य करें । वहाँ उन्होंने एक दीवार देखी जो गिरने ही वाली थी । तो उस (ईश-भक्त) ने उसे ठीक कर दिया । उस (मूसा) ने कहा, यदि तू चाहता तो अवश्य इस काम पर मज़दूरी ले सकता था । 78।

उसने कहा, यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई (का समय) है । अब मैं तुझे इसकी वास्तविकता बताता हूँ जिस पर तू धैर्य नहीं धर सका । 79।

जहाँ तक नौका का सम्बन्ध है तो वह कुछ निर्धनों की सम्पत्ति थी जो समुद्र में मेहनत मज़दूरी करते थे । अतः मैंने चाहा कि उसमें खोट डाल हूँ क्योंकि उनके पीछे-पीछे एक राजा (आ रहा) था जो प्रत्येक नौका को हड्डप लेता था । 80।

और जहाँ तक लड़के का सम्बन्ध है तो उसके माता-पिता दोनों मोमिन थे ।

قَالَ أَلْمَأْقُلُ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِعَ
مَعِي صَبْرًا ①

قَالَ إِنْ سَائِلُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا
تَصْحِيفٌ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِي عُذْرًا ②

فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا آتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ
اَسْتَطَعُمَا أَهْلَهَا فَأَبْوَا أَنْ يُضَيْقُوهُمَا
فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا اِيْرِيدًا أَنْ يَنْقُضَ
فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَخْذِلَنِي
أَجْرًا ③

قَالَ هَذَا فِرَاقٌ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ
سَائِلُكَ بِتَأْوِيلٍ مَالْمَ نَسْطَعُ عَلَيْهِ
صَبْرًا ④

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسِكِينِ
يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَارَدُتْ أَنْ أَعِيْبَهَا
وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ
غَصْبًا ⑤

وَأَمَّا الْغَلْمَ فَكَانَ أَبُوَهُ مُؤْمِنٌ فَخَشِيَّنَا

इसलिए हम डरे कि कहीं वह (लड़का) उद्देश्यता और कृतज्ञता करते हुए उन पर असहनीय बोझ न डाल दे । 81।

अतः हमने चाहा कि उनका रब्ब उन्हें पवित्रता में इससे उत्तम और अधिक दया करने वाला (पुत्र) बदले में प्रदान करे । 82।

और जहाँ तक दीवार का सम्बन्ध है तो वह शहर में रहने वाले दो अनाथ लड़कों की थीं। और उसके नीचे उनके लिए खजाना था और उनका बाप एक सदाचारी व्यक्ति था। अतः तेरे रब्ब ने इरादा किया कि वे दोनों अपनी परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ और अपना खजाना निकालें। यह तेरे रब्ब की ओर से कृपा स्वरूप था। और मैंने ऐसा अपनी इच्छा से नहीं किया। यह उन बातों का भेद था जिन पर तुझे धैर्य का सामर्थ्य न था । 83।

(रुक् 10)

और वे तुझ से जुल्कर्नैन के बारे में प्रश्न करते हैं। कह दे कि मैं अवश्य उसका कुछ विवरण तुम्हारे समक्ष पढ़ूँगा । 84।

हमने निःसन्देह उसे धरती में दृढ़ता प्रदान की थी। और उसे प्रत्येक प्रकार के काम के साधन प्रदान किए थे । 85।

फिर वह एक मार्ग पर चल पड़ा । 86।

यहाँ तक कि जब वह सूर्य के अस्त होने के स्थान तक पहुँचा, उसने उसे एक बदबूदार कीचड़ के स्रोत में अस्त होते देखा। और उसके पास ही एक जाति को

أَنْ يُرِّهُقُهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا^④

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبُدِّلَهُمَا بِهِمَا خَيْرًا مِنْهُ
زَكُورَةً وَأَقْرَبَ رَحْمًا^⑤

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِعَلَمِينِ يَتَّبِعُونِ فِي
الْمَدِيَّةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ
أَبُوهُمَّا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغا
آسَدَهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً
مِنْ رَبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِيٍّ ذَلِكَ
تَأْوِيلٌ مَا لَمْ تُسْطِعْ عَلَيْهِ صَبَرًا^⑥

وَيَسْلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ^٧ قُلْ
سَأَشْأُلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا^٨
إِنَّا مَكَّلَاهُ فِي الْأَرْضِ وَأَتَيْنَاهُ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا^٩
فَاتَّبِعْ سَبَبًا^{١٠}

حَقٌّ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَغْرِبُ فِي عَيْنٍ حَمْئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا

पाया । हमने कहा, हे जुल् कऱ्नैन चाहे तो अज्ञाब दे और चाहे तो इनके मामले में उत्तम व्यवहार प्रदर्शन कर 187।*

उसने कहा, जिसने भी अत्याचार किया हम उसे अवश्य अज्ञाब देंगे । फिर वह अपने रब्ब की ओर लौटाया जाएगा तो वह उसे (और भी) अधिक कठोर अज्ञाब देगा 188।

और वह जो ईमान लाया और उसने नेक कर्म किए तो उसके लिए प्रतिफल स्वरूप भलाई ही भलाई होगी । और हम उसके लिए अपने आदेश से आसानी का निर्णय करेंगे 189।

फिर वह एक और मार्ग पर चल पड़ा । 190।

यहाँ तक कि वह जब सूर्य के उदय होने के स्थान पर पहुँचा तो उसने उसे ऐसे लोगों पर उदय होते पाया जिनके लिए हमने उस (अर्थात् सूर्य) के इस ओर कोई आड़ नहीं बनाई थी । 191।

इसी प्रकार हुआ । हम ने उसके प्रत्येक अनुभव का पूर्ण ज्ञान रखा हुआ था । 192।

- * आयत संख्या : - 84 से 87 जुल् कऱ्नैन से वास्तविक अभिप्राय तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन्होंने प्रथमतः हज़रत मूसा अलै. और उनकी उम्मत के युग को पाया । और द्वितीयतः आने वाले युग में आपकी उम्मत की पुनरुत्थान के लिए अल्लाह आपके किसी सेवक और आज़ाकारी को नियुक्त करेगा । इस प्रकार यह दोनों युग हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साथ संबद्ध होते हैं । परन्तु इस बात को जिस आलंकारिक भाषा में वर्णन किया गया है वह एक ऐतिहासिक घटना है जिससे संभवतः सप्राट ख्योरस (Cyrus) अभिप्राय है । जिसके बारे में बाइबिल में भी वर्णन है । वह असाधारण आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति था और एकेश्वरवादी था । उसके पूर्व और पश्चिम की यात्राओं का विवरण इन पवित्र आयतों में मिलता है । और दीवार बनाने का जो वर्णन है, वह एक नहीं बल्कि कई दीवारें हैं जो प्राचीन काल से आक्रमणकारियों को रोकने और ऐसी जातियों को बचाने के लिए बनाई गई जो स्वयं प्रतिरक्षा करने का सामर्थ्य नहीं रखती थीं । उनमें से एक दीवार तो रुस में है और एक चीन की दीवार भी है । अर्थात् दीवारों के द्वारा सुरक्षा करना उस युग की परम्परा थी ।

قُوَّمًا قُلْنَابِيًّا الْقُرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذَّبَ
وَإِمَّا أَنْ تُتَّخِذَ فِيهِمْ حَسْنًا ①

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ
يُرَدُّ إِلَى رَبِّهِ فَيُعَذَّبُهُ عَذَابًا أَنْكَرًا ②

وَأَمَّا مَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ
الْحَسْنِيٌّ وَسَقَوْلُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ③

لَمْ أَتِبْ سَبَبًا ④

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلَعَ السَّمْسِ وَجَدَهَا
تَضْلِعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ يَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ
ذُونَهَا سِرْرًا ⑤

كَذِيلَكَ طَوْقَدَ أَحْطَنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ⑥

फिर वह एक और मार्ग पर चल पड़ा। 193।

यहाँ तक कि जब वह दो दीवारों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के इस ओर उसने एक और जाति को पाया जिनके लिए बात समझना कठिन था। 194।

उन्होंने कहा है जुल कर्नैन ! निःसन्देह या'जूज और मा'जूज धरती में उपद्रव करने वाले हैं । अतः क्या हम तेरे लिए इस पर कोई कर निर्धारित कर दें कि तू उनके और हमारे बीच कोई रोक बना दे। 195।

उसने कहा, मेरे रब्ब ने मुझे जो शक्ति प्रदान की है वह उत्तम है । अतः तुम केवल श्रम-शक्ति के द्वारा मेरी सहायता करो । मैं तुम्हारे और उनके बीच एक बड़ी रोक बना दूँगा। 196।

मुझे लोहे के टुकड़े ला दो । यहाँ तक कि जब उसने दोनों पहाड़ों के बीच की जगह को (भर कर) बराबर कर दिया तो उसने कहा, अब आग धोंको । यहाँ तक कि जब उसने उसे आग बना दिया, उसने कहा कि मुझे ताँबा दो ताकि मैं उस पर डालूँ। 197।*

لَمْ آتِيْعَ سَبَبًا ⑬

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّلَيْنِ وَجَدَ مِنْ
دُوْنِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَقْهَمُونَ
فَوْلًا ⑭

قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يٰجُوْجَ
وَمَأْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ فَهُنَّ
نَجْعَلُ لَكَ حَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْتَنَا
وَبَيْتَهُمْ سَدًا ⑮

قَالَ مَا مَكَنَّتِي فِيهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَأَعِيْمُوْنِي
إِقْوَةٍ أَجْعَلُ بَيْتَكُمْ وَبَيْتَهُمْ رَدْمًا ⑯

أَتُؤْنِيْ رُبَّرُ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَأَوَىٰ
بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ افْخُوْا ۖ حَتَّىٰ إِذَا
جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ أَتُؤْنِيْ أَفْرِغُ عَلَيْهِ
قِطْرًا ⑰

* आयत सं. 94 से 97 : - इन आयतों में जिस दीवार का वर्णन चल रहा है वह तुर्की और रूस के बीच 'दरबंद' की दीवार है जिसके द्वारा कैसपियन सागर और काकेशिया पर्वत के बीच के रास्ते को बन्द कर दिया गया था, जिसे कुछ कमज़ोर जातियों को पश्चिमी जातियों के आक्रमण से बचाने के लिए सप्राट खोरस ने निर्माण करवाया था । खोरस ने इसके बदले उनसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगा, बल्कि परिश्रम, लोहा और ताँबा माँगा था और निर्माण कार्य भी खोरस के निर्देशानुसार उन्होंने ही किया ।

अतः उसे लांघने की उनमें शक्ति न थी और न उसमें सेंध लगाने का वे सामर्थ्य रखते थे । 198।

उसने कहा, यह मेरे रब्ब की कृपा है ।

अतः जब मेरे रब्ब के वादे (का समय)

आएगा तो वह इसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा

और निःसन्देह मेरे रब्ब का वादा सच्चा

है । 199।*

और उस दिन हम उनमें से कुछ को कुछ पर लहर दर लहर चढ़ाई करने देंगे । और बिगुल फूँका जाएगा और हम उन सब को इकट्ठा कर देंगे । 100।

फिर हम उस दिन नरक को काफिरों के सामने ला खड़ा करेंगे । 101।

जिनकी आँखें मेरे स्मरण से पर्दे में थीं और वे सुनने का भी सामर्थ्य नहीं रखते थे । 102। (रुक् 11)

अतः क्या वे लोग जिन्होंने इनकार किया, धारणा रखते हैं कि वे मेरे बदले मेरे भक्तों को अपना मित्र बना लेंगे ? निःसन्देह हमने काफिरों के लिए नरक को आतिथ्य स्वरूप तैयार कर रखा है । 103।

कह दे कि क्या हम तुम्हें उन की सूचना दें जो कर्मों की दृष्टि से सबसे अधिक हानि उठाने वाले हैं । 104।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهِرُوهُ وَمَا
اِسْتَطَاعُوا لَهُ تَقْبِيَاً ⑯

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّنَا فَإِذَا
جَاءَ وَعْدُ رَبِّنَا جَعَلَهُ دَكَّاءً وَكَانَ
وَعْدَ رَبِّنَا حَقًّا ⑯

وَتَرَكُنَا بِعَصْمَهُ يَوْمَئِذٍ مُّؤْمِنُونَ فِي
بَعْضٍ وَنَفْخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ
جَمَعًا ⑯

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكُفَّارِينَ
عَرْضًا ⑯

الَّذِينَ كَانُوا أَعْيُنَهُمْ فِي غُطَّاءٍ عَنْ
ذِكْرِنَا وَكَانُوا لَا يُسْتَطِعُونَ سَمَاعًا ⑯

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَعَذُّرُوا
عِبَادُنَا مِنْ دُوْنِ أُولَيَاءِ رَبِّنَا أَغْتَدُنَا
جَهَنَّمَ لِلْكُفَّارِينَ نَزَّلَ ⑯

قُلْ هُلْ تَسْتِكْمُ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ⑯

* वह युग जिसमें या 'जूज मा' जूज संसार में प्रकट होंगे उस युग में ये दीवारें महत्वहीन हो चुकी होंगी । या 'जूज मा' जूज का पूरी दुनिया पर विजय प्राप्ति का उल्लेख इस प्रकार मिलता है जिस प्रकार समुद्री लहरें बड़ी उफान के साथ आगे बढ़ती हैं । अतः उनकी विजय वास्तव में समुद्र पर विजय प्राप्ति के परिणाम स्वरूप आरम्भ होनी थी ।

जिनके समस्त प्रयास सांसारिक जीवन की चाहत में गुम हो गए । और वे विचार करते हैं कि वे उद्योग (क्षेत्र) में कुशलता दिखा रहे हैं । 105।

यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब की आयतों और उसके मिलन से इनकार कर दिया । अतः उनके कर्म नष्ट हो गए । और क्रयामत के दिन हम उन लोगों को कोई महत्व नहीं देंगे । 106।

यह नरक है उनका प्रतिफल । इस लिए कि उन्होंने इनकार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को उपहास का पात्र बना बैठे । 107।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किये, उनके लिए आतिथ्य स्वरूप फ़िर्दोस के स्वर्ग हैं । 108।

वे सदा उनमें रहने वाले हैं । कभी उनसे अलग होना नहीं चाहेंगे । 109।

कह दे कि यदि समुद्र मेरे रब्ब के कलिमों (वाक्यों) के लिए स्याही बन जाएँ तो इससे पूर्व कि मेरे रब्ब के कलिमे समाप्त हों समुद्र अवश्य समाप्त हो जाएँगे । चाहे हम सहायता स्वरूप उस जैसे और (समुद्र) ले आएँ । 110।

कह दे कि मैं तो केवल तुम्हारे सदृश एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर वहाँ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य बस एक ही उपास्य है । अतः जो कोई अपने रब्ब का मिलन चाहता है वह (भी) नेक कर्म करे और अपने रब्ब की उपासना में किसी को साझीदार न ठहराए । 111। (रुक् 12)

الَّذِينَ صَلَّى سَعْيَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يَخْسِرُونَ
صُنْحًا ⑩

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِاِيمَانِ رَبِّهِمْ
وَلِقَاءِهِ فَخَطِّطُتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقْبِلُ
لَهُمْ يَوْمُ الْقِيَمَةِ وَزُنًا ⑪

ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا
وَاتَّخَذُوا اِيمَانِي وَرُسُلِي هُرُوقًا ⑫

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلَاحَتِ كَانُوا
لَهُمْ جَنَّتُ الْفِرْدَوْسِ نَزَّلَ لَهُمْ ⑬

خَلِدِينَ قِيمَاهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوْلًا ⑭

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لِكَلْمَتِ رَبِّي
لَتَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْقَدَ كَلْمَتُ رَبِّي
وَلَوْ جَئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ⑮

قُلْ إِنَّمَا آنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُؤْمِنُ إِنَّ
آنَّمَا الْهُكْمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا
لِقَاءَ رَبِّهِ فَلَيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا
يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ⑯

19- सूरः मरियम

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 99 आयतें हैं। इसका अवतरणकाल हब्शा (इथिओपिया) प्रवास से पूर्व नुबुव्वत का चौथा अथवा पाँचवां वर्ष है।

इस सूरः में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप जन्म लेने का उल्लेख है और बताया गया है कि उनका इस प्रकार का जन्मलाभ एक चमत्कार स्वरूप था, जिसको दुनिया उस समय समझ नहीं सकती थी। इस प्रसंग में यह बताना आवश्यक है कि आजकल स्वयं ईसाई अनुसंधानकारियों ने इस विषय को स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया है कि पुरुष से संबंध स्थापित किये बिना भी एक कुवाँरी लड़की के गर्भ से बच्चा जन्म ले सकता है। पहले यह धारणा थी कि केवल लड़की पैदा हो सकती है, परन्तु बाद के अनुसंधान से प्रमाणित हुआ है कि लड़का भी पैदा हो सकता है।

साधारणतः: माँ बाप के मिलन से ही बच्चा जन्म लेता है परन्तु जहाँ तक चमत्कारिक जन्म का सम्बन्ध है, कई बार स्त्री पुरुष की ऐसी आयु में सन्तान उत्पत्ति होती है जबकि सामान्य रूप से सन्तान का होना असम्भव हो। यही अवस्था हजरत ज़करिया अलैहिस्सलाम की थी। उन को संतान की चाहत थी परन्तु वे स्वयं इतने बृद्ध हो चुके थे कि बृद्धावस्था के कारण सिर भट्टक उठा था और उनकी पत्नी न केवल बृद्ध हो चुकी थीं, बल्कि बाँझ भी थीं। अतएव चमत्कारिक जन्म का एक दृष्टान्त यह भी है कि इन दोनों दोष के बावजूद उन्हें पुत्र स्वरूप हजरत यह्या अलैहिस्सलाम प्राप्त हुए। उनमें पुत्र प्राप्ति की इच्छा, हजरत मरियम अलैहिस्सलाम के हालात पर ध्यान देने के कारण उत्पन्न हुई थी जिन से हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप जन्मलाभ का चमत्कार प्रकट होना था।

इसके पश्चात् उन विवरणों का उल्लेख है जिनमें हजरत मरियम अलैहिस्सलाम फिलिस्तीन को छोड़कर पूर्वदिशा में किसी ओर चली गई थीं। और वहाँ दिन रात अल्लाह के स्मरण में लगी रहती थीं। और वहीं पहली बार मनुष्य रूप में प्रकट हुए एक फरिशता के द्वारा पुत्र प्राप्ति का शुभ समाचार मिला।

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को उनके जन्म के बाद जब हजरत मरियम अलैहिस्सलाम साथ लेकर फिलिस्तीन पहुँचीं तो यहूदियों ने खुब शेर मचाया कि यह तो अवैध सन्तान है। इस पर अल्लाह तआला ने हजरत मरियम अलैहिस्सलाम को आदेश दिया कि तुम अल्लाह के लिए मौन व्रत धारण करो। और यह पुत्र (जो उस समय पालने में ही था अर्थात् दो तीन वर्ष की आयु का था) स्वयं उत्तर देगा। हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने यहूदी विद्वानों के समक्ष ज्ञान की वह बातें कीं जो एक कलंकित बालक सोच भी नहीं सकता। इन बातों में भविष्य में उनके नबी बनने की भविष्यवाणी भी

शामिल थी । और हज़रत ईसा अलै. ने यह भी भविष्यवाणी की कि मुझे वध करने के तुम्हारे घडयंत्र से अल्लाह तआला बचाएगा । अतएव कहा वस्सलामु अलैच्य यौ म बुलिदतु व यौ म अमूतु व यौ म उब्बसु हय्यन् अर्थात् जब मैं पैदा किया गया उस समय मुझे अल्लाह की ओर से सलामती प्राप्त थी । और जब मैं मृत्यु को प्राप्त करूँगा तो सामान्य रूप से ही मृत्यु प्राप्त करूँगा । और फिर जब मुझे पुनर्जिवित किया जाएगा उस समय भी मुझ पर अल्लाह तआला की सलामती होगी ।

इस से बहुत मिलती जुलती आयत हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम के बारे में भी आती है, जिसमें कहा सलामुन् अलैहि यौ म बुलि द व यौ म यमूतु व यौ म युब्बसु हय्यन् अर्थात् जब उसका जन्म हुआ उस पर सलामती थी और जब वह मृत्यु को प्राप्त करेगा तो उस पर सलामती होगी । और जब उसको पुनर्जिवित किया जाएगा तब भी उस पर सलामती होगी । इस आयत से मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम भी वध नहीं किये गये थे । इसके पश्चात् हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वृत्तांत वर्णन करते हुए उनकी चमत्कारिक संतान का उल्लेख किया गया । जबकि वृद्धावस्था में उन को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम भी प्रदान किये गये । इसी प्रकार उनके बाद उनकी संतान से हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम जन्म हुए ।

इसके बाद अन्य नवियों का उल्लेख मिलता है जिसमें आध्यात्मिक संतान की विभिन्न अवस्थाएँ वर्णन की गई हैं । और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के उत्थान का उदाहरण हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के उत्थान के समान प्रस्तुत किया गया है । ये सभी अल्लाह तआला के वे सच्चे भक्त थे जिनकी भावी सन्तान सदाचारी न रह सकी और उन्होंने अपनी नमाज़ों को नष्ट कर दिया और तामसिक इच्छाओं का अनुसरण किया । इसलिए उनके लिए चेतावनी है कि वे अपनी कुटिलता का बदला अवश्य पायेंगे ।

इस सूरः में अल्लाह के गुणवाचक नाम रहमान का अधिकता से वर्णन है । रहमान का अर्थ अनंत कृपा करने वाला और बिन माँगे प्रदान करने वाला है । इस सूरः का विषयवस्तु अल्लाह के इस गुण के साथ यथारूप समानता रखता है ।

इस सूरः के अन्त पर रहमान अल्लाह की ओर पुन्र आरोपित करने को एक बहुत बड़ा पाप घोषित किया गया है । इस के फलस्वरूप सम्भव है कि धरती और आकाश फट जायें । तात्पर्य यह है कि यहीं लोग अत्यन्त भयानक युद्धों में धकेल दिये जाएँगे जो ऐसी भयानक होंगे कि मानो आकाश उन पर फट पड़ा है ।

इसके विपरीत इस सूरः की अन्तिम आयत में उन लोगों का वर्णन है जो अल्लाह से डरते हैं और नेक कर्म करते हैं । उनके दिलों में रहमान अल्लाह पूर्व वर्णित पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष के बदले पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर देगा ।

سُورَةُ مَرْيَمْ مَكِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَشَّارَةِ تَسْنَعُ وَ تَسْهُونَ أَيَّةً وَ سِتَّةً رُكُونَ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

अन त काफिन व हादिन या आलिमु या सादिकु : हे सर्वज्ञ, हे सत्यवादी ! तू पर्याप्त है और हिदायत देने वाला है । । । यह वर्णन तेरे रब्ब की दया का है (जो उसने) अपने भक्त ज़करिया पर की । । । जब उसने अपने रब्ब को निम्न स्वर में पुकारा । । ।

कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मेरी हड्डियाँ कमज़ोर पड़ गई हैं और सिर बुद्धापे के कारण भड़क उठा है । फिर भी मेरे रब्ब ! मैं तुझ से दुआ माँगते हुए कभी अभागा नहीं हुआ । । ।

और मैं अपने पीछे अपने भागीदारों से डरता हूँ जबकि मेरी पत्नी भी बाँझ है । अतः मुझे स्वयं अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर । । ।

जो मेरा उत्तराधिकार प्राप्त करे और याकूब की संतान का भी उत्तराधिकार प्राप्त करे । और हे मेरे रब्ब ! उसे बड़ा चहेता बना । । ।

हे ज़करिया ! निःसन्देह हम तुझे एक महान पुत्र का शुभ-समाचार देते हैं जिसका नाम यहया होगा । हमने उसका पहले कोई हमनाम नहीं बनाया । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

كَيْفَ يَعْصِي ⑦

ذُكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ⑦

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً حَفِيَّا ①

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظِيمُ مِنِي وَأَشْتَكِلُ
الرَّأْسَ شَيْبًا وَلَمَّا كُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ
شَقِيقًا ⑦

وَإِنِّي خَفِيْتُ الْمَوَالِيَّ مِنْ وَرَآءِي
وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ
مِنْ ذَدْنِكَ وَلِيَّا ⑦

يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ أَلِيْ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ
رَبِّ رَضِيَّا ⑦

يَزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِعِلْمٍ أَسْمَهُ
يَخْلِي لَمْ تَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلِ سَمِيَّا ⑧

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरा पुत्र कैसे होगा जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को पहुँच गया हूँ ? | 91 |

उसने कहा, इसी प्रकार तेरे रब्ब ने कहा है कि यह मेरे लिए सरल है । और निःसन्देह मैं तुझे भी तो पहले पैदा कर चुका हूँ जबकि तू कुछ चीज़ न था | 10 |

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए कोई चिह्न निर्धारण कर । उसने कहा, तेरा चिह्न यह है कि तू लोगों से निरन्तर तीन रातों तक बात न करे | 11 |

अतः वह मेहराब (उपासना कक्ष) से अपनी जाति के समक्ष प्रकट हुआ और उन्हें संकेत से बताया कि सबेरे और शाम (अल्लाह की) स्तुति करो | 12 |

हे यहाया ! पुस्तक को दृढ़तापूर्वक पकड़ ले और हमने उसे बचपन ही से तत्त्वज्ञान प्रदान किया था | 13 |

और अपनी ओर से सहृदयता और पवित्रता प्रदान की थी और वह सयंमीथा | 14 |

और अपने माता-पिता से सद्-व्यवहार करने वाला था और कदाचित कठोर हृदयी (और) अवज्ञाकारी नहीं था | 15 | और सलामती है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मृत्यु को प्राप्त करेगा और जिस दिन उसे पुनर्जीवित करके उठाया जाएगा | 16 |

(रुकूं $\frac{1}{4}$)

قَالَ رَبِّيْ أَنِّيْ كُوْنُ لِيْ عُلْمٌ وَكَانَتْ اُمْرَأَنِيْ عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكَبِيرِ عِتْيَانًا

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبِّكَ هُوَ عَلَىٰ هِينُ وَقَدْ خَلَقْتَ مِنْ قَبْلٍ وَلَمْ تَكْشِيْهَا

قَالَ رَبِّيْ اجْعَلْنِيْ إِيَّاهَا قَالَ اسْتَكَ أَلَا تَكْلِمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لِيَالٍ سَوِيًّا

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ مِنَ الْمُحَرَّابِ فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ أَنْ سَيْبُحُوا بِكُرْبَةَ وَعِشْيَانًا

يَيْخُو حَذَالِكِتَبِ بِقُوَّةٍ وَاتِّيَّهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا وَحَانَأَنَّ مِنْ لَدُنَّا وَرَكْوَةَ وَكَانَ تَقِيًّا

وَبَرًّا بِوَالِدِيهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَارًا عَصِيًّا

وَسَلَمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وَلَدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يَبْعَثُ حَيًّا

और (इस) पुस्तक के अनुसार मरियम का वर्णन कर। जब वह अपने घर बालों से अलग हो कर पूरब की ओर एक जगह चली गई। 17।

फिर उसने अपने और उनके बीच एक आँढ़ बना ली। तब हम ने उसकी ओर अपना फरिश्ता भेजा और उसने उसके लिए एक सुगठित मनुष्य का रूप धारण किया। 18।

उसने कहा, मैं तुझ से रहमान (अल्लाह) की शरण में आती हूँ। यदि तू (उससे) डरता है। 19।

उसने कहा, मैं तो तेरे रब्ब का केवल एक दूत हूँ ताकि तुझे एक सञ्चरित्र पुत्र प्रदान करूँ। 20।

उसने कहा, मेरे कोई पुत्र कैसे होगा जबकि मुझे किसी पुरुष ने स्पर्श तक नहीं किया और मैं कोई चरित्रहीन नहीं? 21।

उसने कहा, इसी प्रकार। तेरे रब्ब ने कहा है कि यह बात मेरे लिए सरल है और (हम उसे पैदा करेंगे)* ताकि हम उसे लोगों के लिए चिह्न स्वरूप और अपनी ओर से साक्षात् दया स्वरूप बना दें। और यह एक पूर्वनिश्चित बात है। 22।

अतः उस (पुत्र) को उसने गर्भ में धारण कर लिया। वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान की ओर चली गई। 23।

* कोष्ठक वाले शब्द अल्लामा कुर्तुबी के निकट आयत के भावार्थ में शामिल हैं।
(देखिये तर्फ़सीर-उल-कुर्तुबी)

وَأُذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذَا نَبَّذَتْ
مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرُّ قِيَّاً ⑩

فَأَخْذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا
فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحًا فَتَمَثَّلَ لَهَا
بَشَرًا سَوِيًّا ⑪

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ
إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ⑫

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لَا هَبَّ لَكِ
غُلَمًا زَكِيًّا ⑬

قَالَتْ أَلِّي يَكُونُ لِي عَلَمٌ وَلَمْ يَمْسِنِي
بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ⑭

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىٰ هُنْجٍ
وَلَنْجَلَةٍ أَيَّةٌ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةٌ مِنْهَا
وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا ⑮

فَحَمَلَتْهُ فَأَنْبَذَتْهُ مَكَانًا قَصِيًّا ⑯

फिर प्रसवपीड़ा उसे खजूर के तने की ओर ले गयी । उसने कहा, हाय ! मैं इससे पहले मर जाती और भूली-बिसरी हो चुकी होती । 24।

तब (एक पुकारने वाले ने) उसे उसकी निचली ओर से पुकारा कि कोई चिंता न कर । तेरे रब्ब ने तेरी निचली ओर एक स्रोत जारी कर दिया है । 25।

और खजूर के तने को तू अपनी ओर हिला वह तुझ पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिराएगा । 26।

अतः तू खा और पी और अपनी आँखें ठंडी कर । और यदि तू किसी व्यक्ति को देखे तो कह दे कि अवश्य मैंने रहमान के लिए उपवास का संकल्प किया हुआ है, इसलिए आज मैं किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी । 27।

फिर वह उसे उठाये हुए अपनी जाति की ओर ले आई । उन्होंने कहा, हे मरियम ! निःसन्देह तूने बहुत बूरा काम किया है । 28।

हे हारून की बहिन ! तेरा पिता तो बुरा व्यक्ति न था और न तेरी माता चरित्रहीन थी । 29।*

तो उसने उसकी ओर संकेत किया । उन्होंने कहा हम कैसे उससे बात करें

* यहाँ हज़रत मरियम को जो उर्खता-हारून (हारून की बहिन) कहा गया है, इसी सूरः के अन्तिम भाग से पता चलता है कि वह मूसा अलै. के भाई हारून अलै. नहीं थे । वहाँ स्पष्ट रूप से हज़रत मूसा अलै. के भाई हारून का नाम लिया गया है और हज़रत मरियम बहुत बाद की हैं । या तो जाति ने व्यंग्यस्वरूप 'हारून की बहिन' कहा है । अथवा मरियम का कोई भाई हारून नामी होगा जो कदापि हज़रत मूसा अलै. का भाई नहीं है ।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاصِصُ إِلَى جِذْعِ التَّنْحَلَةِ
قَالَتْ يَلَيْسَنِي مَثْ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ
تَسِيَّاً مَمْسِيَّاً ⑯

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَا تَخْرُنِيْ قَدْ جَعَلَ
رَبِّكِ تَحْتَكِ سَرِيَّاً ⑯

وَهُرِيْقَ الْيَلِثِ بِجِذْعِ التَّنْحَلَةِ سَقْطَ
عَلَيْكِ رُطْبَاجِنِيَّا ⑯

فَكُلِّيْ وَأَشْرِبِيْ وَقَرِيْ عَيْنَاً فَإِمَاتَرَيْنَ
مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقَوْلَيْ إِنْ نَذَرْتَ
لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أَكْلِمَ الْيَوْمَ
إِنْسِيَّا ⑯

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلَهُ قَالُوا لِمَرِيمَ
لَقَدْ حِتَتْ شَيْئًا فَرِيَّا ⑯

يَا أَخْتَ هَرُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ امْرَأَ سُوءٍ
وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَعِيَّا ⑯

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نَكِلُّمَ مَنْ

जो अभी पालने में पलने वाला बालक है । 30।

उस (अर्थात् ईसा) ने कहा, निःसन्देह मैं अल्लाह का भक्त हूँ । उसने मुझे पुस्तक प्रदान की है और मुझे नबी बनाया है । 31।

और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे मंगलमय बना दिया है और जब तक मैं जीवित हूँ मुझे नमाज और ज़कात का आदेश दिया है । 32।

और अपनी माता से सद-व्यवहार करने वाला (बनाया) । और मुझे निर्दयी और कठोर हृदयी नहीं बनाया । 33।

और सलामती है मुझ पर जिस दिन मुझे जन्म दिया गया और जिस दिन मैं मरुँगा और जिस दिन मैं जीवित करके उठाया जाऊँगा । 34।

यह है मरियम का पुत्र ईसा । (यही) वह सच्ची बात है जिस में वे शंका कर रहे हैं । 35।

अल्लाह की मर्यादा के विपरीत है कि वह कोई पुत्र बना ले । पवित्र है वह । जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो वह उसे केवल ‘हो जा’ कहता है तो वह होने लगती है और हो कर रहती है । 36।

और निःसन्देह अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है । अतः तुम उसकी उपासना करो । यही सीधा रास्ता है । 37।

كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ①

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ أَتُنِي أُلَكِتُ
وَجَعَلْنِي سَيِّدًا ②

وَجَعَلْنِي مُبِرَّكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ
وَأَوْصَنْتُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكُورَةِ مَا دُفِئَ
حَيَا ③

وَبَرَأْتُ بِالدَّىْنِ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَارًا
شَقِيًّا ④

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وَلِيَوْمٍ وَيَوْمَ أَمْوَاتٍ
وَيَوْمَ أَبْعَثُ حَيَا ⑤

ذِلِّكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلُ الْحَقِّ
الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ⑥

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَخَذَ مِنْ وَلِيٍّ سُبْحَانَهُ
إِذَا قَضَى أَمْرًا فَلَمْ يَقُولْ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ⑦

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّنِي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ
هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ⑧

अतः उनके अन्दर ही से समूहों ने मतभेद किया । फिर जिन्होंने एक बहुत बड़े दिन में उपस्थित होने का अस्वीकार किया, (जिस) के परिणाम स्वरूप उनके लिए विनाश (निश्चित) होगा । 38।

जिस दिन वे हमारे पास आयेंगे, उनका सुनना और उनका देखना क्या खूब होगा । परन्तु अत्याचारी लोग तो आज एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पढ़े हुए हैं । 39।

और उन्हें (उस) पछतावे के दिन से डरा जब निर्णय पूरा कर दिया जाएगा । वास्तविकता यह है कि वे अज्ञानता मैं हैं और ईमान नहीं लाते । 40।

निःसन्देह हम ही धरती के उत्तराधिकारी होंगे और उनके भी जो उस पर हैं । और हमारी ओर ही वे लौटाए जाएँगे । 41।

(रुक् ٢)

और (इस) पुस्तक के अनुसार इब्राहीम का वर्णन भी कर । निःसन्देह वह एक सच्चा नबी था । 42।

जब उसने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता ! आप क्यों उसकी उपासना करते हैं जो न सुनता है और न देखता है । और आपके किसी काम नहीं आता । 43।

हे मेरे पिता ! निःसन्देह मेरे पास वह ज्ञान आ चुका है जो आप के पास नहीं आया । अतः मेरा अनुसरण करें । मैं सीधे रास्ते की ओर आप का मार्गदर्शन करूँगा । 44।

فَأَخْتَلَفَ الْأَخْرَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَسْهَدٍ
يَوْمَ عَظِيمٍ ⑩

أَسْمَعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمًا تُوَسَّا لِكِنْ
الْفَلِمُونَ الْيَوْمَ فِي صَلَلٍ مُّبِينٍ ⑪

وَأَذْرِهِمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غُفْلَةٍ وَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ
يُوْمَئِنَ ⑫

إِنَّهُنْ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِنَّهَا
يُرْجَعُونَ ⑬

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَبِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ
صَدِيقًا لَّهُ ⑭

إِذْ قَالَ لَأَبِيهِ يَا أَبَتِ لَمْ تَغْبَدْ مَا لَأَ
يَسْمَعَ وَلَا يَبْصِرُ وَلَا يَعْنِي عَنْكَ شَيْئًا ⑮

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءْتِي مِنَ الْعِلْمِ مَالَهُ
يَا أَبَتِ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ⑯

हे मेरे पिता ! शैतान की उपासना न करें। निःसन्देह शैतान रहमान का अवज्ञाकारी है । 45।

हे मेरे पिता ! मैं अवश्य डरता हूँ कि रहमान की ओर से आपको कोई अज्ञाब पहुँचे । फिर आप (उस समय) शैतान का मित्र सिद्ध हों । 46।

उस (अर्थात् इब्राहीम के पिता) ने कहा, क्या तू मेरे उपास्यों से विमुख हो रहा है ? हे इब्राहीम ! यदि तू न रुका तो मैं अवश्य तुझे संगसार कर दूँगा । तू मुझे लम्बे समय के लिए अकेला छोड़ दे । 47।

उसने कहा, आप पर सलाम । मैं अवश्य अपने रब्ब से आप के लिए क्षमायाचना करूँगा । निःसन्देह वह मुझ पर बहुत कृपालु है । 48।

और मैं आपको और उनको भी छोड़ कर चला जाऊँगा जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं । और मैं अपने रब्ब से दुआ करूँगा । बिल्कुल संभव है कि मैं अपने रब्ब से दुआ करते हुए अभागा न रहूँ । 49।

फिर जब उसने उन्हें छोड़ दिया और उनको भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते थे, हमने उसे इसहाक और याकूब प्रदान किए और सबको हमने नवी बनाया । 50।

और हमने उन्हें अपनी कृपा प्रदान की और उन्हें एक उच्चकोटि की प्रसिद्धि प्रदान की । 51। (रुकू ३)

يَا أَبْتَ لَا تَعْبُدُ الشَّيْطَنَ إِنَّ الشَّيْطَنَ
كَانَ لِرَحْمَنِ عَصِيًّا ④

يَا أَبْتَ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمْسِكَ عَذَابًٌ
مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونُ لِلشَّيْطَنِ وَلِيًّا ⑤

قَالَ أَرَاغِبُ أَنْتَ عَنِ الْهَقْ
يَا إِبْرَاهِيمَ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَا رَجْمَنَكَ
وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ⑥

قَالَ سَلَمُ عَلَيْكَ سَاءَ سَعْفَرَ لَكَ رَبِّيُّ
إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ⑦

وَأَغْزَلْنَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
وَأَدْعُوا رَبِّيْنِ عَسَى أَلَا آتُوكُمْ بِدَعَاءَ
رَبِّيْ شَفِيًّا ⑧

فَلَمَّا اغْزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ
دُوْنِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ اسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَكَلَّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ⑨

وَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَنِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ
لِسَانًا صَدِيقًا عَلَيًّا ⑩

और (इस) पुस्तक के अनुसार मूसा का वर्णन भी कर। निःसन्देह वह शुद्ध किया गया था और एक रसूल (और) नबी था । ५२।

और हमने उसे तूर के दाहिनी ओर से आवाज़ दी और धीमी आवाज़ से बात करते हुए उसे अपने समीप कर लिया । ५३।

और हमने उसे अपनी कृपा से उसके भाई हारून को नबी स्वरूप प्रदान किया । ५४।

और (इस) पुस्तक के अनुसार इस्माईल का वर्णन भी कर। निःसन्देह वह सच्चे वादे वाला और रसूल (और) नबी था । ५५।

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया करता था। और अपने रब्ब के निकट बहुत ही प्रियपात्र था । ५६।

और (इस) पुस्तक के अनुसार इद्रीस का वर्णन भी कर। निःसन्देह वह बहुत सच्चा (और) नबी था । ५७।

और हमने एक उच्च स्थान की ओर उसका उत्थान किया था । ५८।

यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कृत किया जो आदम की संतान में से नबी थे। और उनमें से थे जिन्हें हमने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। और इब्राहीम और इस्माईल की संतान में से थे। और उनमें से थे जिन्हें हमने हिदायत दी और चुन लिया। जब उन के समक्ष

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَبِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ
مُحَلَّصاً وَكَانَ رَسُولاً نَبِيًّا ①

وَنَادَيْهُ مِنْ جَانِبِ الظُّورِ الْأَيْمَنِ
وَقَرَّبَنِهِ نَجِيًّا ②

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَرُونَ
نَبِيًّا ③

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَبِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ
صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولاً نَبِيًّا ④

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالرَّكْوَةِ
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ⑤

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَبِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ
صَدِيقَنَّا نَبِيًّا ⑥

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلَيْهَا ⑦

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ
النَّبِيِّنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِنْ حَمَلَنَا
مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ
وَإِسْرَائِيلَ وَمِنْ هَدَيَنَا وَاجْتَبَيَنَا

रहमान (अल्लाह) की आयतें पाठ की जाती थीं (तो) वे सजदः करते हुए और रोते हुए गिर जाते थे । ५९।

फिर उनके बाद ऐसे उत्तराधिकारियों ने (उनका) स्थान ले लिया जिन्होंने नमाज को गवाँ दिया और कामनाओं का अनुसरण किया । अतएव वे अवश्य पथभ्रष्टता का परिणाम देख लेंगे । ६०।

सिवाए उसके जिसने प्रायश्चित किया और ईमान लाया और नेक कर्म किए । तो यही लोग ही स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर लेशमात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । ६१।

स्थायी स्वर्गों में । जिनका रहमान ने अपने भक्तों से अदृश्य से वादा किया है। निःसन्देह उसका वादा अवश्य पूरा किया जाता है । ६२।

वे उनमें सलाम के सिवा कोई व्यर्थ (बात) नहीं सुनेंगे । और उनके लिए उनकी जीविका उनमें सुबह शाम उपलब्ध होगी । ६३।

यह वह स्वर्ग है जिसका उत्तराधिकारी हम अपने भक्तों में से उसको बनाएँगे जो मुतकी होगा । ६४।

और (फरिश्ते कहते हैं कि) हम तेरे रब्ब के आदेश से ही उत्तरते हैं । उसी का है जो हमारे सामने है और जो हमारे पीछे है और जो उनके बीच है । और तेरा रब्ब भूलने वाला नहीं । ६५।

(वह) आसमानों और धरती का रब्ब है और उसका भी जो उन दोनों के बीच

إِذَا شَتَّلَ عَلَيْهِمْ أَيْتَ الرَّحْمَنِ حَرَّقُوا
سَجَدًا وَبُكِيًّا ۝

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَصَاغَوْا
الصَّلْوَةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَتَ فَسَوْفَ
يُلْقَوْنَ عَيْنًا ۝

إِلَّا مَنْ تَابَ وَأَمْنَ وَعِمِّلَ صَالِحًا
فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ
شَيْئًا ۝

جَهَنَّمَ عَذْنٌ إِلَّيْهِ وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَةَ
بِالْغَيْبِ ۝ إِنَّهُ كَانَ وَعْدَهُ مَأْتِيًّا ۝

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَعْنًا أَلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ
رِزْقٌ هُمْ فِيهَا بِكْرَةً وَعَيْشَيًّا ۝

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِتَ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

وَمَا نَنْزَلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۝ لَهُ مَا
بَيْنَ أَيْدِيهِنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نِسِيًّا ۝

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

है। अतः उसकी उपासना कर। और उसकी उपासना पर धैर्य पूर्वक अटल रह। क्या तू उसका कोई हमनाम जानता है ? 166। (रुक् ४)

और मनुष्य कहता है, क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर जीवित करके निकाला जाऊँगा 167।

तो क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हमने उसे पहले भी इस अवस्था में पैदा किया था कि वह कुछ भी न था 168।

अतः तेरे रब्ब की क्रसम ! हम उन्हें और शैतानों को भी अवश्य इकट्ठा करेंगे। फिर हम उन्हें अवश्य नरक के गिर्द इस प्रकार उपस्थित करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे हुए होंगे 169।

तब हम प्रत्येक समुदाय में से उसे खींच निकालेंगे जो रहमान के विरुद्ध विद्रोह करने में सबसे अधिक तेज़ था 170।

फिर हम ही तो हैं जो उन लोगों को सबसे अधिक जानते हैं जो उसमें जलने के अधिक योग्य हैं 171।

और तुम (अत्याचारियों) में से प्रत्येक अवश्य उस में उतरने वाला है। यह तेरे रब्ब पर एक निश्चित निर्णय के रूप में अनिवार्य है 172।*

फिर हम उनको बचा लेंगे जिन्होंने तकवा धारण किया और हम अत्याचारियों को उसमें घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देंगे 173।

* इस आयत में इम् मिन्कुम इल्ला वारिदुहा (अर्थात् तुम में से प्रत्येक व्यक्ति उस में उतरने वाला है) इस से यह अभिप्राय नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति अवश्य नरक में प्रविष्ट होगा। परिव्रत्र कुरआन तो→

فَاعْبُدُهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ
لَهُ سِيمِيًّا ⑥

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مُتْ لَسْوُفَ
أَخْرُجَ حَيًّا ⑦

أَوْلَى يَذْكُرُ الْإِنْسَانَ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلِ
وَلَمْ يَكُنْ شَيْئًا ⑧

فَوَرَبِّكَ لَتَحْسِرَ لَهُمْ وَالشَّيْطَانُ شَرٌّ
لَتَحْضِرَ لَهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ حِثِيًّا ⑨

لَمْ لَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ أَنَّهُمْ أَشَدُّ
عَلَى الرَّحْمَنِ عِتَيًّا ⑩

لَمَّا نَخْنَ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَى بِهَا
صِلِيًّا ⑪

وَإِنْ مَنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَى رَبِّكَ
حَثَمًا مَفْقُضِيًّا ⑫

لَرَّسَجِي الَّذِينَ اتَّقَوا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ
فِيهَا حِثِيًّا ⑬

और जब उन पर हमारी उज्ज्वल आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों ने इनकार किया वे उन लोगों से जो ईमान लाए कहते हैं, दोनों समूहों में से प्रतिष्ठा की दृष्टि से कौन उत्तम और मंडली की दृष्टि से (कौन) अधिक अच्छा है ? 174।

और हमने कितनी ही ऐसी पीढ़ियों को उनसे पहले नस्त कर दिया जो धन-दौलत और आडम्बर में (उनसे) उत्तम थीं । 175।

तू कह दे जो पथभ्रष्टता में होता है रहमान (अल्लाह) उसे अवश्य कुछ ढील देता है । अंततः जब वे उसे देख लेंगे जिसकी उन्हें प्रतिश्रुति दी जाती है, चाहे वह अज्ञाब हो अथवा क्रयामत की घड़ी (हो) । तो वे अवश्य जान लेंगे कि कौन प्रतिष्ठा की दृष्टि से निकृष्ट और जत्था की दृष्टि से सर्वाधिक दुर्बल था । 176।

और अल्लाह उन्हें हिदायत में बढ़ा देगा जो हिदायत पा चुके हैं । और शेष रहने वाली नेकियाँ तेरे रब्ब के निकट प्रतिफल की दृष्टि से भी उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं । 177।

क्या तूने उस पर ध्यान दिया जिसने हमारी आयतों का इनकार कर दिया और कहा कि अवश्य मुझे धन और संतान दी जाएगी । 178।

◀ सदाचारी व्यक्तियों के सम्बन्ध में कहता है कि वे तो नरक की हल्की सी आवाज़ भी नहीं सुनेंगे । यहाँ नरक से तात्पर्य संसार का नरक है जिसे सदाचारी व्यक्ति अल्लाह के लिए सहन करते हैं । कई बार पापियों को भी मृत्यु से पूर्व अत्यन्त पीड़ा जनक यंत्रणा पहुँचती है, वह भी एक प्रकार का नरक ही है जो इसी संसार में मिल जाता है ।

وَإِذَا شُتُّلَ عَلَيْهِمْ أَيْتَنَا بِئْتِ قَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَمْنَىٰ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ
خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنَ نَدِيًّا ⑩

وَكُمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنِ هُنَّ
أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِعِيًّا ⑪

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الْأَضْلَالَ فَلِيمَدَّهُ
الرَّحْمَنُ مَدَّا حَتَّى إِذَا رَأَوْا مَا
يُوعَدُونَ إِنَّمَا الْعَذَابَ وَإِنَّمَا السَّاعَةَ
فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَصْعَفَ
جُنْدًا ⑫

وَيَرِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْدَوْا هُنَّ
وَالْبَقِيلُ الصِّلْحُ حَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
شَوَّابًا وَخَيْرٌ مَرَدًا ⑬

أَفَرَعِيْتَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لِيَتَنَا وَقَالَ
لَا وَتَيْنَ مَالًا وَوَلَدًا ⑭

क्या उसने अदृश्य की सूचना पाई है । अथवा रहमान की ओर से कोई वचन ले लिया है ? 179।

सावधान ! हम अवश्य लिख रखेंगे जो वह कहता है । और हम उसके लिए अज्ञाब को बढ़ाते चले जाएँगे । 180।

और जिसकी वह बातें करता है उसके हम उत्तराधिकारी हो जाएँगे । जबकि हमारे पास वह अकेला आएंगा । 181।

और उन्होंने अल्लाह के सिवा और उपास्य बना रखे हैं ताकि उनके लिए वे सम्मान का कारण बनें । 182।

सावधान ! वे अवश्य उनकी उपासना का इनकार कर देंगे और उनके विरुद्ध हो जाएँगे । 183। (रुक् ५)

क्या तूने नहीं देखा कि हम शैतानों को काफिरों के विरुद्ध भेजते हैं जो उन्हें भाँति-भाँति से उकसाते हैं । 184।

अतः तू उनके विषय में जल्दी न कर । हम उनकी पल-पल गणना कर रहे हैं । 185।

उस दिन जब हम मुत्तकियों को रहमान की ओर एक (सम्माननीय) शिष्टमण्डल के रूप में एकत्रित करके ले जाएँगे । 186।

और हम अपराधियों को नरक की ओर एक घाट पर उतरने वाली जाति के रूप में हाँक कर ले जाएँगे । 187।

वे किसी सिफारिश का अधिकार न रखेंगे सिवाए उसके जिसने रहमान की ओर से वचन ले रखा हो । 188।

और वे कहते हैं रहमान ने बेटा बना लिया है । 189।

أَطْلَعَ الْغَيْبَ أَمِ الْحَدَّ عِنْدَ الرَّحْمَنِ
عَهْدًا ⑥

كَلَّا ۝ سَنُكْتَبَ مَا يَقُولُ وَنَمْذَلَةٌ
مِنَ الْعَذَابِ مَدَّا ۝
وَنَرِثَةٌ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرُدًا ⑦

وَالْحَدُّوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَهْلَهُ لَيَكُونُوا
لَهُمْ عِزًّا ۝

كَلَّا ۝ سَيَحْكُفُرُونَ بِعِبَادِهِمْ
وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضَدًا ۝
الْمُرْتَأَىٰ آرْسَلَنَا الشَّيْطَنُ عَلَىٰ
الْكُفَّارِينَ تَوْرِهِمْ آرَأَىٰ ۝
فَلَا تَعْجُلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا تَعْذِلُهُمْ عَذَابًا ۝
يَوْمَ حُشْرُ الْمُمْتَنَىٰ إِلَى الرَّحْمَنِ وَقَدَّا ۝

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وَرَدَّا ۝

لَا يَمْلِكُونَ السَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ⑧

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنَ وَلَدًا ۝

निःसन्देह तुम एक बड़ी अनर्थ बात बना
लाए हो । 190।

सम्भव है कि आसमान इस कारण फट
पड़े और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए
और पहाड़ काँपते हुए गिर पड़े । 191।

कि उन्होंने रहमान के लिए बेटे का दावा
किया है । 192।

हालाँकि रहमान की मर्यादानुकूल नहीं
कि वह कोई बेटा अपनाए । 193।

निःसन्देह आसमानों और धरती में
जो कोई भी है वह रहमान के समक्ष
एक दास के रूप में अवश्य आने
वाला है । 194।

निःसन्देह उसने उनका धेराव किया
हुआ है और उन्हें खूब गिन रखा
है । 195।

और उनमें से हर एक कथामत के दिन
उसके समक्ष अकेला आएगा । 196।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और
नेक कर्म किये उनके लिए रहमान प्रेम
उत्पन्न कर देगा । 197।

अतः अवश्य हमने इसे तेरी भाषा में
सुगम कर दिया है ताकि तू मुक्तिक्रियों
को इसके द्वारा शुभ-सामाचार दे ।
और झगड़ालू लोगों को इसके द्वारा
सतर्क करे । 198।

और कितनी ही पीढ़ियाँ हैं जिन्हें हमने
उनसे पहले नष्ट कर दिया । क्या तू
उनमें से किसी का आभास पाता है
अथवा उनकी आहट सुनता है ? । 199।

(रुपू ६)

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا ۖ

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَسْقَطُنَ مِنْهُ وَتَسْقُّ
الْأَرْضُ وَتَخْرُجُ الْجِبَالُ هَذَا ۖ
أَنْ دَعَوْا إِلَرَّحْمَنَ وَلَدًا ۖ

وَمَا يَنْبَغِي لِرَّحْمَنِ أَنْ يَتَخَذَ وَلَدًا ۖ
إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا
أَتِ الرَّحْمَنَ عَبْدًا ۖ

لَقَدْ أَخْسَهُمْ وَعَدَهُمْ عَدًّا ۖ

وَكُلُّهُمْ أَيْتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرُدًّا ۖ

إِنَّ الَّذِينَ كَانُوا يَمْنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وَدًّا ۖ

فَإِنَّمَا يَسِّرُنَا بِإِسَائِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَقِيْنَ
وَتُنَذِّرَ بِهِ قَوْمًا لَّدَّا ۖ

وَكَمْ أَهْلَكَنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ ۖ

هَلْ خَيْرٌ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ شَمْعٍ
لَهُمْ رِكْزًا ۖ

20 – सूरः ताहा

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 136 आयतें हैं।

यह सूरः ता हा खण्डाक्षरों से आरम्भ होती है। ये खण्डाक्षर किसी अन्य सूरः के आरम्भ में नहीं आये हैं। इनके भावार्थ यह हैं ‘हे पवित्र रसूल और संपूर्ण मार्ग-प्रदर्शक’।

इससे पहली सूरः में जिन भयानक युद्धों की सूचना दी गई है, अवश्य उन सूचनाओं से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को कष्ट पहुँचा होगा। इसलिए अल्लाह तआला ने ज़ोर देकर कहा कि इन के कारण तू किसी प्रकार का दुःख न कर। ये उसकी ओर से उतरा है जिस ने धरती और आकाश की सृष्टि की। और वह रहमान है जो अर्श पर विराजमान हो गया।

क्योंकि अल्लाह के रहमान गुण के अन्तर्गत ही समस्त रसूलों का आगमन होता है। पिछली सूरः की भाँति इस सूरः में भी रहमानियत ही का विषयवस्तु जारी है। इसलिए एक बार फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का उल्लेख है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने रहमानियत के कारण उनको अपना रसूल बनाया। समस्त प्रकार की कृपा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर की गई वह सब की सब रहमानियत के फलस्वरूप थीं।

इसी सूरः में जादूगरों के सजदा करने और फिरौन की ओर से उनको अत्यन्त भयानक ढंड दिये जाने की धमकी का भी वर्णन है। परन्तु जिन्होंने रहमान अल्लाह के ऐसे चमत्कारों को देख लिया हो वे ऐसी धमकियों से भयभीत नहीं होते। अतः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उनका ईमान प्रत्येक प्रकार की धमकियों के बावजूद अटल रहा।

इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्ल. को संबोधित करके अल्लाह तआला कहता है कि तुझ से वे पहाड़ों के बारे में प्रश्न करते हैं। पहाड़ों के बारे में तो हज़रत मुहम्मद सल्ल. से कभी प्रश्न नहीं किया गया था। हाँ पहाड़ों जैसी बड़ी शक्तियों के सम्बन्ध में मुश्त्रिक पूछते थे कि उनके होते हुए तू कैसे सफल हो सकेगा। एक ओर पहाड़ सदृश्य किस्मा (ईरान) का साम्राज्य था तो दूसरी ओर भी पहाड़ समान कैसर (रोम) का साम्राज्य था। तो इसका यह उत्तर सिखाया गया कि संसार की बड़ी बड़ी अहंकारी जाति चाहे वे पहाड़ों की भाँति उँची हों उस समय तक ईमान नहीं लातीं जब तक उनका अहंकार तोड़ न दिया जाए। और वे ऐसी मरम्भूमि की रेत की भाँति न हो जाएँ जो पूर्ण रूप से समतल हो और उसमें कोई ऊँच-नीच दिखाई न दे। जब ऐसा होगा तो फिर वे एक ऐसे रसूल का अनुसरण करेंगे जिस में कोई कुटिलता नहीं पाई जाती।

आयत संख्या 109 में भी रहमान गुण की पुनरावृत्ति की गई है। इसके बाद आने

वाली आयत संख्या 110 में भी रहमान ही के चमत्कार का वर्णन है, जिसके रोब और प्रताप के समक्ष सभी आवाज़ें धीमी पड़ जाएँगी । मानो यदि सब लोग बातें करते भी हों तो धीमी आवाज़ से ही करते होंगे ।

इसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुनः उल्लेख किया गया है । क्योंकि उनकी उत्पत्ति भी रहमानियत के चमत्कार के अन्तर्गत थी । पहली बार उनकी शरीयत (धर्म-विधान) के चार मौलिक पक्ष वर्णन किये गये हैं । अर्थात् यह कि जो कोई भी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को स्वीकार करेगा उसके लिए प्रतिश्रुति है कि वह न भूखा रहेगा और न नंगा और न प्यासा रहेगा और न धूप में जलेगा ।

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल, को एक बार फिर धैर्य की शिक्षा दी गई है कि शत्रु के कष्ट देने पर धैर्य से काम ले । और सूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त से पूर्व भी और रात्रि काल में भी तथा दिन के दोनों भागों में भी अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान कर । इस पवित्र आयत में दिन रात की समस्त नमाज़ों का उल्लेख कर दिया गया है ।

इस सूरः के अन्त में वर्णन किया गया है कि कहो, सब प्रतिक्षा कर रहे हैं कि इस दुविधा का क्या परिणाम निकलता है, अतः तुम भी प्रतिक्षा करो । तुम पर खूब खोल दिया जाएगा कि सन्मार्ग पर चलने वाला कौन है और वह कौन है जो हिदायत पाता है ।



سُورَةُ طَهٌ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَهَوَّدْ وَتَلَأْتُونَ أَيَّهَا وَ ثَمَانِيَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अंनत कृपा
करने वाला, बिन माँगें देने वाला (और)
बार-बार दिया करने वाला है ।।

तैयिबुन-हादियुन : हे पवित्र (रसूल) और सम्पूर्ण मार्ग-प्रदर्शक ! | 2 |

हमने तुझ पर कुरआन इस लिए नहीं
उतारा कि तू दःख में पड़ जाए । 31

परन्तु (यह) उसके लिए केवल उपदेश
के रूप में है जो डरता है । 4।

इसका उतारा जाना उसकी ओर से है
जिसने धरती और ऊँचे आसमानों की
सुस्ति की।

रहमान । वह अर्श पर विराजमान हुआ । ६।

उसी के लिए है जो आसमानों में है और
जो धरती में है और जो इन दोनों के बीच
है और वह भी जो धरती की गहराइयों में
है। [7]

और यदि तू ऊँची आवाज़ में बात करे
तो निःसन्देह वह तो प्रत्येक गुप्त से गुप्त
(बातों) को भी जानता है। ॥४॥

अल्लाह, उसके सिवा कोई और
उपास्य नहीं । समस्त सुन्दर नाम
उसी के हैं । १९।

और क्या मूसा का वृत्तांत तुझ तक पहुँचा है। [10]

जब उसने आग देखी तो अपने घर
वालों से कहा ज़रा ठहरो, मैंने एक

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

٦٤

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَسْقَىٰ

إِلَّا تَذَكِّرَهُ لَمْنُ يَخْشِي ﴿١﴾

تَنْزِيلًا مِمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَوَاتِ
الْعُلَىٰ

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ①

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا
بِئْتَهُمَا وَمَا تَحْكَمُ التَّرْقَى ⑦

وَإِنْ تَجْهَرْ بِالنَّقْوَلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السَّرَّ
وَأَخْفِي ⑧

الله لا إله إلا هو رب الأسماء الحسنى ﴿١﴾

وَهُلْ أَتْكَ حَدِيثَ مُوسَىٰ

إِذْرَانَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ أَمْكُثُوا إِنِّي

आग सी देखी है । आशा है कि मैं तुम्हारे पास उसमें से कोई अंगारा ले आऊँ अथवा उस आग के निकट मुझे मार्गदर्शन मिल जाए ॥111॥

अतः जब वह उस तक पहुँचा तो आवाज़ दी गई, हे मूसा ! ॥121॥

निःसन्देह मैं तेरा रब्ब हूँ । अतः अपने दोनों जुते उतार दे । निःसन्देह तू तुवा की पवित्र धाटी मैं है ॥131॥*

और मैंने तुझे चुन लिया है । अतः उसे ध्यानपूर्वक सुन जो वहइ किया जाता है ॥141॥

निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः मेरी उपासना कर और मेरे स्मरण के लिए नमाज़ को क्रायम कर ॥151॥

निश्चित घड़ी अवश्य आने वाली है । संभव है कि मैं उसे छिपाए रखूँ, ताकि प्रत्येक जान को उसका प्रतिफल दिया जाए जो वह प्रयत्न करती है ॥161॥

अतः कदापि तुझे उस (का आवश्यक उपाय करने) से वह रोक न सके जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी कामना का अनुसरण करता है अन्यथा तू बर्बाद हो जाएगा ॥171॥

और हे मूसा ! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ॥181॥

اَنْشَتَ نَارًا عَلَىٰ اِتَّيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبْسٍ

أَوْ أَجِدُ عَلَىٰ التَّارِهَدَىٰ ⑩

فَلَمَّا آتَهَا نُودِيَ يَمُوسِى ⑪

إِنْفَقَ أَنَارَبِلَكَ فَأَخْلَعَ نَعْلَيْكَ ۝ إِنْكَ

بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طَوَىٰ ⑫

وَأَنَا أَخْتَرُكَ فَأَشْتَمِعُ لِمَا يُوْلَى ⑬

إِنْفَقَ أَنَّا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَّا فَاعْبُدُنَّ ۴

وَأَقْرَبُ الصَّلَاةَ لِذِكْرِنِي ⑭

إِنَّ السَّاعَةَ أَتَيْتُمْ أَكَادُ أَخْفِيَهَا لِبَجْزِي

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ⑮

فَلَدَيْصَدَّلَكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا

وَأَتَيْتَ هَوْلَهُ قَنْرَذِي ⑯

وَمَا تِلْكَ بِسِمِينَكَ يَمُوسِى ⑰

* आयत संख्या 10 से 13 :- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आग का सा प्रकाश देख कर जो संभावना प्रकट की थी कि औ अजिदु अलन्नारि हुद्दन् अर्थात् संभव है कि इस आग के निकट से मैं हिदायत ले कर आऊँ, वही सच्चा साबित हुआ । क्योंकि वह कोई साधारण आग नहीं थी जिस का अंगारा लेकर वह लौटे हों ।

उसने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ और इसके द्वारा अपनी भेड़ बकरियों के लिए पत्ते ज्ञाइता हूँ। और इसमें मेरे लिए और भी बहुत से लाभ हैं। 119।

उसने कहा, हे मूसा ! इसे फेंक दे। 120।

इस पर उसने उसे फेंक दिया तो सहस्र वह एक हिलता हुआ साँप समान बन गया। 121।

उसने कहा, इसे पकड़ ले और मत डर। हम इसे इसकी पूर्व की अवस्था मैं लौटा देंगे। 122।

और तू अपने हाथ को अपने बगल में दबा ले, वह बिना रोग के सफेद होकर निकलेगा। यह दूसरा चिह्न है। 123।

ताकि भविष्य में हम तुझे अपने बड़े-बड़े चिह्नों में से भी कुछ दिखाएँ। 124।

फिर औन की ओर जा, निःसन्देह उसने उद्दण्डता मचाई है। 125। (रुक् १०)

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे। 126।

और मेरा मामला मुझ पर सरल कर दे। 127।

और मेरी जीभ की गाँठ खोल दे। 128।

ताकि वे मेरी बात समझ सकें। 129।

और मेरे लिए मेरे परिवार में से मेरा सहयोगी बना दे। 130।

قَالَ هِيَ عَصَمَىٰ أَتَوْكُؤُ عَلَيْهَا وَأَهْشِنْ
بِهَا عَلَىٰ غَنِمَىٰ وَلِيٰ فِيهَا مَارِبُّ أُخْرَىٰ ⑩

قَالَ أَلْقِهَا يَمْوَسِيٰ ⑪

فَأَلْقِهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ⑫

قَالَ حَذِّهَا وَلَا تَحْفَّ سَعِينَدُهَا
سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ⑬

وَاصْمُمْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوْءٍ أَيَّةً أُخْرَىٰ ⑭

لَنْرِيَكَ مِنْ أَيْسَا الْكُبْرَىٰ ⑮

إِذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغِيٰ ⑯

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِيٰ ⑰

وَسَيْرِ لِي أَمْرِيٰ ⑱

وَاحْلُلْ عَقْدَةَ مِنْ لِسَانِيٰ ⑲

يَفْقَهُونَ أَقْوَلِيٰ ⑳

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِيٰ ㉑

मेरे भाई हारून को । 31।

उसके द्वारा मेरी कमर को मजबूत
कर । 32।

और उसे मेरे कार्य में सहभागी बना
दे । 33।

ताकि हम अधिकता से तेरा गुणगान
करें । 34।

और तुझे बहुत स्मरण करें । 35।

निःसन्देह तू हमारी अवस्था पर गहन
दृष्टि रखने वाला है । 36।

उसने कहा, हे मूसा ! तेरी मुँह माँगी
(मनोकामना) पूरी कर दी गई । 37।

और निःसन्देह हमने एक और बार भी
तुझ पर उपकार किया था । 38।

जब हमने तेरी माँ की ओर वह वहाइ की
जैसा कि वहाइ की जाती है । 39।

कि इसे सन्दूक में डाल दे । फिर इसे
नदी में बहा दे । फिर नदी इसे तट
पर जा पहुँचाए ताकि मेरा शत्रु और
इसका शत्रु इसे उठा ले । और मैंने
तुझ पर अपना प्रेम उंडेल दिया
ताकि तू मेरी आँख के सामने पले
बढ़े । 40।

(कल्पना कर कि) जब तेरी बहिन चल
रही थी और कहती जा रही थी कि
क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि कौन है जो इस
बच्चे का पालन-पोषण कर सकेगा ?
फिर हमने तुझे तेरी माँ की ओर लौटा
दिया ताकि उसकी आँख ठंडी हो ।

هَرُونَ أَخِيٌّ ۝

اَشْدُدِبِهَاءَ اَزْرِيٌّ ۝

وَأَشْرِكَةَ فِي اَمْرِيٍّ ۝

كَيْ نُسْتِحَلَكَ كَثِيرًا ۝

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ۝

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝

قَالَ قَدْ اُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَمْوَسِي ۝

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرَى ۝

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مَا يُؤْخِي ۝

أَنِ اقْدِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْدِفِيهِ فِي الْيَمِّ ۝

فَلَيْلُقُهُ الْيَمَّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذُهُ عَدُوُّنِي ۝

وَعَدُوُّهُ لَهُ وَالْقَيْمَتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مُّنِيَّ ۝

وَلِتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي ۝

إِذْ تَمِشِيَ اَخْبَلَكَ قَتَّقُولَ هَلْ اَذْلَكَ ۝

عَلَى مَنْ يَكْفُلُهُ فَرَجَعْتَ إِلَيْكَ ۝

كَيْ تَقَرَّ عَيْنَهَا وَلَا تَحْزَنْ هَوْ قَتْلَكَ ۝

और वह शोक न करे । इसी प्रकार तूने एक जान को वध किया तो हमने तुझे शोक से मुक्ति प्रदान की और विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं में डाला । फिर तू मदयन वासियों में कुछ वर्ष रहा । फिर हे मूसा ! तू (नवी बनने के लिए) एक उचित आयु को पहुँच गया । 41।

और मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया । 42।*

तू और तेरा भाई मेरे चिह्नों को लेकर जाओ और मेरे स्मरण करने में सुस्ती न दिखाना । 43।

तुम दोनों फ़िरूजौन की ओर जाओ । निःसन्देह उसने उद्घट्टा की है । 44।

अतः उससे नरमी से बात करो । संभव है वह शिक्षा पकड़े या डर जाए । 45।

उन दोनों ने कहा, हे हमारे रब ! निःसन्देह हम डरते हैं कि वह हम पर अत्याचार करे अथवा उद्घट्टा करे । 46। उसने कहा कि तुम डरो नहीं । निःसन्देह मैं तुम दोनों के साथ हूँ । मैं सुनता हूँ और देखता हूँ । 47।

अतः तुम दोनों उसके पास जाओ और उसे कहो कि हम तेरे रब के दो दूत हैं ।

अतः हमारे साथ तू बनी-इस्साईल को भेज दे और इनको अज्ञाब न दे । निःसन्देह हम तेरे रब की ओर से एक बहुत बड़ा चिह्न ले कर आए हैं । और जो भी हिदायत का अनुसरण करे उस पर सलामती हो । 48।

* देखें अरबी शब्दकोश ‘लिसान-उल-अरब’ ।

نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمٍ وَقَتَلْنَاكَ
فَتُئْوَانَا فَلَيْثَ سَنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
لَمْ جِئْنَا عَلَى قَدَرِ يَمُوسَى ①

وَاصْطَبَعْنَاكَ لِنَفْسِي ②

إِذْهَبْ أَنْتَ وَأَخْوُكَ بِالْيَقْنِ وَلَا تَنْتَيَا
فِي دُكْرِي ③
إِذْهَبَا إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَاغِي ④

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيْنَا لَعْلَهُ يَسْتَكْرُ
أَوْ يَخْشِي ⑤

قَالَ أَلَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَحَافُ أَنْ يَفْرَطَ عَلَيْنَا
أَوْ أَنْ يَظْغِي ⑥

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا آسَمُ
وَأَرِي ⑦

فَأَتَيْهُ فَقُولَا إِنَّا سُولَارِبِلَكَ فَأَرِسْلُ
مَعَكَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ⑧ وَلَا تَعْذِبْهُمْ
قَدْ جِئْنَاكَ بِأَيَّةٍ مِنْ رَبِّكَ ⑨ وَالسَّلَامُ عَلَى
مِنْ اتَّبَعَ الْهَدَى ⑩

निःसन्देह हमारी ओर वह़ की गई है कि जो झूठ बोलता है और उल्टा फिर जाता है उस पर अज़ाब होगा । 49।

उसने कहा, हे मूसा ! तुम दोनों का रब्ब है कौन ? । 50।

उसने कहा, हमारा रब्ब वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसकी आकृति प्रदान की फिर हिदायत के मार्ग पर डाल दिया । 51।

उसने कहा, फिर पहली जातियों की क्या दशा हुई ? । 52।

उसने उत्तर दिया कि उनकी जानकारी मेरे रब्ब के पास एक पुस्तक में है । मेरा रब्ब न भटकता है न भूलता है । 53।

(वह) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें कई मार्ग बनाए और उसने आसमान से पानी उतारा । फिर हमने उससे विभिन्न प्रकार के बनस्पति के कई-एक जोड़े उत्पन्न किए । 54।

खाओ और अपने पशुओं को चराओ । इसमें निःसन्देह बुद्धिमान लोगों के लिए कई बड़े चिह्न हैं । 55। (रुक् ۱۱)

इसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और इसी में हम तुम्हें लौटा देंगे और इसी से तुम्हें हम दूसरी बार निकालेंगे । 56।*

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَى
مَنْ كَذَبَ وَتَوَلَّ⑥

قَالَ فَمَنْ رَبَّكُمَا يَمْوُسِي⑦

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَةً
لَمَّا هَذِي⑧

قَالَ فَمَا بَأْلُ الْفَرْوَنِ الْأَوَّلِ⑨

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّنِ فِي كِتَابٍ
لَا يَضْلِلُ رَبِّنِ وَلَا يَئْسِي⑩

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ
لَكُمْ فِيهَا سَبِيلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجَنَا بِهِ أَرْوَاجًا مِنْ تَبَاتِ شَثِي⑪

كُلُّوا وَأَرْعُوا أَنْعَامَكُمْ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِأُولَى النَّهْيِ⑫

مِنْهَا خَلْقَنَّكُمْ وَفِيهَا نَعِيذُ كُمْ وَمِنْهَا
نَخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى⑬

* इस पवित्र आयत में जो यह कहा गया है कि इसी धरती से तुम उत्पन्न किए गए हो और इसी में से तुम निकलोगे, इस पर यह आपत्ति की जा सकती है कि आजकल के युग में जो लोग अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यानों में मर जाते हैं उन पर यह कैसे लागू हो सकता है ? इसका उत्तर यह है कि मनुष्य जहाँ भी चला जाए वह धरती की हवा, धरती का भोजन इत्यादि साथ रखता है और कभी भी इससे स्वयं को पृथक नहीं कर सकता ।

और निःसन्देह हमने उसे अपने समस्त चिह्न दिखाए। परन्तु उसने झूठला दिया और इनकार कर दिया । १५७।

उसने कहा, हे मूसा ! क्या तू हमारे पास आया है कि हमें हमारे देश से अपने जादू के द्वारा बाहर निकाल दे ? १५८।

अतः हम अवश्य तेरे सामने एक ऐसा ही जादू लाएँगे। फिर तू अपने और हमारे बीच बादे का दिन और स्थान निश्चित कर जिसकी न हम अवमानना करेंगे, न तू। यह स्थान (दोनों के लिए) एक समान हो । १५९।

उसने कहा, तुम्हारे लिए निर्धारित दिन त्यौहार का दिन है। और ऐसा हो कि दिन के कुछ चढ़ने पर लोगों को इकट्ठा किया जाए । १६०।

अतः फिर औन मुँह मोड़ कर चला गया। फिर उसने अपनी योजना सम्पूर्ण की, फिर दोबारा आया । १६१।

मूसा ने उनसे कहा, हाय खेद है तुम पर ! अल्लाह पर झूठ न गढ़ो, अन्यथा वह तुम्हें अज्ञाब देकर नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। और निःसन्देह वह असफल हो जाता है जो झूठ गढ़ता है । १६२।

अतः वे अपने मामले में एक दूसरे से झगड़ते रहे और छिप-छिप कर गुप्त परामर्श करते रहे । १६३।

उन्होंने कहा, निःसन्देह ये दोनों तो केवल जादूगर हैं जो चाहते हैं कि तुम्हें अपने जादू के द्वारा तुम्हारे देश से निकाल दें। और तुम्हारे आदर्श रीति-रिवाजों को नष्ट कर दें । १६४।

وَلَقَدْ أَرَيْنَا إِلَيْنَا كُلَّهَا فَكَذَبَ وَأَبَى ⑦

قَالَ أَجْئَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا
بِسَخْرِكَ يَمْوَلِي ⑧

فَلَكَأَتِينَكَ بِسَخْرِيْ مُثْلِيْ فَاجْعَلْ بَيْتَنَا
وَبَيْتَكَ مَوْعِدًا لَا تُخْلِفْهُ نَحْنُ وَلَا
أَنْتَ مَكَانًا سَوَى ⑨

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الرِّيَّةَ وَأَنْ يُهْشَرَ
النَّاسُ صُنْجَى ⑩

فَتَوَلَّ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَنْدَهُ ثُمَّ أَتَى ⑪

قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَقْتَرُوا
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِكُمْ بِعَذَابٍ
وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَى ⑫

فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْتَهُمْ وَأَسْرَوا
الثَّجُوْيِ ⑬

قَالُوا إِنَّ هَذِنِ سَحْرٌ نَّيْرِيدُنِ أَنْ
يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسَخْرِهِمَا
وَيَدْهَبَا بِطَرِيقِكُمُ الْمُشْتَلِي ⑭

अतः अपने समस्त उपाय को एकत्रित कर लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर चले आओ । और आज अवश्य वही सफल होगा जो श्रेष्ठ होगा । 165।

उन्होंने कहा, हे मूसा ! क्या तू डालेगा अथवा फिर हम पहले (अपना जादू) डालें । 166।

उसने कहा, अच्छा तुम ही डालो । अतः सहसा उनके जादू के कारण से उस के मन में डाला गया कि उनकी रसियाँ और उनकी लाठियाँ दौड़ रही हैं । 167।

तो मूसा ने अपने मन में भय का आभास किया । 168।

हमने कहा, डर मत । निःसन्देह तू ही विजयी होने वाला है । 169।

और जो तेरे दाहिने हाथ में है उसे फेंक दे । जो कुछ उन्होंने बनाया यह उसे निगल जाएगा । उन्होंने जो बनाया है वह केवल एक जादूगर का छल है । और जादूगर जिस ओर से भी आए सफल नहीं हुआ करता । 170।

अतः सभी जादूगर सजदः की अवस्था में गिरा दिए गए । उन्होंने कहा, हम हारून और मूसा के रब्ब पर ईमान ले आए हैं । 171।

उस (फिरआौन) ने कहा क्या तुम मेरी अनुमति से पहले उस पर ईमान ले आए ? निःसन्देह यह तुम्हारा ही मुखिया है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है । अतः अवश्य मैं तुम्हारे हाथ और

فَلَاجْمَعُوا كَيْدَكُمْ لَعْنَ اشْوَاصَهُ
وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مِنْ اسْتَعْلَى ⑦

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّمَا أَنْ تُلْقِي وَإِنَّمَا^{١٨}
أَنْ تُكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَنْقَلَ ⑧
قَالَ بَلْ أَنْقَلُوا فَإِذَا جِبَاهُمْ
وَعَصَيْهُمْ يَخِيلُ إِلَيْهِ مِنْ سُخْرِهِمْ
أَنَّهَا تَسْلُى ⑨

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ حِيقَةً مُّوسَى ⑩

فُلْكًا لَا تَخْفِ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ⑪
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا
صَنَعُوا ١٢ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدَ سُحْرِهِ
وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حِيثُ أَتَى ⑫

فَأَلْقِ السَّحْرَةَ سُجَّدًا قَالُوا أَمَّا
بِرْبِ هَرُونَ وَمُوسَى ⑬

قَالَ أَمْشِمْلَهُ قَبْلَ أَنْ أَذْنَ لَكُمْ ١٤ إِنَّهُ
لَكَبِيرُ كُمْ الْأَنْفُ عَلَّمَكُمُ الْسُّحْرَ
فَلَا قِطْعَنْ ١٥ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ

तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा । और अवश्य तुम्हें खजूर के तनों पर सूली चढ़ाऊँगा । और तुम अवश्य जान लोगे कि हम में से कौन अज्ञाब देने में अधिक कठोर और स्थायी रहने वाला है ? 172।

उन्होंने कहा, हम उन उज्ज्वल चिह्नों के मुकाबिल पर तुझे कदापि श्रेष्ठता नहीं देंगे जो हम तक पहुँचे हैं । और न ही उस पर (श्रेष्ठता देंगे) जिसने हमें पैदा किया । अतः कर डाल जो तू करने वाला है । तू केवल इस संसार के जीवन का निर्णय कर सकता है । 173।

निःसन्देह हम अपने रब्ब पर ईमान ले आए हैं ताकि वह हमारी बुटियों और हमारे जादू के काम पर जिन के करने के लिए तूने हमें विवश किया था, हमें क्षमा कर दे । और अल्लाह श्रेष्ठ और सर्वाधिक स्थायी रहने वाला है । 174।

निःसन्देह वह जो अपने रब्ब के समक्ष अपराधी के रूप में आएगा तो निश्चित ही उसके लिए नरक है । न वह उसमें मरेगा और न जीवित रहेगा । 175।

और जो मोमिन होते हुए उसके पास इस अवस्था में आयेगा कि वह नेक कर्म करता हो, तो यही वे लोग हैं जिनके लिए अनेक उच्च स्थान हैं । 176।

(वे) चिरस्थायी स्वर्वा हैं जिनके दामन में नहरें वह रही होंगी । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । और यह उसका प्रतिफल है

خَلَافٍ وَلَا وَصْلٍ إِنَّكُمْ فِي جَذْوَعٍ
النَّخْلٌ وَتَعْلَمُونَ أَيْنَا آشَدُ عَذَابًا
وَأَبْقَى ⑦٧

قَالُوا أَنْتَ تُؤْثِرُكَ عَلَى مَا كَجَاءَكَ مِنَ
الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ
قَاضٍ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ⑦٨

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيُغَفِّرَ لَنَا حَطَّيْنَا وَمَا
أَكْرَهْنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللهُ خَيْرٌ
وَأَبْقَى ⑦٩

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ
جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَخْيَ ⑦١٠

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصِّلْحَتِ
فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ⑦١١

جَنَّتُ عَدُنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ

जिसने पवित्रता धारण की । 77।

(रुकू ۳۲)

और निःसन्देह हमने मूसा की ओर वहइ की थी कि मेरे भक्तों को रात के समय ले चल और उनके लिए समुद्र में ऐसा रास्ता पकड़ जो शुष्क हो । न तुझे पकड़े जाने का भय होगा और न तू डरेगा । 78। फिर फिरआौन ने अपनी सेनाओं के साथ उनका पीछा किया तो समुद्र में से उस चीज़ ने उन्हें ढाँप लिया जिसने उन्हें ढाँपना था । 79।

और फिरआौन ने अपनी जाति को पथभ्रष्ट कर दिया और हिदायत न दी । 80।

हे बनी-इस्माईल ! निःसन्देह हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्ति प्रदान की और तुम से तूर की दाई ओर एक समझौता किया और तुम पर मन्न और सल्वा उतारे । 81।

जो जीविका हमने तुम्हें प्रदान की है उस में से पवित्र चीज़ें खाओ और इस बारे में सीमा का उल्लंघन न करो । अन्यथा तुम पर मेरा क्रोध उतरेगा । और जिस पर मेरा क्रोध उतरा हो तो वह अवश्य हलाक हो गया । 82।

और निःसन्देह मैं उसे बहुत क्षमा करने वाला हूँ जो प्रायश्चित्त करे और ईमान लाए और नेक कर्म करे फिर हिदायत पर अटल रहे । 83।

और हे मूसा ! किस बात ने तुझे अपनी जाति से शीघ्रता पूर्वक अलग होने पर विवश किया ? । 84।

خُلِدِينَ قِبَهَاٰ وَذَلِكَ جَرَّاؤْمَنْ تَرَكِي ۖ
وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنَّ أَسْرِ
بِعِبَادِنِي فَأَصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقَى فِي الْبَحْرِ
يَبْسَأْ لَا تَخْفَ دَرَكًاٰ وَلَا تَخْفِي ۝
فَاتَّبَعُهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِنْ
الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝

وَأَصْلَلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَلَىٰ ۝
لِيَنْقَتَ اِسْرَاءُ عَلَىٰ قَذَانِي ۝ كُمْ مِنْ
عَدْقِ كُمْ وَعَدْنِ كُمْ جَانِبَ الظُّورِ
الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلُوَىٰ ۝
كُلُّوْمِنْ طَبِيبَتِ مَا رَزَقْنَكُمْ وَلَا تَطْغُوا
فِيهِ فَيَحِلُّ عَلَيْكُمْ غَضِيْنَ وَمِنْ
يَخْلُلُ عَلَيْهِ غَضِيْنَ قَدْهَوْيِ ۝

وَإِنَّ لَعْنَارِ لَمَنْ تَابَ وَأَمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحَاتِمَّ اهْتَدَى ۝

وَمَا آغْجَلَكَ عَنْ قَوْمَكَ يَمُوسَىٰ ۝

उसने कहा, वे मेरे ही पदचिह्नों पर हैं । और हे मेरे रब ! मैं इस कारण तेरी ओर शीघ्रता पूर्वक चला आया कि तू प्रसन्न हो जाए । 185।

उसने कहा, निःसन्देह तेरी जाति की तेरी अनुपस्थिति में हमने परीक्षा ली और सामरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया । 186।

तब मूसा अत्यन्त क्रोध और खेद करते हुए अपनी जाति की ओर वापस लौटा । उसने कहा, हे मेरी जाति ! क्या तुम्हारे रब ने तुम से एक बहुत अच्छा वादा नहीं किया था । फिर क्या तुम पर वादे की अवधि बहुत लम्बी हो गयी अथवा तुम यह निश्चय कर चुके थे कि तुम पर तुम्हारे रब का क्रोध उतरे ? अतः तुम ने मेरे साथ की हुई प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया । 187।

उन्होंने कहा, हमने तेरे प्रतिज्ञा का उल्लंघन अपनी इच्छा से नहीं किया । परन्तु हम पर जाति के आभूषणों का बोझ लादा गया था तो हमने उसे उतार फैका । फिर इस प्रकार सामरी ने जुगत लगाई । * 188।

फिर वह उनके लिए एक ऐसा बछड़ा बना लाया जो एक (निर्जीव) शरीर था जिसकी गाय जैसी आवाज थी । तब

قَالَ رَبُّهُمْ أَوْلَئِكُمْ عَلَىٰ أَثْرِيٍ وَعَجِلْتُ
إِلَيْكُمْ رَبِّ لِتَرْضِيٌ ⑦

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَّأَقْوَمَكُمْ مِنْ بَعْدِكُمْ
وَأَضَلْنَا مِنَ السَّارِمِيٍ ⑧

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضِبًا
أَسْفًاً قَالَ يَقُولُ الْمُرْيَدُ كُمْ رَبِّكُمْ
وَعَدَدَ حَسَنًاٰ أَفَطَالَ عَلَيْكُمْ الْعَهْدَ أَمْ
أَرْذَلْتُمْ أَنْ يَحْلِلَ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِنْ
رَبِّكُمْ فَأَخْلَقْتُمْ مَوْعِدِيٍ ⑨

قَالُوا مَا أَخْلَقْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا
وَلِكَنَّا حَمِلْنَا أَوْزَارًا مِنْ زِينَةِ النَّقْوُمِ
فَقَدْ فَهَاهَا فَكَذِلِكَ الْقَوْمِ السَّارِمِيٍ ⑩

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُوارٌ
فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُنَا مُوسَىٰ

* हज़रत मूसा अलै. की जाति अपने साथ जो आभूषण उठाए फिरती थी वह बहुत भारी थे । तो इस पर सामरी ने यह लालच दिया कि वह आभूषण मेरे हवाले करो, मैं इनसे तुम्हारे लिए एक बछड़ा बना दूँगा जो वास्तव में तुम्हारा उपास्य है । उस जाति ने सामरी को आभूषण देने का हज़रत मूसा अलै. के सामने यह बहाना बनाया कि वह हम पर बोझ था जो हमने उतार दिया ।

فَتَسْقِيٌ ﴿٦﴾

उन्होंने कहा, यह है तुम्हारा उपास्य
और मूसा का भी। वस्तुतः उससे भूल
हो गई। 189।

क्या वे देख नहीं रहे थे कि वह
(बछड़ा) उन्हें किसी बात का उत्तर
नहीं देता और उनके लिए न किसी
हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है और
न लाभ का? 190। (रुकू ۴۳)

हालाँकि हारून उनको पहले से कह
चुका था कि हे मेरी जाति! तुम इसके
द्वारा परीक्षा में डाले गए हो और
निःसन्देह तुम्हारा रब्ब अनंत कृपा करने
वाला है। अतः तुम मेरा अनुसरण करो
और मेरी बात मानो। 191।

उन्होंने कहा, हम इसके सामने अवश्य
बैठे रहेंगे, यहाँ तक कि मूसा हमारी ओर
लौट आए। 192।

उस (मूसा) ने कहा, हे हारून! जब
तूने उन्हें देखा कि वे पथभ्रष्ट हो रहे हैं,
तो तुझे किस बात ने (उनकी पकड़
करने से) रोका था। 193।

कि तू मेरा अनुसरण न करता? अतः क्या
तूने मेरे आदेश की अवज्ञा की? 194।

उसने कहा, हे मेरी माँ के पुत्र! तू मेरी
दाढ़ी और मेरा सिर न पकड़। मैं तो इस
बात से डर गया था कि कहीं तू यह न
कहे कि तूने बनी इस्माईल के बीच फूट
डाल दी और मेरे निर्णय की प्रतीक्षा न
की। 195।

उसने कहा, हे सामरी! तेरा क्या
मामला है? 196।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَا يَرْجِعُ إِلَيْهِنَّ قَوْلًا
وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٧﴾

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَرُونَ مِنْ قَبْلٍ يَقُولُ
إِنَّمَا قَاتَنَّنِي بِهِ ﴿٨﴾ وَلَمَّا رَأَكُمُ الرَّحْمَنُ
فَأَتَتْهُمْ عَوْنَى وَأَطْبَعَهُمْ أَمْرِي ﴿٩﴾

قَالُوا إِنَّنِي نَبْرَحُ عَلَيْهِ عِكْفِينَ حَتَّى
يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَى ﴿١٠﴾

قَالَ يَهْرُونَ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُ
ضَلَّوا ﴿١١﴾

أَلَا تَتَبَعِنَ ﴿١٢﴾ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي
قَالَ يَئْتُؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِإِلْحِيقٍ وَلَا
بِرَأْسِنِي ﴿١٣﴾ إِنِّي حَشِيشُ أَنْ تَقُولَ فَرَقْتَ
بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقِبْ قَوْلِي ﴿١٤﴾

قَالَ فَمَا حَطَبْتَكَ يَسَامِرِي ﴿١٥﴾

उसने कहा, मैंने वह बात जान ली थी जिसे ये नहीं जान सके। तो मैंने रसूल के पद-चिह्नों में से कुछ अपना लिया फिर उसे त्याग दिया। और मेरे मन ने मेरे लिए यही कुछ अच्छा करके दिखाया। 197।*

उसने कहा, चला जा। निश्चित रूप से आजीवन तेरा कहना यही होगा कि “कदापि न छुओ” और निःसन्देह तेरे लिए एक निर्धारित समय का वादा है जिसकी तुझ से वादा-खिलाफ़ी नहीं की जाएगी। और अपने इस उपास्य की ओर दृष्टि डाल जिसके समक्ष तू बैठा रहा। हम अवश्य उसे भस्म कर देंगे फिर उसे समुद्र में भली प्रकार बिखर देंगे। 198।***

निःसन्देह तुम्हारा उपास्य केवल अल्लाह ही है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं। वह ज्ञान की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को धेरे हुए है। 199।

इसी प्रकार हम उसकी खबरें तेरे समक्ष वर्णन करते हैं जो बीत चुका और हमने निश्चित रूप से अपनी ओर से तुझे अनुस्मारक-ग्रन्थ प्रदान किया है। 100।

- * सामरी ने अपना बहाना यह बनाया कि मैंने नुबूव्त के बारे में भाँप लिया था कि यह चालाकी है और इस कारण मैंने इसे एक और फेंक दिया और मेरे इस कर्म को मेरे मन ने अच्छा करके दिखाया।
- ** सामरी के इस अपराध के दंड स्वरूप हज़रत मूसा अलै. ने उसको कहा कि अब तू इस अवस्था में जीवित रह कि स्वंय कहा कर कि मुझे कोई न हुए। इससे ज्ञात होता है कि उसको कुछ रोग हो गया था और वह लोगों को अपने रोग से बचाने के लिए स्वंय आवाज़ दिया करता था कि मेरे निकट न आओ और मुझे हाथ न लगाओ। यह परम्परा यूरोप में पिछली शताब्दी तक प्रचलित रही है कि कुछ रोगियों को आदेश होता था कि वे अपने गले में घंटी बाँध कर चलें ताकि सड़क के दूसरी ओर भी लोगों को पता चल जाए कि कोई कुछ रोगी गुज़र रहा है।

قَالَ بَصَرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُ وَإِنِّي فَقَبْضَتُ
قَبْصَةً مِنْ آثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا
وَكَذَلِكَ سَوَّلْتُ لِي نَفْسِي^(٧)

قَالَ قَادْهَبْ قَلَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ
تَقُولَ لَا مِسَاسٌ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا نَّ
تُخْلَفُهُ وَانْظُرْ إِلَى الْهِلْكَةِ الَّتِي
ظَلَّتْ عَلَيْهِ عَاهِدًا لَنَحْرِقَةِ الْمَرْ
لَتَسْبِقَهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا^(٨)

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ^(٩)
وَسَعَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا^(١٠)

كَذَلِكَ تَقْصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا
قَدْ سَبَقَ^(١١) وَقَدْ أَتَيْتُكَ مِنْ لَذَّاتِ دُكْرَانِ^(١٢)

जो भी इससे विमुख हुआ तो क्रयामत के दिन अवश्य वह एक बड़ा बोझ उठाएगा ॥101॥

वे लम्बे समय तक इस (दशा) में रहने वाले हैं। और वह उनके लिए क्रयामत के दिन एक बहुत बुरा बोझ (सिद्ध) होगा ॥102॥

जिस दिन बिगुल फूंका जाएगा और उस दिन हम अपराधियों को इकट्ठा करेंगे अर्थात् (अधिकतर) नीली आँखों वालों को ॥103॥*

वे परस्पर धीरे-धीरे बातें कर रहे होंगे कि तुम केवल दस (दिन तक) रहे ॥104॥**

हम सब से अधिक जानते हैं जो वे कहेंगे। जब उनमें सबसे अच्छा मार्ग अपनाने वाला कहेगा कि तुम केवल एक दिन से अधिक नहीं रहे ॥105॥

(रुक् ١٤)

और वे तुझ से पर्वतों के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि उन्हें मेरा रब्ब टुकड़े-टुकड़े कर देगा ॥106॥

फिर वह उन्हें एक साफ चटियल मैदान बना छोड़ेगा ॥107॥

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمةَ
وِزْرًا

خَلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمةَ
حِمْلًا

يَوْمَ يُسَقَّحُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ
يَوْمَ مِيزَرْقَا

يَحْكَافُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَيْتَمْ إِلَّا عَشْرًا

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُونَ
أَمْثَالُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَيْتَمْ إِلَّا يَوْمًا

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَسْفَهُ
رَبِّي نَسْفًا

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفَصَفًا

* यहाँ जुर्कन शब्द से अभिप्राय नीली आँखों वाले लोग हैं। और सम्भवतः ईसाई जातियों का वर्णन है, जिनके बहुसंख्यक नीली आँखों वाले हैं।

** वे क्रयामत के दिन अपने महान सांसारिक प्रभुत्व को इतनी देर और दूर से देख रहे होंगे और परस्पर बातें करेंगे कि मानो उनका प्रभुत्व दस से अधिक नहीं रहा। इससे तात्पर्य है दस शताब्दियाँ, अर्थात् हजार वर्ष से अधिक। ईसाईयत के प्रभुत्व का इतिहास यही बताता है कि उनको हजार वर्ष तक प्रभुत्व प्राप्त था। हजार मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि व सल्लम की पहली तीन शताब्दियों के बाद पश्चिमी ईसाई जातियों का प्रभुत्व लगभग हजार वर्ष रहा है और इसके बाद पतन के चिह्न दिखने लगे।

तू उसमें न कोई टेढ़ापन देखेगा और न
उतार-चढ़ाव । 108।

उस दिन वे उस पुकारने वाले का
अनुसरण करेंगे जिसमें कोई कुटिलता
नहीं । और रहमान के सम्मान में
आवाज़ें धीमी हो जाएँगी और तू
कानाफूसी के अतिरिक्त कुछ न
सुनेगा । 109।

उस दिन, जिसके लिए रहमान अनुमति
दे और जिसके पक्ष में बात करने को वह
पसन्द करे उसके सिवा सिफारिश
(किसी को) लाभ न देगी । 110।

जो उन के सामने है और जो उनके पीछे
है वह जानता है । जबकि वे ज्ञान के बल
पर उसके अंत को पा नहीं सकते । 111।
और सदा जीवित और स्वयं प्रतिष्ठित
(अल्लाह) के समक्ष चेहरे झुक जाएँगे।
और जिसने कोई अत्याचार का बोझ
उठाया होगा वह असफल होगा । 112।

और वह जिसने मोमिन होने की अवस्था
में नेक कर्म किए होंगे तो वह किसी
अत्याचार अथवा अधिकार हनन का भय
नहीं करेगा । 113।

और इसी प्रकार हमने उसे सरल और शुद्ध
भाषा संपन्न कुरआन के रूप में उतारा है।
और उसमें प्रत्येक प्रकार की चेतावनी
वर्णन की हैं ताकि हो सके तो वे तकन्वा
धारण करें या वह उनके लिए कोई
शिक्षाप्रद चिह्न प्रकट कर दे । 114।

अतः अल्लाह, सच्चा सम्राट, अत्युच्च
मर्यादा सम्पन्न है । अतः कुरआन (के

لَا تَرَى فِيهَا عَوْجًا وَلَا أَمْتًا ⑩

يُومٌ إِذٍ يَتَبَعُونَ الدَّاعِيَ لَا عَوْجَ لَهُ
وَخَنَعَتِ الْأُصْوَاتُ لِرَحْمَنِ فَلَا
تَسْمَعُ إِلَّا هُمْ سَا ⑪

يُومٌ إِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَا عَةُ إِلَّا مَنْ أَذْنَ لَهُ
الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ⑫

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ⑬
وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَقِّ الْقَيْوَمِ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ⑭

وَمَنْ يَعْمَلُ مِنَ الصِّلْحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا يَخْفَ ظُلْمًا وَلَا هُمْ مَأْمُونًا ⑮

وَكَذِلِكَ أَنْزَلَنَا قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَفْنَا
فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَمُنَّ يَعْقُولُ أَوْ
يَحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ⑯

فَتَعْلَمَ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلُ

पढ़ने) में जल्दवाज़ी न किया कर इससे पूर्व कि उसकी वह ह तुम्ह पर पूर्ण कर दी जाए । और यह कहा कर कि हे मेरे रब्ब ! मुझे ज्ञान में बढ़ा दे । 115 ।

और निःसन्देह हमने इससे पूर्व आदम से भी वचन लिया था फिर वह भूल गया और (उसे भंग करने का) उसका कोई इरादा हमने नहीं पाया । 116 ।

(रुक् ٦٣)

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के लिए सजदः करो तो इब्लीस के सिवा सबने सजदः किया । उसने इनकार कर दिया । 117 ।

अतः हमने कहा, हे आदम ! निःसन्देह यह तेरा और तेरी पत्नी का शत्रु है । अतः यह कदाचित तुम दोनों को स्वर्ग से निकाल न दे, अन्यथा तू अभागा हो जाएगा । 118 ।

तेरे लिए निश्चित है कि न तू इसमें भूखा रहे और न नंगा । 119 ।

और यह (भी) कि न तू इसमें प्यासा रहे और न धूप में जले । 120 ।

अतः शैतान ने उसे भ्रम में डाल दिया । कहा, हे आदम ! क्या मैं तुम्ह एक ऐसे वृक्ष की जानकारी हूँ जो अमरत्व पाने का वृक्ष है । और एक ऐसे राज्य की जो कभी जीर्ण नहीं होगा । 121 ।

अतः दोनों ने उसमें से कुछ खाया और उनकी नग्नता उनपर प्रकट हो गयी । और वे स्वर्ग के पत्तों से अपने आप को ढांपने लगे । और आदम ने

بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ آنِ يُقْضَى إِلَيْكَ
وَحْيَةٌ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ⑩

وَلَقَدْ عِهْدَنَا إِلَى آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَتِيسَى وَلَمْ
نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ⑪

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلِئَكَةِ اسْجَدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِلِيلِيْسُ ۝ أَبِي ⑫

فَقُلْنَا يَا آدَمَ إِنَّ هَذَا عَدُوُّكَ
وَلِرَزْوِ جِلَّكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مَا مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْفَقِي ⑬

إِنَّكَ أَلَا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرِي ⑭
وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَى ⑮

فَوَسَوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ
أَذْلَكَ عَلَى شَجَرَةِ الْخَلْدِ وَمَلَكٍ
لَا يَبْلِي ⑯

فَأَكَلَ مِنْهَا فَبَدَثَ لَهُمَا سُؤَالُهُمَا وَظَفَقا
يَخْصِفِنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرِقِ الْجَنَّةِ ⑰

अपने रब्ब की अवज्ञा की और मार्ग से भटक गया । 122।

फिर उसके रब्ब ने उसे चुन लिया और प्रायश्चित्त स्वीकार करते हुए उस पर झुका और उसे हिदायत दी । 123।

उसने कहा, तुम दोनों सब साथियों के समेत इसमें से निकल जाओ इस अवस्था में कि तुम में से कुछ, कुछ के शत्रु हो चुके हैं । अतः निश्चित है कि जब भी मेरी ओर से तुम तक हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का अनुसरण करेगा तो न वह पथभ्रष्ट होगा और न अभागा रहेगा । 124।

और जो मेरी याद से विमुख होगा निःसन्देह उसके लिए अभावपूर्ण जीवन होगा और हम उसे क्यामत के दिन दृष्टिहीन बनाकर उठाएँगे । 125।

वह कहेगा, हे मेरे रब्ब ! तूने मुझे दृष्टिहीन क्यों उठाया है ? जबकि मैं दृष्टिवान हुआ करता था । 126।

उसने कहा, इसी प्रकार (होगा) । तेरे पास हमारी आयतें आती रहीं फिर भी तू उन्हें भुलाता रहा । अतः आज के दिन तू भी इसी प्रकार भुला दिया जाएगा । 127।

और इसी प्रकार हम उसे बदला देते हैं जिसने अपव्यय से काम लिया और वह अपने रब्ब की आयतों पर ईमान नहीं लाया और परलोक का अज्ञाब अधिक कठोर और देर तक रहने वाला है । 128।

وَعَصَى أَدْمَرَ رَبَّهُ فَعَوَى
⑩

لَمْ يَجْتَبِهِ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَى
⑪

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضَكُمْ
لِعَضِّ عَدُوٌّ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنْ هُنَّا
فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَىً فَلَا يَنْصَلِّ وَلَا يَشْفَى
⑫

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِنِي فَقَاتَ لَهُ مَعِيشَةً
ضَئِيلًا وَنَحْشَرُهُ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ أَعْلَى
⑬

قَالَ رَبِّ لِمَ حَسْرَتِي أَعْلَى وَقَدْ كُنْتُ
بَصِيرًا
⑭

قَالَ كَذِلِكَ أَتَشْكِ أَيْتَنَا فَنَسِيَّهَا
وَكَذِلِكَ الْيَوْمَ تُنسَى
⑮

وَكَذِلِكَ نَجْزِي مَنْ أَشْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ
بِإِيمَانِ رَبِّهِ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُ
وَأَبْقَى
⑯

अतः क्या यह बात उनकी हिदायत का कारण नहीं बनी कि उनसे पहले कितने ही युगों के लोगों को हमने तबाह कर दिया जिनके आवास स्थल में वे चलते फिरते हैं । निःसन्देह इसमें बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं । 129।

(रुक् ١٦)
और यदि तेरे रब्ब की ओर से एक बात और एक निर्धारित अवधि तय न हो चुकी होती तो वह एक चिमटे रहने वाला (अज्ञाव) बन जाता । 130।

अतः जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर । और सूर्य निकलने से पूर्व और उसके अस्त होने से पूर्व अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान कर । इसी प्रकार रात्रि की घड़ियों में और दिन के किनारों में भी गुणगान कर ताकि तुझे सन्तुष्टि प्राप्त हो जाए । 131।

और अपनी आँखें उस अस्थायी धन-सम्पत्ति की ओर न फैला जो हमने उनमें से कुछ समूहों को सांसारिक जीवन की शोभा स्वरूप प्रदान की है ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा करें । और तेरे रब्ब की (ओर से प्राप्त) जीविका उत्तम और अधिक देर तक रहने वाली है । 132।

और अपने घर वालों को नमाज की ताकीद करता रह और इस पर सदा अंडिग रह । हम तुझ से किसी प्रकार की जीविका की माँग नहीं करते । हम ही तो तुझे जीविका प्रदान करते हैं । और सुखद अंत तकवा ही का होता है । 133।

أَفَلَمْ يَقْدِلُهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولَئِكَ الظَّاهِرَاتِ^٦

وَلَوْلَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ
لِرَاجِمَةٍ أَجَلٌ مُّسَيَّرٌ^٧

فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَيَّخْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ ظُلُمَقِ الْشَّمْسِ وَقَبْلَ عَرْوَةِ
وَمِنْ آنَاءِ أَيْلِ فَسِّيجَ وَأَطْرَافَ الْهَمَارِ
لَعَلَّكَ تَرْضِي^٨

وَلَا تَمْدَنَ عَيْنِكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَا بِهِ
أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ رَهْرَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
لِتَفْتَهِمُ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَأَبْقِي^٩

وَأَمْرُ أَهْلَكَ بِالصَّلُوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا^{١٠}
لَا نَسْكُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ^{١١}
وَالْعَاقِبَةُ لِلشَّوْرِي^{١٢}

और वे कहते हैं कि वह अपने रब्ब की ओर से हमारे पास क्यों कोई एक चिह्न भी नहीं लाता । क्या उनके पास वह खुला-खुला उज्ज्वल प्रमाण नहीं आया जो पहले धर्मग्रन्थों में वर्णित है ? |134|

और यदि हम उन्हें इससे पूर्व किसी अज्ञाब से तबाह कर देते तो वे अवश्य कहते, हे हमारे रब्ब ! क्यों न तूने हमारी ओर रसूल भेजा, इससे पूर्व कि हम लांच्छित और अपमानित होते, तेरी आयतों का अनुसरण करते |135|

तू कह दे कि हर एक प्रतीक्षा में है अतः तुम भी प्रतीक्षा करो । फिर तुम अवश्य जान लोगे कि कौन सन्मार्ग को पाने वाले हैं । और वह कौन है, जिसने हिदायत पाई |136| (रुक् ۸/۱۷)

وَقَالُوا وَلَا يَأْتِنَا بِأَيِّ قِوْمٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ أَوْلَمْ
تَأْتِهِمْ بَيْنَهُمْ مَا فِي الصُّحْفِ الْأُولَى ۝

وَلَوْا إِنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهِ
لَقَالُوا رَبُّنَا لَوْلَا أَرْسَلَ إِلَيْنَا رَسُولًا
فَنَتَّيَعْ أَيْتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَذَلَّ
وَنَخُزِي ۝

قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبَّصُوا
فَسَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَبَ الْصِّرَاطَ
السَّوِيِّ وَمَنْ اهْتَدَى ۝

21- सूरः अल-अम्बिया

यह मक्की सूरः है और इसके अवतरण का समय नुबुव्वत का चौथा अथवा पाँचवां वर्ष है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 113 आयतें हैं।

पिछली सूरः के अन्त पर जिस हिसाब का उल्लेख था कि लोग उत्तरदायी होंगे और तुझ पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि तू ही हिदायत पर स्थित है, इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया कि वह हिसाब की घड़ी आ पहुँची है। परन्तु अधिकतर लोग इस बात से लापरवाह हैं।

फिर इस सूरः में कहा गया कि तुझ से पूर्व भी हम ने पुरुषों ही में से रसूल बनाकर भेजे थे। और उन्हें ऐसे शरीर प्रदान नहीं किये गये जो बिना खाये पिये जीवित रह सकें। यहाँ प्रासांगिक रूप से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के ईश्वरत्व का भी खण्डन किया गया है, क्योंकि वह तो जीवन भर खाते पीते रहे।

इसके तुरन्त बाद यह वर्णन किया गया कि ना समझ लोगों ने धरती में से ही उपास्य गढ़ लिए हैं। फिर एक महत्वपूर्ण तर्क इस बात पर यह दिया है कि दो अल्लाह हो ही नहीं सकते। यदि ऐसा होता तो धरती और आकाश में फ़साद फैल जाता और प्रत्येक अल्लाह अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता। और ब्रह्माण्ड में ऐसा बिगाढ़ और फ़साद पैदा होता कि फिर कभी दूर न हो सकता। हालाँकि ब्रह्माण्ड में जिधर भी दृष्टि डालो उसमें द्वित्वभाव का कोई नामो-निशान तक नहीं मिलता। इसी लिए कहा कि हमने इस से पूर्व भी जितने रसूल भेजे उनकी ओर भी वहाँ करते रहे कि एक अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं।

आयत संख्या 27 में उन के झूठे दावा का वर्णन है कि अल्लाह तआला ने एक बेटा बना लिया है। परन्तु जब भी एक बेटे को काल्पनिक उपास्य बनाया जाए तो फिर वह एक काल्पनिक उपास्य नहीं रहता बल्कि इस कल्पना में और भी उपास्य शामिल कर दिए जाते हैं। अतएव तुरन्त बाद कहा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भाँति अल्लाह तआला के और भी अनेक पवित्र भक्त हैं जिनको अल्लाह का साज़ीदार ठहराया गया।

इसके तुरन्त बाद एक ऐसी आयत है जो ब्रह्माण्ड के रहस्यों से ऐसा पर्दा उठाती है जो उस समय के मनुष्य की कल्पना में भी नहीं आ सकता था। कहा, यह सारा ब्रह्माण्ड मज़बूती से बंद किए हुए एक ऐसे गेंद के रूप में था जिसमें से कोई वस्तु बाहर निकल नहीं सकती थी। फिर हमने उसको फाड़ा और अचानक सारा ब्रह्माण्ड उसमें से फूट पड़ा। और फिर पानी के द्वारा प्रत्येक जीवित वस्तु को उत्पन्न किया। पानी के तुरन्त बाद पहाड़ के साथ उस पानी के उत्तरने की प्रक्रिया का वर्णन कर दिया गया। फिर यह

उल्लेख किया कि किस प्रकार से आकाश, धरती और उसके निवासियों की सुरक्षा करता है। फिर धरती और आकाश तथा समस्त ग्रह नक्षत्रों के स्थायी परिक्रमण का वर्णन किया। और जिस प्रकार धरती और आकाश स्थायी नहीं हैं इसी प्रकार यह भी ध्यान दिलाया कि मनुष्य भी स्थायी रहने वाला नहीं है और कहा, हे रसूल ! तुझ से पहले जितने लोग जीवित थे उनमें से किसी को भी स्थायित्व प्रदान नहीं किया गया।

फिर इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व के समस्त नवियों का उल्लेख है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनको अपनी 'रहमानियत' का लाभ पहुँचाया। और यह अटल विषय वर्णन कर दिया कि जब किसी वस्ती के निवासियों को एक बार तबाह कर दिया जाये तो वे दोबारा कभी उसकी ओर लौटकर नहीं आएँगे। यहाँ तक कि या 'जूज मा' जूज के समय में भी जब वैज्ञानिक मुर्दों को जीवित करने का दावा करेंगे, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हो सकेगा।

इस सूरः में आगे चल कर धरती और आकाश को ध्वंस कर देने का वर्णन है। और साथ ही यह भी कहा गया कि यह सदा के लिए नहीं, बल्कि यह ब्रह्माण्ड जो एक बार अस्तित्व विहीन हो जाएगा, इसके स्थान पर नये ब्रह्माण्ड का निर्माण किया जाएगा। इस प्रक्रिया की पुनरावृत्ति करते रहने पर अल्लाह तआला समर्थ है।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में हज़रत मुहम्मद सल्ल. को समस्त संसार के लिए रहमान अल्लाह का द्योतक घोषित करते हुए कहा कि तुझे भी हम ने समस्त संसार के लिए कृपा स्वरूप बनाकर भेजा है।

इस सूरः की अन्तिम आयत में हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने रब्ब के समक्ष यह विनती करते हैं कि तू मेरे और मेरे जुठाने वालों के बीच सत्य के साथ निर्णय कर। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. रहमान अल्लाह के प्रतिनिधि हैं। इसलिए समस्त जगत को सतर्क कर रहे हैं कि रहमान अल्लाह अपने इस भक्त को अकेला नहीं छोड़ेगा जो समस्त संसार के लिए उसकी रहमानियत का द्योतक है।

इस सूरः के बाद सूरः अल-हज्ज आती है जो इस बात का ठोस प्रमाण है कि समस्त जगत के मनुष्यों के लिए हज़रत मुहम्मद सल्ल. कृपा स्वरूप प्रकट हुए हैं। और बैतुल्लाह (खाना का'बा) वह एक मात्र स्थान है जहाँ हज्ज करने के लिए समस्त जगत के मनुष्य उपस्थित होते हैं।



سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا تَرَأَى وَ سَمِعَ رُكُونَ عَابِرِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अंनत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

लोगों के लिए उनके हिसाब (का समय) निकट आ चुका है । और वे इस के बावजूद असावधानता पूर्वक मुँह फेरे हुए हैं । 12।

उनके पास जब भी कोई नया अनुस्मरण उनके रब्ब की ओर से आता, वे उसे इस प्रकार सुनते हैं कि मानो वे खिल्ली उड़ा रहे हों । 13।

इस अवस्था में कि उनके दिल बेखबर होते हैं । और जिन लोगों ने अत्याचार किया उन्होंने अपने गुप्त परामर्शों को छिपा रखा है । क्या यह तुम जैसे मनुष्य के सिवा भी कुछ है ? अतः क्या तुम जादू की ओर बढ़े जाते हो, हालांकि तुम देख रहे हो ? । 14।

उसने कहा, मेरा रब्ब प्रत्येक बात को जो आसमान में है और धरती में है खूब जानता है । और वह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 15।

इसके विपरीत उन्होंने कहा कि ये निरर्थक स्वप्न हैं बल्कि उसने यह भी झूठ से गढ़ा है । वास्तव में यह तो केवल एक कविता है । अतः चाहिए कि यह हमारे पास कोई बड़ा चिह्न लाए जिस प्रकार पहले पैगम्बर भेजे गए थे । 16।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

إِقْرَبَ لِلثَّالِثِ حِسَابَهُمْ وَهُمْ فِي
غُفَلَةٍ مُعَرِّضُوْنَ ②

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدِّثٌ
إِلَّا شَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ③

لَا إِلِهَ إِلَّا هُوَ قُلُوبُهُمْ وَأَسْرُوا النَّجُوْرِ
الَّذِينَ ظَلَمُوا هُلْ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ أَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَأَنْتُمْ
شَيْرُوْنَ ④

فَلَرَبِّنِ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤

بَلْ قَالُوا أَصْغَاثُ أَحْلَامٍ بِلْ افْتَرَاهُ
بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلِيَأْتِنَا بِاِيَّهٖ كَمَا
أَرْسَلَ الْأَوْلَوْنَ ⑥

उनसे पहले कोई बस्ती जिसे हमने तबाह कर दिया हो ईमान नहीं लाई थी। तो फिर क्या ये ईमान ले आएँ ? 17।

और तुझ से पहले हमने केवल पुरुषों को ही (नबी बनाकर) भेजा जिनकी ओर हम वहाँ करते थे । अतः (पूर्ववर्ती) पुस्तक वालों से पूछ लो, यदि तुम नहीं जानते । 18।

और हमने उन्हें ऐसा शरीरधारी नहीं बनाया था कि वे भोजन न करते हों और वे सदा रहने वाले नहीं थे । 19।*

फिर हमने उनसे किया हुआ वादा सच्चा कर दिखाया । अतः हमने उनको और उसे जिसे हमने चाहा मुक्ति प्रदान की । और सीमा उल्लंघन करने वालों को तबाह कर दिया । 10।

निःसन्देह हमने तुम्हारी ओर वह पुस्तक उतारी है जिसमें तुम्हारे लिए उपदेश है। अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 11। (रुक् ।)

और कितनी ही बस्तियों को हमने तबाह कर दिया जो अत्याचार करने वाली थीं । और उनके पश्चात हमने दूसरे लोगों को पैदा कर दिया । 12।

अतः जब उन्होंने हमारे अज्ञाब को भाँप लिया तो सहसा वे उससे भागने लगे । 13।

भागो मत और उस स्थान की ओर वापस जाओ जहाँ तुम्हें सुख-समृद्धि

مَا أَمْنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَا
أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ⑦

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحٌ
إِلَيْهِمْ فَسَلَّوْا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ⑧

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَا يَكُونُ الظَّعَامَ
وَمَا كَانُوا أَخْلِدِينَ ⑨

لَئِنْ صَدَقُوكُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجِينُهُمْ وَمَنْ
لَشَاءَ وَأَهْلَكُنَا الْمُسْرِفُينَ ⑩

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑪

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَائِنَةً ظَالِمَةً
وَأَنْسَانًا بَعْدَهَا قَوْمًا أَخْرِيْنَ ⑫

فَلَمَّا آتَحْسَوْا بِأَسْنَانَ إِذَا هُمْ مِّنْهَا
بَرَكْسُونَ ⑬

لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ

* इस आयत से ज्ञात होता है कि कोई भी नबी संसार में ऐसा नहीं आया जो भोजन किये बिना जीवित रहता था । अतः किसी नबी को जो भोजन करता रहा हो असाधारण रूप से दीर्घायु प्राप्त नहीं हुई।

प्रदान की गई थी और अपने घरौंदों
की ओर (लौटो) ताकि तुमसे पूछा
जाए । 141

उन्होंने कहा हाय खेद हम पर ! हम
निश्चित रूप से अत्याचार करने वाले
थे । 145

अतः यही उनकी पुकार रही । यहाँ तक
कि हमने उन्हें कटी हुई उजाइ खेतियों
की भाँति बना दिया । 146

और हमने आकाश और धरती को और
जो कुछ इनके बीच है खेल-तमाशा
करते हुए पैदा नहीं किया । 147

यदि हम चाहते कि कोई मनोविनोद
करें, यदि हम (ऐसा) करने वाले होते,
तो हम उसे स्वयं अपना लेते । 148

बल्कि हम सत्य को मिथ्या पर पटकते हैं
तो वह उसे कुचल डालता है । और
सहसा वह मिट जाता है । और जो तुम
बातें बनाते हो उसके कारण तुम्हारा
सर्वनाश हो । 149

और उसी का है जो आसमानों और धरती
में है । और जो उसके निकट रहते हैं वे
उसकी उपासना करने में अहंकार से काम
नहीं लेते और न कभी थकते हैं । 150

वह रात और दिन स्तुति करते हैं (और)
कोई सुस्ती नहीं करते । 151

क्या उन्होंने धरती में से ऐसे उपास्य बना
लिए हैं जो पैदा (भी) करते हैं ? । 152

यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में
अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य होते

فِيهِ وَمَسِكِنُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُونَ ⑯

قَاتُوا يَوْمَنَا إِنَّا كُنَّا ظَلَمِينَ ⑰

فَمَا زَانَ ثُلُكَ دَعْوَيْهِمْ حَتَّى جَعَلُهُمْ
حَسِيدًا أَخْمَدِينَ ⑱

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْتَهُمَا
لِعِيشَنَ ⑲

لَوْ أَرَذْنَا أَنْ تَتَخَذَ لَهُمَا لَا تَتَخَذُنَهُ
مِنْ لَذَنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ⑳

بِلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ
فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۝ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا
تِصْفُونَ ㉑

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ وَمَنْ
عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحِرُونَ ㉒

يُسَيِّخُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتَرُونَ ㉓

أَمْ تَتَخَذُوا إِلَهَةً مِنَ الْأَرْضِ هُمْ
يَنْسِرُونَ ㉔

لَوْكَانَ فِيهِمَا إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ㉕

तो दोनों तबाह हो जाते । अतः जो वे वर्णन करते हैं उससे पवित्र है अल्लाह (जो) अर्श का रब्ब (है) । १२३।

जो वह करता है उसपर वह पूछा नहीं जाता जबकि वे पूछे जाएँगे । १२४।

क्या उन्होंने उसके सिवा और उपास्य बना रखे हैं ? तू कह दे कि अपना स्पष्ट प्रमाण लाओ । यह अनुस्मरण उनका है जो मेरे साथ हैं और उनका (भी) अनुस्मरण है जो मुझ से पहले थे । परन्तु उनमें से अधिकतर लोग सत्य का ज्ञान नहीं रखते और वे विमुख होने वाले हैं । १२५।

और हमने तुझ से पहले जो भी रसूल भेजा है, हम उसकी ओर वहाँ करते थे कि निःसन्देह मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः मेरी ही उपासना करो । १२६।

और उन्होंने कहा कि रहमान (अल्लाह) ने बेटा अपना लिया है । पवित्र है वह । वे सम्माननीय भक्त हैं । १२७।

वे उसकी बातों से आगे नहीं बढ़ते और वे उसी की आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं । १२८।

वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है । और वे केवल उसी की सिफारिश करते हैं जिससे वह प्रसन्न हो और वे उसके प्रताप से डरते रहते हैं । १२९।

और उनमें से जो कहे कि मैं उसके सिवा उपास्य हूँ तो वही है जिसे हम

فَبِحُكْمِ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصْفُوْنَ ③

لَا يَسْأَلُ عَمَّا يَعْمَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ④

**أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُوْنِهِ أَلِهَةً قُلْ هَانُوا
بِرْهَانَكُمْ هَذَا ذِكْرٌ مِنْ مَعِيَ وَذِكْرٌ
مَنْ قَبْلَكُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ**

الْحَقُّ فِيهِمْ مُعْرِضُونَ ⑤

**وَمَا آرَى سَلَّنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ
إِلَّا نُوحٌ إِلَيْهِ أَتَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا
فَاعْبُدُونَ ⑥**

**وَقَالُوا أَتَخَذَ الرَّحْمَنَ وَلَدًا أَسْبَخْتَهُ
بَلْ عِبَادٌ مُكَرَّمُونَ ⑦**

**لَا يَسْقُوْنَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ
يَعْمَلُونَ ⑧**

**يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يَشْعُوْنَ ۚ إِلَّا مَنِ ارْتَضَى وَهُمْ مِنْ
خَشِيَّتِهِ مَسْفَقُونَ ⑨**

وَمَنْ يَقُلُّ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُوْنِهِ

नरक का प्रतिफल देंगे । इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिफल दिया करते हैं । 130। (रुक् 2)

क्या उन्होंने देखा नहीं जिन्होंने इनकार किया कि आसमान और धरती दोनों दृढ़ता पूर्वक बन्द थे । फिर हमने उनको फाइ कर अलग कर दिया और हमने पानी से प्रत्येक सजीव वस्तु उत्पन्न की । तो क्या वे ईमान नहीं लाएँगे ? 131।

और हमने धरती में पर्वत बनाए ताकि वे उनके लिए आहार उपलब्ध करें । और हमने उसमें खुले मार्ग बनाए ताकि वे हिदायत प्राप्त करें । 132।

और हमने आकाश को सुरक्षित छत के रूप में बनाया और वे उसके चिह्नों से मुँह फेरे हुए हैं । 133।

और वही है जिसने रात और दिन को और सूर्य और चन्द्रमा को पैदा किया । सब (अपने-अपने) कक्ष में गतिशील हैं । 134।

और हमने किसी मनुष्य को तुङ्ग से पहले अमरत्व प्रदान नहीं किया । अतः यदि तू मर जाए तो क्या वे सदैव रहने वाले होंगे ? 135।*

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है । और हम बुराई और भलाई

فَذِلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ كَذِلِكَ نَجْزِي
الظَّالِمِينَ ④

أَوْلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَقَسَّاهُمَا ۚ وَجَعَلْنَا
مِنْ أَنْمَاءِ كُلِّ شَئْ خَيْرًا ۖ أَفَلَا
يُؤْمِنُونَ ⑤

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَابِسًا أَنْ
تَمْيِدَهُمْ ۚ وَجَعَلْنَا قِبَلَهَا فِي جَاجَاسِبِلًا
لَعْلَهُمْ يَهْتَدُونَ ⑥

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَخْفُوظًا ۖ وَهُمْ
عَنِ ابْيَهَا مَعْرِضُونَ ⑦

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الْأَيْلَ وَالثَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي قَلْبٍ يَسْبَحُونَ ⑧

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخَلْدَ ۖ
أَفَإِنْ قَتَّ فَهُمُ الْخَلِدُونَ ⑨

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ

* हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके कहा गया है कि तुङ्ग से पहले किसी को भी हमने असाधारण रूप से लम्बी आयु प्रदान नहीं की । यह कैसे हो सकता है कि तू मृत्यु को प्राप्त हो जाए जबकि दूसरे असाधारण रूप से लम्बी आयु पायें ? इस आयत से हज़रत ईसा अलै. की मृत्यु भी स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है ।

के द्वारा तुम्हारी कठोर परीक्षा लेंगे ।
और हमारी ओर (ही) तुम लौटाए
जाओगे । 136।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, जब
भी तुझे देखते हैं तो तुझे केवल (यह
कहते हुए) उपहास का पात्र बनाते हैं
कि क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे
उपास्यों के बारे में बातें करता है ? और
ये वही लोग हैं जो रहमान के स्मरण का
इनकार करते हैं । 137।

मनुष्य को उतावलापन प्रवृत्ति-युक्त
पैदा किया गया है । मैं अवश्य तुम्हें
अपने चिह्न दिखाऊँगा । अतः मुझ से
जल्दी करने की माँग न करो । 138।

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो
तो यह वादा कब पूरा होगा ? । 139।

काश ! वे लोग जो काफिर हुए ज्ञान
रखते (कि उनका कुछ बस न चलेगा)
जब वे अग्नि को न अपने चेहरों से रोक
सकेंगे और न अपनी पीठों से । और न
ही उन्हें सहायता दी जायेगी । 140।

बल्कि वह (घड़ी) उन तक सहसा
आएगी और उन्हें हतप्रभ कर देगी । और
वे उसे (अपने से) परे हटा देने का
सामर्थ्य नहीं रखेंगे । और न ही वे ढील
दिए जाएँगे । 141।

और तुझ से पहले रसूलों से भी उपहास
किया गया । अतः जिन्होंने उन
(रसूलों) से उपहास किया उन्हें उन्हीं
बातों ने घेर लिया जिनके द्वारा वे

وَيَنْلَوُكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۝
وَإِيَّا تُرْجَعُونَ ④

وَإِذَا رَأَكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَئْتِ خَدْوَنَكَ
إِلَّا هُرُوا ۝ أَهْذَا الَّذِي يَذْكُرُ الْهَتَّكُمْ ۝

وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَنِ هُمْ كَفِرُونَ ⑤

خَلْقَ الْإِنْسَانَ مِنْ جَعَلٍ ۝ سَأُورِيْكُمْ أَيْتُ
فَلَا تَسْتَعْجِلُونَ ⑥

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِيْنَ ⑦

لَوْيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُونَ
عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّازَ وَلَا عَنْ
ظَهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يَصْرُونَ ⑧

بِلْ تَأْيِيْهُمْ بَعْثَةً قَبْهِهِمْ فَلَا يَسْطِيعُونَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ⑨

وَلَقَدِ اسْتَهْزَئَ بِرَسُولِيْ مِنْ قَبْلِكَ
فَعَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا

उपहास किया करते थे । 42।

(रुक् ۳)

तू कह दे, कौन है जो रात को और दिन को तुम्हें रहमान की पकड़ से बचा सकता है ? बल्कि वे तो अपने रब्ब के स्मरण से ही विमुख हो बैठे हैं । 43।

क्या उनके ऐसे उपास्य हैं जो हमारे विरुद्ध उनका बचाव कर सकें ? वे तो स्वयं अपनी सहायता का भी सामर्थ्य नहीं रखते और न ही हमारी ओर से उनका साथ दिया जाएगा । 44।

बल्कि हमने उनको भी और उनके पूर्वजों को भी कुछ लाभ पहुँचाया । यहाँ तक कि उन पर आयु दीर्घ हो गई। अतः क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आते हैं ? तो क्या वे फिर भी विजयी हो सकते हैं ? । 45।

तू कह दे कि मैं तो तुम्हें केवल वहइ के द्वारा सचेत करता हूँ । और बहरे लोग बुलावा नहीं सुनते जब वे सचेत किए जाते हैं । 46।

और यदि उन्हें तेरे रब्ब के अज्ञाव की कोई लपट छूएगी तो अवश्य कहेंगे कि हाय हमारा सर्वनाश ! निःसन्देह हम अत्याचार करने वाले थे । 47।

और हम न्याय के तराजू क्यामत के दिन के लिए स्थापित करेंगे । अतः किसी जान पर लेश मात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा । चाहे राई के दाने के

۶۴

يَهُوَ يَسْمَعُ مِنْ

قُلْ مَنْ يَكُلُّ كُمْ بِإِلَيْنِ وَالْهَمَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ لَبْلَهُمْ عَنْ ذُكْرِ رَبِّهِمْ مُّغْرِضُونَ ④

أَمْ لَهُمْ أَلَهٌ تَمْتَعُهُمْ قُلْ دُونِنَا لَا يَسْطِيعُونَ نَصْرًا أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَ الْيَصْحَاجِينَ ⑤

بَلْ مَتَّخَنَاهُ لَا وَأَبَاءُهُمْ حَلَّ طَالِ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ لَأَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي إِلَرَضَ شَقَّصَهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغُلَبِيُونَ ⑥

قُلْ إِنَّمَا أَنْذِرْ كُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّصُّ الدُّعَاءِ إِذَا مَا يُنْذَرُونَ ⑦

وَلَئِنْ كُمْ مَسْتَهْمُ نَفْحَةٌ مِنْ عَذَابٍ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يُوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَلَمِينَ ⑧

وَنَصَعُ الْمَوَازِينَ الْقُسْطُلُ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تَظْلِمْ نَفْسَ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مُثْقَلَ

समान भी कुछ हो हम उसे उपस्थित करेंगे। और हम हिसाब लेने की दृष्टि से पर्याप्त हैं। 148।

और निःसन्देह हमने मूसा और हारून को फुर्कान (सत्य और असत्य में प्रभेदक) और प्रकाश तथा मुत्तकियों के लिए अनुस्मारक-ग्रन्थ प्रदान किया। 149।

(अर्थात्) उन लोगों के लिए जो अपने रब्ब से परोक्ष में डरते रहते हैं और निश्चित घड़ी का भय रखते हैं। 150।

और यह मंगलमय अनुस्मारक-ग्रन्थ है जिसे हमने उतारा है। तो क्या तुम इसका इनकार कर रहे हो? 151। (रुक् 4/4)

और निःसन्देह हमने इब्राहीम को पहले ही उसकी हिदायत प्रदान की थी। और हम उसके बारे में ख़ूब जानकारी रखते थे। 152।

जब उसने अपने पिता से और अपनी जाति से कहा, ये मूर्तियाँ क्या चीज़ हैं जिनके लिए तुम समर्पित हुए बैठे हो? 153।

उन्होंने कहा, हमने अपने बाप-दादा को इनकी पूजा करते हुए पाया। 154।

उसने कहा, तो फिर तुम भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली-खुली पथभ्रष्टता में पढ़े रहे। 155।

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास कोई सत्य लाया है अथवा तू केवल मनोविनोद करने वालों में से है? 156।

उसने कहा, बल्कि तुम्हारा रब्ब आसमानों और धरती का रब्ब है जिसने उनको उत्पन्न किया। और मैं

حَبَّةٌ مِّنْ حَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا
خَسِينَ ④

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى وَهَرُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُمْقِنِينَ ⑤

الَّذِينَ يَحْسُنُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنَ
السَّاعَةِ مُسْفِقُونَ ⑥

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبَرَّكٌ أَنْزَلْنَاهُ إِنَّكُمْ لَهُ
مُشْكِرُونَ ⑦

وَلَقَدْ أَتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رَسْدَةً مِنْ قَبْلِ
وَكُنَّا بِهِ عَلِمِينَ ⑧

إِذْ قَالَ لَأُبِيِّهِ وَقَوْمِهِ مَا هُنْ دُهْنُهُ التَّمَاثِيلُ
إِنَّكُمْ لَهَا عَكِفُونَ ⑨

قَالُوا وَجَدْنَا أَبَائَنَا لَهَا عَبْدِينَ ⑩

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي
صَلَلٍ مُّبِينِ ⑪

قَالُوا أَجِئْنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنْ
اللَّعْبِينَ ⑫

قَالَ بَلَّ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
الَّذِي فَطَرَهُنَّ ⑬ وَأَنَا عَلَى ذِلْكُمْ

तुम्हारे लिए इस पर गवाही देने वालों
में से हूँ । ५७।

और अल्लाह की क्रसम ! तुम्हारे पीठ
फेर कर चले जाने के पश्चात् मैं
तुम्हारे मूर्तियों के विरुद्ध कुछ योजना
बनाऊँगा । ५८।

अतः उसने उनको टुकड़े-टुकड़े कर दिया
सिवाए उनकी बड़ी (मूर्ति) के । ताकि वे
उसकी ओर लौट कर आएँ । ५९।

उन्होंने कहा, हमारे उपास्यों के साथ
ऐसा किसने किया है ? निःसन्देह वह
अत्याचारियों में से है । ६०।

उन्होंने कहा, हमने एक युवक को सुना
था जो उनकी चर्चा कर रहा था । उसे
इब्राहीम कहते हैं । ६१।

उन्होंने कहा, फिर उसे लोगों की
दृष्टि के सामने ले आओ ताकि वे
देख लें । ६२।

उन्होंने कहा, हे इब्राहीम ! क्या तूने
हमारे उपास्यों के साथ यह कुछ
किया है ? । ६३।

उसने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने यह
कार्य किया है । अतः उनसे पूछ लो यदि
वे बोल सकते हैं । ६४।*

٦٣١. مِنَ الشُّهَدَاءِ

وَتَاللَّهُ لَا كَيْدَنَ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ
تُوَفُوا مَذْبُرِينَ ⑥

فَجَاهُمْ جَهْدًا إِلَّا كِيرًا لَّهُمْ لَعْنَهُمْ
إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ⑦

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا إِلَيْهِ تَنَاهَى إِنْ
الظَّلَمِيْنَ ⑧

قَالُوا سِعْنَا فَقَرْبًا يَذْكُرُهُمْ يَقَالُ لَهُ
إِبْرَاهِيمُ ⑨

قَالُوا فَأَتُوَابِهِ عَلَى أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَسْهُدُونَ ⑩

قَالُوا إِنَّكَ أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِإِلَهِنَا
يَا إِبْرَاهِيمُ ⑪

قَالَ بُلْ فَعَلَهُ كِيرًا لَّهُمْ هَذَا
فَسْأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا يَطْقُونَ ⑫

* इस आयत के बारे में कहा जाता है कि बल फ़अल्हू (बल्कि इस ने किया है) के बाद विराम किया जाए ताकि यह परिणाम निकले कि किसी ने किया है । परन्तु मेरे निकट इसकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हजरत इब्राहीम अलै. ने स्वयं ही सबको बता दिया था कि मैं तुम्हारे उपास्यों के साथ कुछ करने वाला हूँ । इस लिए यह झूठ नहीं । बल्कि एक असम्भव बात को सम्भव के रूप में प्रस्तुत करना तर्क की एक शैली है जो विशेषकर हजरत इब्राहीम अलै. को प्राप्त थी । उन के विरोधियों में से एक ने भी इस बात को नहीं माना कि उन मूर्तियों में से बड़ी मूर्ति ने सब को तोड़ा है और इस बात को असम्भव समझना उनकी इस आस्था को झूठा साबित करता है कि उनके उपास्यों में कुछ शक्ति है ।

फिर वे अपने साथियों की ओर चले गए और कहा कि निःसन्देह तुम ही अत्याचारी हो । 165।

फिर उनके सिर शर्मिंदगी से झुक गए (और वे बोले) निश्चित रूप से तू जानता है कि ये बात नहीं करते । 166।

उसने कहा, फिर क्या तुम अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हो जो न तुम्हें लेश मात्र लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है ? । 167।

तुम पर और उस पर खेद है जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 168।

उन्होंने कहा, यदि तुम कुछ करने वाले हो तो इसको जला डालो और अपने उपास्यों की सहायता करो । 169।

हमने कहा, हे अग्नि ! तू ठंडी पड़ जा और सलामती बन जा इब्राहीम के लिए । 170।*

और उन्होंने उससे एक चाल चलने का इरादा किया तो हमने स्वयं उन्हीं को ही पूर्ण रूपेण असफल कर दिया । 171।

और हम उसे और लूट को एक ऐसी धरती की ओर सुरक्षित बना लाए जिसमें हमने समस्त जगत के लिए बरकत रखी थी । 172।

* यहाँ अग्नि से अभिप्राय विरोध की अग्नि भी है और वास्तविक अग्नि भी हो सकती है । अतः वर्तमान युग में हज़रत मसीह मौजूद अलैहिस्सलाम को यह ईश्वराणी प्राप्त हुई थी कि “मुझे आग से मत डराओ क्योंकि आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है ।” (अरबईन नं. 3, रुहानी खज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 429) अग्नि के ठंडा पड़ जाने से अभिप्राय यह है कि उसकी ज्वलनशीलता में किसी को भ्रस्म करने की शक्ति नहीं रहेगी बल्कि वह अग्नि स्वतः ठंडी पड़ जाएगी ।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنْقَسِهِمْ فَقَاتُو إِنَّكُمْ أَنْتُمْ
الظَّالِمُونَ ﴿٦﴾

لَمْ يَنْكُسُوا عَلَىٰ رُءُوفِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا هُوَ لَاءٌ يَطْقُونَ ﴿٧﴾

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا
لَا يَقْعُدُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَصْرِكُمْ ﴿٨﴾

أَفِ الْكُفَّارُ لِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٩﴾

قَالُوا حَرِقُوهُ وَالصُّرُقُوا إِلَهَكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ فُعْلَمُينَ ﴿١٠﴾

قُلْنَا يَنْأِرُ كَوْنُ بَرْدًا وَسَلَمًا عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ ﴿١١﴾

وَأَرَادُوا إِبْرَاهِيمَ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ﴿١٢﴾

وَنَجَيَّبَنَاهُ وَلَوْطًا إِلَىٰ الْأَرْضِ الَّتِي
بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَلَمِينَ ﴿١٣﴾

और उसे हमने इसहाक प्रदान किया और पोते के रूप में याकूब और सबको हमने सदाचारी बनाया था । 73।

और हमने उन्हें ऐसे इमाम बनाया जो हमारे निर्देश से हिदायत देते थे और हम उन्हें अच्छी बातें करने और नमाज़ कायम करने और ज़कात देने की वहइ करते थे और वे हमारी उपासना करने वाले थे । 74।

और लूट को हमने विवेचन-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और हमने उसे ऐसी बस्ती से मुक्ति प्रदान की जो दुष्कर्म किया करती थी । निःसन्देह वे एक बड़ी बुराई में लिप्त कुर्कमी लोग थे । 75।

और हमने उसे अपनी कृपा में प्रविष्ट किया । निःसन्देह वह सदाचारियों में से था । 76। (रुक् ٥)

और नूह (की भी चर्चा कर) इससे पूर्व जब उसने पुकारा तो हमने उसे उसकी पुकार का उत्तर दिया और उसे और उसके परिवार को एक बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की । 77।

और हमने उन लोगों के विरुद्ध उसकी सहायता की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया था । निःसन्देह वे एक बड़ी बुराई में लिप्त लोग थे । फिर हमने उन सब को दुबो दिया । 78।

और दाऊद और सुलैमान (की भी चर्चा कर) जब वे दोनों एक खेत के बारे में निर्णय कर रहे थे जबकि उसमें लोगों

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ ۖ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً
وَكَلَّا جَعَلْنَا صَلِحِينَ ⑦

وَجَعَلْنَاهُمْ أَيْمَةً يَهْدُونَ بِإِمْرِنَا
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فَعْلَ الْخَيْرِ وَإِقَامَ
الصَّلَاةَ وَإِيتَاءِ الزَّكُورَةِ ۖ وَكَانُوا
لَنَا عِبَادٍ ۗ ⑧

وَلُوطًا أَتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ
مِنِ الْقُرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَيْرَ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا سُوءً فَسِيقِينَ ۙ

وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُ مِنَ
الصَّالِحِينَ ۙ ⑨

وَنُوحًا أَذْنَادِي مِنْ قَبْلِ فَاسْتَجَبْنَا
لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۙ ⑩

وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا سُوءً فَأَغْرَقْنَاهُمْ
أَجْمَعِينَ ۙ ⑪

وَدَاؤَدَ وَسَلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُونَ فِي الْحَرْثِ
إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنْمَ الْقَوْمِ ۖ وَكَنَّا

की भेड़ बकरियाँ रात को चर गई थीं
और हम उनके निर्णय का निरीक्षण कर
रहे थे 179।

अतः हमने सुलैमान को वह बात
समझा दी और प्रत्येक को हमने
विवेचन-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया
और हमने दाऊद के साथ (अल्लाह
के) गुणगान करते हुए पर्वतों को और
पक्षियों को भी सेवा पर लगा दिया
और हम ही (यह सब कुछ) करने
वाले थे 180।*

और तुम्हारे लिए हमने उसे कवच
बनाने की कला सिखाई ताकि वह
तुम्हें तुम्हारी लड़ाइयों (की आधात)
से बचाएँ । अतः क्या तुम कृतज्ञ
बनोगे ? 181।

और सुलैमान के लिए (हमने) तेज
हवा को (सेवा पर लगाया) जो उसके
आदेश से उस धरती की ओर चलती
थी जिसमें हमने बरकत रखी थी
जबकि हम प्रत्येक वस्तु का ज्ञान
रखने वाले थे 182।**

لِحُكْمِهِمْ شَهِدِينَ ۝

فَفَهَمُنَاهَا سَلِيمٌ ۝ وَكُلَّا اَتَيْنَا حُكْمًا
وَعِلْمًا ۝ وَسَعَرْنَا مَعَ دَاؤَدُ الْجِبَالِ
يَسِّحْنَ وَالظَّئِيرَ ۝ وَكُنَّا فَعِلْمِينَ ۝

وَعَلَمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوِسِ لَكْمَرِ
لِشَحْصَنَكْمُرْ مِنْ بَاسِكْمَرِ ۝ فَهَلْ آنْتُمْ
شَكِرُونَ ۝

وَلِسَلِيمِ الرِّيحِ عَاصِفَةَ تَجْرِيُ
بِأَمْرِهِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكَنَا فِيهَا
وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِمِينَ ۝

* यहाँ पर्वतों को सेवा पर लगाने से अभिप्राय पर्वतीय जातियों को हजरत दाऊद अलै, का आज्ञाकारी बनाना है । इसी प्रकार हजरत सुलैमान अलै, की सेना में पक्षियों की सेना का उल्लेख मिलता है । यह भी आलंकारिक भाषा है । इसके दो अर्थ हैं : - वे मनुष्य जिनको आध्यात्मिक रूप में उड़ने की शक्ति दी गई और वे तीव्र गति वाले यान जो पक्षियों की भाँति तीव्र गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचते थे । हजरत सुलैमान अलै, की सेना की सबसे तीव्र गति वाली सैन्य टुकड़ी को भी पक्षियों की सेना कहा गया है ।

** हजरत सुलैमान अलै, के लिए हवाओं को सेवा पर लगाने से अभिप्राय यह है कि फ़िलिस्तीन के तटीय क्षेत्र में एक-एक महीने के पश्चात् हवा की दिशा परिवर्तित होती थी और इस पर हजरत सुलैमान अलै, के समुद्री जहाज़ उन हवाओं के ज़ोर से चलते थे और एक महीने के पश्चात् फिर दूसरी ओर की हवा चल पड़ती थी ।

और शैतानों में से ऐसे भी थे जो उसके लिए गोता लगाते थे और उसके अतिरिक्त अन्य कार्य भी करते थे और हम उनकी सुरक्षा करने वाले थे।¹⁸³

और अय्यूब (की भी चर्चा कर) जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि मुझे अत्यन्त कष्ट पहुँचा है और तू कृपा करने वालों में से सबसे बढ़कर कृपा करने वाला है।¹⁸⁴

अतः हमने उसकी दुआ स्वीकार कर ली और उसको जो भी कष्ट था उसे दूर कर दिया और हमने उसे उसके घर वाले प्रदान कर दिए और उनके साथ और भी उन जैसे प्रदान किये जो हमारी ओर से एक कृपा स्वरूप था और उपासनाकारियों के लिए सीख थी।¹⁸⁵

और इस्माईल और इदरीस और जुल किफ़ल (की भी चर्चा कर वे) सब वैर्य धरने वालों में से थे।¹⁸⁶

और हमने उनको अपनी कृपा में प्रविष्ट किया । निःसन्देह वे सदाचारियों में से थे।¹⁸⁷

और मछली वाले (की भी चर्चा कर) जब वह क्रोध में भरा हुआ चला और उसने विचार किया कि हम उस की पकड़ नहीं करेंगे । फिर अंधेरों में घिरे हुए उसने पुकारा कि तेरे सिवा कोई

وَمِنَ الشَّيْطَنِ مَنْ يَعُوْصُونَ لَهُ
وَيَعْمَلُونَ عَمَلاً دُوْنَ ذِلْكَ وَكُنَّا لَهُمْ
حَفِظِينَ^{۱۸۸}

وَأَيُوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَتِّيَ مَسْنَى الْقُرْ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ^{۱۸۹}

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرٍّ
وَأَتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً
مِنْ عِنْدِنَا وَذَكْرِي لِلْعَبْدِينَ^{۱۹۰}

وَإِسْعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَالْكَفُلَ^{۱۹۱}
مِنَ الصَّابِرِينَ^{۱۹۲}
وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا أَلَّهُمْ مَنْ
الصَّابِرِينَ^{۱۹۳}

وَذَالْلُؤُنِ إِذْ ذَهَبَ مُعَاضِبًا فَطَلَّ
أَنْ لَنْ نُقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَى فِي الظُّلْمَتِ أَنْ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَنَكَ^{۱۹۴} إِنِّي كُنْتُ

* यहाँ शैतानों से अभिप्राय आग से बने हुए शैतान नहीं हैं । अन्यथा समुद्रों में गोता लगाने से यह आग बुझ जाती । बल्कि इससे तात्पर्य उद्दण्डी जातियाँ हैं जिन्हें हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने सेवाधीन किया था । उनमें से कुछ गोताओं भी थे ।

उपास्य नहीं । तू पवित्र है । निःसन्देह मैं
ही अत्याचारियों में से था । १८१ ॥*

अतः हमने उसकी दुआ स्वीकार कर ली
और उसे शोकमुक्त किया और इसी
प्रकार हम ईमान लाने वालों को मुक्ति
प्रदान करते हैं । १९१ ।

और ज़करिया (की भी चर्चा कर) जब
उसने अपने रब्ब को पुकारा कि हे मेरे
रब्ब ! मुझे अकेला न छोड़ और तू
उत्तराधिकारियों में सर्वश्रेष्ठ है । १९० ।

अतः हमने उसकी दुआ को स्वीकार
किया और उसे यहाया प्रदान किया
और हमने उसकी पत्नी को उसके लिए
स्वस्थ कर दिया । निःसन्देह वे नेकियों
में बहुत बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाले थे
और हमें चाहत और भय से पुकारा
करते थे और हमारे सामने विनयपूर्वक
झुकने वाले थे । १९१ ।

और वह स्त्री जिसने अपनी सतीत्व की
भली-भाँति रक्षा की तो हमने उसमें
अपने आदेश में से कुछ फूँका और उसे
और उसके पुत्र को हमने समस्त जगत
के लिए एक चिह्न बना दिया । १९१ ।

निःसन्देह यही तुम्हारा समुदाय है जो
एक समुदाय है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ ।

अतः तुम मेरी उपासना करो । १९३ ।

* हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि उनकी चेतावनी युक्त भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तो,
चूँकि उनको यह ज्ञान नहीं था कि चेतावनी स्वरूप भविष्यवाणियाँ अनुनय-विनय पूर्वक प्रार्थना
करने से अल्लाह तआला टाल दिया करता है, इस लिए वे रुठ कर समुद्र की ओर चले गए जहाँ
उनको व्हैल मछली ने निगल लिया और फिर जीवित ही उगल दिया । उस अन्धेरे के समय उनके
हृदय से यह दुआ निकली थी कि हे अल्लाह ! तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । तू पवित्र है और
निःसन्देह मैं अत्याचार करने वालों में से था ।

مِنَ الظَّالِمِينَ ⑩

فَاسْتَجِبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنِ الْغَمِّ ١٢

وَكَذِلِكَ نَجِيَ الْمُؤْمِنِينَ ⑪

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَى رَبَّهُ رَبِّ الْأَنْذَرِيِّ
فَرُدَّاً وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَرَثَيْنِ ⑫

فَاسْتَجِبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْبِي
وَأَصْلَحْنَا لَهُ زَوْجَهُ إِنَّمَّا كَانُوا
يَسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَا رَغْبًا
وَرَهَبًا وَكَانُوا إِنَّا خَيْشِعِينَ ⑬

وَالَّتِي أَحْسَنَتْ فُرْجَهَا فَنَفَّخَنَافِهَا
مِنْ رُوْحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا أَيَّهَا
لِلْعَلَمِينَ ⑭

إِنَّ هَذِهِ أَمْمَةٌ كُمْ أَمَّةٌ وَاحِدَةٌ وَأَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ⑮

और (बाद में) उन्होंने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े करके परस्पर बांट लिया। सभी हमारी ओर लौट कर आने वाले हैं 1941। (रुक् ٦)

अतः जो भी कुछ नेकी करेगा और वह मोमिन होगा तो उसके प्रयास का निरादर नहीं किया जाएगा और निःसन्देह हम उसके पक्ष में (यह बात) लिखने वाले हैं 1951।

और उस बस्ती के लिए पूर्णतया अनिवार्य कर दिया है कि जिस (के रहने वालों) को हमने तबाह कर दिया हो वे पुनः लौट कर नहीं आएँगे 1961।

यहाँ तक कि जब या'जूज मा'जूज को खोला जाएगा और वे हर ऊँचे स्थान से दौड़े चले आएँगे 1971*।

और अटल वादा निकट आ जाएगा तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनकी आँखें सहसा फटी की फटी रह जाएँगी। (वे कहेंगे) हाय हमारा विनाश ! कि हम इस बात से बेखबर थे, बल्कि हम तो अत्याचार करने वाले थे 1981।

निःसन्देह तुम और वह जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते थे नरक का ईधन हो । तुम उसमें उतरने वाले हो । 1991।

* आयत संख्या 96, 97 :- इन आयतों में क़र्यतन् शब्द से अभिप्राय बस्तीवासी हैं । कोई भी जाति जब तबाह कर दी जाए तो वह दोबारा संसार में वापस नहीं आया करती । अरबी शब्द हज्जा से तात्पर्य यह नहीं कि या'जूज मा'जूज के समय में मृत जातियाँ वापस आ जाएँगी । बल्कि हज्जा इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है कि या'जूज मा'जूज के युग में भी कभी मुर्दों को वापस आने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा । अतः देखने में ये लोग (या'जूज मा'जूज) इस प्रकार के चमत्कार दिखाते हैं कि मानों मुर्दों को जीवित कर देते हैं, परन्तु वास्तविक मुर्दों को कदापि जीवित नहीं कर सकते ।

وَتَقْطَعُوا أَمْرَهُمْ بِيَمِّهِ مُكْلِّفِينَ
لِجَعْوَنَ ⑩

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّلَحِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا كُفَّارَانِ سُعْيِهِ ۝ وَإِنَّا لَهُ كَتَبْنَا ⑪

وَحَرَمْ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَا أَنَّهُمْ
لَا يَرْجِعُونَ ⑫

حَقٌّ إِذَا فُتِحَتْ يَابْجُونُجْ وَمَا بَجُونُجْ
وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ⑬
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاهِضَةٌ
أَبْصَارُ الظَّالِمِينَ كَفَرُوا ۝ يَوْئِلَنَا قَدْ كَنَّا فِي
غَفْلَةٍ مِنْ هَذَا بَلْ كَنَّا طَلَمِينَ ⑭

إِنْكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
حَسَبُ جَهَنَّمَ ۝ أَنْتُمْ لَهَا وَرِدُونَ ⑮

यदि ये वास्तव में उपास्य होते तो कभी उसमें न उतरते और सभी उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं । 100।

उसके अन्दर उनके भाग्य में चीख व पुकार होगी और वे उसमें (कुछ) न सुन सकेंगे । 101।

निःसन्देह वे लोग जिनके पक्ष में हमारी ओर से भलाई का आदेश पारित हो चुका है, यही वे लोग हैं जो उससे दूर रखे जाएँगे । 102।

वे उसकी सरसराहट भी न सुनेंगे और जो भी उनके दिल चाहा करते थे (उसके अनुसार) वे उसमें सदा रहने वाले होंगे । 103।

उन्हें सबसे बड़ी घबराहट भी बेचैन नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनसे अधिक से अधिक (यह कहते हुए) मिलेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था । 104।

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जैसे बही लेखों को लपेटते हैं । जिस प्रकार हमने प्रथम सृष्टि का आरम्भ किया था, उसकी पुनरावृत्ति करेंगे । यह वादा हम पर अनिवार्य है । अवश्य हम यह कर गुज़रने वाले हैं । 105।

और निःसन्देह हमने ज़बूर में उपदेश के पश्चात् यह लिख रखा था कि प्रतिश्रुत धरती को मेरे सदाचारी भक्त ही उत्तराधिकार में अवश्य पाएँगे । 106।*

لَوْكَانَ هُولَاءِ إِلَهَةً مَا وَرَدُوهَا طَوْكَلٌ
فِيهَا خَلِدُونَ ⑩

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَّهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ⑪

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقُتْ لَهُمْ مِنْ أَنْحُصُنَّ
أُولَئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ⑫

لَا يَسْمَعُونَ حَيْسَهَا وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَى أَنْفُسُهُمْ خَلِدُونَ ⑬

لَا يَحْرُنُهُمْ الْفَرَغُ الْأَكْبَرُ وَسَلَفُهُمْ
الْمَلِكَةُ هَذَا يَوْمَ مُكْمَلٌ الَّذِي كُنْتُمْ
تُوعَدُونَ ⑭

يَوْمَ نَظُوِي السَّمَاءَ كَطَيِ التِّسْجِلِ
لِلْكَتَبِ كَمَا بَدَأْنَا أَوْلَ حَلْقٍ لَّعِيدَهُ
وَعَدَدَ أَعْلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فِي عِلْيَنَ ⑮

وَلَقَدْ كَبَبْنَا فِي الرَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الْأَكْرِيَانَ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِي الصِّلْحُونَ ⑯

* यहाँ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उस भविष्यवाणी की ओर संकेत है जिसका बाइबिल के पुराने-नियम की पुस्तक ‘भजन संहिता’ अध्याय 37 में उल्लेख है।

इसमें उपासना करने वाले लोगों के लिए निःसन्देह एक महत्वपूर्ण संदेश है। 107।

और हमने तुझे समस्त लोकों के लिए कृपा स्वरूप भेजा है। 108।

तू कह दे कि निःसन्देह मेरी ओर वहाँ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है। अतः क्या तुम आज्ञाकारी बनोगे ? 109।

अतः यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दे कि मैंने तुम सबको समान रूप में सूचित कर दिया है और मैं नहीं जानता कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है, वह निकट है अथवा दूर। 110।

निःसन्देह वह ऊँची आवाज़ में (की गई) बात की भी जानकारी रखता है और उसकी भी जानकारी रखता है जो तुम छिपाते हो। 111।

और मैं नहीं जानता कि सम्भवतः वह तुम्हारे लिए परीक्षा हो और एक समय तक अस्थायी लाभ उठाना हो। 112।

उस (अर्थात् रसूल) ने कहा, हे मेरे रब्ब ! तू सत्य के साथ निर्णय कर और हमारा रब्ब वह रहमान है जिससे सहायता की प्रार्थना की जाती है, उसके विरुद्ध जो तुम बातें बनाते हो। 113।

(रुक् 7)

إِنَّ فِي هَذَا الْبَلَاغًا لِقَوْمٍ عَيْدِينَ ﴿١٧﴾

وَمَا آرَسْلَنَا إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٨﴾

قُلْ إِنَّمَا يُوحَى إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُكُمْ إِلَّا
وَاحِدٌ فَهُنْ أَنْتُمُ مُسْلِمُونَ ﴿١٩﴾

فَإِنْ تَوَلُّوْا فَقُلْ أَذْشَكْمُ عَلَى سَوَاءٍ^{٢٠}
وَلَا تُأْذِنَ أَذْرِيَّ أَقْرِيَّ أَمْ بَعْدَ مَا
تُوعَدُونَ ﴿٢١﴾

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهَرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٢﴾

وَإِنْ أَذْرِنَ لَعْلَةً فِتْنَةً لَكُمْ وَمَنَعَ
إِلَى جَنِينَ ﴿٢٣﴾

قُلْ رَبِّ الْحُكْمُ بِالْحَقِّ وَرَبِّنا
الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا
تَصْفُونَ ﴿٢٤﴾

22- सूरः अल-हज्ज

यह मदनी सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 79 आयतें हैं।

इसकी पहली आयत में समस्त मानव जाति को क़्रायामत के महाविनाश से डराया गया है। क्योंकि एक ऐसा रसूल आ चुका है जिसने समस्त मानव जाति को रहमान अल्लाह की सुरक्षा में चले आने का निमंत्रण दिया था। जिसको स्वीकार न करने के परिणामस्वरूप ऐसे भयंकर युद्धों से एक बार फिर डराया जा रहा है, मानो समग्र धरती पर महा-प्रलय टूट पड़ेगा, वह ऐसी भयंकर तबाही होगी कि माताएँ अपने टूथ पीते बच्चों की रक्षा का विचार भूल जाएँगी और प्रत्येक गर्भवती का गर्भपात हो जाएगा और तू लोगों को ऐसे देखेगा जैसे वे नशे से मदहोश हो चुके हैं। वस्तुतः वे मदहोश नहीं होंगे बल्कि अल्लाह तआला की ओर से अवतरित होने वाले कठोर अज़ाब के कारण वे अपनी चेतना खो चुके होंगे।

क़्रायामत से यह भी विचार उत्पन्न होता है कि जब समस्त मानव जाति तबाह हो जायेगी तो दोबारा कैसे जीवित की जाएगी। कहा, जिस अल्लाह ने तुम्हें इससे पूर्व मिट्टी से उत्पन्न किया और फिर माँ की कोख में विभिन्न आकृतियों में से गुज़ारा, वही अल्लाह है जो तुम्हें फिर जीवित कर देगा।

फिर कहा, लोगों में से वह भी है जो अल्लाह तआला की उपासना ऐसे करता है मानो वह किसी गङ्गे के छोर पर खड़ा हो। जब तक उसको भलाई पहुँचती रहती है वह संतुष्ट रहता है और जब वह परीक्षा में डाला जाता है तो औंधे मुँह गङ्गे में जा गिरता है। यह ऐसा व्यक्ति है जो इहलोक और परलोक दोनों में घाटे में रहता है।

इसके पश्चात् समस्त धर्मों के अनुयायियों का संक्षेप में वर्णन कर दिया गया कि उनके मध्य अल्लाह तआला क़्रायामत के दिन निर्णय करेगा।

इसके बाद अल्लाह तआला का यह ज़रूरी आदेश है कि बैतुल्लाह के हज्ज के लिए आने वालों को खाना का'बा तक पहुँचने से कदापि न रोको। इसके तुरन्त बाद बैतुल्लाह का वर्णन है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जो आदेश दिया है, उसका वर्णन है कि मेरे घर को हज्ज पर आने वाले और ए'तिकाफ़ करने वाले के लिए सदैव पवित्र और स्वच्छ रखो। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो उपरोक्त आदेश दिया गया, वह केवल उनको ही नहीं बल्कि उनके और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों को क़्रायामत तक के लिए है।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया गया है कि समस्त मानव जाति को हज्ज के उद्देश्य से खाना का'बा में आने के लिए एक सार्वजनिक

निमंत्रण दो । इसके पश्चात् कुर्बानियों इत्यादि का वर्णन किया गया कि वे भी खाना का'बा की भाँति अल्लाह के पवित्र चिह्नों में से हैं, यदि उनका अपमान करोगे तो खाना का'बा का अपमान करोगे । परन्तु खाना का'बा के लिए की जाने वाली सारी कुर्बानियाँ उस समय स्वीकार होंगी जब तकवा के साथ की जाएँगी, क्योंकि अल्लाह तआला को न तो कुर्बानियों का माँस पहुँचता है न उनका रक्त बल्कि केवल कुर्बानी करने वालों के तकवा का भाव पहुँचता है ।

इसके पश्चात् जिहाद-बिस्तैफ (सशस्त्र संघर्ष) के विषय पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि केवल उन लोगों को अपनी प्रतिरक्षा के लिए जिहाद बिस्तैफ की अनुमति दी जा रही है जिन पर इससे पहले शत्रु की ओर से तलवार उठाई गई और उनको अपने घरों से निकाल दिया गया, केवल इस कारण कि वे यह धोषणा करते थे कि अल्लाह हमारा रख्ब है । इसके पश्चात् इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय का भी उल्लेख कर दिया गया कि यदि प्रतिरक्षा की आज्ञा न दी जाती तो केवल मुसलमानों की मस्जिदें ही धराशाई न कर दी जातीं बल्कि यहूदियों और ईसाइयों आदि के उपासनास्थलों और आश्रमों को भी तबाह कर दिया जाता ।

फिर पिछले नवियों का इनकार करने वाली जातियों के विनाश का वर्णन करते हुए इस ओर संकेत किया गया है कि यदि मनुष्य धरती पर भ्रमण करे और आँखें खोल कर विनाश-प्राप्त उन जातियों के समाधिस्थलों को ढूँढ़े तो अवश्य वह उनके दुःखद अन्त पर जानकारी पाएगा । आजकल प्राचीन अवशेषों के विशेषज्ञ यही कार्य कर रहे हैं और अतीत की अनेक जातियों की समाधियों की खोज कर चुके हैं ।

इसके पश्चात् आयत संख्या 53 में यह कहा गया है कि रसूल की इच्छाओं में यदि कोई स्वार्थ शामिल हो भी जाए तो अल्लाह तआला वहू के द्वारा उस स्वार्थ को समाप्त कर देता है । यहाँ शैतान से अभिप्राय तथाकथित अभिशाप्त शैतान नहीं अपितु मनुष्य की रगों में रक्त की भाँति दौड़ते-फिरते रहने वाला शैतान है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है :- वलाकिन्नल्ला ह अआननी अलैहि फ अस ल म (मसनद अहमद बिन हम्बल, मसनद बनी हाशिम) अर्थात अल्लाह तआला ने उस (शैतान) के विरुद्ध मेरी सहायता की और वह मुसलमान हो गया है । अतः आयत संख्या 53 का कदापि यह तात्पर्य नहीं कि वास्तव में कोई शैतान नवियों के दिलों में दुर्भावना उत्पन्न करता है क्योंकि एक दूसरे स्थान (सूरः अश-शुअरा आयत 222, 223) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शैतान को रसूलों के निकट भी फटकने की आज्ञा नहीं हो सकती । वह तो अत्यन्त झूठे और कुकर्मी दुराचारी लोगों पर ही उतरता है और रसूलों पर यह कथन किसी रूप में लागू नहीं हो सकता ।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में यह वर्णन किया गया है कि जिन्हें ये लोग अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं उन काल्पनिक साझीदारों को तो इतना भी सामर्थ्य नहीं कि एक मक्खी यदि किसी वस्तु को चाट जाए तो उसे उसके मुख से वापिस ले सकें। वास्तव में एक मक्खी के मुख में किसी वस्तु के प्रवेश होते ही उसकी लार के प्रभाव से और उसके पेट में रासायनिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वह वस्तु अपनी असली हालत में रह ही नहीं सकती।

इस सूरः की अन्तिम आयत में अल्लाह के मार्ग में वह जिहाद करने का उपदेश दिया गया है, जिसकी व्याख्या इससे पहले कर दी गई है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अनुयायियों को अल्लाह तआला ने ही मुस्लिम घोषित किया है। वह सबसे अधिक जानता है कि कौन उसके समक्ष शीष झुका कर पूर्णतया आज्ञा का पालन करता है।

अन्त में इस घोषणा की पुनरावृत्ति की गयी है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक सार्वभौमिक रसूल हैं।



سُورَةُ الْحَجَّ مَدْيَنَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعَ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ عَشْرَةً رُكُوعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक्रावा धारण
करो । निःसन्देह निर्धारित घड़ी का
भूकम्प एक बहुत बड़ी चीज़ होगी । 12

जिस दिन तुम उसे देखोगे, प्रत्येक दूध
पिलाने वाली उसे भूल जाएगी जिसे वह
दूध पिलाती थी और प्रत्येक गर्भवती
अपना गर्भ गिरा देगी और तू लोगों को
मदहोश देखेगा हालाँकि वे मदहोश नहीं
होंगे परन्तु अल्लाह का अज्ञाब बहुत
कठोर होगा । 13

और लोगों में से ऐसा भी है जो बिना
किसी जानकारी के अल्लाह के विषय में
झगड़ा करता है और प्रत्येक उद्धण्डी
शैतान का अनुसरण करता है । 14

उस पर यह बात निश्चित कर दी गई है
कि जो उससे मित्रता करेगा तो वह उसे
भी अवश्य पथभ्रष्ट कर देगा और उसे
भड़कती हुई अग्नि के अज्ञाब की ओर ले
जाएगा । 15

हे लोगो ! यदि तुम पुनर्जीवित होने के
सम्बन्ध में शंका में पड़े हो तो निःसन्देह
हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया था, फिर
वीर्य से, फिर खून के थक्के से, फिर माँस
पिंड से, जिसे विशेष रचनात्मक प्रक्रिया
अथवा साधारण रचनात्मक प्रक्रिया से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةً
السَّاعَةَ شَيْءٌ عَظِيمٌ ②

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذَهَّلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا
أَرَضَعَتْ وَتَصْبِغُ كُلُّ ذَاتٍ حَمْلِ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَّرًا وَمَا هُمْ
بِسُكَّرٍ وَلِكُنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ③

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَبَعُ كُلَّ شَيْطَنٍ مَرِيءٍ ④

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّهُ فَأَنَّهُ يُضْلَلُ
وَيَهْدِيهِ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ⑤

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِنَ
الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ لَطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ

बनाया गया ताकि हम तुम पर (सृष्टि के भेद) खोल दें और हम जिसे चाहें कोख के भीतर एक निर्धारित समय तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं ताकि फिर तुम अपनी परिपक्व आयु को पहुँचो। और तुम ही में से वह है जिसको मृत्यु दे दी जाती है और तुम ही में से वह भी है जो चेतना खो देने की आयु तक पहुँचाया जाता है ताकि ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् पूर्णतया ज्ञान रहित हो जाए और तू धरती को शुष्क बंजर पाता है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह (विकसित होने की दृष्टि से) गतिशील हो जाती है और फूलने लगती है और (वह) प्रत्येक प्रकार के हरे-भरे सुन्दर जोड़े उगाती है । १६।*

यह इस कारण है कि निःसन्देह अल्लाह ही सत्य है और वही मुर्दों को जीवित करता है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । १७।

مُخْلَقَةٌ وَعَيْرِ مُخْلَقَةٌ لَنَبِيِّنَ لَكُمْ
وَنَقْرُفُ الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَى أَجَلٍ
مُسَعًّى شَرَّ تُرْجِحَكُمْ طَفْلًا شَهَادَةُ
لِتَبَلَّغُوا أَشَدَّ كُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يَتَوَقَّفُ
وَمِنْكُمْ مَنْ يَرْدُ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلًا
يَعْلَمُ مَنْ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ
هَامِدَةً فَإِذَا آتَنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَرَزَتْ
وَرَبَتْ وَأَنْبَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑦

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يَحْيِي الْمَوْتَىٰ
وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

* इस आयत में सबसे पहले तो उल्लेखनीय बात यह है कि मानव विकास के समस्त चरण इसमें वर्णन कर दिए गये हैं। यहाँ तक कि माँ के गर्भस्थ भ्रूण में जो परिवर्तन होते हैं वह भी क्रमशः बिल्कुल उसी प्रकार वर्णन कर दिये गये हैं जैसा कि वैज्ञानिकों ने इस युग में खोज निकाला है। यह आयत इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इन विषयों में कोई निजी ज्ञान नहीं था और सर्वज्ञ अल्लाह के सिवा कोई आप सल्ल. को इन बातों की जानकारी नहीं दे सकता था।
फिर आगे चल कर इस पवित्र आयत में यह वर्णन किया गया है कि हमने शुष्क मिट्टी पर पानी बरसा कर धरती को भी जीवन प्रदान किया था। यह अद्भुत और विस्मय जनक खोज है कि वैज्ञानिकों के कथनानुसार शुष्क धरती पर जब पानी बरसता है तो वास्तव में उसमें जीवन के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यहाँ वास्तविक रूप से इस ओर संकेत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जो आसमानी पानी बरसा है उसने एक निर्जीव धरती अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि से मृत जाति को जीवित कर दिया।

और क्रयामत अवश्य आकर रहेगी । उसमें कोई संदेह नहीं और निःसन्देह अल्लाह उन्हें उठाएगा जो कब्रों में पड़े हुए हैं । १८ ।

और लोगों में से ऐसा भी है जो बिना ज्ञान के और बिना हिदायत के और बिना किसी उज्ज्वल पुस्तक के अल्लाह के बारे में झगड़ा करता है । १९ ।

(अहंकार पूर्वक) अपना पहलू मोड़ते हुए। ताकि अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दे । उसके लिए संसार में अपमान होगा और क्रयामत के दिन भी हम उसे अग्नि का अज्ञाव चखाएँगे । १० ।

यह उसके फलस्वरूप है जो तेरे दोनों हाथों ने आगे भेजा और निःसन्देह अल्लाह भक्तों पर लेश-मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं । ११ ।

(रुकू । ४)

और लोगों में से वह भी है जो केवल सरसरी ढंग से अल्लाह की उपासना करता है । अतः यदि उसे कोई भलाई पहुँच जाए तो उससे संतुष्ट हो जाता है और यदि उसे किसी परीक्षा में डाला जाए तो वह विमुख हो जाता है। वह इहलोक भी गंवा बैठा और परलोक भी । यह तो बहुत खुल्लम-खुल्ला घाटा है । १२ ।

वह अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो न उसे हानि पहुँचा सकता है और न उसे लाभ पहुँचा सकता है । यही घोर पथभ्रष्टता है । १३ ।

وَأَنَّ السَّاعَةَ أَتَيْتُهُ لَا رَيْبٌ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَنْ فِي الْقُبُورِ ①

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتْبٍ مُّنِيرٍ ②

ثَانِي عَظِيمٍ لِمَنْ يُضَلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
لَهُ فِي الدُّنْيَا خَرْجٌ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
عَذَابَ الْحَرِيقِ ③

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدِكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَامٍ لِلْعَيْدِ ④

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللَّهَ عَلَى حَرْفٍ ⑤
فَإِنْ أَصَابَهُ حَيْزِرٌ أَطْمَانَ بِهِ وَإِنْ
أَصَابَهُ شَفَّةٌ أَنْقَلَبَ عَلَى وَجْهِهِ
خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ⑥ ذَلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ⑦

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَصْرُهُ وَمَا
لَا يَقْعُدُهُ ⑧ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ⑨

वह उसे पुकारता है जिस के हानि पहुँचाने की सम्भावना उसके लाभ पहुँचाने से अधिक है। क्या ही बुरा संरक्षक है और क्या ही बुरा साथी है। 14।
 निःसन्देह अल्लाह उन्हें जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं।
 निःसन्देह अल्लाह जो चाहता है करता है। 15।

जो व्यक्ति यह विचार करने लगा है कि अल्लाह इस (रसूल) की इहलोक और परलोक में सहायता नहीं करेगा, तो चाहिए कि वह आकाश की ओर मार्ग बनाए, फिर (इस सहायता को) विच्छिन्न कर दे, फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस बात को दूर कर सकता है जो (उसे) क्रोध दिलाता है। 16।

और इसी प्रकार हमने इसे खुली-खुली उज्ज्वल आयतों के रूप में उतारा है और (सत्य यह है कि) अल्लाह उसे हिदायत देता है जो (हिदायत) चाहता है। 17।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और वे जो यहदी हुए और साबी और ईसाई और पारसी तथा वे लोग जिन्होंने शिर्क किया, अल्लाह अवश्य उनके बीच क्रयामत के दिन निर्णय करेगा।
 निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है। 18।

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही है कि जो कुछ आसमानों में है और जो धरती में है और सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, पर्वत,

يَدْعُو الْمَنْ ضَرَّةً أَقْرَبَ مِنْ نُفُعِهِ
 لِئِسَ الْمَوْلَى وَلِئِسَ الْعَشِيرَ ⑩

إِنَّ اللَّهَ يُذْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ إِنَّ اللَّهَ يَفْعُلُ مَا يَرِيدُ ⑪

مَنْ كَانَ يَظْلَمْ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلَيُمَدَّ بِسَبَبِ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لَيُقْطَعُ فَلَيُظْلَمْ هُلْ يَذْهَبَنَ كَيْدُهُ مَا يَغْيِطُ ⑫

وَكَذِلِكَ أَنْزَلَهُ إِلَيْتِ بَيْتِ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَرِيدُ ⑬

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالظَّبَّابِينَ وَالثَّصْرِي وَالْمَجْوُسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عَشِيدٌ ⑭

أَكْمَلَ رَأَيَ اللَّهَ يَسْجُدُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ

वृक्ष और चलने फिरने वाले समस्त जीवधारी तथा बहुसंख्यक मनुष्य भी उसे सजदः करते हैं। जबकि बहुत से ऐसे हैं जिन पर उसका अज्ञाब अनिवार्य हो चुका है और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे तो उसको सम्मान देने वाला कोई नहीं। निःसन्देह अल्लाह जो चाहता है करता है ॥19।

ये दो झगड़ालू हैं जिन्होंने अपने रब्ब के बारे में झगड़ा किया। अतः वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए अग्नि के वस्त्र तैयार किये जाएँगे। उनके सिरों के ऊपर से अत्यन्त गर्म पानी उड़ेला जाएगा ॥20।

इससे जो कुछ उनके पेटों में है, गला दिया जाएगा और उनकी त्वचाएँ भी ॥21।

और उनके लिए लोहे के हथौड़े होंगे ॥22।

जब कभी वे इरादा करेंगे कि शोक की अधिकता के कारण उसमें से निकल जाएँ, वे उसी में लौटा दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) तुम अग्नि का अज्ञाब चखो ॥23। (रुकू ٢)

निःसन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती होंगी। उनमें उन्हें सोने के कड़े और मोती पहनाए जाएँगे और उनमें उनका वस्त्र रेशम (का) होगा ॥24।

और पवित्र वचन की ओर उनका मार्ग-दर्शन किया जाएगा और अति प्रशंसनीय

وَالثُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ
وَالدَّوَابُ وَكَثِيرٌ مِّنَ الشَّاسِ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يَهْمِنَ اللَّهَ فَمَا لَهُ
مِنْ مُّكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝

هَذِنِ حَصْمِنَ أَخْصَمُوا فِي رَبِيعِهِ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِعُتْ لَهُمْ شَيَابُهُ مِنْ
ثَارٍ يَصْبُبُ مِنْ فَوْقِ رُءُوفِهِمْ
الْحَمِيمُ ۝

يَصْهَرُ بِهِ مَا فِي بَطْوَنِهِمْ وَالْجَلُودُ
وَلَهُمْ مَقَامُعُ مِنْ حَدِيدٍ ۝

كُلُّمَا آرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ
غَيْرِ أَعْيُدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ۝

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الظَّالِمِينَ أَمْنًا وَعَمِلُوا
الصَّلِحَاتِ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَرُ يَحْكُمُونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَهُمْ
ذَهَبٌ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝
وَهُدُوًا إِلَى الظَّيْبِ مِنَ الْقَوْلِ ۝

(अल्लाह) की राह की ओर उनका मार्गदर्शन किया जाएगा । 25 ।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और वे अल्लाह के मार्ग से और उस मस्जिद-ए-हराम से रोकते हैं जिसे हमने समस्त मनुष्यों के हित के लिए इस प्रकार बनाया है कि इसमें (अल्लाह के लिए) बैठे रहने वाले और मरुभूमि निवासी (सब) समान हैं, और जो भी अत्याचार पूर्वक इसमें विगाड़ उत्पन्न करने की चेष्टा करेगा उसे हम पीड़ाजनक अजाब चखाएँगे। 126।

(रुक्त ३०)

और लोगों में हज्ज की घोषणा कर दे ।
वे तेरे पास पैदल चल कर आएँगे और
प्रत्येक ऐसी सवारी पर भी जो लम्बी
यात्रा की थकान से दुबली हो गई हो । वे
(सवारियाँ और चीजें) प्रत्येक गहरे और
दर के मार्ग से आएँगी । 28।

ताकि वे वहाँ पर अपने हितों को देख सकें और कुछ निश्चित दिनों में उस (अनुकम्पा) के कारण अल्लाह के नाम की चर्चा करें कि उसने मवेशी

وَهُدُوا إِلَى صِرَاطِ الْحَمِيدِ ⑤٦

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصْدُونَ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْعَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَا
لِلثَّالِثِ سَوَاءٌ الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ
وَمَنْ يَرِدُ فِيهِ بِالْحَادِمِ يُظْلَمُ نَذْقَهَ
مِنْ عَذَابِ الْيَمِنِ

وَإِذْبَأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا
تُشْرِكَ بِنِ شِعَّاعٍ وَطَهْرَيْتَ لِلْمَطَابِقَيْنَ
وَالْقَائِمَيْنَ وَالرَّسَعَ السَّجُودِ ⑭

وَأَذْنٌ فِي النَّاسِ بِالْحِجَّةِ يَا تُوكَ رِجَالًا
وَعَلَى كُلِّ صَامِرٍ يَا تِينَ مِنْ كُلِّ
فَجَّ عَمِيقٍ ﴿٦﴾

لِيَسْهُدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ

चौपायों के द्वारा उन्हें जीविका प्रदान की है। अतः उनमें से (स्वयं भी) खाओ और अभावग्रस्त निर्धनों को भी खिलाओ। 129।

फिर चाहिए कि वे अपने (पाप की) मैल को दूर करें और अपनी मनतों को पूरा करें और इस प्राचीन घर की परिक्रमा करें। 130।

यह (हमने आदेश दिया) और जो भी उन वस्तुओं का आदर करेगा जिन्हें अल्लाह ने सम्मान प्रदान किया है तो यह उसके लिए उसके रब्ब के निकट उत्तम है। और तुम्हरे लिए चौपाये वैध कर दिए गए सिवाय उनके जिनका वर्णन तुम से किया जाता है। अतः मूर्तियों की अपवित्रता से दूर रहो और झूठ बोलने से बचो। 131।

सदा अल्लाह की ओर झुकते हुए उसका साझीदार न ठहराते हुए। और जो भी अल्लाह का साझीदार ठहराएँगा तो मानो वह आकाश से गिर गया। फिर या तो उसे पक्षी उचक लेंगे अथवा हवा उसे किसी दूर जगह जा फेंकेगी। 132।

यह (महत्वपूर्ण बात है) और जो कोई अल्लाह के पवित्र चिह्नों के प्रति सम्मान प्रदर्शन करेगा तो निःसन्देह यह बात दिलों में तक़वा (होने) का लक्षण है। 133।

तुम्हरे लिए उन (कुर्बानी के चौपायों) में एक निर्धारित समय तक लाभ निहित हैं। फिर उन्हें पुरातन घर

مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا
وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ^(٦)

لَمْ يُفْصُوْ أَنْفَهُمْ وَلَيُؤْقَوْ أَنْدُرَهُمْ
وَلَيُظْلَوْ قُوَّا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ^(٧)

ذَلِكُ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ
خَيْرُ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَأَحْلَتْ لَكُمْ
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُشِّلُّ عَلَيْكُمْ فَاجْتَبِيُوا
الرِّحْمَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَبِيُوا
قُوَّلَ الرِّزْوِ^(٨)

حَفَّاءِ اللَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ وَمَنْ
يُشْرِكُ بِاللَّهِ فَكَانَمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ
فَتَحْكُمُهُ الظَّلِيلُ أَوْ تَهْوِيْ بِهِ الْرِّيحُ
فِي مَكَانٍ سَجِيقٍ^(٩)

ذَلِكُ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَابِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا
مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ^(١٠)

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعٌ إِلَى آجِلٍ مُّسَيّ

(खाना का'वा) तक पहुँचाना है । 34।
(रुकू ٤)

और हमने प्रत्येक समुदाय के लिए कुर्बानी की विधि निश्चित की है ताकि वे उस पर अल्लाह का नाम उच्चारण करें जो उसने उन्हें मवेशी चौपाय प्रदान किए हैं । अतः तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है । अतः उसके लिए आज्ञाकारी हो जाओ । और विनम्रता करने वालों को शुभ-समाचार दे दे । 35।

उन लोगों को, कि जब अल्लाह की चर्चा की जाती है तो उनके दिल भयभीत हो जाते हैं । और जो कष्ट उन्हें पहुँचा हो उस पर धैर्य धरने वाले हैं । और नमाज को क़ायम करने वाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करते हैं । 36।

और कुर्बानी के ऊंट, जिन्हें हमने तुम्हारे लिए अल्लाह के पवित्र चिह्नों में शामिल कर दिया है उनमें तुम्हारे लिए भलाई है । अतः पंक्ति में खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम उच्चारण करो । फिर जब (ज़िबह करने के पश्चात्) उनके धड़ धरती पर गिर जाएँ तो उनमें से खाओ और अभावग्रस्त होने पर भी संतुष्ट रहने वालों को और माँगने वालों को भी खिलाओ । इसी प्रकार हमने उन्हें तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो । 37।

अल्लाह तक उनके माँस कदापि नहीं पहुँचेंगे और न उनके रक्त । परन्तु

لَمْ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ⑥

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِيَذْكُرُوا
اسْمَ اللَّهِ عَلَى مَا رَزَقْنَاهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ
الْأَنْعَامِ ۗ فَإِنَّهُ كَمَّ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ
أَسْلِمُوا ۗ وَبَشِّرُ الْمُخْتَيَّنَ ۷

الَّذِينَ إِذَا ذَكَرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ
وَالصَّابِرِينَ عَلَى مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقْبِيِّ
الصَّلُوةُ ۗ وَمَمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۸

وَالْبَدْنَ جَعَلْنَا لَكُمْ مِنْ شَعَالِرِ اللَّهِ
لَكُمْ فِيهَا حِلْزُونٌ ۗ فَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ
عَلَيْهَا صَوَافٌ ۗ فَإِذَا وَجَبَتْ جِبْرِيلُ
فَكَلُّوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَ ۹
كَذِلِكَ سَخَّرْنَا لَكُمْ لَعْلَكُمْ
تَشْكِرُونَ ۱۰

لَنْ يَئِدَ اللَّهُ لَحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا

तुम्हारा तक़वा उस तक पहुँचेगा । इसी प्रकार उसने तुम्हारे लिए उन्हें सेवा में लगा दिया है ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई का वर्णन करो । इस कारण कि उसने तुम्हें हिदायत प्रदान की और उपकार करने वालों को शुभ-समाचार दे दे । 138।

نِإِنَّمَا سَنِّدَهُ إِلَيْهِ الْأَنْكَارُ الَّذِينَ جَاءُوا مُؤْمِنِينَ وَلَا يُحِبُّونَ الْكُفَّارَ^①
نِإِنَّمَا سَنِّدَهُ إِلَيْهِ الْأَنْكَارُ الَّذِينَ جَاءُوا مُؤْمِنِينَ وَلَا يُحِبُّونَ الْكُفَّارَ^②

उन लोगों को, जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है (युद्ध करने की) अनुमति दी जाती है क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया और निश्चित रूप से अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है । 140।

(अर्थात्) वे लोग जिन्हें उनके घरों से अन्यायपूर्वक निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब्ब है । और यदि अल्लाह की ओर से उनमें से कुछ को कुछ अन्यों से भिड़ा कर लोगों का बचाव न किया जाता तो मठ और गिरजे और यहूदियों के उपासना गृह तथा मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जातीं जिनमें अधिकतापूर्वक अल्लाह का नाम लिया जाता है । और अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करता है ।
نِإِنَّمَا سَنِّدَهُ إِلَيْهِ الْأَنْكَارُ الَّذِينَ جَاءُوا مُؤْمِنِينَ وَلَا يُحِبُّونَ الْكُفَّارَ^③

وَلَكِنَّ يَسَّالَهُ الشَّوَّافُ مِنْكُمْ لَكِنْ لَكِنْ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لَكِنْ كَثِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى مَا
هَذِهِكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ^④

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الظَّالِمِينَ أَمْنُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ كُلَّ حَوَانٍ كَفُورٍ^⑤
أَذْنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ طَلَمُوا
وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِ لَقَدِيرٌ^⑥

الَّذِينَ أَخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ
إِلَآ أَنْ يَقُولُوا أَنَّا أَنْتَمْ اللَّهُ وَلَوْلَا دُفْعَةِ اللَّهِ
النَّاسُ بَعْضَهُمْ يَعْضُّ لَهُدْمَتْ
صَوَامِعَ وَبِيَعْ وَصَلَوَاتُ وَمَسَاجِدَ
يَذْكُرُ فِيهَا اسْمَ اللَّهِ كَثِيرًا وَلَيَسْتَرَنَّ
اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوْيٌ عَزِيزٌ^⑦

जिन्हें हम धरती में यदि दृढ़ता प्रदान करें तो वे नमाज़ को कायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। और नेक बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं। और प्रत्येक बात का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है । 142।

और यदि वे तुझे झुठला दें तो उनसे पहले नूह की जाति ने और आद और समूद (जाति) ने भी (अपने नवियों को) झुठला दिया था । 143।

और इब्राहीम की जाति ने और लूट की जाति ने भी । 144।

और मदयन निवासियों ने (भी ऐसा ही किया) और मूसा को भी झुठलाया गया। अतः मैंने काफिरों को कुछ ढील दी फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। अतः कैसी थी मेरी पकड़ ! । 145।

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने तबाह कर दिया जबकि वे अत्याचार करने वाली थीं। अतः अब वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही परित्यक्त कुएँ हैं और दृढ़ निर्मित महल हैं (जिन से ऐसा ही व्यवहार किया गया) । 146।

अतः क्या वे धरती में नहीं फिरे ताकि उन्हें ऐसे दिल मिलते जिनसे वे बुद्धिमत्तापूर्वक काम लेते। अथवा ऐसे कान मिलते जिनसे वे सुन सकते। वस्तुतः आँखें अंधी नहीं होतीं बल्कि दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं । 147।

الَّذِينَ إِنْ مَكَثُوكُمْ فِي الْأَرْضِ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوَةَ وَأَمْرَوْا^١
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ
وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ①

وَإِنْ يُكَذِّبُوكُمْ فَقَدْ كَذَبْتُ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَّثَمُودٍ
وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ②

وَأَصْحَابُ مَدْئِنٍ^٣ وَكُذِّبَ مُؤْسِى
فَأَمْلَيْتُ لِلْكُفَّارِينَ^٤ ثُمَّ أَخْدَثْتُهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ③

فَكَائِنُونَ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْتُهَا وَهِيَ
ظَالِمَةٌ فِيهِ خَاوِيَّةٌ عَلَى عَرْوَشَهَا وَبِلِّهٌ
مُعْطَلَةٌ وَقُصْرٌ مَسْيِلٌ ④

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ
قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ أَذَانٌ يَسْمَعُونَ
بِهَا^٥ فَإِنَّهَا لَا تَعْلَمُ الْأَبْصَارَ وَلَكِنْ
تَعْلَمُ الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ⑤

और वे तुझ से शीघ्रतापूर्वक अज्ञाब माँगते हैं जबकि अल्लाह कदापि अपना वादा नहीं तोड़ेगा । और निःसन्देह तेरे रब्ब के पास ऐसा भी दिन है जो तुम्हारी गणनानुसार एक हज़ार वर्ष का है । 148।

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें मैंने ढील दी जबकि वे अत्याचारी थीं । फिर मैंने उनको पकड़ लिया और मेरी ही ओर लौटना है । 149। (रुकू⁶-तु)

तू कह दे कि हे सभी लोगो ! मैं तुम्हारे लिए केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ । 150।

अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए क्षमादान है और एक सम्मान युक्त जीविका है । 151।

और वे लोग जिन्होंने हमारी चिह्नों को विफल करने की चेष्टा करते हुए बहुत भाग दौड़ की, वही नरक वाले हैं । 152।

और हमने तुझ से पहले न कोई रसूल भेजा और न नबी, परन्तु जब भी उसने (कोई) अभिलाषा की (मन के) शैतान ने उसकी अभिलाषा में (मिलावट के रूप में कुछ) डाल दिया । तब अल्लाह उसे मिटा देता है जो शैतान डालता है । फिर अल्लाह अपनी आयतों को सुट्टङ्कर देता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 153।

(यह इस लिए है) ताकि वह उसे जो शैतान अपनी ओर से डाले केवल उन लोगों के लिए परीक्षा का कारण बना दे

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَدَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ
الَّهُ وَعْدَهُ طَوْاً يَوْمًا عِنْدَرِكَ كَافِ
سَقْةٌ مِّمَّا تَعْذُّبُونَ ⑩

وَكَائِنٌ مِّنْ قَرِيَّةٍ أَمْ لَيْلَةٍ هَوَىٰ
ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخْذَتْهَا وَإِلَى الْمَصِيرِ ⑪

فُلْ يَا يَهُا النَّاسِ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑫

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلَاحَتِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ⑬

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي أَيْتَمَ مَعْجِزِينَ أَوْ لَكَ
أَصْحَبُ الْجَهَنَّمِ ⑭

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا
نَئِيْ أَلَا إِذَا تَمَّنَّى الْقَى الشَّيْطَنَ فِي
أَمْنِيَّتِهِ فَيَسْخُنَ اللَّهُ مَا يَلْقَى الشَّيْطَنَ
ثُمَّ يَنْجِعَكُمُ اللَّهُ أَيْتَمَ طَوْاً وَاللَّهُ عَلَيْمٌ
حَكِيمٌ ⑮

تَيْجَعَلَ مَا يَلْقَى الشَّيْطَنَ فِتْنَةً
لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرْضٌ

जिनके दिलों में रोग है और जिनके हृदय कठोर हो चुके हैं। और निःसन्देह अत्याचार करने वाले घोर विरोध में पड़े हुए हैं 154।

और (यह इस लिए है) ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया जान लें कि यह तेरे रब्ब की ओर से सत्य है। अतः वे उस पर ईमान ले आएँ और उसकी ओर उनके दिल झुक जाएँ। और निःसन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए सन्मार्ग की ओर हिदायत देने वाला है 155।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया सदा उसके विषय में शंका में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि सहसा उन तक क्रांति का पल आ पहुँचेगा। अथवा ऐसे दिन का अज्ञाब उन्हें आ पकड़ेगा जो खुशियों से विहीन होगा 156।

शासन उस दिन अल्लाह ही का होगा। वह उनके बीच निर्णय करेगा। अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किये नेमतों वाले स्वर्गों में होंगे 157।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारे चिह्नों को झुठलाया तो यही हैं वे जिनके लिए अपमान जनक अज्ञाव (निश्चित) है 158। (रुू० 7/4)

और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में हिजरत की, फिर वे वध किए गए अथवा स्वभाविक मृत्यु को प्राप्त हुए, अल्लाह उनको अवश्य उत्तम जीविका

وَالْقَاسِيَةَ قُلُوبُهُمْ طَوَّافٌ وَإِنَّ الظَّلَمِيْنَ
لَفِي شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ①

وَلَيَعْلَمَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رِبِّكَ فَيَوْمَئِنَا بِهِ فَتَحْمِلُتَهُ قُلُوبُهُمْ
وَإِنَّ اللَّهَ لِمَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى
صِرَاطِ الْمُسْتَقِيْمِ ②

وَلَا يَأْلُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مَرْيَةٍ مِنْهُ
حَتَّىٰ تَأْتِيهِمُ السَّاعَةُ بَعْدَهُ أَوْ يَأْتِيهِمْ
عَذَابٌ يَوْمٌ عَقِيْمٌ ③

الْمُلْكُ يَوْمَئِنِدُ لِلَّهِ طَيْحَكُمْ بِيَمِنِهِ
فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلْحَاتِ فِي
جَنَّتِ النَّعِيْمِ ④

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَأَكْذَبُوا إِيمَانًا فَأُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُهِمِّنٌ ⑤

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا
أَوْ مَاتُوا لَيْزَرْ قَبْعَهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَّا

प्रदान करेगा । और निःसन्देह अल्लाह ही है जो जीविका प्रदान करने वालों में सर्वोत्तम है । 59।

वह अवश्य उन्हें ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा जिसे वे पसन्द करेंगे । और निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सहनशील है । 60।

यह इसी प्रकार होगा । और जो (किसी पर) वैसी ही सख्ती करे जैसी सख्ती उस पर की गई हो और फिर उसके विरुद्ध (इसके परिणाम स्वरूप) उद्भवता मचाई जाए तो निःसन्देह अल्लाह उसकी अवश्य सहायता करेगा । निःसन्देह अल्लाह बहुत माफ करने वाला (और) अत्यन्त क्षमाशील है । 61।

यह इस कारण है कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है । 62।

यह उसी प्रकार है क्योंकि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं वही मिथ्या है । और निःसन्देह अल्लाह ही बहुत ऊँची शान वाला है (और) बहुत बड़ा है । 63।

क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा तो धरती उससे हरी-भरी हो जाती है । निःसन्देह अल्लाह बहुत सूक्ष्मदर्शी और सदा अवगत रहता है । 64।

وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ مَا خَيْرُ الرِّزْقِينَ ⑦

لَيَدِ خَلَقَهُمْ مَذْخَلًا يَرْضُونَهُ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ حَلِيمٌ ⑦

ذَلِكَ ۝ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا أَعْوَقَ بِهِ
شَرَّ بَعْدِ عَلَيْهِ لَيَنْصَرَهُ اللَّهُ ۝ إِنَّ اللَّهَ
لَعَفُوٌ غَفُورٌ ⑦

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُؤْلِحُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤْلِحُ
النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَيِّئَ بَصِيرٌ ⑦

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ
مِنْ دُوَّنَهُ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ⑦

الْمُتَرَآءُ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءَ مَاءً
فَضَّيَّعَ الْأَرْضَ مُخْصَرَةً ۝ إِنَّ اللَّهَ
لَطِيفٌ حَيْزُرٌ ⑦

उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और निःसन्देह अल्लाह ही है जो बेपरवा (और) अति प्रशंसनीय है । 165। (रुकूः ٤)

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने जो कुछ धरती में है तुम्हारे लिए सेवा पर लगा दिया है और नौकाओं को भी । वे उसकी आज्ञा से समुद्र में चलती हैं । और वह आसमान को रोके हुए है कि वह उसके आदेश के बिना धरती पर न गिरे । निःसन्देह अल्लाह मनुष्यों पर बहुत ही दयाशील (और) बार-बार कृपा करने वाला है । 166।

और वही है जिसने तुम्हें जीवित किया है । फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जीवित करेगा । निःसन्देह मनुष्य बड़ा कृतघ्न है । 167।

प्रत्येक संप्रदाय के लिए हमने कुर्बानी की विधि निर्धारित की है जिसके अनुसार वे कुर्बानी करते हैं । अतः वे इस विषय में तुझ से कदापि कोई ज्ञाग़ा न करें और तू अपने रब्ब की ओर बुला । निःसन्देह तू हिदायत की सीधी राह पर (अग्रसर) है । 168।

और यदि वे तुझ से ज्ञाग़ा करें तो कह दे कि अल्लाह उसे ख़ूब जानता है जो तुम करते हो । 169।

अल्लाह क़लामत के दिन तुम्हारे बीच उस विषय में फैसला करेगा जिस में तुम मतभेद करते थे । 170।

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنْ
اللَّهُ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

الْمُتَرَآءُ اللَّهُ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ
وَالنَّفَلَكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِإِمْرِهِ
وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنَّ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ
إِلَّا بِإِذْنِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِالثَّاَسِ لَرَءُوفٌ
رَّحِيمٌ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَا كُمْ ۖ لَمْ يُمْيِشْ كُمْ ثُمَّ
يُحْيِي كُمْ ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مِنْكُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى
رِبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَى هُدَىٰ مُّسْتَقِيمٍ ۝

وَإِنْ جَدَلُوكَ قُتْلِيَ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝

اللَّهُ يَعْلَمُ بِمَا بَيْنَ كُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قِيمًا
كُنْتُمْ فِيهِ تَحْكَلُونَ ۝

क्या तुझे जानकारी नहीं कि अल्लाह उसे जानता है जो आसमान और धरती में है। निश्चित रूप से यह (सब कुछ) एक पुस्तक में है। निःसन्देह यह बात अल्लाह के लिए सरल है। 171।

और वे अल्लाह के सिवा उसकी उपासना करते हैं जिस के बारे में उसने कोई निरायक तर्क नहीं उतारा और जिसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं। और अत्याचारियों के लिए कोई सहायक नहीं होगा। 172।

और जब उन के समक्ष हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके चेहरों पर जिन्होंने इनकार किया तू अप्रियता (के लक्षण) पहचान लेता है। सम्भव है कि वे उन पर झपट पड़े जो उनके सामने हमारी आयतें पढ़ते हैं। अतः तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इससे अधिक बुराई वाली बात से अवगत करूँ। (अर्थात्) आग। उसका अल्लाह ने उनसे वादा किया है जिन्होंने इनकार किया और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। 173। (रुकू ١٦)

हे मनुष्यो ! एक महत्वपूर्ण उदाहरण वर्णन किया जा रहा है। अतः इसे ध्यानपूर्वक सुनो। निःसन्देह वे लोग जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो कदापि एक मक्खी भी न बना सकेंगे चाहे वे इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ। और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसको उससे छुड़ा नहीं सकते। क्या

الْمُتَعَلِّمُ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑦

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ
سُلْطَانًا وَمَا يَسِيرُ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا
لِلظَّلَمِيْنَ مِنْ نَصِيرٍ ⑧

وَإِذَا تَشَاءَ عَلَيْهِمْ أَيْتَنَا بِسِلْطَنَتِنَ تَعْرِفُ فِي
وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْمُنْكَرُ إِنَّكَادُونَ
يَسْطُونَ بِإِلَذِينَ يَشْلُونَ عَلَيْهِمْ أَيْتَنَا
قُلْ أَفَإِنِّيْكُمْ بِشَرِّ قَنْ ذِلِّكُمْ إِنَّثَارًا
وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑨

يَا أَيُّهَا النَّاسُ صَرِيبَ مَثْلُ فَاسْتَمِعُوا إِلَهٌ
إِنَّ الَّذِينَ تَذَمَّعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَنْ
يَحْلُفُوا أَذْبَابًا وَلَوْ اجْمَعُوا إِلَهٌ وَلَنْ
يَسْلِبُهُمُ الْذَّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَقْدُوْهُ

ही असहाय है (वरदान) माँगने वाला और वह जिससे (वरदान) माँगा जाता है ।¹⁷⁴

उन्होंने अल्लाह की महानता का वैसा अनुमान नहीं लगाया जैसा कि उसका अनुमान लगाना चाहिए था । निःसन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।¹⁷⁵

अल्लाह फरिश्तों में से रसूल चुनता है और मनुष्यों में से भी । निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।¹⁷⁶*

वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है । और अल्लाह ही की ओर (सब) मामले लौटाए जाएँगे ।¹⁷⁷

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! रुकू करो और सजदः करो और अपने रब्ब की उपासना करो । और अच्छे कर्म करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।¹⁷⁸

और अल्लाह के संबंध में जिहाद करो जिस प्रकार उसके लिए जिहाद करना उचित है । उसने तुम्हें चुन लिया है और तुम पर धर्म के मामलों में कोई तंगी नहीं डाली । यही तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म था । उस (अर्थात् अल्लाह) ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा । (इस से) पूर्व भी और इस (कुरआन) में भी ।

مِنْهُ طَصْحَفَ الظَّالِمِ وَالْمُطَلُوبِ ⑥

مَا قَدَرَ رَبُّ اللَّهِ حَقَّ قَدْرِهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَغَوِيٌّ
عَزِيزٌ ⑦

اللَّهُ يَضْطَفِنُ مِنَ الْمَلِكَةِ رَسْلًا وَمِنَ
الثَّالِثِ ۝ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ⑧

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۝
وَإِلَى اللَّهِ تَرْجَعُ الْأُمُورُ ⑨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كَعُوا وَأَبْجَدُوا
وَأَعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَأَفْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ
تَفْلِحُونَ ⑩

وَجَاهَدُوا فِي اللَّهِ حَقِّ جِهَادِهِ ۝ هُوَ
أَجْبَرُكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ
مِنْ حَرَجٍ ۝ مِلَّةُ أَيِّكُمْ أَبْرَاهِيمَ ۝ هُوَ
سَمِيعُ الْمُسْلِمِينَ ۝ مِنْ قَبْلِ وَفِي هَذَا
لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ

* इस पवित्र आयत में एक ईश्वरीय परम्परा को निश्चित नियम स्वरूप वर्णन किया गया है जिसके समाप्त होने का कोई उल्लेख नहीं । अर्थात् यह कि अल्लाह तआला फरिश्तों को अथवा मनुष्यों को सदा अपना रसूल बना कर भेजा करता है ।

ताकि रसूल तुम सब पर निरीक्षक बन जाए और तुम समस्त मनुष्यों पर निरीक्षक बन जाओ। अतः नमाज को क्रायम करो और ज़कात दो और अल्लाह को दृढ़ता पूर्वक थाम लो। वही तुम्हारा स्वामी है। अतः क्या ही अच्छा स्वामी और क्या ही अच्छा सहायक है। 179।*

(रुकू 10
17)

وَتَكُونُوا شَهِدًا عَلَى النَّاسِ فَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوْةَ وَاغْتَصِمُوا
بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَانَا فَنُعْمَ الْمَوْلَى
وَنَعْمَ الْتَّصِيرُ

-
- * इस आयत में ध्यान देने योग्य बात मुख्यतः यह है कि मुस्लिम शब्द पर किसी का एकाधिकार नहीं। इस्लाम से बहुत पूर्व ही अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को और उनकी जाति को मुस्लिम घोषित किया था। इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का समस्त मुसलमानों पर शहीद अर्थात् निरीक्षक होने का उल्लेख है और मुसलमानों का शेष दूसरी जातियों पर शहीद होने का वर्णन है। जिन अर्थों में हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने समय में शहीद थे, ठीक उसी प्रकार आप सल्ल. का अनुसरण करते हुए मुसलमान दूसरों पर शहीद हैं। परन्तु शहीद होने का यह अर्थ नहीं कि दूसरों को ज़बरदस्ती अपनी पसंद का मुसलमान बनाया जाए। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने शहीद होते हुए भी कभी आक्रामक रूप से युद्ध नहीं किया और न ही किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया।

23- सूरः अल-मु'मिनून

मक्का में अवतरित होने वाली यह अन्तिम सूरतों में से है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 119 आयतें हैं।

पिछली सूरः के अन्त पर यह उल्लेख था कि वास्तविक सफलता नमाज़ को कायम करने और ज़कात अदा करने तथा इस बात में है कि अल्लाह तआला को दृढ़ता पूर्वक थाम लिया जाए। अतएव जिस महान सफलता का इसमें संकेत मिलता है उसका विस्तृत विवरण सूरः अल मु'मिनून की प्रारम्भिक आयतों में उल्लेख है कि सफलता प्राप्त करने वाले वे मोमिन हैं जो केवल नमाज़ को कायम नहीं करते और ज़कात अदा नहीं करते बल्कि उनमें और भी अनेकों गुण पाये जाते हैं। वे दोनों प्रकार के गुण हैं अर्थात् किन-किन बातों से बचते हैं और किस प्रकार के नेक कर्म करते हैं।

इसके बाद यह भी कहा गया है कि यद्यपि जीवन का पानी आकाश से उतरता है और उसके बार-बार आकाश से उतरने की व्यवस्था मौजूद है। परन्तु यदि किसी कारण अल्लाह तआला मानव जाति को सीख देना चाहे तो वह इस बात पर समर्थ है कि इस पानी को वापस ले जाए। ये दो प्रकार से सम्भव हैं। पहला यह कि आकाश की ऊँचाइयों से पानी को बार-बार वापस भेजने की जो व्यवस्था है, उसमें अल्लाह तआला कोई परिवर्तन कर दे। जैसा कि सृष्टि के प्रारम्भ में धरती का पानी निरन्तर वाष्प के रूप में आकाश की ओर उठता रहा और जब बरसता था तो बीच की तप्त वायुमण्डल के कारण पुनः वापस उठ जाता था। दूसरा वह है जो साधारणतः दिखाई देता है कि जब पानी धरती की गहराई में उतर जाए तो फिर गहरे कुओं की निम्नस्तर से भी नीचे चला जाता है।

इसके बाद फिर पानी के विषयवस्तु को आगे बढ़ा कर उन नौकाओं का वर्णन है जो पानी पर चलती हैं। और इसी प्रकरण में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नौका का भी वर्णन आया है कि पानी के ऊपर नौकाओं को चलने की क्षमता तभी प्राप्त होती है जब अल्लाह तआला की आज्ञा हो। भारी से भारी तूफान में भी नौकाएँ पानी पर सुरक्षित चलती रहती हैं। और कभी-कभी हल्के से तूफान से भी ढूब जाती हैं। जब जातियाँ अपने ऊपर उतारी गई आध्यात्मिक आसमानी पानी से कृतघ्नता पूर्वक व्यवहार करती हैं तो भौतिक पानी की भाँति उस आध्यात्मिक पानी से भी अल्लाह उन्हें वंचित कर देता है और यह बात भी उन्हें लाभ नहीं पहुँचाती कि मूसलाधर वर्षा की भाँति लगातार उन में रसूल आते रहे हैं, परन्तु सब के इनकार करने पर वे अड़े रहते हैं।

फिर ऐसे पहाड़ी द्वे त्रों का वर्णन किया गया जहाँ पानी के स्रोत फूटते थे। जो दिल

की शान्ति और सन्तुष्टि के कारण बनते थे । हज़रत मसीह अलै. और उनकी माता को शबुओं से बचाते हुए अल्लाह तआला इसी घाटी की ओर ले गया । अनुमान और निशानियों से स्पष्ट होता है कि यह कश्मीर की घाटी ही है ।

इसके बाद आयत संख्या 79 में यह विषयवस्तु वर्णन किया गया है कि विकास के क्रम में मनुष्य को सब से पहले श्रवण शक्ति प्रदान की गई थी । और इसके बाद दृष्टिशक्ति और फिर वे हृदय प्रदान किये गये जो गहन ज्ञान शक्ति रखते हैं और प्रत्येक प्रकार के आध्यात्मिक विषय को समझने का सामर्थ्य रखते हैं ।

इसके बाद कुछ ऐसी आयतें आती हैं जिनके विषयवस्तु उन आयतों से मिलते जुलते हैं जिन का विस्तृत विवरण पहले हो चुका है । फिर एक ऐसी आयत है जो एक नये विषयवस्तु को प्रस्तुत कर रही है । कल्यामत के दिन जब मनुष्यों से यह प्रश्न किया जाएगा कि तुम धरती में कितनी देर रहे हो ? तो वे कहेंगे, शायद एक दिन अथवा उस का कुछ भाग । इसके उत्तर में अल्लाह तआला यह कहेगा कि वास्तव में तुम इस से भी बहुत कम समय वहाँ ठहरे हो । इससे तात्पर्य मृत्यु के पश्चात् पुनर्जीवित होने तक के समय की लम्बाई है । भौतिक जगत इतना दूर दिखाई देगा कि जैसे अचानक बीत गया । और यह वह विषय जो मनुष्य के दैनिक अनुभव में आया है कि बहुत दूर के सितारे जो अपनी विशालता में सूर्य और चन्द्रमा तथा समग्र सौर मण्डल से भी बहुत बड़े हैं देखने में वे मात्र छोटे छोटे बिन्दुओं की भाँति लगते हैं ।

इस सूरः की अन्तिम आयत एक दुआ के रूप में है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन शब्दों में सिखाई गई कि अपने रब्ब को सम्बोधन करके यह विनती किया कर कि हे मेरे रब्ब ! क्षमा कर दे और दया कर । तू सब दया करने वालों में बेहतर दया करने वाला है ।



سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مَا لَهُ وَسِتَّةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

निःसन्देह मोमिन सफल हो गए । 12।

۱۲

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ②

वे जो अपनी नमाज़ में विनम्रता करने
वाले हैं । 13।

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَشِعُونَ ③

और वे जो व्यर्थ (बातों) से बचने वाले
हैं । 14।

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ الْلَّغْوِ مُعْرِضُونَ ④

और वे जो (विधिवत) ज़कात अदा
करने वाले हैं । 15।

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكُورَةِ فَعَلُونَ ⑤

और वे जो अपने गुप्तांगों की सुरक्षा
करने वाले हैं । 16।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَامِلَكَتْ

परन्तु अपनी पत्नियों से नहीं अथवा
उनसे (भी नहीं) जिनके स्वामी उनके
दाहिने हाथ हुए । निःसन्देह वे धिक्कारे
नहीं जाएँगे । 17।

أَيْمَانَهُمْ فَإِلَهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ⑥

फिर जो इससे हट कर कुछ चाहे तो
यही लोग ही सीमा का उल्लंघन करने
वाले हैं । 18।

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْعَدُونَ ⑦

और वे लोग जो अपनी अमानतों
और अपनी प्रतिज्ञा की निगरानी
करने वाले हैं । 19।

وَالَّذِينَ هُمْ لَا مُتَّهِمُونَ وَعَهْدُهُمْ
رَعِيَّونَ ⑧

और वे लोग जो अपनी नमाज़ों के रक्षक
बने रहते हैं । 10।

यही हैं वे जो उत्तराधिकारी बनने वाले
हैं । 11।

أُولَئِكَ هُمُ الْوَرِثُونَ ⑨

(अर्थात्) वे जो फ़िरदौस के उत्तराधिकारी होंगे । वे उसमें सदा रहने वाले हैं ॥121॥

और निःसन्देह हमने मनुष्य को गीली मिटटी के सार-तत्त्व से पैदा किया ॥13॥

फिर हमने उसे वीर्य के रूप में एक ठहरने के सुरक्षित स्थान में रखा ॥14॥

फिर हमने उस वीर्य को एक (खून का) थक्का बनाया । फिर थक्के को मांसपिंड (की भाँति जमा हुआ खून) बना दिया । फिर उस मांसपिंड को हड्डियाँ बनाया, फिर हड्डियों को माँस पहनाया । फिर हमने उसे एक नई सृष्टि के रूप में विकसित किया । अतः एक वही अल्लाह मंगलमय सिद्ध हुआ जो सर्वोत्कृष्ट सृष्टिकर्ता है ॥15॥

फिर अवश्य तुम उसके पश्चात् मृत्यु को प्राप्त करने वाले हो ॥16॥

फिर अवश्य तुम क़्रयामत के दिन उठाए जाओगे ॥17॥

और निःसन्देह हमने तुम्हारे ऊपर सात मार्ग बनाए हैं और हम सृष्टि से बेखबर रहने वाले नहीं ॥18॥*

और हमने आसमान से एक अनुमान के अनुसार पानी उतारा । फिर उसे धरती में ठहरा दिया और हम उसे (वापस) ले जाने पर भी अवश्य सामर्थ्य रखते हैं ॥19॥

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا
خَلِدُونَ ⑩

وَلَقَدْ خَلَقْنَا إِلَّا إِنْسَانٍ مِّنْ سُلَّةٍ مِّنْ
طِينٍ ⑪

لَمْ جَعَلْنَاهُ نُظْفَةً فِي قَرَابِ مَكِينٍ ⑫

لَمْ خَلَقْنَا الْأُنْطَفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْحَقَّةَ
مُضْعَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْعَةَ عِظَمًا
فَكَسَوْنَا الْعِظَمَ لَحْمًاً ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ حُكْمًا
أَخْرَى ⑬ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَكْبَرُ أَحْسَنُ الْخَلَقِينَ ⑭

لَمْ إِنْكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمْ يَتَّقُونَ ⑮

لَمْ إِنْكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تَبْغُونَ ⑯

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا
كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ⑰

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَا يُؤْمِنُ بِقَدَرِ فَآشِكَّهُ
فِي الْأَرْضِ ⑱ وَإِنَّا عَلَى ذَهَابِهِ
لَقِدْرُونَ ⑲

* यहाँ मनुष्यों के ऊपर सात आसमानी मार्गों का वर्णन मिलता है । सात के अंक से अभिप्राय ऐसा अंक है जो बार-बार दोहराया जाता है जैसा कि सप्ताह, प्रत्येक सात दिन के बाद दोबारा आता है । अतः सात मार्ग से तात्पर्य अनगिनत अकाशीय मार्ग हैं ।

फिर हमने उसके द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बगीचे विकसित किये । उनमें तुम्हारे लिए बहुत फल (लगते) हैं । और उनमें से तुम खाते भी हो । 120।

और एक ऐसा वृक्ष उगाया जो सैना पर्वत में निकलता है, जो तेल और खाने वालों के लिए एक प्रकार की तरकारी के रूप में उगता है । 121।

और निःसन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में एक शिक्षा है । हम तुम्हें उसमें से जो उनके पेटों में है पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं । और उन्हीं में से कुछ तुम खाते भी हो । 122।

और उन पर तथा नौकाओं पर भी तुम सवार किए जाते हो । 123। (रुक् ۱)

और निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा तो उसने कहा, हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । तुम्हारे लिए उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः क्या तुम तकबा धारण नहीं करोगे ? । 124।

इस पर उन सरदारों ने जिन्होंने उस की जाति में से इनकार किया, कहा यह तो तुम्हारी भाँति एक मानव के अतिरिक्त कुछ नहीं । यह चाहता है कि तुम पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करे । और यदि अल्लाह चाहता तो फरिश्ते उतार देता । हमने तो अपने पिछले पूर्वजों के सम्बन्ध में ऐसा नहीं सुना । 125।

فَأَئْشَانَا لَكُمْ بِهِ جَهْنَمٌ مِّنْ نَّارٍ
وَأَعْنَابٌ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهٌ كَثِيرَةٌ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

وَسَجَرَةٌ تَخْرُجُ مِنْ طُورٍ سَيِّئَاءٍ
تَبْتُغُ بِالدُّهْنِ وَصَبْغٌ لِلْأَكْلِينَ ۝

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ عِبْرَةٌ لَسْقِيْكُمْ
مَّا فَافَ بَطْرُونَهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعٌ
كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تَحْمِلُونَ ۝
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ
يَقُولُونَ إِنَّا عَبْدُ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنَ الْوَغْرَةِ
أَفَلَا تَتَقَوَّنَ ۝

فَقَالَ الْمَلَوُّ الْأَذْيَنَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مُّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ
يَنْهَاكُمْ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَا تَرْزَقُ
مَلِكَةٌ مَا سَمِعْنَا بِهِذَا فِي أَبَآءِنَا
الْأَوَّلِينَ ۝

यह तो केवल एक मनुष्य है जो उन्मादग्रस्त हो गया है। अतः कुछ समय तक इसके (परिणाम के) बारे में प्रतीक्षा करो। 126।

उसने कहा, हे मेरे रब ! मेरी सहायता कर, क्योंकि इन्होंने मुझे झुठला दिया है। 127।

अतः हमने उसकी ओर वहइ की, कि हमारी आँखों के सामने और हमारी वहइ के अनुसार एक नौका निर्मित कर। फिर जब हमारा आदेश आ जाए और (धरती का) स्रोत फूट पड़े तो इसमें प्रत्येक (आवश्यक जीव-जन्तु) में से जोड़ा-जोड़ा और अपने घर वालों को भी सवार कर ले। उनमें से सिवाए उसके जिसके विरुद्ध निर्णय हो चुका है। और मुझ से उन लोगों के बारे में कोई बात न कर जिन्होंने अत्याचार किया। निःसन्देह वे दुबो दिए जाने वाले हैं। 128।

अतः जब तू और वे जो तेरे साथ हैं नौका पर सवार हो जायें, तो यह कह कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान की। 129।

और तू कह कि हे मेरे रब ! तू मुझे एक ऐसे स्थान पर उतार जो मंगलमय हो। और तू उतारने वालों में सबसे उत्तम है। 130।

निःसन्देह इसमें बड़े-बड़े चिह्न हैं। और हम अवश्य परीक्षा में डालने वाले थे। 131।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَصُوا بِهِ
حَتَّىٰ حِينٍ ⑩

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبْتُونِ ⑪

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْبِعِ الْفُلْكَ بِأَغْيِنَتَا
وَوَحْيَنَا فَإِذَا جَاءَهُ أَمْرُنَا وَفَارَ الشَّتُورُ
فَاسْلَكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ رَوْجَنِ اثْنَيْنِ
وَأَهْلَكْ إِلَامَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ
مِنْهُمْ وَلَا تَخَاطِبْنِي فِي الظِّلِّيْنَ ضَلَّمُوا
إِنَّهُمْ مُغْرِقُونَ ⑫

فَإِذَا السَّوَىْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى
الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا
مِنَ الْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ ⑬

وَقُلْ رَبِّ انْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبْرَكًا وَأَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزَلِيْنَ ⑭

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لِمُبْتَلِيْنَ ⑮

फिर हमने उनके पश्चात् दूसरे युग के लोग पैदा कर दिए । 132।

फिर हमने उनमें भी उन्हीं में से एक रसूल भेजा (जो कहता था) कि अल्लाह की उपासना करो । उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई उपास्य नहीं । अतः क्या तुम तक्रवा धारण नहीं करोगे ? 133।

(रुक् ۲)

और उसकी जाति के उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़ किया और परकालीन साक्षातकार का इनकार कर दिया । जबकि हमने सांसारिक जीवन में उनको बहुत समृद्धि प्रदान की थी, कहा कि यह तो तुम्हारी भाँति मनुष्य के सिवा कुछ नहीं । उन्हीं वस्तुओं में से खाता है जिनमें से तुम खाते हो और उन्हीं पदार्थों में से पीता है जिनमें से तुम पीते हो । 134।

और यदि तुमने अपने ही जैसे किसी मनुष्य का आज्ञापालन किया तो निःसन्देह तुम बहुत हानि उठाने वाले हो जाओगे । 135।

क्या यह तुम्हें इस बात से डराता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम (जीवित करके) निकाले जाओगे । 136।

दूर की बात है, बहुत दूर की बात है जिसका तुम से वादा किया जाता है । 137।

हमारा तो केवल यही संसार का जीवन है । हम (यहीं) मरते भी हैं और जीवित

لَمْ أَلْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْبًا أَخْرِيْنَ ﴿١﴾

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٌ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا
تَنْعَمُونَ ﴿٢﴾

وَقَالَ الْمَلَائِكَةُ قَوْمُهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِلِقَاءَ الْآخِرَةِ وَأَثْرَفُهُمْ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ مَا هُنَّ إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۗ يَا أَكُلُّ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ
وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣﴾

وَلَئِنْ أَطْعَمْتَهُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا
لَخِسَرُونَ ﴿٤﴾

إِيَّüدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِمْتُمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا
وَعِظَامًا أَنَّكُمْ مُّهْرَجُونَ ﴿٥﴾

هَيَّاهَاتٌ هَيَّاهَاتٌ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٦﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاةُ الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا

भी रहते हैं और हम कदापि उठाए नहीं
जाएँगे । 138।

यह केवल एक ऐसा व्यक्ति है जिसने
अल्लाह पर झूठ गढ़ा है और हम इस पर
ईमान लाने वाले नहीं । 139।

उसने कहा, हे मेरे रब ! मेरी
सहायता कर क्योंकि इन्होंने मुझे
झुठला दिया है । 140।

उस ने कहा थोड़ी देर में ही वे अवश्य
लज्जित हो जाएँगे । 141।

अतः उनको एक धमाकेदार ध्वनि ने
सत्य (वचन) के अनुरूप आ पकड़ा
और हमने उन्हें कूड़ा-करकट बना
दिया। अतः अत्याचारी लोगों पर
लान्त हो । 142।

फिर हमने उनके पश्चात् दूसरे युग वालों
को पैदा किया । 143।

कोई जाति अपनी निर्धारित अवधि से न
आगे बढ़ सकती है और न पीछे हट
सकती है । 144।

फिर हमने अपने रसूल लगातार भेजे ।
जब भी किसी जाति की ओर उसका
रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठला
दिया। अतः हम उनमें से कुछ को कुछ
दूसरों के पीछे लाए । फिर हमने उन्हें
किस्से-कहानियाँ बना दिया । अतः
लान्त हो ऐसे लोगों पर जो ईमान नहीं
लाते । 145।

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून
को अपने चिह्न और खुला-खुला
अकाट्य प्रमाण के साथ भेजा । 146।

وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿١﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ④

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَبْتُونِ ⑤

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيْسَ بِكُنَّ نَدِيمِينَ ⑥

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَعَلِمُوهُمْ
غُثَاءً ۝ فَبَعْدًا لِلنَّقْوَمِ الظَّلِمِينَ ⑦

لَمْ يَأْنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا أُخْرَىٰ ⑧

مَا تَسْبِقُ مِنْ أَمْةٍ أَجَلَهَا وَمَا
يَسْأَلُهُنَّ ⑨

لَمَّا أَرْسَلْنَا رَسُلًا شَتَّىٰ لِكُلِّ مَجَاهِدٍ أَمَّةً
رَسُولُهَا كَذَبُوْهُ فَأَشْبَعَنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثٍ ۝ فَبَعْدًا لِقَوْمٍ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑩

لَمَّا أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَآخَاهُ هَرُونَ ۝ بِإِلْيَاتِنا
وَسَلَطِنِينَ ⑪

फिर औन और उसके सरदारों की ओर, तो उन्होंने अहंकार किया और वे उदंडी लोग थे । 47।

अतः उन्होंने कहा, क्या हम अपने जैसे दो मनुष्यों पर ईमान ले आएँ जबकि इन दोनों की जाति हमारी दास है । 48।

अतः उन दोनों को उन्होंने झुठला दिया और वे स्वयं तबाह किए जाने वालों में से बन गए । 49।

और निःसन्देह हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की थी ताकि वे हिदायत पाएँ । 50।

और मरियम के पुत्र को और उसकी माँ को भी हमने एक चिह्न बनाया था । और उन दोनों को हमने एक ऊचे स्थान की ओर शरण दी जो शांतिमय और जलस्रोत युक्त था । 51। (रुक् ۳)

हे रसूलो ! पवित्र वस्तुओं में से खाया करो और नेक कर्म किया करो । जो कुछ तुम करते हो उसका मैं अवश्य स्थायी ज्ञान रखता हूँ । 52।

और निःसन्देह यह तुम्हारी जाति एक ही जाति है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ । अतः मुझ से डरो । 53।

फिर उन्होंने अपने मामले को अपने बीच टुकड़े-टुकड़े (कर) बाँट लिया । सभी समूह उस पर जो उनके पास था अहंकार करने लगे । 54।

अतः उन्हें उनकी अज्ञानता में कुछ समय के लिए छोड़ दे । 55।

إِنَّ فِرْعَوْنَ وَمَلَأٌهُ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا أَقْوَمَ أَعْالَيْنَ ⑤

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ بِيَسَرِّنَا مِثْلًا
وَقَوْمَهُمَا لَنَا عِدْوَنَ ⑤

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهَمَّلِكِينَ ⑤

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ
يَهَتَّدُونَ ⑤

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَآمَةً أَيَّهُ
وَأَوْيَنَهُمَا إِنَّ رَبَّوْةً ذَاتِ قَرَارٍ
وَمَعْيَنٍ ⑤

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ كُلُّا مِنَ الظَّلِيلِتِ وَأَعْمَلُوا
صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلَيْمٌ ⑤

وَإِنَّ هَذِهِ أَمْتَكْرُمَةً وَاحِدَةً وَأَنَا
رَبُّكُمْ فَاقْتُقُونِ ⑤

فَتَقْطَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زَرَبَاءٌ كُلُّ
حِزْبٍ بِمَا لَدَنِيهِمْ فَرِحُونَ ⑤

فَذَرْهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ⑤

क्या वे यह विचार करते हैं कि हम जो धन और संतान के द्वारा उनकी सहायता करते हैं, 156।

हम उन्हें भलाइयों में आगे बढ़ा रहे हैं ? नहीं, नहीं ! वे कुछ सूझ-बूझ नहीं रखते 157।

निःसन्देह वे लोग जो अपने रब्ब के रोब से डरने वाले हैं 158।

और वे लोग जो अपने रब्ब की आयतों पर ईमान लाते हैं 159।

और वे लोग जो अपने रब्ब के साथ साझीदार नहीं ठहराते 160।

और वे लोग कि, जो भी वे देते हैं इस प्रकार देते हैं कि उनके दिल (इस सोच से) डरते रहते हैं कि वे अवश्य अपने रब्ब के पास लौट कर जाने वाले हैं 161।

यहीं वे लोग हैं जो भलाइयों में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं और वे उनमें आगे बढ़ जाने वाले हैं 162।

और हम हर एक जान को उसकी शक्ति के अनुसार ही बाध्य करते हैं । और हमारे पास एक पुस्तक है जो सच बोलती है । और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 163।

वास्तविकता यह है कि उनके दिल उससे बेखबर हैं । और इसके अतिरिक्त भी उनके ऐसे कर्म हैं जो वे किया करते हैं । 164।

यहाँ तक कि जब हम उनके सम्पन्न व्यक्तियों को अज्ञाब के द्वारा पकड़ लेते

أَيْسَبُونَ أَنَّمَا نِعْمَةُ رَبِّهِ مِنْ مَالٍ
وَبَنِينَ ⑩

نَسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ بَلْ لَا
يَشْعُرُونَ ⑪

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خُشِّيَةِ رَبِّهِمْ
مُّسْفِقُونَ ⑫

وَالَّذِينَ هُمْ بِإِيمَانِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ⑬

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ⑭

وَالَّذِينَ يُؤْتَوْنَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجْهَةٌ
إِنَّهُمْ إِلَى رَبِّهِمْ لَّرْجَعُونَ ⑮

أُولَئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا
سِقْوَنَ ⑯

وَلَا تَكُلْفُ نَفْسًا إِلَّا وَسْعَهَا وَلَدَيْنَا

كِتَابٌ يَنْطَلِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑰

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرَةٍ قُنْ هَذَا وَلَهُمْ
أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عِلْمُونَ ⑱

حَتَّىٰ إِذَا أَخْذَنَا مُثْرِفَهُمْ بِالْعَذَابِ

हैं तो सहसा वे चीखने-चिल्लाने लगते हैं 165।

आज के दिन न चिल्लाओ । कदापि तुम्हें हमारी ओर से कोई सहायता नहीं दी जाएगी 166।

तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें पाठ की जाती थीं फिर भी तुम अपनी एडियों के बल फिर जाते थे 167।

(उस पर) अहंकार करते हुए, इसके बारे में रातों को बैठके लगाते हुए निरर्थक बातें करते थे 168।

अतः क्या उन्होंने इस बात पर विचार नहीं किया अथवा उन तक कोई ऐसी बात पहुँची है जो उनके पिछले पूर्वजों तक नहीं पहुँची थी ? 169।

अथवा क्या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं इसलिए वे उसके इनकार करने वाले हो गए हैं 170।

अथवा वे कहते हैं कि उसे उन्माद हो गया है ? नहीं, बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है । जबकि उनमें से अधिकतर सत्य को नापसंद करने वाले हैं 171।

और यदि सत्य उनकी इच्छाओं का अनुसरण करता तो अवश्य आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है सबके सब बिगड़ जाते । वास्तविकता यह है कि हम उन्हीं का उपदेश उनके पास लाए हैं और वे अपने ही उपदेश से मुंह मोड़ रहे हैं 172।

إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿١﴾

لَا تَجْزِرُو الْيَوْمَ إِنَّكُمْ مِّنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢﴾

فَذَكَرْتُ أَيْتِيَ شَتِيَ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ
أَعْقَابِكُمْ شَكِّصُونَ ﴿٣﴾

مُسْتَكِبِرِينَ ۝ بِهِ سِيرًا تَهْجِرُونَ ﴿٤﴾

أَفَلَمْ يَدَبَرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا
لَمْ يَأْتِ أَبَاءُهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٥﴾

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُ فَهُمْ لَهُ
مُشْكِرُونَ ﴿٦﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ حِجَّةٌ بِلْ كَيْأَهُمْ بِالْحَقِّ
وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧﴾

وَكَوْا أَثْيَعَ النَّحْقَ أَهْوَاءُهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمُوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَنْ قَيَّمَ بِلْ
أَتَيْنَاهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُّعْرِضُونَ ﴿٨﴾

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है ?
अतः (वे याद रखें कि) तेरे रब्ब का
अनुदान अत्युत्तम है और वह जीविका
प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है । 73।

और निःसन्देह तू उन्हें सन्मार्ग की ओर
बुला रहा है । 74।

और निःसन्देह वे लोग जो परलोक पर
ईमान नहीं लाते सन्मार्ग से भटक जाने
वाले हैं । 75।

और यदि हम उन पर दया करते और
जो पीड़ा उन्हें है उसे दूर कर देते तो वे
अवश्य अपनी उद्दण्डता में भटकने
लगते । 76।

और निःसन्देह हमने उन्हें अज्ञाब के
द्वारा पकड़ लिया । अतः न उन्होंने अपने
रब्ब के समक्ष विनम्रता अपनाई और न
वे अनुनय-विनय करते थे । 77।

यहाँ तक कि जब हमने कठोर अज्ञाब का
द्वार उन पर खोल दिया तो इस पर सहसा
वे पूर्ण रूप से निराश हो गए । 78।

(रुक् ٤)

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान
और आँखें और दिल पैदा किए । तुम जो
कृतज्ञता प्रकट करते हो (वह) बहुत
कम है । 79।

और वही है जिसने धरती में तुम्हारा
बीजारोपण किया और उसी की ओर तुम
इकट्ठे किए जाओगे । 80।

और वही है जो जीवित करता है और
मारता है और रात और दिन की भिन्नता

أَمْ تَسْأَلُهُمْ حَرْجًا فَخَرَاجَ رِبْكَ حَبْرٌ
وَهُوَ خَيْرُ الرِّزْقِينَ ⑦

وَإِنَّكَ لَتَذَعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُّدْقَبِّلٍ ⑧

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ
الصِّرَاطِ لَنَكِبُونَ ⑨

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشْفَنَا مَا بِهِمْ مِنْ
صُرُّ لَلْجُوَافِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ⑩

وَلَقَدْ أَخْذَنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَضْرَبُونَ ⑪

حَقٌّ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ
شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ⑫

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئَدَةَ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ⑬

وَهُوَ الَّذِي ذَرَ أَكْمَنَ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تَحْشِرُونَ ⑭

وَهُوَ الَّذِي يَحْيِي وَيُمْتَتَ وَلَهُ الْخِلَافُ

भी उसी के अधिकार में है । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? 181।

बल्कि उन्होंने वैसी ही बात कही जैसी पहले लोग कहा करते थे 182।

वे कहते थे कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम फिर भी अवश्य उठाए जाएँगे ? 183।

निःसन्देह हमसे और हमारे पूर्वजों से भी इससे पूर्व यही वादा किया गया था । यह तो केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं 184।

तू पूछ कि धरती और जो कुछ उसमें है वह किसका है ? (बताओ) यदि तुम्हें ज्ञान है 185।

वे कहेंगे अल्लाह ही का है । कह दे कि क्या फिर तुम सीख नहीं लोगे ? 186।

पूछ कि कौन है सात आसमानों और महान अर्श का रब्ब ? 187।

वे कहेंगे अल्लाह ही के हैं । कह, क्या फिर तुम तकवा धारण नहीं करोगे ? 188।

तू पूछ कि यदि तुम जानते हो (तो बताओ) कि वह कौन है जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का स्वामित्व है और वह शरण देता है परन्तु उसके विरुद्ध शरण नहीं दी जाती ? 189।

वे कहेंगे, अल्लाह ही की है । पूछ, फिर तुम कहाँ बहकाए जा रहे हो ? 190।

اَلَّيلُ وَالنَّهَارُۖ۝ اَفَلَا تَعْقِلُونَ④

بِلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ⑤

قَالُواۚ إِذَا مِتْنَاۚ وَكُنَّا تُرَابًاۚ وَعِظَامًا۝
عَإِنَّا لِمُبْغُونَ⑥

لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ۝ وَآبَاءَ۝ وَنَاهِذَا مِنْ قَبْلٍ۝
إِنْ هَذَا إِلَّا أَساطِيرُ الْأَوَّلِينَ⑦

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ۝ وَمَنْ فِيهَا۝ إِنْ كُنْتُمْ۝
تَعْلَمُونَ⑧

سَيَقُولُونَ بِلِلَّهِ۝ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُونَ⑨

قُلْ مَنْ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ۝ وَرَبُّ۝
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ۝⑩

سَيَقُولُونَ بِلِلَّهِ۝ قُلْ اَفَلَا تَتَقَوَّنَ⑪

قُلْ مَنْ۝ يَبْدِئُ مَلْكُوتَ۝ كُلِّ شَيْءٍ۝ وَهُوَ۝
يُحِينُ۝ وَلَا يَجَارُ عَلَيْهِ۝ إِنْ كُنْتُمْ۝
تَعْلَمُونَ⑫

سَيَقُولُونَ بِلِلَّهِ۝ قُلْ فَأُنِّي سَحَرُونَ⑬

वास्तविकता यह है कि हम उनके पास सत्य लाए हैं और निःसन्देह वे झूठ बोलने वाले हैं। 191।

अल्लाह ने कोई बेटा नहीं अपनाया और न ही उसके साथ कोई और उपास्य है। ऐसा होता तो अवश्य प्रत्येक उपास्य अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता। और अवश्य उनमें से कुछ, कुछ दूसरों पर चढ़ाई करते। पवित्र है अल्लाह उससे जो वे वर्णन करते हैं। 192।

जो अदृश्य और दृश्य का जानने वाला है। और वह उससे बहुत उच्च है जो वे साज्जीदार ठहराते हैं। 193। (रुक् ٥)

तू कह, हे मेरे रब्ब ! यदि तू मुझे वह दिखा ही दे जिससे उनको डराया जाता है (तो यह एक विनती है)। 194।

हे मेरे रब्ब ! अतः मुझे अत्याचारी लोगों में से न बना देना। 195।

और निःसन्देह हम उस पर अवश्य समर्थ हैं कि तुझे वह दिखा दें जिससे हम उनको डराते हैं। 196।

उस (ढंग) से जो उत्तम है बुराई को हटा दे। हम उसे सब से अधिक जानते हैं जो वे बातें बनाते हैं। 197।

और तू कह कि हे मेरे रब्ब ! मैं शैतानों की कु-प्रेरणा से तेरी शरण माँगता हूँ। 198।

और हे मेरे रब्ब मैं (इस बात से भी) तेरी शरण माँगता हूँ कि वे मेरे निकट फटके। 199।

بِلْ أَتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَذِّابُونَ ①

مَا أَنْخَدَ اللَّهُ مِنْ وَلِيٍّ مَا كَانَ مَعَهُ مِنْ
إِلَّا ذَلِيلٌ هَبَ كُلُّ إِلَيْهِ بِمَا خَلَقَ وَلَعْلًا
بَعْصُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سَيِّئُنَّ اللَّهُ عَمَّا
يَصْفُونَ ②

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهادَةِ فَقَاتِلُ عَمَّا
يُشَرِّكُونَ ③

فَلْ رَبِّ إِمَامٍ تُرِيَّتِيْ مَا يُوعَدُونَ ④

رَبِّ فَلَاتَجْعَلْنِي فِي النَّقْوَمِ الظَّلِيمِينَ ⑤

وَإِنَّا عَلَى أَنْ شُرِيكَ مَا نَعْدُهُمْ
لَقَدْرُونَ ⑥

إِذْفَعْ بِالْتَّقْوَىٰ هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَاتِ ٧ نَحْنُ
أَعْلَمُ بِمَا يَصْفُونَ ⑦

وَقُلْ رَبِّ اغْوِيْدِكَ مِنْ هَمَزَتِ
الشَّيْطَانِ ⑧

وَأَغْوِيْدِكَ رَبِّ أَنْ يَخْصُرُونَ ⑨

यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मृत्यु आ जाती है तो वह कहता है, हे मेरे रब्ब ! मुझे लौटा दीजिए ॥1001॥

सम्भवतः मैं उस (संसार) में अच्छे काम करूँ जिसे छोड़ आया हूँ । कदापि नहीं । यह तो केवल एक बात है जो वह कह रहा है । और उनके पीछे उस दिन तक एक रोक खड़ी रहेगी कि वे उठाए जाएँगे ॥101॥

अतः जब बिगुल फूँका जाएगा तो उस दिन उनके बीच कोई सम्बन्ध नहीं रहेंगे । और न ही वे एक दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे ॥102॥

अतः वे जिसके (कर्म के) पलड़े भारी हुए, तो वही लोग सफल होने वाले हैं ॥103॥

और वे जिनके (कर्मों के) पलड़े हल्के हुए तो वही लोग हैं जिन्होंने अपने आप को हानि पहुँचाई । नरक में वे लम्बे समय तक रहने वाले होंगे ॥104॥

अग्नि उनके चेहरों को झुलसाएगी और उसमें (चेहरे के पीड़ाजनक खिचाव से) उनकी दाढ़ें दिखाई देने लगेंगी ॥105॥

क्या तुम्हारे समझ मेरी आयतें नहीं पढ़ी जातीं थीं ? फिर तुम उन्हें झुठलाया करते थे ॥106॥

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! हम पर हमारा दुर्भाग्य छा गया और हम पथभ्रष्ट लोग थे ॥107॥

हे हमारे रब्ब ! हमें इससे निकाल दे । फिर यदि हम पुनः ऐसा करें तो

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ أَحَدَهُمُ الْمَوْتَ قَالَ رَبِّ
إِرْجِعُونَ^{١٦}

لَعَلَّنِي أَعْمَلُ صَالِحًا قَيْمَا تَرْكُثُ كَلَّا
إِنَّهَا لَكَمَةٌ هُوَ قَاتِلُهَا وَمَنْ قَرَأَ بِهِمْ
بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبَعَّثُونَ^{١٧}

فَإِذَا نَفَخْتُ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ يَتَّهَمُ
يَوْمَئِذٍ وَلَا يَسْأَلُونَ^{١٨}

فَمَنْ شَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ^{١٩}

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَلِدُوْنَ^{٢٠}

تَلْفُخُ وَجْهُهُمُ التَّارُ وَ هُمْ فِيهَا
لَكِحُونَ^{٢١}

أَلَمْ تَكُنْ أَيْتَ شَتِّي عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا
تَكَذِّبُونَ^{٢٢}

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبْتُ عَلَيْنَا شَقُّوْشَا وَ كُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ^{٢٣}

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عَدْنَا فَإِنَا

निःसन्देह हम अत्याचार करने वाले होंगे । 108।

वह कहेगा, इसी में चले जाओ और मुझ से बात न करो । 109।

निःसन्देह मेरे भक्तों में से एक समूह ऐसा भी था जो कहा करता था, हे हमारे रब्ब ! हम ईमान ले आए । अतः हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर और तू दया करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है । 110।

अतः तुमने उन्हें उपहास का पात्र बना लिया यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उनसे उपहास करते रहे । 111।

जो वे धैर्य किया करते थे, निःसन्देह आज मैंने उनको उसका प्रतिफल दिया है कि वही अवश्य सफल होने वाले हैं । 112।

वह उनसे पूछेगा, तुम धरती में गिनती के किनते वर्ष रहे ? । 113।

तो वे कहेंगे, हम एक दिन अथवा दिन का कुछ भाग रहे । अतः गणना करने वालों से पूछ । 114।

वह कहेगा, तुम बहुत ही थोड़ा रहे । यदि तुम ज्ञान रखते (तो अच्छा होता) । 115।

अतः क्या तुमने विचार किया था कि हमने तुम्हें बिना उद्देश्य के पैदा किया है और यह कि तुम कदापि हमारी ओर लौटाए नहीं जाओगे ? । 116।

अतः बहुत महान है अल्लाह सच्चा सम्राट । उसके सिवा और कोई

ظَلِمُونَ^④

قَالَ اخْسَئُوا قِهَا وَلَا تَكُلُّمُونِ^⑤

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقُ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ
رَبَّنَا أَمَّا فَاعْغَفْرُنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الرَّحْمَنِ^⑥

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سُخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسُوْكُمْ
ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضَعَّكُونَ^⑦

إِنْ جَرِيْشَهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْا إِنَّهُمْ
هُمُ الْفَاغِرُونَ^⑧

فَلَمَّا لَيْشَمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِّيْنَ^⑨
قَالُوا إِلَيْشَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَقَلِيلٌ
الْعَادِيْنَ^⑩

فَلَمَّا لَيْشَمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْلَا كُمْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ^⑪

أَفَحِسِّبُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبْشًا وَأَنَّكُمْ
إِيْشَا لَا تُرْجَعُونَ^⑫

فَتَعْلَمَ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ^⑬

उपास्य नहीं । प्रतिष्ठित अर्श का रब्ब
है ॥117।

और जो अल्लाह के साथ किसी और
उपास्य को पुकारे जिसका उसके पास
कोई तर्क नहीं तो निःसन्देह उसका
हिसाब उसके रब्ब के पास है । निःसन्देह
काफिर सफल नहीं होते ॥118।

और तू कह, हे मेरे रब्ब ! क्षमा कर दे
और दया कर । और तू दया करने वालों
में सर्वोत्तम है ॥119। (रुक् ६)

رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ⑯

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ أَخْرَىٰ لَا يَرْهَانَ
لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ
لَا يُفْلِحُ الْكُفَّارُونَ ⑰

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَأْرَحْ وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِيمِ ⑱

24- सूरः अन-नूर

यह मदनी सूरः है जो हिजरत के पाँचवे वर्ष अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 65 आयतें हैं।

इससे पूर्व सूरः अल-मु'मिनून के आरम्भ में मोमिनों के लक्षण बताते हुए गुप्तांगों की सुरक्षा का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है और सूरः अन-नूर का विषयवस्तु भी मूल रूप से इसी विषय से सम्बन्ध रखता है। इस सूरः में व्यभिचारी पुरुष तथा व्यभिचारिणी स्त्री के दण्ड का उल्लेख है और इस बात का वर्णन है कि गंदे लोग गंदे साथियों ही से सम्बन्ध रखा करते हैं और मोमिन इस बात का खूब ध्यान रखते हैं कि उनको पवित्र साथी मिलें। इस प्रकरण में इस बात पर भी ज़ोर दिया गया है कि वे दुष्ट लोग जो पवित्र स्त्रियों पर मिथ्यारोप लगाते हैं उन्हें इसका बहुत बड़ा दण्ड मिलेगा। हज़रत आइशा सिद्दीका रजि. अन्हा जो अत्यन्त पुण्यवती स्त्री थीं, उन पर कुछ दुष्टों के द्वारा आरोप लगाने तथा इसके दण्ड पाने का भी इसी सूरः में उल्लेख मिलता है।

इसके पश्चात् पवित्र जीवन-यापन करने वालों को वह उपदेश दिए गए हैं जिनका पालन करने से उनको अल्लाह तआला अधिक पवित्रता प्रदान करेगा। इनमें से एक उपदेश यह है कि जब किसी के घर में प्रवेश करना हो तो सर्वप्रथम सलाम कर लिया करो ताकि घर वालों को असावधान अवस्था में इस प्रकार न पाओ जिससे तुम्हारे विचार भटक जाएँ।

इस प्रकरण में अग्रिम रोकथाम स्वरूप दूसरा उपाय यह बताया गया कि मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ दोनों अपनी आँखें नीची रखें और उन्हें अनावश्यक इधर उधर अनियन्त्रित भटकने न दें।

इस संपूर्ण विवरण के पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला के प्रकाश के एक महान द्योतक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनकी मौलिक विशेषताएँ यह हैं कि वह न केवल पूर्वी जगत के लिए हैं और न पश्चिमी जगत के लिए बल्कि वह पूर्व और पश्चिम को समान रूप से अपने प्रकाश से प्रकाशित करेंगे। और ऐसे दीपक की भाँति हैं जो और बहुत से दीपकों को प्रज्वलित करेगा। इसके साथ सहाबा रजि. के घरों का उल्लेख है कि किस प्रकार उन घरों में भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीपक प्रज्वलित कर दिए।

इसके पश्चात काफ़िरों का उदाहरण दो प्रकार से दिया गया है। एक तो यह कि वे सांसारिक भोग-विलास के वशीभूत होकर अपनी तुष्णा बुझाने का जो प्रयत्न करते हैं अंततः वह पछतावे में परिवर्तित हो जाता है। जैसे मरुस्थल में कोई प्यासा मृगतृष्णा को

पानी समझता है परन्तु जब वह वहाँ पहुँचता है तो उसका अंत यही होता है कि अल्लाह तआला उसको उसके समझ के धोखे का दण्ड देता है । इसी प्रकार प्रकाश के विपरीत उन काफिरों पर इस प्रकार परत दर परत अंधकार छा जाते हैं जिस प्रकार आसमान पर जब घने बादल छाये हुए हों उस समय एक झूबने वाला घन अंधकारपूर्ण गहरे समुद्र में झूब रहा होता है और तब अंधकार इतना अधिक होता है कि वह अपने हाथ को देखने का भी सामर्थ्य नहीं रखता ।

आयत संख्या 52 में वर्णन किया गया है कि सच्चे मोमिनों की परिभाषा यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं तो उस बुलावे को अविलम्ब स्वीकार करते हैं । पिछली सूरः की आयत सं. 2 कद् अफ ल हल मु'मिनून (निःसन्देह मोमिन सफल हो गये) में वर्णित सफलता का भी यहाँ उल्लेख कर दिया गया है कि यही वे लोग हैं जो सफलता पाने वाले हैं ।

इसी सूरः में खिलाफत से सम्बंधित आयत भी है जो इस विषय को प्रस्तुत करती है कि जिस प्रकार पहले नवियों के पश्चात् अल्लाह तआला ने उनके खलीफा (उत्तराधिकारी) नियुक्त किये थे इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पश्चात आपके खलीफा अल्लाह की आज्ञा ही से नियुक्त होंगे, चाहे प्रत्यक्ष रूप से किसी मानवीय चुनाव द्वारा ही हों । उन खलीफाओं की एक पहचान यह होगी कि खतरों और दंगों के समय जब उनके अनुयायी समझ रहे होंगे कि शत्रु उन पर विजय पा रहा है, तब हम उन खतरों को पुनः शांति में परिवर्तित कर देंगे ।

मोमिनों के पूर्ण आज्ञापालन का जो बार-बार वर्णन किया गया है इस आज्ञापालन का एक चिह्न यह है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का केवल आज्ञापालन ही नहीं करते बल्कि आपका अत्यंत आदर-सत्कार भी करते हैं । यहाँ तक कि जब किसी सामूहिक विषय में विचार विमर्श के लिए एकत्रित हों तो कदापि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल. की आज्ञा के बिना सभा से बाहर नहीं जाते । अज्ञानों को शिष्टाचार सिखाते हुए इस सूरः में यह कहा गया है कि जिस प्रकार तुम एक दूसरे को आवाज़ें दिया करते हो हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इस प्रकार आवाज़ें देकर न बुलाया करो ।

इस सूरः की अंतिम आयत में अल्लाह तआला वर्णन करता है कि तुम जो भी दावा करो वह निष्कपटा पूर्ण भी हो सकता है और कपटा पूर्ण भी । अल्लाह ही भली-भाँति जानता है कि तुम किस अवस्था में हो ।

سُورَةُ الْنُّورِ مَدْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَفْتُ وَ سِتُّونَ آيَةً وَ تِسْعَةً رُكُوزًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है । 11

एक महान सूरः जिसे हमने अवतरित किया और इसे अनिवार्य कर दिया और इसमें खुली-खुली आयतें उतारीं ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो । 12।

व्यभिचारीण स्त्री और व्यभिचारी पुरुष, अतः इनमें से प्रत्येक को सौ कोड़े लगाओ और यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिवस पर ईमान लाने वाले हो तो अल्लाह के विधान को लागू करने में उन दोनों के पक्ष में नरमी करने का कोई (विचार) तुम को प्रभावित न कर दे और उनके दण्ड को मोमिनों में से एक समूह देखे । 13।

और एक व्यभिचारी (स्वभावतः) किसी व्यभिचारिणी अथवा मुश्त्रिक स्त्री से ही विवाह करता है और (स्वभावतः) एक व्यभिचारिणी स्त्री से व्यभिचारी अथवा मुश्त्रिक के सिवा कोई विवाह नहीं करता और यह (कुर्कर्म) मोमिनों के लिए अवैध कर दिया गया है । 14।

वे लोग जो सतवंती स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं फिर चार गवाह प्रस्तुत नहीं करते तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ । और भविष्य में कभी उनकी गवाही

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سُورَةُ أَنْزَلْنَاها وَ فَرَضْنَاهَا وَ أَنْزَلْنَا فِيهَا
إِلَيْتِ بِسْلَتِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ②

الْأَرَانِيَةُ وَالْرَّازِنِ فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ
مِمْهَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۝ وَ لَا تَأْخُذُكُمْ بِهِمَا
رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنَّ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۝ وَ لَنِي شَهَدُ عَذَابَهُمَا
طَائِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ③

الْأَرَانِي لَا يَسْكُنُ إِلَّا رَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً ۝
وَ الرَّازِنِي لَا يَسْكُنُهَا إِلَّا رَانِ
أَوْ مُشْرِكٌ ۝ وَ حَرِّمَ ذَلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ ④

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحَصَّنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا
بِأَرْبَعَةٍ شَهَادَةٍ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَنِينَ
جَلْدَةً ۝ وَ لَا تَقْبِلُوا أَهْمَ شَهَادَةً أَبَدًا ۝

स्वीकार न करो और यही लोग ही
कुकर्मी हैं । ५।*

परन्तु वे लोग जिन्होंने इसके पश्चात् प्रायश्चित कर लिया और अपना सुधार कर लिया तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । ६।

और वे लोग जो अपनी पत्नियों पर आरोप लगाते हैं और उनके पास स्वयं के अतिरिक्त कोई साक्षी न हो तो उनमें से प्रत्येक को अल्लाह की क़सम खा कर चार बार गवाही देनी होगी कि वह निःसन्देह सच्चों में से है । ७।

और पाँचवीं बार यह (कहना होगा) कि यदि वह झूठों में से है तो उस पर अल्लाह की लान न त हो । ८।

और उस (स्त्री) से यह बात दण्ड को टाल देगी कि वह अल्लाह की क़सम खा कर चार बार गवाही दे कि निःसन्देह वह (पुरुष) झूठों में से है । ९।

और पाँचवीं बार यह (कहना होगा) कि उस (अर्थात् स्त्री) पर अल्लाह का प्रकोप उतरे यदि वह (पुरुष) सच्चों में से हो । १०।

* इस आयत में व्यभिचार का मिथ्यारोप लगाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। क्योंकि ऐसे आरोप लगाने वालों के लिए चार प्रत्यक्षदर्शी गवाह प्रस्तुत करने का आदेश है। अन्यथा उन्हें कठोर दण्ड मिलेगा। इससे केवल संदेह के आधार पर आरोप लगाने वालों का साहस कम होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात इसमें यह है कि, क्योंकि यह स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी पत्नी का मामला था और अधिकांश लोग सुनी सुनाई बातें कर रहे थे इस कारण जब तक अल्लाह तआला ने आप सल्ल. पर हज़रत आइशा रज़ि. अन्हा का दोषमुक्त होना सिद्ध नहीं किया उस समय तक आप सल्ल. मौन रहे। हीसे से यही प्रमाणित होता है।

وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَسِقُونُ

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذِلْكَ وَأَصْلَحُوا

فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

وَالَّذِينَ يَرْمَوْنَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ شَهَادَةٌ إِلَّا أَنْفَسُهُمْ فَسَهَادَةُ
أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَتِ بِاللَّهِ إِنَّهُ
لَمِنَ الصَّدِيقِينَ

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ
مِنَ الْكَذَّابِينَ

وَيَذَرُو اغْنَهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشَهَّدَ أَرْبَعَ
شَهَدَتِ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَذَّابِينَ

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ خَضَبَ اللَّهُ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ
مِنَ الصَّدِيقِينَ

और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती (तो तुम्हारा क्या बनता)। और वस्तुतः अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) परम विवेकशील है ॥111॥ (रुकू 1)

निःसन्देह वे लोग जो ज्ञान गढ़ लाए, तुम ही में से एक समूह है। इस (मामले) को अपने हित में बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे लिए उत्तम है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना निश्चित है जो उसने पाप अर्जित किया। जबकि उनमें से वह जो उस (पाप) के अधिकांश का उत्तरदायी है उसके लिए बहुत बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है ॥121॥

ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना तो मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ अपनों के सम्बन्ध में सु-धारणा करते और कहते कि यह खुला-खुला मिथ्यारोप है ॥131॥

क्यों न वे इस बारे में चार गवाह ले आए। अतः जब वे गवाह नहीं लाए तो वही हैं जो अल्लाह के निकट ज्ञौठ हैं ॥141॥

और यदि इहलोक और परलोक में तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो इस (परीक्षा) के परिणाम स्वरूप जिसमें तुम पड़ गए थे, अवश्य तुम्हें एक बहुत बड़ा अज्ञाब आ पकड़ता ॥151॥

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً وَأَنَّ
اللَّهَ تَوَابٌ حَكِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوكُم بِالْأَفْلَاثِ عَصَبَةٌ
مِنْكُمْ لَا تَقْسِبُوهُ شَرَّاً لِكُلِّ
هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ أَمْرٍ مِنْهُمْ مَا
أَكْتَسَبَ مِنَ الْأَثْمَرِ وَالَّذِي تَوَلَّ
كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَرَبَ الْمُؤْمِنُونَ
وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِنَّ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا
إِفْلَاثٌ مُبِينٌ ۝

لَوْلَا جَاءُوكُمْ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شَهَادَاتٍ
فَإِذْلَمُ يَا تُوَافِي الشَّهَادَاتِ فَأَوْلَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ
هُمُ الْكَذِيلُونَ ۝

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً فِي
الْدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَكُنُ فِي مَا أَفْضَلْتُمْ
فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जब तुम उस (झूठ) को अपनी जिहा पर लेते थे और अपने मुँह से वह (बात) कहते थे जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं था। और तुम उसको मामूली बात समझते थे जबकि अल्लाह के निकट वह बहुत बड़ी थी। 116।

और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना तो तुम कह देते हमें कोई अधिकार नहीं कि हम इस मामले में मुँह खोलें। पवित्र है तू (हे अल्लाह !) यह तो एक बहुत बड़ा मिथ्यारोप है। 117।

यदि तुम मोमिन हो तो, अल्लाह तुम्हें उपदेश देता है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे कभी ऐसी बात को दोहराओ। 118।

और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोल खोल कर वर्णन करता है। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है। 119।

निःसन्देह वे लोग जो चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए अश्लीलता फैल जाए, उनके लिए इहलोक में भी और परलोक में भी पीड़ाजनक अज्ञाब होगा। और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते। 120।

और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती (तो तुम में अश्लीलता फैल जाती) और अल्लाह निःसन्देह बहुत कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है। 121।

(रुकू 2/8)

إِذْ تَلْقَوْنَاهُ بِالسِّنَتِ كُمْ وَتَقُولُونَ
يَا فَوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ يَهْ عِلْمٌ
وَتَحْسِبُونَهُ هَيْنَا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ⑯

وَلَوْلَا إِذْ سِمِعْمُوهُ قَلَّتْ مَا يَكُونُ لَنَا
أَنْ تَكَلَّمَ بِهِنَا سُبْحَنَكَ هَذَا بَهْنَانُ
عَظِيمٌ ⑰

يَعْظِمُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا إِلِمْثَلَةَ أَبَدًا إِنْ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑯

وَبَيْتُنَ اللَّهِ لَكُمُ الْأَيْتُ ۖ وَاللَّهُ عَلَيْمٌ
حَكِيمٌ ⑯

إِنَّ الَّذِينَ يَحْيَوْنَ أَنْ تَشْيَعَ الْفَاجِهَةُ
فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ⑯

وَلَوْلَا قُضِيَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً وَأَنَّ
اللَّهُ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑯

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! शैतान के पदचिह्नों पर मत चलो । और जो कोई शैतान के पदचिह्नों पर चलता है तो वह निःसन्देह अश्लीलता और नापसंद बातों का आदेश देता है । और यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो तुम में से कोई एक भी कभी पवित्र न हो सकता । परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र कर देता है । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान खखने वाला है । 121

और तुम में से सम्पन्न और समर्थ व्यक्ति अपने निकट सम्बन्धियों और दरिद्रों एवं अल्लाह के मार्ग में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खाएँ । अतः चाहिए कि वे क्षमा कर दें और माफ कर दें । क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 123 ।

निःसन्देह वे लोग जो सतवंती, बेखबर मोमिन स्त्रियों पर मिथ्यारोप लगाते हैं, (वे) इस लोक में भी ला'नत किए गए और परलोक में भी । और उनके लिए बहुत बड़ा अज्ञाब (निश्चित) है । 124 ।

वह दिन (याद करो) जब उनकी जिह्वा और उनके हाथ और उनके पाँव उनके विरुद्ध उन बातों की गवाही देंगे जो वे किया करते थे । 125 ।

उस दिन अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा प्रतिफल देगा जिसके वे योग्य हैं । और

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا حُكْمَوْتِ
الشَّيْطَنِ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ حُكْمَوْتِ الشَّيْطَنِ
فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۖ وَلَوْلَا
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةً مَا زَكَىٰ
مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۖ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُرِيدُ
مَنْ يَسِّعُ طَرَفَهُ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلَيْهِ ۝

وَلَا يَأْتِي لِأُولَئِنَّا فَقْصِيلٌ مِنْكُمْ وَالسَّعَةُ
أُنْ ۖ يُؤْتُونَا أُولَئِنَّا قُرْبَانٌ وَالْمَسَكِينُونَ
وَالْمُهَاجِرُونَ فِي سَيِّئِ اللَّهِ ۖ وَلَيَعْفُوا
وَلَيَصْفَحُوا ۖ أَلَا لَهُمْ يُؤْمِنُونَ أَنَّ يَغْفِرَ اللَّهُ
لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ لَعْنَاهُنَّ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

يَوْمَ تَشَهَّدُ عَلَيْهِمْ أَسْتِهْمُ وَأَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

يَوْمَ إِذْ يُوَقَّيْهُمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقُّ

वे जान लेंगे कि निःसन्देह अल्लाह ही है जो पूर्ण सत्य है । 126।

अपवित्र स्त्रियाँ अपवित्र पुरुषों के लिए हैं और अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिए हैं । और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिए हैं तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के लिए हैं । ये लोग उस के उत्तरदायी नहीं जो वे कहते हैं । इन्हीं के लिए क्षमादान है और सम्मान युक्त जीविका है । 127।* (रुकू ۳)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रविष्ट न हुआ करो जब तक कि तुम अनुमति प्राप्त न कर लो और उन में रहने वालों पर सलाम न भेज लो । यह तुम्हारे लिए उत्तम है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो । 128।

और यदि तुम उन (घरों) में किसी को न पाओ तो उनमें प्रविष्ट न हो जब तक कि तुम्हें (उसकी) अनुमति न दी जाए । और यदि तुम्हें कहा जाए वापस चले जाओ तो वापस चले जाया करो । तुम्हारे लिए यह बात अधिक पवित्रता (प्राप्ति) का कारण है । और अल्लाह उसे जो तुम करते हो भली-भाँति जानता है । 129।

तुम पर पाप नहीं कि तुम ऐसे घरों में प्रविष्ट हो जो आबाद नहीं हैं और उनमें

وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ⑥

الْحَيْثُ لِلْخَيْثِينَ وَالْخَيْثُونَ
لِلْخَيْثَتِ وَالظَّيْبُتِ لِلظَّيْتِينَ
وَالظَّيْتُونَ لِلظَّيْبَتِ أُولَئِكَ
مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُنَّ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا يَوْمًا
غَيْرَ يَوْمِكُمْ حَتَّىٰ تَسْأَلُنَّ وَأَسْلَمُوا
عَلَىٰ أَهْلِهِمَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ⑦

فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا
حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ
أْرْجِعُوهَا فَارْجِعُوهُ أَرْكَنَكُمْ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيهِمْ ⑧

لَئِسَ عَلَيْكُمْ جَنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا يَوْمًا

* यहाँ एक साधारण नियम वर्णन किया गया है कि जो गंदे लोग हैं वे साधारणतया गंदी स्त्रियों से ही विवाह करते हैं । परन्तु यह कोई निश्चित नियम नहीं, इसमें अपवाद भी है । और जो पवित्र पुरुष हैं वे पवित्र स्त्रियों से ही विवाह किया करते हैं । इसमें भी कई बार अपवाद होते हैं ।

तुम्हारा सामान पड़ा हो । और अल्लाह (उसे) जानता है जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो । 30।

मोमिनों को कह दे कि अपनी आँखें नीची रखा करें और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा किया करें । यह बात उनके लिए अधिक पवित्रता का कारण है। निःसन्देह अल्लाह, जो वे करते हैं उससे सदा अवगत रहता है । 31।

और मोमिन स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी आँखें नीची रखा करें । और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करें तथा अपनी सुन्दरता प्रकट न किया करें । सिवाय इस के कि जो उसमें से स्वयं प्रकट हो जाये । और अपने वक्षस्थलों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लिया करें । और अपनी सुंदरता को प्रकट न किया करें । सिवाय अपने पतियों के समक्ष अथवा अपने पिताओं अथवा अपने पतियों के पिताओं अथवा अपने पुत्रों अथवा अपने पतियों के पुत्रों अथवा अपने भाइयों अथवा अपने भाइयों के पुत्रों अथवा अपने भाइयों के बहनों के पुत्रों अथवा अपनी बहनों के छुपे हुए अंगों के बारे में बेखबर हैं । और वे अपने पाँव को इस प्रकार न पटकें कि (लोगों पर) उसे प्रकट कर दिया जाए जिसे (स्त्रियाँ

غَيْرَ مَسْكُونَةٌ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَا تَبْدُونَ وَمَا تَكْسِمُونَ ①
قُلْ لِلّٰهِمَّ إِنِّي بَعْضُوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ
وَيَخْفَظُوا فِرْوَجَهُمْ ۚ ذٰلِكَ أَرْكَ لَهُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ②

وَقُلْ لِلّٰهِمَّ إِنِّي بَعْضُ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ
وَيَخْفَظُنَّ فِرْوَجَهُنَّ وَلَا يَبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ ۚ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَيُضَرِّبَنَّ
بِحُمْرِهِنَّ عَلٰى جَيْوِهِنَّ وَلَا يَبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ ۚ إِلَّا لِبَعْوَتِهِنَّ ۚ أَوْ أَبَاءِهِنَّ
أَوْ أَبَاءِ بَعْوَتِهِنَّ ۚ أَوْ أَبْنَاءِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءَ
بَعْوَتِهِنَّ ۚ أَوْ أَخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي أَخْوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَاءِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكُ
أَيْمَانُهُنَّ أَوِ الشِّعْنَ عَيْرٌ أَوِ الْأَزْبَةُ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الْطِفْلِ الْأَذِيْنَ لَمْ
يَطْهَرُوا عَلٰى عَوْرَتِ النِّسَاءِ وَلَا
يُضَرِّبُنَّ بِأَرْجَلِهِنَّ لِيَعْلَمَ مَا يَقْنِيْنَ

साधारणतया) अपनी सुंदरता में से छिपाती हैं। और हे मोमिनों! तुम सब के सब अल्लाह की ओर प्रायश्चित्त करते हुए ज्ञुको ताकि तुम सफल हो जाओ। 132।

और तुम्हरे बीच जो विधवाएँ हैं उनके भी विवाह कराओ, इसी प्रकार जो तुम्हरे दासों एवं दासियों में से सच्चरित्र हों उनका भी विवाह कराओ। यदि वे निर्धन हों तो अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना देगा। और अल्लाह प्राचुर्य प्रदान करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है। 133।

और वे लोग जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते उन्हें चाहिए कि स्वयं को बचाए रखें यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें अपनी कृपा से धनवान बना दे। और तुम्हरे जो दास तुम्हें मुक्तिमूल्य दे कर अपनी स्वतन्त्रता का लिखित समझौता करना चाहें, यदि तुम उनके अंदर योग्यता पाओ तो उनको लिखित समझौते के साथ स्वतन्त्र कर दो। और वह धन जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उसमें से कुछ उनको भी दो। और अपनी दासियों को, यदि वे विवाह करना चाहें तो (रोक कर गुप्त रूप से) कुरक्म करने पर विवश न करो ताकि तुम सांसारिक जीवन का लाभ उठाना चाहो। और यदि कोई उनको विवश कर देगा तो उनके विवश किए जाने के

منْ زِيَّنَتْهُنَّۤ وَ تُوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا
أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَۤ

وَأَنْكِحُوا الْأَيَامِي مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ
عِبَادِكُمْ وَأَمَانِكُمْۤ إِنْ يَكُونُوا
فَقَرَاءٌ يُغْنِيهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِۤ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلَيْهِمْۤ

وَلَا يَسْتَغْفِفُ الظَّالِمُونَ لَا يَجِدُونَ نَكَاحًا
حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِۤ وَالظَّالِمُونَ
يَبْتَغُونَ الْكِتَبَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ
فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِ حَرَمًاۤ
وَأَنْوَهُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي أَتَكُمْۤ
وَلَا تَكُرِهُوْ فَتَتَكَبَّرُ كُمْ عَلَى الْبِغَاءِ
إِنْ أَرَدْنَ تَحَسَّنًا لَتَبْتَغُوا عَرَضَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَاۤ وَمَنْ يَكْرِهُهُنَّ فَإِنَّ

पश्चात् निःसन्देह अल्लाह (उनके प्रति) बहुत क्षमा करने वाला (और बार-बार दया करने वाला है 134।

और हमने तुम्हारी ओर सुस्पष्ट आयतें उतारी हैं। और उन लोगों का उदाहरण भी जो तुमसे पहले गुजर गए और मुत्क्रियों के लिए उपदेश 135।

(रुकू 4/10)

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है। उसके प्रकाश का उदाहरण एक ताक की भाँति है जिसमें एक दीपक हो। वह दीपक काँच की चिमनी में हो। वह काँच ऐसा हो मानो एक चमकता हुआ उज्ज्वल नक्षत्र है। वह (दीपक) ऐसे मंगलमय ज़ैतून के वृक्ष से प्रज्वलित किया गया हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी। उस (वृक्ष) का तेल ऐसा है कि सम्भव है कि वह स्वयं भड़क कर प्रज्वलित हो उठे चाहे उसे आग ने न भी हुआ हो। यह प्रकाश पर प्रकाश है। अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसे चाहता है हिंदायत देता है। और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्थायी ज्ञान रखने वाला है 136।*

* इस उदाहरण में ज़ैतून के तेल का वर्णन है। ज़ैतून के तेल को जलाया जाए तो इससे प्रकाश तो उत्पन्न होता है परन्तु धुआँ नहीं उठता। ला शर्किव्वतिन् वला गर्विव्वतिन का अर्थ है कि अल्लाह का प्रकाश न केवल पूरब के लिए है और न पश्चिम के लिए। हज़रत मुहम्मद सललल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह उदाहरण सत्य सिद्ध होता है। क्योंकि आप सल्ल. पूरब और पश्चिम दोनों जगत के अकेले रसूल हैं और यही प्रकाश है जो आप के माध्यम से सहावा रज़ि. को भी प्रदान हुआ। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सललल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस प्रकाश को केवल अपने तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे सार्वजनिक कर दिया। अतः अगली आयत में इसी का वर्णन है कि वह प्रकाश→

اللَّهُ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَتِ مُبِينَ ۖ وَمَثَلًا
مِنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِلْمُتَّقِينَ ۝

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مَنْ
نُورِهِ كَمُشْكُوَّةٍ فِيهَا مِضَابُخٌ الْمُصَبَّاحُ
فِي رُجَاجَةٍ ۖ الْرُّجَاجَةُ كَانَهَا كَوْكَبٌ
دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبِرَّكَةٍ زَيْتُونَةٌ
لَا شَرِقَيَّةٌ وَلَا غَرْبَيَّةٌ ۖ يَكَادُ زَيْنَهَا
يُضْعِي ۖ وَلَوْلَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى
نُورٍ ۖ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ
وَيُضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

ऐसे घरों में, जिनके सम्बन्ध में अल्लाह ने आदेश दिया है कि उन्हें ऊँचा किया जाए और उनमें उसके नाम का स्मरण किया जाए । उनमें सुबह और शाम उसका गुणगान करते हैं । 137।

ऐसे महान पुरुष, जिन्हें न कोई व्यापार और न कोई क्रय-बिक्रय अल्लाह के स्मरण से अथवा नमाज़ को क़ायम करने से अथवा ज़कात देने से लापरवाह करता है । वे उस दिन से डरते हैं जिसमें (भय से) दिल और आँखें उलट-पुलट हो रहे होंगे । 138।

ताकि अल्लाह उन्हें उनके सर्वश्रेष्ठ कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे, जो वे करते रहे हैं । और अपनी कृपा से उन्हें अधिक भी दे और अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के जीविका देता है । 139।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके कर्म ऐसी मृग तृष्णा की भाँति हैं जो बंजर मैदान में हो, जिसे अत्यन्त प्यासा (व्यक्ति) पानी समझे । यहाँ तक कि जब वह उस तक पहुँचे, उसे कुछ न पाए । और अल्लाह को उस स्थान पर

فِي يَوْمٍ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا
أَسْمَهُ لِيَسْبِحَ لَهُ فِيهَا بِالْعُدُوقِ وَالْأَصَابِلُ

رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ
ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامُ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءُ الرِّزْكِ
يَخَافُونَ يَوْمًا سَقَلَبٌ فِيهِ الْقُلُوبُ
وَالْأَبْصَارُ

لِيَغْرِيَهُمُ اللَّهُ أَخْسَنُ مَا عَمِلُوا
وَيَرِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ جِسَابٍ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٌ
بِقِيَعَةٍ يَحْسَبُهُ الظُّلْمَانُ مَاءً حَتَّى إِذَا
جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ

←सहाबा रङ्गि. के घरों में भी चमकता है ।

नक्षत्रों का उदाहरण इस लिए दिया कि उनका प्रकाश दूर-दूर से दिखाई देता है । इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल. का तथा सहाबा का प्रकाश भी दूर-दूर से दिखाई देगा ।

मिश्कात उस सुरक्षित ताक को कहते हैं जिसमें दीपक रखा जाता है । लैम्प का प्रकाश काँच से प्रतिविम्बित होकर केवल उस ताक को प्रकाशित नहीं करता जिसमें वह प्रकाश है बल्कि बाहर भी प्रतिविम्बित होता है । लैम्प के चारों ओर जो काँच होता है उसके दो उद्देश्य हैं । प्रथम यह कि काँच हो तो फिर लैम्प से धुआँ नहीं निकलता । द्वितीय यह कि उसका प्रकाश अधिक चमक के साथ बाहर निकलता और फैलता है ।

पाए। फिर वह (अल्लाह) उसे उसका पूरा-पूरा हिसाब दे और अल्लाह हिसाब चुकाने में तेज़ है । 140।

अथवा (उनके कर्म) अन्धकारों की भाँति हैं जो गहरे समुद्रों में हों, जिसको लहर के ऊपर एक और लहर ने ढाँप रखा हो और उसके ऊपर बादल हों। यह ऐसे अन्धेरे हैं कि उनमें से कुछ, कुछ पर छाए हुए हैं। जब वह अपना हाथ निकालता है तो उसे भी देख नहीं सकता। और वह जिसके लिए अल्लाह ने कोई प्रकाश न बनायी हो तो उसके भाग में कोई प्रकाश नहीं । 141। (रुकू^{۱۱})

क्या तूने नहीं देखा कि जो आसमानों और धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है और पंख फैलाए हुए पक्षी भी। उनमें से प्रत्येक अपनी उपासना और स्तुति करने की विधि को जान चुका है। और अल्लाह उसका खूब ज्ञान रखने वाला है जो वे करते हैं । 142।

और आसमानों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है। और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है । 143।

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को चलाता है फिर उसे इकट्ठा कर देता है। फिर उसे परत दर परत बना देता है। फिर तू देखता है कि उसके बीच से वर्षा निकलने लगती है। और वह ऊँचाइयों से अर्थात् उन पर्वतों से जो उनमें स्थित हैं ओले उतारता है। और फिर जिस पर चाहता है उस पर उन्हें बरसाता है।

فَوْقَهُ حِسَابٌ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

أُوکَظَلَمْتُ فِي بَحْرٍ لَّيْخٍ يَعْشَهُ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ
ظَلَمْتُ بَعْصَمَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا
أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكُنْ يَرَاهَا وَمَنْ لَمْ
يَجْعَلِ اللَّهَ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُورٍ

الْمُرْئَانَ اللَّهُ يَسِّعُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالظَّيْرُ صَفَّتِ لَكُلُّ قَدْعَلَمَ
صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحةُهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا
يَفْعَلُونَ ⑩

وَإِلَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى
اللَّهِ الْمَصِيرُ ⑪

الْمُرْئَانَ اللَّهُ يَرْجِعُ سَحَابَ الْحَرَقَيْلَفَ
بَيْنَهُ شَمَّرٌ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خَلِيلِهِ وَيَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ
جِبَالٍ قِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيَصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ

और जिससे चाहे उनकी दिशा मोड़ देता है। सम्भव है कि उसकी बिजली की चमक (उनकी) दृष्टि शक्ति को उचक ले जाए। 144।

अल्लाह रात और दिन को अदलता बदलता रहता है। निःसन्देह इसमें समझ रखने वालों के लिए शिक्षा है। 145।

और अल्लाह ने प्रत्येक चलने फिरने वाले जीव को पानी से पैदा किया। अतः उनमें ऐसे भी हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं। और उनमें से ऐसे भी हैं जो दो पाँव पर चलते हैं। और ऐसे भी हैं जो चार (पाँव) पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 146।

निःसन्देह हमने स्पष्ट कर देने वाले चिह्न उतारे हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सत्त्वार्ग की ओर हिदायत देता है। 147।

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल पर ईमान लाए और हमने आज्ञापालन किया। फिर भी उनमें से एक समूह उसके बाद पीठ फेर कर चला जाता है। और ये लोग कदाचित मोमिन नहीं हैं। 148।

और जब वे अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं ताकि वह उनके बीच निर्णय करे तो उनमें से सहसा कुछ लोग विमुख होने लगते हैं। 149।

और यदि उनको कोई हित दिखाई दे तो जल्दी से उस (अर्थात् रसूल) की ओर

وَيَصِرِّفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ لِكَذَبِنَابِرْقِهِ
يَدْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ④

يَقْلِبُ اللَّهُ أَيْلَ وَالنَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَعْنَةً لِأُولَى الْأَبْصَارِ ⑤

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَاءٍ فَمِنْهُمْ مَنْ
يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي
عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى
أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَتِ مُبَيِّنَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطِ مُسْتَقِيمٍ ⑦

وَيَقُولُونَ أَمَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطْعَنَا
ثُمَّ يَتَوَلَّ فَرِيقٌ مِنْهُمْ مَنْ بَعْدَ ذَلِكَ
وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ⑧

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ
بِيَسِّهِمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مَعْرِضُونَ ⑨

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمْ الْحُقْقَ يَأْتُوَا إِلَيْهِ

आज्ञापालन का दम भरते हुए चले आते हैं 150।

क्या उनके मन में रोग है अथवा वे शंका में पड़ गए हैं, या डरते हैं कि अल्लाह उन पर अत्याचार करेगा और उसका रसूल भी । बल्कि यही हैं जो स्वयं अत्याचारी हैं 151। (रुकू 6¹²)

मोमिनों को जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच निर्णय करे तो उनका उत्तर केवल यह होता है कि हमने सुना और आज्ञापालन किया । और यही हैं जो कृतार्थ होने वाले हैं 152।

और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे और अल्लाह से डरे और उसका तक्राव धारण करे तो यही हैं जो सफल होने वाले हैं 153।

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खाई कि यदि तू उन्हें आदेश दे तो वे अवश्य निकल खड़े होंगे । तू कह दे कि क़समें न खाओ । नियमानुसार आज्ञापालन (करो) । निःसन्देह अल्लाह जो तुम करते हो उससे सदा अवगत रहता है 154।

कह दे कि अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो । फिर यदि तुम विमुख हो जाओ तो उस पर केवल उतना ही उत्तरदायित्व है जो उस पर डाला गया । और तुम पर भी उतना ही उत्तरदायित्व है जितना तुम पर डाला गया है । और यदि तुम उसका आज्ञापालन

مُذْعِنُون् ⑤

أَفَ قَلُوبُهُمْ مَرْضٌ أَمْ إِرْتَابٌ
أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَيْنِهِ
وَرَسُولُهُ بِلْ أُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ ۱۵۱

إِنَّمَا كَانَ قَوْلُ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا
إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بِيَمِنٍ
أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَى اللَّهَ
وَيَتَّقَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَارِزُونَ ۝

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدَ أَيْمَانِهِمْ لَيْلَةَ
أَمْرُتُهُمْ لِيَخْرُجُنَ ۖ قُلْ لَا تَقْسِمُوا
طَاعَةً مَعْرُوفَةً ۖ إِنَّ اللَّهَ حَبِيبُ
مَا تَعْمَلُونَ ۝

قُلْ أَطِيعُ اللَّهَ وَأَطِيعُ الرَّسُولَ ۖ فَإِنْ
تَوَلُّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِمَا حِيلَةٌ وَعَلَيْنَا
حِيلَةٌ ۖ وَإِنْ تَطِيعُوهُ تَهْتَدُوا وَمَا

عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا أَبْلَغَ الْمُئِنِّينَ ⑦

करो तो हिदायत पा जाओगे। और रसूल पर खोल-खोल कर संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त कोई जिम्मेदारी नहीं। 155।

तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में खलीफा बनाएगा। जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को खलीफा बनाया। और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया, अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा। और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शांतिपूर्ण अवस्था में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी उपासना करेंगे, मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगे। और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। 156।*

और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल का आज्ञापालन करो ताकि तुम पर दया की जाए। 157।

कदापि विचार न कर कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे (मोमिनों को)

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّلَاحَتِ لَيَسْتَخْلُفُهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيَنَهُمُ الَّذِي ارْتَصَى لَهُمْ وَلَيَبْدِلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ حَوْفِهِمْ أَمَّا يَعْبُدُونَ فَلَا يُشْرِكُونَ بِنِسْيَانًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَسِقُونَ ⑦

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتُّو الرَّكْوَةَ وَأَطْبِعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرَحَّمُونَ ⑦

لَا تَخْسِبُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مَعْجِزِينَ

* इस आयत को आयते इस्तिख्लाफ़ कहा जाता है। जिसमें यह बात प्रकट की गई है कि जिस प्रकार अल्लाह ने पहले नवियों के पश्चात् खिलाफ़त का क्रम जारी किया था उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् भी जारी करेगा। और वह खिलाफ़त नवी के प्रकाश को लेकर आगे बढ़ेगी। और हर बार जब कोई खलीफा मृत्यु को प्राप्त होगा तो जमाअत को एक भय का सामना करना पड़ेगा। जो अल्लाह तआला की कृपा के साथ खिलाफ़त की बरकत से शांति में परिवर्तित हो जाएगा। अतः सच्ची खिलाफ़त की निशानी यह है कि वह मोमिनों की जमाअत को अशांति से शांति की ओर ले कर आएगी। हज़रत मसीह मील्द अलैहिस्सलाम ने ‘अल-वसीयत’ पुस्तिका में यही कहा है कि एक नवी या खलीफा के गुज़रने के पश्चात् उस समय यही प्रतीत होता है कि अब शत्रु उस प्रकाश को बुझा देगा परन्तु आयते इस्तिख्लाफ़ में स्पष्ट बाद है कि शत्रु हर बार असफल रहेगा। नुबुव्वत के आने का उद्देश्य संसार में एकेश्वरवाद की स्थापना करना है। अतः सच्ची खिलाफ़त की भी यही निशानी रखी है कि उसका अंतिम उद्देश्य एकेश्वरवाद की स्थापना करना होगा।

धरती में असहाय करते फिरेंगे, जबकि उनका ठिकाना अग्नि है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है । 158। (रुक् 7/13)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम में से वे, जिनके तुम स्वामी हो और वे जो तुम में से अभी वयस्क नहीं हुए, चाहिए कि वे तीन समयों में (तुम्हारे शयनकक्षों में प्रविष्ट होने से पूर्व) तुम से अनुमति लिया करें । सुबह की नमाज़ से पूर्व और उस समय जब तुम मध्यान्न विश्राम के समय (अतिरिक्त) वस्त्र उतार देते हो और इशा की नमाज़ के बाद । यह तीन तुम्हारे पर्दे के समय हैं । इनके अतिरिक्त (बिना अनुमति आने जाने पर) न तुम पर कोई पाप है, न उन पर । तुम में से कुछ-कुछ और के पास अधिकांश आते-जाते रहते हैं । इसी प्रकार अल्लाह आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 159।

और जब तुम में से बच्चे परिपक्व आयु को पहुँच जाएँ तो उसी प्रकार अनुमति लिया करें जिस प्रकार उनसे पहले लोग अनुमति लेते रहे । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 160।

और बैठी रह जाने वाली स्त्रियाँ जो विवाह की आशा न रखती हों यदि वे अपने (अतिरिक्त) कपड़े सुंदरता का

فِي الْأَرْضِ وَمَا وَبِهِمُ النَّارُ وَلَيْسَ
الْمَصِيرُ^④
يَأْتِيهَا الَّذِينَ أَمْوَالَ يَسْتَأْذِنُكُمُ الَّذِينَ
مَلَكُوتُ آيْمَانَكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا
الْحُلْمَ مِنْكُمْ ثُلَثَ مَرَاتٍ مِّنْ قَبْلِ
صَلْوةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ شِيَابِكُمْ
مِّنْ الضَّهِيرَةِ وَمَنْ بَعْدَ صَلْوةِ الْعِشَاءِ^٥
ثُلَثَ عَوْرَتِ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا
عَلَيْهِمْ جَنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوْقُونَ عَلَيْكُمْ
بَعْصُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يَبْيَسُ اللَّهُ
لَكُمُ الْأَلْيَتُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^٦

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلْمَ
فَلَيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يَبْيَسُ اللَّهُ لَكُمْ أَيْتَهُ^٧
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^٨

وَأَنْقُوَاعِدَ مِنِ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ
نِكَاحًا فَلَيَسَ عَلَيْهِنَّ جَنَاحٌ أَنْ يَضْعُنَ

प्रदर्शन न करते हुए उतार दें तो उन पर कोई पाप नहीं । और यदि वे (इससे) बचें तो उनके लिए उत्तम है । और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) बहुत जानने वाला है । 61।

अन्धे पर कोई आपत्ति नहीं और न अपग पर आपत्ति है और न रोगी पर और न तुम लोगों पर कि तुम अपने घरों से अथवा अपने बाप-दादा के घरों से अथवा अपनी माताओं के घरों से अथवा अपने भाइयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा उस (घर) से जिसकी चाबियाँ तुम्हारे कब्जे में हैं अथवा अपने मित्रों के घरों से भोजन करो । तुम पर कोई पाप नहीं कि चाहे तुम इकट्ठे भोजन करो अथवा अलग-अलग । अतः जब तुम घरों में प्रविष्ट हुआ करो तो अपने लोगों पर अल्लाह की ओर से एक मंगलमय, पवित्र उपहार स्वरूप सलाम भेजा करो । इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम बुद्धि से काम लो । 162। (रुक् ۸/۴)

सच्चे मोमिन तो वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाएँ और जब किसी महत्वपूर्ण सामूहिक विषय पर (विचार विमर्श के लिए) उस (रसूल) के पास एकत्रित हों तो जब

شَيْأَهُنَّ عَيْرَ مُتَبَرِّجِتٍ بِزِينَةٍ۝ وَأَنْ
يَسْعِفُنَ خَيْرٌ لَهُنَّ۝ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلَيْهِمْ ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَغْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَغْرَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْقَسِيمِ أَنْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ
يَوْمَئِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ ابْنَائِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ
أَمْهَاتِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ إخْوَانِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ
أَخْوَاتِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ
عَمِّتِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ أَخْوَانِكُمْ أَوْ يَوْمَئِتِ
خَلِيلِكُمْ أَوْ مَامِلَكُمْ مَفَاقِهَةَ أَوْ
صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ
تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَأَنَا فَإِذَا دَخَلْتُمْ
يَوْمًا فَسَلِمُوا عَلَى الْقَسِيمِ تَحْيَةً مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ وَمِنْ رَبِّكَةَ طَيْبَةَ كَذَلِكَ يَبْيَسُ
اللَّهُ لَكُمُ الْأَيْتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ
جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّى يَسْتَأْذِنُوهُ

तक उससे अनुमति न ले लें, उठ कर न जाएँ । निःसन्देह वे लोग जो तुझ से अनुमति लेते हैं यही वे लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाले हैं । अतः जब वे तुझ से अपने कुछ कार्यों के लिए अनुमति लें तो उनमें से जिसे चाहे अनुमति दे दे । और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना करता रह । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 163।

रसूल का (तुम्हें) बुलाना इस प्रकार न समझो जैसे तुम्हारे बीच तुम एक दूसरे को बुलाते हो । अल्लाह निःसन्देह उन लोगों को जानता है जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से निकल जाते हैं । अतः वे लोग जो उसके आदेश का विरोध करने वाले हैं वे इस बात से डरें कि उन पर कोई विपत्ति न आ जाए अथवा पीड़ाजनक अज़ाब न आ पहुँचे । 164।

सावधान ! अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और धरती में है । वह जानता है जिस (अवस्था) पर तुम हो । और जिस दिन वे (लोग) उसकी ओर लौटाए जाएँगे तब वह उन्हें, उससे अवगत कराएगा जो वे किया करते थे । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ख़बूब ज्ञान रखने वाला है । 165। (रुकू॑ ١٥)

إِنَّ الَّذِينَ يَسْأَذُونَكُمْ أُولَئِكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
فَإِذَا اسْأَذْنُوكُمْ لِيَعْصِي سَائِمِهِمْ فَأَذِنْ
لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑭

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ يَبْيَكُ
كَدُعَاءَ بَعْضَكُمْ بَعْضًا قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ
الَّذِينَ يَسْأَلُونَ مِنْكُمْ لِوَادِاً
فَلَيَحْذِرُ الَّذِينَ يُخَالِقُونَ عَنْ أَمْرِهِ
أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةً أَوْ يُصِيبَهُمْ
عَذَابَ الْيَمِّ ⑮

أَلَا إِنَّ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيَنْسِيَهُمْ بِمَا عَمِلُوا
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑯

25- सूरः अल-फुर्कान

यह सूरः मक्की दौर के अन्त में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 78 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में यह वर्णन है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह फुर्कान अर्थात् महान कसौटी प्रदान की है जो सच्चे और झूठे के बीच सुस्पष्ट अंतर दिखाती है। यह वही कसौटी है जिसका बार-बार सूरः अन्-नूर में वर्णन हो चुका है। इस सूरः में इसके और उदाहरण प्रस्तुत किए गये हैं।

एक तो यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न केवल अपने आस-पास के लोगों ही में स्पष्ट अंतर करने की योग्यता रखते थे बल्कि समग्र जगत के सच्चों और झूठों को परखने के लिए भी आपको एक महान फुर्कान, कुरआन के रूप में प्रदान किया गया है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आश्चर्यजनक चमत्कारों को देख कर आप सल्ल. के विरोधी सच्चे रसूल के लिए यह मनगढ़त कसौटी प्रस्तुत करते हुए यह कहते थे कि इस रसूल को क्या हो गया है कि यह भोजन करता है और बाज़ारों में भी फिरता है। इसके साथ कोई फरिश्ता क्यों न उतारा गया ताकि इसके साथ मिल कर वह भी चेतावनी देता। इसी प्रकार उन्होंने एक यह मापदंड भी बना रखा था कि रसूल पर आसमान से कोई भौतिक ख़ज़ाना उतरना चाहिए था। हालाँकि रसूल पर उसकी शिक्षा के रूप में एक अंतहीन ख़ज़ाना उतरा करता है न कि कोई भौतिक ख़ज़ाना उतरता है।

इसी प्रकार उनके अनुसार रसूल के पास अनेक विशाल बाग होने चाहिए जिनमें से वह बिना किसी परिश्रम के जितना चाहे खाता फिरे। अल्लाह तआला इसका उत्तर यह देता है कि हे रसूल ! हमने तेरे लिए स्वर्ग के जो बाग निश्चित कर रखे हैं उनकी ये अज्ञानी कल्पना भी नहीं कर सकते। उन बागों में वह आध्यात्मिक महल भी होंगे जो केवल तेरे लिए ही बनाए गए हैं।

इसी प्रकार काफिरों के दावे का खण्डन करते हुए यह कहा गया कि इससे पहले जितने भी रसूल गुज़रे हैं उनमें कोई एक ऐसा रसूल दिखाओ जो मनुष्यों की भाँति गलियों में चलता फिरता न हो। यदि नहीं दिखा सकते तो यह पूर्णतः रसूलों का इनकार करना है मानो अल्लाह किसी को रसूल बना ही नहीं सकता। और जहाँ तक उन काफिरों पर फरिश्तों के उत्तरने का सम्बन्ध है तो उन पर अवश्य फरिश्ते उतरेंगे परन्तु उनके विनाश का संदेश लेकर। और ऐसे अज़ाब की सूचना देते हुए जिससे मुक्ति प्राप्त करना सम्भव नहीं।

एक आपत्ति यह भी उठाई गई कि पवित्र कुरआन को इकट्ठा क्यों नहीं उतारा गया? वास्तविकता यह है कि पवित्र कुरआन इकट्ठा न उतारे जाने में बहुत से रहस्य छुपे हैं। एक तो यह है कि उस युग के परिवेश की आवश्यकता यह थी कि जैसे जैसे उनके रोग प्रकट होते चले जाएँ उनके अनुसार पवित्र कुरआन की ऐसी आयतों का अवतरण हो जो उस विषय से सम्बन्ध रखती हों। दूसरे, हर क्षण नए चिह्नों के द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को दृढ़ता प्राप्त हो। और सारे कुरआन के अवतरण काल में आप एक नहीं, अनंत चिह्न देखते चले जाएँ। फिर यह भी कि तेर्इस वर्ष की अवधि में अवतरित हुए पवित्र कुरआन को यदि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं बनाया होता तो इसमें आयतें ऐसे सरल-सुगम और क्रमबद्ध न होतीं। जो लिखना पढ़ना भी न जानता हो तेर्इस वर्षों की अवधि पर उसकी कैसी दृष्टि पढ़ सकती है।

फिर हज़रत मसीह मौजूद अलैहिस्सलाम ने इस रहस्य की ओर भी ध्यानाकर्षित करवाया है कि इस पूरी तेर्इस वर्षीय अवधि में हज़रत मुहम्मद सल्ल. को अत्यंत खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। बड़ी-बड़ी भयानक परिस्थितियों में सहाबा से आगे बढ़ कर विल्कुल खतरों के बीच शत्रु से संघर्ष करते रहे। विष के द्वारा भी आपको मारने की चेष्टा की गयी। परन्तु जब तक शरीअत सम्पूर्ण न हुई अल्लाह तआला ने आपको वापस नहीं बुलाया। अतः पवित्र कुरआन का धीरे-धीरे उतरना एक महानतम चमत्कार है। इसी प्रकार इबादुर्रहमान (रहमान अल्लाह के भक्तों) के लक्षण वर्णन करते हुए सूरः के अंत पर यह उल्लेख किया है कि जिस प्रकार आकाश पर बारह नक्षत्र हैं उसी प्रकार तेरे बाद बारह सुधारक तेरे धर्म की सुरक्षा के लिए पैदा होंगे और फिर तेरे प्रकाश से पूर्णतया प्रकाश ग्रहण करने वाला पूर्ण चन्द्रमा भी आएगा।

इसी रूप में इबादुर्रहमान के लक्षणों में से उनका मध्यमार्गी होना, उनकी नम्रता, खड़े होकर तथा सजदः करते हुए उपासना में उनका जीवन व्यतीत करना उल्लेख है, जिसके परिणाम स्वरूप ही उनको समस्त प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त होती है। इस सूरः की अन्तिम आयत यह बताती है कि वे लोग क्यों सजदः करते हुए तथा खड़े होकर दुआएँ करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। इस लिए कि दुआ के बिना अल्लाह तआला से जीवन प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है। और जो उसको झुठला दें और अल्लाह से सम्बन्ध तोड़ दें उनको अनगिनत प्रकार के भयंकर रोग लग जाएँगे जो उनका पीछा नहीं छोड़ेंगे।



سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكْيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ ثَمَانٌ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ سِتُّهُ رُسُوْلُ عَالَمٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

बस एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ
जिसने अपने भक्त पर फुर्कानः उतारा
ताकि वह समस्त जगत के लिए
सतर्ककारी बने । । ।

वही जिसका आकाशों और धरती का
साम्राज्य है और उसने कोई पुत्र नहीं
अपनाया और न साम्राज्य में कोई उसका
साझीदार है । और उसने हर चीज़ को
पैदा किया और उसे बहुत अच्छे अनुमान
के अनुसार ढाला । । ।

और उन्होंने उसके अतिरिक्त ऐसे
उपास्य बना रखे हैं जो कुछ पैदा नहीं
करते । जबकि वे स्वयं पैदा किए गए हैं ।
और वे अपने लिए भी हानि अथवा लाभ
पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते । और न
उनके अधिकार में मृत्यु है न जीवन और
न ही पुनरुत्थान । । ।

और जिन लोगों ने इनकार किया
उन्होंने कहा कि यह झूठ के सिवा कुछ
नहीं जो उसने गढ़ लिया है । और इस
विषय में उसकी दूसरे लोगों ने
सहायता की है । अतः निःसन्देह वे
पूर्णतया अत्याचार और झूठ बना लाए
हैं । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَبَرَّكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ
لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ②

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ
يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ
تَقْدِيرًا ③

وَأَنَّحَدُوا مِنْ دُوَيْنَةِ إِلَهَةٍ لَا يَخْلُقُونَ
شَيْئًا وَهُمْ يَخْلُقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ
لَا نَفْسٌ مُضْرِبٌ وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ
مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُسُورًا ④

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا إِفْلَكٌ
أَفْتَرَةٌ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ أَخْرُونَ
فَقَدْ جَاءُهُمْ وَظَلَمُّا وَرُورًا ⑤

और उन्होंने कहा कि पहले लोगों की कहानियाँ हैं जो उसने लिखवा ली हैं। अतः यह सुबह और शाम उस के समक्ष पढ़ी जाती हैं । ६।

तू कह दे कि इसे उसने उतारा है जो आकाशों और धरती के भेद जानता है। निःसन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । ७।

और वे कहते हैं कि इस रसूल को क्या हो गया है कि भोजन करता है और बाजारों में चलता है। क्यों न इसकी ओर कोई फरिश्ता उतारा गया जो इसके साथ मिल कर (लोगों को) सतर्क करने वाला होता । ८।

अथवा इसकी ओर कोई खजाना उतारा जाता अथवा इसका कोई बाग होता जिससे यह खाता। और अत्याचारियों ने कहा कि तुम लोग निःसन्देह एक ऐसे व्यक्ति के सिवा किसी का अनुसरण नहीं कर रहे जिस पर जादू किया गया है । ९।

देख ! तेरे बारे में वे कैसे उदाहरण वर्णन करते हैं। अतः वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं। और किसी मार्ग (प्राप्ति) का सामर्थ्य नहीं रखते । १०। (रुक् । १६)

बस एक वही वरकत वाला सिद्ध हुआ जो यदि चाहता तो तेरे लिए इससे बहुत उत्तम चीजें बनाता अर्थात् ऐसे बाग जिनके दामन में नहरें बहतीं हों। और तेरे लिए बहुत से भव्य महल बना देता । ११।

وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَبْهَا
فِيهِ تُمْلِى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ①

فُلْ آنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَإِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑦

وَقَالُوا مَا هَذَا الرَّسُولُ يَأْكُلُ الظَّعَامَ
وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ
مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ⑧

أَوْ يُلْقَى إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ
يَا أَكُلُ مِنْهَا ⑨ وَقَالَ الظَّلِيمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ
إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ⑩

أَنْظُرْ كَيْفَ صَرِيبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ
فَضُلُّوا فَلَا يُسْتَطِيعُونَ سِيلًا ⑪

تَبَرَّكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ حَمِيرًا مِنْ
ذَلِكَ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ
وَيَجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ⑫

बल्कि वे तो निश्चित घड़ी ही को झुठला बैठे हैं। और जो निश्चित घड़ी को झुठला दें, हमने उनके लिए एक भड़कती हुई अग्नि तैयार की है। 12।

जब वह उन्हें अभी दूर से ही देखेगी तो वे उसकी क्रोध से भड़कती हुई आवाज और चीखें सुनेंगे। 13।

जब वे उसमें ज़ंजीरों में जकड़े हुए संकीर्ण स्थान में डाले जाएँगे तो उस समय वे विनाश को पुकारेंगे। 14।

आज के दिन तुम केवल एक ही विनाश को न पुकारो बल्कि अनेक विनाशों को पुकारो। 15।

तू पूछ कि क्या यह (वस्तु) अच्छी है अथवा चिरस्थायी स्वर्ग, जिसका मुक्तकियों से वादा किया गया है। जो उनके लिए प्रतिफल और लौट कर आने का स्थान होगा। 16।

सदा (उसमें) रहते हुए वे जो चाहेंगे उसमें उनको प्राप्त होगा। यह ऐसा वादा है जिसे (पूरा करना) तेरे रब्ब पर अनिवार्य है। 17।

और (याद करो) जिस दिन वह उनको इकट्ठा करेगा और उनको भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा उपासना करते थे, फिर उनसे कहेगा कि क्या तुमने मेरे इन भक्तों को पथभ्रष्ट कर दिया था अथवा वे स्वयं मार्ग से हट गए थे? 18।

वे कहेंगे, पवित्र है तू। हमें शोभा नहीं देता कि हम तुझे छोड़ कर कोई दूसरा स्वामी बना लेते। परन्तु तूने उनको

بِلَكْدُبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَذْنَا لِمَنْ كَذَبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ⑩

إذَا رَأَاهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعْيَدٍ سَمِعُوا هَا
تَغْيِطًا وَرَفِيرًا ⑪

وَإِذَا أَلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضِيقًا مُقْرَنِينَ
دَعْوَا هَشَالِكَ تُبُورًا ⑫

لَا تَدْعُوا إِلَيْهِمْ تُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
تُبُورًا كَثِيرًا ⑬

فَلِأَذْلِكَ خَيْرٌ أُمَّ جَنَّةَ الْخُلُدِ الَّتِي وَعَدَ
الْمُمْكُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ⑯

لَهُمْ فِيهَا مَا يَسْأَءُونَ حَلِيلِينَ ۖ كَانَ عَلَى
رِبِّكَ وَعْدًا مَسْوُلًا ⑭

وَيَوْمَ يَحْسُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ
اللَّهِ فَيَقُولُ ءاَنْتُمْ اَصْلَاثُتُمْ عِبَادِيُّ
هُوَ لَا ءاَمْ هُرْضَلُوا السَّبِيلَ ⑮

قَالُوا سَبَّحْنَاكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ
تَتَخَذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ أُولَيَاءِ وَلَكُنْ

और उनके पूर्वजों को कुछ लाभ पहुँचाया, यहाँ तक कि वे (तेरे) अनुस्मरण को भूल गए और विनष्ट हो जाने वाले लोग बन गए। 119।

अतः वे तो जो तुम कहते हो, उसे झुठला चुके हैं। अतः न तुम (अज्ञाब) को टालने का सामर्थ्य रखोगे न सहायता (प्राप्त करने) का। और तुम में से जो अत्याचार करे हम उसे एक बड़ा अज्ञाब चखा एँगे। 120।

और हमने, तुझ से पहले जितने भी रसूल भेजे वे अवश्य भोजन किया करते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे। और हमने तुम में से कुछ को कुछ के लिए परीक्षा का कारण बना दिया। क्या तुम धैर्य धरोगे? और तेरा रब्ब गहन दृष्टि रखने वाला है। 121।

(रुकू ٢٧)

مَتَّعْهُمْ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى نَسَا الْيَمْرٌ
وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ④

فَقُدْكَذِبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا
تَسْتَطِعُونَ صُرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ
يُظْلِمْ مِنْكُمْ نُذْفَةٌ عَذَابًا كَبِيرًا ⑤

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا
إِنَّهُمْ يَأْكُلُونَ الظَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي
الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِيَعْصِ
فِتْنَةً أَتَصِرُّونَ ٦ وَكَانَ رَبُّكَ
بَصِيرًا ٧

और जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए अथवा हम अपने रब्ब को देख लेते। निःसन्देह उन्होंने स्वयं को बहुत बड़ा समझा है और बहुत बड़ी उद्दिष्टता की है । 122।

जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ-समाचार नहीं होगा। और वे कहेंगे (अज्ञाब देने वाले उन फ़रिश्तों से) ऐसी रोक ही उत्तम है जो पाठी न जा सके । 123।

और जो कर्म भी उन्होंने किया हम उसकी ओर अग्रसर होंगे और हम उसे बिखरी हुई धूल बना देंगे । 124।

स्वर्ग के रहने वाले उस दिन स्थायी ठिकाने की दृष्टि से भी सबसे अच्छे होंगे और अस्थायी विश्राम स्थल की दृष्टि से भी उत्कृष्ट होंगे । 125।

और (याद करो) जिस दिन आकाश बादलों (की धोर गर्जन) से फटने लगेगा और फ़रिश्ते झुंड के झुंड उतारे जाएँगे । 126।

सच्चा राजत्व उस दिन रहमान का होगा और काफ़िरों के लिए वह दिन बहुत कठिन होगा । 127।

और (याद करो) जिस दिन अत्याचारी (पछतावा करते हुए) अपने हथ काटेगा और कहेगा हाय! मैं ने रसूल के साथ ही मार्ग अपनाया होता । 128।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءً نَّارًا لَّوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلِكَةُ أَوْنَرِيَ رَبِّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِيَّ أَنفُسِهِمْ وَعَنْهُمْ غَشْوًا كَيْرًا ⑩

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلِكَةَ لَا بُشْرٌ يَوْمٌ إِذْ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَحْجُورًا ⑪

وَقَدِيمًا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمٌ إِذْ خَرُّ مُسْتَقْرًا وَأَحَسَّ بِمَقِيلًا ⑫

وَيَوْمَ تَشَقُّ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَتَنْزَلُ الْمَلِكَةُ تَنْزِيلًا ⑬

الْمُلْكُ يَوْمٌ إِلَهُ الْحَقِّ لِرَحْمَنٍ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكُفَّارِينَ عَسِيرًا وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سِيلًا ⑭

हाय सर्वनाश ! काश मैं अमुक व्यक्ति को घनिष्ठ मित्र न बनाता । १२९।

(अल्लाह की) अनुस्मृति मेरे पास आने के पश्चात निःसन्देह उसने मुझे उस से विमुख कर दिया । और शैतान तो मनुष्य को असहाय छोड़ जाने वाला है । ३०।

और सूल कहेगा हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मेरी जाति ने इस कुरआन को परित्यक्त कर छोड़ा है । ३१।*

और इसी प्रकार हम प्रत्येक नबी के लिए अपराधियों में से शत्रु बना देते हैं । और तेरा रब्ब हिदायत देने वाले के रूप में तथा सहायक के रूप में पर्याप्त है । ३२।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया, वे कहेंगे कि इस पर कुरआन एक बार में क्यों न उतारा गया । इसी प्रकार (उतारा जाना था) ताकि हम इसके द्वारा तेरे दिल को दृढ़ता प्रदान करें । और (इसी प्रकार) हमने इसे बहुत ठोस और सरल बनाया है । ३३।

और वे तेरे समक्ष जो भी तर्क लाते हम (उस के खण्डन के लिए) तेरे पास सच्चाई और (उसकी) सर्वोत्तम व्याख्या भी ले आते हैं । ३४।

वे लोग जो औंधे मुँह इकट्ठे करके नरक की ओर ले जाए जाएँगे यही वे लोग हैं

* यह आयत सहाबा रजि. के बारे में तो कदापि नहीं है क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल में बल्कि आप सल्ल. के पश्चात तीन शताब्दियों तक आने वाले सहाबा और ताबर्दिन और तबअ ताबर्दिन ने कुरआन को नहीं छोड़ा । वस्तुतः यह एक भविष्यवाणी है जो भविष्य में पूरी होने वाली थी, जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जाति व्यवहारिक रूप से कुरआन को छोड़ देंगी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला से इस बात की शिकायत करेंगे ।

يُوْيَلِقَ لَيْتَنِي لَمْ أَتَخِدْ فَلَانَا حَلِيلًا ③

لَقَدْ أَصَلَّفَ عَنِ الدُّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي
وَكَانَ الشَّيْطَنُ لِلْإِنْسَانِ حَذُولًا ④

وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي أَتَحْذَدُوا
هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ⑤

وَكَذَلِكَ جَعَلَنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا لَّهُ
الْمُجْرِمِينَ وَكَفِي بِرَبِّكَ هَادِيًّا وَنَصِيرًا ⑥

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا نُنَزِّلَ عَلَيْهِ
الْقُرْآنَ جُمْلَةً وَاحِدَةً كَذَلِكَ لِتُبَشِّرَ
بِهِ فَوَادِكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ⑦

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثِيلٍ إِلَّا جِئْنَكَ بِالْحَقِّ
وَأَحَسَنَ تَفْسِيرًا ⑧

الَّذِينَ يُحَسِّرُونَ عَلَى وَجْهِهِمْ إِلَى

जो दर्जे की दृष्टि से सबसे निकृष्ट और सबसे अधिक पथभ्रष्ट हैं । 35।

(स्फू ۳)

और निःसन्देह हमने मूसा को ग्रंथ प्रदान किया और उसके साथ हमने उसके भाई हारून को (उसका) सहायक बनाया । 36।

अतः हमने कहा तुम दोनों उन लोगों की ओर जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है । फिर हमने उन (झुठलाने वालों) को बुरी प्रकार से विनष्ट कर दिया । 37।

और नूह की जाति को भी, जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया हमने उन्हें डुबो दिया । और उन्हें हमने लोगों के लिए एक चिह्न बना दिया । और अत्याचारियों के लिए हमने पीड़ाजनक अज्ञाब तैयार कर रखा है । 38।

और आद और समूद और कुएँ वालों को भी तथा बहुत सी उन जातियों को भी जो उस (समय) थीं । 39।

और प्रत्येक के लिए हमने (शिक्षाप्रद) उदाहरण वर्णन किये । और सबको हमने (अंततः) बुरी प्रकार से विनष्ट कर दिया । 40।

और वे (तेरे विरोधी) ऐसी बस्ती के पास से (कई बार) गुजर चुके हैं जिस पर बुरी वर्षा बरसाई गई थी । अतः क्या वे उस पर विचार न कर सके ? वास्तविकता यह है कि वे पुनरुत्थान की आशा ही नहीं रखते । 41।

جَهَنَّمُ أُولِئِكَ شُرُّ مَكَانًا وَأَصْلٌ
سَيِّلًا ۝

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ
أَخَاهُ هَرُونَ وَزِيرًا ۝

فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاِيمَانِ
فَدَمَرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۝

وَقَوْمَ نُوحَ لَمَّا كَذَّبُوا الرَّسُولَ أَغْرَقْنَاهُمْ
وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ أَيَّةً وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّبِّ
وَقَرْوَنًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۝

وَكَلَّا ضَرَبَنَا لَهُ الْأَمْثَالَ وَكَلَّا
تَبَرَّنَا تَتْبِيرًا ۝

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقُرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْتُ
مَطَرَ السَّوْءِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا
بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ سُورًا ۝

और जब वे तुझे देखते हैं तो (यह कहते हुए) तुझे केवल उपहास का पात्र बनाते हैं कि क्या यह है वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा किया है ? | 42 |

यदि हम अपने उपास्यों पर धैर्यपूर्वक (अडिंग) न रहते तो सम्भव था कि यह हमें उन से भटका देता। और वे अवश्य जान लेंगे जब अज्ञाव को देखेंगे कि कौन सबसे अधिक पथभ्रष्ट था। 43।

क्या तूने उस पर ध्यान दिया जिसने
अपनी इच्छा ही को अपना उपास्य बना-
लिया । तो क्या तू उसका भी ज्ञामिन
बन सकता है ? | 441

क्या तू धारणा करता है कि उनमें से अधिकतर सुनते हैं अथवा बुद्धि रखते हैं? वे केवल पशुओं की भाँति हैं बल्कि वे (उनसे भी) अधिक पथभ्रष्ट हैं। 145।

$$\left(\text{कृष्ण} \frac{4}{1} \right)$$

क्या तूने अपने रब्ब की ओर नहीं देखा
कि वह कैसे छाया को फैलाता जाता है
और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर कर
देता । फिर हमने सूर्य को उस का पता
देने वाला बनाया है । 146 ।

फिर हम उस (छाया) को अपनी ओर धीरे-धीरे समेट लेते हैं। 147।

और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात्रि को
वस्त्र और नींद को आराम तथा दिन को
उल्लति का साधन बनाया। 48।

और वही है जिसने अपनी कृपा-वृष्टि के आगे आगे हवाओं को शभ-समाचार देते

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُرُواً
آهَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٦﴾

إِنَّ كَادِلَيْضَلَّنَا عَنِ الْهَتَّالُولَا أَنْ صَبَرَنَا
عَلَيْهَا طَوْسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ مَنْ أَصْلَ سَبِيلًا ⑩

أَرَعِيتَ مَنِ اتَّخَذَ اللَّهَ هُوَ أَفَإِنْتَ
يَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًاً

أَمْ تَحْسِبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ
يَعْقِلُونَ ۝ إِنْ هُمْ إِلَّا كَاذِبُ الْأَنْعَامِ بَلْ
هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

أَلْمَتَرَ إِلَيْرِيكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ؟ وَلَوْ
شَاءَ لَجَعَلَهُ سَائِنًا ؟ فَمَمَّا جَعَلَنَا الشَّمْسَ
عَلَيْهِ دَلِيلًا ①

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْيَنِيلَ لِبَاسًا وَالثَّوْمَ
سُسَانَاتٍ وَّ حَمَامًا النَّهَارَ نُسْعَةً ۚ

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ

हुए भेजा । और हमने आकाश से पवित्र जल उतारा । 49।

ताकि हम उसके द्वारा एक मृत-भूमि को जीवित करें और उस (जल) से उन्हें तृप्त करें जिन्हें हमने बहुलता के साथ पशुओं और मनुष्यों के रूप में पैदा किया । 50।

और निःसन्देह हमने उसे उनके बीच फेर-फेर कर वर्णन किया ताकि वे उपदेश ग्रहण करें । परन्तु अधिकतर लोगों ने केवल कृतघ्नता करते हुए इनकार कर दिया । 51।

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक वस्ती में अवश्य कोई सचेतक भेज देते । 52।

अतः काफिरों का अनुसरण न कर और इस (कुरआन) के द्वारा उनसे एक बड़ा जिहाद कर । 53।

और वही है जो दो समुद्रों को मिला देगा, एक बहुत मीठा और एक बहुत खारा (और) कड़वा है । और उसने उन दोनों के बीच (अभी) एक रोक और जुदाई डाल रखी है जो पाटी नहीं जा सकती । 54।*

और वही है जिसने जल से मनुष्य को पैदा किया और उसे पैतृक और संसुराली रिश्तों में बांधा । और तेरा रब्ब स्थायी सामर्थ्य रखता है । 55।

رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿٦﴾

لَنْخِيَّ بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا وَ نُسْقِيَهُ مَمَّا
خَلَقْنَا آنْعَامًا وَ أَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿٧﴾

وَلَقَدْ صَرَفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَكَرُوا فَآبَى
أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ﴿٩﴾

فَلَا تَطِعِ الْكُفَّارِينَ وَ جَاهِدُهُمْ بِهِ
جَهَادًا كَيْرًا ﴿١٠﴾

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبُ
فَرَاتُ وَهَذَا مَلْحٌ أَجَاجٌ وَ جَعَلَ بَيْنَهُمَا
بَرْزَخًا وَ حَجْرًا مَحْجُورًا ﴿١١﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَسَرًا فَجَعَلَهُ

نَسَبًا وَ صِهْرًا وَ كَانَ رَبِّكَ قَدِيرًا ﴿١٢﴾

* इसमें प्रशान्त महासागर और अतलांतिक महासागर का उल्लेख है । प्रशान्त महासागर अपेक्षाकृत मीठे पानी का समुद्र है और अतलांतिक महासागर कड़वे पानी का । इन दोनों के बीच एक रोक है जिसके बारे में एक अन्य आयत में कहा गया है कि यह रोक दूर कर दी जाएगी और इन दोनों समुद्र को मिला दिया जाएगा ।

और वे अल्लाह को छोड़ कर उनकी उपासना करते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि पहुँचा सकते हैं। और काफिर अपने रब्ब के मुकाबले पर (दूसरों का) समर्थन करने वाला है । 156। और हमने तुझे केवल एक शुभ-समाचार देने वाला और सतर्ककारी के रूप में भेजा है । 157।

तू कह दे कि मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता। परन्तु जो चाहे अपने रब्ब की ओर जाने वाला मार्ग अपना सकता है । 158।

और भरोसा कर उस जीवन्त पर जो कभी नहीं मरेगा। और उसकी स्तुति के साथ उसकी पवित्रता का बखान कर। और वह अपने भक्तों के पापों की जानकारी रखने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है । 159।

जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया। वह रहमान है। अतः उसके बारे में किसी जानकार से प्रश्न कर। 160।

और जब उन्हें कहा जाता है कि रहमान के समक्ष सजद; करो तो वे कहते हैं कि रहमान है क्या चीज़ ? क्या हम उसे सजदः करें जिसका तू हमें आदेश देता है? और उनको इस (बात) ने घृणा में और भी बढ़ा दिया। 161। (रुक् ۴)

अतः एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसने आकाश में नक्षत्र बनाए। और

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَقْعُدُ
وَلَا يَصْرُهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَى رَبِّهِ
ظَهِيرًا ⑥

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ⑦

قُلْ مَا آتَيْنَاكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ
شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا ⑧

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَقِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِهِ وَكَفِيْ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ
خَيْرًا ⑨

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بِيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى
الْعَرْشِ ۝ الْرَّحْمَنُ فَسَلَّمَ بِهِ خَيْرًا ⑩

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا
وَمَا الرَّحْمَنُ ۝ أَنْسَجَدَ لِمَا تَأْمُرَنا
وَزَادَهُمْ لَفْوَرًا ۝

تَبَرَّكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

उस (आकाश) में एक उज्ज्वल दीपक (अर्थात् सूर्य) और एक चमकता हुआ चन्द्रमा बनाया । 62।

और वही है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उसके लिए जो उपदेश प्राप्त करना चाहे अथवा कृतज्ञता व्यक्त करना चाहे । 63।

और रहमान के भक्त वे हैं जो धरती पर विनम्रता के साथ चलते हैं । और जब मूर्ख लोग उनसे सम्बोधित होते हैं तो (उत्तर में) कहते हैं 'सलाम' । 64।

और वे लोग जो अपने रब्ब (की उपासना) के लिए रातें सजदः करते हुए और खड़े रह कर गुज़ारते हैं । 65।

और वे लोग जो कहते हैं हे हमारे रब्ब ! हमसे नरक का अज्ञाब टाल दे । निःसन्देह उसका अज्ञाब चिमट जाने वाला है । 66।

निःसन्देह वह अस्थायी ठिकाने के रूप में और स्थायी ठिकाने के रूप में भी बहुत बुरा है । 67।

और वे लोग कि जब खर्च करते हैं तो अपव्यय नहीं करते और न कृपणता से काम लेते हैं । बल्कि इस के बीच सन्तुलन होता है । 68।

और वे लोग जो अल्लाह के साथ किसी अन्य उपास्य को नहीं पुकारते और किसी ऐसी जान का जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा प्रदान की हो अन्यायपूर्वक वध नहीं करते और व्यभिचार नहीं करते

وَجَعَلَ فِيهَا سِرْجَانًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ⑩

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خَلْفَةً لِمَنْ
أَرَادَ أَنْ يَذَكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ⑪

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى
الْأَرْضِ هُنَّا قَوْمٌ إِذَا حَاطَبُهُمُ الْجِهَنَّمُ
قَالُوا سَلَامًا ⑫

وَالَّذِينَ يَبِيَّنُونَ لِرَبِّهِمْ سَجَدًا وَقِيَامًا ⑬

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا صُرِفْ عَنَّا عَذَابَ
جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ⑭

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقْرَرًا وَمَقَامًا ⑮

وَالَّذِينَ إِذَا آتُفَقُوا مُلْمِسِرِقُوا وَلَمْ
يَقْتَرِفُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ⑯

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَيْهَا أَخْرَ
وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ وَلَا يَرْزُقُونَ ۝ وَمَنْ يَفْعُلْ ذَلِكَ

और जो कोई ऐसा करेगा पाप (का दण्ड) पाएगा । 69।

उसके लिए क्रयामत के दिन अज्ञाब को बढ़ाया जाएगा और वह उसमें लम्बे समय तक अपमानित व लज्जित अवस्था में रहेगा । 70।

सिवाए उसके जो प्रायश्चित करे और ईमान लाए और नेक कर्म करे । अतः यहीं वे लोग हैं जिनकी बुराइयों को अल्लाह अच्छाइयों में परिवर्तित कर देगा । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 71।

और जो प्रायश्चित करे और पुण्य कर्म करे तो वही वास्तव में अल्लाह की ओर प्रायश्चित करते हुए लौटता है । 72।

और वे लोग जो झुठी गवाही नहीं देते और जब वे व्यर्थ * (चीज़ों) के निकट से गुज़रते हैं तो शालीनता के साथ गुज़रते हैं । 73।

और वे लोग, कि जब उन्हें उनके रब्ब की आयतें स्मरण करवाई जाती हैं तो उन पर वे बहरे और अंधे बन कर नहीं गिरते । 74।

और वे लोग जो यह कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें अपने जीवन-साथियों से और अपनी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तकियों का इमाम बना दे । 75।

* यहाँ 'व्यर्थ' वस्तुवाचक संज्ञा के रूप में लिया गया है ।

يَلْقَ آئِمَّاً ﴿٦﴾

يُضَعِّفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَاجِّاً ﴿٧﴾

إِلَامَنْ تَابَ وَأَمْنَ وَعَمِلَ عَمَلاً صَالِحًا فَأُولَئِكَ يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّاتِهِمْ حَسَنَتْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٨﴾

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُوا بِالْغُوْمِ مَرُوا كِرَاماً ﴿١٠﴾

وَالَّذِينَ إِذَا ذَكَرُوا إِلَيْتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخْرُقُوا عَلَيْهَا صَمَّاً وَعَمَيْلَانًا ﴿١١﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هُبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتَنَا قَرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُسْقِيْنَ إِمَامًا ﴿١٢﴾

यहीं वे लोग हैं जिन्हें उनके धैर्य धरने के प्रतिफल स्वरूप अद्वालिकायें दी जाएँगी। और वहाँ उनका अभिवादन किया जाएगा और उन्हें सलाम पहुँचाया जाएगा । 76।

वे सदा उन (स्वर्गों) में रहने वाले होंगे। वे अस्थायी ठिकाने के रूप में और स्थायी ठिकाने के रूप में भी क्या ही अच्छे हैं । 77।

तू कह दे कि यदि तुम्हारी दुआ न होती तो मेरा रब्ब तुम्हारी कोई परवाह न करता। पर तुम उसे झुठला चुके हो। अतः अवश्य उसका दुष्परिणाम तुम से चिमट जाने वाला है । 78। (रुदू ६)

أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا
وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا حَيَّةً وَسَلَامًاٌ

خَلِدِينَ رِيقَاهُ حَسَنَتْ مُسْتَقَرًا
وَمَقَامًا ⑩

فَلْ مَا يَعْبُؤُ ابْكَمْرَبِيْ لَوْلَادُعَاؤْ كُمْ
فَقَدْ كَدْبِيلْمَ قَسَوْفَ يَكُونُ لِزَاماً ⑪

26—सूरः अश-शुअरा

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 228 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ पुनः एक बार कुछ खण्डाक्षरों से किया गया है और इसके साथ सीन अक्षर पहली बार खण्डाक्षर के रूप में अवतरित किया गया है। इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं और हैं। परन्तु कुछ विद्वान् इन खण्डाक्षरों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि ता अक्षर से अभिप्राय पवित्र और सीन से अभिप्राय सुनने वाला तथा मीम से अभिप्राय जानने वाला है।

पिछली सूरः के अंत में बताया गया था कि जब मनुष्य दुआ का इनकार करके अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है तो उसे इसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक प्रकार के आध्यात्मिक रोग चिमट जाते हैं। इस सूरः में उसी के उदाहरणस्वरूप उन जातियों का वर्णन है जिनसे दुआ के इनकार के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला ने यही बर्ताव किया। उन सब इनकार करने वाली जातियों के वर्णन के पश्चात् अल अज़ीज़रहीम (प्रबल प्रतापी और बारबार दया करने वाला) शब्द की जो पुनरावृत्ति की गयी है इस से स्पष्ट होता है कि फिर अल्लाह तआला ने दयालु होने के कारण उनको दोबारा अवसर प्रदान किया कि शायद वे वापस लौटें। परन्तु बारम्बार ऐसा होते रहने पर भी अंततः वे सत्य को ठुकराते रहे और फिर अल्लाह तआला नवीन कृपा के साथ उन पर उतरता रहा।

यहाँ अल अज़ीज़ (प्रबल प्रतापी) शब्द की पुनरावृत्ति यह बता रही है कि अल्लाह के शत्रुओं ने तो नवियों को तिरस्कृत और अपमानित करने का प्रयत्न किया परन्तु उनके रब्ब ने उनको चिरस्थायी सम्मान प्रदान किया।

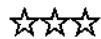
इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि अपने निकट सम्बन्धियों को उनके बुरे अन्त से सतर्क कर। और जो आध्यात्मिक परिजन तुम्हे प्रदान किए गए हैं उन पर अपनी करुणा के पंख झुका दे। यदि अस्वीकार करने वाले अपने अस्वीकार पर डटे रहें तो यह घोषणा कर दे कि मैं तुम्हारे अस्वीकार करने से विमुख हूँ। और मेरा भरोसा तो केवल अल्लाह ही पर है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील तथा बार-बार दया करने वाला है। और दुआओं को बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।

इसके पश्चात् एक ऐसा तर्क दिया गया है जिससे निश्चित रूप से सिद्ध होता है कि नवियों पर कदापि शैतान नहीं उतर सकते क्योंकि न वे अफ़क़ाक़ होते हैं और न असीम अर्थात् वे न तो झूठ बोलने वाले होते हैं और न पापी होते हैं। और उनके सच्चे

होने पर उनके आस पास रहने वाले सब साक्षी हैं ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली वाणी की महानता में एक यह बात भी है कि यह उत्कृष्ट काव्यरस से परिपूर्ण है । और पवित्र कुरआन की काव्यात्मक शुद्धता और सुगमता से प्रभावित हो कर बहुत से कवियों ने कविता कहनी ही छोड़ दी थी । परन्तु इससे यह परिणाम निकालना कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं एक उच्चकोटि के कवि थे इस दृष्टि से असत्य है कि कवि तो अपनी कल्पना में भटकता फिरता है परन्तु कुरआन तो अकारण काल्पनिक बातें नहीं करता ।

इसके साथ ही उन मुसलमान कवियों को अपवाद स्वरूप बरी कर दिया गया जो ईमान लाए, पुण्य कर्म किए और वे अधिकता के साथ अल्लाह तआला का स्मरण करते हैं । और जब उन पर अत्याचार किया गया तो उसका प्रतिशोध लेते हैं । यहाँ उन मुसलमान कवियों की ओर संकेत है जिन्होंने उस समय अपनी कविता के द्वारा प्रतिशोध लिया जब काफिरों के निन्दक कवियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आक्रमण किया ।



سُورَةُ الشِّعْرَاءُ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ مَا تَنِي وَتَمَانٍ وَعِشْرُونَ آيَةً وَاحِدَّ عَشْرَ رُكُونًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

तथ्यबुन्, समीउन, अलीमुन :
पवित्र, बहुत सुनने वाला, बहुत
जानने वाला । 21

यह सुस्पष्ट कर देने वाली एक पुस्तक
की आयतें हैं । 31

क्या तू अपनी जान को इस लिए नष्ट
कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते । 41

यदि हम चाहें तो उन पर आकाश से एक
ऐसा चिह्न उतारें जिसके सामने उनकी
गर्दनें झुक जाएँ । 51

और उनके पास रहमान की ओर से जो
भी ताज़ा उपदेश आता है वे उससे
विमुख होने वाले बनते हैं । 61

अतः निःसन्देह उन्होंने (प्रत्येक ताज़ा
चिह्न को) झुठला दिया है । अतः अवश्य
उन्हें उन (बातों के पूरा होने) के
समाचार मिलेंगे जिनकी वे खिल्ली
उड़ाया करते थे । 71

क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा कि
हमने उसमें (वनस्पति के) कितने ही
उत्तम प्रजाति के जोड़े उगाए हैं । 81

निःसन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है ।
जबकि अधिकतर उनमें से ईमान लाने
वाले नहीं । 91

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

طَسَّ ②

تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمَبِينِ ③

لَعَلَكَ بَاخِعُ نَفْسَكَ أَلَا يَكُونُوا
مُؤْمِنِينَ ④

إِنْ لَشَائِرُّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ أَيَّةً
فَظَلَّتْ أَغْنَافُهُمْ لَهَا خَضِعِينَ ⑤
وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُعَذَّثٍ
إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ⑥

فَقُدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَثْلَبُوا مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهِزُّونَ ⑦

أَوْلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَثْبَتْنَا فِيهَا
مِنْ كُلِّ رُقِّيجٍ كَرِيمٍ ⑧

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ⑨

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है । 110। (रुक् ١)

और जब तेरे रब्ब ने मूसा को आवाज़
दी कि तू अत्याचारी जाति की ओर
जा । 111।

(अर्थात्) फिरऔन की जाति की ओर
(यह कहते हुए कि) क्या वे तक्कवा
धारण नहीं करेंगे ? । 112।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मैं
डरता हूँ कि वे मुझे झुठला देंगे । 113।

और मेरा सीना तंगी अनुभव करता है
और मेरी जुबान नहीं चलती । अतः
हारून की ओर अपनी रिसालत (अर्थात्
पैगम्बरी) भेज । 114।

और मुझ पर उनकी ओर से एक अपराध
(का आरोप) भी है । अतः मैं डरता हूँ
कि वे मेरी हत्या न कर दें । 115।

उस (अल्लाह) ने कहा, कदापि नहीं !
अतः तुम दोनों हमारे चिह्नों के साथ
जाओ । निःसन्देह हम तुम्हारे साथ खूब
सुनने वाले हैं । 116।

अतः दोनों फिरऔन के पास जाओ और
(उसे) कहो कि हम निःसन्देह समस्त
लोकों के रब्ब की ओर से पैगम्बर हैं । 117।

(यह संदेश देने के लिए) कि हमारे साथ
बनी-इस्लाईल को भेज दे । 118।

उसने कहा, क्या हमने तुझे बचपन से
अपने बीच नहीं पाला और जबकि तू
अपनी आयु के कई वर्ष हमारे बीच
रहा ? । 119।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُمَا الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦﴾

وَإِذَا نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ
الظَّلِيمِينَ ﴿٧﴾

قَوْمَ فِرْعَوْنَۚ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿٨﴾

قَالَ رَبِّي أَلِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٩﴾

وَيَضِيقُ صَدْرِيٌّ وَلَا يُطَلِّقُ لِسَانِي
فَأَرْسِلْ إِلَى هَرُونَ ﴿١٠﴾

وَلَهُمْ عَلَى ذَنْبِهِمْ فَلَا خَافُ أَنْ يَقْتَلُونَ ﴿١١﴾

قَالَ كَلَّاۚ فَأَذْهَبَا بِإِيمَانِكُمْ
مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٢﴾

فَأَتَيْنَا فِرْعَوْنَۚ فَقَوْلًا إِلَى رَسُولِ رَبِّ
الْعَلَمِينَ ﴿١٣﴾

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٤﴾

قَالَ أَلَمْ نُرِّثَكَ فِينَا وَلِيْدًا وَلِيْثَتَ فِينَا
مِنْ حَمَرِكَ سِنِينَ ﴿١٥﴾

और तूने वह कर्म किया जो तूने ही किया और तू कृतज्ञों में से है। 120।

उसने कहा, मैंने वह कर्म उस समय किया जब मैं राह से भटका हुआ था। 121।

इसलिए जब मैं तुमसे भयभीत हुआ तो मैं तुम से फ़रार हो गया। तब मेरे रब्ब ने मुझे तत्त्वज्ञान प्रदान किया और मुझे पैराम्बरों में से बना दिया। 122।

और (क्या तेरा) यह उपकार है, जो तू मुझ पर जता रहा है कि तूने बनी इसाईल को दास बना डाला? 123।

फिर औन ने कहा, और वह समस्त लोकों का रब्ब है क्या चीज़ ? 124।

उसने कहा, आसमानों और धरती का रब्ब और उसका (भी) जो उन दोनों के बीच है। (अच्छा होता) यदि तुम विश्वास करने वाले होते। 125।

उसने उनसे जो उसके चारों ओर थे कहा, क्या तुम सुन नहीं रहे? 126।

उस (अर्थात् मूसा) ने कहा, (वह) तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब है। 127।

उस (अर्थात् फिर औन) ने कहा निःसन्देह यह तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, अवश्य पागल है। 128।

उस (अर्थात् मूसा) ने कहा (वह) पूरब का भी रब्ब है और पश्चिम का भी और उसका भी जो उन दोनों के मध्य है। (अच्छा होता) यदि तुम बुद्धि से काम लेते। 129।

وَفَعْلَتْ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ
الْكُفَّارِينَ ﴿١﴾

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذَا وَأَنَا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢﴾

فَفَرَزْتُ مِنْكُمْ لِمَا حِفِّظْتُكُمْ فَوَهَبْتُ
رِّئْسِ حُكْمًا وَجَعَلْتُمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾

وَتِلْكَ نِعْمَةً تَمَنَّاهَا عَلَى أَنْ عَبَدْتَ
نَحْنَ إِنَّا عَبَدْلِنَ ﴿٤﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَارَبَ الْعَلَمِينَ ﴿٥﴾

قَالَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٦﴾

قَالَ إِنَّمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَعْنُونَ ﴿٧﴾

قَالَ رَبِّكُمْ وَرَبِّ أَبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسَلَ إِلَيْكُمْ
لَمْ يُجْنِبُونَ ﴿٩﴾

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا
بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

उसने कहा, यदि तूने मेरे सिवा किसी को उपास्य बनाया तो मैं अवश्य तुझे बन्दी बना दूँगा । 30।

उसने कहा, क्या ऐसी अवस्था में भी कि मैं तेरे समक्ष कोई खुली-खुली वस्तु प्रस्तुत करूँ ? । 31।

उसने कहा, फिर उसे ले आ यदि तू सच्चों में से है । 32।

तब उसने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह स्पष्ट दिखाई देने वाला अजगर बन गया । 33।

फिर उसने अपना हाथ निकाला तो सहसा वह देखने वालों को सफेद दिखाई देने लगा । 34। (रुकू 2)

उस (फिरआौन) ने अपनी चारों ओर के सरदारों से कहा, निःसन्देह यह कोई बड़ा कुशल जादूगर है । 35।

यह चाहता है कि अपने जादू के बल पर तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे । अतः तुम क्या परामर्श देते हो ? । 36।

उन्होंने कहा, इसको और इसके भाई को कुछ ढील दे और शहरों में (लोगों को) एकत्रित करने वाले भेज दे । 37।

वे तेरे पास प्रत्येक प्रकार के कुशल जादूगर ले आएँगे । 38।

अतः जादूगरों को एक निर्धारित दिन के निश्चित समय पर इकट्ठा किया गया । 39।

और लोगों से कहा गया कि क्या तुम एकत्रित हो सकोगे ? । 40।

قَالَ لِئِنِّي تَحْدِتَ إِلَهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَكَ

مِنَ الْمُسْجُونِينَ ④

قَالَ أَوْلَوْ جِئْتَكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ⑤

قَالَ فَأَتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ⑥

فَأَنْتَ قُلْقِي عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَعْبَانُ مُبِينٍ ⑦

وَنَرَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ يَضَاءٌ لِلنُّظَرِينَ ⑧

قَالَ لِلْمُلَائِكَةِ إِنَّ هَذَا سِحْرٌ عَلَيْمٌ ⑨

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ

بِسُحْرٍ ۝ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ⑩

قَالُوا أَزْرِجْهُ وَأَخْاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَارِينَ

حَشِيرِينَ ⑪

يَا تُولَكَ بِكُلِّ سَعَادٍ عَلَيْمٌ ⑫

فَجَمِيعَ السَّحَرَةِ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ

مَعْلُومٍ ⑬

وَقَيْلَ لِلثَّايسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ⑭

ताकि यदि जादूगर विजयी हो जाएँ तो हम उन्हीं के पीछे चलें । 41।

अतः जब जादूगर आ गए तो उन्होंने फिरआौन से कहा यदि हम ही विजयी हो गये तो क्या हमारे लिए कोई प्रतिफल भी होगा ? । 42।

उसने कहा, हाँ और निश्चित रूप से तुम इस अवस्था में निकटवर्तियों में भी सम्मिलित हो जाओगे । 43।

मूसा ने उनसे कहा, जो (जादू) तुम डालने वाले हो डाल दो । 44।

तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ (धरती पर) डाल दी और कहा, फिरआौन के सम्मान की सौगन्ध ! निःसन्देह हम ही विजयी होने वाले हैं । 45।

तब मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो सहसा वह उस झूठ को निगलने लगी जो उन्होंने गढ़ा था । 46।

तब जादूगर सजदः करते हुए (धरती पर) गिरा दिए गए । 47।

उन्होंने कहा, हम समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान ले आए हैं । 48।

मूसा और हारून के रब्ब पर । 49।

उस (अर्थात् फिरआौन) ने कहा, क्या मेरी अनुमति से पूर्व ही तुम उस पर ईमान ले आए हो ? निःसन्देह यह तुम्हारा मुखिया है जिसने तुम्हें जादू सिखाया था। अतः तुम शीघ्र ही (इसका

لَعْلَنَا تَتَّبِعُ السَّحْرَةَ إِنْ كَانُوا هُمْ
الْغَلِيلِيْنَ ④

فَلَمَّا جَاءَ السَّحْرَةُ قَالُوا لِفَرْعَوْنَ إِنْ
كَانَ أَجْرًا إِنْ كَانَ حُنْ الْغَلِيلِيْنَ ④

قَالَ نَعَمْ وَإِنْكُمْ إِذَا لَمْ يَمْكِرُوْنَ ④

قَالَ لَهُمْ مُوسَى أَقْوَامًا أَنْتُمْ مُلْقُوْنَ ④
فَأَنْقُوْا حِلَامَهُمْ وَعِصَيَّهُمْ وَقَالُوا بِعْزَةٍ
فِرْعَوْنَ إِنَّا نَحْنُ الْغَلِيلُونَ ④

فَأَنْقُوْيَ مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هُوَ تَلْقَفُ
مَا يَأْفِكُوْنَ ④

فَأَنْقُوْيَ السَّحْرَةَ سَجِدِيْنَ ④

قَالُوا أَمَنَا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ④

رَبِّ مُوسَى وَهُرُوْنَ ④

قَالَ امْسِعُهُمْ قَبْلَ أَنْ يَأْكُمْ إِنَّهُ
لَكَبِيرٌ كَمَ الَّذِي عَلِمْكُمْ السَّحْرَةُ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لَا قَطْعَنَ آيَيْدِيْكُمْ

परिणाम) जान लोगे । मैं अवश्य तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से काट डालूँगा । और निःसन्देह मैं तुम सब को सूली पर लटका ढूँगा । ५०।

उन्होंने कहा, कोई आपत्ति नहीं निःसन्देह हम अपने रब्ब ही की ओर लौटने वाले हैं । ५१।

निःसन्देह हम आशा लगाए बैठे हैं कि हमारा रब्ब हमारी भूलों को क्षमा कर देगा क्योंकि हम सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हो गए । ५२। (स्कू ۳)

और हमने मूसा की ओर वहाँ की कि रात को किसी समय हमारे भक्तों को यहाँ से ले चल । निःसन्देह तुम्हारा पीछा किया जाएगा । ५३।

अतः फिर औन ने विभिन्न शहरों में एकत्रित करने वाले भेजे । ५४।

(यह घोषणा करते हुए कि) निःसन्देह ये लोग एक अल्पसंख्यक तुच्छ समुदाय हैं । ५५।

और इस पर भी ये अवश्य हमें क्रोध दिला कर रहते हैं । ५६।

जबकि हम सब अवश्य सतर्क रहने वाले हैं । ५७।

अतः हमने उन्हें बासों और झरनों (वाले भू-भाग) से निकाल दिया । ५८।

तथा खड़ानों और सम्मानजनक स्थान से भी । ५९।

इसी प्रकार (हुआ) । और हमने बनी-इसाईल को उस (भू-भाग) का उत्तराधिकारी बना दिया । ६०।

وَأَرْجَلُكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصِيلَتُكُمْ
أَجْمَعِينَ ⑥

قَالُوا لَا صَيْرَ إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ⑦

إِنَّا نَظَمْعُ أَنْ يَعْفَرَنَا رَبُّنَا حَطَلِنَا أَنْ
كُنَّا آقَلَ الْمُؤْمِنِينَ ⑧

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِيَادِي
إِنَّكُمْ مُتَّبِعُونَ ⑨

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حُشْرِيْنَ ⑩

إِنَّ هُوَ لَاءُ لَشِرْذَمَةٍ قَلِيلُونَ ⑪

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآيْضُونَ ⑫

وَإِنَّا لَجَمِيعَ حَذِرُونَ ⑬

فَأَخْرَجَهُمْ مِنْ جَنَّتٍ وَعَيْوَنٍ ⑭

وَكُنُوزٍ وَمَقَامِرٍ كَرِيمٍ ⑮

كَذِلِكَ وَأُورْثَاهَا بَنِي اسْرَائِيلَ ⑯

अतः वे (फिरौन और उसके साथी)
तड़के ही उनके पीछे लग गए । 61।

फिर जब दोनों समूहों ने एक दूसरे को
देखा तो मूसा के साथियों ने कहा,
निःसन्देह हम तो पकड़े गए । 62।

उस (अर्थात् मूसा) ने कहा, कदापि
नहीं । निःसन्देह मेरा रब्ब मेरे साथ है
(और) अवश्य वह मेरा मार्गदर्शन
करेगा । 63।

अतः हमने मूसा की ओर वहाँ की कि
अपनी लाठी से समुद्र पर प्रहार कर ।
इस पर (समुद्र) फट गया और प्रत्येक
टुकड़ा ऐसा हो गया जैसे कोई बड़ा
ठीला हो । 64।*

और उस स्थान पर हमने दूसरों को
(पहलों के) निकट कर दिया । 65।

और हमने मूसा को और उन सब को भी
जो उसके साथ थे मुक्ति प्रदान की । 66।

फिर हमने दूसरों को डुबो दिया । 67।

निःसन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न था
और (बावजूद इसके) उनमें से
अधिकतर मोमिन नहीं बने । 68।

فَأَتَبْعُهُمْ فَشِرِّقِينَ

فَلَمَّا تَرَأَ الْجَمْعُنِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَى
إِنَّا لَمُذْرُكُونَ

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيِّدِيْنِ

فَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ اضْرِبْ بِعَصَالَكَ
الْبَحْرَ فَانْقَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالظَّوْدِ
الْعَظِيمِ

وَأَرْلَفَنَا ثُمَّ الْأَخْرِيْنَ

وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِيْنَ

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْأَخْرِيْنَ

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَاءِيَّةً وَمَا كَانَ أَكُورُهُمْ

مُؤْمِنِيْنَ

* इस आयत में हज़रत मूसा अलै. के समुद्र को उस स्थान से पार करने का उल्लेख है जहाँ नील नदी और समुद्र परस्पर मिलते हैं । अतः कभी कभार नील नदी में ऊपरी क्षेत्र से बाढ़ का पानी तीव्र बेग से इस प्रकार आ रहा होता है और लगता है कि पानी की एक दीवार चली आ रही है । इसी प्रकार समुद्र भी ज्वार के समय तूफानी लहरों के साथ उठ कर आगे बढ़ता है । हज़रत मूसा अलै. को ऐसे समय में अल्लाह तआला ने नदी और समुद्र के उस संगम स्थल से सुरक्षित पार करवा दिया जबकि यह दोनों विशाल जलराशि अभी परस्पर मिले नहीं थे । परन्तु पीछे जो फिरौन की जाति उनको पकड़ने के लिए आ रही थी वे सब के सब फिरौन सहित उस समय दूब गए जब विपरीत दिशाओं से आ रही थे दोनों विशाल जलराशियाँ परस्पर मिल गईं ।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है । 169। (रुक् ४)

और उन के समक्ष इब्राहीम की खबर
पढ़ । 170।

जब उसने अपने पिता और उसकी जाति
से कहा, तुम किस वस्तु की उपासना
करते हो ? । 171।

उन्होंने कहा, हम मूर्तियों की उपासना
करते हैं और उनकी (उपासना के) लिए
बैठे रहते हैं । 172।

उसने कहा, जब तुम (उन्हें) पुकारते
हो तो क्या वे तुम्हारी पुकार सुनते
हैं ? । 173।

अथवा तुम्हें लाभ पहुँचाते हैं या कोई
हानि पहुँचाते हैं ? । 174।

उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने पूर्वजों
को देखा कि वे इसी प्रकार किया करते
थे । 175।

उसने कहा, क्या तुमने ध्यान दिया
कि तुम किसकी उपासना करते रहे
हो ? । 176।

(अर्थात्) तुम और तुम्हारे पूर्वज । 177।

अतः निःसन्देह ये (सब के सब) मेरे
शत्रु हैं सिवाय समस्त लोकों के रब्ब
के । 178।

जिसने मुझे पैदा किया । अतः वही है
जो मेरा मार्गदर्शन करता है । 179।

और वही है जो मुझे खिलाता है और
पिलाता है । 180।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

وَالَّذِي عَلَيْهِ حُبًّا إِبْرَاهِيمَ ⑦

إِذْ قَالَ لَا يَسِّهُ وَقَوْمَهُ مَا تَعْبُدُونَ ⑧

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَتَظَلَّ لَهَا عَرْفَيْنَ ⑨

قَالَ هُلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ⑩

أُو يَنْقَعُونَكُمْ أُو يَصْرُونَ ⑪

قَالُوا بِلْ وَجَدْنَا أَبَاءَنَا كَذَلِكَ يَعْمَلُونَ ⑫

قَالَ أَفَرَءَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ⑬

أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ⑯

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّلَّا رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑯

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِيَنِي ⑯

وَالَّذِي هُوَ يُطِعِمُنِي وَيَسْقِيَنِي ⑯

और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही है
जो मुझे आरोग्य प्रदान करता है । 81।

और जो मुझे मारेगा और फिर जीवित
करेगा । 82।

और जिससे मैं आशा रखता हूँ कि
कर्मफल प्राप्ति के दिन मेरे दोष क्षमा
कर देगा । 83।

हे मेरे रब ! मुझे तत्त्वज्ञान प्रदान
कर और मुझे नेक लोगों में सम्मिलित
कर । 84।

और मेरे लिए बाद के आने वालों में सच
कहने वाली जुबान निश्चित कर दे । 85।

और मुझे नेमतों वाले स्वर्ग के
उत्तराधिकारियों में से बना । 86।

और मेरे पिता को भी क्षमा कर दे ।
निःसन्देह वह पथभ्रष्टों में से था । 87।

और मुझे उस दिन अपमानित न
करना जिस दिन वे (सब) उठाए
जाएँगे । 88।

जिस दिन न कोई धन लाभ देगा और न
पुत्र । 89।

परन्तु वही (लाभ में रहेगा) जो अल्लाह
के समक्ष आज्ञाकारी हृदय लेकर
उपस्थित होगा । 90।

और स्वर्ग को मुत्तकियों के निकट कर
दिया जाएगा । 91।

और नरक को पथभ्रष्टों के सामने ला
खड़ा किया जाएगा । 92।

और उनसे कहा जाएगा, वे कहाँ हैं
जिनकी तुम उपासना किया करते
थे ? । 93।

وَإِذَا مِرْضَتْ فَهُوَ يَسْفِينْ ۝

وَالَّذِي يَمْيِنْتُ لَهُ يُحِينْ ۝

وَالَّذِي أَطْمَعَ أَنْ يَغْفِرَ لِي حَلِيقَتِي
يَوْمَ الدِّينِ ۝

رَبِّ هَبْ لِي حَكْمًا وَالْحَقْنِ
بِالصَّلِحِينِ ۝

وَاجْعَلْ لِي لِساناً صَدِيقًا فِي الْأَخْرِينِ ۝

وَاجْعَلْنِي مِنْ قَرَأَةِ جَنَّةِ التَّعْيِمِ ۝

وَاغْفِرْ لِأَنِّي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصَّالِحِينِ ۝

وَلَا تَحْزِنْ يَوْمَ يُبَعَّثُونَ ۝

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَوْنَ ۝

إِلَامَنْ أَتَى اللَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝

وَأَرْلَفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُمْقِنِينِ ۝

وَبَرِزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَوِينَ ۝

وَقَنَلَ لَهُمْ آيَمَا كَنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝

अल्लाह के सिवा, क्या वे तुम्हारी सहायता कर सकते हैं अथवा (अपना) प्रतिशोध ले सकते हैं ? | 94।

अतः वे और अवज्ञाकारी लोग भी उसमें औंधे गिरा दिए जाएँगे | 95।

और इब्लीस की समस्त सेना भी | 96।

जबकि वे उसमें परस्पर झगड़ रहे होंगे, वे कहेंगे, | 97।

अल्लाह की कसम ! हम तो निःसन्देह खुली-खुली पथभ्रष्टता में थे | 98।

जब हम तुम्हें समस्त लोकों के रब्ब के समकक्ष ठहराते थे | 99।

और हमें अपराधियों के सिवा किसी ने पथभ्रष्ट नहीं किया | 100।

अतः हमारे लिए (अब) कोई सिफारिश करने वाला नहीं है | 101।

और न कोई अंतरंग मित्र है | 102।

काश ! हमारे लिए एक बार लौट कर जाना (संभव) होता तो हम ईमान लाने वालों में से हो जाते | 103।

इसमें निःसन्देह एक बड़ा चिह्न है। और उनमें से अधिकांश मोमिन नहीं थे | 104।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है | 105। (रुक् ۵)

नूह की जाति ने भी पैशाम्बरों को झुठला दिया था | 106।

مِنْ دُوْنِ اللَّهِ هُلْ يَتَصْرُونَ^{١٩}
أُوْ يَتَصْرُونَ^{٢٠}

فَكُبَرُّ بُرُّوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوِنَ^{٢١}
وَجُحُودٌ لِّلَّيْسَ أَجْمَعُونَ^{٢٢}

قَاتُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ^{٢٣}

تَاللَّهُ إِنْ كُلَّ أَنْفُسٍ صَلِيلٌ مُّبِينٌ^{٢٤}

إِذْ سُوِّيَّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ^{٢٥}

وَمَا آَصَلْنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ^{٢٦}

فَمَا نَأَمِنُ شَافِعِينَ^{٢٧}

وَلَا صَدِيقٌ حَمِيمٌ^{٢٨}

فَلَوْاْنَ كَرَّةً فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ^{٢٩}

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً^{٣٠} وَمَا كَانَ أَكْرَمُهُ
مُؤْمِنِينَ^{٣١}

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ^{٣٢}

كَذَّبَتْ قَوْمٌ نُوحٌ الْمُرْسَلِينَ^{٣٣}

जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा था, क्या तुम तकवा से काम नहीं लोगे ? ||107||

निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैगम्बर हूँ ||108||

अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ||109||

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं मांगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है ||110||

अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ||111||

उन्होंने कहा, क्या हम तेरी बात मान लें ? जबकि सबसे निम्न वर्ग के लोगों ने तेरा अनुसरण किया है ||112||

उसने कहा, जो कार्य वे किया करते थे मुझे उस बारे में क्या मालूम ? ||113||

उनका हिसाब केवल मेरे रब्ब के ज़िम्मे है । काश ! तुम समझ रखते ||114||

और मैं तो ईमान लाने वालों को धुतकारने वाला नहीं हूँ ||115||

मैं तो केवल एक खुला-खुला सतर्ककारी हूँ ||116||

उन्होंने कहा, हे नूह ! यदि तू न रुका तो अवश्य तू संगसार किए जाने वालों में से हो जाएगा ||117||

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया है ||118||

अतः मेरे और इनके मध्य स्पष्ट निर्णय कर दे और मुझे मुक्ति प्रदान कर ।

إذْقَالَ لَهُمْ أَخْوَهُمْ نُوحُ الْأَنْتَقُونَ ﴿١٩﴾

إِنَّ رَبَّ رَسُولٍ أَمِينٌ ﴿٢٠﴾

فَأَنْتُمُوا اللَّهُ وَآتِيْعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا آسَئُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنَّ أَجْرَى
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٢﴾

فَأَنْتُمُوا اللَّهُ وَآتِيْعُونَ ﴿٢٣﴾

قَالُوا أَنَّوْمِنْ لَكَ وَاتَّبَعْكَ الْأَرْذُونَ ﴿٢٤﴾

قَالَ وَمَا عَلِمْتُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

إِنْ حَسَابَهُمْ إِلَّا عَلَى رَبِّيْلَوْتَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

وَمَا آنَى بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٨﴾

قَالُوا لَيْلَنْ لَمْ تَنْتَهِ يَوْمَ لَتَكُونَ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿٢٩﴾

قَالَ رَبِّيْلَ قَوْمِيْ كَذَّبُونَ ﴿٣٠﴾

فَأَفْتَخِ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُ فَثَحَّا وَنَجَّيْ

और उनको भी जो मोमिनों में से मेरे साथ हैं । 1119।

अतः हमने उसे और उनको जो उसके साथ थे एक भरी हुई नौका के द्वारा मुक्ति दी । 1120।

फिर हमने बाद में शेष रहने वालों को डुबो दिया । 1121।

निःसन्देह इसमें एक बड़ा चिह्न है और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे । 1122।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 1123। (रुकू ६)

आद (जाति) ने (भी) पैगम्बरों को झुठला दिया । 1124।

जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा, क्या तुम तकवा धारण नहीं करोगे ? । 1125।

निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैगम्बर हूँ । 1126।

अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो । 1127।

और मैं तुम से इस पर कोई प्रतिफल नहीं माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है । 1128।

क्या तुम प्रत्येक ऊँचे स्थान पर (केवल) निर्थक (अपनी बड़ाई का) स्मारक निर्माण करते हो ? । 1129।

और तुम (भाँति-भाँति के) कारखाने लगाते हो ताकि तुम सदा (अमर) रहो । 1130।

وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑩

فَأُنْجِيْتُهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْقُلْبِ
الْمُسْحُونُ ⑪

لَمْ أَغْرِقْنَا بَعْدَ الْبَقِيْنَ ⑫

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِيْةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ⑬

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑯

كَذَبْتُ عَادٍ الْمُرْسَلِينَ ⑯

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخْوَهُمْ هُودٌ أَلَا تَنْقُوْنَ ⑯

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِيْنٌ ⑯

فَانْقُوْلُوا اللَّهُ وَأَطِيْعُوْنِ ⑯

وَمَا آسَلْتُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنَّ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَلَمِينَ ⑯

أَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِبْعٍ أَيْهَةً تَعْبُوْنَ ⑯

وَتَنْهَذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ
تَخْلُدُوْنَ ⑯

और जब तुम पकड़ करते हो तो कठोर
बन कर पकड़ करते हो । 131।

अतः अल्लाह का तक्वा धारण करो
और मेरा आज्ञापालन करो । 132।

और उससे डरो जिसने ऐसी वस्तुओं से
तुम्हारी सहायता की जिन्हें तुम जानते
हो । 133।

उसने चौपाय और संतान (प्रदान कर)
तुम्हारी सहायता की । 134।

और बागों तथा झरनों के रूप में
भी । 135।

निःसन्देह मैं तुम पर एक बड़े दिन के
अज्ञाब से डरता हूँ । 136।

उन्होंने कहा, चाहे तू हमें उपदेश
दे अथवा न दे, हमारे लिए बराबर
है । 137।

(जो तुम हमें सिखाते हो) यह केवल
पुराने लोगों के आचरण है । 138।

और हमे अज्ञाब नहीं दिया
जाएगा । 139।

अतः उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने
उनको विनष्ट कर दिया । निःसन्देह
इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है । और
उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं
थे । 140।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व
वाला (और) बार-बार दया करने वाला
है । 141। (रुकू ١١)

समूद (जाति) ने भी पैगम्बरों को झुठला
दिया था । 142।

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطْشَتُمْ جَبَارِينَ ﴿٦﴾

فَأَتَقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٧﴾

وَأَتَقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿٩﴾

وَجَنِّتٍ وَعَيْوَنٍ ﴿١٠﴾

إِنَّ أَحَادِثَ عَلَيْكُمْ عَذَابٌ يَوْمٌ
عَظِيمٌ ﴿١١﴾

قَالُوا سَوْءَاءٌ عَلَيْنَا أَوْ عَظَّمَتْ أُمُّ لَمْرَكْنُ
مِنَ الْأَوْعَظِلِينَ ﴿١٢﴾

إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوْلَيْنَ ﴿١٣﴾

وَمَا نَحْنُ بِمَعْذِلَتِينَ ﴿١٤﴾

فَكَذَبُوهُ فَأَهْلَكُنَّهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَهْدِي
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

كَذَبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧﴾

जब उनको उनके भाई सालेह ने कहा, क्या तुम तकवा धारण नहीं करोगे ? |143|

मैं निःसन्देह तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैगम्बर हूँ |144|

अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो |145|

और मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल नहीं मांगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है |146|

क्या तुम इसी प्रकार यहाँ शांति में रहते हुए छोड़ दिए जाओगे ? |147|

बागों और झरनों में |148|

और खेतियों में और ऐसी खजूरों में जिनके गुच्छे (फल के बोझ से) टूट रहे हों |149|

और तुम कुशलता से काम करते हुए पर्वतों में घर तराशते हो |150|

अतः अल्लाह का तकवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो |151|

और सीमा का उल्लंघन करने वालों के आदेश का पालन न करो |152|

जो धरती में उपद्रव करते हैं और सुधार नहीं करते |153|

उन्होंने कहा, निःसन्देह तू उनमें से है जो जादू से सम्मोहित कर दिए जाते हैं |154|

तू हमारी भाँति एक मनुष्य के सिवा और कुछ नहीं । अतः यदि तू सच्चों में से है तो कोई चिह्न ले आ |155|

إذْقَالَ لَهُمْ أَخْوَهُمْ صِلْحَ الْأَتَّقُونَ ﴿١٤٣﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٤﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٥﴾

وَمَا آسَئُكُمْ عَنِيهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٦﴾

أَتَتَرْكُونَ فِي مَا لَهُمَا أَمْنِينَ ﴿١٤٧﴾

فِي جَنَّتِ وَغَيْوَنِ ﴿١٤٨﴾

وَرُزْرُوعٍ وَغُنْلٍ طَلْعَاهَ حَضِيمٌ ﴿١٤٩﴾

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بَيْوَتًا فِرِهِينَ ﴿١٥٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥١﴾

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥٢﴾

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا يَصْلِحُونَ ﴿١٥٣﴾

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمَسْحَرِينَ ﴿١٥٤﴾

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأَتِ بِإِيْقَانٍ
كُنْتَ مِنَ الصَّدِيقِينَ ﴿١٥٥﴾

उसने कहा, यह एक ऊटनी है जिसके पानी पीने का एक समय निश्चित किया जाता है। और तुम्हारे लिए भी निश्चित दिन को ही पानी लेने की बारी हुआ करेगी। 156।

अतः उसे हानि पहुंचाने के उद्देश्य से छुओ तक नहीं। अन्यथा तुम्हें एक बड़े दिन का अज्ञाब आ पकड़ेगा। 157।

फिर भी उन्होंने उसकी कूँबें काट दी। फिर वे अत्यंत लजित हो गये। 158।

अतः उन्हें अज्ञाब ने आ पकड़ा। निःसन्देह इसमें एक बहुत बड़ा चिह्न है। और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे। 159।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 160। (रुकू ٨)

लूट की जाति ने भी पैगम्बरों को झुठला दिया था। 161।

जब उनसे उनके भाई लूट ने कहा, क्या तुम तक़वा धारण नहीं करोगे? 162।

निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैगम्बर हूँ। 163।

अतः अल्लाह का तक़वा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो। 164।

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता। मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त लोकों के रब्ब पर है। 165।

क्या तुम संसार भर में पुरुषों के ही पास आते हो? 166।

قَالَ هُنْمَنَاقَةُ لَهَا شَرِبٌ وَلَكُمْ شَرِبٌ
يَوْمٌ مَعْلُومٌ ۝

وَلَا تَمْسُوهَا سُوءٌ فَيَا حَذْكُمْ عَذَابٌ
يَوْمٌ عَظِيمٌ ۝

فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نِدِمِينَ ۝

فَاخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

كَذَبَتْ قَوْمٌ لَوْطٌ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخْوَهُمْ لَوْطٌ أَلَا تَسْقُونَ
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

فَأَتَقْوُ اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝

وَمَا آتَئُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنَّ أَجْرِي
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَتَأْتُوْنَ الذِّكْرَ أَنَّ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

और उसे छोड़ देते हो जो तुम्हारे रब्ब ने
तुम्हारे लिए तुम्हारे साथी पैदा किए हैं ।
वास्तविकता यह है कि तुम सीमा का
उल्लंघन करने वाले लोग हो ॥167॥

उन्होंने कहा, हे लूट ! यदि तू न रुका
तो निःसन्देह तू (इस बस्ती से) निकाले
जाने वालों में से हो जाएगा ॥168॥

उसने कहा, निःसन्देह मैं तुम्हारे कर्म से
अत्यन्त विमुख हूँ ॥169॥

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे परिवार
को उससे मुक्ति प्रदान कर जो वे
करते हैं ॥170॥

अतः हमने उसे और उसके परिवार (में)
सब को मुक्ति प्रदान की ॥171॥

सिवाए एक बुढ़िया के जो पीछे रहने
वालों में थी ॥172॥

फिर हमने दूसरों का सर्वनाश कर
दिया ॥173॥

और उन पर हमने एक वर्षा बरसाई ।
अतः सतर्क किये गये लोगों पर (बरसाई
गई) वर्षा बहुत बुरी थी ॥174॥

निःसन्देह इसमें एक बड़ा चिह्न था । और
उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं
थे ॥175॥

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण
प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया
करने वाला है ॥176॥ (रुक् ٩/٣)

वन में निवास करने वालों ने भी पैग़म्बरों
को झुठला दिया था ॥177॥

जब शुएब ने उनसे कहा, क्या तुम
तक्वा धारण नहीं करोगे ? ॥178॥

وَتَذَرُّونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ

أَرْوَاحُكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَدُونَ ⑯

قَالُوا لَيْسَ لَمْ تَنْتَهِ يَلْوُظُ لَنْكُونَ

مِنَ الْمُخْرَجِينَ ⑯

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ

رَبِّ نَحْنُ وَآهْلُ مِمَّا يَعْمَلُونَ ⑯

فَنَجَّيْنَاهُ وَآهَلَهُ أَجْمَعِينَ ⑯

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ⑯

لَمْ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ⑯

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُسْذِرِينَ ⑯

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِيَّةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ⑯

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑯

كَذَّبَ أَصْحَابُ لَكِنْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ⑯

إِذْ قَالَ لَهُمْ شَعِيبٌ أَلَا تَنْقُونَ ⑯

निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक
विश्वसनीय पैगम्बर हूँ ॥179॥

अतः अल्लाह का तक्वा धारण करो
और मेरा आज्ञापालन करो ॥180॥

और मैं इस पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं
माँगता । मेरा प्रतिफल तो केवल समस्त
लोकों के रब्ब पर है ॥181॥

पूरा-पूरा तौलो और उनमें से न बनो जो
कम करके देते हैं ॥182॥

और सीधी ढंडी से तौला करो ॥183॥

और लोगों के सामान उनको कम करके
न दिया करो । और धरती में उपद्रवी
बनकर अशांति न फैलाते फिरो ॥184॥

और उससे डरो जिसने तुम्हें पैदा किया
और प्रथम सृष्टि को भी ॥185॥

उन्होंने कहा, निःसन्देह तू उनमें से है
जो जादू से सम्मोहित कर दिए जाते
हैं ॥186॥

और तू हमारी भाँति एक मानव के
अतिरिक्त और कुछ नहीं और हम तुझे
अवश्य झूठों में से समझते हैं ॥187॥

अतः यदि तू सच्चों में से है तो तू हम पर
आकाश से कुछ तुकड़े गिरा ॥188॥

उसने कहा, मेरा रब्ब उसे भली-भाँति
जानता है जो तुम करते हो ॥189॥

अतः उन्होंने उसे झुठला दिया और
उनको एक छाया कर देने वाले
विनाशकारी बादल युक्त दिन के अज्ञाब

إِنَّ لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿٦﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٧﴾

وَمَا آتَيْتُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾

أُوفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنْ
الْمُخْسِرِينَ ﴿٩﴾

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٠﴾

وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْنُوَا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١١﴾

وَأَقْعُدُوا الَّذِي خَلَقْتُمْ وَالْجِلَّةَ الْأَوَّلَيْنَ ﴿١٢﴾
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمَسْحَرِينَ ﴿١٣﴾

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ تَظْنُك
لَيْسَ الْكَذِيلُونَ ﴿١٤﴾

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كَسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥﴾

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخْذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ

ने आ पकड़ा । वास्तव में वह एक बहुत बड़े दिन का अज्ञाव था । 190।

निःसन्देह उसमें एक बड़ा चिह्न था । और उनमें से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे । 191।

और निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 192। (रुक् ۱۰)

और निःसन्देह यह समस्त लोकों के रब्ब की ओर से उतारी गई (वाणी) है । 193। जिसे रूह-उल-अमीन लेकर उत्तरा है, । 194।

तेरे हृदय पर । ताकि तू सतर्ककारियों में से हो जाए । 195।*

खुली-खुली अरबी भाषा में (है) । 196।

और निःसन्देह यह पूर्ववर्तियों के धर्म-ग्रन्थों में (उल्लेखित) था । 197।

क्या उनके लिए यह बात एक बड़ा चिह्न नहीं है कि बनी-इस्लाइल के विद्वान इसको जानते हैं ? । 198।

और यदि हम इसे अजमियों (अर्थात् अस्पष्ट भाषियों) में से किसी पर उतारते । 199।

और वह उन्हें इसे पढ़ कर सुनाता तो कदापि ये उस पर ईमान लाने वाले न होते । 200।

इसी प्रकार हमने अपराधियों के दिलों में इस (बात) को प्रविष्ट कर दिया है । 201।

الْظُّلْلَةُ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ^⑩

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَايَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ^{۱۱}

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ^{۱۲}

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَلَمِينَ^{۱۳}

نَزَّلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ^{۱۴}

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ^{۱۵}

بِلِسَانٍ عَرَبِيًّا مُبِينًا^{۱۶}

وَإِنَّهُ لَفِي رُبِّ الْأَوَّلِينَ^{۱۷}

أَوْلَمْ يَكُنْ لِهِمْ أَيَّةً أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاؤُ
بَنِي إِسْرَائِيلَ^{۱۸}

وَلَوْ تَرَنْنَهُ عَلَى بَعْضِ الْأَغْمَجِينَ^{۱۹}

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ^{۲۰}

كَذِلِكَ سَلَكُنَّهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ^{۲۱}

* अयत 193 से 195 : पवित्र कुरआन हज़रत जिब्रील अलै, के द्वारा अवतरित किया गया । जिनका दूसरा नाम रूह-उल-अमीन भी है और इसे हज़रत मुहम्मद सल्ल, के दिल पर जारी किया गया ।

(कि) वे उस पर ईमान नहीं लाएंगे यहाँ तक कि पीड़ाजनक अज्ञाब को देख ले। 1202।

अतः वह उनके पास सहसा आ जाएगा और वे कोई समझ न रखते होंगे। 1203।

फिर वे कहेंगे कि क्या हमें ढील दी जाएगी? 1204।

अतः क्या वे हमारे अज्ञाब को शीघ्रतापूर्वक माँगते हैं? 1205।

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि हम उन्हें कुछ वर्ष के लिए लाभ पहुँचा दें। 1206।

फिर वह उनके पास आ जाए जिससे वे डराए जाते थे। 1207।

तो जो अस्थायी लाभ उन्हें पहुँचाया जाता था, वह उनके कुछ काम न आ सकेगा। 1208।

और हमने जो कोई भी बस्ती ध्वस्त की उसके लिए सतर्ककारी अवश्य (भेजे जा चुके) थे। 1209।

(यह) एक अत्यन्त शिक्षाप्रद अनुस्मृति (है)। और हम कदापि अत्याचार करने वाले नहीं थे। 1210।

और शैतान यह (वहाँ) लिए हुए नहीं उतरे। 1211।

और न उनका यह साहस है। और न ही वे (इसका) सामर्थ्य रखते हैं। 1212।

निःसन्देह वे (ईश्वरीय वाणी) सुनने से वंचित कर दिए गए हैं। 1213।

अतः तू अल्लाह के साथ किसी (अन्य) उपास्य को न पुकार अन्यथा तू अज्ञाब दिए जाने वालों में से हो जाएगा। 1214।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿١٩﴾

فَيَأْتِيهِمْ بَعْثَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠﴾

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ﴿٢١﴾

أَفِعْدَانًا يَسْعِجُونَ ﴿٢٢﴾

أَفَرَءَيْتَ إِنْ مَتَّهُمْ سِينِينَ ﴿٢٣﴾

لَمْ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٤﴾

مَا أَخْفَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَمْتَعُونَ ﴿٢٥﴾

وَمَا آهَلَكُنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا
لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٦﴾

ذُكْرٌ شَوَّمَكَانًا طَلِيمِينَ ﴿٢٧﴾

وَمَا تَرَكْتُ بِهِ الشَّيْطِينَ ﴿٢٨﴾

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢٩﴾

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٣٠﴾

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ مَا لَهَا أَخْرَ فَتَكُونُ

مِنَ الْمَعْذَبِينَ ﴿٣١﴾

और अपने परिवार वालों अर्थात् निकट सम्बन्धियों को सतर्क कर । 215।

और अपना पंख मोमिनों में से उनके लिए जो तेरा अनुसरण करते हैं, ज्ञाका दे । 216।

अतः यदि वे तेरी अवज्ञा करें तो कह दे कि जो तुम करते हो निःसन्देह मैं उससे मुक्त हूँ । 217।

और पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) पर भरोसा कर । 218।

जो तुझे देख रहा होता है, जब तू खड़ा होता है । 219।

और सज्दः करने वालों में तेरी व्याकुलता को भी । 220।

निःसन्देह वही है जो बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 221।

क्या मैं तुम्हें उसकी खबर दूँ जिस पर शैतान अधिकता के साथ उतरते हैं ? । 222।

वे हर पक्के झूठे (और) महापापी पर अधिकता के साथ उतरते हैं । 223।

वे (उनकी बातों पर) कान धरते हैं और उनमें से अधिकतर झूठे हैं । 224।

और रहे कवि, तो केवल भटके हुए (लोग) ही उनका अनुसरण करते हैं । 225।

क्या तूने नहीं देखा कि वे प्रत्येक घाटी में (उद्देश्यहीन) फिरते रहते हैं ? । 226।

और निःसन्देह वे जो कहते हैं, वह करते नहीं । 227।

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ⑩

وَأَخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑪

فَإِنْ عَصَوْكَ قَلْعُ إِنْ بَرِئَ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ⑫

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ⑬

الَّذِي يَرِيكَ حِينَ تَقُومُ ⑭

وَنَقْلِبَ فِي السَّجِدَيْنَ ⑮

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑯

هَلْ أَنْتُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنْزَلُ الشَّيْطَيْنَ ⑰

تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَاقٍ أَشِيمُ ⑱

يَلْفُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَذَّابُونَ ⑲

وَالشَّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْعَادُونَ ⑳

أَلْمُتَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِمُّونَ ㉑

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَعْلَمُونَ ㉒

सिवाय उनके, (उनमें से) जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किये और अधिकता के साथ अल्लाह को याद किये और अत्याचार सहने के पश्चात् उसका बदला लिया । और वे जिन्होंने अत्याचार किया शीघ्र ही जान लेंगे कि वे किस लौटने के स्थान पर लौट जाएँगे । 228। (रुक् 11)

إِلَّا الَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصِّلَاةَ
وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَأَتْصَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا ظَلَمُوا وَسَيَعْلَمُ الظَّالِمُونَ
أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَتَقْبِلُونَ

27- सूरः अन-नम्ल

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 94 आयतें हैं।

इस सूरः का आरंभ ता, सीन खण्डाक्षरों से होता है। अल्लाह तआला की भाँति हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी पवित्र हैं और पवित्र व्यक्ति पर शैतान नहीं उतरा करते। इस कारण अवश्यमेव यह ऐसे पवित्र अल्लाह की वाणी है जो परम विवेकशील है। और जिसने अपने पवित्र भक्त पर पवित्र और तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण वहइ अवतरित की है।

इसके बाद हजरत मूसा अलै. के वर्णन की पुनरावृत्ति की गयी है और बताया गया है कि अल्लाह तआला अपने पवित्र भक्तों को वहइ के द्वारा मंगलमय बना देता है। अतः आयत संख्या 9 में उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के वे नेक भक्त जो ईश्वरीय ज्योति की खोज में रहते हैं उनको अल्लाह तआला अपनी ज्योति की झलक दिखा कर वरक्तों की ओर बुलाता है।

इसके पश्चात हजरत दाऊद अलै. और हजरत सुलैमान अलै. का वर्णन किया गया है, जो बहुत सी ऐसी बातों पर आधारित हैं, जो कुरआनी मुहावरों पर से पर्दा उठाते हैं। तथा मनुष्य को अन्धकारों से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। परन्तु इस विवरण में बहुत सी ऐसी अनेकार्थ बोधक आयतें हैं जिनसे कुटिल हृदय वाले व्यक्ति और भी अधिक भटक जाते हैं और वे वास्तविक विषय वस्तु की तह तक नहीं पहुँच सकते। इस में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात पक्षियों की भाषा है। पवित्र कुरआन के अनुसार पक्षियों की भाषा से अभिप्राय उन लोगों की भाषा है जो पक्षियों की भाँति आकाश में उड़ते हैं, अर्थात आकाशीय भाषा में बात करते हैं। यह धारणा ठीक नहीं है कि हजरत सुलैमान अलै. को वह भाषा सिखाई गई थी जिसे पक्षी आपस में बोलते हैं। इस सूरः की बहुत सी आयतें इस भ्रांत-धारणा की निराकरण करती हैं। उदाहरणस्वरूप यह कहा गया कि नम्ल (चींटियों) का समुदाय परस्पर बातें कर रहा था और हजरत सुलैमान अलै. ने उसको समझ लिया। यदि नम्ल से अभिप्राय नम्ल जाति के स्थान पर कुछ व्याख्याकारों के अनुसार चींटियाँ ही ली जाएँ, तो चींटियाँ तो पक्षी नहीं होतीं। फिर हजरत सुलैमान अलै. जिनको पक्षियों की भाषा की जानकारी दी गई थी, चींटियों की भाषा कैसे समझ गए?

फिर यह कहा जाता है कि हजरत सुलैमान अलै. की सेना में एक पक्षियों की सेना भी सम्मिलित थी, जिस का मुखिया महारानी सबा की खोज लगाते हुए उसके दरबार तक जा पहुँचा था। जब उसने वापस आकर अपनी अनुपस्थिति का कारण बताया तब

वह सारी बातें बताईं जो महारानी के दरबार में कही जा रही थीं, मानों वह उनको समझ रहा था। हालाँकि महारानी और उसके दरबारियों की भाषा तो पक्षियों की भाषा नहीं थी। फिर जब उसने हज़रत सुलैमान अलै. का पत्र महारानी के समक्ष रखा, तब भी महारानी और उसके दरबारियों के मध्य जो बातें हुईं, उस सारी बातचीत को जो मनुष्य की भाषा में हो रही थी, वह पक्षी समझ गया। सारांश यह है कि इस सूरः में पक्षियों की भाषा सम्बन्धित काल्पनिक कथाओं का खण्डन कर के इसका यही अर्थ किया गया है कि वस्तुतः अल्लाह के भक्त आकाशीय भाषा में वार्तालाप किया करते हैं।

इसके पश्चात वह महारानी सबा जो राजनीतिक रूप से हज़रत सुलैमान अलै. की श्रेष्ठता स्वीकार कर चुकी थी परन्तु अभी अपने धर्म से अलग हो कर हज़रत सुलैमान अलै. के एकेश्वरवादी धर्म में सम्मिलित नहीं हुई थी, उसको समझाने के लिए हज़रत सुलैमान अलै. के शिल्पकारों ने आप के महल में एक ऐसा फर्श बनाया जो शीशे की भाँति चमक रहा था। और ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह फर्श नहीं बल्कि पानी है। उस पर चलते हुए महारानी सबा ने पानी से बचने के लिए अपने वस्त्र को अपनी पिंडलियों से ऊपर उठा लिया। तब हज़रत सुलैमान अलै. ने उसको समझाया कि सूर्य का भी ऐसा ही उदाहरण है कि वह स्वयं प्रकाश का स्रोत प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में अल्लाह तआला के प्रकाश से ही वह उपकृत हो रहा होता है। और सूर्य को प्रकाश का स्रोत समझने वाले उसी प्रकार धोखा खा जाते हैं जैसे महारानी सबा की दृष्टि धोखा खा गई। यह बात समझने के पश्चात वह महारानी इस वास्तविकता को समझ गई कि हर ओर अल्लाह ही की दीप्ति है और शेष सभी दीप्तियाँ नज़र के धोखे हैं।

इसके पश्चात क्रमशः: ऐसे नवियों का वर्णन है जिन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार किया तो मुश्तिक जातियों ने जैसा कि महारानी सबा की जाति मुश्तिक थी, उनको बार-बार नकार दिया। और यद्यपि महारानी सबा की जाति को हिदायत पाने के कारण अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया परन्तु वे लोग बार-बार अनेकेश्वरवाद का मार्ग अपनाने के कारण बाद में तबाह कर दिए गए।

इसके बाद फिर यह कहा गया है कि अल्लाह तआला के अद्वितीय होने का विषय नवियों पर वर्षा की भाँति अवतरित होता है जो जीवन का स्रोत है। भौतिक जीवन भी इस आकाशीय पानी से प्राप्त होता है और आध्यात्मिक जीवन भी नवियों को इसी आकाशीय वर्षा के बरदान से प्राप्त होता है।

इसके बाद यह प्रश्न उठाया गया है कि धरती पर स्वच्छ जल बरसाने की जो प्रक्रिया है क्या उसे अल्लाह के सिवा अन्य कोई काल्पनिक उपास्य बना सकता था? और इस विषय को इस बात पर समाप्त किया गया कि अल्लाह तआला ने समुद्रों के मध्य

एक रोक बनाई हुई है। यह वह विषय है जो अल्लाह तआला की ओर से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आकाशीय जल की भाँति उत्तरा। अन्यथा आपके युग में कदापि ऐसी वैज्ञानिक अथवा भौगोलिक जानकारी मौजूद न थी। पवित्र कुरआन ने दो समुद्रों के मध्य रोक का जो विषय वर्णन किया, वास्तव में इसमें एक भविष्यवाणी निहित थी जिसके प्रकट होने पर ज्ञान रखने वालों का ईमान-वर्धन होना था। अर्थात् जिन समुद्रों के मध्य एक अलंधर रोक बना दी गई थी, अल्लाह तआला उन समुद्रों को मिला देगा। इस विषय की स्पष्ट भविष्यवाणी अन्य दो आयतों में उल्लेखित है।

अब वही दुआ का विषय जो मिली कुछ सूरतों में क्रमशः जारी है, पुनः उसे छेड़ते हुए कहा गया है कि जब एक आनुर व्यक्ति दुआ करता है तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार कर लेता है। अद्भुत बात यह है कि इस विषय का भी सम्बन्ध समुद्रों से है। जैसा कि दूसरी आयतों में वर्णन किया गया है कि जब समुद्री तूफान में घिर कर कुछ लोग निराश हो जाते हैं और अत्यंत व्याकुल और विचलित होकर अल्लाह तआला को पुकारते हैं तो वह उनको भयंकर तूफानों से बचा कर स्थलभाग तक पहुँचा देता है। परन्तु इस प्रकार मुक्ति पाकर भी जब उन में से कुछ फिर से अनेकेश्वरवाद की ओर लौट आते हैं तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि स्थलभाग में ही उनका विनाश कर दे। इस विषय को विस्तारपूर्वक कुछ दूसरी आयतों में वर्णन किया गया है। सूखी धरती में धसाए जाने वालों का विवरण भी पवित्र कुरआन में मिलता है जैसा कि आजकल हम भूकम्प के रूप में देखते हैं कि कई बार मनुष्यों की बड़ी-बड़ी आवादी धरती फटने से उसमें समा जाती हैं।

इस विषय को जारी रखते हुए बताया गया है कि मनुष्य को चाहिए कि विचार करे कि समुद्र और स्थल भाग के अन्धकारों में कौन है जो उसे प्रत्येक प्रकार के खतरों से मुक्ति देता है। क्या अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है? इसी प्रकार कहा गया कि कौन है जो पहली बार सृष्टि करता है फिर इस सृष्टि की पुनरावृत्ति करता चला जाता है। क्या अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है? इसमें यह शिक्षा है कि जब कि वे देखते हैं, पहली बार भी अल्लाह तआला ही उत्पन्न करता है (अन्यथा उत्पत्ति के आरम्भ का कोई समाधान नहीं) और फिर प्रतिदिन इसी क्रिया की पुनरावृत्ति करता चला जाता है कि हर समय, समस्त संसार में पानी के द्वारा मिट्टी से भाँति-भाँति के जीवन उत्पन्न करता है। तो वह मनुष्य को उसके मृत्योपरान्त जिस प्रकार चाहे फिर दोबारा जीवन प्रदान करने से किस प्रकार असमर्थ हो सकता है? परन्तु क्योंकि इन लोगों को परलोक का कोई ज्ञान नहीं। इस कारण अपने पुनर्जीवन के सम्बन्ध में सदैव शंका में पड़े रहते हैं। अतः इस पृष्ठभूमि में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि

काफिरों और मुश्किलों के उदाहरण तो मुर्दों की भाँति है। और मुर्दों तक तेरी पुकार नहीं पहुँच सकती। अतः जब तू उनको सम्मार्ग की ओर बुलाता है तो उन बुद्धिहीनों को तेरी पुकार सुनाई ही नहीं देती। इसी प्रकार अंधों को भी तेरा प्रकाश कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता क्योंकि प्रकाश का अनुसरण करने के लिए आँखों में भी दृष्टिशक्ति होनी चाहिए।

फिर आयत संख्या 83 में धरती पर पशुओं की भाँति जीवन व्यतीत करने वालों को बहुत गम्भीर रूप से सतर्क किया गया है कि धरती पर चलने फिरने वाला ही एक जानवर उनको दण्ड देने के लिए नियुक्त किया जाएगा। अरबी शब्द तुक़ालिलमुहुम के दोनों अर्थ यहाँ लागू होते हैं। एक अर्थ तो यह है कि वह उनसे बातचीत करेगा। अर्थात् अपनी स्थिति के अनुसार उनसे बात करेगा। और दूसरा अर्थ यह है कि वह उनको काटेगा जिसके कारण वे अत्यंत भयानक रोग का शिकार हो जाएँगे। इस पवित्र आयत में दाढ़बुतुल अर्ज़ (धरती का जीव) अर्थात् चूहों का वर्णन है जो जीव भी हैं और धरती में प्लेग फैलाने के कारण बनते हैं। उनकी पीठ पर ऐसे कीड़े सवार होते हैं जिनके काटने से प्लेग फैलता है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग में लोग पर्वतों को स्थिर समझते थे परन्तु इस सूरः की आयत संख्या 89 वर्णन करती है कि वे बादलों की भाँति लगातार उड़ रहे हैं हालाँकि दृढ़तापूर्वक धरती में गड़े हुए भी हैं। इसके अतिरिक्त इसका अन्य कोई अर्थ निकल नहीं सकता कि धरती सहित वे बादलों की भाँति धूम रहे हैं। इस आयत के अन्तिम टुकड़े ने निश्चित रूप से सिद्ध कर दिया है कि अल्लाह तआला की शिल्पकारी को जिसने दृढ़ता पूर्वक इन पर्वतों को धरती में गाड़ा हुआ है कैसे आलोचना का पात्र बनाया जा सकता है? यहाँ इस भ्रांति का निराकरण कर दिया गया कि यह घटना क्यामत के दिन घटेगी। क्यामत के दिन तो कोई आँख इन पर्वतों को उड़ाता हुआ नहीं देखेगी। और यदि पर्वत उड़े भी तो यह अत क न कुल्लु शैइन (उस अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया) दावा के विपरीत होगा। इस कारण इसके सिवा कोई उपाय नहीं रहता कि मनुष्य यह स्वीकार करे कि पर्वत धरती में ऐसे गतिशील हैं जैसे आकाश पर बादल गतिशील हैं। यह बातें इस लिए वर्णन की गई हैं कि ज्ञान रखने वालों को पूर्ण विश्वास हो जाए कि अल्लाह तआला, उनका रब्ब एक महान शिल्पकार है।

इस सूरः की अन्तिम आयत में यह वादा कर दिया गया है कि जिन चिह्नों का वर्णन किया गया है वे अवश्य मानवजाति को दिखा दिए जाएँगे। जिसमें धरती के चिह्न और आकाशीय चिह्न भी हैं। तथा भविष्य के विद्वान इस बात की गवाही देंगे कि जैसा पवित्र कुरआन ने कहा था विल्कुल वैसा ही घटित हुआ।

سُورَةُ النَّمْلٍ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعَ وَتِسْعَوْنَ آيَةً وَ سَبْعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

तथ्यिकुन, समीऊन : पवित्र, बहुत सुनने वाला, यह कुरआन की और एक सुस्पष्ट पुस्तक की आयतें हैं । 12

मोमिनों के लिए हिदायत और शुभ-सामाचार हैं । 13

वे जो नमाज़ को क्रायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वही हैं जो परलोक पर विश्वास रखते हैं । 14

निःसन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते हमने उनके कर्म उनके लिए सुन्दर कर दिखाए हैं । अतः वे भटकते रहते हैं । 15

यही वे लोग हैं जिनके लिए बहुत बुरा अज्ञाब (निश्चित) है । और वे ही परलोक में सर्वाधिक घाटा उठाने वाले होंगे । 16

और निःसन्देह परम विवेकशील (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) की ओर से तुझे कुरआन प्रदान किया जाता है । 17

(याद कर) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि निःसन्देह मैं एक आग देख रहा हूँ । अतः मैं या तो उस (के निकट) से तुम्हरे लिए कोई समाचार लाऊँगा अथवा तुम्हरे पास कोई सुलगता हुआ अंगारा ले आऊँगा ताकि तुम आग तापो । 18

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

طَسْ ۝ تَلَكَ آيَتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٌ
مُبِينٌ ②

هُدَىٰ وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ③

الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوَةَ
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقَنُونَ ④

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَاهُمْ
أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَلُونَ ⑤

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ⑥

وَ إِنَّكَ لَتَلَقَّى الْقُرْآنَ مِنْ لَدْنِ
حَكِيمٍ عَلَيْهِ ⑦

إِذْقَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلَهُ إِذْ أَشَتَ نَارًا
سَاتِيْكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ اتِيْكُمْ بِشَهَادَةٍ
قَبَسٌ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑧

अतः जब वह उसके पास आया तो आवाज़ दी गई कि जो इस अग्नि में है और जो उसके इदं गिर्द है, उसे भी बरकत दिया गया है। समस्त लोगों का रब अल्लाह ही पवित्र है। १।

हे मूसा ! निःसन्देह (यह बातचीत करने वाला) मैं ही अल्लाह हूँ, (जो) पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील (है) । १०।*

और अपनी लाठी फेंक । अतः जब उसने उसे देखा कि ऐसे हिल रही है कि मानो वह एक साँप है । तो वह पीठ फेरते हुए मुड़ गया और पलट कर भी न देखा । हे मूसा ! डर नहीं । निःसन्देह मैं वह हूँ कि मेरे निकट पैगम्बर डरा नहीं करते । ११।

परन्तु वह जिसने कोई अत्याचार किया हो फिर वह बुराई के बाद (उसे) नेकी में परिवर्तित कर दे तो निःसन्देह मैं बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला हूँ । १२।

और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल वह बिना किसी दोष के चमकता हुआ निकले गा । (यह दोनों) फिर औन और उसकी जाति की ओर (भेजे जाने वाले) नौ चिह्नों में से हैं । निःसन्देह वे बहुत ही दुराचारी लोग हैं । १३।

* अयत संख्या 8 से 10 : इन तीन आयतों में हज़रत मूसा अलै. पर वहूँ उत्तरने की घटना का वर्णन किया गया है । जब आप अपने परिवार के साथ मद्यन से हिजरत करके मिस्र की ओर बापस जा रहे थे, उस समय शीत ऋतु थी और आपको अग्नि की आवश्यकता थी । तूँ के पर्वत पर आपने आग की भाँति एक प्रज्जलित अग्निशिला देखी । परन्तु जब वहाँ पहुँचे तो कोई अग्नि नहीं थी बल्कि वृक्ष का एक भाग असाधारण रूप से चमकता दिखाई दे रहा था । उस समय अल्लाह तआला ने आप अलै. पर यह वहूँ की, कि जिस को तुम अग्नि के रूप में चमकता देख रहे हो वह अग्नि नहीं बल्कि मेरा प्रकाश चमक रहा है । यह एक दृष्टान्त है ।

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ يُورِكَ مَنْ
فِي التَّارِيْخِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۝ وَسُبْحَانَ اللَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑤

يَمْوَسِي إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَأَلْقِي عَصَالَكَ ۝ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُ
كَانَهَا جَانٌ قَلِيلٌ مُذِيرًا وَلَمْ يُعْقِبْ
يَمْوَسِي لَا تَخْفِ ۝ إِنْ لَا يَحَافُ
لَدَى الْمُرْسَلُونَ ۝

إِلَامَ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ
فَلَيْلٌ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑥

وَأَذْخُلْ يَدَكَ فِي جَنِيلِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۝ فِي تَسْعِ الْيَتِ
إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمَهُ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَسِيقِينَ ⑦

अतः जब उनके पास हमारे ज्ञानदृष्टि प्रदान करने वाले चिह्न आए तो उन्होंने कहा, यह तो खुला-खुला जादू है । 14।

और उन्होंने अत्याचार और उद्धण्डता करते हुए उनका इनकार कर दिया, हालाँकि उनके दिल उन पर ईमान ला चुके थे । अतः देख ! उपद्रव करने वालों का कैसा परिणाम होता है । 15।

(रुकू ١٦)

और हमने निःसन्देह दाऊद और सुलैमान को बड़ा ज्ञान प्रदान किया था । और दोनों ने कहा, समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन भक्तों पर प्रधानता दी है । 16।

और सुलैमान दाऊद का उत्तराधिकारी हुआ और उसने कहा, हे लोगो ! हमें पक्षियों की भाषा सिखाई गई है और हर चीज़ में से हमें कुछ प्रदान किया गया है। निःसन्देह यह खुली-खुली कृपा ही है । 17।

और सुलैमान के लिए जिन और मनुष्य एवं पक्षियों में से उसकी सेना इकट्ठी की गई और उन्हें अलग-अलग पंक्तियों में क्रमबद्ध किया गया । 18।

यहाँ तक कि जब वे नम्ल की घाटी पर पहुँचे तो नम्ल (जाति) की एक स्त्री ने कहा, हे नम्ल जाति ! अपने अपने घरों में छुस जाओ । सुलैमान और उसकी सेना कहीं बेखबरी में तुम्हें रौंद न डालें । 19।

فَلَمَّا جَاءَهُنَّمْ أَيْتَنَا مُبَصِّرَةً قَالُوا
هَذَا سِخْرُ مِينَ ⑤

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنُتْهَا أَنْفُسُهُمْ
ظُلْمًا وَعَلَوْا ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ⑤

وَلَقَدْ أَتَيْنَا دَاؤَدَ وَسَلَيْمَانَ عِلْمًا
وَقَالَا لِلَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَصَلَنَا عَلَى
كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ⑤

وَوَرِثَ سَلَيْمَانَ دَاؤَدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
عَلِمْنَا مِنْ طَقَ الظَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ ۝ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ⑤

وَحَسِرَ لِسَلَيْمَانَ جُودَهُ مِنَ الْجِنِّ
وَالْأَوْسِ وَالظَّيْرِ فَهُمْ يَوْزَعُونَ ⑤

حَتَّىٰ إِذَا آتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ ۝ قَالُوا
نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسِكَنَكُمْ
لَا يَحْطِمُنَّكُمْ سَلَيْمَانٌ وَجُودَهُ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ⑤

वह (अर्थात् सुलैमान) उसकी इस बात पर मुस्कराया और कहा, हे मेरे रब ! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी नेमत का आभार व्यक्त करूँ जो तूने मुझ पर की और मेरे माता पिता पर की । और ऐसे पुण्य कर्म करूँ जो तुझे पसन्द हों । और तू मुझे अपनी कृपा से अपने सदाचारी भक्तों में सम्मिलित कर । 120।

और उसने एक उच्च विचार वाले मनुष्य को अनुपस्थित पाया तो उसने कहा कि मुझे क्या हुआ है कि मैं हुद-हुद को नहीं देख रहा । क्या वह अनुपस्थितों में से है ? 121।*

मैं अवश्य उसे अत्यन्त कठोर दण्ड दूँगा अथवा अवश्य उसकी हत्या कर दूँगा या वह (अपने बचाव में) मेरे पास कोई खुली-खुली दलील लेकर आए । 122।

अतः वह (अर्थात् सुलैमान) अधिक देर नहीं ठहरा था कि (हुद-हुद आ गया और) उसने कहा, मैंने वह बात जान ली है जो आपको मालूम नहीं और मैं सबा (के देश) से आपके पास एक पक्की खबर लाया हूँ । 123।

निःसन्देह मैंने एक स्त्री को उनपर शासन करते पाया और उसे हर चीज़ में से कुछ प्रदान किया गया है और उसका एक बड़ा सिंहासन है । 124।

* तैर उच्च-विचार वाले मनुष्य के अर्थ में । (शब्दकोश 'गरीबुल कुरआन')

हुद-हुद इब्रानी भाषा में हुदद हज़रत सुलैमान अलै. के एक सेनापति का नाम है ।
(जीविश इत्साइक्लोपीडिया)

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِنْ قُولِهَا وَقَالَ رَبٌّ
أُوزِغِنِيْ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالدَّى وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضِهُ وَأَذْخِلُنِيْ بِرَحْمَتِكَ
فِي عِبَادِكَ الصَّلِحِينَ ①

وَتَقْفَدَ الظَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيْ لَا أَرَى
الْهَدْهَدَ # أُمُّ كَانَ مِنَ الْغَالِيْنَ ①

لَا عَذَابَ لِمَنْ يَعْمَلُ إِلَّا مَا دَرَأَ
أَوْ يَأْتِيْنِيْ سَلْطَنِ مُبِينِ ①

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحْكُمُ
بِمَا لَمْ تُحْكُمْ بِهِ وَجِئْتَ مِنْ سَيِّ
بِنَيَا يَقِينِ ①

إِنْ وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيتُ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ①

मैंने उसे और उसकी जाति को अल्लाह के बदले सूर्य को सजदः करते हुए पाया । और शैतान ने उनके कर्म उनको सुन्दर करके दिखाए हैं । अतः उसने सच्चे मार्ग से उनको रोक दिया है । इसलिए वे हिदायत नहीं पाते । 125।

(शैतान ने उनको उकसाया) कि वे अल्लाह को सजदः न करें जो आकाशों और धरती में से गुप्त बातों को प्रकट करता है । और उसे जानता है जिसे तुम छिपाते हो और जिसे तुम प्रकट करते हो । 126।

अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं । महान अर्श का वही स्वामी है । 127।

उसने कहा, हम देखेंगे कि क्या तूने सच्च कहा है अथवा तू झूठों में से है । 128।

यह मेरा पत्र ले जा और उसे उन लोगों के सामने रख दे । फिर उनसे एक तरफ हट जा । फिर देख कि वे क्या उत्तर देते हैं । 129।

(यह पत्र देख कर) उस (महारानी) ने कहा, हे सरदारो ! मेरी ओर एक सम्मानजनक पत्र भेजा गया है । 130।

निःसन्देह वह सुलैमान की ओर से है और वह यह है : अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, विन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 131।

وَجَدُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ
دُوْنِ اللَّهِ وَرَزَّيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَنُ أَعْمَالَهُمْ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ⑥

أَلَا يَسْجُدُوا إِلَهُ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبَءَ فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تَحْكُمُونَ
وَمَا تُعْلِنُونَ ⑦

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ⑧

قَالَ سَنَنْظَرُ أَصَدَقَتْ أَمْ كَنَتْ
مِنَ الْكَذِيلِينَ ⑨

إِذْهَبْ بِكِثِيرٍ هَذَا فَآلِقَةُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ
تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظَرْ مَاذَا يَرِجِعُونَ ⑩

قَاتَّ يَا يَاهَا الْمَلُوْا إِنَّ الْقِيَادَةَ
كِتَابٌ كَرِيمٌ ⑪

إِنَّهُ مِنْ سَلَيْمَنَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ
الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ⑫

(संदेश यह है) कि तुम मेरे विरुद्ध
उद्देश्य न करो और मेरे पास
आज्ञाकारी हो कर चले आओ । 321

(रुकू ۲)

उसने कहा, हे सरदारो ! मुझे मेरे मामले
में परामर्श दो । मैं कोई महत्वपूर्ण निर्णय
नहीं करती जब तक तुम मेरे पास
उपस्थित न हो । 331

उन्होंने कहा, हम बड़े शक्तिशाली लोग
हैं और बड़े योद्धा हैं । वास्तव में निर्णय
करना तेरा ही कार्य है । अतः तू स्वयं ही
विचार कर ले कि तुझे (हम को) क्या
आदेश देना चाहिए । 341

उसने कहा, निःसन्देह जब सम्राट किसी
वस्ती में प्रवेश करते हैं तो उसमें
उत्पात मचा देते हैं । और उसके
निवासियों में से सम्माननीय लोगों को
अपमानित कर देते हैं और वे इसी
प्रकार किया करते हैं । 351

और अवश्य मैं उनकी ओर एक उपहार
भेजने लगी हूँ । फिर मैं देखूँगी कि दूत
क्या उत्तर लाते हैं । 361

अतः जब वह (शिष्टमण्डल) सुलैमान
के पास आया तो उसने कहा, क्या तुम
मुझे धन के द्वारा सहायता देना चाहते
हो जबकि अल्लाह ने जो मुझे प्रदान
किया है उससे उत्तम है जो तुम्हें प्रदान
किया है । परन्तु तुम अपने उपहार पर
ही इतरा रहे हो । 371

उनकी ओर लौट जा । अतः हम अवश्य
उनके पास ऐसी सेनाओं के साथ आएँगे

أَلَا تَعْلُوْ أَعْلَىٰ وَأَتُّوْنِي مُسْلِمِينَ ﴿٦﴾

قَالَتْ يَا إِيَّاهَا الْمَلُوْأَا أَفْتُوْنِي فِي أَمْرِي
مَا كُنْتَ قَاطِعَةً أَمْ رَاحِثٌ تَشَهَّدُونِ ﴿٧﴾

قَالُوا نَحْنُ أَوْلَوْا قُوَّةٍ وَأَوْلَوْا بَأْسٍ
شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْنَا فَاقْتُلُونَا
مَاذَا تَأْمِرِنَا ﴿٨﴾

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً
أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَةً أَهْلَهَا
أَذْلَلَةً وَكَذِيلَكَ يَفْعَلُونَ ﴿٩﴾

وَإِنَّ مُرْسِلَهُ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنَظَرُهُ
بِعَرَيْجَعِ الْمُرْسِلُونَ ﴿١٠﴾

فَلَمَّا جَاءَهُ سَلَيْمَانَ قَالَ أَتَمْدُونَ بِمَاٰ
فَمَا أَنْتِنَ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا أَشْكُمْ بَلْ أَنْتُمْ
بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿١١﴾

إِرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيهِمْ بِجُنُودِ لَّا قَبْلَ

जिनका मुकाबला करना उनके लिए संभव नहीं। और हम उन्हें अवश्य इस (बस्ती) से अपमानित करते हुए निकाल देंगे और वे लाचार होंगे। 138।

उसने कहा, हे सरदारो ! कौन है तुम में से जो उसका सिंहासन मेरे पास ले आए इससे पहले कि वे मेरे पास आज्ञाकारी हो कर पहुँचें ? 139।

जिन्होंने मैं से इफ्फीत ने कहा, मैं उसे तेरे पास ले आऊँगा, इससे पूर्व कि तू अपने स्थान से पड़ाव उठा ले। और निःसन्देह मैं इस (कार्य) पर खूब समर्थ (और) विश्वसनीय हूँ। 140।*

वह व्यक्ति जिसके पास पुस्तक का ज्ञान था उसने कहा, मैं उसे तेरे पास ले आऊँगा इससे पूर्व कि तेरा सुरक्षा दस्ता तेरी ओर लौट आए। अतः जब उसने उसे अपने पास पड़ा पाया तो कहा, यह केवल मेरे रब्ब की कृपा से है ताकि वह मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ अथवा कृतञ्चता। और जो भी कृतज्ञता प्रकट करता है तो अपने ही लाभ के लिए करता है। और जो कृतञ्चता करता है तो मेरा रब्ब निःसन्देह निःस्पृह और अत्यन्त दानशील है। 141।**

* इफ्फीत जिस को जिन समझा गया है, कोई ऐसा जिन नहीं था जिसको लोक-प्रचलन में जिन कहा जाता है। पर्वतीय जातियों के सशक्त सरदारों को भी जिन कहा जाता है जो हज़रत सुलैमान अलै. के अधीन किए गए थे।

** इस आयत में पुस्तक के ज्ञान से अभिप्राय बाइबिल का ज्ञान नहीं बल्कि विज्ञान-शास्त्र है। जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया कि ज्ञान दो प्रकार के हैं। इल्मुल अद्यानि व इल्मुल अब्दानि (धार्मिक ज्ञान और सांसारिक ज्ञान) यह उसका एक उदाहरण है। वह व्यक्ति विज्ञान का बहुत बड़ा विशेषज्ञ था और अपने ज्ञान के बल पर कठिन से कठिन वस्तु की भी नक़ल →

لَهُمْ بِهَا وَلَنْخُرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذْلَلَةً وَهُمْ
صَغِرُونَ ④

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمُلَوْأُ أَيُّكُمْ يَأْتِيُنِي بِعِزْشَهَا
قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ⑤

قَالَ عُفْرِيْتُ مِنْ الْجِنِّ أَنَا أَتَيْكَ بِهِ قَبْلَ
أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ
لَكَوْيُ أَمِينٌ ⑥

قَالَ الْنَّفْعِ عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا
أَتَيْكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَ إِلَيْكَ طَرْفُكَ
فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقْرَأً عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ
فُصْلِ رَبِّيْ فِي لَيْلَوْنِيْءَ أَشْكَرُ أَمَا كُفُرُ
وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ
كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيْ عَنِيْ كَرِيمٌ ⑦

उसने कहा, उसका सिंहासन उसके लिए एक साधारण वस्तु सदृश बना दो । हम देखते हैं कि क्या वह वास्तविकता को समझ जाती है अथवा ऐसे लोगों में से हो जाती है जो हिदायत नहीं पाते । 142।*

अतः जब वह आई तो उससे पूछा गया कि क्या तेरा सिंहासन इसी प्रकार का है ? तो उसने उत्तर दिया, मानो यह वही है और इससे पहले ही हमें ज्ञान दे दिया गया था और हम आज्ञाकारी हो चुके थे । 143।**

और उस (अर्थात् सुलैमान) ने उसे, उससे रोका जिसकी वह अल्लाह के सिवा उपासना किया करती थी । निःसन्देह वह काफिर लोगों में से थी । 144।

उसे कहा गया, महल में प्रविष्ट हो जा । अतः जब उसने उसे देखा तो उसे गहरा पानी समझा और अपनी दोनों पिंडलियों से कपड़ा उठा लिया । उस (अर्थात् सुलैमान) ने कहा, यह तो एक ऐसा महल है जो शीशों से जड़ा हुआ है । उस (महारानी) ने कहा, हे मेरे रब !

قَالَ نَكْرُوا لَهَا عَرْشَهَا تَنْظِرُ أَتَهْمَدُ
أَمْ تَكُونُ مِنَ الظَّاهِرِ لَا يَهْتَدُونَ ④

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهْكَذَأَعْرْشَكَ
قَاتَ كَانَ هُوَ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ
قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ⑤

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ
إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كُفَّارِينَ ⑥

قِيلَ لَهَا اذْخُلِ الصَّرْخَ فَلَمَّا رَأَتْهُ
حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِيهَا قَالَ
إِنَّهُ صَرْخٌ مَمَرُّدٌ مِنْ قَوَارِيرٍ قَاتَ

←उतार सकता था । महारानी सबा के सिंहासन जैसा सिंहासन बनाना भी एक बहुत कठिन कार्य था परन्तु उसने दावा किया कि मैं यह सिंहासन बना दूँगा इससे पूर्व कि तेरा सुरक्षा दस्ता सरहदों से बापस तुझ तक आ पहुँचे ।

* यह बात सुनकर हज़रत सुलैमान अलै. ने आदेश दिया कि उसका सिंहासन उसके लिए एक साधारण सी वस्तु बना कर दिखा दो । यह नहीं कहा कि उसका सिंहासन वहाँ से उठा कर ले आओ । इसका अर्थ यह था कि बिल्कुल वैसा ही सिंहासन बना दो ताकि जिस सिंहासन पर वह गर्व कर रही है वह साधारण सी वस्तु दिखाई दे ।

** इस आयत से सारी बात खुल जाती है । महारानी को यह नहीं कहा गया था कि क्या यही तेरा सिंहासन है, बल्कि यह कहा गया कि क्या तेरा सिंहासन इसी प्रकार का है ? इसके उत्तर में महारानी सबा ने यह नहीं कहा कि वही है बल्कि यह कहा कि इतनी समानता है कि मानो वही है ।

निःसन्देह मैंने अपनी जान पर अत्याचार किया । और (अब) मैं सुलैमान के साथ अल्लाह, समस्त लोकों के रब्ब की आज्ञाकारीणी बनती हूँ ।⁴⁵

(रुकूः ٣٨)
और हमने निःसन्देह समूद (जाति) की ओर उनके भाई सालेह को (यह कहते हुए) भेजा था कि अल्लाह की उपासना करो । अतः सहसा वे दो दल बन कर जगड़ने लगे ।⁴⁶

उसने कहा, हे मेरी जाति ! तुम क्यों अच्छी बात से पहले बुरी बात के लिए जल्दी करते हो । तुम क्यों अल्लाह से क्षमा नहीं माँगते ताकि तुम पर दया की जाए ।⁴⁷

उन्होंने कहा, हम तुझ से और तेरे साथियों से अपशकुन लेते हैं । उसने कहा, तुम्हारा शकुन तो अल्लाह के पास है । बल्कि तुम तो ऐसे लोग हो जिन्हें परीक्षा में डाला जाएगा ।⁴⁸

और (उसके) प्रमुख नगर में नौ व्यक्ति थे जो देश में उपद्रव किया करते थे और सुधार नहीं करते थे ।⁴⁹

उन्होंने कहा, परस्पर अल्लाह की कसमें खाओ कि हम अवश्य उस पर और

* महारानी सबा को महल में प्रवेश करते की आज्ञा दी गई । उसका फर्श अत्यन्त स्वच्छ शीशों के टुकड़ों का बना हुआ था और अपनी चमक-दमक में पानी स्वरूप दिखाई दे रहा था । हालाँकि साधारण फर्श था, कोई पानी वहाँ नहीं था । महारानी ने पानी समझ कर अपना वस्त्र समेट लिया ताकि गीला न ढो जाए । उस समय हज़रत सुलैमान अलै, ने उसको बताया कि यह भी एक दृष्टि का धोखा है । जिस प्रकार तुम सूर्य को उज्ज्वल समझ कर यही समझती हो कि सूर्य ही प्रकाश का स्रोत है हालाँकि वास्तव में तो अल्लाह है ताला का प्रकाश उसमें प्रकाशित हो रहा होता है । इस पर वह समझ गई कि हम सूर्य की अनुचित उपासना किया करते थे ।

رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِيٌ وَأَشْلَمْتُ مَعَنِي
سَلِيمَنَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى نَمُوذَأَخَاهُمْ صِلَحًا
أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقُونِ
يَخْتَصِمُونَ

قَالَ يَقُومُ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَعْفِرُونَ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ
تَرْحَمُونَ

قَالُوا أَطَلَّيْرَنَا بِكَ وَيَمْنَمَعَكَ قَالَ
أَطَلَّيْرَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بِلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ
تَفْتَنُونَ

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تَسْعَةَ رَهْطٍ يُقْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ وَلَا يَصْلِحُونَ

قَالُوا نَقَاسْمُوا بِاللَّهِ لَكُبِيْتَهُ وَأَهْلَهُ

उसके घर वालों पर रात्रि के समय आक्रमण करेंगे । फिर हम अवश्य उसके अभिभावक से कहेंगे कि हमने तो उसके घर वालों के विनाश को देखा नहीं और अवश्य हम सच्चे हैं । 150।

और उन्होंने बहुत बड़ा षड्यन्त्र रचा और हमने भी एक (जवाबी) योजना बनाई और वे कुछ समझ न सके । 151।

अतः देख कि उनके षड्यन्त्र का कैसा अन्त हुआ कि हमने उनको और उनकी समस्त जाति को नष्ट कर दिया । 152।

अतः ये उनके घर हैं जो उस अत्याचार के कारण वीरान पड़े हैं, जो उन्होंने किया । निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए एक बड़ा चिन्ह है जो ज्ञान रखते हैं । 153।

और हमने उनको जो ईमान लाए और वे जो तकब्बा धारण करने वाले थे, मुक्ति प्रदान की । 154।

और लूट को भी (मुक्ति दी) । जब उसने अपनी जाति से कहा कि क्या तुम अश्लीलता में लिप्त हो ? जबकि तुम भली-भाँति समझ रहे हो (कि क्या करते हो) । 155।

क्या तुम अवश्य काम वासना मिटाने के लिए स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास आते हो ? बल्कि तुम तो ना समझ लोग हो । 156।

अतः उसकी जाति का सिवाय इसके कोई उत्तर न था कि उन्होंने कहा कि लूट के परिवार को अपनी बस्ती से

لَنَقُولَكَ لِوَلِيْهِ مَا شَهِدَنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ
وَإِنَّا لِأَصْدِقُونَ ①

وَمَكْرُّ وَامْكَرًا وَمَكْرُ نَامَكَرًا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ②

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۝ أَيْ
دَمَرْنَهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ③

فَتِلْكَ بِيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۝ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ④

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ⑤

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمَهُ أَتَأْتُونَ الْفَاجِحَةَ
وَأَنْتُمْ تَبْصِرُونَ ⑥

إِسْكُنْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً فِي دُونِ
النِّسَاءِ ۝ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ⑦

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمَهُ إِلَّا أَنْ قَاتَلُوا
أَخْرِجُوا إِلَلُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ

निकाल दो । निःसन्देह ये ऐसे लोग हैं
जो बड़े पवित्र बनते हैं । 157।

अतः हमने उसको मुक्ति प्रदान की और
उसके घर वालों को भी, सिवाय उसकी
पत्नी के, जिसे हमने पीछे रह जाना
वालों में गिन रखा था । 158।

और हमने उन पर एक बारिश बरसाई ।
अतः कितनी भयानक होती है सतर्क
किए जाने वालों पर (होने वाली)
बारिश । 159। (रुक् ۴)

कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के
लिए है । और सलाम हो उसके भक्तों
पर जिन्हें उसने चुन लिया । क्या अल्लाह
श्रेष्ठ है अथवा वे जिन्हें वे (उसके)
साझीदार ठहराते हैं ? । 160।

أَنَّاسٌ يَتَظَهَّرُونَ

فَأَئْجِنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَاتُهُ قَدْرُنَّهَا
مِنَ الْغُبْرِينَ ⑩

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُنْذَرِينَ ⑪

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلِّمْ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ
أُصْطَفَى اللَّهُ خَيْرُ أَمَّا يُشْرِكُونَ ⑫

अथवा (यह बताओ कि) कौन है वह जिसने आसमानों और धरती को पैदा किया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा । और उसके द्वारा हमने सुशोभित बाग उगाए । तुम्हारे वश में तो न था कि तुम उनके वृक्षों को उगाते । (अतः) क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? (नहीं, नहीं) बल्कि वे अन्याय करने वाले लोग हैं ।¹⁶¹

अथवा (फिर) वह कौन है जिसने धरती को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच में नदियाँ जारी कर दीं । और जिसने उसके पर्वत बनाए और दो समुद्रों के मध्य एक रोक बना दी । क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? (नहीं) बल्कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।¹⁶²

अथवा (फिर) वह कौन है जो व्याकुल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करता है जब वह उसे पुकारे । और कष्ट को दूर कर देता है और तुम्हें धरती के उत्तराधिकारी बनाता है । क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य है ? बहुत कम है जो तुम शिक्षा ग्रहण करते हो ।¹⁶³

अथवा (फिर) वह कौन है जो स्थल भाग और जल भाग के अन्धकारों में तुम्हारा मार्गदर्शन करता है और कौन है वह जो अपनी कृपा (वर्षण) से पूर्व शुभ-समाचार के रूप में हवाएँ चलाता है । क्या अल्लाह के साथ कोई (और)

آمِنْ حَلْقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلَ^١
لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَا شِئْتُمْ فَإِنْ تُنْبَثِنَاهُ هَذَا إِيقَنٌ
ذَاتَ بُهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ شِئْنُوا
شَجَرَهَا لِعِلَّةٍ مَعَ اللَّهِ بِلْ هُمْ قَوْمٌ
يَعْدِلُونَ^٢

آمِنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْلَهَا
أَنْهَرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَابِسٍ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا لِعِلَّةٍ مَعَ اللَّهِ
بِلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ^٣

آمِنْ يُحِبُّ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ
وَيَكْشِفُ الشَّوَّءَ وَيَجْعَلُكُمْ حُلْفَاءَ
الْأَرْضِ لِعِلَّةٍ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ^٤

آمِنْ يُهَدِّي كُمْ فِي ظُلْمَتِ الْبَرِّ وَالْبَرِّ
وَمَنْ يُرِسِّلُ الرِّيحَ بِشَرٍّ أَبِيَّنْ يَدِيُّ
رَحْمَتِهِ لِعِلَّةٍ مَعَ اللَّهِ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا

उपास्य है ? बहुत ऊँचा है अल्लाह
उससे जो वे शिर्क करते हैं । 164।

अथवा वह कौन है जो सृष्टि का आरम्भ
करता है फिर वह उसकी पुनरावृत्ति
करता है । और कौन है जो तुम्हें आसमान
और धरती में से जीविका प्रदान करता है ।
क्या अल्लाह के साथ कोई (और) उपास्य
है ? तू कह दे कि अपने ठोस प्रमाण
लाओ यदि तुम सच्चे हो । 165।

तू कह दे कि कोई भी जो आसमानों
और धरती में है, अदृश्य को नहीं
जानता, परन्तु अल्लाह । वे तो यह भी
समझ नहीं रखते कि वे कब उठाए
जाएँगे । 166।

बल्कि परलोक के सम्बन्ध में उनका ज्ञान
अन्त को पहुँचा । बल्कि वे तो उसके बारे
में शंका में हैं । बल्कि वे तो उसके बारे में
अन्धे हो चुके हैं । 167। (रुकू ۱)

और उन लोगों ने कहा, जिन्होंने
अस्वीकार किया कि क्या जब हम
मिट्टी हो जाएँगे और हमारे पूर्वज भी,
तो क्या फिर भी हम अवश्य
(पुनर्जीवित करके) निकाले जाने वाले
हैं ? । 168।

निःसन्देह यह वादा हमें और हमारे
पूर्वजों को पहले भी दिया गया था । यह
तो पहले लोगों की कथाओं के अतिरिक्त
कुछ नहीं । 169।

तू कह दे, धरती में खूब भ्रमण करो और
फिर देखो कि अपराधियों का परिणाम
कैसा था । 170।

يُشْرِكُونَ ﴿١﴾

أَمْنٌ يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يَعِيْدُهُ
وَمَنْ يَرْزُقْهُ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِلَّا لِلَّهِ مَعَ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بِرُهَائِنَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ﴿٢﴾

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
الْغَيْبُ لِلَّهِ وَمَا يَشْعُرُونَ آيَاتٍ
يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

بَلِ الْأَذْرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ بَلِ هُمْ
فِي شَلَّٰتِهَا بَلِ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٤﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا أَكَلُوا ثَرِيْبًا
وَأَبَاوِنًا أَيْمَانًا لَمْخَرَجُونَ ﴿٥﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَابْنُ اُنَامٍ قَبْلُ
إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٧﴾

और उन पर शोक न कर और जो वे घड़यन्त्र रचते हैं उसके कारण किसी तंगी में न पड़ । 711

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो । 721

तू कह दे संभव है कि उन बातों में से कुछ जिनको तुम शीघ्रता पूर्वक चाहते हो तुम्हारे पीछे लगी हुई हों । 731

और (यह कि) तेरा रब निःसन्देह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है । परन्तु उनमें से अधिकतर कृतज्ञता प्रकट नहीं करते । 741

और निःसन्देह तेरा रब भली-भाँति जानता है जो उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वे (स्वयं) प्रकट करते हैं । 751

और आकाश और धरती में कोई छुपी हुई वस्तु नहीं (जिसका वर्णन) खुली-खुली पुस्तक में मौजूद न हो । 761

निःसन्देह यह कुरआन बनी इसाईल के समक्ष अधिकतर ऐसी बातें वर्णन करता है जिनमें वे मतभेद रखते हैं । 771*

और निःसन्देह यह मोमिनों के लिए हिदायत और कृपा है । 781

अवश्य तेरा रब उनके बीच अपने विवेक के साथ निर्णय कर देगा । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 791

وَلَا تَحْرِنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَنْكُنْ فِي ضَيْقٍ
مَّمَّا يَعْكِرُونَ ⑦

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ⑦

فَلَعْسَى أُنْ يَكُونَ رَدْفَ لَكُمْ بَعْضُ
الَّذِي تَسْعَجِلُونَ ⑦

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُوقَ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلِكُنْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ⑦

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تَكِنْ صَدُورُهُ
وَمَا يَعْلَمُونَ ⑦

وَمَا مِنْ عَابِرٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مَّبِينٍ ⑦

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَكْثَرُ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَحْتَلِمُونَ ⑦

وَإِنَّهُ لَهُدَىٰ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ⑦

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بِنِئَمٍ بِحُكْمِهِ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑦

* इससे पूर्व बीती हुई जो आश्चर्यजनक बातें हुई हैं उनके सम्बन्ध में बाइबिल में अद्भुत कथाएँ वर्णन की गई हैं । पवित्र कुरआन ने वास्तविक घटनाओं पर से पर्दा उठाकर उन कथाओं की वास्तविकता वर्णन कर दी है जिनको बनी-इसाईल प्रत्यक्ष पर आधारित समझते थे ।

अतः अल्लाह पर भरोसा कर। निःसन्देह तू खुले-खुले सत्य पर क्रायम है 180।

तू कदापि मुर्दों को नहीं सुना सकता और न ही बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकता है जब वे पीठ दिखाते हुए मुँह फेर लेते हैं 181।

और निःसन्देह तू अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से हिदायत की ओर नहीं ला सकता। तू तो केवल उनको सुना सकता है जो हमारे चिह्नों पर ईमान लाते हैं और वे आज्ञाकारी हैं 182।

और जब उन पर आदेश लागू हो जाएगा तो हम उनके लिए धरती में से एक जीव निकालेंगे जो उनको काटेगा (इस कारण से) कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे 183।

(रुक् ٦)

और (याद करो) जिस दिन हम प्रत्येक जाति में से जिसने हमारी आयतों को झुठलाया, एक समूह इकट्ठा करेंगे और फिर वे अलग-अलग पंक्तिबद्ध किए जाएँगे 184।

यहाँ तक कि जब वे (अल्लाह के समक्ष) आ जाएँगे वह कहेगा, क्या तुमने मेरी आयतों को झुठला दिया था, जबकि तुम उनकी पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर सके थे? अथवा फिर और क्या था जो तुम करते रहे हो 185।

और उन पर उस अत्याचार के कारण आदेश लागू हो जाएगा जो उन्होंने

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ
الْمُبِينِ ④

إِنَّكَ لَا تُشْعِنُ الْمَوْتَى وَلَا تُشْعِنُ الصَّمَدَ
الدُّعَاء إِذَا أَوْلَوْا مَدْبِرِينَ ⑤

وَمَا أَنْتَ بِهِدَى الْعَمَى عَنْ ضَلَالِهِمْ
إِنْ تُشْعِنُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِإِيمَانِ
فَهُمْ مُسْلِمُونَ ⑥

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ
ذَآبَةً مِنَ الْأَرْضِ شَكَمْهُمْ لَا أَنَّ النَّاسَ
كَانُوا بِإِيمَانِهِ لَا يُوقِنُونَ ١٩

وَيَوْمَ نَحْشِرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِنْ
يَكْذِبُ بِإِيمَانِهِمْ يُوْزَعُونَ ⑦

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُهُمْ قَالَ أَكْذِبُهُمْ بِإِيمَانِهِ وَلَمْ
تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ١٨

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ

किया । फिर वे (जवाब में) कुछ न बोलेंगे । 86।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात्रि को बनाया ताकि वे उसमें आराम प्राप्त करें और दिन को प्रकाशकर बनाया । निःसन्देह इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं । 87।

और जिस दिन बिगुल फूंका जाएगा तो जो भी आसमानों में है और जो भी धरती में है भय से बेचैन हो जाएगा । सिवाए उसके जिसे अल्लाह (वचाना) चाहे और सब उसके समक्ष विनम्रतापूर्वक उपस्थित होंगे । 88।

और तू पर्वतों को इस अवस्था में देखता है कि उन्हें स्थिर और गतिहीन समझता है, हालाँकि वे बादलों की भाँति चल रहे हैं । (यह) अल्लाह की कारीगरी है जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया । निःसन्देह वह उससे जो तुम करते हो सदा अवगत रहता है । 89।

जो भी कोई पुण्य लेकर आएगा तो उसके लिए उससे उत्तम (प्रतिफल) होगा । और वे लोग उस दिन अत्यन्त घबराहट से बचे रहेंगे । 90।

और जो बुराई लेकर आएगा तो उनके चेहरे अग्नि में झोके जाएंगे । (और कहा जाएगा) क्या जो तुम करते रहे हो (उसके सिवा) तुम्हें कोई प्रतिफल दिया जाएगा ? । 91।

मुझे केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर के रब्ब की उपासना करूँ

لَا يَسْطِقُونَ ④

الْمُرِّئُوا أَنَّا جَعَلْنَا إِلَيْكُمُ اسْكُوافِيْهِ
وَالثَّهَارَ مُبْصِرًا ۝ أَنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَتِي لِقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ⑤

وَيَوْمَ يُنْفَحُ فِي الصُّورِ فَفَزَعَ مَنْ
فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ
شَاءَ اللَّهُ طَ وَكُلُّ أَنْوَهٌ دُخُرِينَ ⑥

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبَهَا جَامِدَةً وَهُوَ
تَمَرَّمَرَ السَّحَابِ ۝ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقْنَ
كُلَّ شَيْءٍ ۝ إِنَّهُ خَيْرٌ بِمَا نَفَعَ لَوْنَ ⑦

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُمْ
مِّنْ فَرَّعِ يَوْمِيْدِ امْنُونَ ⑧

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَيْثُ وَجْهُهُمْ
فِي النَّارِ ۝ هَلْ تُجْرِقُنَ الْأَمَانَتَ
تَعْمَلُونَ ⑨

إِنَّمَا أَمْرُتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلْدَةِ

जिसने इसको सम्मान प्रदान किया है। और प्रत्येक वस्तु उसी की है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से हो जाऊँ। 1921

और यह कि मैं कुरआन का पाठ करूँ। अतः जिसने हिदायत पाई तो वह अपने ही लिए हिदायत पाता है। और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो कह दे कि मैं तो केवल सतर्ककारियों में से हूँ। 1931

और कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है। वह शीघ्र ही तुम्हें अपने चिह्न दिखाएगा। अतः तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा रब्ब कदापि उस से अनजान नहीं जो तुम लोग करते हो। 1941। (रुकू 7)

الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۝ وَأَمْرَتَ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

وَأَنْ أَتُلُّو الْقُرْآنَ ۝ فَمَنِ اهْتَدَ فَإِنَّمَا
يَعْتَدُ بِنَفْسِهِ ۝ وَمَنِ صَلَّى فَقْلُ إِنَّمَا
أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٌ أَبِيهِ
فَتَعْرِفُونَهَا ۝ وَمَا رَبِّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ۝

28—सूरः अल—कसस

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 89 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी ता—सीन—मीम खण्डाक्षरों से हुआ है जिस से प्रमाणित होता है कि अल्लाह तआला के पवित्र, सुनने वाला और सर्वज्ञ होने के विषयवस्तु को इस सूरः में भी जारी रखा जा रहा है, जिसकी व्याख्या इससे पूर्व कर दी गई है।

पिछली सूरः में जिस प्रकार भविष्य में पूरे होने वाले बृहद चिह्नों का वर्णन है। इसी प्रकार इस सूरः में वर्णन किया जा रहा है कि अल्लाह तआला अतीत का भी वैसा ही ज्ञान रखता है जिस प्रकार भविष्य का ज्ञान रखता है। इस प्रकरण में हज़रत मूसा अलै. के सम्बन्ध में वह जानकारी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रदान की गई जो बहुत से चमत्कारों पर आधारित है। संक्षेप में यह कि वह पानी जो एक छोटे से अबोध बालक हज़रत मूसा अलै. को डुबो न सका वही पानी फिर औन और उसकी सेनाओं को डुबोने का कारण बन गया।

इसके पश्चात् यह वर्णन है कि इस युग के यहूदी तेरा इनकार करते हुए कहते हैं कि यदि मूसा अलै. की भाँति तुम्ह पर चिह्न उतरें तो हम इनकार नहीं करेंगे। परन्तु वे इस बात को भूल जाते हैं कि मूसा के समय प्रकट होने वाले चिह्नों को भी तो यहूदी जाति ने झुठला दिया था। अन्यथा ये सब चिह्न देख कर वे मूर्तिपूजा की ओर आकर्षित न होते। सब इनकार करने वाले चाहे वे अतीत के हों अथवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के हों, सबकी एक ही प्रकार की टेढ़ी चाल होती है कि पहलों के चिह्नों पर ईमान लाते हुए भी उसी प्रकार के चिह्नों को जब आँखों के सामने उतरते हुए देखते हैं तो उनका इनकार कर देते हैं।

इसके पश्चात् उन अहले किताब का वर्णन है जो पहले भी हज़रत मूसा अलै. पर सच्चा ईमान लाए थे और जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित होने वाले चमत्कारों को उन्होंने देखा तो अपने पवित्र स्वभाव के कारण उन पर भी ईमान ले आए। इस प्रकर वे दोहरे प्रतिफल के पात्र बन गए। हज़रत मूसा अलै. पर ईमान लाने का उनको प्रतिफल मिलेगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का भी उनको प्रतिफल प्रदान किया जाएगा।

इस पूरे प्रसंग से यह सिद्ध हुआ कि हिदायत को मनुष्य बलपूर्वक प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि नेक प्रवृत्ति के लोगों को अल्लाह तआला स्वयं हिदायत देता है। इस सूरः में यह भी वर्णन कर दिया गया कि इससे पहले जो बहुसंख्यक विनष्ट होने वाली जातियों का विवरण मिलता है वह इस कारण नहीं कि अल्लाह तआला ने उन पर अत्याचार

किया बल्कि वे अपनी जानों पर और अपने समय के नवियों पर जो अत्याचार किया करते थे वे उसके दुष्परिणाम के शिकार बन गए।

इसके पश्चात् पवित्र कुरआन यह वर्णन करता है कि अंधेरों को सदा के लिए मनुष्य पर आच्छादित नहीं किया जाता जैसा कि धरती में भी रात और दिन परस्पर बदलते रहते हैं। और एक उच्चकोटि, सरल और शुद्ध वाणी में सचेत किया गया कि यदि रात सदा के लिए आच्छादित होती तो उन अंधेरों में तुम देख तो नहीं सकते थे परन्तु सुनने के कान होते तो सुन तो सकते थे। अतः उनको अध्यकारों के खतरों से सावधान किया जा रहा है। फिर यदि दिन सदा के लिए आच्छादित होता तो न सुनने वालों को भी दिन के प्रकाश में तो मार्ग दिखाई देना चाहिए था, फिर वे क्यों देखते नहीं ?

इसके पश्चात् क़ारून का उल्लेख किया गया है जिसे अपार धन प्रदान किया गया था और लोग लालायित होकर उसे देखते थे कि काश ! उनको भी वैसा ही धन मिल जाता । परन्तु उसका अंत यह हुआ कि वह अपने खजानों सहित धरती में दफन हो गया । इसी सूरः के आरम्भ में यह चेतावनी दी गई थी कि अल्लाह तआला केवल समुद्रों में डुबोने का ही सामर्थ्य नहीं रखता बल्कि यदि अल्लाह चाहे तो कुछ अभिमानी अपने धन-सम्पत्ति सहित सदा के लिए धरती में दफन कर दिए जाएँ । जैसा कि इस युग में भी हम यही देखते हैं कि भूकम्प से धरती फटती है और घनी आबादियाँ और इस युग के बड़े-बड़े भारी आविष्कार धरती में समा जाते हैं और फिर उनका कोई नामो निशान नहीं मिलता ।

इन आयतों के बाद एक ऐसी आयत (सं. 86) है जो शत्रुओं पर निश्चित रूप से यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त थी कि यह अल्लाह की वाणी है, इसने अवश्य पूरी होकर रहनी है । और वह यह थी कि तुझे हम दोबारा मआद (लौटने का स्थान) अर्थात् मक्का में प्रविष्ट करेंगे । अतः उन्होंने अपनी आँखों के सामने इस चमत्कार को पूरा होते हुए देख लिया । फिर अतीत या भविष्य की भविष्यवाणियों में शंका का कौन सा अवसर रह जाता है ? फिर परिणाम यही निकाला गया कि अल्लाह तआला के अद्वितीय होने के अतिरिक्त कुछ भी सिद्ध नहीं । जो विनाश की घटनाओं का उल्लेख हुआ है उनसे पता चलता है कि प्रत्येक वस्तु विनष्ट होने वाली है चाहे वह अल्लाह के प्रकोप के नीचे आकर विनष्ट हो अथवा प्राकृतिक विधान के अन्तर्गत अपने अन्त को पहुँचे । केवल एक अल्लाह की सत्ता है जो चिरस्थायी है ।



سُورَةُ الْقَصَصِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعَةٌ وَتَمَانُونَ آيَةٌ وَتِسْعَةٌ رُّكُونَ عَابِرٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

तथ्यबुन, समीउन, अलीमुन : पवित्र,
बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला । । ।
यह एक सुस्पष्ट पुस्तक की आयतें
हैं । । ।

हम तेरे सामने मूसा और फिरआौन के
वृत्तांत में से सत्य के साथ कुछ पढ़ते हैं,
उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले
हैं । । ।

फिरआौन ने निःसन्देह धरती में उद्घण्डता
की और उसके निवासियों को गुटों में
विभाजित कर दिया । वह उनमें से
किसी एक गुट को असहाय कर देता था ।
उनके पुत्रों का वध करता था और
उनकी स्त्रियों को जीवित रखता था ।
निःसन्देह वह उपद्रव करने वालों में से
था । । ।

और हमने इरादा किया कि जो लोग देश
में दुर्बल समझे गए उन पर उपकार करें ।
और उन्हें अगुआ बना दें और उन्हें
उत्तराधिकारी बना दें । । ।

और उन्हें धरती में दृढ़ता प्रदान करें और
फिरआौन और हामान और उन दोनों की
सेनाओं को उन (बनी-इस्माइल) की
ओर से वह कुछ दिखा दें जिस से वे डरते
थे । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

طَسْخَ

تِلْكَ آيَتُ الْكِتَبِ الْمُبَيِّنِ ②

سَلُوَا عَلَيْكَ مِنْ بَيْنِ أَمْوَالِيَ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ
لِقَوْمٍ لَّيْوَ مُنْوَنَ ③

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَى الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا
شَيْعَةً يَسْتَضْعِفُ طَائِفَةً مِّنْهُمْ
يَذَبِّحُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ
إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ④

وَنُرِيدُ أَنْ نَمَّنَ عَلَى الَّذِينَ اسْتَضْعَفُوا فِي
الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ إِيمَانَهُمْ وَنَجْعَلَهُمْ
الْوَرَثِينَ ⑤

وَنَمِّكَنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ
وَهَامَنَ وَجْهُهُمْ مِّنْهُمْ مَا كَانُوا
يَحْذَرُونَ ⑥

और हमने मूसा की माँ की ओर वहइ की, कि उसे दूध पिला । अतः जब तू उसके बारे में भय अनुभव करे तो उसे नदी में डाल दे और कोई भय न कर और कोई शोक न कर । हम अवश्य उसे तेरी ओर पुनः लाने वाले हैं । और उसे रसूलों में से (एक रसूल) बनाने वाले हैं । १४।

अतः फ़िरआौन के परिवार ने (अल्लाह की इच्छानुसार) उसे उठा लिया ताकि वह उनके लिए शत्रु (सिद्ध हो) और शोक का कारण बन जाए । निःसन्देह फ़िरआौन और हामान और उन दोनों की सेनाएँ दोषी थीं । १९।

और फ़िरआौन की पत्नी ने कहा कि (यह) मेरे लिए और तेरे लिए आँखों की ठंडक (सिद्ध) होगा, इसका वध न करो । हो सकता है कि हमें यह लाभ पहुँचाए अथवा हम इसे पुनः बना लें । जबकि वे कुछ समझ नहीं रखते थे । १०।

और मूसा की माँ का दिल (चिंताओं से) मुक्त हो गया । बिल्कुल संभव था कि वह इस (रहस्य) को प्रकट कर देती यदि हम उसके दिल को संभाले न रखते । (हमने ऐसा किया) ताकि वह मोमिनों में से हो जाये । ११।

और उस (अर्थात् मूसा की माँ) ने उसकी बहन से कहा कि उसके पीछे-पीछे जा । अतः वह दूर से उसे देखती रही और उन्हें कुछ पता न था । १२।

और पहले ही से हमने उस (अर्थात् मूसा) पर दूध पिलाने वालियाँ हराम

وَأُوحِيَتْ إِلَيْهِ أَمْرٌ مُّوسَىٰ أَنَّ أَرْضَعِيهِ^٦
فَإِذَا خِفْتَ عَلَيْهِ فَالْقِيَهُ فِي الْيَمِّ وَلَا
تَخَافِ وَلَا تَخَرُّفُ^٧ إِنَّا رَآءُوا ذُوَّةَ إِلَيْكَ
وَجَاءَ عِلْوَهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ^٨

فَالْسَّقْطَهُ الْأَلْ فِرْعَوْنَ لَيَكُونَ لَهُمْ عَذَّبًا
وَحَرَّنَا^٩ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَا مَنْ وَجُودَهُمَا
كَانُوا أَخْطَلُينَ^{١٠}

وَقَاتَ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي^{١١}
وَلَكَ لَا تَقْتُلُهُ^{١٢} عَسَىٰ أَنْ يَتَقْعَدَا^{١٣} أَوْ
تَتَخَذَا^{١٤} وَلَدًا^{١٥} وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ^{١٦}

وَأَصْبَحَ فَؤَادُ أَمْرٌ مُّوسَىٰ فِرِعَأً^{١٧} إِنَّ
كَادَتْ لَتُبَدِّي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَبَّهَا
عَلَى قَلْبِهَا لَتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ^{١٨}

وَقَاتَ لِأَخْتِهِ قُصَيْهُ^{١٩} فَبَصَرَتْ بِهِ عَنْ
جَنْبِ^{٢٠} وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ^{٢١}

وَحَرَّمَنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ^{٢٢} مِنْ قَبْلِ فَقَاتَ

कर दी थीं। अतः उस (की बहन) ने कहा कि क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूँ जो तुम्हारे लिए इसका पालन-पोषण कर सकें और वे इसके शुभ-चिंतक हों। 113।

अतः हमने उसे उसकी माँ की ओर लौटा दिया ताकि उसकी आँखें ठंडी हो जाएँ और वह शोक न करे और वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है। परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते थे। 114।

(रुक् ¼)

और जब वह परिपक्व आयु को पहुँचा और सुदृढ़ हो गया तो हमने उसे विवेकशीलता और ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम उपकार करने वालों को प्रतिफल देते हैं। 115।

और वह शहर में उसके रहने वालों की बेखबरी की अवस्था में (उनसे छिपता हुआ) प्रविष्ट हुआ तो वहाँ उसने दो पुरुषों को देखा जो एक दूसरे से लड़ रहे थे। यह (एक) उसके समुदाय का था और वह (दूसरा) उसके शत्रु समुदाय का था। अतः वह जो उसके समुदाय का था उसने उसको विरोधी समुदाय वाले के विरुद्ध सहायता के लिए आवाज़ दी। अतः मूसा ने उसे मुक्का मारा और उसका काम तमाम कर दिया। उसने (दिल में) कहा कि यह (जो कुछ हुआ) यह तो शैतान का काम था। निःसन्देह वह खुला-खुला पथभ्रष्ट करने वाला शत्रु है। 116।

هَلْ أَذْلِكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَ
لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصْحُونَ ⑯

فَرَدَدْتُهُ إِلَىٰ أَقْمَهِي تَقْرَأُ عَيْنَهَا وَلَا
تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكُنَّ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑯

وَلَمَّا بَأْعَثَ أَشْهَدَهُ وَاسْتَوَىٰ أَتَيْنَاهُ حُكْمًا
وَعِلْمًا ۝ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑯

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفَلَ قِمْنُ
أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْسِتَلِنِ ۝ هَذَا
مِنْ شِيَعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَغَاثَهُ
الَّذِيْنُ مِنْ شِيَعَتِهِ عَلَى الَّذِيْنُ مِنْ عَدُوِّهِ
فَوَكَرَهَ مُوسَىٰ فَقَضَى عَلَيْهِ ۝ قَالَ هَذَا
مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَنِ ۝ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُضِلٌّ
مُبِينٌ ⑯

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मैंने अपनी जान पर अत्याचार किया । अतः मुझे क्षमा कर दे । तो उसने उसे क्षमा कर दिया । निःसन्देह वही है जो बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस कारण से कि तूने मुझे पुरस्कृत किया मैं भविष्य में कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा । 18 ।

अतः वह प्रातःकाल शहर में डरता हुआ इधर उधर दृष्टि डालता हुआ प्रविष्ट हुआ तो सहसा (देखा कि) वही व्यक्ति जिसने उसे पिछले दिन सहायता के लिए बुलाया था फिर उससे चिल्ला-चिल्ला कर सहायता माँग रहा है । मूसा ने उससे कहा, निःसन्देह तू ही स्पष्ट रूप से पथभ्रष्ट है । 19 ।

फिर जब उसने इरादा किया कि उसे पकड़े जो उन दोनों का शत्रु है तो उसने कहा, हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि मेरा भी वध कर दे जैसा तूने एक व्यक्ति का कल वध किया था । इसके सिवा तू कुछ नहीं चाहता कि देश में धौंस जमाता फिरे और तू नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से बने । 20 ।

और एक व्यक्ति शहर के परले किनारे से दौड़ता हुआ आया । उसने कहा, हे मूसा ! निःसन्देह सरदार तेरे विरुद्ध योजना बना रहे हैं कि तेरा

قَالَ رَبِّيْ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ
فَغَفَرَ لَهُ اٰللّٰهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑦

قَالَ رَبِّيْ بِمَا آتَيْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ
ظَاهِرًا لِلْمُجْرِمِينَ ⑧

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا
الَّذِي اسْتَصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَشَتَّرِخُهُ
قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَعَوْيٌ مُّبِينٌ ⑨

فَلَمَّا آتَيْتَنِيْ أَرَادَنِيْ بِيَطْشٍ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَهُمَا قَالَ يَمْوَسَى أَتَرِيدُ أَنْ تَقْتَلَنِيْ كَمَا
قَتَلْتَنِيْ فَسَالَ بِالْأَمْسِ ۝ إِنْ تَرِيدُ إِلَّا أَنْ
تَكُونَ جَبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تَرِيدُ أَنْ
تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ⑩

وَجَاءَ رَجُلٌ قُنْ أَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعَى
قَالَ يَمْوَسَى إِنَّ الْمَلَائِكَةَ مُرْوَنَ بِكَ

वध कर दें । अतः निकल भाग ।
निःसन्देह मैं तेरी भलाई चाहने वालों
में से हूँ । १२१ ।

अतः वह वहाँ से भयभीत और इधर-
उधर दृष्टि डालता हुआ निकल भाग ।
उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे अत्याचारी
लोगों से मुक्ति प्रदान कर । १२२ ।*

(रुक् २)

अतः जब उसने मदयन का रुख किया,
उसने कहा, संभव है कि मेरा रब्ब मुझे
सही मार्ग की ओर हिदायत दे दे । १२३ ।

अतः जब वह मदयन के पानी के घाट
पर उत्तरा । उसने वहाँ लोगों के एक
समुदाय को (अपने पशुओं को) पानी
पिलाते हुए देखा और उनसे परे दो
स्त्रियों को भी उपस्थित पाया जो अपने
पशुओं को पीछे हटा रही थीं । उसने
पूछा कि तुम दोनों की क्या समस्या है ?
उन्होंने उत्तर दिया, जबतक चरवाहे
लौट न जाएँ हम पानी पिला नहीं सकतीं
और हमारा पिता बहुत बूढ़ा है । १२४ ।

يُقْتَلُوكَ فَاخْرُجْ إِنْ لَكَ مِنْ
الْتَّصْحِينَ ①

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبُّ
نَجِّيْفُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّلْمِيْنَ ②

وَلَمَّا آتَوْجَهَ تِلْقَاءَ مَذْيَنَ قَالَ عَلَىٰ
رَبِّيْ أَنْ يَعْدِيْنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ③

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَذْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أَمْمَةً مِنَ
النَّاسِ يَسْقُونَ هُوَ وَجَدَ مِنْ دُونِهِ
أَمْرَأَيْنِ تَذَوَّدِنَ ④ قَالَ مَا حَطَبُكُمَا
قَاتَلَا لَأَشْقَىٰ حَتَّىٰ يَصِيرَ الرِّعَادُ ⑤

وَأَبْوَنَا شَيْخٌ كَيْرِيْ ⑥

* आयत संख्या 16 से 23 : मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. नुबूवत प्राप्ति से पूर्व अपने घर
सुबह के अंधेरे में आया करते थे । एक दिन रास्ते में उन्होंने एक इसाई लड़की को फिरआौन की जाति के
एक व्यक्ति से लड़ते हुए देखा । जब उसने हज़रत मूसा को सहायता के लिए पुकारा तो उनके मुक्के
से फिरआौन की जाति का व्यक्ति मर गया ।

दूसरे दिन सुबह मुँह अंधेरे हज़रत मूसा अलै. फिर गुज़र रहे थे तो उनकी जाति के उसी लड़ाकु
व्यक्ति ने फिरआौन की जाति के एक और व्यक्ति से लड़ाई शुरू की । जब मूसा अपनी जाति वाले
की सहायता के लिए बढ़े तो फिरआौन की जाति के व्यक्ति ने विरोध करते हुए हज़रत मूसा से कहा
कि क्या मुझ से भी वैसा ही करोगे जिस प्रकार कल तुम ने हमारा एक व्यक्ति मार दिया था ? इन दो
घटनाओं के उल्लेख के पश्चात वह आयत आती है जिसमें बताया गया है कि फिरआौन की जाति के
सरदारों ने यह निर्णय कर लिया कि मूसा को मृत्युदण्ड दिया जाएगा । इस पर हज़रत मूसा को एक
जानकार व्यक्ति ने पहले से सचेत कर दिया और आप वहाँ से मदयन की ओर चले गए ।

तो उसने उन दोनों के लिए (उनके पशुओं को) पानी पिलाया । फिर वह एक छाया की ओर मुड़ गया और कहा कि हे मेरे रब्ब ! हर अच्छी चीज़ जो तू मेरी ओर उतारे उसके लिए मैं एक याचक हूँ । 125 ।

अतः उन दोनों में से एक उसके पास लजाती हुई आई । उसने कहा, निःसन्देह मेरे पिता तुझे बुलाते हैं ताकि तुझे उसका प्रतिफल दें जो तूने हमारे लिए पानी पिलाया । अतः जब वह उसके (पिता के) पास आया और सारी घटना उस के सामने वर्णन की, उसने कहा भय न कर तू अत्याचारी लोगों से मुक्ति पा चुका है । 126 ।

उन दोनों में से एक ने कहा, हे मेरे पिता ! इसे नौकर रख लें । निःसन्देह जिन्हें भी आप नौकर रखें उनमें वही उत्तम (सिद्ध) होगा जो शक्तिशाली (और) विश्वस्त हो । 127 ।

उसने (मूसा से) कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का तुझ से इस शर्त पर विवाह का दूँ कि तू आठ वर्ष मेरी सेवा करे । फिर यदि तू दस (वर्ष) पूरे कर दे तो यह तेरी ओर से (स्वेच्छिक) होगा । और मैं तुझ पर किसी प्रकार की सख्ती नहीं करना चाहता । अल्लाह चाहे तो तू मुझे नेक लोगों में से पाएगा । 128 ।

उसने कहा, यह मेरे और आपके बीच तय हो गया । दोनों में से जो अवधि भी

فَسَقَى لَهُمَا نَمَاءً تَوَلَّ إِلَى الظَّلَلِ فَقَالَ
رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ⑩

فَجَاءَهُنَّا إِحْدَيْهُمَا تَمَسَّى عَلَى اسْتِخِيَاءٍ
قَالَتْ إِنَّ أَنِّي يَدْعُوكَ لِيَغْزِيَكَ أَجْرًا
مَاسَقَيْتَ لَكَمَا قَلَّمَا جَاءَهُ وَقَصَّ
عَلَيْهِ الْقَصْصَ ۝ قَالَ لَا تَنْهَفْ
نَجْوَتْ مِنَ الْقَوْمِ الظَّلِيمِينَ ⑪

قَالَتْ إِحْدَيْهِمَا يَا بَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ
خَيْرَ مِنِ اسْتَأْجِرْتُ الْقَوْيِ الْأَمِينِ ⑫

قَالَ أَنِّي أَرِيدُ أَنْ أُنْكِعَلَكَ إِحْدَى
ابْنَتَيْ هَتَّيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجِرَ فِي مَنْيَ حَجَجٍ
فَإِنْ أَتَمَّتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا
أَرِيدُ أَنْ أَشْقَى عَلَيْكَ سَتِّجَدَنِي إِنْ شَاءَ
اللَّهُ مِنَ الصَّلِيْحِينَ ⑬

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيْمَانِ الْأَجَلِينَ

मैं पूरी कहूँ तो मेरे विरुद्ध कोई ज्यादती
नहीं होनी चाहिए। और जो हम कह रहे
हैं, अल्लाह उस पर निरीक्षक है। 129।

(रुकू - ३)

अतः जब मूसा ने निर्धारित अवधि
पूरी कर दी और अपने घर वालों को
लेकर चला, उसने तूर की ओर एक
आग सी देखी। उसने अपने घर वालों
से कहा, ज़रा ठहरो! मुझे एक आग
सी दिखाई दे रही है। हो सकता है
कि मैं उस (के पास) से कोई खबर
तुम्हारे पास ले आऊँ अथवा कोई आग
का अंगारा ले आऊँ ताकि तुम आग
ताप सको। 130।

फिर जब वह उसके पास आया तो
(उस) मंगलमय घाटी के किनारे से,
वृक्ष के एक मंगलमय भाग में से आवाज
दी गई, हे मूसा! निःसन्देह मैं ही
अल्लाह हूँ, समस्त लोकों का रब। 131।
और (कहा गया) कि अपनी लाठी
फेंक। फिर जब उसने उस (लाठी) को
देखा कि वह हिल-डोल रही है मानो
साँप हो, तो वह पीठ फेर कर मुँड गया
और पलट कर भी नहीं देखा। (कहा
गया) हे मूसा! आगे बढ़ और डर
नहीं। निःसन्देह तू सुरक्षित रहने वालों
में से है। 132।

अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल वह
बिना किसी दोष के चमकता हुआ
निकलेगा। फिर भय से (बचने के लिए)
अपनी भुजा को अपने साथ चिमटा ले।

قَضَيْتُ فَلَا عَذَّوَانَ عَلَىٰۤ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا
تَقُولُ وَكَيْلُۤ

فَلَمَّا قُضِيَ مُوسَىُ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ
إِنَّمَا مِنْ جَانِبِ الظُّلُمُورِ نَارًاًۤ قَالَ
لِأَهْلِهِ أَمْكَثُوا إِنِّي أَشَّتَ نَارًاً إِلَّا
أَتَيْكُمْ مِّنْهَا بَغْرِيرٍ أَوْ جَدْوِةٍ مِّنْ الشَّارِ
لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ

فَلَمَّا آتَهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ
فِي الْبَقْعَةِ الْمُبَرَّكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنِ
يُمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

وَأَنِّي عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا هَاتَهُنَّرُ
كَانَهَا جَانِبٌ وَلِيَمْدُرًا وَلِمُيَعْقِبُ
يُمُوسَىٰ أَقْبِلَ وَلَا تَخْفُ إِنَّكَ مِنَ
الْأَمِينِ

أَسْلَكْ يَدَكِ فِي جَيْلِكَ تَخْرُجُ
يَضَاءً مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَاصْمُمْ إِلَيْكَ

अतः तेरे रब्ब की ओर से ये दो चिह्न फ़िरआनै और उसके सरदारों की ओर (भेजे जा रहे) हैं। निःसन्देह वे दुराचारी लोग हैं। 131।

جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذِلَكَ بُرُّهَاثِيْنِ مِنْ
رَّبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِيْهِ أَنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَسِيقِيْنَ ⑩

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह मैं ने उनके एक व्यक्ति का वध किया हुआ है। अतः मैं डरता हूँ कि वे मेरा वध कर देंगे। 134।

और मेरा भाई हारून भाषा की दृष्टि से मुझ से अधिक शुद्ध-वक्ता है। अतः मेरे सहायक के रूप में उसे मेरे साथ भेज दे। वह मेरी पुष्टि करेगा। निःसन्देह मुझे (यह भी) डर है कि वे मुझे झुठला देंगे। 135।

उसने कहा, हम अवश्य तेरे भाई के द्वारा तेरा हाथ मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को एक भारी चिह्न प्रदान करेंगे। अतः हमारे चिह्नों के होते हुए वे तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे। तुम दोनों भी और वे भी जो तुम्हारा अनुसरण करेंगे विजयी होने वाले हैं। 136।

अतः जब मूसा उनके पास हमारे खुले-खुले चिह्न ले कर आया तो उन्होंने कहा, यह तो एक गदा हुआ जादू है और हमने अपने पूर्वजों में ऐसा नहीं सुना। 137।

और मूसा ने कहा, मेरा रब्ब सबसे अधिक जानता है कि कौन उसकी ओर से हिदायत ले कर आया है और कौन है जिसको परलोक का घर प्राप्त होगा।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَاخَافَ أَنْ يَقْتُلُونِ ⑪

وَأَخْنَ هَرُونَ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا
فَأَرْسَلْتُهُ مَعِيَ رِدًا يَصْدِقُنِي إِنِّي
أَخَافَ أَنْ يُكَذِّبُونِ ⑫

قَالَ سَنَشِدُ عَصْدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجَعَلُ
لَكُمَا سُلْطَنًا فَلَا يَصْلُوْنَ إِلَيْكُمَا
يَا يَسِّنَا أَنْتَمَا وَمِنَ الْبَعْكُمَا الْغَلِبُونِ ⑬

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى يَا يَسِّنَا بَيْتِ قَالُوا
مَا هَذَا إِلَّا سُحْرٌ مُفْتَرٌ وَمَا سِيمَنَا
بِهِذَا فِي أَبِيَّنَا الْأَوَّلِينَ ⑭

وَقَالَ مُوسَى رَبِّنِيْنَ أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ
بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ

निःसन्देह अत्याचारी सफल नहीं हुआ करते । 38।

और फिर औन ने कहा, हे सरदारो ! मैं अपने सिवा तुम्हारे लिए किसी अन्य उपास्य को नहीं जानता । अतः हे हामान ! मेरे लिए मिट्टी (की ईटों) पर आग भड़का । फिर मुझे एक महल बना कर दे ताकि मैं मूसा के उपास्य को झांक कर देखूँ तो सही । और निःसन्देह मैं यही धारणा रखता हूँ कि वह झूठा है । 39।

और उसने और उस की सेनाओं ने धरती में अकारण अभिमान किया । और यह विचार किया कि वे हमारी ओर नहीं लौटाए जाएँगे । 40।

अतः हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ में ले लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया । अतः देख कि अत्याचारियों का कैसा अन्त हुआ । 41।

और हमने उन्हें ऐसे अगुआ बनाया था जो आग की ओर बुलाते थे । और क्यामत के दिन उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी । 42।

और हमने इस संसार में भी उनके पीछे लान्त लगा दी और क्यामत के दिन भी वे दुर्दशाग्रस्तों में से होंगे । 43।

(रुक् 4)

और निःसन्देह हमने पहली जातियों को विनष्ट कर देने के पश्चात् ही मूसा को पुस्तक प्रदान की । यह लोगों के लिए आँखे खोलने वाली और हिदायत और कृपा स्वरूप थी ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें । 44।

عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ①

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنِ الْغَيْرِ إِنِّي فَأَوْقَدُنِي لِيَهَامِنْ عَلَى الطَّيْئَنِ فَلَاجْعَلْ فِي صَرْحًا لَعَلَى أَطْلَعَ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَظْنَهُ مِنَ الْكَذِبِينَ ②

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَاهِرُوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ③

فَأَخَذْنَاهُ وَجْهُوهُهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْأَيْمَةِ فَانْطَرَ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ④

وَجَعَلْنَاهُمْ إِيمَانَهُمْ يَدْمَعُونَ إِلَى الشَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَصْرُونَ ⑤

وَأَتَبْعَنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمُقْبُوحِينَ ⑥

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِمَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَى بَصَارَ لِلثَّالِثِ وَهَدَى وَرَحْمَةً لِعَلَمْهُ يَسْدَكُرُونَ ⑦

और तू (तूर पर्वत के) पश्चिमी ओर नहीं था जब हमने मूसा की ओर आदेश भेजा । और तू (प्रत्यक्षदर्शी) गवाहों में से नहीं था । 45।

परन्तु हमने कई जातियों को उन्नति प्रदान की यहाँ तक कि उन पर आयु दीर्घ हो गई । और तू मद्यन निवासियों में भी उन पर हमारी आयतें पढ़ता हुआ नहीं ठहरा । परन्तु यह हम ही हैं जो पैगम्बर भेजने वाले थे । 46।

और तू तूर के किनारे पर नहीं था जब हमने (मूसा को) आवाज़ दी । परन्तु (तू) अपने रब की ओर से एक महान कृपा स्वरूप (भेजा गया है) । ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिनके पास तुझ से पहले कोई सतर्कारी नहीं आया । ताकि वे उपदेश ग्रहण करें । 47।

और ऐसा न हो कि उन्हें इस कारण कोई संकट पहुँचे जो उनके हाथों ने आगे भेजा, तो वे कहें कि हे हमारे रब! क्यों न तूने हमारी ओर कोई रसूल भेजा, ताकि हम तेरी आयतों का अनुसरण करते और मोमिनों में से बन जाते । 48।

अतः जब हमारी ओर से उनके पास सत्य आ गया तो उन्होंने कहा कि इसे वैसा ही क्यों न दिया गया जैसा मूसा को दिया गया था । क्या वे इससे पूर्व उसका इनकार नहीं कर चुके जो मूसा को दिया गया था ? उन्होंने यह कहा

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْقَرْبَىٰ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى
مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّهِدِينَ ۖ

وَلَكُنَا أَنْشَانًا فَرُونَانًا فَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۖ وَمَا كُنْتَ شَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
شَلُوْا عَلَيْهِمُ اِلَيْتَنَا ۖ وَلَكُنَا كُنَّا
مُرْسِلِينَ ⑩

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْقَطُورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكُنْ
رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لِشَدِّرَ قَوْمًا مَا آتَهُمْ مِنْ
ثَدِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُونَ ⑪

وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا أَقْدَمُتْ
أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا
رَسُولًا فَنَتَّيَعْ اِلَيْكَ وَنَكُونُ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ⑫

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحُقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
لَوْلَا أُوتِيَ مُثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَى ۖ أَوْ لَمْ
يَكُفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَى مِنْ قَبْلٍ ۖ قَالُوا

था कि ये दो बहुत बड़े जादूगर हैं जो एक दूसरे के सहायक हुए। और उन्होंने कहा, हम तो अवश्य हर एक का इनकार करने वाले हैं । 149।

तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह की ओर से कोई ऐसी पुस्तक तो लाओ जो इन दोनों (अर्थात् तौरात और कुरआन) से अधिक हिदायत देने वाली हो तो मैं उसी का अनुसरण करूँगा । 150।

अतः यदि वे तेरे इस निमन्त्रण को स्वीकार न करें तो जान ले कि वे केवल अपनी अभिलाषाओं ही का अनुसरण कर रहे हैं। और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी अभिलाषाओं का अनुसरण करे ।

अल्लाह कदापि अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । 151। (रुकू 5)

और निःसन्देह हमने भली-भाँति उन तक बात पहुँचा दी थी ताकि वे उपदेश ग्रहण करें । 152।

जिन्हें हमने इससे पहले पुस्तक दी थी (उनमें से कई) इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं । 153।

और जब उन पर (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वे कहते हैं, हम इस पर ईमान ले आए। निःसन्देह यह हमारे रब्ब की ओर से सत्य है। निःसन्देह हम इससे पूर्व ही आज्ञाकारी थे । 154।

यही वे लोग हैं जिन्हे दो बार अपना प्रतिफल दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने

سَحْرٍ تَظْهَرَ أَوْ قَاتُوا إِلَيْا بِكُلِّ
كُفَّارٍ ④

قُلْ فَأَنْتُو بِكِتْبٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَى
مِنْهُمَا أَتَتِّبِعُهُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

فَإِنْ لَمْ يَسْتَجِيْوْا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا^{يُعْلَمُ}
يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَصْلَى مِنْ^{يُعْلَمُ}
اتَّبَعَ هُوَهُ بِغَيْرِ هَدَى مِنْ اللَّهِ^{يُعْلَمُ}
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّلَمِينَ ⑤

وَلَقَدْ وَصَلَّى لَهُمُ الْقَوْلَ لَعْنَهُمْ
يَذَكُّرُونَ ⑥

الَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قِيلَمْ هُمْ
بِهِ يُؤْمِنُونَ ⑦

وَإِذَا يَتَلَى عَلَيْهِمْ قَالُوا أَمْبَابَهُ إِنَّهُ أَنْجَعُ
مِنْ رَبِّنَا إِلَيْا مُكَانًا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ⑧

أُولَئِكَ يُؤْتُونَ أَجْرَهُمْ مَرَءَتِينَ بِمَا

धैर्य किया और वे भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। और जो कुछ हम उन्हें प्रदान करते हैं वे उसमें से खर्च करते हैं । 155।

और जब वे किसी निरर्थक बात को सुनते हैं तो उससे विमुख हो जाते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम पर सलाम हो। हम अज्ञानों की ओर झुकाव नहीं रखते । 156।

निःसन्देह तू जिसे चाहे हिदायत नहीं दे सकता परन्तु अल्लाह जिसे चाहे हिदायत दे सकता है। और वह हिदायत पाने योग्य लोगों को खूब जानता है । 157।

और उन्होंने कहा कि यदि हम तेरे संग हिदायत का अनुसरण करेंगे तो हम अपने देश से निकाल दिये जाएँगे। क्या हमने उन्हें शान्तिदायक हरम (मक्का क्षेत्र) में ठिकाना प्रदान नहीं किया, जिसकी ओर प्रत्येक प्रकार के फल लाए जाते हैं (ये) हमारी ओर से जीविका स्वरूप हैं। परन्तु उनमें से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते । 158।

और हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट किया जो अपने जीवन-साधनों पर इतराती थीं। अतः ये उनके निवास स्थान हैं जिन्हें उनके पश्चात अल्प समय के अतिरिक्त आबाद न रखा गया। और निःसन्देह (उनके) हम ही उत्तराधिकारी हुए । 159।

صَبَرُوا وَيَدْرُءُونَ بِالْحَسَنَةِ الْأَتِئَةِ

وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُفِيقُونَ ⑥

وَإِذَا سَمِعُوا الْلَّغُو أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا إِنَّا

أَعْمَلْنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ

لَا تَبْغِي الْجِهَلِيُّونَ ⑦

إِنَّكُمْ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكُنْ

اللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ

بِالْمُهْتَدِيِّينَ ⑧

وَقَالُوا إِنَّنِي أَنْتَ بِهَذِي مَعَكَ شَهَدٌ

مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَمْ نَمْكِنْ لَهُمْ حَرَماً

أَمْنًا يُجْبِي إِلَيْهِ ثَمَرَتْ كُلُّ شَيْءٍ رِزْقًا

مِنْ لَدُنْنَا وَلَكُنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑨

وَكُمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قُرْيَةٍ بِطَرَثٍ

مَعِيشَتَهَا قَتَلَكَ مَسِكِنَهُمْ لَمْ تَسْكُنْ

مِنْ بَعْدِهِمْ أَلَا قَلِيلًا وَكُنَّا نَخْنُ

الْوَرِثِيُّينَ ⑩

और तेरा रब्ब बस्तियों को तबाह नहीं करता जब तक कि उन (बस्तियों) के केन्द्रस्थल में रसूल भेज न चुका हो जो उन पर हमारी आयतें पढ़ता है। और हम इसके सिवा बस्तियों को ध्वंस नहीं करते जब तक कि उनके निवासी अत्याचारी न हो चुके हों। 160।

और जो कुछ भी तुम्हें दिया जाता है यह सांसारिक जीवन का अस्थायी लाभ और इस (संसार) की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है वह उत्तम और बाकी रहने वाला है। अतः क्या तुम बद्धि से काम नहीं लोगे? 161। (रुकू ٦)

अतः क्या वह जिससे हमने अच्छा बादा किया और वह उसे प्राप्त करने वाला है, उस जैसा हो सकता है जिसे हमने सांसारिक जीवन का अस्थायी लाभ पहुँचाया हो। फिर वह क़्यामत के दिन (उत्तर देने के लिए) उपस्थित किए जाने वालों में से हो। 162।

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिनको तुम (मेरे साझीदार) समझा करते थे? 163।

वे जिन पर आदेश लागू हो चुका होगा कहेंगे, हे हमारे रब्ब! ये वे लोग हैं जिन्हें हमने पथभ्रष्ट किया। हमने उनको (वैसे ही) पथभ्रष्ट किया जैसे हम स्वयं पथभ्रष्ट हुए। (इनसे) विमुखता प्रदर्शन करते हुए (अब) हम तेरी ओर आते हैं। ये कदापि हमारी उपासना नहीं किया करते थे। 164।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَى حَتَّىٰ
يَعْنَتْ فِي أَمْهَارَ سُولًا يَتْلُو أَعْلَيْهِمْ
أَيْتَاهُ وَمَا كَانَ مُهْلِكَ الْقُرَى إِلَّا
وَآهَلُهَا طَلِمُونَ ⑩

وَمَا أُوتِينَتْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ
الَّذِيَا وَزَيَّنَهَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
وَآبُقَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ ۱۱

أَفَمُنْ وَعَدْنَاهُ وَعِنْدَهُ أَحْسَانَهُ وَلَا قِنْهُ
كَمْ مَتَعْنَاهُ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الَّذِيَا شَرَّهُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۱۲

وَيَوْمَ يَنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَئِنَّ شَرِكَاءِ
الَّذِينَ كُنْتُمْ تَرْغُمُونَ ۱۳

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمْ الْقَوْلُ رَبَّنَا هُوَ لَاءُ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۖ أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا
تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِلَيْنَا يَعْبُدُونَ ۱۴

और उनसे कहा जाएगा कि अपने (बनाए हुए) उपास्यों को पुकारो। फिर वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उनको कोई उत्तर न देंगे और वे अज्ञाब को देखेंगे। काश कि वे हिदायत पा जाते । 165।

(और याद रखो) वह दिन जब वह (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने रसूलों को क्या उत्तर दिया ? । 166। अतः उस दिन उन पर खबरें संदिग्ध हो जाएँगी। फिर वे एक-दूसरे से भी कोई प्रश्न पूछ नहीं पायेंगे । 167।

अतः जहाँ तक उस का सम्बंध है जिसने प्रायश्चित किया और ईमान लाया और पुण्य कर्म किए तो संभव है कि वह सफल होने वालों में से हो जाए । 168।

और तेरा रब्ब जो चाहता है पैदा करता है और (उसमें से) ग्रहण करता है और उनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं। पवित्र है अल्लाह और बहुत ऊँचा है उससे जो वे (उसका) साक्षीदार ठहराते हैं । 169।

और तेरा रब्ब जानता है जो उनके सीने छिपाते हैं और जो वे (लोग) प्रकट करते हैं । 170।

और वही है अल्लाह, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं। आदि और अन्त (दोनों) में प्रशंसा उसी की है। उसी का आदेश चलता है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । 171।

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि अल्लाह तुम पर रात्रि को क्रयामत के दिन तक लम्बी कर दे तो अल्लाह के

وَقِيلَ ادْعُوا شَرِكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَشْتَجِبُوْهُمْ وَأَوْعَذَابٌ لَّوْا نَهَمُ
كَانُوا يَهْتَدُونَ ⑦

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجْبَثْتُمْ
الْمُرْسَلِينَ ⑧

فَعَمِيَّتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ
لَا يَسْأَءُونَ ⑨

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَأَمْنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَى
أَنْ يَكُونُ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ⑩

وَرَبِّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ
لَهُمُ الْخَيْرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا
يُشْرِكُونَ ⑪

وَرَبِّكَ يَعْلَمُ مَا تَكِنُونَ صَدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلَمُونَ ⑫

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي
الْأَوَّلِ وَالآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَمَوْنَ ⑬

قُلْ أَرَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ أَيْلَكَ

सिवा तुम्हारा कौन उपास्य है जो तुम्हारे पास कोई प्रकाश ला सके ? अतः क्या तुम सुनोगे नहीं ? 172।

तू कह दे कि बताओ तो सही यदि अल्लाह तुम पर दिन को क़्रायामत के दिन तक लम्बा कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन उपास्य है जो तुम्हारे पास रात को ला सके, जिसमें तुम आराम पाते हो ? क्या तुम बुद्धिमानी से काम नहीं लोगे ? 173।

और उसने अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को इस कारण बनाया कि तुम इसमें आराम प्राप्त करो और उसकी कृपाओं की खोज करो और ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो 174।

और (वह दिन याद रखो) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन्हें तुम (मेरा साझीदार) समझा करते थे ? 175।

और हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी निकाल लाएँगे और कहेंगे कि अपना प्रमाण लाओ । अतः वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह के वश में है और जो कुछ वे ज्ञूठ रचा करते थे उनसे जाता रहेगा 176। (रुक् 7/10)

निःसन्देह क़ारून मूसा की जाति में से था । अतः उसने उनके विरुद्ध विद्रोह किया और हमने उसे ऐसे ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी चाबियाँ (अपने भार से) एक शक्तिशाली समूह को भी थका देती थीं । (फिर) जब उसकी जाति ने उससे कहा,

سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مِنْ أَلَّهِ غَيْرُ اللَّهِ
يَا تَيَّبُّكُمْ بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ⑦
فَلْ أَرَعَيْتُمْ إِنَّ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْأَنْهَارَ
سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مِنْ أَلَّهِ غَيْرُ اللَّهِ
يَا تَيَّبُّكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا
شَيْرُونَ ⑧

وَمَنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الْأَيَّلَ وَالْأَنْهَارَ
لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلَيَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تُشَكَّرُونَ ⑨
وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيُّنَ شَرَّ كَاعِي
الَّذِينَ كُنْتُمْ تَرْغُمُونَ ⑩

وَنَرَعَنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا
بِرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑪

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمٍ مُّوسَى فَبَغَى
عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكَنْوَزِ مَا لَمْ
مَفَاتِحَهُ لَتَتَوَأْمَ بِالْعَصْبَةِ أُولَئِي الْفَوْةِ
إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَقْرَخْ إِنَّ اللَّهَ

لَا يُحِبُّ الْفَرَجِينَ ﴿٧﴾

शेखी न बघार । निःसन्देह अल्लाह
अहंकार करने वालों को पसन्द नहीं
करता । 77।

और जो कुछ अल्लाह ने तुझे प्रदान
किया है उसके द्वारा परलोक का घर
कमाने की इच्छा कर । और संसार में से
भी अपने निश्चित भाग की उपेक्षा न
कर । और उपकारपूर्ण व्यवहार कर
जैसा कि अल्लाह ने तुझ से उपकारपूर्ण
व्यवहार किया । और धरती में उपद्रव
(फैलाने) की इच्छा न कर । निःसन्देह
अल्लाह उपद्रवियों को पसन्द नहीं
करता । 78।

उसने कहा, मुझे तो यह उस ज्ञान के
कारण दिया गया है जो मुझे प्राप्त है ।
फिर क्या उसे ज्ञान नहीं हुआ कि
निःसन्देह अल्लाह उससे पूर्व कितनी ही
पीढ़ियों को तबाह कर चुका है जो उससे
अधिक शक्तिशाली और अधिक संख्या
थीं ? और अपराधियों से उनके अपराधों
के बारे में पूछा नहीं जाएगा । 79।

अतः वह अपनी जाति के समक्ष अपने
ठाट-बाट के साथ निकला । उन लोगों
ने जो संसारिक जीवन की इच्छा रखते थे
कहा, काश ! हमारे लिए भी वैसा ही
होता जो क़ारून को दिया गया ।
निःसन्देह वह बड़ा भाग्यवान है । 80।

और उन लोगों ने जिन्हें ज्ञान प्रदान किया
गया था कहा, हाय, खेद है तुम पर!
अल्लाह का (दिया हुआ) प्रतिफल उसके
लिए अत्युत्तम है जो ईमान लाया और

وَابْتَغِ فِيمَا أَشْكَنَ اللَّهُ الدَّارُ الْآخِرَةَ وَلَا
تَنْسِ نَصِيلَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا
أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الفَسَادَ فِي
الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨﴾

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ عِنْدِيٌّ
أَوْلَمْ يَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ
مِنَ الْقَرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُ مِنْهُ قُوَّةً
وَأَكْثَرُ جَمِيعًا وَلَا يُسْأَلُ عَنْ
ذَنْبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٩﴾

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمٍ فِي زِيَّتِهِ^١ قَالَ الْأَذْيَنُ
يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَتَأْمَلُ مَا
أُوتِيَ قَارُونُ^٢ إِنَّهُ لَذُو حَطَّ عَظِيْبٍ^٣

وَقَالَ الْأَذْيَنُ أُوتِوا الْعِلْمَ وَيَلْكُمْ
ثَوَابَ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ أَمَنَ وَعَمَلَ صَالِحًا

पुण्य कर्म किया । परन्तु धैर्य करने वालों के अतिरिक्त (ऐसा) कोई नहीं जिसे यह (ज्ञान) प्रदान किया जाए । 181 ।

अतः हमने उसे और उसके घर को धरती में धंसा दिया । फिर उसका कोई समूह न था जो अल्लाह के विरुद्ध उसकी सहायता करता । और वह प्रतिशोध लेने वालों में से बन न सका । 182 ।

और उन लोगों ने, जिन्होंने एक दिन पहले तक उसके स्थान (को प्राप्त करने) की अभिलाषा की थी, इस दशा में सुबह की कि वे कह रहे थे, हाय अफसोस ! अल्लाह अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका को बढ़ा देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग भी कर देता है । यदि हम पर अल्लाह ने उपकार न किया होता तो वह हमें भी धंसा देता । हाय अफसोस ! इनकार करने वाले सफल नहीं हुआ करते । 183 ।

(रुकू ١١)

यह परलोक का घर है जिसे हम उन लोगों के लिए बनाते हैं जो धरती में न (अपनी) बड़ाई चाहते हैं और न उपद्रव । और अंत तो मुत्तकियों का ही (अच्छा) है । 184 ।

जो भी कोई पुण्यकर्म लेकर आएगा तो उसके लिए उससे उत्तम (प्रतिफल) होगा । और जो कुकर्म लेकर आएगा तो वे जिन्होंने कुकर्म किया, (उन्हें) वैसा ही प्रतिफल दिया जाएगा जैसा वे किया करते थे । 185 ।

وَلَا يَلْقَهُمَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ⑩

فَخَسَفَنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ ۝ فَمَا كَانَ
لَهُ مِنْ فَتَّةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُتَصْرِفِينَ ⑪

وَأَصْبَحَ الظَّالِمُونَ تَمَثُّلَ أَمْكَانَهُ بِالْأَمْسِ
يَقُولُونَ وَيُنَكَّانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنَّ مِنَ اللَّهِ
عَلَيْنَا الْخَسْفُ بِنَا ۝ وَنِكَانَهُ لَا يُفْلِحُ
الْكُفَّارُونَ ۝

۶۴

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا
يَرِيدُونَ حَلْوَى فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۝
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ⑫

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۝
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يَجْزِي اللَّذِينَ
عَمِلُوا الشَّيْءَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

निःसन्देह वह जिसने तुझ पर कुरआन को अनिवार्य किया है तुझे अवश्य एक लौट कर आने के स्थान की ओर वापस ले आएगा । तू कह दे, मेरा रब्ब उसे अधिक जानता है जो हिदायत लेकर आता है । और उसे भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टा में है । 186।

और तू कोई अभिलाषा नहीं रखता था कि तुझे पुस्तक दी जाए । परन्तु (यह) तेरे रब्ब की ओर से दया स्वरूप है । अतः काफिरों का कदापि सहायक न बन । 187।

और वे कदापि तुझे अल्लाह की आयतों (के अनुसरण) से न रोक सकें, जब कि वे तेरी ओर उतारी जा चुकी हों । और अपने रब्ब की ओर बुलाता रह और शिर्क करने वालों में से कदापि न बन । 188।

और अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को न पुकार । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । उसकी दीन्ति के सिवा प्रत्येक वस्तु नष्ट होने वाली है । उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे । 189। (रुक् १२)

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَآذِكَ
إِلَى مَعَادٍ قُلْ رَبِّنِيْ أَعْلَمُ مَمَّا جَاءَ
بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٌ ⑤

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوَ أَنْ يُلْقَى إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونُنَّ ظَاهِيرًا
لِّلْكُفَّارِينَ ۝

وَلَا يَصِدِّكَ عَنِ اِلَيْتِ اللَّهُ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلْتُ
إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا أَخْرَىٰ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ۝ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۝
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

29—सूरः अल—अन्कबूत

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 70 आयतें हैं।

इस सूरः का आरंभ एक बार फिर अलिफ़—लाम—मीम खण्डाक्षरों से किया गया है जिसमें यह संकेत है कि एक बार फिर अल्लाह तआला सूरः अल् बक्रः के विषयवस्तुओं को नए ढंग से दोहराएगा। अतः जैसा कि सूरः अल बकरः में यहूदियों का वर्णन था कि उनका ईमान लाना उस समय तक अल्लाह तआला को स्वीकार न हुआ जब तक वे परीक्षाओं पर खरा नहीं उतरे। अब इस सूरः में भी उसी विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में भी पहले लोगों की भाँति केवल ईमान का दावा करना पर्याप्त नहीं होगा बल्कि समस्त परीक्षाओं में से अवश्य गुज़रना होगा जिनसे पहली जातियों को गुज़रा गया।

उसके बाद अल्लाह तआला कहता है कि कुछ लोगों को अपने माता-पिता की ओर से भी कड़ी परीक्षा का सामना होता है जो मुश्किल होने के कारण अपने बच्चों को शिर्क की ओर बुलाते हैं। परन्तु मनुष्य को याद रखना चाहिए कि माता-पिता जिनके प्रति अल्लाह तआला ने दयापूर्ण बर्ताव करने की शिक्षा दी है, उनसे बहुत बढ़ कर अल्लाह का अपने भक्तों पर दया भाव है। इसलिए किसी मोल पर भी वे माता-पिता के लिए शिर्क को स्वीकार न करें।

जिस प्रकार सूरः अल बकरः के आरंभ में ही मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) का उल्लेख मिलता है और उनके आंतरिक रोगों पर से पर्दा उठाया गया है, उसी प्रकार इस सूरः में भी मुनाफ़िकों का वर्णन हुआ है और उनके भाँति-भाँति के आध्यात्मिक रोगों का विश्लेषण किया गया है।

ईमान लाने का दावा करने वाले इस परीक्षा में से भी गुज़रते हैं कि उनके बड़े लोग उनको कहते हैं कि हमारे पीछे लग जाओ। यदि हमारा धर्म ग़लत भी हुआ तो हम तुम्हारे बोझ उठा लेंगे। हालाँकि यह दावा करने वाले तो न केवल अपना बोझ उठाएँगे बल्कि अपने अनुयायियों को पथभ्रष्ट करने का बोझ भी उठाएँगे। और इस मामले का निर्णय क़्रयामत के दिन ही होगा कि वे अल्लाह तआला पर कैसे कैसे झूठ गढ़ा करते थे।

इसके पश्चात् हज़रत नूह अलै., हज़रत इब्राहीम अलै., हज़रत लूत अलै. और बहुत से ऐसे पूर्व कालीन नवियों की जातियों का वर्णन है जिन्हें अपने समय के रसूलों का विरोध करने के कारण विनष्ट कर दिया गया और उनके चिह्न इस धरती में आज तक मौजूद हैं। पुरातत्वविद् बहुत सी जातियों की खोज लगा चुके हैं और बहुत सी जातियों की खोज लगाना अभी शेष है। यहाँ तक कि नूह अलै. की नौका के सम्बन्ध में भी कहा

जाता है कि पुरातत्त्ववेत्ता इसकी खोज में जुटे हैं और अवश्य एक दिन उसे ढूँढ निकालेंगे।

इसके पश्चात् इस सूरः की प्रमुख आयत (संख्या 42) में, जिसका इस सूरः के शीर्षक अल अन्कबूत से सम्बन्ध है, यह वर्णन किया गया है कि जो लोग अल्लाह के सिवा किसी और को उपास्य ठहराते हैं उनका उदाहरण एक मकड़ी के सदृश है जो एक बहुत पेचदार जाला बनती है। इसी प्रकार उन लोगों के तर्क भी अत्यन्त पेचदार परन्तु वास्तव में मूर्खता पूर्ण हैं। उनमें फँसने वालों का उदाहरण भी उन मूर्ख मक्खियों की भाँति है जो मकड़ी के जाले में फँस कर उसका शिकार हो जाती हैं और उन्हें ज्ञान नहीं कि मकड़ी के जाले से कमज़ोर और कोई फँदा नहीं।

मकड़ी के जाले में यह बात पायी जाती है कि यद्यपि उसकी लार से उत्पन्न होने वाले धागे में इतनी शक्ति होती है कि इस मोटाई और वज़न के लोहे के धागे में भी वैसी शक्ति नहीं होती परन्तु इस पर भी वह एक कमज़ोर फँदा प्रमाणित होता है। अतः शत्रुओं के लिए एक चुनौती है कि वे मज़बूत फँदे भी बना कर देख लें। उनका अन्त भी मकड़ी के बनाए हुए फँदे के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा जो देखने में मज़बूत है परन्तु वास्तव में अत्यन्त कमज़ोर सिद्ध होता है।

इस सूरः की अन्तिम आयत में अल्लाह तआला उन लोगों को जो उसे निष्ठापूर्वक ढूँढते हैं यह शुभ-समाचार देता है कि उनका कोई भी धर्म हो, यदि अल्लाह चाहे तो उन्हें अन्तः सन्मार्ग तक पहुँचा देगा। और संसार के प्रत्येक धर्म में वह सच्चाइयाँ मौजूद हैं कि उन पर ध्यान देने के फलस्वरूप यदि अल्लाह चाहे तो अन्तः इस्लाम की सच्चाई और सन्मार्ग की ओर उन धर्मों के अनुयायियों का मार्गदर्शन संभव हो सकता है।



سُورَةُ الْعَنكُبُوتِ مَكَيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ سَمِعُونَ آيَةٍ وَ سَبْعَةُ رُكُونَ عَابِرٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे
अधिक जानने वाला हूँ । 21

क्या लोग यह धारणा कर बैठे हैं कि
यह कहने पर कि हम ईमान ले आए,
वे छोड़ दिए जाएँगे और परीक्षा में नहीं
डाले जाएँगे ? । 31

और हम निःसन्देह उन लोगों को जो
उनसे पहले थे परीक्षा में डाल चुके हैं ।
अतः वे लोग जो सच्चे हैं अल्लाह उनकी
अवश्य पहचान कर लेगा और झूठों को
भी अवश्य पहचान जाएगा । 41

क्या वे लोग जो बुरे कर्म करते हैं,
धारणा कर बैठे हैं कि वे (दण्ड से भाग
कर) हम से आगे निकल जाएँगे ? बहुत
बुरा है जो वे निर्णय करते हैं । 51

जो भी अल्लाह से मिलना चाहता है तो
(उसके लिए) अल्लाह का निर्धारित
समय अवश्य आने वाला है । और वह
बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान
रखने वाला है । 61

और जो जिहाद करे तो वह अपने ही
लिए जिहाद करता है । निःसन्देह
अल्लाह समस्त जगत से बेपरवाह है । 71
और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य
कर्म किए हम अवश्य उनकी बुराइयाँ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْمَ

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا أَمَّا
وَهُمْ لَا يَفْتَنُونَ ②

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ
اللَّهُ أَلَّا يَعْلَمُ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكُذَبِينَ ③

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّيُّونَ أَنْ
يُسِّقُونَا طَسَاءً مَا يَحْكُمُونَ ④

مَنْ كَانَ يَرْجُو إِلْقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ
لَا تِلْكَرِي وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يَجَاهُ لِنَفْسِهِ
إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَلَمِينَ ⑥

وَالَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصِّلْحَتِ

उनसे दूर कर देंगे । और अवश्य उन्हें उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे जो वे किया करते थे ॥8।

और हमने मनुष्य को पक्की नसीहत की कि अपने माता-पिता से सद्-व्यवहार करे । और (कहा कि) यदि वे तुझ से ज्ञागड़े कि तू मेरा साझीदार ठहराए, जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो फिर उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । मेरी ही ओर तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उन बातों से सूचित करूँगा जो तुम करते थे ॥9।

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उन्हें अवश्य पुण्यवान व्यक्तियों में सम्मिलित करेंगे ॥10।

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान ले आए । परन्तु जब उन्हें अल्लाह के मार्ग में दुःख दिया जाता है तो वे लोगों की परीक्षा को अल्लाह के अज्ञाब की भाँति समझ लेते हैं । और यदि तेरे रब्ब की ओर से कोई सहायता आई तो वे अवश्य कहेंगे कि हम तो निःसन्देह तुम लोगों के साथ थे । क्या अल्लाह सबसे बढ़ कर उसे नहीं जानता जो समस्त लोकों (में बसने वालों) के दिलों में है ॥11।

और अल्लाह निःसन्देह मोमिनों को भी पहचान लेगा और मुनाफ़िकों को भी पहचान लेगा ॥12।

और इनकार करने वालों ने ईमान लाने वालों से कहा कि हमारे पथ का

لَنْ كَفِرُوا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنْ جُنَاحْ يَتَّهِمُ
أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ①
وَوَصَّيْنَا إِلَيْنَا بِوَالَّذِي هُنَّا مُؤْمِنُونَ
جَاهَدُكَ لِتُشْرِكَ فِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ
عِلْمٌ فَلَا تُطْعِمُهَا إِلَى مَرْجَعِكَ
فَإِنْ شَاءَكَمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ②

وَالَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
لَنَدْخُلَنَّهُمْ فِي الصَّلِحَاتِ ③

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ أَمْنًا بِاللَّهِ فَإِذَا
أُوذَى فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ
اللَّهِ وَلَيْسَ جَاءَ نَصْرًا مِنْ رَبِّكَ لِيَقُولُنَّ
إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أَوْلَئِسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي
صُدُورِ الْعَلَمِينَ ④

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ أَمْنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنْفِقِينَ ⑤

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَيْنَاهُمْ أَمْنُوا الشَّيْعُوا

अनुसरण करो और हम तुम्हारे दोषों को (स्वयं) उठा लेंगे । हालांकि वे उनके दोषों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं होंगे । निःसन्देह वे ज्ञौठे हैं ॥13।

और वे अवश्य अपने बोझ उठाएँगे और अपने बोझों के अतिरिक्त कुछ और बोझ भी (उठाएँगे) । और क्रयामत के दिन वे अवश्य उसके सम्बन्ध में पूछे जाएँगे जो वे झूठ घड़ा करते थे ॥14।

(रुक् ١٣)

और निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा था । अतः वह उनमें नौ सौ पचास वर्ष रहा । फिर उनको तूफान ने आ पकड़ा और वे अत्याचार करने वाले थे ॥15।*

अतः हमने उसको और (उसके साथ) नौका में सवार होने वालों को मुक्ति प्रदान की और उस (नौका) को समस्त लोकों के लिए एक चिह्न बना दिया ॥16।

और इब्राहीम (को भी भेजा था) । जब उसने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह की उपासना करो और उसी का तकवा धारण करो । यह तुम्हारे लिए उत्तम है । (बेहतर होता) यदि तुम ज्ञान रखते ॥17।

निःसन्देह तुम अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों की उपासना करते हो और झूठ गढ़ते हो । निःसन्देह वे लोग

سَيِّلَنَا وَلَنْ حِمْلُ خَطِيلَكُمْ وَمَا هُمْ
بِحَمِيلٍ مِّنْ خَطِيلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
إِنَّهُمْ لَكَذِيلُونَ ⑩

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ
أَثْقَالِهِمْ وَلَيَسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا
كَانُوا يَفْرَغُونَ ⑪

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ فَلَمْ
فِيهِمْ أَلَفُ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا
فَأَخْذَهُمُ الظُّوفَانُ وَهُمْ ظَلِيمُونَ ⑫

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَبَ السَّفِينَةَ
وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَلَمِينَ ⑬

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ
وَأَنَّمَوْهُ ذِلِّكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ⑭

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُنْلِنِ اللَّهِ أَوْثَانًا
وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ

* हज़रत नूह अलै. की आयु जो 950 वर्ष वर्षान की गई है इससे अभिप्राय भौतिक आयु नहीं बल्कि आपकी शरीयत (धर्म-विधान) की आयु है ।

जिनकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो तुम्हारे लिए किसी जीविका का सामर्थ्य नहीं रखते । अतः अल्लाह के निकट से ही जीविका चाहो और उसकी उपासना करो और उसका कृतज्ञ बनो । उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । 18।

और यदि तुम झुठलाओ तो तुम से पहले भी कई जातियाँ झुठला चुकी हैं । और रसूल पर खुला-खुला संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त कुछ ज़िम्मेदारी नहीं । 19।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह किस प्रकार उत्पत्ति का आरम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? निःसन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है । 20।

तू कह दे कि धरती में भ्रमण करो फिर ध्यान दो कि कैसे उसने सृष्टि का आरम्भ किया । फिर अल्लाह उसे परकालीन उत्थान के रूप में उठाएगा । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 21।

वह जिसे चाहता है अज्ञाब देता है और जिस पर चाहे कृपा करता है । और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । 22।

और न तुम धरती में (अल्लाह को) विवश करने वाले हो और न आकाश में । और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई मित्र है न कोई सहायक । 23।

(रुक् ۲۴)

دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوْهُ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑯

وَإِنْ شَكَدْتُمْ بِوَاقْدَنْ كَذَبَ أَمْرٌ مِنْ
قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلِيَ الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ
الْمُبِينُ ⑯

أَوْلَادُهُ يَرُوا كَيْفَ يَبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يَعْيِدُهُ ۖ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑯

قُلْ سَيِّرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ
بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُشَيِّعُ النَّشَاءَ الْآخِرَةَ ۖ
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑯

يَعْذِبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۖ
وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ⑯

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٌ ⑯

और वे लोग जिन्होंने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया, यही लोग हैं जो मेरी दया से निराश हो चुके हैं। और यही लोग हैं जिनके लिए दुःखदायक अज्ञाब (निश्चित) है 124।

अतः उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, इसे वध कर दो अथवा जला दो। फिर अल्लाह ने उसे आग से मुक्ति प्रदान की। निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं 125।

और उसने कहा, तुम तो सांसारिक जीवन में परस्पर प्रेम के कारण अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों को पकड़ बैठे हो। फिर क्रायामत के दिन तुम में से कुछ, कुछ का इनकार करेंगे और कुछ, कुछ पर लानत डालेंगे। और तुम्हारा ठिकाना आग होगा और तुम्हारे कोई सहायक नहीं होंगे 126।

अतः लूट उस (अर्थात् इब्राहीम) पर ईमान ले आया और उसने कहा कि निःसन्देह मैं अपने रब्ब की ओर हिजरत करके जाने वाला हूँ। निःसन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है 127।

और हमने उसे (अर्थात् इब्राहीम को) इसहाक और याकूब प्रदान किए। और उसकी संतान में भी नुबुव्वत और पुस्तक (के पुरस्कार) रख दिए। और

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِاِيْتِ اللَّهِ وَلِقَاءَهُ
أُولَئِكَ يَسْوَمُ اِنْ رَحْمَتِي وَأُولَئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ
⑩

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمَةَ إِلَّا أَنْ
قَاتَلُوا افْتَلُوَةً أَوْ حَرْقُوَةً فَأَنْجَاهُ اللَّهُ
مِنَ التَّارِخِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ
⑪

وَقَالَ إِنَّمَا الْحَدْثَمُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْ أَنَّ
مَوَدَّةَ بَنِينَكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا عَمَّا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يَكُفُرُ بَعْضُكُمْ بِعَصْمِهِنَّ وَيَأْلَعُنَّ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَمَا أُولَئِكُمُ الثَّارُومَا
لَكُمْ مِنْ ثُصُرِينَ
⑫

فَأَمَّنَ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مَهَا جِرَعَةً
إِلَى رَبِّيٍّ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ
⑬

وَوَهَبْنَا لَهُ اسْلَحَّ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي
ذِرَّيْتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَأَتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي

उसे हमने उसका प्रतिफल संसार में भी दिया और परलोक में तो निःसन्देह वह सदाचारियों में गिना जाएगा । 28।

और लूट को भी (भेजा) जब उसने अपनी जाति से कहा कि तुम निःसन्देह निर्लज्जता की ओर (दौड़े) आते हो । समस्त जगत में कभी कोई इसमें तुम से आगे नहीं बढ़ सका । 29।

क्या तुम (कामवासना के साथ) पुरुषों की ओर आते हो और रास्ते में लूटमार करते हो । और अपनी बैठकों में अत्यन्त अप्रिय बातें करते हो । अतः उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, यदि तू सच्चों में से है तो हमारे पास अल्लाह का अज्ञाब ले आ । 30।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इन उपद्रव करने वाले लोगों के विरुद्ध मेरी सहायता कर । 31। (रुकू^۳۱)

और जब हमारे दूत इब्राहीम के पास शुभ-समाचार लेकर आए, उन्होंने यह भी कहा कि निःसन्देह हम (लूट की) इस बस्ती के रहने वालों को तबाह करने वाले हैं । निःसन्देह इसके निवासी अत्याचारी लोग हैं । 32।*

उसने कहा कि उसमें तो लूट भी है । उन्होंने (उत्तर में) कहा कि हम खूब जानते हैं कि उसमें कौन है । हम

الْدُّنْيَاٌ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّلِحِينَ ⑦

وَلَوْطًا إِذْ قَاتَلَ قَوْمَهُ إِنَّكُمْ تَأْتُونَ
الْفَاجِهَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ
الْعَلَمِينَ ⑧

إِنَّكُمْ تَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ
السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمَهُ إِلَّا أَنْ قَاتُوا إِلَيْتَهَا
بِعَذَابِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّدِيقِينَ ⑨

قَالَ رَبِّ النَّصْرَفِ عَلَى النَّقْوَمِ
الْمُفْسِدِينَ ⑩

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسْلَنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ
قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوْا أَهْلِ هَذِهِ الْقُرْيَةِ
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا أَطْلَمِينَ ⑪

قَالَ إِنَّ فِيهَا لَوْطًاٌ قَالُوا نَحْنُ
بِمَنْ قَيَّمَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتُهُ ⑫

* हजरत लूट अलै. की जाति को तबाह करने के लिए जो फ़रिश्ते आए थे वे उससे पहले हजरत इब्राहीम अलै. के समक्ष प्रकट हुए थे और हजरत इब्राहीम अलै. चूँकि कोमल-हृदयी थे इस कारण उन्होंने उस जाति को क्षमा करने के लिए अल्लाह तआला से बहुत आग्रह किया ।

كَانَتْ مِنَ الْغَيْرِينَ ⑩

निःसन्देह उसे और उसके समस्त घर वालों को बचा लेंगे सिवाए उसकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है । 33।
और जब हमारे दूत लूट के पास आए तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और मन ही मन में उनसे बहुत घुटन अनुभव की तो उन्होंने कहा कि डर नहीं और कोई शोक न कर । हम निःसन्देह तुझे और तेरे सब घर वालों को बचा लेंगे, सिवाए तेरी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है । 34।

निःसन्देह हम इस वस्ती के रहने वालों पर आकाश से एक अज्ञाब उतारने वाले हैं क्योंकि वे दुराचार करते हैं । 35।

और निःसन्देह हमने उसमें उन लोगों के लिए केवल एक उज्ज्वल चिह्न शेष छोड़ा जो बुद्धि से काम लेते हैं । 36।

और (हमने) मद्यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) । तो उसने कहा कि हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो और अन्तिम दिन की आशा रखो और धरती में उपद्रवी बन कर अशांति न फैलाओ । 37।

अतः (जब) उन्होंने उसको झुठला दिया तो उन्हें एक भूकम्प ने आ पकड़ा । अतः वे ऐसे हो गये कि मानों अपने घरों में घुटनों के बल गिरे हुए थे । 38।

और आद और समूद (जाति) को भी (हमने भूकम्पों से तबाह कर दिया) । और तुम पर यह बात उनके निवास स्थलों (के खण्डहरों) से खूब खुल चुकी

وَلَمَّا آتَى جَاءَتْ رُسْلَنَا لُوطًا
سُقْعَةً بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذِرْعًا ۖ وَقَالُوا
لَا تَخْفَ وَلَا تَخْرُنْ ۖ إِنَّا مُنْجَوْك
وَأَهْلَكَ إِلَّا أَمْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ
الْغَيْرِينَ ⑪

إِنَّا مُنْزَلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقُرْيَةِ
رِجْرًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسَدُونَ ⑫
وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيْنَهُ لِقَوْمٍ
يَقْلُولُونَ ⑬

وَإِلَىٰ مَدِينَ أَحَادِيمْ شَعَيْبًا لَّا فَقَالَ يَقُومُ
أَعْبُدُو اللَّهَ وَأَرْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرِ وَلَا تَعْنُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ⑭

فَكَذَّبُوهُ فَأَخْذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْ
فِي دَارِ هَمْ جُثْمَيْنَ ⑮

وَعَادَ أَوْ نَمُودًا وَقَذَبَيْنَ لَكُمْ مِنْ
مَسِكِنِهِمْ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَنُ

है। और शैतान ने उन्हें उनके कर्मों को अच्छा बना कर दिखाया और उसने उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया। हालाँकि वे अच्छा भला देख रहे थे। 139।

और क़ारून और फिरआौन और हामान को भी (हमने उनकी पथभ्रष्टता का दण्ड दिया)। और मूसा उनके पास निःसन्देह खुले-खुले चिह्न ला चुका था और फिर भी उन्होंने धरती में अहंकार किया और वे (हमारी पकड़ से) आगे निकल जाने वाले बन न सके। 140।

अतः हमने प्रत्येक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें ऐसा गिरोह भी था जिन पर हमने कंकर बरसाने वाला एक अंधड़ भेजा। और उनमें ऐसा गिरोह भी था जिसको एक भयानक गरज ने पकड़ लिया। और उनमें से ऐसा गिरोह भी था जिसे हमने धरती में धंसा दिया। और उन में से ऐसा भी एक गिरोह था जिसे हमने डुबो दिया। और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करने वाले थे। 141।*

उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मित्र

أَعْمَلُهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا
مُسْتَبْصِرِينَ ①

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۝ وَلَقَدْ
جَاءَهُمْ مُوسَى بِالْبُيُّنَتِ فَاسْتَكْبَرُوا
فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا اسِيقِينَ ②

فَكُلَّا أَحْذَنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلَنَا
عَلَيْهِ حَاصِبًاٌ وَمِنْهُمْ مَنْ أَخْذَنَاهُ
الصَّيْحَةَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسْفَنَا بِهِ
الْأَرْضَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقَنَا ۝
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمُهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ④

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ

* नबियों की विरोधी जातियों के अन्त का विवरण इस आयत में मिलता है कि किस-किस साधन से वे नष्ट की गईं। कुछ पर बहुत कंकर बरसाने वाली आंधी चली जिनसे वे नष्ट हो गईं। कुछ को भयंकर गरज ने आ पकड़ा। कुछ भूकम्पों के परिणामस्वरूप धरती में गाढ़ दी गई और कुछ डुबो दी गई। साधारणतः यही चार साधन हैं जो नबियों के विरोधियों को तबाह करने के लिए प्रयोग होते रहे हैं।

बनाया, मकड़ी की भाँति है। उसने भी एक घर बनाया और समस्त घरों में निःसन्देह मकड़ी ही का घर सर्वाधिक कमज़ोर होता है। काश वे यह जानते । 42।

निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक उस वस्तु को जानता है जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 43।

और ये उदाहरण हैं जो हम लोगों के समक्ष वर्णन करते हैं परन्तु बुद्धिमानों के अतिरिक्त इनको कोई नहीं समझता । 44।

अल्लाह ने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है। निःसन्देह इसमें मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ा चिह्न है । 45। (रुक् ४/१६)

كَمَلَ الْعَنْكَبُوتُ إِنَّهُ دَبٌّ بَيْتًا وَإِنَّ
أُوْهَنَ الْبَيْوَتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ④

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ أَعَزِيزُ الْحَكِيمِ ④

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَصِرِبُهَا لِلنَّاسِ ۝ وَمَا
يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَلِمُونَ ④

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِيقَةِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَاءِيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

पुस्तक में से जो तेरी ओर वहाँ किया जाता है, तू (उसे) पढ़ कर सुना और नमाज़ को क्रायम कर। निःसन्देह नमाज़ निर्लज्जता और प्रत्येक अप्रिय बात से रोकती है। और अल्लाह का स्मरण निःसन्देह समस्त (स्मरणों) से श्रेष्ठ है। और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। 146।

और अहले किताब से बहस न करो परन्तु उस (दलील) के साथ जो उत्तम हो। सिवाय उन के जिन्होंने अत्याचार किया और (उनसे) कहा कि हम उस पर ईमान ले आए हैं जो हमारी ओर उतारा गया और उस पर (भी) जो तुम्हारी ओर उतारा गया। और हमारा उपास्य और तुम्हारा उपास्य एक ही है और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। 147।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर पुस्तक उतारी। अतः वे लोग जिनको हमने पुस्तक दी है, वे उस पर ईमान लाते हैं और इन (अहले किताब) में से भी (ऐसा गिरोह) है जो उस पर ईमान लाता है। और हमारी आयतों का इनकार काफिरों के सिवा कोई नहीं करता। 148।

और तू इससे पहले कोई पुस्तक नहीं पढ़ता था और न तू अपने दाहिने हाथ से उसे लिखता था। यदि ऐसा होता तो झुठलाने वाले (तेरे बारे में) अवश्य शंका में पड़ जाते। 149।

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمْ
الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ شَهِيْدٌ عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ ۖ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۖ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ⑩

وَلَا تَجَادُلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالْقِرْآنِ
أَحْسَنْ ۖ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا
أَمْتَأْلِيَنِيَّ أَنْزَلَ إِلَيْنَا وَأَنْزَلَ إِلَيْكُمْ
وَالْهُنَّا قَوْمٌ وَاحِدُونَ حُكْمُ
مُسْلِمُونَ ⑪

وَكَذِلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَإِنَّ الظَّاهِرَ
أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمَنْ هُوَ لَائِعٌ
مِنْ يَوْمِنْ بِهِ ۖ وَمَا يَجْحَدُ بِإِيمَانِ
إِلَّا الْكُفَّارُونَ ⑫

وَمَا كَنْتَ شَهِيدًا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا
تَخْطُلْهُ بِيَمِينِكَ إِذَا لَأْزَلَتِ الْمُبْطِلُونَ ⑬

बल्कि वे वे खुली-खुली आयतें हैं जो उनके सीनों में (दर्ज) हैं जिनको ज्ञान दिया गया । और हमारी आयतों का इनकार अत्याचारियों के अतिरिक्त और कोई नहीं करता । 150।

और वे कहते हैं, क्यों न उस पर उसके रब्ब की ओर से चिह्न उतारे गए । तू कह दे कि चिह्न तो केवल अल्लाह के निकट हैं । और मैं तो केवल एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ । 151।

क्या (यही) उनके लिए पर्याप्त नहीं कि हमने तुझ पर एक पुस्तक उतारी है जो उन के समक्ष पढ़ी जाती है । और निःसन्देह इस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए एक बड़ी कृपा भी है और बहुत बड़ा उपदेश भी । 152। (रुक् ٥)

तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह साक्षी के रूप में पर्याप्त है । वह जानता है जो आसमानों और धरती में है । और वे लोग जो असत्य पर ईमान ले आए और अल्लाह का इनकार कर दिया यही वे लोग हैं जो हानि उठाने वाले हैं । 153।

और वे तुझ से शीघ्र अज्ञाब लाने की माँग करते हैं । और यदि निश्चित अवधि तय न होती तो अवश्य उनके पास अज्ञाब आ जाता । और वह उनके पास निःसन्देह (इस प्रकार) अचानक आएगा कि वे (उसको) समझ नहीं सकेंगे । 154।

वे तुझ से अज्ञाब को मांगने में जल्दी करते हैं । जबकि नरक काफिरों को अवश्य घेर लेने वाला है । 155।

بِلْ هُوَ الْيَتِيْ بَيْنَتِيْ فِيْ صَدْرِ الْذِيْنِ
أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِاِيْتَتَاهُ إِلَّا
الظَّلِيمُونَ ⑩

وَقَالُوا وَلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ اِيْتَجْ مِنْ رَبِّهِ
قُلْ اِنَّمَا الْاِيْتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا آنَانَ نَزِيرٍ
مُّبَيِّنٌ ⑩

أَوْلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
يُشَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذُكْرًا
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑩

قُلْ كَفِيْ بِاللَّهِ بَيْنِيْ وَبِيْتَكَمْ شَهِيدًا
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْذِيْنِ
أَمْوَالِيْأَنْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أَوْلَيْكَ
هُمُ الْحَسِيرُونَ ⑩

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجَلُ
مَسْئَى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَأْتِيْهُمْ
بَعْثَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑩

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ
لَمْحِيطَةٌ بِالْكُفَّارِينَ ⑩

जिस दिन अज्ञाब ऊपर से भी और उनके पाँव के नीचे से भी उनको ढाँप लेगा । और (अल्लाह) कहेगा कि जो कुछ तुम किया करते थे उसे चखो । १५६।

हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! मेरी धरती निश्चित रूप से विस्तृत है । अतः केवल मेरी ही उपासना करो । १५७।

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है । फिर हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे । १५८।

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उनको स्वर्ग में अवश्य ऐसे अटारियों में स्थान प्रदान करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे सदा उनमें रहेंगे । कर्म करने वालों का क्या ही उत्तम प्रतिफल है । १५९।

(ये वे लोग हैं) जिन्होंने धैर्य किया और अपने रब्ब पर भरोसा करते रहे । १६०।

और कितने ही धरती पर चलने वाले जीवधारी हैं कि वे अपनी जीविका उठाए नहीं फिरते । अल्लाह ही है जो उन्हें और तुम्हें भी जीविका प्रदान करता है । और वह खूब सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । १६१।

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को उत्पन्न किया और सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तो फिर (वे) किस ओर उल्टे फिराए जाते हैं ? । १६२।

يَوْمَ يُعْشِهِمُ الْعَذَابُ مِنْ فُوْقِهِمْ وَمِنْ
تَحْتِ أَرْجَلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑩

إِعْبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضَنِي وَاسِعَةٌ
فَأَيَّاً فَاعْبُدُونِ ⑪

كُلُّ نَفِسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ لَكُمْ إِيمَانًا
تُرْجَمُونَ ⑫

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلَاحَتِ
لَنَبُوَّنَّهُمْ مِنْ جَنَّةٍ عَرَفًا تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ خَلِيلُنَّ فِيهَا
نِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ⑬

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ⑭
وَكَائِنُونَ مِنْ ذَآءِبَةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا
اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِلَيْكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ⑮

وَلَيْسَ سَائِنَهُمْ مِنْ خَلْقِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لِيَقُولُنَّ اللَّهُ فَإِنِّي مُؤْفَكُونَ ⑯

अल्लाह ही है जो अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और उसके लिए (जीविका) तंग भी कर देता है । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु को खूब जानने वाला है ।¹⁶³

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमान से पानी उतारा ? फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह, समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए है । परन्तु अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते ।¹⁶⁴

(स्कू ६)

और यह सांसारिक जीवन लापरवाही और खेल-तमाशे के अतिरिक्त कुछ नहीं । और निःसन्देह परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है । काश कि वे जानते ।¹⁶⁵

अतः जब वे नौका में सवार होते हैं तो वे अल्लाह के लिए अपनी श्रद्धा को विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारते हैं । फिर जब वह उन्हें स्थल भाग की ओर बचा कर ले जाता है तो सहसा वे शिर्क करने लगते हैं ।¹⁶⁶

ताकि जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें और ताकि वे कुछ अस्थायी लाभ उठा लें । फिर वे शीघ्र ही (इसका परिणाम) जान लेंगे ।¹⁶⁷

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने एक शांतिपूर्ण हरम (अर्थात् मक्का क्षेत्र)।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ^⑩

وَلَئِنْ سَأَتْهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاوَاتِ
فَأَحِيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا يَقُولُونَ
اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بِلْ أَكَثَرُهُمْ لَا
يَعْقِلُونَ^{۱۱}

وَمَا هِذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوَ وَلِحَبْ
وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهُوَ الْحَيَاةُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ^{۱۲}

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلُكِ دَعَوْ اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينُ فَلَمَّا جَعَلُهُ رَأَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ
يُشْرِكُونَ^{۱۳}

لَيَكُفُرُوا بِمَا أَتَيْهُمْ وَلَيَمْتَعِوا^{۱۴}
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا أُمَّا

बनाया है। जबकि उनके इद-गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं। तो फिर क्या वे झूठ पर ईमान लाएँगे और अल्लाह की नेमत का इनकार कर देंगे? 168।

और उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर एक बड़ा झूठ गढ़े अथवा सत्य को झुठला दे जब वह उसके पास आए। क्या काफिरों के लिए नरक में ठिकाना नहीं? 169।

और वे लोग जो हमारे बारे में प्रयत्न करते हैं हम अवश्य उन्हें अपनी राहों की ओर मार्गदर्शित करेंगे। और निःसन्देह अल्लाह उपकार करने वालों के साथ है 170। (रुक् 7)

وَيَسْخَطُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ^١
أَفَإِلْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَيُنْعَمَّةُ اللَّهُ
يُكَفِّرُونَ^٢

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ
كَذَبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ
مَثْوَى لِلْكُفَّارِينَ^٣

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِي سَبِيلِنَا
وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ^٤

30 - सूरः अर-रूम

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं।

इस सूरः का आरंभ भी खण्डाक्षर अलिफ़-लाम-मीम से हुआ है। अलिफ़-लाम-मीम खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सूरतों में यह उल्लेख है कि अल्लाह तआला सबसे अधिक जानता है कि क्या हुआ और क्या होने वाला है।

इससे पूर्ववर्ती सूरः के अंत पर यह दावा था कि अल्लाह तआला निःसन्देह उपकार करने वालों के साथ है। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे बड़े उपकार करने वाले थे। अतः आपको और भी विजयों का शुभ-समाचार दिया गया जिनका वर्णन इस सूरः में अनेक स्थान पर मिलता है। सबसे पहले भविष्यवाणी के रंग में यह वर्णन किया गया कि ईरान के मुश्त्रिकों को रोम की ईसाई सरकार के विरुद्ध (जो एकेश्वरवादी होने का दावा तो करते थे) थोड़े से क्षेत्र पर विजय प्राप्त हुई तो उससे मुश्त्रिकों ने यह शकुन निकाला कि वे अल्लाह तआला के साथ स्वयं को जोड़ने वालों पर अंतिम विजय भी प्राप्त कर लेंगे। इस सूरः में यह घोषणा की गई है कि ऐसा कदापि नहीं होगा। रोमवासी निश्चित रूप से अपने खोए हुए भू-भाग को ईरान के मुश्त्रिकों से दोबारा छुड़वा लेंगे और इस पर मुसलमान यह आशा रखते हुए खुशियाँ मनाएँगे कि अब अल्लाह ने चाहा तो मुसलमानों को भी मुश्त्रिकों पर भारी विजय प्राप्त होगी।

यह भविष्यवाणी उन दिनों की है जब मुसलमान बहुत कमज़ोर थे और कोई उनकी विजय का दावा नहीं कर सकता था। इस प्रकरण में यह भविष्यवाणी भी इस विजय के बादे में निहित थी कि मुसलमानों को मुश्त्रिकों की वैभवशाली साम्राज्य अर्थात् ईरान की सत्ता पर भी विजय प्राप्ति होगी। अतः बिल्कुल ऐसा ही हुआ। इतने स्पष्ट प्रमाण को देखते हुए भी लोग अल्लाह तआला का इनकार करते चले जाते हैं। अतः उनको एक बार फिर इस वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया कि क्या वे धरती और आकाश अथवा स्वयं अपने आप पर ध्यान नहीं देते ताकि उनको अल्लाह तआला की सत्ता के प्रमाण स्वयं अपने अन्दर और धरती व आकाश के क्षितिजों में दिखाई देने लगें। इसी प्रकार उनका ध्यान पहली जातियों के अवशेषों की ओर आकर्षित करवाया गया कि यदि ये काफिर अपनी अवस्था से अनजान हैं तो फिर पहली जातियों के परिणाम को देख लें। सांसारिक दृष्टि से वे कितनी बलवान जातियाँ थीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में उपस्थित जातियों से कहीं अधिक उन्होंने धरती को आबाद किया परन्तु जब उनके पास रसूल आए और उन्होंने इनकार कर दिया तो उनकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला दी गई।

इसके पश्चात् विभिन्न उदाहरणों के द्वारा यह विषय लागतार जारी है कि जिधर भी तुम नज़र दौड़ाओगे उधर तुम्हें जीवन के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जीवन का विषय व्याप्त दिखाई देगा। परन्तु खेद है कि मनुष्य इस पर विचार नहीं करता कि इस सारी व्यवस्था का अन्तिम लक्ष्य यह तो नहीं हो सकता कि मनुष्य को बार-बार इसी संसार के लिए जीवित किया जाए। अन्तिम जीवन वही होगा जिसमें उसे हिसाब देने के लिए अल्लाह के समक्ष उपस्थित किया जाएगा।

अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक बार फिर इस बात की नसीहत की गई है कि तू धैर्य से काम ले। अल्लाह का वादा निस्सन्देह सत्य है और वे लोग जो विश्वास नहीं करते, तुझे अपनी आस्था से उखाड़ न सकें। यहाँ धैर्य से काम लेने का अर्थ यह है कि नेकियों से चिमटे रहो और किसी कीमत पर भी सत्य को न छोड़ो।



سُورَةُ الرُّؤْمٍ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ إِحْدَى وَسِتَّةِ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे
अधिक जानने वाला हूँ । 12

रोम वासी पराजित किए गए । 13

निकट वर्ती धरती में और वे पराजित
होने के पश्चात फिर अवश्य विजयी
होंगे । 14

तीन से नौ वर्ष की अवधि तक ।
आदेश अल्लाह ही का (चलता) है,
पहले भी और बाद में भी । और उस
दिन मोमिन (भी अपनी विजयों से)
बहुत खुश होंगे । 15

(जो) अल्लाह की सहायता से (होंगी)
वह जिसकी चाहता है सहायता करता है
और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-
बार दया करने वाला है । 16

(यह) अल्लाह का वादा (है और)
अल्लाह अपने वादे नहीं तोड़ता । परन्तु
अधिकतर लोग नहीं जानते । 17*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْرَّحْمَنُ

غُلَبَتِ الرُّومُ ②

فِي أَذْفَى الْأَرْضِ وَهُمْ قَرْبٌ بَعْدَ غَلَبِهِمْ
سَيَعْلَمُونَ ③

فِي بُصُّرٍ سِينِينَ ۝ يَلِلُو الْأَمْرُ مِنْ قَبْلٍ وَمِنْ
بَعْدٍ ۝ وَيَوْمٌ يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُونَ ④

يَصْرِيْلُهُ ۝ يَصْرِيْرُ مَنْ يَكْاهُ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ⑤

وَعْدَ اللَّهِ ۝ لَا يَخْلُفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلِكُنْ
أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑥

* आयत 3 से 7 : सूरः अर-रूम की इन आरभिक आयतों में रोमन साम्राज्य का अग्नि उपासक ईरानी साम्राज्य के साथ युद्ध में निकट की धरती में पराजित होने का उल्लेख है । परन्तु साथ ही यह भविष्यवाणी की गई है कि दोबारा उन को ईरान पर विजयी किया जाएगा और ऐसा नौ वर्षों के अन्दर-अन्दर होगा । यह भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सललम की सन्नाई की एक बड़ी दलील है कि अवश्य सर्वज्ञ अल्लाह ने ही आपको यह सूचना दी थी ।
फिर इन्हीं आयतों में अन्तोगत्वा मुसलमानों की विजय प्राप्ति की भविष्यवाणी भी है जो इसी प्रकार बड़ी शान से पूरी हुई । यह विजय भी कुछ वर्षों के अन्दर बद्र-युद्ध के समय प्राप्त हुई ।

वे सांसारिक जीवन के ज्ञाहिरी (रूप) को जानते हैं और परलोक के बारे में वे असावधान हैं । १८।

क्या उन्होंने अपने दिलों में विचार नहीं किया (कि) अल्लाह ने आसमानों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सत्य के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है । और निःसन्देह लोगों में से अधिकतर अपने रब्ब की भेट से अवश्य इनकार करने वाले हैं । १९।

और क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया ताकि वे विचार कर सकते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे । वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे और उन्होंने धरती को फाड़ा और उसे उससे अधिक आबाद किया था जैसा इन्होंने उसे आबाद किया है । और उनके पास भी उनके रसूल खुल-खुले तिहाले कर आए थे । अतः अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते थे । १०।

फिर वे लोग जिन्होंने बुराई की, उनका बहुत बुरा अन्त हुआ क्योंकि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनसे उपहास करते थे । ११।

(स्कू ١/٤)

अल्लाह सृष्टि का आरंभ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है । फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । १२।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفِلُونَ ⑤

أَوْلَمْ يَقْرَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَا حَلَقَ اللَّهُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ
وَاجْلِ مَسْعَى ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ
بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكُفَّارُونَ ⑥

أَوْلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثْرًا وَالْأَرْضُ
وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا
وَجَاءَتْهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ
اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۗ

لَمْ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ أَسَاءُوا وَالسُّوَّادُ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ۗ

اللَّهُ يَعْلَمُ الْخَلْقَ ثُمَّ يَعْنِيهِ ثُمَّ
إِلَيْهِ تُرْجَمُونَ ⑦

और जिस दिन कथामत प्रकट होगी अपराधी निराश हो जाएंगे । 131।

और उनके (कल्पित) साझीदारों (अर्थात् उपास्यों) में से उनके लिए कोई सिफारिश करने वाले नहीं होंगे और वे अपने (बनाए हुए) साझीदारों का (स्वयं ही) इनकार करने वाले होंगे । 141।

और जिस दिन कथामत प्रकट होगी उस दिन (लोग) अलग-अलग विखर जाएंगे । 151।

अतः वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए, एक बाग में उन्हें प्रसन्नता के साधन उपलब्ध किए जाएंगे । 161।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को और परलोक की भेट को झुठलाया । अतः यही वे लोग हैं जो अज्ञाव में उपस्थित किए जाएंगे । 171।

अतः अल्लाह (प्रत्येक अवस्था में) पवित्र है । उस समय भी जब तुम सायंकाल में प्रविष्ट होते हो और उस समय भी जब तुम प्रातःकाल (में प्रवेश) करते हो । 18।

और आसमानों में भी और धरती में भी, और रात को भी और उस समय भी जब तुम दोपहर गुजारते हो, समस्त स्तुति उसी के लिए है । 19।

वह निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात्

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبَلِّسُ
الْمُجْرِمُونَ

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شَرِكَاءِ يُهْشَفُ عَوْنَى
وَكَانُوا إِشْرَكَاءِ لِهُمُ الْكُفَّارُينَ ⑯

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُوَمِّدُ يَتَّقَرَّ قُوَنَ ⑯

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ فَهُمْ
فِي رُوضَةٍ يُخْبَرُونَ ⑯

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلَقَاءِ
الْآخِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي العَذَابِ مُحْضَرُونَ ⑯

فَسَبِّحْنَ اللَّهَ حِينَ تَمَسَّونَ وَحْيَنَ
تُصْبِحُونَ ⑯

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعِيشِيَا
وَحْيَنَ تُظَهَرُونَ ⑯

يُخْرِجُ الْحَقِّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَقِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

जीवित कर देता है और इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे 120। (रुक् २)

और उसके चिह्नों में से (एक चिह्न यह भी) है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर (मानो) सहसा तुम मनुष्य बन कर फैलते चले गए । 21।

और उसके चिह्नों में से (यह चिह्न भी) है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही वर्ग में से जोड़े बनाए ताकि तुम सन्तुष्टि (प्राप्त करने) के लिए उनकी ओर जाओ और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया पैदा कर दिया । निःसन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं बहुत से चिह्न हैं । 22।

और उसके चिह्नों में से आसमानों और धरती की उत्पत्ति है । और तुम्हारी भाषाओं और रंगों के भेद भी । निःसन्देह इसमें ज्ञानियों के लिए बहुत से चिह्न हैं । 23।*

और उसके चिह्नों में से तुम्हारा रात को और दिन को सोना और तुम्हारा उसकी कृपा का तलाश करना भी है । निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो (बात) सुनते हैं । 24।

और उसके चिह्नों में से है कि वह तुम्हें भय और आशा की अवस्था में विजली दिखाता है और बादलों से

وَكَذِلِكَ تُخْرِجُونَ^{۱۳}

وَمِنْ آيَتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ فَإِذَا
أَنْتُمْ بَشَرٌ تَسْتَشِرُونَ^{۱۴}

وَمِنْ آيَتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ أَنفُسِكُمْ
أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَتِي لِقَوْمٍ
يَّقْرَبُونَ^{۱۵}

وَمِنْ آيَتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالْخِلَافُ الْسِتِّينُ وَالْوَابِكُمْ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَا يَتِي لِلْعَلِمِينَ^{۱۶}

وَمِنْ آيَتِهِ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَابْتِغَاوُكُمْ مِّنْ فَصْلِمٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَا يَتِي لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ^{۱۷}

وَمِنْ آيَتِهِ يُرِيْكُمُ الْبَرَقَ حَوْفًا وَظَمَعًا
وَيَنْزَلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيَخِيِّبِ الْأَرْضَ

* इस आयत में यह भी संकेत है कि आरम्भ में एक ही भाषा थी जो ईश्वरीय भाषा थी । फिर मानव जाति के विभिन्न क्षेत्रों में फैल जाने के फलस्वरूप क्षेत्रीय परिवर्तनों के साथ-साथ भाषा भी परिवर्तित होती रही । इसी प्रकार आरम्भ में सब मनुष्यों का रंग भी एक ही था फिर वह भी उण्ठ, शीत और शीतोष्ण क्षेत्रों के अनुसार परिवर्तित होता रहा ।

पानी उतारता है । फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर देता है । निःसन्देह इसमें बुद्धि रखने वालों के लिए बहुत से चिह्न हैं । 125।

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि आसमान और धरती उसके आदेश के साथ क्रायम हैं । फिर जब वह तुम्हें धरती से एक आवाज़ देगा तो सहसा तुम निकल खड़े होगे । 126।

और उसी का है जो आसमानों और धरती में है । सब उसी के आज्ञाकारी हैं । 127।

और वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है और उस के लिए यह बहुत सरल है । और आसमानों और धरती में उसका उदाहरण सर्वोपरि है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 128। (रुकू 3/6)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारा अपना ही उदाहरण देता है । क्या उन लोगों में से जो तुम्हारे अधीन हैं ऐसे भी हैं जो उस जीविका में साज्जीदार बनें हों जो हमने तुम्हें प्रदान की है । फिर तुम उसमें एक समान हो जाओ (और) उनसे उसी प्रकार डरो जैसे तुम अपनो से डरते हो ? इसी प्रकार हम उन लोगों के लिए आयतें खूब खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं । 129।

بَعْدَ مَوْتِهَا إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَتٌ لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ⑩

وَمِنْ أَيْتَهُ أَنْ تَقُومُ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ
بِإِمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاهُ كُمْ دَعْوَةً مِّنَ
الْأَرْضِ إِذَا آتَهُنَّ تَخْرُجُونَ ⑪

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
كُلُّهُ لَهُ قُنْطُونَ ⑫

وَهُوَ الَّذِي يَبْدُوُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعْيِدُهُ
وَهُوَ أَهْوَانُ عَلَيْهِ ۝ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَى
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ⑬

صَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِنْ أَنْفُسِكُمْ ۝ هَلْ
لَكُمْ مِنْ مَاءٍ لَكُثُرَةٌ أَيْمَانُكُمْ مِنْ شَرَكَاءَ
فِي مَارِزٍ قِنْكُمْ فَإِنَّمَا فِيهِ سَوَاءٌ
تَحَافُونَهُمْ كَحِينَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۝ كَذِلِكَ
نَفَصِلُ الْأَيَتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑭

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया उन्होंने बिना किसी ज्ञान के अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया । अतः कौन उसे हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने पथब्रष्ट ठहरा दिया । और उन (जैसों) के कोई सहायक नहीं होंगे । 30।

अतः (अल्लाह की ओर) सदा ज्ञुकाव रखते हुए अपना ध्यान धर्म पर केन्द्रित रख । यह अल्लाह की प्रकृति है जिस के अनुरूप उसने मनुष्यों की सृष्टि की। अल्लाह की सृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं । यह कायम रखने और कायम रहने वाला धर्म है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 31।*

सदा उसी की ओर ज्ञुकते हुए (चलो) और उसका तक़वा धारण करो और नमाज़ को कायम करो और मुश्रिकों में से न बनो । 32।

(अर्थात्) उनमें से (न बनो) जिन्होंने अपने धर्म को विभाजित कर दिया और वे सम्प्रदायों (में बट चुके) थे । प्रत्येक सम्प्रदाय (वाले) जो उनके पास था उस पर इतरा रहे थे । 33।

और जब लोगों को कोई कष्ट पहुँचे तो वे अपने रब्ब को उसके समक्ष विनम्रतापूर्वक ज्ञुकते हुए पुकारते हैं ।

بَلِ اتَّبَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَعْدِي مَنْ أَصَلَ اللَّهَ
وَمَا لَهُمْ قُنْ تِصْرِينَ ⑦

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلَّدِينِ حَنِيفًا فَطَرَتْ
اللَّهُ أَنَّى فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ
لِحَقِّنَ اللَّهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقِيمُ وَلَا كُنَّ
أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑦

مُنِيبُونَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ⑦

مِنَ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شَيْعَةً
كُلُّ حِرْبٍ بِمَا لَدِيهِمْ فَرِحُونَ ⑦

وَإِذَا مَسَ النَّاسُ ضُرُّدَعَوْارَبَهُمْ

* अर्थात् अल्लाह तआला ने भक्तों को प्रकृति के अनुरूप पैदा किया है और प्रत्येक मनुष्य इसी एक धर्म पर पैदा होता है । अर्थात् पवित्र, स्वच्छ प्रकृति लेकर । बाद में बड़े होकर विभिन्न प्रभावों के परिणामस्वरूप वह भटक जाता है । इस आयत के अनुसार चाहे हिन्दू, ईसाई, यहूदी अथवा मुश्रिक का बच्चा हो जन्म लेते समय निष्पाप ही होता है ।

फिर जब वह उन्हें अपनी ओर से कृपा (का स्वाद) चखाता है तो सहसा उनमें से एक गिरोह (वाले) अपने रब्ब का साझीदार ठहराने लगते हैं । 134।

ताकि जो हमने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें । अतः अस्थायी लाभ उठा लो, शीघ्र तुम (इसका परिणाम) जान लोगे । 135।

क्या हमने उन पर कोई भारी दलील उतारी है फिर वह उनसे उसके बारे में वार्तालाप करती है जो वे उस (अल्लाह) का साझीदार ठहराते हैं ? । 136।

और जब हम लोगों को कोई कृपा (का स्वाद) चखाते हैं तो उस पर वे इतराने लगते हैं । और यदि उन्हें कोई बुराई पहुँच जाए जो (स्वयं) उनके हाथों ने आगे भेजी हो तो वे सहसा निराश हो जाते हैं । 137।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और तंग भी करता है । निःसन्देह इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं । 138।

अतः अपने निकट सम्बन्धियों को और निर्धन को और यात्री को उसका अधिकार दो । यह बात उन लोगों के लिए अच्छी है जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं । और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं । 139।

مُنِيَّبِينَ إِلَيْهِ تُمَّا إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً
إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۖ

لِيَكُفُرُوا بِمَا أَتَيْنَاهُمْ فَتَمَّعِنُوا
فَسُوقَ تَعْلَمُونَ ۖ

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَنًا فَهُوَ يَنْكَلِمُ بِمَا
كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۖ

وَإِذَا أَذْقَنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ
تُصْبِّهُمْ سَيِّئَةً بِمَا قَدَّمُتْ أَيْدِيهِمْ
إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۖ

أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُونَ ۖ

فَاتِّ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمُسْكِنُ وَابْنَ
السَّيْلِ ۖ ذَلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَرِيدُونَ
وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَئِكُ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ

और जो तुम ब्याज के रूप में देते हो ताकि लोगों के धन में मिल कर वह बढ़ने लगे तो अल्लाह के निकट वह नहीं बढ़ता। और अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए तुम जो कुछ ज़कात देते हो तो यहीं वे लोग हैं जो (उसे) बढ़ाने वाले हैं । 140।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें जीविका प्रदान की। फिर वह तुम्हें मारेगा और वही तुम्हें फिर जीवित करेगा। क्या तुम्हारे उपास्यों में से भी कोई है जो इन बातों में से कुछ करता हो? वह बहुत पवित्र है और उससे बहुत ऊँचा है जो वे शिर्क करते हैं । 141।

(स्कू 4)

लोगों ने जो अपने हाथों बुराइयाँ कर्माई उनके परिणामस्वरूप स्थल भाग में भी और जल भाग में भी उपद्रव छा गया ताकि वह उन्हें उनके कुछ कर्मों का प्रतिफल चखाए। ताकि संभवतः वे लौटें । 142।

तू कह दे कि धरती में खूब भ्रमण करो और ध्यान दो कि पहले लोगों का कैसा अंत हुआ। उनमें से अधिकतर मुश्किक थे । 143।

अतः तू अपना ध्यान मज़बूत और क़ायम रहने वाले धर्म की ओर केन्द्रित रख। इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका किसी रूप में टलना अल्लाह की ओर से संभव न होगा। उस दिन वे तितर-बितर हो जाएँगे । 144।

وَمَا أَتَيْتُمْ مِّنْ رِبَالٍ يُرْبُو أَفَتَأْمُو الْأَنْسَابَ فَلَا يُرْبُو عِنْدَ اللَّهِ وَمَا أَتَيْتُمْ مِّنْ زَكْوَةٍ تُرْبَدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأَوْلَئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ⑩

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمْسِكُكُمْ ثُمَّ يُخْيِيكُمْ هُلْ مِنْ شَرِكَاءِ لِكُمْ مَّنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ طَسْبَحْهُ وَتَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

ظَاهِرُ الْفَسَادِ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبُتُ أَيْدِي النَّاسِ لِيَذَاقُهُمْ بَعْضُ الَّذِي عَمِلُوا عَلَيْهِمْ يَرْجِعُونَ ⑪

فَلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانَ أَكْثَرُهُمْ فَسَرِكُنَّ ⑫

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلَّذِينَ الْقَوِيمُونَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكَ يَوْمًا لَا مَرَدَ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يَصْدَعُونَ ⑬

जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा । और जो नेक कर्म करे तो वे (लोग) अपनी ही भलाई की तैयारी करते हैं । 145।

ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक कर्म किए अपनी कृपा से प्रतिफल प्रदान करे । निःसन्देह वह काफिरों को पसन्द नहीं करता । 146।

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि वह शुभ-समाचार देती हुई हवाओं को भेजता है और (ऐसा वह इस लिए करता है) ताकि वह तुम्हें अपनी कृपा में से कुछ चखाए । और नौकाएँ उसके आदेश से चलने लगें और ताकि तुम उसकी कृपा की खोज करो । और ऐसा हो कि संभवतः तुम कृतज्ञ बन जाओ । 147।

और निःसन्देह हमने तुझ से पहले कई रसूलों को उनकी जातियों की ओर भेजा । अतः वे उनके पास खुले-खुले चिह्न ले कर आए तो हमने उनसे जिन्होंने अपराध किया प्रतिशोध लिया । और हम पर मोमिनों की सहायता करना अनिवार्य ठहरता था । 148।

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है । फिर वे बादल को उठाती हैं । फिर वह उसे आसमान में जैसे चाहे फैला देता है और फिर वह उसे विभिन्न टुकड़ों में परिवर्तित कर देता है । फिर तू देखता है कि उसके बीच में से बारिश निकलती है । फिर जब वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे यह (भलाई)

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرٌ هُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلَا نَقْسِمُ يَمَدُونَ ۝

لِيَخْرِجَ الَّذِينَ أَمْنَوْا وَعَمِلُوا الصِّلْحَتِ
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكُفَّارِينَ ۝

وَمِنْ أَيْمَانِهِ أَنْ يُرِسِّلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرِتِ
وَلِيَذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ
الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ
قَوْمِهِمْ فَجَاءُهُمْ وَهُمْ بِالْبَيْلِتِ فَانْتَقَمَنَا
مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۝ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا
نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

أَللَّهُ الَّذِي فَرَسَلَ الرِّيَاحَ فَتَبَيَّنَ سَحَابًا
فِي بَسْطَةٍ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَسِّئُ وَيَجْعَلُهُ
كَسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خَلْلِهِ
فَإِذَا آتَاصَابَ بِهِ مَنْ يَسِّئُ مِنْ عَبَادِهِ

पहुँचाता है तो तुरंत वे खुशियाँ मनाने
लगते हैं । 49।

हालाँकि इससे पूर्व कि वह (पानी) उन
पर उतारा जाता, वे उसके आने से
निराश हो चुके थे । 50।*

अतः तू अल्लाह की कृपा के चिह्नों पर
दृष्टि डाल । कैसे वह धरती को उसके
मरने के पश्चात जीवित करता है ।
निःसन्देह वही है जो मुर्दों को जीवित
करने वाला है । और वह प्रत्येक वस्तु
पर जिसे वह चाहे, स्थायी सामर्थ्य
रखता है । 51।**

और यदि हम कोई ऐसी हवा भेजें
जिसके परिणामस्वरूप वे उस
(हरियाली) को पीला होता हुआ देखें
तो उसके पश्चात वे अवश्य कृतञ्जना
करने लगेंगे । 52।

अतः तू निःसन्देह मुर्दों को नहीं सुना
सकता । और न बहरों को (अपनी)
बात सुना सकता है जब वे पीठ फेरते
हुए चले जाएँ । 53।

और न तू अन्धों को उनके भटक जाने के
पश्चात् मार्ग दिखा सकता है । तू केवल
उसे सुना सकता है जो हमारी आयतों
पर ईमान ले आए । अतः वही
आज्ञाकारी लोग हैं । 54। (रुक् ٥)

إِذَا هُمْ يَسْتَبِّشُرُونَ ⑥

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ فَنْ
قَبْلِهِمْ لَمْ يُبْلِسْنَ ⑦

فَأَنْظُرْ إِلَى اثْرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يَعْلَمُ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۝ إِنَّ ذَلِكَ لَمْ يُخِي
الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑧

وَلَئِنْ: أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا
لَظَلَّوْا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ⑨

فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُشْمِعُ
الصَّمَدَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَوْا مَذْبِرِينَ ⑩

وَمَا أَنْتَ بِهِدَى الْعُنْتِي عَنْ صَلَاتِهِمْ ۝ إِنْ
تُشْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِإِيمَانًا فَهُمْ
مُسْلِمُونَ ۱۱

* अरबी शब्द क़फ़िलही के इस अर्थ के लिए देखें - अल-मुन्जिद और अल मु'जमूल वसीत ।

** आयत सं. 49 से 51 : यहाँ समुद्र से स्वच्छ पानी के वाष्प के रूप में उठने और फिर ऊँचे पर्वतों से
टकरा कर स्वच्छ जल के रूप में निचली धरती की ओर बहने का वर्णन है जिससे धरती जीवित होती
है । यदि अल्लाह तआला की ओर से इस प्रकार की व्यवस्था जारी नहीं की जाती तो धरती पर किसी
प्रकार के जीवन के चिह्नों का पाया जाना असंभव था ।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें एक दुर्वल (अवस्था) से पैदा किया। फिर दुर्वलता के पश्चात् (उसने) शक्ति प्रदान की। फिर शक्ति के पश्चात् (पुनः) दुर्वलता और वृद्धावस्था पैदा कर दी। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है। 155।

और जिस दिन कल्यामत प्रकट होगी अपराधी लोग कऱ्समें खाएँगे कि (संसार में) वे एक घड़ी से अधिक नहीं रहे। इसी प्रकार वे (पहले भी) भटका दिए जाते थे। 156।

और जिन लोगों को ज्ञान और ईमान दिया गया, कहेंगे कि निःसन्देह तुम अल्लाह की पुस्तक के अनुसार पुनरुत्थान के दिन तक रहे हो। और यही है पुनरुत्थान का दिन। परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते। 157।

अतः उस दिन जिन लोगों ने अत्याचार किया उनको उनकी क्षमायाचना कोई लाभ नहीं देगी। और न ही उनसे बहाना स्वीकार किया जाएगा। 158।

और निःसन्देह हमने मनुष्यों के लिए इस कुरआन में प्रत्येक प्रकार के उदाहरण वर्णन कर दिए हैं। और यदि तू उनके पास कोई चिह्न ले कर आए तो जिन लोगों ने इनकार किया, निःसन्देह वे कहेंगे कि तुम (लोग) तो केवल झुठे हो। 159।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ صَفِيرٍ ثُمَّ جَعَلَ
مِنْ بَعْدِ صَفِيرٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ
صَفِيرًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ
الْعَلِيهِمُ الْقَدِيرُ ③

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ
مَا لِئَلِيقٍ سَاعَةً كَذَلِكَ كَانُوا
يُؤْفَكُونَ ④

وَقَالَ الَّذِينَ أَكْثَرُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ
لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثَ
فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلِكُلِّكُمْ مَا كُنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ⑤

فِيَوْمٍ لَا يَقْعُدُ الْذِينَ ظَلَمُوا
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْبَدُونَ ⑥

وَلَقَدْ ضَرَبَنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جُحْشَهُمْ بِإِيَّاهُ يَقُولُنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ أَنْتَمْ إِلَّا مُبْطَلُونَ ⑦

इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो ज्ञान नहीं रखते । ६०।

كَذِلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الظَّرِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ④

अतः धैर्य धर । अल्लाह का वादा निःसन्देह सच्चा है । और वे लोग जो विश्वास नहीं रखते वे कदापि तुझे महत्वहीन न समझें । ६१। (रुक् ५)

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْخَفُنَّكَ
الظَّرِينَ لَا يُؤْفَقُونَ ⑤

31 - सूरः लुक्मान

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 35 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी अलिफ़-लाम-मीम से होता है और इन खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सबसे पहली सूरः अल बकरः के विषयवस्तुओं की इस में नये ढंग से पुनरावृत्ति की गई है। अल किताब (अर्थात् एक विशेष पुस्तक) के अवतरण का जिस प्रकार सूरः अल-बकरः के आरम्भ में वर्णन है इस सूरः के आरम्भ में भी उस पुस्तक में निहित अल्लाह तआला की ओर से उत्तरने वाली हिदायत का वर्णन है। परन्तु यहाँ इस विषयवस्तु को इस पहलू से बहुत आगे बढ़ा दिया गया है कि वहाँ तक्वा के आरम्भिक भाव के अनुसार इस पुस्तक ने उन लोगों के लिए हिदायत बनना था जो सत्य को सत्य कहने का सहास रखते हों। परन्तु यहाँ इस पुस्तक से उनको हिदायत प्रदान करने का दावा किया गया है जो तक्वा के दर्जा में बहुत आगे बढ़ कर मुहीसिन (परोपकारी) बन चुके हों। इससे आगे हिदायत के जितने भी अनिवार्य पड़ाव हैं हिदायत का यह अक्षय स्रोत उनको भी सीचता रहेगा।

इस सूरः में एक बार फिर इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अल्लाह तआला की बहुत सी शक्तियाँ हैं जिनको तुम अपनी आँखों से देख नहीं सकते। जैसा कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति। तो फिर खाली आँखों से इन शक्तियों के उत्पन्न करने वाले को कैसे देख सकोगे?

हज़रत लुक्मान अलै, लोगों में बड़े विवेकशील प्रसिद्ध थे। इस सूरः में अलिफ़-लाम-मीम शब्द के पश्चात् अल किताब के साथ अल हकीम शब्द है जिस से ज्ञात होता है कि अब विवेकशील लुक्मान के हवाले से विवेकपूर्ण बातों को विभिन्न चरणों में वर्णन किया जाएगा। उनकी विवेकपूर्ण बातों में से सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि वह कभी अल्लाह के साथ किसी को समकक्ष न ठहराए। फिर इस सूरः में माता पिता के साथ सद्-व्यवहार करने की शिक्षा दी गई है। क्योंकि वे बच्चों के पैदा होने का एक प्रत्यक्ष माध्यम बनने के कारण प्रतिबिंब स्वरूप रब्ब से समानता रखते हैं। इसके पश्चात् यह ताकीद की गई कि यदि शिर्क के मामूली से मामूली विचार भी तुम्हारे दिल में उत्पन्न हुए तो उस सर्वज्ञ और तत्त्वज्ञ अल्लाह को उनका ज्ञान हो जाएगा जो धरती और चट्टानों में छिपे हुए राई के बराबर दानों का भी ज्ञान रखता है और खबीर (अर्थात् खूब जानकार) भी है। यहाँ शब्द खबीर से इस ओर संकेत है कि वह उनके भविष्य की भी खबर रखता है कि उनका अन्त कैसा होगा।

इसके पश्चात् नमाज़ को कायम करने का वह प्रमुख आदेश दिया गया है जो

सूरः अल् बक्करः के आदेशों में से सबसे पहला आदेश है। मोमिन के जीवन का आधार पूर्णतया नमाज़ के कायम करने पर ही है। और सत्कर्म करने और असत्कर्म से रुकने का सामर्थ्य नमाज़ को कायम करने के परिणाम स्वरूप ही मिलता है। परन्तु मनुष्य की यह अवस्था है कि उसे नेकी करने का सामर्थ्य अल्लाह ही की ओर से मिलता है। फिर भी वह दूसरे मनुष्यों पर छोटी-छोटी बड़ाइयों के कारण अहंकार से अपने गाल फुलाने लगता है। अतः उसको विनम्रता की शिक्षा दी गई कि धरती में विनम्रता के साथ चलो और अपनी आवाज़ को भी धीमा रखो।

इसके पश्चात् मनुष्य को कृतज्ञता प्रकट करने की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस सूरः में सर्वाधिक महत्व रखता है। बार-बार हज़रत लुकमान अलै. अपने पुत्र को कृतज्ञ बनने का उपदेश करते हैं। अतः हज़रत लुकमान अलै. को जो तत्त्वज्ञान प्रदान हुआ उसका केन्द्रबिन्दु अल्लाह की कृतज्ञता है जिससे उनके उपदेश का आरम्भ होता है।

अल्लाह तआला की नेमतों का तो कोई अंत ही नहीं, जिसने धरती और आकाश और उसमें छिपी समस्त शक्तियों को मनुष्य के विकास के लिए सेवा पर लगा दिया। यहाँ तक कि ब्रह्माण्ड के छोर पर स्थित गेलेक्सीज़ (आकाश गंगाएँ) भी मनुष्य में छिपी शक्तियों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डाल रही हैं। परन्तु फिर भी लोगों में से ऐसे भी हैं जो इस ब्रह्माण्ड के बारे में कोई ज्ञान नहीं रखते। अपनी अज्ञानता के बावजूद बढ़-बढ़ कर अल्लाह तआला पर बातें बनाते हैं। उनके पास न कोई हिदायत है और न कोई उज्ज्वल पुस्तक है जिसमें शिर्क की शिक्षा दी गई हो।

यहाँ पर उज्ज्वल पुस्तक कह कर इस भ्रांति का निराकरण कर दिया गया कि मूर्तिपूजक अपनी बिगड़ी हुई आस्था को प्रमाणित करने में कुछ पुस्तकें प्रस्तुत करते हैं जैसा कि वेदों का हवाला दिया जाता है। परन्तु वेद तो कोई भी उज्ज्वल प्रमाण नहीं रखते बल्कि और भी अधिक अन्धकारों की ओर मनुष्य को धकेल देते हैं।

ब्रह्माण्ड में अल्लाह तआला की विवेकशीलता और कुदरत के जो रहस्य फैले पड़े हैं उन को कोई लिपिबद्ध नहीं कर सकता। यहाँ तक कि समस्त समुद्र यदि स्पाही बन जाएँ और सारे वृक्ष लेखनी बन जाएँ तो समुद्र शुष्क हो जाएँगे और लेखनी समाप्त हो जाएँगी परन्तु अल्लाह तआला के रहस्यों का वर्णन अभी बचा रहेगा।

इसके पश्चात् एक ऐसी आयत (संख्या 29) आती है जो मनुष्य जन्म के रहस्यों पर से अद्भुत रंग में पर्दा उठाती है। मनुष्य को बताया गया है कि यदि वह माँ की कोख में बनने वाले भ्रूण पर विचार करे कि वह उत्पत्ति के किन-किन पड़ावों में से गुज़रता है तो उसे अपने जन्म के आरम्भ के रहस्यों का कुछ ज्ञान हो सकता है। अतः वैज्ञानिक

विश्वसनीय ढंग से यह वर्णन करते हैं कि गर्भ के आरम्भ से लेकर भूण की परिपक्वता तक उसमें वह सारे परिवर्तन होते रहते हैं जो जीवन के आरम्भ से लेकर विकास के सारे चरणों की पुनरावृत्ति करते हैं। यह एक बहुत ही विस्तृत और गहरा विषयवस्तु है जिस पर सभी जानकार वैज्ञानिक सहमत हैं। अल्लाह ने कहा कि यह तुम्हारा पहला जन्म है। जिस प्रकार एक तुच्छ कीड़े से उन्नति करते हुए तुम मानवीय योग्यताओं की चरम सीमा तक पहुँचे। इसी प्रकार तुम अपने नए जन्म में क्यामत तक इतनी उन्नति कर चुके होगे कि उस पूर्णांग आकृति के समक्ष मनुष्य की वही हैसीयत होगी जैसे मनुष्य के मुकाबले पर उस तुच्छ कीट की थी जिससे जीवन का आरम्भ किया गया।

इस सूरः का अंत इस घोषणा पर हुआ है कि वह घड़ी जिसका उल्लेख किया गया है कि जब मनुष्य मृतावस्था से उस पूर्णावस्था रूप में दोबारा उठाया जाएगा, जिसका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है, वह कब और कैसे होगी। और इसी प्रकरण में उन दूसरी बातों का भी वर्णन किया गया जिनका केवल अल्लाह तआला को ही ज्ञान है और मनुष्य को इस ज्ञान में से कुछ भी प्राप्त नहीं। वह बातें ये हैं कि आकाश से जल कब और कैसे बरसेग और माताओं के कोख में क्या चीज़ है जो पल रही है। और मनुष्य आने वाले कल में क्या कमाएगा और धरती में उसकी मृत्यु किस स्थान पर होगी।

यहाँ एक सन्देह का निराकरण आवश्यक है। आज कल के विकसित युग में यह दावा किया जा रहा है कि नए उपकरणों की सहायता से ज्ञात हो सकता है कि माँ के पेट में क्या है। यहाँ तक कि अब यह भी ज्ञात हो सकता है कि वह माँ के पेट में पलने वाला बच्चा स्वस्थ है या जन्मजात रोगी है। लड़का है अथवा लड़की। परन्तु सटीकता के इस दावा के बावजूद वे कदापि विश्वास पूर्वक नहीं कह सकते कि माँ के पेट में पलने वाला बच्चा अपंग है या नहीं। केवल एक भारी संभावना की बात करते हैं। इस प्रकार उनकी यह भविष्यवाणी भी कई बार ग़लत प्रमाणित हुई है कि पैदा होने वाला बच्चा बेटा है या बेटी। कई बार लोगों के देखने में यह बात आ रही है कि प्रसूति-विज्ञान के जानकार एक बच्चे के जन्मजात दोष का बड़े विश्वासपूर्वक वर्णन करते हैं परन्तु जब बच्चा पैदा होता है तो उस दोष से रहित होता है। इसी प्रकार कई बार बड़े विश्वास के साथ कहा जाता कि लड़की पैदा होगी परन्तु लड़का पैदा हो जाता है। इसी प्रकार लड़के का दावा किया जाता है और लड़की पैदा होती है। यह बात आए दिन देखने में आती है।



سُورَةُ لُقْمَانَ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسَةٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةُ رُكُونٍ غَابٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे
अधिक जानने वाला हूँ । 12

ये ज्ञानप्रक पुस्तक की आयतें हैं । 13।

सत्कर्म करने वालों के लिए हिदायत
और करुणा हैं । 14।

वे लोग जो नमाज को कायम करते हैं
और ज़कात देते हैं और वे परलोक पर
भी अवश्य विश्वास रखते हैं । 15।

यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब की ओर से
हिदायत पर (स्थित) हैं । और यही वे
लोग हैं जो सफल होने वाले हैं । 16।

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो व्यर्थ बात
का सौदा करते हैं ताकि बिना किसी
ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (लोगों को)
पथभ्रष्ट कर दें । और उसे हास्यास्पद
बना लें । यही वे लोग हैं जिनके लिए
अपमानित कर देने वाला अजाब
(निश्चित) है । 17।

और जब उस पर हमारी आयतों का
पाठ किया जाता है तो वह अहंकार
करते हुए पीठ फेर लेता है । मानो
उसने उन्हें सुना ही न हो । जैसे
उसके दोनों कानों में (बहरा कर देने
वाला) एक बोझ हो । अतः उसे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ

تِلْكَ أَيْتُ الْكِتَبِ الْحَكِيمِ ②

هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ③

الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوْةَ
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقَنُونَ ④

أُولَئِكَ عَلَى هُدًىٰ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑤

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَسْتَرِي لَهُو الْحَدِيثُ
لِيُضَلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ⑥

وَيَتَّخِذُهَا هَرْرَوا ۖ أُولَئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑦

وَإِذَا تُتْلَى عَلَيْهِ أَيْتَنَا وَلِيُّ مُسْتَكْبِرًا
كَانُ لَمْ يَسْمَعُهَا كَانَ فِي أَذْنِيهِ وَقْرًا ⑧

पीड़ाजनक अज्ञाब का शुभ-समाचार दे
दे । १।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और
नेक कर्म किए उनके लिए नेमत वाले
स्वर्ग हैं । १।

वे सदा उनमें रहेंगे । (यह) अल्लाह का
सच्चा वादा है । और वह पूर्ण प्रभुत्व
वाला (और) परम विवेकशील है । १०।

उसने आसमानों को बिना ऐसे स्तम्भों
के बनाया जिन्हें तुम देख सको और
धरती में पर्वत बनाए ताकि तुम्हें खुराक
उपलब्ध करें और उसमें प्रत्येक प्रकार के
चलने वाले प्राणी उत्पन्न किए । और
आसमान से हमने पानी उतारा और इस
(धरती) में प्रत्येक प्रकार के उत्तम जोड़े
उगाए । १।

यह है अल्लाह की सृष्टि । अतः मुझे
दिखाओ कि वह है क्या जिसे उसके
सिवा दूसरों ने उत्पन्न किया है ?
वास्तविकता यह है कि अत्याचार करने
वाले खुली-खुली पथभ्रष्टा में हैं । १२।

(रुक् १०)

और निःसन्देह हमने लुक्मान को
तत्त्वज्ञान प्रदान किया था (यह कहते
हुए) कि अल्लाह का कृतज्ञता प्रकट
कर और जो भी कृतज्ञता प्रकट करे
तो वह केवल स्वयं की भलाई के
लिए ही कृतज्ञता प्रकट करता है ।
और जो कृतज्ञता करे तो निःसन्देह
अल्लाह निस्पृह है (और) बहुत स्तुति
योग्य है । १।

فَبِئْرَةٌ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ①

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَاحَتُ التَّسْعِيرِ ②

خَلِدِينَ فِيهَا ۖ وَعَدَ اللَّهُ حَقًا ۖ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرْوِيَّهَا وَأَنْقَى
فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيًّا أَنْ تَمْيِدَ بِكُمْ وَبَئْثَتِ
فِيهَا مِنْ كُلِّ دَآبَةٍ ۖ وَأَنْزَلَنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَبْشَرْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَرْفِ جَرِينِ ④

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُوْنَ مَاذَا خَلَقَ
الَّذِينَ مِنْ ذُونِهِ ۖ بَلِ الظَّلْمُونَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑤

وَلَقَدْ أَتَيْنَا لِقْمَنَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ اللَّهَ ۖ
وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرْ لِنَفْسِهِ ۖ
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَنِّيْ حَمِيدٌ ⑥

और जब लुक्मान ने अपने पुत्र से कहा, जब वह उसे नसीहत कर रहा था कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अल्लाह के साथ (किसी को) साझीदार न बना ।
निःसन्देह शिर्क एक बहुत बड़ा अत्याचार है ॥141॥

और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के पक्ष में पक्की नसीहत की । उसकी माँ ने उसे कमज़ोरी पर कमज़ोरी (की अवस्था) में उठाए रखा । और उसका दूध छुड़ाना दो वर्षों में (पूर्ण) हुआ । (उसे हमने यह पक्की नसीहत की) कि मेरी कृतज्ञता प्रकट कर और अपने माता-पिता की भी । मेरी ओर ही (तुम्हें) लौट कर आना है ॥151॥

और यदि वे दोनों भी तुझ से ज्ञागड़ा करें कि तू मेरा साझीदार ठहरा जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं तो उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । और उन दोनों के साथ सांसारिक रीति के अनुसार मेलजोल जारी रख । और उस के मार्ग का अनुसरण कर जो मेरी ओर जुका । फिर मेरी ओर ही तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उससे अवगत कराऊँगा जो तुम करते रहे हो ॥161॥

हे मेरे प्यारे पुत्र ! निःसन्देह यदि राई के दाने के समान भी कोई वस्तु हो, फिर वह किसी चट्टान में (दबी हुई) हो अथवा आसमानों या धरती में कहीं भी हो, अल्लाह उसे अवश्य ले आएगा ।

وَإِذْ قَالَ نَفْرُمْ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعْظِلُهُ
يَقُولُ لَا تَشْرِكُ بِاللَّهِ إِنَّ الشَّرِكَ
لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ⑩

وَوَصَّيْتَا إِلَيْنَا إِنَّ الْدِيَنَ حَمَلَتْهُ أُمَّةٌ
وَهُنَّا عَلَى وَهْنٍ وَفُضْلَهُ فِي عَامِينِ
أَنِ اشْكُرْنِي وَلِوَالْدَيْنِكُ إِلَى الْمَصِيرِ ⑪

وَإِنْ جَاهَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطْعِمُهُمَا وَصَاحِبُهُمَا
فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَأَئِبْغُ سَيِّلَ مَنْ
أَنَابَ إِلَىَّ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِحَكُمْ
فَانْتَهِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑫

يَقُولُ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ
مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي
السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ

निःसन्देह अल्लाह बहुत सूक्ष्मद्रष्टा
(और) खबर रखने वाला है । 17।

हे मेरे प्यारे पुत्र ! नमाज को कायम कर
और अच्छी बातों का आदेश दे और
अप्रिय बातों से मना कर और उस
(विपत्ति) पर धैर्य धर जो तुझे पहुँचे ।
निःसन्देह यह बहुत महत्वपूर्ण बातों में
से है । 18।

और (अहंकार पूर्वक) लोगों के लिए
अपने गाल न फुला । और धरती में यूँ ही
अकड़ते हुए न फिर । अल्लाह किसी
अहंकारी (और) घमण्ड करने वाले को
पसन्द नहीं करता । 19।

और अपनी चाल को संतुलित कर और
अपनी आवाज़ को धीमा रख ।
निःसन्देह सब से बुरी आवाज़ गथे की
आवाज़ है । 20। (रुकू ۲۱)

क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जो भी
आसमानों और धरती में है (उसे)
अल्लाह ने तुम्हारे लिए सेवा पर लगा
दिया है । और उसने अपनी नेमतें तुम
पर प्रकट रूप में और अप्रकट रूप में भी
पूरी की । और मनुष्यों में से ऐसे भी हैं
जो अल्लाह के विषय में बिना किसी
ज्ञान या हिदायत अथवा उज्ज्वल पुस्तक
के झगड़ते हैं । 21।

और जब उनसे कहा जाता है कि
उसका अनुसरण करो जो अल्लाह ने
उतारा है तो कहते हैं कि इसके बदले
हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर

إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَيْرٌ ⑯

يَعِيَّ أَقْوَى الصَّلَاةَ وَأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ
وَإِنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَى مَا
أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأَمْوَارِ ⑯

وَلَا تَصْغِرْ حَدَّكَ لِتَلَاقِكَ وَلَا تَمْشِ
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يَحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَهُوَ رِئِيْسٌ ⑯

وَأَقِصِّدُ فِيْ مَشِيلَكَ وَأَخْضُصُ
مِنْ صَوْتِكَ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ
لَصَوْتِ الْحَمِيرِ ⑯

أَلْمُتَرُوا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ
نِعْمَةً ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ
مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى
وَلَا كِتْبٌ مُنِيرٌ ⑯

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَتَيْشُعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا إِنْ
نَّبَغَ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ أَبَاءُنَا أَوْلُوْكَانَ

हमने अपने पूर्वजों को पाया । क्या इस पर भी (वे ऐसा करेंगे) यदि शैतान उन्हें भड़कती हुई अग्नि के अज्ञाब की ओर बुलाए ? 122।

और जो भी अपना सारा ध्यान अल्लाह की ओर फेर दे और वह उपकार करने वाला हो तो उसने निःसन्देह एक मज़बूत कड़े को पकड़ लिया । और मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर (लौटते) हैं । 23।

और जो इनकार करे तो उसका इनकार करना तुझे दुःख में न डाल दे । हमारी ओर ही उनका लौट कर आना है । अतः हम उन्हें बताएँगे कि वे क्या करते रहे हैं । निःसन्देह अल्लाह सीनों की बातों का खूब ज्ञान रखने वाला है । 24।

हम उन्हें थोड़ा सा अस्थायी लाभ पहुँचाएँगे । फिर उन्हें एक अत्यन्त कठोर अज्ञाब की ओर विवश करके ले जाएँगे । 25।

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को पैदा किया है ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । परन्तु उनमें से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते । 26।

अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और धरती में है । निःसन्देह अल्लाह ही निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है । 27।

और धरती में जितने वृक्ष हैं यदि सब लेखनी बन जाएँ और समुद्र (स्थाही बन

الشَّيْطَنُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابٍ السَّعِيرِ ⑩

وَمَنْ يُشْلِمُ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْقَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ
عَاقِبَةُ الْأَمْوَارِ ⑪

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَخْرُنُكُفْرُهُ إِنَّا
مَرْجِعُهُمْ قَبْتِيهِمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ
عَلَيْهِ حِبَّاتُ الصَّدَوْرِ ⑫

لَمْ يَعْمَلُهُمْ قَلِيلًا لَّمْ نَضْطَرْهُمْ إِلَى
عَذَابٍ غَلِيظٍ ⑬

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
بِلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑭

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑮

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ

जाए और) इसके अतिरिक्त सात समुद्र भी उसकी सहायता करें तब भी अल्लाह के वाक्य समाप्त नहीं होंगे । निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 28।

तुम्हारा जन्म और तुम्हारा दोबारा उठाया जाना केवल एक जीव (के जन्म और उठाए जाने) के समान है । निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है । 29।

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा पर लगा दिया है । हर कोई अपनी निर्धारित अवधि की ओर अग्रसर है । और (याद रखो) कि जो कुछ तुम करते हो वे अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 30।

यह इस कारण है कि निःसन्देह अल्लाह ही है जो सत्य है और जिसे वे उसके सेवा पुकारते हैं वह असत्य है । और अल्लाह ही बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है । 31। (सूरा ٣٢)

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि समुद्र में नौकाएँ अल्लाह की नेमत के साथ चलती हैं ताकि वह अपने चिह्नों में से तुम्हें कुछ दिखाए । इसमें निःसन्देह प्रत्येक बहुत धैर्यशील (और) बहुत कृतज्ञ के लिए चिह्न हैं । 32।

और जब उन्हें लहर छावों की भाँति ढाँप लेती है, वे (अपनी) आस्था को अल्लाह

أَقْلَامُ وَالْبَحْرُ يَمْدُهُ مِنْ بَعْدِ سَبْعَةِ
أَبْحَرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

مَا خَلَقْتُمْ وَلَا بَعْثَكُمْ إِلَّا كَنْفِسٍ
وَاحِدَةٌ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ⑪

الْمُرَأَاتُ اللَّهُ يُولِي لَعْنَى الْهَارِ
وَيُولِي لَعْنَى الْهَارِ فِي الظَّهَارِ وَسَخَرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلُّ يَجْرِي إِلَى أَجَلٍ مَسْمَى
وَإِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑫

ذَلِكَ بِإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَإِنَّ مَا يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ⑬

الْمُرَأَاتُ الْفَلَكُ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
يُنْعَمِتُ اللَّهُ لِيَرِيَكُمْ مِنْ أَيْتِهِ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَا يَتِي لِكُلِّ صَبَارٍ شَكُورٍ ⑭

وَإِذَا غَشَيْهِمْ مَوْجٌ كَالْظَّلَلِ دَعَوْ اللَّهَ

के लिए विशुद्ध करते हुए उसे पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल भाग की ओर ले जाता है तो उनमें से कुछ (ऐसे भी होते) हैं जो मध्यमार्ग अपनाने वाले हैं। और हमारी चिह्नों का इनकार केवल वही करता है जो खूब धोखेबाज़ (और) बड़ा कृतघ्न है। 133।^४

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक्रवा धारण करो और उस दिन से डरो जिस दिन पिता अपने पुत्र के काम नहीं आएगा, न पुत्र अपने पिता के कुछ काम आएगा। निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि धोखे में न डाले। और तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखेबाज़ (शैतान) कदापि धोखा न दे सके। 134।

निःसन्देह अल्लाह ही है जिसके पास क्यामत का ज्ञान है। और वह बारिश को उतारता है। और जानता है कि गर्भाशयों में क्या है। और कोई जीवधारी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा। और कोई जीवधारी नहीं जानता कि किस धरती में वह मरेगा। निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत रहने वाला है। 135। (रुक् ٤)

مُحْلِصِينَ لِهِ الدِّينُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ أَىٰ
الْبَرِّ فِيهِمْ مُقْتَصِدٌ وَمَا يَجْهَدُ بِأَيْتَاهُ
إِلَّا كُلُّ خَتَارٍ كُفُورٌ^④

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا رَبُّكُمْ وَآخْشُو اِيمَانًا
لَا يَجِزِيُ وَالدُّعْنُ وَلَدِمُ وَلَا مُؤْلُودٌ
هُوَ جَازِئٌ عَنْ وَاللَّهُ شَهِيدٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَلَا تَعْرِنُكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَعْرِنُكُمْ
بِاللَّهِ الْغَرُورُ^⑤

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيَنْزِلُ
الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْضِ
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّا ذَاتُكُسْبُ غَدًا
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِإِيَّى أَرْضٍ تَمُوتُ
إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ حِلْمٌ^٦

* इस आयत में मनुष्यस्वभाव का यह महत्वपूर्ण विषय उल्लेख हुआ है कि जब समुद्र के तूफान में फंस जायें तो चाहे नास्तिक हों अथवा अनेकश्वरवादी, उस समय सब एक अल्लाह (आराध्य) ही को पुकारते हैं। और जब वह उन्हें बचा लेता है तो फिर वे अपनी पहली अवस्था की ओर लौट जाते हैं। ऐसे तूफानों में फंसे हुए जिन लोगों का यहाँ वर्णन है उनमें मध्यमार्ग अपनाने वाले अपवाद हैं। वे स्थल भाग पर पहुँच कर भी अल्लाह को नहीं भुलाते।

32—सूरः अस-सज्दः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ पर खण्डाक्षर अलिफ़—लाम—मीम (अर्थात् मैं अल्लाह खूब जानने वाला हूँ) पिछली सूरः की अन्तिम आयतों से इस सूरः के सम्बन्ध को स्पष्ट कर रहे हैं। पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में यह उल्लेख किया गया था कि बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान सिवाए अल्लाह के किसी की नहीं और मैं अल्लाह खूब जानने वाला हूँ के दावे में विल्कुल वही बात दोहराई गई है।

इसके पश्चात् धरती और आकाश के रहस्यों का एक बार फिर वर्णन किया गया है जिनको अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। फिर एक ऐसी आयत है जो आश्चर्यजनक रूप में ब्रह्माण्ड की आयु का राज्ञ खोल रही है। अल्लाह तआला का कथन है कि अल्लाह का एक दिन तुम्हारी गणनानुसार एक हजार वर्ष के समान है। मनुष्य की गणना के अनुसार यदि एक वर्ष के दिनों को एक हजार वर्षों से गुणा किया जाए तो जो आंकड़ा बनता है इस पवित्र आयत में उसका वर्णन मौजूद है। एक और आयत (सूरः अल मआरिज आयत : 5) में अल्लाह तआला ने कहा है कि अल्लाह का दिन पचास हजार वर्ष के समान है। अतः इस दिन को यदि एक हजार वर्ष वाले दिन के साथ गणितीय आधार पर गुणा किया जाए तो लगभग बीस अरब वर्ष बनते हैं। और वैज्ञानिकों के मतानुसार भी इस ब्रह्माण्ड की आयु अट्ठारह से बीस अरब वर्ष तक है। इसी आधार पर अल्लाह तआला ने एक बार फिर घोषणा की है कि अदृश्य और दृश्य विषय का ज्ञान रखने वाला वही अल्लाह है जिसने प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम ढंग से उत्पत्ति की है। आश्चर्यजनक बात यह है कि यह सारी उत्पत्ति साधारण मिट्टी से की गई। इसके पश्चात् फिर उत्पत्ति के अन्य चरणों का उल्लेख हुआ है जिनमें से भ्रूण को माँ की कोख में गुज़रना पड़ता है।

इसके पश्चात् फिर दोबारा जी उठने पर लोगों की शंका का उल्लेख करके एक नई बात वर्णन की गई कि प्रत्येक मनुष्य का मलकुल मौत (मृत्यु का फरिशता) अलग है जो उसके रोगों और सूक्ष्म शारीरिक दोषों का ज्ञान रखते हुए विल्कुल सही निर्णय करता है कि इसकी जान कब ली जानी चाहिए? यहाँ फिर पिछली सूरः की अन्तिम आयत वाली विषयवस्तु को ही एक नए रंग में वर्णन कर दिया गया है।

इस सूरः के अन्तिम रुकू में हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग के साथ एक बार फिर अलिफ़—लाम—मीम वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए यह कहा गया कि उस (अल्लाह) की भेंट के विषय में संदेह में न पड़। कुछ व्याख्याकारों के अनुसार यहाँ

अल्लाह तआला से भेंट करने का वर्णन नहीं है बल्कि हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भेंट का वर्णन है। यदि यह अर्थ मान भी लिए जाएँ तो ज़ाहिर है कि यह वह भेंट नहीं जो क़यामत के दिन सब नवियों से होगी बल्कि यहाँ पर विशेष रूप से उस भेंट का वर्णन है जो मेराज के समय हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हुई और नमाज़ों के बारे में हज़रत मूसा अलै. ने एक परामर्श दिया जिसका विवरण मेराज वाली घटना में उल्लेख है।

इस सूरः की अन्तिम आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शत्रुओं और कष्ट देने वालों से विमुख हो जाने का आदेश दिया गया है।



سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكْيُونَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَشَمَلَةِ إِخْدَى وَتَلَاقُونَ أَيَّهُ وَثَلَاثَةُ رُشُوْعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे
अधिक जानने वाला हूँ । 21

सर्वथा सम्पूर्ण ग्रंथ का उतारा जाना,
इसमें कोई संदेह नहीं कि, समस्त लोकों
के रब्ब की ओर से है । 31

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे असत्य
रूप से गढ़ लिया है ? बल्कि वह तो तेरे
रब्ब की ओर से सत्य है । ताकि तू ऐसे
लोगों को सतर्क करे जिन की ओर तुझ
से पूर्व कोई सतर्ककारी नहीं आया । हो
सकता है कि वे हिदायत पाएँ । 41

अल्लाह वह है जिसने आसमानों और
धरती को और जो कुछ उन दोनों के
मध्य है छः युगों में पैदा किया । फिर
वह अर्श पर आसीन हुआ । उसे छोड़
कर न तुम्हारा कोई मित्र है न कोई
सिफारिश करने वाला । फिर क्या तुम
सीख नहीं लेते ? । 51

वह (अपने) निर्णय को योजना के साथ
आकाश से धरती की ओर उतारता है ।
फिर वह एक ऐसे दिन में उसकी ओर
उठता है जो तुम्हारी गणना के अनुसार
एक हज़ार वर्ष के समान होता है । 61

यह वह है जो अदृश्य और दृश्य को
जानने वाला है, जो पूर्ण प्रभुत्व

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَبَّ لَهُ مِنْ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ
لِتَشَدَّرَ قَوْمًا مَا أَنْهَمُ مِنْ نَذْيَرٍ مِنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ③

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سَيَّرَةِ أَيَّامٍ تَحْمَلُ
الْعَرْشَ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا شَفِيعٍ أَفَلَا تَشَدَّدُونَ ④

يَدْبِرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ
ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارَهُ
أَلْفَ سَنَةً مِمَّا تَعَدُّونَ ⑤

ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَرِيزُ

वाला (और) बार-बार दया करने
वाला है । ७।

वही जिसने प्रत्येक वस्तु को जिसे उसने
पैदा किया, बहुत अच्छा बनाया और
उसने मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ
गीली मिट्टी से किया । ८।

फिर उसने उसकी नस्ल को एक तुच्छ
जल के निचोड़ से तैयार किया । ९।

फिर उसने उसे ठीक-ठाक किया और
उसमें अपनी रुह फूंकी और तुम्हारे लिए
उसने कान और आँखें और दिल बनाए ।
बहुत थोड़ा है जो तुम कृतज्ञता प्रकट
करते हो । १०।

और वे कहते हैं कि क्या जब हम धरती
में लुप्त हो जाएँगे तो क्या फिर भी हम
अवश्य एक नई उत्पत्ति में (डाले)
जाएँगे । वास्तविकता यह है कि वे तो
अपने रब्ब की भैंट से ही इनकार करने
वाले हैं । ११।

तू कह दे कि मृत्यु का वह फरिश्ता जो
तुम पर नियुक्त किया गया है तुम्हें मृत्यु
देगा । फिर तुम अपने रब्ब की ओर
लौटाए जाओगे । १२। (रु० ¼)

और यदि तू देख ले जब अपराधी अपने
रब्ब के समक्ष अपने शीश सुकाए हुए
होंगे (और कहेंगे) हे हमारे रब्ब ! हमने
देखा और सुन लिया । अतः हमें लौटा दे
ताकि हम नेक कर्म करें । हम अवश्य
विश्वास करने वाले (सिद्ध) होंगे । १३।

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति
को उसके (उपयुक्त) हिदायत प्रदान

الرَّحِيمُ ﴿١﴾

الَّذِي أَخْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَهُ
الْإِنْسَانَ مِنْ طِينٍ ﴿٢﴾

لَمْ يَجْعَلْ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّا يَمْهِنُ ﴿٣﴾

لَمْ يَسُوءْهُ وَنَفَخْ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ
لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا
مَا تُشْكِرُونَ ﴿٤﴾

وَقَالُوا إِذَا أَضَلْنَا فِي الْأَرْضِ إِنَّا لَفِي
خَلِقٍ جَدِيدٍ بِلْ هُمْ بِلْقَاءُ رَبِّهِمْ
كُفَّارُونَ ﴿٥﴾

قُلْ يَوْمَ فَكُمْ مَّا لَكُمْ مَّا الْمَوْتُ الَّذِي وَكِلْ
إِلَيْكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ تُرْجَمُونَ ﴿٦﴾

وَلَوْ تَرَى إِذَا الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا
رُءُوسَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبِّنَا أَبْصَرُنَا
وَسَمِعُنَا فَازِجُهُنَا نَعْمَلُ صَالِحًا إِنَّا
مُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَا تَنْكُلْ نَفْسٍ هَدَيْهَا وَلَكُنْ

कर देते परन्तु मेरी ओर से आदेश लागू हो चुका है कि मैं नरक को अवश्य सब जिन्हों और मनुष्यों से भर दूँगा ॥14॥

अतः (अज्ञाब) को इस कारण चखो कि तुम अपने आज के दिन की भेट को भुला बैठे थे । निःसन्देह हमने (भी) तुम्हें भुला दिया है । इसके अतिरिक्त जो तुम किया करते थे उसके कारण स्थायी अज्ञाब को चखो ॥15॥

निःसन्देह हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं जिनको जब उन (आयतों) के द्वारा उपदेश दिया जाता है तो वे सजदः करते हुए गिर जाते हैं । और अपने रब्ब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान करते हैं और वे अहंकार नहीं करते ॥16॥

उनके पहलू बिस्तरों से अलग हो जाते हैं (जबकि) वे अपने रब्ब को भय और लालसा की अवस्था में पुकार रहे होते हैं । और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया वे उसमें से खर्च करते हैं ॥17॥

अतः कोई जीवधारी नहीं जानता कि जो कुछ वे किया करते थे, उसके प्रतिफल के रूप में उनके लिए आँखों की ठंडक स्वरूप क्या कुछ छिपा कर रखा गया है ॥18॥

अतः क्या जो मोमिन हो उस जैसा हो सकता है जो दुराचारी हो ? वे कभी एक समान नहीं हो सकते ॥19॥

जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो जो वे किया

حَقُّ الْقَوْلِ مِنِّي لِأَمْلَئَنَ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالثَّالِسُ أَجْمَعِينَ ⑯

فَذُوقُوا إِيمَانَسِيَّرْ لِقَاءَ يَوْمَكُمْ هَذَا
إِنَّا نَسِينَكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخَلْدِ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑰

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِإِيمَانِ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا
خَرُّوا سَاجِدًا قَسَبَهُوا إِحْمَادًا لِهُمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكِبُرُونَ ⑯

تَسْجَافُ جُبُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَارِعِ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعاً وَمَمَّارِزُقُتْهُمْ
يُشْفَقُونَ ⑰

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أَخْفَى لَهُمْ قُنْ
قُرَّةُ أَعْيُنٍ حَرَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑯

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا
لَا يَسْتَوْنَ ⑯

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ

करते थे उसके कारण उनके लिए (उनकी शान के अनुरूप) आतिथ्य स्वरूप ठहरने के उद्यान होंगे । 20।

और जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिन्होंने अवज्ञा की तो उनका ठिकाना आग है । जब कभी वे इरादा करेंगे कि उससे निकल जाएँ तो उसी में लौटा दिए जाएँगे । और उनसे कहा जाएगा कि उस अग्नि के अज्ञाब को चखो जिसे तुम छुठलाया करते थे । 21।

और हम निःसन्देह उन्हें बड़े अज्ञाब से पहले छोटे अज्ञाब में से कुछ चखाएँगे ताकि हो सके तो वे (हिदायत की ओर) लौट आएँ । 22।

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अपने रब्ब की आयतों के द्वारा अच्छी प्रकार से उपदेशित किया जाए, फिर भी (वह) उनसे मुख मोड़ ले? निःसन्देह हम अपराधियों से प्रतिशोध लेने वाले हैं । 23। (रुकू²⁵)

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की । अतः तू उस (अर्थात् अल्लाह) की भेट के विषय में शंका में न रह । और उसको हमने बनी इसाईल के लिए हिदायत बनाया था । 24।*

فَلَمْ يَمْجُدْ جِئْتُ الْمَأْوَىٰ نَزَلًا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٠﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَا أُولَئِكُمُ النَّارُ
كُلُّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أَعْيَدُوا
فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ﴿١١﴾

وَلَئِنْ يَقْنَعُهُمْ مِنْ العَذَابِ الْأَدْنِي دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٢﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِرَ بِإِيمَانِ رَبِّهِ
ثُمَّ أَغْرَصَ عَنْهَا إِلَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ
مُتَّقِمُونَ ﴿١٣﴾

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
فِي مُرْيَاةٍ مِنْ لِقَاءِهِ وَجَعَلْنَاهُ هَدًى
لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٤﴾

* इस आयत का एक अर्थ यह बनता है कि हज़रत मूसा अलै. के साथ भेट करने के विषय में शंका में न रह । सम्भवतः इसमें मेराज की उस घटना की ओर संकेत है जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत मूसा अलै. से मिले और फिर बार-बार मिलने का अवसर मिला । यहाँ हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग में अल्लाह से मिलने का उल्लेख इस लिए किया गया है कि जैसे हज़रत मूसा अलै. को तूर पर्वत पर अल्लाह तआला से भेट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उससे कई गुना अधिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला का दर्शन प्राप्त हुआ ।

अतः जब उन्होंने धैर्य से काम लिया तो उनमें से हमने ऐसे इमाम बनाए जो हमारे आदेश से हिदायत देते थे । और वे हमारे चिह्नों पर विश्वास रखते थे । 125।

निःसन्देह तेरा रब्ब ही क्रयामत के दिन उनके मध्य उन बातों का फैसला करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे । 126।

अतः क्या इस बात ने उन्हें हिदायत नहीं दी कि हमने उनसे पहले कितनी ही जातियाँ तबाह कर दीं जिनके (छोड़े हुए) घरों में वे चलते फिरते हैं । निःसन्देह इसमें बहुत से चिह्न हैं । फिर क्या वे सुनते नहीं ? 127।

क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम बंजर धरती की ओर पानी को बहाए लिए आते हैं । फिर उस (पानी) के द्वारा हरियाली उत्पन्न करते हैं जिससे उनके पशु भी और वे स्वयं भी खाते हैं । फिर क्या वे देखते नहीं ? 128।

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह विजय कब मिलेगी ? 129।

तू कह दे कि जिन लोगों ने इनकार किया विजय के दिन उनका इमान लाना उनको कोई लाभ न देगा और न वे छूट दिए जाएँगे । 130।

अतः उनसे मुँह मोड़ ले और (अल्लाह के निर्णय की) प्रतीक्षा कर । निःसन्देह वे भी किसी प्रतीक्षा में बैठे हैं । 131।

(रुक् 3/6)

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِيمَانَهُمْ تَيْهَدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا
صَبَرُوا وَكَانُوا يُلْتَابَأُونَ قَوْنَ ④

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
قِيمًا كَانُوا فِيهِ يَخْلُقُونَ ④

أَوْلَمْ يَمْدُلْهُمْ كَمْ أَهْلَكَنَا مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنَ الْقَرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسِكِنِهِمْ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ④

أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ
الْجَرَزِ فَتَخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ
أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يَصْرُونَ ④

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ④

قُلْ يَوْمُ الْفَتْحِ لَا يَفْعَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ④

فَأَغْرِضُ عَنْهُمْ وَأَنْتَظِرْ إِنَّهُمْ
مُّنْظَرُونَ ④

33- सूरः अल-अहज़ाब

यह सूरः मदीना में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 74 आयतें हैं।

पिछली सूरः की अन्तिम आयत की विषयवस्तु को इस सूरः के आरम्भ में ही प्रस्तुत किया गया है अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि काफिर और मुनाफ़िक तुझे अपनने धर्म से हटाने की चेष्टा करेंगे । तू उनसे मुँह मोड़ ले और उन की बात न मान तथा जो कुछ तेरी ओर वहइ की जाती है उसका अनुसरण कर ।

आयत संख्या 5 में यह स्थायी सिद्धान्त वर्णन कर दिया गया कि मनुष्य एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न सत्ता के साथ एक जैसा प्रेम नहीं कर सकता । इस में इस ओर संकेत है कि हे नबी ! तेरे दिल में अल्लाह तआला का प्रेम ही अधिक बसा है और दुनिया में जिन से तू प्रेम करता है वह केवल अल्लाह के प्रेम के कारण ही करता है । अतएव वह हदीस इस विषयवस्तु को स्पष्ट कर रही है जिस में कहा गया है कि यदि तू अल्लाह के प्रेम के कारण अपनी पत्नी के मुँह में एक निवाला भी डाले तो यह भी अल्लाह की उपासना होगी ।

इसके बाद अरब वासियों की उस कु-रीति का उल्लेख है जो अपने मुँह से अपनी पत्नियों को माँ कह दिया करते थे । इस कु-रीति का उच्छेद करते हुए ध्यान दिलाया गया है कि माँ और बेटे का सम्बन्ध तो अल्लाह के बनाये विधान के अनुसार ही होता है, तुम अपने मुँह से इस सम्बन्ध को कैसे बदल सकते हो । इसी प्रकार यदि किसी को बेटा कह कर पुकारा जाए तो वह बेटा नहीं बन सकता । बेटा वही है जो खूनी रिश्ते में बेटा हो । बेटा कह कर पुकारना प्यार को प्रकट करना मात्र है इससे अधिक कुछ नहीं ।

फिर इसी विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए कहा कि दिलों में एक ही औला अर्थात् सर्वाधिक प्रेमपात्र होता है । जहाँ तक मोमिनों का सम्बन्ध है तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे औला होने चाहिएँ । इसके बाद क्रमशः अन्य निकट सम्बन्धियों का वर्णन है कि तुमसे निकटता की दृष्टि से वे एक दूसरे से ऊपर हैं ।

इसी सूरः में आयत खातमुन्लियीन भी है । तत्त्वज्ञान से वशित कुछ विद्वान इस का यह अर्थ करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन अर्थों में अन्तिम नबी हैं कि आप सल्ल. के बाद कभी किसी प्रकार का कोई नबी नहीं आएगा । यहाँ इस गलत विचारधारा का खण्डन किया गया और उस प्रतिज्ञा का उल्लेख किया गया जो प्रत्येक नबी से ली जाती रही है कि यदि तुम्हारे बाद कोई ऐसा नबी आये जो तुम्हारी बातों की पुष्टि करता हो तो तुम्हारी उम्मत का दायित्व है कि वह उस नबी का

इनकार करने की बजाय उसका समर्थन करने वाली सिद्ध हो । इस सूरः में हजरत मुहम्मद सल्ल. के बारे में कहा गया व मिन् क अर्थात् हम ने तुझ से भी यह प्रतिज्ञा ली है । अतः यदि कोई इस शर्त के साथ नुबुव्वत का दावा करने वाला हो जो शत प्रतिशत हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञाकारी हो तथा मुहम्मदी अनुकम्पा के द्वारा ही नुबुव्वत का पुरस्कार उसने पाया हो और वह आप सल्ल. की शिक्षा को ही बिना किसी परिवर्तन के पेश करने वाला हो एवं उसी के लिए जिहाद कर रहा हो, तो फिर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए न केवल उसका विरोध करना हराम है अपितु उसकी सहायता करना अनिवार्य है ।

इसके बाद अहजाब (अर्थात् समूह) के मौलिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए इस प्रकरण में खंडक के युद्ध का उल्लेख किया गया है, जिस में सारे अरब के समूह मदीना पर आक्रमण करने के लिए उमड़ पड़े थे और देखने में उनसे बचाव का कोई उपाय दिख नहीं रहा था । उस समय अल्लाह तआला ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह चमत्कार दिखाया कि एक भयानक आँधी के द्वारा आप सल्ल. की सहायता की, जिस ने काफिरों की आँखों को अंधा कर दिया और वे अफरा-तफरी में भाग खड़े हुए और बहुत सी सवारी के जानवर जो बंधे हुए थे उनको खोलने तक का उन्हें समय नहीं मिला । अतः अपनी सवारी के जानवरों सहित वे अनेक साज़ो-सामान पीछे छोड़ गये, और वह खुराक की भारी कमी जिस से मुसलमान दो चार थे इस घटना के कारण वह दूर हो गई ।

इस घटना से पूर्व मदीना वासियों की जो अवस्था भी उसका भी वर्णन किया गया है कि इतनी भयानक मुसीबत और तबाही उन्हें दिखाई दे रही थी कि भय के कारण उन की आँखें पथरा गई थीं और मुनाफ़िक मदीना के मुसलमानों से कह रहे थे कि अब तुम्हारे लिए कोई आश्रयस्थल नहीं रहा । उस समय मोमिनों ने उन्हें यह उत्तर दिया कि हमारा ईमान तो पहले से भी अधिक मज़बूत हो गया है, क्योंकि अरब समूहों के इस भयानक आक्रमण की तो हमें इससे पहले ही सूचना दे दी गई थी । उनका इशारा सूरः अल-क़मर की ओर था जिसमें यह आयत आती है कि इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएँगे (आयत सं. 46) । अतएव इस युद्ध में मोमिनों ने अपने वचन को पूरा कर दिखाया । उनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो उस समय साथ शामिल नहीं थे परन्तु प्रतीक्षा कर रहे थे कि काश उनको भी अहजाब युद्ध में शामिल होने वाले हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की भाँति दृढ़ता दिखाने और कुर्बानियाँ करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता ।

इस सूरः की आयत संख्या 38 में अल्लाह तआला ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को अपने मुँह बोले बेटे की तलाक्शुदा पत्नी के साथ निकाह करने का आदेश दिया है। यह आदेश हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर बहुत नागवार गुजर रहा था और इस पर मुनाफिक लोग आपत्ति कर सकते थे, उसका भी कुछ भय था। इसलिए इस शादी के लिए आप सल्ल. बड़े असमंजस में पढ़ गये थे। परन्तु अल्लाह के आदेश का पालन करना बहरहाल आवश्यक था।

इस के बाद एक ऐसी आयत (संख्या 41) है जिसे इस सूरः का उत्कर्ष कहना चाहिए और इसका संबंध हज़रत ज़ैद रजि. की घटना से भी है। यह सार्वजनिक घोषणा की गई कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में न तो ज़ैद रजि. के पिता थे और न तुम जैसे लोगों के पिता हैं बल्कि वे तो ख़ातमुन्बियीन (नबियों के मुहर) हैं। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबियों का आध्यात्मिक पितृत्व पद प्रदान किया गया। विषयवस्तु की वर्णन शैली से तो यही अर्थ निकलता है। परन्तु ख़ातमुन्बियीन के और बहुत से अर्थ हैं जो सबके सब इस कुरआनी आयत के अभिप्रेत हैं और प्रत्येक अर्थ की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्बियीन सिद्ध होते हैं। उदाहरण स्वरूप ख़ातम शब्द का एक अर्थ मुसहिक (सत्यापक) भी है। समस्त धर्म-विधानों में से केवल एक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का धर्म-विधान (शरीअत) ही है जिसमें पिछले प्रत्येक युग के नबियों का सत्यापन किया गया है। दुनिया की कोई धार्मिक पुस्तक इस शान की आयत प्रस्तुत नहीं कर सकती।

इसके बाद की आयत हज़रत ज़करिया अलै. की उस दुआ की याद दिलाती है जिस में उन्हें पुत्र-प्राप्ति की खुशखबरी देने के बाद अल्लाह तआला ने उन पर वह़ की कि सुबह और शाम अल्लाह तआला का गुणगान करो।

इसके बाद आयत संख्या 46-47 में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के शाहिद, मुबशिर और नज़ीर (गवाह, शुभसमाचार दाता और सतर्ककारी) होने का उल्लेख कर दिया गया। आप सल्ल. अपने से पूर्व महान नबी मूसा अलै. की सच्चाई के गवाह थे और अपने बाद आने वाले अपने दास (इमाम महदी) की सच्चाई के भी गवाह थे। आप सल्ल. की शान की उपमा सूर्य से दी गई है जो समग्र जगत को प्रकाशित करता है तथा चन्द्रमा भी उसी से प्रकाश पाता है। अतः यह नियत है कि जब रात का अंधकार छा चुका हो तब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश ही को कोई चन्द्रमा फिर मानव समाज तक पहुँचाए। अतः इस में यह भविष्यवाणी है कि भविष्य के अंधकार पूर्ण युगों में ऐसा अवश्य होगा।

इसके बाद मोमिनों को तक़वा के नियम सिखाए गये हैं और हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो उच्च महिमा वर्णन की गई थी, उस को दृष्टि में रखते हुए उन पर अनिवार्य कर दिया गया है कि वे अत्यन्त शिष्टाचार पूर्वक काम लें। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई अवसर पर अपने प्रियजनों और सहावियों को अपने घर में भोजन करने का निमंत्रण देते थे। इन आयतों में सहावियों को नसीहत की गई है कि जब हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा निमंत्रण दें तो उसे साधारण निमंत्रण विचार करके समय से पूर्व उन के घर पहुँच कर भोजन पकने की प्रतीक्षा में न बैठो। बल्कि जब भोजन तैयार हो और तुम्हें बुलाया जाए तभी जाया करो और भोजन के पश्चात अनुमति प्राप्त करके वापस अपने घरों को जाओ। यदि भोजन के बीच तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो पर्दे के पीछे से उम्महातुल मुयेनीन (अर्थात् मोमिनों की माताओं, हजरत मुहम्मद सल्ल. की पत्नियों) को सूचित करो। यहाँ पर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों को अन्य मुसलमान स्त्रियों की तुलना में पवित्रता अपनाने की अधिक ताक़ीद की गई है। क्योंकि उनकी मर्यादानुकूल यह आवश्यक है कि उनके कारण हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मामूली सी आरोप की बात भी न सुननी पड़े।

जिस प्रकार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुनाफ़िक लोग मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाते थे उसी प्रकार हजरत मूसा अलै. को भी मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाया गया था। इस सूरः के अन्त पर इस बात को दोहराया गया है कि हजरत मुहम्मद सल्ल. को उन से पूर्व के प्रतापी नबी हजरत मूसा अलै. से अधिकतापूर्वक समानताएँ हैं। जिस प्रकार मूसा अलै. को बताया गया था कि अल्लाह के निकट वे सम्मानित चहेते हैं इसी प्रकार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गई कि इन मिथ्यारोपों के कारण तुझे कोई हानि नहीं होगी। क्योंकि तू अल्लाह तआला के निकट इहलोक और परलोक में चहेता है।

इस सूरः की अन्तिम दो आयतों में एक बार फिर हजरत मूसा अलै. की ओर इशारा करते हुए हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा गया कि अमानत (अर्थात् पवित्र कुरआन) का जो बोझ तुझ पर डाला गया वह मूसा अलै. पर डाले जाने वाले अमानत के बोझ से बहुत भारी है। पहाड़ भी इसके प्रताप से टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, परन्तु तू इस अमानत के बोझ को उठाने के लिए आगे बढ़ा, जिसके फलस्वरूप तुझे अपने आप पर अत्यधिक अत्याचार करना पड़ा। परन्तु तूने इसके परिणाम की कोई परवाह नहीं की।



شُورَةُ الْأَخْزَابِ مَدِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعٌ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ تِسْعَةُ رُسُوْلٍ عَالَتْ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे नवी ! अल्लाह का तक्कवा धारण कर और काफिरों और मुनाफिकों की बात न मान । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । । ।

और उसका अनुसरण कर जो तेरी ओर तेरे रब की ओर से वहइ किया जाता है। जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है । । ।

और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है । । ।

अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नहीं बनाए । इसी प्रकार उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिन्हें तुम माँ कह कर अपने ऊपर हराम कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बनाया । न ही तुम्हारे मुँह बोले (पुत्रों) को तुम्हारे पुत्र बनाया है। यह केवल तुम्हारे मुँह की बातें हैं । और अल्लाह सच्ची (बात) वर्णन करता है और वही है जो (सीधे) मार्ग की ओर हिदायत देता है । । ।

उनको उनके पिताओं के नाम के साथ पुकारा करो, यह अल्लाह के निकट अधिक न्यायपूर्ण है। और यदि तुम उनके

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آتَيْنَاكُمُ الْأَثْقَالَ
وَالْمُنْفِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْمًا حَكِيمًا ②

وَأَتَيْنَاهُمَا يَوْمَ حِجَّةٍ إِلَيْكُمْ مِنْ زَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ③

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكُفِّرْ بِاللَّهِ وَكُفِّرْ ④

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ
وَمَا جَعَلَ أَرْوَاحَكُمْ أُثْرَ تَظْهَرُونَ
مِنْهُنَّ أَمْهَاتُكُمْ ۝ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ
آبَاءَكُمْ ۝ ذِلْكُمْ قَوْلُكُمْ بِإِفْوَاهِكُمْ ۝
وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَعْلَمُ السَّبِيلَ ⑤

أَدْعُوهُمْ لِأَبَلِيهُمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ
فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا أَبَاءَهُمْ فَلَا خُواْنِكُمْ فِي

पिताओं को न जानते हो तो फिर वे धार्मिक मामलों में तुम्हारे भाई और तुम्हारे मित्र हैं। और इस विषय में जो तुम गलती कर चुके हो उसका तुम पर कोई पाप नहीं। हाँ जो तुम्हारे दिलों ने जान-बूझ कर कमाया वह (पाप) है। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। १६। नवी मोमिनों पर उनकी अपनी जानों से भी अधिक हक रखता है और उसकी पत्तियाँ उनकी माताएँ हैं। और जहाँ तक रक्त संबंधियों की बात है तो अल्लाह की पुस्तक में (उल्लेखित आदेशानुसार) उनमें से कुछ दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा एक-दूसरे से अधिक प्राथमिकता रखते हैं। सिवाए इसके कि तुम अपने मित्रों से (उपकार स्वरूप) कोई अच्छा वर्ताव करो। यह सब बातें पुस्तक में लिखी हुई मौजूद हैं। १७।

और जब हमने नवियों से उनकी प्रतिज्ञा और तुझ से भी और नूह से और इब्राहीम और मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से। और हमने उनसे बहुत दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी। १८।

ताकि वह सच्चों से उनकी सच्चाई के संबंध में प्रश्न करे। और काफिरों के लिए उसने पीड़ाजनक अज्ञाब तैयार किया है। १९। (रुक् ۱۷)

हे लोगों जो ईमान लाए हो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब

الَّذِينَ وَمَوَالِيْكُمْ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكُنْ مَا تَعَدَّتْ
فَلُؤْبِكُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا أَرْحَمًا ۚ ①

أَنَّجِئُ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَأَزْوَاجُهُمْ أَمْهَاتُهُمْ ۖ وَأَوْلَوِ الْأَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ أَوْلَى بِيَعْصِي فِي كِتْبِ اللَّهِ مِنْ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا
إِلَى أَوْلَيَّكُمْ مَعْرُوفًا ۖ كَانَ ذَلِكَ
فِي الْكِتْبِ مَسْطُورًا ۚ ⑦

وَإِذَا حَدَّنَا مِنَ النَّبِيِّنَ مِنْتَاقَهُمْ وَمِنْكَ
وَمِنْ نُوْجٍ وَلَابِرٍ هِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى
إِبْرَاهِيمَ وَاحْدَنَا مِنْهُمْ مِنْتَاقًا غَلِيلًا ۖ
لَيَسَّرَ الصَّدِيقِينَ عَنْ صَدْقِهِمْ ۖ وَأَعَدَ
لِلْكُفَّارِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

لِيَأْتِهَا الَّذِينَ أَمْنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ

तुम्हारे पास सेनाएँ आई थीं तो हमने उनके विरुद्ध एक हवा भेजी और ऐसी सेनाएँ भेजीं जिनको तुम देख नहीं रहे थे। और जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ॥101॥

जब वे तुम्हारे पास तुम्हारे ऊपर की ओर से भी और तुम्हारे नीचे की ओर से भी चढ़ आए और जब आँखें पथरा गईं और दिल (उछलते हुए) हँसलियों तक जा पहुँचे और तुम लोग अल्लाह पर भाँति-भाँति की धारणा कर रहे थे ॥111॥

वहाँ मोमिन परीक्षा में डाले गए और कठिन (परीक्षा के) झटके दिए गए ॥112॥

और जब मुनाफिकों ने और उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग था, कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ने हम से धोखे के अतिरिक्त कोई वादा नहीं किया ॥131॥

और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, हे यस्त्रिव (मदीना) वासियो ! तुम्हारे टिके रहने का कोई अवसर नहीं रहा अतः वापस चले जाओ । और उनमें से एक समूह ने नबी से यह कहते हुए आज्ञा माँगनी शुरू की कि निःसन्देह हमारे घर असुरक्षित हैं । हालांकि वे असुरक्षित नहीं थे । वे केवल भागने का इरादा किए हुए थे ॥141*॥

عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُودٌ فَأَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِحَّاً وَجُودًا لِّهُ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۚ

إِذْ جَاءَهُوكُمْ مِّنْ فُوقَكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ
مِنْكُمْ وَإِذْ رَأَيْتِ الْأَبْصَارَ وَبَلَغَتِ
الْقُلُوبُ الْحَاجِرَ وَتَطَّلَّبُونَ بِاللَّهِ الظَّلَّوْنَا ①

هُنَالِكَ ابْتِلَى الْمُؤْمِنُونَ وَرُزِّلُوا زِلْزَالًا
شَدِيدًا ②

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنْفَقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ
إِلَّا غَرُورًا ③

وَإِذْ قَاتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَأْهَلُ يَثْرِبَ لَا
مَقَامٌ لَّكُمْ فَأَرْجِعُوْا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِئِيقٌ
مِّنْهُمُ النَّبِيُّ يَقُولُونَ إِنَّ يُوْسَعَ عَوْرَةً
وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فَرَارًا ④

* अरबी शब्द औरः का अर्थ जानने के लिए देखें अरबी शब्दकोश अल-मुफरदात लि गरीबिल कुरआन ।

और यदि उन पर उस (बस्ती) की प्रत्येक ओर से चढ़ाई कर दी जाती, फिर उनसे उपद्रव करने को कहा जाता तो वे अवश्य उसे करते । और उस पर मामूली समय के अतिरिक्त अधिक विलम्ब न करते । 15।

हालाँकि इससे पूर्व निःसन्देह वे अल्लाह से प्रतिज्ञा कर चुके थे कि वे पीठें नहीं दिखाएँगे । और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा अवश्य पूछी जाएगी । 16।

तू कह दे कि यदि तुम मृत्यु से अथवा वध किये जाने से भागोगे तो भागना तुम्हें कदापि लाभ नहीं देगा । और इस दशा में तुम्हें अल्पमात्र के अतिरिक्त कुछ भी लाभ नहीं मिलेगा । 17।

तू पूछ कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है यदि वह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाने का इरादा करे या तुम्हारे हक में दया का फैसला करे ? और वे अपने लिए अल्लाह के अतिरिक्त न कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक । 18।

अल्लाह तुम में से उनको भली-भाँति जानता है जो (जिहाद से) रोकने वाले हैं । और अपने भाइयों को कहते हैं कि हमारी ओर आ जाओ । और वे लड़ाई के लिए बहुत कम आते हैं । 19।

तुम्हारे विरुद्ध बहुत कंजूसी से काम लेते हैं । अतः जब कोई भय (का अवसर) आता है तू उन्हें देखेगा कि वे

وَلَوْ دَخَلْتُ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ
سَيْلُوا الْفِتْنَةَ لَأَتُوهَا وَمَا تَلَبَّوْا بِهَا
إِلَّا يَسِيرًا ⑯

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلِ
لَا يَوْلُونَ الْأَذْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسُؤُلًا ⑯

قُلْ إِنَّ يَنْقَعِكُمُ الْفَرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ
مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تَمْتَعُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ⑯

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعِصِمُكُمْ مِنْ اللَّهِ
إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً
وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ⑯

قُدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمَعْوَقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَابِلِينَ
لَا خَوَانِيمُ هَلَمْ إِلَيْنَا ۚ وَلَا يَأْتُونَ
الْبُاسُ إِلَّا قَلِيلًا ⑯

أَشَحَّةً عَلَيْكُمْ ۗ فَإِذَا جَاءَ الْحَوْفَ
رَأَيْتُمُهُ يَنْظَرُونَ إِلَيْنَا تَدُورُ أَعْيُنُهُ

तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं कि उनकी आँखें उस व्यक्ति की भाँति (भय से) घूम रही होती हैं जिस पर मृत्यु की बेहोशी छा गई हो । अतः जब भय जाता रहता है तो भलाई के बारे में कंजूसी करते हुए वे (अपनी) तेज ज़बानों से तुम्हें दुःख पहुँचाते हैं । ये वे लोग हैं जो (वास्तव में) ईमान नहीं लाए । अतः अल्लाह ने उनके कर्म नष्ट कर दिए और यह बात अल्लाह के लिए बहुत सरल है । 120।

वे धारणा करते हैं कि सेनाएँ अभी तक नहीं गईं । और यदि सेनाएँ (वापस) आजाएँ तो वे (पछतावा करते हुए) चाहेंगे कि काश वे वीरान स्थलों में बद्रुओं के बीच रहते होते (और) तुम्हारे बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे होते । और यदि वे तुम्हारे बीच होते भी तो बहुत कम ही युद्ध करते । 121। (रुक् ٢٩)

निःसन्देह तुम में से प्रत्येक व्यक्ति जो अल्लाह और परलोक के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को बहुत याद करता है, उस के लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है । 122।

और जब मोमिनों ने सेनाओं को देखा तो उन्होंने कहा, यही तो है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था । और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था और इस (घटना) ने उनको ईमान और आज्ञापालन में ही आगे बढ़ाया । 123।

كَالَّذِي يَعْشُى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ حَدَادٍ
أَشَّهَّ عَلَى الْخَيْرِ أُولَئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا
فَأَحْجَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ①

يَحْسَبُونَ الْأَخْرَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ
يَأْتُ الْأَخْرَابُ يَوْمًا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ
فِي الْأَغْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَبْيَابِكُمْ
وَلَوْ كَانُوا فِيهِمْ مَا قَتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ②

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُشْوَهٌ
حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ
وَذَكْرَ اللَّهِ كَثِيرًا ③

وَلَمَّا آتَاهُمُ الْمُؤْمِنُونَ الْأَخْرَابَ قَاتُوا
هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادُهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَتَسْلِيمًا ④

मोमिनों में ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से प्रण किया था उसे सच्चा कर दिखाया। अतः उनमें से वह भी है जिसने अपनी मन्त्रत को पुरा कर दिया। और उनमें से वह भी है जो अभी प्रतीक्षा कर रहा है। और उन्होंने कदापि (अपने आचरण में) कोई परिवर्तन नहीं किया। 124।

(यह इस कारण है) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का प्रतिफल दे और मुनाफिकों को यदि चाहे तो अज़ाब दे अथवा प्रायश्चित को स्वीकार करते हुए उन पर झुके। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 125।

और जिन्होंने इनकार किया अल्लाह ने उन लोगों को उनके क्रोध सहित इस प्रकार लौटा दिया कि वे कोई भलाई प्राप्त न कर सके। और युद्ध में अल्लाह मोमिनों के पक्ष में पर्याप्त हो गया। और अल्लाह बहुत शक्तिशाली और पूर्ण प्रभुत्व वाला है। 126।

और अहले किताब में से जिन्होंने उनकी सहायता की थी उसने उन लोगों को उनके दुर्गों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में रोब डाल दिया। उनमें से एक गिरोह की तुम हत्या कर रहे थे और एक गिरोह को बन्दी बना रहे थे। 127।*

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا
اللَّهُ عَلَيْهِ قَمْتُمُهُ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ
وَمَنْمَمُهُ مَنْ يَتَنَظَّرُ وَمَا بَدَلُوا
شَدِيلًا

لِكُلِّمَنِي اللَّهُ الصَّدِيقُونَ بِصَدْقَهُمْ وَيَعْذِبُ
الْمُتَفَقِّيْنَ إِنْ شَاءَ أُوْيَسْوَبَ عَلَيْهِمْ لَأَنَّ
اللَّهُ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَسْأَلُوا
خَيْرًا وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِسَالَ
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا

وَأَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهِرُوهُمْ مَنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ صَيَّا صِنْعَهُمْ وَقَدَّفَ
فِي قُلُوبِهِمُ الرَّغْبَ فَرِيْقًا تَقْتَلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيْقًا

* इसमें अहज़ाब युद्ध के समय धोखाबाज़ी करने वाले यहूदियों का उल्लेख है। यद्यपि उन्होंने बहुत मज़बूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग बनाए हुए थे परन्तु जब अल्लाह तआला ने उन पर मोमिनों को विजयी→

और तुम्हें उनकी धरती और उनके मकानों और उनके धन का उत्तराधिकारी बना दिया और ऐसी धरती का भी जिसे तुमने (उस समय तक) पैरों तले रौंदा नहीं था । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।²⁸

(रुकू ۳۹)

हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह दे, कि यदि तुम संसार का जीवन और उसकी सुन्दरता को चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें आर्थिक लाभ पहुँचाऊँ । और उत्तम ढंग से तुम्हें विदा करूँ ।²⁹

और यदि तुम अल्लाह को और उसके रसूल को और परलोक के घर को चाहती हो तो निःसन्देह अल्लाह ने तुम में से अच्छे कर्म करने वालियों के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल तैयार किया है ।³⁰

हे नबी की पत्नियो ! जो भी तुम में से खुली-खुली अश्लीलता में पड़ेगी उसके लिए अज़ाब को दोगुना बड़ा दिया जाएगा और यह बात अल्लाह के लिए सरल है ।³¹

وَأُورْثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطْقُنُوهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لَا زَوْا حِلَكَ إِنْ كُنْتَ مِنْ
تَرْدُنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِيَّنَهَا فَتَعَالَىٰ نَّ
إِمَّتُعْكِنَ وَأَسْرِحُكَنَ سَرَاحًا جَمِيلًا
وَإِنْ كُنْتَ مِنْ تَرْدُنَ اللَّهَ وَرَسُولُهُ وَالْأَذَادَ
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعْدَلُ لِمُحِسِّنِتِ مُنْكِنَ
أَجْرًا عَظِيمًا

يَنِسَاءُ النَّبِيِّ مَنْ يَأْتِ مُنْكِنَ بِفَاحِشَةٍ
مُبَيِّنَةٍ يُصْعَفُ لَهَا الْعَذَابُ ضَعِيفُينَ
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا

←बनाने का निर्णय कर लिया तो वे दुर्ग उनके कुछ काम न आए बल्कि वे स्वयं अपने हाथों से उनको ध्वस्त करने लगे ।

* इसमें ऐसे इलाकों पर विजय पाने की भविष्यवाणी है जहाँ अभी तक मुसलमानों को पैर रखने का अवसर नहीं मिला । वास्तव में इसमें भविष्यवाणियों का एक लम्बा क्रम है ।

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगी और पुण्यकर्म करेगी हम उसे उसका प्रतिफल दो बार देंगे । और उसके लिए हमने बहुत सम्मानजनक जीविका तैयार की है । 32।

हे नबी की पत्नियो ! तुम कदापि साधारण स्त्रियों जैसी नहीं हो बशर्ते कि तुम तकवा धारण करो । अतः हाव भाव के साथ बात न किया करो अन्यथा वह व्यक्ति जिस के मन में रोग है, (अनुचित) लालसा करने लगेगा । और अच्छी बात कहा करो । 33।

और अपने घरों में ही रहा करो और बीती हुई अज्ञानता-युगीन शृंगार की भाँति शृंगार को प्रदर्शित न किया करो । और नमाज़ को कायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । हे (नबी) के घर बालो ! निःसन्देह अल्लाह चाहता है कि तुम से प्रत्येक प्रकार की गंदगी को दूर कर दे और तुम्हें अच्छी प्रकार से पवित्र कर दे । 34।

और अल्लाह की आयतों और विवेकपूर्ण बातों को याद रखो जिनकी तुम्हारे घरों में चर्चा की जाती है । निःसन्देह अल्लाह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी (और) ज्ञान रखने वाला है । 35। (रुक् 4)

निःसन्देह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ और मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ और आज्ञाकारी पुरुष

وَمَنْ يَقْنُتْ مُنْكَنْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ
وَتَعْمَلْ صَالِحًا لَوْ تَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ
وَأَغْنَدَنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ⑩

يَنِسَاءُ الَّتِي لَسْتَنْ كَاحِدِنَ النِّسَاءِ إِنْ
الْقَيْنَتِنْ فَلَانَخُصَّصُنْ بِإِنْتَقُولْ فَيَقْطُمَعَ
الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ⑪

وَقَرْنَ فِي يَوْمِ تَكْنَ وَلَا تَبَرَّجْ
الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى وَأَقْمَنَ الْصَّلَوةَ وَأَتَيْنَ
الرَّكْوَةَ وَأَطْعَنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِلَمَاءِرِيدْ
اللَّهُ لِيَذِهَبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ
وَيَطْهِرُكُمْ تَطْهِيرًا ⑫

وَأَذْكُرْنَ مَا يَتْلُى فِي يَوْمِ تَكْنَ مِنْ أَيْتَ اللَّهِ
وَالْحِكْمَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا حَبِيرًا ⑬

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْفُقَرَائِنَ وَالْفُقَرَائِنَ

और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ और सत्यवादी पुरुष और सत्यवादिनी स्त्रियाँ और धैर्यशील पुरुष और धैर्यशीला स्त्रियाँ और विनम्रता अपनाने वाले पुरुष और विनम्रता अपनाने वाली स्त्रियाँ और दान करने वाले पुरुष और दान करने वाली स्त्रियाँ और रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिकता से याद करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह ने इन सब के लिए क्षमादान और महान प्रतिफल तैयार किए हुए हैं । 36।

और किसी मोमिन पुरुष और किसी मोमिन स्त्री के लिए उचित नहीं कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी बात का निर्णय कर दें तो अपने मामले में उनको (स्वयं) निर्णय करने का अधिकार शेष रहे और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवमानना करे वह बहुत खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ता है । 37।

और जब तू उसे, जिसको अल्लाह ने पुरस्कृत किया और तूने भी उसे पुरस्कृत किया, कह रहा था कि अपनी पत्नी को रोके रख (अर्थात् तलाक न दे) और अल्लाह का तक्वा धारण कर । और तू अपने मन में वह बात छुपा रहा था जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था । और तू लोगों से भयभीत था जबकि अल्लाह इस बात का अधिक अधिकार रखता है कि

وَالصَّدِيقُونَ وَالصَّدِيقَاتُ وَالصَّابِرِينَ
وَالصَّابِرَاتُ وَالْخَشِعُونَ وَالْمُغْسَلُونَ
وَالْمُتَصَدِّقُونَ وَالْمُتَصَدِّقَاتُ وَالصَّالِمِينَ
وَالصَّالِمَاتُ وَالْحَفِظَيْنَ فَرُوْجَهُمْ
وَالْحَفِظَاتُ وَالذَّكَرِيَّنَ اللَّهُ كَثِيرًا
وَالدُّكَارِاتُ أَعَدَ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً
وَأَجْرًا عَظِيمًا ⑦

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةً إِذَا قَضَى
اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمْ
الْخَيْرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۖ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ⑧

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ
وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكَ عَلَيْكَ زَرْجَكَ
وَأَنْقَقَ اللَّهُ وَتَخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا أَنْتَ
مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ أَنْ
تَخْشِيَهُ فَلَمَّا قَضَى رَيْدَ مِنْهَا وَطَرَأَ

तू उससे भय करे । अतः जब जैद ने उस (स्त्री) के विषय में अपनी इच्छा पूरी कर ली (और उसे तलाक दे दी), हमने उसे तुझ से ब्याह दिया ताकि मोमिनों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के विषय में कोई उलझन और दुविधा न रहे, जब वे (अर्थात् मुँह बोले बेटे) उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर चुके हों (अर्थात् उन्हें तलाक दे चुके हों) । और अल्लाह का निर्णय हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला है । 138।

अल्लाह ने नबी के लिए जो अनिवार्य कर दिया है, उस के विषय में उस पर कोई उलझन नहीं होनी चाहिए । अल्लाह के उस नियम के रूप में जो पहले लोगों में भी जारी किया गया । और अल्लाह का निर्णय एक जचे-तुले अंदाज में हुआ करता है । 139।

(यह अल्लाह का नियम उन लोगों के पक्ष में बीत चुका है) जो अल्लाह के संदेश को पहुँचाया करते थे और उससे डरते रहते थे और अल्लाह के सिवा किसी और से नहीं डरते थे । और अल्लाह हिसाब लेने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है । 140।

मुहम्मद तुम्हारे (जैसे) पुरुषों में से किसी का पिता नहीं बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और सब नबियों का खातम (अर्थात् मुहर) है । और अल्लाह प्रत्येक विषय का खूब ज्ञान रखने वाला है । 141। (रुक् ५)

رَوْجُنْكَهَا إِلَيْكَ لَا يَكُونُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
حَرَجٌ فِي أَزْوَاجٍ أَذْعَيْتَهُمْ إِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَظَرَأً وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ①

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ قَيْمَافَرَصَ
اللَّهُ لَهُ سُنْنَةُ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلٍ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدْرًا مَقْدُورًا ②

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسْلَتَ اللَّهِ وَيَخْتَوِنُهُ
وَلَا يَخْسُونَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهُ وَكَفَى بِاللَّهِ
حَسِيبًا ③

مَا كَانَ مُحَمَّدًا أَبَا أَحَدٍ قَنْ رَجَالَكُمْ
وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ الْبَيِّنَ ④
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो !
अल्लाह का अधिकतापूर्वक स्मरण
किया करो । 42।

और प्रातः भी और सायं भी उसका
गुणगान करो । 43।

वही है जो तुम पर कृपा भेजता है और
उसके फरिश्ते भी, ताकि वह तुम्हें
अन्धकारों से प्रकाश की ओर ले जाए ।
और वह मोमिनों के हक्क में बार-बार
कृपा करने वाला है । 44।

जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका
अभिवादन सलाम होगा । और उस
(अल्लाह) ने उनके लिए बहुत सम्मान-
जनक प्रतिफल तैयार कर रखा है । 45।

हे नबी ! निःसन्देह हमने तुझे एक
गवाह और एक शुभ-समाचार दाता
और एक सतर्ककारी के रूप में भेजा
है । 46।

और अल्लाह की ओर उसके आदेश से
बुलाने वाले और एक प्रकाशकर सूर्य के
रूप में । 47।

और मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे कि
(यह) उनके लिए अल्लाह की ओर से
बहुत बड़ी कृपा है । 48।

और काफिरों और मुनाफिकों की बात न
मान और उनके कष्ट पहुँचाने की ओर
ध्यान न दे । और अल्लाह पर भरोसा कर
और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में
पर्याप्त है । 49।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम
मोमिन स्त्रियों से निकाह करो फिर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كُرِّمُوكُلُّهُ ذِكْرًا
كَثِيرًا ①

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ②

هُوَ الَّذِي يَصْلِفُ عَلَيْكُمْ وَمَلِئُكَتُهُ
لِيَخْرُجَكُم مِّنَ الظُّلْمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ
بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ③

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ④ وَأَعْدَ
لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ⑤

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا
وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ⑥

وَدَاعِيًّا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ⑦

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِإِنَّ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ
فَضْلًا كَيْرًا ⑧

وَلَا تُطِعُ الْكُفَّارِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَدَعْ
أَذْنَهُمْ وَتَوَكُّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفِي بِاللَّهِ
وَكِيلًا ⑨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكْحَشَمُ الْمُؤْمِنِينَ

उनको छूने से पूर्व ही उन्हें तलाक़ दे दो तो उनके ऊपर तुम्हारी ओर से कोई इहत नहीं जिसकी तुम गिनती रखो । अतः उन्हें कुछ धन दो और उन्हें अच्छे ढंग से विदा करो । ५०।

हे नबी ! निःसन्देह हमने तेरे लिए तेरी वह पत्नियाँ वैध ठहरा दी हैं जिनके महर तू उन्हें दे चुका है और वे स्त्रियाँ भी जो तेरे अधीन हैं । अर्थात् जो अल्लाह ने तुझे गनीमत के रूप में प्रदान की हैं । और तेरे चाचा की पुत्रियाँ और तेरी बुआओं की पुत्रियाँ और तेरे मामुओं की पुत्रियाँ जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की है । और प्रत्येक मोमिन स्त्री यदि वह अपने आप को नबी के लिए समर्पित कर दे, इस शर्त के साथ कि नबी उससे निकाह करना पसंद करे । (यह आदेश) मोमिनों से हट कर केवल तेरे लिए है । हमने उन की पत्नियों के बारे में और उनके अधीनस्थ स्त्रियों के बारे में जो उन पर अनिवार्य किया है उसका हमें ज्ञान है । (यह स्पष्ट किया जा रहा है) ताकि (उनके बारे में) तुझ पर कोई तंगी न रहे । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाले है । ५१।

तू उनमें से जिन्हें चाहे छोड़ दे और जिन्हें चाहे अपने पास रख । और जिन्हें तू छोड़ चुका है उनमें से किसी को यदि फिर (वापस लेना) चाहे तो तुझ पर

لَمْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا
لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِذْنَةٍ تَعْتَدُونَهَا
فَمَسْعِيَهُنَّ وَسَرِحُوهُنَّ سَرَاحًا جِيَلًا ۝
يَا يَهُا الَّتِيْ ائِنَّا أَخْلَقْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ
الَّتِيْ أَتَيْتَ أَجْوَرَهُنَّ وَمَا مَلَكْتَ
يَمْيِنَكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَلَّتِ
عَمِيلَكَ وَبَلَّتِ عَمِيلَكَ وَبَلَّتِ خَالِكَ
وَبَلَّتِ خَلِيلَكَ الَّتِيْ هَاجَرَنَّ مَعَكَ
وَأَمْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنَّ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلَّهِ
إِنَّ أَرَادَ اللَّهِيْ أَنْ يَسْتَنِكْهُمَا خَالِصَةً لَكَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عِلِّمْنَا مَا فَرَضْنَا
عَلَيْهِمْ فَتَأْزِيْجُهُمْ وَمَا مَلَكْتَ
أَيْمَانَهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۝
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

تُرْجِعُ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُشْوِيْ إِلَيْكَ
مَنْ تَشَاءُ ۝ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَّلَتْ

कोई पाप नहीं । यह इस बात के बहुत निकट है कि उनकी आँखें ठण्डी हों और वे शोक में न पड़ें और वे सब उस पर संतुष्ट हो जाएँ जो तू उन्हें दे । और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) बहुत सहनशील है । ५२।

इसके पश्चात तेरे लिए (और) स्त्रियाँ वैध नहीं और न यह वैध है कि इन (पत्नियों) को बदल कर तू और पत्नियाँ कर ले चाहे उनकी सुन्दरता तुझे कितना ही पसन्द क्यों न आए । परन्तु जो तेरे अधीन हैं वे अपवाद हैं । और अल्लाह हर बात का निरीक्षक है । ५३।

(रुक् ٣)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! नबी के घरों में प्रवेश न किया करो, सिवाएँ इसके कि तुम्हें भोजन करने का निमंत्रण दिया जाए । परन्तु इस प्रकार नहीं कि उसके पकने की प्रतीक्षा करते रहो । परन्तु (भोजन तैयार होने पर) जब तुम्हें बुलाया जाए तो प्रवेश करो और जब तुम भोजन कर चुको तो वहाँ से चले जाओ और वहाँ (बैठे) बातों में न लगे रहो । यह (बात) निःसन्देह नबी के लिए कष्टदायक है परन्तु वह तुम से (इसको कहने से) ज़िज्ञकता है परन्तु अल्लाह सच बात से नहीं ज़िज्ञकता । और यदि तुम उन (अर्थात् नबी की पत्नियों) से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगा करो । यह तुम्हारे और

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ مَا لِكَ أَذْنٌ أَنْ تَقْرَأَ
أَعْيُّهُنَّ وَلَا يَخْرُقَ وَيَرْضَى
بِمَا أَتَيْهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ⑥

لَا يَحِلُّ لِكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدِهِنَّ لَا أَنْ تَبْدِلَ
بِهِنَّ مِنْ أَرْوَاجِهِنَّ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ
إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ عَزِيزًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا يَوْمَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ
لِطِهْرٍ إِشَاءُ وَلَكِنْ إِذَا دَعَيْتُمْ
فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعْمَتُمْ فَأَنْتُمْ رُوا وَلَا
مُسْتَأْسِئُنَّ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِنِي النَّبِيُّ فَيَسْتَجِي مُنْكَمْ وَاللَّهُ لَا
يَسْتَحْبِبُ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ
مَتَاعًا فَأَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ

उनके दिलों के लिए अधिक पवित्र (अचारण शैली) है। और तुम्हारे लिए उन्नित नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को दुःख पहुँचाओ। और न ही यह वैध है कि उसके पश्चात् कभी उसकी पत्नियों (में से किसी) से विवाह करो। निःसन्देह अल्लाह के निकट यह बहुत गम्भीर बात है।¹⁵⁴

यदि तुम कोई बात प्रकट करो अथवा उसे छिपाओ तो निःसन्देह अल्लाह हर एक बात का खूब ज्ञान रखने वाला है।¹⁵⁵

इन (नबी की पत्नियों) पर अपने पिताओं के समक्ष आने में कोई पाप नहीं न अपने पुत्रों के, न अपने भाइयों के, न अपने भतीजों के, न अपने भाँजों के, न अपनी (जैसी मोमिन) स्त्रियों के, न ही उनके (समक्ष आने में कोई पाप है) जो उनके अधीन हैं। और (हे नबी की पत्नियो !) अल्लाह का तक्रवा धारण करो। निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक है।¹⁵⁶

निःसन्देह अल्लाह और उसके फरिशते (इस) नबी पर कृपा भेजते हैं। हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम भी उस पर दरूद और बहुत-बहुत सलाम भेजो।¹⁵⁷*

* हजरत मसीह मौक्द अलै. इस पवित्र आयत के बारे में फर्माते हैं :-

“इस आयत से स्पष्ट होता है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा अथवा गुणों को सीमाबद्ध करने के लिए किसी शब्द को विशेष नहीं किया। शब्द तो मिल सकते थे परन्तु स्वयं उल्लेख नहीं किया। अर्थात् आप सल्ल. के सत्कर्मों की प्रशंसा असीमित थी। इस प्रकार की आयत किसी और नबी की शान में प्रयोग नहीं की। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा में वह सत्य और निष्ठा थी कि आप सल्ल. के →

ذِلِّكُمْ أَظَهَرْ لِقْلُوْبِكُمْ وَ قُلُوبِهِنَّ وَ مَا
كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذِنُوا رَسُولَ اللَّهِ وَ لَا أَنْ
تُنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدَ أَبْدًا إِنَّ
ذِلِّكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَغْنِيْمًا ⑩

إِنْ تُبَدِّلُوا أَيْمَانَهُمْ أَوْ تُخْفِقُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
يُكْلِ شَيْءٍ عَلَيْهِمَا ⑪

لَا جَنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي أَبْأَاهِنَّ وَ لَا أَبْأَاهِنَّ
وَ لَا إِخْوَانِهِنَّ وَ لَا أَبْشَاءُ اخْوَانِهِنَّ وَ لَا
أَبْشَاءُ أَخْوَاهِنَّ وَ لَا نَسَاءُهِنَّ وَ لَا مَا
مَكَثُ أَيْمَانِهِنَّ وَ أَتَقْيَنُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ⑫

إِنَّ اللَّهَ وَ مَلِيْكُهُ يَصْلُوْنَ عَلَى النَّبِيِّ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُوْا عَلَيْهِ وَ سَلَّمُوا
تَسْلِيْمًا ⑬

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर इह लोक में भी और परलोक में भी लान्त डाली है। और उसने उनके लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार किया है।¹⁵⁸

और वे लोग जो मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को बिना उस (अपराध) के जो उन्होंने किया हो कष्ट पहुँचाते हैं तो (मानो) उन्होंने एक बड़े दोषारोपण और खुल्लम-खुल्ला पाप का बोझ (अपने ऊपर) उठा लिया।¹⁵⁹

(रुकू ٧/٤)

हे नबी ! तू अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी चादरों को अपने ऊपर छुका दिया करें। यह इस बात के अधिक निकट है कि वे पहचानी जायँ और उन्हें कष्ट न दिया जाए। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दिया करने वाला है।¹⁶⁰*

यदि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और वे लोग जो मदीना में झूठी खबरें उड़ाते फिरते हैं, (इससे) नहीं रुकेंगे तो हम अवश्य तुझे (उनके बुरे अन्त के लिए) उनके पीछे लगा देंगे।

←कर्म अल्लाह की दृष्टि में इन्हें प्रिय थे कि अल्लाह तआला ने सदा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग कृतज्ञता स्वरूप दर्ढ भेजें।'' (मल्फूज़ात हज़रत मसीह मौज़द अलै. प्रथम भाग, पृष्ठ 24, रब्वा प्रकाशन)

* इस आयत में पर्दे का जो आदेश दिया गया है इससे मालूम होता है कि पर्दे के द्वारा गैर मुस्लिम स्त्रियों की तुलना में मुसलमान स्त्रियों की एक पहचान रखी गई है। अन्यथा यहूदी शरारत से कह सकते थे कि हमें पता नहीं था कि यह मुसलमान स्त्री है इस लिए हमने इसे छोड़ दिया।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذَوْنَ إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنْهُمْ
اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعْدَدَهُمْ عَذَابًا
مُّهِينًا

وَالَّذِينَ يُؤْذَوْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
بِغَيْرِ مَا أَكْتَسَبُوا فَقَدْ أَحْمَمُوا بِهَا نَارًا وَإِنَّمَا
مُهِينًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ قُلْ لَا إِرْرَاجِكُوكَ وَبِئْتِكُوكَ
وَنِسَاءُ الْمُؤْمِنِينَ يُؤْذِنُونَ عَلَيْهِنَّ مِنْ
جَلَالِ رَبِّهِنَّ مُذِلَّةٌ أَذْنَى أَنْ يُعْرَفُنَ فَلَا
يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا

لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ الْمُنْفَقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرْضٌ وَالْمُرْجَفُونَ فِي الْمَدِيْنَةِ
لَتَعْرِيَّكُوكَ بِهِمْ فَمَلَّا يَجَاوِرُونَكُوكَ فِيهَا

फिर वे इस (शहर) में तेरे पड़ोस में थोड़े समय से अधिक नहीं ठहर सकेंगे । १६१।

(ये) धुतकारे हुए, जहाँ कहीं भी पाएँ जाएँ पकड़ लिए जाएँ और अच्छी प्रकार से वध किए जाएँ । १६२।*

(यह) अल्लाह का नियम उन लोगों के साथ भी था जो पहले गुजर चुके हैं । और तू अल्लाह के नियम में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाएगा । १६३।

लोग तुझ से निश्चित घड़ी के विषय में पूछते हैं । तू कह दे कि उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है । और तुझ क्या पता कि सम्भवतः (वह) घड़ी निकट ही हो । १६४।

निःसन्देह अल्लाह ने काफिरों पर ला'नत डाली है और उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार की है । १६५।

उसमें वे दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे । न (उसमें अपने लिए) वे कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक । १६६।

जिस दिन उनके चेहरे नरक में औंधे किए जाएँगे वे कहेंगे काश ! हम अल्लाह का आज्ञापालन करते और रसूल का आज्ञापालन करते । १६७।

और वे कहेंगे हे हमारे रब ! निःसन्देह हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का

إِلَّا قَلِيلًاٌ

مَلْعُونِينَ أَيْمَانِقُفُوا أَخْدُوا وَقُتِلُوا
تَقْتِيلًاٌ

سَيِّةُ اللَّهِ فِي الدِّينِ خَلُوا مِنْ قَبْلٍ
وَلَنْ تَجِدَ لِسَيِّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًاٌ

يَئُكُلُ النَّاسَ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِلَيْهَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يَذِرُنَا لَكُلَّ
السَّاعَةِ تَكُونُ قَرِيبًاٌ

إِنَّ اللَّهَ لَعَنِ الْكُفَّارِ وَأَعْذَلَهُمْ
سَعْيَهُ

خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًاٌ لَا يَحِدُونَ وَلِيَأَوْلَ
نَصِيرًاٌ

يَوْمَ تَقْلِبُ وُجُوهُهُمْ فِي التَّارِيْخُوْلُونَ
يَلْكِتَنَا أَطْعَنَا اللَّهُ وَأَطْعَنَا الرَّسُولَا

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطْعَنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا

* आयत 61-62 इन आयतों में मुनाफिकों और यदूदियों में से उन उपद्रवियों का उल्लेख है जो मदीना में मुसलमानों के विरुद्ध झूटी मनगढ़त बातें फैलाते रहते थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह ने बादा किया है कि तू उन पर विजयी होगा और वे तेरे नगर को छोड़ कर चले जाएँगे । उस समय ये अल्लाह की ला'नत से ग्रसित होंगे और ऐसे हालात होंगे कि जहाँ कहीं भी वे पाएँ जाएँ उनकी पकड़-धकड़ करना और उनका वध करना उचित होगा ।

आज्ञापालन किया था । अतः उन्होंने हमें पथभ्रष्ट कर दिया । १६८।

हे हमारे रब ! उन्हें दुगना अजाब दे और उन पर बहुत बड़ी लान्त डाल । १६९। (रुकू ४)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने मूसा को दुःख पहुँचाया । फिर जो उन्होंने कहा उससे अल्लाह ने उसे बरी कर दिया और अल्लाह के निकट वह सम्माननीय था । १७०।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तकवा धारण करो और साफ़-सीधी बात किया करो । १७१।

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्मों का सुधार कर देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा । और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे तो निःसन्देह उसने एक बड़ी सफलता को प्राप्त कर लिया । १७२।

निःसन्देह हमने अमानत को आसमानों और धरती और पर्वतों के समक्ष रखा, तो उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए जबकि सर्वगुण सम्पन्न मानव ने उसे उठा लिया । निःसन्देह वह (अपने आप पर) बहुत अत्याचार करने वाला (और इस उत्तरदायित्व के परिणाम से) बिल्कुल परवाह न करने वाला था । १७३।*

فَأَصْلُونَا السَّيِّلًا^⑯

رَبَّنَا أَتَهُمْ ضَعَفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ
وَالْعَزَمُ لَعْنَاهُ كَيْرًا^⑯
يَا إِيَّاهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
أَذْوَى مُوْسَى فَبَرَأَهُ اللَّهُ مَمَّا قَالُوا وَكَانَ
عِنْدَ اللَّهِ وَجِئْنَا^⑰

يَا إِيَّاهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَقَوَّلُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا
سَدِيْدًا^⑱

يُصْلِحُ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيُغْرِي لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا^⑲

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلُنَّهَا
وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ
كَانَ ظَلُومًا مَاجِهُولًا^⑳

* इस पवित्र आयत में अन्य समस्त नवियों पर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की बड़ई का वर्णन है । क्योंकि कुरआनी शिक्षा स्वरूप जो अमानत अवतरित की जानी थी हजरत→

ताकि अल्लाह मुनाफिक पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों तथा मुश्तिक पुरुषों और मुश्तिक स्त्रियों को अज्ञाब दे । और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए ज्ञुके । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 174। (रुक् ७/६)

لَيَعِذِّبَ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفَقِتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَّحِيمًا

←मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले किसी नबी को यह सामर्थ्य नहीं था कि इस अमानत का बोझ उठा सके । अतः अमानत से अभिप्राय पवित्र कुरआन है । अरबी वाक्य ज़लूमन जहूलन् (स्वयं पर अत्याचार करने वाला और परिणाम से बेपरवाह) का कुछ व्याख्याकार बिल्कुल शलत अनुवाद करते हैं । ज़लूमन से अभिप्राय किसी अन्य पर नहीं बल्कि स्वयं अपनी जान पर अत्याचार करने वाला है जिसने इतना बड़ा बोझ उठा लिया । और जहूलन से अभिप्राय बहुत बड़ा अज्ञानी नहीं, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि जिसने इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी संभाली और फिर इसके परिणाम से बे-परवाह हो गया । अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जितने भी अत्याचार हुए हैं कुरआन के अवतरण के पश्चात ही आरम्भ हुए हैं ।

34—सूरः सबा

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ इस आयत से होता है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों का स्वामी है और धरती भी उसी की स्तुति के गीत गाती है। और परलोक में भी उसी की स्तुति के गीत गाए जाएँगे। यहाँ हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर स्पष्ट संकेत है कि आपके युग में आपके सच्चे सेवक धरती और आकाश को अल्लाह की स्तुति और उसके गुणगान से भर देंगे।

इसके पश्चात् पर्वतों की व्याख्या करते हुए यह भी बताया गया है कि पर्वतों से अभिप्राय कठिन परिश्रमी पर्वतीय जातियाँ भी होती हैं जैसा कि हजरत दाऊद अलै. के लिए प्रत्यक्ष रूप में पहाड़ों को काम पर नहीं लगाया गया बल्कि पहाड़ों पर बसने वाली परिश्रमी जातियों को सेवा में लगा दिया गया था। अतः पिछली सूरः के अंत पर जिन पर्वतों का उल्लेख है उनकी व्याख्या यहाँ कर दी गई।

इस वर्णन के पश्चात् वे जिन्न जो हजरत दाऊद और हजरत सुलैमान अलै. के लिए सेवा पर लगाए गए थे और उनसे वह बहुत भारी काम लिया करते थे, उनकी व्याख्या की गई कि ये जिन्न मनुष्य रूपी जिन्न थे। ऐसे जिन्न नहीं थे जिनको साधारणतः आग के शोलों से बना हुआ समझा जाता है। आग तो पानी में प्रवेश करते ही भस्म हो जाती है परन्तु इन जिन्नों के बारे में कुरआन में दूसरे स्थल पर कहा गया है कि ये जिन्न ज़ंजीरों से बंधे हुए थे। हालाँकि आग के जिन्न तो ज़ंजीरों से बांधे नहीं जा सकते। और वे समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने का काम करते थे। हालाँकि आग के बने हुए जिन्न तो समुद्र में डुबकी नहीं मार सकते। ये सारी बातें दाऊद अलै. के वंशज के लिए कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक बनाती थीं। अतः हजरत सुलैमान अलै. ने जो शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से मूलतः दाऊद के वंशज थे, इस कृतज्ञता का हक अदा किया। परन्तु जब हजरत सुलैमान अलै. को यह सूचना दी गई कि उनका पुत्र जो उनके पश्चात् सिंहासन पर आसीन होगा एक ऐसे शरीर की भाँति होगा जिसमें कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं होगा। तो उस समय उन्होंने यह दुआ की कि हे अल्लाह! इस दशा में उस समय इस शासन को समाप्त कर दे। मुझे इस भौतिक साम्राज्य से कोई मतलब नहीं। अतः बिल्कुल ऐसा ही हुआ। हजरत सुलैमान अलै. के पश्चात् जब उनका पुत्र उनका उत्तराधिकारी हुआ तो धरि-धरि इन्हीं पर्वतीय जातियों ने यह जानकर कि एक बुद्धिहीन व्यक्ति उन पर शासन कर रहा है उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और हजरत सुलैमान अलै. का भौतिक साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया।

जब बड़े-बड़े साम्राज्य टूटा करते हैं तो उस साम्राज्य के नागरिक परस्पर प्रेम के कारण यह दुआ करने के स्थान पर कि हे अल्लाह ! हमें एक दूसरे के निकट रख, वे इसके विपरीत घृणावश एक दूसरे से दूर हटने की दुआएँ करते हैं । तो ऐसी दशा में वे किसाकहानी स्वरूप बना दिए जाते हैं । और अल्लाह के क्रोध की चक्की तले पीसे जाते हैं । और फिर उनकी बस्तियों में इतनी दूरी डाल दी जाती है कि उनके बीच एक अद्भुत बीरानी का दृश्य दिखाई देता है जिसमें ज्ञाऊ आदि ज्ञाइयाँ उगती हैं । हालाँकि इससे पूर्व उनको वैभवपूर्ण बाशान और खेतियाँ प्रदान की गई थीं ।

पिछली सूरः के अन्त पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस धैर्य की शिक्षा दी गई थी अब फिर उसी की पुनरावृत्ति की गई है कि तू प्रत्येक दशा में धैर्य करता चला जा । फिर एक बहुत बड़ी खुशबूबरी देकर आप सल्ल. के दिल को दृढ़ता प्रदान की गई कि पहले के बड़े बड़े साम्राज्य तो छोटी-छोटी जातियों की भाँति हैं परन्तु तुझे अल्लाह तआला ने समस्त संसार की आध्यात्मिक राजसत्ता प्रदान की है ।

इसके बाद विरोधियों को दुआ के द्वारा अल्लाह तआला से निर्णय चाहने की ओर प्रेरित किया गया है कि वे अकेले-अकेले अथवा दो-दो होकर अल्लाह के समक्ष खड़े होकर दुआएँ करें और फिर विचार करें कि ज्ञान और बुद्धि का यह राजकुमार जिसको कुरआन प्रदान किया गया है कदापि पागल नहीं है ।

फिर फर्माया, तू इस बात पर विचार कर कि जब वे अत्यन्त बेचैन होंगे और वह बेचैनी दूर होने वाली नहीं होगी तो वे निकट के स्थान से पकड़े जाएँगे । निकट का स्थान तो प्राणस्नायु है । अर्थात् उनकी जान के अन्दर से उनको कठोर अज्ञाव में डाला जाएगा । अगली आयत में दूर के मकान से इस ओर संकेत मिलता है कि ऐसे लोगों के लिए प्रायश्चित करना बहुत दूर की बात है । जब अपने साथ घटने वाली घटनाओं पर भी उनको प्रायश्चित करने की प्रेरणा नहीं मिली तो अल्लाह की पकड़ के भय से, जिसे वे बहुत दूर देख रहे हैं उन्हें सम्यक् रूप से प्रायश्चित करने का सामर्थ्य कैसे मिल सकता है । ऐसे इनकार करने वालों और उनकी अनुचित इच्छाओं की प्राप्ति के बीच सदैव एक रोक डाल दी जाती है । जैसा कि उनसे पूर्व युगीन इनकार करने वालों के साथ होता रहा है परन्तु वे अभागे सदा शंकाओं में ही पड़े रहते हैं ।



سُورَةُ سِبْرَيْ مَكَّيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْسَّمَلَةِ خَمْسٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُونٍ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है ।
जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में
है और जो धरती में है । और परलोक में
भी सारी की सारी प्रशंसा उसी की होगी
और वह बहुत विवेकशील (और) सदा
खबर रखता है । । ।

वह जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता
है और जो उससे निकलता है और जो
आकाश से उतरता है और जो उसमें
चढ़ जाता है । और वह बार-बार दया
करने वाला (और) बहुत क्षमा करने
वाला है । । ।

जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते
हैं, निर्धारित घड़ी हम पर नहीं
आएगी । तू कह दे, क्यों नहीं ? मेरे
रब्ब की क्सम ! जो अदृश्य विषय का
ज्ञाता है, वह (घड़ी) अवश्य तुम पर
आएगी । उस (अर्थात् मेरे रब्ब) से
आसमानों और धरती में कण भर भी
अथवा उससे छोटी और न उससे बड़ी
कोई वस्तु छिपी नहीं रहती, परन्तु
वह एक सुस्पष्ट पुस्तक में
(लिपिबद्ध) है । । ।

ताकि वह उन लोगों को प्रतिफल दे जो
ईमान लाए और नेक कर्म किये । यहीं वे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَيْرُ ②

يَعْلَمُ مَا يَلْجُعُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنْ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا
وَهُوَ الرَّحِيمُ الْعَفُورُ ③

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ
قُلْ بَلِّي وَرَبِّنَا لَتَأْتِنَاكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ
لَا يَعْرِبُ عَنْهُ مِنْ قَالْ ذَرَّةً فِي السَّمَاوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ
وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مَبِينٍ ④

لَيَعْرِفُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ

लोग हैं कि उनके लिए क्षमादान और सम्मानजनक जीविका है । १।

और वे लोग जो हमारे चिह्नों के विषय में (हमें) असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही वे लोग हैं जिनके लिए दिल दहला देने वाले अज्ञाब में से एक पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । २।

और वे लोग जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है वे देख लेंगे कि जो कुछ तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया है वही सत्य है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाले, प्रशंसा के योग्य (अल्लाह) के मार्ग की ओर मार्गप्रदर्शन करता है । ३।

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति की सूचना दें जो तुम्हें बताएगा कि जब तुम (मरने के बाद) पूर्णतया चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जाओगे तो फिर तुम अवश्य एक नवीन उत्पत्ति के रूप में (प्रविष्ट) किए जाओगे । ४।

क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है अथवा उसे पागलपन हो गया है ? नहीं, वास्तविकता यह है कि वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते अज्ञाब में पड़े हैं । और बहुत दूर की पथभ्रष्टता में (पड़कर भटक रहे) हैं । ५।

क्या उन्होंने आकाश और धरती (में प्रकट होने वाले चिह्नों) की ओर नहीं देखा जो उनके समक्ष हैं अथवा उनसे पहले गुज़र चुके हैं । यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धंसा दें अथवा उनपर

أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ①

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي الْأَيَّامِ مُحْجِزِينَ أُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رَبِّ الْيَمِينِ ②

وَيَرَى الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي
إِلَى صَرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ③

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هُنَّ دُلْكُمْ عَلَى
رَجُلٍ يَتَسْكُنُ إِذَا مَرِقْتُمْ كُلُّ مَمْزَقٍ
إِنَّكُمْ لَفِي حَلْقٍ جَدِيدٍ ④

أَفَتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ حِنْنَةٌ بَلْ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ
وَالْأَصْلَلِ الْبَعِيدِ ⑤

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ فَمِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِنَّنَّا نَسْأَلُ خُسْفَ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطُ

आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दें ।
निःसन्देह इसमें हर उस भक्त के लिए
जो झुकने वाला है, एक बहुत बड़ा चिह्न
है ॥10॥ (रुक् ½)

और निःसन्देह हमने दाऊद को अपनी
ओर से एक बड़ी कृपा प्रदान की थी ।
(जब यह आदेश दिया कि) हे पर्वतो !
इसके साथ झुक जाओ और हे पक्षियो !
तुम भी । और हमने उसके लिए लोहे को
नरम कर दिया ॥11॥

(और दाऊद से कहा) कि तू शरीर को
पूर्ण रूप से ढाँपने वाले कवच बना और
(उनके) धेरे तंग रख । और तुम सब
पुण्यकर्म करो । निःसन्देह जो कुछ तुम
करते हो मैं उस पर गहन दृष्टि रखने
वाला हूँ ॥12॥*

और (हमने) सुलैमान के लिए हवा (को
काम पर लगा दिया) । उसकी
प्रातःकालीन यात्रा महीने भर (की
यात्रा) के बराबर थी और सांयकालीन
यात्रा भी महीने भर (की यात्रा) के
बराबर थी । और हमने उसके लिए तांबे
का स्रोत बहा दिया । और जिन्हों

عَلَيْهِمْ كَسْفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَا يَأْتِيَ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٌ

وَلَقَدْ أَتَيْتَنَا دَوْمًا فَضْلًا لِيَجِبَ الْأَقْبَى
مَعَهُ وَالظَّيْرَ وَالْأَنْتَلَةُ الْمَحْدِيدُ

إِنْ أَعْمَلْ سُبْغَتٍ وَقَدْرُ فِي السَّرْدِ
وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنْ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ

وَلِسَلِيمٍ الرِّيحُ عَذَّوْهَا شَهْرٌ
وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ وَأَسْلَنَا لَهُ عَيْنَ
الْقَطْرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

* आयत 11-12 : इन आयतों में पर्वतों को सेवाधीन करने से अभिप्राय वे परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ हैं जिन पर हज़रत दाऊद अलै. को विजय प्राप्त हुई और उसके परिणाम स्वरूप उन्होंने बहुत भारी भरकम काम आप के लिए किया । पक्षियों से अभिप्राय सम्भवतः वे नेक मनुष्य हैं जो आप पर ईमान लाए । उन्हें आध्यात्मिक रूप में पक्षी कहा गया है । एक और वरदान आप को यह प्रदान किया गया कि आपको लोहा पिघलाने और उससे लाभजनक कार्य साधने की कला प्रदान की गई । युद्ध में लोहे के छल्लों से निर्मित कवच आप ही के समय से प्रचलित हुए हैं । हज़रत दाऊद अलै. को यह भी निर्देश दिया गया था कि कवच बड़े धेरों वाले न हों बल्कि छोटे-छोटे धेरों वाले हों । यदि उन के युग से पहले लौह-कवच बनाए भी जाते थे तो ये विशेष तंग धेरों वाले कवचों का निर्माण तो केवल हज़रत दाऊद अलै. के युग से ही आस्म हआ था ।

(अर्थात् कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियों) में से कुछ को (सेवाधीन कर दिया) जो उसके सामने उसके रब्ब की आदेश से परिश्रम पूर्वक काम करते थे । और उनमें से जो भी हमारी आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसे हम धधकती हुई अग्नि का अज्ञाब चखाएँगे । 13।*

वह जो चाहता था वे उसके लिए बनाते थे (अर्थात्) बड़े-बड़े दुर्ग और मूर्तियाँ और तालाबों की भाँति बड़े-बड़े परात और एक ही जगह पढ़ी रहने वाली (भारी) देंगे । हे दाऊद के वंशज ! (अल्लाह की) कृतज्ञता प्रकट करते हुए (कृतज्ञता की मर्यादानुरूप) काम करो । और मेरे भक्तों में से थोड़े हैं जो (वास्तव में) कृतज्ञता प्रकट करने वाले हैं । 14।

* आयत संख्या 13-14 : हवाओं को हज़रत सुलैमान अलै. के अधीन करने का यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई उड़न-खटोला अविष्कार किया था, जैसा कि कुछ व्याख्याकार यह कथा वर्णन करते हैं। बल्कि वस्तुतः यहाँ समुद्र के टट पर चलने वाली तेज़ हवाओं का वर्णन है जो एक महीने के पश्चात दिशा बदल लेती थीं । उन हवाओं की शक्ति से बादवानी जहाज़ों का तेज़ी से चलना और फिर वापिस लौटना ही इस आयत का अभिप्राय है ।

हज़रत दाऊद अलै. को लोहे पर प्रभुत्व प्रदान किया गया था । जबकि हज़रत सुलैमान अलै. को एक उच्च कोटि की धातु अर्थात् तांबे के खान खोदने और उसको विभिन्न प्रकार से प्रयोग करने की कला सिखाई गई । जिन जिन्नों का यहाँ उल्लेख है उनका इससे पहले हज़रत दाऊद अलै. के प्रकरण में भी उल्लेख हो चुका है । इससे कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ भाव हैं । अगली आयत में यह वर्णन है कि ये इतने बड़े-बड़े श्रमसाध्य काम करते थे जो साधारण उन्नतिशील जातियों के लिए संभव न थे । इसकी व्याख्या करते हुए पहले बड़े-बड़े दुर्गों का वर्णन है फिर मूर्तियों का । फिर तालाबों की भाँति बड़े बड़े परातों और इतनी भारी और बड़ी-बड़ी देंगों का उल्लेख है जो एक ही स्थान पर पढ़ी रहती थीं । और उनको बार-बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाना सरल नहीं होता । इन देंगों में सम्भवतः आपकी विशाल सेना के लिए भोजन तैयार होता होगा ।

इन नेमतों का वर्णन करने के पश्चात् हज़रत दाऊद अलै. को ही नहीं बल्कि आपके वंशज को भी कृतज्ञ होने की ताकीद की गयी है । अर्थात् जब तक कृतज्ञ रहोगे ये नेमतें छीनी नहीं जाएँगी । फिर हज़रत सुलैमान अलै. के पुत्र के समय में ये नेमतें समाप्त होती गईं । क्योंकि उसमें कोई आध्यात्मिकता और ग्रेशसनिक योग्यता नहीं थी ।

بِإِذْنِ رَبِّهِ وَمَنْ يَرِزُقُ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا
نَدْقَةٌ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ⑦

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبٍ
وَتَمَاثِيلٍ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقَدُورٍ
رُسِلِتٍ إِعْمَلُوا أَلَّا دَأْدَ شَكَرًا
وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِي الشَّكُورِ ⑧

अतः जब हमने उस पर मृत्यु का निर्णय लागू कर दिया तो उसकी मृत्यु पर एक धरती के कीड़े (अर्थात् उसके अवज्ञाकारी पुत्र) के अतिरिक्त किसी ने उनको सूचित नहीं किया जो उस (के साम्राज्य) की लाठी को खा रहा था । फिर जब वह (शासन तत्व) ध्वस्त हो गया तब जिन (अर्थात् पहाड़ी जातियों) पर यह बात खुल गई कि यदि वे अदृश्य विषय का ज्ञान रखते तो इस अपमानजनक अज्ञाब में न पड़े रहते ॥15॥

निःसन्देह सबा (जाति) के लिए भी उनके निवास स्थल में एक बड़ा चिह्न था। (जिसके) दाँए और बाँधे दो बाग थे । (हे सबा की जाति !) अपने रब्ब की प्रदत्त जीविका में से खाओ और उसकी कृतज्ञता प्रकट करो । (सबा का केन्द्र) एक बहुत अच्छा नगर था और (उस नगर का) एक बहुत क्षमा करने वाला रब्ब था ॥16॥

फिर उन्होंने मुँह मोड़ लिया तो हमने उन पर टूटे हुए बाँध से (लहरें मारती हुई) बाढ़ भेजी । और हमने उनके लिए उनके दोनों बागानों को दो ऐसे बागों में परिवर्तित कर दिया जो दोनों ही स्वादहीन फल और झाउ के पौधों वाले तथा कुछ थोड़ी सी बेरियों वाले थे ॥17॥

यह प्रतिफल हमने उनको इस कारण दिया कि उन्होंने कृतघ्नता की । और क्या अत्यन्त कृतघ्न के अतिरिक्त हम किसी को भी (ऐसा) प्रतिफल देते हैं ? ॥18॥

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ كَمَا دَلَّهُمْ عَلَى
مَوْتَهِ إِلَّا دَآبَةً أَلَّا رِضٍ تَأْكُلُ مِنْسَاتَهُ^{١٤}
فَلَمَّا حَرَّتِيَنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ لَغَيْبَ مَا لَيْثُوا فِي الْعَدَابِ
الْمُهِمَّينَ^{١٥}

لَقَدْ كَانَ لِسَبَابِي فِي مَسْكِنِهِمْ أَيْمَانُ جَهَنَّمِ
عَنْ يَمِينِي وَشَمَائِلُهُ كُلُّوا مِنْ
رِزْقِ رَبِّكُمْ وَأَشْكُرُوا لَهُ بُلْدَةً طَيِّبَةً
وَرَبُّ غَفُورٌ^{١٦}

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرَمِ
وَبَدَلْنَاهُ بِجَهَنَّمِهِمْ جَهَنَّمِ ذَوَاتِ أَكْلِ
حَمْطِ وَأَثْلِ وَشَعِيْقَنْ سِنْدِرِ قَلِيلٍ^{١٧}

ذَلِكَ جَزْيَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهُنْ بُجَزِّيَّ
إِلَّا الْكُفُورَ^{١٨}

और हमने उनके और उन बस्तियों के मध्य जिनमें हमने बरकत डाली थी पृथक दिखाई देने वाली बस्तियाँ बनाई थीं। और उनके मध्य (सरलता पूर्वक) चलना फिरना सम्भव बना दिया था। (उद्देश्य यह था कि) उनमें तुम रातों को और दिनों को निश्चिंत होकर चलते फिरते रहो। 119।

फिर (जब वे कृतज्ञ हो गए तो) उन्होंने कहा, हे हमारे रब ! हमारी यात्राओं की दूरी बढ़ा दे। और उन्होंने स्वयं अपने आप पर अत्याचार किया। तब हमने उनको कथा-कहानी बना दिया और उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। निःसन्देह इसमें प्रत्येक बहुत धैर्य करने वाले (और) बहुत कृतज्ञता प्रकट करने वाले के लिए चिह्न हैं। 120।

और निःसन्देह इब्लीस ने उनके विरुद्ध अपना विचार सञ्चाव कर दिखाया। अतः उन्होंने उसका अनुसरण किया सिवाए मोमिनों में से एक गिरोह के। 121।

और उसे उन पर कोई प्रभुत्व प्राप्त नहीं था। परन्तु हम यह चाहते थे कि जो परलोक पर ईमान लाता है उसे उससे अलग कर दें जो उस के बारे में शंका में (पड़ा) है। और तेरा रब प्रत्येक विषय का निरीक्षक है। 122। (रुक् ۲۴)

तू कह दे कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा (कुछ) समझ रखा है। वे तो आसमानों और धरती में से

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بِرَكَنَ
فِيهَا قَرَى ظَاهِرَةٌ وَقَدَّرَنَا فِيهَا السَّيْرَ
سَيْرُهُ وَفِيهَا لَيَالٍ وَأَيَّمًا أَمْنِينَ ⑩

فَقَاتُوا رَبَّنَا بِالْعِذْبَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا
أَنفُسَهُمْ فَعَلَنَّهُمْ أَحَادِيثُ وَمَرْقَفُهُمْ
كُلُّ مَمْزَقٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ⑩

وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمْ إِنْلِيسٌ طَنَّةٌ
فَإِلَيْهِمْ أَلَا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑩

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ قُنْ سُلْطَنٌ إِلَّا تَعْلَمَ
مَنْ يُؤْمِنُ بِالْأُخْرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي
شَلَّٰ وَرَبِّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِظٌ ۝

قُلْ اذْعُوا الَّذِينَ زَعَمُوا قُنْ دُونِ اللَّهِ ۝

एक कण के समान भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं । और न ही उन दोनों में उनका कोई भाग है । और उनमें से कोई भी उस (अर्थात् अल्लाह) का सहायक नहीं । 23।

और उसके समक्ष किसी के पक्ष में सिफारिश काम नहीं आएगी सिवाए उसके, जिसके लिए उसने आज्ञा दी हो । यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो वे (अपनी सिफारिश करने वालों से) पूछेंगे (अभी) तुम्हारे रब्ब ने क्या कहा था ? वे कहेंगे : सत्य (कहा था) । और वह बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है । 24।

तू (काफिरों से) पूछ कि कौन है जो तुम्हें आसमानों और धरती में से जीविका प्रदान करता है ? (स्वयं ही) कह दे कि अल्लाह और (यह भी कह दे कि) निःसन्देह हम या तुम हिदायत पर हैं अथवा खुली-खुली पथभ्रष्टा में । 25।

तू कह दे कि तुम उन अपराधों के बारे में नहीं पूछे जाओगे जो हम ने किये । और न ही हम उसके बारे में पूछे जाएंगे जो तुम करते हो । 26।

तू कह दे कि हमारा रब्ब हमें एकत्रित करेगा । फिर हमारे बीच सत्य के साथ निर्णय करेगा । और वह बहुत स्पष्ट निर्णय करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 27।

لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شُرُكٍ
وَمَا لَهُ مِنْ هُدْوٍ قُنْ طَهِيْرٌ ⑩

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذْنَ لَهُ
حَتَّىٰ إِذَا فَرَغَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا
قَالَ رَبُّكُمْ ۝ قَالُوا الْحَقُّ ۝ وَهُوَ أَعْلَىٰ
الْكَبِيرٌ ⑪

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنْ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۝ قُلِ اللَّهُ ۝ وَإِنَّا أَوْ إِيمَانُكُمْ
لَعَلِيٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑫

قُلْ لَا تَسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا سُئِلُ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ⑬

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا لَمْ يَفْتَحْ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ ۝ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيُّمُ ⑭

तू कह दे कि मुझे वह दिखाओ तो सही जिन्हें तुमने साझीदारों के रूप में उसके साथ मिला दिया है। ऐसा कदापि नहीं बल्कि वही अल्लाह है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 128।

और हमने तुझे सब लोगों के लिए शुभ संदेश वाहक और सतर्ककारी बनाकर ही भेजा है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। १२९।

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो
तो यह वादा कब (पूरा) होगा ? । 30।

तू कह दे कि तुम्हारे लिए एक
 (निर्धारित) दिन का वादा है जिससे तुम
 एक क्षण भी न पीछे रह सकते हो और
 न आगे बढ़ सकते हो । 31। (रुक् ३)

और उन लोगों ने कहा जिन्होंने इनकार
किया कि हम कदापि इस कुरआन पर
ईमान नहीं लाएँगे और न उन
(भविष्यवाणियों) पर जो उसके सामने
हैं । काश ! तू देख सकता कि जब
अत्याचारी लोग अपने रब्ब के समझ
ठहराए गए होंगे । उनमें से कुछ-कुछ
(दूसरों) की ओर बात लौटा रहे होंगे ।
जिन्हें दुर्बल बना दिया गया था वे उनसे
जिन्होंने अहंकार किया, कहेंगे कि यदि
तुम न होते तो हम अवश्य मोमिन हो
जाते । ३२।

जिन लोगों ने अहंकार किया वे उनसे जो दुर्बल बना दिए गए थे कहेंगे : क्या हमने तम्हें हिदायत से जब वह तम्हारे पास

كَلَّا لِمَنْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑤

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافِةً لِّلنَّاسِ بِشِيرًا

وَنَذِيرًاً وَلِكُنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٦٩

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ﴿٦﴾

سَاعَةً وَلَا تُسْتَقْدِمُونَ ﴿٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ تُؤْمِنَ بِهَذَا^{١٧}
الْقُرْآنَ وَلَا يَأْتِي إِلَيْكُمْ مِّنْ هُنَّا
إِذَا الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْ دَرِبِهِمْ^{١٨}
يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ الْقَوْلُ^{١٩} يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتَصْعَبُوا إِلَيْهِنَّ أَسْتَكْبِرُوا
لَوْلَا آتَيْنَاهُنَا مُؤْمِنِينَ^{٢٠}

فَإِنَّ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضْعَفُوا
أَنْهُمْ صَدَّقُوا مَا عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ

आई, रोका था ? (नहीं) बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी थे । 33।

और वे लोग जो दुर्बल बना दिए गए थे, उन अहंकारियों से कहेंगे, वस्तुतः यह तो रात-दिन किया जाने वाला एक छल था । जब तुम हमें इस बात का आदेश देते थे कि हम अल्लाह का इनकार कर दें और उसके साझीदार ठहराएँ । और वे अपने पश्चाताप को छिपाते फिरेंगे जब अज्ञाब को देखेंगे और हम उन लोगों की गर्दनों में तौक डालेंगे जिन्होंने इनकार किया । क्या जो वे किया करते थे उसके अतिरिक्त भी कोई प्रतिफल दिए जाएँगे ? 34।

और हमने जब कभी किसी वस्ती में कोई सतर्ककारी भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि जिस संदेश के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका पुरज्ञार इनकार करने वाले हैं । 35।

और उन्होंने कहा, हम धन और संतान में बहुत अधिक हैं और हमें अज्ञाब नहीं दिया जाएगा । 36।

तू कह दे, निःसन्देह मेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है और तंग भी करता है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 37।

(रुक् ٤/١٠)

और तुम्हारे धन और तुम्हारी सतान ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हें हमारे समक्ष निकटता के पद तक ला सकें । सिवाएँ उसके जो ईमान लाया और नेक कर्म

جَاءُكُمْ بِإِنْتَمْ مُجْرِمِينَ ⑩

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضْعَفُوا لِلَّذِينَ
اَسْتَكْبَرُوا بْنَ مَحْكُرٍ اَئِيلٍ وَالْهَمَارِ اَذْ
تَأْمَرُونَا اَنْ تُكْفِرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ
اَنْدَادًا ۚ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لِمَا رَأَوْا
الْعَذَابَ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَعْلَمَ فِي اَعْنَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۖ هُلْ يَخْرُقُ اَلَامَاتِ كَانُوا
يَعْمَلُونَ ⑪

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا
قَالَ مُتَرْفُوهَا ۖ إِنَّا بِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ
كُفِرُونَ ⑫

وَقَالُوا نَحْنُ اَكْثَرُ اُمَّوَالَ اَوْلَادًا ۖ وَمَا
نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ⑬

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسَطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ ۖ وَلِكُنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ⑭

وَمَا اَمْوَالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ بِمَا تَقْرِبُ
عِنْدَنَا زُلْفَى اَلَامِنْ اَمْنَ وَعِمَلَ

करता रहा । अतः यही वे लोग हैं जिनको उनके कर्मों के बदले जो वे करते थे दोहरा प्रतिफल दिया जाएगा । और वे अद्वालिकाओं में शांतिपूर्वक रहने वाले हैं ।³⁸¹

और वे लोग जो हमारे चिह्नों को असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही लोग अज्ञाब में डाले जाने वाले हैं ।³⁹¹

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका को विस्तृत कर देता है । और (कभी) उसके लिए (जीविका) को संकुचित भी करता है । और जो चीज़ भी तुम खर्च करते हो तो वही है जो उसका प्रतिफल देता है । और वह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है ।⁴⁰¹

और जिस दिन वह उन सब को एकत्रित करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी ही उपासना किया करते थे ?⁴¹¹

वे कहेंगे, पवित्र है तू । उनके बदले तू हमारा मित्र है । बल्कि वे तो जिन्नों की उपासना किया करते थे (और) इनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले थे ।^{421*}

صَالِحًا فَأُولَئِكَ لَهُمْ جَرَأَةُ الصُّصْفِ
بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغَرْفَتِ أَمْنُونَ^④

وَالَّذِينَ يَسْعَونَ فِي أَيْتَامٍ مُعْجَزِينَ أُولَئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُمْضِرُونَ^④

قُلْ إِنَّ رَبِّيُّنِي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ مَا أَنْفَقَ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ بِيَخْلِفَةٍ وَهُوَ خَيْرُ الرِّزْقِينَ^④

وَيَوْمَ يَخْتَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ
لِلْمُلِّىٰكَةِ أَهُؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ^④

قَالُوا سَبَّحْنَاكَ أَنْتَ وَلِيَّنَا مِنْ دُونِهِمْ
إِنْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكُثُرُهُمْ
بِهِمْ مُؤْمِنُونَ^④

* आयत संख्या 41-42 इन आयतों में उन मुश्तिकों का वर्णन है जो वस्तुतः अपने बड़े-बड़े सरदारों को उपास्य बना बैठे थे । यहाँ जिन से अभिप्राय यही सरदार हैं । मुश्तिक लोग कुछ फरिश्तों के नाम भी लिया करते हैं कि वे उनकी उपासना करते हैं । यह फरिश्तों पर केवल मिथ्यारोप है और फरिश्ते क्रयामत के दिन इन वालों से स्वयं के पवित्र होने की घोषणा करेंगे ।

अतः आज तुम में से कोई किसी अन्य को किसी प्रकार के लाभ पहुँचाने पर समर्थ होगा न हानि पहुँचाने का । और हम उन लोगों से जिन्होंने अत्याचार किया, कहेंगे, इस अग्नि के अज्ञाब को चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे । 143।

और जब उन के समक्ष हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, वे कहते हैं कि यह केवल एक साधारण व्यक्ति है जो तुम्हें उससे रोकना चाहता है जिसकी तुम्हारे पूर्वज उपासना किया करते थे । और वे कहते हैं यह एक बड़े झूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जो गढ़ लिया गया है । और उन लोगों ने जिन्होंने सत्य का इनकार किया जब वह उनके पास आया, कहा कि यह एक खुला-खुला जादू के अतिरिक्त कुछ नहीं । 144।

और हमने उन्हें कोई पुस्तकें नहीं दी जिन्हें वे पढ़ते और उनका उपदेश देते । और न ही तुझ से पहले हमने उनकी ओर कोई सतर्ककारी भेजा । 145।

और उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पहले थे । और ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे जो हमने उन लोगों को प्रदान किया था । अतः उन्होंने (भी जब) मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसी (कठोर) थी मेरी पकड़ ! 146। (रुक् ५)

तू कह दे कि मैं केवल तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम दो दो और एक एक करके अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ ।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِيَعْصِي نَفْعًا
وَلَا خَرَّاً وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا
عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تَكْدِبُونَ ⑩

وَإِذَا شُتُّلَ عَيْهُمْ أَيْتَنَا بِئْتِ قَالُوا مَا هَذَا
إِلَّا رَجُلٌ يَرِيدُ أَنْ يَصْدِكُمْ عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ أَبَاوْكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا
إِفْكٌ مُّفْتَرٌ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِلْحَقِّ لَمَاجَأَهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سُخْرَ
مُّبِينٌ ⑪

وَمَا أَتَيْهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَذْرُسُونَهَا وَمَا
أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ⑫

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا يَلْعَغُوا
مُخْسَارًا مَا أَتَيْهُمْ فَكَذَّبُوا رَسُولَ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ⑬

فَلِلَّهِ مَا أَعْظَمُكُمْ بِوَاحِدَةٍ إِنْ تَقُومُوا
لِلَّهِ مُمْتَنٍ وَقُرَادٍ ثُمَّ تَشْكُرُوا مَا

फिर खूब विचार करो । तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं । वह तो केवल एक कठोर अज्ञाब से पूर्व तुम्हें सतर्क करने वाला (बन कर आया) है । 47।

तू कह दे, जो भी मैं तुम से बदला माँगता हूँ वह तुम्हारे ही लिए है । मेरा बदला तो अल्लाह के सिवा किसी पर नहीं । और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है । 48।

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब्ब सत्य के द्वारा (झूठ पर) प्रहार करता है । (वह) अदृश्य विषयों का बहुत जानने वाला (है) । 49।

तू कह दे कि सत्य आ चुका है और मिथ्या न तो (कुछ) आरम्भ कर सकता है और न (उसे) दोहरा सकता है । 50।

तू कह दे कि यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो मैं स्वयं अपने (हित के) विरुद्ध पथभ्रष्ट हूँगा । और यदि मैं हिदायत पा जाऊँ तो (ऐसा केवल) इस लिए (होगा) कि मेरा रब्ब मेरी ओर वहइ करता है । निःसन्देह वह बहुत सुनने वाला (और) निकट रहने वाला है । 51।

और काश ! तू देख सके जब वे अत्यन्त घबराहट का आभास करेंगे और (उसका) समाप्त होना किसी प्रकार संभव न होगा और वे समीप के स्थान से (अर्थात् शीघ्रता पूर्वक) पकड़े जाएँगे । 52।

और वे कहेंगे, हम उस पर ईमान ले आए परन्तु एक दूर के स्थान से उनका (ईमान

بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِئْنَةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ
لَكُمْ يَنْ يَدِي عَذَابٍ شَدِيدٍ ④

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ
أَجْرٍ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ⑤

قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَقْدِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ
الْعَيْوَبِ ⑥

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّيُ الْبَاطِلُ
وَمَا يُعِينُ ⑦

قُلْ إِنْ ضَلَّلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى
نَفْسِي ⑧ وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُوَحِّي
إِلَيَّ رَبِّيْ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ⑨

وَلَوْ تَرَى إِذْ قَرِعُوا فَلَأَفْوَثَ وَأَخْذُونَا
مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ⑩

وَقَالُوا أَمْتَابِهِ ⑪ وَأَنِّي لَهُمُ التَّنَاؤشُ

को) पकड़ लेना कैसे सम्भव हो सकता है । 153।

हालाँकि वे इससे पूर्व उसका इनकार कर चुके थे । और वे एक दूर के स्थान से अदृश्य (विषयों) में अटकल पञ्चू के तीर चलाएँगे । 154।

और उनके और जो वे चाहेंगे उसके बीच एक रोक डाल दी जाएगी जैसा कि उससे पहले उनके जैसे लोगों के साथ किया गया । निःसन्देह वे सदा एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े रहे । 155।

(रुक् १२)

۱۳
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلٍ وَيَقْذِفُونَ
بِالْغَيْبِ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ④

وَجِئْنَ بِيَتَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَسْتَهُونَ كَمَا
فَعَلَ بِاَشْيَا عِهْمَدْ مِنْ قَبْلٍ لَّا نَهُ كَانُوا
فِي شَلَّ مُرِيْبٍ ۝

35- सूरः फ़ातिर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी इससे पूर्ववर्ती सूरः की भाँति अल्लम्दु शब्द से हुआ है। पिछली सूरः में धरती व आकाश पर अल्लाह तआला की बादशाही और समस्त ब्रह्माण्ड का अल्लाह तआला की स्तुति में लीन रहने का वर्णन है। अल्लाह तआला ने जब धरती और आकाश को पहली बार उत्पन्न किया तो इस पर हमें उसकी स्तुति करने का आदेश दिया गया है। क्योंकि धरती और आकाश को आरम्भ में उत्पन्न करना उद्देश्यहीन नहीं हो सकता। यहाँ धरती और आकाश के अस्तित्व से पूर्व एक सृष्टिकर्ता रब्ब की कृपा का उल्लेख किया गया है।

आयत सं. 2 में उन फ़रिश्तों का वर्णन है जो दो-दो और तीन-तीन तथा चार-चार पंख रखते हैं। इससे कदापि यह तात्पर्य नहीं कि फ़रिश्तों के भौतिक पंख भी होते हैं। बल्कि यहाँ पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन का वर्णन है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त रासायनिक चमत्कार प्रकट होते हैं। विशेषकर आस्तिक वैज्ञानिक इस ओर हमारा ध्यान खींचते हैं कि कार्बन के चार रासायनिक संयोजन का अन्य पदार्थों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणाम-स्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया है जिसे वैज्ञानिक Carbon based life (कार्बन आधारित जीवन) कहते हैं। पवित्र कुरआन की इस आयत में यह वर्णन कर दिया गया कि इससे अधिक पंख वाले फ़रिश्ते भी हैं। जिनको तुम अब तक नहीं जानते और उनके प्रभाव से बहुत से महत्वपूर्ण रासायनिक परिवर्तन होंगे, जिनकी इस समय मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता।

इस सूरः में एक बार फिर दो ऐसे समुद्रों का वर्णन किया गया है जिनमें से एक का पानी खारा और एक का मीठा है। परन्तु अल्लाह तआला की आश्चर्यजनक उत्पत्ति है कि खारे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही रहता है और मीठे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही होता है। यह कैसे संभव हुआ कि खारा जल लगातार पीने वाली मछलियों का माँस उस जल के खारे प्रभावों से पूर्णतया मुक्त है।

इसके पश्चात ऐसी आयतें (सं. 17, 18) आती हैं जो मानवजाति को सावधान कर रही हैं कि यदि तुमने अल्लाह तआला की नेमतों पर कृतज्ञता प्रकट नहीं की और उसके इनकार पर डटे रहे तो यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हें धरती पर से समाप्त कर दे और तुम्हारे स्थान पर एक और सृष्टि को ले आए और ऐसा करना अल्लाह के सामर्थ्य से बाहर नहीं है।

इसके पश्चात फिर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया कि धरती पर जीवन का प्रत्येक

रूप आकाश से बरसने वाले जल पर ही निर्भर है। इस जल से विभिन्न प्रकार के फल उगते हैं। उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं। यह रंगों की विभिन्नता इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार एक ही रंग की मिट्टी से उत्पन्न फलों के तुम विभिन्न रंग देखते हो, इसी प्रकार यद्यपि मनुष्य एक ही आदम की संतान हैं परन्तु उनके रंग भी भिन्न-भिन्न हैं और उनकी भाषाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। हालाँकि उनकी भाषाएँ एक ही भाषा से निकलीं और अब उनके मध्य कोई भी समानता दिखाई नहीं देती सिवाएँ उन सूक्ष्मदर्शियों के जिनको अल्लाह तआला ज्ञान प्रदान करे।

ये लोग जो अल्लाह का साज्जीदार ठहराते हैं, धरती में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के प्रसंग से तो उसका कोई साज्जीदार ठहरा नहीं सकते। तो क्या फिर उनकी कल्पना उन आसमानों में अल्लाह के साज्जीदार ठहराती है जिन आसमानों का उनको कुछ भी ज्ञान नहीं।

इसके पश्चात मानव-जाति को सावधान किया गया है कि धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं बल्कि यदि अल्लाह तआला की शक्ति के हाथ उनको लगातार थामे न रखें और यदि एक बार ये अपनी धुरियों से हट जाएँ तो धरती और आकाश में महाप्रलय आ जाएगा और कभी फिर दोबारा आकाशीय पिण्ड किसी धुरी पर स्थित नहीं हो सकेंगे।



سُورَةُ قَاطِرٍ مَكْيَةُ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَخَمْسَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11।

सम्पूर्ण स्तुति अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और धरती का पैदा करने वाला है । फरिश्तों को दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखों (अर्थात् शक्तियों) वाले दूत बनाने वाला । वह सृष्टि में जो चाहता है बढ़ोत्तरी करता है । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 12।

अल्लाह मनुष्यों के लिए जो कृपा जारी कर दे उसे कोई रोकने वाला नहीं । और जिस वस्तु को वह रोक दे उसे उसके (रोकने) के पश्चात् कोई जारी करने वाला नहीं और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 13।

हे लोगो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो । क्या अल्लाह के सिवा भी कोई सष्टा है जो तुम्हें आकाश और धरती से जीविका प्रदान करता है ? उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो । 14।

और यदि वे तुझे झुठला दें तो तुझ से पहले भी कई रसूल झुठलाए गए । और अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटाए जाएंगे । 15।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ قَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلِكَةِ رُسْلًا أَوْلَىٰ أَجْنِحةَ
مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرْبَعَ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا
يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكٌ لَهَاٰ وَمَا يَمْسِكُ فَلَا مُرْسَلٌ لَهُ
مِنْ بَعْدِهِٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نَعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْبُّ قَمْمًا مِنَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَائِمٌ
تَوْفِيقُونَ ④

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ
قَبْلِكَ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

हे लोगो ! अल्लाह का वादा निःसन्देह सच्चा है । अतः तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि किसी धोखे में न डाले और अल्लाह के विषय में तुम्हें बड़ा धोखेबाज़ (अर्थात् शैतान) कदापि धोखा न दे सके । ६।

निःसन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है । अतः उसे शत्रु ही बनाए रखो । वह अपने गिरोह को केवल इस उद्देश्य से बुलाता है ताकि वे धधकती हुई अग्नि में पड़ने वालों में से हो जाएँ । ७।

जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए कठोर अज्ञाब है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए क्षमादान है और बहुत बड़ा प्रतिफल है । ८। (रुकू॑ १३)

अतः क्या जिसे उसका कु-कर्म सुन्दर करके दिखाया जाए और वह उसे सुन्दर देखने लगे (उससे अधिक धोखा खाया हुआ और कौन होगा ?) अतः निःसन्देह अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । अतः तेरा दिल उन पर पछतावा करते-करते (बैठ) न जाये । निःसन्देह अल्लाह खूब जानता है जो कुछ वे करते हैं । ९।

और अल्लाह वह है जिसने हवाओं को भेजा । अतः वे बादलों को उठाती हैं । फिर हम उसे एक मृत बस्ती की ओर हाँक ले जाते हैं फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृतावस्था के पश्चात जीवित

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنُكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۝ وَلَا يَعْرُنُكُمْ
بِإِلَهٍ إِلَّا هُوَ الْغَرُورُ ①

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا
إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ
السَّعْيِ ۝

الَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَيْمَرٌ ۝

أَفَمَنْ زَرَّيْنَ لَهُ سُوءٌ عَمِلَهُ فَرَاهُ حَسَنًا
فَإِنَّ اللَّهَ يُضَلِّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ
يَشَاءُ ۝ فَلَا تُذْهِبْ نُفُسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسَرَتٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ①

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتَبَاهَ سَحَابًا
فَسُقْنَةً إِلَى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَنَا بِهِ

कर देते हैं। इसी प्रकार दोवारा जी उठना है। 110।

जो भी सम्मान का इच्छुक है तो अल्लाह ही के अधीन सब सम्मान है। उसी की ओर पवित्र बात उठती है और उसे नेक कर्म ऊँचाई की ओर ले जाता है और वे लोग जो बुरी योजनाएँ बनाते हैं उनके लिए कठोर अज्ञाब (निश्चित) है और उनकी योजना अवश्य व्यर्थ जाएगी। 111।*

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़ बनाया। और कोई स्त्री गर्भवती नहीं होती और न ही वह बच्चा जनती है परन्तु उस के ज्ञान के अनुसार। और कोई वृद्ध (मनुष्य) दीर्घायु नहीं पाता और न उसकी आयु से कुछ कम किया जाता है, परन्तु वह (एक) ग्रंथ में मौजूद है। निःसन्देह यह (बात) अल्लाह के लिए सरल है। 112।

और दो समुद्र एक ही जैसे नहीं हो सकते। यह अत्यन्त मीठे पानी वाला है। इसका पीना स्वादिष्ट और सुचिकर है और यह (दूसरा) खूब नमकीन (और) खारा है और तुम इन सभी से ताज़ा मांस खाते हो और सौन्दर्य के वे सामान निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तू उसमें नौकाओं को देखेगा कि वे

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ النُّشُورُ ①

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا
إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلْمَ الْطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمُنْكَرٌ
أُولَئِكَ هُوَ يَوْمُ رُ ②

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أَثْثَى
وَلَا تَصْعَ إِلَّا يُعْلَمُهُ وَمَا يَعْمَرُ مِنْ
مَعْمَرٌ وَلَا يَنْقُضُ مِنْ عُمْرَةٍ إِلَّا
فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ③

وَمَا يَسِئُ الْبَعْرَنُ هَذَا عَذَابٌ فُرَاثٌ
سَائِعٌ شَرَابَهُ وَهَذَا مُلْحُ أَجَاجٌ وَمَنْ
كُلَّ تَكُونُ لَخَمَاطِرِيَّاً وَشَسَخِرِيَّوْنَ
حَلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفَلَكَ فِيهِ

* कुछ लोग दुनिया के बड़े लोगों से मेल-मिलाप रखने में अपना समझते हैं। परन्तु मोमिनों को यह विश्वास दिलाया गया है कि सम्मान अल्लाह ही की ओर से प्रदान होता है और विरोधी उनको दुनिया में अपमानित करने का जो भी प्रयास करेगा वे व्यर्थ जाएगा।

(पानी को) चीरते हुए चलती हैं (यह व्यवस्था इस लिए है) ताकि तुम उसकी कृपा में से कुछ छूँडो और तुम कृतज्ञता प्रकट करो ॥13।

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया है । प्रत्येक अपने निर्धारित समय की ओर चल रहा है । यह है अल्लाह, तुम्हारा रब । उसी की बादशाहत है । और जिन लोगों को तुम उसके सिवा पुकारते हो वे खजूर की गुठली की झिल्ली के भी स्वामी नहीं ॥14।

यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे और यदि सुन भी लें तो तुम्हें उत्तर नहीं देंगे । और क्यामत के दिन तुम्हारे उपास्य ठहराने का इनकार कर देंगे । और तुझे एक महान् सूचना देने वाले की भाँति कोई और सर्वकं नहीं ॥^{१५}
कर सकता ॥15। (रुकू^{۱۴})

हे लोगो ! तुम ही हो जो अल्लाह पर निर्भर हो और अल्लाह निःस्पृह (और) समस्त प्रकार की स्तुति का स्वामी है ॥16।

यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई सुष्टि ले आए ॥17।

और यह अल्लाह के लिए कदापि कठिन नहीं ॥18।

और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । और यदि कोई बोझ से लदी हुई अपने

مَا خَرَّ لِتَبْغِي وَمَا فَصَلِهِ وَلَعَلَكُمْ
شَكَرُونَ ⑩

يُوْلَجُ الْيَقِينَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلَجُ الْنَّهَارَ فِي الْيَقِينِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلَّ يَوْمٍ يَجْرِي
لِأَجْلِ مُسَعٍ ۖ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ
الْمُلْكُ ۖ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
مَا يَنْمِلُكُونَ مِنْ قَطْمَنِيرِ ⑪

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُو اَعْبَادُكُمْ ۖ وَلَوْ
سَمِعُو اَمَا اسْتَجَابُوا لِكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يُكَفَّرُونَ بِشَرِّكُمْ ۖ وَلَا يَنْتَلِكُ مِثْلُ
حَيْرِيِّ ⑫

لِيَأْتِهَا الْاثَّاَسُ أَسْمَهُ الْفَقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑬

إِنْ يَسْأَيْدِهِبُكُمْ وَيَأْتِ بِخُلُقٍ جَدِيدٍ ⑭
وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⑮

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وَزِرَارِيٌّ ۖ وَإِنْ تَدْعُ
مَشْقَلَةً إِلَى حِمْلَهَا لَا يُحْمَلُ مِنْهُ شَقَعٌ

बोझ की ओर बुलाएगी तो उस (के बोझ में) से कुछ भी न उठाया जाएगा चाहे वह निकट संबंधी ही क्यों न हो । तू केवल उन लोगों को सतर्क कर सकता है जो अपने रब्ब से उसके अदृश्य होने पर भी भयभीत रहते हैं । और नमाज़ को क्रायम करते हैं । और जो भी पवित्रता धारण करे तो अपनी ही जान के लिए पवित्रता धारण करता है । और अल्लाह की ओर ही अन्तिम ठिकाना है । 19।

और अंधा और आँखों वाला एक जैसे नहीं होते । 20।

और न अन्धकार और आलोक । 21।

और न छाया और धूप । 22।

इसी प्रकार जीवित और मृत भी बराबर नहीं होते । निःसन्देह अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है । और जो कब्रों में पड़े हैं तू उन्हें कदापि नहीं सुना सकता । 23।

तू तो केवल एक सावधान करने वाला है । 24।

निःसन्देह हमने तुझे सत्य के साथ शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी बना कर भेजा है । और कोई समुदाय (ऐसा) नहीं जिसकी ओर कोई सतर्ककारी न आया हो । 25।

और यदि वे तुझे झुठला दें तो निःसन्देह जो लोग उनसे पहले थे वे भी झुठला

وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ إِنَّمَا شُدِّرَ الظِّئْنُ
يَحْمَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ
وَإِلَى اللَّهِ الْمُصِيرُ ⑯

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
وَلَا الظَّلَمُتْ وَلَا التُّورُ ⑯
وَلَا الظَّلَلُ وَلَا الْحَرُورُ ⑯

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ إِنَّ
اللَّهَ يَسْمَعُ مِنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ
مِنْ فِي الْقَبُورِ ⑯

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ⑯
إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ شَيْرًا وَنَذِيرًا ۖ وَإِنْ
مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَقْنَاهَا نَذِيرًا ⑯

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَبَ الظِّئْنُ ۖ

चुके हैं। उनके पास भी उनके रसूल स्पष्ट चिह्न और अलग-अलग ग्रन्थ तथा उज्ज्वल पुस्तक लेकर आए थे। 126।

फिर जिन्होंने इनकार किया, मैंने उन्हें पकड़ लिया। अतः कैसा कठोर थी मेरी पकड़ ! 127। (रुकू^٣)

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है। फिर हम भाँति-भाँति के फल उससे पैदा करते हैं जिनके रंग भिन्न भिन्न हैं। और पहाड़ों में कुछ सफेद टुकड़े हैं और कुछ लाल हैं। उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं और (उनमें) काले स्याह रंगों वाले भी हैं। 128।

और इसी प्रकार लोगों में और धरती पर चलने फिरने वाले प्राणियों में और चौपायों में से ऐसे हैं कि प्रत्येक के रंग भिन्न-भिन्न हैं। निःसन्देह अल्लाह के भक्तों में से वे ही उससे डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है। 129।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह की पुस्तक को पढ़ते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं। और जो हमने उनको प्रदान किया है उसमें से गुप्त रूप से भी खर्च करते हैं और व्यक्त रूप से भी। वे ऐसे व्यापार की आशा लगाए हुए हैं जो कभी नष्ट नहीं होगा। 130।

ताकि वह उनको उनके प्रतिफल (उनके सामर्थ्य के अनुसार) भरपूर दे बल्कि अपनी कृपा से उन्हें उससे भी अधिक

مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءُهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبُشِّرَى
وَبِالْزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُبِينِ ⑤

ثُمَّ أَخَذْتَ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرٌ ⑥

الْمُرْئَانَ اللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجَنَا بِهِ ثُمَّ أَرْسَلْنَا إِلَيْهَا
وَمِنَ الْجِبَالِ جَدَدْنَا بَعْضَهُ وَحَمَرَ
مُخْتَلِفُ الْوَاهِنَّا وَغَرَابِيَّ بُودُ ⑦

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِ وَالْأَنْعَامِ
مُخْتَلِفُ الْوَاهِنَّا كَذَلِكَ لِإِمَامِيَّ خُشَى اللَّهُ
مِنْ عِبَادِهِ الْعَلَمَوْا إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
غَفُورٌ ⑧

إِنَّ الَّذِينَ يَتَلَوَّنُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُ سِرًا
وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ⑨

لِيُوَفِّيهِمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ

बढ़ाए। निःसन्देह वह क्षमा करने वाला (और) अत्यन्त गुणग्राही है। 131।

और जो हमने तेरी ओर पुस्तक में से वहाँ किया है वही सत्य है। (वह) उसकी पुष्टि करने वाला है जो उसके सामने है। निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों से सदा अवगत रहने वाला (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है। 132।

फिर हमने अपने भक्तों में से जिन्हें चुन लिया उन्हें पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया। अतः उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी जान के पक्ष में अत्याचारी हैं और ऐसे भी हैं जो मध्यमार्गी हैं और उनमें ऐसे भी हैं जो नेकियों में अल्लाह की आज्ञा से आगे बढ़ जाने वाले हैं। यही है जो बहुत बड़ी कृपा है। 133।*

चिरस्थायी स्वर्ग है जिनमें वे प्रविष्ट होंगे। वे उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और उनमें उनका वस्त्र रेशम होगा। 134।

और वे कहेंगे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हम से शोक दूर कर दिया। निःसन्देह हमारा रब्ब बहुत ही क्षमा करने वाला (और) गुणग्राही है। 135।

जिसने अपनी कृपा से हमें एक विशेष दर्जा वाले घर में उतारा है। इसमें हमें न

فَصِلْمٌ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ③

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَبِ هُوَ
الْحَقُّ مَصِدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ
يُعَبَّادُهُ لَخَيْرٍ بَصِيرٌ ④

ثُمَّ أُوْرَثْنَا الْكِتَبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ
عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ
مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرِ بِإِذْنِ
اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ⑤

جَلَّتْ عَدْنٌ يَدْحُلُونَهَا يَحْلَوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَاوَرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِيَاسِهِمْ
فِيهَا حَرِيرٌ ⑥

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا
الْحَرَنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ⑦

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَصِلْمٍ

* यहाँ मोमिनों की क्रमशः तीन अवस्थाओं का वर्णन है। एक वे जिन में पाप की गंदगी होती है और वे ज्ञान-ज्ञवरदस्ती से अपनी तामसिक प्रवृत्ति को अल्लाह तआला के मार्ग की ओर मोड़ते हैं। दूसरे वे जो मध्यमार्गी हैं। और तीसरे वे जो पुण्य कर्म में सबसे आगे बढ़ने वाले हैं।

कोई कठिनाई पहुँचेगी और न कोई थकावट हुएगी। 136।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए नरक की आग है। न तो उनका फैसला निपटाया जाएगा कि वे मर जाएँ। और न ही उस (अग्नि) के अज्ञाब में उनसे कमी की जाएगी। इसी प्रकार हम प्रत्येक कृतध्न को प्रतिफल दिया करते हैं। 137।

और वे उसमें चीख रहे होंगे, हे हमारे रब ! हमें निकाल ले। हम नेक-कर्म करेंगे जो हम किया करते थे वे उनसे भिन्न होंगे। क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसमें कोई उपदेश ग्रहण करने वाला उपदेश ग्रहण कर सके ? इसी प्रकार तुम्हारे पास एक सतर्क करने वाला भी आया था। अतः (अपने अत्याचार का प्रतिफल) चखो और अत्याचार करने वालों के पक्ष में कोई सहायक नहीं। 138। (रुक् 4/16)

अल्लाह निःसन्देह आकाशों और धरती के अदृश्य को जानने वाला है। वह निःसन्देह उसका ज्ञान रखता है जो कुछ सीनों में है। 139।

वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया। अतः जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा। और काफिरों को उनका कुफ्र उनके रब्ब के निकट सिवाए (उसकी) नाराजगी के किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता। और

لَا يَمْسِنَا فِيهَا نَصْبٌ وَلَا يَمْسِنَا فِيهَا
لُغْوَبٌ ⑤

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارٌ جَهَنَّمُ لَا يُقْضَى
عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُونَ وَلَا يَخْفَفُ عَنْهُمْ قُرْبَةٌ
عَذَابِهَا كَذِيلَكَ نَجْزِيْنَ كُلَّ كَفُورٍ ⑥

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلْ
أَوْلَمْ نَعْمَلْ كُمَا يَتَدَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ
وَجَاءَهُ كُمَّ النَّذِيرِ فَدُوْقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ نَصِيرٍ ⑦

إِنَّ اللَّهَ عِلْمٌ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِنَادِيْرِ الصَّدْرِ ⑧

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرٌ وَلَا يَزِيدُ
الْكُفَّارُ إِنَّ كُفُرَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ أَلَامَقَةٌ

काफिरों को उनका कुफ्र घाटे के अतिरिक्त और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता । 40।

तू पूछ, क्या तुमने अपने वे (काल्पनिक) साझीदार देखे हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती में से क्या पैदा किया है अथवा उनके लिए (केवल) आसमानों में साझीदारी है । या क्या हमने उन्हें कोई पुस्तक दी थी, फिर वे उसके आधार पर एक स्पष्ट तर्क पर स्थित हैं ? नहीं, बल्कि अत्याचारियों में से उनके कुछ, कुछ दूसरों से केवल धोखे का वादा करते हैं । 41।

निःसन्देह अल्लाह आकाशों और धरती को रोके हुए है कि वे टल न जायँ । और यदि वे दोनों (एक बार) टल गए तो उसके पश्चात कोई नहीं जो फिर उन्हें थाम सके । निःसन्देह वह बहुत सहनशील (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 42।

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़स्तमें खाई कि यदि उनके पास कोई सर्तकारी आया तो अवश्य वे प्रत्येक समुदाय से बढ़ कर हिदायत पा जाएँगे । अतः जब उनके पास कोई सर्तककारी आया तो (उसका आना) उन्हें घृणा के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ा सका । 43।

(उनके) धरती में अहंकार करने और बुरी योजना बनाने के कारण से (ऐसा

وَلَا يَرِيدُ الْكُفَّارُ كَمَا كُمُّ الظَّالِمِينَ تَدْعُونَ
خَسَارًا ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شَرَكَاءَ كُمُّ الظَّالِمِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرْوَفُ مَاذَا حَلَقُوا مِنَ
الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شُرُكٌ فِي السَّمَاوَاتِ إِمْ
اَتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ مِنْهُ بَلْ إِنَّ
يَعْدُ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غَرْوَرًا ④

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ
تَرْوِلَةً وَلَيْلٌ زَالَتْ أَنْ أَمْسَكَهُمْ مَا مِنْ
أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ⑤

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهَدَ أَيْمَانِهِمْ لَيْلٌ
جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْلَى مِنْ
إِحْدَى الْأَمْمَيْمِ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ
مَا زَادُهُمْ إِلَّا تُفُورًا ⑩

اَشْتِكِبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرُ السَّيِئِ

हुआ)। और बुरी योजना केवल योजना बनाने वाले को ही धरती है। अतः क्या वे पहले लोगों (पर जारी होने वाले अल्लाह) के विधान के सिवा कुछ और की प्रतीक्षा कर रहे हैं? अतः तू कदापि अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा तथा तू कदापि अल्लाह के विधान को टलते हुए नहीं पाएगा।⁴⁴

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का क्या अन्त हुआ जो उनसे पहले थे? हालाँकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे। और अल्लाह ऐसा नहीं कि आकाशों अथवा धरती में कोई चीज़ भी उसे विवश कर सके। निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सामर्थ्य रखने वाला है।⁴⁵

और यदि अल्लाह लोगों की उसके परिणाम स्वरूप धर-पकड़ करता जो उन्होंने कमाया, तो इस (धरती) की पीठ पर कोई चलने फिरने वाला प्राणी बाक़ी न छोड़ता। परन्तु वह उनको (अन्तिम) निर्धारित समय तक ढील देता है। फिर जब उनका (निर्धारित) समय आ जाएगा तो (ख़बू खुल जाएगा कि) निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है।⁴⁶ (रुक् ۱۷)

* इस आयत में पाप को तो मनुष्य की ओर संबंधित किया गया परन्तु इसके परिणाम में पशुओं के विनाश का वर्णन किया गया! ? जिसका यह अर्थ नहीं कि करे कोई और भरे कोई। बल्कि वास्तविकता यह है कि पशुओं के विनाश की स्थिति में यह दण्ड वस्तुतः मनुष्यों को ही मिलता है क्योंकि मनुष्य जीवन पशुओं पर निर्भर है। यदि पशु समाप्त हो जाएँ तो मनुष्यों का जीवित रहना संभव नहीं। यहाँ अरबी शब्द दाब्बतुन से अभिप्राय धरती पर चलने फिरने और रेंगने वाले प्रत्येक प्रकार के जीव हैं।

وَلَا يَحْقِقُ الْمُكْرُرُ الشَّيْءُ إِلَّا بِأَهْلِهِ^١
فَهَلْ يُنْظَرُونَ إِلَّا سُنْتَ الْأَوَّلِينَ^٢
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنْتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا^٣
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنْتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا^٤

أَوْلَمْ يَسِيرُ وَافِي الْأَرْضِ فَيَنْظَرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظِّنْنِ مِنْ قَبْلِهِمْ^٥
وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قَوَّةً^٦ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلَيْهِمَا قَدِيرًا^٧

وَلَوْ يُؤَاخِذَ اللَّهُ النَّاسُ بِمَا كَسْبُوا مَا
تَرَكَ عَلَى ظَهِيرَهَا مِنْ ذَآبَةٍ وَلِكُنْ
لَّوْ خَرَّهُمْ إِلَى أَجَلٍ مَسْمَىٌ فَإِذَا جَاءَهُ
أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا^٨

36- सूरः यासीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 84 आयतें हैं।

पिछली सूरः के अन्त पर काफिरों की उस दृढ़ प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है कि यदि उनके पास कोई सतर्ककारी आता तो वे पूर्ववर्ती सभी धर्मानुयायिओं से बढ़ कर उसकी लाई हुई हिदायत पर ईमान ले आते। सूरः यासीन की प्रारम्भिक आयतों में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला कहता है कि तुझे हमने एक ऐसी जाति की ओर भेजा है जिसके पूर्वजों के निकट एक लम्बे समय से कोई सतर्ककारी नहीं आया था। परन्तु इस पर भी उनमें से अधिकतर के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का यह कथन सत्य सिद्ध हुआ कि वे ईमान नहीं लाएँगे। अतः पिछली सूरः के अन्त पर काफिरों का यह दावा कि उनके पास यदि कोई सतर्ककारी आता तो वे अवश्य ईमान ले आते, इस सूरः में उसका खण्डन कर दिया गया है।

इसके पश्चात नवियों के शत्रुओं का एक उदाहरण वर्णन किया गया है कि वास्तव में उनका अहंकार ही है जो उनको हिदायत स्वीकार करने से वंचित रखता है। जैसे किसी व्यक्ति की गर्दन में तौक़ ढाला हुआ हो तो उसकी गर्दन अकड़ी रहती है ऐसे ही एक अहंकारी की गर्दन अकड़ी रहती है। अतः ईमान लाने का सौभाग्य केवल उनको प्राप्त होता है जिनके अंदर कोई अहंकार नहीं पाया जाता।

आयत सं. 14 से जो वर्णन आरम्भ होता है व्याख्याकारों ने इसके सम्बन्ध में अनेकों कल्पनाएँ की हैं। परन्तु इसके सम्बन्ध में हजरत हकीम मौलाना नूरहीन खलीफतुल मसीह प्रथम रजियल्लाहु अन्हु ने एक व्याख्या की है जो मन को भाती है और वह यह है कि पहले दो नबी तो हजरत मूसा और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम थे। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका समर्थन करके उनको सम्मान दिया। परन्तु काफिरों के लगातार इनकार करने के पश्चात एक दूर की बस्ती से एक चौथा व्यक्ति उठा जिसने काफिरों को सावधान किया कि वह महान व्यक्ति जो तुम्हारे लिए हिदायत के असंख्य साधन उपलब्ध करता है और तुम से कोई बदला माँगता नहीं, उस पर ईमान ले आओ।

कुरआन के अवतरण के समय तो अरब वासियों की जानकारी के अनुसार बनस्पतियों में नर और मादा के रूप में केवल खजूरों के जोड़े हुआ करते थे। और किसी की कल्पना में भी नहीं आ सकता था कि अल्लाह तआला ने न केवल प्रत्येक प्रकार के फलों के पौधों को जोड़ा-जोड़ा बनाया है बल्कि आयत सं. 37 यह दावा करती है कि

ब्रह्माण्ड की हर चीज़ जोड़ा-जोड़ा है । आज के विज्ञान ने इसी वास्तविकता पर से पर्दा उठाया है । यहाँ तक कि पदार्थ तथा अणु और परमाणु के कणों के भी जोड़े-जोड़े हैं । अतः जोड़ों का यह विषय एक असीमित विषय है । एकेश्वरवाद को समझने के लिए इस विषय को समझना आवश्यक है । केवल ब्रह्माण्ड का स्पष्टा ही है जिस को जोड़े की आवश्यकता नहीं, अन्यथा समस्त सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है ।

इसके बाद एक आयत में पुनर्जीवन का विषय नए सिरे से वर्णन करते हुए उन मुर्दों को जो परकालीन उत्थान के समय उठाए जाएँगे, इस प्रकार आश्चर्य प्रकट करते हुए दिखाया गया है, जब वे कहेंगे कि वह कौन है जिसने हमें दोबारा जीवित कर दिया है । इसके उत्तर में कहा गया कि अल्लाह के समस्त रसूल सच ही कहा करते थे ।

आयत सं. 81 में हरे वृक्ष से आग निकालने का जो अर्थ वर्णन किया गया है इससे लोग समझते हैं कि हरा वृक्ष जब शुष्क हो जाता है तो फिर उससे अग्नि उत्पन्न होती है । यह विषय अपने स्थान पर ठीक है । परन्तु वास्तव में हरे वृक्षों से भी जबकि वे हरे-भरे हों अग्नि पैदा हो सकती है और होती रहती है । अतः वनस्पति-विज्ञान के विशेषज्ञ बताते हैं कि चीड़ के वृक्षों के पत्ते जब तेज़ हवाओं के कारण एक दूसरे से टकराते हैं तो इस प्रकार लगातार टकराने से उनमें आग लग जाती है और बहुत बड़े-बड़े जंगल इस आग के कारण नष्ट हो जाते हैं ।

इस सूरः की अन्तिम आयत भी परकालीन उत्थान के वर्णन पर समाप्त होती है जिसमें यह घोषणा की गई है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है । और उसी की ओर हे मानव समाज ! तुम लौटाए जाओगे ।



سُورَةُ يَسْ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعَ وَتَمَائُلُنَ آيَةٍ وَخَمْسَةُ رُكُونَ عَابِرٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11
या सम्यदु : हे सरदार ! 12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لِيَسْ

गूढ़ ज्ञान-पूर्ण कुरआन की क्रसम । 3।

وَالْقُرْآنُ الْحَكِيمُ ②

(कि) निःसन्देह तू रसूलों में से है । 4।

إِنَّكَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ③

सन्मार्ग पर (अग्रसर है) । 5।

عَلَىٰ صِرَاطِ مُّسْتَقِيمٍ ④

(यह) पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) बार-
बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर
से अवतरित (है) । 6।

تَنْزِيلُ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ⑤

ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिनके
पूर्वज सतर्क नहीं किये गए । अतः वे
असावधान पड़े हैं । 7।

إِنَّنِي أَنذِرَ قَوْمًا مَا أَنذِرَ أَبَاؤُهُمْ فَهُمْ
غَفِلُونَ ⑥

निःसन्देह उनमें से अधिकांश पर
(अल्लाह का) कथन सत्य सिद्ध हो
गया है । अतः वे ईमान नहीं
लाएँगे । 8।

لَقَدْ حَقٌّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ⑦

निःसन्देह हमने उनकी गर्दनों में तौक
डाल दिए हैं और वे तुड़ियों तक पहुँचे
हुए हैं । इस कारण वे सिर ऊँचा उठाए
हुए हैं । 9।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَلَّا فِيهِ إِلَى
الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ⑧

और हमने उनके सामने भी एक रोक
बना दी है और उनके पीछे भी एक
रोक बना दी है । और उन पर पर्दा

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ

خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يَبْصِرُونَ ⑩
سकते ॥10॥*

और चाहे तू उन्हें सतर्क करे अथवा न करे उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाएँगे ॥11॥

तू केवल उसे सतर्क कर सकता है जो उपदेश का अनुसरण करता है और रहमान (अल्लाह) से एकान्त में भी डरता है। अतः उसे एक बड़ी क्षमादान और सम्मानजनक प्रतिफल का शुभ-समाचार दे दे ॥12॥

निःसन्देह हम हैं जो मुर्दों को जीवित करते हैं और हम उसे लिख लेते हैं जो वे आगे भेजते हैं और उनके चिह्नों को भी लें। और प्रत्येक वस्तु को हमने एक प्रमुख राजमार्ग में (धरती के नीचे) सुरक्षित कर रखा है ॥13॥ (रुकू ١٨)

और उनके सामने (एक विशेष) वस्ती वासियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर। जब उस (वस्ती) में (अल्लाह की ओर से) रसूल आए ॥14॥

जब हमने उनकी ओर दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने दोनों को झूठला दिया। अतः हमने तीसरे के द्वारा (उन्हें) दृढ़ता प्रदान की। फिर उन्होंने कहा, निःसन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं ॥15॥

उन्होंने (अर्थात् वस्ती वासियों ने) कहा, तुम हमारे जैसे मनुष्य के

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنْذِرُهُمْ أَمْ لَمْ
تُنْذِرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑪

إِمَّا تُنذِرُ مِنْ أَنْتَعِ الذِّكْرَ وَخَسِّ الرَّحْمَنَ
بِالْغَيْبِ فَبَسِّرْ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرِ كَرِيمٍ ⑫

إِنَّا نَحْنُ نَحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا
وَأَثَارُهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَخْصَيْنَاهُ فِي
إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑬

وَأَضِرْ بِهِمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقُرْيَةِ
إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ⑭

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا
فَعَزَّزَنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا لَنَكْنُ
مُرْسَلُونَ ⑮

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ

* आयत सं. 9-10 : काफिरों के गर्दनों पर यूँ तो कोई तौक नहीं होते और सब काफिर अंधे भी नहीं होते। अवश्य ये आलंकारिक वर्णन है अर्थात् पुण्यकर्मों से रोकने वाले तौक उनकी गर्दनों में पड़े हुए हैं और वे अंतर्वृष्टि से बंचित हैं।

अतिरिक्त कुछ नहीं और रहमान ने कोई
चीज़ नहीं उतारी। तुम तो केवल झूठ
बोलते हो ॥16॥

उन्होंने कहा, हमारा रब्ब जानता है
कि निःसन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे
गए हैं ॥17॥

और हम पर खोल-खोल कर बात
पहुँचाने के अतिरिक्त कोई उत्तरदायित्व
नहीं ॥18॥

उन्होंने कहा, हम निःसन्देह तुमसे
अपशकुन लेते हैं। यदि तुम न रुके तो
हम अवश्य तुम्हें संगसार कर देंगे और
अवश्य हमारी ओर से तुम्हें पीड़ाजनक
अज्ञाब पहुँचेगा ॥19॥

उन्होंने कहा, तुम्हारा अपशकुन तो
तुम्हारे ही साथ है। क्या यदि तुम्हें
भली-भाँति उपदेश दे दिया जाए (तो
फिर भी इनकार कर दोगे ?)
वास्तविकता यह है कि तुम तो सीमा
लांघ जाने वाले लोग हो ॥20॥

और नगर के दूर के किनारे से एक
व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उसने कहा,
हे मेरी जाति ! (इन) भेजे हुओं का
आज्ञापालन करो ॥21॥

इनका आज्ञापालन करो जो तुमसे कोई
प्रतिफल नहीं माँगते और वे हिदायत पा
नुके हैं ॥22॥

الرَّحْمَنُ مِنْ شَئْوَنِ إِنْ أَنْتَمْ إِلَّا
تُكَذِّبُونَ ⑯

قَاتُلُوا رَبَّنَا يَعْلَمُ إِنَّا لَيَكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑰

وَمَا عَلِمْنَا إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ⑱

قَاتُلُوا إِنَّا تَصْلِيْنَا بِكُمْ لَيْلَنْ لَمْ تَنْهُوا
لَزَجَّمَكُمْ وَلَيَمْسَكَكُمْ مُشَاعِدَابُ
الْيَمْرُ ⑲

قَاتُلُوا طَآبِرَكُمْ مَعَكُمْ طَأْبُونَ
ذَكَرْتُمْ بِلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُشْرِفُونَ ⑳

وَجَاءُهُمْ مِنْ أَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَسْعِيْ قَالَ
يَقُولُمْ اتَّبِعُو الْمُرْسَلِينَ ⑲

اتَّبِعُو مَنْ لَا يَسْلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ⑳

وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِنَّهُ^{نَعَماً}
تُرْجَمُونَ ⑩
और मुझे (भला) क्या हुआ है कि मैं
उसकी उपासना न करूँ जिसने मुझे पैदा
किया और उसी की ओर तुम (भी)
लौटाए जाओगे । 23।

क्या मैं उसको छोड़ कर ऐसे उपास्य
अपना लूँ कि यदि रहमान (अल्लाह)
मुझे कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उनकी
सिफारिश मेरे कुछ काम न आएगी और
न वे मुझे छुड़ा सकेंगे । 24।

نِ:سَنْدَهُ إِسْرَىٰ أَوْسَثَاهُ مِنْ تُرْكَلَتْ هِيَ مِنْ
خُولِيٰ-خُولِيٰ پथभष्टता में (पइ)
जाऊँगा । 25।

نِ:سَنْدَهُ مِنْ تُرْكَلَتْ رَبَّهُ پरِ إِيمَانَ لَآيَاهُ
हूँ । अतः मेरी सुनो । 26।

(उसे) कहा गया कि स्वर्ग में प्रविष्ट हो
जा । उसने कहा, काश मेरी जाति
जानती ! । 27।

जो मेरे रब्ब ने मुझ से क्षमापूर्ण व्यवहार
किया और मुझे सम्माननीय लोगों में
सम्मिलित कर दिया । 28।

और उसके पश्चात् हमने उसकी जाति के
विरुद्ध आकाश से कोई सेना नहीं उतारी
और न ही हम उतारने वाले थे । 29।

वह तो केवल एक भयानक ध्वनि थी,
अतः सहसा वे बुझ (कर राख हो)
गए । 30।

खेद है भक्तों पर ! जब भी उनके पास
कोई रसूल आता तो वे उससे उपहास
करने लगते हैं । 31।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि कितनी ही
पीढ़ियाँ हमने उनसे पूर्व नष्ट कर दीं ।

ءَاتَّخَذَ مِنْ دُونِهِ الْهَمَةَ إِنْ يَرِدُنِ
الرَّحْمَنُ بِصَرِّ لَا تَغْنِ عَنِ شَفَاعَتِهِ
شَيْئًا قَلَّا يُقْدُوْنِ ⑪
إِنِّي إِذَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٌ ⑫

إِنِّي أَمْتَثُ بِرِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ⑬
قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَأْتِيَتْ قَوْمٌ
يَعْلَمُونَ ⑭

بِمَا عَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ
الْمُكَرَّمِينَ ⑮

وَمَا آنَزَنَا عَلَىٰ قَوْمَهُ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنُدٍ
مِّنَ الْأَسْمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ⑯

إِنْ كَاتِبُ الْأَصْيَحَةَ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ
لَحِمَدُونَ ⑰

يَحْسِرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ
رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا يَهُدَىٰ يَسْتَهِنُونَ ⑱

أَلْمُ يَرَوَاكُمْ أَهْلَكُنَا قَبْلَهُمْ مِنْ

निःसन्देह वे उनकी ओर लौट कर नहीं
आएंगी । 32।

और हमारे समझ वे सब के सब अवश्य
पेश किए जाने वाले हैं । 33।*

(रुक् १/२)
और उनके लिए मृत धरती एक चिह्न है।
हमने उसे जीवित किया और उससे
(भाँति-भाँति के) अनाज उगाये । अतः
उसी में से वे खाते हैं । 34।

और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के
बाग बनाए और हमने उसमें जलस्रोत
फाइ निकाले । 35।

ताकि वे उस (अर्थात् अल्लाह) के
(दिये हुए) फलों में से खायें और उसे
भी खायें जो उनके हाथों ने कमाया
है । अतः क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं
करेंगे ? । 36।

पवित्र है वह जिसने प्रत्येक प्रकार के
जोड़े पैदा किए, उसमें से भी जो धरती
उगाती है और स्वयं उनकी जानों में से
भी और उन चीज़ों में से भी जिनका वे
कोई ज्ञान नहीं रखते । 37।

और उनके लिए रात्रि भी एक चिह्न है ।
उससे हम दिन को खींच निकालते हैं ।
फिर सहसा वे पुनः अंधकारों में ढूब जाते
हैं । 38।

और सूर्य (सदा) अपने निश्चित पड़ाव
की ओर अग्रसर है । यह पूर्ण प्रभुत्व वाले
(और) ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) का
(निश्चित किया हुआ) विधान है । 39।

الْقَرُونَ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١﴾

وَإِنْ كُلُّ لَمَّا جَمِيعٌ لَدِينَامُخْضَرُونَ ﴿٢﴾

وَأَيَّهُ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا
وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبَّاً فِيمَنْ يَأْكُلُونَ ①

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ تَحْشِيلٍ وَأَغْنَابٍ
وَفَجَرْنَا فِيهَا مِنَ الْعَيْوَنِ ②

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرَهُ وَمَا عَمِلْتُهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ③

سَبِّحْنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَرْوَاحَ كُلُّهَا
مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ④

وَأَيَّهُ لَهُمُ الْيَلَى نَسْلَخُ مِنْهُ الْهَارَفَاذا
هُمْ مُظْلِمُونَ ⑤

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقْرِرٍ لَهَا ذَلِك
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيِّ ⑥

* यह अनुवाद कुरआन भाष्य ग्रंथ 'इस्ला मा मन बिहिरहमान' के अनुसार किया गया है ।

और चन्द्रमा के लिए भी हमने पड़ाव निश्चित कर दिए हैं। यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की भाँति बन जाता है। 140।

सूर्य के वश में नहीं कि चन्द्रमा को पकड़ सके और न ही रात दिन से आगे बढ़ सकती है और सब के सब (अपनी-अपनी) धूरियों पर अग्रसर हैं।* 141।

और उनके लिए यह भी एक चिह्न है कि हमने उनकी संतान को एक भरी हुई नौका में सवार किया। 142।

और हम उनके लिए वैसे ही और (साधन) बनाएँगे जिन पर वे सवार हुआ करेंगे। 143।

और यदि हम चाहें तो उन्हें ढुबो दें। फिर उनका कोई फरियाद सुनने वाला नहीं होगा और न वे बचाए जाएँगे। 144। सिवाए हमारी ओर से कृपा के रूप में और एक समय तक अस्थायी लाभ पाने के उद्देश्य से। 145।

* आयत संख्या 39 से 41 : इन आयतों में आकाशीय पिण्डों के संबंध में ऐसी बातें वर्णन की गई हैं जिन तक अरब के एक निरक्षर की कल्पना भी नहीं पहुँच सकती थी। सूर्य और चन्द्रमा का परस्पर न मिल सकना तो प्रतिदिन देखने में आता है। परन्तु चन्द्रमा छोटा क्यों हो जाता है और फिर छोटे से बड़ा भी होता रहता है। यह उसकी परिक्रमा से संबंध रखता है। फिर यह बात वर्णन की है कि सूर्य भी एक निश्चित घड़ी की ओर गति कर रहा है। इसका एक अर्थ तो यह है कि सूर्य भी एक समय अपनी निश्चित आयु को पहुँच कर समाप्त हो जाएगा। और एक अर्थ जो आजकल अन्तरिक्ष विशेषज्ञों ने ज्ञात किया है, वह यह है कि सूर्य अपने सारे ग्रहों के साथ एक दिशा की ओर गति कर रहा है। इसका अर्थ यह है कि समस्त ब्रह्माण्ड सामूहिक रूप से गति कर रहा है। अन्यथा एक ग्रह का दूसरे से टकराव हो जाना चाहिए था। पूरा ब्रह्माण्ड गतिशील होने पर भी इन आकाशीय पिण्डों की पारस्परिक दूरियाँ उतनी ही रहती हैं। यह अन्तरिक्ष विशेषज्ञों के नवीन आविष्कारों में से है जिससे यह भी प्रमाणित होता है कि कोई और अज्ञात ब्रह्माण्ड भी है जिसके गुरुत्वाकर्षण से यह ब्रह्माण्ड उसकी ओर अग्रसर है।

وَالْقَمَرَ قَدْرُثَةٌ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ

كَالْمُرْجُونِ الْقَدِيمِ ①

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تَذْرِكَ

الْقَمَرَ وَلَا أَيْلَلَ سَابِقُ النَّهَارِ وَمُكَلِّ

فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ②

وَإِيَّاهُمْ أَنَا حَمَلْنَا ذِرَّتِهِمْ فِي الْفَلَكِ

الْمَسْخُونِ ③

وَخَلَقْنَاهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرَكِبُونَ ④

وَإِنْ لَشَاءْ نُعْرِقُهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ

وَلَا هُمْ يُقَدِّرُونَ ⑤

إِلَّا رَحْمَةً مِنْا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِلْنِ ⑥

और जब उन्हें कहा जाता है कि उन विषयों में तकवा धारण करो जो तुम्हारे सामने हैं और उन (विषयों) में भी जो तुम्हारे पीछे हैं ताकि तुम पर कृपा की जाये (तो वे ध्यान नहीं देते) । 46।

और उनके पास उनके रब्ब के चिह्नों में से जब भी कोई चिह्न आता तो वे उससे विमुख होने वाले होते हैं । 47।

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो जीविका तुम्हें प्रदान की है उसमें से खर्च करो तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उन लोगों से जो ईमान लाए हैं, कहते हैं क्या हम उन्हें खिलाएँ जिनको यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिलाता ? तुम तो केवल एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो । 48।

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा ? । 49।

वे एक भयानक ध्वनि के सिवा किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें (उस समय) आ पकड़ेगी जब वे झगड़ रहे होंगे । 50।

फिर वे वसीयत करने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और न अपने घर वालों की ओर लौट सकेंगे । 51। (रुक् ۳)

और बिगुल फूँका जाएगा तो सहसा वे क़ब्रों में से निकल कर अपने रब्ब की ओर दौँड़ने लगेंगे । 52।

वे कहेंगे, हाय ! किसने हमें हमारे विश्रामस्थल से उठाया । यही तो है

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْقُوْا مَا بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ أَيْدِيْكُمْ وَمَا
خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ④

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ أَيْكَةٍ مِنْ أَيْتَ رَبِّهِمْ إِلَّا
كَانُوا عَنْهَا مَعْرِضُينَ ④

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ^۱
قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَيْهِنَّ أَمْنُوا الْأَنْطَعْمَ
مِنْ تُوْسِعَ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ④

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ④

مَا يَتَرْكُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخْسِمُونَ ④

فَلَا يَسْتَطِعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَّا
أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ④

وَنَفْخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنْ
الْأَجْدَاثِ إِلَى رَبِّهِمْ يَنْسَلُونَ ④

فَالَّذِي لَوْيَلَّا مَنْ بَعْثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا هَذَا

जिसका रहमान (अल्लाह) ने वादा किया था और रसूल सच ही कहते थे । 53।

यह केवल एक ही भयानक ध्वनि होगी । फिर सहसा वे सब के सब हमारे सामने उपस्थित कर दिए जाएंगे । 54।

अतः आज के दिन किसी जान पर कुछ अत्याचार नहीं किया जाएगा और जो तुम किया करते थे तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जायेगा । 55।

निःसन्देह स्वर्ग निवासी आज के दिन विभिन्न प्रकार की दिलचस्पियों से आनन्दित हो रहे होंगे । 56।

वे और उनके साथी छायों में पलंगों पर तकिए लगाए होंगे । 57।

उनके लिए उसमें फल होगा और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे माँगेंगे । 58।

बार-बार दया करने वाले रब्ब की ओर से 'सलाम' कहा जाएगा । 59।

और हे अपराधियो ! आज के दिन बिल्कुल अलग हो जाओ । 60।

हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें पक्का आदेश नहीं दिया था कि तुम शैतान की उपासना न करो ।

निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है । 61।

और यह कि तुम मेरी उपासना करो । यह सीधा मार्ग है । 62।

परन्तु उसने निःसन्देह तुम में से एक बड़े समूह को पथभ्रष्ट कर दिया ।

مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ①

إِنْ كَانَتِ الْأَصْيَحَةُ وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُهَضُّرُونَ ②

فَإِنَّ يَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا يُخْرَجُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ③

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شَغَلٍ فَكَمُونَ ④

هُمْ وَأَرْوَاحُهُمْ فِي ظِلَّلٍ عَلَى الْأَرَأِيِّكِ مُتَكَبِّرُونَ ⑤

لَهُمْ فِيهَا كِفَاهُةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ⑥

سَلَمٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحْمَنٍ ⑦

وَأَمْتَازُوا الْيَوْمَ أَيْمَانًا الْمُجْرِمُونَ ⑧

الَّمَّا أَعْهَدْتَ إِلَيْكُمْ يَنْهَى أَدْمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَنَ ۝ إِنَّهُ لَكُمْ عَذَّابٌ مُّؤْيَنٌ ⑨

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۝ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ⑩

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِيلًا كَثِيرًا أَفَلَمْ

अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते थे ? 163।

यही वह नरक है जिसका तुम को वादा दिया जाता था । 164।

आज इसमें प्रविष्ट हो जाओ क्योंकि तुम इनकार किया करते थे । 165।

आज के दिन हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से वार्तालाप करेंगे और उनके पाँव उसकी गवाही देंगे जो वे कमाया करते थे । 166।*

और यदि हम चाहते तो उनकी आँखों को अवश्य विकृत कर देते । फिर वे रास्ते पर आगे बढ़ते परन्तु वे (उसे) देख कैसे सकते थे ? । 167।

और यदि हम चाहते तो उन्हें उनके ठिकानों पर ही मिटा डालते । फिर वे चलने का सामर्थ्य रखते और न लौट सकते । 168। (रुक् ४)

और जिसे हम लम्बी आयु देते हैं उसको शारीरिक शक्तियों की दृष्टि से कम करते चले जाते हैं । अतः क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 169।

और हमने उसे कविता कहना नहीं सिखाया और न ही ऐसा उसके लिए

* क्रायमत के दिन मनुष्य की जो पूछ-ताछ होगी वह केवल फरिश्तों की गवाही के अनुसार नहीं होगी बल्कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर के अंग भी अपने अपराधों को स्वीकार (Confession) करेंगे । इसमें शालिव की इस काव्यकल्पना का भी उत्तर आ गया :-

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था ?

उस दिन मनुष्य स्वयं अपराध स्वीकार कर रहा होगा । पवित्र कुरआन की न्यायिक व्यवस्था बहुत मजबूत है । गवाहियाँ भी होंगी और पाप-स्वीकरण भी होंगे ।

تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ①

هُذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ②

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ③

الْيَوْمَ تُخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا
أَيْدِيهِمْ وَتَشَهِّدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا
يُكَسِّبُونَ ④

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ
فَاسْتَبِقُوا الصِّرَاطَ فَأُولَئِنَّا يَمْضِرُونَ ⑤

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسْخُهُمْ عَلَىٰ مَكَانِتِهِمْ فَمَا
أَسْطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ⑥

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَيِّسُهُ فِي الْخَلْقِ ۝ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ⑦

وَمَا عَلِمْنَا السُّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۝

शोभनीय था । यह तो केवल एक उपदेश है और सुस्पष्ट कुरआन है । 170।

ताकि वह उसे सतर्क करे जो जीवित हो और काफिरों पर आदेश सत्य सिद्ध हो जाए । 171।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो हमारी शक्ति ने बनाया, उसमें से हमने उनके लिए पशु पैदा किए । फिर वे उनके स्वामी बन गए हैं । 172।

और हमने उन्हें (अर्थात् पशुओं को) उनके अधीन कर दिया । अतः उन ही में से उनकी सवारियाँ हैं । और उन्हीं में से (कुछ को) वे खाते हैं । 173।

और उनके लिए उनमें बहुत से लाभ हैं और पेय पदार्थ भी । अतः क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं करेंगे ? । 174।

और उन्होंने अल्लाह के सिवा उपास्य अपना रखे हैं । संभवतः उन्हें (उनकी ओर से) सहायता मिले । 175।

वे उनकी सहायता करने का कोई सामर्थ्य नहीं रखेंगे जबकि वे तो उनके विरुद्ध (गवाही देने के लिए) उपस्थित की गई सेनाएँ होंगी । 176।

अतः तुझे उनकी बात शोक में न डाले । निःसन्देह हम जानते हैं जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं । 177।

क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया तो फिर यह कौन सी क्रांति आ गई कि वह एक खुला-खुला झगड़ालू बन गया । 178।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ①

لَيَسْتَدِرَ مَنْ كَانَ حَيَاً وَيَحْقُّ الْقَوْلُ عَلَى
الْكُفَّارِ ②

أَوْلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلُ
آيَيْدِينَا آنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مُلِكُونَ ③

وَذَلِكُنَّهَا لَهُمْ فِيمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا
يَأْكُلُونَ ④

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعٌ وَمَشَارِبٌ ۚ أَفَلَا
يَشْكُرُونَ ⑤

وَأَنْتَخُذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَلَّاهَ تَعَالَى
يُصْرَفُونَ ⑥

لَا يَسْتَطِعُونَ نَصْرَهُمْ ۚ وَهُمْ لَهُمْ
جُنْدٌ مُخْضَرُونَ ⑦

فَلَا يَحْرُنُكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّا نَعْلَمْ مَا
يُبَرُّونَ وَمَا يَعْلَمُونَ ⑧

أَوْلَمْ يَرَ إِلَّا إِنْسَانٌ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ لُطْفَةٍ
فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ⑨

और हम पर बातें बनाने लगा और अपनी उत्पत्ति को भूल गया । कहने लगा, कौन है जो हड्डियों को जीवित करेगा जबकि वह गल सङ् चुकी होंगी ? 179।

तू कह दे, उन्हें वह जीवित करेगा जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया था । और वह प्रत्येक प्रकार की सृष्टि का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है । 180।

वह जिसने हरे-भरे वृक्षों से तुम्हारे लिए आग बना दी । फिर तुम उन्हीं में से कुछ को जलाने लगे । 181।

क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है इस बात पर समर्थ नहीं कि उन जैसे (और) पैदा कर दे ? क्यों नहीं । जबकि वह तो बहुत महान सष्टा (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 182।

उसका केवल यह आदेश पर्याप्त है, जब वह किसी चीज़ का इरादा करे तो वह उसे कहता है 'हो जा' फिर वह होने लगती है और हो कर रहती है । 183।

अतः पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । 184।

(रुक् ५/४)

وَصَرَبَ لِنَامَّلًا وَنَسَى حَلْقَةً قَارَ
مَنْ يُّحِيِ الْعَظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ④

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ⑤

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
نَارًا إِفَادَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقَدُونَ ⑥

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِقِدْرٍ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۝ بَلْ
وَهُوَ الْخَلُقُ الْعَلِيمُ ⑦

إِنَّمَا أَمْرَةٌ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ⑧

فَسَبِّحْنَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلْكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑨

37- सूरः अस-साफ़्फ़ात

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 183 आयतें हैं।

इससे पहले कि सूरः अस-साफ़्फ़ात की प्रारम्भिक आयतों की व्याख्या की जाए यह वर्णन करना आवश्यक है कि इन आयतों में यह बताया गया है कि इनमें उल्लेखित भविष्यवाणियाँ जब पूरी होंगी तो यह भी अवश्य सिद्ध हो जाएगा कि जिस पुनर्जीवन की बड़े ज़ोर के साथ घोषणा की गई है वह भी अवश्य हो कर रहेगा। जैसे कि आयत सं. 12 में अल्लाह तआला कहता है कि तू उनसे पूछ कि क्या तुम अपनी सृष्टि में अधिक शक्तिशाली हो अथवा वे जिनकी अल्लाह तआला ने सृष्टि की है। इस प्रश्न के पश्चात जो बात काफ़िरों को चकित करने वाली है, यह घोषणा की गई है कि सष्टा की दृष्टि से निःसन्देह अल्लाह तआला तुम्हारी सृजन शक्ति से बहुत ऊँचा स्थान रखता है और इस बात पर समर्थ है कि जब तुम मर कर मिट्टी हो जाओगे तो फिर तुम्हें वह नए सिरे से जीवित कर दे। और साथ यह चेतावनी भी है कि जब तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो तुम अपमानित भी किए जाओगे। अर्थात् वे लोग जो अपनी सृष्टि के बारे में ऊँचे-ऊँचे दावे किया करते थे उन पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि उनकी सृष्टि का तो कोई महत्व ही नहीं और सर्वश्रेष्ठ सष्टा केवल अल्लाह तआला ही है।

अब हम प्रारम्भिक आयतों की ओर फिर ध्यान देते हैं। आयत वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न (क्रमानुसार पंक्तिबद्ध सेनाओं की सौगंध) में वस्तुतः उन लड़ाकू विमानों की खबर दी गई है जिन्हें मनुष्य बनाएगा और वे पंक्तिबद्ध हो कर शत्रुओं पर आक्रमण करेंगे और बार-बार उनको सावधान करेंगे और ऐसे परन्ते प्रचुर मात्रा में उन पर गिराएँगे जिनमें उनके लिए यह संदेश होगा कि अपनी गर्दनें हमारे समक्ष छुका दो अन्यथा तुम तबाह कर दिए जाओगे।

इसके पश्चात् अल्लाह तआला कहता है कि उनकी क्या हैसियत है कि वे अपनी जाहिरी शक्ति के द्वारा अपने ईश्वरत्व का दावा करें। वस्तुतः अल्लाह एक ही है।

फिर कहा कि वह पूर्वी दिशाओं का रब्ब है। यह आयत भी एक भविष्यवाणी का रंग रखती है अन्यथा उस युग में तो कई पूर्वी दिशाओं की कोई कल्पना ही नहीं थी जो वर्तमान युग में पैदा हुई है। यह वह समय होगा जब मनुष्य विभिन्न प्रकार के नवीन अविष्कारों के द्वारा जो बहुत ऊँची उड़ान भरने के सामर्थ्य रखते होंगे जैसे कि रांकेट इत्यादि के द्वारा प्रयत्न करेगा कि मला-ए-आ'ला (अर्थात् फ़रिश्तों) के रहस्य को ज्ञात करे, जिस प्रकार वर्तमान युग में प्रयास हो रहे हैं। परन्तु प्रत्येक ओर से उन पर पथराव होगा। अर्थात् वे आकाशीय पिण्डों से बरसने वाले अत्यन्त भयानक पत्थरों का निशाना

बनाए जाएँगे और सिवाए इसके कि वे निकट के आकाश के कुछ रहस्य जान लें वे अपने प्रयास में सफल नहीं होंगे । ये वे विषय हैं जिन पर वर्तमान युग और इस के नए अविष्कार साक्षी हैं कि बिल्कुल यही कुछ हो रहा है ।

इस सूरः के आरम्भ में चूँकि युद्धों का वर्णन है जो सांसारिक विजय प्राप्ति के लिए अनेक जातियों के बीच लड़े जाएँगे । इस लिए इस प्रकरण में हज़रत मुहम्मद सल्ल. और उनके सहायियों के उस युद्ध का भी वर्णन किया गया जो केवल अल्लाह के लिए लड़ा गया था, और जिसमें दूसरों के रक्त बहाने के लिए तलवार नहीं उठाई गई थी । बल्कि कुर्बानियों की भाँति सहायियों का समूह को ज़िबह किया जाना था और इस विषय का सम्बन्ध हज़रत इब्राहीम अलै. की उस कुर्बानी से था जिसमें वह अपने पुत्र को ज़िबह करने के लिए तत्पर हो गये थे । व्याख्याकारों का यह विचार कि कोई मेड़ा ज्ञाड़ी में फंस गया था और हज़रत इस्माईल अलै. को इस महान ज़िबह के बदले में छोड़ दिया गया था, यह बड़ा बोदा विचार है जिसका न कुरआन में वर्णन है, न हदीस में । हज़रत इस्माईल अलै. के बदले एक मेड़ा कैसे महान हो सकता है ? वस्तुतः हज़रत इस्माईल को इस लिए जीवित रखा गया ताकि संसार उस महान ज़िबह के दृश्य को देख ले जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के समय में घटित हुआ ।

सूरः अस्-साफ़्कात के संदर्भ से जहाँ इससे पूर्व बहुत से पंक्तिबद्ध आक्रमणकारियों का वर्णन हुआ है, इस सूरः के अन्त पर पवित्र कुरआन यह वर्णन करता है कि वास्तविक पंक्तिबद्ध सेनाएँ तो हमारी हैं । इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पंक्तिबद्ध सेनाओं का भी वर्णन कर दिया गया और उन फ़रिश्तों का भी जो आप सल्ल. के समर्थन के लिए पंक्तिबद्ध रूप में आकाश से उतारे गए । जिसका अन्तिम परिणाम यही होना था कि देखने में ये शक्तिहीन पंक्तिबद्ध युद्ध करने वाले, जिनका शत्रु उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली था पराजित हो जाते, परन्तु अल्लाह की नियति भारी पड़ी और अल्लाह और अल्लाह वाले ही विजयी हुए ।



سُورَةُ الصَّفَّتِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْسَّمَلَةِ مَا تَرَأَتْ وَثَلَاثَ وَتَمَائُونَ آيَةٌ وَخَمْسَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा है
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क्रमानुसार पंक्तिबद्ध होने वाली
(सेनाओं) की सौगन्ध । । ।

फिर उनकी, जो ललकारते हुए डपट ने
वालियाँ हैं । । ।

फिर (अल्लाह को) बहुत याद करने
वालियों की । । ।

निःसन्देह तुम्हारा उपास्य एक ही
है । । ।

अकाशों का भी (वह) रब्ब है और
धरती का भी और उसका भी जो उन
दोनों के बीच है । और समस्त पूर्वी
दिशाओं का रब्ब है । । ।

निःसन्देह हमने निकट के आकाश
को सितारों के द्वारा एक शोभा प्रदान
की । । ।

और (यह) प्रत्येक धुतकारे हुए शैतान
से सुरक्षा स्वरूप है । । ।

वे मला-ए-आ'ला (अर्थात् फ़रिश्तों)
की बातें नहीं सुन सकेंगे और प्रत्येक
ओर से पथराव किए जाएँगे । । । *

وَالصَّفَّتِ صَفَّا ۖ

فَالزُّجَّارِ زَجْرَا ۖ

فَالشَّلِيلِ ذِكْرًا ۖ

إِنَّ الْهُكْمُ لَوَاحِدٌ ۖ

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَرَبُّ الْمَسَارِقِ ۖ

إِنَّا زَيَّنَاهُ السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ
الْكَوَاكِبِ ۖ

وَحْفَظَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْطَنٍ مَّارِدٍ ۖ

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى
وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ

* आयत सं. 7 से 9 :- इन आयतों में ब्रह्माण्ड की प्रत्यक्ष व्यवस्था का भी वर्णन है कि किस प्रकार धरती का वायुमण्डल धरती पर सदा बरसने वाले उल्का पिण्डों को वायुमण्डल में ही जला कर भस्म कर देता है और उसके जलने से पीछे की ओर एक अग्निशिखा दूर तक लपकती हुई प्रतीत होती है । इसी प्रकार यह भी कहा गया कि एक समय आएगा जब मनुष्य ब्रह्माण्ड की खबरों को प्राप्त करने का प्रयास करेगा जिसकी कोई कल्पना भी उस युग में नहीं हो सकती थी । परन्तु सुरक्षित राकेटों→

इस अवस्था में कि (वे) धिक्कारे हुए हैं
और उनके लिए चिमट जाने वाला
अज्ञाब (निश्चित) है ॥10॥

सिवाय उसके जो कोई एक-आध बात
उचक ले तो उसका भी एक प्रज्वलित
अग्निशिखा पीछा करेगी ॥11॥

अतः तू उनसे पूछ क्या सृष्टि करने की
दृष्टि से वे अधिक सबल हैं अथवा वे
जिन्हें हमने पैदा किया (सृष्टि के रूप में
अधिक शक्तिशाली हैं) ? निःसन्देह
हमने उन्हें एक चिमट जाने वाली मिट्टी
से पैदा किया ॥12॥

वास्तविकता यह है कि तू तो (सृष्टि
पर) आश्चर्य चकित हो उठा है जबकि
वे खिल्ली उड़ाते हैं ॥13॥

और जब उन्हें उपदेश दिया जाता है तो
वे उपदेश ग्रहण नहीं करते ॥14॥

और जब भी वे कोई चिह्न देखें तो
उपहास करने लगते हैं ॥15॥

और कहते हैं यह तो केवल एक खुला-
खुला जादू है ॥16॥

क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और
हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य
उठाए जाने वाले हैं ? ॥17॥

और क्या हमारे पिछले पूर्वज भी ॥18॥

دُخُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ قَوِيًّا ۝

إِلَّا مَنْ حَطَفَ الْحَاطِفَةَ فَأَتَبَعَهُ
شَهَابُ ثَاقِبٍ ۝

فَاسْتَقْبَهُمْ أَهْمَاءً شَدَّ حَلْقَاهُمْ مِنْ حَلْقَاتِهِ
إِنَّا هَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ۝

بُلْ عَجْبٌ وَيَسْخَرُونَ ۝

وَإِذَا ذَكَرُوا لَا يَذَكَرُونَ ۝

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝

وَقَالُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

ءَإِذَا مِتَّنَا وَكَنَّا ثَرَابًا وَعِظَامًا
ءِنَّا لَمْ بَعُونُوْنَ ۝

أَوْ أَبَاؤُنَا الْأَوْلَوْنَ ۝

←में यात्रा करने वाले उन मनुष्यों पर प्रत्येक ओर से पथराव किया जाएगा और वे निचले आकाश से
आगे नहीं बढ़ सकते। केवल निकट के आकाश तक पहुँचने में किसी सीमा तक सफल हो सकते हैं।
आध्यात्मिक दृष्टि से इस से अभिप्राय बुरे विचार के साथ वहद का पीछा करने वाले और अनुमान
लगाने वाले मनुष्य रूपी शैतान हैं। शैतान तो वहद के अवतरण के निकट तक भी नहीं पहुँच सकता
परन्तु मनुष्य रूपी शैतान जैसे सामरी था, कुछ अनुमान लगा सका कि वहद के कारण लोगों पर क्यों
रोब पड़ता है।

तू कह दे, हाँ ! इस अवस्था में कि तुम अपमानित होगे । 19।

अतः निःसन्देह यह एक ही डपट होगी । तो सहसा वे देखते रह जाएँगे । 20।

और वे कहेंगे, हाय हमारा सर्वनाश ! यह तो प्रतिफल का दिन है । 21।

यह (वह) निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे । 22। (रुक् ۱۳)

उन लोगों को इकट्ठा करो जिन्होंने अत्याचार किया और उनके साथियों को भी । और उनको भी जिनकी वे उपासना किया करते थे, । 23।

अल्लाह के सिवा । अतः उन्हें नरक के मार्ग पर डाल दो । 24।

और उन्हें थोड़ा ठहराओ, निःसन्देह वे पूछे जाने वाले हैं । 25।

(अब) तुम्हें क्या हो गया है कि (आज) तुम एक दूसरे की सहायता नहीं करते । 26।

बल्कि वे तो आज (प्रत्येक अपराध) को स्वीकार करने वाले हैं । 27।

और उनमें से कुछ-कुछ की ओर प्रश्न करते हुए ध्यान देंगे । 28।

वे कहेंगे कि निःसन्देह तुम दाहिनी ओर से (अर्थात् धर्म की आड में हमें भटकाने के लिए) हमारे पास आया करते थे । 29।

वे (उत्तर में) कहेंगे कि तुम भी तो किसी प्रकार ईमान लाने वाले नहीं थे । 30।

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ۖ

فَإِنَّمَا هُوَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا
هُمْ يُسْتَرْفُونَ ۖ

وَقَالُوا يَا يَوْمَ الْيَقْظَاءِ هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۖ

هَذَا يَوْمُ الْقُضَىٰ كُنْتُمْ بِهِ
تَكْذِبُونَ ۖ

أَخْسَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَرْوَاجَهُمْ
وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۖ

مِنْ ذُوْنَ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ
الْجَحِيمِ ۖ

وَقِفُّوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْؤُلُونَ ۖ

مَا لَكُمْ لَا تَأْصِرُونَ ۖ

بِلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۖ

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَا عَنِ الْيَمِينِ ۖ

قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا أُمُّ مُنْتَنِيَنَ ۖ

हमें तो तुम पर किसी प्रकार की दृढ़ तर्क की दृष्टि से बढ़ोत्तरी प्राप्त नहीं थी । बल्कि तुम स्वयं ही सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग थे । 31।

अतः हम पर हमारे रब्ब का कथन सत्य सिद्ध हो गया । हम निःसन्देह (अज्ञाब का स्वाद) चखने वाले हैं । 32।

अतः हमने तुम्हें पथभ्रष्ट किया । निःसन्देह हम स्वयं भी पथभ्रष्ट थे । 33।

निःसन्देह वे (सब) उस दिन अज्ञाब में वरावर भागीदार होंगे । 34।

निःसन्देह हम अपराधियों से ऐसा ही व्यवहार करते हैं । 35।

निःसन्देह वे ऐसे थे, कि जब उन्हें कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं तो वे अहंकार करते थे । 36।

और कहते थे क्या हम एक पागल कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ देंगे ? । 37।

वास्तविकता यह है कि वह (नबी) तो सत्य लेकर आया था और सब रसूलों का सत्यापन करता था । 38।

निःसन्देह तुम पीड़ाजनक अज्ञाब अवश्य चखने वाले हो । 39।

और जो तुम किया करते थे उसी का प्रतिफल तुम्हें दिया जा रहा है । 40।

अल्लाह के निष्ठावान भक्तों का मामला भिन्न है । 41।

यही वे लोग हैं जिनके लिए जानी-पहचानी जीविका (निश्चित) है । 42।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَنٍ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَغِيَّةً ④

فَحَقٌّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۝ إِنَّا لَذَاهِقُونَ ⑤

فَأَغْوَيْنَكُمْ إِنَّا كَانَ أَغْوِيَّنَ ⑥

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشَرِّكُونَ ⑦

إِنَّا كَذَلِكَ تَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ⑧

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
يَسْتَكْبِرُونَ ⑨

وَيَقُولُونَ إِنَّا تَرَكْوْا أَهْمَنَا شَاعِرٍ
مَجْدُونٍ ⑩

بَلْ جَاءُ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ⑪

إِنَّكُمْ لَذَاهِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ⑫

وَمَا تَجْرِيَنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑬

إِلَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُحْلِصِينَ ⑭

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ ⑮

भाँति-भाँति के फल । इस अवस्था में
कि वे खूब सम्मान दिए जाएंगे । 43।
नेमतों वाले बागों में । 44।

तख्तों पर आमने-सामने बैठे हुए
होंगे । 45।

उन के समक्ष जलस्रोतों के बहते जल से
भरे कटोरे परोसे जाएंगे । 46।

अत्यन्त स्वच्छ, पीने वालों के लिए
पूर्णतः स्वादिष्ट (होंगे) । 47।

उन (पेय पदार्थों) में न कोई नशा
होगा और न वे उनके प्रभाव से बुद्धि
खो बैठेंगे । 48।

और उनके पास नीची दृष्टि रखने
वाली, बड़ी आँखों वाली (कुँवारी
कन्याएँ) होंगी । 49।

(वे दमक रही होंगी) मानो वे ढाँप कर
रखे हुए अंडे हैं । 50।*

तो उनमें से कुछ, कुछ दूसरों से प्रश्न
करते हुए ध्यान देंगे । 51।

उनमें से एक कहने वाला कहेगा,
निःसन्देह मेरा एक साथी हुआ करता
था । 52।

वह कहा करता था, क्या तुम (इस बात
की) पुष्टि करने वाले हो ? । 53।

कि क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो
जाएंगे और हड्डियाँ रह जाएंगे तो क्या हमें
फिर भी प्रतिफल दिया जाएगा ? । 54।

* आयत सं. 49 से 50 : ये अवश्य उपमाएँ हैं अन्यथा अप्सराओं के संबंध में यह कहना कि मानो वे
ढके हुए अंडे हैं यूँ तो कोई अर्थ नहीं रखता । जिस प्रकार ढके हुए अंडे साफ़ और स्वच्छ होते हैं इसी
प्रकार उनके आध्यात्मिक साथी भी अंतःकरण की दृष्टि से पवित्र एवं स्वच्छ होंगे ।

فَوَاكِهٌ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ①

فِي جَنَّتِ التَّعِيهِ ②

عَلَى سَرِّ مُقْتَلِيْنَ ③

يَطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاسٍ مِنْ مَعِينٍ ④

يَسْأَءُ لَذَّةً لِلشَّرِيْنَ ⑤

لَا قِيمَاغُولٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يَنْزَفُونَ ⑥

وَعِنْهُمْ قِصْرُ الظَّرِيفِ عِيْنَ ⑦

كَانُهُنَّ يَيْضُصُ مَكْنُونُ ⑧

فَاقْبَلَ بَعْصُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ⑨

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي فَرِيقٌ ⑩

يَقُولُ أَيْلَكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ⑪

إِذَا مِنَّا وَكَنَّا ثَرَابًا وَعَظَامًا ⑫

إِنَّا لَمَدِيْنُونَ ⑬

वह कहेगा, क्या तुम झांक कर देख सकते हो ? 155।

अतः उसने झांक कर देखा तो उस (साथी) को नरक के बीचों-बीच पाया 156।

उसने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! सम्भव था कि तू मुझे भी तबाह कर देता 157।

और यदि मेरे रब्ब की नेमत न होती तो मैं अवश्य पेश किए जाने वालों में से होता 158।

अतः क्या हम मरने वाले नहीं थे ? 159।

सिवाए हमारी पहली मृत्यु के और हमें कदापि अज्ञाब नहीं दिया जाएगा 160।

निःसन्देह यही (ईमान लाने वाले की) एक बहुत बड़ी सफलता है । 161।

अतः चाहिए कि ऐसे ही स्थान (की प्राप्ति) के लिए सब कर्म करने वाले कर्म करें । 162।

क्या आतिथ्य स्वरूप यह उत्तम है अथवा थूहर का पौधा । 163।

निःसन्देह हमने उसे अत्याचारियों के लिए परीक्षा (स्वरूप) बनाया है । 164।

निःसन्देह यह एक पौधा है जो नरक की गहराई में उगता है । 165।

उसकी कलियाँ ऐसी हैं जैसे शैतानों के सिर । 166।

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّقْطَلِعُونَ ⑥

فَأَظْلَعَ فَرَأَهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ⑦

قَالَ تَالِلُو إِنِّي كُذَّتْ لَمْرَدِينِ ⑧

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْنَ لَكُنْتُ
مِّنَ الْمُخْسِرِينَ ⑨

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ⑩

إِلَّا مُوتَّنَا الْأُولَى وَمَا نَحْنُ
بِمَعْدِيْنَ ⑪

إِنَّهُذَا هُوَ الْغَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑫

لِمِثْلِهِذَا فَلَيُعْمَلِ الْعِلْمُونَ ⑬

أَذْلِكَ خَيْرٌ نَّرَّلَأَمْ شَجَرَةُ الرَّقْوُمِ ⑯

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ⑯

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ
الْجَحِيمِ ⑯

طَلَعَهَا كَانَهُ رَمْوُسُ الشَّيْطِيْنِ ⑯

अतः निःसन्देह वे उसी में से खाने वाले हैं। फिर उसी से पेट भरने वाले हैं । 167।

फिर निःसन्देह उनके लिए उस (खाने) के पश्चात् अत्यन्त गर्म पानी मिला हुआ पेय होगा । 168।

फिर निःसन्देह नरक की ओर उनको लौट कर जाना होगा । 169।

निःसन्देह उन्होंने अपने पूर्वजों को पथभ्रष्ट पाया था । 170।

अतः उन्हीं के पदचिह्नों पर वे भी दौड़ाए जा रहे हैं । 171।

और निःसन्देह उनसे पूर्व पहली जातियों में से भी अधिकतर (लोग) पथभ्रष्ट हो चुके थे । 172।

जबकि निश्चित रूप से हम उनमें सतर्ककारी भेज चुके थे । 173।

अतः देख कि सतर्क किये जाने वालों का अंत कैसा हुआ । 174।

सिवाए अल्लाह के द्वारा विशिष्ट किये गये भक्तों के । 175। (रुकू २/६)

और निःसन्देह हमें नूह ने पुकारा तो (देखो) हम कैसा अच्छा उत्तर देने वाले हैं । 176।

और हमने उसको और उसके परिवार को बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की । 177।

और हमने उसकी संतान को ही शेष रहने वाला बना दिया । 178।

और हमने बाद में आने वालों में उसका सु-स्मरण शेष रखा । 179।

فَإِنَّهُمْ لَا كَلُونَ مِنْهَا فَمَا لَئُونَ
مِنْهَا الْبَطْوَنَ ۝

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا شُوَبًا قَمْ حَمِيمٌ ۝

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَا إِلَى الْجَحِيمِ ۝

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا بَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝

فَهُمْ عَلَىٰ أَثْرِ هُنْ يَهْرَعُونَ ۝

وَلَقَدْ صَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ۝

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذِرِينَ ۝

إِلَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

وَلَقَدْ نَادَنَا نُوحٌ فَلَيْنِعَمُ الْمُجْيِبُونَ ۝

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنِ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۝

وَجَعَلْنَا ذِرَّيْتَهُمْ الْبَقِينَ ۝

وَرَكَّنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

सलाम हो नूह पर समस्त लोकों में । 180।

निःसन्देह हम इसी प्रकार अच्छे काम करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं । 181।

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था । 182।

फिर दूसरों को हमने डुबो दिया । 183।

और निःसन्देह उसी के समूह में से इब्राहीम भी था । 184।

(याद कर) जब वह अपने रब्ब के समक्ष निष्कपट हृदय लेकर उपस्थित हुआ । 185।

(फिर) जब उसने अपने पिता से और उसकी जाति से कहा, वह है क्या जिसकी आप उपासना करते हो ? । 186।

क्या अल्लाह के सिवा आप संपूर्ण मिथ्या (अर्थात्) दूसरे उपास्य चाहते हो ? । 187।

अतः आपने समस्त लोकों के रब्ब को क्या समझ रखा है । 188।

फिर उसने सितारों पर एक दृष्टि डाली । 189।

और कहा, निःसन्देह मैं तो विरक्त हो गया हूँ । 190।

अतः वे उससे पीठ फेरते हुए चले गए । 191।

फिर उसने नज़र बचा कर उनके उपास्यों की ओर ध्यान दिया । फिर पूछा, क्या

سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَلَمِينَ ①

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ②

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ③

لَمَّا أَغْرَقْنَا الْأَخَرِينَ ④

وَإِنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لَا يُرَاهِيمَ ⑤

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ⑥

إِذْ قَالَ لِأَيْمَهُ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ⑦

إِنْفَكًا إِلَهًا دُونَ اللَّهِ تَرْيَدُونَ ⑧

فَمَا ظَنَّكُمْ بِرَبِّ الْعَلَمِينَ ⑨

فَنَظَرَ نَظَرَةً فِي النَّجُومِ ⑩

فَقَالَ إِنِّي سَقِيرٌ ⑪

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مَدْبِرِينَ ⑫

فَرَاغَ إِلَى الْمَتَهِمِ فَقَالَ أَلَا تَأْكُونَ ⑬

तुम भोजन करते नहीं ? 192।*

तुम्हें क्या हुआ क्या है कि तुम बोलते नहीं ? 193।

फिर उसने दाहिने हाथ से एक गहरी चोट लगाते हुए उनके विरुद्ध गुप्त कार्यवाही की । 194।

फिर वे (लोग) उसकी ओर दौड़ते हुए आए । 195।

उसने (उन से) कहा, क्या तुम उनकी उपासना करते हो जिनको तुम (स्वयं) तराशते हो ? 196।

हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें और उसे भी पैदा किया है जो तुम बनाते हो । 197।

उन्होंने कहा, उस (इब्राहीम) के लिए एक चिता बनाओ, फिर उसे धधकती हुई अग्नि में झोंक दो । 198।

अतः उन्होंने उसके संबंध में एक (अत्याचार पूर्ण) पृथ्यन्त किया तो हमने उन्हें खूब अपमानित कर दिया । 199।

और उसने कहा, निःसन्देह मैं अपने रब्ब की ओर जाने वाला हूँ । वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा । 100।

हे मेरे रब्ब ! मुझे सदाचारियों में से (उत्तराधिकारी) प्रदान कर । 101।

अतः हमने उसे एक सहनशील पुत्र का शुभ-समाचार दिया । 102।

مَا لَكُمْ لَا تَشْطُفُونَ ⑩

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ حَصْبًا بِالْيَوْمِينَ ⑪

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُونَ ⑫

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تُحْتَوْنَ ⑬

وَإِنَّ اللَّهَ هُنَّ قَاتِلُونَ ⑭

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بَيْتًا فَأَنْقُوْهُ فِي
الجَحِيمِ ⑮

فَأَرَادُوا إِنْ كِيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ⑯

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَى رَبِّي سَيَهْدِيْنِ ⑰

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ⑱

فَبَشِّرْنَاهُ بِخَلْوٍ حَلِيْمٍ ⑲

* आयत सं. 88 से 92 : यहाँ अरबी शब्द सक्षीम से अभिप्राय रोगी नहीं है क्योंकि इसके पश्चात इतना बड़ा काम अर्थात् उनके मूर्तियों को तोड़ना रोगी व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं होता । सक्षीम शब्द का एक अर्थ विरक्त होना भी है । हजरत इब्राहीम अलै. ने यह कहा था कि मैं तुम से और तुम्हारी मूर्तियों से विरक्त हूँ । इसके पश्चात आपने उन मूर्तियों के तोड़ने का मन बनाया ।

अतः जब वह (पुत्र) उसके साथ दौड़ने-फिरने की आयु को पहुँचा (तो) उसने कहा, हे मेरे प्रिय पुत्र ! निःसन्देह मैं निद्रावस्था में देखा करता हूँ कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ । अतः विचार कर तेरी क्या राय है ? उसने कहा, हे मेरे पिता ! वही करें जो आपको आदेश दिया जाता है । निःसन्देह यदि अल्लाह चाहेगा तो मुझे आप धैर्य धरने वालों में से पाएँगे । 103।*

जब वे दोनों सहमत हो गए और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल लिटा दिया । 104।

तब हमने उसे पुकारा कि हे इब्राहीम ! 105।

निश्चित रूप से तू अपना स्वप्न पूरा कर चुका है । निःसन्देह इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं । 106।

निःसन्देह यह एक बड़ी खुली-खुली परीक्षा थी । 107।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السُّنْعَى قَالَ يَسِئَ إِلَيْهِ أَنِّي
أَرَى فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُذْبَحُكَ فَأَنْظَرْ
مَا ذَارِيٌّ قَالَ يَا بَتِ افْعُلْ مَا تَوْمِرْ
سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ⑦

فَلَمَّا آتَلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَنِينِ ۝

وَنَادَيْتَهُ أَنْ يَأْبِرْ هِيمَ ۝

قَدْ صَدَقْتَ الرُّؤْيَاً إِنَّا كَذِيلَكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ⑮

إِنَّ هَذَا الْهَوَالُ لِلْمُمْبِينَ ⑯

* इस आयत में हजरत इब्राहीम अलै. के अपने पुत्र इस्माईल को प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने के लिए तैयार होने की घटना का उल्लेख किया गया है । हजरत इब्राहीम अलै. ने एक बार स्वप्न नहीं देखा था वल्कि बार-बार स्वप्न देखा करते थे कि मैं अपने पुत्र को ज़िबह कर रहा हूँ । परन्तु प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने का अर्थ आप के विचार में आने के बाबजूद आपने उस समय तक अपने पुत्र की जान लेने की इच्छा व्यक्त नहीं की जब तक कि वह स्वयं अपनी इच्छा से इसके लिए तैयार नहीं हुआ । जैसा कि उपरोक्त आयत में उल्लेख है कि जब वह दौड़ने भागने की आयु को पहुँचा और अपने पिता के साथ भारी काम करने लगा । परन्तु इस स्वप्न का अर्थ यह था कि इस्माईल अलै. को निर्जल चटियल धाटी में छोड़ दिया जाए । अतः अल्लाह तआला ने इस स्वप्न को प्रत्यक्ष रूप से पूरा करने से हजरत इब्राहीम अलै. को रोके रखा और फिर बता दिया कि तू पहले ही इस स्वप्न को पूरा कर चुका है ।

और हमने एक ज़िब्हे-अज़ीम (महान बलिदान) के बदले उसे बचा लिया । 108।*

और हमने बाद में आने वालों में उस के शुभ-स्मरण को शेष रखा । 109।

इत्राहीम पर सलाम हो । 110।

इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं । 111।

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था । 112।

और हमने उसे इसहाक का नवी के रूप में शुभ समाचार दिया जो सदाचारियों में से था । 113।

और उस पर और इसहाक पर हमने बरकत भेजी । और उन दोनों की संतान में परोपकार करने वाले भी थे और अपने ऊपर खुल्लम-खुल्ला अत्याचार करने वाले भी थे । 114। (रूू ٣)

और निःसन्देह हमने मूसा और हारून पर भी कृपा की थी । 115।

और उन दोनों को और उनकी जाति को हमने बहुत बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की थी । 116।

और हमने उनकी सहायता की । अतः वे ही विजयी होने वाले बने । 117।

और हमने उन दोनों को एक सुस्पष्ट करने वाली पुस्तक प्रदान की । 118।

وَفَدِيْلَةَ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ①

وَتَرَكَنَا عَلَيْهِ فِي الْأَخْرِيْنَ ٢

سَلَمٌ عَلَى ابْرَاهِيْمَ ③

كَذِلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ④

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ⑤

وَبَشَرَنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الْصَّالِحِيْنَ ⑥

وَبَرَكَنَا عَلَيْهِ وَعَلَى إِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ ذُرَيْتِهِمَا مُخْسِنٌ ۖ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ
مُبْيِنٌ ۗ ۷

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَى مُوسَى وَهَرُونَ ۸

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ۹

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَلِيْبِيْنَ ۱۰

وَأَتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَيْرِيْنَ ۱۱

* ज़िब्हे-अज़ीम से अभिप्राय अल्लाह के मार्ग में कुर्बान होने वाले सब नबियों में श्रेष्ठ अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं । जिनका आगमन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बच जाने के कारण ही संभव था ।

और दोनों को हमने सीधे मार्ग पर चलाया था ॥119॥

और हमने बाद में आने वालों में उन दोनों के सु-स्मरण को शेष रखा ॥120॥

सलाम हो मूसा और हारून पर ॥121॥

निःसन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ॥122॥

निःसन्देह वे दोनों हमारे मोमिन भक्तों में से थे ॥123॥

और निःसन्देह इलियास भी रसूलों में से था ॥124॥

जब उसने अपनी जाति से कहा, क्या तुम तक्वा धारण नहीं करोगे ? ॥125॥

क्या तुम बअल* को पुकारते हो और सर्वश्रेष्ठ पैदा करने वाले को छोड़ देते हो ? ॥126॥

अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी ॥127॥

अतः उन्होंने उसको झुठला दिया । और निःसन्देह वे पेश किए जाने वाले हैं ॥128॥

सिवाए अल्लाह के निर्वाचित भक्तों के ॥129॥

और हमने पीछे आने वालों में उसके सु-स्मरण को शेष रखा ॥130॥

सलाम हो इल्यासीन पर ॥131॥**

وَهَدَيْهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ

وَتَرَكَنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ

سَلَامٌ عَلَى مُوسَى وَهَرُونَ ۖ

إِنَّا كَذَلِكَ تَبَغِزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ

إِنَّهُمْ مَمْنُ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ

وَإِنَّ إِلَيْسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ

إِذْ قَالَ لِقَوْمَةَ آلَّا تَتَقَوَّنَ ۖ

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُوتَ
أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ أَبَاءِكُمْ الْأَوَّلِينَ ۖ

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمْ يَحْضُرُونَ ۖ

إِلَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصُونَ ۖ

وَتَرَكَنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ

سَلَامٌ عَلَى آلِ يَاسِينَ ۖ

* बअल - वह मूर्ति जिसकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

** इस आयत में इल्यास के बदले इल्यासीन कहा गया है । व्याख्याकार इसका एक अर्थ तो यह किया करते हैं कि तीन इल्यास थे । क्योंकि तीन से कम की संख्या पर इल्यासीन शब्द बहुवचन के रूप में →

निःसन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं । 132।

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था । 133।

और लूट भी अवश्य रसूलों में से था । 134।

जब हमने उसे और उसके सारे परिवार को मुक्ति प्रदान की । 135।

सिवाए पीछे रह जाने वालों में (सम्मिलित) एक बुद्धिया के । 136।

फिर हमने दूसरों को तबाह कर दिया । 137।

और निःसन्देह तुम सुबह को उन (की कब्रों) पर से गुज़रते हो । 138।

और रात को भी । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? । 139। (रुक् $\frac{4}{8}$)

और निःसन्देह यूनुस (भी) रसूलों में से था । 140।

जब वह (सवार होने के लिए) भरी हुई नौका की ओर भागते हुए गया । 141।

फिर उसने कुरआ (पर्ची) निकाला तो वह बाहर धकेल दिए जाने वालों में से बन गया । 142।

फिर मछली ने उसे निगल लिया । जबकि वह (अपने आप को) कोस रहा था । 143।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ④

إِنَّهُ مِنْ عِبَادَنَا الْمُؤْمِنِينَ ⑤

وَإِنَّ لَوْطًا لِّلَّمَّا الْمُرْسَلِينَ ⑥

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَآهَلَهُ أَجْمَعِينَ ⑦

إِلَّا عَجُورًا فِي الْغَيْرِينَ ⑧

شَرَّ دَمَرْنَا الْأَخْرَينَ ⑨

وَإِنَّكُمْ لَتَقْرُونَ عَلَيْهِمْ مُّضِيَّهُنَّ ⑩

وَبِإِلَيْلٍ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑪

وَإِنَّ يُونَسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑫

إِذْ أَبْقَى إِلَى الْفَلْكِ الْمَسْحُونِ ⑬

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ⑭

فَأَنْتَمْ حُوتٌ وَهُوَ مُلِيمٌ ⑮

← प्रयुक्त नहीं हो सकता । परन्तु इब्रानी भाषा शैली में एकवचन के लिए भी सम्मान देने के उद्देश्य से बहुवचन का रूप प्रयोग किया जाता है । जैसा कि उनकी ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद के बदले 'मुहम्मदीम' लिखा हुआ है । क्योंकि एलिया (इल्यास) ने भी असाधारण कुर्बानी दी थी । इस लिए उन के नाम का भी बहुवचन के रूप में उल्लेख किया गया ।

अतः यदि वह (अल्लाह की) स्तुति करने वालों में से न होता ॥144॥

तो अवश्य वह उसके पेट में उस दिन तक रहता जब वे (लोग) उठाए जाएँगे ॥145॥

अतः हमने उसे एक खुले मैदान में उछाल फेंका जबकि वह अत्यन्त बीमार था ॥146॥

और हमने उसे ढाँपने के लिए एक कदू जैसी लता उगा दी ॥147॥

और हमने उसे एक लाख (लोगों) की ओर भेजा बल्कि वे (संख्या में) बढ़ रहे थे ॥148॥

अतः वे ईमान ले आए और हमने उन्हें एक अवधि तक कुछ लाभ पहुँचाया ॥149॥

अतः तू उनसे पूछ क्या तेरे रब्ब के लिए तो पुत्रियाँ हैं और उनके लिए पुत्र हैं ? ॥150॥

या फिर हमने फरिश्तों को स्त्रियाँ बनाया है, और वे इस पर साक्षी हैं ? ॥151॥

सावधान ! निःसन्देह वे अपनी ओर से झूठ गढ़ते हुए (यह) कहते हैं ॥152॥

(कि) अल्लाह ने पुत्र पैदा किया है । और निःसन्देह ये झूठे लोग हैं ॥153॥

क्या उसने पुत्रों पर पुत्रियों को प्रधानता दी है ? ॥154॥

तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ? ॥155॥

अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करते ? ॥156॥

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَيْحِينَ ﴿٤٤﴾

لَكِبْرٌ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٤٥﴾

فَنَبْذَةٌ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿٤٦﴾

وَأَنْبِشَتَاهُ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ﴿٤٧﴾

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿٤٨﴾

فَأَمْتَوْا فَمَتَعْنَهُمْ إِلَى حِينٍ ﴿٤٩﴾

فَاسْتَفْتَهُمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمْ
الْبَيْوَنَ ﴿٥٠﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلِكَةَ إِنَّا قَوْمٌ شَهِدُونَ ﴿٥١﴾

أَلَا إِلَهُمْ مِنْ إِلَكُمْ لَيَقُولُونَ ﴿٥٢﴾

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُ لَكَذِيبُونَ ﴿٥٣﴾

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿٥٤﴾

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٥٥﴾

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٥٦﴾

अथवा तुम्हारे पास कोई अकाट्य
(और) स्पष्ट तर्क है ? ॥157॥

अतः यदि तुम सच्चे हो तो अपनी
पुस्तक लाओ ॥158॥

और उन्होंने उसके और जिन्हों के मध्य
एक संबंध गढ़ लिया । हालाँकि
निःसन्देह जिन जानते हैं कि वे भी
अवश्य पेश किए जाने वाले हैं ॥159॥

पवित्र है अल्लाह उससे जो वे वर्णन
करते हैं ॥160॥

अल्लाह के चुने हुए भक्त (इन बातों से)
भिन्न हैं ॥161॥

अतः निःसन्देह तुम और वे जिनकी तुम
उपासना करते हो ॥162॥

तुम उसके विरुद्ध (किसी को) पथभ्रष्ट
नहीं कर सकोगे ॥163॥

सिवाए उसके जिसने नरक में प्रविष्ट
होना ही है ॥164॥

और (फरिश्ते कहेंगे कि) हम में से
प्रत्येक के लिए एक निर्धारित स्थान
निश्चित है ॥165॥

और निःसन्देह हम पंक्तिबद्ध हैं ॥166॥

और निःसन्देह हम स्तुति कर रहे
हैं ॥167॥

और वे (काफ़िर) तो कहा करते
थे, ॥168॥

यदि हमारे पास पहले लोगों का कोई
अनुस्मरण (पहुँचा) होता ॥169॥

तो निःसन्देह हम अल्लाह के चुने हुए
भक्त हो जाते ॥170॥

أَمْ لَكُمْ سُلْطَنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

فَأَتُوا إِلَيْكُمْ كُفَّارٌ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ﴿١٦﴾

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسْبًاً وَلَقَدْ
عَلِمْتِ الْجِنَّةَ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٧﴾

سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصْفُونَ ﴿١٨﴾

إِلَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٩﴾

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٠﴾

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنَيْنِ ﴿٢١﴾

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿٢٢﴾

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَعْلُومٌ ﴿٢٣﴾

وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ﴿٢٤﴾

وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿٢٥﴾

وَإِنَّ كَانُوا يَقُولُونَ ﴿٢٦﴾

لَوْأَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوْرَىنَ ﴿٢٧﴾

لَكُنَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٨﴾

अतः (अब जबकि) उन्होंने उस (अर्थात् अल्लाह) का इनकार कर दिया तो अवश्य वे (उसका परिणाम) जान लेंगे । 171।

और निःसन्देह हमारे भेजे हुए भक्तों के पक्ष में हमारा (यह) आदेश बीत चुका है । 172।

(कि) निःसन्देह वे ही हैं जिन्हें सहायता प्रदान की जाएगी । 173।

और निःसन्देह हमारी सेना ही अवश्य विजयी होने वाली है । 174।

अतः उनसे कुछ समय तक विमुख रह । 175।

और उन्हें देखता रह । फिर वे भी शीघ्र ही देख लेंगे । 176।

फिर क्या वे हमारे अज्ञाब की मांग में जल्दी करते हैं ? । 177।

अतः जब वह उनके आंगन में उतरेगा तो सतर्क किये जाने वालों की सुबह बहुत बुरी होगी । 178।

और कुछ देर के लिए उनसे विमुख हो जा । 179।

और देख ! फिर वे भी अवश्य देख लेंगे । 180।

तेरा रब्ब, सम्पूर्ण सम्मान का स्वामी पवित्र है उससे जो वे वर्णन करते हैं । 181।

और सलाम हो सब रसूलों पर । 182।

और समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जो समस्त लोकों का रब्ब है । 183।

(रुकू - ५)

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ⑯

وَلَقَدْ سَبَقْتُ كَلِمَتًا لِّعِبَادِنَا^{١٧}
الْمُرْسَلِينَ ⑯

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمُنْصُرُونَ ⑯

وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَلِيلُونَ ⑯

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينَ ⑯

وَأَبْصِرُهُمْ فَسَوْفَ يَبْصُرُونَ ⑯

أَفِعْدَادُنَا يَسْتَعْجِلُونَ ⑯

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحِرِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحَ
الْمُنْذَرِينَ ⑯

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينَ ⑯

وَأَبْصِرُ فَسَوْفَ يَبْصُرُونَ ⑯

سَبِّحْنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصْفُونَ ⑯

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ⑯

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑯

38 – सूरः साद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 89 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी खण्डाक्षरों में से एक अक्षर साद से किया गया है। व्याख्याकार इसकी एक व्याख्या यह करते हैं कि साद से तात्पर्य सत्यवादी है। अर्थात् वह अल्लाह जिसकी बातें अवश्य पूरी हो कर रहेंगी। और कुरआन को जो महान उपदेशों पर आधारित है, इस बात पर साक्षी ठहराया गया है कि इस कुरआन का इनकार केवल झूठी प्रतिष्ठा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाले विरोध के कारण है।

इसी सूरः में हज़रत दाऊद अलै. के कश्फ (दिव्य-दर्शन) का दुश्य प्रस्तुत किया गया है जिससे मनुष्य प्रवृत्ति की लालसा दिखाई पड़ती है कि यदि उसे निनान्वे प्रतिशत भाग पर भी प्रभुत्व मिल जाए तो फिर वह शत-प्रतिशत पर प्रभुत्व पाने की इच्छा करता है। और दुर्बलों और निर्धनों के लिए एक प्रतिशत भी नहीं छोड़ता। पिछली सूरः में जो बड़ी-बड़ी शक्तियों के युद्धों का वर्णन मिलता है उनका भी केवल यही उद्देश्य है कि समस्त निर्धन देशों से शासनतन्त्र के समस्त अधिकार छीन लें और किसी अन्य की भागीदारी के बिना समग्र संसार पर शासन करें। दूसरे शब्दों में यह ईश्वरत्व का दावा है। इसके पश्चात मानव जाति को हज़रत दाऊद अलै. के हवाले से यह उपदेश दिया गया है कि परस्पर झगड़ों का निर्णय न्याय के साथ करना चाहिए, अत्याचार और बल प्रयोग से नहीं।

इसी सूरः में हज़रत सुलैमान अलै. से सम्बन्धित यह वर्णन मिलता है कि आप को घोड़ों से बहुत प्रेम था। इस बात की अशुद्ध व्याख्या करते हुए कुछ विद्वान यह वर्णन करते हैं कि एक बार वह घोड़ों को थपकियाँ दे रहे थे और उनकी टांगों पर हाथ फेर रहे थे कि नमाज़ का समय निकल गया। इस पर हज़रत सुलैमान ने अपनी इस लापरवाही का क्रोध उन निरीह घोड़ों पर उतारा और उनको बध करने का आदेश दिया। परन्तु इस अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या को वह आयत पूर्णतया झुठला रही है जिसमें हज़रत सुलैमान अलै. कहते हैं कि उनको मेरी ओर वापस ले आओ। इससे पता चलता है कि नवियों को अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के लिए जो सवारियाँ प्रदान होती हैं वे उनसे बहुत प्रेम करते हैं और बार-बार उनको देखना चाहते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी कहा है कि मेरी उम्मत के लिए ऐसे घोड़ों के मस्तकों में क्यामत तक के लिए बरकत रख दी गई है जो जिहाद के लिए तैयार किए जाते हैं।

इस सूरः में हज़रत अय्यूब अलै. को एक महान धैर्यवान नबी के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है और वह वास्तविकताएँ प्रस्तुत की गई हैं जो बाइबिल में कई प्रकार की अद्भुत कथाओं के रूप में मिलती हैं।

سُورَةُ صَ مَكْيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تَسْعُ وَتَمَائُونَ آيَةً وَخَمْسَةُ رُكُونٍ عَابِطٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

सादिकुल क़ौलि : सत्यवादी ।
उपदेश से परिपूर्ण कुरआन की
कसम ! । 12।

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने
इनकार किया (झूठे) सम्मान और
विरोध में (पड़े) हैं । 13।

उनसे पूर्व कितनी ही जातियाँ हमने
तबाह कर दीं । अतः उन्होंने (सहायता
के लिए) पुकारा जबकि मुक्ति का कोई
मार्ग शेष न था । 14।

और उन्होंने आश्चर्य किया कि उनके
पास उन्हीं में से कोई सतर्ककारी आया ।
और काफिरों ने कहा, यह अत्यन्त झूठा
जादूगर है । 15।

क्या इसने बहुत से उपास्यों को एक ही
उपास्य बना लिया है । निःसन्देह यह
(बात) तो बड़ी विनित्र है । 16।

और उनमें से बड़े लोग (यह कहते हुए)
चले गए कि जाओ और अपने ही
उपास्यों पर धैर्य करो । निःसन्देह यह
एक ऐसी बात है जिसका (किसी विशेष
उद्देश्य से) द्वारा किया गया है । 17।

हमने तो ऐसी बात किसी आने वाले धर्म
(के बारे) में भी नहीं सुनी । यह मनगढ़त
बात के अतिरिक्त कुछ नहीं । 18।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

صَوْلَاتُ اللَّهِ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَامٌ ②

بِلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عَرَقٍ وَشَقَاقٍ ③

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَقَادُوا
وَلَاتَ حِينَ مَنَاصِ ④

وَعَجِّبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
وَقَالُ الْكُفَّارُونَ هَذَا السِّجْرُ كَذَابٌ ⑤
أَجَعَلَ الْأَلْهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا
لَشَيْءٌ عَجَابٌ ⑥

وَانْطَلَقَ الْمَلَائِكَةُ أَنِ امْشُوا
وَاصْبِرُوا عَلَى الْهَتِكْ ⑦ إِنَّ هَذَا
لَشَيْءٌ يُرَادٌ ⑧

مَا سِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَةِ الْآخِرَةِ ⑨
هَذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ⑩

क्या हम में से इसी पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया है ? वास्तविकता यह है कि वे मेरे उपदेश के बारे में ही शंका में पड़े हैं (और) वास्तविकता यह है कि अभी उन्होंने मेरा अज्ञाब नहीं चखा । १।

क्या उनके पास तेरे पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) महादानी रब्ब की कृपा के खजाने हैं ? । १०।

अथवा क्या उन्हें आसमानों और धरती का तथा जो उन दोनों के मध्य है (उसका) राजत्व प्राप्त है ? अतः वे सब उपाय कर डालें । १।

(यह भी) सैन्य समूहों में से एक समूह (है) जो वहाँ पराजित किया जाने वाला है । १।

इनसे पहले (भी) नूह की जाति ने और आद (जाति) ने और खूंटों वाले फिरआौन ने झुठला दिया था । १३।

और समूद (जाति) ने भी और लूत की जाति ने भी और घने वृक्ष वालों ने भी । यही हैं वे सैन्य समूह (जिनका वर्णन गुजरा है) । १।

(इनमें से) प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया । अतः (उन पर) मेरा दण्ड अनिवार्य हो गया । १५। (रुक् $\frac{1}{10}$)

और ये लोग एक भयानक गूँज के अतिरिक्त किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे जिसमें कोई अंतराल नहीं होगा । १।

और उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमें हमारा भाग हिसाब-किताब के दिन से पूर्व ही शीघ्र दे दे । १।

إِنَّا نَزَّلْنَا عَلَيْهِ الذِّكْرَ مِنْ بَيْنِنَا طَبْلُ هُمْ
فِي شَلَّتٍ مِنْ ذُكْرِنَا طَبْلُ لَهَا يَدُوْقُوا
عَذَابٌ ①

أَمْ عِنْدَهُمْ خَرَائِبٌ رَحْمَةٌ رَبِّكَ
الْعَزِيزُ الْوَهَابٌ ②

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بِيْنَهُمَا فَلَيْلٌ تَقْوَافِي الْأَسْبَابِ ③

جَنْدُ مَا هَنَالِكَ مَهْرُومٌ مِنْ
الْأَخْرَابِ ④

كَذَّبُتْ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُوحٌ وَعَادٌ
وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ⑤

وَثَمُودٌ وَقَوْمٌ لُوطٌ وَأَصْحَابُ لَّجْكَةٍ
أُولَئِكَ الْأَخْرَابُ ⑥

إِنْ كُلُّ إِلَاءٍ كَذَّبَ الرَّسُولَ فَهُنَّ
عَقَابٌ ⑦

وَمَا يَنْظَرُ هُنُّ لَا صِحَّةً وَاحِدَةً
مَالَهَا مِنْ فَوَاقِي ⑧

وَقَاتُوا رَبِّنَا عَجِلُ لَنَا قِطْنًا قَبْلَ يَوْمِ
الْحِسَابِ ⑨

जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर । और हमारे भक्त दाऊद को याद कर जो बहुत शक्तिशाली था । निःसन्देह वह विनम्रता पूर्वक बार-बार झुकने वाला था । 18।

निःसन्देह हमने उसके साथ पहाड़ों को सेवाधीन कर दिया । वे ढलती हुई शाम और फूटती हुई सुबह के समय स्तुति करते थे । 19।

और इकट्ठे किए हुए पक्षियों को भी (उसके लिए सेवाधीन कर दिया था) । सब उस (अर्थात् रब्ब) के समक्ष झुकने वाले थे । 20।

और उसके राज्य को हमने ढूढ़ कर दिया और उसे बुद्धिमानी और निर्णायक वाक्शक्ति प्रदान की । 21।

और क्या तेरे पास झगड़ने वालों का समाचार पहुँचा है, जब उन्होंने महल के प्राचीर को फलाँगा ? । 22।

जब वे दाऊद के सामने आए तो वह उनके कारण अत्यन्त घबराया । उन्होंने कहा, कोई भय न कर । (हम) दो झगड़ने वाले (हैं) । हम में से एक दूसरे पर अत्याचार कर रहा है । अतः हमारे बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और कोई अत्याचार न कर । और हमें सीधे-मार्ग की ओर रहनुमार्इ कर । 23।

निःसन्देह यह मेरा भाई है । इसकी निनावे दुन्हियाँ हैं और मेरी केवल एक दुन्ही है । फिर भी यह कहता है कि उसे भी मेरी संपत्ति में सम्मिलित कर दे ।

إِصْبَرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَنَا
دَاؤَدْ ذَا الْأَيْدِيْعَ اِنَّهُ اَوَابٌ^{١٧}

إِنَّا سَخَرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يَسِّرْخَنَ بِالْعَشَيْ
وَالْأَشْرَاقِ^{١٨}

وَالظَّلَيْرَ مَحْشُورَةً كُلُّ لَهُ اَوَابٌ^{١٩}

وَشَدَذَنَا مُلْكَكَهُ وَأَتَيْنَاهُ الْحُكْمَهُ
وَفَضَلَ الْخَطَابِ^{٢٠}

وَهَلْ أَتَكَ نَبُوا الْخَصِيمُ اِذْ تَسُوْرُوا
الْمُخْرَابِ^{٢١}

اِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاؤَدَ فَقَرِزَعَ مِنْهُمْ قَالُوا
لَا تَخْفِي خَصِيمَنَ بَعْنَ بَعْضَ اَعْلَىٰ
بَعْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشَطِّطْ
وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الْقِرَاطِ^{٢٢}

إِنَّ هَذَا آخِيٌّ لَهُ تِسْعَ وَتِسْعُونَ تَعْجَمَهُ
وَلَيَ تَعْجَمَهُ وَاحِدَهُ فَقَالَ اكْفِلِنِيهَا

और बहस करने में मुझ पर भारी पड़ता है 124।

उस ने कहा, उसने तेरी एक दुंबी अपनी दुन्वियों में सम्मिलित करने की माँग करके निःसन्देह तुझ पर अत्याचार किया है । और निःसन्देह बहुत से भागीदार (ऐसे) हैं कि उनमें से कुछ, कुछ अन्यों पर अत्याचार करते हैं । सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं । और दाऊद ने समझ लिया कि हमने उसकी परीक्षा ली थी । अतः उसने अपने रब्ब से क्षमा याचना की और वह विनम्रता पूर्वक गिर पड़ा और प्रायशिचित किया 125।

अतः हमने उसका यह (दोष) क्षमा कर दिया । और निःसन्देह उसे हमारे हाँ एक निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त था 126।

हे दाऊद ! निःसन्देह हमने तुझे धरती में उत्तराधिकारी बनाया है । अतः लोगों के बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और मनोवेग के झुकाव का अनुसरण न कर अन्यथा वह (झुकाव) तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका देगा । निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं उनके लिए कठोर अज्ञाव (निश्चित) है । क्यों कि वे हिसाब का दिन भूल गए थे 127।

(रुकू ٢١)

और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है उद्देश्यहीन पैदा

وَعَزَّزْنِي فِي الْخُطَابِ ④

قَالَ لَقَدْ ظَلَمْتَكِ بِسُؤَالِ نَعْجِتَكَ إِلَى
نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْحَلَطَاءِ يَبْغِي
بَصْرَهُ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصِّلَاحَ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ ۖ وَظَنَّ
دَاؤُدَّ أَنَّمَا فَتَّلَهُ فَأَسْتَغْفِرَ رَبَّهُ وَهُرَّ
رَاكِعًا وَآنَابَ ۖ ۷

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَرْفُى
وَحُسْنَ مَاءٍ ۖ ۸

يَدَاؤُدَ إِنَّا جَعَلْنَاكَ حَلِيقَةً فِي الْأَرْضِ
فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحُقْقِ وَلَا تَتَبَيَّعْ
الْهَوْى فَيُضْلِلُكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ إِنَّ
الَّذِينَ يَضْلُلُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا سُوَا يَوْمَ الْحِسَابِ ۖ ۹

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْتَهُمَا

नहीं किया । यह उन लोगों की केवल धारणा मात्र है जिन्होंने इनकार किया ।

अतः जिन्होंने इनकार किया अग्नि (के अज्ञाब के) द्वारा उनका विनाश हो । 128।

क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक-कर्म किए वैसा ही ठहरा देंगे जैसे धरती में उपद्रव करने वाले हैं ? अथवा क्या हम तक्ता धारण करने वालों को दुराचारियों के समान समझ लेंगे ? 129।

महान पुस्तक, जिसे हमने तेरी ओर उतारा, बरकत दी गई है । ताकि ये (लोग) उसकी आयतों पर चिन्तन करें और ताकि बुद्धिमान उपदेश प्राप्त करें । 30।

और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया । (वह) क्या ही अच्छा भक्त था । निःसन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक झुकने वाला था । 31।

जब साँय काल उसके सामने तीव्र गति से दौड़ने वाले घोड़े लाए गए । 32।

तो उसने कहा, निःसन्देह मैं अपने रब्ब की याद के कारण धन से प्रेम करता हूँ । यहाँ तक कि वे ओट में चले गए । 33।

(उसने कहा) उन्हें दोबारा मेरे सामने लाओ । अतः वह (उनकी) पिंडलियों और गर्दनों पर (प्रेम से) हाथ फेरने लगा । 34।*

بِأَطْلَالٍ ذِلِكَ طَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ⑩

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
كَالْمُشْرِكِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُسْتَقِيمِينَ كَالْفُجَارِ ⑪

كِتَابُ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ مُبَرَّكٌ لِيَدَبَرُوا
إِيَّهُ وَلِيَسْتَدْكُرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑫

وَوَهَبْنَا لِلَّادُودَ سَلَيْمَنَ بْنَ نُعَمَّ الْعَبْدُ
إِنَّهُ آقَابٌ ⑬

إِذْ عَرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصِّفَنِ
الْجِيَادُ ⑭

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ
ذُكْرِ رَبِّيِّ حَتَّى تَوَارَثَ بِالْجِجَابِ ⑮
رَدْوَهَا عَلَى فَطْفَقَ مَسْحًا بِالشَّوْقِ
وَالْأَغْنَاقِ ⑯

* आयत सं. 32 से 34 : इससे अधिकतर व्याख्याकार यह अर्थ निकालते हैं कि हज़रत सुलैमान अतै. को अपने घोड़ों से इतना प्रेम था कि उनको देखने में खोकर आप की नमाज छूट गई । अतः इस→

और निःसन्देह हमने सुलैमान की परीक्षा ली और हमने उस (के राज्य) के सिंहासन पर (बुद्धि व समझ विहीन) एक शरीर को रख दिया । तब वह (अल्लाह ही की ओर) झुका । ३५।*

(और) कहा हे मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे और मुझे एक ऐसा राज्य प्रदान कर कि मेरे पश्चात उस पर कोई और न जचे । निःसन्देह तू ही अपार दानशील है । ३६।**

अतः हमने उसके लिए हवा को भी सेवाधीन कर दिया जो उसके आदेश पर धीमी गति से जिधर वह (ले) जाना चाहता था, चलती थी । ३७।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سَلِيمَنَ وَالْقَيْنَاعَلِيَّ كُرْسِيَّهُ
جَسَدًا إِنَّمَا آنَابَ ①

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهُبْ لِي مُلْكًا لَا
يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۝ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَابُ ②

فَخَرَّبَ الْرِّيَاحُ تَجْرِيْ بِأَمْرِهِ رُخَاءُ
حَيْثُ أَصَابَ ③

←क्रोध में उन्होंने उन सब की कूँचें काट डालीं और गर्दनों को शरीर से पृथक कर दिया । यह अत्यन्त मूर्खापूर्ण व्याख्या है जिसे पवित्र बुरआन से जोड़ना वास्तव में उसका अपमान है । यदि नमाज़ छूट गई थी तो फिर पहले नमाज़ पढ़ने का उल्लेख आना चाहिए था । घोड़ों को देखने का काम तो उन्होंने अपनी इच्छा से किया था । घोड़ों बेचारों का क्या अपराध था कि उनका वध किया जाता । वास्तविकता यह है कि चूँकि अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के उद्देश्य से ये घोड़े रखे गये थे इस कारण उनसे प्रेम को प्रकट करने के लिए उन्होंने उनकी पिंडियों और जाँघों पर हाथ फेरा, जैसा कि आजकल भी घोड़ों से प्रेम करने वाला यही व्यवहार करता है ।

* इस आयत का अर्थ यह है कि उनका उत्तराधिकारी न आध्यात्मिक गुण रखता था न ही शासन चलाने की योग्यता रखता था । इसलिए एक बेकार शरीर की भाँति था । और हमने उसके सिंहासन पर एक शरीर को रख दिया से अभिप्राय उसका सिंहासन पर विराजमान होना है । इस आयत के अर्थ के साथ भी कुछ विद्वानों ने बहुत ही अन्याय किया है और हज़रत सुलैमान अलै. को मानो दुराचारी तक घोषित किया है । उनके कथनानुसार एक सुन्दर स्त्री को जो उन की पत्नी नहीं थी, वह उस सिंहासन पर विराजमान हुई । और उन्होंने उससे दुष्कर्म का मन बना लिया, फिर ध्यान आया कि यह तो अल्लाह की ओर से मेरे लिए एक परीक्षा थी । अतः यह कहानी उस कहानी से मिलती जुलती है जो हज़रत यूसुफ अलै. के बारे में भी व्याख्याकारों ने घर्ज़ हुई है ।

** इस आयत में पिछली सारी आयतों का अन्तिम परिणाम निकाल दिया गया है । जब सुलैमान अलै. को ज्ञात हुआ कि उन का पुत्र न आध्यात्मिक ज्ञान रखता है और न शासन के योग्य है तो उन्होंने स्वयं उसके विरुद्ध दुआ की । और अल्लाह तआला से प्रार्थना की, कि मेरे पश्चात फिर इतना बड़ा सम्प्राप्ति किसी और को न मिले । अतः इतिहास से प्रमाणित है कि हज़रत सुलैमान अलै. के पश्चात वह साम्राज्य उत्तरोत्तर पतनोन्पुद्धी होता गया ।

और शैतानों को भी । (अर्थात्) निर्माण-कला के हर माहिर और गोताखोर को । 38।

और (कुछ) दूसरों को भी जिन्हें ज़ंजीरों में ज़क़ड़ा गया था । 39।

यह हमारा अपार दान है । अतः (चाहे) उपकार पूर्ण व्यवहार कर अथवा रोके रख । 40।

और निःसन्देह उसे हमारे हाँ एक ^{فِي} निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त था । 41। (रुकू^{۳۲})

और हमारे भक्त अद्यूब को भी याद कर जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि निःसन्देह मुझे शैतान ने बहुत दुःख और कष्ट दिया है । 42।

(हमने उसे कहा) अपनी सवारी को इड़ लगा । यह (निकट ही) नहाने और पीने के लिए ठंडा पानी है । 43।

और फिर हमने उसे उसके परिवार और उनके अतिरिक्त उन जैसे और भी अपनी कृपा स्वरूप प्रदान कर दिए । और (यह) बुद्धिमानों के लिए एक शिक्षाप्रद अनुस्मरण के रूप में (है) । 44।

और (उससे कहा कि) सूखी और हरी टहनियों का गुच्छा अपने हाथ में ले और उसी से प्रहार कर । और (अपनी) क़सम को झूठी न होने के । निःसन्देह हमने उसे बहुत धैर्य धरने वाला पाया । (वह) क्या ही अच्छा भक्त था ।

وَالشَّيْطَنُ كُلُّ بَنَاءٍ وَغَوَّاصٌ ﴿١﴾

وَآخَرُونَ مُقَرَّبُونَ فِي الْأَصْفَادِ

هَذَا عَطَاؤُنَا فَإِمْثُنْ: أَوْ أَفِسْكُ بِعَيْرٍ
جِسَابٌ ﴿٢﴾

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزْلُفَى وَحُسْنَ مَالِبٍ ﴿٣﴾

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا آيُوبَ إِذْ نَادَ رَبَّهُ أَتَيْتُ
مَسْنَى الشَّيْطَنِ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤﴾

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مَعْتَسِلُ بَارِدٍ
وَشَرَابٌ ﴿٥﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ
رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرِي لِأَوْلِ الْأَبَابِ ﴿٦﴾

وَحُذْدِيَّلَكَ ضَفْعًا قَاضِرَبْ بِهِ وَلَا
تَهْتَ طِ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نَعْمَ الْعَبْدُ

निःसन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक
झुकने वाला था । 45।*

और याद कर हमारे भक्त इब्राहीम
और इसहाक और याकूब को जो
बहुत शक्तिशाली और दूरदर्शी
थे । 46।

निःसन्देह हमने उन्हें विशेष रूप से
परकालीन घर के स्मरण करने के कारण
चुन लिया । 47।

और निःसन्देह वे हमारे निकट अवश्य
चुने हुए (और) बहुत से गुणों वाले
लोगों में से थे । 48।

और इस्माईल को भी याद कर और अल्‌
यसअ्‌ को और जुल किफ़ल को । और वे
सब श्रेष्ठ लोगों में से थे । 49।

यह एक महान अनुस्मरण है और
निःसन्देह मुत्तकियों के लिए बहुत
अच्छा ठिकाना होगा । 50।

* आयत सं. 42 से 45 : हज़रत अय्यूब अलै. को शैतान ने जो दुःख पहुँचाया था वह बहुत ही
पीड़ादायक था । बाइबिल के अनुसार उनको बहुत ही भयंकर चर्म-रोग लग गया था जिसके कारण
घर वाले भी धृणा करते हुए उनको कूड़े के ढेर पर ढोड़ गए थे । पवित्र कुरआन ने ऐसा कोई वर्णन
नहीं किया ।

कुरआन के अनुसार हज़रत अय्यूब अलै. को अल्लाह तआला ने शाखों वाली एक टहनी से अपनी
सवारी को हाँकने का आदेश दिया और निर्देश दिया कि अपनी क़सम को न तोड़ । इसके बारे में यह
विचित्र कहानी वर्णन की जाती है कि यहाँ पर सवारी से अभिप्राय घोड़ी नहीं बल्कि पत्नी है ।
उन्होंने अपनी पत्नी को सौ लाठी मारने की क़सम खाई थी । इस कारण अल्लाह तआला ने कहा कि
जाड़ू से मार लो । उसमें सौ तिनके होते होंगे तो क़सम पूरी हो जाएगी । परन्तु यह कहानी बिल्कुल
काल्पनिक है । जिन नवियों की पत्नियों ने उनसे विद्रोह किया था उनमें हज़रत अय्यूब अलै. की
पत्नी का कहीं उल्लेख नहीं मिलता । अतः अरबी शब्द “ज़िग्सन” (सुखी और हरी शाखों के
गुच्छे) से सवारी को हाँकने का आदेश है, जो उनको उस पानी तक पहुँचा देगी जिसके प्रयोग से उन
को आरोग्य लाभ होगा । अल्लाह तआला ने जब हज़रत अय्यूब अलै. को आरोग्य प्रदान कर दिया
तो न केवल उन की देख-भाल के लिए उनको घर वाले प्रदान किए बल्कि उन जैसे सर्वस्व न्योछावर
करने वाला एक समुदाय भी प्रदान कर दिया गया ।

إِنَّهُ أَوَابٌ

وَأَذْكُرْ عِبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ

وَيَعْقُوبَ أَوْلَى الْأَيْدِيْ وَالْأَبْصَارِ ⑥

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةِ ذِكْرِ الدَّارِ

وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمَنِ الْمُضْطَفَينَ
الْأَخْيَارِ ⑦

وَأَذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَالْكَفَلِ
وَكُلُّ مِنَ الْأَخْيَارِ ⑧

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ⑨

अर्थात् स्थायी बासान होंगे । उनके लिए द्वार भली-भाँति खुले रखे जाएँगे । ५१।

उनमें वे तकियों पर टेक लगाए हुए होंगे (और) वहाँ अधिकतापूर्वक भाँति-भाँति के फल और पेय पदार्थ मांग रहे होंगे । ५२।

और उनके पास (लाजवंती) नीची दृष्टि रखने वाली हमजोलियाँ होंगी । ५३।*

यह है वह, जिसका हिसाब-किताब के दिन के लिए तुम्हें वादा दिया जाता है । ५४।

निःसन्देह यह हमारी (ओर से) जीविका है । इसका समाप्त हो जाना संभव नहीं । ५५।

यही होगा । और निःसन्देह विद्रोहियों के लिए अवश्य सबसे बुरा लौटने का स्थान है । ५६।

(अर्थात्) नरक । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अतः क्या ही बुरा बिछौना है । ५७।

यह अवश्य होगा । अतः वे उसे चखें (अर्थात्) खौलता हुआ और बर्फीला पानी । ५८।

और उससे मिलती जुलती और भी वस्तुएँ होंगी । ५९।

यह वह समूह है जो तुम्हारे साथ (उसमें) प्रविष्ट होने वाला है । उनके लिए कोई अभिवादन नहीं । निःसन्देह वे अग्नि में प्रविष्ट होने वाले हैं । ६०।

جَئْتِ عَدْنٍ مُّقْتَحِمًا لَّهُمَّ أَبْوَابُكَ

مُّتَكَبِّرُونَ فِيهَا يَذْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ
كَثِيرَةٍ وَ شَرَابٍ ⑦

وَعِنْهُمْ قِصْرُ الطَّرِفِ أَتْرَابٌ ⑧

هَذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ⑨

إِنَّ هَذَا الرِّزْقُ نَمَاءٌ مِّنْ نَفَادٍ ⑩

هَذَا وَإِنَّ لِلظُّغَىٰ لَشَرَّ مَاءٍ ⑪

جَهَنَّمُ يَصْلُوْنَاهَا فَيُنِسِّ الْمَهَادُ ⑫

هَذَا فَلِيَدُ وَقَوْهَ حَمِيمٌ وَ غَسَاقٌ ⑬

وَآخَرُ مِنْ شَكْلِهِ آزِوَاجٌ ⑭

هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْجَعًا

بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُو الظَّارِ ⑮

* उनके पास नीची दृष्टि रखने वाली कुवाँरी कन्यायें होंगी । यह भी एक उपमा है जिससे उनकी विनम्रता और लज्जाशीलता अभिप्रेत है ।

वे (ला'नत डालने वाले गिरोह से) कहेंगे, बल्कि तुम ही (ला'नत किये गये) हो । तुम्हारे लिए कोई अभिवादन नहीं । तुम ही हो जिन्होंने हमारे लिए यह कुछ आग भेजा है । अतः क्या ही बुरा ठहरने का स्थान है । 161।

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! जिसने हमारे लिए यह आगे भेजा उसे अग्नि में दोहरा अज्ञाब दे । 162।

और वे कहेंगे, हमें क्या हुआ है कि हम उन लोगों को नहीं देख रहे जिन्हें हम दुष्टों में गिना करते थे । 163।

क्या हमने उन्हें तुच्छ समझ रखा था अथवा उन (की पहचान) से हमारी नज़रें चूक गई ? । 164।

निःसन्देह यह अग्नि (में पड़ने) वालों का परस्पर झगड़ना सत्य है । 165।

(रुक् ٤)

तू कह दे, मैं तो केवल एक सतर्क करने वाला हूँ । और अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं जो अकेला (और) पराक्रमी है । 166।

आकाशों और धरती का रब्ब और उसका जो उन दोनों के मध्य है । पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 167।

तू कह दे, यह एक बहुत बड़ा समाचार है । 168।

तुम इससे विमुख हो रहे हो । 169।

قَالُوا إِنَّمَا تَعْلَمُ لَا مَرْجَحًا بِكُمْ أَنْتُمْ
قَدْ مُسْمِوْهُ لَنَا فِيْسَ الْقَرَارِ ⑩

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَرِزْدَه عَذَابًا
ضَعْفًا فِي التَّارِ ⑪

وَقَالُوا مَا النَّالَارِي رَجَالًا كُنَّا
لَعْدُهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ⑫

أَتَخَذُنَاهُمْ سُخْرِيًّا أَمْ زَانَتْ عَهْمَ
الْأَبْصَارِ ⑬

إِنَّ ذَلِكَ لِحُقُّ تَحَاصِمَ أَهْلُ التَّارِ ⑭

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنَ الْوَالِلُ
الْوَاحِدُ الْفَهَارِ ⑮

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الْعَزِيزُ الْغَفَارِ ⑯

قُلْ هُوَ نَبُوْا عَظِيمٌ ⑰

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ⑱

मुझे फरिश्तों का कोई ज्ञान नहीं था जब
वे बहस कर रहे थे । 70।

मुझे तो केवल यह वहह की जाती है
कि मैं एक खुला-खुला सतर्क करने
वाला हूँ । 71।

जब तेरे रब्ब ने फरिश्तों से कहा,
निःसन्देह मैं मिट्टी से मनुष्य पैदा करने
वाला हूँ । 72।

अतः जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ
और उसमें अपनी रुह में से कुछ फूँक लूँ
तो उसके सामने सजदः करते हुए गिर
पड़ो । 73।

इस पर सब के सब फरिश्तों ने सजदः
किया । 74।

सिवाय इब्लीस के । उसने अहंकार
किया और वह था ही क़ाफिरों में
से । 75।

उस (अल्लाह) ने कहा है इब्लीस ! तुझे
किस चीज़ ने उसे सजदः करने से मना
किया जिसे मैंने अपनी (कुदरत के)
दोनों हाथों से सुजित किया था ? क्या
तूने अहंकार किया है अथवा तू बहुत
ऊँचे लोगों में से है ? । 76।

उसने कहा, मैं उससे श्रेष्ठ हूँ । तूने मुझे
अग्नि से पैदा किया और उसे मिट्टी से
पैदा किया । 77।

उसने कहा, फिर यहाँ से निकल जा ।
निःसन्देह तू धिक्कारा हुआ है । 78।

और निःसन्देह तुझ पर प्रतिफल दिवस
तक मेरी ला'नत पड़ेगी । 79।

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمُلْكِ الْأَعْلَى
إِذْ يَحْتَصِمُونَ ⑦

إِنْ يُؤْخَذُ إِلَّا أَنَّمَا أَنْذِيرُ مُّبِينٌ ⑦

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقُ بَشَرًا
مِّنْ طِينٍ ⑦

فَإِذَا سَوَّيْتَهُ وَنَفَخْتَ فِيهِ مِنْ رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سُجَّدِينَ ⑦

فَسَجَدَ الْمَلِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ⑦

إِلَّا إِنِّي نَسَّكُبَرَوْكَانَ مِنَ
الْكُفَّارِينَ ⑦

قَالَ يَأَيُّلِيسَ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا
حَلَقَتْ بِيَدِيَّ أَسْتَكْبِرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعَالِيِّينَ ⑦

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ⑦

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ⑦

وَإِنَّ عَلَيْكَ تَعْتِيَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ⑦

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस परिस्थिति में मुझे उस दिन तक ढील दे दे जिस दिन (लोग) उठाए जाएँगे । 180।

उसने कहा, निःसन्देह तू ढील दिए जाने वालों में से है । 181।

एक निश्चित समय के दिन तक । 182।

उसने कहा, तो फिर तेरी प्रतिष्ठा की कसम ! मैं अवश्य उन सब को पथभ्रष्ट करूँगा । 183।

सिवाए उनमें से तेरे उन भक्तों के जो (तेरे) चुने हुए होंगे । 184।*

उसने कहा, अतः सच तो यह है और मैं अवश्य सच ही कहता हूँ । 185।

मैं नरक को अवश्य तुझ से और उन सबसे भर दूँगा जो उनमें से तेरा अनुसरण करेंगे । 186।

तू कह दे कि इस (बात) पर मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । और न ही मैं दिखावा करने वालों में से हूँ । 187।

यह तो समस्त लोकों के लिए एक महान उपदेश के अतिरिक्त कछ नहीं । 188।

और कुछ समय के पश्चात तुम लोग हूँ
उसकी वास्तविकता को अवश्य जान
लोगे । 189। (रुकू ५/४)

قَالَ رَبِّ فَأَنْظُرْنِي إِلَى يَوْمٍ
يَبْعَثُونَ ﴿١﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٢﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣﴾

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا غُوْيَةَ لِهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٥﴾

قَالَ فَإِنَّكَ حَقٌّ وَالْحَقُّ أَقْوَلُ ﴿٦﴾

لَا مُلِئَ كَبَّهُمْ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعُكَ
مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧﴾

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا
مِنَ الْمُتَكَبِّفِينَ ﴿٨﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا ذُكْرٌ لِلْعَلَمِينَ ﴿٩﴾

وَلَتَعْلَمُنَّ بَنَاءً بَعْدَ حِينِ ﴿١٠﴾

* आयत सं. ४३-४४ : शैतान को जब अल्लाह तआला ने धुतकार दिया तो उसने अपनी ढिठाई में अल्लाह तआला से छूट माँगी कि जिन भक्तों को तूने मुझ पर प्रधानता दी है यदि मुझे छूट मिले तो उनको मैं प्रत्येक प्रकार का धोखा देकर तुझ से छीन लूँगा और वे तेरे बदले मेरी उपासना करेंगे । सिवाए तेरे उन भक्तों के जो तेरे लिए विशिष्ट हो चुके हों । उन पर मेरा कोई अधिकार नहीं चलेगा ।

39—सूरः अज़—जुमर

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 76 आयतें हैं।

इससे पहली सूरः के अंत में धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने वाले ऐसे भक्तों का विवरण है जिन्होंने शैतान की उपासना का इनकार किया और पूर्णरूपेण अल्लाह तआला की उपासना करने में शीश झुकाए रखा। इस सूरः के आरम्भ ही में यह घोषणा की गई है कि हे रसूल ! धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करते हुए उसी की उपासना कर। निःसन्देह अल्लाह तआला विशुद्ध धर्म को ही स्वीकार करता है। इसके बाद मुश्तिकों के एक तर्क का खण्डन किया गया है। वे मुर्तिपूजा के पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि ये कृत्रिम उपास्य हमें अल्लाह से निकट करने का माध्यम बनते हैं। अल्लाह ने कहा, कदापि ऐसा नहीं। बल्कि माध्यम तो वही बनेगा जिसका धर्म हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भाँति विशुद्ध है और इसमें शिरूक का किंचिन्मात्र अंश भी नहीं है।

इसके पश्चात इस वास्तविकता को दोहराया गया है कि मनुष्य जीवन का आरम्भ एक ही जान से हुआ था। फिर जब मनुष्य माँ के गर्भ में भ्रूण के रूप में विकास के पड़ाव तय करने लगा तो वह भ्रूण तीन अन्धेरों में छिपा हुआ था। पहला अन्धेरा माँ के पेट का अन्धेरा है जिसने गर्भाशय को ढांका हुआ है। दूसरा अन्धेरा स्वयं गर्भाशय का अन्धेरा है, जिसमें भ्रूण पलता है और तीसरा अन्धेरा जरायु (Placenta) का अन्धेरा है जो माँ के गर्भाशय के अंदर भ्रूण को समेटे हुए होता है।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने का आदेश दिया गया है कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं उपासना को उसी के लिए विशेष कर दूँ। उसके पश्चात आदेश दिया गया है कि तू कह दे कि अल्लाह ही है जिसके लिए मैं अपने धर्म को विशुद्ध करते हुए उपासना करता रहूँगा। तुम अपनी जगह उसके सिवा जिसकी चाहे उपासना करते फिरो। फिर आप सल्ल. को यह कहा गया कि उनको बता दे कि यदि वे ऐसा करेंगे तो यह बहुत घाटे वाला सौदा होगा क्योंकि वे अपने आप को भी और अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को भी इस कुटिलता के द्वारा पथभ्रष्ट करने का कारण बनेंगे। इसके पश्चात यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह तआला ने अपनी याद के लिए खोल दिया हो अथवा दूसरे शब्दों में जिसे पूर्ण विश्वास प्रदान कर दिया गया हो। इसके उत्तर का यूँ तो स्पष्टतः उल्लेख नहीं परन्तु इस प्रश्न में ही निहित है और वह यह है कि ऐसे व्यक्ति से उत्तम और कोई नहीं हो सकता। अतः बहुत ही अभागे हैं वे लोग जो अपने रब्ब का स्मरण करने से लापर्वाह रहते हैं।

इस सूरः की आयत सं. 24 में यह घोषणा की गई है कि अल्लाह तुझ से एक बहुत

ही मनमोहक बात वर्णन करता है जो यह है कि अल्लाह ने तुझ पर एक बार-बार पढ़ी जाने वाली पुस्तक उतारी है जिसमें कुछ ऐसी आयतें भी हैं जिनके अर्थ अस्पष्ट हैं और वे जोड़ा-जोड़ा हैं। परन्तु उनकी व्याख्या स्वरूप बिल्कुल उनसे मिलती जुलती और भी आयतें उपस्थित हैं जो सत्य की खोज करने वालों को अस्पष्ट आयतों को समझने का सामर्थ्य प्रदान करेगी। यह वही विषय है जो कुछ-कुछ की व्याख्या करती हैं उक्ति के अनुरूप है। एक दूसरे स्थान पर कहा कि जो ज्ञान में पैठ रखते हैं उनके लिए तो कोई आयत भी अस्पष्ट नहीं रहती।

इस सूरः में वह आयत भी है जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. को वहाँ हुई थी और हुजूर अलै. ने एक अंगूठी तैयार करवा कर उसके नगीने में उसे खुदवा लिया था। अर्थात् अलै सल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहू (क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं) इसी कारण अहमदी ऐसी अंगूठियाँ मंगलमय जानकर और शुभ-शकुन के रूप में अपनी उंगलियों में पहनते हैं।

इस सूरः की आयत सं. 43 में एक बड़े रहस्य पर से पर्दा उठाया गया है कि नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है जिसमें आत्मा या चेतनशक्ति बार-बार डूबती है। फिर अल्लाह तआला ने ऐसी व्यवस्था जारी कर दी है कि ठीक निर्धारित समय पर दिमाग की तह से टकरा कर फिर वापस उभर आती है। वैज्ञानिकों ने इस पर खोज की है और बताया है कि यह प्रक्रिया निर्धारित समय में एक सोए हुए व्यक्ति से बार-बार पेश आती रहती है। इस निश्चित समय को एक आणविक घड़ी से भी नापा जा सकता है और इस अवधि में किसी प्रकार का कोई अंतर दिखाई नहीं देगा। फिर जब अल्लाह तआला उस जान को डूबने के पश्चात दोबारा वापस नहीं भेजता तो इसी का नाम मृत्यु है।

क्योंकि यहाँ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित होने का और इस संसार से सदा की जुदाई का वर्णन आ रहा है इस कारण वे जो जवाबदेही का भय रखते हैं उनको यह शुभ-समाचार भी दे दिया गया है कि अल्लाह तआला प्रत्येक प्रकार के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है। क्योंकि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। अतः अल्लाह के समक्ष ज्ञुको और उसी के सुरुद्द हो जाओ इस से पूर्व कि वह अज्ञाब तुम्हें आ पकड़े। और फिर प्रायश्चित्त करने से पूर्व तुम्हारी मृत्यु हो जाए और मनुष्य पश्चाताप करते हुए यह कहे कि काश ! मैं अल्लाह तआला के पहलू में अर्थात् उसकी दृष्टि के सामने इतने पाप करने की धृष्टता न करता ।

इस सूरः का नाम अज़-ज़ुमर है और अंत पर दो आयतों में ज़ुमर (समूहों) को दो भागों में विभाजित किया गया है। एक वे हैं जो समूहबद्ध रूप में नरक की ओर ले जाए जाएंगे और एक वे जो समूहबद्ध रूप में स्वर्ग की ओर ले जाए जाएंगे।

سُورَةُ الزُّمْرِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سُورَةُ زُكُوْغَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

इस सम्पूर्ण ग्रन्थ का अवतरण पूर्ण प्रभुत्व
वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह
की ओर से हुआ है । । । ।

निःसन्देह हमने तेरी ओर (इस) पुस्तक
को सत्य के साथ उतारा है । अतः
अल्लाह के लिए धर्म को विशिष्ट करते
हुए उसी की उपासना कर । । ।

सावधान ! विशुद्ध धर्म ही अल्लाह की
प्रतिष्ठानुकूल है । और वे लोग जो उस
के सिवा (दूसरों को) मित्र बना लिए हैं
(कहते हैं कि) हम केवल इस उद्देश्य के
लिए ही उनकी उपासना करते कि वे हमें
अल्लाह के निकट करते हुए निकटता के
ऊँचे स्थान तक पहुँचा दें । निःसन्देह
अल्लाह उनके मध्य उसका निर्णय करेगा
जिसमें वे मतभेद किया करते थे ।
अल्लाह कदापि उसे हिदायत नहीं देता
जो झूठा (और) बड़ा कृतघ्न हो । । । ।

यदि अल्लाह चाहता कि वह कोई पुत्र
अपनाए तो उसी में से जो उसने पैदा
किया है, जिसे चाहता अपना लेता ।
वह बहुत पवित्र है । वही अल्लाह
अकेला (और) प्रभुत्वशाली है । । ।

उसने आकाशों और धरती को सत्य के
साथ पैदा किया है । वह दिन पर रात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنْ رَبِّ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ②

إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدْ
اللَّهَ مُحْلِصًا لِّلّٰهِ التَّيْنِ ③

أَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَالِيُّ الْعَالِيُّ
إِنَّهُمْ مَنْ دُونَهُ أَوْلَى بِآءَ مَا نَعْبُدُ هُمْ
إِلَّا لِيَقْرَبُونَا إِنَّ اللَّهَ زُلْفَى إِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا يَعْمَلُونَ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهِدُ مَنْ هُوَ كَذِبُ كَفَّارُ ④

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَخَذَ وَلَدًا لَّا صُطْفَى
مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لِسُبْحَانَهُ هُوَ اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑤

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ يَكُوْزُ

का खोल चढ़ा देता है और रात पर दिन का खोल चढ़ा देता है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को सेवाधीन किया। प्रत्येक अपने निश्चित समय की ओर गतिशील है। सावधान वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है। 16।

उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया। फिर उसी में से उस ने उसका जोड़ा बनाया। और उसने तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ जोड़े उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में तीन अन्धेरों में एक उत्पत्ति के पश्चात दूसरी उत्पत्ति में परिवर्तित करते हुए पैदा करता है। यह है अल्लाह, तुम्हारा रब। उसी का साम्राज्य है, उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं। अतः तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो? 17।*

यदि तुम इनकार करो तो निःसन्देह अल्लाह तुम से बे-परवाह है और वह अपने भक्तों के लिए कुफ्र को पसन्द नहीं करता। और यदि तुम कृतज्ञता प्रकट

اَيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيَكُوْرُ النَّهَارَ عَلَى الْأَيْلِ
وَسَخَرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلُّ يَحْرُى
لِأَجَلٍ مَسْئَى ۝ اَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
الْغَفَّارُ ۝

خَلَقْتُكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا
زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ تَمَنِيَّةً
اَرْوَاحٍ ۝ بِخَلْقِكُمْ فِي بُطُونِ اَمْهِنِكُمْ
خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلْمَتِ ثَلَثٍ ۝
ذُلْكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ۝ فَإِنَّمَا تُصْرَفُونَ ۝

إِنْ تَكُفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَنِيْ فَعَنْكُمْ ۝ وَلَا
يَرْضُى لِعِبَادِهِ الْكُفَّارُ ۝ وَإِنْ تَشْكُرُوا

* अरबी शब्द अन ज़ ल यच्चपि उतारने का अर्थ देता है परन्तु यहाँ इन असाधारण लाभदायक वस्तुओं को पैदा करने के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। न कि सशरीर आकाश से उतारने के अर्थों में। समग्र जगत् को ज्ञात है कि पशु आकाश से बारिश की भाँति नहीं गिरा करते। इसके बावजूद उनके लिए नुजूल (उतारने) का शब्द इस लिए प्रयुक्त किया गया है कि वे मानव जाति के लिए अनगिनत लाभ रखते हैं। यही शब्द नुजूल हज़रत ईसा अलै, के दोबारा आगमन के लिए प्रयुक्त हुआ है। परन्तु सबसे बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संबंध में भी नुजूल शब्द का प्रयोग हुआ है जैसा कि फर्माया कह अन ज़ल्लल्लाहु इलैकुम त्रिकर्रसूलन (तुम्हारी ओर अल्लाह ने एक उपदेशक रसूल उतारा है।) (सूरः अत्-तलाक़, आयत 11-12) सभी उलेमा स्वीकार करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सशरीर आकाश से नहीं उतरे थे। उनको चाहिए कि हज़रत ईसा अलै, के उतारने के संबंध में भी अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करें।

करो तो वह इसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है। और कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी। फिर तुम सब को अपने रब्ब की ओर लौटना है। अतः वह तुम्हें उन कर्मों से सूचित करेगा जो तुम किया करते थे। निःसन्देह वह सीनों के रहस्यों को भली-भाँति जानता है। १।

और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने रब्ब को उसकी ओर झुकते हुए पुकारता है। फिर जब वह उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करता है तो वह उस बात को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले दुआ किया करता था। और वह अल्लाह के साज्जीदार ठहराने लगता है ताकि उसके मार्ग से (लोगों को) पश्चाप्त कर दे। तू कह दे कि अपने कुक्फ से कुछ थोड़ा सा अस्थायी लाभ उठा ले निःसन्देह तू अग्नि में पड़ने वालों में से है। १।

क्या वह जो रात की घड़ियों में उपासना करने वाला है (कभी) सजदः की अवस्था में, और (कभी) खड़े होने की अवस्था में, परलोक के प्रति डरता है और अपने रब्ब की कृपा की आशा रखता है (ज्ञानी व्यक्ति नहीं होता ?) तू पूछ कि क्या वे लोग जो ज्ञान रखते हैं और वे जो ज्ञान नहीं रखते, समान हो सकते हैं? निःसन्देह बुद्धिमान ही उपदेश प्राप्त करते हैं। १०। (रुक् १)

يَرْضَهُ لَكُمْ ۖ وَلَا تَزِرُّ وَازِرَةٌ وَزْرًا
أَخْرَىٰ ۖ لَمَّا أَلِيَ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ
فِيَنِتَّكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصَّدْوِرِ ⑥

وَإِذَا مَسَ الْإِنْسَانَ صُرْدَعَارَبَهُ مُنْيِّيَا
إِلَيْهِ قَمَّ إِذَا خَوَلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَذْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلٍ وَجَعَلَ اللَّهُ أَنْدَادًا
لِيُنْصَلَّ عَنْ سَيِّلِهِ ۖ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيلًاٌ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ التَّارِ ①

أَمْنٌ هُوَ قَاتِنُ أَنَاءَ الْيَلِ سَاحِدًا وَقَائِمًا
يَحْدُرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ ۖ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أَوْلُوا
الْأَيْمَانِ ۖ

तू कह दे कि हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! अपने रब्ब का तकबा धारण करो । उन लोगों के लिए जो उपकार करते हैं, इस संसार में भी भलाई होगी और अल्लाह की धरती विस्तृत है । निःसन्देह धैर्य करने वालों को ही बिना हिसाब के उनका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा ॥11॥

तू कह दे कि मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना उसी के लिए धर्म के प्रति निष्ठावान होकर करूँ ॥12॥

और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब आज्ञाकारियों में से प्रथम हो जाऊँ ॥13॥

तू कह दे कि यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो निःसन्देह एक बहुत बड़े दिन के अज्ञाब से डरता हूँ ॥14॥

तू कह दे कि मैं अल्लाह ही की उपासना करता हूँ उसी के लिए अपने धर्म के प्रति निष्ठावान होते हुए ॥15॥

अतः तुम उसे छोड़ कर जिस की चाहो उपासना करते फिरो । तू कह दे कि निःसन्देह वास्तविक घाटा पाने वाले वे हैं जिन्होंने अपनी जानों और अपने परिजनों को क़्रायामत के दिन घाटे में डाला । सावधान ! यही बहुत खुला-खुला घाटा है ॥16॥

उनके लिए उनके ऊपर से अग्नि की छाया होंगी और नीचे भी छाया होंगी । (अर्थात् अग्नि उनको प्रत्येक ओर से अपनी लपेट में ले लेगी) यह वह बात है

قُلْ يَعْبُادُ الَّذِينَ أَمْنَوْا ثُقُورًا بَكُمْ
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُؤْفَى
الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا
لِلَّهِ الَّذِينَ ⑪

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ⑫
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتَ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑬

قُلِ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ⑭
فَاعْبُدُوا مَا شَاءُتُمْ مِنْ دُوْنِهِ قُلْ إِنَّ
الْخَسِيرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَأَهْلِهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا ذَلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ⑮

لَهُمْ مَنْ فَوْقُهُمْ ظَلَلَ مَنْ مِنَ النَّارِ وَمَنْ
تَحْتِهِمْ ظَلَلَ ذَلِكَ يَخْوُفُ اللَّهُ بِهِ

जिससे अल्लाह अपने भक्तों को डराता है । अतः हे मेरे भक्तजनो ! मेरा ही तक्रवा धारण करो ॥१७॥

और वे लोग जो मूर्तियों की उपासना करने से बचे और अल्लाह की ओर झुके उनके लिए बड़ा शुभ-समाचार है । अतः मेरे भक्तों को शुभ-समाचार देदे ॥१८॥

वे लोग जो बात को सुनते हैं तो उसमें से बेहतरीन (बात) का पालन करते हैं । यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और यही वे लोग हैं जो बुद्धिमान हैं ॥१९॥

अतः क्या वह जिस पर अज्ञाब का आदेश सिद्ध हो गया (बच सकता है ?) क्या तू उसे भी छुड़ा सकता है जो पूर्णतया अग्नि में (पड़ा) है ? ॥२०॥

परन्तु वे लोग जो अपने रब का तक्रवा धारण करते हैं उनके लिए अटारियाँ हैं जिनके ऊपर और अटारियाँ बनाई गई होंगी । उनके दामन में नहरें बहेंगी । (यह) अल्लाह ने बादा किया है । अल्लाह बादों को टाला नहीं करता ॥२१॥

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से जल उतारा फिर उसे धरती में स्रोतों के रूप में जारी कर दिया । फिर वह उससे खेती निकालता है । उसके रंग भिन्न-भिन्न होते हैं । फिर वह शुष्क हो जाती है (अर्थात् पक कर अथवा बिना पके) । फिर तू उसे पीला होता हुआ

ِعِبَادَةٌ لِّيَعْبَادِ فَانْتَقُونِ^⑤

وَالَّذِينَ اجْتَبَى اللَّهُ أَنْ يَعْبُدُوهَا
وَأَنَابَوْا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبَشَرُ فَبَشِّرْ
ِعِبَادِ^⑥

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَقُولُونَ
أَحْسَنَهُ أُولَئِكَ الَّذِينَ هَذِهِمُ اللَّهُ
وَأُولَئِكَ هُمُ أُولُو الْأَنْبَابِ^⑦
أَفَمَنْ حَقٌ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ
شَقِّدْ مَنْ فِي التَّارِ^⑧

لِكِنَ الَّذِينَ اتَّقَوا رَبَّهُمْ لَهُمْ عُرْفٌ مِّنْ
فُوْقَهَا عُرْفٌ مُّبِينٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتَهَا
الْأَنْهَرُ وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلُفُ اللَّهُ
الْمِيعَادَ^⑨

الْمُرْتَأَى اللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَسَلَكَهُ يَسَّارِي فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُحْرِجُ بِهِ
زَرْعًا مُّخْلِفًا أَلْوَانَهُ ثُمَّ يَهْبِطُ فَتَرْهَ

देखता है। फिर वह उसे चूर-चूर कर देता है। निःसन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए एक बड़ी शिक्षा है। 122।

(रुकू ٢/٦)

अतः क्या वह जिसका सीना अल्लाह इस्लाम के लिए खोल दे, फिर वह अपने रब्ब की ओर से एक प्रकाश पर (भी) क्वायम हो (वह अल्लाह के स्मरण से वंचित लोगों की भाँति हो सकता है ?)

अतः सर्वनाश हो उनका जिनके दिल अल्लाह के स्मरण से (वंचित रहते हुए) कठोर हैं। यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टा में हैं। 123।

अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ वर्णन एक मिलती-जुलती (और) बार-बार दोहराई जाने वाली पुस्तक के रूप में उतारा है। जिससे उन लोगों की त्वचाएँ जो अपने रब्ब का भय रखते हैं, कांपने लगती हैं। फिर उनकी त्वचाएँ और उनके दिल अल्लाह के स्मरण की ओर (झुकते हुए) नरम पड़ जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इसके द्वारा जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। 124।

अतः क्या वह जो क्यामत के दिन कठोर अज्ञाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ही ढाल बनाएगा (बच सकता है ?) और अत्याचारियों से कहा जाएगा कि छो, जो तुम कमाया करते थे। 125।

مُصَفِّرًا لَهُ يَجْعَلُهُ حَطَامًا إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَذِكْرًا لِأُولَئِكَ الْأَلْبَابِ

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ
عَلَى نُورٍ مِنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ لِلْقَسْيَةِ
قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَئِكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ

اللَّهُ تَرَأَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثَ كِتَابًا مُتَسَابِهًًا
مَثَانِيٌ تَقْشِعُّ مِنْهُ جَلَوْدُ الدِّينِ يَحْسُونَ
رَبَّهُمْ لَمَّا تَلَنَّ جَلَوْدُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ
إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ هَذَى اللَّهُمَّ يَهْدِي
بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَالَهُ
مِنْ هَادٍ

أَفَمَنْ يَسْتَهِنُ بِوَجْهِهِ سُوءُ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَقَيْلٌ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كَنْتُمْ
تَكْسِبُونَ

उनसे पहले भी लोगों ने झुठलाया था तो उन्हें अज्ञाब ने उस दिशा से आ पकड़ा जिस (दिशा) की वे कोई कल्पना भी नहीं कर सकते थे । १२६।

अतः अल्लाह ने उन्हें इस संसार के जीवन में भी अपमान का स्वाद चखाया, जबकि परलोक का अज्ञाब बहुत बढ़ कर है । काश ! वे जानते । १२७।

और निःसन्देह हमने इस कुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक प्रकार का उदाहरण वर्णन कर दिया है ताकि वे उपदेश प्राप्त करें । १२८।

एक अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा सम्पन्न कुरआन जिसमें कोई कुटिलता नहीं, ताकि वे तकवा धारण करें । १२९।

अल्लाह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण वर्णन करता है जिसके कई स्वामी हों जो परस्पर एक दूसरे के विरोधी हों । और एक ऐसे व्यक्ति का भी (उदाहरण वर्णन करता है) जो पूर्णतया एक ही व्यक्ति का हो । क्या वे दोनों अपनी परिस्थिति की दृष्टि से एक समान हो सकते हैं ? समस्त स्तुति अल्लाह ही की है । (परन्तु) वास्तविकता यह है कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते । ३०।

निःसन्देह तू भी मरने वाला है और वे भी मरने वाले हैं । ३१।

निःसन्देह फिर तुम कल्यामत के दिन अपने रब्ब के समक्ष एक दूसरे से बहस करोगे । ३२। (रुकू ३)

كَذَبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَهُمْ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ④

فَإِذَا قَهَمُ اللَّهُ الْخَرْقَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ④

وَلَقَدْ صَرَبَنَا إِلَيْهِمْ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ④

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذُفْ عَوْجٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ④

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شَرٌ كَائِنٌ
مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هُلْ
يَسْوَلِينَ مَثَلًا لَّا يَعْلَمُونَ ④

إِنَّكَ مَيْتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ۖ

لَمَّا أَنْكُمْ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ عِنْدَ رِبِّكُمْ
تَخْصِصُونَ ۖ

अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े और सच्चाई को झुठला दे, जब वह उसके पास आए। क्या नरक में काफिरों के लिए ठिकाना नहीं है ? 133।

और वह व्यक्ति जो सच्चाई लेकर आए और (वह जो) उस (सच्चाई) की पुष्टि करे, यहीं वे लोग हैं जो मुत्तकी हैं 134।

उनके लिए उनके रब्ब के पास वह कुछ होगा जो वे चाहेंगे। यह होगा पुण्य-कर्म करने वालों का प्रतिफल 135।

ताकि जो बुरे कर्म उन्होंने किए (उनके दुष्प्रभाव) अल्लाह उनसे दूर कर दे। और जो अच्छे कर्म वे किया करते थे, उनके अनुसार उन्हें उनका प्रतिफल प्रदान करे 136।

क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं ? और वे तुझे उनसे डराते हैं, जो उस के सिवा हैं। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं 137।

और जिसे अल्लाह हिदायत दे दे तो उसे कोई पथभ्रष्ट करने वाला नहीं। क्या अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला नहीं है ? 138।

और यदि तू उनसे पूछे कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे अवश्य कहेंगे, अल्लाह ने। तू उनसे कह दे कि सोचो तो सही यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते

فَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ كَذَّابٍ عَلَى اللَّهِ
وَكَذَّابٌ بِالْقِدْرِ إِذْ جَاءَهُ الَّذِينَ
فِي جَهَنَّمَ مَأْتُوا لِلْكُفَّارِينَ ⑩

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ
أُولَئِكَ هُمُ الْمُسْتَقْبُونَ ⑪
لَهُمْ مَا يَسْأَلُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ ذَلِكَ
جَزْءٌ مِّا الْمُحْسِنُونَ ⑫

لَيَكْفِرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَشْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا
وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِإِحْسَانِ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑬

الَّذِي كَفَرَ اللَّهُ بِكَافِ عَنْهُ ۖ وَيُخَوِّفُنَّكَ
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ⑭

وَمَنْ يَهْدِي اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۖ الَّذِي
اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي اسْتِقْبَارٍ ⑮

وَلَيْسَ سَائِلُهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ قُلْ أَفَرَءَيْتُمْ مَا
تَذَعَّوْنَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرَادَنِي اللَّهُ

हो, वे उसके (द्वारा उत्पन्न) हानि को दूर कर सकते हैं ? अथवा यदि वह मेरे पक्ष में दया करने का इरादा करे तो क्या वे उसकी दया को रोक सकते हैं ? तू कह दे कि मेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है । उसी पर सब भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं । 139।

तू कह दे कि हे मेरी जाति ! तुमने अपने स्थान पर जो करना है करते फिरो, मैं भी (अपने स्थान पर) करता रहूँगा । अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे । 140।

(कि) किस तक वह अज्ञाब आ पहुँचता है जो उसे अपमानित कर दे । और कौन है जिस पर आकर ठहर जाने वाला अज्ञाब उत्तरता है । 141।

निःसन्देह हमने लोगों के लाभ के लिए तुम्ह पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी है । अतः जो कोई हिदायत पाता है तो (वह) अपनी ही जान के हित के लिए हिदायत पाता है । और जो कोई पथभ्रष्ट होता है तो वह (अपनी जान) के विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है । तू उन पर दारोगा नहीं है । 142। (रुकू 4)

अल्लाह जानों को उनकी मृत्यु के समय कब्ज़ कर लेता है । और जो मरी नहीं होती (उन्हें) उनकी नींद की अवस्था में (कब्ज़ करता है ।) अतः जिसके लिए मृत्यु का निर्णय कर देता है उसे रोक रखता है और अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिए (वापस) भेज देता है । निःसन्देह इसमें

بِصَرٍ هُنَّ كَيْفَتَ صَرِّهُ أَوْ أَرَادَنِي
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكُتُ رَحْمَتِهِ قُلْ
حَسْبِ اللَّهِ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ⑩

قُلْ يَقُومُ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَا كَانُتُمْ إِنِّي
عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ١١

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحْلِ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ⑪

إِنَّا آنَّزْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلّٰهِ أَكْلَمٌ
فَمَنِ اهْتَدَ فَلَنْفَسِهِ ۝ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا
يَضْلُلُ عَلَيْهَا ۝ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ١٢

اللَّهُ يَسْوِي الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي
لَمْ تَمْتُ فِي مَنَامِهَا ۝ فَيُمْسِكُ الَّتِي
قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرِسِّلُ الْأُخْرَىٰ
إِلَىٰ أَجَلٍ مَسْعًىٰ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٍ

चिन्तन-मनन करने वालों के लिए
बहुत से चिह्न हैं । 143।

क्या उन्होंने अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध
कोई सिफारिशी अपना रखे हैं ? तू कह
दे कि क्या इस पर भी कि वे किसी वस्तु
के स्वामी नहीं हैं और न ही कोई बुद्धि
रखते हैं ? । 144।

तू कह दे सिफारिश (का मामला)
पूर्णतया अल्लाह ही के अधिकार में है ।
आकाशों और धरती का सम्राज्य उसी
का है । फिर उसी की ओर तुम लैटाए
जाओगे । 145।

और जब अकेले अल्लाह का वर्णन
किया जाए तो उन लोगों के दिल जो
परलोक पर ईमान नहीं रखते, बुरा
मानते हैं । और जब उसे छोड़ कर
दूसरों का वर्णन किया जाए तो वे बहुत
प्रसन्न होते हैं । 146।

तू कह दे, हे अल्लाह ! आकाशों और
धरती के पैदा करने वाले ! परोक्ष और
प्रत्यक्ष को जानने वाले ! तू ही अपने
भक्तों के बीच (प्रत्येक) उस मामले
में निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद
करते हैं । 147।

और जो कुछ धरती में है यदि वह सब
का सब उनका होता जिन्होंने अत्याचार
किया और वैसा ही और भी (होता) तब
भी अवश्य वे उसे क्रयामत के दिन
भयानक अज्ञाब से बचने के लिए
मुक्तिमूल्य स्वरूप दे देते । और उनके
लिए अल्लाह की ओर से वह (कुछ)

لِقَوْمٍ يَسْفَكُرُونَ ⑤

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شَفَعَاءَ ۖ قُلْ أَوْ
لَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ⑥

قُلْ إِنَّهُ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ تَعْلَمُ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ⑦

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ أَشْمَأَرْتُ قُلُوبَ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْبِيْرُونَ ⑧

قُلْ اللَّهُمَّ فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْلُقُونَ ⑨

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فَدَّوا بِهِ مِنْ سُوءِ
الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَبَدَأَ الْهُمْ مِنَ اللَّهِ

प्रकट होगा जिसकी वे कल्पना नहीं किया करते थे । 48।

और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ उनके लिए प्रकट होंगी । और उन्हें वह घेर लेगा जिस की वे खिल्ली उड़ाया करते थे । 49।

अतः जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो (वह) हमें पुकारता है । फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करते हैं तो वह कहता है कि यह मुझे केवल एक ज्ञान के आधार पर दिया गया है । वास्तव में यह तो एक बड़ी परीक्षा है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 50।

निःसन्देह उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, यही बात कही थी । अतः जो वे कमाते थे (वह) उनके किसी काम न आ सका । 51।

अतः जो उन्होंने कमाया उन्हें उसकी बुराइयाँ ही पहुँची । और इन लोगों में से जिन्होंने अत्याचार किया इनको भी उनके कर्मों के बुरे-परिणाम अवश्य पहुँचेंगे और वे (अल्लाह को) असर्मर्थ नहीं कर सकेंगे । 52।

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है और संकुचित भी करता है । निःसन्देह उन लोगों के लिए बड़े चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं । 53। (रुक् ٢)

तू कह दे, हे मेरे भक्तो ! जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया है

مَا لَمْ يَكُنُوا يَحْتَسِبُونَ ⑩

وَبَدَاهُمْ سِيَّاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْهِرُونَ ⑪

فَإِذَا مَسَ الْأَنْسَانَ ضُرُّ دُعَانًا ثُمَّ إِذَا
خَوْلَنَةٌ نِعْمَةً مِنْنَا قَالَ إِنَّمَا أُوْتِيهَا
عَلَى عِلْمٍ بِلْ هُوَ فِتْنَةٌ وَلِكُنْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑫

قَذَقَ لَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْلَى
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑬

فَأَصَابَهُمْ سِيَّاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ
ظَلَمُوا مِنْ هُوَ لَا يُؤْلِمُ سِيَّاتُ
مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ⑭

أَوْلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَلِيقُ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑮

قُلْ لِيَعْبُادِي الَّذِينَ أَسْرَقُوا عَلَى أَنفُسِهِمْ

अल्लाह की दया से निराश न हो । निःसन्देह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर सकता है । निःसन्देह वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 154।

और अपने रब्ब की ओर झुको और उसके आज्ञाकारी हो जाओ । इसके पूर्व कि तुम तक एक अज्ञाब आ जाए । फिर तुम्हें कोई सहायता नहीं दी जाएगी । 155।

और तुम्हारी ओर तुम्हारे रब्ब की ओर से जो उतारा गया है उसके उत्कृष्ट भाग का अनुसरण करो । इसके पूर्व कि सहसा तुम्हें अज्ञाब आ पकड़े जबकि तुम्हें (उसकी) समझ न आ सके । 156।

ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति यह कहे : हाय खेद मुझ पर ! उस लापरवाही के कारण जो मैं अल्लाह के पहलू में (अर्थात् उसकी दृष्टि के समक्ष) करता रहा । और मैं तो केवल उपहास करने वालों में से था । 157।

अथवा यह कहे कि यदि अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं अवश्य मुत्तकियों में से हो जाता । 158।

अथवा जब वह अज्ञाब को देखे तो यह कहे, काश ! एक बार मेरे लिए लौट कर जाना संभव होता तो मैं अवश्य नेकी करने वालों में से हो जाता । 159।

क्यों नहीं, निःसन्देह तेरे पास मेरे चिह्न आए और तूने उनको झुठला दिया

لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ
يَعْفُرُ الدُّنْوَبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ
الرَّحِيمُ ④

وَأَنِيبُوا إِلَيْرَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلٍ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ لَمَّا لَا تَشْرُونَ ⑤

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكُمْ مِنْ
رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلٍ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَعْدَهُ
وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ⑥

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِيَصْرِئِي عَلَى مَا
فَرَّطْتُ فِيْ جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَيْعَنِ
السَّخِرِينَ ⑦

أَوْ تَقُولَ لَوْاَنَ اللَّهَ هَدَنِي لَكُنْتُ مِنَ
الْمُسْتَقِرِّينَ ⑧

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْاَنِي
كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُخْسِنِينَ ⑨

بَلْ قَدْ جَاءَكَ أَيْتَ فَكَذَّبْتَ بِهَا

और अहंकार किया और तू काफिरों में से था । 160।

और क्यामत के दिन तू उन लोगों को देखेगा जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला । उनके चेहरे काले होंगे । क्या नरक में अहंकार करने वालों के लिए ठिकाना नहीं ? । 161।

और अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने तकब्बा धारण किया, उनकी सफलता के साथ मुक्ति प्रदान करेगा । उन्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा और न वे शोकग्रस्त होंगे । 162।

अल्लाह प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है और वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है । 163।

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं । और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया वही हैं जो घाटा पाने वाले हैं । 164। (रूप. ३)

तू कह दे, हे अज्ञानियो ! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह के सिवा दूसरों की उपासना करूँ ? । 165।

और निःसन्देह तेरी ओर और उनकी ओर भी जो तुझ से पहले थे, वहाँ की जा चुकी है कि यदि तूने शिर्क किया तो अवश्य तेरा कर्म नष्ट हो जाएगा । और अवश्य तू घाटा पाने वालों में से हो जाएगा । 166।

बल्कि अल्लाह ही की उपासना कर और कृतज्ञों में से हो जा । 167।

وَاسْتَكْبِرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكُفَّارِينَ ⑤

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا
عَلَى اللَّهِ وَجْهُهُمْ مُسَوَّدَةٌ أَلَيْسَ
فِي جَهَنَّمَ مَمْوَى لِلْمُسَكِّرِينَ ⑦

وَيَنْجِحُ الَّذِينَ آتَوْا بِمَفَازَتِهِمْ
لَا يَمْسِهِمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزُنُونَ ⑧

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
وَكَيْلٌ ⑨

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِإِلَيْتِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ
الْخَسِرُونَ ⑩

قُلْ أَفَغَيْرُ اللَّهِ تَأْمُرُ وَقَىْ قَلْ أَعْبُدُ أَيْهَا
الْجِهَلُونَ ⑪

وَلَقَدْ أَوْحَى إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ لِئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَ عَمَلُكَ
وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ⑫

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدُ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ⑬

और उन्होंने अल्लाह का मान नहीं किया जैसा कि उसके मान का अधिकार था । और क्रयामत के दिन धरती सब की सब उसी के अधीन होगी । और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे । वह पवित्र है और बहुत ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं । 168।*

और बिगुल में फूँका जाएगा तो जो कोई आसमानों में है और जो कोई धरती में है मूच्छित होकर गिर पड़ेगा । सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहे । फिर उसमें दोबारा फूँका जाएगा तो सहसा वे खड़े हुए देख रहे होंगे । 169।

और धरती अपने रब्ब की ज्योति से चमक उठेगी और कर्म-पत्र (सामने) रख दिया जाएगा और सब नवियों और गवाही देने वालों को लाया जाएगा । और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 170।

और प्रत्येक जान को जो उसने कर्म किया उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा । और वह (अल्लाह) सबसे अधिक जानता है जो वे करते हैं । 171।

(रुपू 7/4)

وَمَا قَدَرُوا اللَّهُ حَقًّا قَدْرِهِ وَالْأَرْضَ
جَمِيعًا قَبْصَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمَوَاتُ
مَطْوِيَّاتٍ بِسِيمَيْهِ سَبَحَتْهُ وَتَعْلَى عَمَّا
يُشَرِّكُونَ ⑤

وَنَفَخَ فِي الصُّورِ فَصَعَقَ مَنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَامَنْ شَاءَ
اللَّهُ تُثَرِّنَفَخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ
قِيَافُرٌ يَنْظَرُونَ ⑥

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتَابُ وَجِئَتِ الْمُلَّاَتِ وَالشَّهَادَةُ
وَقُضِيَ بِيَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ⑦

وَوَفَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَا عَوِّذَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِمَا يَفْعَلُونَ ⑧

* इस आयत में क्रयामत का जो चित्रण किया गया है कि : (1) क्रयामत के दिन धरती पूर्णतया अल्लाह तआला के अधीन होगी और (2) समस्त आकाश अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे । दाहिने हाथ से अभिप्राय शक्ति का हाथ है न कि भौतिक रूप से दाहिना हाथ । और लिपटे जाने का जो वर्णन मिलता है यह वर्तमान युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से पूर्णतया प्रमाणित होता है । अर्थात् धरती और आकाश एक विनाश के ब्लैकहोल (Black Hole) में इस प्रकार प्रविष्ट कर दिए जाएँगे जैसे वे लिपटे जा चुके हों । दूसरी कई आयतों में अधिक स्पष्ट रूप से बताया गया है कि लिपटने के उदाहरण से क्या अभिप्राय है ।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया गिरोह के गिरोह नरक की ओर हाँके जाएँगे । यहाँ तक कि जब वे उसके पास आ जाएँगे उसके द्वार खोल दिए जाएँगे । और उसके दारोगे उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम ही मैं से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब्ब की आयतों का पाठ करते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की भेट से डराया करते थे ? वे कहेंगे, क्यों नहीं । परन्तु अज्ञाब का आदेश काफ़िरों पर निःसन्देह सत्य सिद्ध हो गया । 172 ।

कहा जाएँगा कि नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ । (तुम) उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हो । अतः अहंकार करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है । 173 ।

और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब का तक्रवा धारण किया वे भी गिरोह के गिरोह स्वर्ग की ओर ले जाए जाएँगे । यहाँ तक कि जब वे उस तक पहुँचेंगे और उसके द्वार खोल दिए जाएँगे, तब उसके दारोगे उनसे कहेंगे, तुम पर सलामती हो । तुम बहुत अच्छी दशा को पहुँचे । अतः इसमें सदा रहने वाले बन कर प्रविष्ट हो जाओ । 174 ।

और वे कहेंगे, समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने अपना वादा हमसे पूरा कर दिखाया । और हमें (इस प्रतिश्रुत) धरती का उत्तराधिकारी बना दिया । स्वर्ग में जहाँ चाहे हम स्थान

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى جَهَنَّمَ زَمَراً
حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتَحْتُ أَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ حَرَّشَهَا الْمَيَاتِ كُمْ رَسْلُ
مِنْكُمْ يَشْتُونَ عَلَيْكُمْ أَلِيتِ رَيْكُمْ
وَيَنْدِرُونَكُمْ لِقاءَ يَوْمَكُمْ هَذَا قَالُوا
بَلٌ وَلَكِنْ حَتَّىٰ كَلْمَةُ الْعَذَابِ عَلَىٰ
الْكُفَّارِينَ ⑦

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ قِيمَهَا
فَيُسَسْ مَئْوَى الْمُسْكِرِينَ ⑧

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا بَهْمُ الْجَنَّةِ
زَمَراً حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتَحْتُ
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ حَرَّشَهَا سَلْمُ
عَلَيْكُمْ طَبِّئُمْ فَادْخُلُوهَا خَلِدِينَ ⑨

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ
وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَّبَوْا مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ

बना सकते हैं। अतः कर्म करने वालों का प्रतिफल कितना उत्तम है । 75।

और तू फरिश्तों को देखेगा कि अर्थ के बातावरण को धेरे में लिए हुए होंगे। वे अपने रब्ब की स्तुति के साथ गुणगान कर रहे होंगे। और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय किया जाएगा और कहा जाएगा कि समस्त ۷۶।
प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है।

(रुकू ۸)

لَشَاءُهُ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِيْنَ ۚ ۷۶

وَتَرَى الْمَلِكَةَ حَاقِيْنَ مِنْ حَوْلِ
الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ
بِيَّهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ
الْعَالَمِيْنَ ۚ ۷۷

40 - सूरः अल-मु'मिन

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 86 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ हा मीम खण्डाक्षरों से होता है और इस सूरः के पश्चात् छः सूर्तों का आरम्भ भी इन्हीं खण्डाक्षरों से होता है। अर्थात् इसके समेत कुल सात सूरः हैं जिनका आरम्भ हा मीम से होता है। अल्लाह अधिक जानता है कि इन सूर्तों का सूरः अल-फतिहः की सात आयतों से कोई सम्बन्ध है तो क्या है।

पिछली सूरः में मनुष्य को उपदेश दिया गया था कि अल्लाह की दया से निराश नहीं होना चाहिए। वास्तव में निराशा इब्लीस की विशेषता है। और जो सच्चे दिल से अल्लाह की कृपा पर भरोसा करेगा और अपने पापों का सच्चे मन से प्रायशिच्त करेगा तो अल्लाह तआला सब पाप क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है।

इसी प्रकार पिछली सूरः में फरिश्तों के बारे में वर्णन था कि वे अर्श के बातावरण को घेरे में लिए हुए हैं। परन्तु इस सूरः में और अधिक यह कहा गया कि तुम्हारी क्षमा का सम्बन्ध फरिश्तों की दुआओं से भी है, जिन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है। अल्लाह तआला तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है कि वह किसी सिंहासन पर बैठा हुआ हो और उसे फरिश्तों ने उठाया हुआ हो। अल्लाह तो प्रत्येक स्थान में उपस्थित है और उसने ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु को उठाया हुआ है। इस लिए यहाँ पर उसके अनुपमेय गुणों का वर्णन है और अर्श से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निर्मल हृदय है जो अल्लाह का सिंहासन है और उनके दिल को शक्ति प्रदान करने के लिए फरिश्ते उसे चारों ओर से घेरे रहते हैं और अल्लाह तआला के पापी भक्तों के लिए भी दुआएँ करते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी संतान के लिए भी दुआएँ करते हैं। अतः मुझे विश्वास है कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल के अर्श से उठने वाली वह दुआएँ हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्यामत तक आने वाले नेक भक्तों और उनकी संतान के लिए की हैं।

इसी सूरः में एसे राजकुमार का वर्णन मिलता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आया था पर उसे छिपाता था। परन्तु जब फ़िरउौन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वध करने का इरादा किया और उस राजकुमार के सामने मूसा की हत्या के लिए षड्यन्त्र रचे गये तो वह उस समय उसको प्रकट करने से रुक न सका और अपनी जाति को सावधान किया कि यदि मूसा झूठा है तो उसे छोड़ दो। झूठे स्वयं तबाह हो जाया करते हैं। परन्तु यदि वह सच्चा हुआ तो फिर जिन बातों से वह तुम्हें सतर्क करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ घेरेंगी।

यहाँ पर लोगों को सदा के लिए यह उपदेश दिया गया है कि नुबुव्वत का दावा करने वालों का मामला अल्लाह पर छोड़ दिया करो । यदि वे झूठे हैं तो अल्लाह स्वयं उनको तबाह करेगा । परन्तु यदि वे सच्चे निकले और तुमने उनका इनकार कर दिया तो तुम उनके द्वारा दी गई अज्ञाब की चेतावनियों में से कुछ को अपने विरुद्ध अवश्य पूरी होते देखोगे । चूँकि इन आयतों का सम्बन्ध हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् नुबुव्वत का दावा करने वालों से भी है, इस लिए ऐसे दावेदारों का इतिहास बताता है कि बिल्कुल इसी प्रकार उनके साथ घटित हुआ । सारे झूठे नबी तबाह कर दिए गए और उनका नामो-निशान भी इतिहास में नहीं मिलता ।

इस प्रसंग में हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के बारे में भी लोगों के इस दावे का उल्लेख है कि उन के बाद कोई नबी नहीं आएगा । यदि यह बात सच्ची होती तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आगमन हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के पश्चात कैसे होता ? अतः यह केवल उन लोगों के दावे हैं जिनको अल्लाह के विधान का कुछ भी ज्ञान नहीं । सब कुछ बन्द हो सकता है परन्तु अल्लाह की कृपाओं का मार्ग कदापि बन्द नहीं हो सकता । अल्लाह झूठों को तबाह करता है इस प्रसंग में यह भी चेतावनी दी गई कि वह सच्चों की अवश्य सहायता करता है । इसलिए जो चाहे ज़ोर लगा लो, तुम अल्लाह तआला के सच्चे नबियों को कभी भी असफल नहीं कर सकोगे ।

आयत सं. 66 में धर्म को विशिष्ट करने का फिर से विशेष आदेश दिया गया है कि जीवित अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो ।



سُورَةُ الْمُؤْمِنِ مَكْيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سُتُّ وَ ثَمَانُونَ آيَةً وَ تِسْعَةُ رُّكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हमीदुन् मजीदुन : अर्थात प्रशंसा योग्य,
अति गौरवशाली । । ।

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व
वाले (और) सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से
है । । ।

जो पापों को क्षमा करने वाला और
प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला, पकड़
करने में कठोर और परम दानशील है ।
उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । उसी
की ओर लौट कर जाना है । । ।

अल्लाह के चिह्नों के बारे में उन लोगों के
अतिरिक्त कोई झगड़ा नहीं करता
जिन्होंने इनकार किया । अतः उनका
खुला-खुला देश में फिरना तुझे किसी
धोखे में न डाले । । ।

उनसे पहले नूह की जाति ने भी
झुठलाया था और उनके पश्चात्
विभिन्न समूहों ने भी । और प्रत्येक
जाति ने अपने रसूल के सम्बन्ध में
यह दूढ़ संकल्प किया था कि वे उसे
पकड़ लें और उन्होंने झूठ के सहारे
झगड़ा किया ताकि उसके द्वारा सत्य
को झुठला दें । तब मैंने उन्हें पकड़
लिया । अतः (देखो) मेरा दण्ड कैसा
था । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيِّ ①

غَافِرِ الدَّنَبِ وَقَابِلِ التَّوْبَ شَدِيدِ
الْعِقَابِ ذِي الظُّولِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
إِلَيْهِ الْمُصِيرُ ①

مَا يَجَادِلُ فِي آيَتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَلَا يَعْرِزُكَ تَقْلِيبُهُمْ فِي الْأَرْضِ ①

كَذَّبُتُ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نَوْجٌ وَ الْأَحْزَابُ
مِنْ بَعْدِهِمْ وَ هَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ
بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَ جَدَّلُوا بِالْبَاطِلِ
لِيَدْحُضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذُوهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابٌ ①

और इसी प्रकार तेरे रब्ब का यह आदेश
उन लोगों के विरुद्ध जिन्होंने इनकार
किया, अवश्य पूरा उतरता है कि वे
आग में पड़ने वाले हैं । ७।

वे जो अर्श को उठाए हुए हैं और वे जो
उसके आस-पास हैं, वे अपने रब्ब की
प्रशंसा के साथ गुणगान करते हैं और
उस पर ईमान लाते हैं और उन लोगों के
लिए क्षमा माँगते हैं, जो ईमान लाए ।
हे हमारे रब्ब ! तू हर चीज़ पर दया
और ज्ञान के साथ छाया हुआ है । अतः
वे लोग जिन्होंने प्रायश्चित्त किया और
तेरे मार्ग का अनुसरण किया उनको
क्षमा कर दे और उनको नरक के अज्ञाब
से बचा । ८।

और हे हमारे रब्ब ! उन्हें और उनके
पूर्वज और उनके साथियों और उनकी
संतान में से जो नेकी को अपनाने वाले
हैं, उन सब को स्थायी स्वर्गों में प्रविष्ट
कर दे जिनका तूने उनसे वादा कर रखा
है । निःसन्देह तू ही पूर्ण प्रभुत्व वाला
(और) परम विवेकशील है । ९।

और उन्हें बुराइयों से बचा । और जिसे
तूने उस दिन बुराइयों (के परिणामों) से
बचाया तो निःसन्देह तूने उस पर बहुत
कृपा की और यही बहुत बड़ी सफलता
है । १०। (रुक् । ६)

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया
उन्हें पुकारा जाएगा कि अल्लाह की
नाराजगी तुम्हारी पारस्परिक
नाराजगियों के मुकाबले पर अधिक बड़ी

وَكَذِلِكَ حَقْتُ كَلْمَتَ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ⑦

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ
يَسِّخُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا إِرْبَنا
وَسُخْتَ كُلُّ شَيْءٍ بِرَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ
لِلَّذِينَ تَابُوا وَأَتَبُوا وَاسْبِلْكَ وَقِيمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑧

رَبَّنَا وَآذْخِلْهُمْ جَهَنَّمَ عَذْنِ الْقَنِ
وَعَذْنَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ أَبْيَاهُمْ
وَأَرْوَاجِهِمْ وَدَرِيلِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑨

وَقِيمُ السَّيَّاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيَّاتِ
يُوْمَيْدٌ فَقَدْ رَحْمَتَهُ وَذِلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَنْدَوْنَ لَمْقَتَ اللَّهُ
أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفَسَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ

थी, जिस समय तुम ईमान की ओर बुलाए जाते थे फिर भी इनकार कर देते थे । 111।

वे कहेंगे, हे हमारे रब ! तूने हमें दो बार मृत्यु दी और दो ही बार जीवन प्रदान किया । अतः हम अपने पापों का स्वीकार करते हैं । तो क्या (इससे बच) निकलने का कोई मार्ग है ? 112।*

तुम्हारी यह दशा इस लिए हुई है कि जब भी अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था तुम उसका इनकार कर देते थे । और यदि उसका साझीदार ठहराया जाता था तो तुम मान लेते थे । अतः निर्णय का अधिकार अल्लाह ही को है जो सर्वोच्च (और) सर्वश्रेष्ठ है । 113।

वही है जो तुम्हें अपने चिह्न दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका उतारता है । और वही उपदेश प्राप्त करता है जो ब्रुकता है । 114।

अतः अल्लाह के लिए आज्ञाकारिता को विशुद्ध करते हुए उसी को पुकारो चाहे काफिर नापसंद करें । 115।

वह ऊँचे दर्जों वाला, अर्श का स्वामी है । अपने भक्तों में से जिस पर चाहे अपने आदेश से रुह को उतारता है ताकि वह साक्षात्कार के दिन से डराए । 116।

إِلَى الْإِيمَانِ فَتُكَفِّرُونَ ⑩

قَالُوا رَبَّنَا أَمْتَنَا أَسْتَئِنِ وَأَحْيِنَا
أَسْتَئِنِ فَاعْتَرَفُنا بِذَنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى
خَرْجٍ مِّنْ سَيِّلٍ ⑪

ذِلِّكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ
كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرِكْ بِهِ تُؤْمِنُوا
فَإِنْ حُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ⑫

هُوَ الَّذِي يَرِيْكُمْ أَيْتَهُ وَيَنْزِلُ لَكُمْ
مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَنْ يُتَبِّعُ ⑬

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَا وَكِرَةَ
الْكُفَّارُونَ ⑭

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقَى
الرُّوحُ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ⑮

* प्रत्यक्ष रूप में तो एक ही बार मनुष्य मरता है, हाँ उसका दो बार जीवित होना समझ में आ जाता है। एक यह जीवन और एक परकालीन जीवन। आयत तूरे हमें दो बार मृत्यु दी में पहली मृत्यु से अभिप्राय पूर्णरूपेण अनस्तित्वता है। अर्थात् तूने हमें पहली बार अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया।

जिस दिन वे निकल खड़े होंगे । उनकी कोई बात अल्लाह से छिपी न होगी । आज के दिन साम्राज्य किसका है ? अल्लाह ही का है जो अकेला (और) परम पराक्रमी है । 17।

आज प्रत्येक जान को उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो उसने कमाया । आज कोई अत्याचार नहीं होगा । निःसन्देह अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है । 18।

और उन्हें समीप आ जाने वाली पकड़ के दिन से डरा जब दिल शोक और भय से गले तक आ पहुँचेंगे । अत्याचारियों के लिए न कोई घनिष्ठ मित्र होगा और न कोई ऐसा सिफारिश करने वाला जिसकी बात मानी जाए । 19।

वह आँखों की ख्यानत को भी जानता है और उसे भी (जानता है) जो सीने छिपाते हैं । 20।

और अल्लाह सत्य के साथ निर्णय करता है और जिन को वे लोग उसके सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का भी निर्णय नहीं करते । निःसन्देह अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है । 21। (रुक् 2)

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अन्त कैसा हुआ जो उन से पहले थे ? वे उनसे शक्ति में और धरती में (अपनी) छाप छोड़ने की दृष्टि से उनसे अधिक सशक्त थे । अतः अल्लाह ने उनको भी

يَوْمَ هُمْ بِرَزْوَنَ هُلَا يَخْفِي عَلَى اللَّهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ مُّعَجَّلٌ لِمَنِ الْمُكْلُكُ الْيَوْمُ
لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ⑦

الْيَوْمَ تَجْزِي كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ⑧

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَزْفَةِ إِذَا الْقُلُوبُ
لَدَى الْحَاجِرِ كَظِيمِينَ مَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ⑨

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تَخْفِي
الصَّدَّوْرُ ⑩

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْسَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑪

أَوْلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مُنْ
قْبَلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَأَثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخْذَهُمُ اللَّهُ

उनके पापों के कारण पकड़ लिया ।
और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई
न था । 122।

यह इस कारण हुआ कि उनके पास
उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आते रहे
फिर भी उन्होंने इनकार कर दिया ।
अतः अल्लाह ने उनको पकड़ लिया ।
निःसन्देह वह बहुत शक्तिशाली (और)
दण्ड देने में कठोर है । 123।

और निःसन्देह हमने मूसा को भी अपने
चिह्नों और सुस्पष्ट प्रबल प्रमाण के साथ
भेजा था । 124।

फिर औन और हामान और कारून की
ओर । फिर उन्होंने कहा, यह तो जादूगर
(और) बहुत झूठा है । 125।

अतः जब वह (मूसा) हमारी ओर से
सत्य लेकर उनके पास आया तो उन्होंने
कहा, उन लोगों के पुत्रों का वध करो
जो उसके साथ ईमान लाए और उनकी
स्त्रियों को जीवित रखो । और काफिरों
की योजना विफल होने के अतिरिक्त
कोई महत्व नहीं रखती । 126।

और फिर औन ने कहा, मुझे तनिक
छोड़ो कि मैं मूसा का वध करूँ और वह
अपने रब्ब को पुकारे । निःसन्देह मैं
डरता हूँ कि वह तुम्हारा धर्म परिवर्तित
कर देगा अथवा धरती में फ़साद फैला
देगा । 127।

और मूसा ने कहा, निःसन्देह मैं अपने
रब्ब और तुम्हारे रब्ब की शरण में
आता हूँ प्रत्येक ऐसे अहंकारी से जो

بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ قُوَّةٍ ⑩

ذَلِكَ بِإِنَّهُمْ كَانُوا تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبُشِّرَى فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ
قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑪

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ إِلَيْنَا وَسُلَطْنِ
مُّهَيْبِينَ ⑫

إِلَى فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا
سِحْرٌ كَذَابٌ ⑬

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
أَفْتَلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
وَاسْتَحْيِوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدَ
الْكُفَّارُ بِالْأَلِفِ صَلِيلٍ ⑭

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرْرُونِيْ أَقْتُلْ مُوسَىٰ
وَلْيُدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ
الْفَسَادَ ⑮

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرِبِّيْ وَرَبِّكُمْ

مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٦﴾
खेता 128। (रुकू -३)

और फिरआौन की संतान में से एक मोमिन पुरुष ने जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा, कि क्या तुम केवल इस लिए एक व्यक्ति का वध करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब्ब अल्लाह है। और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न लेकर आया है। यदि वह झूठा निकला तो निःसन्देह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और यदि वह सच्चा हुआ तो जिन बातों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेगी। निःसन्देह अल्लाह उसे हिदायत नहीं दिया करता जो सीमा से बढ़ा हुआ (और) अत्यन्त झूठा हो। 129।*

हे मेरी जाति ! आज तो तुम्हारा साम्राज्य इस अवस्था में है कि तुम धरती पर विजय प्राप्त करते जा रहे हो। परन्तु अल्लाह के अज्ञाब की पकड़ से कौन हमारी सहायता करेगा यदि वह हम तक आ पहुँचे ? फिरआौन ने कहा, मैं जो

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ جُّ ۖ مِنْ أَلِ فِرْعَوْنَ
يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتَلُونَ رَجُلًا أَنْ
يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبُشْرَى
مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَإِنْ يَكُنْ كَذِبًا فَعَلَيْهِ
كَذِبَةٌ ۖ وَإِنْ يَكُنْ صَادِقًا يَصْبِغُ
بَعْضُ الَّذِي يَعْدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مِنْ هُوَ مُشْرِفٌ كَذَابٌ ⑩

يَقُومُ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهِيرَيْنَ فِي
الْأَرْضِ ۖ فَمَنْ يَئْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنَّ
جَاءَنَا ۖ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أَرِيكُمْ إِلَّا

* जिस मोमिन पुरुष का इस आयत में वर्णन है वह फिरआौन के निकट-सम्बन्धियों तथा बड़े सरदारों में से था। और हज़रत आसिया की भाँति वह भी हज़रत मूसा अलै. पर ईमान ले आया था। परन्तु अपना ईमान गुप्त रखा हुआ था। इस आयत से पता चलता है कि जब फिरआौन और उसके सरदार हज़रत मूसा के वध का निर्णय कर रहे थे तो उस समय उसने अपने इस गुप्त ईमान को प्रकट कर दिया। और उनको समझाया कि वे अपनी इस हरकत से रुक जाएँ और यह तर्क दिया कि यदि वह झूठा है तो झूठे का झूठ केवल उसी पर पड़ा करता है। जिस पर उसने झूठ बांधा है वह आप ही उसे पकड़ेगा। परन्तु यदि वह सच्चा निकला तो ऐसी विपत्तियाँ जिनकी वह भविष्यवाणी करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हारे पीछे लग जाएँगी यहाँ तक कि तुम तबाह कर दिए जाओगे। सच्चे नवियों की सदा से यह एक पहचान है। और जिन लोगों की ओर नबी भेजे जाते हैं उनके लिए भी एक स्थायी उपदेश है।

कुछ समझता हूँ ऐसा ही तुम्हें समझा रहा हूँ । और मैं हिदायत के पथ के अतिरिक्त किसी दूसरी ओर तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं करता । 30।

और उसने जो ईमान लाया था कहा : हे मेरी जाति ! निःसन्देह मैं तुम पर (बीती हुई) जातियों के युग जैसा युग आने से डरता हूँ । 31।

नूह की जाति की डगर जैसा युग तथा आद और समूद्र जैसा एवं उन लोगों जैसा जो उनके पश्चात आए । और अल्लाह भक्तों पर अत्याचार का कोई इरादा नहीं रखता । 32।

और हे मेरी जाति ! मैं तुम पर ऐसा समय आने से डरता हूँ जब ऊँची आवाज से एक दूसरे को पुकारा जाएगा । 33।

जिस दिन तुम पीठ फेर कर भाग खड़े होगे । तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं होगा । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे फिर उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं होता । 34।

और निःसन्देह तुम्हारे पास इससे पूर्व यूसुफ भी सुस्पष्ट चिह्न ले कर आ चुका है । परन्तु तुम उस के विषय में सदैव शंका में रहे हो जो वह तुम्हारे पास लाया । यहाँ तक कि जब वह मर गया तो तुम कहने लगे कि अब इसके पश्चात अल्लाह कदापि कोई रसूल नहीं भेजेगा । इसी प्रकार अल्लाह सीमा से बढ़ने वाले (और) शंकाओं में पड़े रहने वाले को पथभ्रष्ट ठहराता है । 35।

مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيْكُمْ إِلَّا سَبِيلٌ
الرَّشَادٌ ⑩

وَقَالَ الَّذِيْقَ امْنَ يَقُومُ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْرَابِ ⑪

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمٍ نَوْجَ وَ عَادٍ وَ نَمُودَ
وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۝ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ
ظُلْمًا لِلْعَبَادِ ⑫

وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
الثَّنَادِ ⑬

يَوْمَ تُوَلَّوْنَ مُذْبِرِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ عَاصِمٍ ۝ وَمَنْ يُفْسِلِ اللَّهُ فَمَالَهُ مِنْ
هَادِ ⑭

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ يَالْبَيْتِ
فَمَا زَلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ يَهُ ۝ حَتَّىٰ
إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَعْمَلَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ
رَسُولًا ۝ كَذِلِكَ يَعْصِي اللَّهُ مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ ⑮

उन लोगों को, जो अल्लाह की आयतों के बारे में बिना किसी प्रबल प्रमाण के जो उनके पास आया हो, झगड़ते हैं। अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है और उनके निकट भी जो ईमान लाए हैं। इसी प्रकार अल्लाह प्रत्येक अहंकारी (और) निर्दयी के दिल पर मुहर लगा देता है । 36।

और फिर औन ने कहा, हे हामान ! मेरे लिए महल बना ताकि मैं उन रास्तों तक जा पहुँचूँ । 37।

जो आकाश के रास्ते हैं ताकि मैं मूसा के उपास्य को ज्ञांक कर देखूँ । परन्तु वास्तव में मैं तो उसे झूठा समझता हूँ । और इसी प्रकार फिर औन के लिए उसके कुकर्म सुन्दर करके दिखाए गए । और वह (सीधे) रास्ते से रोक दिया गया । और फिर औन की योजना असफलता में ढूबने के अतिरिक्त कुछ भी न थी । 38।

(स्कू 4)

और वह व्यक्ति जो ईमान लाया था उसने कहा, हे मेरी जाति ! मेरा अनुसरण करो मैं तुम्हें हिदायत का मार्ग दिखाऊँगा । 39।

हे मेरी जाति ! यह सांसारिक जीवन तो केवल अस्थायी सामान है । और निःसन्देह परलोक ही है जो ठहरने के योग्य स्थान है । 40।

जो भी बुराई करेगा उसे उसी के समान दण्ड दिया जाएगा । और पुरुष और स्त्री में से जो भी नेकी करेगा और वह मोमिन

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِيْ أَيْتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَنٍ أَتَهُمْ كَبَرٌ مُّقْتَأْعِنُدَ اللَّهِ
وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ
عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَهَارٍ ⑩

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهَا مِنْ بَيْنِ يَدِيْ صَرْحًا
لَعَلَّى أَبْلَغُ الْأَسْبَابَ ۖ

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَأَظْلَعَ إِلَيْهِ
مُوسَى وَإِنِّي لَأَظْلَهُ كَذِبًا وَكَذِلِكَ
رَبِّنِي لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصَدَعَنِ
السِّينِ ۚ وَمَا كَيْنَدَ فِرْعَوْنَ إِلَّا
فِي تَبَابٍ ۖ

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقُولُ إِنَّمَا يَعْمَلُ
سَبِيلُ الرَّشَادِ ۖ

يَقُولُ إِنَّمَا هُنَّ الْحَيَاةُ الْأَدْنَى مَتَاعٌ ۖ وَإِنَّ
الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۖ

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجزَى إِلَّا مِثْلَهَا
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ

होगा, तो यही वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे । उसमें उन्हें बेहिसाब जीविका प्रदान की जाएगी । 41।

और हे मेरी जाति ! मुझे क्या हुआ है कि मैं तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ जबकि तुम मुझे अग्नि की ओर बुला रहे हो । 42।

तुम मुझे (इसलिए) बुला रहे हो कि मैं अल्लाह का इनकार कर दूँ और उसका साझीदार उसे ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं । और मैं पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) अपार क्षमा करने वाले की ओर बुलाता हूँ । 43।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जिसकी ओर तुम मुझे बुलाते हो उसे पुकारने का कोई औचित्य न इहलोक में है और न परलोक में । और निःसन्देह हमारा लौट कर जाना तो अल्लाह की ओर है । और निःसन्देह सीमा से बढ़ने वाले ही अग्नि वाले होंगे । 44।

अतः तुम अवश्य उन बातों को याद करोगे जो मैं तुमसे कहता हूँ । और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ । निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 45।

अतः अल्लाह ने उसे उनके घड़यन्त्रों के दुष्परिणामों से बचा लिया । और फिर औन के वंशज को बहुत बुरे अज्ञाब ने धेर लिया । 46।

अग्नि, जिस के समक्ष वे सुबह और शाम पेश किए जाते हैं । और जिस दिन

مُؤْمِنٌ عَنْ قَوْلٍ إِكْ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ
فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ①

وَيَقُولُ مَالِكٌ أَدْعُوكُمْ إِلَى التَّبَوُّءِ
وَتَذَعُونَنِي إِلَى التَّارِ ②

تَذَعُونَنِي لَا كُفَّرَ بِاللَّهِ وَأَشْرِكَ بِهِ مَا
لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى
الْعَزِيزِ الْخَفَّارِ ③

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَذَعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ
دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ
مَرَدَنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمُ
أَصْحَابُ التَّارِ ④

فَسَتَدْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۖ وَأَفْوَضُ
أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِصَاحِبِ الْعِبَادِ ⑤

فَوَقَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِإِلَيْهِمْ
فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ⑥

الْتَّارِ يَعْرَضُونَ عَلَيْهَا غَدُورًا وَعَشِيًّا ۗ

क्यामत घटित होगी (कहा जाएगा कि) फिर औन के वंशज को कठोरतम अज्ञाब में झोंक दो । 147।

और जब वे अग्नि में पड़े झगड़ रहे होंगे तो दुर्बल लोग अहंकार करने वालों से कहेंगे, हम निःसन्देह तुम्हारे अनुयायी थे। अतः क्या तुम अग्नि का कोई अंश हम से दूर कर सकते हो ? । 148।

जिन लोगों ने अहंकार किया वे कहेंगे, निःसन्देह हम सब के सब इसमें हैं । निःसन्देह अल्लाह भक्तों के मध्य निर्णय कर चुका है । 149।

और वे लोग जो अग्नि में होंगे, नरक के दारोगाओं से कहेंगे कि अपने रब से दुआ करो कि हमसे किसी दिन तो कुछ अज्ञाब हल्का कर दे । 150।

वे कहेंगे, तो फिर क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ नहीं आते रहे ? वे कहेंगे, हाँ ! क्यों नहीं । वे उत्तर देंगे कि दुआ करो । परन्तु काफिरों की दुआ व्यर्थ जाने के अतिरिक्त कोई महत्व नहीं रखती । 151।

(रुक् ٥٠)

निःसन्देह हम अपने रसूलों की और उनकी जो ईमान लाए, इस संसार के जीवन में भी सहायता करेंगे और उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे । 152।*

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ ۝ أَذْخِلُوا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ④

وَإِذْ يَسْتَحْجُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضَّعَفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ بَعْدًا فَهُمْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنِّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ④

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلُّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ④

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لَهُنَّ نَّاجِيَةٌ كَجَهَنَّمَ ادْعُوا وَارْبَكُمْ يُخْفَفُ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ④

قَالُوا أَوْلَمْ تَكُنْ تَأْتِيَنَا مُرْسَلُكُمْ بِالْبَيْتِ ۝ قَالُوا بَلِي ۝ قَالُوا فَادْعُوا ۝ وَمَا دَعَوْنَا الْكُفَّارِ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

إِنَّا لَنَصَرْ رَسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝

* अल्लाह तआला अपने नबियों को निश्चित रूप से अपनी ओर से सहायता प्रदान करता है । आयतांश उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे से अभिप्राय क्यामत अर्थात निर्णय का दिन है । जिस दिन अपराधियों के विरुद्ध असंघ अकात्र्य प्रमाण प्रस्तुत किए जाएंगे ।

जिस दिन अत्याचारियों को उनकी क्षमा-याचना कोई लाभ नहीं देगी। और उनके लिए ला'नत होगी और उनका बहुत बुरा धर होगा। 153।

और निःसन्देह हमने मूसा को हिदायत प्रदान की और बनी-इसाईल को पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया। 154।

जो बुद्धिमानों के लिए हिदायत थी और उपदेश भी। 155।

अतः धैर्य धर। निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपनी भूल-चूक के सम्बन्ध में क्षमायाचना कर। और अपने रब्ब की स्तुति करने के साथ शाम को और सुबह को भी (उसका) गुणगान कर। 156।*

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों के बारे में ऐसी किसी ठोस दलील के बिना झगड़ते हैं जो उनके पास आई हो, उनके दिलों में ऐसी बड़ाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जिसे वे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अतः अल्लाह की शरण मांग। निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है। 157।

निःसन्देह आकाशों और धरती की उत्पत्ति मनुष्य की उत्पत्ति से बहुत बढ़ कर है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। 158।

يَوْمَ لَا يَسْقُطُ الظَّلِيمُونَ مَعْذِرٌ لَّهُمْ وَلَهُمْ
اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ①

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْهَدَى وَأُورَثْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ②

هَدَىٰ وَذِكْرٌ لِّأُولَئِكَ الْأَنْبَابِ ③

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حُقْقٌ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْبِكَ وَسَيَّغْ بِخَمْدَرِ تِلْكَ بِالْعَشِيقِ
وَالْأَبْكَارِ ④

إِنَّ الَّذِينَ يَحَاذِلُونَ فِي أَيْتِ اللَّهِ بَغْيَرِ
سُلْطَنٍ أَتَهُمْ إِنْ فِي صَدُورِهِمْ إِلَّا
كَبُرُّ مَا هُمْ بِالْغَيْرِ فَأَسْتَعِذُ بِاللَّهِ إِنَّهُ
هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑤

لَخَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ
خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ⑥

* हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में “जम्बुन” शब्द प्रयुक्त किया गया है इससे भूल-चूक अभिप्राय है, न कि कोई पाप।

और अंधा और देखने वाला समान नहीं हो सकते। इसी प्रकार वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए वे और बुराई करने वाले एक समान नहीं हो सकते। बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो। 159।

निःसन्देह निर्धारित घड़ी अवश्य आकर रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। 160।

और तुम्हारे रब्ब ने कहा, मुझे पुकारो मैं तुम्हें उत्तर दूँगा। निःसन्देह वे लोग जो मेरी उपासना करने से अपने आप को ऊँचा समझते हैं (वे) अवश्य नरक में अपमानित होकर प्रविष्ट होंगे। 161।

(रुकू ٦)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम पाओ और दिन को दिखाने वाला बनाया। निःसन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है। परन्तु अधिकतर मनुष्य कृतज्ञता प्रकट नहीं करते। 162।

यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब, प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता। उसके सिवा कोई उपास्य नहीं। फिर तुम किधर बहकाए जाते हो? 163।

इसी प्रकार वे लोग बहकाए जाते हैं जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं। 164।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया। और

وَمَا يَسْتَوِي الْأَغْنُى وَالْبَصِيرُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلَاحَتِ وَلَا
الْمُسِيءُ^١ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ^٢

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيهِ لَا رَيْبٌ فِيمَا أَوْلَىٰ
أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ^٣

وَقَالَ رَبُّكُمْ اذْعُوْنِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ^٤
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيِّدُ الْخَلُوْنَ جَهَنَّمَ دُخْرِيْنَ^٥

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَيْمَانَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا^٦ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَىٰ
النَّاسِ وَلِكُنْ أَكْثَرُ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ^٧

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ^٨
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَإِنِّي تُوْفَكُونَ^٩

كَذِلِكَ يُؤْفَلُ الَّذِينَ كَانُوا بِأَيْمَانِ اللَّهِ
يَجْحَدُوْنَ^{١٠}

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا

आकाश को (तुम्हारे) जीवन का आधार बनाया। और उसने तुम्हें आकृति प्रदान की और तुम्हारी आकृतियों को बहुत अच्छा बनाया। और तुम्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान किया। यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब। अतः एक वही अल्लाह बरकत वाला सिद्ध हुआ जो समस्त लोकों का रब्ब है। 165।

वही जीवित है। उसके सिवा कोई उपास्य नहीं। अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो। समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है। 166।

तू कह दे कि नि:सन्देह मुझे मना किया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। जबकि मेरे पास मेरे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न आ चुके हैं। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त लोकों के रब्ब का पूर्ण आज्ञाकारी हो जाऊँ। 167।

वही है जिसने (पहली बार) तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर तुम्हें शिशु के रूप में बाहर निकालता है। और फिर यह सामर्थ्य प्रदान करता है कि तुम अपनी परिपक्व आयु को पहँचो ताकि फिर यह संभावना हो कि तुम बूढ़े हो जाओ। और ताकि तुम अन्तिम निर्धारित समय तक पहुँच जाओ। हाँ कुछ तुम में से ऐसे भी हैं जिन्हें पहले

وَالسَّمَاءَ بِنَاءٌ وَصَوْرَكُمْ فَأَخْسِنَ
صُورَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ
ذَلِكُمْ رَبُّكُمْ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ
الْعَلَمِينَ ⑦

هُوَ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ
مُحْلِصِينَ لَهُ الدِّينُ لَهُ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَلَمِينَ ⑧

قُلْ إِنِّي نَهِيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُوْنِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ
مِنْ رَبِّنِيْ ۖ وَأُمْرَتُ أَنْ أَسْلِمَ
لِرَبِّ الْعَلَمِينَ ⑨

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
لُظْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلْقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طَفْلًا
ثُمَّ يَسْبِلُغُوكُمْ أَشْدَدَكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوكُمْ
شَيْوَحًا ۖ وَمِنْكُمْ مَنْ يَتَوَفَّ مِنْ قَبْلِ
وَلِتَسْبِلُغُوكُمْ أَجَلًا مُسَعًّى ۖ وَلَعَلَّكُمْ

ही मृत्यु दे दी जाती है और (यह व्यवस्था इस कारण है) ताकि तुम बुद्धि से काम लो । 68।

वही है जो जीवित करता है और मारता है । अतः जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो केवल उसे यह कहता है कि “हो जा” तो वह होने लगती है और होकर रहती है । 69। (एक 7/2)

क्या तूने ऐसे लोग नहीं देखे जो अल्लाह के चिह्नों के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क करते हैं ? वे कहाँ फिराए जा रहे हैं ? । 70।

वे लोग जिन्होंने पुस्तक का और उन बातों का इनकार कर दिया जिनके साथ हम अपने रसूल भेजते रहे । अतः वे शीघ्र जान लेंगे । 71।

जब तौक उनकी गर्दनों में होंगे और ज़ंजीरें भी, (जिनसे) वे घसीटे जाएँगे । 72।

खौलते हुए पानी में, उसके पश्चात वे अग्नि में झोक दिए जाएँगे । 73।

फिर उनसे पूछा जाएगा, कहाँ हैं वे जिनको तुम उपास्य ठहराया करते थे । 74।

अल्लाह के सिवा ? वे कहेंगे हमसे वे गुम हो गए हैं । बल्कि हम तो इससे पहले किसी चीज़ को भी नहीं पुकारते थे। इसी प्रकार अल्लाह काफिरों को पथभ्रष्ट ठहराता है । 75।

यह इस लिए है कि तुम धरती में अनुचित रूप से खुशियाँ मनाया करते

تَعْقِلُونَ ④

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمْيِتُ فَإِذَا قَضَى أَمْرًا
فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ مَنْ فِيهِنَّ ۝

الْمُرْتَرِ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ
أَلِّي يَصْرَقُونَ ۝

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ
رَسْلَنَا شَفَّقَ سَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

إِذَا أَغْلَلُ فِي أَغْنَاقِهِمْ وَالسَّلِيلُ
يُشَحِّبُونَ ۝

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝
ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ آيَنَ مَا كُنْتُمْ تَشْرِكُونَ ۝

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ قَالُوا صَلُوْا عَنَّا بِلَمْ
نَكُنْ نَدْعُو مِنْ قَبْلِ شَيْئًا كَذَلِكَ يَضْلُلُ
اللَّهُ الْكُفَّارُ ۝

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ

थे। और इसलिए (भी) कि तुम इतराते फिरते थे । 76।

नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ । (तुम) इसमें एक लम्बे समय तक रहने वाले हो । अतः अहंकार करने वालों का ठिकाना बहुत बुरा है । 77।

अतः तू धैर्य धर । निःसन्देह अल्लाह का बादा सच्चा है । हम चाहें तो तुझे उस चेतावनी में से कुछ दिखादें जिससे हम उन्हें डराया करते थे अथवा तुझे मृत्यु दें । तो हर हाल में वे हमारी ओर ही लौटाए जाएंगे । 78।

और निःसन्देह हमने तुझ से पहले भी रसूल भेजे थे । कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका वर्णन हमने तुझ से कर दिया है और कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका हमने तुझसे वर्णन नहीं किया । और किसी रसूल के लिए संभव नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई चिह्न ले आए । अतः जब अल्लाह का आदेश आ जाएगा तो सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा । और उस समय झुठलाने वाले

घाटा उठाएंगे । 79।* (रुकू ٨ / ١٣)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाय बनाए ताकि तुम उनमें से

بِعَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٦﴾

أَذْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا
فَإِنَّمَا مَشَوَى الْمُشَكِّرِينَ ﴿٧٧﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَامَّا تَرَيَّنَكَ
بَعْضُ الَّذِي لَعَنَهُمْ أَوْ سَوْفَ فَيَئِنَّكَ فَإِلَيْنَا
يُرْجَعُونَ ﴿٧٨﴾

وَلَقَدْ أَرَسْلَنَا رَسُّلًا مِّنْهُمْ
مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ
نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ
يَأْتِي بِإِيمَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ
اللَّهُ فُصِّلَ بِالْحَقِّ وَحِسْرَهُنَالِكَ
الْمُبْطَلُونَ ﴿٧٩﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتُرْكَبُوا

* इस आयत में पहली उल्लेखनीय बात यह है कि असंख्य नवियों में से केवल कुछ का वर्णन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा किया गया है । परन्तु नवियों की कुल संख्या यह नहीं है । प्रत्येक प्रकार के नवियों में से ये कुछ नमूने के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं । और इन सब के सामूहिक नमूने के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वर्णन है । पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समेत कुल पच्चीस नवियों का वर्णन है जैसा कि बाइबिल के नये-नियम की पुस्तक 'प्रकाशितवाक्य' अध्याय-4 की भविष्यवाणी में वर्णन किया गया था ।

कुछ पर सवारी करो और उन्हीं में से कुछ को तुम भोजन के लिए प्रयोग में लाते हो । 80।

और तुम्हरे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं । और यह कि तुम उन पर सवार हो कर अपनी उस मनोरथ को प्राप्त करो जो तुम्हरे सीनों में है । और उन पर तथा नौकाओं पर तुम सवार किये जाते हो । 81।

और तुम्हें वह अपने चिह्न दिखाता है । अतः अल्लाह के किन-किन चिह्नों का तुम इनकार करोगे ? । 82।

अतः क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे ? वे उनसे संख्या में अधिक थे और शक्ति में भी । तथा धरती में (बड़ाई के) चिह्न छोड़ने की दृष्टि से भी अधिक सशक्त थे । फिर भी जो वे कमाया करते थे, वह उनके कुछ काम न आए । 83।

अतः जब उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आए तो वे उसी ज्ञान पर खुश रहे जो उनके पास था । और उनको उसी बात ने घेर लिया जिससे वे उपहास किया करते थे । 84।

अतः जब उन्होंने हमारा अज्ञाब देखा तो कहा, हम अल्लाह पर जो अद्वितीय है ईमान ले आए हैं और उन सब बातों का इनकार करते हैं । जिनसे हम उसका साझीदार ठहराया करते थे । 85।

مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١﴾

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعٌ وَلَتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِي سُدُورٍ كُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْقُلُبِ
تُحْمَلُونَ ﴿٢﴾

وَيَرِيْكُمْ أَيْتِهِ فَإِنَّ اللَّهَ
شَكِرُونَ ﴿٣﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّنِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَارًا
فِي الْأَرْضِ فَمَا آتَيْنَاهُمْ مَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٤﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُلُهُمْ بِالْبُيُّنَاتِ فَرِحُوا
بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٥﴾

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا أَمَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
وَكَفَرُنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٦﴾

अतः उनका ईमान उस समय उन्हें
कुछ लाभ न दे सका जब उन्होंने
हमारा अज्ञाव देख लिया । अल्लाह के
उस नियम के अनुसार जो उसके
भक्तों के सम्बन्ध में बीत चुका है
और उस समय काफिरों ने बड़ा घाटा
उठाया । 86। (रुकू॑ १४)

فَلَمْ يَكُنْ يُنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا
بِأُسْتَارٍ سَيِّئَاتِ اللَّهِ الْوَالِقِيِّ قَدْ خَلَتْ فِي
عِبَادِهِ وَخَسِرَ هَذَا لِكُلِّ الْكُفَّارِ ۝

41- सूरः हा मीम अस-सज्दः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं।

सूरः अल मु'मिन के पश्चात् सूरः हा मीम अस सज्दः आती है जिसका आरम्भ हा मीम खण्डाक्षरों से ही किया गया है।

इस सूरः के आरम्भ ही में यह दावा किया गया है कि कुरआन एक ऐसी सरल और शुद्ध भाषा में अवतरित हुआ है जिसने विषयवस्तुओं को खोल-खोल कर वर्णन किया है। परन्तु इसके उत्तर में इनकार करने वाले कहते हैं कि हमारे दिल पर्दे में हैं। हमारे कानों में बहरापन है और तुम्हारे और हमारे बीच एक ओट है। और रसूल को सम्बोधित कर के यह चुनौति देते हैं कि तू भले ही जो चाहता है करता रह, हम भी एक संकल्प लेकर अपने कामों में व्यस्त हैं। यहाँ यह नहीं सोचना चाहिए कि नवियों को शत्रु खुली छुट्टी दे देता है कि जो चाहें करें बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि तू अपने स्थान पर काम कर और हम इन कामों को असफल बनाने का सदा प्रयत्न करते रहेंगे।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसका यह उत्तर सिखाया गया कि तू उनसे कह दे कि यद्यपि मैं तुम्हारे जैसा ही मनुष्य हूँ परन्तु मुझ पर जो वहइ उत्तरी है उसके परिणाम स्वरूप तुम्हारे और मेरे बीच धरती और आकाश के समान अन्तर पड़ चुका है।

इस सूरः में कुछ ऐसी आयतें हैं जिन्हें ना समझने के कारण कुछ लोग उन पर आपत्ति करते हैं। उदाहरणतः आयत सं. 11 से 13 के विषय में वे समझते हैं कि सुष्टि के आरम्भ में सारा ब्रह्माण्ड एक धुंध की भाँति वातावरण में फैल गया था, उसी का वर्णन किया जा रहा है हालाँकि धरती की उत्पत्ति तो उसके बहुत बाद हुई है।

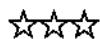
वास्तव में यहाँ यह विषय वर्णन हो रहा है कि धरती में खुराक की जो व्यवस्था है उसे चार युगों में संपूर्ण किया गया है। और पर्वतों की उत्पत्ति ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई है। फिर इसके पश्चात् यह कहा गया कि इसके ऊपर का आकाश एक धुँए के रूप में था। यह धुँआ वास्तव में ऐसे वाष्पकणों के रूप में था जो धरती के निकटवर्ती सात आकाशों से भी बहुत ऊँचा था और बार-बार जब वह वाष्पकण धरती पर बरसते थे तो गर्मी की अधिकता के कारण फिर धुआँ बनकर आकाश की ऊँचाइयों में उठ जाते थे। एक बहुत लम्बे समय तक धरती की यही अवस्था रही। और अन्ततः वह पानी धरती पर बरस कर समुद्रों के रूप में धरती में फैल गया जहाँ से वाष्पकणों के रूप में उठ कर पर्वतों से टकरा कर फिर वापिस धरती पर बरसने लगा। इसके बाद दो युगों में धरती के निकटवर्ती सभ आकाश संपूर्ण किए गए। और आकाश की प्रत्येक परत को मानो

निश्चित आदेश दे दिया गया कि तुमने यह कार्य करना है। आज वैज्ञानिक धरती के आस-पास सात परतों में बंटे हुए आकाश का वर्णन करते हैं। तो उसकी प्रत्येक परत की एक निश्चित कार्य का वर्णन करते हैं जिसके बिना धरती पर मनुष्य का जीवन संभव नहीं था। आकाश की ये सारी परतें धरती और धरती वासियों की सुरक्षा पर ही लगी हुई हैं।

जिस दृढ़ता की हजरत मुहम्मद सल्ल. को शिक्षा दी गई इसकी व्याख्या और फिर उसके महान प्रतिफल का दो भागों में वर्णन है। पहले भाग में तो समस्त मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि यदि वे शत्रु के अत्याचारों के विरुद्ध दृढ़ता दिखाएँगे तो अल्लाह तआला ऐसे फरिश्ते उन पर उतारेगा जो उनके दिल की ढाढ़स बंधाएँगे और उनसे वार्तालाप करते हुए उन्हें सांत्वना देंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और परलोक में भी तुम्हारे साथ होंगे।

इसके पश्चात उन आयतों में जिनका आरम्भ और बात कहने में उससे श्रेष्ठ कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये से होता है, इस विषय को और आगे बढ़ाते हुए कहा कि यदि दृढ़ता के साथ अपनी सुरक्षा के अतिरिक्त अल्लाह पर भरोसा करते हुए तुम उनको धैर्य और बुद्धिमानी पूर्वक संदेश पहुँचाने में सुस्ती नहीं करोगे तो वे जो तुम्हारी जान के प्यासे शत्रु हैं वे एक समय तुम पर जान न्योछावर करने वाले मित्र बन जाएँगे। परन्तु यह चमत्कार सबसे शानदार रूप में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पूरा हुआ जो सब धैर्य धरने वालों से अधिक धैर्य धरने वाले थे। और आप सल्ल. को धैर्य धरने की एक महान शक्ति प्रदान की गई थी और वास्तव में आप सल्ल. के जीवन में ही आप के जानी दुश्मन बहुसंख्या में आप पर जान न्योछावर करने वाले मित्रों में परिवर्तित हो गए।

इस सूरः के अन्त पर यह वर्णन किया गया है कि हम उन लोगों को जो अल्लाह से भेट करने के इनकारी हैं, बहुत से चिह्न दिखाएँगे जिनका सम्बन्ध क्षितिजों पर प्रकट होने वाले चिह्नों से भी होगा। और उस आश्चर्यजनक जीवन व्यवस्था से भी होगा जो अल्लाह तआला ने उनके शरीरों के अन्दर रखा है। अतः जिनको क्षितिजों पर और अपने अन्तर में दृष्टि डालने का सौभाग्य मिलेगा, उनकी यही घोषणा होगी कि हे हमारे रब्ब ! तू ने इस (ब्रह्माण्ड) को व्यर्थ उत्पन्न नहीं किया। तू पवित्र है। अतः हमें आग के अज्ञाब से बचा।



سُورَةُ حِمَّ السَّجْلَةُ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ خَمْسٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَسَتُّ رُكُونٍ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हमीदुन मजीदुन : स्तुति के योग्य और
अति गौरवशाली । । ।

इसका अवतरण अनन्त कृपा करने वाले
(और) बार-बार दया करने वाले
(अल्लाह) की ओर से है । । ।

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें
एक ऐसे कुरआन के रूप में हैं जो
अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है,
उन लोगों के लाभार्थ खोल-खोलकर
वर्णन कर दी गई हैं जो ज्ञान रखते हैं । । ।

शुभ-समाचार दाता और सतर्कारी के
रूप में । अतः उनमें से अधिकतर ने मुख
मोड़ लिया और वे सुनते नहीं । । ।

और उन्होंने कहा कि जिन बातों की
ओर तू हमें बुलाता है उनसे हमारे दिल
पढ़ों में हैं । और हमारे कानों में एक
बहरापन है और हमारे और तुम्हारे बीच
एक ओट है । अतः तू जो चाहे कर,
निःसन्देह हम भी कुछ करने वाले हैं । । ।

तू कह दे, मैं केवल तुम्हारी भाँति एक
मनुष्य हूँ । मेरी ओर वहद की जाती है कि
तुम्हारा उपास्य केवल एक उपास्य है ।
अतः उसके समक्ष दृढ़तापूर्वक खड़े हो
जाओ और उससे क्षमा याचना करो । और
शिर्क करने वालों का सर्वनाश हो । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اَهْمَدٌ

تَزْئِيلُ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ②

كِتَابٌ فَصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ③

بِشِّيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ حُلَا يَسْمَعُونَ ④

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكْثَرِهِ مِمَّا تَدْعُونَا
إِلَيْهِ وَفِي أَذَانِنَا وَقُرُونَ وَمِنْ بَيْنَ نَأْوَيْنَا
حَاجَبٌ فَاعْمَلْ إِنَّا عَمَلُونَ ⑤

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُؤْتَى إِلَيْ
أَنَّمَا الْهُكْمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ
وَاسْتَغْفِرُوهُ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْكِنِينَ ⑥

जो जकात नहीं देते और वही हैं जो परलोक का इनकार करने वाले हैं । १।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए अक्षय प्रतिफल हैं । १। (रुकू १५)

तू कह दे, क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने धरती को दो युगों में पैदा किया और तुम उसके साझीदार ठहराते हो ? यह वही है समस्त लोकों का रब्ब । १०।

और उसने उसके ऊंचे क्षेत्रों में पर्वत बनाए और उनमें उसने बरकत रख दी । और उन में उन्हीं से उत्पन्न होने वाले खाने-पीने के सामान चार युगों में इस प्रकार सुव्यवस्थित किये कि वे (सब आवश्यकता पूर्ति की) चाहत रखने वालों के लिए समान हैं । ११।

फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह (आकाश) धुआँ-धुआँ था । और उस (अल्लाह) ने उससे और धरती से कहा कि तुम दोनों इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक चले आओ । उन दोनों ने कहा, हम इच्छापूर्वक उपस्थित हैं । १२।

अतः उसने उनको दो युगों में सात आकाशों के रूप में विभाजित कर दिया। और प्रत्येक आकाश के नियम उसमें वहइ किये । और हमने संसार के (समीपवर्ती) आकाश को दीपमालाओं और सुरक्षा के सामानों के साथ सुशोभित किया । यह पूर्ण

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الْزَكْوَةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كُفَّارُونَ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ أَمْتَوا وَعَمِلُوا الصِّلَاةَ لَهُمْ
أَجْرٌ غَيْرُ مَمْتُونٍ ⑪
قُلْ أَئِنَّكُمْ لَشَكُّرُونَ بِإِلَيْنِي حَقَّ
الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ
أَنْدَادًا ۚ ذَلِكَ رَبُّ الْعَلَمِينَ ⑫

وَجَاءَلَ قِيمَارَوَاسِيَ مِنْ فُوقَهَا وَبِرَكَ
قِيمَها وَقَدْرَ قِيمَها أَقْوَاتَهَا فَأَرْبَعَةَ
آيَامٍ ۗ سَوَاءً لِلْسَّابِلَيْنَ ⑬

لَمَّا اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ
فَقَالَ لَهَا وَلِلأَرْضِ اثْنَيْنِ طُوعًا
أُوكِرْهَا ۖ قَالَتْ آتَيْنَا طَبَاعَيْنَ ⑭

فَقَضَيْنَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ
وَأَوْلَى فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۗ وَزَيَّنَاهَا
السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۗ وَحَفْظًا ۗ ذَلِكَ

प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह)
का विधान है ॥13।

अतः यदि वे मुख मोड़ लें तो तू कह दे
मैं तुम्हें आद और समूद (जाति) को
दिये गये अज़ाब के समान अज़ाब से
डराता हूँ ॥14।

जब उनके पास उनके सामने भी और
उनसे पूर्ववर्ती युगों में भी रसूल (यह
कहते हुए) आते रहे कि अल्लाह के सिवा
किसी की उपासना न करो । उन्होंने
कहा, यदि हमारा रब्ब चाहता तो अवश्य
फ़रिश्ते उतार देता । अतः जिस संदेश के
साथ तुम भेजे गए हो, निःसन्देह हम
उसका इनकार करने वाले हैं ॥15।

फिर रहे आद (जाति के लोग), तो
उन्होंने धरती में अनुचित रूप से
अहंकार किया और कहा, हमसे बढ़कर
शक्तिशाली कौन है ? क्या उन्होंने देखा
नहीं कि अल्लाह जिसने उन्हें पैदा किया
उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली है ?
और वे निरन्तर हमारे चिह्नों का इनकार
करते रहे ॥16।

अतः हमने बड़े अशुभ दिनों में उन पर
एक तेज़ आँधी चलाई ताकि हम उन्हें
(इस) सांसारिक जीवन में अपमान रूपी
अज़ाब चखाएँ । और निःसन्देह परलोक
का अज़ाब अधिक अपमानजनक है ।
और उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी ॥17।
और जहाँ तक समूद (जाति) का
सम्बन्ध है तो हमने उनका भी मार्गदर्शन
किया । परन्तु उन्होंने अन्धेपन को पसन्द

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيِّ ⑩

فَإِنْ أَغْرَصُوا فَقُلْ أَنْذِرْنِيْكُمْ صِحْقَةً
مِثْلَ صِحْقَةِ عَادٍ وَّثَمُودٍ ⑪

إِذْ جَاءَتْهُمُ الرَّسُولُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهُ ۝
قَالُوا لُوْشَاءَ رَبُّنَا لَأَنَّ زَلَّ مَلِكُكَهُ فَإِنَّا
بِمَا أُرْسَلْنَا بِهِ كَفِرُونَ ⑫

فَآمَّا عَادٌ فَاسْتَكَبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحُقْقِ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُ مِنَّا قُوَّةً ۝ أَوْلَمْ
يَرَوُا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُ
مِنْهُمْ قُوَّةً ۝ وَكَانُوا بِإِيمَانِهِمْ جُحَدُونَ ⑬

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِينًا صَرَصَرًا فِي
أَيَّامٍ لَّجِسَاتٍ لِّئِنْدِيقَهُمْ عَذَابٌ
الْخُرُبِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ وَلَعَذَابٌ
الْآخِرَةِ أَخْرَى وَهُمْ لَا يَتَصَرَّفُونَ ⑭

وَآمَّا نَمُوذَفَهُمْ فَاسْتَجْبُوا لِلْعَدْي

करते हुए (उसे) हिदायत पर प्राथमिकता दी। अतः उन्हें अपमानजनक अजाब के रूप में बिजली ने उस कर्माई के कारण पकड़ लिया जो वे किया करते थे। 18।

और जो ईमान लाए और तक्तवा से काम लेते रहे, हमने उन्हें मुक्ति प्रदान की। 19। (रुकू 2/16)

और जिस दिन अल्लाह के शत्रुओं को अग्नि की ओर धेर कर ले जाया जाएगा और वे समूहों में विभाजित किए जाएंगे। 20।

यहाँ तक कि जब वे उस (अग्नि) तक पहुँचेंगे उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े उनके विरुद्ध गवाही देंगे कि वे कैसे कैसे कर्म किया करते थे। 21।

और वे अपने चमड़ों से कहेंगे, तुमने क्यों हमारे विरुद्ध गवाही दी? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह ने हमें बोलने की शक्ति दी, जिसने प्रत्येक वस्तु को वाक्शक्ति प्रदान की है। और वही है जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। 22।

और तुम (इस बात से) छिप नहीं सकते थे कि तुम्हारे विरुद्ध तुम्हारी श्रवण-शक्ति गवाही दे। और न तुम्हारी वृष्टि-शक्ति और न तुम्हारे चमड़े (गवाही दें)। परन्तु तुम यह धारणा कर बैठे थे कि अल्लाह को

عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخْذَتْهُمْ صِحْقَةُ الْعَذَابِ
الْهُؤُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى الشَّارِفَهُ
يُوْزَعُونَ

حَقٌّ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهَدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ

وَقَالُوا إِلَيْهِمْ لَمْ شَهِدْنَا عَلَيْنَا
قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلُّ شَيْءٍ
وَهُوَ خَلَقُكُمْ أَوَّلَ مَرَّةً فَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرُونَ أَنْ يُشَهِّدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ
وَلِكُنْ ظَنَّتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا

तुम्हारे बहुत से कर्मों का ज्ञान ही
नहीं । १२३।*

और तुम्हारी वह धारणा जो तुम अपने
रब्ब के विषय में किया करते थे, उसने
तुम्हें नष्ट कर दिया और तुम हानि
उठाने वालों में से हो गए । १२४।

अतः यदि वे धैर्य धरें तो उनका ठिकाना
अग्नि है । और यदि वे सफाई पेश करें
तो उनकी सफाई स्वीकृत नहीं की
जाएगी । १२५।

और हमने उनके लिए कुछ साथी
नियुक्त कर दिए । अतः उन्होंने उनके
लिए उसे खूब सजा कर प्रस्तुत किया जो
उनके सामने था, अथवा (जो) उनसे
पहले था । अतः उन पर वही आदेश
सत्य सिद्ध हो गया जो उन जातियों पर
सिद्ध हुआ था जो उनसे पूर्व जिन्नों और
मनुष्यों में से बीत चुकी थीं । निःसन्देह
वे लोग घाटा पाने वालों में से थे । १२६।

(रुकू ٣)

और जिन्होंने इनकार किया उन लोगों
ने कहा कि इस कुरआन पर कान न
धरो और उसके पाठ करने के समय

مِمَّا تَعْمَلُونَ ⑭

وَذِكْرُكُمْ ظَاهِنٌ كُمْ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرِبِّكُمْ

أَرْدِنْكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَسِيرِينَ ⑯

فَإِنْ يُصِيرُوا فَالثَّارَ مَفْوِتَ لَهُمْ ۝ وَإِنْ

يَسْتَعْبِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَدِينَ ⑭

وَقَيْصَانُهُمْ قُرَنَاءٌ فَرَزَيْتُو الْهُمَّ مَا بَيْنَ

أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقٌ عَلَيْهِمْ

الْقَوْلُ فِي أَمْمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ

الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا حَسِيرِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ بَرُكُورُوا لَا تَسْمَعُوا لَهُمَا

* आयत सं. 21 से 23 : इन आयतों में कथामत के दिन अपराधियों के विरुद्ध जिन गवाहियों का वर्णन किया गया है उनमें सर्वप्रथम आश्चर्यजनक गवाही त्वचा की गवाही है । उस युग में तो त्वचा की गवाही समझ में नहीं आ सकती थी परन्तु वर्तमान युग में प्राणी-विज्ञान के जानकारों ने निश्चित रूप से सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य की बाह्य और आन्तरिक बनावट को सबसे अधिक त्वचा की प्रत्येक कोशिका में अंकित कर दी गई है । यहाँ तक कि यदि करोड़ों वर्ष पहले का कोई प्राणी इस प्रकार धरती में दबा हो कि उसकी त्वचा की कोशिकायें सुरक्षित हों तो उनमें से केवल एक कोशिका से ही बिल्कुल वैसे ही प्राणी की नए सिरे से उत्पत्ति की जा सकती है । आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) के द्वारा त्वचा की कोशिकाओं से भेड़ों अथवा मनुष्यों की उत्पत्ति किया भी इसी कुरआनी गवाही को प्रमाणित करती है ।

शोर किया करो ताकि तुम विजयी हो जाओ। 127।

अतः हम निःसन्देह उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया कठोर अज्ञाब का स्वाद चखाएँगे और उन्हें उनके कुकर्मों का अवश्य प्रतिफल देंगे। 128।

यह हो कर रहने वाली बात है कि अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिफल अग्नि है। उनके लिए उसमें देर तक रहने का घर है। यह प्रतिफल है उस (बात) का जो हमारी आयतों का जानवृद्ध कर इनकार किया करते थे। 129।

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमें जिन और मनुष्य में से वे दोनों दिखा जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया। इस लिए कि हम उन्हें अपने पैरों के नीचे कुचल डालें ताकि वे घोर अपमानित हो जाएँ। 130।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब्ब है, फिर (इस पर) अडिग रहे, उन पर बार-बार फरिशते (यह कहते हुए) उत्तरते हैं कि भय न करो और शोक न करो और उस स्वर्ग (के मिलने) से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुम्हें बचन दिया जाता है। 131।

हम इस सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और परलोक में भी। और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जिसकी तुम्हारे मन इच्छा करते हैं। और उसमें तुम्हारे लिए

الْقُرْآنَ وَالْغَوَافِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑦
فَلَئِنْدِيْقَنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا عَدَّا بِاَشَدِيْدًا
وَلَتَجْزِيْهُمْ اَسْوَا الَّذِيْنَ كَانُوا
يَعْمَلُوْنَ ⑧

ذِلِّكَ جَرَآءٌ اَعْدَاءُ اللَّهِ وَالثَّارُ لَهُمْ فِيهَا
دَارُ الْخُلُدُ ۖ جَرَآءٌ بِمَا كَانُوا يَأْتِيَا
يَجْحَدُوْنَ ⑨

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا رَبِّنَا اَرِنَا الَّذِيْنَ
أَضْلَلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاَنْسِ نَجْعَلْهُمَا
تَحْتَ أَقْدَامِنَا لَيَكُونُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ⑩

إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ تَمَّ اسْتَقَامُوا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلِكَةُ اَلَا تَخَافُو اَوْلًا
تَحْرَثُوْا وَابْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْنِ كُنْتُمْ
تُوعَدُوْنَ ⑪

نَحْنُ اُولَئِيْكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْاُخْرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا شَتَّهِيْ

वह सब कुछ होगा जो तुम माँगा
करते हो । ३२।*

यह बहुत क्षमा करने वाले (और) बार-
बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर
से आतिथ्य स्वरूप है । ३३। (रुकू॑ ४)
१८

और बात कहने में उससे उत्तम कौन
हो सकता है जो अल्लाह की ओर
बुलाए और नेक कर्म करे और कहे
कि निःसन्देह मैं पूर्ण आज्ञाकारियों में
से हूँ । ३४।

न अच्छाई बुराई के समान हो सकती है
और न बुराई अच्छाई के (समान) ।
ऐसी बात से निवारण कर कि जो
सर्वोत्तम हो । तब ऐसा व्यक्ति जिसके
और तेरे बीच शत्रुता थी मानो वह
सहसा एक प्राण न्योछावर करने वाला
मित्र बन जाएगा । ३५।

और यह दर्जा केवल उन्हीं लोगों को
ही प्रदान किया जाता है जिन्होंने धैर्य
धारण किया । और यह दर्जा केवल
उसे ही प्रदान किया जाता है जो बड़े
भाग्य वाला हो । ३६।

और यदि तुझे शैतान की ओर से कोई
बहका देने वाली बात पहुँचे तो अल्लाह
की शरण माँग । निःसन्देह वही बहुत
सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने
वाला है । ३७।

أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَعُونَ ۖ

نَرُّ لَأَمِنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۖ

وَمَنْ أَخْسَبَ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ
وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ①

وَلَا تَشْتُوِي الْحَسَنَةَ وَلَا السَّيِّئَةَ ۖ إِذْ دُفِعَ
إِلَيْتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْتَكَ وَبَيْتَهُ
عَدَاؤُهُ كَانَهُ وَإِلَيْهِ حَمِيمٌ ۖ ②

وَمَا يَلْفِهَا إِلَّا الظَّنِينَ صَبَرُوا وَمَا
يَلْفِهَا إِلَّا ذُو حَظٍ عَظِيمٌ ۖ ③

وَإِمَّا يَنْزَعَنَكَ مِنَ الشَّيْطَنِ تَرْغُ
فَاسْتَعِدْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ۖ ④

* आयत सं. ३१, ३२ : इन आयतों में वहइ के सदा जारी रहने का वर्णन है । जो उन लोगों पर उतारी
जाएगी जो अल्लाह तआला के लिए दृढ़ता अपनाएँ और परीक्षाओं में अड़िग रहें । जो फरिश्ते उन पर
उतरेंगे वे उनसे कहेंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और अगले संसार में भी तुम्हारे साथ
रहेंगे । और तुम्हारी सब शुभ कामनाएँ पूरी की जाएँगी ।

और उसके चिह्नों में से रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा हैं। न सूर्य को सजदः करो और न चन्द्रमा को। और अल्लाह को सजदः करो जिसने उन्हें पैदा किया यदि तुम केवल उसी की उपासना करते हो। 138।

अतः यदि वे अहंकार करें तो (जान लें कि) वे लोग जो तेरे रब्ब के समक्ष रहते हैं, रात और दिन उसकी स्तुति करते हैं और वे थकते नहीं। 139।

और उसके चिह्नों में से यह भी है कि तू धरती को गिरी हुई अवस्था में देखता है। फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो वह (उपज की दृष्टि से) सक्रिय हो जाती है और फूलने लगती है। निःसन्देह वह जिसने उसे जीवित किया अवश्य मुर्दों को जीवित करने वाला है। निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 140।*

निःसन्देह वे लोग जो हमारी आयतों के बारे में कुटिलता अपनाते हैं, हम से छिपे नहीं रहते। अतः क्या वह जो अग्नि में डाला जाएगा बेहतर है अथवा वह जो क्रयामत के दिन शांति की अवस्था में आएगा? तुम जो चाहो

* यहाँ आकाश से पानी बरसने के पश्चात मृत धरती के जीवित होने का वर्णन है। अतः मृत्यु के पश्चात का जीवन भी इसी विषयवस्तु से सम्बन्ध रखता है। पुनरुत्थान तो सब का होगा परन्तु वास्तविक आध्यात्मिक जीवन उनको मिलेगा जो आकाशीय (आध्यात्मिक) जल के उतरने पर उससे लाभ उठाते हैं। अर्थात् नवियों को स्वीकार करते और उनकी शिक्षा का पालन करते हैं। आकाशीय जल धरती में भी तो प्रत्येक स्थान पर बरसता है परन्तु शुष्क चट्टानों और बंजर धरतियों को कोई लाभ नहीं पहुँचाता। केवल उस धरती को जीवित करता है जिसमें जीवन शक्ति हो।

وَمِنْ أَيْتِهِ الْأَيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا
لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ
إِنْ كُنْتُمْ إِيمَانًا تَعْبُدُونَ ⑩

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَأَلَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ
يُسَيِّحُونَ لَهُ بِإِيمَانِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا
يَسْمَوْنَ ⑪

وَمِنْ أَيْتِهِ الْكَثَرَى الْأَرْضَ خَائِشَةً
فَإِذَا آتَنَا أَنْزَلَنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَرَّتْ
وَرَبَّتْ ١ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمْ يُخْ
الْمَوْتَىٰ ٢ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑫

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحَدُونَ فِي أَيْتَنَا لَا يُخْفَونَ
عَلَيْنَا ٣ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ حَيْرًا مَّنْ
يَا قَ أَمْنَأَيْمَنَ الْقِيَامَةَ ٤ اعْمَلُوا مَا شِئْمَ

करते फिरो, निःसन्देह जो कुछ भी तुम
करते हो वह उस पर गहन दृष्टि रखने
वाला है । 141।

निःसन्देह वे लोग (दण्ड भोग करेंगे)
जिन्होंने उपदेश का (तब) इनकार कर
दिया जब वह उनके पास आया ।
हालाँकि वह एक बड़ी प्रभुत्व वाली और
सम्माननीय पुस्तक के रूप में था । 142।

झूठ उस तक न सामने से पहुँच सकता है
और न उसके पीछे से । परम विवेकशील,
बहुत स्तुति योग्य (अल्लाह) की ओर से
उसका अवतरण हुआ है । 143।

तुम्हे केवल वही कहा जाता है जो तुम्ह से
पूर्ववर्ती रसूलों से कहा गया । निःसन्देह
तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और
पीड़ाजनक अज़ाब देने वाला है । 144।

और यदि हमने उसे अजमी (अर्थात्
अस्पष्ट भाषा युक्त) कुरआन बनाया
होता तो वे अवश्य कहते कि क्यों न
इसकी आयतें खुली-खुली (अर्थात्
समझ आने योग्य) बनाई गईं ? क्या
अजमी और अरबी (समान हो सकते
हैं?) तू कह दे कि वह तो उन लोगों
के लिए जो ईमान लाये हैं हिदायत
और आरोग्य कारी है । और वे लोग
जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में
बहरापन है जिसके परिणाम स्वरूप वह
उन पर अस्पष्ट है । और यही वे लोग
हैं जिन्हें एक दूर के स्थान से बुलाया
जाता है । 145। (रुक्तु)

إِنَّهُمْ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ لَمَّا جَاءَهُمْ
وَإِنَّهُمْ لَكِتَبٌ عَزِيزٌ ②

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ
خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ③

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِرَسُولِ
مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ
وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ④

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا
فُصِّلَتْ آيَاتُهُ لَمْ أَعْجَمِيٌّ وَعَرِيفٌ لَقُلْ
هُوَ لِلَّذِينَ أَمْتُوا هَذِئِي وَشِفَاعَاهُ لِلَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ فِي أَذَانِهِمْ وَقُرْآنُهُ
عَلَيْهِمْ عَهْدٌ أُولَئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ
مَكَانٍ بَعِينٍ ⑤

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की थी। फिर उसमें मतभेद किया गया। और यदि तेरे रब्ब की ओर से आदेश जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जाता। और निःसन्देह वे उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हैं। 146। जो भी नेक कर्म करे तो अपनी ही जान के लिए ऐसा करता है। और जो कोई बुराई करे तो उसी के विरुद्ध करता है। और तेरा रब्ब निरीह भक्तों पर लेश मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं। 147।

وَلَقَدْ أَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَأَخْرَجَ فِيهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَعَذَّبَ
بِهِمْ وَإِنَّهُ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَرِنِي^⑤
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَامٍ لِّلْعَيْنِ^⑥

निश्चित घड़ी का ज्ञान उसी की ओर लौटाया जाता है। और कई प्रकार के फल अपने आवरणों से नहीं निकलते, न ही कोई मादा गर्भवती होती है और न बच्चा जनती है परन्तु उस (अल्लाह) को ज्ञात होता है। और याद करो उस दिन को जब वह ऊँची आवाज़ में उनसे पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं? तो वे कहेंगे, हम तुझे सूचित करते हैं कि हम में से कोई भी (इस बात का) साक्षी नहीं। 148।

और वह उनसे खो जाएगा जिसे वे उनसे पहले पुकारा करते थे। और वे समझ जाएँगे कि उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं है। 149।

मनुष्य भलाई माँगने से थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचे तो बहुत निराश (और) हताश हो जाता है। 150।

और उसे कोई कष्ट पहुँचने के पश्चात यदि हम उसे अपनी कोई कृपा चखाएँ तो वह अवश्य कहता है, यह मेरे लिए है और मैं नहीं समझता कि निश्चित घड़ी आ जाएगी। और यदि मैं अपने रब्ब की ओर लौटाया भी गया तो निःसन्देह मेरे लिए उसके पास उच्च कोटि की भलाई होगी। अतः उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, हम उन बातों से अवश्य सूचित करेंगे जो वे किया करते थे। और हम उन्हें अवश्य कठोर अज्ञाब का स्वाद चखाएँगे। 151।

और जब हम मनुष्य को पुरस्कृत करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और कन्धी

إِلَيْهِ يَرْدُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ
مِنْ ثَمَرَاتٍ قُنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمُلُ مِنْ
أَثْلَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ
يَنَادِيهِمْ أَيْنَ شَرَكَاهُ إِنَّ قَالُوا أَذْلَكَ
مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ④

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعَوْنَ مِنْ قَبْلٍ
وَظَلَّوْا مَا لَهُمْ قُنْ مَحِيصٌ ⑤

لَا يَسْمَعُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ
مَسْتَهُ الشَّرُّ فَيُؤْسِفُهُ قَنْوَطٌ

وَلَئِنْ أَذْقَنَهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدَ ضَرَّاءَ
مَسْتَهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا آتَنَّ
السَّاعَةَ قَلِيمَةً وَلَئِنْ رَجَعْتَ إِلَى رَبِّيَّ
إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَهُشْفٌ فَلَنَتَّسَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنَذِيقَنَّهُمْ مِنْ
عَذَابٍ غَلِيلٍ ⑥

وَإِذَا آتَيْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَغْرَضَ

काटते हुए दूर हट जाता है । और जब उसे कष्ट पहुँचे तो लम्बी चौड़ी दुआ करने वाला बन जाता है । 152।

तू कह दे बताओ तो सही कि यदि वह अल्लाह की ओर से हो और फिर भी तुम उसका इनकार कर बैठे हो तो उससे अधिक पथभ्रष्ट और कौन हो सकता है जो परले दर्जे के विरोध करने में लगा हो ? 153।

अतः हम अवश्य उन्हें क्षितिज में भी और उनकी जानों के अन्दर भी अपने चिह्न दिखाएँगे यहाँ तक कि उन पर खूब खुल जाए कि वह सत्य है । क्या तेरे रब्ब के लिए यह पर्याप्त नहीं कि वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है ? 154।

सावधान ! वे अपने रब्ब की भेंट के बारे में शंका में पड़े हैं । सावधान ! निःसन्देह वह हर चीज़ को घेरे हुए है । 155।

(रुक् ٦)

وَنَا بِجَانِيهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو
دُعَاءٍ عَرِيْضٍ ⑤

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
لَمْ يَكُنْ كَفَرُكُمْ بِهِ مَنْ أَصْلَى مِمَّنْ هُوَ فِي
شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ⑥

سَرِيْئُهُمْ أَيْتَنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ
حَتَّىٰ يَسْبِيْنَ لَهُمْ آتَاهُمُ الْحُقْوَقُ أَوْ لَمْ يَكُنْ
بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ⑦

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِقَاءِ رَبِّهِمْ
أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ⑧

42- सूरः अश-शूरा

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 54 आयतें हैं।

पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में एक तो यह चेतावनी दी गई थी कि जब नुबुव्वत की नेमत उतरती है तो लोग इसको स्वीकार करने से विमुख हो जाते हैं। परन्तु इसके परिणाम स्वरूप जब उनको कष्ट पहुँचता है तो फिर लम्बी चौड़ी दुआएँ करते हैं कि वह कष्ट टल जाए। अतः उनको चेतावनी दी गई है कि अल्लाह तआला उनको अपने वह चिह्न भी दिखाएगा जो क्षितिजों पर प्रकट होते हैं तथा जो प्रकृति विधान के महान द्योतक हैं। और वह चिह्न भी दिखाएगा जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला की सत्ता की गवाही देने के लिए विद्यमान हैं।

इस सूरः में खण्डाक्षरों के पश्चात कहा गया है कि जिस प्रकार इससे पहले वहइ की गई और उसे पहले लोगों ने अनदेखा कर दिया, इसी प्रकार अब तुझ पर भी वहइ उतारी जा रही है जो एक महान नेमत है। परन्तु सांसारिक लोग इस आकाशीय नेमत को स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि उनको केवल संसार की नेमतों की लालसा होती है।

इसके पश्चात आयत संख्या 8 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समस्त जगत के लिए सतर्ककारी घोषित किया गया है। क्योंकि समस्त बस्तियों की जननी अर्थात् मक्का, जिसे अल्लाह ने सब दुनिया का केन्द्र निश्चित किया है। यदि उसे सतर्क किया जाए तो मानो समस्त संसार को सतर्क किया गया। और बमन हौलहा (जो उसके चारों ओर हैं) के शब्दों में तो मानो समस्त जगत की बस्तियाँ समाहित हो जाती हैं। फिर यौमुल जम़ू (इकट्ठे होने के दिन) का वर्णन भी कर दिया गया कि जिस प्रकार मक्का को समस्त मानव जाति के एकत्रित होने का स्थान बताया गया इसी प्रकार एक एकत्रिकरण परलोक में भी होगा जिसमें समस्त मानव जाति को एकत्रित किया जाएगा।

अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के द्वारा समस्त मानव जाति को एक बनाने का प्रयास किया गया। परन्तु इसके बावजूद अल्लाह तआला जानता है कि दुनिया वाले इस नेमत का अनादर करके पहले की भाँति परस्पर बंटे रहेंगे। क्योंकि अल्लाह तआला किसी को ज़बरदस्ती करके हिदायत पर इकट्ठा नहीं करता। अन्यथा समस्त मानवजाति को एक ही धर्म का अनुयायी बना देता।

इसके पश्चात पिछले नवियों पर वहइ के उत्तरने का यही उद्देश्य वर्णन किया गया कि वे लोगों को एकताबद्ध करें। परन्तु जब भी वे आए दुर्भाग्य से लोग इस नेमत का इनकार करके और भी अधिक फूट का शिकार हो गए। उन के मतभेद का मूल कारण यह वर्णन किया गया है कि वास्तव में वे एक दूसरे से द्वेष रखते थे। अतः प्रश्न यह है कि

उनका इस प्रकार लगातार अवज्ञा करने पर भी क्यों झगड़े का निपटारा नहीं किया जाता ? इसका उत्तर यह दिया जा रहा है कि जब तक धरती पर मनुष्यों की परीक्षा का क्रम निश्चित है, उससे पूर्व उनका झगड़ा यहाँ निपटाया नहीं जाएगा । यद्यपि सामयिक रूप से प्रत्येक जाति का झगड़ा उसकी निर्धारित घड़ी के अन्दर तय किया गया । परन्तु उसके पश्चात् एक और जाति और फिर एक और जाति संसार में आती चली गई और कुल मिला कर मनुष्य का झगड़ा अन्तिम निश्चित घड़ी के समय तय किया जाएगा ।

इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् को यह ताक़ीद की गई है कि इनकार करने वालों के मतभेदों और अवज्ञाओं पर किसी प्रकार असमंजस में पड़ने की आवश्यकता नहीं । जब अल्लाह निर्णय करेगा कि उनको इकट्ठा किया जाए तो अवश्य इकट्ठा कर देगा । इस एकत्रिकरण की एक महान भविष्यवाणी सूरः अल-जुमुअः में भी है ।

इस सूरः की आयत सं. 24 का शीया व्याख्याकार विषयवस्तु की वर्णन शैली से हट कर एक क्रूरता पूर्ण अनुवाद करते हैं । उनके अनुसार मानो हज़रत मुहम्मद सल्ल. को यह कहने का आदेश दिया जा रहा है कि लोगो ! मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । परन्तु मेरे निकट सम्बन्धियों को इसके बदले में प्रतिफल दो । इस आयत का कदापि यह अर्थ नहीं हो सकता । क्योंकि अपने सगे सम्बन्धियों के लिए प्रतिफल माँगना वास्तव में अपने लिए ही प्रतिफल माँगना होता है । इसका वास्तविक भावार्थ यह है कि मैं तो तुम से अपने लिए और अपने सगे सम्बन्धियों के लिए भी कोई प्रतिफल नहीं माँगता । जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् ने स्पष्ट रूप से कहा कि मेरे सगे सम्बन्धियों और आगे उनकी संतान को कभी दान न दिया जाए । परन्तु तुम अपने सगे-सम्बन्धियों की अनदेखा न करो, उनकी आवश्यकताओं पर व्यय करना तुम्हारा कर्तव्य है ।

यह जो विषयवस्तु छेड़ा गया था कि निर्धनों और अभावग्रस्तों पर व्यय करो, विशेषकर अपने सगे-सम्बन्धियों पर । इस पर प्रश्न उठता है कि अल्लाह तआला क्यों उन्हें सीधे-सीधे स्वयं ही प्रदान कर नहीं देता ? इसका उत्तर यह दिया गया है कि जीविका के विस्तृत अथवा संकुचित होने का विषय अन्य कारणों से सम्बन्ध रखता है । कई बार लोग जीविका में बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं और कई बार जीविका में तंगी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं । जो बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं उन्हीं का वर्णन पहले हुआ है कि वे जीविका में बढ़ोत्तरी होने पर भी दुर्बलों का, यहाँ तक कि सगे सम्बन्धियों का भी ध्यान नहीं रखते । इसके पश्चात् आयत सं. 30 एक आश्चर्यजनक विषय को उजागर कर रही है जिसकी कल्पना भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् के युग के किसी मनुष्य को नहीं हो सकती थी । उस युग में तो आकाशों को प्लास्टिक की परतों की भाँति सात परतों पर आधारित समझा जाता था जिसमें चन्द्रमा,

सितारे इस प्रकार जड़े हए हैं जिस प्रकार कपड़ों में मोती टांके जाते हैं। कौन कह सकता था कि धरती की भाँति वहाँ भी चलने फिरने वाली सृष्टि विद्यमान है। न केवल आकाशों में ऐसी सृष्टि की ठोस रूप से सूचना दी गई बल्कि एकत्रिकरण के अर्थ को यह कह कर आकाश तक पहुँचा दिया गया कि धरती पर बसने वाली सृष्टि और यह आकाश पर बसने वाली सृष्टि एक दिन अवश्य एकत्रित कर दी जाएगी। यह एकत्रिकरण भौतिक रूप से होगा अथवा संचार प्रणाली के माध्यम से होगा इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है। परन्तु आज वैज्ञानिक इस प्रयास में हैं कि किसी प्रकार आकाश पर बसने वाली सृष्टि के साथ उनका कोई संपर्क स्थापित हो जाए। मानो वे यह सोचने पर विवश हो गए हैं कि धरती के अतिरिक्त अन्य आकाशीय पिण्डों पर भी चलने-फिरने वाली सृष्टि विद्यमान होगी।

इसी सूरः में जिसका शीर्षक शूरा (अर्थात् विचार-विमर्श) है एक और एकत्रिकरण का भी वर्णन कर दिया गया। अर्थात् मुसलमानों का यह सिद्धान्त निरूपित कर दिया गया कि जब कभी महत्वपूर्ण विषयों से उनका सामना हो तो वे एकत्रित हो कर उन पर चिन्तन-मनन किया करें।

इस सूरः में एक और छोटी सी आयत सं. 41 कुरआन की शिक्षा को पहले की समस्त शिक्षाओं पर श्रेष्ठ सिद्ध करती है। कहा जा रहा है कि यदि कोई मनुष्य किसी प्रकार के अत्याचार का शिकार हो तो उसी सीमा तक उसे प्रतिशोध लेने का अधिकार है जिस सीमा तक अत्याचार किया गया हो, न कि प्रतिशोध के आवेग में आकर स्वयं अत्याचारी बन जाए। परन्तु यह अत्योत्तम है कि ऐसी क्षमा से काम ले जिसके परिणाम स्वरूप सुधार हो। कई बार क्षमा के परिणामस्वरूप लोग और भी अधिक बुराई करने में निःड़ हो जाते हैं। अतः ऐसी क्षमा की अनुमति नहीं है बल्कि इस प्रकार की क्षमा करने का आदेश है जो परिस्थिति के सुधार का कारण बने।

आयत सं. 52 में वहइ की विभिन्न प्रकारों का वर्णन है। जो यह है कि मनुष्य से अल्लाह तआला केवल वहइ के माध्यम से ही वार्तालाप करता है। कई बार यह वहइ ओट के पीछे से होती है अर्थात् बोलने वाला दिखाई नहीं देता। परन्तु मनुष्य का मन उसे स्पष्ट रूप से प्राप्त करता है। और कई बार एक फरिश्ते के रूप में अल्लाह का दूत उस के समक्ष उतरता है और वह जो वहइ उस पर करता है वह पूर्णरूप से वैसा ही है जिसका अल्लाह ने उसे आदेश दिया होता है। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमने भी इसी प्रकार तुझ पर वहइ उतारी और अपने आदेश से तुझे एक जीवनदायिनी वाणी प्रदान की। इस सूरः की अन्तिम आयतों में एक बार फिर इस विषय को दोहराया गया है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनके बीच है, सब अल्लाह ही की मिल्कीयत है और अल्लाह ही की ओर समस्त विषय लौटाए जाने वाले हैं।

سُورَةُ الشُّورَى مُكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْسَّمَلَةِ أَرْبَعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति
गौरवशाली । । ।

अलीमुन समीउन कदीरुन : बहुत
जानने वाला, बहुत सुनने वाला,
सर्वशक्तिमान । । ।

इसी प्रकार पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
परम विवेकशील अल्लाह तेरी ओर वहइ
करता है और उनकी ओर भी करता रहा
है जो तुझ से पहले थे । । ।

उसी का है जो आसमानों में है और जो
धरती में है और वह बहुत ऊँचे पद वाला
(और) महान है । । ।

संभव है कि आकाश अपने ऊपर से फट
पड़े और फरिश्ते अपने रब्ब की स्तुति के
साथ (उसका) गुणगान कर रहे हों । और
वे उनके लिए जो धरती में हैं, क्षमा माँग
रहे हों । सावधान ! निःसन्देह अल्लाह
ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-
बार दया करने वाला है । । । *

और उन पर भी अल्लाह ही निरीक्षक है
जिन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं ।
जबकि तू उन पर दारोगा नहीं । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حُمَّ ②

عَسْقَ ③

كَذَلِكَ يُوحَى إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ إِنَّ اللَّهَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ⑤

تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَسْقُطُنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ
وَالْمَلِئَكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۖ لَا
إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑥

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أُولَئِكَ أَهُمُّ
حَفِيظُ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ⑦

* संसार वासियों पर जब आकाश से बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ती हैं उस समय अल्लाह के पवित्र भक्तों
के लिए आकाश के फरिश्ते भी क्षमायाचना करते हैं । फरिश्ते अपने आप में तो निर्दोष होते हैं ।
परन्तु अल्लाह के भक्तों के लिये क्षमायाचना करते हैं ।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अरबी कुरआन वहइ किया ताकि तू बस्तियों की जननी (अर्थात् मक्का) को और जो उसके चारों ओर हैं सतर्क करे। और तू ऐसे एकत्रिकरण के दिन से सतर्क करे जिसमें कोई संदेह नहीं। एक समूह स्वर्ग में होगा तो एक समूह धधकती हुई अग्नि में । ४।

और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में प्रविष्ट करता है। और जहाँ तक अत्याचारियों का सम्बन्ध है तो उनके लिए न कोई मित्र है और न कोई सहायक । १९।

क्या उन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं? अतः अल्लाह ही है जो सर्वोत्तम मित्र है और वही है जो मुर्दों को जीवित करता है। और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । १०। (रुकू । १)

और जिस विषय में भी तुम मतभेद करो तो उसका निर्णय अल्लाह ही के हाथ में है। यह है अल्लाह, जो मेरा रब्ब है। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मैं झुकता हूँ । ११।

वह आकाशों और धरती को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए और चौपायों के भी जोड़े (बनाए)। वह उसमें तुम्हारी बढ़ोत्तरी करता है। उस जैसा कोई नहीं। वह

وَكَذِلِكَ أُوحِيَنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا
لِتُنذِرَ أُمَّةَ الْقُرْبَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ
يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبٌ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ
وَفَرِيقٌ فِي السَّعْيِ ①

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أَمَّةً وَاحِدَةً
وَلِكُنْ يُدْخَلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَصِيرٌ ①

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُوَنِهِ أُولَيَاءَ ۝ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يَخْرُجُ الْمُؤْمِنُ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَمَا اخْتَلَفُتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ
إِلَى اللَّهِ ۝ ذِلِّكُمُ اللَّهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكِّلُتُ ۝
وَإِلَيْهِ أَنِيبُ ①

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝ جَعَلَ لَكُمْ
مِنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا ۝ وَمِنَ الْأَنْعَامِ
أَزْوَاجًا ۝ يَدْرُوُ كُفُّرَ فِيهِ ۝ لَيْسَ كَمِثْلَهُ

बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि
रखने वाला है । १२१*

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के
अधीन हैं । वह जीविका को जिसके लिए
चाहे वृद्धि करता है और घटा भी देता
है । निःसन्देह वह प्रत्येक विषय का
भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है । १३।

उसने तुम्हारे लिए धर्म में से वही आदेश
दिये हैं जिनका उसने नूह को भी
ताकीद के साथ आदेश दिया था, और
जो हमने तेरी ओर वहाँ किया है और
जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और
ईसा को भी ताकीदी आदेश दिया था,
वह यही था कि तुम धर्म को दृढ़ता
पूर्वक स्थापित करो और इस विषय में
कोई मतभेद न करो । मुश्किलों पर वह
बात बहुत भारी है जिसकी ओर तू उन्हें
बुलाता है । अल्लाह जिसे चाहता है
अपेक्षित लिए चुन लेता है और अपनी ओर
उसे हिदायत देता है जो (उसकी ओर)
चुकता है । १४।

और जबकि उनके पास ज्ञान आ चुका
था उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध विद्रोह
करते हुए मतभेद किया । और यदि तेरे

شَيْءٌ وَهُوَ أَسْمَىٰ بِالْبَصِيرٍ ⑯

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسَطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَعْدِرُ ۖ إِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑰

شَرَعَ لِكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وُصِّلَ إِلَيْنَاهُ
وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيَّنَا إِلَيْهِ
إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا
الدِّينَ ۖ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۖ كَبُرَ عَلَى
الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۖ اللَّهُ
يَعْلَمُ أَئِيمَةً مِنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي أَلِمَّا
مَنْ يَنِيبُ ⑯

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ
الْعِلْمُ بَعْدَ آيَاتِنَا ۖ وَلَوْلَا كَلَمَةً سَبَقَتْ

* हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में लोगों को पश्चातों के जोड़ा-जोड़ा होने का तो
ज्ञान था और वृक्षों में से कुछ के जोड़ा-जोड़ा होने का भी ज्ञान था । परन्तु यह ज्ञान नहीं था कि हर
चीज़ को अल्लाह तआला ने जोड़ा-जोड़ा उत्पन्न किया है । इस युग में तो यह प्रमाणित हो चुका है
कि पदार्थ का प्रत्येक कण तक जोड़ा-जोड़ा है । दूसरे, इस आयत में मनुष्य को उगाने का वर्णन है,
जिससे प्रतीत होता है कि जीवन का आरम्भ वनस्पति से हुआ था और यह बिल्कुल ठीक है । यहाँ
अरबी शब्द ज़रआ (बढ़ोत्तरी करना) प्रयोग किया गया है । दूसरी आयतों में यह विषय अधिक
विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है । उदाहरणतः हम ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया ।
(सूरः नूह : १८) अर्थात मनुष्य की अभिवृद्धि वनस्पति की भाँति हुई है ।

रब्ब का यह आदेश निश्चित अवधि तक के लिए जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जा चुका होता । और निःसन्देह वे लोग जिन्हें उनके पश्चात् पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया गया, उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हुए हैं ॥५।

अतः इसी आधार पर चाहिए कि तू उन्हें (अल्लाह की ओर) बुलाए । और दृढ़ता पूर्वक अपने सिद्धान्त पर डट जा जैसे तुझे आदेश दिया जाता है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न कर । और कह दे कि मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ जो पुस्तक ही की बातों में से अल्लाह ने उतारा है । और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्यायपूर्ण (व्यवहार) करूँ । अल्लाह ही हमारा रब्ब और तुम्हारा भी रब्ब है । हमारे लिए हमारे कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं । हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा (काम) नहीं (आ सकता) । अल्लाह हमें इकट्ठा करेगा और उसी की ओर लौट कर जाना है ॥६।

और वे लोग जो अल्लाह के बारे में इसके बाद भी झगड़ते हैं कि उसे स्वीकार कर लिया गया है । उनका तर्क उनके रब्ब के समक्ष ज्ञूठा है । और उन पर ही प्रकोप होगा और उनके लिए कठोर अज्ञाब (निश्चित) है ॥७।

مِنْ رَبِّكَ إِلَّا أَجِلٌ مُّسَيَّلٌ لَّقَضَى
بِيَتَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورْثُوا الْكِتَابَ مِنْ
بَعْدِهِمْ لَفِي شَلَّٰتٍ مِّنْهُ مُرِيبٌ^⑩

فَلِذِلِكَ قَادِعٌ وَاسْتَقْرِئْ كَمَا أَمْرَتَ
وَلَا تَتَبَعْ أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ أَمْنِتَ بِمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ إِكْلِيلٍ وَأَمْرَتَ لِأَعْدِلَ
بَيْتَكُمْ اللَّهُ رَبُّ الْأَرْضَاتِ بَلَّا أَعْمَالَنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ لَا حَجَّةَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ اللَّهُ يَجْمِعُ بَيْنَنَا وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ^{۱۱}

وَالَّذِينَ يَحْأَجُونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا اسْتَحْيِبَ لَهُ حَجَّتْهُمْ دَاهِضَةٌ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَصَّبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ^{۱۲}

अल्लाह वह है जिसने सत्य के साथ पुस्तक और तुला को उतारा । और तुझे क्या मालूम कि सम्भवतः वह घड़ी निटक हो । 118।

उसके शीघ्र प्रकट होने की मांग वही करते हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते । और वे लोग जो ईमान लाए उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है । सावधान ! निःसन्देह वे जो निश्चित घड़ी के विषय में झगड़ते हैं परले दर्जे की पथभ्रष्टता में पड़े हैं । 119।

अल्लाह अपने भक्तों के साथ नम्रता पूर्ण व्यवहार करने वाला है । वह जिसे चाहता है जीविका प्रदान करता है । और वही बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है । 120। (रुकू 2/3)

जो परलोक की खेती परान्द करता है, हम उसके लिए उस की खेती में बढ़ोत्तरी कर देते हैं । और जो संसार की खेती चाहता है हम उसी में से उसे इस प्रकार देते हैं कि परलोक में उसके लिए कोई भाग नहीं होगा । 121।

क्या उनके समर्थक ऐसे उपास्य हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसे धार्मिक आदेश जारी किए जिनका अल्लाह ने कोई आदेश नहीं दिया था ? और यदि निर्णय की विधि का आदेश मौजूद न होता तो उनके बीच मामला तुरन्त निपटा दिया जाता । और निःसन्देह अत्याचारियों के लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । 122।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
وَالْمُيَزَانَ ۖ وَمَا يَدْرِي لِكَ لَعْلَ السَّاعَةَ
قَرِيبٌ ⑯

يَسْتَعِجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا
وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۖ وَيَعْلَمُونَ
أَنَّهَا الْحَقُّ ۖ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يَمْارِنُونَ فِي
السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ⑯

اللَّهُ أَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ⑯

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزَدَ لَهُ فِي
حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا
نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
نُصِيبٍ ⑯

أَمْ لَهُمْ شَرِكُوا مَا شَرَعْنَا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ
مَا لَهُمْ يَأْذَنُ بِهِ اللَّهُ ۖ وَلَوْلَا كَلَمَةُ
الْفَضْلِ لَقُضِيَ بِنِتَمْ ۖ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑯

तू अत्याचारियों को उस कमाई के परिणाम स्वरूप डरता हुआ देखेगा जो उन्होंने कमाया । हालाँकि वह तो उनके साथ होकर रहने वाला है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए वे स्वर्गों के बागों में होंगे । उन्हें उनके रब्ब के समक्ष वह (कुछ) मिलेगा जो वे चाहा करते थे । यही है वह जो महान कृपा है । 123।

यह वही है जिसका अल्लाह अपने उन भक्तों को शुभ-समाचार देता रहा है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । तू कह दे, मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल नहीं माँगता, हाँ तुम परस्पर निकट सम्बन्धियों की भाँति प्रेम उत्पन्न करो । और जो किसी (विलुप्त) नेकी को उजागर करता है, हम उसमें उसके लिए और अधिक सुन्दरता उत्पन्न कर देंगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत ही कृतज्ञता स्वीकार करने वाला है । 124।

क्या वे कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है ? अतः यदि अल्लाह चाहता तो तेरे दिल पर मुहर लगा देता । और मिथ्या को अल्लाह मिटा दिया करता है । और सत्य को अपने वाक्यों से सिद्ध कर देता है । निःसन्देह वह सीनों की बातों को खूब जानने वाला है । 125।

और वही है जो अपने भक्तों की ओर से प्रायश्चित स्वीकार करता है और

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا
وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّلِحَاتِ فِي رُؤُضِتِ الْجَنَّةِ لَهُمْ مَا
يَسَّأَمُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْۖ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ⑩

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِۖ قُلْ لَا أَنْئَلْكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةُ فِي الْقُرْبَىٰۖ وَمَنْ
يَقْتَرِفْ حَسَنَةً تُزَدِّلَهُ فِيهَا حُسْنًاۖ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ شَكُورٌ ⑪

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًاٰ
فَإِنْ يَأْتِ اللَّهَ بِحَقْمٍ عَلَى قَلْبِكَ وَيَمْعَجِ
اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحَقِّقُ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهِ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصَّدُورِ ⑫

وَهُوَ الَّذِي يَقْبِلُ الشُّوْبَكَةَ عَنْ عِبَادِهِ

बुराइयों को क्षमा करता है। और (उसे) जानता है जो तुम करते हो। 126।

और वह उनकी दुआएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और नेक कर्म किए। और अपनी कृपा से उन्हें बढ़ा देता है। जबकि काफिरों के लिए तो अत्यन्त कठोर अज्ञाब (निश्चित) है। 127।

और यदि अल्लाह अपने भक्तों के लिए जीविका को विस्तृत कर देता तो वे धरती में अवश्य विद्रोह पूर्ण व्यवहार करते। परन्तु वह एक अनुमान के अनुसार जो चाहता है उत्तारता है। निःसन्देह वह अपने भक्तों के बारे में सदा अवगत (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है। 128।*

और वही है जो वर्षा को उनके निराश हो जाने के पश्चात उत्तारता है। और अपनी दया को फैला देता है। और वही है जो कार्यसाधक (और) स्तुति योग्य है। 129। और आकाशों और धरती की उत्पत्ति और जो उसने उन दोनों के बीच चलने फिरने वाले प्राणी फैला दिए हैं, (ये) उसके चिह्नों में से हैं। और वह जब चाहेगा उन्हें इकट्ठा करने पर पूरा समर्थ है। 130। (रुक् ۳)

* यदि अल्लाह चाहता तो जीविका में बढ़ोत्तरी पैदा कर देता और कोई निर्धन नहीं रहता। परन्तु जीविका का विभाजन कर के कुछ को अधिक और कुछ को कम प्रदान कर दिया। ये दोनों ही स्थितियाँ उनके लिए परीक्षा का कारण हैं। कुछ भक्त जीविका की अधिकता के कारण भटक जाते हैं और कुछ दरिद्रता के कारण। जैसा कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कादल फ़क्कु ऐं यकू न कुफ़न् अर्थात् संभव है कि दरिद्रता कुफ़ तक पहुँचा दे। अतः इसमें साम्यवादी व्यवस्था की ओर भी संकेत मिलता है कि दरिद्रता अन्तरः अल्लाह तज़ाला के इनकार का कारण बनेगी।

وَيَعْقُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢٦﴾

وَيَسْتَجِيبُ الظَّالِمِينَ أَمْتَوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ وَيَرِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٢٧﴾

وَلَوْبَسْطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلِكُنْ يُنَزَّلُ بِقَدَرِ مَا يَسْأَمُ إِنَّهُ لِعِبَادِهِ حَمِيرٌ بَصِيرٌ ﴿١٢٨﴾

وَهُوَ الَّذِي يَنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِمَا قَنْطَوْا وَيَنْشَرُ رَحْمَةً وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٢٩﴾

وَمِنْ أَيْتَهُ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَثَ فِيهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ وَهُوَ عَلَى جَمْعِهِمْ إِذَا يَسْأَمُ قَدِيرٌ ﴿١٣٠﴾

और तुम्हें जो विपत्ति पहुँचती है तो वह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई के कारण से है । जबकि वह (अल्लाह) बहुत सी बातों को क्षमा करता है । 31।

और तुम (अल्लाह को) धरती में असमर्थ करने वाले नहीं बन सकते । और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक और सहायक नहीं । 32।

और उसके चिह्नों में से समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी (ऊँची) नौकाएँ हैं । 33।

यदि वह चाहे तो हवा को स्थिर कर दे । फिर वे उस (समुद्र) के तल पर खड़ी की खड़ी रह जाएँ । निःसन्देह इस बात में प्रत्येक धैर्यवान और बहुत कृतज्ञता अपनाने वाले के लिए चिह्न हैं । 34।*

अथवा उन (नौकाओं) को उन के (सवारों) की कमाई के कारण जो वे करते रहे, विनष्ट कर दे । और बहुत सी बातों को वह क्षमा करता है । 35।

और ताकि वे लोग जान लें जो हमारी आयतों के बारे में झगड़ते हैं (कि) उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं । 36।

अतः जो भी तुम्हें दिया गया है वह सांसारिक जीवन का अस्थायी सामान है । और जो अल्लाह के पास है वह अच्छा

وَمَا آصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبْتُ
أَيْدِيهِكُمْ وَيَغْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۖ

وَمَا آتَنَّمُ بِمَعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا
لَكُفَّرُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ قُلْقَلٍ وَلَا نَصِيرٍ ۖ
وَمَنْ أَيْتَهُ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۖ

إِنَّ يَسِّاً يَسِّكِنُ الرِّبْعَ فَيَظْلَلُنَّ رَوَادِكَ
عَلَى ظَهِيرَهِ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذَلِكَ لِكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ۖ

أُوْيُوْقُهُتَ بِمَا كَسَبُوا وَيَغْفُ عَنْ
كَثِيرٍ ۖ

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ
قِنْ مَحِيصٍ ۖ

فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ
الَّذِيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ حَيْرٌ وَآبْقَى لِلَّذِينَ

* आयत सं. 33-34 : यहाँ अल्लाह तआला के चिह्नों में से ऐसे बड़े-बड़े समुद्री जहाजों का उल्लेख है जो पर्वतों के समान ऊँचे होंगे । स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो साधारण पाल वाली नौकाएँ चला करती थीं । इस लिए अवश्य यह आगे के लिए भविष्यवाणी थी जो आज के युग में पूरी हो चुकी है ।

और उन लोगों के लिए सब से अधिक बाकी रहने वाला है जो ईमान लाए और अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं । 371

और जो बड़े पापों और अश्लीलता की बातों से बचते हैं और जब वे क्रोधित हों तो क्षमा करते हैं । 381

और जो अपने रब्ब के आदेश को करते हैं । और नमाज़ को क़ायम करते हैं और उनका मामला परस्पर विचार-विमर्श से तय होता है । और (वे) उसमें से जो हमने उन्हें प्रदान किया, खर्च करते हैं । 391

और वे, जिन पर जब अत्याचार होता है तो वे प्रतिशोध लेते हैं । 401

और बुराई का बदला, की जाने वाली बुराई के समान होता है । अतः जो कोई क्षमा करे, इस शर्त के साथ कि वह सुधार करने वाला हो तो उसका प्रतिफल अल्लाह पर है । निःसन्देह वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता । 411

और जो कोई अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात प्रतिशोध लेता है तो यही वे लोग हैं जिन पर कोई आरोप नहीं । 421

आरोप तो केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और अनुचित ढंग से धरती में उद्धण्डता पूर्वक काम लेते हैं । यही वे लोग हैं जिनके लिए पीड़ादायक अज्ञाब (निश्चित) है । 431

أَمْنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٧﴾

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْرِ
وَالْفَوَاحِشُ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ
يَغْفِرُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ
وَمَمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبُغْيُ هُمْ يَتَّصَرُّونَ ﴿١٠﴾
وَجَزَّ وَاسْتَئْنَقَ سَيِّئَاتِهِ مُثْلِهَا ۝ فَمَنْ عَفَّا
وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَحِبُّ
الظَّلِيمِينَ ﴿١١﴾

وَلَمَنِ اتَّصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ
مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَيِّلٍ ﴿١٢﴾

إِنَّمَا السَّيِّلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ
وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٣﴾

और जो धैर्य धरे और क्षमा कर दे तो निःसन्देह यह साहस पूर्ण बातों में से है 144। (रुक् ४)

और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए इसके बाद कोई सहायता नहीं। और तू अत्याचारियों को देखेगा कि जब वे अज़ाब का सामना करेंगे तो कहेंगे कि क्या (इसके) टाले जाने का कोई रास्ता है ? 145।

और तू उन्हें देखेगा कि वे उस (अज़ाब) के सामने अपमान के कारण अत्यन्त दयनीय अवस्था में पेश किये जाएंगे। वे नीची नज़रों से (उसे) देख रहे होंगे। और वे लोग जो ईमान लाए, कहेंगे कि निःसन्देह घाटा पाने वाले तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार को क्रयामत के दिन घाटे में डाला। सावधान ! निःसन्देह अत्याचार करने वाले एक स्थायी अज़ाब में पड़े होंगे । 146। और उनके कोई मित्र नहीं होंगे जो अल्लाह के सिवा उनकी सहायता करें। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं रहेगा । 147।

अपने रब्ब के आदेश को स्वीकार करो। इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका टलना अल्लाह की ओर से किसी भी प्रकार सम्भव न होगा। तुम्हारे लिए उस दिन कोई शरण नहीं है। और तुम्हारे लिए इनकार का कोई स्थान नहीं होगा । 148।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنْ ذَلِكَ لِمَنْ عَزَّمَ
الْأُمُورُ ④

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ
بَعْدِهِ ۝ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ
يَقُولُونَ هَلْ إِلَى مَرِدٍّ قُنْ سَبِيلٌ ۝

وَتَرَبَّهُمْ يَعْرَضُونَ عَلَيْهَا الْحِشْعَيْنَ مِنَ
الذِّلِّ يُنْتَرُّونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ آمَنُوا إِنَّ الْخَسِيرِيْنَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَآهَلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝
أَلَا إِنَّ الظَّالِمِيْنَ فِي عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أُولَيَاءِ يُصْرَوْنَهُمْ
مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ۝ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ سَبِيلٌ ۝

إِسْتَحْيِيْوْ إِلَرِيْكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمُ
لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَىٰ
يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٌ ۝

अतः यदि वे मुँह फेर लें तो हमने तुझे उनपर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा । संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त तेरा और कोई कर्तव्य नहीं । और निःसन्देह जब हम अपनी ओर से मनुष्य को कोई दया चखाते हैं तो वह इससे प्रसन्न हो जाता है । और यदि उन्हें स्वयं अपने हाथों की भेजी हुई (कर्माई के कारण) कोई बुराई पहुँचती है तो निःसन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न सिद्ध होता है । 49।

आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । वह जो चाहता है पैदा करता है । जिसे चाहता है लड़कियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है लड़के प्रदान करता है । 50।

या कभी उन्हें परस्पर मिला-जुला देता है । कुछ नर और कुछ मादा । इसी प्रकार जिसे चाहे उसे बांझ बना देता है । निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है । 51।

और किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह उससे वार्तालाप करे परन्तु वहइ के माध्यम से । अथवा पर्दे के पीछे से अथवा कोई संदेशवाहक भेजे जो उसके आदेश से उसकी इच्छानुसार वहइ करे । निःसन्देह वह बहुत ऊँची शान वाला (और) परम विवेकशील है । 52।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अपने आदेश से एक जीवनदायिनी वाणी वहइ किया । तू जानता न था कि पुस्तक क्या

فَإِنْ أَغْرَصْتُمْ فَمَا أَرْسَلْتُكُمْ عَلَيْهِمْ
حَفِظًا إِنْ عَلَيْكُمْ إِلَّا ابْلُغُ مَا أَنْذَأْتَ
أَذْقَنْتُ الْأَنْسَانَ مِثَارَ حُمَّةً فَرِحَ بِهَا وَإِنْ
تُصْبِهُمْ سَيِّئَاتٍ بِمَا قَدَّمْتُ أَيْدِيهِمْ فَإِنْ
الْأَنْسَانَ كَفُورٌ ③

لِلَّهِ مَلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ يَهْبِطُ مِنْ يَشَاءُ إِنَّا نَحْنُ وَيَهْبِطُ
لِمَنْ يَشَاءُ الْمُذْكُورُ ۖ

أُوْيَزْ وَجْهُمْ ذُكْرًا نَّأَىْ وَإِنَّا هُنَّ
مِنْ يَشَاءُ عَقِيمًا إِنَّهُ عَلَيْسُ قَدِيرٌ ⑦

وَمَا كَانَ لِشَرِّ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا
أَوْ مِنْ وَرَآءِيْ حِجَابٍ أُوْيَزِّلَ رَسُولًا
فِيُوحِيْ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ إِنَّهُ عَلَىٰ
حَكِيمٌ ⑧

وَكَذِلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُؤْحَاقِنْ
أَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَبُ وَلَا

है और ईमान क्या है परन्तु हम ही ने उसे नूर बनाया जिस के द्वारा हम अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। और निःसन्देह तू सन्मार्ग की ओर चलाता है । 153।

उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है। सावधान ! अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटते हैं । 154।

(रुकू ५)

الإِيمَانُ وَلِكُنْ جَعَلْنَا نُورًا إِنَّهُدِي بِهِ
مَنْ لَسَاءَ مِنْ عَبَادِنَا وَإِنَّكَ لَتَهْدِي
إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٥٣﴾

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ إِلَّا إِنَّ اللَّهَ تَصِيرُ
الْأُمُورَ ﴿١٥٤﴾

فِي

43- सूरः अज्ञ-जुख्रुफः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 90 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ ही में अरबी शब्द उम्म (अर्थात् जननी, मूल) का बार-बार उल्लेख किया गया है। पिछली सूरः में उम्मुल-कुरा अर्थात् बस्तियों की जननी का वर्णन था कि मक्का सब बस्तियों की जननी है और इस सूरः में उम्मुल-किताब अर्थात् सूरः अल-फ़ातिहः का वर्णन है जो इस परम पवित्र वाणी की जननी (मूल) का स्थान रखती है। अर्थात् सारे कुरआन के विषयवस्तु इसमें इस प्रकार समेट दिए गए हैं जैसे माँ के गर्भ में इस बात की व्यवस्था होती है कि मनुष्य को जन्म से पूर्व उन समस्त गुणों से सुसज्जित कर दिया जाए जो उसके लिए निश्चित हैं।

फिर कहा गया कि जब तुम समुद्री पथ से अथवा धरती के पथ से यात्रा करते हो, तो याद कर लिया करो कि अल्लाह ही है जिसने समुद्र में चलने वाली नौकाओं को अथवा धरती में चलने वाले पशुओं को, जिन पर तुम सवारी करते हो, तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया है। और तुम में से बहुत से ऐसे होंगे जो दुर्घटनाओं का शिकार हो कर उन गंतव्य स्थल को नहीं पा सकेंगे जिनके लिए वे रवाना हुए थे। परन्तु याद रखना कि अन्तिम गंतव्य स्थल वही है जिस में तुम अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने वाले हो।

इस सूरः की प्रारम्भिक आयतें तो अहले-किताब का वर्णन करती हैं और बाद में आने वाली आयतें मुश्ऱिकों का। अतएव उसके पश्चात वे नवी जो विशेषकर मुश्ऱिक जातियों की ओर भेजे गये थे, उनका और उनके इनकार के परिणामों का वर्णन है जो इनकार करने वालों को भुगतने पड़े।

अल्लाह तआला इससे पूर्व समस्त मानवजाति को एक हाथ पर एकत्रित करने का वर्णन कर रहा है। और कहता है कि यदि हमने ऐसा करना होता तो संसार के मोह में पड़े हुए इन लोगों को एकत्रित करने का केवल एक उपाय यह हो सकता था कि उनके घरों को सोने चाँदी और दूसरी नेमतों से भर देते। परन्तु यह तो केवल एक ऐसी भौतिक सुख-सुविधा का साधन होता जिसकी कोई भी वास्तविकता नहीं है। और केवल संसार की कुछ दिनों की अस्थायी धन-सम्पत्ति उनको मिलती। परन्तु परलोक तो केवल मुक्तियों ही को प्राप्त हुआ करता है।

इस स्थान पर हिदायत पर लोगों के एकत्रित न होने का एक कारण यह भी वर्णन किया गया कि उनके साथी नास्तिक होते हैं। और उनके प्रभाव से वे भी नास्तिकता का शिकार हो जाते हैं। परन्तु क्रयामत के दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति जिसके बुरे साथी ने उस पर दुष्प्रभाव डाला हो, अपने उस बुरे साथी को सम्बोधित करते हुए इस खेद को

प्रकट करेगा कि काश ! मेरे और तुम्हारे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती तो मैं इस बुरे अन्त को न पहुँचता ।

इस सूरः में एक और बहुत महत्वपूर्ण आयत हज़रत मसीह अलै. के उत्तरने की प्रक्रिया पर से पर्दा उठा रही है, जिसमें वर्णन किया गया है कि हज़रत मसीह तो एक उदाहरण स्वरूप थे । मुश्तिकों के सामने जब हज़रत मसीह अलै. का वर्णन किया जाता था तो वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित होकर यह कहते थे कि यदि गैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी अन्य) को ही उपास्य के रूप में स्वीकार करना है तो दूसरी जाति के गैरुल्लाह को स्वीकार करने के बदले अपनी जाति के ही गैरुल्लाह को क्यों स्वीकार नहीं कर लेते । वे इस बात को नहीं समझते थे कि मसीह अल्लाह नहीं थे बल्कि वह अल्लाह के एक पुरस्कृत भक्त थे । और उनके लिए केवल एक उदाहरण स्वरूप थे, जिनसे बहुत सारी शिक्षा प्राप्त की जा सकती थी ।

फिर इसी सूरः में यह भविष्यवाणी कर दी गई है कि भविष्य में भी उदाहरण के रूप में मसीह उतरेगा जो इस बात का चिह्न होगा कि महान क्रान्ति की घड़ी आ गई है ।

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस महानता का वर्णन कर दिया गया है कि आप सल्ल. अल्लाह तआला की सबसे बढ़ कर उपासना करने वाले हैं । यदि वास्तव में अल्लाह तआला का कोई पुत्र होता तो आप सल्ल. कदापि उसकी उपासना करने से विमुख न होते । अतः आप सल्ल. का अल्लाह तआला के किसी काल्पनिक पुत्र की उपासना से इनकार करना स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पूर्ण विश्वास पर अटल थे कि अल्लाह तआला का कोई पुत्र नहीं है ।



سُورَةُ الرُّخْرُوفِ مَكَيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ يَسْأَلُونَ إِلَهَهُ وَ سَبْعَةً رُّكُونَ عَابِرِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हमीदुन मजीदुन : स्तुति योग्य, अति
गौरवशाली । । ।

खोल कर वर्णन करने वाली पुस्तक की
कसम । । ।

निःसन्देह हमने इसे सरल और शुद्ध
भाषा सम्पन्न कुरआन बनाया ताकि तुम
समझो । । ।

और निःसन्देह यह (कुरआन) मूल
पुस्तक में है (और) हमारे निकट अवश्य
बहुत ऊँची शान वाला (और) तत्त्वज्ञान
पूर्ण है । । ।

क्या हम तुम्हें उपदेश देने से केवल इस
लिए रुक जाएँगे कि तुम सीमा से बढ़े
हुए लोग हो ? । । ।

और कितने ही नबी हमने पहले लोगों में
भेजे थे । । ।

और जो भी नबी उनके पास आता
था, उसके साथ वे उपहास किया
करते थे । । ।

अतः हमने उनसे भी अधिक पकड़
रखने वालों को नष्ट कर दिया ।
और पहलों का उदाहरण बीत चुका
है । । ।

और तू यदि उनसे पूछे कि कौन है
जिसने आकाशों और धरती को पैदा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

وَالْكِتَابِ الْمَبِينِ ②

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ③

وَإِنَّهُ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ لَدَنَا لَعَلَّ
حَكِيمٌ ④

أَفَقْصَرُ بَعْنَكُمُ الدِّكْرَ صَفْحًا أَنْ
كُنْتُمْ قَوْمًا مُسْرِفِينَ ⑤

وَكَذَّا أَرْسَلْنَا مِنْ فِيِّ الْأَوَّلِينَ ⑥

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهِزُؤُونَ ⑦

فَأَهْلَكْنَا آثَمَهُمْ بَطْشًا وَمَضِي
مَثْلُ الْأَوَّلِينَ ⑧

وَلَئِنْ سَأَلْتُهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ

किया ? तो वे अवश्य कहेंगे कि उन्हें पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) ने पैदा किया है । 10।

जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ । 11।

और वह जिसने अनुमान के अनुसार आकाश से जल उतारा । फिर उससे हमने एक मृत धरती को जीवित कर दिया । उसी प्रकार तुम निकाले जाओगे । 12।

और वह जिसने प्रत्येक प्रकार के जोड़ बनाए और तुम्हारे लिए नाना प्रकार की नौकाएँ और चौपाये बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो । 13।

ताकि तुम उनकी पीठों पर जम कर बैठ सको । फिर जब तुम उन पर भली-भाँति बैठ जाओ तो अपने रब्ब की नेमत का बखान करो और कहो, पवित्र है वह जिसने इसे हमारे लिए सेवाधीन किया अन्यथा हम इसे अधीन करने का सामर्थ्य नहीं रखते थे । 14।

और निःसन्देह हम अपने रब्ब की ओर लौट कर जाने वाले हैं । 15।

और उन्होंने उसके भक्तों में से कुछ को उसका अंश घोषित कर दिया ।

निःसन्देह मनुष्य खुला-खुला कृतघ्न है । 16। (रुूप - 1)

क्या वह जो पैदा करता है उसमें से उसने बस पुत्रियाँ ही अपना लीं हैं और तुम्हें पुत्रों के लिए चुन लिया ? । 17।

وَالْأَرْضَ لِيَقُولُنَّ خَلَقْهُنَّ الْعَزِيزُ
الْعَلِيمُ ①

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ
لَكُمْ فِيهَا سَبِيلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ②
وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَا أَمْاَءٍ إِنَّهُ
فَانْشَرَنَا بِهِ بَلْدَةً مَيِّتًا ③ كَذَلِكَ
تُخْرَجُونَ ④

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ وَجَعَلَ لَكُمْ
مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرَكُبُونَ ⑤

لِتَسْتَوْاعُوا عَلَى طَهُورِهِ ثُمَّ تَذَكَّرُوا نَعْمَةَ
رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوْيَتْمُ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا
سَبَّحْنَا الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا
لَهُ مُقْرِنِينَ ⑥

وَإِذَا إِلَى رِبِّنَا مُنْتَقَلِبُونَ ⑦

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُرْعَاءً ⑧ إِنَّ
الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُمِينٌ ⑨

أَمِ الْحَدَّ مَمَّا يَخْلُقُ بَلْتِ وَأَصْفَحَكُمْ
بِالْبَيْنَ ⑩

और जब उनमें से किसी को इस का शुभ-समाचार दिया जाता है जिसे वह रहमान के सम्बन्ध में एक श्रेष्ठ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करता है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है जबकि वह गहरे शोक को सहन करने का प्रयास कर रहा होता है । 18।

और क्या वह जो आभूषणों में पाली जाती हो और वह झगड़े के समय स्पष्ट बात (तक) न कर सके (तुम उसे अल्लाह के भाग में डालते हो ?) । 19।

और उन्होंने फरिश्तों को जो रहमान के भक्त हैं स्त्रियाँ (अर्थात् मूर्तियाँ) बना रखा है । क्या वे उनकी उत्पत्ति पर गवाह हैं ? निःसन्देह उनकी गवाही लिखी जाएगी और वे पूछे जाएँगे । 20।

और वे कहते हैं यदि रहमान चाहता तो हम उनकी पूजा न करते । उन्हें इस बात का कुछ भी ज्ञान नहीं, वे तो केवल अट्कल-पच्चू से काम लेते हैं । 21।

क्या हमने इससे पहले उन्हें कोई पुस्तक दी थी जिससे वे दृढ़ता पूर्वक चिमटे हुए हैं ? । 22।

बल्कि वे तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को एक मत पर पाया और हम निःसन्देह उन्हीं के पदचिह्नों पर (चल कर) हिदायत पाने वाले हैं । 23।

और इसी प्रकार हमने तुझसे पहले जब भी किसी बस्ती में कोई सतर्ककारी

وَإِذَا بَشَّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ
مَثَلًاً ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًا وَهُوَ كَظِيمٌ ⑯

أَوَمْ يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ
فِي الْخِصَامِ عَيْرُ مُبِينٍ ⑯

وَجَعَلُوا الْمَلِكَةَ الَّذِينَ هُمْ
عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَّا نَأَنْجَى أَشْهَدُوا حَلْقَهُمْ
سَتُكَتَّبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْكَلُونَ ⑯

وَقَالُوا أَوْسَاءُ الرَّحْمَنِ مَا عَبَدْنَاهُمْ
مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ
إِلَّا يَخْرُصُونَ ⑯

أَمْ أَتَيْنَاهُمْ كِتْبًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ
مُسْتَمِسُكُونَ ⑯

بِلْ قَاتُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَى أَمْقِرَأِنَا
عَلَى أَنْتِهِمْ مُهْتَدُونَ ⑯

وَكَذِلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ

भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि निःसन्देह हमने अपने पूर्वजों को एक विशेष मत पर पाया । और निःसन्देह हम उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने वाले हैं । 24।

उसने कहा, क्या तब भी कि मैं उससे बेहतर चीज़ ले आऊँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया ? उन्होंने कहा, निःसन्देह हम उन बातों का इनकार करते हैं जिनके साथ तुम भेजे गए हो । 25।

तब हमने उनसे प्रतिशोध लिया । अतः देख कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम निकला ? 26। (रुक् $\frac{2}{8}$)

और (याद करो) जब इत्राहीम ने अपने पिता से और अपनी जाति से कहा कि निःसन्देह मैं उससे बहुत विरक्त हूँ जिसकी तुम उपासना करते हो । 27।

परन्तु वह जिसने मुझे पैदा किया, अतः वही है जो मुझे अवश्य हिदायत देगा । 28।

और उसने इस (बात) को उसके बाद आने वाली पीढ़ियों में एक बाकी रहने वाला वृहद् चिह्न बना दिया ताकि वे लौट आयें । 29।

वास्तविकता यह है कि मैंने उनको और उनके पूर्वजों को अस्थायी सुविधाएँ दी, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और खोल-खोल कर वर्णन करने वाला रसूल आ गया । 30।

और जब अन्ततः उनके पास सत्य आ गया तो उन्होंने कहा, यह जादू है और

مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتَرْفُهَا إِنَّا وَجَدْنَا
أَبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ أُثْرِهِمْ
مُقْتَدُونَ ⑩

فَلَأَوْلَوْ جِئْنَكُمْ بِإِهْدِي مِمَّا وَجَدْنَمْ
عَلَيْهِ أَبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أَرْسَلْنَا
بِهِ كُفَّارُونَ ⑪

فَإِنَّهُمْ مِنْهُمْ فَإِنْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ⑫

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ وَقَوْمَهُ إِنِّي
بِرَآءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ ⑬

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِيْنَ ⑯

وَجَعَلَهَا كَلْمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ
يُرَجِّعُونَ ⑯

بْلٌ مَتَّخَثٌ هَوْلَاءٌ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ
جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مِنْهُمْ ⑯

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ

निःसन्देह हम इसका इनकार करने वाले हैं । 31।

और उन्होंने कहा, क्यों न यह कुरआन दोनों प्रसिद्ध बस्तियों के किसी बड़े व्यक्ति पर उतारा गया ? । 32।

क्या वे हैं जो तेरे रब्ब की कृपा को विभाजित करेंगे ? हम ही हैं जिस ने उनके रोजगार के सामान उनके बीच इस सांसारिक जीवन में बाँटे हैं । और उनमें से कुछ लोगों को कुछ दूसरों पर हमने पद के अनुसार श्रेष्ठता प्रदान की है ताकि उनमें से कुछ, कुछ को वश में कर लें । और तेरे रब्ब की कृपा उससे उत्तम है जो वे इकट्ठा करते हैं । 33।

और यदि यह सम्भावना न होती कि सब लोग एक ही मत के हो जाएँगे तो हम अवश्य उनके लिए, जो रहमान (अल्लाह) का इनकार करते हैं, उनके घरों की छतों को चाँदी का बना देते और (इसी प्रकार) सीढ़ियों को भी, जिन पर वे चढ़ते हैं । 34।

और उनके घरों के द्वारों को भी और उन आसनों को भी (चाँदी के बना देते) जिन पर वे टेक लगाते हैं । 35।

और ठाठ-बाट प्रदान करते । परन्तु यह सब कुछ तो निश्चित रूप से केवल सांसारिक जीवन का सामान है । और परलोक तेरे रब्ब के निकट मुत्कियों के लिए होगा । 36। (रुक् ۳)

और जो रहमान के स्मरण से विमुख हो हम उसके लिए एक शैतान नियुक्त कर

وَإِنَّا بِهِ كَفِرُونَ ⑥

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرِيبَيْنِ عَظِيمٍ ⑦

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ تَحْنَ قَسْمَنَا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَتِ لَيْسَ خَدَ بَعْضَهُمْ بَعْضًا سُحْرِيًّا وَرَحْمَتَ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ⑧

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَجَعَلْنَا مِنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لَيْسَوْتِهِمْ سُقْفًا مِنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَطْهَرُونَ ⑨

وَلَيْسَوْتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُّاً عَلَيْهَا يَشْكُونَ ⑩

وَرَخْرَفًا ۖ وَلَاثُ مُلْكٌ لِمَّا مَاتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۖ ۱۱

وَمَنْ يَعْشَ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ لَقَبِضَ لَهُ

देते हैं । अतः वह उसका साथी बन जाता है । 37।

और निःसन्देह वे उन्हें सन्मार्ग से भटका देते हैं जबकि वे समझ रहे होते हैं कि वे हिदायत पा चुके हैं । 38।

यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो (अपने साथी को सम्बोधित करते हुए) कहेगा काश ! मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती । अतः वह क्या ही बुरा साथी सिद्ध होगा । 39।

और आज तुम्हें जबकि तुम अत्याचार कर चुके हो, यह बात कुछ लाभ नहीं देगी । क्योंकि तुम सब अज्ञाब में साझीदार हो । 40।

अतः क्या तू बहरों को सुना सकता है अथवा अंधों को राह दिखा सकता है और उसे भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हो ? । 41।

अतः यदि हम तुझे ले भी जाएँ तो उनसे हम अवश्य प्रतिशोध लेने वाले हैं । 42।

अथवा तुझे अवश्य वह दिखा देंगे जिसका हम उनसे वादा कर चुके हैं । अतः निःसन्देह हम उन पर पूर्णरूप से सामर्थ्य रखते हैं । 43।

अतः जो कुछ तेरी ओर वहह किया जाता है उसे दृढ़ता पूर्वक पकड़ ले । निःसन्देह तू सीधे रास्ते पर है । 44।

और निश्चित रूप से यह तेरे लिए और तेरी जाति के लिए भी एक महान

شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ④

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُ عَنِ السَّبِيلِ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ⑤

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ نَاقَالْ يَلِيهِتْ بَيْنِكَ وَبَيْنَكَ
بَعْدَ الْمُشْرِقِينَ قَبْسَ الْقَرِينُ ⑥

وَلَنْ يَنْفَعُكُمُ الْيَوْمَ إِذْ طَلَمْتُمُ أَنْجُومُ فِي
الْعَذَابِ مُشَرِّكُونَ ⑦

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمَىٰ
وَمَنْ كَانَ فِي صَلْلٍ مُّبِينٌ ⑧

فَإِنَّمَا تَذَهَّبُ إِلَكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ
مُّسْتَقِمُونَ ⑨

أُوْتَرِيَنَكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُونَ ⑩

فَأَشْتَكِلُ بِالَّذِي أُوْحَىٰ إِلَيْكَ إِنَّكَ
عَلَىٰ صَرَاطٍ مُّسْتَقِرٍ ⑪

وَإِنَّهُ لَذِكْرُكَ وَلَقُومُكَ وَسَوْفَ

अनुस्मरण है और तुम अवश्य पूछे
जाओगे । 45।

और उनसे पूछ जिन्हें हमने तुझसे पहले
अपने रसूल बनाकर भेजा कि क्या हमने
रहमान के सिवा कोई उपास्य बनाए थे
जिनकी उपासना की जाती थी ? । 46।

(रुक् ۴)
और निःसन्देह हमने मूसा को फिरआौन
और उसके सरदारों की ओर अपने चिह्नों
के साथ भेजा । अतः उसने कहा,
निःसन्देह मैं समस्त लोकों के रब्ब का
रसूल हूँ । 47।

अतः जब वह उनके पास हमारे चिह्नों
को लेकर आया तो वे झट-पट उनकी
खिल्ली उड़ाने लगे । 48।

और हम उन्हें जो भी (स्पष्ट) चिह्न
दिखाते थे वह अपने जैसे पहले चिह्न से
बढ़ कर होता था । और हमने उन्हें
अज्ञाव के द्वारा पकड़ा ताकि वे लौट
आयें । 49।

और उन्होंने कहा, हे जादूगर ! हमारे
लिए अपने रब्ब से वह माँग जिसका
उसने तुझ से वादा कर रखा है ।
निःसन्देह हम हिदायत पाने वाले बन
जाएँगे । 50।

अतः जब हमने उनसे अज्ञाव को दूर
कर दिया तो तुरन्त वे वचन-भंग
करने लगे । 51।

और फिरआौन ने अपनी जाति में घोषणा
की (और) कहा, हे मेरी जाति ! क्या
मिस देश और ये सब नहरें भी जो मेरे

تَسْأَلُونَ ④

وَسَأْلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسْلَنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ الْهَمَّ
يَعْبُدُونَ ④

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِإِيمَانٍ إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَائِكَهُ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ④

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِإِيمَانِنَا إِذَا هُمْ قُنْهَا
يُصْخَبُونَ ④

وَمَا أَنْرَيْتُهُمْ قُنْهَيَةً إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ
أَحْتِهَا ۚ وَأَخْذُنَهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ④

وَقَاتَلُوا يَأْيَةَ السَّحْرِ أَذْعَنَ كَارَبَّكَ بِمَا
عَهْدَ عِنْدَكَ ۗ إِنَّا لَمْ يَهْدُوْنَ ④

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ
يُشْكُنُونَ ④

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنٌ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَقُوْمٌ
آلِئَسَ ۖ لِي مَلِكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَرُ

अधीन बहती हैं मेरी नहीं ? अतः क्या तुम ज्ञान प्राप्त नहीं करते ? 152।

वास्तविकता यह है कि मैं उस व्यक्ति से बेहतर हूँ जो बिल्कुल तुच्छ है । और विचार की अभिव्यक्ति का भी सामर्थ्य नहीं रखता । 153।

अतः क्यों उस पर सोने के कंगन नहीं उतारे गए अथवा उसके साथ समूहबद्ध रूप में फरिश्ते नहीं आए ? 154।

अतः उसने अपनी जाति को कोई महत्व नहीं दिया और वे उसका आज्ञापालन करने लगे । निःसन्देह वे दुराचारी लोग थे । 155।

अतः जब उन्होंने हमें क्रोध दिलाया हमने उनसे प्रतिशोध लिया । और उन सबको (दल-बल सहित) दुबो दिया । 156।

अतः हमने उन्हें अतीत की कहानी और बाद में आने वालों के लिए शिक्षा का साधन बना दिया । 157। (रुक् ١١)

और जब मरियम के पुत्र को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है तो सहसा तेरी जाति इस पर शोर मचाने लगती है । 158।

और वे कहते हैं : क्या हमारे उपास्य उत्तम हैं अथवा वह ? वे तुझ से यह बात केवल ज्ञागड़े के उद्देश्य से करते हैं बल्कि वे अत्यन्त ज्ञागड़ालू लोग हैं । 159।

वह तो केवल एक भक्त था जिस को हमने पुरस्कृत किया और उसे बनी-

تَجْرِي مِنْ تَهْقِيٍّ أَفَلَا يَسْرِقُونَ ﴿٦﴾

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مِهِينٌ وَّلَا
يَكُونُ بِيَمِينٍ ①

فَلَوْلَا أُنْقَى عَلَيْهِ أَسْوَرَةً فَمَنْ ذَهَبٌ
أُوجَاءَ مَعَةَ الْمَلِّكَةِ مُقْتَرِنِينَ ②

فَاسْتَخَفَ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ③

فَلَمَّا آتَيْنَاهُمْ مَا كُنَّا نَعْلَمُ فَأَغْرَقْنَاهُمْ
أَجْمَعِينَ ④

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخَرِينَ ⑤

وَلَمَّا ضَرَبَ ابْنَ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمَكَ
مِنْهُ يَصْدُونَ ⑥

وَقَالُوا إِلَيْهِمْ أَنْتُمْ خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَاصِرَبُوهُ
لَكِ إِلَّا جَدَلًا بِئْلَهُمْ قَوْمٌ حَصَمُونَ ⑦

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ

इस्लाईल के लिए एक (अनुकरणीय) आदर्श बना दिया । 160।

और यदि हम चाहते तो तुम्हीं में से फरिश्ते बनाते जो धरती में प्रतिनिधित्व करते । 161।

और वह तो निःसन्देह क्रांति की घड़ी की पहचान होगा । अतः तुम उस (घड़ी) पर कदापि कोई संदेह न करो और मेरा अनुसरण करो । यह सीधा मार्ग है । 162।

और शैतान तुम्हें कदापि न रोक सके । निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है । 163।

और जब ईसा खुले-खुले चिह्नों के साथ आ गया तो उसने कहा, निःसन्देह मैं तुम्हारे पास तत्त्वज्ञान लाया हूँ । और इस कारण आया हूँ कि तुम्हारे सामने कुछ वह बातें खोल कर वर्णन करूँ जिनमें तुम मतभेद करते हो । अतः अल्लाह का तक्रवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो । 164।

निःसन्देह अल्लाह ही है जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है । अतः उसकी उपासना करो । यह सीधा मार्ग है । 165।

फिर उनके अंदर ही से समूहों ने मतभेद किया । अतः जिन लोगों ने अत्याचार किया कष्टदायक दिन के अज्ञाव स्वरूप उनका सर्वनाश हो । 166।

क्या वे उसके सिवा कुछ और की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि (क्रयामत की) घड़ी उनके पास सहसा इस प्रकार आ जाए कि उन्हें पता भी न चले । 167।

مَثَلًا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ۖ

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلِكًا فِي
الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ۝

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلْسَّاعَةِ فَلَا تَمْرُنَ بِهَا
وَاتَّبِعُونَ ۖ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝

وَلَا يَصِدِّنَكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُنْ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ عَيْنَىٰ بِالْبَيْتِ قَالَ قَدْ
جُئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلَا يَبْيَنُ لَكُمْ بَعْضُ
الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رِبِّيْنِ وَرَبِّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۖ هَذَا
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝

فَاخْتَلَفَ الْأَخْرَابُ مِنْ يَتَّبِعُهُمْ وَمَنْ يَنْجِرُ
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَدَادِ يَوْمِ الْآيَةِ ۝

هَلْ يَشْرُكُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ
بَعْتَهُ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

उस दिन कई घनिष्ठ मित्र एक दूसरे के शबु हो जाएंगे सिवाए मुत्तकियों के 168। (रुक् ६^१)

(अल्लाह कहेगा) है मेरे भक्तो ! आज तुम पर न कोई भय होगा और न तुम शोकग्रस्त होगे 169।

वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी बने रहे 170।

तुम और तुम्हारे साथी इस अवस्था में स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ कि तुम्हें बहुत प्रसन्न किया जाएगा 171।

उन पर सोने के थालों और प्यालों के दौर चलाए जाएंगे । और उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जिसकी उनके मन इच्छा करेंगे और जिस से आँखें तृप्त होंगी । और तुम उसमें सदा रहने वाले हो 172।

और यह वह स्वर्ग है जिसके तुम उन कर्मों के कारण जो तुम करते रहे हो, उत्तराधिकारी बनाए गए हो 173।

तुम्हारे लिए उसमें प्रचुर मात्रा में फल होंगे, जिनमें से तुम खाओगे 174।

निःसन्देह अपराध करने वाले नरक के अज्ञाब में लम्बे समय तक रहने वाले हैं 175।

वह (अज्ञाब) उनसे कम नहीं किया जाएगा और वे उसमें निराश होकर पड़े होंगे 176।

और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं ही अत्याचार करने वाले थे 177।

الْأَخِلَّاءُ يُوْمَئِنُ بِعَصْمَهُ لِبَعْضِ عَدُوٍ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ⑯

يَعْبَادُ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ أَيْوَمٌ وَلَا أَنْتُمْ
تَحْرَثُونَ ⑯

الَّذِينَ أَمْتَوا إِلَيْسَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ⑯
أَذْخَلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَآزْوَاجُكُمْ
تَحْبَرُونَ ⑯

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ
وَأَكْوَابٍ ۝ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ
وَتَلَذُّذُ الْأَعْيُنِ ۝ وَأَنْتُمْ فِيهَا حَلِيلُونَ ⑯

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورْشَمُوهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑯
لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا
تَأْكُلُونَ ⑯

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ
خَلِيلُونَ ⑯

لَا يَقْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ⑯

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمْ
الظَّالِمِينَ ⑯

और वे पुकारेंगे कि हे मालिक ! तेरा रब्ब हमें मृत्यु ही दे दे । वह कहेगा, तुम निश्चित रूप से यहाँ ठहरने वाले हो । 178।

निःसन्देह हम तुम्हारे पास सत्य के साथ आए थे परन्तु तुम में से अधिकतर सत्य को नापसन्द करने वाले थे । 179।

क्या उन्होंने कुछ करने का निर्णय कर लिया है ? तो अवश्य हमने भी कुछ करने का निर्णय कर लिया है । 180।

क्या वे यह धारणा करते हैं कि हम उनके भेद और गुल परामर्शों को नहीं सुनते ? क्यों नहीं ! हमारे दूत उनके पास ही लिख भी रहे होते हैं । 181।

तू कह दे कि यदि रहमान का कोई पुत्र होता तो मैं (उसकी) उपासना करने वालों में सबसे पहला होता । 182।

परित्र है आकाशों और धरती का रब्ब अर्श का रब्ब उससे जो वे वर्णन करते हैं । 183।

अतः उन्हें छोड़ दे कि वे व्यर्थ बातें करते और खेलते रहें । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है । 184।

और वही है जो आकाश में उपास्य है और धरती में भी उपास्य है । और वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 185।

और एक ही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके लिए आकाशों और धरती का

وَنَادَوْا يَمِلِكَ لِيُقْضِى عَلَيْنَا رَبُّكَ فَأَنَّ
إِنَّكُمْ مُّلْكُنَّ ⑧

لَقَدْ جِئْنَكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكُنَّ أَكْثَرَكُمْ
لِلْحَقِّ كَرْهُونَ ⑨

أَمْ أَبْرَمْتُمْ أَمْرًا فَإِنَّا مُبِرْمُونَ ⑩

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ بَلْ وَرَسَلْنَا لَدَيْهُمْ
يَكْتُبُونَ ⑪

قُلْ إِنْ كَانَ لِرَبِّ الْرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَإِنَّا أَوْلَى
الْعَبْدِينَ ⑫

سَبِّحْكَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصْفُونَ ⑬

فَذَرْهُمْ يَحْوِضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يَلْقَوْا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ⑯

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ
إِلَهٌ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ⑯

وَتَبَرَّكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ

और जो कुछ उनके मध्य है, साम्राज्य है। और उसके पास उस विशेष घड़ी का ज्ञान है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे 186।

और वे लोग, जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं, सिफारिश का कोई अधिकार नहीं रखते, सिवाए उन लोगों के जो सच्ची बात की गवाही देते हैं और वे ज्ञान रखते हैं 187।

और यदि तू उनसे पूछे कि उन्हें किसने पैदा किया है ? तो वे अवश्य कहेंगे अल्लाह ने । फिर वे किस ओर बहकाये जाते हैं ? 188।

और उसके यह कहने के समय को याद करो कि हे मेरे रब ! ये लोग कदापि ईमान नहीं लाएँगे 189।

अतः तू उनको क्षमा कर और कह : “सलाम” । अतः शीघ्र ही वे जान लेंगे 190। (रुकू 7/3)

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمٌ
السَّاعَةٌ وَالَّتِي يُرْجَعُونَ ①

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهَدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ②

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقُوكُنَّ اللَّهُ
فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ③

وَقَبْلِهِ لِرَبِّ إِنَّ هُوَ لَاءُ قَوْمٍ لَا
يُؤْمِنُونَ ④

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ⑤

44—सूरः अद-दुखान

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 60 आयतें हैं।

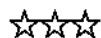
सूरः अद-दुखान का आरम्भिक विषयवस्तु पवित्र कुरआन की एक छोटी सी सूरः अल-कद्र के विषयवस्तु की ओर संकेत कर रहा है। जो इन आरम्भिक आयतों से स्पष्ट है, कि हमने इस पुस्तक को एक ऐसी अंधेरी रात में उतारा है जो बहुत मगंलमयी थी। क्योंकि इस अंधकार के पश्चात् सदा के आलोक फूटने वाले थे। उस रात प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय का निर्णय किया जाएगा।

पिछली सूरः के अन्त पर यह विषय वर्णन किया गया था कि विरोधियों को व्यर्थ बातों और खेल-तमाशा में भटकने दे और उनसे विमुख हो जा। वह समय निकट है जब स्पष्ट रूप से सत्य और असत्य में पार्थक्य कर दिया जाएगा। अतः इस सूरः की आरम्भिक आयतों में इस बात का उल्लेख कर दिया गया है।

इस सूरः का नाम दुखान (अर्थात् धुआँ) रखने का एक बड़ा कारण यह है कि जिन अंधकारों के बे शिकार हैं उनके पश्चात् तो कृपा का कोई सवेरा नहीं होगा अपितु वे अंधेरे उनके लिए धुएँ की भाँति उनके अज्ञाब को बढ़ाने का कारण बनेंगे। यहाँ धुआँ का तात्पर्य आणविक धुएँ की ओर भी संकेत हो सकता है, जिस की छाया के नीचे कोई चीज़ भी सुरक्षित नहीं रह सकती बल्कि विभिन्न प्रकार के विनाशों का शिकार हो जाती है।

अतएव आधुनिक वैज्ञानिकों की ओर से यह चेतावनी है कि आणविक धुएँ की छाया के नीचे प्रत्येक प्रकार का जीवन मिट जाएगा। यहाँ तक कि धरती के अन्दर दबे हुए कीटाणु भी नष्ट हो जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब ऐसा होगा तब ये सब अल्लाह तआला से गुहार लगाएँगे कि हे अल्लाह! इस अत्यन्त पीड़ादायक अज्ञाब को हमसे टाल दे। यहाँ यह भविष्यवाणी भी कर दी कि इस प्रकार का अज्ञाब ठहर-ठहर कर आएगा। अर्थात् एक विश्वयुद्ध की विनाशलीलाओं के पश्चात् कुछ समय ढील दी जाएगी, उसके पश्चात् फिर अगला विश्वयुद्ध नए विनाशों को लेकर आएगा।

सूरः अद-दुखान के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बता दिया गया था कि इसकी भविष्यवाणियों के प्रकटन का समय दज्जाल के प्रकट होने से सम्बन्ध रखता है।



سُورَةُ الدُّخَانِ مَكْتُوبٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سُنُونٌ أَيَّهَا وَثَلَاثَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति
गौरवशाली । 21

कसम है उस पुस्तक की जो खुली और
सुस्पष्ट है । 31

निःसन्देह हमने इसे एक बड़ी मंगलमयी
रात्रि में उतारा है । हम हर हाल में
सतर्क करने वाले थे । 41

इस (रात्रि) में प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय
का निर्णय किया जाता है । 51

एक ऐसे विषय के रूप में जो हमारी ओर
से है । निःसन्देह हम ही रसूल भेजने
वाले हैं । 61

कृपा स्वरूप तेरे रब्ब की ओर से ।
निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और)
स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 71

(जो) आकाशों और धरती के रब्ब की
ओर से और (जो उसका भी रब्ब है) जो
उन दोनों के बीच है । यदि तुम विश्वास
करने वाले हो । 81

उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । वही
जीवित करता है और मारता भी है ।
(वह) तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे
पूर्वजों का भी रब्ब है । 91

वास्तविकता यह है कि वे तो एक शंका
में पड़े खेल में लगे हुए हैं । 101

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

وَالْكِتَابِ الْمَبْرُورِ ②

إِنَّا آنْزَلْنَا فِي لَيْلَةٍ مُّبَرَّكَةً إِنَّا كَيْأَنَا مُّذْدِرِينَ ③

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٌ ④

أَمْرًا مَّنْ عَنِّدَنَا إِنَّا كَيْأَنَا مُرْسِلُنَّ ⑤

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ إِنَّهُ هُوَ الشَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ⑥

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِنَّ كُلَّمُؤْمِنٍ مُّوقِنٌ ⑦

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يَعْلَمُ وَيَعْلَمُ رَبُّكُنْ
وَرَبُّ أَبَائِكُمْ الْأَوَّلِينَ ⑧

بِلْ هُمْ فِي شَكٍ يَأْلَمُونَ ⑨

अतः प्रतीक्षा कर उस दिन की जब
आकाश एक स्पष्ट धुआँ लाएगा । 111

فَإِذْ تَقْبُلُ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ
مَّبِينٌ ۝

जो लोगों को ढाँप लेगा । यह एक बहुत
पीड़ाजनक अज्ञाब होगा । 112

يَعْشَى الشَّاسْطِرُ هَذَا عَذَابُ الْيَوْمِ ۝

हे हमारे रब ! हमसे यह अज्ञाब दूर कर
दे। अवश्य हम ईमान ले आएँगे । 113

رَبَّنَا كُشِيفٌ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝

उनके लिए उपदेश प्राप्ति अब कहाँ
संभव ? जबकि उनके पास एक सुस्पष्ट
तर्कों वाला रसूल आ चुका था । 114

أَنْ لَهُمْ الدِّكْرُ وَقَدْ جَاءَهُمْ
رَسُولٌ مَّبِينٌ ۝

फिर भी वे उससे विमुख हुए और कहा,
(यह तो) सिखाया पढ़ाया हुआ
(बल्कि) पागल है । 115

لَمْ تَوْلُوا أَعْنَاءً وَقَالُوا مَعْلُومٌ مَّجْبُونٌ ۝

निःसन्देह हम अज्ञाब को थोड़ी देर के
लिए दूर कर देंगे । तुम अवश्य (इन्हीं
बातों को) दोहराने वाले हो । 116

إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ
عَلَيْدُونَ ۝

जिस दिन हम बड़ी कठोरता पूर्वक (तुम
पर) हाथ डालेंगे । निश्चित रूप से हम
प्रतिशोध लेने वाले हैं । 117

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبُطْشَةَ الْكَبِيرِ
إِنَّا مُمْتَقِمُونَ ۝

और निःसन्देह हम उनसे पहले फिर औन
की जाति की भी परीक्षा ले चुके हैं जब
उनके पास एक सम्मानित रसूल आया
था । 118

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمٌ فِرْعَوْنَ
وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۝

(यह कहते हुए) कि अल्लाह के
भक्तों को मेरे हवाले कर दो ।
निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक
विश्वसनीय रसूल हूँ । 119

أَنْ أَدْوَى إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ إِنْ لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

और अल्लाह के विश्व उद्घटता न
करो । निःसन्देह मैं तुम्हारे पास एक
सुस्पष्ट (और) प्रवल तर्क लाने वाला
हूँ । 120

وَأَنْ لَا تَعْلُوْ عَلَى اللَّهِ إِنْ أَتَيْكُمْ
بِسُلْطَنٍ مَّبِينٍ ۝

और निःसन्देह मैं अपने रब्ब और तुम्हारे रब्ब की (इस बात से) शरण में आता हूँ कि तुम मुझे संगसार न कर दो । १२१।

और यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझे अकेला छोड़ दो । १२२।

अतः उसने अपने रब्ब को पुकारा कि ये अपराधी लोग हैं । १२३।

अतः (अल्लाह ने कहा) तू मेरे भक्तों को साथ लेकर रात्रि के समय प्रस्थान कर । अवश्य तुम्हारा पीछा किया जाएगा । १२४।

और समुद्र को (इस अवस्था में) छोड़ दे कि वह शांत हो । निःसन्देह वह एक ऐसी सेना है जो डुबो दी जाएगी । १२५।

कितने ही बागान और जलस्रोत हैं जो वे (पीछे) छोड़े । १२६।

और खेतियाँ और प्रतिष्ठा युक्त स्थान भी । १२७।

और (ऐसी) सुख-समृद्धि जिसमें वे मजे उड़ाया करते थे । १२८।

इसी प्रकार हुआ । और हमने एक दूसरी जाति को इस (नेमत) का उत्तराधिकारी बना दिया । १२९।

अतः उन पर आकाश और धरती नहीं रोए और उन्हें ढील नहीं दी गई । १३०।

(रुक् १/४)

और निःसन्देह हमने बनी-इस्लाइल को एक अपमानजनक अज्ञाब से मुक्ति प्रदान की । १३१।

وَإِنْ عَذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ أَنْ
تَرْجِمُونِ^④

وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَيْ فَاعْتَرِفُوْنِ^⑤

فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هُوَ لَاءُ قَوْمٍ
مُّجْرِمُوْنَ^⑥

فَأَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيَلًا إِنَّكُمْ مُّنْتَهَوْنَ^⑦

وَاتْرُلِكَ الْبَحْرَ رَهُوَا^٨ إِنَّهُمْ جَنْدُ
مُّغْرِقُوْنَ^٩

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنْتِ وَعَيْوِنِ^{١٠}

وَرُزْفَعُ وَمَقَامِ كَرِينِ^{١١}

وَنَحْمَةُ كَانُوا فِيهَا فَكِيرِيْنِ^{١٢}

كَذِيلِكَ^{١٣} وَأُورَثَهَا قَوْمًا أَخْرِيْنِ^{١٤}

فَمَا بَكْتُ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ
وَمَا كَانُوا مُنْظَرِيْنَ^{١٥}

وَلَقَدْ نَجَيْنَا بَنِيْ إِسْرَائِيلَ مِنْ
الْعَذَابِ الْمُهِمِيْنِ^{١٦}

जो फिरआैन की ओर से था । निःसन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों में से एक बहुत उद्धण्डी व्यक्ति था । 32।

और निःसन्देह हमने उनको किसी ज्ञान के कारण समस्त जगत पर वरीयता प्रदान की थी । 33।

और हमने उन्हें कुछ चिह्न प्रदान किए, जिनमें खुली-खुली परीक्षा थी । 34।

निःसन्देह ये लोग कहते हैं : । 35।

हमारी इस पहली मृत्यु के अतिरिक्त और कोई मृत्यु नहीं और हम उठाए जाने वाले नहीं । 36।

अतः हमारे पूर्वजों को तो वापस लाओ, यदि तुम सच्चे हो ? । 37।

क्या ये लोग उत्तम हैं अथवा तुब्बा की जाति और वे लोग जो उनसे पहले थे ? हमने उनको विनष्ट कर दिया । निःसन्देह वे (सब) अपराधी थे । 38।

और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, यूँ ही खेल-खेलते हुए पैदा नहीं किया । 39।

हमने उनको सत्य के साथ ही पैदा किया । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 40।

निःसन्देह निर्णय का दिन उन सब के लिए एक निर्धारित समय है । 41।

जिस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ काम नहीं आएगा । और न ही उनकी सहायता की जाएगी । 42।

مِنْ فِرْعَوْنَ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًّا
مِنَ الْمُسْرِفِينَ ④

وَلَقَدْ أَخْرَجْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَىٰ
الْعَلِمِينَ ⑤

وَأَتَيْنَاهُمْ مِنَ الْأَلَيَّتِ مَا فِيهِ بَلُوغُ أُمَّيْمِينَ ⑥

إِنَّ هُوَ لَاءُكَيْقَوْنَ ⑦

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُنْشِرِينَ ⑧

فَأَتَوْا إِلَيْنَا إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ⑨

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمٌ تَبْيَعُ ۗ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ⑩

وَمَا حَكَفَنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضُ وَمَا
بِيْنَهُمَا لِعِينَ ⑪

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ⑫

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ⑬

يَوْمَ لَا يَعْنِي مَوْتًا عَنْ مَوْتٍ شَيْئًا وَلَا
هُمْ يَتَصَرَّفُونَ ⑭

सिवाए उसके जिस पर अल्लाह ने दया की । निःसन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 143। (रुकू ٢٥)

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِلَهٌ هُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ⑯

निःसन्देह थूहर का पौधा । 144।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقْوَمِ ⑪
طَعَامُ الْأَثِيمِ ⑯

पापी का भोजन है । 145।

(वह) पिघले हुए ताँबे की भाँति है ।
(जो) पेटों में खौलता है । 146।

كَالْمُهْمَلٍ يَعْلُى فِي الْبَطْوَنِ ⑮

गर्म पानी के खौलने की भाँति । 147।

كَغَلْيُ الْحَمِيمِ ⑯

उस (पापी) को पकड़ो और फिर घसीटते हुए नरक के बीच में ले जाओ । 148।

خَذُوهُ فَاغْتَلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ ⑯

फिर उसके सिर पर अज्ञाब स्वरूप खौलता हुए कुछ पानी उड़ेलो । 149।

شَرْصَبُوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ
الْحَمِيمِ ⑯

(उसे कहा जाएगा) चख । निःसन्देह तू बहुत बुजुर्ग (और) सम्मान वाला (बनता) था । 150।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ⑯

निःसन्देह यही है वह, जिसके विषय में तुम संदेह किया करते थे । 151।

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمَرُّونَ ⑯

निश्चित रूप से मुत्की शांतिमय स्थान में होंगे । 152।

إِنَّ الْمُتَقِينَ فِي مَقَابِرِ أَمْيَنِ ⑯

बागों और जलस्रोतों में । 153।

فِي جَنَّتٍ وَعَيْوَنٍ ⑯

बारीक और मोटे रेशम के वस्त्र पहने हुए एक दूसरे के सामने बढ़े होंगे । 154।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدَسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ
مَسْقِيلَنَ ⑯

इसी प्रकार होगा । और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याओं के साथी

كَذِيلَكَ وَزَوْجِنَهُمْ بِحُوْرِ عَيْنٍ ⑯

बना देंगे 155।*

वे उसमें शांतिपूर्वक प्रत्येक प्रकार के फलों को मंगवा रहे होंगे 156।

वे उसमें पहली मृत्यु के अतिरिक्त किसी और मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे । और वह (अल्लाह) उन्हें नरक के अज्ञाब से बचाएगा 157।

यह तेरे रब्ब की ओर से कृपा स्वरूप होगा । यही बहुत बड़ी सफलता है 158।

अतः निश्चित रूप से हमने इसे तेरी जुबान पर सरल बना दिया है ताकि वे उपदेश ग्रहण करें 159।

अतः तू प्रतीक्षा कर निःसन्देह वे भी प्रतीक्षा में हैं 160। (रुकू 3/16)

يَدْعُونَ فِيهَا بَكَلٌ فَاكِهٌ أَمْنِينٌ ۝

لَا يَرْدُو قُوْنَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ
الْأُولَىٰ وَقُلُّهُمْ عَذَابُ الْجَحِيمِ ۝

فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

فَإِنَّمَا يَسِّرُنَا بِإِلَيْنَاكَ لَعَلَّهُمْ
يَسْتَكْبِرُونَ ۝

فَازْ تَقْبُلُهُمْ مُرْتَقِبُونَ ۝

* आयत सं. 54, 55 : जो चीजें इस संसार में लोग पसन्द करते हैं, केवल उपमा स्वरूप उनका यहाँ वर्णन किया गया है जबकि उनकी वास्तविकता का किसी को ज्ञान नहीं ।

45- सूरः अल-जासियः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 38 आयतें हैं।

इस सूरः में आयत सं. 14 एक ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के गुप्त रहस्यों पर से इस रंग में पर्दा उठा रही है कि पूर्ववर्ती किसी भी ग्रन्थ में इससे मिलती जुलती आयत अवतरित नहीं हुई। वर्णन किया कि सब कुछ जो धरती और आकाश में है वह मनुष्य के लिए सेवाधीन किया गया है। अतः वे लोग जो चिन्तन-मनन करते हैं यह जान लेंगे कि समस्त नक्षत्रों के प्रभाव मनुष्यों पर पड़ रहे हैं। मानो मनुष्य एक लघु ब्रह्माण्ड (Micro Universe) है और इस विशाल ब्रह्माण्ड का सारांश है।

फिर इस चर्चा के पश्चात कि क्रयामत अवश्य आने वाली है, कहा कि क्रयामत के भयानक चिह्नों को देख कर और अपने बुरे अन्त को अपनी आँखों के समक्ष पाते हुए वे घुटनों के बल धरती पर गिर पड़ेंगे। अर्थात् अल्लाह तआला के प्रताप के समक्ष सजदः में गिर कर यह इच्छा करेंगे कि काश ! वे इस बड़े अजाब से बचाए जा सकते !

फिर वर्णन किया कि प्रत्येक संप्रदाय का निर्णय उसकी अपनी पुस्तक अर्थात् धर्मविधान के अनुसार किया जाएगा।

इस सूरः की अन्तिम आयत मनुष्य की दृष्टि को फिर उस विषय की ओर आकर्षित करती है कि सारी सृष्टि अपनी स्थिति से अल्लाह की स्तुति को प्रकट कर रही है। और यह बता रही है कि सारी बड़ाई उसी की है और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है।



سُورَةُ الْجَاثِيَّةِ مَكَّيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ ثَمَانٌ وَ ثَلَاثُونَ آيَةٌ وَ أَرْبَعَةُ رُكُوعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 1।

हमीदुन्, मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली । 2।

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से है । 3।

निःसन्देह आकाशों और धरती में मोमिनों के लिए प्रचुर संख्या में चिह्न हैं । 4।

और तुम्हारी उत्पत्ति में, और जो कुछ चलने फिरने वाले प्राणियों में से वह (अल्लाह) फैलाता है, उनमें एक विश्वास करने वाले लोगों के लिए वृहद चिह्न हैं । 5।

और रात और दिन के अदलने-बदलने में और इस बात में कि अल्लाह आकाश से एक जीविका उतारता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। और हवाओं की दिशा बदल-बदल कर चलाने में (भी) बुद्धि से काम लेने वाले लोगों के लिए अनेक चिह्न हैं । 6।

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तेरे समक्ष सत्य के साथ पढ़ कर सुनाते हैं। अतः अल्लाह और उसकी आयतों के

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنْ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ②

إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ
لِلْمُؤْمِنِينَ ③

وَفِي خُلُقِكُمْ وَمَا يَأْتِيكُمْ مِنْ دَآبَةٍ إِلَيْتُ
لِقَوْمٍ لَيُوقَنُونَ ④

وَاحْتِلَافُ الْيَلِ وَالثَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفُ الرِّيحِ إِلَيْتُ لِقَوْمٍ
يَقْلُوْنَ ⑤

تِلْكَ آيَتُ اللَّهِ وَتَشْتُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِيقَ قِيَامٍ

बाद फिर और किस बात पर वे ईमान लाएँगे ? । 7।

सर्वनाश हो प्रत्येक घोर मिथ्यावादी और महा पापी का । 8।

वह अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस के समक्ष पढ़ी जाती हैं फिर भी अहंकार करते हुए (अपने हठ पर) अड़ा रहता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं। अतः उसे पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे । 9।

और जब वह हमारे चिह्नों में से कुछ की जानकारी पाता है तो उन्हें उपहास का पात्र बनाता है। यहीं वे लोग हैं जिन के लिए अपमानजनक अज़ाब है । 10।

(और) उनसे परे नरक है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह कुछ भी उनके काम नहीं आएगा और न ही वे (उनके काम आएँगे) जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा मित्र बना रखा है। जबकि उनके लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) है । 11।

यह एक बड़ी हिदायत है। और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की आयतों का इनकार किया उनके लिए थर्रा देने वाले अज़ाब में से एक पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है । 12। (रुक् ۱۷)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को सेवाधीन किया ताकि उसके आदेश से उसमें नौकाएँ चलें। और इसके परिणामस्वरूप तुम उसकी कृपा की तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो । 13।

حَدِيثٌ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَتِهِ يُؤْمِنُونَ ⑦

وَيُلْكِلُ كُلَّ أَفَّاقٍ أَئِيمَرُ ۝

يَسْمَعُ آيَتِ اللَّهِ شَتَّى عَلَيْهِ تَمَّ يَصْرُ
مُسْتَكْبِرًا كَانُ لَمْ يَسْمَعْهَا ۝ قَبَّسْرَةُ
بِعَذَابِ الْيَمِيرِ ①

وَإِذَا عِلِمَ مِنْ أَيْتَاسِيَّةٍ أَنَّهُ خَذَهَا هَرَقَا ۝
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَعْنِي عَنْهُمْ مَا
كَبُرَا شَيْئًا وَلَا مَا أَخْذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
أُولَئِكَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

هَذَا هَدَىٰ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِإِيتَرَبَّهُمْ
لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزِ أَلِيمٍ ۝

اللَّهُ الَّذِي سَفَرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِي
الْفُلْكَ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

और आकाशों में और धरती में जो कुछ भी है, उसमें से सब उसने तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया। इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए निश्चित रूप से खुले-खुले चिह्न हैं ॥14॥

जो ईमान लाए हैं, तू उनसे कह दे कि उन लोगों से क्षमापूर्ण व्यवहार करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते ताकि वह (अल्लाह) स्वयं ऐसे लोगों को उनकी कमाई के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे ॥15॥

जो नेक कर्म करता है तो (वह) अपने लिए ही ऐसा करता है। और जो कोई बुराई करता है तो (वह) स्वयं अपने विरुद्ध (ऐसा करता है)। फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे ॥16॥

और निःसन्देह हमने बनी इस्लाइल को पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की। और पवित्र वस्तुओं में से उन्हें जीविका प्रदान की और उनको समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की ॥17॥*

और हमने उन्हें शरीअत (अर्थात् धर्म विधान) की खुली-खुली शिक्षाएँ प्रदान कीं। फिर उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करते हुए मतभेद किया जब कि उनके पास ज्ञान आ चुका था। निःसन्देह तेरा रब्ब उनके बीच क़्यामत

وَسْخَرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا مَهْ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَسْفَكُرُونَ ۝

فَلِلَّذِينَ آمَنُوا يَعْفُرُوا اللَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَعْزِزَ قَوْمًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۝ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا شَرٌّ إِلَى رَبِّكُمْ تُرْجَمُونَ ۝

وَلَقَدْ أَتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ
وَالْحُكْمَ وَالثِّبَوَةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنْ
الصَّيْلِتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَلَمِينَ ۝

وَأَتَيْنَاهُمْ بِيَتِٰتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۝ فَمَا اخْتَلَفُوا
إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۝ بَعْدًا
بَيْنَهُمْ ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمًا

* बनी इस्लाइल को समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान करने का अभिप्राय यह है कि उस युग के ज्ञात जगत पर उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त थी। संसार इतने भागों में बंटा हुआ था जिनका कोई ज्ञान बनी इस्लाइल को नहीं था। फिर भी जो भी जगत बनी-इस्लाइल की जानकारी में आए उन सब पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की गई।

के दिन उन विषयों में निर्णय करेगा
जिनमें वे मतभेद किया करते थे । 18।

फिर हमने तुझे शरीअत के एक
महत्वपूर्ण विषय पर क्रायम कर दिया ।
अतः उसका अनुसरण कर । और उन
लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर
जो ज्ञान नहीं रखते । 19।*

निःसन्देह वे अल्लाह के मुकाबले पर तेरे
किसी काम नहीं आ सकेंगे । और
निश्चित रूप से अत्याचारी परस्पर एक
दूसरे के मित्र होते हैं जब कि अल्लाह
मुत्तकियों का मित्र होता है । 20।

लोगों के लिए ये ज्ञान-वर्धक बातें हैं
और विश्वास करने वाले लोगों के लिए
हिदायत और करुणा स्वरूप हैं । 21।

क्या वे लोग जो भिन्न-भिन्न प्रकार के
पाप अर्जित करते हैं, उन्होंने यह सोच
लिया है कि हम उन्हें उन लोगों की
भाँति बना देंगे जो ईमान लाए और नेक
कर्म किए । (मानो) उनका जीना और
मरना एक जैसा होगा ? बहुत ही बुरा है
जो वे निर्णय करते हैं । 22। (रुक् ۲۸)

और अल्लाह ने आकाशों और धरती को
सत्य के साथ पैदा किया, ताकि प्रत्येक
जान को उसकी कमाई के अनुसार
प्रतिफल दिया जाए और उनपर
अत्याचार नहीं किया जाएगा । 23।

क्या तूने उसे देखा है, जो अपनी इच्छा
को ही उपास्य बना बैठा हो और

الْقِيلَةُ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑩

شَرَّ جَعَلْنَاكُمْ عَلَى شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ
فَاتَّبِعُهَا وَلَا تَتَّبِعُ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا
يَعْلَمُونَ ⑪

إِنَّمَا مَنْ يَعْتَوْا عَنْكَ مِنَ اللَّوَّاهِيْأَطْ وَإِنَّ
الظَّلَمِيْنَ بَعْضُهُمْ أَوْلَائِهِ بَعْضٌ وَاللَّهُ
وَلِيُّ الْمُسْتَقِيْنَ ⑫

هَذَا بَصَارَتِ لِلثَّاَيْسِ وَهَذَيْ قَرْحَمَهُ
لِقَوْمِ لَيْوَقْنُونَ ⑬

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيْئَاتِ
أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّلِيْحَاتِ سَوَاءً مَّجِيَاهُمْ وَمَمَانُهُمْ
سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ⑭

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
وَلِتَجْزِيَ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُنَّ
لَا يَظْلَمُونَ ⑮

أَفَرَءَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ اللَّهَ هَوَيْهَ وَأَضَلَّهُ

* फिर उनके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शरीअत दी गई । क्योंकि हज़रत
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सार्वभौम नवी थे इस कारण उनकी शरीअत भी सार्वभौमिक है ।

अल्लाह ने उसे किसी जानकारी के आधार पर पथभ्रष्ट घोषित किया हो । और उसकी सुनने की शक्ति पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी हो और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया हो ? अतः अल्लाह के बाद उसे कौन हिदायत दे सकता है ? क्या फिर भी तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? 124।

और वे कहते हैं, यह (जीवन) हमारे सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं । हम मरते भी हैं और जीवित भी होते हैं और काल के अतिरिक्त और कोई नहीं जो हमें विनष्ट करता हो । हालाँकि उनको इस विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं । वे तो केवल काल्पनिक बातें करते हैं । 125।

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन के समक्ष पढ़ी जाती हैं तो उनका तर्क यह कहने के सिवा कुछ नहीं होता कि हमारे पूर्वजों को वापस ले आओ, यदि तुम सच्चे हो । 126।

तू कह दे कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है, फिर तुम्हें मारता है । फिर क्यामत के दिन की ओर जिसमें कोई संदेह नहीं, तुम्हें इकट्ठा करके ले जाएगा । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 127। (रुकू ۳۹)

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । और जिस दिन क्यामत होगी उस दिन झूठ बोलने वाले हानि उठाएँगे । 128।

اللَّهُ عَلَى عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ
وَجَعَلَ عَلَى بَصَرِهِ غِشْوَةً فَمَنْ يَهْدِي إِلَيْهِ
مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑩

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاةُ الدُّنْيَا نَمُوتُ
وَنَحْيَا وَمَا يَهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا
لَهُ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا
يَكْنِيْنَ ⑪

وَإِذَا شَتَّلَ عَلَيْهِمْ أَيْتَنَا يَسِّنِتِ مَا كَانَ
حَجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّشَوْأْ بِاَبَائِنَا
إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِنَ ⑫

قُلِ اللَّهُ يُحِيِّيْ كُلَّمَ مِيمُشِكُمْ شَرَّ
يَجْمَعُحُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَرَبِّ فِيهِ
وَلَكُنَّ أَكْفَرَالثَّالِثِ لَا يَعْلَمُونَ ⑬

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَيَوْمَ
تَقْوُمُ السَّاعَةُ يَوْمٌ يَنْهَىْ يَنْهَىْ الْمُبْطَلُونَ ⑭

और तू प्रत्येक सम्प्रदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ देखेगा । प्रत्येक सम्प्रदाय को अपनी पुस्तक की ओर बुलाया जाएगा । (और कहा जाएगा) आज के दिन तुम्हें उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे । 129।

यह हमारी पुस्तक है जो तुम्हारे विरुद्ध सत्य के साथ बात करेगी । तुम जो कुछ करते थे हम निःसन्देह उसे लिखित में ले आते थे । 130।

अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो उनका रब्ब उन्हें अपनी दया में प्रविष्ट करेगा । यही खुली-खुली सफलता है । 131।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा कि) क्या तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं ? फिर भी तुमने अहंकार किया और तुम अपराधी लोग बन गए । 132।

और जब कहा जाता है, निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । और निश्चित घड़ी में कोई सदेह नहीं तो तुम कहते हो कि हम नहीं जानते कि निश्चित घड़ी क्या चीज़ है । हम (इसे) एक अटकल से बढ़ कर कुछ नहीं सोचते और हम कदापि विश्वास करने वाले नहीं । 133।

और उन पर उन कर्मों के दुष्परिणाम प्रकट हो जाएँगे जो उन्होंने किए । और

وَتَرِى كُلَّ أَمَّةٍ جَاءِيَةً كُلُّ أَمَّةٍ تَدْعَى
إِلَىٰ كِتْبِهَا إِلَيْوَمْ تُجَرَّوْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑩

هَذَا كِتَبَنَا يَسْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ
إِنَّا كُنَّا نَسْتَخْسِحُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑪

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
فَيُدْخَلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ⑫

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ أَيْتَنِي
تُشْتَلِ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبِرُتُمْ وَكُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ⑬

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا
رَبِّ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدِرَى مَا السَّاعَةُ
إِنْ نَظَرْتَ إِلَّا ظَنَّا وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَيْقِنِينَ ⑭

وَبَدَأَ الْهُمْ سِيَّاْتَ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ

उन्हें वह चीज़ घेर लेगी जिसकी वे
खिल्ली उड़ाया करते थे । 34।

और कहा जाएगा, आज हम तुम्हें भूल
जाएँगे जैसा कि तुम अपने इस दिन की
भेट को भूल गए थे । और तुम्हारा
ठिकाना नरक होगा और तुम्हारे कोई
सहायक नहीं होंगे । 35।

यह इस कारण होगा कि तुमने अल्लाह
के चिह्नों को उपहास का पात्र बना
लिया और सांसारिक जीवन ने तुम्हें
धोखे में डाल दिया था । अतः आज वे
उस (अग्नि) से निकाले नहीं जाएँगे
और न ही उनका कोई बहाना स्वीकार
किया जाएगा । 36।

अतः समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है
जो आकाशों का रब्ब है और धरती का
रब्ब है (अर्थात् वही) जो समस्त लोकों
का रब्ब है । 37।

और आकाशों में और धरती में भी हर
बड़ाई उसी की है । और वही पूर्ण प्रभुत्व
वाला (और) परम विवेकशील है । 38।

(रुकू 4/20)

مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهِزُونَ ⑩

وَقَيْلَ الْيَوْمَ تَنْسَكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاءَ
يَوْمَكُمْ هَذَا وَمَا أُولَئِكُمُ النَّازُورُ وَمَا
لَكُمْ فِيْ مِنْ نُصْرٍ ⑪

ذَلِكُمْ بِأَنَّكُمْ أَتَخْدَثُمْ أَيْتَ اللَّهُ هُنَّ رَا
وَغَرَّتُكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۝ فَالْيَوْمَ لَا
يُخْرِجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسَعْبَوْنَ ⑫

فِلَلِهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ
الْأَرْضِ رَبِّ الْعَلَمِينَ ⑬

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑭

46- सूरः अल-अहकाफः

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 36 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में ही उस वास्तविकता को दोबारा प्रकट किया गया है जो पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में वर्णन की गई है कि धरती और आकाश की हर चीज़ और जो कुछ उसमें है वह सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहा है। इस सूरः के आरम्भ में उल्लेख किया गया है कि धरती और आकाश तथा जो कुछ इनमें है वह इसी सच्चाई पर कायम है, जिसका इससे पूर्व वर्णन किया गया है। मानो सारा ब्रह्माण्ड अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और की गवाही नहीं दे रहा। इसके तुरंत पश्चात् मुश्कियों को सम्बोधित करते हुए कहा है कि यह समस्त धरती और आकाश और जो कुछ इनके अन्दर है अल्लाह ही की सुष्टि है। अपने काल्पनिक उपास्यों की कोई सुष्टि भी तो दिखाओ। वास्तव में इसमें निहित तर्क यह है कि प्रत्येक सुष्टि पर एक ही स्थष्टा की छाप है।

यद्यपि इस सूरः में अतीत की जाति आद के विनाश का वर्णन किया गया है जिन्हें अहकाफ़ (बालू के टीलों) के द्वारा सतर्क किया गया। परन्तु पवित्र कुरआन की इस शैली की अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि उसमें अतीत की जातियों के वर्णन के साथ उससे मिलते-जुलते भविष्य में घटित होने वाली परिस्थितियों की ओर भी संकेत कर दिया जाता है। इस सूरः में पुनः एक बार दुखान (धुआँ) वाले विषय की ओर संकेत किया गया है कि जब भी उन पर बादल छाया करते हैं तो वे समझते हैं कि आकाश से उन पर नेमतें बरसेंगी। परन्तु जब वह बादल उन तक पहुँचेगा तो उस समय उन को ज्ञात होगा कि उसके साथ ऐसी रेडियो-धर्मी हवाएँ आ रही हैं जो प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर देती हैं। अतः वे अपने आवासों से बाहर निकलने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और उनके निर्जन आवासों के अतिरिक्त उनके अस्तित्व की ओर कोई गवाही नहीं मिलेगी। नागासाकी और हीरोशीमा शहर दोनों इसी की पुष्टि करते हैं।

आयत संख्या 34 में यह विषय वर्णन किया जा रहा है कि क्या वे देखते नहीं कि धरती और आकाश की उत्पत्ति से अल्लाह थकता नहीं। उस युग का मनुष्य कैसे देख सकता था? परन्तु वर्तमान युग का मनुष्य जो धरती और आकाश के रहस्य को जानने का प्रयास कर रहा है, वह जानता है कि धरती और आकाश लगातार अनस्तित्वता में डूबते और फिर एक नई सुष्टि के रूप में उभर आते हैं। धरती और आकाश को बार-बार समाप्त करके पुनः उत्पन्न करना अल्लाह तआला की एक ऐसी क्रिया है जो बता रही है कि वह कभी भी उत्पत्ति-क्रिया से थका नहीं। अतएव मनुष्य को कैसे यह मालूम हुआ कि जब वह मर जाएगा तो उसको नए सिरे से जीवित करने पर अल्लाह तआला समर्थ नहीं होगा?

سُورَةُ الْأَنْقَافِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَتُّ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةُ رُكُونٍ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति
गौरवशाली । 21

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व
वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह
की ओर से है । 31

हमने आकाशों और धरती को और जो
कुछ उन दोनों के बीच है सत्य के साथ
और एक निर्धारित अवधि के लिए ही
पैदा किया । और जिन लोगों ने इनकार
किया, वे उससे मुँह मोड़ते हैं, जिससे
उन्हें सतर्क किया जाता है । 41

तू पूछ, क्या तुमने उसे देखा है जिसे तुम
अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे
दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती से
क्या पैदा किया है ? अथवा (अल्लाह के
साथ) उनका साझीदार होना केवल
आकाशों ही में है ? यदि तुम सच्चे हो
तो इससे पूर्ववर्ती कोई पुस्तक अथवा
ज्ञान का कोई मामूली सा चिह्न मेरे पास
लाओ । 51

और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा
जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो
क्यामत तक उसे उत्तर नहीं दे सकता
और वे तो उनकी पुकार ही से अनजान
हैं । 61

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنْ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ②

مَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِلَّا يَنْعِقُ وَأَجَلٌ مُسَمُّىٌ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا عَمَّا نَذَرُوا مُغْرِضُونَ ③

قُلْ أَرَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَرْوُنِي مَاذَا أَخْلَقْتُمْ مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَمْهُ
شَرِكْتُ فِي السَّمَاوَاتِ إِنْتُونِي بِكِشْتِ
مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثْرَةٌ مِنْ عَلِيِّ
إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِينَ ④

وَمَنْ أَصْلَلَ مِمَّنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ⑤

और जब लोग इकट्ठे किए जाएंगे तो वे (काल्पनिक उपास्य) उनके शत्रु होंगे और उनकी उपासना का इनकार कर देंगे । 7।

और जब उन के निकट हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे लोग, जिन्होंने सत्य का इनकार कर दिया जब वह उनके पास आया, कहते हैं, यह तो खुला-खुला जादू है । 8।

क्या वे यह कहते हैं कि इसने उसे झूठे रूप से गढ़ लिया है ? तू कह दे कि यदि मैंने यह झूठ गढ़ा होता तो तुम अल्लाह के मुकाबले पर मुझे बचाने की कोई शक्ति न रखते । जिन बातों में तुम पड़े हुए हो वह उन्हें सबसे अधिक जानता है । वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में पर्याप्त है । और वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 9।

तू कह दे, मैं रसूलों में से पहला तो नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मुझ से और तुम से क्या व्यवहार किया जाएगा । मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वहाँ किया जाता है । और एक सुस्पष्ट सतर्कारी के अतिरिक्त मैं और कुछ भी नहीं हूँ । 10।

तू पूछ कि क्या तुमने (उसके परिणाम पर) ध्यान दिया कि यदि वह अल्लाह की ओर से ही हो और तुम उसका इनकार कर चुके हो, हालाँकि बनी इस्लाम में से भी एक गवाही देने वाले

وَإِذَا حَسِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءٌ
وَكَانُوا يُبَادِرُهُمْ كُفَّارِينَ ⑦

وَإِذَا نَتَّلَى عَلَيْهِمْ أَيَّتَنَا بِسْتِ
كَفَرُوا إِلَلٍ حِقٍّ لِمَا جَاءَهُمْ هُمْ^۱ هَذَا سُخْرُ
مُّبِينٌ ⑧

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتَهُ
فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئاً هُوَ أَعْلَمُ
بِمَا تَقْصُدُونَ فِيهِ كَفَى بِهِ شَهِيداً بِإِيمَنِي
وَبَيْتَنِكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑨

قُلْ مَا كُنْتُ بِذِعَةٍ مِنَ الرَّسِيلِ
وَمَا أَذْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا إِنْكُمْ
إِنْ أَتَيْتُ إِلَّا مَا يُؤْتَحُ إِلَيَّ وَمَا أَنَا
إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑩

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِيدَ شَاهِدٌ مِنْ
بَيْنِ أَنْسَرِ أَعْيُلَ عَلَى مِثْلِهِ فَأَمْنِ

ने अपने समरूप के पक्ष में गवाही दी थी । अतः वह तो ईमान ले आया और तुमने अहंकार किया । निःसन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ॥111॥ (रुक् ١)

और उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, उनके सम्बन्ध में कहा जो ईमान लाए, कि यदि यह अच्छी बात होती तो उसे प्राप्त करने में ये हम से आगे न निकलते । और अब जबकि वे हिदायत पाने में असफल रहे हैं तो अवश्य कहेंगे कि यह तो एक पुराना झूठ है ॥121॥

और इससे पूर्व मूसा की पुस्तक एक पथप्रदर्शक और कृपा स्वरूप थी और यह (अर्थात् कुरआन) एक सत्यापन करने वाली पुस्तक है जो सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है ताकि उन लोगों को सतर्क करे जिन्होंने अत्याचार किया । और जो उपकार करने वाले हैं उनके लिए शुभ-समाचार स्वरूप हो ॥131॥

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा, अल्लाह हमारा रब्ब है फिर (इस बात

وَاسْتَكْبِرُتُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّلَمِينَ ۖ

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْكَانَ
خَيْرًا مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْلَمْ يَهْتَدُوا بِهِ
فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِفْلُكُ قَدِيمٌ ۖ

وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابٌ مُّوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ
وَهَذَا كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لَّيْسَ ذَرَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشِّرَى لِلْمُحْسِنِينَ ۖ

إِنَّ الَّذِينَ قَاتَلُوا رَبِّنَا اللَّهَ تَعَالَى أَسْتَقَامُوا

* इस स्थान पर अरबी शब्द शाहिद (गवाही देने वाला) से अभिप्राय हज़रत मूसा अलै. हैं । और उनके ईमान लाने का अर्थ आने वाले नबी अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना है । जिनके आगमन की उन्होंने ने गवाही दी थी । जैसा कि बाइबिल में लिखा है ‘‘मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना बचन उसके मुँह में डालूँगा और जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा ।’’ (व्यवस्थाविवरण 18:18)

यहाँ पर तुम ने अहंकार किया से अभिप्राय बनी-इस्लाईल का वह सम्प्रदाय है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इनकार करने वाला था । उहें समझाया गया है कि तुम्हारे धर्म का संस्थापक तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाता था परन्तु तुम उसके अस्वीकारी हो । अर्थात् सदा से ही तुम्हारा आचरण इनकार करना है जो अहंकार के कारण उत्पन्न होता है ।

पर) अड़िग रहे तो न उन को कोई भय होगा और न वे शोकग्रस्त होंगे । 14।

ये ही स्वर्ग निवासी हैं, उसमें सदा रहने वाले हैं, उन कर्मों के प्रतिफल स्वरूप जो वे किया करते थे । 15।

और हमने मनुष्य को ताकीद के साथ आदेश दिया कि अपने माता-पिता से सद-व्यवहार करे । उसे उसकी माँ ने कष्ट के साथ (गर्भ में) उठाए रखा और कष्ट ही के साथ उसे जन्म दिया । और उसके गर्भ-धारण और दूध छुड़ाने का समय तीस महीना है । यहाँ तक कि जब वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँचा और चालीस वर्ष का हो गया तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी इस नेमत पर कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की । और ऐसे नेक कर्म करूँ जिन से तू प्रसन्न हो । और मेरे लिए मेरी संतान का भी सुधार कर दे । निश्चित रूप से मैं तेरी ही ओर लौटता हूँ और निःसन्देह मैं आज्ञाकारियों में से हूँ । 16।

यही वे लोग हैं कि जो कुछ उन्होंने किया उसमें से उत्कृष्ट कर्म को हम उनकी ओर से स्वीकार करेंगे । और उनकी बुराइयों को क्षमा करेंगे । वे स्वर्ग निवासियों में से होंगे । यह सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता था । 17।*

فَلَا حَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَخْرُجُونَ ۖ

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ لَهُمْ لِحَدِّيْنَ فِيهَا ۖ

جَزَاءً إِيمَانًا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑥

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالَّذِيْهِ إِخْسَانًا ۖ

حَمَلَتْهُ أُمَّةٌ كُرْهًا وَوَصَعْتَهُ كُرْهًا ۖ

وَحَمَلَهُ وَفَضَلَهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا

بَلَغَ أَسْدَدَهُ وَبَلَغَ أَزْبَعِنَ سَنَةً قَالَ

رَبِّيْ أُوْزِعْنِيْ أَنْ أَشْكَرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي

أَنْعَمْتَ عَلَيْيَ وَعَلَىٰ وَالَّذِيْيَ وَأَنْ أَعْمَلَ

صَالِحًا تَرْضِيْهُ وَأَصْلِحُ لِيْ فِي ذُرِّيَّتِيِّ ۖ

إِنِّيْ تَبَّتِ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ⑦

أُولَئِكَ الَّذِيْنَ تَقَبَّلَ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا

عَمِلُوا وَنَجَاوَرُ عَنْ سَيِّئَهُمْ فَ

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ وَعَدَ الصَّادِقُ الَّذِي

كَانُوا يُوعَدُونَ ⑧

* जो कुछ उन्होंने किया उस में से उत्कृष्ट कर्म से तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला मोमिनों के कुछ कर्म अच्छे कर्मों के अनुसार नहीं अपितु उनके कर्मों के उत्कृष्ट भाग के अनुसार उनको प्रतिफल देगा ।

और वह जिसने अपने माता-पिता से कहा, खेद है तुम दोनों पर । क्या तुम मुझे इस बात से डराते हो कि मैं (मृत्योपरान्त पुनः) निकाला जाऊँगा ! हालाँकि मुझ से पहले कितनी ही जातियाँ गुजर चुकी हैं । और उन दोनों ने अल्लाह से फरियाद करते हुए कहा : सर्वनाश हो तेरा । ईमान ले आ । निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । तब वह कहने लगा, ये केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं ॥18॥

यही वे लोग हैं जिन पर वह आदेश सत्य सिद्ध हो गया जो उनसे पूर्व जिन्हों और मनुष्यों की बीती हुई जातियों पर सत्य सिद्ध हुआ था । निश्चित रूप से ये सब घाटा पाने वाले लोग हैं ॥19॥

और सबके लिए जो वे करते रहे उसके अनुसार दर्जे हैं । ताकि (अल्लाह) उनके कर्मों का उन्हें पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करे और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा ॥20॥

और उस दिन को याद करो जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया अग्नि के सामने पेश किए जाएंगे । (और कहा जाएगा) तुम अपनी सब अच्छी चीजें अपने सांसारिक जीवन में ही समाप्त कर बैठे हो और उनसे अस्थायी लाभ उठा चुके हो । अतः आज के दिन तुम इस कारण अपमानजनक अज्ञाब दिए जाओगे कि तुम धरती में अनुचित रूप से अहंकार करते थे । और इस

وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالَّدِيْهِ أَفِ لَكُمَا
أَتَعْذِنُكُمْ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ
الْقَرْفُونَ مِنْ قَبْلِيْ وَهُمَا يُسْتَغْيِثُنِ اللَّهَ
وَإِلَيْكَ أَمِنٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ
مَا هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِيْنَ ⑩

أُولَئِكَ الَّذِيْنَ حَقٌّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي
أَمْوَالِهِمْ قَدْ خَلَتِ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ
وَالْأَنْسِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا لَحَسِرِيْنَ ⑪
وَلِكُلِّ دَرَجَتِ مِمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوْقِيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ⑫

وَيَوْمَ يُرَصَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا عَلَى الشَّارِطِ
أَذْهَبْتُمْ طَيْبَاتِكُمْ فِي حَيَاةِكُمُ الدُّنْيَا
وَاسْتَمْتَغَثْتُمْ بِهَا ۝ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ
الْهُنْوِنِ بِمَا كُنْتُمْ شَتَّكِبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

कारण (भी) कि तुम दुष्कर्म किया
करते थे । 211 (रुक् ٢)

और आद (जाति) के भाई को याद
कर। जब उसने अपनी जाति को रेत
के टीलों के पास सतर्क किया, जबकि
उसके सामने भी और उससे पूर्व भी
बहुत सी सतर्कवाणियाँ बीत चुकी थीं,
कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की
उपासना न करो। निःसन्देह मैं तुम पर
एक बहुत बड़े दिन के दण्ड से अज्ञाब
हूँ। 221

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास इस
कारण आया है कि हमें अपने उपास्यों
से हटा दे। अतः यदि तू सच्चा है तो
उसे ले आ जिसका तू हमें डरावा देता
है। 231

उसने कहा, निःसन्देह ज्ञान तो केवल
अल्लाह ही के पास है। और मैं तो तुम्हें
वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ
मुझे भेजा गया है। परन्तु मैं तुम्हें बड़े
मूर्ख लोग देख रहा हूँ। 241

अतः जब उन्होंने उसे एक बादल के
रूप में देखा जो उनकी घाटियों की ओर
बढ़ रहा था तो कहा, यह एक ऐसा
बादल है जो हम पर बारिश बरसाने
वाला है। नहीं! बल्कि यह तो वही है
जिसे तुम शीघ्रता से मांगा करते थे।
यह एक ऐसा झक्कड़ है जिसमें
पीड़ाजनक अज्ञाब है। 251

(जो) प्रत्येक वस्तु को अपने रब्ब के
आदेश से नष्ट कर देता है। अतः वे ऐसे

۶

تَفْسِيْمُونَ

وَأَذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذَا أَنْذَرَ قَوْمَهُ
بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النَّذْرُ مِنْ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهُ
إِنَّ أَخَا فَعَلَيْكُمْ عَذَابٌ يَوْمٌ
عَظِيْمٌ

قَالُوا أَجِئْنَا لِتَأْفِيْكَنَا عَنِ الْهَيْتَانِ
بِمَا تَعْدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْ دِيْنِ اللَّهِ وَأَبَلَغْتُكُمْ مَا
أَرْسَلْتُ بِهِ وَلِكُنْيَةِ أَرْبِكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلًا فَرِدَيْتُهُ
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُمْطَرُنَا بِلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيعٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ

شَدَّمْرُ كُلُّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا

(नष्ट) हो गए कि उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था। इसी प्रकार हम अपराधी लोगों को प्रतिफल दिया करते हैं। 126।

और निःसन्देह हमने उन्हें वह दृढ़ता प्रदान की थी जो दृढ़ता तुम्हें प्रदान नहीं की। और हमने उनके कान और आँखें और उनके दिल बनाए थे। फिर उनके कान और उनकी आँखें और उनके दिल कुछ भी उनके काम न आ सके, जब उन्होंने अल्लाह की आयतों का हठधर्मिता के साथ इनकार किया। और जिस बात की वे खिल्ली उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें धेर लिया। 127। (रुक् ۳)

और निःसन्देह हम तुम्हारे ईद-गिर्द की बस्तियों को भी तबाह कर चुके हैं। और हमने चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन किया ताकि वे लौट आयें। 128।

फिर क्यों न उन लोगों ने उनकी सहायता की जिनको उन्होंने (अल्लाह की) निकटता प्राप्ति के उद्देश्य से अल्लाह के सिवा उपास्य बना रखा था? बल्कि वे तो उनसे खोये गये। और यह उनके झूठ का परिणाम था और उसका जो वे झूठ गढ़ा करते थे। 129।

और जब हमने जिन्नों में से एक समूह का ध्यान तेरी ओर फेर दिया जो कुरआन सुना करते थे। जब वे उसके समक्ष उपस्थित हुए तो उन्होंने कहा, चुप हो जाओ। फिर जब बात समाप्त

لَا يَرَى إِلَّا مَسْكِنَهُمْ ۖ كَذَلِكَ
تُجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ⑤

وَلَقَدْ مَكَنُوكُمْ فِيمَا إِنْ مَكَنْكُمْ فِيهِ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْيَدَةً
فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا
أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْيَدُهُمْ مِنْ شَيْءٍ
إِذَا كَانُوا يَجْحَدُونَ ۖ بِإِلَيْتِ اللَّهِ وَحَاقَ
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ ۶

وَلَقَدْ أَهْلَكَنَا مَا حَوَلَ كُمْ مِنَ الْقَرَىٰ
وَصَرَقْنَا الْأَلْيَتْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ⑦

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ أَنْهَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ قُرْبَانًا إِلَيْهِ ۖ بَلْ ضَلَّوْا عَنْهُمْ
وَذَلِكَ أَفْكَهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑧

وَإِذَا صَرَقْنَا إِلَيْكَ نَفَرَ إِمَّا الْجِنِّ
يَسْمَعُونَ الْقُرْآنَ ۖ قَلَمًا حَضَرُونَ
قَالُوا أَنْصَطُوا ۖ قَلَمًا قَضِيَ وَلَوْا إِلَى

हो गई तो (वे) अपनी जाति को सतर्क करते हुए लौट गए । 30।*

उन्होंने कहा, हे हमारी जाति ! निःसन्देह हमने एक ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात उतारी गयी । वह उसकी पुष्टि कर रही थी जो उस से पहले था । वह सत्य की ओर और सन्मार्ग की ओर हिदायत दे रही थी । 31।**

हे हमारी जाति ! अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार करो और उस पर ईमान ले आओ । वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें पीड़ाजनक अज्ञाब से बचाएगा । 32।***

और जो अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार नहीं करता तो वह धरती में (उसे) असमर्थ करने वाला नहीं बन सकता । और उसके विशद्ध उसके कोई संरक्षक नहीं होते । यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टा में हैं । 33।

और क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और वह उनकी उत्पत्ति से थका नहीं, इस बात पर समर्थ है कि मृतकों

قُوْمٌ هُمْ مُنْذِرِينَ ⑥

قَالُوا يَقُولُونَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزَلَ مِنْ
بَعْدِ مُوسَى مَصِدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ⑦

يَقُولُونَا أَجِئْنَا بِأَدَاعِيَ اللَّهِ وَأَمْنَوْا بِهِ
يُعْفِرُ لَكُمْ مِنْ ذَنْوَبِكُمْ وَيُحْرِكُمْ فِي
عَذَابٍ أَلِيمٍ ⑧

وَمَنْ لَا يَجِدْ دَاعِيَ اللَّهُ قَلَّيْسٌ بِمَعْجِزٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أُولَيَاءٌ
أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑨

أَوْلَادُ يَرُوُا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْنِي بِخَلْقِهِنَّ بِقُدرٍ

- * इस आयत में जिन जिन्नों का उल्लेख है वे लोक-प्रचलित काल्पनिक जिन नहीं थे बल्कि एक महान जाति के सरदार थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूचना पा कर स्वयं जाकर देखने और निर्णय करने का इरादा किया । अतः जब वे अपनी जाति की ओर तैरते तो उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का शुभ-समाचार सुनाया ।
- ** इस आयत में यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी गई है कि वह नवी आ गया है जिसने हज़रत मूसा अलै. के पश्चात एक सम्पूर्ण शरीआत (धर्म विधान) लानी थी ।
- *** उन्होंने अपनी जाति की ओर वापसी पर उपरोक्त वर्णन के पश्चात उनको उपदेश दिया कि यह सच्चा नवी है । इस कारण इस पर ईमान ले आओ, इसी में तुम्हारी भलाई है और सावधान किया कि जो श्री अल्लाह की ओर बुलाने वाले का इनकार करता है वह उसे असफल नहीं कर सकता ।

को जीवित करे ? क्यों नहीं ! निःसन्देह
वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे
स्थायी सामर्थ्य रखता है। 134।*

और याद रखो उस दिन को जिस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया अर्थात् के सामने पेश किए जाएंगे । (उन्हें कहा जाएगा) क्या यह सच नहीं था ? वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे रब्ब की सौगन्ध ! (यह सच था) । वह उनसे कहेगा, तो फिर अज्ञाब को चखो । इस कारण कि तुम इनकार किया करते थे । 35।

अतः धैर्य धर जैसे दृढ़-संकल्प रसूलों ने धैर्य धारण किया । और उनके विषय में शीघ्रता न कर । जिस दिन वे उसे देखेंगे जिससे उन्हें डराया जाता है तो यूँ लगेगा जैसे दिन की एक घड़ी से अधिक वे (प्रतीक्षा में) नहीं रहे । संदेश पहुँचाया जा चुका है । अतः क्या दुराचारियों के अतिरिक्त भी कोई नष्ट की किया जाता है ? । ३६। (रुक् ५४)

عَلَىٰ أَنْ يَحْيَى الْمَوْتَىٰ بِنَارِ اللَّهِ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ عَقِيدَةٌ^(١)

وَيَوْمَ يُعَرَّضُ الظِّنَّ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ
أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلِّي وَرَبِّنَا
قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ⑤

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولَوَالْعَرْمٍ مِنْ
الرَّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ طَكَانَهُمْ يَوْمٌ
يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمَرْ يَلْبِسُوا إِلَّا
سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ طَبَقَعَ فَهَلْ يَهْلِكُ
إِلَّا الْقَوْمُ الْفَسِيقُونَ طَ

* इस उपदेश के पश्चात इस शाश्वत सत्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जिसकी ओर प्रत्येक नवी अपनी जाति को बुलाता है कि वह मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान पर ईमान लाएँ जिसके बिना ईमान सम्पर्ण नहीं होता ।

47 – सूरः मुहम्मद

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 39 आयतें हैं।

यद्यपि यह सूरः आयतों की गिनती की दृष्टि से बहुत छोटी है, इसमें व्यवहारिक रूप से कुरआन की पिछली समस्त सूरतों का सारांश वर्णन कर दिया गया है। जैसा कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु व सल्लम सब नवियों के द्योतक थे।

इस सूरः की आयत सं. 19 में यह कहा गया है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस वृहद आध्यात्मिक क्रयामत के लिए भेजे गए उसके निकट होने के समस्त लक्षण प्रकट हो चुके हैं। अतः उस समय उन लोगों का उपदेश ग्रहण करना किस काम आएगा जब वह क्रयामत उपस्थित हो जाएगी।



سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और
अल्लाह के मार्ग से रोका, उसने उनके
कर्मों को नष्ट कर दिया । । ।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक
कर्म किए और उस पर ईमान लाए जो
मुहम्मद पर उतारा गया, और वही
उनके रब्ब की ओर से सम्पूर्ण सत्य है ।
उनके दोषों को वह दूर कर देगा और
उनकी अवस्था को ठीक कर देगा । । ।

यह इस कारण होगा कि वे जिन्होंने
इनकार किया उन्होंने झूठ का
अनुसरण किया । और वे जो ईमान
लाए उन्होंने अपने रब्ब की ओर से
आने वाले सत्य का अनुसरण किया ।
इसी प्रकार अल्लाह लोगों के सामने
उनके उदाहरण वर्णन करता है । । ।

अतः जब तुम उन लोगों से भिड़ जाओ
जिन्होंने इनकार किया तो (उनकी)
गर्दनों पर प्रहार करना । यहाँ तक कि
जब तुम उनका अधिक मात्रा में रक्त
बहा लो तो दृढ़तापूर्वक बंधन कसो ।
फिर इसके पश्चात उपकार स्वरूप
अथवा मुक्तिमूल्य लेकर मुक्त करना ।
यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार ढाल दे।
ऐसा ही होना चाहिए । और यदि

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّقُوا عَنْ سَيِّدِنَا
أَصَلَ أَعْمَالَهُمْ ②

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلَاةَ وَآمَنُوا
بِمَا نَزَّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّهِمْ ۖ كَفَرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ
بَالَّهُمْ ③

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ
وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ
كَذِلِكَ يُضَرِّبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ④

فَإِذَا أَفَيَّلْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَقَرْبَ
الرِّقَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا آتَيْتُمُوهُمْ
مَمْلَكَاتِهِمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۖ فَإِمَّا مَنًا بَعْدَ وَإِمَّا
فِدَاءً ۖ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أُوْزَارُهَا ۖ

ذَلِكَ مُلْوَيَّةُ اللَّهِ لَا شَصِرَ مِنْهُمْ
 لَكِنْ لَيَلُوا بَعْضُكُمْ يَعْصِي وَالَّذِينَ
 قَتَلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُنَصَّلَ
 أَعْمَالَهُمْ ①

أَعْمَالَهُمْ ①

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَأْلَهُمْ ②

وَيُدْخِلُهُمْ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا اللَّهُ ③

वह उन्हें हिदायत देगा और उनकी अवस्था ठीक कर देगा । ६।

और उन्हें उस स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिसे उनके लिए उसने बहुत उत्तम बनाया है । ७।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह की सहायता करो तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पैरों को दृढ़ता प्रदान करेगा । ८।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनका सर्वनाश हो और (अल्लाह ने) उनके कर्मों को नष्ट कर दिया । ९।

यह इस लिए था कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा उन्होंने उसे नापसन्द किया ।

अतः उसने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया । १०।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ شَصِرُوا اللَّهُ
 يَسْصَرُكُمْ وَيَئِتُ أَقْدَامَكُمْ ④

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَّلُهُمْ وَأَصْلَلُ
 أَعْمَالَهُمْ ④

ذَلِكَ بِأَلَهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَنْجَطَ
 أَعْمَالَهُمْ ④

* इस आयत में अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के प्रमुख उद्देश्य वर्णन कर दिए गए हैं । पहले तो यह कि जिन लोगों ने मोमिनों के विहङ्ग शस्त्र उठाए उन को पराजित करके उस समय तक अवश्य दृढ़तापूर्वक बांधे रखो जब तक युद्ध समाप्त न हो जाए । इसके पश्चात या तो मुक्तिमूल्य लेकर छोड़ दिया जाए अन्यथा बिना मुक्तिमूल्य लिए दया पूर्वक छोड़ दिया जाए तो यह भी बहुत अच्छा है । जो लोग इस्लाम के प्रतिरक्षात्मक युद्धों को बलपूर्वक मुसलमान बनाने के लिए किये गये युद्ध कहते हैं, उनका यह आयत प्रबल रूप से खण्डन करती है । क्योंकि यही सबसे अच्छा अवसर हो सकता था कि उन क़ौदियों को मुसलमान बना लिया जाता । परन्तु मुसलमान बनाना तो दूर, उनके ईमान न लाने पर भी उन्हें स्वतन्त्र करने का आदेश दिया गया है । यहाँ तक कि यदि मुक्तिमूल्य भी न लो तो यह भी उत्तम है ।

अतः क्या वे धरती में नहीं फिरे जिसके परिणामस्वरूप वे देख लेते कि उनसे पहले लोगों का अन्त कैसा था ? अल्लाह ने उन पर विनाश की मार डाली और (इन) काफ़िरों से भी उन जैसा ही व्यवहार किया जाएगा । 111।

यह इस लिए है कि अल्लाह उन लोगों का संरक्षक होता है जो ईमान लाए और काफ़िरों का निश्चित रूप से कोई संरक्षक नहीं होता । 121। (रुकू - ١)

निःसन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बह रही होंगी । जबकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया अस्थायी लाभ उठा रहे हैं और वे इस प्रकार खाते हैं जैसे पशु खाते हैं । हालाँकि अग्नि उन का ठिकाना है । 13।

और कितनी ही बस्तियाँ थीं जो तेरी (इस) बस्ती से अधिक शक्तिशाली थीं, जिसने तुझे निकाल दिया । हमने उनको नष्ट कर दिया तब कोई उनका सहायक नहीं निकला । 14।

अतः जो अपने रब्ब की ओर से खुली-खुली हिदायत पर हो, क्या उस जैसा हो सकता है जिसे उसके कुर्कर्म सुन्दर करके दिखाए गए हों और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया हो ? 15।

उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका मुत्तकियों को वादा दिया जाता है, (यह है कि) उसमें कभी प्रदूषित न होने वाले

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
ذَمَرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكُفَّارِ أَمْثَالُهَا ⑩

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مُؤْمِنُ الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ
الْكُفَّارِ لَا مُؤْمِنُ لَهُمْ ⑪

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّتِ تَجْرِي فِيهَا
الْأَنْهَرُ ١٢ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَسْتَعْوِنُونَ
وَيَأْكُلُونَ كَمَاتًا كُلُّ الْأَنْعَامُ وَالثَّارَ
مَثْوَى لَهُمْ ⑬

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرِيبٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً
مِنْ قَرِيبِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ ١٤ أَهْلَكَهُمْ
فَلَمَّا نَاصَرَهُمْ ⑯

أَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيْتَهُ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُرِّينَ
لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَأَتَبْعَوْا أَهْوَاءَهُمْ ⑭

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وَعِدَ الْمُنْكَرُونَ ١٥ فِيهَا
أَنْهَرٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ أَسِنٍ ١٦ وَأَنْهَرٌ مِنْ

पानी की नहरें और दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद नहीं बिगड़ता । और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए खूब स्वादिष्ट है । और ऐसे शहद की नहरें हैं जो विशुद्ध है । और उनके लिए उसमें प्रत्येक प्रकार के फल होंगे और उनके रब्ब की ओर से बड़ा क्षमादान भी (होगा) । क्या (ऐसे लोग) उस जैसे हो सकते हैं जो अग्नि में लम्बे समय तक रहने वाला हो और खौलता हुआ पानी उन्हें पिलाया जाए जो उनकी अत्तिडियाँ काट कर रख दे ॥16॥*

और उनमें वे भी हैं जो (प्रत्यक्ष रूप से) तेरी ओर कान धरते हैं । यहाँ तक कि जब वे तेरे पास से चले जाते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान दिया गया है पूछते हैं कि अभी अभी उसने क्या कहा था ? यहीं वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया ॥17॥

और वे लोग जिन्होंने हिदायत पाई उनको उसने हिदायत में बड़ा दिया और उनको उनका तक्रवा प्रदान किया ॥18॥

अतः क्या वे केवल निश्चित घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह सहसा उनके

لَبِنٌ لَمْ يَتَعَيَّنْ طَعْمُهُ وَأَنْهَرٌ مِنْ حَمْرٍ
لَذَقَ لِلشَّرِّيْنَ وَأَنْهَرٌ مِنْ عَسَلٍ
مَصْفُىٰ وَلَهُمْ قِيمًا مِنْ كُلِّ الشَّمَرَاتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ
فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ
أَمْعَاءَهُمْ ⑯

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّى إِذَا
خَرَجُوا مِنْ عِدْلِكَ قَالُوا اللَّذِينَ أَوْتُوا
الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنَّفًَا ۝ أَوْ لِكَ الَّذِينَ
طَبِعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَأَتَبْعَوْا
أَهْوَاءَهُمْ ⑯

وَالَّذِينَ اهْتَدَوا زَادَهُمْ هُدًى وَأَنْتُمْ
تَقُولُونَ ⑯
فَهُلْ يُنْظَرُونَ إِلَّا السَّاعَةُ أَنْ تَأْتِيهِمْ

* यह आयत लगातार उपमाओं का वर्णन कर रही है । क्योंकि इस भौतिक संसार में तो न पानी खड़ा रहने पर प्रदूषित होने से बच सकता है, न दूध खराब होने से बच सकता है, न शराब ऐसी हो सकती है जो केवल स्वादिष्ट हो परन्तु नशा न दे । और इस संसार में तो मनुष्य को यदि केवल यही वस्तुएँ उपलब्ध हों तो कभी इन्हीं वस्तुओं पर ही संतुष्ट नहीं हो सकता । अतः स्पष्ट रूप से ये उपमाएँ हैं । जो लोग संसार में इन वस्तुओं को अच्छा समझते हैं अथवा उनसे लाभ जुड़ा हुआ देखते हैं, उनको शुभ-समाचार दिया जा रहा है कि स्वर्ग में उनको उनके लाभ की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ प्रदान की जाएंगी ।

पास आ जाए ? अतः उसके लक्षण तो प्रकट हो चुके हैं । फिर जब वह भी उनके पास आ जाएगी तो उस समय उनका उपदेश ग्रहण करना उनके किस काम आएगा ? । 19।

अतः जान ले कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और अपनी भूल-चूक के प्रति तथा मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी क्षमा याचना कर । और अल्लाह तुम्हारे यात्रा कालीन ठिकानों को ख़ूब जानता है और स्थायी ठिकानों को भी । 20। (रुक् 2/6)

और वे लोग जो ईमान लाए हैं, कहेंगे कि क्यों न कोई सूरः उतारी गई ? अतः जब कोई निर्णायिक सूरः उतारी जाएगी और उसमें युद्ध का वर्णन किया जाएगा तो वे लोग जिनके दिलों में रोग है तू उन्हें देखेगा कि वे तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे वह व्यक्ति देखता है जिस पर मृत्यु की मूर्छा छा गई हो । अतः सर्वनाश हो उनका । 21।

आज्ञापालन और अच्छी बात चाहिए । अतः अब जबकि यह बात पक्की हो चुकी है, यदि वे अल्लाह के प्रति निष्ठावान होते तो अवश्य उनके लिए उत्तम होता । 22।

क्या तुम्हारे लिए संभव है कि यदि तुम प्रबंधक बन जाओ तो धरती में उपद्रव करते फिरो और अपने निकट-सम्बन्धों को काट दो ? (कदापि नहीं) । 23।

بَعْدَهُ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنْتَ لَهُمْ إِذَا
جَاءَهُمْ ذُكْرِهِمْ ⑩

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَإِنْتَ عَفْرَ
لِذَلِيلِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقْبَلَكُمْ وَمُمْوَنَكُمْ ⑪

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلْتَ سُورَةً
فَإِذَا أَنْزَلْتَ سُورَةً مُّحَكَّمَةً وَذِكْرَ فِيهَا
الْقِسْطَانْ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَرْجُضٌ يَتَظَرَّفُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمُغْشَى
عَلَيْهِمْ مِّنَ الْمَوْتِ فَأَوْلَى لَهُمْ ⑫

طَاعَةً وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ
الْأَمْرَ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَهُمْ ⑬

فَهَلْ عَيْمَمْ إِنْ تَوَيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ وَتُقْطِلُو أَرْحَامَكُمْ ⑭

यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया । 124।

अतः क्या वे कुरआन पर चिंतन-मनन नहीं करते अथवा उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं ? 125।

निःसन्देह वे लोग जो अपनी पीठ दिखाते हुए धर्म से फिर गए, जब कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी । शैतान ने उन्हें (उनके कर्म) सुन्दर करके दिखाए और उन्हें झूठी आशाएँ दिलाई । 126।

यह इसलिए हुआ कि जो अल्लाह ने उतारा, उस से जिन लोगों ने घृणा की उनसे उन लोगों ने (यह) कहा कि हम अवश्य कुछ बातों में तुम्हारा आज्ञापालन करेंगे । और अल्लाह उनकी गोपनीयता को जानता है । 127।

अतः (उनकी) क्या दशा होगी जब फरिशते उन्हें मृत्यु देंगे ? वह उनके चेहरों और पीठों पर आघात लगाएँगे । 128।

यह परिणाम है उसका कि उन्होंने उस बात का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करती है और उसकी प्रसन्नता को नापसन्द किया । अतः उसने उनके कर्म नष्ट कर दिए । 129। (रुक् 3/7)

क्या वे लोग जिन के दिलों में रोग है धारणा करते हैं कि अल्लाह उनके द्वेषों को बाहर नहीं निकालेगा ? 130।

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصْمَمَهُمْ
وَأَغْنَى أَبْصَارَهُمْ ⑯

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ
أَفْفَالَهَا ⑭

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُوا عَلَى آذِبَارِهِمْ قُنْ بَعْدِ
مَاتَبَيْنَ لَهُمُ الْهَدَىُ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ
لَهُمْ وَأَمْلَى لَهُمْ ⑮

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِلَيْنَا مَا نَزَّلَ
اللَّهُ سُطْنَاطِعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ⑯

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّهُمُ الْمَلِكَةُ يُصْرِيُونَ
وَجْهَهُمْ وَآذِبَارَهُمْ ⑭

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهُ
وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۖ

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ
لَّنْ يَخْرُجَ اللَّهُ أَصْعَانَهُمْ ⑭

और यदि हम चाहें तो तुझे अवश्य वे लोग दिखा देंगे । और तू उनको अवश्य उनके लक्षणों से जान लेगा और उनको उनकी बोल-चाल से अवश्य पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है ।^{311*}

और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे । यहाँ तक कि तुम मैं से जिहाद करने वाले और क्षैर्य धरने वाले को सुस्पष्ट कर दें और तुम्हारी अवस्था को परख लें ।³²¹

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका और रसूल का विरोध किया, जबकि हिदायत उन पर स्पष्ट हो चुकी थी, वे कदापि अल्लाह को कुछ हानि पहुँचा नहीं सकेंगे । और वह अवश्य उनके कर्मों को नष्ट कर देगा ।³³¹

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को बर्बाद न करो ।³⁴¹

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका, फिर वे इस अवस्था में मर गए कि वे काफिर थे तो अल्लाह कदापि उनको क्षमा नहीं करेगा ।³⁵¹

* आयत सं. 30-31 : इन आयतों में मुनाफिकों को सावधान किया गया है कि यदि वे यह समझते हैं कि वे अपने सीनों में ईर्ष्या और द्रेष्प को छिपाए रहेंगे और किसी को पता नहीं चलेगा तो वह नहीं हो सकता । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा कि उनको तू उनके चेहरों और बोल-चाल से ही पहचान लेता है । अतः मुनाफिक संभवतः सीधे सादे लोगों से छिपे रह सकते हों परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी अवस्था के बारे में भली-भाँति अवगत थे ।

وَلُو نَشَاءُ لَا رِبَّ لَكُمْ فَلَعْنَقُهُمْ
بِسِيمَهُمْ وَتَغْرِقُهُمْ فِي لَهْنِ الْقَوْلِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ①

وَلَئِنْ بَلَوْكُمْ حَتَّى تَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ
مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُو أَخْبَارَكُمْ ②

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْدُوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَشَاقُوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ
الْهُدَىٰ لَكُنْ يَضْرُبُوا اللَّهَ سِيَّئًا وَسَيُحْكَمُ
أَعْمَالُهُمْ ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَآتِيُّوا
الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُو أَعْمَالَكُمْ ④

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْدُوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
ثُمَّ مَا تُؤْمِنُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَعْفَرَ اللَّهُ
أَعْمَالُهُمْ ⑤

अतः कमज़ोरी न दिखाओ कि संधि की ओर बुलाने लगो जबकि तुम ही विजयी होने वाले हो । और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह कदापि तुम्हें तुम्हारे कर्मों (का बदला) कम नहीं देगा । 136।

निःसन्देह संसार का जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो परम उद्देश्य से असावधान कर दे । और यदि तुम ईमान लाओ और तकवा धारण करो तो वह तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी धन-सम्पत्ति नहीं भाँगेगा । 137।

यदि वह तुमसे वह (धन) भाँगे और तुम्हारे पीछे पड़ जाए तो तुम कंजूसी करोगे और वह तुम्हारी ईर्ष्या को बाहर निकाल देगा । 138।

देखो ! तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह के पथ में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है । फिर तुम में से वह भी है जो कंजूसी से काम लेता है । हालांकि जो कंजूसी से काम लेता है तो वह निश्चित रूप से अपनी ही जान के विरुद्ध कंजूसी करता है । अल्लाह धनवान् है और तुम कंगाल हो । यदि तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारे बदले अन्य लोगों को ले आएगा । फिर वे तुम्हारी भाँति नहीं होंगे । 139।

(रुक् ४/४)

فَلَا تَهْنُوا وَتَذْكُرُوا إِلَى السَّلْمٍ وَأَنْتُمْ أَعْلَمُ
الْأَغْنُونَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكُمْ
أَعْمَالَكُمْ ④

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ طَوْبٌ وَإِنْ
تُؤْمِنُوا وَتَنْقُوا إِلَيْهِ تَكُمُ أَجْوَرَكُمْ
وَلَا يَسْكُنُكُمْ أَمْوَالُكُمْ ④

إِنْ يَسْكُنُكُمْ هَا فَيُخْفِكُمْ تَبْخَلُوا
وَيُخْرِجُ أَصْفَانَكُمْ ④

هَآئُنَّمْ هَوَلَاءُ تَذْكُرُونَ لِتُتَفَقَّوْا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ وَمَنْ
يَبْخَلُ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ وَاللَّهُ
الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفَقَارَاءُ وَإِنْ شَوَّلُوا
يَسْتَبْدِلُ قَوْمًا غَيْرَكُمْ لَمْ لَا يَكُونُوا
أَمْثَالَكُمْ ④

48—सूरः अल-फ़त्ह

यह सूरः हुदैबिया नामक स्थान पर मक्का के काफिरों के साथ ऐतिहासिक संधि करके वापसी पर उतरी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं ।

सूरः मुहम्मद के बाद सूरः अल-फ़त्ह आती है, जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. के ऊँचे रूट्बे का उल्लेख किया गया है जो आयत सं. 11 में वर्णित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रूट्बा इतना ऊँचा था कि पूर्ण रूप से वह अल्लाह तआला के हो गए थे और इसी कारण उनका आगमन मानो अल्लाह तआला का आगमन था । उन के हाथ पर बैअत करना मानो अल्लाह तआला के हाथ पर बैअत करना था । जैसा कि फ़र्माया निःसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं । अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है । (आयत सं. 11)

आयत सं. 19 में अल्लाह तआला की बैअत वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति की गई है । जब हुदैबिया संधि के अवसर पर एक वृक्ष के नीचे मोमिन हज़रत मुहम्मद सल्ल. के हाथ पर बैअत की प्रतिज्ञा की पुनरावृत्ति कर रहे थे । इसके साथ ही यह वादा कर दिया गया कि सहाबा रजि. के दिल में हज्ज न करने के कारण जो भी कसक थी वह इस बैअत के पश्चात पूर्ण रूप से दूर कर दी गई और संपूर्ण संतुष्टि प्राप्त हुई और जिस बात को पराजय समझा जाता था अर्थात मक्का में प्रविष्ट न हो पाना, उसने भविष्य में समस्त प्रकार के विजय की नींव डाल दी । जिनमें निकट की विजय भी शामिल थी और बाद में आने वाली विजय भी ।

अन्त में मोमिनों से वादा किया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो स्वप्न दिखाया गया था वह निश्चित रूप से सत्य के साथ पूरा होगा । और सहाबा रजि. उस पर साक्षी ठहरेंगे कि वे हज्ज के धार्मिक कृत्यों को पूरा करते हुए मक्का नगरी में प्रवेश करेंगे । और यह मक्का विजय समग्र मानव जाति पर विजय प्राप्ति का आधार बनेगी ।

सूरः मुहम्मद के पश्चात इस सूरः में फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. के नाम का उल्लेख किया गया और स्पष्ट रूप से हज़रत मूसा अलै. की उस भविष्यवाणी का उल्लेख कर दिया गया जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का उन के ‘मुहम्मद’ नाम के साथ प्रकट किया गया था और उन समस्त सद्गुणों का उल्लेख किया गया जो उस महान प्रतापी नबी और उसके साहबियों के लिए निश्चित थे । फिर बाइबिल की एक भविष्यवाणी का वर्णन किया गया । अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन की भविष्यवाणी केवल बाइबिल के ‘पुराने नियम’ में ही नहीं बन्कि ‘नये

नियम' में भी हज़रत ईसा अलै. के द्वारा की गई थी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक है। और एक ऐसी खेती से उसका उदाहरण दिया गया है जिसे कोई अहंकारी अपने बुरे इरादों के बावजूद कुचलने में सफल नहीं होगा और एक नहीं बल्कि कई कृषिकार ऐसे होंगे जो वह खेती लगाएँगे।



سُورَةُ الْفَتْحِ مَدْيَنَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثَةُ آيَةٍ وَ أَرْبَعَةُ رُكُونَ عَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

निःसन्देह हमने तुझे खुली-खुली विजय
प्रदान की है । । ।

ताकि अल्लाह तुझे तेरी अतीत की और
भविष्य में होने वाली प्रत्येक भूल-चूक
को क्षमा कर दे । और तुझ पर अपनी
नेमत को पूरा करे और सन्मार्ग पर
परिचालित करे । । । * ।

और अल्लाह तेरी वह सहायता करे
जो सम्मान जनक और प्रभुत्व वाली
सहायता हो । । ।

वही है जिसने मोमिनों के दिलों में प्रशान्ति
उतारी ताकि वे अपने ईमान के साथ ईमान
में अधिक बढ़ें । और आकाशों और धरती
की सेनाएँ अल्लाह ही की सम्पत्ति हैं । और
अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और)
परम विवेकशील है । । ।

ताकि वह मोमिन पुरुषों और मोमिन
स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे

إِنَّا فَتَحَنَّكَ قَرْحَانِيَّا ⑦

لَيَعْلُمَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقْدِمُ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا
تَأْخُرُ وَيُسَمِّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ
صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ⑧

وَيُئْسِرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ⑨

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي
قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَرْدَادُوا إِيمَانًا
مَعَ إِيمَانِهِمْ ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۝ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيًّا حَكِيمًا ۝
لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّتٍ

* आयत संख्या 2-3 : इन आरम्भिक आयतों में मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि
उनको शानदार विजय प्राप्त होंगी ।

आयत सं. 3 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अरबी शब्द ज़ंब प्रयुक्त हुआ है
जिससे अभिप्राय पाप नहीं है । इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस प्रकार तू पहले पाप किया करता था
इसी प्रकार आगे भी करता चला जा तो सब पाप क्षमा कर दिए जाएँगे । वास्तविक अर्थ यह है कि
जिस प्रकार तू पहले भी पाप से पवित्र था, जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का
सारा जीवन साक्षी है इसी प्रकार भविष्य में भी अल्लाह ताला सुरक्षा का वादा करता है । यहाँ तक
कि नेमत संपूर्ण हो जाए । यहाँ नेमत से अभिप्राय नुवूक्त है ।

जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । और वह उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे । और अल्लाह के निकट यह एक बहुत बड़ी सफलता है । १।

और ताकि वह मुनाफिक पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों को और मुश्किल पुरुषों और मुश्किल स्त्रियों को अज्ञाब दे जो अल्लाह पर कु-धारणा रखते हैं । विपत्तियों का चक्र स्वयं उन्हीं पर पड़ेगा और अल्लाह उन पर क्रोधित है । और उन पर लान्त करता है और उसने उनके लिए नरक तैयार किया है और वह बहुत बुरा ठिकाना है । ७।

और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । ८।

निःसन्देह हमने तुझे एक गवाह तथा शुभ-समाचार दाता और सर्तककारी के रूप में भेजा । ९।

ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी सहायता करो और उसका सम्मान करो और सुबह और शाम उसका गुणगान करो । १०।

निःसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं । अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है । अतः जो कोई प्रतिज्ञाभंग करे तो वह अपने ही हित के विरुद्ध प्रतिज्ञाभंग

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا
وَيُكَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ
عِنْدَ اللَّهِ فَوْزٌ أَعْظَى نِعَمِهَا ۝

وَيَعِذِّبُ الْمُثْقِلِينَ وَالْمُنْفَقِتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكُتُ الظَّاهِرِينَ
بِاللَّهِ ظَلَّ السَّوْءُ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السُّوءِ
وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ
لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۷

وَلِلَّهِ جُهُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝

لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْزِزُوهُ
وَتُوَفِّرُوهُ ۖ وَتُسْبِحُوهُ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ
يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ لَكُثْرَةُ فَإِنَّمَا

करता है। और जो उस प्रतिज्ञा को पूरा करे जो उसने अल्लाह से की है, तो निःसन्देह वह उसे बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा। 111। (रुकू 1)

महभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वाले तुझ से अवश्य कहेंगे कि हमें हमारी धन-सम्पत्तियों और हमारे घर वालों ने व्यस्त रखा। अतः हमारे लिए (अल्लाह के निकट) क्षमा याचना कर। वे अपनी जिहा से वह कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तू कह दे कि यदि वह (अल्लाह) तुम्हें कष्ट पहुँचाना चाहे अथवा लाभ पहुँचाने का विचार करे, तो कौन है जो अल्लाह के मुकाबले पर तुम्हारे पक्ष में कुछ भी क्षमता रखता है? सच यह है कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़ब अवगत रहता है। 121।

बस्तिकि तुम धारणा करते रहे कि रसूल और ईमान लाने वाले अपने घर वालों की ओर कभी लौट कर नहीं आएँगे। और यह बात तुम्हारे दिलों को सुन्दर करके दिखाई गई। और तुम दुर्विचार करते रहे और तबाह होने वाले लोग बन गए। 13।

और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया तो निःसन्देह हमने काफ़िरों के लिए भड़कने वाली अग्नि तैयार कर रखी है। 14।

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहता है

يَسْكُنُتُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ آتَ فِي بِمَا عَاهَدَ
عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ⑩

سَيَقُولُ لَكَ الْمُحَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ
شَغَلَنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَانْسَغَفَرْنَا
يَقُولُونَ بِالسِّتِّيمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ
فَلَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا
إِنَّ أَرَادُكُمْ خَصْرًا أَوْ أَرَادُكُمْ نَقْعَدًا
بِلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ حَمِيرًا ⑪

بِلْ ظَنَّتُمْ أَنْ لَنْ يَتَقْلِبَ الرَّسُولُ
وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَى أَهْلِهِمْ أَبَدًا وَرِزْنَ ذَلِكَ
فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَّتُمْ ظَلَّ السُّوءِ
وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ⑫

وَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّ
أَعْتَدْنَا لِلْكُفَّارِنَ سَعِيرًا ⑬

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَعْفُرُ

क्षमा कर देता है। और जिसे चाहता है अज्ञाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 15।

जब तुम युद्धलब्ध धन को प्राप्त करने के लिए जाओगे तो वे लोग जो पीछे छोड़ दिए गए, अवश्य कहेंगे कि हमें भी अपने पीछे आने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह के वाक्य को बदल दें। तू कह दे कि तुम कदापि हमारे पीछे नहीं आओगे। इसी प्रकार अल्लाह ने पहले ही कह दिया था। इस पर वे कहेंगे, वस्तुतः तुम तो हम से ईर्ष्या रखते हो। सच यह है कि वह बहुत ही कम समझते हैं। 16।

मरुभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वालों से कह दे कि तुम शीघ्र ही ऐसे लोगों की ओर बुलाए जाओगे जो बड़े जंगजू होंगे। तुम उनसे युद्ध करोगे अथवा वे मुसलमान हो जाएंगे। अतः यदि तुम आज्ञापालन करोगे तो अल्लाह तुम्हें बहुत अच्छा प्रतिफल प्रदान करेगा। और यदि तुम पीठ फेर जाओगे जैसा कि पहले पीठ फेर गए थे तो वह तुम्हें बहुत पीड़ाजनक अज्ञाब देगा। 17।

अंधे पर कोई दोष नहीं और न लंगड़े पर कोई दोष है और न रोगी पर कोई दोष है। और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा वह उसे ऐसे सर्वगों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं। और जो पीठ दिखा जाएगा वह उसे

لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑩

سَيَقُولُ الْمُخْلَفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَانِمٍ تَأْخُذُوهَا ذَرْرُونَا نَتَبَعُكُمْ ۝ يَرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَاتَ اللَّهِ ۝ قُلْ لَنْ تَتَبَعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلٍ ۝ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَخْسِدُونَا ۝ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑪

قُلْ لِلْمُخْلَفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُذَعَّوْنَ إِلَى قَوْمٍ أُولَئِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تَقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يَسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ تَطْعِمُوهُمْ كَمْ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۝ وَإِنْ شَوَّتُوا كَمَا تَوَيَّلُمْ مِنْ قَبْلٍ يَعْدِنُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑫

لَيْسَ عَلَى الْأَغْنِيِّ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَاجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَمَنْ يُطِيعَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخَلُهُ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ ۝ وَمَنْ

बहुत पीड़ाजनक अज्ञाब देगा ॥18।
(रुकू ٢٠)

निःसन्देह अल्लाह मोमिनों से संतुष्ट हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तेरी बैठत कर रहे थे । वह जानता है जो उनके दिलों में था । अतः उसने उन पर प्रशंसित उतारी और उन्हें एक निकटवर्ती विजय प्रदान की ॥19।

और भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन प्रदान किया जो वे संग्रह कर रहे थे । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ॥20।

अल्लाह ने तुमसे भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन का बादा किया है जो तुम प्राप्त करोगे । अतएव यह तुम्हें उसने तुरन्त प्रदान कर दिया और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए ताकि यह मोमिनों के लिए एक बड़ा चिह्न बन जाए और वह तुम्हें सीधे रास्ते की ओर हिदायत दे ॥21।

इसी प्रकार कुछ और भी (विजय) हैं जो अभी तुम्हें प्राप्त नहीं हुईं । निःसन्देह अल्लाह ने उनको आयत्ताधीन कर रखा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ॥22।

और यदि वे लोग तुम से युद्ध करेंगे जिन्होंने इनकार किया तो अवश्य पीठ फेर कर (भाग) जाएँगे । फिर वे न कोई मित्र पाएँगे और न कोई सहायक ॥23।

यह अल्लाह का नियम है जो पहले भी बीत चुका है और तू अल्लाह के

يَوْمَ يَعْذِبُهُ عَذَابًا أَلِيمًا ⑥

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ
يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
فُلُوْبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ
وَآتَاهُمْ فَسْحَارَ قَرِيبَاتِهِمْ ⑦

وَمَعَانِيمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ⑧

وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَعَانِيمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هُذِهِ وَكَفَ أَيْدِيَ التَّارِسِ
عَنْكُمْ ۖ وَلَتَكُونُ أَيَّةً لِّلْمُؤْمِنِينَ
وَيَهْدِي كُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ⑨

وَأَخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ
اللَّهُ بِهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ⑩

وَلَوْ قَتَلَكُمُ الظَّالِمُونَ كَفَرُوا لَوْلَوْا
الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ⑪

سُلْطَةُ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلٍ ۗ وَلَنْ

नियम में कदापि कोई परिवर्तन नहीं
पाएगा । 24।

और वही है जिसने तुम्हें उन पर विजय
प्रदान करने के पश्चात् उनके हाथ तुम
से और तुम्हारे हाथ उनसे मक्का की
घाटी में रोक दिए थे । और जो कुछ तुम
करते हो उस पर अल्लाह गहन दृष्टि
रखता है । 25।

यही वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया
था और तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोक
दिया था और कुर्बानी को भी, जबकि
वह अपने कुर्बानी स्थल तक पहुँचने से
रोक दी गई थी । और यदि ऐसे मोमिन
पुरुष और ऐसी मोमिन स्त्रियाँ न होतीं
जिन्हें न जानने के कारण तुम अपने
पाँवों तले कुचल डालते तो तुम्हें उनकी
ओर से अनजाने में कोई हानि पहुँच
जाती । यह इस लिए हुआ ताकि
अल्लाह जिसे चाहे उसे अपनी कृपा में
प्रविष्ट करे । यदि वे निथर कर अलग हो
चुके होते तो अवश्य हम उनमें से
इनकार करने वालों को पीड़ाजनक
अज्ञाब देते । 26।

जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया,
अपने दिलों में आत्मसम्मान अर्थात्
अज्ञानतापूर्ण आत्मसम्मान का मुहा
बना बैठे तो अल्लाह ने अपने रसूल पर
और मोमिनों पर अपनी प्रशांति उतारी
और उन्हें तक़वा के वाक्य से चिमटाए
रखा और वे ही उसके सबसे बड़े
हक़दार और योग्य थे । और अल्लाह

تَحِدَّ لِسْنَةِ اللَّوْبَدِيِّاً

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيهِمْ عَنْكُمْ
وَأَنْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ
أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ
بِمَا أَعْمَلُونَ بَصِيرًا ③

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَصْدَوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهُدُى مَعْلُوفٌ أَنْ يَئِلُّ
مَحِلٌّهُ ۖ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ
مُؤْمِنَاتٍ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطْغُوْهُمْ
فَقَصَّبْيَكُمْ مِنْهُمْ مَعْرَةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝
لَيَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۝
لَوْتَرَيْلُو الْمَذْبُنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ④

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمْ
الْحَمِيمَةَ حَمِيمَةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْزَّمَمُهُمْ كَلِمَةَ الشُّفُوْرِ وَكَانُوا أَحَقُّ
بِهَا وَأَهْلَهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

हर चीज़ को खूब जानता है । 27।

(रुक् ۳۱)

निश्चित रूप से अल्लाह ने अपने रसूल को (उसका) स्वप्न सत्य के साथ पूरा कर दिखाया कि यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम अवश्यमेव मस्जिद-ए-हराम में शांतिपूर्वक प्रवेश करोगे, अपने सिरों को मुंडवाते हुए और बाल कतरवाते हुए । ऐसी अवस्था में कि तुम भय नहीं करोगे । अतः वह (अल्लाह) उसका ज्ञान रखता था जो तुम नहीं जानते थे । फिर उसने इसके अतिरिक्त निकट-भविष्य में ही एक और विजय निश्चित कर दी है । 28। वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्य-धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (की प्रत्येक शाखा) पर पूर्णतया विजयी कर दे । और साक्षी के रूप में अल्लाह बहुत पर्याप्त है । 29।*

अल्लाह के रसूल मुहम्मद और वे लोग जो उसके साथ हैं, काफिरों के विरुद्ध बहुत कठोर (और) आपस में अत्यन्त कृपा करने वाले हैं । तू उन्हें रुक् करते हुए और सज्दः करते हुए देखोगा । वे अल्लाह ही से (उसकी) अनुकम्मा और प्रसन्नता चाहते हैं । सज्दों के प्रभाव से उनके चेहरों पर उनके चिह्न हैं । ये उनकी उपमा हैं जो तौरात में हैं । और

٦٩

عَلِيِّمًا

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولُهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ^١
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْعَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمْنِينَ^٢ مَحْلِقِينَ رُءُوفُ سَكُونَ
وَمَقْصِرِينَ^٣ لَا تَخَافُونَ^٤ فَعَلِمَ مَا
لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ ذُوْنَ ذِلْكَ
فَتْحًا قَرِيبًا^٥

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ
وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الْدِينِ كُلِّهِ^٦
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا^٧

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ
أَشَدَّ آمَّةٍ عَلَى الْكُفَّارِ رَحْمَانٌ بِيَنْهُمْ
تَرِهَمُ رَكَعًا سَجَدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ
مِنْ أَثْرِ السُّجُودِ ذِلْكَ مَثَلُهُمْ فِي

* इस आयत में संसार के सब धर्मों पर इस्लाम के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है । इस आयत के उत्तरने के समय तो मक्का वासियों पर ही विजय प्राप्ति नहीं हुई थी । फिर उस युग में यह भविष्यवाणी करना कि इस्लाम को संसार के सब धर्मों पर विजयी किया जाएगा, अनुपम महत्ता का परिचायक है ।

السُّورَةُ هُوَ مَثَلُهُمْ فِي الْأَنْجِيلِ هُوَ هُوَ
 इंजील में उनकी उपमा एक खेती की भाँति है जो अपनी कौपल निकाले, फिर हुए सुदृढ़ करे। फिर वह मोटी हो जाए और अपने ढंठल पर खड़ी हो जाए, कृषिकारों को प्रसन्न कर दे ताकि उनके कारण काफिरों को क्रोधित करे। अल्लाह ने उनमें से उनसे जो ईमान लाए और नेक कर्म किए क्षमा और महान प्रतिफल का वादा किया हुआ है। 130।*

(रुकू 42)

كَرَزْعٍ أَخْرَجَ شَطْعَةً فَازَرَةً
 فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوْى عَلَى سُوقِهِ يَعِجِبُ
 الرَّاعِ لِيَغْنِيَ بِهِمُ الْكُفَّارُ وَعَدَ اللَّهُ
 الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ مِنْهُمْ
 مَغْرِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो गुण वर्णन किये गये हैं उनको उन तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि तुरन्त ही कहा वल्लज्जी न मअहू अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्गुण उन लोगों में भी प्रवेश करेंगे जो आप सल्ल. के साथ हैं। गुणों में सर्वप्रथम तो यह है कि वे काफिरों के विरुद्ध बहुत कठोर हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे काफिरों पर अपनी कठोर-हृदयता के कारण कठोर होंगे बल्कि कुफ़ का प्रभाव स्वीकार न करने की दृष्टि से उन्हें कठोर कहा गया है। अन्यथा उनके दिल दिया से भरे हुए होंगे जिसके कारण मोमिन एक दूसरे से कृपा और नप्रतापूर्वक व्यवहार करने वाले होंगे। और उनके जिहाद का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति है न कि सांसारिक धन अर्जित करना। अतएव वे अल्लाह के समक्ष रुक् करते हुए और सजदः करते हुए झुकेंगे और उससे उसकी अनुकम्पा अर्थात् ऐसा सांसारिक धन माँगेंगे जिसके साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी हो। यह उनके जिहाद के वे प्रमुख पक्ष हैं जो तौरात में उनके सम्बन्ध में वर्णन किए गए थे।

जहाँ तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुगामियों में अंत्ययुग में आने वाले मसीह और उसके मानने वालों का प्रसंग है, उनका उदाहरण इंजील में ऐसे अंकुरण के साथ दिया गया है जो क्रमशः बढ़ता है और अपने ढंठल पर दृढ़ हो जाता है और उसको देख कर उसको बोने वाले अर्थात् धर्म सेवा में भाग लेने वाले बहुत प्रसन्न होंगे। और इसके परिणाम स्वरूप काफिरों को उन पर और भी अधिक क्रोध आएगा। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उनको भी जो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाएँगे और उससे क्षमा याचना करेंगे, बड़े क्षमा और अच्छा प्रतिफल प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया है।

49 – सूरः अल-हुजुरात

यह सूरः मक्का विजय के पश्चात् मदीना में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं।

पिछली सूरः में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौद्र और सौम्य रूप के जो दर्जे वर्णन हुए हैं, उसके पश्चात् यहाँ सहाबा रजि. की यह ज़िम्मेदारी वर्णन की गई है कि इस महान रसूल के सामने न तो नज़र उठा कर बात करना तुम्हें शोभा देता है न ऊँची आवाज़ में। अतः वे लोग जो हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर से आवाज़ देते हुए अपने घर से बाहर निकलने का कष्ट देते थे उन पर अत्यन्त अप्रसन्नता प्रकट की गई है।

इसके पश्चात् आयत सं. 10 में भविष्य में मुस्लिम शासनों के परस्पर मतभेद की परिस्थिति में सर्वोत्तम उपाय का उल्लेख किया गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो मुस्लिम शासनों का परस्पर लड़ने का कोई प्रश्न नहीं था। इस कारण वास्तव में इस पवित्र आयत में एक महान चार्टर (राजकीय दिशानिर्देश) प्रस्तुत किया गया है जो केवल मुसलमानों ही के लिए नहीं अपितु गैर मुस्लिमों के लिए भी जातीय मतभेद की परस्थिति में उनमें परस्पर संधि कराने से सम्बन्ध रखता है। इसके मौलिक आधार यह है कि :-

1. यदि दो मुस्लिम शासन परस्पर लड़ पड़ें, तो शेष मुस्लिम शासनों का कर्तव्य है कि वे मिलकर दोनों को युद्ध से रोकें। और यदि उनमें से कोई उपदेश ग्रहण न करे तो सैन्य कार्रवाई के द्वारा उसको विवश कर दें।

2. अतः जब वे युद्ध से रुक जाएँ तो फिर उनके बीच संधि करवाने का प्रयत्न करो।

3. परन्तु जब संधि करवाने का प्रयत्न करो तो पूर्ण रूप से न्याय के साथ करो और दोनों पक्ष के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करो। क्योंकि अन्तिम परिणाम इसका यही है कि अल्लाह तआला न्याय करने वालों से प्रेम करता है और जिनसे अल्लाह तआला प्रेम करे उनको वह कदापि असफल नहीं होने देता।

एक बार फिर ध्यान दिलाया गया है कि यद्यपि यहाँ मुसलमानों को सम्बोधित किया गया है, परन्तु जो कार्य-शैली उनको समझाई गई है वह समस्त मानव जाति के लिए अनुकरणीय है।

इसके पश्चात् विभिन्न जातियों में फूट और मतभेद का मौलिक कारण वर्णन कर दिया गया जो वास्तव में वंशवाद है। प्रत्येक जाति जब दूसरी जाति से उपहास करती है

तो मानो अपने आप को उनसे भिन्न और उत्कृष्ट वंशज मानते हुए ऐसा करती है।

इसके पश्चात विभिन्न ऐसी सामाजिक बुराइयाँ वर्णन कर दी गईं जिनके परिणाम स्वरूप अलगाववाद उत्पन्न होते हैं। इसके पश्चात यह स्पष्ट किया गया कि अल्लाह तआला ने लोगों को विभिन्न रंगों और वंशों में बांटा क्यों है? इसका उद्देश्य यह वर्णन किया गया कि एक दूसरे पर श्रेष्ठता जताने के लिए नहीं, बल्कि एक दूसरे की पहचान में आसानी के लिए ऐसा किया गया है। उदाहरणार्थ जब कहा जाए कि अमुक व्यक्ति अमेरिकन है अथवा अमुक जर्मन है तो इस लिए नहीं कहा जाता कि अमेरिकन जाति को सब पर श्रेष्ठता प्राप्त है अथवा जर्मन जाति को सब जातियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है। बल्कि केवल पहचान के लिए ऐसा कहा जाता है।



سُورَةُ الْحُجَّرَاتِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعَ عَشَرَةَ آيَةً وَرُكُوعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह का तक्रवा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । । ।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ें ऊँची न किया करो । और जिस प्रकार तुम में से कुछ लोग कुछ दूसरे लोगों के सामने ऊँची आवाज़ में बातें करते हैं, उसके सामने ऊँची बात न किया करो । ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाएँ और तुम्हें पता तक न चले । । ।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह के रसूल के समक्ष अपनी आवाज़ें धीमी रखते हैं, यहीं वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक्रवा के लिए परख लिया है । उनके लिए एक महान क्षमादान और बड़ा प्रतिफल है । । ।

निःसन्देह वे लोग जो तुझे घरों के बाहर से आवाज़ें देते हैं अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते । । ।

यदि वे धैर्य करते यहाँ तक कि तू स्वयं ही उनकी ओर बाहर निकल आता तो यह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ
يَدِيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ
بِالْقُوَّلِ كَمَهْرِ بَعْضُكُمْ يَعْظِمُ أَنْ
تَخْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ③

إِنَّ الَّذِينَ يَعْصُمُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْهُ
رَسُولُ اللَّهِ أَوْ إِلَكَ الَّذِينَ آمَنُوا هُنَّ اللَّهُ
قُلُوبُهُمْ لِلشَّفَوْىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَآجْرٌ
عَظِيمٌ ④

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادَوْنَكَ مِنْ قَرَاءِ الْحُجَّرَتِ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ⑤

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ

अवश्य उनके लिए उत्तम होता । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है । १६।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे पास यदि कोई दुराचारी कोई समाचार लाए तो (उसकी) छान-बीन कर लिया करो । ऐसा न हो कि तुम अज्ञानता वश किसी जाति को हानि पहुँचा बैठो । फिर तुम्हें अपने किए पर पश्चाताप करना पड़े । १७।*

और जान लो कि तुम में अल्लाह का रसूल मौजूद है । यदि वह तुम्हारे अधिकतर बातें मान ले तो तुम अवश्य कष्ट में पड़ जाओ । परन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बना दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में सुसज्जित कर दिया है और तुम्हारे लिए कुक्र और कुकर्म तथा अवज्ञा के प्रति अत्यन्त घृणा उत्पन्न कर दी है । यही वे लोग हैं जो हिदायत प्राप्त हैं । १८।

अल्लाह की ओर से यह एक बुहद अनुकर्मा और नेमत के रूप में है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । १९।

और यदि मोमिनों में से दो समुदाय परस्पर लड़ पड़ें तो उनके बीच संधि

لَكَانَ خَيْرًا لِّهُمْۖ وَاللَّهُ عَفْوٌ رَّحِيمٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ
بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَنَّ تُصِيبُونَا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ
فَتَصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَدِمِينَ ⑤

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيهِمُ رَسُولَ اللَّهِ ۝ لَوْ
يُطِيعُوكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَزِيزُ
وَلِكِنَّ اللَّهَ حَبِيبُ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ
وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرِهُ إِلَيْكُمْ
الْكُفُرُ وَالْفُسُوقُ وَالْعُصْيَانُ ۝ أُولَئِكَ
هُمُ الْمُشْرِكُونَ ۝

فَضْلًا مُّرِبِّ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۝ وَاللَّهُ عَلَيْهِ
حَكِيمٌ ①

وَإِنْ طَآءِقْتُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ افْتَلُوا

* मदीना में बहुत से अफवाहें फैलाने वाले लोग ऐसी अफवाहें फैलाते थे कि उनको सच्च मान कर केवल संदेह के आधार पर कुछ लोगों के दिलों में कुछ दूसरों से युद्ध करने का विचार उत्पन्न होता था । अतः उनको इस प्रकार जल्दबाज़ी करने से कड़े शब्दों में मना किया गया है । क्योंकि संभव है कि इस प्रकार की अफवाहों के परिणामस्वरूप कुछ निर्दोष लोगों पर भी अत्याचार हो जाए और इसके परिणाम स्वरूप मोमिनों को लज्जित होना पड़े ।

करवाओ। फिर यदि उनमें से एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करे तो जो अत्याचार कर रहा है उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के निर्णय की ओर लौट आए। अतः यदि वह लौट आए तो उन दोनों के बीच न्यायपूर्वक संधि करवाओ और न्याय करो। निःसन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है। ॥10॥

मोमिन तो भाई-भाई ही होते हैं। अतः अपने दो भाइयों के बीच संधि करवाया करो। और अल्लाह का तक़वा धारण करो ताकि तुम पर कृपा की जाए। ॥11॥

(रुक् ۱/۳)

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! (तुम में से) कोई जाति किसी जाति से उपहास न करे। संभव है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ। और न महिलाये महिलाओं से (उपहास करें)। हो सकता है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ। और अपने लोगों पर दोषारोपण न करो और एक दूसरे को नाम बिगाड़ कर न पुकारा करो। ईमान के पश्चात अवज्ञा करने का दाग लग जाना बहुत बुरी बात है। और जिसने प्रायश्चित नहीं किया तो यही वे लोग हैं जो अत्याचारी हैं। ॥12॥

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! संदेह (करने) से बहुत बचा करो। निःसन्देह कुछ संदेह पाप होते हैं। और जासूसी न किया करो। और तुम में से कोई किसी दूसरे की चुगली न करे। क्या तुम में से कोई यह पसन्द करता है कि अपने मृत

فَاصْلِحُوا بَيْنَهُمَا۝ فَإِنْ بَعْثَتْ إِحْدَيْهِمَا
عَلَى الْأَخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغُ حَتَّىٰ
تَفْئِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ۝ فَإِنْ فَاءَتْ
فَاصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا۝
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ⑩

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ اخْوَةٌ فَاصْلِحُوا
بَيْنَ أَخْوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُرَحَّمُونَ ۖ ۷

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخُرُ قَوْمٌ مِّنْ
قُوْمٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ
وَلَا إِنْسَانٌ مِّنْ نِسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونَ خَيْرًا
مِّنْهُنَّ ۝ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ
وَلَا تَسْأَبُوا بِالْأَلْقَابِ ۝ بِئْسَ الْاسْمُ
الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۝ وَمَنْ لَمْ يَتَبَّ
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا جَنِيْبُوا كَثِيرًا مِّنْ
الظُّرُفِ ۝ إِنَّ بَعْضَ الظُّرُفِ إِثْمٌ وَلَا
تَجْسِسُوا وَلَا يَعْتَبِرُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا۝
أَيَحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمًاً أَخْيُو

भाई का माँस खाए ? अतः तुम इससे अत्यन्त घृणा करते हो । और अल्लाह का तक़वा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत प्रायश्चित स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥131॥

हे लोगो ! निःसन्देह हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया । और तुम्हें जातियों और कबीलों में विभाजित किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको । निःसन्देह अल्लाह के निकट तुम में सबसे अधिक सम्माननीय वह है जो सर्वाधिक मुत्तकी है । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत है ॥14॥

महभूमि निवासी कहते हैं कि हम ईमान ले आए । तू कह दे कि तुम ईमान नहीं लाए, परन्तु केवल इतना कहा करो कि हम मुसलमान हो चुके हैं । जबकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में प्रविष्ट नहीं हुआ । और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में कुछ भी कमी नहीं करेगा । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥15॥*

مَيْتًا فَكَرِهُتُمُوهُ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ
تَوَابُ رَّحِيمٌ ⑩

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِذَا حَلَقْتُمْ مِّنْ ذَكَرٍ
وَأَنْثَىٰ وَجَعَلْتُمْ شَعُوبًا وَقَبَاءِلَ
لِتَعَارِفُوا ۖ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ
أَنْفُسُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَّيْرٌ ⑪

قَاتَلَ الْأَعْرَابُ أَمَّا ۖ قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا
وَلِكُنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلُ
الْأَيْمَانَ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ لَا يَلْتَكُمْ مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۖ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑫

* इस परिचय आयत में ईमान और इस्लाम की वह मौलिक परिभाषा बता दी गई है जो ईमान को इस्लाम से पृथक कर देती है । मुँह से तो प्रत्येक व्यक्ति यह कह सकता है कि हमारे दिल में ईमान है परन्तु उनको बताया गया है कि तुम अधिक से अधिक यह कह सकते हो कि हम मुसलमान हो गए हैं । अर्थात् वे लोग जिनके दिलों में ईमान न भी हो अपने आपको मुसलमान कहने का अधिकार रखते हैं । उनमें से बहुत से हैं जो इनकार की अवस्था में ही मरेंगे और बहुत से ऐसे भी हैं जिनके दिल में अभी तक ईमान प्रविष्ट नहीं हुआ । परन्तु वे ज़ाहिरी रूप से इस्लाम स्वीकार करते के→

मोमिन वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए। फिर उन्होंने कभी सदेह नहीं किया और अपनी धन-सम्पत्तियों और अपनी जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया। यही वे लोग हैं जो सच्चे हैं ॥16॥

पूछ, कि क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म सिखाते हो ? जबकि अल्लाह जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और अल्लाह हर चीज़ का खूब ज्ञान रखता है ॥17॥

वे तुझ पर उपकार जतलाते हैं कि वे मुसलमान हो गए हैं। तू कह दे मुझ पर अपने इस्लाम का उपकार न जताया करो। बल्कि अल्लाह तुम पर उपकार करता है कि उसने तुम्हें ईमान की ओर हिदायत दी। यदि तुम सच्चे हो (तो उसको स्वीकार करो) ॥18॥

निःसन्देह अल्लाह आकाशों और धरती के अदृश्य तत्त्वों को जानता है। और तुम जो करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ॥19॥ (रुक् 2/4)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فَنِيبِ اللَّهِ
أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ⑩

قُلْ أَعْلَمُونَ اللَّهُ يَعْلَمُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ شَيْءاً عَلَيْهِمْ ⑪

يَمْنُونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمْنُونَا
عَلَى إِسْلَامِكُمْ بَلِ اللَّهُ يَعْلَمُ عَلَيْكُمْ
أَنْ هَذِهِكُمُ الْلَّا يَمَنِ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ⑫

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ يَصِيرُ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑬

50—सूरः क़ाफः

यह सूरः मक्का निवास काल के आरम्भिक दिनों में अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं।

यह सूरः खण्डाक्षरों में से क़ाफः अक्षर से आरम्भ होती है। अरबी अक्षर क़ाफः के सम्बन्ध में बड़े-बड़े विद्वानों का मत है कि क़दीर शब्द का यह संक्षिप्त रूप है। इस सूरः में इस शब्द के पश्चात पहला शब्द कुरआन आया है जो क़ाफः ही से आरम्भ होता है। इसके पश्चात अल्लाह तआला की कुदरत (शक्ति) का इनकार करने वालों के इस वर्णन का उल्लेख है कि अल्लाह तआला के पास यह शक्ति कहाँ से आ गई कि हमारे मर कर मिट्टी हो जाने के पश्चात एक बार फिर क्यामत के दिन इकट्ठा करे। उनके निकट यह एक बहुत दूर की बात है अर्थात् समझ से परे है। अल्लाह तआला फर्माता है कि हमें जानकारी है कि धरती उनमें से क्या कुछ कम करती चली जा रही है। परन्तु इस के बावजूद हम यह सामर्थ्य रखते हैं कि उनके बिखरे हुए कणों को इकट्ठा कर दें। उनका ध्यान आकाश के फैलाव की ओर फेरा गया है कि इन्हें विशाल ब्रह्माण्ड में कोई एक त्रुटि भी वे दिखा नहीं सकते, फिर उसके सष्टा की शक्तियों का वह कैसे इनकार कर सकते हैं।

इसके पश्चात फर्माया कि जो शंका उनके मन में उठती हैं हम पूर्णतया उनसे अवगत हैं। क्योंकि हम मनुष्य के प्राणस्नायु से भी अधिक उसके निकट हैं। फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अवश्य तुम लोग उठाए जाओगे और उठाए जाने वालों के साथ उनको एक हाँक कर ले जाने वाला होगा और एक साक्षी भी। नरक का वर्णन करते हुए कहा कि अधर्मी लोग एक के बाद एक समूहबद्ध रूप से नरक का ईंधन बनने वाले हैं। एक ऐसे नरक का जिसका पेट कभी नहीं भरेगा। जब उपमा स्वरूप अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि क्या तेरा पेट भर गया है तो वह अपनी यथा स्थिति प्रकट करेगा कि क्या और भी ऐसे अभागे हैं? मेरे अन्दर उनके लिए भी स्थान है। और इसके विपरीत स्वर्ग मुत्तकियों के बहुत निकट कर दिया जाएगा। आयतांश गैरबयीद (कुछ दूर नहीं) का यह अर्थ भी है कि यह बात कदापि कल्पना से दूर नहीं। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उपदेश दिया गया कि उनके व्यंग्य और कटाक्ष को धैर्य पूर्वक सहन करें। जो भविष्यवाणियाँ पवित्र कुरआन में की गई हैं वे अवश्य पूरी हो कर रहेंगी। अतः पवित्र कुरआन के द्वारा तू उस व्यक्ति को उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता हो।

यहाँ यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुन-चुन कर केवल उसको उपदेश देंगे जो चेतावनी से डरता हो। वस्तुतः उपदेश तो आप समस्त मानव जाति को दे रहे हैं परन्तु लाभ वही उठाएगा जो चेतावनी से डरने वाला हो।

سُورَةُ قَ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَ تَلَاثَةُ رُسُوْلٍ عَابِرٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

क़दीरुन : सर्वशक्तिमान । अति
गौरवशाली कुरआन की क़सम ! 12।

वास्तविकता यह है कि उन्होंने आश्चर्य
किया कि स्वयं उन्हीं में से एक
सतर्ककारी उनके पास आया है । अतः
काफिर कहते हैं कि यह विचित्र बात
है । 13।

क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो
जाएँगे ? इस प्रकार लौटना एक दूर की
बात है । 14।

हम भली-भाँति जानते हैं कि धरती
उनमें से क्या कम कर रही है । और
हमारे पास (सब कुछ) सुरक्षित रखने
वाली एक पुस्तक है । 15।

बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब
वह उनके पास आया । अतः वे एक
उलझाव वाली बात में पड़े हुए हैं । 16।

क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को
नहीं देखा कि हमने उसे कैसे बनाया
और उसे सुन्दरता प्रदान की और उसमें
कोई त्रुटि नहीं ? । 17।

और धरती को हमने फैला दिया और
उसमें दृढ़तापूर्वक गड़े हुए पर्वत बना
दिए । और प्रत्येक प्रकार के तरों ताज़ा
जोड़े उसमें उगाये । 18।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

قُ وَالْقُرْآنُ الْمَجِيدُ ②

بِلْ عَجِيبُواْنْ جَاءُهُمْ مُنْذِرٌ مُّهْمَدٌ
فَقَالَ الْكُفَّارُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ③

إِذَا مِنَّا وَكَثَرَ إِنَّا نَرْجِعُ
بِعِنْدِنَا ④

قَدْ عِلِّمْنَا مَا تَقْصُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ
وَعِنْدَنَا كِتْبٌ حَفِيظٌ ⑤

بِلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءُهُمْ فَهُمْ
فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ⑥

أَفَلَمْ يَنْتَرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ
بَيْنَهَا وَزَيْنَهَا وَمَا لَهُمْ فِرْجٌ ⑦

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَنْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْبَيْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زُوْجٍ بَعْنَاجٌ ⑧

आँखें खोलने के लिए और प्रत्येक ऐसे भक्त के लिए शिक्षा स्वरूप जो बार-बार (अल्लाह की ओर) लौटने वाला है । ११

और हमने आकाश से मंगलकारी पानी उतारा और उसके द्वारा बागों और कटाई की जाने वाली फसलों के बीज उगाए । १०।

और खजूरों के ऊंचे वृक्ष जिनके परत दर परत गुच्छे होते हैं । ११।

भक्तों के लिए जीविका स्वरूप । और हमने उस (अर्थात् वर्षा) के द्वारा एक मृत क्षेत्र को जीवित कर दिया । इसी प्रकार (कब्रों से) निकलना होगा । १२।

उनसे पूर्व नूह की जाति ने और खनिजपदार्थों के स्वामियों ने तथा समूद्र (जाति) ने भी झुठलाया था । १३।

और आद (जाति) और फिरौन ने और लूट के भाइयों ने । १४।

और घने वृक्षों के बीच बसने वालों ने और तुब्बा की जाति ने । सबने रसूलों को झुठला दिया । अतः मेरा सतर्क करना सच्चा सिद्ध हो गया । १५।

क्या हम पहली उत्पत्ति से थक चुके हैं ? नहीं ! बल्कि वे तो नवीन उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी संदेह में पड़े हैं । १६।

(रुक् १५)

और निःसन्देह हमने मनुष्य को पैदा किया और हम जानते हैं कि उसका मन उसे कैसे कैसे भ्रम में डालता है । और

بَيْصَرَةً وَذِكْرًا لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ①

وَنَرَزْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبِيرًا فَأَنْبَثْنَا بِهِ
جَنْتِي وَحْبَ الْحَصِيدِ ②

وَالنَّحْلَ يُسْقِطُ لَهَا طَلْعَ نَصِيدِ ③

رِزْقًا لِلْعَبَادِ وَأَحَيَنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيِّنَا
كَذِيلَكَ الْخُرُوقَ ④

كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُوحٌ وَأَصْحَبُ
الرَّسِّ وَنَمُوذِ ⑤

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ⑥

وَأَصْحَبُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تَبَّعٍ كُلُّ
كَذَبَ الرَّسِّلَ فَحَقٌّ وَعِيدٌ ⑦

أَفَعَيْنَا بِالْخُلُقِ الْأَوَّلِ بِلْ هُمْ فِي لَبِسٍ
قِنْ حَقِّي جَدِيدٌ ⑧

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلَمُ مَا تَوَسِّعُ
بِهِ نَفْسَهُ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ

हम उससे (उसके) प्राणस्नायु से भी
अधिक निकट हैं । 17।

जब दाएँ और बाएँ बैठे हुए दो बात
पकड़ने वाले बात पकड़ते हैं । 18।*

वह जब भी कोई बात कहता है उसके
पास ही (उसका) हर समय तत्पर
निरीक्षक होता है । 19।

और जब मृत्यु की मुर्छा आ जाएगी जो
नितांत सत्य है । (तब उसे कहा
जाएगा) यह वही है जिससे तू बचता
रहा । 20।

और बिगुल फूंका जाएगा । यह है वह
चेताया हुआ दिन । 21।

और प्रत्येक जान इस अवस्था में आएगी
कि उसके साथ एक हाँकने वाला और
एक साक्षी होगा । 22।

निःसन्देह तू इस बारे में असावधान
रहा । अतः हमने तुझ से तेरा पर्दा
उठा दिया और आज तेरी दृष्टि बहुत
तीव्र हो गई है । 23।

और उसका साक्षी कहेगा यह है जो मेरे
पास तैयार पड़ा है । 24।

(हे हाँकने वाले और हे साक्षी !)
तुम दोनों प्रत्येक घोर कृतञ्च (और
सत्य के) परम शत्रु को नरक में झोंक
दो । 25।

* यहाँ मनुष्य के कर्मों का निरीक्षण करते वाले फ़रिश्तों की ओर संकेत है । अर्थात् उनके दाहिनी ओर
के फ़रिश्ते उनके नेक-कर्म को लिपिबद्ध करते हैं और बाईं ओर के फ़रिश्ते कुकर्मों को लिपिबद्ध
करते हैं । ये भौतिक आँख से दिखाई देने वाले कोई फ़रिश्ते नहीं हैं, बल्कि अल्लाह तआला की एक
साक्ष्य व्यवस्था है जिसकी ओर संकेत किया गया है ।

حَبْلِ الْوَرِيدِ ⑩

إِذْ يَتَّلَقُ الْمُتَلَقِّيْنَ عَنِ الْيَمِّيْنِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدُ ⑪

مَا يُلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدِيْهِ رَقِيْبٌ
عَتِيْدُ ⑫

وَجَاءَتْ سُكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ
ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ⑬

وَنَفَخَ فِي الصُّورِ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ⑭

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفِسٍ مَّعَهَا سَاقِيْ وَشَهِيْدُ ⑮

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَذَا
فَكَشَفْنَا عَنْكَ غُطَاءَكَ فَبَصَرُكَ
الْيَوْمَ حَدِيْدُ ⑯

وَقَالَ قَرِيْبُهُ هَذَا مَا لَدَى عَتِيْدُ ⑰

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلُّ كَفَارٍ عَنِيْدُ ⑱

प्रत्येक अच्छी बात से रोकने वाले,
सीमा का उल्लंघन करने वाले और संदेह
में डालने वाले को । 26।

वह जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा
उपास्य बना रखा था । अतः तुम दोनों
उसे कठोर अज्ञाब में झोंक दो । 27।

उसके साथी ने कहा, हे हमारे रब्ब !
मैंने तो उसे उद्धण्ड नहीं बनाया, परन्तु
वह स्वयं ही एक परले दर्जे की
पथभ्रष्टता में पड़ा था । 28।

वह कहेगा, मेरे समक्ष झगड़ा न करो ।
मैं पहले ही तुम्हारी ओर चेतावनी भेज
चुका हूँ । 29।

मेरे निकट आदेश परिवर्तित नहीं किया
जाता । मैं कदापि निरीह भक्तों पर
अत्याचार करने वाला नहीं । 30।

(रुकू ۲۶)

(याद करो) वह दिन जब हम नरक से
पूछेंगे, क्या तू भर गया है ? और वह
उत्तर देगा, क्या कुछ और भी है ? 31।
और जब स्वर्ग मुत्तकियों के लिए
निकट कर दिया जाएगा, कुछ दूर नहीं
होगा । 32।

यह है वह जिसका तुम में से प्रत्येक
लौटने वाले, निगरान रहने वाले के लिए
वचन दिया गया है । 33।

जो रहमान (अल्लाह) से परोक्ष में डरता
रहा और एक झुकने वाला दिल लिए हुए
आया है । 34।

शांति पूर्वक उसमें प्रवेश कर जाओ ।
यही वह सदा रहने वाला दिन है । 35।

مَنَّا عِلْلَهُ خَيْرٍ مُعْتَدِلٌ مُرِيْبٌ ۝

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا أَخْرَ فَالْقِيلَةُ
فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝

قَالَ قَرِيْبُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَيْتَهُ وَلَكِنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ بَعِيْدٍ ۝

قَالَ لَا تَحْصِمُ الَّذِي وَقَدْ قَدَّمَ
إِنْ يُكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝

مَا يَبْدِلُ الْقَوْلُ لَدَىٰ وَمَا آتَى بِظَلَامٍ
لِلْعَيْدِ ۝

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ
هَلْ مِنْ مَرِيْدٍ ۝

وَأَزْلَفْتِ الْجَنَّةَ لِلْمُسْتَقْبَلِ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝

هَذَا مَا نُوعِدُنَّ لِكُلِّ أَوَابٍ حَفِيْظٍ ۝

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ
بِقَلْبٍ مُنِيْبٍ ۝

إِذْ خَلُوْهَا إِسْلَمٌ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

उनके लिए उसमें जो वे चाहेंगे होगा और हमारे पास और भी बहुत कुछ है । 36।

और कितनी ही जातियाँ हमने उनसे पहले नष्ट कर दीं जो पकड़ करने में उनसे अधिक सशक्त थीं । अतः उन्होंने धरती में गुफाएँ बना लीं । (परन्तु उनके लिए) क्या कोई शरण का स्थान था ? । 37।

निःसन्देह इसमें बहुत बड़ी सीख है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान धरे और वह देखने वाला हो । 38।

और निःसन्देह हमने आकाशों और धरती को और उसे भी जो उनके बीच है, छः दिनों में पैदा किया और हमें कोई थकान छुई तक नहीं । 39।

अतः धैर्य कर उस पर जो वे कहते हैं और सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व भी अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान कर । 40।

और रात के एक भाग में और सजदों के पश्चात् भी उसका गुणगान कर । 41।

और ध्यान से सुन ! जिस दिन एक पुकारने वाला निकट के स्थान से पुकारेगा । 42।

जिस दिन वे एक भयंकर सच्ची आवाज़ सुनेंगे । यह निकल खड़े होने का दिन है । 43।

निःसन्देह हम ही जीवित करते और मारते हैं और हमारी ओर ही लौट कर आना है । 44।

لَهُمْ مَا يَسْأَمُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَرِيْدٌ ⑤

وَكُمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُ
مِنْهُمْ بَطْشًا فَقَبُوْا فِي الْبِلَادِ هُلْ مِنْ
مَّحِيْصٍ ⑥

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قُلْبٌ
أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ⑦

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الشَّمُوْتَ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةٍ آيَةً ۝ وَمَا مَسَّنَا
مِنْ لَعْنَوْبٍ ⑧

فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ ظَلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الغَرْوُبِ ۝

وَمِنَ الَّلِّيْلِ فَسِيْحَةً وَأَذْبَارَ السَّجْوُدِ ⑨
وَاسْتَمْعِ يَوْمَ يُنَادِيْ الْمُنَادِيْ مِنْ مَكَانٍ
قَرِيْبٍ ⑩

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۝ ذَلِكَ
يَوْمُ الْحُرْقِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُخْبِ وَنُمَيْتُ وَإِنَّا
الْمَصِيرُ ۝

जिस दिन धरती उनके ऊपर से तीव्र हलचल के कारण फट जाएगी । यह वह महान् एकत्रिकरण है जो हमारे लिए सरल है । 145।

हम उसे सबसे अधिक जानते हैं जो वे कहते हैं । और तू उन पर बल्पूर्वक सुधार करने वाला निरीक्षक नहीं है । अतः कुरआन के द्वारा उसे उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता है । 146। (रुक् ۱۷)

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاجًا مِّنْ ذِلِكِ
حَسْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرُ ⑩

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا آتَنَا
عَلَيْهِمْ بِجَنَاحٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ
يَخَافُ وَعِيدٌ ⑪

51- सूरः अजः-जारियात

यह सूरः आरम्भिक मक्की सूरतों में से है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ ही में पिछली सूरतों की भविष्यवाणियों को, जिनमें स्वर्ग और नरक आदि की भविष्यवाणियाँ हैं, इतनी विश्वसनीयता पूर्वक वर्णन किया गया है मानो जैसे कुरआन के सम्बोधित लोग परस्पर बातें करते हैं।

इस सूरः में भविष्य में घटित होने वाले युद्धों को फिर से गवाह ठहराया गया है ताकि जब मानव जाति इन भविष्यवाणियों को निश्चित रूप से पूरा होता हुआ देख ले तो इस बात में कोई शंका न रहे कि जिस रसूल पर यह रहस्य खोला गया, मृत्यु के पश्चात के जीवन का विषय भी निश्चित रूप से उस को सर्वज्ञ अल्लाह ने ही बताया है।

आयत संख्या 2 में आया है : “क्रसम है बीज बिखेरने वालियों की...।” अब प्रत्यक्ष रूप से अक्षरशः यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है क्योंकि वास्तव में आज कल हवाई जहाजों और हैलीकैप्टरों के द्वारा बीज बिखेरे जाते हैं और बड़े-बड़े भार उठाकर जहाज उड़ते हैं और इन भारों के बावजूद वे द्रुतगामी होते हैं। महत्वपूर्ण जानकारियाँ इन जहाजों के द्वारा विभिन्न विजयी, पराजित और प्रतिबंधित जातियों को भी पहुँचाई जाती हैं। इन सबको साक्षी ठहरा कर यह परिणाम निकाला गया कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है वह निःसन्देह होकर रहने वाला है। और प्रतिफल दिवस अर्थात् निर्णय का दिन इहलोक में इहलोकिन जातियों के लिए होगा और परलोक में समस्त मानव जाति के लिए होगा।

इसके पश्चात यह स्पष्ट कर दिया गया कि ये बीज बिखेरने वालियाँ और भार उठाने वालियाँ धरती पर भार उठाकर चलने वाली कोई चीज़ नहीं बल्कि आकाश पर उड़ने वाली चीज़ें हैं। अतएव उस आकाश को साक्षी ठहराया गया जो हवाई मार्गों वाला आकाश है। अतः आज दृष्टि उठा कर देखें तो प्रत्येक स्थान पर जहाजों के मार्गों के चिह्न मिलते हैं। अतः इन सब विषय का परिणाम यह निकाला गया कि तुम परलोक का इनकार करके घोर पथभ्रष्टा में पड़ चुके हो। यदि ये बातें जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वर्णन कर रहे हैं किसी अटकल-पच्चू करने वाले की बातें होतीं तो अटकल-पच्चू करने वाले तो सारे तबाह हो गए। परन्तु यह रसूल सल्ल. सदा के लिए अमर है।

यह वाणी सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है। आकाश से बीज बिखेरने वालियों के वर्णन के पश्चात इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि तुम्हारी जीविका के सब साधन

आकाश से उतरते हैं। परन्तु एक आकाशीय जीविका वह भी होती है जिसके भेद को मनुष्य नहीं समझ सकता और फ़रिश्तों को भी वही जीविका दी जाती है। अतः हज़रत इब्राहीम अलै. के अतिथियों का वर्णन किया जो फ़रिश्ते थे और मनुष्य के रूप में उन के सम्मुख प्रकट हुए थे। जब उनके सामने हज़रत इब्राहीम अलै. ने वह उत्तम भोजन परोसा जो मनुष्य के जीवन का सहारा बनता है तो उन्होंने उसके खाने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनको प्राप्त होने वाला भोजन भिन्न प्रकार का था। हज़रत इब्राहीम अलै. के वर्णन के पश्चात और बहुत से पिछले नवियों का भी वर्णन किया गया।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जो आकाश के निरंतर विस्तार की ओर अग्रसर होने का वर्णन करती है जिस की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में कोई मनुष्य कल्पना तक नहीं कर सकता था। वर्तमान युग के खगोल शास्त्रियों ने यह वास्तविकता जान ली है कि आकाश सदा विस्तार की ओर अग्रसर रहता है। यहाँ तक कि एक निर्धारित समय तक पहुँचने के बाद फिर एक केन्द्र की ओर लौट आएगा।

भोजन के विषयवस्तु को इस रंग में भी प्रस्तुत किया कि समस्त मनुष्य और फ़रिश्ते किसी न किसी प्रकार के भोजन पर निर्भर हैं। केवल एक सत्ता है जिसको किसी प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं और वह अल्लाह की सत्ता है जो सब का अन्दाता है।



سُورَةُ الْقَرْيَةِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَحَدِي وَسُوْنَ اَيَّهُ وَتِلَاهُ تِسْعُ عَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क्रमम है (बीज) विखरने वालियों
की । 2।

फिर भार उठाने वालियों की । 3।

फिर द्रुत गति से चलने वालियों की । 4।

फिर कोई महत्वपूर्ण विषय को बाँटने
वालियों की । 5।

(वह) जिसका तुम को बचन दिया
जाता है, निःसन्देह वही सत्य
है । 6।

और प्रतिफल दिवस अवश्य हो कर रहने
वाला है । 7।

क्रमम है रास्तों वाले आकाश की । 8।

निःसन्देह तुम एक मतभेद वाली बात में
पड़े हुए हो । 9।

उस से वही फिरा दिया जाएगा जिसका
फिरा दिया जाना (निश्चित हो चुका)
होगा । 10।

अटकल पच्चू मारने वाले विनष्ट हो
गए । 11।

जो अपनी लापरवाही में भटक रहे
हैं । 12।

वे पूछते हैं कि प्रतिफल दिवस कब
होगा ? । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالدُّرِيَتِ ذَرْوَا ۝

فَالْحَمْلَتِ وَقْرَا ۝

فَالْجَرِيَتِ يَسِرَا ۝

فَالْمَقِسَّمَتِ أَمْرَا ۝

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقًا ۝

وَإِنَّ الَّذِينَ لَوَاقُعُ ۝

وَالسَّمَاءُ دَأْتِ الْجَبَكِ ۝

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفِ ۝

لَيُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أَفْكَ ۝

فَتَلَ الْخَرَصُونَ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرَةِ سَاهُونَ ۝

يَسْكُونُ أَيَّانَ يَوْمَ الدِّينِ ۝

जिस दिन वे आग पर भूने जा रहे होंगे । 14।

(उनसे कहा जाएगा) अपनी शरारत का स्वाद चखो । यही है वह जिसे तुम शीघ्रतापूर्वक मांगा करते थे । 15।

निःसन्देह मुत्तकी बागों और जलस्रोतों के बीच होंगे । 16।

वे (उसे) प्राप्त कर रहे होंगे जो उनका रब्ब उन्हें प्रदान करेगा । निःसन्देह इससे पूर्व वे बहुत अच्छे कर्म करने वाले थे । 17। वे रात को थोड़ा ही सोया करते थे । 18।

और प्रातः काल में भी वे क्षमायाचना में लगे रहते थे । 19।

और उनके धन में माँगने वालों और न माँगने वाले ज़रूरतमंदों के लिए एक हक था । 20।

और धरती में विश्वास करने वालों के लिए कई चिह्न हैं । 21।

और स्वयं तुम्हारी जानों के अन्दर भी । अतः क्या तुम देखते नहीं ? । 22।

और आकाश में तुम्हारी जीविका है और वह भी है जिसका तुम को बचन दिया जाता है । 23।

अतः आकाश और धरती के रब्ब की क़सम ! यह निःसन्देह उसी प्रकार सत्य है जैसे तुम (परस्पर) बातें करते हो । 24। (रुक् १/८)

क्या तुझ तक इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों का समाचार पहुँचा है ? । 25।

يَوْمَ هُمْ عَلَى الْأَرْضِ يُفْتَنُونَ ⑯

ذُو قَوْافِشَتَكُمْ هَذَا الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تَسْعَجِلُونَ ⑯

إِنَّ الْمُتَقِينَ فِي جَنَّتٍ وَعَيْوَنٍ ⑯

أَخْذِينَ مَا أَنْتُمْ بِهِمْ لِاَنَّهُمْ كَانُوا
قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ ⑯

كَانُوا قَلِيلًا مِنَ الَّذِينَ مَا يَهْمِجُونَ ⑯

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَعْفِرُونَ ⑯

وَفِي آمَوَالِهِمْ حَقٌ لِلْسَّابِلِ وَالْمَحْرُومِ ⑯

وَفِي الْأَرْضِ أَيُّتُ لِلْمُؤْقِنِينَ ⑯

وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا يَسْبِرُونَ ⑯

وَفِي السَّمَاءِ رُزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ⑯

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌ مِثْلُ
مَا أَنَّكُمْ تَسْطِقُونَ ⑯

هَلْ أَنْتَ حَدِيثُ صَيْفِ إِبْرَاهِيمَ
الْمُكَرَّمِينَ ⑯

जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, सलाम ! उसने भी कहा सलाम ! (और मन में कहा) अजनबी लोग (प्रतीत होते हैं) । 26।

वह शीघ्रता पूर्वक अपने घर वालों की ओर गया और एक मोटा ताज़ा (भुना हुआ) बछड़ा ले आया । 27।

फिर उसे उनके सामने पेश किया (और) पूछा, क्या तुम खाओगे नहीं ? । 28।

तब उसने उनकी ओर से भय का आभास किया, उन्होंने कहा डर नहीं । और उन्होंने उसे एक ज्ञानवान पुत्र का शुभ-समाचार दिया । 29।

इस पर उसकी पत्नी आवाज़ ऊँची करती हुई आगे बढ़ी आर अपने चेहरे पर हाथ मारा और कहा, (मैं) एक बांझ बुढ़िया हूँ । 30।

उन्होंने कहा, इसी प्रकार (होगा जो) तेरे रब्ब ने कहा है । निःसन्देह वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 31।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۝ قَالَ
سَلَمٌ ۝ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ۝

فَرَأَعَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۝

فَقَرِبَةَ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝

فَأُوْجَسَ مِنْهُمْ حِيفَةً ۝ قَالُوا لَا تَخْفَ ۝
وَبَشِّرُوهُ بِغُلْمَانِ عَلِيِّ ۝

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ
وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ۝

قَالُوا كَذِيلٌ ۝ قَالَ رَبِّكِ ۝ إِنَّهُ هُوَ
الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

उस (अर्थात् इब्राहीम) ने कहा, हे दूतो ! तुम्हारा क्या उद्देश्य है ? 132।

उन्होंने कहा, हमें निःसन्देह एक अपराधी जाति की ओर भेजा गया है। 133।

ताकि हम मिट्टी के बने हुए कंकर उनकी ओर चलाएँ। 134।

जो चिह्नित किये गये हैं तेरे रब्ब के समक्ष, अपव्यय करने वालों के लिए। 135।

फिर हमने जो उसमें मोमिन थे उन सबको निकाल लिया। 136।

अतः हमने उसमें आज्ञाकारियों का केवल एक घर पाया। 137।

और (शिक्षा स्वरूप) उन लोगों के लिए उसमें एक बड़ा चिह्न छोड़ दिया जो पीड़ाजनक अज्ञाब से डरते हैं। 138।

और मूसा (की घटना) में भी (ऐसा ही चिह्न था) जब हमने उसे एक स्पष्ट प्रमाण के साथ फिराऊन की ओर भेजा। 139।

अतः वह अपने सरदारों समेत विमुख हुआ और कहा, (यह व्यक्ति) केवल एक जादूगर अथवा पागल है। 140।

तब हमने उसे और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह धिक्कार के योग्य था। 141।

और आद (जाति) में भी (एक चिह्न था)। जब हमने उन पर एक विनाशकारी हवा चलाई। 142।

قَالَ فَمَا خَطِبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ③

قَالُوا لَنَا أَرْسَلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ④

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً فَمِنْ طِينٍ ⑤

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رِبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ⑥

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ⑦

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ⑧

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ
الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ⑨

وَفِي مُوسَى إِذَا أَرْسَلْنَاهُ إِلَى فِرْعَوْنَ
إِلَيْهِ سُلْطَنٌ مُّبِينٌ ⑩

فَتَوَلَّى بِرْكِنْهُ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْوُونٌ ⑪

فَأَخْمَذَهُ وَجُوَودَهُ فَبَذَنَهُمْ فِي الْيَمِّ
وَهُوَ مُلِيمٌ ⑫

وَفِي عَادٍ إِذَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ
الْعَقِيمَ ⑬

जिस वस्तु पर से वह गुजरती थी
उसका कुछ शेष नहीं छोड़ती थी और
उसे गली-सड़ी वस्तु की भाँति कर देती
थी । 43।

और समूद (जाति) में भी (एक चिह्न
था) । जब उन्हें कहा गया कि एक समय
तक लाभ उठा लो । 44।

अतः उन्होंने अपने रब के आदेश की
अवमानना की तो उन्हें आकाशीय बिजली
ने आ पकड़ा और वे देखते रह गए । 45।

तब उनमें खड़े होने का भी सामर्थ्य नहीं
रहा । और न ही वे प्रतिशोध लेने की
शक्ति रखते थे । 46।

और नूह की जाति भी इससे पूर्व (एक
सीख भरी चिह्न थी) निःसन्देह वे
अवज्ञाकारी लोग थे । 47। (रुक् २)

और हमने आकाश को एक विशेष
शक्ति से बनाया और निःसन्देह हम
(इसे) विस्तार देने वाले हैं । 48।*

और धरती को हमने समतल बना दिया ।
अतः (हम) क्या ही अच्छा बिछौना
बनाने वाले हैं । 49।

और हर चीज़ में से हमने जोड़ा-जोड़ा
पैदा किया ताकि तुम उपदेश प्राप्त कर
सको । 50।

* इस आयत में अरबी शब्द बिएदिन (विशेष शक्ति) इस ओर संकेत करता है कि अल्लाह तज़ाला ने
आकाश को बनाते हुए उसमें असंख्य लाभ रख दिए हैं । साथ ही यह वर्णन भी कर दिया कि इसे हम
खूब विस्तृत करते चले जाएँगे । इस आयत का यह भाग कि “हम उसे और विस्तार देते चले
जाएँगे” एक महान चमत्कारिक वाक्य है जिसे अरब का एक निरक्षर नवी अपनी ओर से कहा पि
वर्णन नहीं कर सकता था । यह विषय वैज्ञानिकों ने आधुनिक उपकरणों की सहायता से अब ज्ञात
किया है कि यह ब्रह्मांड हर पल विस्तार की ओर अग्रसर है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम के युग में तो प्रत्येक मनुष्य को यह ब्रह्मांड एक जड़ और स्थिर वस्तु प्रतीत होता था ।

مَا تَدْرِي مِنْ شَيْءٍ أَتَّثْعِلِيهِ إِلَّا جَعَلْتُهُ
كَالْرَّمِيمِ ⑩

وَفِتْ نَمُودَإِذْ قَيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّى
جِئُنَّ ⑪

فَعَتُوا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمْ
الصِّعَقَةُ وَهُمْ يُنْظَرُونَ ⑫

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا
مُنْصِرِينَ ⑬

وَقَوْمٌ نُوحٌ مِنْ قَبْلٍ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا
فِسِيقِينَ ⑭

وَالسَّمَاءَ بَيْنَهَا بِأَيْدِيقَ إِنَّا لَمُؤْسِعُونَ ⑮

وَالْأَرْضَ فَرَشَنَاهَا فَنِعْمَ الْمَهْدُونَ ⑯

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَفَّازَ وَجِئُنَ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ⑰

अतः शीघ्रता पूर्वक अल्लाह की ओर दौड़ो । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सर्वक करने वाला हूँ । 151।

और अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बनाओ । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सर्वक करने वाला हूँ । 152।

इसी प्रकार इनसे पहले लोगों की ओर भी जब भी कोई रसूल आया तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगार अथवा पागल है । 153।

क्या इसी (बात) का वे एक दूसरे को उपदेश देते हैं ? बल्कि ये उद्दण्डी लोग हैं । 154।

अतः इनसे मुँह फेर ले । तू कदापि किसी धिक्कार का पात्र नहीं । 155।

और तू उपदेश करता चला जा । अतः निःसन्देह उपदेश मोमिनों को लाभ पहुँचाता है । 156।

और मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी उपासना करें । 157।*

मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे भोजन करायें । 158।

فَفَرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْ نَذِيرٍ
مُّبِينٌ ④

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ أَخْرَى إِنِّي لَكُمْ
مِنْ نَذِيرٍ مُّبِينٌ ④

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْحُونٌ ⑤

أَتَوَاصُوْبِهِ بِلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغِيُونَ ⑤

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمُلَوِّهِ ⑥

وَذَكِّرْفَانَ الدِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ⑥

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا
لِيَعْبُدُونِ ⑦

مَا أَرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ زِرْقٍ وَمَا أَرِيدُ
أَنْ يَظْهُمُونِ ⑧

* इस आयत में जिन्नों व मनुष्यों से अभिप्राय बड़े और छोटे लोग तथा बड़ी और छोटी जातियाँ हैं। दोनों की उत्पत्ति का उद्देश्य अल्लाह तभाला की उपासना करना है। यदि जिन से अभिप्राय सर्वसाधारण में समझे जाने वाले जिन हों तो फिर उनको भी तो उपासना का प्रतिफल मिलना चाहिए। अर्थात् उनको स्वर्ग में जाने का शुभ-समाचार मिलना चाहिए। परन्तु जिनों के स्वर्ग में जाने का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता।

निःसन्देह अल्लाह ही है जो बहुत जीविका प्रदान करने वाला, बड़ा शक्तिशाली और उत्तम गुणों वाला है । १५९।

अतः उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचार किया निश्चित रूप से अत्याचार के प्रतिफल का वैसा ही भाग है जैसा कि उनके समकर्म व्यक्तियों का था । अतः चाहिए कि वे मुझ से (उसकी) मांग करने में शीघ्रता न करें । १६०।

अतः जिन्होंने इनकार किया, उनका उस दिन सर्वनाश होगा जिसका उन्हें वचन दिया जाता है । १६१। (रुक् ३)

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمُتِينُ ⑦

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنْبُهَا مِثْلُ ذَنْبِهِ
أَصْحِحُهُ فَلَا يَسْعَجِلُونَ ⑧

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي
يُوعَدُونَ ⑨

52- सूरः अत-तूर

यह सूरः आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 50 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी ईश्वरीय साक्ष्यों से किया गया है। सबसे पहले तो तूर पर्वत का साक्ष्य है, जिस के ऊपर हज़रत मूसा अलै. को उनसे श्रेष्ठतर रसूल अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खबर दी गई थी। फिर एक ऐसी लिखी हुई पुस्तक की क़सम खाई गई है जो चमड़े के खुले पन्नों पर लिखी हुई है। क्योंकि प्राचीन काल में चमड़े पर लिखने का प्रचलन था इसलिए वह पुस्तक चमड़े के पन्नों पर लिखी हुई बताई गई है। इस पुस्तक में ही बैतुल्लाह (खाना का'बा) के बारे में भविष्यवाणी उल्लेखित है जो मुत्की व्यक्तियों और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होगा। एक बार फिर ऊँची छत वाले आकाश को तथा ठाठे मारते हुए समुद्र को भी साक्षी ठहराया गया है, जिन दोनों के बीच पानी को सेवा पर लगा दिया गया है जो जीवन का सहारा बनता है।

इन सब ईश्वरीय साक्ष्यों का उल्लेख करने के पश्चात अल्लाह तआला यह चेतावनी देता है कि जिस दिन आकाश में भारी कंपन होगी और पर्वतों समान बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ उखाइ फेंकी जाएँगी और समग्र जगत में बिखर जाएँगी, उस दिन झुठलाने वालों का इस संसार ही में बहुत बड़ा विनाश होगा।

इसके पश्चात अपराधियों को नरक की चेतावनी दी गई है और मुत्क्रियों को स्वर्गों का शुभ-समाचार प्रदान किया गया है। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निरंतर उपदेश करते चले जाने का आदेश देते हुए अल्लाह तआला इस बात की गवाही देता है कि हे रसूल ! न तेरी बातें ज्योतिषियों की बातों की भाँति ढकोसले हैं और न तू पागल है क्योंकि तेरी अपनी वाणी और तुझ पर उत्तरने वाली वाणी इन दोनों बातों को पूर्णतया नकारती हैं। इस कारण अपने रब्ब का आदेश पहुँचाने हेतु उसी के लिए धैर्य धर। तू हमारी दृष्टि के सामने है अर्थात् हर समय हमारी सुरक्षा में है। और अल्लाह तआला की प्रशंसा उसके गुणगान के साथ करता रह। चाहे तू दिन के समय उपासना के लिए खड़ा हो अथवा रात्रि के समय उपासना के लिए खड़ा हो और जब सितारे डूब चुके हों तब भी अपने रब्ब की उपासना में लीन रह।



سُورَةُ الطُّورِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُونَ آيَةً وَرُكْوْعٌ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तूर की क़सम । 12।

وَالظُّورِ ②

और एक लिखी हुई पुस्तक की । 13।

وَكَتْبٍ مَسْطُورٍ ③

(जो) चमड़े के खुले पन्नों में (है) । 14।

فِي رَقٍ مَنْشُورٍ ④

और आवाद घर की (क़सम) । 15।

وَالْبَيْتِ الْمُهُمْوَرِ ⑤

और ऊँची की हुई छत की । 16।

وَالسَّقِيفُ الْمَرْفُوعُ ⑥

और ठाठे मारते हुए समुद्र की । 17।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ⑦

निःसन्देह तेरे रब्ब का अज्ञाब आ कर
रहने वाला है । 18।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ⑧

कोई उसे टालने वाला नहीं । 19।

مَالَهُ مِنْ دَافِعٍ ⑨

जिस दिन आकाश भीषण रूप से कांपने
लगेगा । 10।

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ⑩

और पर्वत बहुत अधिक चलने
लगेंगे । 11।

وَكَسِيرُ الْجِبَالُ سَيِّرًا ⑪

अतः सर्वनाश हो उस दिन झुठलाने
वालों का । 12।

فَوَيْلٌ يَوْمٌ مِنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑫

जो निरथक बातों में पड़कर क्रीड़ामग्न हैं
रहते हैं । 13।

الَّذِينَ هُمْ فِي حَوْضٍ يَلْعَبُونَ ⑯

जिस दिन वे बलपूर्वक नरकाग्नि की
ओर धकेल दिए जाएंगे । 14।

يَوْمٌ يَدْعَوْنَ إِلَى نَارٍ جَهَنَّمَ دَعَاءً ⑯

(उनसे कहा जाएगा) यही वह अग्नि है जिसे तुम झुठलाया करते थे ॥15।

अतः क्या यह जादू है अथवा तुम सूज-बूज से काम नहीं लेते थे ? ॥16।

इसमें प्रविष्ट हो जाओ । फिर धैर्य करो अथवा न करो तुम्हारे लिए एक समान है। तुम को केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम कर्म किया करते थे ॥17।

निःसन्दह मुत्तकी स्वर्गो और नेमतों में होंगे ॥18।

उस पर प्रसन्न होते हुए जो उनके रब्ब ने उन्हें प्रदान किया । और उनका रब्ब उनको नरक के अज्ञाब से बचाएगा ॥19।

स्वाद ले ले कर खाओ और पीओ, उन कर्मों के फल स्वरूप जो तुम किया करते थे ॥20।

वे पंक्तिबद्ध बिछाए हुए पलंगों पर टेक लगाए बैठे होंगे । और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याओं के साथी बना देंगे ॥21।

और वे लोग जो ईमान लाए और उनकी संतान ने भी ईमान के फलस्वरूप उनका अनुसरण किया, उनके साथ हम उनकी संतान को भी मिला देंगे । जबकि उनके कर्मों में से उन्हें कुछ भी कम न देंगे । प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाए हुए का बंधक है ॥22।

और हम उनकी सहायता करेंगे । और हम उन्हें उसमें से एक प्रकार का फल

هُنْدِ الْتَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تَكَبَّرُونَ ⑩

أَفَسِخْرُ هَذَا آمَّ أَنْتُمْ لَا تَبْصِرُونَ ١١

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا ١٢
سَوَآءٌ جَهَنَّمُ ۚ إِعْلَامٌ جَنَّرُونَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ١٣

إِنَّ الْمُقْتَيِنَ فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ١٤

فَكِيمُنَ بِمَا أَنْهَمُ رَبُّهُمْ وَوَقَمُنَ
رَبُّهُمْ عَذَابُ الْجَحِيمِ ١٥

كُلُّوا وَاشْرُبُوا هَذِئَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ١٦

مَشِكِينَ عَلَى سُرِّ مَصْفُوفَةٍ
وَزَوْجُهُمْ بِحُورِ عَيْنٍ ١٧

وَالَّذِينَ أَمْتَوا وَاتَّبَعُتُهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
بِإِيمَانِ الْحَقَّنَابِيهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ وَمَا
أَتَتُهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ قُنْ شَعْ
كُلُّ امْرِئٌ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ١٨

وَأَمْدَدُهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِمَّا

और एक प्रकार का माँस प्रदान करेंगे
जिसकी वे इच्छा करेंगे । 23।

वे उस (स्वर्ग) में एक दूसरे से (नाज
उठाते हुए) प्याले छीनेंगे । उस में न
कोई अशिष्टता होगी और न ही पाप की
बात होगी । 24।

और उनके नवयुवक जो मानो ढाँप कर
रखे हुए मोतियों की भाँति (दमक रहे)
होंगे, उनके गिर्द धूमेंगे । 25।*

और उनमें से कुछ, कुछ दूसरों की ओर
परस्पर एक-दूसरे का हाल-चाल पूछते
हुए ध्यान केन्द्रित करेंगे । 26।

वे कहेंगे, निःसन्देह हम तो इससे पूर्व
अपने घर वालों में बहुत डरे-डरे रहते
थे । 27।

फिर अल्लाह ने हम पर कृपा की और
हमें झुल्सा दने वाली लपटों के अजाब से
बचाया । 28।

निःसन्देह हम पहले भी उसी को पुकारा
करते थे । निश्चित रूप से वही बहुत
सद्-व्यवहार करने वाला (और) बार-
बार दया करने वाला है । 29। (रुकू. $\frac{1}{3}$)

अतएव तू उपदेश करता चला जा । अतः
अपने रब्ब की नेमत के फलस्वरूप तू न
तो ज्योतिषी है और न पागल है । 30।

क्या वे कहते हैं कि यह एक कवि है
जिसके बारे में हम समय के उलटफेर की
प्रतीक्षा कर रहे हैं ? । 31।

يَسْتَهُونَ ⑩

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَلْسًا لَّغُو فِيهَا
وَلَا تَأْتِيهِمْ ⑪

وَيَطْوُفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَانُوكُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ⑫

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ⑬

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلَ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ⑭

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَنَا عَذَابَ السَّمُومِ ⑮

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِ نَدْعُوهُ طَرَّأَهُ هُوَ
الْبَرَّ الرَّحِيمُ ⑯

فَذَكِّرْ فَمَا آتَيْنَاكَ بِنَعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَلَا يَعْنُونَ ⑰

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّزَّصَ بِهِ رَبِّ
الْمَتَّوْنِ ⑱

* इस आयत में भी स्वर्ग की नेमतों का उपमा के रूप में वर्णन है । उन स्वर्गनिवासियों की सेवा के लिए^एसे किशोर नियुक्त होंगे जो “मानो ढके हुए मोती” हैं । इन शब्दों ने प्रमाणित कर दिया कि यह सारा वाक्य एक उपमा के रूप में है ।

तू कह दे कि प्रतीक्षा करते रहो ।
निश्चित रूप से मैं भी तुम्हारे साथ
प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ । 132।

क्या उनके विश्वास विचार उन्हें इस का
आदेश देते हैं अथवा वे हैं ही उद्धण्डी
लोग ? । 133।

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे मिथ्या
रूप से गढ़ लिया है ? वास्तविकता यह
है कि वे (किसी प्रकार) ईमान लाने
वाले नहीं हैं । 134।

अतः यदि वे सच्चे हैं तो चाहिए कि इस
जैसी कोई वाणी लाकर दिखाएँ । 135।

क्या वे बिना किसी चीज़ के (अपने
आप) पैदा कर दिए गए अथवा वे ही
सष्टा हैं । 136।

क्या उन्होंने ही आकाशों और धरती
की सृष्टि की है ? वास्तविकता यह है
कि वे (किसी प्रकार) विश्वास नहीं
करेंगे । 137।

क्या उनके पास तेरे रब्ब के खजाने हैं
अथवा वे (उन पर) दारोगे हैं ? । 138।

क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस में
(चढ़ कर) वे बातें सुनते हैं ? अतः
चाहिए कि उनमें से सुनने वाला कोई
प्रबल (और) स्पष्ट प्रमाण तो पेश
करे । 139।

क्या उस (अर्थात् अल्लाह) के लिए
तो पुत्रियाँ और तुम्हारे लिए पुत्र
हैं ? । 140।

قُلْ تَرَبَّصُوا فِي أَنْتُ مَعَكُمْ مِنْ
الْمُتَرَبِّصِينَ ⑩

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامَهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ
قَوْمٌ طَاغُونَ ⑪

أَمْ يَقُولُونَ تَقُولَةً بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑫

فَلِيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مُثْلِهِ إِنْ كَانُوا
صَدِيقِينَ ⑬

أَمْ خَلَقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمْ
الْخَلَقُونَ ⑭

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۝ بَلْ
لَا يُؤْقِنُونَ ⑮

أَمْ عَنْدَهُمْ حَزَّارٌ رَبِّكَ أَمْ هُمْ
الْمُصَيْطِرُونَ ⑯

أَمْ لَهُمْ سَلْمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ فَلِيَأْتِ
مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ⑰

أَمْ لَهُ الْبَنْتُ وَلَكُمُ الْبَنْوَنَ ⑱

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है जिसके परिणाम स्वरूप वे चट्ठी के बोझ तले दबा दिए गए हैं ? 141।

अथवा क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, जिसे वे लिखते हैं ? 142।

क्या वे कोई चाल चलना चाहते हैं ? अतः जिन लोगों ने इनकार किया उन्हीं के विरुद्ध चाल चली जाएगी । 143।

क्या उनके लिए अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है ? पवित्र है अल्लाह उससे जो वे शिक्ष करते हैं । 144।

और यदि वे आकाश से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखेंगे तो कहेंगे कि (यह) एक परत दर परत बादल है । 145।

अतः तू उन्हें छोड़ दे । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लेंगे जिसमें उन पर बिजली गिराई जाएगी । 146।

जिस दिन उनका कोई उपाय उनके कुछ काम नहीं आएगा और न उन्हें सहायता दी जाएगी । 147।

और निःसन्देह वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, उनके लिए उसके अतिरिक्त (और) भी अज्ञाब होगा । परन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं । 148।

और अपने रब्ब के आदेश के लिए धैर्य धर । निश्चित रूप से तू हमारी आँखों के सामने (रहता) है । और जब तू उठता है अपने रब्ब की

أَمْ شَعَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ قُنْ مَغْرِمٌ
مُّشْقَلُونَ ⑩

أَمْ عِنْدَهُمْ الْعَيْبُ فَهُمْ يَكْثُرُونَ ⑪

أَمْ يَرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا
هُمُ الْمَكْيَدُونَ ⑫

أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۖ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ⑬

وَإِنْ يَرَوْا كَسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا
يَقُولُوا سَاحَابُ مَرْكُومٍ ⑭

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلْقَوْا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ⑮

يَوْمَ لَا يُعْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا
وَلَا هُمْ يَصْرُونَ ⑯

وَإِنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُوَنَ ذَلِكَ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑰

وَاصْبِرْ لِمُحْكَمَرِ تِلْكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِكَ

प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान
कर । 49।

और रात को भी तथा सितारों के
अस्त होने के बाद भी उसकी
महिमगान कर । 50। (रुकू. $\frac{2}{4}$)

وَسَيِّعٌ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٦﴾

وَمِنَ الْأَيْلِ فَسِيْحُهُ وَإِذْبَارُ النَّجُومِ ﴿٧﴾

53- सूरः अन-नज्म

यह सूरः हब्शा (पूर्वी अफ्रीकी देश) की ओर मुसलमानों की हिजरत के तुरंत पश्चात नुबुव्वत (प्राप्ति) के पांचवें वर्ष अवतरित हुई थी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 63 आयतें हैं।

इस सूरः का नाम अन-नज्म (सितारा) है। पिछली सूरः के अन्त पर भी सितारों के अस्त होने का वर्णन है। इसके पश्चात सूरः के विषयवस्तु को मुश्कियों की ओर फेरा गया है और जिस सितारा की मुश्किय उपासना किया करते थे उसके गिर जाने की भविष्यवाणी की गई और वर्णन किया कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से नहीं गढ़ी, क्योंकि आप सल्ल. कभी भी अपने मनोवेग से कोई बात नहीं करते।

इससे पूर्व सूरः अज़-ज़ारियात के अन्त पर जिस अल्लाह को बड़ा शक्तिशाली और बहुत जीविका प्रदान कारी कहा गया, उसी अल्लाह के लिए इस सूरः में शदीदुल कुवा और ज़्यू मिर्तिन कहा गया। अर्थात जो उत्तम गुणों वाला और अनुपम विवेकशील है।

इसके पश्चात मेराज की घटना का वर्णन आरम्भ हो जाता है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब्ब के निकट हुए और अल्लाह तआला आप सल्ल. पर कृपा के साथ झुक गया और वह दो धनुषों की एक प्रत्यंचा की भाँति हो गया। ये बहुत असाधारण आयतें हैं जिनकी विभिन्न रंगों में व्याख्या का प्रयत्न किया गया है। निःसन्देह इस घटना में किसी प्रत्यक्ष आकाश का उल्लेख नहीं है बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर बीतने वाली एक असाधारण घटना का वर्णन है। यह एक ऐसा क़शफ़ (दिव्य-दर्शन) है जिसका कोई उदाहरण किसी अन्य नबी के जीवन में नहीं मिलता। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल अल्लाह के प्रेम में ध्यातिज की ओर ऊँचा हुआ और अल्लाह अपने भक्त के प्रेम में उसके दिल पर उतर आया। आयतांश क़ा ब क़ौसेन (दो धनुष की प्रत्यंचा) से यह अभिप्राय है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह प्रत्यंचा बन गए जो अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुषों के मध्य एक ही था। अर्थात अल्लाह तआला के धनुष से चलने वाला वाण वही था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुष से चलता था। यह व्याख्या पवित्र कुरआन की आयत जब तूने (उनकी ओर कंकर) फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह ने फेंके। (सूरः अन्काल आयत : 18) के अनुरूप है। इस कारण इसे अपनी मतानुसार की गई व्याख्या कदापि

नहीं कही जा सकती ।

फिर मे'राज की यात्रा के सशरीर होने को पूर्णतया नकार दिया गया जब कहा मा कज़बल फुआदु मा रअ (आयत 12) अर्थात् शारीरिक आँखों ने अल्लाह को नहीं देखा बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल की आँखों ने जिस अल्लाह को देखा उस दिल ने उसके वर्णन में कोई झूठ नहीं बोला ।

इसके बाद एक बेरी का उल्लेख है जो अल्लाह और उसके भक्तों के मध्य सीमाओं को पृथक् करने वाली एक बाइ की भाँति है । वास्तव में पहले भी अरबों में यही प्रचलन था और आज भी यह प्रचलन मिलता है कि जब एक ज़मीनदार के भू-क्षेत्र की सीमा समाप्त होती है तो दूसरे ज़मीनदार के भू-क्षेत्र और उसके भू-क्षेत्र के बीच सरहद के रूप में काटेदार बेरियाँ लगा दी जाती हैं । अतः आकाश पर कदापि कोई बेरी का वृक्ष नहीं उगा हुआ था कि जिससे परे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं जा सकते थे । यह तो एक अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या है जो मध्यकाल के कुछ व्याख्याकारों ने की है । तात्पर्य केवल इतना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस उच्च दर्जा तक अल्लाह तआला की निकटता पा गए जिसके उपर किसी भक्त की पहुँच संभव नहीं थी । क्योंकि इसके बाद फिर अल्लाह तआला की तनज़िही सिफ़ात (वे गुण जो अल्लाह के सिवा किसी और को प्राप्त न हो सकें) का क्षेत्र आरम्भ हो जाता है ।

इसके पश्चात् काफिरों के काल्पनिक उपास्यों का वर्णन करते हुए कहा कि उनके अस्तित्व का कोई प्रमाण उनके पास नहीं है । वे केवल अटकल पञ्चू करते हैं । अतः यहीं तक उनका समस्त ज्ञान सीमित है ।

यहाँ अरबी शब्द शिअरा से अभिप्राय सितारा है, जिसे मुश्रिकों ने उपास्य बना रखा था ।

इसके बाद अतीत की मुश्रिक जातियाँ शिर्क के परिणामस्वरूप जिस बुरे अंत को पहुँचीं, शिक्षा स्वरूप उनका संक्षिप्त विवरण उल्लेख किया गया है ।



سُورَةُ النَّجْمِ مَكَيْةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَ سِتُّونَ آيَةً وَ ثَلَاثَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

क्रसम है सितारे की, जब वह गिर
जाएगा । । ।

तुम्हारा साथी न तो पथभ्रष्ट हुआ और
न ही असफल रहा । । ।

और वह मन की इच्छा से बात नहीं
करता । । ।

यह तो केवल एक वहइ है जो उतारी जा
रही है । । ।

उसे दृढ़ शक्तियों के स्वामी ने सिखाया
है । । ।

(जो) परम विवेकशील है । फिर वह
अधिष्ठित हुआ । । ।

जबकि वह उच्चतम क्षितिज पर
(स्थित) था । । ।

फिर वह निकट हुआ । फिर वह नीचे
उतर आया । । ।

अतः वह दो धनुषों की प्रत्यंचा की भाँति
अथवा उससे भी निकटतम हो गया । । ।

अतः उसने अपने भक्त की ओर वह
वहइ किया जो वहइ करना (चाहता)
था । । ।

और (उसके) दिल ने झूठा वर्णन नहीं
किया जो उसने देखा । । ।

अतः क्या तुम उससे इस (बात) पर
झगड़ते हो जो उसने देखा ? । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالنَّجْمُ إِذَا هُوَى ②

مَا نَصَلَ صَاحِبَكُمْ وَمَا غَوَى ③

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْمَوْى ④

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَى ⑤

عَلِمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى ⑥

ذُو مَرَّةٍ فَاسْتَوَى ⑦

وَهُوَ بِالْأَفْقِ الْأَعْلَى ⑧

لَهُ دَنَانِيَّةٌ ⑨

فَكَانَ قَابَ قَوْسِينِ أَوْ أَذْلَى ⑩

فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى ⑪

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ⑫

أَفَتَمْرُونَهُ عَلَى مَا يَرِى ⑬

जबकि वह उसे एक और अवस्था में भी
देख चुका है । 14।

अन्तिम सीमा पर स्थित बेरी के
पास । 15।

उसके निकट ही शरण देने वाला स्वर्ग
है । 16।

जब बेरी को उसने ढाँप लिया जो (ऐसे
समय में) ढाँप लिया (करती है) । 17।

न दृष्टि भ्रान्त हुई और न सीमा से
(आगे) बढ़ी । 18।

निःसन्देह उसने अपने रब्ब के चिह्नों में
से सबसे बड़ा चिह्न देखा । 19।

अतः क्या तुमने लात और उज्जा को
देखा है ? । 20।

और तीसरी मनात को भी जो (उनके)
अतिरिक्त है ? । 21।*

क्या तुम्हारे लिए तो पुत्र हैं और उसके
लिए पुत्रियाँ हैं ? । 22।

तब तो यह एक बहुत खोटा विभाजन
हुआ । 23।

यह तो केवल नाम हैं जो तुमने और
तुम्हारे पूर्वजों ने उनको दे रखे हैं ।
अल्लाह ने उनके समर्थन में कोई प्रबल
तर्क नहीं उतारा । वे केवल भ्रम का
अनुसरण कर रहे हैं और उसका (भी)
जो मन चाहते हैं । जबकि उनके रब्ब
की ओर से निश्चित रूप से उनके पास
हिदायत आ चुकी है । 24।

क्या मनुष्य जो इच्छा करता है वह उसे
मिल जाया करती है ? । 25।

وَلَقَدْ رَأَهُ نَزَلَةً أُخْرَى ①

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمَسْتَهْفِي ②

عِنْدَ هَاجَةَ الْمَأْوَى ③

إِذْ يَغْشِي السِّدْرَةَ مَا يَعْشَى ④

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ⑤

لَقَدْ رَأَى مِنْ إِلَيْتِ رَبِّهِ الْكَبِيرِ ⑥

أَفَرَءَيْتُمُ اللَّهَ وَالْعَزِيزَ ⑦

وَمَنْوَةَ الشَّالِيَّةَ الْأُخْرَى ⑧

الْكَمَ الدَّكْرُ وَلَهُ الْأَثْنَى ⑨

تِلْكَ إِذَا قُسْمَةً ضَيْرِي ⑩

إِنْ هُوَ إِلَّا أَسْمَاءٌ حُسْنَمَيْتُمُوهَا آنِتُمْ
وَابْنَوْكُمْ مَا آنِزَ اللَّهُ بِهَا مِنْ
سُلْطَنٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ
رَّبِّهِمُ الْهَدِي ⑪

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّى ⑫

* आयत 20, 21 : लात, उज्जा, मनात - वे मूर्तियाँ जिनकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

अतः अन्त और आदि दोनों ही अल्लाह के वश में हैं 126। (रुक् ١٢)

और आकाशों में कितने ही फरिश्ते हैं कि उनकी सिफारिश कुछ काम नहीं आती। परन्तु सिवाए उसके कि जिसे अल्लाह अपनी इच्छा से अनुमति दे और उस पर प्रसन्न हो जाए 127।

निःसन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते (उन ही में से हैं जो) फरिश्तों को हठपूर्वक स्त्रियों वाले नाम देते हैं 128।

हालाँकि उन्हें उसका कुछ भी ज्ञान नहीं। वे भ्रम के अतिरिक्त किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते। और निःसन्देह भ्रम सत्य के मुकाबले पर कुछ भी काम नहीं आता 129।

अतः तू उससे मुँह फेर ले जो हमारे स्मरण से विमुख होता है और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता 130।

यही उनके ज्ञान की कुल पूँजी है। निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया। और वह सबसे अधिक उसे जानता है जो हिदायत पा गया 131।

और अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है। उसी का परिणाम होता है कि वह उन लोगों को जिन्होंने बुराइयाँ कीं उनके कर्म का प्रतिफल देता है और उनको उत्तम

۶۷

فِلْلَهُ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى

وَكَمْ مِنْ مَلِكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا يُعْنِي
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بُعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضِي

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
لَيَسْمُونَ الْمَلِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأَنْثَى

وَمَا أَهْمَمُ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَبَعَّدُونَ إِلَّا
الظَّرَبُ وَإِنَّ الظَّرَبَ لَا يَعْنِي مِنَ الْحَقِّ
شَيْئًا

فَأَغْرِضُ عَنْ مَنْ تَوَلََّ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ
يَرِدْ إِلَّا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا

ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعْلَمُ بِمَا: صَلَّ عَنْ سَيِّلِهِ وَهُوَ
أَعْلَمُ بِمَا: اهْتَدَى

وَإِلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لَيَعْرِزَ الَّذِينَ أَسَاءُوا إِيمَانًا عَمَلُوا وَيَعْرِزَ

प्रतिफल देता है जो उत्तम कर्म करते थे । 32।

(ये अच्छे कर्मों वाले) वे लोग हैं जो सिवाए मामूली भूल-चूक के बड़े पापों और अश्लीलताओं से बचते हैं । निःसन्देह तेरा रब्ब अत्यन्त क्षमाशील है। वह तुम्हें सबसे अधिक जानता था जब उसने धरती से तुम्हें विकसित किया और जब तुम अपनी माओं के गर्भ में केवल भ्रूण की अवस्था में थे । अतः अपने आपको को (यूँ ही) पवित्र न ठहराया करो। वही है जो सबसे अधिक जानता है कि मुत्तकी कौन है । 33। (रुक् २/६)

क्या तूने ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दिया है जिसने पीठ फेर ली । 34।

और थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया । 35।

क्या उसके पास अदृश्य का ज्ञान है जिसके परिणाम स्वरूप वह वास्तविकता को देख रहा है ? । 36।

अथवा क्या उसे उसकी सूचना नहीं दी गई जो मूसा के ग्रन्थों में है ? । 37।

और इब्राहीम (के ग्रन्थों में भी) जिसने प्रतिज्ञा को पूरा किया । 38।

कि कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । 39।

और यह कि मनुष्य के लिए उसके अतिरिक्त कुछ नहीं जो उसने प्रयत्न किया हो । 40।

और यह कि उसका प्रयत्न अवश्य दृष्टि में रखा जाएगा । 41।

الَّذِينَ أَحْسَنُوا إِلَيْهِمْ حُسْنًا ⑤

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
وَاسْعَ الْمَغْفِرَةَ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذَا
أَنْشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذَا أَنْتُمْ آجِنَّةٌ
فِي بَطْوَنِ الْمَهْرَبِ ۖ فَلَا تُزَكَّوْا
أَنْقَسْكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۶

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّٰ ۷

وَأَغْطَى قَلِيلًا وَأَكْدَى ⑧

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ⑨

أَمْ لَمْ يَنْبَأْ يَمَا فِي صُحْفِ مُوسَىٰ ۱۰

وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَقَىٰ ۱۱

أَلَا تَرْزُقُ وَازِرَةً وَرُزْرَ آخرَىٰ ۱۲

وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۱۳

وَأَنَّ سَعْيَهُ سُوفَ يُرَىٰ ۱۴

फिर उसे उसका भरपूर प्रतिफल दिया
जाएगा । 42।

और यह कि अन्ततः तेरे रब्ब की ओर
ही पहुँचना है । 43।

और यह कि वही है जो हंसाता है और
रुलाता भी है । 44।

और यह कि वही है जो मारता है और
जीवित भी करता है । 45।

और यह कि वही है जिसने जोड़ा पैदा
किया, अर्थात् पुरुष और स्त्री । 46।

वीर्य से, जब वह डाला जाता है । 47।

और यह कि दोबारा उठाना उसी के
जिम्मे है । 48।

और यह कि वही है जो धनवान बनाता
है और ख़ज़ाने प्रदान करता है । 49।

और यह कि वही है जो शिअर
(सितरे) का रब्ब है । 50।

और यह कि वही है जिसने प्रथम आद
(जाति) को विनष्ट किया । 51।

और समूद (जाति) को भी । फिर
(उनका) कुछ न छोड़ा । 52।

और इससे पहले नूह की जाति को भी।
निःसन्देह वही लोग सबसे अधिक
अत्याचारी और सबसे अधिक उद्दण्डी
थे । 53।

और उलट-पुलट हो जाने वाली बस्तियों
को भी उसने दे मारा । 54।

फिर उन्हें उस चीज़ ने ढाँप लिया
जो (ऐसे समय) ढाँप लिया (करती
है) । 55।

لَهُ يَعْزِيزَةُ الْجَرَاءَةِ الْأَوْفِيٌّ ۝

وَأَنَّ إِلَى رِبِّكَ الْمُسْتَهْدِيٌّ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَصْحَكَ وَأَبْكَيٌّ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَاٌ ۝

وَأَنَّهُ خَلَقَ الرِّزْقَ وَجَنِينَ الدَّكَرَ وَالْأَنْثَىٌ ۝

مِنْ لُطْفَتِهِ إِذَا تَهْمَىٌ ۝

وَأَنَّ عَلَيْهِ الشَّاهَةَ الْأَخْرَىٌ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٌ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ السِّعْرَىٌ ۝

وَأَنَّهُ آهْلَكَ عَادًا الْأَوْفِيٌّ ۝

وَثَمُودًا فَمَا آتَيْتَ ۝

وَقَوْمًا نُوحَ مِنْ قَبْلٍ ۝ إِنَّمَّا كَانُوا

هُمْ أَظْلَمُ وَأَظْلَمُ ۝

وَأَنْمُوتَفَكَةً آهْوَىٌ ۝

فَعَشْهَاماً غَشِّىٌ ۝

अतः तू अपने रब्ब की किन-किन
नेमतों के बारे में वाद-विवाद
करेगा ? 156।

यह पहले की सतर्कवाणियों की भाँति
एक सतर्कवाणी है 157।*

निकट आने वाली निकट आ चुकी
है 158।

अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई
टालने वाली नहीं है 159।

अतः क्या तुम इस बात पर आश्चर्य
करते हो ? 160।

और हँसते हो और रोते नहीं ? 161।

और तुम तो असावधान लोग हो 162।

अतः अल्लाह के समक्ष सजदः में
गिर जाओ और (उसी की) उपासना
करो 163। (रुकू $\frac{3}{7}$)

فِيَّا يَأْلَمُ الْأَعْرَبِكَ تَسْمَارِي ⑦

هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذَرِ الْأَوَّلِ ⑧

أَزِفَتِ الْأَزْفَهُ ⑨

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ⑩

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثُ تَعْجَبُونَ ⑪

وَتَصْحَّحُونَ وَلَا تَبْكُونَ ⑫

وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ ⑬

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ⑭

* इस अर्थ के लिए देखें 'अल मुन्जिद' ।

54- सूरः अल-क़मर

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 56 आयतें हैं।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में मुश्ऱिकों के कृत्रिम उपास्य शिअरा (सितारा) के गिरने का वर्णन है, मानो यह भविष्यवाणी की गई है कि शिर्क अपने काल्पनिक उपास्य सहित अवश्य नष्ट कर दिया जाएगा।

अब सूरः अल-क़मर के आरम्भ ही में यह खबर दे दी गई कि वह घड़ी आ गई है और इस पर चन्द्रमा ने दो टुकड़े हो कर गवाही दे दी। चन्द्रमा से अभिप्राय अरब साम्राज्य-काल है। चन्द्रमा की यह व्याख्या भी स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है। अतः अब सदा के लिए मुश्ऱिकों का साम्राज्य-काल समाप्त हुआ और वह घड़ी आ गई जो क्रांति की घड़ी थी और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के साथ ही प्रकट होनी थी।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जिससे पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है कि उस समय के मुश्ऱिकों ने कुछ क्षणों के लिए चन्द्रमा को निःसन्देह दो भागों में बंटते हुए देखा था। इसके सम्बन्ध में व्याख्याकारों ने शुद्ध-अशुद्ध बहुत सी व्याख्याएँ की हैं। परन्तु उस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यदि मुश्ऱिकों ने चन्द्रमा के विभाजन का यह दृश्य न देखा होता तो वे तुरन्त इस घटना का इनकार कर देते। और मोमिन भी अपने ईमान से फिर जाते क्योंकि ईमान का पूरा आधार हज़रत मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई पर था। सिद्धुम पुस्तमिर (चिरप्रचलित जादू) कह कर मुश्ऱिकों ने गवाही दे दी कि घटना तो अवश्य हुई है परन्तु जादू है। और इस प्रकार के जादू हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सदैव दिखाते रहते हैं।

इसके पश्चात एक बार फिर अतीत की मुश्ऱिक जातियों का वर्णन है कि प्रत्येक ने अपने समय के रसूल को पागल ही घोषित किया था। वे एक के बाद एक अपने इनकार और अशिष्टता के परिणामस्वरूप विनष्ट कर दी गईं।

इस सूरः में एक आयत को बार-बार दोहराया गया है कि उपदेश प्राप्त करने के लिए हमने कुरआन करीम को सरल बनाया है। अर्थात् पिछली जातियों की दशा पर कोई किंचित् विचार भी करता तो उसको सरलता पूर्वक यह बात समझ आ सकती थी कि संसार में सबसे बड़ा विनाश शिर्क ने फैलाया हुआ है। परन्तु कोई है जो उपदेश ग्रहण करने वाला हो। न पहले लोगों में से अधिकतर ने उपदेश ग्रहण किया और न बाद में आने वालों में से अधिकतर उपदेश ग्रहण करते हैं।

سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَةِ سِتٌّ وَ خَمْسُونَ آيَةً وَ ثَلَاثَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

निश्चित घड़ी निकट आ गई और चन्द्रमा फट गया । । ।

और यदि वे कोई चिह्न देखें तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, चिरप्रचलित जादू है । । ।

और उन्होंने झुठला दिया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया (और जलदबाजी की) हालाँकि प्रत्येक काम (अपने समय पर) होकर रहता है । । ।

और उनके पास कुछ खबरें पहुँच चुकी थीं जिनमें कड़ी चेतावनी थी । । ।

श्रेष्ठतम तत्त्वपूर्ण (वातें) थीं फिर भी चेतावनियाँ किसी काम न आयीं । । ।

अतः उनसे विमुख रह । (वे दख लेंगे) वह दिन जब बुलाने वाला एक अत्यन्त अप्रिय वस्तु की ओर बुलाएगा । । ।

उनकी दृष्टियाँ अपमानवश झुकी हुई होंगी । वे क़ब्रों से निकलेंगे मानो वे (हर ओर) बिखरी हुई टिह्याँ हैं । । ।

वे बुलाने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे । काफिर कह रहे होंगे कि यह बड़ा कठिन दिन है । । ।

उनसे पूर्व नूह की जाति ने भी झुठलाया था । अतः उन्होंने हमारे भक्त को

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِقْرَأْ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَإِنْ يَرَوْا أَيَّةً يُعَرِّضُوا وَيَقُولُوا إِسْخَرُ
مُسْتَمِرٌ ②

وَكَذَّبُوا وَأَتَبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ
مُسْتَقِرٌ ③

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ
مُزْدَجَرٌ ④

حِكْمَةٌ بِالْغَيْثِ فَمَا لَعْنِ التَّذَرُّ ⑤

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَى
شَيْءٍ نُكَرٍ ⑥

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَحْرُجُونَ مِنْ
الْأَجْدَاثِ كَانُهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ⑦
مُهَطِّعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكُفَّارُونَ
هَذَا يَوْمٌ عَسِيرٌ ⑧

كَذَّبُتْ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نَوْجٌ فَكَذَّبُوا

झुठलाया और कहा कि एक पागल और धूतकारा हुआ है ॥10॥

तब उसने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि निश्चित रूप से मैं दबा हुआ हूँ। अतः मेरी सहायता कर ॥11॥

तब हमने लगातार बरसने वाले जल के रूप में आकाश के द्वार खोल दिए ॥12॥

और हमने धरती को जलस्रोतों के रूप में फाइ दिया। अतः पानी एक ऐसी बात पर इकट्ठा हो गया जो पहले से निश्चित किया जा चुका था ॥13॥

और उसे (अर्थात् नूह को) हमने तरङ्गों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया गया ॥14॥

वह हमारी आँखों के सामने चलती थी। उस के प्रतिफल स्वरूप, जिसका इनकार किया गया था ॥15॥

और निःसन्देह हमने उस (नौका) को एक बड़े चिह्न के रूप में छोड़ा। अतएव है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ॥16॥*

* आयत सं. 13 से 16 : इन आयतों में हज़रत नूह अलै. की नौका की चर्चा की जा रही है, जो लकड़ी के तरङ्गों और कीलों से बनी हुई थी। अर्थात् हज़रत नूह अलै. के युग में सभ्यता इतनी उन्नति कर चुकी थी कि उन्हें लोहे के प्रयोग करने पर पूरी तरह निपुणता प्राप्त हो चुकी थी। और वे सम्भवतः लकड़ी के तरङ्गे चीरने के लिए और भी बना सकते थे। इसी नौका के संबंध में कहा गया है कि यह एक चिह्न है जो उपदेश ग्रहण करने वालों के लिए ईमानवर्धक सिद्ध होगा। इससे यह सम्भावना भी उत्पन्न होती है कि हज़रत नूह अलै. की नौका को आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चिह्न के रूप में सुरक्षित कर दिया गया है। जबकि ईसाइयों को कुरआन करीम के इस वर्णन की कोई जानकारी नहीं। वे फिर भी हज़रत नूह अलै. की नौका को कहीं न कहीं एक चिह्न के रूप में सुरक्षित समझते हैं और इसकी खोज हर जगह जारी है। जमाअत अहमदिया की ओर से भी कुछ लोग इस काम पर लगे हैं कि कुरआनी आयतों के संदर्भ में इस नौका को खोज निकालें। मेरी खोज के अनुसार यह नौका अन्ध महासागर की तल में सुरक्षित हो गई है और समय आने पर निकाल ली जाएगी।

عَبْدَنَا وَقَالُوا عَجِّنُونَ وَأَرْدَجَرٌ ⑩

فَدَعَارَبَةَ آئِيْ مَغْلُوبَ فَاتَّصِرُ ⑪

فَفَتَّخَنَا آبَوَابَ السَّمَاءِ بِحَمَاءِ مُنْهَمِرٍ ⑫

وَفَجَرْنَا الْأَرْضَ عَيْوَنَا فَالْتَّقَى الْمَاءُ
عَلَى أَمْرِ قَدْقِيرٍ ⑬

وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ الْوَاحِدِ وَدُسِرٍ ⑭

تَجْرِيْ بِأَعْيِنِنَا جَرَاءَ لِمْنُ كَانَ كُفَرَ ⑮

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهُلْ مِنْ مُدَّكِّرٍ ⑯

अतः मेरा अज्ञाब और मेरी चेतावनी
कैसी थी ? | 171 |

और निःसन्देह हमने कुरआन को
उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया।
अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने
वाला ? | 181 |

आद (जाति) ने भी झुठलाया था ।
फिर कैसा था मेरा अज्ञाब और मेरी
चेतावनी ? | 191 |

निःसन्देह हमने एक आकर ठहर जाने
वाले अशुभ दिन में उन पर एक बहुत
तीव्र गति से चलने वाली हवा भेजी | 201 |
जो लोगों को पछाड़ रही थी मानो
वे जड़ों से उखड़े हुए खजूर के तने
हों | 211 |

अतः कैसा था मेरा अज्ञाब और मेरी
चेतावनी ? | 221 |

और निःसन्देह हमने कुरआन को
उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया।
अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने
वाला ? | 231 | (रुकू $\frac{1}{4}$)

समूद (जाति) ने भी सतर्क करने वालों
को झुठला दिया था | 241 |

अतः उन्होंने कहा कि क्या हम अपने ही
में से एक व्यक्ति का अनुसरण करें ?
तब तो हम निःसन्देह पथभ्रष्टा और
पागलपने में पड़ जाएँगे | 251 |

क्या हमारे बीच में से एक इसी व्यक्ति
पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया ?
नहीं ! बल्कि यह तो अत्यन्त झूठा
(और) शेर्खी बघारने वाला है ? | 261 |

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابُ وَنْدِرٍ ^④

وَلَقَدْ يَسَرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهُلْ مِنْ
مُّذَكَّرٍ ^④

كَذَبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابُ وَنْدِرٍ ^④

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرَصَرًا فِي
يَوْمٍ نَّحْنُ مُسْتَمِرٌ ^④
تَنْزِعُ النَّاسَ كَمَّهُمْ أَعْجَازٌ تَخْلِ
مُّقْعِرٍ ^④

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابُ وَنْدِرٍ ^④

وَلَقَدْ يَسَرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهُلْ مِنْ
مُّذَكَّرٍ ^④

كَذَبَتْ ثَمُودٌ بِالنَّذْرِ ^④

فَقَالُوا أَبْشِرْ إِمَّنَا وَاحِدًا تَبَيْعَةً إِنَّا إِذَا
لَفْتُ صَلَلٍ وَسَعَرٍ ^④

أَلْقَى الْذِكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنَ أَيْمَانِهِ
كَذَابٌ أَشَرٌ ^④

आने वाले कल को वे अवश्य जान लेंगे कि कौन है जो अत्यन्त झूठा और शेरी बघारने वाला है ? 127।

निःसन्देह उनकी परीक्षा स्वरूप हम एक ऊँटनी भेजने वाले हैं । अतः (हे सालेह !) तू उन पर दृष्टि रख और धैर्य धारण कर । 128।

और उन्हें बता दे कि पानी उनके बीच (समयानुसार) बांटा जा चुका है। पानी पीने की हर निर्धारित बारी के अंदर ही उपस्थित होना आवश्यक है । 129।

तब उन्होंने अपने साथी को बुलाया । उसने (उस ऊँटनी को) पकड़ लिया और (उसकी) कूँचें काट दी । 130।

फिर मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी कैसी थी ? 131।

निःसन्देह हमने उन पर एक ही ऊँची आवाज़ भेजी तो वे एक कटी हुई बाइ की भाँति हो गए जो पाँवों के नीचे रौंदी जा चुकी हो । 132।

और निःसन्देह हमने कुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया । अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? 133।

लूत की जाति ने भी सर्तक्कारियों को झुठला दिया था । 134।

निःसन्देह हमने उन पर पत्थरों की वर्षा बरसाई, सिवाए लूत के घर वालों के । उन्हें हमने प्रातः काल बचा लिया । 135।

سَيَعْلَمُونَ عَدَا أَنِ الْكَذَابُ الْأَشَرُ ④

إِنَّا مَرْسِلُوا النَّاسَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ
فَازَ تَقْبِهُمْ وَأَضْطَبْرُ ⑤

وَنَبِّئُهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ
شَرِبٍ مُّحَصَّرٌ ⑥

فَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ⑦

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابُ وَنْدَرِ ⑧

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَكَانُوا كَهْشِيُّونَ الْمُخْتَطِرِ ⑨

وَلَقَدْ يَسَرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهُلْ مِنْ
مُّذَكَّرٍ ⑩

كَذَبَتْ قَوْمٌ لَّوْطٍ بِالنَّذْرِ ⑪

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا أَلَّا
لَوْطٍ نَجَّيْنَاهُ مِسْحَرٍ ⑫

अपनी ओर से एक नेमत के रूप में ।
इसी प्रकार हम उसे प्रतिफल दिया करते हैं जो कृतज्ञता प्रकट करे । 136।

और उसने भी उनको हमारी पकड़ से डराया था । फिर भी वे चेतावनी के बारे में असमंजस में रहे । 137।*

और उन्होंने उसे अपने अतिथियों के बारे में फुसलाना चाहा तो हमने उनकी आँखों को प्रकाशहीन कर दिया । अतः मेरा अज्ञाब और मेरी चेतावनी का स्वाद चखो । 138।

और निःसन्देह उनके पास सुबह सवेरे ही एक ठहर जाने वाला अज्ञाब आ गया । 139। अतः मेरा अज्ञाब और मेरी चेतावनी का स्वाद चखो । 140।

और निःसन्देह हमने कुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया । अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? । 141। (रूप $\frac{2}{4}$)

और निःसन्देह फिरअौन के घर वालों के पास भी सतर्ककारी आए । 142।

उन्होंने हमारे समस्त चिह्नों का इनकार कर दिया । अतः हमने उन्हें इस प्रकार पकड़ लिया जैसे पूर्ण प्रभुत्व वाला सर्वशक्तिमान पकड़ता है । 143।

क्या तुम्हारे (युग के) काफिर उनसे श्रेष्ठ हैं अथवा तुम्हारे लिए ग्रन्थों में छुटकारे की कोई ज़मानत है ? । 144।

क्या वे कहते हैं कि हम बदला लेने वाला गिरोह हैं ? । 145।

* इस अर्थ के लिए देखें 'लिसान-उल-अरब' ।

نِعْمَةً مِنْ عِنْدِنَا + كَذِلِكَ نَجْزِي
مَنْ شَكَرَ ④

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بِظَهَرَتِنَا فَتَمَارِفُ
إِلَيْنَا ④

وَلَقَدْ رَأَوْدُوهُ عَنْ صَيْفِهِ فَطَمَسْنَا
أَعْيُّنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِنَا وَنُذَرِ ④

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بِكُرَّةً عَذَابُ مُسْتَقْرِ ④
فَذُوقُوا عَذَابِنَا وَنُذَرِ ④

وَلَقَدْ يَسَرْنَا الْقُرْآنَ لِلَّذِكْرِ فَهُمْ مِنْ
مَذَكَرٍ ④

وَلَقَدْ جَاءَ أَلِ فِرْعَوْنَ النَّذَرِ ④
كَذَبُوا إِيمَانًا كَلِمَاتِهِمْ أَخْذَنَهُمْ
مُقْتَرِ ④

أَكَفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أُولَئِكَمُ أَمْ لَكُمْ
بَرَآءَةٌ فِي الزَّبَرِ ④

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعُ مُنْتَصِرُ ④

इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएँगे । ४६।*

बल्कि उनसे क्रांति की घड़ी का वादा किया गया है और वह घड़ी बहुत कठोर और बहुत कड़ी होगी । ४७।

निःसन्देह अपराधी लोग विनाश और पागलपन (की दशा) में होंगे । ४८।

जिस दिन वे अग्नि में अपने चेहरों के बल घसीटे जाएँगे । (उन्हें कहा जाएगा) नरक का स्वाद चखो । ४९।

निःसन्देह हमने हरेक चीज़ को एक अनुमान के अनुसार पैदा किया है । ५०।

और हमारा आदेश एक ही बार आँख झपकने की भाँति (आता) है । ५१।

और निःसन्देह हम तुम्हारे समर्कर्मा लोगों को (पहले भी) विनष्ट कर चुके हैं। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? । ५२।

और प्रत्येक काम जो वे करते हैं, ग्रन्थों में (मौजूद) है । ५३।

और प्रत्येक छोटा और बड़ा लिखा हुआ है । ५४।

निःसन्देह मुत्तकी स्वर्गों में और समृद्धि की अवस्था में होंगे । ५५।

सच्चाई के आसन पर, एक सर्व-शक्तिमान सम्राट के निकट । ५६।

(रुक् ३)

سَيْمَهْرُ الْجَمِيعَ وَيُوَلُونَ الدُّبَرَ ⑤

بِالسَّاعَةِ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذْهِي
وَأَمْرٌ ⑥

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَلٍ وَّشَغَرٍ ⑦

يَوْمَ يُسَحَّبُونَ فِي التَّارِىلِ وَجْهُهُمْ
ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ⑧

إِنَّ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ⑨

وَمَا أَمْرَنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٌ بِالْبَصَرِ ⑩

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا آشْيَاءَ كُمْ فَهَلْ
مِنْ مُّدَّ كِيرٍ ⑪

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلَوْهُ فِي الرُّبُرِ ⑫

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَّكِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ⑬

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّتٍ وَّنَهَرٍ ⑭

فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِيلٍ
مُّقْتَدِرٍ ⑮

* आयत सं. 45-46 ये आयतें जो आरम्भिक मक्की आयतों में से हैं, इनमें अहजाब युद्ध की भविष्यवाणी की गई है कि काफिरों की विशाल सेना मुसलमानों को पीठ दिखा कर भाग खड़ी होगी।

55 – सूरः अर-रहमान

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 79 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य और कुरआन करीम से संबंधित दो पृथक पृथक मुहावरे प्रयुक्त किये गए हैं । कुरआन के बारे में खल्क (सृष्टि) शब्द का कहीं कोई उल्लेख नहीं है परन्तु मनुष्य के लिए खल्क शब्द का उल्लेख है । अतः इस सूरः पर विचार न करने के परिणाम स्वरूप मध्य काल में कुछ मुसलमान कुरआन को मझ्लूक (सृष्टि) मानते रहे और कुछ इसके विपरीत । इस कारण इन मुसलमानों में बहुत ही रक्तपात हुआ ।

इस सूरः में एक मीज़ान (तुला) का भी उल्लेख है और वर्णन किया गया है कि समग्र आकाश में एक संतुलन दिखाई देगा और वास्तव में हर ऊँचाई इसी संतुलन के अधीन होती है । अतः यदि अल्लाह तआला के मोमिन भक्त भी सदा इस संतुलन को बनाये रखेंगे और न्याय के विरुद्ध कभी कोई बात नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला उनको भी बड़ी ऊँचाईयाँ प्रदान करेगा ।

इसके पश्चात जिन और मनुष्य को संबोधित करके इस बात की बार-बार पुनरावृत्ति की गई है कि तुम दोनों अन्ततः अल्लाह की किस किस नेमत का अस्वीकार करोगे । इसी प्रसंग में जिन्नों और मनुष्यों की उत्पत्ति का अन्तर भी वर्णन कर दिया कि जिन्न को आग के लपटों से पैदा किया गया है । वर्तमान युग में जिन्न शब्द की विभिन्न व्याख्याएँ की जाती हैं । परन्तु यहाँ जिन्न की एक व्याख्या यह है कि विषाणु (वायरस) और जीवाणु (बैक्टीरिया) भी जिन्न हैं जो सृष्टि के आरम्भ में आकाश से गिरने वाली अग्निमय रेडियो तरंगों के परिणामस्वरूप पैदा हुए । वर्तमान युग में इस बात पर सभी वैज्ञानिक सहमत हो चुके हैं कि बैक्टीरिया और वायरस सीधे-सीधे अग्नि से शक्ति प्राप्त कर के अस्तित्व में आते हैं ।

फिर मनुष्य के बारे में एक ऐसी भविष्यवाणी की गई है जो बहुत ही तत्त्वपूर्ण और सृष्टि के गहरे रहस्यों पर से पर्दा उठाती है । गीली मिट्टी से मनुष्य के पैदा करने की कल्पना तो पिछली सब पुस्तकों में मौजूद है परन्तु खनकती हुई ठीकरियों से मनुष्य का पैदा किया जाना एक ऐसी कल्पना है जो कुरआन मजीद से पूर्व किसी भी पुस्तक ने वर्णन नहीं किया । यहाँ विस्तार का अवसर नहीं, परन्तु वैज्ञानिक जानते हैं कि सृष्टि के बीच एक ऐसा पड़ाव भी आया जब आवश्यक था कि सृष्टि के तत्त्वों को बजने वाली ठीकरियों के रूप में शुष्क कर दिया जाता । फिर समुद्र ने इस शुष्क तत्त्व को वापस अपनी लहरों में समो लिया और मनुष्य की रासायनिक विकास की ऐसी यात्रा आरम्भ

हुई जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति के लिए ये आवश्यक रसायन बार-बार अपने प्रारम्भिक अवस्था की ओर न लौट सकें।

फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अल्लाह तआला दो समुद्रों के बीच स्थित अन्तराल को समाप्त कर देगा और वे एक दूसरे से मिल जाएँगे।

फिर एक और आयत ऐसी है जो कुरआन के अवतरण काल में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकती थी। मनुष्य में तो गज़ दो गज़ तक ऊँची छलांग मारने की भी शक्ति नहीं थी, कौन सोच सकता था कि बड़े लोग भी और छोटे लोग भी धरती और आकाश की सीमाओं को लांघने का प्रयास करेंगे। इस प्रयास का आरम्भ मनुष्य के चन्द्रमा तक पहुँचने से हो चुका है। और उससे उच्चतर ग्रहों तक पहुँचने का प्रयास जारी है। परन्तु कुरआन करीम की भविष्यवाणी है कि मनुष्य सुल्तान अर्थात् ठोस तर्कों के बिना सृष्टि की सीमाओं को नहीं लांघ सकता। और जब भी सशरीर लांघने का प्रयास करेगा उस पर आग और पिघला हुआ ताँबा बरसाया जाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक वैज्ञानिक आकाशीय पिण्डों की शिलावृष्टि से बचने के लिए समस्त संभावित उपाय न अपनायें वे रॉकेट्स में बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा नहीं कर सकते।

नरक के आलंकारिक वर्णन के पश्चात फिर स्वर्ग का आलंकारिक वर्णन आरम्भ होता है। पाठकों को सचेत रहना चाहिए कि कदापि इस वर्णन का ज़ाहिरी अर्थ करने का प्रयास न करें। यह सारी की सारी एक आलंकारिक भाषा है। इस पर विचार करने से विचारशील व्यक्तियों को ज्ञान के नए नए मोती प्राप्त हो सकते हैं। अन्यथा उनका दिमाग़ भटकता फिरेगा और कुछ भी प्राप्त न हो सकेगा। सिवाएँ स्वर्ग की एक भौतिक कल्पना के जिसमें बहुत सी बातों का कोई समाधान उन्हें ज्ञात न हो सकेगा। अतः अल्लाह तआला का नाम असीम बरकतों वाला है। उसकी बरकतों की गणना संभव नहीं है। वह प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय है।



سُورَةُ الرَّحْمَنِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعُ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ ثَلَاثَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

अनंत कृपा करने वाला और बिन माँगे
देने वाला । । ।
उसने कुरआन की शिक्षा दी । । ।

मनुष्य को पैदा किया । । ।

उसे अभिव्यक्त करना सिखाया । । ।

सूर्य और चन्द्रमा एक गणना के अनुसार
(कार्यरत) हैं । । । *

और सितारे और वृक्ष दोनों (अल्लाह के
समक्ष) न तमस्तक हैं । । । **

और आकाश की क्या ही शान है । उसने
उसे ऊँचाई प्रदान की और न्याय का
नमूना बनाया । । । ***

ताकि तुम नाप-तौल में कमी-बेशी न
करो । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَرَرَحْمَنُ ②

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ③

حَلَقَ الْإِنْسَانَ ④

عَلَّمَةُ الْبَيَانَ ⑤

أَلْشَمْسُ وَالْقَمَرُ بِخُسْبَانٍ ⑥

وَالْتَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدُنَ ⑦

وَالسَّمَاءُ رَفِعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ⑧

أَلَا تَطْعُوا فِي الْمِيزَانِ ⑨

* यहाँ अरबी शब्द बि हुस्वानिन का एक अर्थ यह भी है कि यह गणना के साधन हैं । दुनिया में जितनी भी उन्नति हुई है वह गणना के द्वारा हुई है और वैज्ञानिकों को सूर्य और चन्द्रमा की परिक्रमा के फलस्वरूप गणना का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ है ।

** इस स्थान पर नज्म शब्द से अभिप्राय सितारा भी हो सकता है जो पिछली आयत में उल्लेखित गणना से सम्बन्ध रखता है और जड़ी बूटियाँ भी हो सकती हैं । क्योंकि इसके पश्चात् वृक्ष का वर्णन है । यह कुरआन करीम की वर्णन शैली का चमत्कार है कि हर एक आयत हर प्रकार से (परस्पर) संबद्ध है ।

*** इसके पश्चात् आकाश की ऊँचाइयों का वर्णन है जो वास्तव में पिछली आयतों के विषयवस्तु का सारांश है कि गणना ही के द्वारा संतुलन स्थापित किया जाता है और आकाश को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की गई हैं वे इतनी संतुलित हैं कि इससे अल्लाह के भक्त न्याय करने की विधि सीख सकते हैं ।

और तौल को न्याय के साथ क्रायम करो
और तौल में कोई कमी न करो ॥10॥

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا
الْمِيزَانَ ①

और धरती की भी क्या शान है उसने
उसे प्राणियों के लिए (सहारा)
बनाया ॥11॥

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ②

इसमें भाँति-भाँति के फल हैं और
गुच्छेदार खजूरें भी ॥12॥

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالثَّلْجُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ③

और भूसा युक्त अनाज और सुगन्धित
पौधे ॥13॥

وَالْحَبْبُ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ④

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ॥14॥

فِيَّا يَ الْأَءْرَى كَمَا تَكْذِبُنِ ⑤

उसने मनुष्य को मिट्टी के पकाए हुए
वर्तन की भाँति शुष्क खनकती हुई मिट्टी
से पैदा किया ॥15॥*

حَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَحَارِ ⑥

और जिन्न को आग की लपटों से पैदा
किया ॥16॥

وَخَلَقَ الْجَانَ مِنْ مَارِيجٍ قِنْ نَارِ ⑦

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ॥17॥

فِيَّا يَ الْأَءْرَى كَمَا تَكْذِبُنِ ⑧

दोनों पूर्व दिशाओं का रब्ब और दोनों
पश्चिम दिशाओं का रब्ब (है) ॥18॥**

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ⑨

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ॥19॥

فِيَّا يَ الْأَءْرَى كَمَا تَكْذِبُنِ ⑩

* अरबी शब्द सल्साल का अर्थ : शुष्क खनकती हुई मिट्टी । देखें अरबी शब्दकोश “अल-मुन्जिद”
और “गरीबुल कुरआन” ।

** इस आयत में दो पूर्वी दिशाओं और दो पश्चिमी दिशाओं का वर्णन है । हालाँकि हज़रत मुहम्मद सल्ल.
के युग के मनुष्य को केवल एक पूर्व और एक पश्चिम का ही ज्ञान था । इस बहुत छोटी सी आयत में
आगे आने वाले युग के महान आविष्कारों के बारे में भविष्यवाणी है ।

वह दो समुद्रों को मिला देगा जो बढ़-
बढ़ कर एक दूसरे से मिलेंगे । 20।

(इस समय) उनके बीच एक रोक है
(जिसका) वे अतिक्रमण नहीं कर
सकते । 21।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 22।

दोनों में से मोती और मूँगे निकलते
हैं । 23।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 24।

और उसी की (कारीगरी) वह नौकाएँ हैं
जो समुद्र में पर्वतों के सदृश ऊँची की
जाएँगी । 25।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 26। (रुक् ۱۱)

हर चीज़ जो इस (धरती) पर है नश्वर
है । 27।

परन्तु तेरे रब्ब की सत्ता अनश्वर रहेगी
जो प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय
है । 28।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 29।

* आयत सं. 20 से 23 : इन आयतों में ऐसे दो समुद्रों का वर्णन है जिन में से लूअ्लूअ् और मरजान अर्थात् मोती और मूँगे निकलते हैं और जिन दोनों को परस्पर मिला दिया जाएगा । अरबी शब्द यल्तकियान से भविष्य में उनका मिलना अभिप्राय है । हालांकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में ऐसे दो समुद्रों के बारे में लोगों को न कोई ज्ञान था और न उनके परस्पर मिलने की कोई भविष्यवाणी की जा सकती थी । यहाँ लाल सागर और रुम सागर अभिप्राय है, जिनको →

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيُّنِ ﴿١﴾

بِئْثَمَاءِ بَرْزَخٍ لَا يَبْغِيُّنِ ﴿٢﴾

فِيَّ أَلْأَعْرِكُمَائِكَذِبِينِ ﴿٣﴾

يَخْرُجُ مِنْهُمَا الْلُؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٤﴾

فِيَّ أَلْأَعْرِكُمَائِكَذِبِينِ ﴿٥﴾

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْكَثُ فِي الْبَحْرِ
كَالْأَعْلَامِ ﴿٦﴾

فِيَّ أَلْأَعْرِكُمَائِكَذِبِينِ ﴿٧﴾

كُلُّ مَنْ عَيْمَهَا فَانِ ﴿٨﴾

وَيَبْقَى وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلِيلِ
وَالْأَكْرَامِ ﴿٩﴾

فِيَّ أَلْأَعْرِكُمَائِكَذِبِينِ ﴿١٠﴾

आकाशों में और धरती में जो भी है,
उसी से याचना करता है । हर पल वह
एक नई शान में होता है । 30।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 31।

हे दोनों महाशक्तियो ! हम अवश्य तुम
से पूरी तरह निपटेंगे । 32।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 33।

हे जिन्न और मनुष्य समाज ! यदि तुम
सामर्थ्य रखते हो कि आकाशों और
धरती की सीमाओं से बाहर निकल
सको तो निकल जाओ । परन्तु एक
ठोस तर्क के बिना तुम नहीं निकल
सकोगे । 34।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 35।

तुम दोनों पर आग के शोले बरसाए
जाएँगे और एक प्रकार का धुआँ भी।

←स्वैत्र नहर के द्वारा मिलाया गया है ।

* इस आयत में हे जिन्न और मनुष्य समाज ! कह कर संबोधन किया गया है । जिन्न से जिस अद्भुत
प्राणी की कल्पना की जाती थी उसके बारे में तो उस युग में यह कहा जा सकता था कि वे धरती और
आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयत्न करेंगा । परन्तु मनुष्य के विषय में तो यह कल्पना
नहीं की जा सकती थी कि वे धरती और आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयास करेंगे । यहाँ
विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि केवल धरती की सीमाओं का उल्लेख नहीं किया गया
बल्कि आकाश और धरती (दोनों) की सीमाओं का उल्लेख किया गया है । अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड को
एक ही छतांग में पार करने का प्रयत्न करेंगे । अरबी वाक्यांश इल्ला बि सुल्लान से यह अभिप्राय है
कि वे प्रयत्न करेंगे परन्तु केवल ठोस तर्कों के साथ सफल हो सकेंगे । यही अवस्था इस युग में है । धरती
और आकाश पर गवेषणा करने वाले वैज्ञानिक दो सौ खरब प्रकाश वर्ष तक दूर की खबरें केवल अपने
ठोस तर्कों के आधार पर ज्ञात कर लेते हैं । सशरीर उनके लिए ऐसा कर पाना असंभव है ।

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَانِيٍّ

فِي أَلْأَعْرَبِ كَمَا تَكَذِّبُنِي ⑦

سَنَفْرُغْ لَكُمْ أَيْهَةَ التَّقْلِينِ ⑥

فِي أَلْأَعْرَبِ كَمَا تَكَذِّبُنِي ⑦

يَمْعِشُرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنْ أَسْتَطِعُهُ
أَنْ تَقْدُّمَا مِنْ أَقْظَارِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ فَانْقَدُّمَا ۝ لَا تَقْدُونَ
إِلَّا سُلْطَنِي ⑤

فِي أَلْأَعْرَبِ كَمَا تَكَذِّبُنِي ⑦

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَّافِتُ مِنْ نَارٍ ۝ وَنَحَاسٍ

फिर तुम दोनों प्रतिशोध नहीं ले सकोगे । 36।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? । 37।

अतः जब आकाश फट जाएगा और रंगे हुए चमड़े के सदृश लाल हो जाएगा । 38।**

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? । 39।

उस दिन जिन्न और मनुष्य में से किसी को अपनी भूल-चूक के बारे में पूछा नहीं जाएगा । 40।***

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? । 41।

सारे अपराधी अपने चिह्नों से पहचाने जाएँगे । फिर वे माथे के बालों से और पाँव से पकड़ लिए जाएँगे । 42।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? । 43।

فَلَا تَتَصَرَّفُنَّ

فِيَّ أَلَاعِرْبِكُمَّا تَكْذِبُنِ

فَإِذَا اسْقَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَزْدَةً
كَالْدَهَانِ

فِيَّ أَلَاعِرْبِكُمَّا تَكْذِبُنِ

فَيُوْمَدِّلُ لَا يَسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسَ
وَلَاجَانِ

فِيَّ أَلَاعِرْبِكُمَّا تَكْذِبُنِ

يُرَفُّ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالثَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ

فِيَّ أَلَاعِرْبِكُمَّا تَكْذِبُنِ

* अंतरिक्ष यात्री जब रांकेटों में बैठ कर आकाश और धरती को लांघने का प्रयास करते हैं तो उन पर इसी प्रकार की लपटों और एक प्रकार के धुएँ की बौद्धार होती है ।

** यह केवल उपमा है । इसमें अंतरिक्ष विज्ञान की असाधारण रूप से उन्नति का वर्णन है । साथ ही भयानक हवाई युद्धों की ओर भी संकेत हो सकता है ।

*** इस आयत में यह कहा गया है कि उस दिन जिन्नों और मनुष्यों से उनकी भूल-चूक के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा । क्यामत के दिन अपराधी अपने लक्षणों से ही पहचाने जाएंगे, इस लिए प्रश्न की आवश्यकता ही नहीं रहेगी । संसार के विश्वस्तरीय युद्धों में भी न बड़े लोग छोटों से कोई प्रश्न करते हैं न छोटी साम्यवादी जातियाँ बड़ी पूँजीपति जातियों से कोई प्रश्न करती हैं । भविष्यवाणी का यह भाग अभी और स्पष्ट होना शेष है ।

यही वह नरक है जिसका अपराधी
इनकार किया करते थे । 44।

वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच
धूमेंगे । 45।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 46। (रु. १२)

और जो भी अपने रब्ब के मुकाम से
डरता है उसके लिए दो स्वर्ग हैं । 47।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 48।

दोनों (स्वर्ग) अनेक शाखों युक्त
हैं । 49।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 50।

उन दोनों में दो जलस्रोत बहते हैं । 51।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 52।

उन दोनों में हर प्रकार के जोड़े-जोड़े
फल हैं । 53।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 54।

* जो अल्लाह तआला का तकवा धारण करे उसे संसार का स्वर्ग प्राप्त होगा और परलोक का भी ।
संसार के स्वर्ग से सम्भवतः अल्लाह के स्मरण से हार्दिक संतुष्टि प्राप्त करना अभिप्राय है । जिसकी
ओर आयत सुनो ! अल्लाह ही के स्मरण से दिल संतुष्टि प्राप्त करते हैं । (सूरः अर राद आयत :
29) संकेत करती है ।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُحَكِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُونَ ⑦

يَطْوُقُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ أَنْ ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِبِينَ ۝

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَهَنَّمَ ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِبِينَ ۝

ذَوَاتًا أَفْنَانِ ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِبِينَ ۝

فِيْهِمَاعِيشِ تَجْرِيْنِ ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِبِينَ ۝

فِيْهِمَامِنْ كَلِّ فَاكِهَةِ زُوْجِنِ ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِبِينَ ۝

वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के हैं। और दोनों स्वर्गों के पके हुए फल भार से झुके हुए हैं । 155।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 156।

उनमें नज़रें झुकाए रखने वाली कुवाँरी कन्याएँ हैं जिन्हें उन (स्वर्गवासियों) से पूर्व जिन्नों और मनुष्यों में से किसी ने नहीं छूआ । 157।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 158।

मानो वे पद्मराग मणि और मूँगे हैं । 159।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 160।

क्या उपकार का प्रतिफल उपकार के अतिरिक्त (कुछ और) भी हो सकता है ? 161।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 162।

और इन दोनों के अतिरिक्त दो स्वर्ग और भी हैं । 163।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 164।

दोनों ही बहुत हरे-भरे हैं । 165।

مَنْ كَيْنَ عَلَى فُرْشٍ بَطَائِنَهَا مِنْ
إِسْتَبْرِقٍ وَجَنَّا الْجَنَّيْنِ دَانِ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِّبِنِ۝

فِيَّ قُصْرَاتُ الظَّرْفِ لَمْ يَطْمِئْنَ
إِنْسَ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانِ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِّبِنِ۝

كَانَهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانِ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِّبِنِ۝

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِّبِنِ۝

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَهَنَّمِ۝

فِيَّ الْأَعْرِيْكَمَاتُ كَذِّبِنِ۝

مَذَهَآءَتِنِ۝

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 166।

उन दोनों में जोश मारते हुए दो जलसोत
हैं 167।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 168।

इन दोनों में कई प्रकार के मेवे और खजूरें
और अनार हैं 169।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 170।

उनमें अत्यन्त नेक स्वभाव कुवाँरी
कन्याएँ हैं 171।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 172।

महलों जैसे मकानों में जो ईट पत्थर के
नहीं,* ठहराई हुई अप्सराएँ हैं 173।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 174।

उन्हें उन (स्वर्ग निवासियों) से पूर्व
जिन्न व मनुष्य में से किसी ने नहीं
छूआ 175।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 176।

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿١﴾

فِيَهُمَا عَيْنٌ نَصَاحَتِنَ ﴿٢﴾

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿٣﴾

فِيَهُمَا فَاكِهَةٌ وَنَحْلٌ وَرِمَانٌ ﴿٤﴾

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿٥﴾

فِيَهُنَّ خَيْرٌ مِنْ حِسَانٍ ﴿٦﴾

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿٧﴾

حُمُورٌ مَقْصُورٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٨﴾

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿٩﴾

لَمْ يَظْمِنْ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَاءَنَّ ﴿١٠﴾

فِيَأَيِّ الْأَعْرِبٍ كُمَاتُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

* इस अर्थ के लिए देखें अरबी शब्द कोश “अल मुन्जिद” ।

वे हरे गलीचों पर तथा बढ़िया और
बहुमूल्य बिछौनों पर तकिया लगाए हुए
हैं । 77।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? । 78।

तेरे प्रबल प्रतापी और अति सम्माननीय
रब्ब का नाम ही वरकत वाला सिद्ध
हुआ । 79। (खू ۳)

مَكِينٌ عَلَى رُفَرِفٍ خُسْرٌ وَعَبْقَرِيٌّ
حَسَانٌ ﴿١﴾

فِيَّ الْأَعْرِكُمَا تَكَذِّبُنِ ﴿٢﴾

تَبَرَّكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلِيلِ
وَالْأَكْرَامِ ﴿٣﴾

56- सूरः अल-वाकिअः

यह सूरः आरम्भिक मक्की युग में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 97 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि पिछली सूरः जो महान भविष्यवाणियाँ कर रही है वे अवश्य पूरी हो कर रहने वाली हैं। विशेषकर मृत्यु के पश्चात पुनः जी उठने की खबरें जो इस सूरः में वर्णन की गई हैं वे अवश्य घटित होंगी।

इसके पश्चात इस्लाम के पूर्ववर्ती युग में कुर्बानी करने वालों और उत्तरवर्ती युग में कुर्बानी करने वालों की तुलना की गई है। जिससे ज्ञात होता है कि वे लोग जो पूर्ववर्ती युग में धर्म के लिए कुर्बानी देंगे और उत्तरवर्ती युग में भी कुर्बानी प्रस्तुत करेंगे उनमें से अधिकांश कुर्बानी प्रस्तुत करने की दृष्टि से परस्पर एक समान होंगे और उन्हें एक जैसे स्थान प्रदान किए जाएंगे। परन्तु पूर्ववर्ती युग के बहुत से कुर्बानी करने वालों को कुर्बानी में और त्याग में बाद में आने वालों पर संख्या और पद की दृष्टि से श्रेष्ठता प्राप्त होगी। परन्तु बाद के दौर में भी कुछ ऐसे लोग अवश्य होंगे जिन्हें पद की दृष्टि से वह श्रेष्ठताएँ प्राप्त होंगी जो पहले युग के लोगों को दी गई। फिर दोनों युगों के अभागों का भी वर्णन है जिनको बाँई दिशा वाले घोषित किया गया है। बाँई दिशा वालों से अभिप्राय बुरे लोग हैं और उनके वे गुण वर्णन किये गये हैं जो उनको नरकगामी बनाएँगे।

फिर इस सूरः में उदाहरण स्वरूप नरक वासियों का और स्वर्ग निवासियों का भी वर्णन है और यह बात खूब स्पष्ट कर दी गई है कि तुम कदापि इस भौतिक शरीर के साथ दोबारा नहीं उठाए जाओगे। बल्कि ऐसी परिवर्तित सृष्टि के रूप में उठाए जाओगे जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते।

आयत सं. 61, 62 में यह भविष्यवाणी की गई है कि अल्लाह तआला तुम्हारे पुनरुत्थान के समय जिस दशा में तुम्हें नए सिरे से जीवित करेगा उसका तुम्हें कोई भी ज्ञान नहीं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि देखने में तो इसका ज्ञान दिया जा रहा है, परन्तु वास्तव में यह चेतावनी है कि ज़ाहिरी शब्दों को बिल्कुल उसी प्रकार न समझ लेना। यह केवल आलंकारिक वर्णन हैं और वास्तव का तुम कोई ज्ञान नहीं रखते।

फिर चार ऐसे विषय उल्लेखित हुए हैं जिन पर यदि विचार किया जाए तो हर निष्पक्ष व्यक्ति का दिल यह अवश्य पुकार उठेगा कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ये चीजें बनाने पर समर्थ नहीं। प्रथम वह तत्त्व जिससे मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ है और उसमें असंख्य पेचदार ऐसी बारीक से बारीक विशेषताओं को एकत्रित कर दिया गया है जिन्होंने बाद में प्रकट होना था। उदाहरणार्थ आँख, कान, नाक, मुँह, गला और स्वर

तंत्र इत्यादि को यहाँ तक आदेश दे दिया गया है कि किस सीमा तक एक अंग विकसित होगा और फिर किस समय यह विकास क्रम बन्द होना आवश्यक है। दाँतों ही को लीजिए, दूध के दाँत एक समय के बाद निकलते हैं फिर वे एक समय तक रह कर गिर जाते हैं। और बचपन में जो बच्चे दाँतों को स्वस्थ नहीं रख सकते, उसके दुष्प्रभाव से उनको सुरक्षित कर दिया जाता है। फिर युवावस्था के दाँत हैं, जिसके बाद मनुष्य जिम्मेदार है कि उनकी रक्षा करे। वे एक सीमा तक बढ़ कर रुक क्यों जाते हैं? क्या चीज़ है जो उनको आगे बढ़ने से रोक देती है? यह मनुष्य के डी.एन.ए. में एक कम्प्यूटराईज्ड प्रोग्राम है जिस पर अल्लाह तआला के विधानानुसार वे दाँत काम करते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि जिस गति से वे घिस रहे होते हैं लगभग उसी गति से वे बढ़ भी रहे होते हैं। यदि बढ़ते चले जाते और रुकने की व्यवस्था न होती तो मनुष्य के नीचे के दाँत मस्तिष्क फाड़ कर सिर से बहुत ऊपर निकल सकते थे और ऊपर के दाँत जबड़े फाड़ कर छाती को हानि पहुँचा सकते थे। तो फर्माया, क्या तुमने यह आनुवंशिक योग्यताएँ स्वयं प्राप्त की हैं? ज़ाहिर है कि उनका उत्तर नहीं मैं है।

इसी प्रकार यूँ तो मनुष्य समझता है कि हमने धरती में बीज बोए हैं। परन्तु धरती से इन बीजों के वृक्षों और सब्जियों और फलों के रूप में विकासित होने की प्रक्रिया भी एक अत्यन्त जटिल व्यवस्था है जो स्वतः जारी नहीं हो सकती।

इसी प्रकार इस समग्र जीवन तंत्र को सहारा देने के लिए जो आकाश से पानी उत्तरता है उसकी प्रक्रिया पर भी मनुष्य का कोई हस्तक्षेप नहीं। इसी प्रकार आग से परिचालित वह यान जिस पर सवार हो कर मनुष्य आकाश पर जाने का प्रयास करते हैं यह भी अल्लाह के नियम के अधीन काम करता है, अन्यथा वही अग्नि उनको ऊँचाइयों तक पहुँचाने के स्थान पर भस्म कर सकती थी। इस प्रसंग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आकाश पर उड़ने वाले जहाज़ों से सम्बन्धित भविष्यवाणी मौजूद है कि वे अग्नि से चलने वाली सवारियाँ होंगी परन्तु वह अग्नि उन यात्रियों को जो उनमें बैठेंगे कोई हानि नहीं पहुँचाएंगी।

फिर नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी ठहराया गया। उस युग का मनुष्य तो समझता था कि नक्षत्र छोटे-छोटे चमकने वाले मोती अथवा पत्थर हैं। परन्तु अल्लाह तआला कहता है कि यदि तुम्हें ज्ञान हो कि वे छोटे-छोटे दिखाई देने वाले नक्षत्र क्या चीज़ हैं? तो तुम आश्चर्यचकित रह जाओ कि यह नक्षत्र तो इतने बड़े-बड़े हैं कि चन्द्रमा और सूर्य, धरती और ग्रहमंडल भी इन नक्षत्रों के एक किनारे में समा सकते हैं। अतः फर्माया, यह बहुत बड़ी गवाही है जो हम दे रहे हैं।

इन गवाहियों के पश्चात यह कहा गया कि कुरआन करीम भी एक ऐसी पुस्तक है

जिसमें अथाह तत्त्व निहित है। जैसे नक्षत्र दूर होने के कारण तुम्हारी दृष्टि से ओङ्गल हैं इसी प्रकार कुरआन करीम की ऊँचाइयों तक भी तुम्हारी दृष्टि नहीं पहुँच सकती और तुम उसे छोटी सी पुस्तक देखते हो। फिर यह भी कहा गया कि यूँ तो तुम इसे हूँ भी सकते हो अर्थात् तुम इसके इतने निकट हो कि उसे हाथ भी लगा सकते हो, परन्तु अल्लाह तआला जिस के दिल को पवित्र करे उसके सिवा कोई इसके विषयवस्तु को नहीं हूँ सकता।



سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُّكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जब घटित होने वाली (घटना) घटित
हो जाएगी । । ।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ

उसके घटित होने को कोई (जान) ۷
झुठला नहीं सकेगी । । ।

لَيْسَ بِوْقْعَتِهَا كَاذِبَةً ۖ

वह (कुछ को) नीचा करने वाली और
(कुछ को) ऊँचा करने वाली होगी । । ।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۖ

जब धरती को खूब हिलाया जाएगा । । ।

إِذَا رَجَّتِ الْأَرْضُ رَجَّاً ۖ

और पर्वत चूर्ण-विचूर्ण कर दिए
जाएँगे । । ।

وَبَسَّتِ الْجِبَالُ بَسًاً ۖ

अतः वे बिखरी हुई धूल की भाँति हो
जाएँगे । । ।

فَكَاتَ هَبَاءً مُّنْبَثِّتاً ۖ

जबकि तुम तीन समूहों में बटे हुए
होगे । । ।

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا لَّهَةً ۖ

अतः दाईं और वाले । क्या हैं दाईं और
वाले ? । । ।

فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۖ

और बाईं और वाले । क्या हैं बाईं और
वाले ? । । ।

وَأَصْحَابُ الْمَشَمَّةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشَمَّةِ ۖ

और अग्रगामी सब पर श्रेष्ठता ले जाने
वाले होंगे । । ।

وَالسَّيْقُونُ السَّيْقُونَ ۖ

यही (अल्लाह के) निकटस्थ हैं । । ।

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۖ

नेमतों वाले स्वर्गों में । । ।

فِي جُنُتِ النَّعِيمِ ②

पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह । । ।

كُلُّهُ مِنَ الْأَوَّلِينَ ۖ

और उत्तरवर्तियों में से थोड़े लोग ॥15।

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْأُخْرِيْنَ ۝

रत्नजड़ित पलंगों पर ॥16।

عَلَى سُرِّ مَوْصُونَةٍ ۝

उन (पलंगों) पर आमने-सामने टेक लगाए हुए (होंगे) ॥17।

مَسْكِينٌ عَلَيْهَا مَتَقْبِلُينَ ۝

उन के लिए (सेवा करने वाले) युवा लड़के घूम रहे होंगे, जिन्हें अमरत्व प्रदान किया गया है ॥18।

يَطْوُفُ عَلَيْهِمْ وَلِدَانٌ مَّحْلُدُونَ ۝

कटौरे और सुराहियाँ और स्वच्छ जल से भरे हुए प्याले लिए हुए ॥19।

إِنَّكُو اِبٍ وَآبَارِيقَ وَكَائِسٌ مِّنْ مَعْيِنٍ ۝

उसके प्रभाव से न वे सिर दर्द में डाले जाएँगे, न बहकी-बहकी बातें करेंगे ॥20।

لَا يَصِدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يَنْزِقُونَ ۝

और भाँति-भाँति के फल लिए हुए, जिनमें से वे जो चाहेंगे पसन्द करेंगे ॥21।

وَفَا كِهَةٌ مِّمَّا يَسْكِرُونَ ۝

और पक्षियों का माँस, जिनमें से जिस की भी वे इच्छा करेंगे ॥22।

وَلَحْمٌ طَيْرٌ مِّمَّا يَسْتَهُونَ ۝

और बड़ी-बड़ी आँखों वाली कुँवारी कन्याएँ ॥23।

وَحُورٌ عَيْنٌ ۝

मानो ढके हुए मोतियों की भाँति हैं ॥24।

كَامْثَالٌ اللُّؤْلُؤُ الْمُكْنُونُ ۝

उसके प्रतिफल स्वरूप जो वे कर्म किया करते थे ॥25।

جَزَ آءٌ إِيمَانُوا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

वे उसमें कोई व्यर्थ आलाप अथवा पाप की बात नहीं सुनते ॥26।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَعْنًا وَلَا تَأْشِيمًا ۝

परन्तु केवल “सलाम-सलाम” का वाक्य ॥27।

إِلَاقِيْلًا سَلَمًا سَلَمًا ۝

और दाहिनी ओर वाले (लोग)। कौन हैं जो दाहिनी ओर वाले हैं ? ॥28।

وَاصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝

ऐसी बेरियों में जो काँटेदार नहीं । 29।

فِي سِدْرٍ مَّحْصُودٍ ۝

और परत-परत (फलों युक्त) केलों (के वागों) के बीच । 30।

وَظَلَحٌ مَّنْصُودٍ ۝

और दूर तक फैलाइ हुइ छायाओं में । 31।

وَظَلَلٌ مَّمْدُودٍ ۝

और बरसाए जान वाले पानी में । 32।

وَمَاءٌ مَّسْكُوبٍ ۝

और अधिकांश फलों में । 33।

وَفَا كِهْلٌ كَثِيرٌ ۝

जो न तो काटे जाएँगे और न ही (उन्हें) उनसे रोका जाएगा । 34।

لَا مَقْطُوعَةٌ وَلَا مَمْتُوعَةٌ ۝

और ऊँचे बिछाए हुए आसनों में । 35।

وَفَرِشٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝

निःसन्देह हमने उन (के जोड़ों) को अत्यन्त उत्तम विधि से पैदा किया । 36।

إِنَّا آنْسَانَهُنَّ إِنْسَاءً ۝

फिर हमने उन्हें अनुपम बनाया । 37।*

فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝

मनमोहन, समवयस्क । 38।

عَرْبًا أَتْرَابًا ۝

दाहिनी ओर वाले (लोगों) के लिए । 39। (रुकू $\frac{1}{4}$)

لَا صَحِّبِ الْيَمِينِ ۝

पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह है । 40।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝

और उत्तरवर्तियों में से भी एक बड़ा समूह है । 41।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝

और बाईं ओर वाले (लोग) । कौन हैं बाईं ओर वाले ? । 42।

وَاصْحَابُ الشَّمَالِ مَا أَصْحَابُ الشَّمَالِ ۝

झुलसाने वाली उत्तप्त वायु और खौलते हुए पानी में । 43।

فِي سَمُومٍ وَّحَمِيمٍ ۝

* अरबी शब्द अब्कारन का अर्थ अनुपम (देखें शब्दकोश अल-मुन्जिद)

और ऐसी छाया में जो काले धुएँ से
उत्पन्न होती है । 44।

(जो) न ठंडी है और न दयाशील । 45।

इससे पूर्व निःसन्देह वे लोग बहुत सुख में
थे । 46।

और बड़े पाप पर हठधर्मिता किया करते
थे । 47।

और कहा करते थे, क्या जब हम मर
जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन
जाएँगे, क्या हम फिर भी अवश्य उठाए
जाएँगे ? । 48।

क्या हमारे बीते हुए पूर्वज भी ? । 49।

तू कह दे, अवश्य पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती
सभी । 50।

एक निर्धारित युग के निश्चित समय की
ओर अवश्य एकत्रित किए जाएँगे । 51।

फिर निःसन्देह तुम हे अत्यन्त पथभ्रष्टो !
बहुत झुठलाने वालो ! । 52।

अवश्य (तुम) थूहर के पौधे में से खाने
वाले हो । 53।

फिर उसी से पेट भरने वाले हो । 54।

इसके अतिरिक्त खौलता हुआ पानी भी
पीने वाले हो । 55।

फिर खूब प्यासे ऊँटों के पीने की भाँति
(पानी) पीने वाले हो । 56।

प्रतिफल प्राप्ति के दिन यह होगा उनका
आतिथ्य । 57।

وَظِلٌ مِنْ يَحْمُومٍ ④

لَا بَارِدٌ لَا كَرِيمٌ ⑤

إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْبَلُ ذَلِكَ مُتَرَفِّينَ ⑥

وَكَانُوا يَصْرُونَ عَلَى الْجِنْسِ
الْعَظِيمِ ⑦

وَكَانُوا يَقُولُونَ إِنَّا مِنْ نَاسٍ كُنَّا نُرَبِّي
وَعِظَامًا إِنَّا لَمْ يَعْوَذُنَا ⑧

أَوْ أَبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ⑨

فَلِإِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ ⑩

لَمَجْمُوعُونَ إِلَى مِيقَاتٍ يَوْمٌ
مَعْلُومٌ ⑪

لَمَّا رَأَكُمْ أَيْمَانَهَا الصَّالُونَ الْمَكْدُبُونَ ⑫

لَا كُلُونَ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زَقُومٍ ⑬

فَمَا لِئُونَ مِنْهَا الْبَطْلُونَ ⑭

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْحَمِيمِ ⑮

فَشَرِبُونَ شَرْبَ الْهَمِيمِ ⑯

هَذَا نَزَّلْهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ⑰

हमने ही तुम्हें पैदा किया है, फिर तुम क्यों सत्य को स्वीकार नहीं करते ? 158।

बताओ तो सही ! कि जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो 159।

क्या तुम हो जो उसे पैदा करते हो अथवा हम पैदा करने वाले हैं ? 160।

हमने ही तुम्हारे बीच मृत्यु को निश्चित किया है और हमें रोका नहीं जा सकता 161।

कि तुम्हारे रूप परिवर्तित कर दें और तुम्हें ऐसे रूप में उठाएँ कि तुम उसे नहीं जानते 162।

और निःसन्देह प्रथम उत्पत्ति को तुम जान चुके हो । फिर क्यों उपदेश ग्रहण नहीं करते ? 163।

भला बताओ तो सही कि जो कुछ तुम खेती करते हो 164।

क्या तुम ही हो जो उसे उगाते हो अथवा हम उगाने वाले हैं ? 165।

यदि हम चाहते तो अवश्य उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देते । फिर तुम बातें बनाते रह जाते 166।

कि निःसन्देह हम चट्टी तले दब गए हैं 167।

नहीं ! बल्कि हम पूर्णतया वंचित कर दिए गये हैं 168।

क्या तुमने उस पानी पर विचार किया है जो तुम पीते हो ? 169।

क्या तुम ही ने उसे बादलों से उतारा है अथवा हम हैं जो उतारने वाले हैं ? 170।

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصِدِّقُونَ ⑥

أَفَرَءَيْتُمْ مَا تَمْنَعُونَ ⑦

إِنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَلَقُونَ ⑧

نَحْنُ قَدْرُنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ
بِمُسْبُوقِينَ ⑨

عَلَى آنَّ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ
فِي مَا لَا تَخْلُمُونَ ⑩

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشَاءَ الْأُولَى فَلَوْلَا
تَذَكَّرُونَ ⑪

أَفَرَءَيْتُمْ مَا تَحْرِمُونَ ⑫

إِنْتُمْ تَرْعَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْرَّاعِونَ ⑬

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا حَطَامًا فَظَلَّتُمْ
تَفْكِهُونَ ⑯

إِنَّا لَغَرَمُونَ ⑯

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ⑯

أَفَرَءَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَسْرِبُونَ ⑯

إِنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمَرْءِنَ أَمْ
نَحْنُ الْمَنْزِلُونَ ⑯

यदि हम चाहते तो उसे खारा बना देते। अतः तुम कृतज्ञता क्यों प्रकट नहीं करते ? 171।

बताओ तो सही कि वह आग जो तुम जलाते हो 172।

क्या तुम उसके बृक्ष (सदूश लपट) को उठाते हो अथवा हम हैं जो उसे उठाने वाले हैं 173।*

हमने उसे उपदेश का एक साधन और यात्रियों के लिए लाभदायक बनाया है 174।

अतः अपने महान रब्ब के नाम का गुणगान कर 175। (रुकू^{۱۵})

अतः मैं अवश्य नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी के रूप में पेश करता हूँ 176।

और निश्चित रूप से यह एक बहुत बड़ा साक्ष्य है। काश, तुम जानते ! 177।

निःसन्देह यह एक सम्मान वाला कुरआन है 178।

एक छुपी हुई पुस्तक में (सुरक्षित) 179।

कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पवित्र किए हुए लोगों के 180।**

(उसका) उतारा जाना समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है 181।

अतः क्या इस वर्णन के सम्बन्ध में तुम चाटुकारिता पूर्ण बातें करते हो ? 182।

لَوْ نَشَاءْ جَعَلْنَاهُ أَجَاجًا فَلَوْلَا
تَشْكُرُونَ^{۱۷}

أَفَرَءَيْتُمُ الْتَّارَالَّتِي تُورُونَ^{۱۸}

إِنَّمَا أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ
الْمُنْشَعِنُونَ^{۱۹}

نَحْنُ جَعَلْنَا تَذْكِرَةً وَ مَئَاعًا
لِلْمُقْوِينَ^{۲۰}

فَسَيِّخْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ^{۲۱}

فَلَا أَقْسِمُ بِمَوْقِعِ النَّجُومِ^{۲۲}

وَإِنَّهُ لِقَسْمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ^{۲۳}

إِنَّهُ لِقُرْآنٌ كَرِيمٌ^{۲۴}

فِي كِتْبٍ مَكْتُوبٌ^{۲۵}

لَا يَمْسَأَ إِلَّا مُطَهَّرُونَ^{۲۶}

تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ^{۲۷}

أَفِيهَا دِلْيُثٌ أَنَّمُ مُدْهِنُونَ^{۲۸}

* इस अर्थ के लिए देखें : तफसीर कबीर, इमाम राजी रहि.

** आयत सं. 78 से 80 : कुरआन करीम खुली हुई पुस्तक भी है और छुपी हुई पुस्तक भी है। यूँ तो इसका पाठ प्रत्येक पुण्य और पापी व्यक्ति कर सकता है, परन्तु इसके उच्च श्रेणी के छुपे हुए रहस्य केवल उन पर प्रकट किए जाते हैं जो अल्लाह तआला की ओर से पवित्र किए गए हों।

और (इसको) झुठलाना तुम अपनी जीविका बनाते हो ? 183।

अतः क्यों न हुआ कि जब (जान) गले तक आ पहुँची 184।

और तुम उस समय हर ओर नजरें दौड़ा रहे थे (कि तुम अपने लिए कुछ कर सकते) 185।

और (उस समय) हम तुम्हारी अपेक्षा उस (मरने वाले) के अधिक निकट थे परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते थे 186।

यदि तुम वह नहीं, जिन्हें कर्ज़ चुकाना हो तो फिर क्यों नहीं 187।

तुम उस (जान) को लौटा सके ? यदि तुम सच्चे हो 188।

हाँ ! यदि वह (मरने वाला अल्लाह के) निकटस्थों में से हो 189।

तो (उसके लिए) आरामदायक और सुगन्धित वातावरण और बड़ी नेमत वाला स्वर्ग (है) 190।

और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से हो 191।

तो (उसे कहा जाएगा) तुझ पर सलाम ! हे वह व्यक्ति जो दाहिनी ओर वालों में से है 192।

और यदि वह झुठलाने वाले पथभ्रष्टों में से हो 193।

तो (उसके) उत्तरने का स्थान एक प्रकार का खौलता हुआ पानी होगा 194।*

और (उसको) नरक की अग्नि में भूना जाना है 195।

* इस अर्थ के लिए देखें ‘अल मुन्जिद’।

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْكُمْ تُكَذِّبُونَ ④٧

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغْتِ الْحُلُقُومَ ④٨

وَأَنْتُمْ حَيْنِيْذٍ شَطَرُونَ ④٩

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلِكُنْ لَا يُبَصِّرُونَ ④١٠

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ عَيْرَ مَدِينِيْنَ ④١١

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِيْنَ ④١٢

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ④١٣

فَرَوْحٌ وَرِيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيْمٍ ④١٤

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِيْنِ ④١٥

فَسَلَمٌ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِيْنِ ④١٦

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الصَّالِيْنَ ④١٧

فَنَرْزِلُ مِنْ حَمِيْرٍ ④١٨

وَتَصْلِيَةً جَحِيْمٍ ④١٩

निःसन्देह निश्चयात्मकता तक पहुँचा
हुआ विश्वास यही है 1961।

अतः अपने महान् रब्ब के नाम का $\frac{۱۱}{۲۷}$
गुणगान कर 1971। (रुकू $\frac{۳}{۱۶}$)

إِنَّ هَذَا الْهُوَحُّ الْيَقِينُ ۖ

فَسَيِّدُ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۖ

57 - सूरः अल-हदीद

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं।

इसका आरम्भ इस घोषणा के साथ होता है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनमें है सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहे हैं। आदि भी वही है और अन्त भी वही है और दृश्य भी वही है और अदृश्य भी वही है। अर्थात् उसकी चमक सुस्पष्ट है। परन्तु जो आँख उनको न देख सके उसके लिए वे सदा अदृश्य ही रहेंगी।

इस सूरः की एक आयत में सांसारिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि यह तो केवल खेल कूद और व्यर्थ क्रीड़ा है। यह कोई शेष रहने वाली चीज़ नहीं। जब मनुष्य अपनी मृत्यु के निकट पहुँचेगा तो अवश्य स्वीकार करेगा कि वे तो अल्पकालिक सुख उपभोग के दिन थे।

फिर इसी सूरः में यह महान आयत है जिससे प्रमाणित होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला ने यह बात खोल दी थी कि स्वर्ग और नरक की भौतिक कल्पना ठीक नहीं। अतः आयत संख्या 22 में कहा गया कि अल्लाह तआला से क्षमायाचना करने तथा उसके उस स्वर्ग की ओर क़दम बढ़ाने में एक दूसरे से आगे निकलने का प्रयत्न करो, जिस स्वर्ग का विस्तार धरती और आकाश पर फैला हुआ है। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पाठ की तो एक सहाबी रज़ि. ने प्रश्न किया कि हे अल्लाह के नबी ! यदि स्वर्ग समस्त ब्रह्माण्ड पर फैला हुआ है तो नरक कहाँ है ? आप सल्ल. ने फर्माया, वह भी वही होगा। अर्थात् उसी ब्रह्माण्ड के परिधि में मौजूद होगा जिसमें स्वर्ग है। परन्तु तुम्हें इस बात की समझ नहीं है कि यह कैसे होगा। एक ही स्थान पर स्वर्ग और नरक स्थित हैं पर एक का दूसरे से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस युग में Relativity (सापेक्षतावाद) की कल्पना प्रदान की गई थी। अर्थात् एक ही स्थान में होते हुए आयाम बदल जाने से दो वस्तुओं का परस्पर कोई संबन्ध नहीं रहता।

सूरः अल् हदीद की प्रमुख आयत वह है जिसमें घोषणा की गई है कि हमने लोहे को उतारा। अरबी शब्द नुजूल का जो अनुवाद जनसाधारण करते हैं उसके अनुसार लोहा मानो आकाश से बरसा है हालाँकि वह धरती की गहराइयों से खोद कर निकाला जाता है। इस आयत से नुजूल शब्द की वास्तविकता ज्ञात हो जाती है कि वह वस्तु जो अपने आप में सबसे अधिक लाभदायक है उसके लिए कुरआन करीम में शब्द नुजूल प्रयुक्त हुआ है। अतः इसी दृष्टि से पशुओं के लिए भी नुजूल शब्द आया है। वस्त्र के

सम्बन्ध में भी नुजूल शब्द आया है। सबसे बढ़ कर यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कहा गया, कह अन ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्ररसूलन् (अत-तलाक 11-12) अर्थात् निःसन्देह अल्लाह ने तुम्हारी ओर साक्षात् अल्लाह का स्मरण करने वाला रसूल उतारा है। सारे विद्वान् सहमत हैं कि सशरीर आप सल्ल. आकाश से नहीं उतरे। अतः यहाँ पर इसके सिवा और कोई अर्थ नहीं कि समस्त रसूलों में मानव जाति को सबसे अधिक लाभ पहुँचाने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे।

फिर इसी सूरः में सहाबा रज़ि. के सम्बन्ध में यह वर्णन है कि उनका नूर उनके आगे भी चलता था और उनके दाहिने भी। मानो वे अपने नूर से अपना मार्ग देख रहे थे।



سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدِيَّةٌ تِلْأَثُونَ آيَةٌ وَ أَرْبَعَةُ رُكُوعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

आकाशों और धरती में जो है अल्लाह
ही का गुणगान करता है । और वह
पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम
विवेकशील है । 12।

आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी
का है । वह जीवित करता है और मारता
है । और वह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे
स्थायी सामर्थ्य रखता है । 13।

वही आदि और वही अन्त, वही प्रकाश्य
और वही अप्रकाश्य है । और वह हर
चीज़ का स्थायी ज्ञान रखता है । 14।

वही है जिसने आकाशों और धरती को
छः युगों में पैदा किया । फिर वह अर्श
पर विराजमान हो गया । वह (उसे)
जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है
और जो उसमें से निकलता है और जो
आकाश से उतरता है और जो उस की
ओर चढ़ जाता है । और जहाँ कहीं भी
तुम हो वह तुम्हारे साथ होता है । और
जो तुम करते हो अल्लाह उस पर सदा
गहन दृष्टि रखने वाला है । 15।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

لَهُ مَلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَخْلُقُ وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ③

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ
وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ④

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ أَسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ
يَعْلَمُ مَا يَلْجُخُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَأْخُرُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑤

* अल्लाह तआला के अर्श पर विराजमान होने का अभिप्राय यह है कि वह ब्रह्माण्ड के सारे काम पूरा
करने के बाद खाली नहीं बैठा बल्कि उनके निरीक्षण के लिए अर्श पर विराजमान हो गया ।
संसार में जितने काम हम देखते हैं कि दिखने में तो लगता है कि वे अपने आप हो रहे हैं परन्तु उन
सब पर अंसर्व फ़रिशते तैनात हैं जो अल्लाह के आदेश से उनकी निगरानी कर रहे हैं ।→

धरती और आकाश का साम्राज्य उसी का है और अल्लाह की ओर ही समस्त विषय लौटाए जाते हैं । 16।

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है । और वह सीनों की बातों का भी सदा ज्ञान रखता है । 17।

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उसमें से खर्च करो जिसमें उसने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया । अतः तुम में से वे लोग जो ईमान ले आए और (अल्लाह के मार्ग में) खर्च किया उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है । 18।

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते ? और रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ जबकि (हे आदम की संतान !) वह तुमसे दृढ़ वचन ले चुका है । यदि तुम ईमान लाने वाले होते (तो अच्छा होता) । 19।

वही है जो अपने भक्त पर सुस्पष्ट आयतें उतारता है ताकि वह तुम्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल

لَهُ مَلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُ الْأَمْوَارُ ①

يُوَلِّنَحُ الْيَلَى فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّنَحُ النَّهَارَ فِي
الْيَلَى وَهُوَ عَلَيْهِ بِدَاتِ الصَّدَوْرِ ②

أَمْنَوْا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُّسْكُنَّ خَفِيفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ أَمْنَوْا مِنْكُمْ
وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ③

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَرَسُولِهِ
يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرِبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ
مِيَّاتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ④

هُوَ الَّذِي يَنْزِلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ سَيِّئَتِ
لِيَخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلْمَةِ إِلَى النُّورِ ⑤

←आयतांश वह उसे जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उस में से निकलता है । धरती से हर समय कुछ न कुछ आकाश की ओर उठाता रहता है और कुछ न कुछ नीचे उतरता रहता है । कुछ तो ऐसे वाष्पकण आदि हैं जिनको वापस धरती की ओर भेज दिया जाता है । परन्तु कुछ ऐसी रेडियो धर्मी और चुम्बकीय किरणें हैं जो ऊपर उठ कर धरती की सीमा से निकल जाती हैं । इसी प्रकार आकाश से उल्कापिण्डों और रेडियो धर्मी किरणों की धरती पर लगातार बौछार हो रही है । इसकी भी लगातार खोज जारी है और बहुत कुछ ज्ञात हो जाने पर भी आकाश से उतरने वाली अधिकतर किरणों का वैज्ञानिकों को ज्ञान नहीं हो सका है । यह विषयवस्तु भी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकता था ।

कर ले जाए । और निःसन्देह अल्लाह तुम पर बहुत कृपाशील (और) बार-बार दया करने वाला है । 10।

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते ? जबकि आकाशों और धरती का उत्तराधिकार अल्लाह ही का है । तुम में से कोई उसके बराबर नहीं हो सकता जिस ने विजय प्राप्ति से पूर्व खर्च किया और युद्ध किया । ये लोग दर्जों में उनसे बहुत बढ़ कर हैं जिन्होंने बाद में खर्च किया और युद्ध किया । और प्रत्येक से अल्लाह ने उत्तम (प्रतिफल का) वादा किया है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 11।

(रुकूः ١)

कौन है जो अल्लाह को उत्तम क्रण दे । ताकि वह उसे उसके लिए बड़ा दे । और उसके लिए एक बड़ा सम्मान वाला प्रतिफल भी है । 12।

जिस दिन तू मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखेगा कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिनी ओर तेजी से चल रहा है । (उन्हें कहा जाएगा) तुम्हें आज के दिन ऐसे स्वर्ग मुवारक हों जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । यही बहुत बड़ी सफलता है । 13।*

وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ①

وَمَا لَكُمْ أَلَا تُفْقِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَإِنَّ اللَّهَ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا
يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ مِنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ
وُقْتَلَ أَوْ لِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ
الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتَلُوا وَكَلَّا
وَعَدَ اللَّهُ الْحَسْنَى ۝ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَيْرٌ ۝

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضِعَفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَيْفَ يُمْعَنُ ۝

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى
نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ
بِشَرَكَمُ الْيَوْمِ جُلُّ تَجْرِي مِنْ شَطْقَهَا
الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ فِيهَا ۝ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

* मोमिनों को उनके हिदायत पाने के परिणामस्वरूप नूर प्राप्त होता है । और दाहिने हाथ से अभिप्राय हिदायत ही है ।

जिस दिन मुनाफ़िक पुरुष और मुनाफ़िक स्त्रियाँ उनसे जो ईमान लाए थे कहेंगे, हम पर भी दृष्टि डालो हम भी तुम्हारे नूर से कुछ लाभ उठा लें। कहा जाएगा, अपने पीछे की ओर लौट जाओ। फिर कोई नूर ढूँढो। तब उनके बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसका एक द्वार होगा। उसका भीतरी (भाग) ऐसा है कि उसमें कृपा होगी और उसका बाहरी (भाग) ऐसा है कि उसके सामने अज्ञाब होगा। 14।

वे उन्हें ऊँची आवाज़ से पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? वे कहेंगे हाँ क्यों नहीं! परन्तु तुमने स्वयं अपने आपको परीक्षा में डाल लिया और प्रतीक्षा करते रहे और शंका में पड़ गए और तुम्हें (तुम्हारी) कामनाओं ने धोखा दिया। यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ गया। जबकि तुम्हें शैतान ने अल्लाह के बारे में खूब धोखे में डाले रखा। 15।

अतः आज तुम से कोई मुक्तिमूल्य नहीं लिया जाएगा और न ही उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना अग्नि है। यह है तुम्हारी मित्र और क्या ही बुरा ठिकाना है। 16।

क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए समय नहीं आया कि अल्लाह के स्मरण से तथा उस सत्य (के रोब) से जो उत्तरा है, उनके दिल फट कर गिर जाएँ। और वे उन लोगों की भाँति न बनें जिन्हें

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنِفَقُونَ وَالْمُنْفِقُتُ
لِلَّذِينَ أَمْنَوْا إِنْظَرُونَا نَقْتِلُسْ مِنْ
نُورِكُمْ قَيْلَ ارْجَعُوا وَرَاءَكُمْ
فَأَنْتِمْ سُوَا نُورًا فَضْرِبَ بَيْتَهُمْ
بِسُورِهِ بَاعِ جَبَانُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ
وَظَاهِرَهُ مِنْ قِبْلِهِ الْعَذَابُ ⑩

يَأَدُونَهُمْ أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ قَاتُولَابِي
وَلِكُنْكُمْ فَتَنْتَشِمُ أَنْفَسَكُمْ وَتَرْبُصُتُمْ
وَأَرْتَبَتُمْ وَغَرَثَكُمْ الْأَمَانِيْ حَتَّى جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَثَكُمْ بِإِلَهِ الْغَرُورِ ⑪

فَإِنَّمَا لَمْ يُؤْخَذْ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا
مِنَ الظَّالِمِينَ كَفَرُوا مَا وَكَمْ الظَّالِمُ
هِيَ مَوْلَىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑫

الْمُرْيَانِ لِلَّذِينَ أَمْنَوْا أَنْ تَخْشَعَ
قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَّلَ مِنَ الْحَقِّ
وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أَوْتَوْا الْكِتَابَ مِنْ

(इससे) पूर्व पुस्तक दी गई थी ? अतः उन पर समय लम्बा हो गया तो उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से बहुत से वचन भंग करने वाले थे । 17।

जान लो कि अल्लाह धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् अवश्य जीवित करता है । हम आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं ताकि तुम बुद्धि से काम लो । 18।

निःसन्देह दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ और वे जिन्होंने अल्लाह को उत्तम ऋण दिया, उनके लिए उसे बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए एक सम्मानदायक प्रतिफल है । 19।

और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, यहीं वे लोग हैं जो अपने रब्ब के समक्ष सिद्धीक और शहीद ठहरते हैं । उनके लिए उनका प्रतिफल और उनका नूर है । और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही नरकवासी हैं । 20। (रुक् ٢٨)

जान लो कि सांसारिक जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो उच्च-उद्देश्य से बेपरवा कर दे और ठाटबाट और परस्पर एक दूसरे पर अहंकार करना है और धन और संतान में एक दूसरे से बढ़ने का प्रयास करना है । (यह जीवन) उस वर्षा के उदाहरण सदृश है जिसकी हरियाली काफिरों (के दिलों)

قَبْلَ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمْدُ فَقَسَتْ

فَلُوْبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فِسْقُونَ ⑯

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُخْرِجُ الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا فَذَبَيَّتَاهُ كُمُّ الْأَيْتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ⑯

إِنَّ الْمُصَدِّقِينَ وَالْمُحَدِّقِينَ وَأَقْرَضُوا
اللَّهُ قُرْضًا حَسَنًا يُضَعَّفُ لَهُمْ وَلَهُمْ
أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑯

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ أُولَئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ۚ وَالشَّهَدَاءُ أَمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
لَهُمْ أَجْرٌ هُمْ وَنُورٌ هُمْ ۖ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِإِيمَانِ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۖ

إِعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لِعِبَادٍ وَلَهُمْ
وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بِيَتَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۖ كَمَثِيلٍ غَيْثٍ
أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتٌ ثُمَّ يَعْنِي

को लुभाती है। अतः वह शीघ्रता पूर्वक बढ़ती है। फिर तू उसे पीला पड़ता हुआ देखता है फिर वह चूर्ण-विचूर्ण हो जाती है। और परलोक में कठोर अज्ञाब (निश्चित) है तथा अल्लाह की ओर से क्षमादान और प्रसन्नता भी है। जबकि सांसारिक जीवन तो केवल धोखे का एक अस्थायी सामान है। 121।

अपने रब्ब की क्षमाप्राप्ति की ओर तथा उस स्वर्ग की ओर भी एक दूसरे से आगे बढ़ो, जिसका फैलाव आकाश और धरती के फैलाव की भाँति है, जिसे उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाते हैं। यह अल्लाह की कृपा है, वह इसको जिसे चाहता है देता है और अल्लाह महान कृपालु है। 122।

धरती पर कोई विपत्ति नहीं आती और न स्वयं तुम्हरे ऊपर। परन्तु इस से पूर्व कि हम उसे प्रकट करें वह एक पुस्तक में (छिपी हुई) है। निःसन्देह यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है। 123।

(याद रहे यह अल्लाह का विधान है) ताकि जो तुम से खोया गया तुम उस पर खेद न करो और जो उसने तुम्हें दिया है, उस पर न इतराओ। और अल्लाह किसी अहंकारी, बढ़-बढ़ कर इतराने वाले को पसन्द नहीं करता। 124।

(अर्थात्) उन लोगों को जो कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं। और जो मुँह फेर ले तो

فَتَرَهُ مُصْفَرًّا إِنَّمَا يَكُونُ حَطَامًا
وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ
مِنْ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعُ الْفَرُورِ ①

سَاقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَاحَتِهِ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
أُعْدَتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتَيْهُ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ②

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتْبٍ مِنْ قَبْلِ
أَنْ تُبَرَّأُهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ
لِكِنْ لَا تَأْسُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا أَتَكُمْ وَاللَّهُ لَا يَعْلَمُ
كُلَّ مُحْتَالٍ فَقُوْرِ ③

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ
بِالْبَخْلِ وَمَنْ يَسْوَلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ

(वह जान ले कि) निःसन्देह अल्लाह ही
निस्पृह और प्रशंसा योग्य है । 25।

हमने निःसन्देह अपने रसूल स्पष्ट चिह्नों
के साथ भेजे और उनके साथ पुस्तक
और न्याय की तुला भी उतारी ताकि
लोग न्याय पर कायम रह सकें । और
हमने लोहा उतारा जिसमें घोर युद्ध का
सामान और मनुष्य के लिए बहुत से
लाभ हैं । ताकि अल्लाह उसे जान ले जो
उसकी ओर उसके रसूलों की परोक्ष में
भी सहायता करता है । निःसन्देह
अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण
प्रभुत्व वाला है । 26। (रुकू^{۳۹})

और निःसन्देह हमने नूह और इब्राहीम
को (भी) भेजा और दोनों की संतान में
नुबुव्वत और पुस्तक (दान स्वरूप) रख
दी । अतः उनमें वह भी था जो हिदायत
पा गया जबकि एक बड़ी संख्या उनमें से
पथप्रभृतों की थी । 27।*

फिर हमने उनके पदचिह्नों पर लगातार
अपने रसूल भेजे । और मरियम के पुत्र
ईसा को भी पीछे लाए और उसे हमने
इंजील प्रदान की । और उन लोगों के
दिलों में जिन्होंने उसका अनुसरण किया
नहीं और दयाशीलता रख दी । और
हमने उन पर वह ब्रह्मचर्य अनिवार्य नहीं
किया था जिसे उन्होंने नई प्रथा गढ़ ली ।
परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति
(अनिवार्य की थी) । फिर उन्होंने उस
की छूट का हक अदा न किया । अतः

الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑦

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رَسُلًا إِلَيْبِنَتِ وَأَنْزَلْنَا
مَعَهُمُ الْكِتَبَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُولُوا إِنَّا
بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنْزَلْنَا الْحَمِيدَ فِيهِ بَأْسٌ
شَدِيدٌ وَمَنَافِعٌ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ
مَنْ يَصْرُهُ وَرَسُلُهُ بِالْغَيْبِ ۖ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ عَزِيزٌ ۖ ۷

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعْلَنَا
فِي ذِرِّيَّتِهِمَا التَّبُوَّةَ وَالْكِتَبَ فِيمَنْهُمْ
مُهْتَدٍ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فُسُقوْنَ ۷

شَرَّ قَفَنِيْنَا عَلَى أَثَارِهِمْ بِرَسُلِنَا
وَقَفَنِيْنَا بِعِنْسِيْ ابْنِ مَرْيَمَ وَأَتَيْنَاهُ
الْأَنْجِيلَ ۖ وَجَعْلَنَا فِي قُلُوبِ الظَّيْنَ
الثَّبُوَّةَ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً
ابْتَدَأْعُهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا
ابْتِغَاءِ رَضْوَانِ اللَّهِ فَمَارَعَوْهَا حَقًّ

* अरबी शब्द फ़ासिक का अर्थ पथप्रभृत । देखें शब्दकोश अल मुन्जिद ।

हमने उनमें से उनको जो ईमान लाए (और नेक कर्म किए) उनका प्रतिफल दिया । जबकि एक बड़ी संख्या उनमें दुराचारियों की थी । 128।*

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्वा धारण करो और उसके रसूल पर ईमान लाओ वह तुम्हें अपनी दया में से दोहरा भाग देगा । और तुम्हें एक नूर प्रदान करेगा जिसके साथ तुम चलोगे । और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 129।

ताकि अहले किताब कहीं यह न समझ बैठें कि इन (मोमिनों) को अल्लाह की कृपा प्राप्ति का कुछ सामर्थ्य नहीं । जबकि निःसन्देह सारी कृपा अल्लाह ही के हाथ में है । वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बहुत बड़ा कृपालु है । 130। (रुकू ४/२०)

رِعَايَتَهَا فَإِنَّا لِلَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَأَمْتُوا^١
بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كُفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ
وَيَجْعَلُ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ
وَيَغْرِي لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

إِنَّمَا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ أَلَا يَقْدِرُونَ
عَلَى شَيْءٍ مِّنْ قَصْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ
بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

* इस आयत में विशेष रूप से उस रहबानियत (आजीवन ब्रह्मचर्य) का उल्लेख है जो आजकल ईसाई पादरियों और ब्रह्मचारिणियों में आजीवन अविवाहित रहने की नई प्रथा के रूप में जारी है । अल्लाह तआला का कदापि यह उद्देश्य नहीं था बल्कि उनको तक्रवापूर्ण जीवन यापन करने का आदेश था जिस का आरम्भिक युर्गान ईसाइयों ने यथोचित पालन किया । परन्तु बाद के समय में इसमें अतिशयोक्ति करते हुए आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने की नई प्रथा जारी कर दी गई ।

58- सूरः अल-मुजादलः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं।

सूरः अल-मुजादलः: में प्रमुख विषयवस्तु यह वर्णन किया गया है कि अरबों की यह रीति अर्थहीन है कि नाराजगी में पत्नियों को माँ कह कर अपने लिए अवैध ठहरा लिया जाय। माँ तो वही होती है जिसने जन्म दिया हो। फिर फर्माया कि इन व्यर्थ बातों का प्रायश्चित किया करो और इन व्यर्थ बातों से बचते हुए अपनी पत्नियों की ओर लौटो।

सूरः अल् हदीद में लोहे का वर्णन है और काटने और चीरने फाइने के लिए लोहे का ही प्रयोग किया जाता है। परन्तु यह इसका भौतिक प्रयोग है परन्तु सूरः अल् मुजादलः में जो बार-बार युहादू न और हाद (वे विरोध करते हैं) शब्द आया है इससे अभिप्राय आध्यात्मिक रूप से एक दूसरे को फाइना है। और लगातार यह वर्णन है कि जो लोग हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आध्यात्मिक रूप से आधात पहुँचाते हैं और सहाबा रजि. के बीच मतभेद उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं और इस उद्देश्य से छिप कर परामर्श करते हैं, वे सब अपने आप को विनष्ट करने वाली बातें करते हैं। फर्माया, जो भी अल्लाह और रसूल को अपनी छींटाकशियों से आधात पहुँचाते हैं वे असफल होंगे और अल्लाह तआला ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि वह और उसके रसूल अवश्य विजयी होंगे।



سُورَةُ الْمُجَادِلَةِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِ لِلرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

निश्चित रूप से अल्लाह ने उसकी बात
सुन ली है जो अपने पति के विषय में
तुम्ह से बहस करती थी और अल्लाह से
शिकायत कर रही थी, जबकि अल्लाह
तुम दोनों की वार्तालाप को सुन रहा था।
निःसन्देह अल्लाह सदा सुनने वाला
(और) गहन दृष्टि रखने वाला है । । ।

तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों को माँ
कह देते हैं, वे उनकी माँ नहीं हो
सकतीं, उनकी माएँ तो वही हैं जिन्होंने
उनको जन्म दिया । और निःसन्देह वे
एक अत्यन्त अप्रिय और झूठी बात
कहते हैं । और अल्लाह निःसन्देह बहुत
माफ करने वाला (और) बहुत
क्षमाशील है । । ।

और वे लोग जो अपनी पत्नियों को माँ
कह देते हैं, फिर अपनी कही हुई बात से
पीछे हटते हैं, तो इसके पूर्व कि वे दोनों
एक दूसरे को छूएँ एक गर्दन (दास)
मुक्त करना (अनिवार्य) है । यह वह
(बात) है जिसका तुम्हें उपदेश दिया
जाता है । और जो तुम करते हो अल्लाह
उससे सदा अवगत रहता है । । ।

अतः जो (इसका) सामर्थ्य न रखे तो
लगातार दो महीने के रोज़े रखना है इससे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تَجَادِلُكَ فِي
زُوْجِهَا وَشَتِّكَ اَلِ اللَّهُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
تَحَاوُرَكُمَا اِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ②

اَلَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مِنْ تِسَاءُهُمْ
مَا هُنَّ اَمْهَمُهُمْ اِنْ اَمْهَمُهُمْ اَلَا اَنَّ
وَلَدَنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا
مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ اللَّهَ
لَعْفُوٌ غَفُورٌ ③

وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ تِسَاءُهُمْ ثُمَّ
يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا فَتَعْرِيزٌ رَقْبَةٌ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَسْمَاعَ اَذْلِكُمْ ثُمَّ عَظُونَ بِهِ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ④

فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فِصَامَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعِينِ

पूर्व कि वे दोनों एक दूसरे को छूएँ। फिर जो (इसका भी) सामर्थ्य न रखता हो तो साठ दरिद्रों को भोजन कराना है। यह इस कारण है कि तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर से संतुष्टि* प्राप्त हो। यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं। और काफिरों के लिए बहुत ही पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है। 15।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, जबकि हम सुस्पष्ट चिह्न उतार चुके हैं। वे उसी प्रकार तबाह कर दिए जाएंगे जैसे उनसे पहले लोग तबाह कर दिए गए। और काफिरों के लिए एक बड़ा अपमान-जनक अज्ञाब (निश्चित) है। 16।

जिस दिन अल्लाह उनको एक समूह के रूप में उठाएगा फिर उन्हें उसकी ख़बर देगा जो वे किया करते थे। अल्लाह ने उस (कर्म) को गिन रखा है जबकि वे उसे भूल चुके हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है। 17। (रुकूं ١)

क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह उसे जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है? कोई तीन (व्यक्ति) गुप्त मंत्रणा नहीं करते जबकि वह उनका चौथा न हो। और न ही कोई पाँच (मंत्रणाकारी) ऐसे होते हैं जबकि वह उनका छठा न हो और चाहे इससे कम अथवा अधिक (हों) परन्तु वह उनके साथ होता है, जहाँ कहीं भी वे हों। फिर

مِنْ قَبْلِ أَنْ يَسْمَا سَعْدًا فَمَنْ لَمْ يُسْطِعْ
فَإِطْعَامُ سَيِّئَاتِ مُشْكِينًا ذَلِكَ
لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَلَكَ حَذْوَةَ
اللَّهِ وَلِلْكُفَّارِ عَذَابُ الْيَمِّ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَحَاذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَيْتُوا
كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْتُمْ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكُفَّارِينَ
عَذَابُ مُهِمَّيْنِ ۝

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَنْبَيِّهُمْ بِمَا
عَمِلُوا إِنَّ أَحْصَنَهُمُ اللَّهُ وَسَوْءَةُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

أَلْمَرَآنَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى شَلَّةٍ
إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ
سَادِسُهُمْ وَلَا آدُلَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ
إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۝
لَمْ يَنْبَيِّهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝

* इन अर्थों के लिए देखें शब्दकोश 'अल मुफरदात फ़ी गरीबिल कुरआन'।

वह उन्हें क्रयामत के दिन उसकी सूचना देगा जो वे करते रहे । निःसन्देह अल्लाह हर चीज़ का खूब ज्ञान रखता है । १८ ।

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई ? जिन्हें गुप्त मन्त्रणाओं से मना किया गया परन्तु वे फिर वहीं कुछ करने लगे जिससे उनको मना किया गया था । और वे पाप, उद्धण्डता और रसूल की अवमानना के बारे में परस्पर गुप्त मन्त्रणा करते हैं । और जब वे तेरे पास आते हैं तो वे इस प्रकार तुझसे शुभ-कामना प्रकट करते हैं जिस प्रकार अल्लाह ने तुझ पर सलाम नहीं भेजा । और वे अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें इस पर अज्ञाब क्यों नहीं देता जो हम कहते हैं । उन (से निपटने) को नरक पर्याप्त होगा । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अतः क्या ही बुरा ठिकाना है । १९ ।*

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम परस्पर गुप्त मन्त्रणा करो तो पाप, उद्धण्डता और रसूल की अवमानना पर आधारित मन्त्रणा न किया करो । हाँ नेकी और तक़वा के विषय में मन्त्रणा किया करो । और अल्लाह से डरो जिसके समक्ष तुम इकट्ठे किए जाओगे । २० ।

* इस आयत में सबसे पहले अरबी शब्द नज्जा अर्थात् गुप्त मन्त्रणा करने का उल्लेख है । गुप्त मन्त्रणा करना तो पाप की बात नहीं सिवाएँ इसके कि उन मन्त्रणाओं का विषयवस्तु अत्याचार करना हो और उनमें अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध धड़यन्त्र रचे जा रहे हों । इन्हीं लोगों का और अधिक परिच्छय यह करवाया गया है कि जब वे रसूल की सेवा में उपस्थित होते हैं तो दिखावे का सलाम करके मन में बुरी भावना रखते हैं और फिर मन ही मन में समझते हैं कि हम पर तो इसके परिणाम स्वरूप कोई अज्ञाब नहीं आया । अल्लाह तआला उनकी मनस्थिति को जानता है और निःसन्देह वे नरक में डाले जाएँगे ।

إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑤

الْحُرَّةِ إِلَى الَّذِينَ نَهَوْا عَنِ الْجُوُزِ
ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نَهَوْا عَنْهُ وَيَسْتَجْوَنَ
بِالْأَثْمِ وَالْعَدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءَهُمْ لَهُ حَيْوُكَ بِمَا
لَمْ يَحْتَلِكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فَ
أَنْفَسْهُمْ لَوْلَا يَعْذِبَ اللَّهُ بِمَا نَقُولُ
حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلُوْنَهَا فَيُسْرِ
الْمُصِيرُ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْأَثْمِ وَالْعَدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبُرِّ وَالثَّمَوْيِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُخْسَرُونَ ⑤

गुप्त घड़यन्त्र तो केवल शैतान की ओर से होते हैं ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए शोक में डाल दे । जबकि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना उन्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता । अतः चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें । 11।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हें यह कहा जाए कि सभाओं में (दूसरों के लिए) जगह खुली कर दिया करो तो खुली कर दिया करो, अल्लाह तुम्हें खुलापन प्रदान करेगा । और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो । अल्लाह उन लोगों के दर्जों को ऊँचा करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और विशेषकर उनके जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 12।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम रसूल से (कोई व्यक्तिगत) परामर्श करना चाहो तो अपने परामर्श से पूर्व दान दिया करो । यह बात तुम्हारे लिए उत्तम और अधिक पवित्र है । अतः यदि तुम (दान के लिए अपने पास) कुछ न पाओ तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 13।

क्या तुम (इस बात से) डर गए हो कि अपने (व्यक्तिगत) परामर्शों से पूर्व दान दिया करो । अतः जब तुम

إِنَّمَا الظَّجَوْيَ مِنَ الشَّيْطَنِ لِيَحْرُثَ النَّذِينَ
أَمْنُوا وَلَيْسَ بِصَارِهُ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑩

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَقْسِمُوهَا
فِي الْمَجْلِسِ فَأَفْسِحُوهَا يَفْسِحَ اللَّهُ لَكُمْ
وَإِذَا قِيلَ اشْرُبُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعَ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ
دَرَجَتٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ
فَكَذِّبُ مُوَابَيْنَ يَدْعُونَكُمْ صَدَقَةً
ذَلِكَ حَيْرَ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۝ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑫

ءَأَشْفَقْتُمُ أَنْ تَقْرِئُوا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوِكُمْ صَدَقَتِ ۝ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا

ऐसा न कर सको जबकि अल्लाह ने तुम्हारा प्रायश्चित्त स्वीकार कर लिया है तो नमाज को क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ॥14॥ (रुक् ٢)

क्या तूने उनकी ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्होंने ऐसे लोगों को मित्र बनाया जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ ? ये लोग न तुम्हारे हैं न उनके, और वे जानबूझ कर झूठ पर क़समें खाते हैं ॥15॥

उनके लिए अल्लाह ने कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है । जो वे करते हैं निःसन्देह (वह) बहुत ही बुरा है ॥16॥ उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है । अतः उन्होंने अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोक रखा है । परिणामस्वरूप उनके लिए अपमानजनक अज़ाब (निश्चित) है ॥17॥

उनके धन और उनकी संतान अल्लाह के विरुद्ध उनके किसी काम नहीं आएंगे । यही आग (में पड़ने) वाले लोग हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं ॥18॥

जिस दिन अल्लाह उनको इकट्ठा उठाएगा तो वे उसके सामने भी उसी प्रकार क़समें खाएंगे जिस प्रकार तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं । और धारणा करेंगे कि वे किसी सिद्धान्त

وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَاقْمِمُوا الصَّلَاةَ
وَأَنُوَّا الرَّكْوَةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

الْفَرَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلُّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ
وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ۝

أَعَدَ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا لَّا يَنْهَا سَاعَةٌ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

إِنْخَذُوا أَيمَانَهُمْ جَنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَمْ يَرْعَ عَذَابًا مُّهِمِّينَ ۝

لَنْ تَغْنِ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا
أَوْلَادُهُمْ مِّنْ اللَّهِ يُسْأَلُ أُولَئِكَ أَصْحَابُ
الثَّارِثَهُمْ فِيهَا حَلِيلُونَ ۝

يَوْمَ يَعْثَمُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فِي حَلْقَوْنَ لَهُ
كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ

पर (क्रायम) हैं । सावधान ! यही हैं जो झूठे हैं । 119।

शैतान उन पर विजयी हो गया । अतः उसने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी । यही शैतान के समुदाय हैं । सावधान ! शैतान ही का समुदाय ही अवश्य हानि उठाने वाला है । 120।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे ही घोर अपमानित लोगों में से हैं । 121।

अल्लाह ने लिख रखा है कि अवश्य मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है । 122।

तू कोई ऐसे लोग नहीं पाएगा जो अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान रखते हुए ऐसे लोगों से मित्रता करें जो अल्लाह और उसके रसूल से शत्रुता करते हों । चाहे वे उनके बाप-दादा हों अथवा उनके बेटे हों अथवा उनके भाई हों अथवा उनके समुदाय के लोग हों । यही वे (आत्मसम्मानी) लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह ने ईमान लिख रखा है । और उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है । और वह उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिन के दामन में नहरें बहती हैं वे उनमें सदा रहते चले जाएँगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए । यही अल्लाह का समुदाय है । सावधान !

عَلٰى شَيْءٍ لَا إِلٰهٌ مُّبِينٌ الْكَذَّابُونَ ⑦

إِسْتَحْوَدَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَنُ فَأَنْسَاهُمْ ذِكْرَ
اللَّهِ أُولَئِكَ حُرْبُ الشَّيْطَنِ لَا إِنَّ
حُرْبَ الشَّيْطَنِ هُمُ الْخَسِرُونَ ⑧

إِنَّ الَّذِينَ يَعَادُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ⑨

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبِنَّ أَنَا وَرَسُولِيٌّ إِنَّ اللَّهَ
قَوِيٌّ عَزِيزٌ ⑩

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ يُؤْمِنُونَ مَنْ حَادَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا أَبْاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْرَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْأَيْمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ
مِّنْهُ وَيَدُخِلُهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ خَلِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضِيَ عَنْهُمْ أُولَئِكَ حُرْبُ اللَّهِ

اللَّا إِنْ حَرْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٢٣﴾
अल्लाह ही का समुदाय है जिनमें हैं सफल होने वाले लोग हैं। 123।*

(रुक् ३)

* आयतांश : अव्यदहुम विस्त्रहिम मिन हु (उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है) में हुम (अर्थात् उन) सर्वनाम सहाबा के लिए प्रयुक्त हुआ है और कहा गया है कि सहाबा रजि. पर रुह-उल-कुदुस उतरता था। इस दृष्टि से ईसाइयों के लिए गर्व करने का कोई स्थान नहीं रहता कि हज़रत ईसा अलै. पर रुह-उल-कुदुस उतरता था। वह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम के सेवकों पर भी उतरता था और उनका सहायक होता था।

59—सूरः अल—हश्रे

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 25 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में एक हश्रे (प्रतिफल दिवस) का उल्लेख है और इसके अन्त पर भी एक महान प्रतिफल दिवस का वर्णन है। प्रथम प्रतिफल दिवस जिसे अब्बलुल हश्रे कहा गया है उस दिन यहूदियों को जो दण्ड दिये गये उससे मानो उनके लिए प्रथम प्रतिफल दिवस कायम हो गया और प्रत्येक को उसके पाप के अनुसार दण्ड दिया गया। कुछ के लिए निर्वासन निश्चित किया गया। कुछ के लिए अपने हाथों अपने ही घरों को नष्ट करने का दण्ड निर्धारित हुआ तथा कुछ को मृत्युदण्ड दिया गया। अतः यह प्रथम प्रतिफल दिवस है जिसमें दण्डों का विवरण है। इस सूरः के अंत पर जिस प्रतिफल दिवस का उल्लेख है उसमें यह वर्णन किया गया कि दण्ड उनको मिलते हैं जो अल्लाह की याद को भुला देते हैं और फिर अपनी आत्मा की अच्छाई और बुराई को भूल जाते हैं। परन्तु उनके अतिरिक्त वे भी हैं जो प्रत्यके अवस्था में अल्लाह को याद रखते हैं और दृष्टि रखते हैं कि वे अपने कैसे कर्म आगे भेज रहे हैं। उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान किया जाएगा।

अल्लाह के गुणगान का जो विषयवस्तु पहली सूरतों में और इस सूरः के आरम्भ में वर्णित है, इस सूरः के अन्त पर उसी विषयवस्तु का उत्कर्ष है जो आयत संख्या 23 से आरम्भ होती है। इनमें अल्लाह तआला के कुछ महान गुणवाचक नाम उल्लेख किये गए हैं और आयत संख्या 25 में समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं कह कर यह वर्णन कर दिया गया है कि केवल इतने ही नाम नहीं बल्कि समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं।



سُورَةُ الْحَشْرِ مَدْيَنَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ خَمْسٌ وَ عَشْرُونَ آيَةً وَ تَلَاقَهُ رُكُوعُهَا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । ॥

जो आकाशों और धरती में है वह
अल्लाह का गुणगान करता है और वही
पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम
विवेकशील है । ॥

वही है जिसने अहले किताब में से उनको
जिन्होंने इनकार किया प्रथम प्रतिफल
दिवस के अवसर पर उनके घरों से
निकाला । तुम धारणा नहीं करते थे कि
वे निकल जाएँगे जबकि वे यह समझते थे
कि उनके दुर्ग अल्लाह से उनकी रक्षा
करेंगे । फिर अल्लाह उन तक आ पहुँचा
जहाँ से (आने की) वे कल्पना तक न कर
सके । और उसने उनके दिलों में रोब
डाल दिया । वे स्वयं अपने ही हाथों और
मोमिनों के हाथों से भी अपने घरों को
नष्ट करने लगे । अतः हे बुद्धिसंपन्न
लोगो ! शिक्षा ग्रहण करो । ॥ ३१ *

और यदि अल्लाह ने उनके लिए निर्वासन
निश्चित न किया होता तो उन्हें इसी
लोक में अज्ञाव देता जबकि परलोक में
उन के लिए (अवश्यमेव) अग्नि का
अज्ञाव (निश्चित) है । ॥

यह इस कारण है कि उन्होंने अल्लाह
और उसके रसूल का घोर विरोध किया ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ اللَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لَا قُلِ الْحَشْرُ ۝
مَا ظَنَّتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنَّوْا
أَنَّهُمْ مَانِعُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنْ اللَّهِ
فَأَتَتْهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا
وَقَدْ فَرِيقُهُمْ الرُّغْبَ يُخْرِجُونَ
بِيُوْتَهُمْ بِإِيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ ۝
فَاعْتَبِرُوا يَا وَلِيَ الْأَبْصَارِ ③

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ
لَعَذَبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
عَذَابٌ أَنَّارٍ ④

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ

* इस आयत में यहूदी क़बीला बनु नजीर के निर्वासित होने की घटना का उल्लेख है ।

और जो अल्लाह का विरोध करता है तो निःसन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है । १।

जो भी खजूर का वृक्ष तुमने काटा अथवा उसे अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो अल्लाह के आदेश पर ऐसा किया । और ऐसा करने का यह कारण था कि वह दुराचारियों को अपमानित कर दे । १।

और अल्लाह ने उन (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को युद्धलब्ध धन स्वरूप जो प्रदान किया तो उस के लिए तुमने न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट । परन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । १।

अल्लाह ने कुछ बस्तियों के निवासियों (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को जो कुछ युद्धलब्ध धन के रूप में प्रदान किया है तो वह अल्लाह के लिए और रसूल के लिए है और निकट सम्बन्धियों, अनाथों और दरिद्रों और यात्रियों के लिए है । ताकि ऐसा न हो कि यह (युद्धलब्ध धन) तुम्हारे धनवानों ही के बीच में चक्कर लगाता रहे । और रसूल जो तुम्हें प्रदान करे तो उसे ले लो और जिस से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह का तक्कवा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है । १।

يَسَّاقِ اللَّهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ①

مَا قَطْعَتْ مِنْ لَيْلَةٍ أَوْ تَرْكَتْ مُهْرَبًا
فَإِيمَةً عَلَى أَصْوْلِهَا فِي أَذْنِ اللَّهِ
وَلِيَخْرِي الْفَسِيقِينَ ②

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا
أُوجَحَتْ مُهْرَبًا مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ
وَلِكَنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ③

مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرْبَى
فِيلَلَهُ وَلِرَسُولِهِ وَلِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى
وَالْمَسَاكِينُ وَابْنِ السَّيْلِ لَئِنْ لَا يَكُونَ
دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۝ وَمَا أَنْكُمْ
رَرَسُولُ فَهُدُوفُهُ ۝ وَمَا نَهَكُمْ عَنْهُ
فَاتَّهُوا ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۝ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ④

(यह धन) उन दरिद्र मुहाजिरों के लिए भी है जो अपने घरों से निकाले गए और अपनी धन-सम्पत्तियों से (अलग किए गए) । वे अल्लाह ही से कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता करते हैं । यही वे हैं जो सच्चे हैं । ११

और वे लोग जिन्होंने उनसे पूर्व ही घर तैयार कर रखे थे और ईमान को (दिलों में) स्थान दिया था । वे उनसे प्रेम करते थे जो हिजरत करके उनकी ओर आए और जो कुछ उन (मुहाजिरों) को दिया गया था (वे) उसकी कोई लालसा नहीं रखते थे । और स्वयं तंगी में होते हुए भी अपनी जानों पर दूसरों को प्राथमिकता देते थे । अतः जो कोई भी आत्मा की कृपणता से बचाया जाए तो यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं । १०

और जो लोग उनके बाद आए वे कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें और हमारे उन भाइयों को भी क्षमा कर दे जो ईमान में हम से आगे निकल गए । और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, कोई द्वेष न रहने दे । हे हमारे ॥५६॥^१ रजिम ॥११॥ रब्ब ! निःसन्देह तू बड़ा कृपालु (और) बार-बार दया करने वाला है । ११ ॥*

(रुक् । ४)

لِلْفَقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أَخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا
عِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَيَسْرُونَ اللَّهُ
وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ٦

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُ الدَّارَ وَالْأَيْمَانَ مِنْ
قَبْلِهِمْ يَحْجُوْنَ مِنْ هَاجِرَ إِلَيْهِمْ وَلَا
يَجِدُونَ فِي صَدْرِهِمْ حَاجَةً قَمَّا
أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ
بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقَ شَحَ نَفْسِهِ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٧

وَالَّذِينَ جَاءُوكُمْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
أَغْفِرْنَا وَلَا خَوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا
بِالْأَيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غُلَّا
لِلَّذِينَ أَمْتَوْا زَبَّاتَنَا إِنَّكَ رَبُّ الْوُفْفَ رَجِيمٌ ٨

* आयत संख्या 9 से 11 : ये आयतें अन्सार और मुहाजिरों के ईमान और उन्हें आध्यात्मिक दर्जों का वर्णन कर रही हैं । हजरत इमाम जैनुल आबिदीन रही, की सेवा में एक बार इराक के राफज़ियों (शीया संप्रदाय का एक गुट) का एक शिष्ट मण्डल उपस्थित हुआ और उन्होंने हजरत अबू बकर, उमर और उसमान रज़ि, के विरुद्ध बातें कीं । हजरत जैनुल आबिदीन रही, ने उनसे कहा कि क्या→

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई जिन्होंने कपट किया । वे अहले किताब में से अपने उन भाइयों से जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि यदि तुम निकाल दिए गए तो तुम्हारे साथ हम भी अवश्य निकलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का आज्ञापालन नहीं करेंगे । और यदि तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई की गई तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे । और अल्लाह गवाही देता है कि निःसन्देह वे झूठे हैं ॥121॥

और यदि वे निकाल दिए गए तो उनके साथ ये नहीं निकलेंगे और यदि उनसे लड़ाई की गई तो ये कभी उनकी सहायता नहीं करेंगे । और यदि ये उनकी सहायता करेंगे भी तो अवश्य पीछा दिखा जाएँगे । फिर उनकी कोई सहायता न की जाएगी ॥131॥

उनके दिलों में भय उत्पन्न करने की दृष्टि से निश्चित रूप से तुम (उनके निकट) अल्लाह से अधिक कठोर (प्रतीत होते) हो । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं ॥141॥

वे किलाबन्द बस्तियों में अथवा प्राचीरों के ओट में रहकर युद्ध करने के अतिरिक्त तुमसे इकट्ठे होकर युद्ध नहीं

الْمُتَرَابُ الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ
لَا خَوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَبِ لَئِنْ أَخْرَجْتُمُ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيْكُمْ أَحَدًا^١
وَإِنْ قُوْتِلْتُمْ تُنْصَرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهُدُ
إِنَّهُمْ لَكَذِيبُونَ^٢

لَئِنْ أَخْرَجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ^٣
وَلَئِنْ قُوْتِلُوا لَا يَسْرُرُونَهُمْ^٤ وَلَئِنْ
لُّصْرُوفُهُمْ لَيَوْمٍ الْأَذْبَارِ^٥ لَمَّا
يُصْرُفُونَ^٦

لَا نَنْتَمْ أَشَدُّ رُهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنْ
اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ^٧

لَا يَقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَىٰ

←तुम लोग मुहाजिरों में से हो ? (जिनका आयत सं. 9 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं । फिर उन्होंने पूछा, तो क्या तुम अन्सार में से हो ? (जिनका आयत सं. 10 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं । उन्होंने कहा, तो फिर मैं गवाही देता हूँ कि तुम उन लोगों में से भी नहीं हो (जिनका वर्णन आयत सं. 11 में है और) जिनके बारे में आया है और जो लोग उनके बाद आए वे....।
(करकुल सुम्मा, भाग 2, पृष्ठ 290, बैरूत प्रकाशन 1401 हिजरी)

करेंगे । उनकी लड़ाई परस्पर बहुत कठोर है । तू उन्हें इकट्ठा समझता है जबकि उनके दिल फटे हुए हैं । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते ॥15॥*

(ये) उन लोगों की भाँति (हैं) जो उनसे अल्प समय पूर्व अपने कर्मों का दुष्कल भोग चुके हैं । और उनके लिए पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है ॥16॥

उन का उदाहरण शैतान की भाँति है, जब उसने मनुष्य से कहा, इनकार कर दे । अतः जब उसने इनकार कर दिया तो कहने लगा कि निश्चित रूप से मैं तुम्हारा जिम्मेदार नहीं हूँ । निःसन्देह मैं तो समस्त लोकों के रब्ब, अल्लाह से डरता हूँ ॥17॥

अतः उन दोनों का अंत यह ठहरा कि वे दोनों ही आग में पड़ेंगे । दोनों उसमें लम्बे समय तक रहने वाले होंगे अत्याचारियों का यही प्रतिफल हुआ करता है ॥18॥ (रुक् २)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्रवा धारण करो । और प्रत्येक जान यह ध्यान रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रही है । और अल्लाह का

* यह यहूदियों के सम्बन्ध में एक भविष्यवाणी है जो क्र्यामत तक इसी प्रकार पूरी होती रहेगी । जब तक यहूदियों को मजबूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग उपलब्ध न हों, जो प्रत्येक युग में परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हों, और इसके परिणाम स्वरूप उनको अपनी श्रेष्ठता का विश्वास न हो, वे कभी भी प्रतिपक्ष से युद्ध नहीं करेंगे । परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके दिल परस्पर इकट्ठे हैं । प्रत्यक्ष रूप में तो वे अपने शत्रु के विरुद्ध इकट्ठे दिखाई देते हैं परन्तु परस्पर सदा उनके दिल एक दूसरे से फटे रहते हैं । वर्तमान काल में जिन लोगों को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों के समान ठहराया है उनकी भी बिल्कुल यही अवस्था है ।

مَحَصَّنَةٌ أُوْ مِنْ وَرَاءِ جَدَرٍ بِأَسْهَمٍ
بِيَتَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ
شَطِئٌ ذِلَّةٌ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝
كَمَثِيلِ الظَّالِمِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا
وَبَالْأَمْرِ هُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
كَمَثِيلِ الشَّيْطَنِ إِذْ قَالَ لِلإِنْسَانِ اكْفُرْ ۝
فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكَ إِنِّي
أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَلَمِينَ ۝

فَكَانَ عَاقِبَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ
خَالِدِينَ فِيهَا ۝ وَذَلِكَ جَزَّ الظَّالِمِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُنْظَرُ
نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَيْرٍ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۝

तक्कवा धारण करो । निःसन्देह जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 19।

और उन लोगों के सदृश न बन जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं अपने आप से विस्मृत करवा दिया । यही दुराचारी लोग हैं । 20।

अग्नि (अर्थात् नरक) वाले और स्वर्ग वाले कभी समान नहीं हो सकते। स्वर्गगामी ही सफल होने वाले हैं । 21।

यदि हमने इस कुरआन को किसी पर्वत पर उतारा होता तो तू अवश्य देखता कि वह अल्लाह के भय से विनाशित करते हुए टुकड़े-टुकड़े हो जाता । और ये उदाहरण हैं जिन्हें हम लोगों के लिए वर्णन करते हैं ताकि वे सोच-विचार करें । 22।*

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है । वही है जो बिन मांगे देने वाला, अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 23।

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह समाट है, पवित्र है, सलाम है, शांति देने वाला है, निरीक्षक है, पूर्ण प्रभुत्व वाला है, बिंगड़े काम बनाने वाला है (और) महिमावान है ।

إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑩

وَلَا تَكُونُوا كَالذِّينَ نَسَوَ اللَّهَ فَأَنْسَهُمْ

أَنفُسَهُمْ ۖ أُولَئِكَ هُمُ الْفَسِقُونَ ۗ

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ الظَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۗ

لَوْا نَزَّلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ

خَاشِعًا مُتَصَرِّلًا عَامِنْ خَشْيَةَ اللَّهِ وَتِلْكَ

الْأَمْثَالُ نَصَرِبَهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ

يَتَكَبَّرُونَ ۗ ۱۱

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ عِلْمُ الْغَيْبِ

وَالشَّهَادَةِ ۗ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۗ ۱۲

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ الْمَلِكُ

الْقُدُّوسُ السَّلَمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَمَّدُ

الْعَزِيزُ الْجَبارُ الْمُتَكَبِّرُ ۖ سَبِّحْنَاهُ

* इस आयत में जिन पर्वतों का वर्णन है उनसे अभिप्राय भौतिक पर्वत नहीं बल्कि पर्वतों की भाँति बड़े-बड़े लोग हैं । जैसा कि इस आयत के अंत पर यह परिणाम निकाला गया है कि ये उदाहरण हैं जो इस लिए वर्णन किये जाते हैं ताकि लोग इन पर सोच-विचार करें ।

अल्लाह उससे पवित्र है जो वे शिर्क करते हैं । 124।

वही अल्लाह है जो सृष्टिकर्ता, सृष्टि का आरम्भ करने वाला और आकृति दाता है। सब सुन्दर नाम उसी के हैं। जो आकाशों और धरती में है (वह) उसी का गुणगान कर रहा है। और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 125। (रुक् 3/6)

عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑯

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ
لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۖ يَسِّعُ لَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ

60- सूरः अल-मुम्तहिनः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 14 आयतें हैं।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में यहूदियों के प्रतिफल दिवस का वर्णन किया गया है और इस सूरः में मुसलमानों को सावधान किया जा रहा है कि जो अल्लाह और रसूल से शत्रुता रखते हैं उनको कदापि मित्र न बनाओ। क्योंकि यदि वे मित्र बन भी जाएँ तब भी उनके सीनों में देष भरा हुआ रहता है और वे हर समय तुम्हें नष्ट करने की योजनाएँ बनाते रहते हैं।

इसके पश्चात हज़रत इब्राहीम अलै, के आदर्श का उल्लेख है कि उनकी सारी मित्रताएँ अल्लाह ही के लिए थीं और सारी शत्रुताएँ भी अल्लाह ही के लिए थीं। इस कारण तुम्हारे निकट सम्बन्धी, माता-पिता और बच्चे तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकेंगे। तुम्हें अवश्य ही अपने सम्बन्ध अल्लाह ही के लिए सुधारने होंगे और अल्लाह ही के लिए तोड़ने होंगे। परन्तु साथ ही मोमिनों को यह ताकीद कर दी कि तुम्हारे जो शत्रु दुःख देने में पहल नहीं करते तुम्हें कदापि अधिकार नहीं पहुँचता कि उनको दुःख देने में तुम पहल करो। उच्चकोटि के न्याय का यही मापदण्ड है कि जब तक वे तुमसे मित्रता निभाते रहें तुम भी उनसे मित्रता रखो।

क्योंकि यह सूरः उस युग का उल्लेख कर रही है जबकि मुसलमानों को यहूदियों के अतिरिक्त दूसरे मुश्किलों से भी अपने बचाव के लिए युद्ध करने की अनुमति दे दी गई थी। इस लिए युद्ध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली बहुत सी समस्याओं का भी वर्णन कर दिया गया कि इस अवस्था में उचित उपाय क्या होगा। उदाहरणार्थ काफिरों की पत्नियाँ यदि ईमान लाकर हिजरत कर जाएँ तो उनके ईमान की पूरी तरह परीक्षा ले लिया करो और यदि वे वास्तव में अपनी इच्छा से ईमान लाई हैं तो फिर पहला कर्तव्य यह है कि उनको कदापि काफिरों की ओर वापस न लौटाओ क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के लिए वैध नहीं रहे। हाँ उनके अभिभावकों को वह ख़र्च दे दिया करो जो वे उन पर कर चुके हैं।

इसके पश्चात अन्त में उस बैअत की प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है जो उन सभी मोमिन स्त्रियों से भी लेनी चाहिए जो काफिरों के चुंगल से भाग कर हिजरत करके आई हैं। उनके अतिरिक्त दूसरी सभी मोमिन स्त्रियों से भी यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए जब वे बैअत करना चाहें।



سُورَةُ الْمُمْتَحَنَةِ مَدْيَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُشْرَى أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكْوْعَانٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! मेरे शत्रु और अपने शत्रु को कभी मित्र न बनाओ। तुम उनकी ओर प्रेम के सदेश भेजते हो जबकि वे उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है, इनकार कर चुके हैं । वे रसूल को और तुम्हें केवल इसलिए (देश से) निकालते हैं क्योंकि तुम अपने रब्ब, अल्लाह पर ईमान ले आए । यदि तुम मेरे मार्ग में और मेरी ही प्रसन्नता चाहते हुए जिहाद पर निकले हो और साथ ही उन्हें प्रेम के गुप्त सदेश भी भेज रहे हो जबकि मैं सबसे अधिक जानता हूँ जो तुम छिपाते और जो प्रकट करते हो (तो तुम्हारा यह छिपाना व्यर्थ है) । और जो भी तुम में से ऐसा करे तो वह सन्मार्ग से भटक चुका है । 12

यदि वे तुम्हें कहीं पाएँ तो तुम्हारे शत्रु ही रहेंगे और अपने हाथ और अपनी जुबानें दुर्भावना रखते हुए तुम पर चलाएँगे और चाहेंगे कि काश ! तुम भी इनकार कर दो । 13

तुम्हारे निकट सम्बन्धी और तुम्हारी संतान क्रयामत के दिन कदापि तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेंगे । वह (अल्लाह) तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْتَوا لَا تَتَخَذُوا عَدُوّي
وَعَدُوّكُمْ أُولَئِكَ تُلْقَوْنَ إِلَيْهِمْ
بِالْمَوْدَةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِإِيمَانِكُمْ مِنْ
الْحَقِيقَةِ يُرْجِعُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ
تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرِبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ
جَهَادًا فِي سَبِيلِ وَإِيَّاعِ مَرْضَاتِي
تُسْرُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوْدَةِ وَأَنَا أَعْلَمُ
بِمَا أَحْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَمُ وَمَنْ
يَفْعُلُهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّيِّئِ ①

إِنْ يَتَقْفُوكُمْ يَكُونُوا إِنْكُمْ أَعْدَاءٌ
وَقَدْ يُسْطُو إِلَيْكُمْ أَيْدِيهِمْ وَأَيْتَهُمْ
بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْلَا كَفَرُوْنَ ۖ

لَئِنْ شَتَّقُوكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أُولَادُكُمْ ۖ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۖ وَاللَّهُ

और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर
सदा दृष्टि रखता है । १।

निश्चित रूप से इब्राहीम और उन लोगों
में जो उसके साथ थे तुम्हारे लिए एक
उत्तम आदर्श है । जब उन्होंने अपनी
जाति से कहा कि हम तुमसे और उससे
भी विरक्त हैं जिसकी तुम अल्लाह के
सिवा उपासना करते हो । हम तुम्हारा
इनकार करते हैं और हमारे और तुम्हारे
बीच सदा की शत्रुता और द्वेष प्रकट हो
चुके हैं, जबतक कि तुम एक ही अल्लाह
पर ईमान न ले आओ । सिवाए इब्राहीम
के अपने पिता के लिए एक कथन के
(जो एक अपवाद स्वरूप था) कि मैं
अवश्य आप के लिए क्षमा की दुआ
करूँगा । हालांकि मैं अल्लाह की ओर से
आपके बारे में कुछ भी अधिकार नहीं
रखता । हे हमारे रब ! तुझ पर ही हम
भरोसा करते हैं और तेरी ओर ही हम
झुकते हैं और तेरी ओर ही लौट कर
जाना है । १।

हे हमारे रब ! हमें उन लोगों के लिए
परीक्षा का पात्र न बना जिन्होंने इनकार
किया । और हे हमारे रब ! हमें क्षमा
कर दे निःसन्देह तू पूर्ण प्रभुत्व वाला
(और) परम विवेकशील है । १।

निःसन्देह तुम्हारे लिए उनमें एक उत्तम
आदर्श है अर्थात् उसके लिए जो अल्लाह
और अन्तिम दिवस की आशा रखता है ।
और जो विमुख हो जाए तो (जान ले
कि) निःसन्देह वह अल्लाह ही है जो

بِمَا تَعْمَلُونَ بِصَيْرٌ ①

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَاتَلُوا قَوْمَهُ إِنَّا
بِرَأْءٍ وَإِمْنَكُمْ وَمَمَّا تَعْبَدُونَ مِنْ دُونَ
اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَأْبَيْنَا وَبَيْتَكُمْ
الْعَدَاؤُ وَالْبَعْضُاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا
بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلُ إِبْرَاهِيمَ لَا يَشُو
لَا سَتَغْفِرَنَّ لَكُمْ وَمَا أَمْلَكُ لَكُ
مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَإِلَيْكَ أَنَّبَنَا وَإِلَيْكَ الْمُصِيرُ ②

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
وَاغْفِرْنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ③

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ
كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ

निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है । ७।
(रुक् १)

संभव है कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से उन लोगों के बीच जिनसे तुम परस्पर शत्रुता रखते थे, प्रेम उत्पन्न कर दे । और अल्लाह सदा सामर्थ्य रखने वाला है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । ८।

अल्लाह तुम्हें उनसे भलाई और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से मना नहीं करता जिन्होंने तुम से धार्मिक विषय में युद्ध नहीं किया । और न तुम्हें निर्वासित किया । निःसन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है । ९।*

अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने के बारे में मना करता है जिन्होंने धार्मिक विषय में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हें निकालने में एक दूसरे की सहायता की । और जो उन्हें मित्र बनाएगा तो यही हैं वे जो अत्याचारी हैं । १०।

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हारे पास मोमिन स्त्रियाँ मुहाजिर होने की अवस्था में आएँ तो उनकी परीक्षा ले

* यह आयत अन्यायपूर्वक युद्ध करने की कल्पना का खण्डन करती है और उन लोगों से सद्व्यवहार और मित्रता करने से नहीं रोकती जिन्होंने मुसलमानों से धार्मिक मतभेद के कारण युद्ध नहीं किया और निर्दोष मुसलमानों को अपने घरों से नहीं निकाला । कुछ अन्य आयतों से कई लोग यह भूल व्याख्या करते हैं कि प्रत्येक प्रकार के गैर मुस्लिमों से मित्रता करना अवैध है । परन्तु इस आयत से तो पता चलता है कि जिन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध धार्मिक मतभेद के कारण बर्बरता नहीं अपनाई, उनसे न केवल मित्रता करना वैध है बल्कि उनसे तो सद्व्यवहार करने का आदेश दिया गया है ।

يَسْأَلُ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الظَّالِمِينَ
عَادِيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً ۖ وَاللَّهُ قَدِيرٌ
وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ①

لَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الظَّالِمِينَ لَمْ
يَقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرُجُوكُمْ
مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبْرُوْهُمْ وَتُقْسِطُوا
إِلَيْهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ②

إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الظَّالِمِينَ قَتْلُوكُمْ
فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ
وَظَهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ
تَوْلُوْهُمْ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ
مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ

लिया करो । अल्लाह उनके ईमान को सबसे अधिक जानता है । अतः यदि तुम भली प्रकार ज्ञात कर लो कि वे मोमिन स्त्रियाँ हैं तो काफिरों की ओर उन्हें वापस न भेजो । न ये उनके लिए वैध हैं और न वे इनके लिए वैध हैं । और उन (के अभिभावकों) को जो वे खर्च कर चुके हैं अदा करो । उन्हें उनके महर देने के पश्चात् तुम उनसे निकाह करो तो तुम पर कोई पाप नहीं । और काफिर स्त्रियों के निकाह का मामला अपने अधिकार में न लो । और जो तुमने उन पर खर्च किया है वह उनसे माँगो और जो उन्होंने खर्च किया है वे तुमसे माँगें । यह अल्लाह का आदेश है । वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । ॥11॥

और यदि तुम्हारी पत्नियों में से कुछ काफिरों की ओर चली जायें और तुम क्षतिपूर्ति ले चुके हो तो उन मोमिनों को जिनकी पत्नियाँ हाथ से जा चुकी हों उसके अनुसार दो जो उन्होंने खर्च किया था । और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाते हो । ॥12॥

हे नवी ! जब मोमिन स्त्रियाँ तेरे पास आएँ (और) इस (बात) पर तेरी वैअत्त करें कि वे किसी को अल्लाह का साझीदार नहीं ठहराएँगी । और न ही चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी और न अपनी संतान का वध करेंगी और

بِإِيمَانِهِنَّ ۝ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنِينَ
فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۝ لَا هُنَّ جُلُّ
لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحْلُونَ لَهُنَّ ۝ وَآتُوهُمْ
مَا أَنْفَقُوا ۝ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ
تَشْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۝
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصْمِ الْكَوَافِرِ وَسَلُّوَا
مَا أَنْفَقُتُمْ وَلَا يُسْأَلُوا مَا أَنْفَقُوا ۝ ذَلِكُمْ
حُكْمُ اللَّهِ ۝ يَحْكُمُ بِيَقِنَّكُمْ ۝ وَاللَّهُ
عَلِيهِمْ حِكْمَةٌ ۝ ⑩

وَإِنْ قَاتَكُمْ شَئْ ۝ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى
الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ قَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبْتُ
أَزْوَاجَهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ ⑪

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ
يَبْأَسْنَكُنَّ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكُنَّ بِاللَّهِ شَيْئًا

न ही (किसी पर) कोई झूठा आरोप लगाएँगी, जिसे वे अपने हाथों और पाँवों के सामने गढ़ लें। और न ही उचित (बातों) में तेरी अवज्ञा करेंगी तो तू उनकी बैतत् स्वीकार कर और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना कर। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 13।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ। वे परलोक से निराश हो चुके हैं जैसे काफिर कब्रों में पड़े व्यक्तियों से निराश हो चुके हैं। 14।

(रुक् ۲/۸)

وَلَا يَسْرِقُنَّ وَلَا يَرْزِقُنَّ وَلَا يَقْتَلُنَّ
أُولَادُهُنَّ وَلَا يَأْتِيْنَ بِهُمَا إِنْ يَفْتَرِيْنَهُ
بِيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ
فِيْ مَعْرُوفٍ فَبَاِغْهُنَّ وَاسْتَعْفِرُهُنَّ
اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
عَصَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَعِسُوا مِنْ
الْآخِرَةِ كَمَا يَعِسَ الْكُفَّارُ مِنْ
أَصْحَابِ الْقَبُورِ ۝

61 – सूरः अस-सफ़्फ

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 15 आयतें हैं।

पिछली सूरः के अन्त पर जिस बैअत् की प्रतिज्ञा का उल्लेख है उसमें केवल मोमिन स्त्रियों के उत्तरदायित्वों का वर्णन ही नहीं है अपितु मोमिन पुरुष भी बैअत् की प्रतिज्ञा करके इस प्रकार की आध्यात्मिक रोगों से बचने की प्रतिज्ञा करते हैं। अतः दोनों को सूरः अस- सफ़्फ के आरम्भ में यह आदेश दिया गया है कि अपनी बैअत् की प्रतिज्ञा में कपट न करना और यह न हो कि दूसरों को तो उपदेश करते रहो और स्वयं उसके लिए प्रतिबद्ध न हो। यदि तुम निष्ठापरता के साथ बैअत् की प्रतिज्ञा पर अडिग रहेगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिल एक दूसरे से इस प्रकार मिला देगा कि तुम्हें एक सीसा से ढली हुई दीवार के सदृश शत्रु के मुकाबले पर खड़ा कर देगा।

इसी सूरः में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में हज़रत ईसा अलै. की भविष्यवाणी का भी वर्णन है जिसमें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वितीय नाम अर्थात् अहमद का उल्लेख किया गया है। जो आपके सौम्य रूप का द्योतक है। अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में इसके बाद जो विवरण मिलता है उससे स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक एक व्यक्ति अंत्ययुग में जन्म लेगा। उस समय उसको और उसके अनुयायियों को इस्लाम की जिस रंग में शांतिपूर्वक सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा वह रूप-रेखा साफ प्रकट कर रही है कि यह आने वाले युग की एक भविष्यवाणी है।

क्योंकि इस सूरः के अन्त पर हज़रत ईसा अलै. और उनकी भविष्यवाणियों का उल्लेख हो रहा है, इस लिए जिस प्रकार उन्होंने यह घोषणा की थी कि कौन है जो अल्लाह के लिए मेरा सहायक बनेगा। उसी प्रकार आवश्यक है कि अंत्ययुग में जब दोबारा यह घोषणा हो तो वे सभी मुसलमान जो सच्चे दिल से इन भविष्यवाणियों पर ईमान लाए हैं वे भी यह घोषणा करते हुए मुहम्मदी मसीह के झंडे तले एकत्रित हो जाएँ कि हम प्रत्येक प्रकार से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के समर्थन में मुहम्मदी मसीह की धर्मसेवा के कामों में उसके सहायक बनेंगे।



سُورَةُ الصَّفَّ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ خَمْسَ عَشَرَةً آيَةً وَ رُكْوْعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

अल्लाह ही का गुणगान करता है जो
आकाशों में है और जो धरती में है । और
वह (अल्लाह) पूर्ण प्रभुत्व वाला (और)
परम विवेकशील है । 12

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! क्यों
वह (बात) कहते हो जो तुम करते
नहीं ? । 13

अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है
कि तुम वह (बात) कहो जो तुम करते
नहीं । 14

निःसन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम
करता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध हो
कर युद्ध करते हैं मानो वे एक सीसा से
ढाली हुई दीवार हैं । 15

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी
जाति से कहा, हे मेरी जाति ! तुम मुझे
क्यों कष्ट देते हो ? हालांकि तुम जानते
हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल
हूँ । फिर जब वे टेढ़े हो गए तो अल्लाह
ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और
अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत
नहीं देता । 16

और (याद करो) जब मरियम के पुत्र
ईसा ने कहा, हे बनी इस्माईल !
निःसन्देह मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ اللَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا مَرَأُوكُلُونَ مَا لَا
تَفْعَلُونَ ①

كَبَرَ مَقْتَنًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا
تَفْعَلُونَ ①

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ فِي سَيِّلِهِ
صَفَا كَانُوهُمْ بِئْسَانٍ مَرْضُوصُ ①

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقُولُ لَهُ
تُؤْذِنُنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ
إِلَيْكُمْ ۝ فَلَمَّا زَاغُوا أَرَأَعَ اللَّهُ
قُلُوبَهُمْ ۝ وَاللَّهُ لَا يَمْدُدُ الْقَوْمَ
الْفَسِيقِينَ ①

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي
إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

रसूल बन कर उस बात की पुष्टि करते हुए आया हूँ जो तौरत में से मेरे सामने है। और एक महान रसूल का शुभ-सामाचार देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह स्पष्ट चिह्नों के साथ उनके पास आया तो उन्होंने कहा, यह तो एक खुला-खुला जादू है।^{*}

और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, हालाँकि उसे इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता।[†]

वे चाहते हैं कि वे अपने मुँह की फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें हालाँकि अल्लाह अवश्यमेव अपना नूर पूरा करने वाला है चाहे काफिर बुरा मनायें।[‡]

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्णरूप से विजयी कर दे चाहे मुश्किल बुरा मनाएँ।[§] (रुकू $\frac{1}{9}$)

مَصِّدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْ مِنَ التُّورَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي أَسْمَهُ
أَخْمَدٌ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبُيْنَتِ قَالُوا
هَذَا سُحْرٌ مُّبِينٌ^⑦

وَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ^۸
وَاللَّهُ لَا يَهِدِي النَّقْوَمَ الظَّلِيمِينَ^۹
يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُنَا نُورُ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَاللَّهُ مُتَمِّنُ نُورٍ وَلَوْكَرَةُ الْكُفَّارُونَ^{۱۰}

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الَّذِينَ كُلُّهُمْ وَلَوْكَرَةُ
الْمُشْرِكُونَ^{۱۱}

- * इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहमद रूपी महिमा (अर्थात् सौम्य रूप) के प्रकट होने की भविष्यवाणी की गई है। आप सल्ल. मुहम्मद के रूप में भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत मूसा अलै. ने की और अहमद के रूपमें भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत ईसा अलै. ने की।
- ** हज़रत मसीह मौऊद अलै. फर्माते हैं :- “इस आयत में स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि मसीह मौऊद चौदहवीं शताब्दी में पैदा होगा। क्योंकि नूर की पराकाञ्जा के लिए चौदहवीं रात्रि निश्चित है।” (तोहफा गोलडविया रूहानी खजाइन, जिल्द 17, पृष्ठ 124।)
- *** इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सार्वभौम नबी होने का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। अर्थात् आप सल्ल. किसी एक धर्म विशेष के मानने वालों की ओर नहीं→

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की जानकारी दूँ जो तुम्हें एक पीड़ाजनक अज्ञाब से मुक्ति देगा ? ||11||

तुम (जो) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाते हो और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यदि तुम ज्ञान रखते तो यह तुम्हारे लिए बहुत उत्तम है ||12||*

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट कर देगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं। और ऐसे पवित्र घरों में भी (प्रविष्ट कर देगा) जो चिरस्थायी स्वर्गों में हैं। यह बहुत बड़ी सफलता है ||13||

एक दूसरा (शुभ समाचार भी) जिसे तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से सहायता और निकटस्थ विजय है। अतः तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे ||14||

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के सहायक बन जाओ जैसा कि मरियम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था (कि) कौन हैं जो अल्लाह की ओर मार्गदर्शन करने में मेरे सहायक हैं ?

←आये बन्दि समस्त जगत में प्रकट होने वाले प्रत्येक धर्म के अनुयायियों की ओर आये हैं और उन पर प्रभुत्व पाएंगे ।

हजरत मसीह मौलूद अलै. फ़रमाते हैं :-

“यह कुरआन शरीफ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अन्येषी विद्वान एकमत हैं कि यह मसीह मौलूद के द्वारा पूरी होगी ।” (तिर्याकुल कुलूब, छहानी ख़ज़ा़िन ज़िल्द 15, पृष्ठ 232)

* इस प्रकार का अनुवाद “इला मा मन बिहर्मान” के अनुसार किया गया है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَذْلَكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ شَجِيقَةٍ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ⑤

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَا أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ يَعْفُرَ لَكُمْ ذُنُوبُكُمْ وَيَئْدُخْلُكُمْ جَنَّتٍ تَجْرِيْ فِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ وَمَسِكَنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنَّتِ عَدْنٍ ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ ۱۷

وَأَخْرَى تَحْبُّهَا نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفُتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ⑯

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُوْنُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيْنَ مِنْ أَنْصَارِ إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيْوْنَ

हवारियों ने कहा, हम अल्लाह के सहायक हैं। अतः बनी इस्राइल में से एक समुदाय ईमान ले आया और एक समुदाय ने इनकार कर दिया। फिर हमने उन लोगों की जो ईमान लाए उनके शत्रुओं के विरुद्ध सहायता की तो वे विजयी हो गये। 15। (रुकू 2/10)

نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَامْنَתْ طَائِفَةٌ مِّنْ
بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ
فَأَيَّذَنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَى عَدُوِّهِمْ
فَاصْبَحُوا ظَاهِرِينَ

62- सूरः अल-जुमुअः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

यह पिछली सूरः में उल्लेखित समस्त भविष्यवाणियों का संग्रह है। इसमें जमअ (एकत्रिकरण) के सभी अर्थ वर्णन कर दिये गये हैं। अर्थात् हज़रत अकदस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंत्ययुगीन मुसलमानों को आरंभिक युगीन मुसलमानों के साथ एकत्रित करने का कारण बनेंगे और अपने प्रताप और सौम्य गुणों की चमकार को भी एकत्रित करेंगे। जुम्मः के दिन जो मुसलमानों को हर सप्ताह इकट्ठा किया जाता है, उसका भी इसी सूरः में वर्णन है।

इस सूरः के अन्त पर यह भविष्यवाणी भी कर दी गई कि बाद के आने वाले मुसलमान धन कमाने और व्यापार में व्यस्त हो कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देंगे। इस आयत के बारे में कुछ विद्वानों का यह कहना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में ऐसा हुआ करता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अत्यन्त निष्ठावान सहाबा रज़ि, जिन्होंने कभी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को भयानक युद्धों में भी अकेला नहीं छोड़ा, जब व्यापारी दलों के आने की खबरें सुना करते थे तो आपको छोड़ कर उनकी ओर भाग जाया करते थे, ऐसा कहना वास्तव में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के सहाबा पर एक लाञ्छन है। निश्चित रूप से इसमें अंत्ययुग के मुसलमानों का वर्णन है जो अपने आचरण से अपने धर्म से बे-परवा हो चुके होंगे और हज़रत मुहम्मद सल्ल. के संदेश से कोई सरोकार नहीं रखेंगे।



سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِ الْأَكْبَرِ إِلَهٌ وَرَوْحُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11।

जो अकाशों में है और जो धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है । वह सम्राट है, पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 12।

वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है । और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इससे पूर्व वे निश्चितरूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे । 13।*

और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले । वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 14。**

يَسِّيْحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأَقْمَى رَسُولًا مِّنْهُمْ
يَشْلُو عَلَيْهِمْ أَلْيَهُمْ وَيُزَكِّيهِمْ وَيَعْلَمُهُمْ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ
لَفْيِ ضَلَالٍ مُّبِينٍ ③

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لِمَا يَلْهُوقُوا بِهِمْ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिस विशेष महिमा का उल्लेख किया गया है, वह यह है कि आप सल्ल. अपने ऊपर ईमान लाने वालों के सम्मुख कुरआनी आयतों के पाठ करने के साथ ही उन लोगों को पुस्तक का ज्ञान तथा विवेकशीलता सिखाने से पूर्व ही उनका शुद्धिकरण करते थे । कुरआन करीम का यह बड़ा चमत्कार है कि इससे पूर्व सूरः अल् बकरः आयत 130 में हज़रत इब्राहीम अलै., की वह दुआ वर्णित है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन से सम्बन्ध रखती है । उहोंने ऐसे रसूल को भेजने की दुआ माँगी है जो अल्लाह की आयतें लोगों को पढ़ कर सुनाए, फिर उनको ज्ञान एवं विवेकशीलता की जानकारी दे और इस प्रकार उनका शुद्धिकरण करे । इस दुआ के स्वीकार किये जाने का तीन स्थान पर उल्लेख है परन्तु तीनों स्थल पर यही वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. कुरआनी आयतों का पाठ करने के साथ ही उनका शुद्धिकरण किया करते थे । फिर पुस्तक और विवेकशीलता के सिखाने का वर्णन है । अतः यह कुरआन करीम का विशेष चमत्कार है जो तेईस वर्ष में अवतरित हुआ परन्तु उसकी आयतों में एक स्थान पर भी परस्पर कोई मतभेद नहीं पाया जाता ।

** इस आयत में जिन आश्वरीन (अंत्युगुरीनों) का वर्णन किया गया है उनमें उसी रसूल के→

यह अल्लाह की कृपा है वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है । १।*

वे लोग जिन पर तौरात का उत्तरदायित्व डाला गया, फिर उन्होंने उसे उठाए न रखा (जैसा कि उसके उठाने का हक था) उनका उदाहरण उस गधे के सदृश है जो पुस्तकों का बोझ उठाता है । क्या ही बुरा है उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह की आयतों को ज़ुठलाया । और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । १।

←आगमन का उल्लेख है जिसका पिछली आयत वही है जिसने निरक्षरों में एक रसूल भेजा में वर्णन है । परन्तु इस आयत के अन्त पर अल्लाह के वे चार गुणवाचक नामों का वर्णन नहीं किया गया जो आयत सं. २ के अन्त पर वर्णित हैं, बल्कि केवल “अज़ीज़” (पूर्ण प्रभुत्व वाला) और हकीम (परम विवेकशील) दो गुणवाचक नामों की पुनरावृत्ति की गई है । जिससे ज्ञात होता है कि जिस रसूल का आरम्भ में वर्णन है वह दोबारा स्वयं नहीं आएगा । बल्कि उसके किसी प्रतिरूप को भेजा जाएगा जो शरीअत वाला नवी नहीं होगा । दिलचस्प विषय यह है कि हज़रत ईसा अलै. के सम्बन्ध में भी अल्लाह के यही दो गुणवाचक नाम वर्णन हुए हैं जैसा कि फ़र्माया : बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका उत्थान किया और निःसन्देह अल्लाह हूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । (अन निसा आयत 159)

* इस आयत से सिद्ध होता है कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रथम आगमन से सम्बन्धित नहीं है । अन्यथा वह जिसे चाहता है उसको प्रदान करता है कहने की आवश्यकता नहीं थी । बल्कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का द्वितीय आगमन है जो आप सल्ल. की दासता को स्वीकार करते हुए प्रकट होने वाले एक उम्मीदी नवी के रूप में होगा । यह सम्मान एक कृपा स्वरूप है अल्लाह जिसे चाहेगा उसे यह प्रदान कर देगा । वह बड़ा कृपालु और उपकार करने वाला है । इस अर्थ का समर्थन ‘सही बुखारी’ की इस हदीस से भी होता है कि इस आयत के पाठ करने पर सहाबा रज़ि. ने प्रश्न किया कि हे अल्लाह के रसूल ! वे कौन होंगे ? यह नहीं पूछा कि वह कौन उतरेगा ? बल्कि यह पूछा कि वह किन लोगों की ओर भेजा जाएगा । इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. के कंधे पर हाथ रख कर फ़र्माया कि यदि ईमान सुरक्षा (सितरे) पर भी चला जाएगा तो इन लोगों में से एक पुरुष अथवा कुछ पुरुष होंगे जो उसे सुरक्षा से बापर संधर्ती पर ले आएँगे । इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं दोबारा नहीं आएँगे बल्कि आप सल्ल. का एक सेवक अवतरित होगा जो फ़ारसी मूल का व्यक्ति अर्थात् अरब वासियों से भिन्न होगा ।

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ①

مَثْلُ الَّذِينَ حَمَلُوا الشُّورَى شَرَّ
لَمْ يَخْمِلُوهَا كَمَلَ الْحَمَارِ يَحْمِلُ
أَسْفَارًا بِئْسَ مَثْلُ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهِيءُ
الْقَوْمَ الظَّلِمِينَ ②

तू कह दे कि हे लोगों जो यहूदी बने हो !
यदि तुम यह विचार करते हो कि सब
लोगों को छोड़ कर एक तुम ही अल्लाह
के मित्र हो, यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु
की इच्छा करो । 7।

और वे उस कारण कदापि उसकी इच्छा
नहीं करेंगे जो उनके हाथों ने आगे भेजा
है । और अल्लाह अत्याचारियों को ख़बू
जानता है । 8।

तू कह दे कि निःसन्देह वह मृत्यु जिससे
तुम भाग रहे हो वह तुम्हें अवश्य आ
पकड़ेगी । फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष
का स्थायी ज्ञान रखने वाले (अल्लाह)
की ओर लौटाए जाओगे । फिर वह तुम्हें
(उस की) सूचना देगा जो तुम किया
करते थे । 9। (रुकू ١١)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! जब
जुम्मः के दिन के एक भाग में नमाज़ के
लिए बुलाया जाए तो अल्लाह के स्मरण
की ओर शीघ्रता पूर्वक आया करो और
व्यापार को छोड़ दिया करो । यदि तुम
ज्ञान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम
है । 10।

फिर जब नमाज़ अदा की जा चुकी हो
तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह
की कृपा को ढूँढो । और अल्लाह को
बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो
जाओ । 11।

और जब वे कोई व्यापार अथवा मन
बहलावे (की बात) देखेंगे तो उसकी

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعْمَكُمْ
أَنَّكُمْ أَوْلَيَاءُ لِلَّهِ مِنْ ذُوْنِ النَّاسِ
فَقَتَّمْتُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَدِيقِنَ ⑦
وَلَا يَسْمُونَهُ أَبَدًا إِيمَانًا قَدَّمْتُ أَيْدِيهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑧

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ كَذِيلُ الَّذِي تَفَرَّوْنَ مِنْهُ قَوَافِلَهُ
مُلْقِيَّكُمْ ثُمَّ تُرْدُونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنِيبُّكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ
مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاصْبِرُوا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ
وَذَرُوا وَالْبَيْعَ ۝ ذِلِّكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ⑩

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي
الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ
وَإِذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ⑪

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا فَنَفَضُّوا إِلَيْهَا

ओर दौड़ पड़ेंगे और तुझे अकेला खड़ा हुआ छोड़ देंगे । तू कह दे कि जो अल्लाह के पास है वह मन बहलावे और व्यापार से अत्युत्तम है । और अल्लाह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वोत्तम है । 121 (रुक् 2½)

وَتَرْكُوكَ قَائِمًا ۗ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
مِّنَ اللَّهِ وَمَنْ تِجَارَةٌ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ
الرُّزْقُينَ ۝

63- सूरः अल-मुनाफ़िकून

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

इसका आरम्भ ही इस बात से किया गया है कि जिस प्रकार इस युग में कुछ मुनाफ़िक़ क़समें खाते हैं कि तू अवश्य अल्लाह का रसूल है जबकि अल्लाह भली प्रकार जानता है कि वास्तव में तू अल्लाह का रसूल है परन्तु अल्लाह यह भी गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं। इसी प्रकार अंत्य युगीनों के समय मुसलमानों की बड़ी संख्या की यही अवस्था हो चुकी होगी। वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपने ईमान को प्रकट करने में क़समें तो खाएँगे परन्तु अल्लाह तआला इस बात पर गवाह होगा कि वे केवल मुँह की क़समें खाते हैं और ईमान की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरे नहीं करते।

इसी सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में उत्पन्न होने वाले मुनाफ़िकों के नेता अर्थात् अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सुलूल का उल्लेख हुआ है कि किस प्रकार उसने एक युद्ध से वापसी पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्पष्ट रूप से अत्यन्त तिरस्कार किया था। यहाँ तक कि अपने बारे में मदीना-वासियों में सबसे अधिक सम्माननीय होने का दावा किया और इसके विपरीत हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में अपमान जनक शब्द बोलते हुए यह दावा किया कि मदीना जाने पर वह हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मदीना से निकाल देगा। अल्लाह के विधान ने जो कुछ दिखाया वह इसके बिल्कुल विपरीत था। हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने क्षमा का महान आदर्श प्रदर्शित करते हुए सामर्थ्य रखते हुए भी उसको मदीने से बाहर नहीं निकाला और उसके अन्तिम श्वास तक उसके लिए अल्लाह से क्षमायाचना करते रहे, यहाँ तक कि अन्ततः अल्लाह तआला ने आदेश देकर मना कर दिया कि भविष्य में कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होकर उसके लिए क्षमा की दुआ न किया करें।



سُورَةُ الْمُنَافِقُونَ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُشْرَى عَشْرَةُ آيَةٍ وَرُكْوْغَانٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

जब मुनाफिक तेरे पास आते हैं तो कहते
हैं, हम गवाही देते हैं कि तू अवश्य
अल्लाह का रसूल है । जबकि अल्लाह
जानता है कि तू निःसन्देह उसका रसूल
है । फिर भी अल्लाह गवाही देता है कि
मुनाफिक अवश्य झूठे हैं । । । *

उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा
है । अतः वे अल्लाह के मार्ग से रोकते
हैं। जो वे कर्म करते हैं निश्चित रूप से
बहुत बुरा है । । ।

यह इस कारण है कि वे ईमान लाए फिर
इनकार कर दिया तो उनके दिलों पर
मुहर कर दी गई । अतः वे समझ नहीं
रहे । । ।

और जब तू उन्हें देखता है तो उनके
शरीर तेरा दिल लुभाते हैं और यदि वे
कुछ बोलें तो तू उनकी बात सुनता है ।
वे ऐसे हैं जैसे एक दूसरे के सहारे चुनी
हुई सूखी लकड़ियाँ । वे बिजली की हर
कड़क को अपने ही ऊपर (कड़कता
हुआ) समझते हैं । वही शत्रु हैं, अतः

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا جَاءَكُمُ الْمُنَفِّقُونَ قَالُوا نَشْهُدُ
إِنَّا لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكُمْ
لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَسْهُدُ إِنَّ الْمُنَفِّقِينَ
لَكُذَّابُونَ ②

إِنَّهُدُوا أَيْمَانَهُمْ جَنَّةً فَصَدُّوْاعَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّهُمْ سَاءُ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ③

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ أَمْوَالُهُمْ كَفَرُوا فَطَبِعَ
عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ④

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تَعْجِلُكَ أَجْسَامَهُمْ
وَإِنْ يَقُولُوا أَتَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ كَانَهُمْ
خُشُبٌ مُسَنَّدٌ ۖ لَيَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاقْحَذْرُهُمْ ۖ

* कुछ लोग मुँह से सच्चाई स्वीकार करते हैं जो वास्तव में ठीक होती है परन्तु इसके बावजूद उनके दिल में इनकार होता है इसलिये अल्लाह तआला ने हजरत मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि व सललम को सूचित कर दिया कि वे बात सच्ची कर रहे हैं परन्तु उनका दिल झुठला रहा है ।

उन (के अनिष्ट) से बच। उन पर अल्लाह की लानत हो। वे किधर उल्टे फिराए जाते हैं । १।

और जब उन्हें कहा जाता है कि आओ! अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा याचना करे, वे अपने सिर मोड़ लेते हैं। और तू उन्हें देखता है कि वे अहंकार करते हुए (सच्चाई को स्वीकार करने) से रुक जाते हैं । २।

चाहे तू उनके लिए क्षमा याचना करे अथवा उनके लिए क्षमा याचना न करे उन के लिए बराबर है। अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। निःसन्देह अल्लाह दुरुचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । ३।

यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के निकट रहते हैं उन पर खर्च न करो, यहाँ तक कि वे भाग जाएँ। हालाँकि आकाशों और धरती के खजाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु मुनाफिक समझते नहीं । ४।

वे कहते हैं यदि हम मदीना की ओर लौटेंगे तो अवश्य वह जो सबसे अधिक सम्माननीय है उस को जो सबसे अधिक नीच है, उसमें से निकाल बाहर करेगा। हालाँकि सम्मान सब का सब अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों का है, परन्तु मुनाफिक लोग जानते नहीं । ५। (रुकू ١٣)

हे लोगों जो ईमान लाए हो! तुम्हें तुम्हारी धन-सम्पत्ति और तुम्हारी

قتلهمُ اللَّهُ أَفْيُوقُكُونَ ⑥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرُ لَكُمْ
رَسُولُ اللَّهِ لَوْلَا رَءُوفُو سَهْمُ وَرَأْيَهُمْ
يَصْدُدُونَ وَهُمْ مُسْتَكِرُونَ ⑦

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفِرُ لَهُمْ أَمْ لَمْ
تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ لَكُنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَسِيقِينَ ⑧

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا شَفْقَوْا عَلَى مَنْ
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حُلُّ يَقْضُوا ۖ وَلِلَّهِ
خَرَآءِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِكُنْ
الْمُنْفِقِينَ لَا يَقْهَمُونَ ⑨

يَقُولُونَ لَيْسَ رَجُلُنَا إِلَى الْمَدِينَةِ
لَيَخْرُجُنَ الْأَعْزَمُ مِنْهَا الْأَذَلُ ۖ وَلِلَّهِ
الْعَرَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلِكُنْ
الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ ۱۰

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِمُكُمْ أَمْوَالُكُمْ

संतान अल्लाह के स्मरण से विस्मृत न कर दें। और जो ऐसा करें तो यही हैं जो हानि उठाने वाले हैं। ॥10॥

और उसमें से खर्च करो जो हमने तुम्हें दिया है इससे पूर्व कि तुम में से किसी पर मृत्यु आ जाए तो वह कहे, हे मेरे रब ! काश तूने मुझे थोड़े समय तक ढील दी होती तो मैं अवश्य दान देता और नेक कर्म करने वालों में से बन जाता। ॥11॥

और अल्लाह किसी जान को जब उसका निश्चित समय आ पहुँचा हो कदापि ढील नहीं देगा। और अल्लाह उससे जो तुम करते हो सदा अवगत रहता है। ॥12॥

(रुक् 2/14)

وَلَا أُولَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَقْعُلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ۝
وَأَنْفَقُوا مِنْ مَارْزَقَنَّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا
آخِرَتْنَى إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَدَّقَ
وَأَكْنُ مِنَ الصَّلِحِينَ ۝

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۝
وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

64- सूरः अत-तगाबुन

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ भी सूरः अल् जुमुअः की भाँति अरबी वाक्य युस्तिब्बहू लिल्लाहि मा फिस्मावाति व मा फ़िल अर्ज़ि (आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है) से होता है। इस सूरः में भी अल्लाह तआला के गुणगान उल्लेख करते हुए यह वर्णन किया गया है कि धरती व आकाश और जो कुछ उनमें है, अल्लाह का गुणगान कर रहा है। जैसा कि सब गुणगान करने वालों से बढ़ कर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला का गुणगान किया। अतः कैसे संभव है कि उस महान गुणगायक का कोई अपमान करे और अल्लाह उस व्यक्ति को अपने क्रोध का निशाना न बनाए।

सूरः अल् जुमुअः में अंत्ययुग में जिस एकत्रिकरण का वर्णन है उसके बारे में यह भविष्यवाणी कर दी गई कि वह तगाबुन अर्थात् खेरे-खोटे के बीच प्रभेद कर देने वाला दिन होगा।

उस समय जो कि धर्म की सहायता के लिए अधिकता पूर्वक अर्थदान का समय होगा, उन सभी अर्थदान करने वालों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जो कुछ भी वे निष्ठापूर्वक अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे उसको अल्लाह तआला स्वीकार करते हुए उसका बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।



سُورَةُ الْغَافِرِ مَدْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11।

आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है । उसी का साम्राज्य है और उसी की सब स्तुति है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 12।

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया । अतः तुम में से काफिर भी हैं और मोमिन भी । और जो तुम करते हो । उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखने वाला है । 13।

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया । और तुम्हारी आकृति बनाई और तुम्हारे रूप बहुत सुन्दर बनाए और उसी की ओर लौट कर जाना है । 14।

वह जानता है जो आकाशों और धरती में है । और (उसे भी) जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रकट करते हो । और अल्लाह सीनों की बातों को सदैव जानता है । 15।

क्या तुम तक उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जिन्होंने पहले इनकार किया था । अतः उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया । और उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज्ञाब (निश्चित) है । 16।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسِّعُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لَهُ الْحُكْمُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ
مُؤْمِنُ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
وَصَوَرَكُمْ فَأَخْسَنَ صُورَكُمْ ۖ وَإِنَّهُ
الْمَصِيرٌ ①

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا أَسْرَرُونَ وَمَا تَعْلَمُونَ ۖ وَاللَّهُ عَلَيْهِ
بِذَاتِ الصَّدْوِرِ ①

الَّمُ يَأْتِكُمْ بِنُبُوَّا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
قَبْلِ ۝ فَذَاقُوا وَبَالَ أُمْرِهِمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

यह इस कारण है कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ आया करते थे तो वे कहते थे कि क्या हमें मनुष्य हिदायत देंगे ? अतः उन्होंने इनकार किया और मुँह फेर लिया और अल्लाह भी बेपरवा हो गया । और अल्लाह निस्पृह (और) प्रशंसा का अधिकारी है । १।

वे लोग जिन्होंने इनकार किया धारणा कर बैठे कि वे कदम पि उठाए नहीं जाएँगे । तू कह दे, क्यों नहीं । मेरे रब की क़सम ! तुम अवश्य उठाए जाओगे । फिर जो तुम करते थे उससे अवश्य सूचित किये जाओगे । और अल्लाह पर यह बहुत आसान है । ८।

अतः अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर ईमान ले आओ जो हमने उतारा है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । ९।

जिस दिन वह तुम्हें एकत्रित होने के दिन (उपस्थित करने) के लिए इकट्ठा करेगा । यह वही हार-जीत का दिन है । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव रहेंगे । यह बहुत बड़ी सफलता है । १०।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठला दिया, ये ही आग (में पड़ने) वाले हैं । वे लम्बे समय

ذِلْكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْيِيْدُهُمْ رَسْلَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَّرُ عَيْهُمْ دُنْتَانًا
فَكَفَرُوا وَتَوَلُّوا وَأَسْتَغْنَى اللَّهُ طَوْلَةً
عَنْهُ حَمِيدٌ ⑦

رَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ لَنْ يَبْعَثُوا قُلْ
بَلْ وَرَبِّنِيْ لَتَبْعَثُنَّ لَهُمْ لَتَبْيَانُ بِمَا
عَمِلُتُمْ وَذِلْكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑧

فَأَمْنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالثُّورِ الَّذِي
آتَنَا طَوْلَةً وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ⑨

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ
الثَّغَابِنِ طَوْلَةً وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُكَفِّرُ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخَلَهُ
جَنَّتِ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَلِدِيْنَ فِيهَا آبَدًا طَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ⑩

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِإِيْتَمًا
أوْلَئِكَ أَصْحَابُ السَّارِخَلِدِيْنَ فِيهَا طَوْلَةً

तक उसमें रहेंगे और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है । 111। (खूबू^۱)

अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई विपत्ति नहीं आती । और जो अल्लाह पर ईमान लाए वह उसके दिल को हिदायत प्रदान करता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्थायी ज्ञान रखता है । 12।

और अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो, फिर यदि तुम मुँह मोड़ लो तो (जान लो कि) हमारे रसूल पर केवल संदेश को स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है । 13।

अल्लाह (वह है कि उस) के सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें । 14।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! निःसन्देह तुम्हारी पत्नियों में से और तुम्हारी संतान में से कुछ तुम्हारे शत्रु हैं । अतः उनसे बच कर रहो । और यदि तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो और क्षमा कर दो तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 15।

तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान केवल परीक्षा (स्वरूप) हैं । और वह अल्लाह ही है जिसके पास बहुत बड़ा प्रतिफल है । 16।*

وَبِئْسَ الْمُصِيرُ^{۱۳}

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ^{۱۴}
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ^{۱۵}
وَاللَّهُ يُكَلِّ شَيْءٍ عَلَيْهِ^{۱۶}

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ^{۱۷} فَإِنْ
تَوَلَّتُمْ فَإِنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ^{۱۸}
الْمُبِينُ^{۱۹}

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ^{۲۰} وَعَلَى اللَّهِ فَيُسْتَوْكِلُ^{۲۱}
الْمُؤْمِنُونَ^{۲۲}

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا مِنْ أَزْوَاجِكُمْ^{۲۳}
وَأُولَادِكُمْ عَدُوُّ الَّكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ^{۲۴}
وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفُحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ^{۲۵}

إِنَّمَا آمَوَالُ كُمْ وَأُولَادُكُمْ فِتْنَةٌ^{۲۶}
وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ^{۲۷}

* इस आयत में संतान की ओर से जिस विपत्ति का वर्णन है उसका यह अर्थ नहीं कि वे माता-पिता को खुल्लम-खुल्ला विपत्ति में डालेंगे बल्कि अपने परिजनों के द्वारा मनुष्य परीक्षा में डाला जाता है । और जो इस परीक्षा में असफल हो जाए वह विपत्ति में पड़ जाता है ।

जहाँ तक तुम्हें, अल्लाह का तकन्वा धारण करो और सुनो तथा आज्ञापालन करो और खर्च करो (यह) तुम्हारे लिए उत्तम होगा । और जो मन की कृपणता से बचाए जाएँ, तो वे लोग सफल होने वाले हैं । 17।

और यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण दोगे (तो) वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा । और अल्लाह बड़ा गुणग्राही (और) सहनशील है । 18।

(वह) अदृश्य और दृश्य का स्थायी ज्ञान रखने वाला, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 19। (रुक् 2/16)

فَأَنْتُمْ^{وَأَنْتُمْ} اللَّهُ مَا أَسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمَعْتُمْ
وَأَطْيَعْتُمْ وَأَنْفَقْتُمْ خَيْرًا لَا تَنْسِكُمْ
وَمَنْ يُؤْتَ قُرْبَةً شَيْخَ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ⑯

إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قُرْضًا حَسَنًا يَضْعُفُهُ
لَكُمْ وَيَغْرِي لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ
حَلِيمٌ ⑯

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ عَزِيزٌ الْحَكِيمُ ⑯

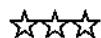
65- सूरः अत-तलाकः

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं।

इसका नाम सूरः अत-तलाकः है और इसमें आरम्भ से लेकर अन्त तक तलाकः से संबंधित विभिन्न विषयों का वर्णन है।

पिछली सूरः से इस सूरः का प्रमुख संबंध यह है कि इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ऐसे नूर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालता है। यही वह नूर है जो अंत्ययुग में एक बार फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के उन लोगों को अंधेरों से निकालेगा जो सांसारिक अंधकारों में भटकते फिर रहे होंगे। अंधेरों से निकलने के विषयवस्तु में दुराचारपूर्ण जीवन से निकल कर पवित्रता पूर्ण जीवन में प्रविष्ट होने का भावार्थ बहुत महत्व रखता है। अर्थात् आस्था के अन्धकारों से भी वह बाहर निकालेगा और कर्म के अन्धकारों से भी निकालेगा। अतएव सूरः अत-तलाक में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा गया कि यह रसूल तो सिर से पाँव तक अल्लाह के स्मरण का प्रतीक है और स्मरण ही के परिणाम स्वरूप नूर प्राप्त होता है। इसी स्मरण के परिणाम स्वरूप ही अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह महत्ता प्रदान की कि आप सल्ल. पूर्ण रूपेण नूर बन गए और अपने सच्चे सेवकों को भी प्रत्येक प्रकार के अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाला।

इस सूरः में एक और ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के रहस्यों पर से आश्चर्यजनक रूप से पर्दा उठाती है। जिस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं अंधेरों से निकालने वाले थे, उसी प्रकार आप सल्ल. पर वह वाणी उतारी गई जो ब्रह्मांड के अन्धकारों और रहस्यों पर से पर्दे उठा रही है। जहाँ कुरआन करीम में बार-बार सात आकाशों का उल्लेख है वहाँ यह भी कह दिया गया कि सात आकाशों की भाँति सात धरतियाँ भी सृष्टि की गई हैं। परन्तु अल्लाह ही भली प्रकार जानता है कि किस प्रकार उन धरतियों पर बसने वालों पर वहाँ उतरी और किन किन अंधेरों से उनको मुक्ति प्रदान की गई। अभी तक ब्रह्मांड की खोज करने वाले वैज्ञानिकों को इस विषयवस्तु के आरम्भ तक भी पहुँच प्राप्त नहीं हुई। परन्तु जैसा कि बार-बार प्रमाणित हो चुका है कि कुरआन के ज्ञान एक अक्षय स्रोत की भाँति असीमित है और भविष्य के वैज्ञानिक इन विद्याओं की एक सीमा तक अवश्य जानकारी पाएँगे।



سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَلَاثَ عَشْرَةَ آيَةٍ وَرُكْونُهَا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे नबी ! जब तुम (लोग) अपनी पत्नियों को तलाक दिया करो तो उनको उनकी (तलाक की) इद्दत के अनुसार दो और इद्दत की गणना रखो और अल्लाह, अपने रब्ब से डरो । उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें सिवाए इसके कि वे खुली-खुली अश्लीलता में पड़ जायें । और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं । और जो भी अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो निःसन्देह उसने अपनी जान पर अत्याचार किया । तू नहीं जानता कि संभवतः इसके बाद अल्लाह कोई (नया) निर्णय प्रकट कर दे । । ।

अतः जब वे अपनी निर्धारित अवधि को पहुँच जाएँ तो उन्हें समुचित ढंग से रोक लो अथवा उन्हें समुचित ढंग से अलग कर दो । और अपने में से दो न्याय-परायण (व्यक्तियों) को साक्षी ठहरा लो और अल्लाह के लिए साक्ष्य स्थिर करो । यह वह विषय है जिसका प्रत्येक उस व्यक्ति को उपदेश दिया जाता है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाता है । और जो अल्लाह से डरे उसके लिए वह मुक्ति का कोई मार्ग बना देता है । । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتَ النِّسَاءَ
فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَخْصُوا الْعِدَّةَ
وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ
بُيُوتِهِنَّ وَلَا يُخْرِجُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حَدُودُ اللَّهِ
وَمَنْ يَتَعَدَّ حَدُودَ اللَّهِ فَقَدْ طَلَمَ
نَفْسَهُ لَا تَزِدُ فُلَّعَلَّ اللَّهُ يُخَدِّثُ
بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
وَأَشْهُدُوا ذَوَفَ عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِمُوا
الشَّهَادَةَ لِلَّهِ دُلِّكُمْ يُؤْخَذُ بِهِ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ
اللَّهَ يَجْعَلُ لَهُ مَخْرَجًا ①

और वह (अल्लाह) उसे वहाँ से जीविका प्रदान करता है जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता । और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए पर्याप्त है। निःसन्देह अल्लाह अपने निर्णय को पूरा करके रहता है । अल्लाह ने हर चीज़ की एक योजना बना रखी है । । । ।

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों यदि तुम्हें शंका हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी भी जो रजवती नहीं हुई । और जहाँ तक गर्भवतियों का संबंध है उनकी इद्दत प्रसव समय तक है । और जो अल्लाह का तकवा धारण करे अल्लाह अपने आदेश से उसके लिए सरलता पैदा कर देगा । । । ।

यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा । और जो अल्लाह से डरता है वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देता है । और उसके प्रतिफल को बहुत बढ़ा देता है । । । ।

उनको (वहीं) खो जहाँ तुम (स्वयं) अपने सामर्थ्य के अनुसार रहते हो । और उन्हें कष्ट न पहुँचाओ ताकि उन पर जीवन-निर्वाह कठिन कर दो । और यदि वे गर्भवती हों तो उन पर खर्च करते रहो जब तक कि वे अपने प्रसव से मुक्त न हो जाएँ । फिर यदि वे तुम्हारे लिए (तुम्हारी संतान को) दूध पिलाएँ तो उनका पारिश्रमिक उन्हें दो । और अपने बीच न्यायोचित ढंग से सहमति का

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْسِبُ ۝ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۝ إِنَّ اللَّهَ بِالْعُمُرِ أَمِيرٌ ۝ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ فَدْرًا ①

وَالَّتِي يَئِسَنَ مِنَ الْمُحِيطِ مِنْ تِسَابِكُمْ
إِنْ ارْتَبَتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةً أَشْهُرٍ ۝ وَالَّتِي
لَمْ يَحْضُنْ ۝ وَأَوْلَاتُ الْأَخْمَالِ
أَجَلُهُنَّ أَنْ يَصْغُرْ حَمْلَهُنَّ ۝ وَمَنْ
يَتَّقَ اللهُ يَجْعَلُ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ①

ذَلِكَ أَمْرُ اللهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۝ وَمَنْ يَتَّقَ
اللهُ يُكَفِّرُ عَنْهُ سَيِّاتِهِ وَيُعَظِّمُ لَهُ
أَجْرًا ①

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنُتُمْ مِنْ
وَجْدِكُمْ وَلَا تَصَارُوهُنَّ لِصَيْقُوا
عَلَيْهِنَّ ۝ وَلَا نَعْلَمُ أَوْلَاتِ حَمْلٍ
فَانْتَقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَصْغُرْ حَمْلَهُنَّ
فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَأَنْوَهُنَّ أَجْوَرَهُنَّ

वातावरण उत्पन्न करो। और यदि तुम (समझौता करने में) एक दूसरे से परेशानी अनुभव करो तो उस (शिशु को पिता) की ओर से कोई अन्य (दूध पिलाने वाली) दूध पिलाए। १।

चाहिए कि धनवान अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिस की जीविका कम कर दी गई हो तो जो भी अल्लाह ने उसे दिया है वह उसमें से खर्च करे। अल्लाह कदापि किसी जान को उससे बढ़ कर जो उसने उसे दिया हो। कष्ट नहीं देता अल्लाह हर तंगी के पश्चात् एक आसानी अवश्य पैदा कर देता है। १। (रुकू १/१)

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब्ब के आदेश की और उसके रसूलों की भी अवज्ञा की तो हमने उनसे एक बहुत कड़ा हिसाब लिया और उन्हें बहुत कष्टदायक अज्ञाब दिया। १।

अतः उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया और उनके कर्मों का परिणाम घाटा उठाना था। १०।

अल्लाह ने उनके लिए अत्यन्त कठोर अज्ञाब तैयार कर रखा है। अतः अल्लाह का तक्रवा धारण करो। हे बुद्धिमानों जो ईमान लाए हो! अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक महान अनुस्मारक अवतरित किया है। १।

एक रसूल के रूप में, जो तुम पर अल्लाह की स्पष्ट कर देने वाली आयतें पाठ करता है ताकि उन लोगों को जो ईमान

وَأَتِمْرُوا بِيَنْكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَلَا
تَعَسَّرُمْ فَسَتُرُضُّعُ لَهُ أُخْرَى ⑦

لِيُنْفِقُ ذُو سَعْيٍ مِّنْ سَعْيِهِ وَمَنْ قَدِرَ
عَلَيْهِ رُزْقٌ فَلِيُنْفِقْ مِمَّا أَلْهَهَ اللَّهُ لَا
يَكْلُفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا أَشْهَدَ سَيَجْعَلُ
اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ⑧

وَكَأَيْنُ مِنْ قَرْيَةٍ عَنَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا
وَرَسِّلَهُ فَحَاسِبُهَا حَسَابًا شَدِيدًا
وَعَذَّبَهَا عَذَّابًا شَكِيرًا ⑨

فَذَاقُتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
أَمْرِهَا حَسْرًا ⑩

أَعَذَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَّابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ
يَا أُولَئِكَ الْأَبَابُ هُوَ الَّذِينَ آمَنُوا ⑪
فَذَانَزَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑫

رَسُولًا يَشْلُو عَلَيْكُمْ أَيْتَ اللَّهُ مُبِيتٍ
لَّمْ يُخْرِجْ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ

लाए और नेक कर्म किए, अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाले । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव निवास करने वाले हैं । उसके लिए (जो नेक कर्म करता है) अल्लाह ने निःसन्देह बहुत अच्छी जीविका बनाई है ॥121॥*

अल्लाह वह है जिसने सात आकाश पैदा किए और उन के अनुरूप धरती भी (पैदा की) । (उसका) आदेश उन के बीच अधिकता पूर्वक उत्तरता है । ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर, जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । और अल्लाह ज्ञान की दृष्टि से हर चीज को धेरे हुए है ॥13॥ (रुकू 2/18)

مِنَ الظُّلْمَتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخَلُهُ جَنَّةً
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا
آبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ⑯

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۖ وَمِنَ
الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَنْزَلُ الْأَمْرَ بِمِنْهُنَّ
لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ

* आयत सं. 11, 12 : इन आयतों से निश्चित रूप से यह प्रमाणित होता है कि अरबी शब्द नुजूल से यह अभिप्राय नहीं कि कोई भौतिक शरीर के साथ आकाश से उत्तरता है । नुजूल का अर्थ अल्लाह ताअला की ओर से उत्कृष्ट नेमत का प्रदान होना है । इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साक्षात् अल्लाह का स्मरण और रसूल कह कर आप सल्ल. की श्रेष्ठता दूसरे सब नवियों पर सिद्ध कर दी गई है ।

66- सूरः अत-तहरीम

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं।

पिछली सूरः में ब्रह्माण्ड के जिन महत्वपूर्ण रहस्यों का वर्णन है कि वे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली पुस्तक में खोले गए हैं। अब इस सूरः में कुछ छोटे-छोटे रहस्यों का भी उल्लेख है। इस प्रकार बड़े-बड़े रहस्य भी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से खोले गए और छोटे-छोटे रहस्य भी उस सर्वज्ञ की ओर से आप सल्ल. पर खोले गए। अतः इन अर्थों में इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध स्थापित होता है कि यह अद्भुत पुस्तक है कि छोटे से छोटे रहस्य को भी और बड़े से बड़े रहस्य को भी अपने अन्दर समोए हुए है। यही आयतांश सूरः अल-कहफ आयत 50 में वर्णित है।

इस सूरः में विशुद्ध प्रायश्चित का विषय वर्णन कर के हजरत मुहम्मद सल्ल. के सेवकों को यह आदेश दिया गया है कि यदि वे सच्चे मन से प्रायश्चित करेंगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि उनके सभी छोटे और बड़े पापों को क्षमा कर दे। इस प्रायश्चित के स्वीकृत होने का यह चिह्न बताया गया है कि ऐसे प्रायश्चित करने वालों के सुधार का आरम्भ हो जाएगा और दिन प्रति दिन वे पाप छोड़ने का सामर्थ्य प्राप्त करेंगे और उनकी सभी बुराइयाँ अल्लाह तआला उनसे दूर कर देगा। यह बुराइयों को दूर करने का समय वास्तव में उस नूर के कारण प्राप्त होगा जो उन्हें प्रदान किया जाएगा। जैसे अन्धकार में चलने वाला प्रकाश से ज्ञात कर लेता है कि क्या-क्या खतरे आने वाले हैं। अतः (आयत : 9) उनका नूर उनके आगे आगे तेज़ी से चलेगा से यह अभिप्राय है कि वह अल्लाह उनका मार्ग दर्शन करता चला जाएगा। इसी प्रकार इस आयत के शब्द (वह नूर) उनके दाहिनी ओर भी चलेगा से यह संकेत प्रतीत होता है कि बुराई करने वाले लोगों को कोई नूर प्रदान नहीं किया जाता जो बायीं हाथ वाले लोग कहलाते हैं। केवल उन्हीं को नूर प्राप्त होता है जो सदा हर बुराई के मुकाबले पर नेकी को प्राथमिकता देते हैं और यही लोग हैं जिनको नेकी पर स्थिर रहने के लिए वह नूर मिलेगा जो उन्हें दृढ़ता प्रदान करेगा।

इस सूरः के अंत में उन दो अभागिन स्त्रियों का दृष्टान्त उल्लेख किया गया है जो नवियों के परिवार में शामिल होने के बावजूद कर्मतः अपनी उत्तरदायित्व निभाने में सदाचारिणी न थीं। फिर उन दोनों के विपरीत दो अत्यन्त पुण्यवती स्त्रियों का भी उल्लेख है। उनमें से एक बड़े अत्याचारी और अल्लाह के घोर शत्रु की पत्नी थी। फिर भी उसने अपने ईमान की सुरक्षा की। और दूसरी स्त्री हजरत मरियम अलैहा, का वर्णन

है जिनको अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलै. के रूप में एक चमत्कारी पुत्र प्रदान किया। यह पुत्र-लाभ किसी निजी कामना के कारण नहीं हुआ था। फिर अन्तिम आयत में वर्णन किया गया कि अल्लाह तआला मुहम्मदी उम्मत में पैदा होने वाले एक सच्चे और पवित्र व्यक्ति को भी यही चमत्कार दिखाएगा कि उसको आध्यात्मिक रूप से उच्च पद प्राप्त करने की कोई लालसा नहीं होगी बल्कि वह विनीतता का मूर्तिमान होगा, अल्लाह तआला उसमें अपनी रूह प्रविष्ट करेगा जिसके परिणामस्वरूप उसे एक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व में परिवर्तित कर दिया जाएगा। जो हज़रत ईसा अलै. के समरूप होगा। जैसा कि फर्माया फ़ नफ़ख ना फ़ीहि मिर्झहिना अर्थात् अल्लाह तआला उस मोमिन पुरुष में अपनी रूह अर्थात् वाणी फूँकेगा।



سُورَةُ التَّخْرِيمِ مَدْبُوَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةً آيَةً وَ رُكْوْعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे नबी ! तू (उसे) क्यों अवैध ठहरा
रहा है जिसे अल्लाह ने तेरे लिए वैध
ठहराया है । तू अपनी पत्नियों की
प्रसन्नता चाहता है और अल्लाह अत्यंत
क्षमाशील (और) बार-बार दया करने
वाला है । । । * ।

अल्लाह ने तुम पर अपनी कसमें तोड़ना
अनिवार्य कर दिया है । और अल्लाह
तुम्हारा स्वामी है और वह सर्वज्ञ (और)
परम विवेकशील है । । । **

और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से
किसी से गोपनीयता के साथ एक बात
कही । फिर जब उसने वह बात (आगे)
बता दी और अल्लाह ने उस (अर्थात्
नबी) पर वह (विषय) प्रकट कर दिया

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَهْلَ اللَّهُ بِكَ
تَبْغِي فَمَرْضَاتٌ أَرْوَاحِكَ ۖ وَاللَّهُ
عَفْوٌ رَّحِيمٌ ②

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحْلِلَةً أَيْمَانِكُمْ ۝
وَاللَّهُ مَوْلَانَا ۝ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ ③

وَإِذَا سَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَرْوَاحِهِ
حَدَّيْتَ ۝ فَلَمَّا يَبْأَسْتُ بِهِ وَأَطْهَرَهُ اللَّهُ

* इस विवाद में पड़ने की तो आवश्यकता नहीं कि कौन सी वस्तु पत्नियों को अप्रिय थी जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल. ने उनके लिए अपने ऊपर अवैध ठहराया । वह जो भी वस्तु थी अल्लाह तआला ने उसे वैध घोषित कर दिया है । इस प्रकार यह आदेश है कि अल्लाह तआला ने जिन वस्तुओं को स्पष्ट रूप से अवैध या वैध ठहरा दिया है उनको परिवर्तित करने का मनुष्य को अधिकार नहीं । जन-साधारण को तो यह अधिकार है कि वे अपनी पसन्द और नापसन्द के अनुसार कुछ वस्तुओं को अपने लिए अवैध वस्तु के समान ठहरा लें परन्तु वे दूसरों के लिए आदर्श नहीं होते । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विशेष रूप से यह आदेश दिया गया है कि आप सल्ल. मुहम्मदी उम्मत के लिए आदर्श हैं ।

** यहाँ कसमों को तोड़ने का यह अर्थ नहीं कि गंभीरता पूर्वक किसी वचन को पूरा करने के उद्देश्य से खाई गई उचित कसमों को भी अवश्य तोड़ दिया जाए । यहाँ केवल यह भाव है कि अल्लाह तआला के द्वारा निरूपित वैध और अवैध में से यदि तुम किसी को परिवर्तित करने की कसम खा बैठो तो उसे तोड़ दिया करो, परन्तु उसका भी प्रायस्त्रिचत करना होगा ।

तो उसने (उस विषय के) कुछ भाग से तो उस (पत्नी) को अवगत करा दिया और कुछ को टाल गया । फिर जब उसने उस (पत्नी) को इसकी सूचना दी तो उसने पूछा कि आप को किस ने बताया है ? तो उसने कहा कि सर्वज्ञ और सर्व-अवगत (अल्लाह) ने मुझे बताया है । १। यदि तुम दोनों प्रायश्चित करते हुए अल्लाह की ओर ज्ञुको तो (यही यथोचित है क्योंकि) तुम दोनों के दिल (पाप की ओर) ज्ञुक चुके थे । और यदि तुम दोनों उसके विरुद्ध एक दूसरे की सहायता करो तो निःसन्देह अल्लाह ही उसका संरक्षक है और जिब्रील भी और मोमिनों में से प्रत्येक सदाचारी व्यक्ति भी । और इसके अतिरिक्त फरिश्ते भी उसके पृष्ठपोषक हैं । १।*

संभव है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे (तो) उसका रब तुम्हारे बदले उसके लिए तुम से उत्तम पत्नियाँ ले आए, (जो) मुसलमान, ईमान वालियाँ आज्ञाकारिणी, प्रायश्चित करने वालियाँ, उपासना करने वालियाँ, रोज़े रखने वालियाँ, विधवाएँ और कुवाँरियाँ (हों) । १।

हे लोगों जो ईमान लाए हो ! अपने आप को और अपने घर वालों को

عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَغْرَضَ عَنْهُ
بَعْضٌ فَلَمَّا بَأَتَاهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ
هَذَا قَالَ بَيْانِي الْعَلِيمُ الْخَيْرُ ①

إِنْ شَوَّبْيَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَفَتْ قُلُوبُكُمْ
وَإِنْ تَظَهِّرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجَنَّبَنِيلَ وَصَالِحَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلِكَةَ
بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرُ ②

عَسَى رَبُّهُ أَنْ طَلَقْمَنْ أَنْ يُبْدِلَهُ
أَرْوَاجَأَ خَيْرًا قِنْكَنْ مُسْلِمَتِ مُؤْمِنَتِ
قِنْتَتِ تِئْبِتِ عِدْتِ سِيْحَتِ شِيْبِتِ
وَأَبْكَارًا ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوَّا أَنْسَكُمْ

* इस आयत में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उन दो पत्नियों का नाम उल्लेख नहीं किया गया जिनसे हजरत मुहम्मद सल्ल. ने एक राज की बात बताई थी जो उन्होंने आगे फैला दी । जिस बात को अल्लाह तआला ने गुप्त रखा है, मनुष्य का काम नहीं कि उस विषय में अटकल बाज़ियाँ करे ।

(उस) अग्नि से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं । उस पर बहुत कठोर, शक्तिशाली फरिश्ते (नियुक्त) हैं । अल्लाह उन्हें जो आदेश दे उस बारे में वे उसकी अवज्ञा नहीं करते और वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है । १।

हे वे लोगों जिन्होंने इनकार किया ! आज बहाने मत बनाओ । निश्चित रूप से तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे । ४।

(रुकू ۱۹)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! अल्लाह की ओर विशुद्ध रूप से प्रायश्चित करते हुए झुको । सम्भव है कि तुम्हारा रब तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दे और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे जिनके दामन में नहरें बहती हैं । जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको अपमानित नहीं करेगा जो उसके साथ ईमान लाए । उनका नूर उनके आगे भी तीव्रता पूर्वक चलेगा और उनके दाएँ भी । वे कहेंगे हे हमारे रब ! हमारे लिए हमारे नूर को सम्पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे । निःसन्देह तू हर चीज़ पर, जिसे तू चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । १।

हे नबी ! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद कर और उनके विशुद्ध कठोरता अपना । और उनका

وَأَهْلِئُكُمْ نَارًا وَقُوْدَهَا النَّارُ
وَالْحَجَارَةُ عَلَيْهَا مَلِيكَةٌ غَلَاظٌ شَدَادٌ
لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمْرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ
مَا يُؤْمِنُونَ ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوْنَ وَالْيَوْمَ
إِنَّمَا تُجْزَوُنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ بَوَّبَهُ اللَّهُ تَوْبَةً
لِصُورَحَاطَعْسِي رَبِّكُمْ أَنْ يُكَفَرَ عَنْكُمْ
سَيِّاتُكُمْ وَيَدِ خَلَكُمْ جَنَاحِتِ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ ۖ يَوْمَ لَا يَخْرِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ
آيَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبِّنَا
أَتُمْلِنَّا نُورَنَا وَأَغْفِرْنَا ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ جَاهَدُوا لِكَفَارَ وَالْمُنْفِقِينَ
وَأَغْلَظُ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا أُولَئِمْ جَهَنَّمُ

ठिकाना नरक है और वह बहुत ही
बुरा ठिकाना है ॥10॥*

अल्लाह ने उन लोगों के लिए जिन्होंने
इनकार किया, नूह की पत्नी और लूट
की पत्नी का उदाहरण वर्णन किया है।
वे दोनों हमारे दो सदाचारी भक्तों के
अधीन थीं। फिर उन दोनों ने उनसे
विश्वासघात किया तो वे उनको अल्लाह
की पकड़ से लेश-मात्र भी बचा न सके।
और कहा गया कि तुम दोनों अग्नि में
प्रविष्ट होने वालों के साथ प्रविष्ट हो
जाओ ॥11॥

और अल्लाह ने उन लोगों के लिए जो
ईमान लाए, फिरऔन की पत्नी का
उदाहरण दिया है। जब उसने कहा, हे
मेरे रब ! मेरे लिए अपने निकट स्वर्ग
में एक घर बना दे और मुझे फिरऔन
से और उसके कर्म से बचा ले और मुझे
इन अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान
कर ॥12॥

और इम्रान की बेटी मरियम (के साथ
मोमिनों का उदाहरण दिया है) जिसने
अपना सतीत्व सही ढंग से बचाए रखा
तो हमने उस (बच्चे) में अपनी रुह में
से कुछ फूँका और उस (की माँ) ने
अपने रब के वाक्यों और उसकी

* जो जिहाद निजी स्वार्थों के लिए नहीं, बल्कि केवल अल्लाह तआला के लिए किया जा रहा हो,
उसमें शत्रुओं से युद्ध करते हुए कठोरता अपनाने का आदेश है चाहे दिल कितना ही कोमल हो। एक
अन्य आयत से इस कठोरता का लाभ यह प्रतीत होता है कि इसके परिणाम स्वरूप जो युद्ध में
सम्मिलित होने वाले लोग नहीं हैं, वे भी डर जाएंगे और अकारण मुसलमानों से युद्ध नहीं करेंगे जैसा
कि सूरः अल अन्काल आयत 58 में आदेश दिया गया है कि उनके पिछलों को भी तितर-बितर
कर दे।

وَبِئْسَ الْمُصِيرُ ۝

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ
نَوْجَ وَامْرَأَتَ لَوْطٍ ۝ كَانَتَا تَحْتَ
عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتْهُمَا
فَلَمْ يَعْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقَيْلَ
اَدْخُلَا الشَّارَعَ الدُّخْلِيْنَ ۝

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ ۝ اِذْ قَاتَلَ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكِ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَحْفَ مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمِلَهُ وَنَحْفِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّلِيمِيْنَ ۝

وَمَرِيْمَ ابْنَتَ عَمْرَنَ اَتَتْ اَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوْحِنَا
وَصَدَقَتْ بِكَلْمِتِ رَبِّهَا وَكَتَبْهُ وَكَانَتْ

पुस्तकों की भी पुष्टि की और वह है
आज्ञाकारिणी थी । 13।* (रुक् $\frac{2}{20}$)

وَمِنَ الْقَنْتِينَ ⑯

* इसी विषय वस्तु पर आधारित एक और आयत (सूरः अल अम्बिया 92) में फ़र्माया गया फिर हम ने उसमें अपने आदेश में से कुछ फूँका । यहाँ उसमें कह कर इस ओर संकेत किया गया कि जो मोमिन आध्यात्मिक रूप से मरियम की स्थिति में पहुँचेंगे उनके भीतर भी रुह फूँकी जाएगी । अर्थात वे उपमा स्वरूप अपने समय के ईसा बनाए जाएंगे ।

67 – सूरः अल-मुल्क

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं।

इस सूरः का आरम्भ इस आयत से होता है कि केवल वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके अधिकार में समग्र साप्राज्य है। अर्थात् अल्लाह तआला सब का स्वामी है और वह जो चाहता है उस का सामर्थ्य रखता है। अतः पिछली सूरः में जिस आश्चर्यजनक विषयवस्तु का वर्णन हुआ है उसी की ओर यहाँ संकेत प्रतीत होता है। क्योंकि इसके पश्चात् मृत्यु से जीवन उत्पन्न करने का विषय आरम्भ हुआ है और यह घोषणा की गई है कि जैसे अल्लाह तआला समर्थ है कि भौतिक मुर्दों को जीवित कर दे, उसी प्रकार आध्यात्मिक मुर्दों को भी फिर से जीवित करने पर समर्थ है। इसमें मुहम्मदी उम्मत के लिए एक महान् शुभ-समाचार है।

इसके तुरन्त पश्चात् कहा कि सारी सृष्टि पर विचार करके देख लो वह एक ही सष्टा के होने की गवाही देगी और इसमें कोई त्रुटि दिखाई नहीं देगी। यदि यह सृष्टि स्वयं उत्पन्न हुई होती तो कहीं किसी त्रुटि के चिह्न दिखाई देने चाहिए थे। बल्कि अधिकतर त्रुटियाँ दिखाई देनी चाहिए थी। यदि अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी कल्पित साज्ञीदार ने यह सृष्टि बनाई होती तो अवश्य उसके बनाए हुए नियमों का अल्लाह के बनाए हुए नियमों से टकराव होना चाहिए था। अतः इस दृष्टि से समस्त मानव जाति को विचार करने का आमंत्रण दिया गया है कि सृष्टि के रहस्यों पर बार-बार दृष्टि डालें तो उनकी दृष्टि थकी हारी पश्चाताप करती हुई उनकी ओर लौटेगी परन्तु वे सृष्टि में कहीं कोई त्रुटि ढूँढ नहीं सकेंगे।

इस सूरः में ऐसे आध्यात्मिक पक्षियों का भी वर्णन है जो आकाश की विस्तृत वायुमण्डल में ऊँची उड़ान भरने का सौभाग्य पाते हैं। जिस प्रकार साधारण पक्षियों को अल्लाह तआला ने ही उड़ने की शक्ति प्रदान की है और धरती और आकाश के मध्य काम पर लगा दिया है इसी प्रकार वही अपने मोमिन भक्तों को भी उड़ने की शक्ति प्रदान करता है। इसके विपरीत नीचे मुँह लटकाए चलने वाले पशुओं को कोई आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त नहीं होती, न सामान्य अर्थों में और न आध्यात्मिक अर्थों में।

इस सूरः की अन्तिम आयत में कहा गया है कि जीवन का पानी जो आकाश से उतरता है जिससे तुम सदा लाभ उठाते हो, परन्तु कभी यह भी विचार किया कि यदि वह लगातार सूखे के कारण तुम्हारी पहुँच से दूर धरती की गहराइयों में चला जाए तो तुम स्वच्छ जल कहाँ से लाओगे ? अतः भौतिक जल की भाँति आध्यात्मिक जल भी अल्लाह तआला की विशेष कृपा से ही मनुष्य को प्राप्त होता है।

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِ لِإِحْدَى وَثَلَاثَتُونَ آيَةٍ وَرُشْكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

केवल एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ
जिसके अधिकार में समग्र साम्राज्य है
और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे
स्थायी सामर्थ्य रखता है । 2।

वही जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा
किया ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि
कर्म की दृष्टि से तुम में से कौन उत्तम है
और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत
क्षमा करने वाला है । 3।

वही जिसने सात आकाशों को कई परतों
में पैदा किया । तू रहमान (अल्लाह) की
सृष्टि में कोई विसंगति नहीं देखता ।
अतः नज़र दौड़ा, क्या तू कोई त्रुटि देख
सकता है ? । 4।*

फिर दोबारा नज़र दौड़ा, तेरी ओर नज़र
असफल लौट आएगी और वह थकी
हारी होगी । 5।

और निःसन्देह हमने निकट के
आकाश को दीपकों से सुशोभित किया
और उन्हें शैतानों को धिक्कारने का
साधन बनाया और उन के लिए हमने
धधकता हुआ अग्नि का अज्ञाब तैयार
किया । 6।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَبَرَّكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَأْتُوا كُمْ
أَيْكُمْ أَحَسَنُ عَمَلاً وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْغَفُورُ ③

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طَبَاقًا مَّا تَرَىٰ
فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَقْوِيتٍ فَإِذَا جِ
الْبَصَرُ هُلْ تَرَىٰ مِنْ قُطْنَرٍ ④

لَمْ يَأْرِجِ الْبَصَرَ كَرَّتِينَ يَقْلِبُ إِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ⑤

وَلَقَدْ رَأَيْتَ السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ
وَجَعَلْنَاهَا رَجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْذَنَا
لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑥

* इस आयत में मनुष्य को यह चुनौती दी गई है कि समग्र ब्रह्माण्ड पर जितनी चाहे गवेषणा कर ले
उसे एक ही रचयिता की रचना होने के कारण इस में कोई विसंगति नहीं दिखेगी ।

और उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया, नरक का अज्ञाब है और वह बहुत बुरा लौटने का स्थान है । 7।

जब वे उसमें झोंके जाएँगे, वे उसकी एक चीत्कार की सी आवाज़ सुनेंगे और वह भड़क रहा होगा । 8।

सम्भव है कि वह क्रोध से फट जाए । जब भी उसमें कोई समूह झोंका जाएगा उस के प्रहरी उनसे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई सतर्ककारी नहीं आया था ? । 9।

वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे पास सतर्ककारी अवश्य आया था अतः हमने (उसे) झुठला दिया और हमने कहा, अल्लाह ने कोई वस्तु नहीं उतारी, तुम केवल एक बड़ी पथभ्रष्टता में (पड़े) हो । 10।

और वे कहेंगे, यदि हम (ध्यान पूर्वक) सुनते अथवा बुद्धि का प्रयोग करते तो हम अग्नि में पड़ने वालों में सम्मिलित न होते । 11।

अतः उन्होंने अपने पाप का स्वीकार कर लिया । अतएव अग्नि में पड़ने वालों का सर्वनाश हो । 12।

निःसन्देह वे लोग जो अदृश्य में अपने रब्ब से डरते हैं, उनके लिए क्षमादान और बहुत बड़ा प्रतिफल है । 13।

और तुम अपनी बात को छुपाओ अथवा उसे प्रकट करो, निःसन्देह वह सीने की बातों का सदैव ज्ञान रखता है । 14।

وَلِلّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابٌ جَهَنَّمْ
وَإِنَّهُمْ مُّصِيرُونَ ⑦

إِذَا أَلْقَوْفِيهَا سِمِعُوا هَاشِهِيْقَا وَهُوَ
تَفُورٌ ⑧

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْعَيْظِ طَلْكُمَا أَلْقَى قِبَها
فَوْجٌ سَالِهِمْ حَرَثُهَا أَلْمُرْ يُأْتِكُمْ
نَذِيرٌ ⑨

قَالُوا بَلِّي فَذَجَأْتَنَا نَذِيرٌ فَكَذَبَنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنَّا نُنَمِّ
إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَيْنِيرُ ⑩

وَقَالُوا وَلَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِي أَصْحِبِ السَّعِيرِ ⑪

فَاعْتَرَقُوا بِذِيْهِمْ فَسَخَّا لِأَصْحِبِ
السَّعِيرِ ⑫

إِنَّ الَّذِينَ يَخْتَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَغْرِرَةٌ وَأَجْرٌ كَيْنِيرُ ⑬

وَأَسْرَرُوا قُولَكُمْ أَوْ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ
عَلَيْهِمْ بِذَاتِ الصَّدَرِ ⑭

क्या वह जिसने पैदा किया, नहीं जानता ? जबकि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर दृष्टि रखने वाला (और) सदा अवगत है । 15। (रुक् १)

वही है जिसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया । अतः उसके रास्तों पर चलो और उस (अर्थात् अल्लाह) की जीविका में से खाओ और उसी की ओर उठाया जाना है । 16।

क्या तुम उससे जो आकाश में है (इस बात से) सुरक्षित हो कि वह तुम्हें धरती में धंसा दे । फिर वे सहसा थरने लगे । 17।

अथवा क्या तुम उससे जो आकाश में है सुरक्षित हो कि वह तुम पर पत्थर बरसाने वाले झक्कड़ चला दे ? फिर तुम अवश्य जान लोगे कि मेरा सतर्क करना कैसा था । 18।

और निःसन्देह उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पूर्व थे । अतः कैसा कठोर था मेरा दण्ड ! 19।

क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर पंख फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा ? रहमान (अल्लाह) के अतिरिक्त कोई नहीं जो उन्हें रोके रखे । निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर गहन दृष्टि रखता है । 20।*

* पक्षियों के आकाश में उड़ने और वायुमंडल में काम पर लगने के सम्बन्ध में यह आयत गूढ़ अर्थ रखती है । पक्षियों की संरचना विशेषता के साथ ऐसे नियमों के अनुसार की गई है कि वे वायुमंडल में उड़ सकें । यह केवल संयोग की बात नहीं । कुछ शिकारी पक्षियों की गति वायु में दो सौ मील प्रति घंटा तक पहुँच जाती है और उनके शरीर की बनावट ऐसी है कि इस वेग से उनको कोई भी हानि नहीं पहुँचती । क्योंकि हवा चांच और सिर से टकरा कर चारों ओर फैल जाती है और इसी वेग के साथ वे उड़ते हुए पक्षियों का शिकार भी कर लेते हैं ।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ الْلَّطِيفُ
الْخَيْرُ ⑩

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا
فَامْشُوا فِي مَا أَنْجَبَهَا وَلَا كُوَا مِنْ رِزْقٍ
وَإِلَيْهِ النُّسُورُ ⑪

إِمْثُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُخْسِفَ بِكُمْ
الْأَرْضَ فَإِذَا هُنَّ تَمُورُ ⑫

أَمْ إِمْثُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ
نَذِيرٌ ⑬

وَلَقَدْ كَذَبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ تَكْيِيرٌ ⑭

أَوْلَمْ يَرَوُا إِلَى الظَّيْرِ فَوْقَهُ صَلْتٌ
وَيَقْبِضُنَّ ۝ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا
الرَّحْمَنُ ۝ إِنَّهُ يُكْلِ شَيْءٍ بِصَيْرٌ ⑮

अथवा ये कौन होते हैं जो तुम्हारी सेना बन कर रहमान के मुकाबले पर तुम्हारी सहायता करें। काफिर केवल एक बड़े धोखे में हैं। 121।

अथवा यदि वह (अल्लाह) अपनी जीविका रोक ले तो ये हैं क्या चीज़ जो तुम्हें जीविका प्रदान करें? बल्कि वे तो उद्दण्डता और घृणा में बढ़ते चले जाते हैं। 122।

अतः क्या वह जो अपनी अज्ञानता और विस्मयता में भटकता फिरता है, अधिक हिदायत प्राप्त है अथवा वह जो सन्मार्ग पर सीधा चलता है? 123।

कह दे कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम बहुत ही कम कृतज्ञता प्रकट करते हो। 124।

कह दे कि वही है जिसने धरती में तुम्हारा बीजारोपण किया और उसी की ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे। 125।

और वे पूछते हैं, यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा? 126।

तू कह दे कि पूर्ण ज्ञान तो अल्लाह के पास है। और मैं तो केवल खुला-खुला सतर्कारी हूँ। 127।

अतः जब वे उसे निकट देखेंगे तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके

آمِنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جَنْدُكُمْ يَنْصُرُكُمْ
قِنْ دُونَ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفَّارُونَ إِلَّا
فِي غَرْرٍ ⑥

آمِنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ بَلْ تَجْوَافِعُ عَشْوَوْنَفُورِ ⑦

أَفَمَنْ يَمْشِي مُمْكِنًا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى
آمِنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَى صَرَاطِ
مُسْتَقِيمٍ ⑧

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمْ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأُفْكَةَ ⑨ قَلِيلًا مَا
تَشْكُرُونَ ⑩

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَ أَكْفَرَ فِي الْأَرْضِ وَالَّذِي
تُخْسِرُونَ ⑪
وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ⑫

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ ⑬ وَإِنَّمَا آنَا
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑭

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةَ سَيِّئَتْ وَجْهُهُ الَّذِينَ

चेहरे मलिन हो जाएँगे और कहा जाएगा, यही है वह जिसे तुम माँगा करते थे । 28।

कह दे, बताओ तो सही कि यदि अल्लाह मुझे और उसे भी जो मेरे साथ है, तबाह कर दे अथवा हम पर दया करे तो काफिरों को पीड़ाजनक अज़ाब से कौन शरण देगा ? । 29।

तू कह दे वही रहमान है । हम उस पर ईमान ले आए और उस पर ही हमने भरोसा किया । अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे कि कौन है जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा है । 30।

तू कह दे कि यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाए तो कौन है जो तुम्हारे पास सोतों का पानी लाएगा ? । 31।

(रुक् २)

كَفَرُوا وَقِيلَ لَهُمْ أَنَّهُمْ كُفَّارٌ بِهِ
تَدَعُونَ ④

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعَيْ
أُوْرَحْمَنًا لَا فَمْ يُحِيرُ الْكُفَّارُ إِنْ مِنْ
عَذَابٍ أَلْيَسِ ⑤

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمْ أَنَا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑥

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَا كُنْتُمْ غَوْرًا
فَمَنْ يَأْتِي بِكُفْرٍ بِمَا أَعْلَمُ مَعِينٍ ⑦

68- सूरः अल-क़लम

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं।

यह सूरः खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली अन्तिम सूरः है। यह सूरः अरबी अक्षर नून से आरम्भ होती है जिसका एक अर्थ दवात है और लेखनी से लिखने वाले सभी इसके ज़रूरतमन्द रहते हैं। और मनुष्य की समस्त उन्नति का युग लेखनी के आधिपत्य से आरम्भ होता है। यदि मनुष्य उन्नति में से लेखन विद्या को निकाल दिया जाए तो मनुष्य अज्ञानता की ओर लौट जाएगा और फिर कभी उसे किसी प्रकार ज्ञान की उन्नति प्राप्त नहीं हो सकती।

फिर नून अक्षर से अभिप्राय अल्लाह तआला के वह नबी हैं जिन्हें जुन नून कहा जाता है अर्थात् हज़रत यूनुस अलै। उनका भी इसी सूरः में वर्णन मिलता है कि वह क्या घटना घटी थी जिसके परिणाम स्वरूप वह अपनी जाति पर अल्लाह तआला का अज्ञाब न उतरने के कारण, जिसकी उन्हें चेतावनी दी गई थी, भारी मन से उस बस्ती को यह सोच कर छोड़ गए थे कि आगे कभी वह उस जाति को मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहेंगे। तब अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलै, को यह शिक्षा दी कि उसकी चेतावनी कई बार प्रायश्चित और क्षमायाचना से टल जाती है। उनको यह दुआ भी सिखाई, ला इला-ह इल्ला अन त मुबहा न क इन्नी कुन्तु मिनज़ज़ालिमीन (सूरः अल अम्बिया, आयत 88) अर्थात् तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं। तू तो प्रत्येक दुर्बलता से पवित्र है। मैं ही अत्याचारी था जो प्रायश्चित करने वाली एक जाति के लिए अज्ञाब की कामना करता रहा।

इस सूरः में नून अक्षर का बार-बार उल्लेख है जो इस सूरः के विषयवस्तुओं के साथ पूर्णतया सामंजस्य रखता है और एक भी स्थान पर विषयवस्तु और नून अक्षर में कोई विसंगति दिखाई नहीं देती।



سُورَةُ الْقَلْمَنْ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُسْكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

नून : क़सम है लेखनी की और उसकी
जो वे लिखते हैं । 12।

तू अपने रब्ब की नेमत के फलस्वरूप
पागल नहीं है । 13।

और निश्चित रूप से तेरे लिए एक अनंत
प्रतिफल है । 14।

और निश्चित रूप से तू सुशीलता के
शिखर पर स्थित है । 15।

अतः तू देख लेगा और वे भी देखेंगे । 16।

कि तुम में से कौन पागल है । 17।

निःसन्देह तेरा रब्ब ही सबसे अधिक उसे
जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया
है और वही हिदायत पाने वाले लोगों को
भी सबसे अधिक जानता है । 18।

अतः तू झुठलाने वालों का आज्ञापालन
न कर । 19।

वे चाहते हैं कि यदि तू लचक दिखाए तो
वे भी लचक दिखाएँगे । 10।

और तू बढ़-बढ़ कर क़समें खाने वाले
किसी अपमानित व्यक्ति की बात
कदापि न मान । 11।

(जो) बड़ा छिद्रान्वेषी (और) चुगलियाँ
करते हुए बहुत चलने वाला है । 12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

نَوَالْقَلْمِ وَمَا يَسْطِرُونَ ②

مَا أَنْتَ بِنْعَمَةِ رَبِّكَ بِمَجْهُونٍ ③

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْتُونٍ ④

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ حُكْمٍ عَظِيمٍ ⑤

فَسَبِّصْرُ وَيَصْرُونَ ⑥

بِأَيِّكُمُ الْمُفْتُونُ ⑦

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ صَلَّ عَنْ

سَيِّلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهَدِّدِينَ ⑧

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ⑨

وَدُّوا لَوْنَدِهِنْ فَيَدِهِنُونَ ⑩

وَلَا تُطِعِ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنِ ⑪

هَمَّا زِ مَشَّا عِ بِمَيْمِ ⑫

(जो) भलाई से बहुत रोकने वाला,
सीमा का उल्लंघन करने वाला (और)
महापापी है ॥13॥

बहुत कठोर हृदयी । इसके अतिरिक्त
अवैध संतान है ॥14॥

(क्या केवल इस कारण अकड़ता है) कि
वह धनवान और (अनेक) संतान-
सन्तान वाला है ॥15॥

जब उस के समक्ष हमारी आयते पढ़ी
जाती हैं कहता है, (ये) पहले लोगों की
कहानियाँ हैं ॥16॥

निःसन्देह हम उसे थूथनी पर
दागेंगे ॥17॥*

हमने उनकी परीक्षा ली जिस प्रकार
घने बाग वालों की परीक्षा ली थी ।
जब उन्होंने कसम खाई थी कि वे
अवश्य पौ फटते ही उसकी फसल काट
लेंगे ॥18॥

और वे अल्लाह का नाम नहीं लेते थे
(इन्शा)अल्लाह अर्थात् यदि अल्लाह ने
चाहा, नहीं कहते थे) ॥19॥

अतः तेरे रब्ब की ओर से उस (बाग)
पर एक घूमने वाला (अज्ञाब) फिर गया
जबकि वे सोए हुए थे ॥20॥

फिर वह (बाग) ऐसा हो गया जैसे काट
दिया गया हो ॥21॥

अतः वह सुबह सवेरे एक दूसरे को
पुकारने लगे ॥22॥

कि यदि तुम फसल काटने वाले हो
तो सवेरे-सवेरे अपनी कृषि भूमि पर

مَنَاعٍ لِّلْحَمِيرِ مُعْتَدِلَ أَشِيمٌ^⑯

عَتَّلٌ بَعْدَ ذَلِكَ زَنْبُرٌ^{١٧}

أَنْ كَانَ ذَامَالٌ وَّبَنِينَ^{١٨}

إِذَا شَتَّلَ عَلَيْهِ أَيْتَنَا قَالَ أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ^{١٩}

سَنَسِمَةٌ عَلَى الْخُرُطُومِ^{٢٠}

إِلَّا يَلْكُونُهُمْ كَمَا يَلْكُونَا أَصْحَابَ
الْجَنَّةِ إِذَا أَقْسَمُوا لِيَصْرِمُنَّهَا
مُصْبِحِينَ^{٢١}

وَلَا يَسْتَثْنُونَ^{٢٢}

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّنْ رِّيلَكَ وَهُمْ
نَاءِمُونَ^{٢٣}

فَأَضْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ^{٢٤}

فَسَادَوْا مُصْبِحِينَ^{٢٥}

أَنْ أَغْدُوْا عَلَى حَرِيشَمْ إِنْ كَنْتُمْ^{٢٦}

* अरबी शब्द खुरतूम का अर्थ 'थूथनी' है (लिसान उल अरब)

पहुँचो । 23।

صِرِّ مِينَ ④

अतः उन्होंने प्रस्थान किया और परस्पर कानाफूँसी करते जाते थे । 24।

कि आज इसमें तुम्हारे हित के विरुद्ध कोई दरिद्र (व्यक्ति) कदापि प्रवेश न कर पाए । 25।

वे किसी को कुछ न देने की योजना बनाते हुए गए । 26।

अतः जब उन्होंने उसको देखा (तो) कहा कि निःसन्देह हम तो मारे गए । 27।*

बल्कि हम तो चंचित कर दिये गए हैं । 28।

उनमें से सब से अच्छे व्यक्ति ने कहा, क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि तुम क्यों (अल्लाह की) स्तुति नहीं करते ? 29।

उन्होंने कहा, पवित्र है हमारा रब । निःसन्देह हम ही अत्याचारी थे । 30।

फिर वे एक दूसरे को भर्त्सना करते हुए चले । 31।

कहने लगे, हाय हमारा सर्वनाश ! निःसन्देह हम ही उद्धण्डी थे । 32।

सम्भव है कि हमारा रब बदले में हमें इससे उत्तम दे । निःसन्देह हम अपने रब की ओर ही उन्मुख होने वाले हैं । 33।

अज्ञाब इसी प्रकार होता है और परलोक का अज्ञाब निश्चित रूप से सबसे बड़ा होगा । काश वे जानते ! । 34। (रुक् ۱)

* इस अर्थ के लिए देखें शब्दकोष अल-मुन्जिद ।

فَانْتَلَقُوا وَهُمْ يَخَافُونَ ④

أَنْ لَا يَدْخُلُهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مُّسْكِنٌ ⑤

وَغَدَوْا عَلَى حَرْدِ قَدِيرٍ ⑥

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَائِقُونَ ⑦

بِلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ⑧

قَالَ أَوْسَطْهُمْ أَلْمَأْقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تَسْبِحُونَ ⑨

قَالُوا سَبِّحْنَ رَبِّنَا إِنَّا كَنَّا ظَلَمِينَ ⑩

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلَوَّمُونَ ⑪

قَالُوا يَا يُلَّنَا إِنَّا كَنَّا طَغِيْنَ ⑫

عَسَى رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا رَاغِبُونَ ⑬

كَذِيلَكَ العَذَابُ وَلَعْنَادَابُ الْآخِرَةِ

۷۸

أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۷۹

निःसन्देह मुत्तकियों के लिए उनके रब्ब के निकट नेमतों वाले स्वर्ग हैं। 135।

अतः क्या हम आज्ञाकारियों को अपराधियों की भाँति बना लें ? 136।

तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ? 137।

क्या तुम्हारे लिए कोई पुस्तक है जिसमें तुम पढ़ते हो ? 138।

निःसन्देह उसमें तुम्हारे लिए वह (कुछ) होगा जिसे तुम अधिक पसन्द करते हो। 139।

क्या तुम्हारे पक्ष में हम पर ऐसी कऱ्समें हैं जो हमें क्रयामत तक के लिए बाध्य करती हैं कि तुम्हें पूरा अधिकार है जो चाहो निर्णय करो ? 140।

तू उनसे पूछ (कि) उनमें से कौन है जो इस बात का उत्तरदायी है ? 141।

क्या उनके पक्ष में कोई उपास्य हैं ? यदि वे सच्चे हैं तो अपने उपास्यों को ले आएँ। 142।

जिस दिन ख़बू घबराहट का सामना होगा और वे सजदः करने के लिए बुलाए जाएँगे परन्तु सामर्थ्य न रखते होंगे। 143।

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । और निःसन्देह उन्हें (इससे पूर्व) सजदों की ओर बुलाया जाता था, जब वे सही सलामत थे। 144।

إِنَّ لِلْمُتَقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَاحٌ
الثَّعِيرِ ⑩

أَفَنْجَعَ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۖ

مَا لَكُمْ ۖ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۖ ۷

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَذَرُّسُونَ ۖ ۸

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَاتٌ خَيْرٌ وَّ

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةٍ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَاتٌ حَكْمُونَ ۖ ۹

سُلْطَنُهُمْ أَيْمَانُهُمْ بِذِلِّكَ زَعِيمُهُ ۖ ۱۰

أَمْ لَهُمْ شُرَكٌ ۖ قَلِيلُاً تُؤْنَوا بِشُرَكٍ كَيْفُ
إِنْ كَانُوا صَدِيقِينَ ۖ ۱۱

يَوْمَ يُكَشَّفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِعُونَ ۖ ۱۲

خَاسِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرَهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
وَقَدْ كَانُوا يَدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
وَهُمْ سَلِمُونَ ۖ ۱۳

अतः तू मुझे और उसे जो इस वर्णन को छुठलाता है छोड़ दे । हम उन्हें धीरे-धीरे इस प्रकार पकड़ लेंगे कि उन्हें कुछ ज्ञान न हो सकेगा । 145।

और मैं उन्हें ढील देता हूँ । मेरी योजना निश्चित ही बहुत पक्की है । 146।

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है कि वे चट्टी के बोझ तले दबे जा रहे हों । 147।

क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, फिर वे (उसे) लिखते हैं ? 148।

अतः अपने रब्ब के निर्णय की प्रतीक्षा में धैर्य धर और मछली वाले की भाँति न बन । जब उसने (अपने रब्ब को) पुकारा और वह शोक से भरा हुआ था । 149।

यदि उसके रब्ब की ओर से एक विशेष नेमत उसे बचा न लेती तो वह चटियल मैदान में इस प्रकार फेंक दिया जाता कि वह अत्यन्त धिक्कारा हुआ होता । 150।

फिर उसके रब्ब ने उसे चुन लिया और उसे नेक लोगों में गिन लिया । 151।

निश्चित रूप से काफिरों से यह असम्भव नहीं कि जब वे अनुसृति सुनते हैं तो तुझे अपनी दृष्टि (के प्रकोप) के द्वारा गिराने का प्रयत्न करें । और वे कहते हैं निःसन्देह यह तो एक पागल है । 152।

हालाँकि वह तो समस्त लोकों के लिए उपदेश के अतिरिक्त कुछ नहीं । 153।

(रुक् २)

فَذَرْنِ وَمَنْ يُكَذِّبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدِرْ جَهَنَّمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَأَمْلِئْ لَهُمْ أَنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ①

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرِبِ
مُّنْقَلُونَ ۝ ②

أَمْ عِنْدَهُمْ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝ ③

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحَوْتِ إِذْنَادِي وَهُوَ مُكْطُومُرِ ۝ ۴

لَوْلَا أَنْ تَدَرَكَ نِعْمَةً مِنْ رَبِّهِ لَتَبْدِ
بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومُرِ ۝ ۵

فَاجْتَبَيْ رَبِّهِ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ ۶

وَإِنْ يَكُادُ الظَّنِينَ كَفَرُوا لَيْزِ لَقُونَكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَآسِمُوا الْذَّكْرَ وَيَقُولُونَ
إِنَّهُ لَمَجْنُونُ ۝ ۷

وَمَا هُوَ إِلَّا ذَكْرٌ لِلْعَلَمِينَ ۝

69- सूरः अल-हाक़कः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं।

सूरः अल-कलम में यह विषय वर्णन हुआ था कि जब हम नवियों के शत्रुओं को ढील देते हैं तो इस लिए देते हैं ताकि उनके पापों का घड़ा भर जाए और फिर अल्लाह तआला की पकड़ से उनको कोई बचा नहीं सकता। इस सूरः में भी उन जातियों का वर्णन है जिनको अल्लाह तआला की ओर से बार-बार ढील दी गई। परन्तु जब उनके पापों का घड़ा भर गया तो उनकी पकड़ की घड़ी आ गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने मानव जाति को जिस बहुत बड़े अज़ाब से सतर्क करने का आदेश दिया है उसका संबंध संसार के किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय से नहीं है बल्कि मनुष्य के रूप में प्रत्येक को सतर्क किया गया है। जब वह घटना घटेगी तो सांसारिक दृष्टि से भी मनुष्य समझेगा कि मानो धरती और आकाश उस पर फट पड़े हैं। मनुष्य के दोबारा उठाए जाने में भी यह चेतावनी एक बार फिर पूरी होगी कि न उसका कोई पार्थिव संपर्क और न ही आकाशीय संपर्क उसे बचा सकेगा और नरक उसका अंत होगा।

इसके पश्चात अल्लाह तआला उन बातों के पूरा होने के बारे में एक महान गवाही पेश कर रहा है जो मनुष्य को किसी सीमा तक दिखाई देते रहे हैं अथवा दिखाई देने लगते हैं और उन बातों के पूरा होने के बारे में भी जिन तक उसकी दृष्टि नहीं पहुँचती। अर्थात् यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें एक सम्माननीय एवं विश्वसनीय रसूल की बातें हैं, न वह किसी कवि की बहकी हुई बातें हैं न किसी ज्योतिषी की अटकलें हैं। यह तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से अवतरित हुई है।

इस सूरः की अन्तिम आयतों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का एक ऐसा मापदण्ड प्रस्तुत कर दिया गया जिसका शत्रु की ओर से कोई खण्डन नहीं हो सकता। शत्रु को सावधान किया कि तुम्हारे अनुसार तो इस सम्माननीय पुस्तक को इस रसूल ने अपनी ओर से ही गढ़ लिया है। हालाँकि यदि उसने अल्लाह तआला पर छोटे से छोटा झूठ भी गढ़ा होता तो निःसन्देह अल्लाह उसको और उसके सम्प्रदाय को नष्ट कर देता और यदि अल्लाह यह निर्णय करता तो तुम लोग किसी प्रकार उसको बचा न सकते। इस प्रकार तुम्हारी समस्त शक्तियों के मुकाबले पर अल्लाह तआला उसकी सहायता कर रहा है और उसको बचा रहा है जो निश्चित रूप से उसके अल्लाह का रसूल होने पर एक प्रमाण है। अर्थात् अल्लाह तआला का यह वाक्य फिर बड़ी सफाई से उसके पक्ष में पूरा हुआ है कि : अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य विजयी होंगे। (सूरः अल मुजादलः आयत 22)

سُورَةُ الْحَقَّةِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُونُ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

अवश्यमेव घटित होने वाली । 21।

अवश्यमेव घटित होने वाली क्या
है ? । 31।

और तुझे क्या मालूम कि अवश्यमेव
घटित होने वाली क्या है ? । 41।

समूद और आद जाति ने (दिलों को)
चौंका देने वाली विपत्ति का इनकार कर
दिया था । 5।

अतः जहाँ तक समूद (जाति) का
सम्बन्ध है तो वे सीमा से बढ़ी हुई
विपत्ति से विनष्ट कर दिए गये । 6।

और जो आद (जाति के लोग) थे तो वे
एक तेज़ हवा से तबाह किए गए जो
बढ़ती चली जाती थी । 7।

उस (अल्लाह) ने उसे उन पर सात रातों
और आठ दिनों तक इस प्रकार नियोजित
कर रखा कि वह उन्हें जड़ों से उखाड़ कर
फेंक रही थी । अतः लोगों को तू उसमें
पछाड़ खा कर गिरे हुए देखता है जैसे वे
खजूर के गिरे हुए वृक्षों के तने हों । 8।

अतः क्या तू उनमें से किसी को शेष
बचा हुआ देखता है ? । 9।

और फिर औन भी आया और वे भी
(आये) जो उससे पूर्व थे । और एक

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَقَّةُ ۝

مَا الْحَقَّةُ ۝

وَمَا آذْرِيكَ مَا الْحَقَّةُ ۝

كَذَّبَتْ ثُمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝

فَأَمَّا ثُمُودٌ فَأَهْلَكُوا بِالصَّاغِيَةِ ۝

وَأَمَّا عَادٌ فَأَهْلَكُوا بِرِيعِ صَرْصِ
عَاتِيَةٍ ۝

سَحْرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ
آيَامٍ ۝ حَسُومًا ۝ فَتَرَى النَّقْوَمُ فِيهَا
صَرْغَى ۝ كَانَهُمْ أَعْجَازٌ نَحْلٌ خَاوِيَةٍ ۝

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفَكُ

बहुत बड़े पाप के कारण उलट-पुलट होने वाली बस्तियाँ भी ॥10।

अतः उन्होंने अपने रब्ब के रसूल की अवज्ञा की तो उसने उन्हें एक कठोर से कठोर होने वाली पकड़ में ले लिया ॥11।

निःसन्देह जब पानी खूब उफान पर आ गया, हमने तुम्हें नौका में उठा लिया ॥12।

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए एक चर्चा के योग्य चिह्न बना दें और स्मरण रखने वाले कान उसे याद रखें ॥13।

फिर जब बिगुल में एक ज़ोरदार फूंक मारी जाएगी ॥14।

और धरती और पर्वत उठाए जाएंगे और एक दम में कण-कण कर दिए जाएंगे ॥15।

अतः उस दिन अवश्य घटित होने वाली (घटना) घटित हो जाएगी ॥16।

और आकाश फट पड़ेगा । अतः उस दिन वह बोदा हो चुका होगा ॥17।

और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन तेरे रब्ब के अर्श को उन सबसे ऊपर आठ (गुण) उठाए हुए होंगे ॥18।*

उस दिन तुम पेश किए जाओगे । कोई छिपी रहने वाली (बात) तुम से छिपी नहीं रहेगी ॥19।

* इस आयत से किसी को यह भ्रम न हो कि फ़रिश्तों को कोई भौतिक शक्ति प्राप्त है जिससे उन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है । अर्श तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसे उठाने के लिए भौतिक शक्ति की आवश्यकता है । वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ही प्रत्येक वस्तु को उठाए हुए है । अर्थात् प्रत्येक वस्तु उसी के सहारे स्थित है । हज़रत मसीह मौक्कद अलै. ने फ़र्माया है कि अर्श तो अल्लाह तआला के विशुद्ध और पवित्रता पूर्ण स्थान का नाम है और उसके समग्र सृष्टि से परे होने की अवस्था है । सूरः अल-फ़ातिहः में वर्णित अल्लाह के चार गुणवाचक नाम यथा :- →

بِالْخَاطِئَةِ

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخْذَهُمْ أَخْذَةً
رَازِيَّةً ⑩

إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي
الْجَارِيَةِ ⑪

لَنَجْعَلَنَا لَكُمْ تَذَكَّرَةً وَتَعِيَّةً أَذْنَ
وَاعِيَّةً ⑫

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفَخَةً وَاحِدَةً ⑬
وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدَكَتَ
دَكَّةً وَاحِدَةً ⑭

فِي يَوْمٍ مِّنْ وَقْتِ الْوَاقِعَةِ ⑮
وَانْشَفَتِ السَّمَاءُ فِيهِ يَوْمٌ مِّنْ وَاهِيَّةٍ ⑯
وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمٌ مِّنْ ثَمْنِيَّةٍ ⑰
يَوْمٌ مِّنْ تَعْرُصُونَ لَا تَنْهَى مِنْكُمْ
خَافِيَّةً ⑱

अतः जिसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा, आओ मेरा कर्म-पत्र पकड़ो और पढ़ो । 20।*

निःसन्देह मैं आशा रखता हूँ कि मैं अपना हिसाब सामने देखने वाला हूँ। 21।

अतः वह पसंदीदा जीवन में होगा । 22।

एक ऊँचे स्वर्ग में । 23।

उसके (फल के) गुच्छे झुके हुए होंगे । 24।

(कहा जाएगा) उन (कर्मों) के बदले में जो तुम बीते हुए दिनों में किया करते थे, मज़े से खाओ और पिओ । 25।

और वह जिसे उसकी बारीं और से उसका कर्म-पत्र दिया जाएगा तो वह कहेगा, काश ! मुझे मेरा कर्म-पत्र न दिया जाता । 26।

और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है ? । 27।

काश ! वह (घड़ी) झगड़ा निपटाने वाली होती । 28।

मेरा धन मेरे कुछ भी काम न आया । 29।

فَامَّا مَنْ أُوتَ كِتْبَهُ يَمْسِيْهُ فَيَقُولُ
هَا وَمَرْأُهُ اقْرَءُهُ وَإِذْنَهُ

إِنِّي ظَنَّتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابَهُ

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ

فِي جَنَّةٍ عَالِيَّةٍ

فَطَوَّفَهَا دَانِيَةً

كَلَّا وَأَشْرَبُوا هَيْئَةً بِمَا أَسْلَفْتُمْ
فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَّةِ

وَامَّا مَنْ أُوتَ كِتْبَهُ بِشَمَالِهِ
فَيَقُولُ يَلِيْسَنِي لَمْ أُوتَ كِتْبَهُ

وَلَمْ أَذِرْ مَاحِسَابَهُ

يَلِيْسَهَا كَائِتُ الْفَاضِيَّةِ

مَا أَغْنَى عَنِي مَالِيَّهُ

←रब, रहमान, रहीम, और मालिके यौमिद्दीन को चार फ़रिश्तों से नामित किया गया है। “यह चारों गुणवाचक नाम हैं जो उसके अर्थों को उठाए हुए हैं। अर्थात् दुनिया में उसकी गुप्त सत्ता का ज्ञान इन गुणवाचक नामों के द्वारा होता है और यह ज्ञान परलोक में दोगुना हो जाएगा। अर्थात् चार के बदले आठ फ़रिश्ते हो जाएंगे।” (चश्मा-ए-मअर्फ़त, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 23 पृष्ठ 279)

* अरबी शब्द हाउमु का अर्थ है “पकड़ो” (मुफ़रदात इमाम रागिब रहे.)

मेरा प्रभुत्व मुझ से बर्बाद हो कर जाता
रहा । 30।

(तब फरिश्तों से कहा जाएगा) उसको
पकड़ो और उसे तौक़ पहना दो । 31।

फिर उसको नरक में झोक दो । 32।

अंततः फिर ऐसी ज़ंजीर में उसे ज़क़िद दो
जिस की लम्बाई सत्तर हाथ है । 33।

निःसन्देह वह महिमाशाली अल्लाह पर
ईमान नहीं लाता था । 34।

और दरिद्रों को भोजन कराने की प्रेरणा
नहीं देता था । 35।

अतः आज यहाँ उसका कोई जान-
न्योछावर करने वाला मित्र नहीं
होगा । 36।

और धारों के धोवन के सिवा कोई
भोजन नहीं मिलेगा । 37।*

जिसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं
खाता । 38। (रुकू ۱)

अतः सावधान ! मैं कसम खाता हूँ
उसकी जो तुम देखते हो । 39।

और उसकी भी जो तुम नहीं देखते । 40।

निःसन्देह यह सम्माननीय रसूल का
कथन है । 41।

और यह किसी कवि की बात नहीं ।
बहुत कम है जो तुम ईमान लाते
हो । 42।

هَلَكَ عَنِ سُلْطَنِيَّةٍ ﴿١﴾

خَذُوهُ فَغُلُوْهُ ﴿٢﴾

لَمَّا جَهَنَّمَ صَلَوَهُ ﴿٣﴾

لَمَّا فِي سُلْسِلَةِ ذُرْعَهَا سَبْعُونَ ذَرَاعًا

فَاسْلُكُوهُ ﴿٤﴾

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٥﴾

وَلَا يَحْضُّ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٦﴾

فَلَيَسْ لَهُ الْيَوْمَ هُنَّا حَمِيمٌ ﴿٧﴾

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غُسْلِينِ ﴿٨﴾

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْمَاطِئُونَ ﴿٩﴾

فَلَا أَقِسْرُ بِمَا تَبْصِرُونَ ﴿١٠﴾

وَمَا لَا تَبْصِرُونَ ﴿١١﴾

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٢﴾

وَمَا هُوَ بِقُوْلٍ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَا
تُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

* What comes forth from any wound, or sore when it is washed. (E. W. lane)

और न (यह) किसी ज्यातिषी का कथन है । बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो । 143।

समस्त लोकों के रब्ब की ओर से (यह) अवतरित हुआ है । 144।

और यदि वह कुछ बातें झूठ के रूप में हमारी ओर सम्बन्धित कर देता । 145।

तो हम उसे अवश्य दाहिने हाथ से पकड़ लेते । 146।

फिर हम निःसन्देह उसकी प्राण-स्नायु को काट डालते । 147।

फिर तुम में से कोई एक भी उससे (हमें) रोकने वाला न होता । 148।*

और निःसन्देह यह मुत्तकियों के लिए एक बड़ा उपदेश है । 149।

और निःसन्देह रूप से हम जानते हैं कि तुम में झुठाने वाले भी हैं । 150।

और निःसन्देह यह काफिरों के लिए एक बड़ा पछतावा है । 151।

और निःसन्देह यह निश्चयात्मकता को पहुँचा हुआ विश्वास है । 152।

अतः अपने महान् रब्ब के नाम का गुणगान कर । 153। (रुक् २/६)

وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَاتَذَكَّرُونَ ⑥

تَذْرِيْلُ مِنْ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ⑦

وَلَوْ تَقُولَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَوِيْلِ ⑧

لَا حَدَّنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ⑨

لَمَّا لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنِ ⑩

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حِجَزِيْنَ ⑪

وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرُهُ لِلْمُسْتَقِيْنَ ⑫

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِيْنَ ⑬

وَإِنَّهُ لَحَسْرَهُ عَلَى الْكُفَرِيْنَ ⑭

وَإِنَّهُ لَحَقِّ الْيَقِيْنِ ⑮

فَسَيِّدُ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ⑯

* आयत संख्या 45 से 48 : इन आयतों में उन ब्रान्त धारणाओं का खण्डन किया गया है कि झूठी वहइ अल्लाह तआला की ओर सम्बन्धित करने वाले को कोई सांसारिक शक्ति बचा सकती है । वास्तविकता यह है कि झूठे दावेदारों के पीछे अवश्य कोई सांसारिक शक्ति होती है । इस के बावजूद वे और उनके साथी सहायक विनाश कर दिए जाते हैं । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का यह ज्वलंत प्रमाण है । क्योंकि आपके दावे के पश्चात् सारा अरब आप सल्ल. का विरोधी बन गया था । इस आयत में यह बहुत ही सूक्ष्म तथ्य वर्णन किया गया है कि यदि यह रसूल अल्लाह पर एक छोटा सा भी झूठ गढ़ता और सारा अरब इसका विरोधी न होकर समर्थन में खड़ा हो जाता तब भी इस रसूल को अल्लाह की पकड़ से बचा नहीं सकता था ।

70- सूरः अल-मआरिज

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 45 आयतें हैं।

इसकी पहली आयत ही में अल्लाह तआला ने एक ऐसे अज्ञाब से सतर्क किया है जिसे काफिर रोक नहीं सकते।

फिर अल्लाह तआला को ज़िल मआरिज (ऊँचाइयों वाला) घोषित किया गया है अर्थात् उसकी ऊँचाई कई स्तरों युक्त आकाश पर ध्यान देने से किसी सीमा तक समझ में आ सकती है, अन्यथा उसकी ऊँचाइयों को कोई नहीं समझ सकता। यहाँ जिस ऊँचाई का वर्णन किया गया है, उस पर एक ऐसा विज्ञानिक प्रमाण मिलता है जिसका इस सूरः की आयत संख्या 5 में वर्णन है कि फरिश्ते उसकी ओर पचास हज़ार वर्षों में चढ़ते हैं। अब पचास हज़ार वर्षों में चढ़ने के दो अर्थ हो सकते हैं। प्रथम :- प्रचलित पचास हज़ार वर्ष। यदि यह अर्थ लिए जाएँ तो इसमें भी कोई संदेह नहीं कि संसार में प्रत्येक पचास हज़ार वर्ष के पश्चात ऐसा मौसमी परिवर्तन होता है कि सारी धरती बर्फ के ढेरों से ढक जाती है और फिर नए सिरे से सृष्टि का आरम्भ होता है।

द्वितीय :- यह ध्यान देने योग्य बात है कि यहाँ पर मिम्मा तउदून (जिसे तुम गिनते हो) नहीं कहा गया। पवित्र कुरआन की एक दूसरी आयत जिसमें एक हज़ार वर्ष का वर्णन है, उसे इसके साथ मिला कर पढ़ा जाए तो अर्थ यह बनेगा कि जो तुम लोगों की गिनती है, उसके यदि एक हज़ार वर्ष गिने जाएँ तो अल्लाह तआला का प्रत्येक दिन उस एक हज़ार वर्ष के समान होगा। और यदि प्रत्येक दिन को एक वर्ष के दिनों से गुणा किया जाए और फिर उसको पचास हज़ार वर्षों के दिनों से गुणा किया जाए तो जो अंक बनते हैं, वह अल्लाह के दिनों की अवधि को निश्चित करते हैं। अतः इस हिसाब से यदि पचास हज़ार वर्ष से जो अल्लाह तआला के दिन हैं उसे गुणा किया जाए तो अट्ठारह से बीस अरब वर्ष बन जाएँगे जो वैज्ञानिकों के निकट ब्रह्माण्ड की आयु है। ($1000 \times 50,000 \times 365 = 18,250,000,000$) अर्थात् सृष्टि इस आयु को पहुँच कर अनस्तित्वता में समा जाती है और इसके बाद पुनः अनस्तित्व से अस्तित्व का निर्माण किया जाता है।

यह इतनी दीर्घ अवधि है कि इसे मनुष्य बहुत दूर की बात समझता है परन्तु जब अज्ञाब घटित होगा तो वह घड़ी बिल्कुल निकट दिखाई देगी। वह ऐसा अज्ञाब होगा कि मनुष्य अपने सभी संबंधियों और अपने धन, जीवन तथा प्रत्येक वस्तु को उसके बदले में मुक्तिमूल्य स्वरूप दे कर उससे बचना चाहेगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सकेगा। हाँ अज्ञाब से पूर्व यदि मोमिनों में यह गुण हों कि वे अपनी नमाज पर डटे रहते हैं और सदा सोच समझ

कर अदा करते हैं और इसके अतिरिक्त अपनी पवित्रता की सुरक्षा के लिए उन सभी शर्तों को पूरा करते हैं जो उन पर लागू की गई हैं तो ये वे भास्यवान हैं जो इस अज्ञाब से पृथक रखे जाएँगे ।

आयत सं. 42 में फिर इस बात की चेतावनी दी गई कि अल्लाह तुम से बे परवाह है । अतः यदि तुम दुराचार से नहीं रुकोगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि तुम्हारे स्थान पर नवीन सृष्टि ले आए । अतः जिस अज्ञाब के घटित होने का समाचार दिया गया है उसी के वर्णन पर यह सूरः समाप्त होती है ।



سُورَةُ الْمَعَارِجَ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ السِّنَمَةِ خَمْسٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَرُكْوْعَانٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ।।।

किसी पूछने वाले ने एक अवश्य घटित
होने वाले अज्ञाब के बारे में पूछा है ।।।
उसे काफिरों से कोई चीज टालने वाली
नहीं ।।।

(वह) सभी ऊँचाइयों के स्वामी,
अल्लाह की ओर से है ।।।

फरिश्ते और रूह उसकी ओर एक ऐसे
दिन में चढ़ते हैं जिसकी गिनती पचास
हजार वर्ष है ।।।

अतः सम्यक रूप से धैर्य धारण कर ।।।

निश्चित रूप से वे उसे बहुत दूर देख रहे
हैं ।।।

और हम उसे निकट देखते हैं ।।।

जिस दिन आकाश पिघले हुए ताँबे की
भाँति हो जाएगा ।।।

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो
जाएंगे ।।।

और कोई घनिष्ठ मित्र किसी घनिष्ठ
मित्र का (हाल-चाल) नहीं पूछेगा ।।।।।

वे उन्हें अच्छी प्रकार दिखला दिए जाएंगे।
अपराधी यह चाहेगा कि काश वह उस
दिन के अज्ञाब से बचने के लिए मुक्तिमूल्य
स्वरूप अपने पुत्रों को दे सके ।।।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَأَلَ سَابِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ①

لِلْكُفَّارِ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ①

مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ①

تَعْرِجُ الْمَلِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ①

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ①

إِنَّمَّا يَرَوْنَهُ بَعْدًا ①

وَتَرِيهَ قَرِيبًا ①

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاوَاتُ كَالْمُهْلِ ①

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعُمَنِ ①

وَلَا يَسْعَ حَمِيمٌ حَمِيمًا ①

يُبَصِّرُونَهُمْ يَوْمَ الْمُجْرِمِ لَوْلَا يَقْتَدِي ①

مِنْ عَذَابٍ يَوْمٌ مُّبِينٌ بَيْنَيْهِ ①

और अपनी पत्नी को और अपने भाई को । 13।

और अपने कुल को भी जो उसे शरण देता था । 14।

और उन सब को जो धरती में हैं । फिर वह (मुक्तिमूल्य) उसे उस अज्ञाब से बचा ले । 15।

सावधान ! निःसन्देह वह एक धुआँ विहीन आग की लपट है । 16।

चमड़ी को उधेड़ देने वाली । 17।

वह हर उस व्यक्ति को बुलाती है जिसने पीठ फेर ली और मुँह मोड़ लिया । 18।

और (धन) इकट्ठा किया और संचय किया । 19।

निःसन्देह मनुष्य बहुत अधिक लालची पैदा किया गया है । 20।

जब उसे कोई कष्ट पहुँचता है तो अत्यन्त विलाप करने वाला होता है । 21।

और जब उसे कोई भलाई पहुँचती है तो बड़ा कंजूस हो जाता है । 22।

हाँ, नमाज़ पढ़ने वालों का मामला भिन्न है । 23।

वे लोग जो अपनी नमाज़ पर सदैव क्रायम रहते हैं । 24।

और वे लोग जिनके धन-सम्पत्ति में एक निश्चित अधिकार है । 25।

माँगने वाले के लिए और वंचित रहने वाले के लिए । 26।

और वे लोग जो प्रतिफल दिवस की पुष्टि करते हैं । 27।

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخْيُوهُ^{١٣}

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْيِدُهُ^{١٤}

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَمْ يَنْجِيْهُ^{١٥}

كَلَّا إِنَّهَا لَغُلَى^{١٦}

نَرَاعَةً لِلشَّوْى^{١٧}

تَذَكَّرُوا مِنْ أَذْبَرٍ وَتَوَلِّ^{١٨}

وَجَمِعَ فَأُولَئِى^{١٩}

إِنَّ الْإِنْسَانَ حُلُقَ هَلُونَعَالٌ^{٢٠}

إِذَا مَسَّهُ السَّرُّ جَرُّ وَعَالٌ^{٢١}

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنْوَعَالٌ^{٢٢}

إِلَّا الْمَصْلِينَ^{٢٣}

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَآءِمُونَ^{٢٤}

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُومٌ^{٢٥}

لِلْسَّاَلِيلِ وَالْمَحْرُومِ^{٢٦}

وَالَّذِينَ يَصِدِّقُونَ يَوْمَ الدِّينِ^{٢٧}

और वे लोग जो अपने रब्ब के अज्ञाब से डरने वाले हैं । 128।

निःसन्देह उनके रब्ब का अज्ञाब ऐसा है जिससे बचा नहीं जा सकता । 129।

और वे लोग जो अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले होते हैं । 130।

सिवाएँ अपनी पत्नियों के अथवा उन (स्त्रियों) के जिनके स्वामी उनके दाहिने हाथ हुए । अतः निःसन्देह वे धिक्कार योग्य नहीं हैं । 131।

अतः जिसने इसके अतिरिक्त (कुछ और) चाहा तो यही वे हैं जो सीमा से बढ़ने वाले हैं । 132।

और वे लोग जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञाओं की लाज रखने वाले हैं । 133।

और वे लोग जो अपनी गवाहियों पर अटल रहने वाले हैं । 134।

और वे लोग जो अपनी नमाजों की सुरक्षा करते हैं । 135।

यही वे हैं जिनसे स्वर्गों में सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा । 136। (रुक् $\frac{1}{7}$)
अतः उन लोगों को क्या हुआ था जिन्होंने इनकार किया कि वे तेरी ओर तेज़ी से दौड़े चले आते थे । 137।

दाईं ओर से भी और बाईं ओर से भी, टोलियों में बटे हुए । 138।

क्या उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह आस लगाए हुए है कि वह नेमतों वाले स्वर्ग में प्रविष्ट किया जाएगा ? । 139।

وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُّسْفِقُونَ ﴿٦﴾

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ⑥

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوقٍ جِهَمُ حَفِظُونَ ﴿٧﴾

إِلَّا عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكُ
آيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مُلَوِّمِينَ ⑦

فَمَنِ ابْتَغَى وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ
هُمُ الْعَدُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لَا مُنْتَهُمْ وَعَمَدُهُمْ
رَغْوُنَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ هُمْ يُشَهِّدُونَ هُمْ قَائِمُونَ ٩

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ
يَحْفَظُونَ ٩

أُولَئِكَ فِي جَنَّتِ مُكَرَّمُونَ ٩

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَقْبَلَكَ مُهْطِعِينَ ٩

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عَزِيزُنَ ١٠

أَيَظْمَعَ كُلُّ امْرِئٍ قَنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ
جَنَّةَ نَعِيمٍ ١٠

कदापि नहीं ! निःसन्देह हमने उनको उस चीज़ से पैदा किया जिसे वे जानते हैं । 140।

अतः सावधान ! मैं पूर्वी दिशाओं और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब की क़सम खाता हूँ, निश्चित रूप से हम समर्थ हैं । 141।

इस पर कि, उन्हें परिवर्तित कर के हम उनसे श्रेष्ठ ले आएँ । और हम से आगे बढ़ा नहीं जा सकता । 142।*

अतः उन्हें छोड़ दे, वे व्यर्थ बातों में और खेल-कूद में लगे रहें, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उन्हें बचन दिया जाता है । 143।

जिस दिन वे क़ब्रों से तीव्रता पूर्वक निकलेंगे, मानो वे कुर्बानगाहों की ओर दौड़े जा रहे हों । 144।

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । यह वह दिन है जिसका उन्हें वादा दिया जाता था । 145। (रुक् २/४)

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ④

فَلَا أَقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِلَّا لِلْقَدِيرِ ⑤

عَلَى آنٍ تَبَدَّلَ حَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمُسْبُوْقِينَ ⑥

فَذَرْهُمْ يَخْوُصُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يَلْقَفُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ⑦

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سَرَاجًا
كَانُوهُمْ إِلَى صَبِّ يَوْمَ فُصُونَ ⑧

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذَلَّةٌ
ذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ⑨

* आयत सं. 41 से 42 : इन आयतों में पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब को साक्षी ठहराया गया है। अर्थात् भविष्यवाणी है कि एक ऐसा युग आएगा जब कई प्रकार के पूर्व और पश्चिम मुहावरों में प्रयोग किये जाएंगे। जैसे मध्यपूर्व, निकटपूर्व और सुदूरपूर्व इत्यादि। दूसरा इसमें यह आश्चर्यजनक तथ्य का वर्णन है कि अल्लाह तआला इस बात पर पूर्ण रूप से समर्थ है कि यदि वह चाहे तो मनुष्यों से उत्तम जीव को इस संसार में ला सकता है।

71 - सूरः नूह

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक काल में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं।

पिछली सूरः के अंत में कहा गया था कि हम इस बात पर समर्थ हैं कि तुम से श्रेष्ठ लोग पैदा कर दें। अब इस सूरः में कहा गया है कि नूह की जाति को मिले अज्ञाब में छोटे रूप में यही स्थिति पैदा हुई थी कि पूरी की पूरी जाति डुबो दी गई सिवाए कुछ एक के जिन्होंने नूह अलै, की नौका में शरण ली थी। फिर उन लोगों से जो हज़रत नूह अलै, के साथ थे, एक नई और उत्तम पीढ़ी का आरम्भ किया गया।

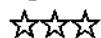
आयत सं. 5 में अल्लाह की निश्चित किए हुए समय का वर्णन है कि जब वह आएगा तो फिर तुम उसे टाल नहीं सकोगे। यह पिछली सूरः के विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है।

इसके पश्चात हज़रत नूह अलै, के अनुनय-विनय और प्रचार कार्य का उल्लेख किया गया कि केवल संदेश पहुँचा देना पर्याप्त नहीं हुआ करता बल्कि उस संदेश को समझाने के लिए एक नवी को एक प्रकार से अपने प्राण को संकट में डालना पड़ता है। ऐसा कोई उपाय वह नहीं छोड़ता जिससे अपनी जाति के बड़ों और छोटों को समझाया जा सकता हो। वह कभी अनुनय-विनय करके और कभी छिप-छिप कर समझाता है ताकि जाति के ऊँचे लोग, जनसाधारण के सामने सत्य को स्वीकार करके लज्जा का अनुभव न करें। कभी खुल्लम-खुल्ला उद्घोषणा कर के प्रचार करता है ताकि जन-साधारण को भी नवी से सीधा संदेश पहुँचे। अन्यथा उनके नेता तो उस संदेश को परिवर्तित करके लोगों में प्रस्तुत करेंगे। फिर कभी उन्हें लालच दिलाता है कि देखो! यदि तुम ईमान ले आओगे तो आकाश से तुम पर कृपा-वृष्टि होगी। और कभी भयभीत कराता है कि यदि ईमान नहीं लाओगे तो आकाश से कृपा-वृष्टि के बदले अत्यन्त विनाशकारी वर्षा होगी और धरती भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकेगी। बल्कि धरती से भी विनाश के स्रोत फूट पड़ेंगे। तब इस प्रकार बात पूरी हो जाने के पश्चात् अन्ततः उनको समाप्त कर दिया गया और एक नई जाति की नींव डाली गई।

अतः हज़रत नूह अलै, ने जो यह दुआ की थी कि अल्लाह तआला काफिरों में से किसी को शेष न छोड़े और सभी को विनष्ट कर दे। यह दुआ इस आधार पर की थी कि अल्लाह तआला ने आप को यह बता दिया था कि अब यदि ये लोग जीवित रखे गए तो ये केवल अवज्ञाकारी और दुराचारी को पैदा करेंगे। इनकी संतानों से अब मोमिन पैदा होने की आशा समाप्त हो चुकी है। अतः जब अल्लाह के भक्तगण इस प्रकार बात पूरी

कर दिया करते हैं तब उनका यह अधिकार बनता है कि विरोधियों के विनाश की दुआ करें।

इसके अतिरिक्त इस सूरः में यह भी वर्णन है कि हजरत नूह अलै. ने अपनी जाति को ध्यान दिलाते हुए यह कहा कि तुम अल्लाह तआला को एक गरिमाशाली सत्ता के रूप में क्यों स्वीकार नहीं करते ? उसने तुम्हें भी तो कई स्तरों में आगे बढ़ाते हुए पूर्णता को पहुँचाया है । और यही बात आकाश के कई स्तरीय ऊँचाइयों से प्रमाणित होती है । यह विषय एक प्रकार से उस जाति की समझ से परे था । न उसे अपने अतीत का ज्ञान था कि कैसे कई स्तरों से होते हुए वे पैदा हुए, न अपने भविष्य का ज्ञान था । न वे आकाश की अनेक स्तरों वाली ऊँचाइयों का ज्ञान रखते थे । संभवतः यह एक भविष्यवाणी है कि भविष्य में जब एक नई कश्ती-ए-नूह बनाई जाएगी तो उस युग के लोगों को इन सब बातों का ज्ञान हो चुका होगा । फिर भी यदि वे अनेकेश्वरवाद के फैलाने से न रुके और उन पर प्रत्येक प्रकार से बात पूरी कर दी गई तो अन्ततः उनके लिए यह दुआ अवश्य पूरी हो कर रहेगी :- 1. फ़ सह हिक हुम तस्हीकन 2. व ला तज़र अलल अरज़ि मिनल काफ़िरी न शरीरन । अर्थात् 1. हे अल्लाह ! तू इन्हें पीस कर रख दे । 2. हे अल्लाह ! धरती में किसी दुष्ट काफ़िर को मत छोड़ ।



سُورَةُ نُوحٍ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعُ وَعَشْرُونَ آتٍ وَرُكُوعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । १।

निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि तू अपनी जाति को सतर्क कर, इससे पूर्व कि उनके पास पीड़ा जनक अज्ञाब आ जाए । २।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ । ३।

कि अल्लाह की उपासना करो और उसका तक्रबा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो । ४।

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और एक निर्धारित समय तक ढील देगा । निःसन्देह अल्लाह का (निश्चित किया हुआ) समय जब आ जाता है तो उसे टाला नहीं जा सकता । काश तुम जानते ! ५।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मैंने अपनी जाति को रात को भी और दिन को भी आमंत्रित किया । ६।

अतः मेरे निमंत्रण ने उन्हें भागने के सिवा किसी चीज़ में नहीं बढ़ाया । ७।

और निःसन्देह जब कभी मैंने उन्हें निमंत्रण दिया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं । और अपने कपड़े

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمَهُ أَنَّا أَنذِرْنَا^۱
قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيهِمُ عَذَابٌ
آتِيْمُ ②

قَالَ يَقُولُ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ③

أَنَّا أَعْبَدْنَا اللَّهَ وَأَنْفَوْدْهُ وَأَطِيعُونِ ④

يَقْرَئُكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤْخِرُكُمْ إِلَى
أَجَلِ مُسَحَّٰٰ ۝ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ
لَا يُؤْخِرُ ۝ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑤

قَالَ رَبِّيْ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِيْ نَيْلًا
وَنَهَارًا ⑥

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِي إِلَّا فِرَارًا ⑦

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَعْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا
أَصَابِعَهُمْ فِيَّ أَذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا

लपेट लिए और बहुत हठ किया और बड़े अहंकार का प्रदर्शन किया । १।

फिर मैंने उन्हें ऊँची आवाज से भी निमंत्रण दिया । १।

फिर मैंने उनके लिए घोषणाएँ भी की और बहुत गुप्त रूप से भी काम लिया । १०।

अतः मैंने कहा, अपने रब से क्षमा माँगो निःसन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला है । १।।।

वह तुम पर लगातार बरसने वाला बादल भेजेगा । १।।।

और वह धन और संतान के साथ तुम्हारी सहायता करेगा । और तुम्हारे लिए बागान बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा । १३।

तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह से किसी गरिमा की आशा नहीं रखते ? । १४।

हालाँकि उसने तुम्हें अनेक ढंगों से पैदा किया । १५।

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने सात आकाशों को किस प्रकार अनेक स्तरों में पैदा किया ? । १६।

और उसने उनमें चन्द्रमा को एक प्रकाशमय और सूर्य को एक उज्ज्वल प्रदीप बनाया । १७।

और अल्लाह ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया । १८।

फिर वह तुम्हें उस में वापस कर देगा और तुम्हें एक नए रंग में

شَابَهُمْ وَأَصْرَوْا وَأَسْتَكْبَرُوا وَاسْتِكْبَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَمُ بِهِمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ
إِسْرَارًا ۝

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُ وَارْبَكْمُ ۝ إِنَّهُ كَانَ
غَافِرًا ۝

يُرِسِّلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مُّقْدَرًا ۝

وَيُمْدِدُكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلُ
لَكُمْ جَنَّتٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ آنْهَارًا ۝

مَالَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝

الْحَرَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ
طِبَاقًا ۝

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِ نُورًا وَجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝

وَاللَّهُ أَبْتَكَمُ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ

निकालेगा ॥ 19 ॥*

إِخْرَاجًا

और अल्लाह ने धरती को तुम्हारे लिए
बिछाया हुआ बनाया ॥ 20 ॥

ताकि तुम उसके खुले-खुले रास्तों पर
चलो फिरो ॥ 21 ॥ (रुक् ۱)

नूह ने कहा, हे मेरे रब ! निःसन्देह
उन्होंने मेरी अवज्ञा की और उसका
अनुसरण किया जिसे उसके धन और
संतान ने घाटे के अतिरिक्त और किसी
चीज़ में नहीं बढ़ाया ॥ 22 ॥

और उन्होंने बहुत बड़ा घड़यन्त्र
किया ॥ 23 ॥

और उन्होंने कहा, कदापि अपने
उपास्यों को न छोड़ो और न वह को
छोड़ो और न सुवा को और न ही
यगूस और यऊक और नस को
(छोड़ो) ॥ 24 ॥**

और उन्होंने बहुतों को पथभ्रष्ट कर
दिया और तू अत्याचारियों को

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سَبِيلًا فِي جَاجَاءٍ

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَأَنْجَعُوهُ
مِنْ لَهُمْ يَزِدُهُ مَا لَهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا

وَمَكْرُوْمَكْرًا كَبَارًا

وَقَاتُلُوا لَا تَذَرُنَ الْهَنَكْمَ وَلَا تَذَرُنَ
وَدَادًا وَلَا سُواعِمًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسَرًا

وَقَذَ أَصْلُوا كَعِيرًا وَلَا تَزِدُ الظَّلَمُونَ

* आयत सं. 14 से 19 में मनुष्य के क्रमबद्ध रूप से विकास के विभिन्न दौर से गुजर कर पैदा होने का वर्णन है। वे लोग जो यह समझते हैं कि अल्लाह तआला ने तत्काल सब कुछ इसी प्रकार पैदा कर दिया, वे अल्लाह तआला के गरिमाशाली होने का इनकार करते हैं क्योंकि एक गरिमाशाली सत्ता को कोई हड्डवड़ी नहीं होती। वह प्रत्येक वस्तु को क्रमबद्ध रूप से विकसित करके ऊँचाई प्रदान करता है। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने आकाशों को भी कई स्तरों में उत्पन्न किया। इन आयतों के अंत पर कहा हमने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया। यह केवल मुहावरा नहीं बल्कि वास्तव में मनुष्य उत्पत्ति एक ऐसे समय से गुजरी कि वह केवल वनस्पति सदृश थी। और दूसरी आयत में इस दृश्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि वह उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। (अद् दहर,
आयत : 2) अर्थात् मनुष्य अपनी उत्पत्ति में ऐसे पड़ाव से भी होकर गुज़रा है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। इसमें सूक्ष्म रूप से इस ओर भी संकेत है कि जब मनुष्य की उत्पत्ति वनस्पति दौर में से गुज़र रही थी तो उसमें आवाज़ निकालने अथवा आवाज़ सुनने के इन्द्रिय उत्पन्न नहीं हुए थे। उस वनस्पति कालीन जीवन पर पूर्ण रूप से खामोशी छाइ थी।

** वह, सुवा, यगूस, यऊक और नस :- वे मूर्तियाँ जिनकी इस्ताम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे।

असफलता के अतिरिक्त और किसी चीज़ में न बढ़ाना । 25।

वे अपने पापों के कारण डुबोए गए फिर अग्नि में प्रविष्ट किए गए । अतः उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने लिए कोई सहायक न पाया । 26।

और नूह ने कहा, हे मेरे रब ! काफिरों में से किसी को धरती पर बसता हुआ न रहने दे । 27।

निःसन्देह यदि तू उनको छोड़ देगा तो वे तेरे भक्तों को पथश्वर्षष्ठ कर देंगे । और कुकर्मी और बड़े कृतघ्नों के अतिरिक्त किसी को जन्म नहीं देंगे । 28।*

हे मेरे रब ! मुझे क्षमा कर दे । और मेरे माता-पिता को भी । और उसे भी जो मोमिन बनकर मेरे घर में प्रविष्ट हुआ । और सब मोमिन पुरुषों को और सब मोमिन स्त्रियों को क्षमा कर दे । और तू अत्याचारियों को सर्वनाश के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ाना । 29।

(रुक् २/१०)

الْأَصْلَالُ^①

مَمَّا خَطِئُتُمْ أُغْرِقُوا فَادْخُلُوا نَارًا
فَلَمْ يَعِدُ وَإِنَّهُمْ قُنْدُونَ اللَّهُ أَنْصَارًا^②

وَقَالَ رَبُّكَ لَا تَدْرِزْ عَلَى الْأَرْضِ
مِنَ الْكُفَّارِ إِنَّ دِيَارَهُمْ^③

إِنَّكَ إِنْ تَدْرِزْهُمْ يَضْلُّوا عِبَادَكَ
وَلَا يَلْدُؤُوا إِلَّا فَاجِرًا^④

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتَيْ مُؤْمِنًا وَلِمُؤْمِنَيْ وَالْمُؤْمِنَتِ^٥
وَلَا تَرِدِ الظَّلِيمِينَ إِلَّا تَبَارِئُ^٦

* आयत सं. 27-28 हज़रत नूह अलै. की अपनी जाति के लिए जिस अहित-कामना का वर्णन है वह इस लिए था कि अल्लाह तआला ने उन को सतर्क कर दिया था कि अब यह जाति अथवा इसकी आगे की पीढ़ियाँ कभी ईमान नहीं लाएँगी । हज़रत नूह अलै. को व्यक्तिगत रूप से तो इस बात का ज्ञान नहीं हो सकता था । अवश्य अल्लाह तआला की ओर से ज्ञान पाकर उन्होंने ने यह अहित-कामना की थी ।

72- सूरः अल-जिन्न

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं।

इस सूरः का सूरः नूह से एक सम्बन्ध यह प्रतीत होता है कि इसमें भी लोगों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि तुम यदि इस संदेश को स्वीकार कर लोगे तो आकाश से तुम पर अधिकता के साथ कृपावृष्टि होगी और यदि नहीं करोगे तो तुम्हें सदा बढ़ते रहने वाले एक अज्ञाब में डाल दिया जाएगा। सूरः नूह में जिस विनाशकारी बाढ़ का वर्णन है वह भी एक लगातार बढ़ते रहने वाली बाढ़ थी।

अब हम इस सूरः के विषयवस्तु पर दृष्टि डालते हैं कि इसमें जिन्नों के संदर्भ में कुछ बहुत महत्वपूर्ण विषयवस्तु छेड़े गए हैं। विद्वानों का विचार है कि यहाँ जिन्नों से अभिप्राय अग्नि से बने हुए कोई अदृश्य जीव थे। हालाँकि प्रामाणिक हड्डीसों से सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पास आये हुए एक शिष्ट मंडल से, जिसके सदस्य इन अर्थों में जिन थे कि वे अपनी जाति के बड़े लोग थे, जब उनकी भेट हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई तो उन्होंने अपना भोजन तैयार करने के लिए वहाँ आग जलाई थी। अतएव यहाँ पर कदापि किसी काल्पनिक जिन्न का वर्णन नहीं है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने जिन महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन छेड़ा है उनमें से एक यह भी है कि हम में से कुछ मूर्ख लोग विचित्र प्रकार की अज्ञानता की बातें अल्लाह तआला के साथ जोड़ा करते थे। इसी प्रकार हम में यह विचारधारा भी प्रचलित हो गई थी कि अब अल्लाह तआला कभी किसी नबी को नहीं भेजेगा। उन्होंने इस विचारधारा को इस कारण गलत घोषित कर दिया क्योंकि वे अपनी आँखों से एक महान नबी का दर्शन कर चुके थे।

इसके पश्चात मस्जिदों के सम्बन्ध में कहा कि वह विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए बनाई जाती हैं। उनमें किसी और की उपासना उचित नहीं। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना शैली का वर्णन है कि उपासना के बीच में आप सल्ल. को कई प्रकार के शोक और चिताएँ धेर लिया करती थीं और बार बार ध्यान भंग करने का प्रयत्न करती थीं। परन्तु आपका ध्यान इस के बावजूद पूर्णतया अल्लाह ही के लिए हुआ करता था। जबकि मनुष्य हर दिन यह देखता है कि उसकी खुशियाँ और उसके दुःख, उसके ध्यान को उपासना से हटाने में सफल हो जाया करते हैं।

यहाँ एक बार फिर इस बात को दोहराया गया है कि जिस अज्ञाब को तुम बहुत दूर देख रहे हो कोई नहीं कह सकता कि वह निकट है अथवा दूर। जब अज्ञाब की घड़ी

आ जाए तो फिर चाहे उसे मनुष्य कितना ही दूर समझे उसे अवश्य निकट देखता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम को अदृश्य का ज्ञान अधिकता पूर्वक दिया गया । आप सल्ल. स्वयं अदृश्य द्रष्टा नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला यह ज्ञान सदा अपने रसूलों को ही प्रदान किया करता है जो अपने आप में अदृश्य विषय का कोई ज्ञान नहीं रखते परन्तु जो अदृश्य विषय उनको बताया जाता है वह अवश्य पूरा हो कर रहता है । इसी प्रकार वे फ़रिश्ते जो रसूल की वहइ ले कर आते हैं, वे आगे और पीछे उसकी सुरक्षा करते हुए चलते हैं ताकि शैतान उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न कर सके । अतः अल्लाह के महान रसूलों के बाद भी कई उनके अधीनस्थ रसूल आया करते हैं जो उस वहइ का सही अर्थ बताते हुए उसकी सुरक्षा करते हैं ।



سُورَةُ الْجِنِّ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ سِنْعٌ وَعَشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعًا

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

तू कह दे मेरी ओर वहाँ किया गया है
कि जिन्नों के एक समूह ने (कुरआन
को) ध्यान से सुना, तो उन्होंने कहा,
निःसन्देह हमने एक अद्भुत कुरआन
सुना है । । ।

जो भलाई की ओर मार्गदर्शन करता है।
अतः हम उस पर ईमान ले आए । और
हम कदापि किसी को अपने रब्ब का
साझीदार नहीं ठहराएँगे । । ।

और (कहा) कि निःसन्देह हमारे रब्ब
की शान ऊँची है । उसने न कोई पत्ती
अपनाई और न कोई पुत्र । । ।

और निश्चित रूप से हम में से एक मूर्ख
व्यक्ति अल्लाह पर बढ़-बढ़ कर बातें
किया करता था । । ।

और निःसन्देह हम सोचा करते थे कि
मनुष्य और जिन अल्लाह पर कदापि
झूठ नहीं बोलेंगे । । ।

और निःसन्देह जन-साधारण में से कई
ऐसे थे जो बड़े लोगों की शरण में आ
जाते थे । अतः उन्होंने उनको कुकर्मा
और अज्ञानता में बढ़ा दिया । । ।

और उन्होंने भी धारण की थी जैसे तुम ने
धारण कर ली कि अल्लाह कदापि किसी
को नहीं भेजेगा । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

فَلَأُوحِيَ إِلَىَّ أَنَّهُ أَسْتَمْعَ نَفْرُّ مِنَ
الْجِنِّ فَقَاتُوا إِلَّا نَاسٌ مُغَنِّفُونَ أَعْجَبَهُ

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَامْتَابِهُ وَلَنْ تُفِرِّكُ
بِرَبِّنَا أَحَدًا ②

وَأَنَّهُ تَعْلَى جَدَرَنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَهُ
وَلَا وَلَدًا ③

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِينَنَا عَلَى اللَّهِ
شَطَطًا ④

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَنْ لَنْ تَقُولَ الْإِنْسَنُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كِذِبَا ⑤

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعْوِذُونَ
بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَرَادُوهُمْ رَهْقًا ⑥

وَأَنَّمُمْ ظَنَّوْا كَمَا ظَنَّثُمْ أَنْ لَنْ يَبْعَثَ
اللَّهُ أَحَدًا ⑦

और निःसन्देह हमने आकाश को टटोला
तो उसे सशक्त रक्षकों और आग की
लपटों से भरा हुआ पाया । १।

और निःसन्देह हम सुनने के लिए
उसकी वेधशालाओं पर बैठे रहते थे ।
अतः जो अब सुनने का प्रयत्न करता
है, वह एक अग्निशिखा को अपनी
घात में पाता है । १०।*

और निःसन्देह हम नहीं जानते थे कि
क्या जो भी धरती में हैं उनके लिए बुरा
चाहा गया है अथवा उनके रब्ब ने उनसे
भलाई करने का इरादा किया है ? । ११।

और निःसन्देह हम में कुछ नेक लोग
थे और कुछ हम में से उनसे भिन्न भी
थे । हम विभिन्न सम्प्रदायों में बटे हुए
थे । १२।

और अवश्य हमने विश्वास कर लिया था
कि हम कदापि अल्लाह को धरती में
असमर्थ नहीं कर सकेंगे । और हम भागते
हुए भी उसे मात नहीं दे सकेंगे । १३।

और निश्चित रूप से जब हमने हिदायत
की बात सुनी, उस पर ईमान ले आए ।

* आयत सं 2 से 10 : इन आयतों में दो बातें विशेष रूप से स्पष्ट करने योग्य हैं । ये जिन जो हज़रत
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए थे, ये अपनी जाति के बड़े लोग थे
और वे उस प्रकार के काल्पनिक जिन नहीं थे जिनकी कल्पना की जाती है । फिर उन्होंने अपना
भोजन पकाने के लिए वहाँ आग भी जलाई और सहाबा रज़ि. ने उसके बाद वहाँ उनके बुझे हुए
कोयले और भोजन की तैयारी के चिह्न भी देखे । इनके बारे में दृढ़ विचार यह है कि ये
अफ़रानिस्तान में बसे बनी इस्लाइल के एक प्रतिनिधि मण्डल का वर्णन है जो अपनी जाति के सरदार
और बड़े लोग अर्थात् जिन थे । उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का
समाचार सुन कर स्वयं जा कर देखने का निर्णय किया था । उन्होंने लम्बे तर्क-वितर्क के पश्चात न
केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिल से सच्चा स्वीकार कर लिया बल्कि उस
झूठे सिद्धान्त का भी इनकार किया कि हम मूर्खों की भाँति यह समझा करते थे कि अब अल्लाह कोई
नवी नहीं भेजेगा । इसके बाद ये लोग अपनी जाति की ओर बापस गये और उस समय के समग्र→

وَأَنَا لَمْسِنَ السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلْعَثْ
حَرَسًا شَدِيدًا وَشَهِيدًا

وَأَنَا كُتَّانٌ قَعْدٌ مِنْهَا مَقَاعِدُ لِلصَّمْعِ
فَمَنْ يَسْتَمِعُ إِلَآنَ يَحْذِلَةَ شَهَابًا رَصَدًا

وَأَنَا لَأَنْذِرِي أَسْرَارِي دِيمَنْ فِي
الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبِّهِمْ رَشَدًا

وَأَنَا مِنَ الصلِحُونَ وَمِنَ الْمَذُونَ ذَلِكَ
كُنَّا ظَرَابِقَ قَدَادًا

وَأَنَا ظَنَّنَا أَنَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ
وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا

وَأَنَا لَكَ سَوْفَنَا الْهَدَى أَمْتَأْبِهِ

अतः जो भी अपने रब्ब पर ईमान लाए तो वह न किसी कमी का भय रखेगा और न किसी अत्याचार का । 14।

और निःसन्देह हममें से आज्ञाकारी भी थे और हम ही में से अत्याचार करने वाले भी थे । अतः जिसने भी आज्ञापालन किया, तो यही वे हैं जिन्होंने हिदायत की खोज की । 15।

और वे जो अत्याचारी थे, वे तो नरक का ईधन बन गए । 16।

और यदि वे (अर्थात् मक्का वासी) सही विचारधारा पर अडिग रहते तो हम उन्हें अवश्य प्रचुर मात्रा में जल प्रदान करते । 17।

ताकि हम उस के द्वारा उनकी परीक्षा करें । और जो अपने रब्ब के स्मरण से मुँह मोड़े उसे वह सदा बढ़ते रहने वाले एक अज्ञाब में झोंक देगा । 18।

और निश्चित रूप से मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं । अतः अल्लाह के साथ किसी (और) को न पुकारो । 19।

और निःसन्देह जब भी अल्लाह का भक्त उसको पुकारते हुए खड़ा हुआ तो वे झुंड के झुंड उस पर टूट पड़ने के निकट होते हैं । 20।* (रुकू । ।)

तू कह दे मैं केवल अपने रब्ब को पुकारूँगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराऊँगा । 21।

فَمَنْ يُؤْمِنْ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا
وَلَا رَهْقًا ⑩

وَأَنَّا مِنَ الْمُسْلِمُونَ وَمِنَ الْقِسْطُوْنَ
فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ تَحْرَرُ وَارْسَدًا ⑪

وَأَمَّا الْقِسْطُوْنَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ
حَطَبَ ⑫

وَأَنْ لَوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الظَّرِيْقَةِ
لَا سَقَيْتَهُمْ مَاءً غَدَقًا ⑬

لِتَفْتَهَمُ فِيهِ ٌ وَمَنْ يُعْرِضُ عَنْ ذُكْرِ
رَبِّهِ يَسْلُكُهُ عَذَابًا صَدَدًا ⑭

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ
آخَدًا ⑮

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَسْدُعُوهُ كَادُوا
يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ⑯

قُلْ إِنَّمَا آذُنُوْرَبِّيْنَ وَلَا أُشْرِكُ بِهِ
آخَدًا ⑰

* अफगानिस्तान को मुसलमान बना लिया ।

* इस अर्थ के लिए देखें मुफ़्रदात इमाम राशिव रहि.

तू कह दे कि मैं तुम्हें न किसी प्रकार की हानी पहुँचाने की और न किसी प्रकार की भलाई पहुँचाने की शक्ति रखता हूँ। 122।

तू कह दे कि मुझे अल्लाह के मुकाबले पर कदापि कोई आश्रय नहीं दे सकेगा । और मैं उसे छोड़ कर कदापि कोई आश्रय स्थल नहीं पाऊँगा । 123।

परन्तु अल्लाह की ओर से प्रचार करते हुए और उसके संदेशों को पहुँचाते हुए* और जो अल्लाह की ओर उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो निःसन्देह उसके लिए नरक की अग्नि होगी । वे दीर्घ काल तक उसमें रहने वाले होंगे । 124।

यहाँ तक कि जब वे उसे देख लेंगे । जिससे उन्हें डराया जाता है तो वे अवश्य जान लेंगे कि सहायक के रूप में कौन सबसे अधिक दुर्बल और संख्या की दृष्टि से सबसे कम था । 125।

तू कह दे, मैं नहीं जानता कि जिससे तुम डराए जाते हो वह निकट है अथवा मेरा रब्ब उसकी अवधि को लम्बा कर देगा । 126।

वह अदृश्य का जाता है । अतः वह किसी को अपने अदृश्य (मामलों) पर प्रभुत्व प्रदान नहीं करता । 127।

सिवाए अपने मनोनीत रसूल के । फिर निश्चित रूप से वह उसके आगे और उसके पीछे सुरक्षा करते हुए चलता है । 128।

* देखें तफसीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.

فُلْ إِنْ لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا
رَشِداً ①

فُلْ إِنْ لَنْ يَحِيرَنِي مِنْ اللَّهُ أَحَدٌ
وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحِدًا ②

إِلَّا بِالْعَامِنَ اللَّهُ وَرِسْلِهِ طَ وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهُ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ
فِيهَا آبَدًا ③

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ
مَنْ أَصْحَافُ تَأْصِرًا وَأَقْلَ عَدَدًا ④

فُلْ إِنْ أَدْرِيَ أَقْرِيْبَ مَا تُوعَدُونَ أَمْ
يَجْعَلُ لَهُ رِيْبَيْ أَمَدًا ⑤

عِلْمُ الْعَيْبِ فَلَا يَظْهِرُ عَلَىٰ عَيْبِهِ
أَحَدًا ⑥

إِلَّا مِنْ ارْتَضَى مِنْ رَسُولِ فَإِنَّهُ يَسْلِكُ
مِنْ بَيْنِ يَدِيهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصِدًا ⑦

ताकि वह जान ले कि वे (रसूल) अपने रब्ब के संदेश को खूब स्पष्ट करके पहुँचा चुके हैं। और जो उन के पास है वह उसको धेरे हुए है और संख्या की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को उसने गिन रखा है। 129। (रुक् 2/12)

يَعْلَمُ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا إِرْسَلْتِ رَبِّهِمْ
وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ
عَدَدًا

73- सूरः अल-मुज़्ज़म्मिल

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी थी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना करने की शैली का उल्लेख किया गया था। उसका विवरण इस सूरः के आरम्भ ही में मिलता है जो संक्षेप में इस प्रकार है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रातों का अधिकतर भाग जाग कर अनुनय पूर्वक उपासना करने में बिताते थे। इन्द्रियनिग्रह का इससे उत्तम और कोई उपाय नहीं कि मनुष्य रात्रि को उठ कर उपासना के द्वारा अपनी आत्मलिप्साओं को कुचल डाले।

इस सूरः में एक बार फिर हज़रत मूसा अलै. के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की समानता वर्णन की गई है कि आप सल्ल. भी एक शरीयत धारक और ओजस्वी रसूल हैं। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष उपस्थित लोगों को चेतावनी दी गई है कि हज़रत मूसा अलै. से बढ़ कर ओजस्वी रसूल प्रकट हो चुका है। इसका विरोध करने से तुम्हारे सर्वनाश के अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं निकलेगा। जैसा कि हज़रत मूसा अलै. का विरोध करके एक बहुत बड़े अत्याचारी ने उन के संदेश को नकारने का दुस्साहस किया था तब उसे विनष्ट कर दिया गया।



سُورَةُ الْمُزَمِّلٍ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ اخْدِي وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

हे अच्छी प्रकार चादर में लिपटने
वाले ! । । ।

रात्रि को (उपासनार्थ) खड़ा हुआ कर,
परन्तु थोड़ा । । ।

उसका आधा अथवा उससे कुछ थोड़ा
सा कम कर दे । । ।

अथवा उस पर (कुछ) बढ़ा दे और
कुरआन को ख़बू निखार कर पढ़ा
कर । । ।

निःसन्देह हम तुझ पर एक भारी आदेश
उतारेंगे । । ।

रात्रि को उठना निःसन्देह
(आत्मलिप्ति को) पाँव तले कुचलने
के लिए अधिक प्रभावकारी और (साफ
सीधी) बात करने में सर्वाधिक दृढ़ता
(प्रदानकारी) है । । ।

निःसन्देह तेरे लिए दिन को बहुत लम्बा
काम होता है । । ।

अतः अपने रब्ब के नाम का स्मरण कर
और पूर्ण रूपेण पृथक होकर उसकी ओर
झुक जा । । ।

वह पूर्व और पश्चिम का रब्ब है ।
उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं ।

अतः कार्यसाधक के रूप में उसे
अपना ले । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا إِيَّاهَا الْمَرْءِمُ ②

قُمِّا إِيَّاهُ الْأَقْلِيلُ ③

تِصْفَةً أَوْ أَنْقُضْ مِنْهُ قَلِيلًا ④

أُوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِيلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ⑤

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا تَقْبِيلًا ⑥

إِنْ نَاسِئَةَ الْيَلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْعًا
وَأَفْوَمُ قِبْلًا ⑦

إِنَّ لَكَ فِي الْهَمَارِ سَبِّحًا طَوِيلًا ⑧

وَادْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَّلِ إِلَيْهِ
تَبَّلِيلًا ⑨

رَبُّ الْمَسْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ⑩

और जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर और
उनसे अच्छे रंग में अलग हो जा । 111

और मुझे और ऐश्वर्य में पलने वाले
झुठलाने वालों को (अलग) छोड़ दे और
उन्हें कुछ ढील दे । 112

निःसन्देह हमारे पास शिक्षाप्रद कई
साधन हैं और नरक भी है । 13

और गले में फंस जाने वाला एक भोजन
और पीड़ाजनक अज्ञाब भी है । 14

जिस दिन धरती और पहाड़ खूब
प्रकम्पित होंगे और पहाड़ भुरभुरे टीलों
के समान हो जाएँगे । 15

निःसन्देह हमने तुम्हारी ओर एक रसूल
भेजा है जो तुम्हारा निरीक्षक है । जैसा
कि हमने फिरओैन की ओर भी एक
रसूल भेजा था । 16

अतः फिरओैन ने उस रसूल की
अवमानना की तो हमने उसे एक कठोर
पकड़ में जकड़ लिया । 17

अतः यदि तुमने इनकार किया तो तुम
उस दिन से कैसे बच सकोगे जो बच्चों
को बूढ़ा बना देगा । 18

आकाश उस (के भय) से फट जाएगा ।
उसका (यह) वादा अवश्य पूरा होने
वाला है । 19

निःसन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश
है । अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर
(जाने वाला) रास्ता अपना ले । 20

(रुकू॑ ١٣)

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ
هَجْرًا جَمِيلًا^①

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَئِي النَّعْمَةِ
وَمَهِلْهِمْ قَلِيلًا^②

إِنَّ لَدِينَنَا أَنْكَلَأً وَجَحِيمًا^③

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا^④

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيرًا مَهِيلًا^⑤

إِنَّا آزَرَلَنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا
عَلَيْكُمْ كَمَا آزَرَلَنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
رَسُولًا^⑥

فَعُصِيَ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَآخَذَنَاهُ أَخْدًا
وَبِيَلًا^⑦

فَكَيْفَ تَتَقَوَّنَ إِنْ كَفَرُتُمْ يَوْمًا
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شَيْئًا^⑧

السَّمَاءُ مُنْقَطِرٌ بِهِ كَانَ وَعْدَهُ
مَفْعُولًا^⑨

إِنَّ هُنْمَتْ دِكَرَهُ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَيْرَبِهِ سَبِيلًا^⑩

निःसन्देह तेरा रब्ब जानता है कि तू रात का लगभग दो तिहाई भाग अथवा उसका आधा अथवा उसका तीसरा भाग (उपासनार्थ) खड़ा रहता है। और उन लोगों का एक दल भी जो तेरे साथ (खड़े रहते) हैं। और अल्लाह रात और दिन को घटाता बढ़ाता रहता है। और वह जानता है कि तुम कदापि इस (रीति) को निभा नहीं सकोगे। अतः वह तुम पर दयापूर्वक झुक गया है। अतः कुरआन में से जितना सम्भव हो पढ़ लिया करो। वह जानता है कि तुम में से रोगी भी होंगे। और दूसरे भी जो धरती में अल्लाह की कृपा चाहते हुए यात्रा करते हैं। और कुछ और भी जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेंगे। अतः उसमें से जो भी सम्भव हो पढ़ लिया करो। और नमाज़ को क़ायम करो। और ज़कात दिया करो और अल्लाह को उत्तम करण दान करो। और अच्छी चीज़ों में से जो भी तुम स्वयं अपने लिए आगे भेजोगे तो वही है जिसे तुम अल्लाह के समक्ष उत्तम और प्रतिफल की दृष्टि से श्रेष्ठ पाओगे। अतः अल्लाह से क्षमा याचना करो। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 121। (रुकूँ $\frac{2}{14}$)

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَذْكَرَتْ قَوْمًا أَذْنِي مِنْ شَلُّتِي
أَلَيْلٍ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَلِيفَهُ مِنَ الظِّنِّينَ
مَعَكَ طَلِيفٌ وَاللَّهُ يَقْدِرُ الْأَلَيْلَ وَالْأَنْهَارَ طَلِيفًا
لَنْ تَحْصُّهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا
تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ طَلِيفًا أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ
مَرْضِيٌّ وَآخَرُونَ يَعْسِرُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ
يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرَءُوا مَا يَسَّرَ
مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكُوَةَ
وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَانًا وَمَا تَقْدِمُوا
لَا تُنْسِكُمْ مِنْ حَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْ دَلِيلٍ هُوَ
خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا طَلِيفًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ
عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

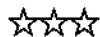
74- सूरः अल-मुद्दस्मिर

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 57 आयतें हैं।

जिस प्रकार पिछली सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुज़ज़म्मिल कहा गया है। जैसे अपने आप को दृढ़ता पूर्वक एक कम्बल में लपेट लिया हो। इस सूरः में भी यही विषयवस्तु है और इस बात को स्पष्ट किया गया है कि वह कौन से कपड़े हैं जिन को नबी दृढ़ता पूर्वक अपने साथ लगा लेता है और जिनको स्वच्छ करता रहता है। यहाँ पर साधारण वस्त्र अभिप्राय नहीं है बल्कि सहाबा रज़ि, का उल्लेख है कि वे सहाबा रज़ि, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समीप रहते थे आप सल्ल. की पवित्रकारी संगति से निरंतर पवित्र किए जाते हैं। और वे अपवित्रता को छोड़ते चले जाते हैं हालाँकि इससे पूर्व उनमें बहुत से ऐसे थे कि उनके लिए अपवित्रता से बचना संभव न था। इसके अतिरिक्त अपवित्रता से अभिप्राय मक्का के मुश्किल भी हो सकते हैं और उनसे पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद करने का आदेश दिया गया है।

इस सूरः में ऐसे उन्नीस कठोर फरिश्तों का वर्णन है जो अपराधियों को दंड देने में कोई नरमी नहीं दिखाएँगे। यहाँ उन्नीस का अंक कुछ ऐसी मनुष्य शक्तियों की ओर संकेत कर रहा है जिनके अनुचित प्रयोग के परिणाम स्वरूप उन के लिए नरक अनिवार्य हो सकता है। सिर से पाँव तक अल्लाह तआला ने जो अंग मनुष्य को प्रदान किए हैं, जिनसे यदि यथोचित ढंग से काम लिया जाए तो मनुष्य पापों और भूल-चूक से बच सकता है। इन अंगों की संख्या लगभग उन्नीस है। परन्तु जो भी संख्या हो, यह सूरः इस बात पर प्रकाश डाल रही है कि अल्लाह तआला की सेना असंख्य हैं और उन्नीस के अंक पर ठहर कर यह न समझना कि केवल उन्नीस फरिश्ते ही हैं। अल्लाह तआला के अज्ञाब पर तैनात फरिश्ते भी असंख्य हैं जो परिस्थिति के अनुकूल मनुष्य को दंड देने के लिए नियुक्त किए जाते हैं।

इसी सूरः में एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी की गई है जो सूर्य के पश्चात उसका अनुगमन करते हुए प्रकट होगा। यह भी बहुत अर्थपूर्ण बात है। यही विषयवस्तु सूरः अश-शम्स में भी वर्णित है।



سُورَةُ الْمَدْثُرِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَنْعٌ وَ خَمْسُونَ آيَةً وَ رُكْوْغَانٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । १।
हे कपड़ा ओढ़ने वाले ! । २।

उठ खड़ा हो और सतर्क कर । ३।

और अपने रब्ब की ही बड़ाई वर्णन
कर । ४।

और जहाँ तक तेरे कपड़ों (अर्थात्
निकटतम साथियों) का सम्बन्ध है, तू
(उन्हें) बहुत पवित्र कर । ५।

और जहाँ तक अपवित्रता का सम्बन्ध है
तो उससे पूर्ण रूप से अलग रह । ६।

और अधिक पाने के उद्देश्य से परोपकार
न किया कर । ७।

और अपने रब्ब ही के लिए धैर्य धर । ८।

अतः जब शंख फूंका जाएगा । ९।

तो वही वह दिन होगा जो बहुत कठोर
दिन होगा । १०।

काफिरों के लिए दयाहीन । ११।

मुझे और उसको जिसे मैं ने पैदा किया,
अकेला छोड़ दे । १२।

और मैंने उसके लिए प्रचुर मात्रा में धन
बनाया था । १३।

और दृष्टि के समक्ष रहने वाले पुत्र-
पुत्रियाँ । १४।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

يَا اٰيُهَا الْمَدْثُرُ ۝

قُمْ فَأَنذِرْ ۝

وَرَبِّكَ فَكَبِيرُ ۝

وَشِيَابَكَ فَطَهِيرُ ۝

وَالرَّجُزَ فَاهْجُرُ ۝

وَلَا تَمْنَنْ تَسْكُنُرُ ۝

وَلِرِبِّكَ فَاصِيرُ ۝

فَإِذَا نَقَرَ فِي الشَّاقُورِ ۝

فَذَلِكَ يَوْمٌ مِّيزِيْنَ يَوْمٌ عَسِيرُ ۝

عَلَى الْكُفَّارِينَ غَيْرَ يَسِيرٍ ②

ذَرْنِيْ وَمَنْ حَكَمْتُ وَحِيدًا ۝

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝

وَبَنِينَ شَهُودًا ۝

और मैंने उसके लिए (धरती को)
सर्वोत्तम पालन-पोषण का पालना
बनाया ॥15।

फिर भी वह लालच करता है कि मैं और
अधिक बढ़ाऊँ ॥16।

कदापि नहीं ! निःसन्देह वह तो हमारे
चिह्नों का शत्रु था ॥17।

मैं अवश्य उस पर एक बढ़ती चली जाने
वाली विपत्ति बढ़ा लाऊँगा ॥18।

निश्चित रूप से उसने भली प्रकार विचार
किया और एक अनुमान लगाया ॥19।

अतः सर्वनाश हो उसका, उसने कैसा
अनुमान लगाया ॥20।

उस का फिर सर्वनाश हो, उसने कैसा
अनुमान लगाया ॥21।

फिर उसने नज़र दौड़ाई ॥22।

फिर त्योरी चढ़ाई और माथे पर बल डाल
लिए ॥23।

फिर पीठ फेर ली और अहंकार
किया ॥24।

तब कहा, यह तो केवल एक जादू है
जिसे अपनाया जा रहा है ॥25।

यह एक मनुष्य के कथन के अतिरिक्त
कुछ नहीं ॥26।

मैं अवश्य ही उसे सक्र में डाल
दूँगा ॥27।

और तुझे क्या पता कि सक्र क्या
है ? ॥28।

न वह कुछ शेष रहने देती है, न (पीछा)
छोड़ती है ॥29।

وَمَهْدِتْ لَهُ تَمَهِيدًا ۖ

لَمَّا يَطْمَعُ أَنْ أَزِيَّدَ ۖ

كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لَا يَسْتَأْعِنُ بِهَا ۖ

سَارَ هَقَةً صَحُودًا ۖ

إِنَّهُ فَكَرَ وَقَدَرَ ۖ

فَقَتَلَ كَيْفَ قَدَرَ ۖ

لَمَّا قَتَلَ كَيْفَ قَدَرَ ۖ

لَمَّا نَظَرَ ۖ

لَمَّا عَبَسَ وَبَسَرَ ۖ

لَمَّا أَدْبَرَ وَاسْتَكَبَرَ ۖ

فَقَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا سُحْرُ يُوَزْرٍ ۖ

إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۖ

سَاصْلِيلِهِ سَقَرَ ۖ

وَمَا آدْرِيكَ مَا سَقَرَ ۖ

لَا شَيْقَى وَلَا تَدَرَ ۖ

चेहरे को झुलसा देने वाली है । 30।

उस पर उन्नीस (निरीक्षक) हैं । 31।

لَوَاحِهُ لِلْبَشَرِ ③

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ④

और हमने फरिशतों के अतिरिक्त किसी को नरक के दारोगे नहीं बनाया । और हमने उनकी संख्या केवल उन लोगों की परीक्षा के लिए निश्चित की जिन्होंने इनकार किया । ताकि वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई वे विश्वास कर लें । और वे लोग जो ईमान लाए हैं ईमान में बढ़ जाएँ । और जिनको पुस्तक दी गई, वे और मोमिन किसी शंका में न रहें । और जिनके मन में रोग है वे और काफिर कहें कि अन्ततः इस उदाहरण से अल्लाह का क्या उद्देश्य है ? इसी प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है उसे हिदायत देता है । और तेरे रब्ब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता । और यह मनुष्य के लिए एक बड़े उपदेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं । 32। (रु. १/५)

सावधान ! क्सम है चन्द्रमा की । 33।

और रात्रि की, जब वह पीठ फेर चुकी हो । 34।

और प्रभात की, जब वह उज्ज्वलित हो जाए । 35।

कि निश्चित रूप से वह बड़ी बातों में से एक है । 36।

मनुष्य को डराने वाली । 37।

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلِئِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عَدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لَيَسْتَقِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَبَ وَيَرْدَادُونَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابُ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَبَ وَالْمُؤْمِنُونَ لَوْلَيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكُفَّارُونَ مَاذَا أَرَادُ اللَّهُ بِهِمْ أَمْثَالًا كَذَلِكَ يَصِلُ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودُ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذُكْرٌ لِلْبَشَرِ ⑤

كَلَّا وَالْقَمَرِ ⑥

وَأَئِنَّ إِذَا أَذْبَرَ ⑦

وَالصُّبْحِ إِذَا آسَفَرَ ⑧

إِنَّهَا لِأَخْدَى الْكَبِيرِ ⑨

نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ⑩

ताकि तुम में से जो चाहे आगे बढ़े और
जो चाहे पीछे रह जाए। 138।

प्रत्येक जान जो कमाई करती है उसी की
गिरवी होती है। 139।

सिवाएं दाहिनी ओर वालों के। 140।

जो स्वर्गों में होंगे। एक दूसरे से पूछ रहे
होंगे। 141।

अपराधियों के बारे में। 142।

तुम्हें किस चीज़ ने नरक में प्रविष्ट
किया? 143।

वे कहेंगे, हम नमाजियों में से नहीं
थे। 144।

और हम दरिद्रों को भोजन नहीं
कराते थे। 145।

और हम व्यर्थ बातों में लगे रहने वालों
के साथ लगे रहा करते थे। 146।

और हम प्रतिफल दिवस का इनकार
किया करते थे। 147।

यहाँ तक कि मृत्यु हमारे निकट आ
गई। 148।

अतः उनको सिफारिश करने वालों की
सिफारिश कोई लाभ नहीं दी। 149।

अतः उन्हें क्या हुआ था कि वे शिक्षाप्रद
बातों से पीठ फेर लिया करते थे। 150।

मानो वे बिदके हुए गधे हों। 151।

बब्बर शेर से (डर कर) दौड़ रहे हों। 152।

बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यहीं
चाहता था कि (अपनी विचार-धारा
के प्रचार-प्रसार के लिए) सर्वाधिक

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْقَدَمْ أَوْ يَئْتَأْخِرَ ﴿١﴾

كُلُّ نَفِيسٍ بِمَا كَسَبُتْ رَهِينَةً ﴿٢﴾

إِلَّا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٣﴾

فِي جَمِيلٍ يَسَاءُ لُونَ ﴿٤﴾

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥﴾

مَاسَلَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٦﴾

قَالَوَالْمُنَّاكُ مِنَ الْمُصَلِّيِّينَ ﴿٧﴾

وَلَمْ تَكُنْ نُطِعْمُ الْمُسْكِيْنَ ﴿٨﴾

وَكُنَّا نَحْوُصُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿٩﴾

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١٠﴾

حَتَّى آتَنَا الْيَقِينَ ﴿١١﴾

فَمَا تَفَعَّهُمْ شَفَاعَةُ الْقُلُوبِ ﴿١٢﴾

فَمَا لَهُمْ عَنِ الْذِكْرَ مُغَرِّضِينَ ﴿١٣﴾

كَانُهُمْ حُمُرٌ مُسْتَفِرُوْهُ ﴿١٤﴾

فَرَثُ مِنْ قُسْوَةٍ ﴿١٥﴾

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٌ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتِي

प्रसारित होने वाले ग्रन्थ उसे दिए
जाते । ५३।*

صَحَّفًا مُنْسَرَةً ﴿١﴾

कदापि नहीं ! बल्कि वे परलोक से नहीं
झरते । ५४।

كَلَّاۤ بِلَّا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢﴾

सावधान ! निःसन्देह यह एक बड़ा
उपदेश है । ५५।

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكَّرٌ ﴿٣﴾

अतः जो चाहे उसे याद रखे । ५६।

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿٤﴾

और अल्लाह की इच्छा के बिना वे
उपदेश ग्रहण नहीं करेंगे । वही तक्वा
का अधिकारी और क्षमादान का भी
अधिकारी है । ५७। (रुकू॑ १६)

وَمَا يَذَكُرُونَ إِلَّا أُنْ يَشَاءُ اللَّهُ ﴿٥﴾

هُوَ أَهْلُ الشَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٦﴾

* इस विषयवस्तु का सम्बन्ध आयत जब ग्रन्थ प्रसारित किये जाएंगे (सूरः अत तक्वीर : 11) से है।

75- सूरः अल-कियामः

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं।

पिछली सूरः में नरकगामियों की स्वीकारोक्ति है कि उनको नरक का दंड इस कारण मिला कि वे परलोक का इनकार किया करते थे। परलोक के इनकार के कारण ही असंख्य अपराध जन्म लेते हैं और सारा संसार पाप से भर जाता है। अतः इस सूरः के आरम्भ में क्र्यामत के दिन को ही साक्षी ठहराया गया है और उस जान को भी जो बार-बार अपने आपको धिक्कारती है। यदि मनुष्य इस धिक्कार से लाभ उठा ले तो हजारों प्रकार के पापों से बच सकता है।

क्र्यामत के इनकार का कारण यह बताया गया कि वे यह समझते थे कि जब उनके सारे अंग प्रत्यंग सङ्-गल कर बिखर जाएँगे तो अल्लाह तआला किस प्रकार उनको इकट्ठा करेगा। यह केवल उनकी नासमझी थी क्योंकि कुरआन करीम स्पष्ट रूप से यह बात कई बार पेश कर चुका है कि तुम्हारे भौतिक शरीर के अंग इकट्ठे नहीं किए जाएँगे बल्कि आध्यात्मिक शरीर के अंग-प्रत्यंग इकट्ठे किए जाएँगे। परन्तु शत्रु अपने इस हठ धर्मिता पर अटल रहा ताकि अपने समय के रसूल से उपहास कर सके और परकाल के इनकार का तर्कसंगत कारण अपनी धारणानुसार प्रस्तुत कर सके।

आयत संख्या 8, 9, 10 में जिन बातों का उल्लेख है, उन्हें क्र्यामत पर लागू करना उचित नहीं। ये बातें क्र्यामत की निकटता के चिह्न हैं न कि क्र्यामत की घटनाएँ हैं। क्योंकि क्र्यामत के दिन तो यह ब्रह्माण्ड व्यवस्था पूर्णतया नाश हो जाएगी। न यह सूर्य होगा, न यह चन्द्रमा, न इनके परिक्रमण की व्यवस्था, न उनका ग्रहण, न उसे कोई देखने वाला होगा।

आयत जब आँखें पथरा जाएँगी से यह अभिप्राय है कि उन दिनों संसार पर भयानक अज्ञाव आएँगे। आगे की आयत में जो यह कहा कि उस समय झुठलाने वाले के लिए भागने का स्थान नहीं रहेगा तो इससे स्पष्ट होता है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के चिह्न अल्लाह के एक प्रतिश्रुत पुरुष की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए प्रकट होंगे ताकि इनकार करने वालों पर बात पूरी हो जाए।

सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण कब इकट्ठे होगा ? इसका विवरण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह है कि रमजान नामक एक ही महीना की निश्चित तिथियों में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण होगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह घटना उनके महीने के सच्चा होने का चिह्न है।

अतः यह घटना घट चुकी है। इसी विषयवस्तु पर आधारित एक भविष्यवाणी हज़रत ईसा मसीह अलै. ने भी की थी।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक और चमत्कार का वर्णन है। इतनी बड़ी पुस्तक कुरआन करीम तेईस वर्षों में उतरी और उतरने के समय आप सल्ल. इस चिंता में कि मैं इसे भूल न जाऊँ, अपनी जिह्वा को तेज़ी से हिला कर उसे याद रखने का प्रयास करते थे। परन्तु अल्लाह तआला ने आपको विश्वास दिलाया कि हम ने ही यह कुरआन उतारा है और हम ही इसे इकट्ठा करने की शक्ति रखते हैं। अतः एक निरक्षर व्यक्ति पर तेईस वर्षों में उतरने वाला कुरआन सुरक्षापूर्वक इकट्ठा किया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलै. इस बात को एक महान चमत्कार ठहराते हैं कि इस तेईस वर्ष के समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर शत्रुओं ने प्रत्येक प्रकार के आक्रमण किए और उनकी हत्या करने का प्रयत्न किया। यदि कुरआन के कुछ भाग उतरने के पश्चात ही नज़्जुबिल्लाह (इस बात से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) आप सल्ल. को समाप्त करने में शत्रु सफल हो जाता तो कुरआन का एक सम्पूर्ण ग्रन्थ होने का दावा, मिथ्या और पूर्णतया अर्थहीन हो जाता।

इस सूरः के अंत पर मनुष्य जन्म के विभिन्न चरणों का वर्णन करने के पश्चात कहा गया है कि वह निरंतर विकासशील है। अतः कैसे संभव है कि वह अन्ततोगत्वा अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित न हो और उसे अपने कर्मों का उत्तरदायी न ठहराया जाए।



سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ اخْدَى وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَرُسْكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

सावधान ! मैं क़ियामत के दिन की क़सम
खाता हूँ । 12

और सावधान ! मैं खूब धिक्कारने वाली
आत्मा की भी क़सम खाता हूँ । 13

या मनुष्य (यह) विचार करता है कि
हम कदापि उसकी हड्डियाँ इकट्ठा नहीं
करेंगे ? । 14

क्यों नहीं ! हम इस बात पर खूब समर्थ
हैं कि उसकी पोर-पोर (तक) को ठीक
कर दें । 15

वास्तविकता यह है कि मनुष्य यह
चाहता है कि वह उसके सामने पाप
करता रहे । 16

वह पूछता है कि क़ियामत का दिन कब
होगा ? । 17

तू (उत्तर दे कि) जब नज़र चौधिया
जाएँगी । 18

और चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा । 19

और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे किए
जाएँगे । 10

उस दिन मनुष्य कहेगा, भागने का
रास्ता कहाँ है ? । 11

सावधान ! कोई आश्रयस्थल
नहीं । 12

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ②

وَلَا أَقْسِمُ بِالْقِسْسِ الْمُؤَمَّةِ ③

أَيْحَسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْعَلُ
عَطَامَةً ④

بَلِ قُدْرَتِنَا عَلَى أَنْ تُسْوِيَ بَنَانَةً ⑤

بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيُفْجِرَ أَمَامَةً ⑥

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ⑦

فَإِذَا بَرَقَ الْبَصَرُ ⑧

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ⑨

وَجْمَعَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ⑩

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُ ⑪

كَلَالًا وَزَرَ ⑫

तेरे रब्ब ही के निकट उस दिन
आश्रयस्थल है । 13।

उस दिन मनुष्य को सूचित किया जाएगा
कि उसने क्या आगे भेजा था और क्या
पीछे छोड़ा । 14।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य अपनी
जान पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 15।
चाहे वह अपने बड़े-बड़े बहाने पेश
करे । 16।

तू इस (कुरआन) के पढ़ने के समय
अपनी जिह्वा को इस कारण तीव्रता
पूर्वक न हिला कि तू इसे शीघ्र-शीघ्र
याद करे । 17।

निश्चित रूप से इसका झटका करना
और इसका पाठ किया जाना हमारी
ज़िम्मेदारी है । 18।

अतः जब हम उसे पढ़ लें तो तू उसके
पाठ का अनुसरण कर । 19।

फिर निःसन्देह उसको स्पष्ट रूप से
वर्णन करना भी हमारे ही ज़िम्मा
है । 20।

सावधान ! बल्कि तुम संसार को पसन्द
करते हो । 21।*

और परलोक का अनदेखा कर देते
हो । 22।

उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा
होंगे । 23।

अपने रब्ब की ओर दृष्टि लगाए
हुए । 24।

إِلَى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقْرَرُ ۖ

يَسْبُّو الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَآخَرَ ۖ

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَى نَفْسِهِ بَصِيرٌ ۖ

وَلَوْأَنْفِي مَعَاذِيرَةً ۖ

لَا تَحْرِكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلْ بِهِ ۖ

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَةً وَقُرْآنَهُ ۖ

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۖ

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۖ

كَلَّا بِلِ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ

وَتَذَرُّونَ الْآخِرَةَ ۖ

وَجْهَهُ يَوْمَئِذٍ نَاضِرٌ ۖ

إِلَى رَبِّهَا نَاظِرٌ ۖ

* अरबी शब्द अल आजिलः का अर्थ संसार है । (शब्दकोश अल मुन्जिद)

जबकि कुछ चेहरे बहुत मलिन होंगे । 25।

वे विश्वास कर लेंगे कि उनसे कमरतोड़ व्यवहार किया जाएगा । 26।

सावधान ! जब जान हंसलियों तक पहुँच चुकी होगी । 27।

और कहा जाएगा, कौन है झाड़-फूँक करने वाला ? । 28।

और वह अनुमान लगा लेगा कि अब जुदाई (का समय) है । 29।

और पिंडली पिंडली से रगड़ खा रही होगी । 30।

उस दिन तेरे रब्ब ही की ओर हंकाया जाना है । 31। (रुक् ۱)

अतः उसने न पुष्टि की और न नमाज पढ़ी । 32।

बल्कि झुठलाया और मुँह केर लिया । 33।

फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ गया । 34।

तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो । 35।

फिर तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो । 36।

क्या मनुष्य यह विचार करता है कि उसे निरंकुश छोड़ दिया जाएगा ? । 37।

क्या वह केवल वीर्य की एक बूंद नहीं था जो डाला गया ? । 38।

तब वह एक लोथड़ा बन गया । फिर उस (अल्लाह) ने उसका सृजन किया, फिर उसे संतुलित किया । 39।

وَوَجْهُهُ يَوْمَئِنِ بَاسِرَةٌ

تَطْنِيْنَ أَنْ يَفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الشَّرَاقِ

وَقَبْلَ مَنْ رَاقِيْ

وَظْلَمَ أَنَّهُ الْفَرَاقِ

وَالْتَّقْسِيْتِ السَّاقِ بِالسَّاقِ

إِلَى رِبِّكَ يَوْمَئِنِ الْمَسَاقِ

فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّى

وَلِكُنْ كَذَبَ وَتَوْلِيْ

لَمَّا ذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ يَمْضِي

أُولَئِكَ فَأَوْلَى

لَمَّا أُولَئِكَ فَأَوْلَى

أَيْحَسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتَرَكَ سُدَّى

أَلْمَرِيْكُ نُظَفَةً مِنْ مَنِيْ يَمْنِي

لَمَّا كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسُوْيِ

فَجَعَلَ مِنْهُ الرَّزْوَجِينَ الذَّكَرَ وَالْأَنْثَىٰ ۖ
اوڑ स्त्री । 40।

آلَيْسَ ذَلِكَ بِقِدْرٍ عَلَىٰ أَنْ يَحْمِيَ الْمَوْتَىٰ ۖ ۝
मुर्दों को जीवित कर सके ? । 41।

(रुक् २४)

76- सूरः अद-दहर

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उत्तरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 32 आयतें हैं।

इस सूरः में मनुष्य को उसकी उत्पत्ति की ओर ध्यान दिलाते हुए वर्णन किया गया है कि उस पर एक ऐसा भी समय आया है जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। हालाँकि मनुष्य जबसे अस्तित्व में आया है समग्र सृष्टि में वही सबसे अधिक उल्लेखनीय वस्तु था। यहाँ मनुष्य की आरम्भिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है कि मनुष्य ऐसे आरम्भिक, विकासोन्मुख दौर में से गुज़रा है जब वह किसी प्रकार उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। यह वह समय जान पड़ता है जब पक्षियों को भी बोलने की क्षमता प्रदान नहीं की गई थी और धरती पर एक भारी सन्नाटा छाया हुआ था। इस दौर से गुज़रा कर मनुष्य को पैदा किया गया और फिर उसे सुनने और देखने वाला बना दिया गया। अतः जिस अल्लाह ने मिट्टी को सुनने और देखने की शक्ति प्रदान की वह इस बात पर भी समर्थ है कि उसे दोबारा पैदा कर दे और उसके सुनने और देखने की शक्ति का हिसाब लिया जाए।

इसके बाद स्वर्गगामियों के विशेष गुणों का विवरण मिलता है कि वे किसी पर इस कारण उपकार नहीं करते कि उसके बदले उनके धन-सम्पत्ति बढ़ जाएँ। जब भी वे किसी से सद्-व्यवहार करते हैं तो यह कहते हैं कि हम तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ऐसा कर रहे हैं। इसके बदले में हम तुमसे किसी प्रतिफल अथवा धन्यवाद पाने की कदापि अभिलाषा नहीं रखते।



سُورَةُ الدَّهْرِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ النَّصَانِ وَ ثَلَاثُونَ آيَةً وَ رُكْوْغَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

व्या मनुष्य पर काल भर में से कोई ऐसा
क्षण भी आया था जब कि वह कोई
उल्लेखनीय वस्तु नहीं था ? । 12

निःसन्देह हमने मनुष्य को एक मिश्रित
वीर्य से पैदा किया जिसे हम विभिन्न
प्रकार की आकृतियों में ढालते हैं । फिर
उसे हमने सुनने (और) देखने वाला बना
दिया । 13।

निःसन्देह हमने उसे सीधे रास्ते की ओर
निर्देशित किया । चाहे (वह) कृतज्ञ
बनते हुए चाहे कृतज्ञ बनते हुए (उस
पर चले) । 14।

निःसन्देह हमने काफिरों के लिए
भाँति-भाँति की ज़ंजीरें और तौक
और एक धधकती हुई अग्नि तैयार
किए हैं । 15।

निःसन्देह नेक लोग एक ऐसे प्याले
से पियेंगे जिसमें कर्पूर का गुण
होगा । 16।

एक ऐसा स्रोत, जिससे अल्लाह के भक्त
पिएंगे । जिसे वे फाइ-फाइ कर विस्तृत
करते चले जाएँगे । 17।

वे (अपनी) मन्त्रत पूरी करते हैं और उस
दिन से डरते हैं जिसका अनिष्ट फैल
जाने वाला है । 18।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ
لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذْكُورًا ①

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاجٍ
تَبَلِّيْهُ فَجَعَلْنَاهُ سَيِّعًا بَصِيرًا ①

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا
كَفُورًا ①

إِنَّا أَغْنَيْنَا الْكُفَّارِ بِنَسْلِيْلَ وَأَغْلَبَ
وَسَعِيرًا ①

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَسْرَبُونَ مِنْ كَاسِ كَانَ
مَرَاجِهَا كَافُورًا ①

عَيْنًا يَشَرِّبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يَقْرِئُونَهَا
تَفْجِيرًا ①

يُؤْفَوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرَهًا
مُسْتَطِيرًا ①

और वे भोजन को, उसकी चाहत के होते हुए भी दरिद्रों और अनाथों और बन्दियों को खिलाते हैं । १।

(और उनसे कहते हैं कि) हम तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए भोजन करा रहे हैं । हम कदापि तुमसे न कोई बदला और न कोई धन्यवाद चाहते हैं । १०।

निःसन्देह हम अपने रब्ब की ओर से (आने वाले) एक त्योरी चढ़ाए हुए, अत्यन्त कठिन दिन का भय रखते हैं । ११।

अतः अल्लाह ने उन्हें उस दिन के अनिष्ट से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और आनन्द प्रदान किए । १२।

और उसने उनको उनके धैर्य धारण के कारण एक स्वर्ग और एक प्रकार का रेशम प्रतिफल स्वरूप दिया । १३।

वे उसमें पलंगों पर तकिया लगाए बैठे होंगे । न तो वे उसमें कड़ी धूप देखेंगे और न कड़ाके की सर्दी । १४।

और उसकी छाहें उन पर झुकी हुई होंगी और उसके फल पूरी तरह झुका दिए जाएँगे । १५।

और उन के मध्य चाँदी के बर्तनों और ऐसे कटोरों का दौर चलाया जाएगा जो शीशे के होंगे । १६।

ऐसे शीशे जो चाँदी से बने होंगे, उन्होंने उनको बड़ी कुशलतापूर्वक गढ़ा होगा । १७।

और वे उसमें एक ऐसे घ्याले से पिलाए जाएँगे जिसमें सौठ का मिश्रण

وَيُنْطِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حِيمٍ مُسْكِنِينَا
وَيَتَبَيَّنَّا وَأَسِيرًا ①

إِنَّمَا نَطِعُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا تُرِيدُمُنَّكُمْ
جَرَاءً وَلَا شَغُورًا ②

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا
قَمْطَرِيرًا ③

فَوَقْهُمُ اللَّهُ شَرُّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَهُمْ
نَصْرَةً وَسُرُورًا ④

وَجَزِّنَهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ⑤

مُشَكِّلِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ⑥
لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ⑦

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظَلَمَهَا وَذَلِكَ قُطْوُفُهَا
تَذْلِيلًا ⑧

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِبَانِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ
وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ⑨

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ⑩

وَيُسَقُّونَ فِيهَا كَاسًا كَانَ مِزاجَهَا

होगा । 18।

رَجُحِيْلًا^{١٤}

उसमें एक ऐसा अद्भुत स्रोत होगा जो सल्सबील कहलाएगा । 19।

और उन (की सेवा) में अमरत्व को प्राप्त किये हुए बच्चे धूमेंगे । जब तू उन्हें देखेगा तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझेगा । 20।

और जब तू नज़र दौड़ाएगा तो वहाँ एक बड़ी नेमत और एक बहुत बड़ा राज्य देखेगा । 21।

उन पर बारीक रेशम के और मोटे रेशम के हरे बस्त्र होंगे । और वे चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उन्हें उनका रब्ब पवित्र पेय पिलाएगा । 22।

निःसन्देह यह तुम्हारे लिए बदले के रूप में होगा । और तुम्हारे प्रयासों का सम्मान किया जाएगा । 23। (रुकू^{1/4})
निःसन्देह हमने ही तुझ पर कुरआन को एक शानदार क्रम के साथ उतारा है । 24।

अतः अपने रब्ब के आदेश (का पालन करने) के लिए दृढ़ता पूर्वक डटे रह । और इनमें से किसी पापी और बड़े कृतघ्न का अनुसरण न कर । 25।

और सुबह शाम अपने रब्ब के नाम का स्मरण कर । 26।

और रात्रि के एक भाग में उसके समक्ष सजदः में पड़ा रह और सारी-सारी रात उसका गुणगान करता रह । 27।

عَيْنَاقِهَا شَمْسِيَ سَلْسِيَلًا^{١٥}

وَيَظُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخْلَدُونَ^٦
إِذَا رَأَيْتَ حَبْنَهُمْ لَوْلَوْ أَمْتَثُورًا^٦

وَإِذَا رَأَيْتَ شَمْ رَأْيَتْ نَعِيمًا^٧
وَمُلْكًا كِبِيرًا^٧

عَلَيْهِمْ شِيَابٌ سُنْدِسٌ خَضْرٌ^٨
وَإِسْتَبْرَقٌ وَّحَلْوَانَ آسَاوِرَ مِنْ^٨
فِضَّةٍ وَسَقْمَهُمْ رَبِّهُمْ شَرَابًا طَهْوَرًا^٨

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ^٩
مَشْكُورًا^٩
إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا^٩

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطْغِي مِنْهُمْ^{١٠}
إِنَّمَا أُوْكَفُوْرًا^{١٠}

وَإِذْ كِرَاسِمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا^{١١}
وَمِنْ أَلْيَلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَيْحَةٌ لَيْلًا^{١١}
طَوْيَلًا^{١١}

निःसन्देह ये लोग संसार से प्रेम करते हैं।
और अपने पीछे एक भारी दिन की
अनदेखी कर रहे हैं । 128।

हमने ही उनको पैदा किया है और उनके
जोड़बंद सशक्त बनाए हैं। और जब हम
चाहेंगे उनकी आकृतियों को एकदम
परिवर्तित कर देंगे । 129।

निःसन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश
है। अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर
(जाने वाला) मार्ग अपना ले । 130।

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते (कि
हो जाए) सिवाए इसके कि (वही)
अल्लाह चाहे। निःसन्देह अल्लाह स्थायी
ज्ञान रखने वाला (और) परम
विवेकशील है । 131।

वह जिसे चाहता है अपनी कृपा में
प्रविष्ट करता है। और जहाँ तक
अत्याचारियों का संबंध है, उनके लिए
उसने पीड़ादायक अज्ञाब तैयार कर
रखा है । 132। (रुक् 2/20)

إِنَّ هُوَ لَا يُحِبُّ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ④

نَحْنُ خَلَقْنَاهُ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ
وَإِذَا إِشْتَأْبَدْنَا آمْثَالَهُمْ تَبَدِّلُوا ⑤

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَيْ رَبِّهِ سَبِيلًا ⑥

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَعْلَمَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑦

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ
أَعْذَلُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑧

77- सूरः अल-मुस्लात

यह सूरः मक्का में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 51 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में ही फिर से भविष्य की वह घटनाएँ जो अन्युगीनों के दौर से सम्बन्ध रखती हैं, वर्णन की गई हैं और उस युग की वैज्ञानिक प्रगतियों को गवाह ठहराया गया है, कि जिस अल्लाह ने इन अदृश्य विषयों की खबर दी है वह हर प्रकार की क्रांति पैदा करने का सामर्थ्य रखता है। इस प्रसंग में कुछ ऐसे उड़ने वालों का वर्णन है जो आरम्भ में धीरे-धीरे उड़ते हैं और फिर तूफानी रफ़तार पकड़ लेते हैं। इस समय के तेज़ रफ़तार वायुयानों की भी यही अवस्था है कि पहले धीरे-धीरे उड़ना शुरू करते हैं और फिर उनकी गति में बहुत तेज़ी आ जाती है। और इन वायुयानों के द्वारा शत्रुओं से युद्ध करते हुए उन पर परचे फेंके जाते हैं और यह स्पष्ट किया जाता है कि यदि तुम हमारे साथ हो जाओ तो हम तुम्हारे सहायक होंगे अन्यथा हमारी पकड़ से तुम्हें कोई बचा नहीं सकेगा।

फिर फर्माया, फिर जब आकाश के सितारे मलिन पड़ जाएँगे और जब आसमान पर चढ़ने के लिए मनुष्य विभिन्न उपाय अपनायेगा यहाँ सितारे मलिन पड़ने से यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि जब सहाबा रज़ि, का युग बीत चुका होगा और वह प्रकाश जो इन सितारों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत प्राप्त किया करती थी वह भी माँद पड़ चुका होगा।

फिर फर्माया, जब बड़े-बड़े पर्वतों के समान शक्तियाँ जड़ों से उखेड़ दी जाएँगी और सभी रसूल भेजे जाएँगे। इस आयत के सम्बन्ध में विद्वान् यह भ्रांति उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं कि यह क्रयामत का दृश्य है। परन्तु क्रयामत में तो कोई पर्वत उखेड़े नहीं जाएँगे और रसूल तो इस संसार में भेजे जाते हैं, क्रयामत के दिन तो नहीं भेजे जाएँगे। अतः यहाँ निश्चित रूप से यही अभिप्राय है कि कुरआन करीम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दासता को पूर्ण रूपेण अपना कर और आप सल्ल. का आज्ञापालन करते हुए एक ऐसा नबी आएगा जिसका आना अतीत के सब रसूलों का आना होगा। अर्थात् उसके प्रयासों से पिछली सभी रसूलों की उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में विलीन हो जाएगी।

भविष्य में होने वाले जिन युद्धों का इस सूरः में वर्णन किया गया है उनका एक चिह्न यह है कि वे तीन प्रकार से होंगे। अर्थात् ज़मीनी, समुद्री और हवाई। उस समय आकाश से ऐसी लपटें बरसेंगी जो दुर्गों की भाँति होंगी, मानो वे गेहू़े रंग के ऊँट हैं। इन दोनों आयतों ने निश्चित रूप से प्रमाणित कर दिया कि ये बातें उपमा के रूप में कही जा

रही हैं। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में किसी ऐसे युद्ध की कल्पना तक नहीं थी जिसमें आकाश से आग की लपटें बरसें। इस लिए अवश्य यह उस सर्वज्ञ और सर्व-अवगत सत्ता की ओर से एक भविष्यवाणी है जो भविष्य की परिस्थितियों को भी जानता है।

क्र्यामत के दिन तो आकाश से आग की लपटें नहीं बरसाई जाएँगी। इस लिए यह धारणा भी भूल सिद्ध हुई कि यह क्र्यामत के दिन की खबर है। यहाँ एक आणविक युद्ध की भविष्यवाणी जान पड़ती है जिसका वर्णन सूरः अद-दुखान में भी मिलता है कि उस दिन आकाश उन पर ऐसी रेडियो तरंगों का विकिरण करेगा कि उसकी छाया तले वे हर प्रकार की शांति को खो बैठेंगे।

इसके पश्चात फिर परकालीन जीवन की ओर संकेत किया गया है कि जब इन कुरआनी भविष्यवाणियों के अनुसार संसार में ये चिह्न प्रकट हो जाएँ तो इस बात पर भी विश्वास करो कि एक परकालीन जीवन भी है। यदि तुम इस लोक में अल्लाह तआला का आज्ञापालन नहीं करोगे तो उस लोक में दंड निश्चित है।



سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ مَكْيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَخْدَى وَ خَمْسُونَ آيَةً وَ زُكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क्रसम है लगातार भेजी जाने वालियों
की । 2।

फिर बहुत तेज़ रफतार हो जाने वालियों
की । 3।

और (संदेश को) भली-भाँति प्रसारित
करने वालियों की । 4।

फिर स्पष्ट अंतर करने वालियों की । 5।

फिर चेतावनी देते हुए (परचे) फेंकने
वालियों की । 6।

प्रमाण अथवा चेतावनी स्वरूप । 7।

निःसन्देह जिससे तुम सचेत कराए जा
रहे हो (वह) अवश्य हो कर रहने वाला
है । 8।

अतः जब नक्षत्र मलिन हो जाएँगे । 9।

और जब आकाश में (भाँति-भाँति के)
छेद कर दिए जाएँगे । 10।

और जब पर्वत जड़ों से उखेड़ दिए
जाएँगे । 11।

और जब रसूल निश्चित समय पर लाए
जाएँगे । 12।

किस दिन के लिए उनका समय
निर्धारित था ? । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالْمُرْسَلَتِ عَرْفًا ①

فَالْعِصْفَتِ عَصْفًا ①

وَالثِّيرَتِ نَشَرًا ①

فَالْفِرِقَتِ فَرْقًا ①

فَالْمُلْقِيَّتِ ذِكْرًا ①

عَذْرًا أَوْ نُذْرًا ①

إِنْهَانَتِ عَذْنَوْنَ لَوَاقِعًا ①

فَإِذَا النَّجُومُ ظِمَسَتْ ①

وَإِذَا السَّمَاءُ فَرِجَثْ ①

وَإِذَا الْجِبَالُ لَسِفَثْ ①

وَإِذَا الرَّسَلُ أَقْتَثْ ①

لَا يَوْمٌ أَجِلَّتْ ①

एक निर्णायक दिन के लिए । 14।

और तुझे क्या पता कि निर्णायक दिन
क्या है ? । 15।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश
है । 16।

क्या हमने पहलों को विनष्ट नहीं
किया ? । 17।

फिर बाद में आने वालों को हम उनके
पीछे लाते हैं । 18।

इसी प्रकार हम अपराधियों से बर्ताव
किया करते हैं । 19।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश
है । 20।

क्या हमने तुम्हें एक तुच्छ पानी से पैदा
नहीं किया ? । 21।

फिर हमने उसे एक टिके रहने
के सुरक्षित स्थान पर नहीं
रखा ? । 22।

एक निर्धारित अवधि तक । 23।

फिर हमने (उसका) सृजन किया । अतः
हम क्या ही उत्तम सृजनहार हैं । 24।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश
है । 25।

क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं
बनाया ? । 26।

जीवितों को भी और मृतकों को
भी । 27।

और हमने उसमें ऊँचे-ऊँचे पर्वत बनाए ।
और तुम्हें मीठे पानी से भली प्रकार तृप्त
किया । 28।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ⑩

وَمَا آذْرِيكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ⑪

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑫

الْمُنْهَلِكُ الْأَوَّلِينَ ⑬

لَمْ يَشْعُهُمُ الْآخِرِينَ ⑭

كَذِلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ⑮

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑯

الْمُنْحَقِّكُمْ مِّنْ مَاءِ مَهِينَ ⑰

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَارِمَكِينَ ⑱

إِلَى قَدَرِ مَعْلُومٍ ⑲

فَقَدْرُنَا فَنِعْمَ الْقَدِيرُونَ ⑳

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ㉑

الْمُنْجَلِ الْأَرْضِ كَفَاتَ ㉒

أَحْيَاءً وَأَمْوَالَ ㉓

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَابِسٍ شِمْخَتٍ

وَأَسْقَيْنَاهُمْ مَاءً فَرَأَتَ ㉔

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 129।

(उन से कहा जाएगा) उसकी ओर चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे 130।

ऐसी छाया की ओर चलो जो तीन शाखाओं युक्त है 131।

न (वह) संतुष्टि देती है न आग की लपटों से बचाती है 132।

निःसन्देह वह एक दुर्ग सदृश आग की लपट फेंकती है 133।

मानो वह गेरुआ रंग के ऊंटों की भाँति है 134।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 135।

यह है वह दिन, जब वे मूक बन जाएँगे 136।

और उनको आज्ञा नहीं दी जाएगी कि वे अपने बहाने पेश करें 137।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 138।

यह है निर्णय का दिन, जिस के लिए हमने तुम्हें और पूर्ववर्ती लोगों को भी इकट्ठा किया 139।

अतः यदि तुम्हारे पास कोई उपाय है तो मुझ पर परीक्षण कर के देखो 140।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 141। (रुक् ۱)

निःसन्देह मुत्तकी छावों और स्रोतों (वाले स्वर्गों) में होंगे 142।

और ऐसे फलों में जिनकी वे चाह रखते हैं 143।

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑤

إِنْطَلِقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تَكَذِّبُونَ ۖ

إِنْطَلِقُوا إِلَى ظُلْلٍ ذِي ثَلَاثٍ شَعَبٍ ۖ

لَا ظَلِيلٌ وَلَا يَعْنِي مِنَ اللَّهِ بِهِ ۖ

إِنَّهَا شَرٌّ مِّنْ يَسِّرِ رَكَابِ قَصْرٍ ۖ

كَانَتْ حِلْمَتُ صَفْرٍ ۖ

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑥

هَذَا يَوْمٌ لَا يُطْقَفُونَ ۖ

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۖ ⑦

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ⑧

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۗ جَمَعَنَّكُمْ

وَالْأَوْقَانِ ۖ ⑨

فَإِنَّ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكَيْدُونَ ۖ ⑩

وَيْلٌ يَوْمٌ مِّنْ لِلْمَكَذِّبِينَ ۖ

إِنَّ الْمُقْيَنِ فِي ظُلْلٍ وَمَعْيَنٍ ۖ

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۖ

(उनसे कहा जाएगा) जो तुम कर्म करते थे उसके फलस्वरूप मज़े से खाओ और पिओ । 144।

निःसन्देह हम इसी प्रकार भलाई करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं । 145।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है । 146।

खाओ और कुछ देर थोड़ा लाभ उठा लो । निःसन्देह तुम अपराधी हो । 147।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है । 148।

और जब उनसे यह कहा जाता था कि झुक जाओ तो वे झुकते नहीं थे । 149।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है । 150।

फिर इसके बाद वे और किस कथन पर ईमान लाएँगे ? । 151। (रुक् २/२२)

كُلُّاً وَأَشَرَّ بُوْاهَنِيَّاً بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ④

إِنَّا كَذَلِكَ أَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ④

وَيَنْ يَوْمَئِذٍ لِلْمَكَذِّبِينَ ④

كُلُّاً وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ④

وَيَنْ يَوْمَئِذٍ لِلْمَكَذِّبِينَ ④

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَرْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ④

وَيَنْ يَوْمَئِذٍ لِلْمَكَذِّبِينَ ④

فِيَّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يَوْمَئِذٍ ④

78- सूरः अन-नबा

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं।

इससे पूर्व सूरः अल्-मुर्सलात में काफिरों की ओर से एक मौलिक प्रश्न यह उठाया गया था कि यौम-उल-फ़स्ल (निर्णय का दिन) कब आएगा जो खेरे-खोटे में प्रभेद कर देगा। सूरः अन-नबा में इसके उत्तर में यह महान सु-समाचार दिया जा रहा है कि वह यौम-उल-फ़स्ल आ चुका। प्रस्तुत सूरः में कहा गया है कि यौम-उल-फ़स्ल एक अटल और निश्चित वादा था जिसे निर्धारित समय पर अवश्य पूरा होना था।

फिर यौम-उल-फ़स्ल के विभिन्न रूप इस सूरः में वर्णित हुए हैं। सब से पहले तो अल्लाह तआला की उस व्यवस्था के वर्णन की पुनरावृत्ति की गयी है जो आकाश से पानी बरसाती और धरती से खाद्यान्त निकालती है। फिर ध्यान आकर्षित कराया गया है कि इससे मनुष्य लाभ नहीं उठाते और यह नहीं सोचते कि वास्तविक आसमानी पानी तो आध्यात्मिक हिदायत का पानी है। इस इनकार के परिणामस्वरूप उन पर जो विपत्तियाँ पड़ती हैं अथवा पड़ेंगी उनका इस सूरः में वर्णन मिलता है।

इस सूरः के अंत पर एक बहुत बड़ी चेतावनी दी गई है कि यदि मनुष्य ने इसी प्रकार बेपरवाही में जीवन व्यतीत कर दिया तो अंततोगत्वा वह बहुत कष्ट के साथ पछतावा करेगा कि काश ! मैं इससे पहले ही मिट्टी बन जाता और मिट्टी से मनुष्य के रूप में उठाया न जाता।



سُورَةُ النَّبِيِّ مَكْيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اخْدُى وَأَرْبَعُونَ آتٍ وَرُثْكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

वे किसके बारे में एक दूसरे से प्रश्न
करते हैं ? । 12।

एक बहुत बड़े समाचार के बारे में । 13।

(यह) वही (समाचार) है जिसके
सम्बंध में वे परस्पर मतभेद कर रहे
हैं । 14।

सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे । 15।

फिर सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे । 16।

क्या हमने धरती को बिछौना नहीं
बनाया ? । 17।

और पर्वतों को गड़े हुए खूँटों की भाँति
(नहीं बनाया) ? । 18।

और हमने तुम्हें जोड़ा-जोड़ा पैदा
किया । 19।

और तुम्हारी नींद को हमने आराम
प्राप्ति का साधन बनाया । 20।

और रात्रि को हमने एक परिधान
बनाया । 21।

और दिन को हमने जीविकोपार्जन का
एक साधन बनाया है । 22।

और हमने तुम्हरे ऊपर सात सुदृढ़
आकाश बनाए । 23।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

عَمَّ يَسْأَءُ لَوْنَ ②

عَنِ النَّبِيِّ الْعَظِيمِ ③

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ④

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑤

لَئِنْ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑥

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ⑦

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ⑧

وَخَلَقْنَاكُمْ أَرْوَاجًا ⑨

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑩

وَجَعَلْنَا الْيَلَى بِيَاسًا ⑪

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ⑫

وَبَيْنَ أَفْوَقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ⑬

* यहाँ 'आकाश' शब्द विषयवस्तु में सम्मिलित है, जो अधिक प्रचलन के कारण स्वतः हट गया है। →

और हमने एक तेज़ चमकता हुआ दीपक
बनाया । 14।

और हमने घने बादलों से मूसलाधार
पानी बरसाया । 15।

ताकि हम उसके द्वारा अनाज और
वनस्पतियाँ उगाएँ । 16।

और घने बाग (उगाएँ) । 17।

निःसन्देह निर्णय का दिन एक निर्धारित
समय है । 18।

जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा और तुम
झुँड के झुँड आओगे । 19।

और आकाश खोल दिया जाएगा । अतः
वह कई द्वारों युक्त हो जाएगा । 20।

और पर्वत चलाए जाएँगे और वे ढलान
की ओर गतिशील हो जाएँगे । 21।*

निश्चित रूप से नरक घात में है । 22।

उद्धण्डियों के लिए लौट कर जाने का
स्थान । 23।

वे उसमें शताब्दियों (तक) रहने वाले
होंगे । 24।

न वे उसमें कोई शीतल पदार्थ और न
कोई पेय चखेंगे । 25।

सिवाय एक खौलते हुए पानी और घावों
के दुर्गम्य युक्त धोवन के । 26।**

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَاجَانِي

وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمَعْصَرَتِ مَاءً نَجَاجَانِي

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبَّاً وَنَبَاتَانِي

وَجَعَلْنَا أَفَاقًا

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتَانِي

يَوْمٌ يَسْعَى فِي الصُّورِ قَاتُونَ أَفْوَاجَانِي

وَفُتَحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا

وَسِيرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا

لِلْظَّاغِينَ مَا بَأَيَّ

لِيَشِينَ فِيهَا آخْرَابًا

لَا يَدْعُونَ فِيهَا بَرَدًا وَلَا شَرَابًا

إِلَّا حِيمَمًا وَغَسَافًا

*इसलिए अनुवाद में यदि इसे लिख दिया जाए तो किसी प्रकार के कोष्ठक की आवश्यकता नहीं है।

** अरबी शब्द अस सराब का अर्थ है किसी वस्तु का ढलान की ओर जाना ।
(मुफरदात इमाम राशिद रहि.)

अरबी शब्द अल गस्साक का अर्थ है नरक वासियों की चमड़ियों से जो पीब टपकती है ।
(मुफरदात इमाम राशिद रहि.)

यह एक यथोचित प्रतिफल है । 27।

वे कदापि किसी प्रकार के हिसाब की आशा नहीं रखते थे । 28।

और उन्होंने हमारी आयतों को सख्ती से झुठला दिया था । 29।

और हर चीज को हमने एक पुस्तक के रूप में सुरक्षित कर रखा है । 30।

तो चखो । अतः हम तुम्हें अज्ञाब के सिवा कदापि किसी और चीज में नहीं बढ़ाएँगे । 31। (रुक् । ।)

निःसन्देह मुत्तकियों के लिए बहुत बड़ी सफलता (निश्चित) है । 32।

बाग हैं और अंगूरों की बेलें । 33।*

और समवयस्का कुवाँरी कन्याएँ । 34।

और छलकते हुए प्याले । 35।

वे उसमें न कोई व्यर्थ (बात) सुनेंगे और न कोई मामूली सा झूठ । 36।

(उनके लिए) तेरे रब्ब की ओर से एक प्रतिफल, एक जचा-तुला पुरस्कार है । 37।

आसमानों और धरती तथा उन दोनों के बीच स्थित प्रत्येक वस्तु के रब्ब की ओर से अर्थात् रहमान की ओर से (होगा) । वे उससे किसी बातचीत का अधिकार नहीं रखेंगे । 38।

جَزَاءٌ وِفَاقًا

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا

وَكَذَّبُوا إِيمَانًا كَذَّابًا

وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا

فَذُؤْقُوا فَلَنْ تَرْيَدُكُمْ إِلَّا عَذَابًا

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا

حَدَّ آئِقَ وَأَعْنَابًا

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا

وَكَاسَادِهَا قًا

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذْبًا

جَزَاءٌ مِّنْ رَّبِّكَ عَطَاءٌ حِسَابًا

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

الرَّحْمَنُ لَا يَمْلُكُونَ مِنْهُ خَطَابًا

* इस प्रकार का अर्थ मुफरदात इमाम रागिव रहि, में वर्णित इन्ह शब्द के अनुसार किया गया है ।

जिस दिन रुह-उल-कुदुस और फरिश्ते पंक्तिबद्ध होकर खड़े होंगे, वे बातचीत नहीं करेंगे सिवाये उसके जिसे रहमान आज्ञा देगा और वह सटीक बात कहेगा । 39।*

वह दिन सत्य है । अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर लौटने का स्थान बनाए । 40।

निःसन्देह हमने तुम्हें एक निकट आने वाले अज्ञाब से सतर्क कर दिया है । जिस दिन मनुष्य उसे देख लेगा जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा, और काफिर कहेगा, काश ! मैं मिट्टी बन चुका होता । 41। (रुक् 2)

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلِكَةُ صَفًا
لَا يَشْكُلُونَ إِلَامٌ إِلَّا مِنْ أَذْنَ لَهُ الرَّحْمَنُ
وَقَالَ صَوَابًا ④

ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۝ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَى رَبِّهِ مَابَا ④
إِنَّمَا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يُبَطَّرُ
الْمَرْجَمَ مَا قَدَّمْتُ يَدَهُ وَيَقُولُ الْكُفَّارُ
يَلَيْسَنِي كُنْتُ تُرْبَأً ④

* क्रयामत के दिन किसी को अल्लाह की अनुमति के बिना कोई सिफारिश करने की आज्ञा नहीं होगी। अल्लाह तआला के भय से पूरी तरह सन्नाटा छाया होगा और जो भी कोई बात करेगा वह सही होगी। अल्लाह के समझ झूठ बोलने का किसी को साहस नहीं होगा।

79- सूरः अन-नाज़िआत

यह सूरः आरम्भिक मक्की युग में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 47 आयतें हैं।

कुरआनी शैली के अनुसार एक बार फिर इस सूरः में सांसारिक अज्ञाब और युद्धों का विवरण आया है और स्पष्ट रूप से ऐसे युद्धों का वर्णन है जिनमें पनडुब्बी नौकाओं का प्रयोग किया जाएगा। आयत बन्नाज़िआति ग़र्क़न (सं. 2) का एक अर्थ यह है कि वे युद्ध करने वालियाँ इस उद्देश्य से डूब कर आक्रमण करती हैं कि शत्रु को डुबो दें और फिर अपनी प्रत्येक सफलता पर खुशी अनुभव करती हैं। इसी प्रकार युद्ध और आक्रमण का यह दौड़ एक दूसरे से बढ़त ले जाने के प्रयासों में समाप्त हो जाता है और दोनों ओर से शत्रु बड़े-बड़े घड़यन्त्र रचता है।

आयत बस्साबिहाति सब हन (सं. 4) से तैरने वालियाँ अभिप्रेत हैं चाहे वे समुद्र के अन्दर डूब कर तैरें अथवा समुद्र के तल पर तैरें। कई बार पनडुब्बी नौकाएँ अपनी विजय प्राप्ति के पश्चात समुद्र तल पर उभर आ निकलती हैं।

इन युद्धों से ऐसा आतंक छा जाता है कि दिल उसके भय से धड़कने लगते हैं और नज़रें झुक जाती हैं। इस सांसारिक विनाश के पश्चात मनुष्य की अन्तरात्मा यह प्रश्न उठाती है कि क्या फिर हम मृतावस्था से पुनः जी उठेंगे, जबकि हमारी हड्डियाँ गल-सड़ चुकी होंगी ? अल्लाह ने कहा, निःसन्देह ऐसा ही होगा और एक बहुत बड़ी चेतावनी देने वाली आवाज़ गूँजेगी तो सहसा वे अपने आप को क़्रायामत के मैदान में उपस्थित पाएँगे।

इसके बाद हज़रत मूसा अलै. का वर्णन आरम्भ किया गया है, क्योंकि उनको फ़िरआौन की ओर भेजा गया था जो स्वयं ईश्वरत्व का दावेदार और परलोक का परम अस्वीकारी था। जब हज़रत मूसा अलै. ने उसे सत्यवार्ता पहुँचाई तो उसने उत्तर में यह डींग हाँकी कि तुम्हारा सर्वोच्च रब्ब तो मैं हूँ। अतः अल्लाह तआला ने उसे ऐसा पकड़ा कि वह पूर्ववर्तियों और परवर्तियों के लिए एक शिक्षाप्रद उदाहरण बन गया। पूर्ववर्तियों ने तो उसे और उसकी सेनाओं को डूबते हुए देखा और परवर्तियों ने उसके डूबे हुए शरीर को देखा, जिसे अल्लाह तआला ने शिक्षा प्रदान करने के लिए भौतिक मृत्यु से इस अवस्था में बचाया कि लम्बी आयु तक वह जीवन और मरण से संघर्ष करता हुआ इस दशा में मरा कि उसके शर्व को आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से मर्मी (Mummy) के रूप में सुरक्षित कर दिया गया।

इसके बाद इस सूरः का अन्त इस प्रश्न के उल्लेख पर हुआ है कि वे पूछते हैं कि

आखिर वह क्रयामत की घड़ी कब और कैसे आएगी ? अल्लाह ने कहा, जब वह आएगी तो भली-भाँति स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक वस्तु का अंतिम गंतव्य उसके रब्ब ही की ओर है । और हे रसूल ! तू तो केवल उसी को डरा सकता है जो इस भयानक घड़ी से डरता हो और जिस दिन वे उसे देखेंगे तो संसार का जीवन यूँ प्रतीत होगा जैसे कुछ क्षणों से अधिक नहीं था ।



سُورَةُ النَّازِعَاتِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْسَّمَلَةِ سَنْعٌ وَ أَرْبَعُونَ آيَةٍ وَ رُسْكُونَ عَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ।।।

कसम है डूब कर खींचने वालियों की
(अथवा) डुबोने के उद्देश्य से खींचने
वालियों की ।।।

और बहुत खुशी मनाने वालियों की ।।।

और खूब तैरने वालियों की ।।।

फिर एक दूसरी पर बढ़त ले जाने
वालियों की ।।।

फिर किसी महत्वपूर्ण कार्य की योजना
बनाने वालियों की ।।।

जिस दिन कांपने वाली खूब
कांपेगी ।।।

एक पीछे आने वाली उसके पीछे
आएगी ।।।

दिल उस दिन बहुत धड़क रहे होंगे ।।।

उनकी आँखें नीची होंगी ।।।

वे (लोग) कहेंगे कि क्या हमें पूर्वावस्था की
ओर अवश्य लौटा दिया जाएगा ? ।।।

क्या जब हम सड़ी-गली हड्डियाँ बन चुके
होंगे ? ।।।

वे कहेंगे, तब तो यह लौट कर जाना
बहुत घाटे का होगा ।।।

अतः (सुनो कि) यह तो केवल एक बड़ी
डांट (की आवाज़) होगी ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالثَّرِغُتِ عَرْقًا ①

وَالشَّيْطَتِ نَشَطًا ①

وَالسَّيْحَتِ سَبَحَا ①

فَالسِّقْتِ سَبَقَا ①

فَالْمُدَبِّرَتِ أَمْرَا ①

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ①

تَبْعَهَا الرَّادِفَةُ ①

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ قَوْاجِفَةٌ ①

أَبْصَارٌ هَاخَاشَعَةٌ ①

يَقُولُونَ إِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ①

إِذَا كُنَّا عَظَلَامًا مُخْرَجَةٌ ①

قَالُوا تِلْكَ إِذَا كَرَّهَ حَاسِرَةٌ ①

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ①

तब वे सहसा एक खुले मैदान में
होंगे । 15।

क्या तेरे पास मूसा का समाचार आया
है ? । 16।

जब उसके रब्ब ने उसे पवित्र धारी तुवा
में पुकारा । 17।

(कि) फिरौन की ओर जा । निःसन्देह
उसने उद्दण्डता की है । 18।

फिर (उससे) पूछ, क्या तेरे लिए
संभव है कि तू पवित्रता धारण
करे ? । 19।

और मैं तुझे तेरे रब्ब की ओर मार्ग-
दर्शित करूँ ताकि तू ढरे ? । 20।

फिर उस (मूसा) ने उसे एक बहुत बड़ा
चिह्न दिखाया । 21।

तो उसने झुठला दिया और अवज्ञा
की । 22।

फिर शीघ्रता पूर्वक पीठ फेर ली । 23।

फिर उसने (लोगों को) एकत्रित किया
और पुकारा । 24।

फिर कहा कि मैं ही तुम्हारा सर्वोच्च
रब्ब हूँ । 25।

अतः अल्लाह ने उसे परलोक और
इहलोक के एक शिक्षाप्रद दण्ड के द्वारा
पकड़ लिया । 26।

निःसन्देह इसमें उसके लिए जो डरता है
अवश्य एक बड़ी सीख है । 27।

(रुक् । ३)

क्या सृष्टि में तुम अधिक सशक्त हो
अथवा आकाश, जिसे उसने बनाया

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۝

هَلْ أَتَشْكِ حَدِيثَ مُوسَىٰ ۝

إِذْ نَادَهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمَقْدَسِ طَوْعَىٰ ۝

إِذْ هَبَطَ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَى آنَتْرَىٰ ۝

وَأَهْدِيَكَ إِلَى رَبِّكَ فَتَخْشِي ۝

فَأَرِيهُ الْأَيَّةَ الْكَبِيرَىٰ ۝

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

لَمْ أَذْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

فَحَسَرَ فَنَادَىٰ ۝

فَقَالَ آتَارَبُكُمُ الْأَغْلَىٰ ۝

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْأُخْرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعْبَةً لِمَنْ يَهْتَمُ ۝

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ حَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ طَبَّنَهَا ۝

है? 128।*

उसकी ऊँचाई को उसने बहुत ऊँचा
किया । फिर उसे सुव्यवस्थित
किया । 29।

और उसकी रात को ढाँप दिया और
उसके सुवह को उदित किया । 30।

और धरती को उसके बाद समतल बना
दिया । 31।

उससे उसने उसका पानी और उसमें
उगने वाला चारा निकाला । 32।***

और पर्वतों को उसने गहरा गाइ
दिया । 33।

तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के
लिए जीवनयापन के सामान के रूप
में । 34।****

अतः जब सबसे बड़ी विपत्ति
आएगी । 35।

उस दिन मनुष्य याद करेगा जो उसने
प्रयास किया था । 36।

और नरक को उसके लिए प्रकट
कर दिया जाएगा जो (उसे अभी
केवल कल्पना की दृष्टि से) देखता
है । 37।

अतः वह जिसने उद्दण्डता की । 38।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسُوِّهَا ﴿٦﴾

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ صُحْمَهَا ﴿٧﴾

وَأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحْمَهَا ﴿٨﴾

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعِمَهَا ﴿٩﴾

وَالْجَبَالَ أَرْسَهَا ﴿١٠﴾

مَئَاعَ الْكُمْ وَلَا نَعَامَكُمْ ﴿١١﴾

فَإِذَا جَاءَتِ الظَّاهِمَةُ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْأَنْسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿١٣﴾

وَبَرِزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَىٰ ﴿١٤﴾

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ﴿١٥﴾

* अल्लाह तआला ने आकाश की सृष्टि की, जो इतनी आश्चर्यजनक और महान शक्तियों से परिपूर्ण है कि उसके मुकाबले पर मनुष्य का आविष्कार महत्वहीन है । चाहे वह रॉकेट बना ले, जहाज अथवा पनडुब्बियाँ बना ले । इसी प्रकार मनुष्य का अपना जन्म ऐसी आश्चर्यजनक कारीगरी पर आधारित है कि उस पर जितना चिंतन किया जाए उतना ही अल्लाह तआला की कारीगरी और शक्तियों के अनन्त दृश्य दिखते चले जाते हैं ।

** अरबी शब्द मर्झा के इन अर्थों के लिए देखिए मुफरदात इमाम राशिद रहि ।

*** पर्वतों को दृढ़तापूर्वक धरती में गाइ देने का जो वर्णन है, उसका एक कारण यह है कि इन पर्वतों ही से मनुष्य और पशुओं के जीवनयापन के साधन जुड़े हैं ।

और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता
दी। 139।

तो निःसन्देह नरक ही (उसका)
ठिकाना होगा। 140।

और वह जो अपने रब्ब की महत्ता से डरा
और उसने अपने मन को बुरी कामना से
रोका। 141।

तो निःसन्देह स्वर्ग ही (उसका) ठिकाना
होगा। 142।

वे क़यामत की घड़ी के सम्बन्ध में तुझ से
पूछते हैं कि वह कब आयेगी ? 143।

उसके वर्णन से तू किस सोच
में है ? 144।

तेरे रब्ब ही की ओर उसकी पराकाष्ठा
है। 145।

तू केवल उसे चेतावनी दे सकता है जो
उससे डरता हो। 146।

जब वे उसे देखेंगे (तो विचार करेंगे
कि) मानो वे एक शाम अथवा उसकी
सुबह के अतिरिक्त (इस संसार में) नहीं
बसे। 147। (रुक् $\frac{2}{4}$)

وَأَنْرَى الْحَيَاةَ الدُّنْيَا^{٢٩}

فَإِنَّ الْجَهَنَّمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

وَأَمَانُ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفَسَ
عَنِ الْمَهْوِى^{٣٠}

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَلَهَا^{٣١}

فَيُنَزَّلَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا^{٣٢}

إِذْ رَتَّلَكَ مُتَّهِمَهَا^{٣٣}

إِنَّمَا أَنْتَ مُثْدِرٌ مَنْ يَخْشَهَا^{٣٤}

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبِسُوا

الْأَعْشِيَةَ أَوْ صُحْبَهَا^{٣٥}

80—सूरः अ ब स

यह सूरः आरम्भिक काल की मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 43 आयतें हैं।

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय के एक अस्वीकारी का वर्णन है जो बड़ा अहंकारी था और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न करने के लिए आया था। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खूब इच्छा होती थी कि किसी प्रकार कोई हिदायत पा जाए। इस कारण उसके अहंकारपूर्ण बर्ताव पर भी अत्यन्त शांत चित्त के साथ उसकी बातों को सुनते रहे। यहाँ तक कि एक नेत्रहीन मोमिन आपसे कोई प्रश्न करने के लिए उपस्थित हुआ तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस समय उसके हस्तक्षेप को पसंद नहीं किया और उससे अपनी अप्रसन्नता इस प्रकार प्रकट की कि वह व्यक्ति जो बहस कर रहा था वह तो देख सकता था परन्तु उस नेत्रहीन का दिल दुःखी नहीं हो सकता था, क्योंकि उसे कुछ मालूम नहीं हो पाया था। इस विवरण के पश्चात अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि जो व्यक्ति निष्ठा और उत्सुकता पूर्वक तेरे पास आए उससे कभी बेपरवाही न कर और जो अहंकार करने वाला जानकारी प्राप्त करने के लिए उपस्थित हो चाहे वह संसार का बड़ा व्यक्ति हो उसको किसी निर्धन परंतु निष्ठावान अनुयायी पर किसी प्रकार का महत्व न दे। इसके बाद कुरआन करीम की ऊँची शान का वर्णन आरम्भ हो जाता है कि यह पुस्तक किस प्रकार बह्याण्ड की प्रारम्भिक उत्पत्ति के रहस्यों पर से पर्दा उठाती है और इसके अंत और परकालीन दिवस में घटित होने वाली वृहद घटनाओं का भी वर्णन करती है।



سُورَةُ عَبْسٍ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَرُكْنُوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है ।।।

उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह मोड़
लिया ।।।

कि उसके पास एक नेत्रहीन आया ।।।

और तुझे क्या मालूम कि हो सकता था
वह बहुत पवित्र हो जाता ।।।

अथवा उपदेश पर विचार करता तो
उपदेश उसे लाभ पहुँचाता ।।।

वह जिसने बेपरवाही की ।।।

तू उसकी ओर ध्यान दे रहा है ।।।

हालाँकि यदि वह पवित्रता धारण न करे
तो तुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं ।।।*

और वह जो तेरे पास बहुत प्रयास करके
आया ।।।

और वह डर रहा था ।।।

पर तू उससे बेपरवाह रहा ।।।

सावधान ! निःसन्देह यह एक बड़ा
उपदेश है ।।।

अतः जो चाहे इसे याद रखे ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

عَبَّسٌ وَتَوَلَّ ۖ

أَنْجَاءُهُ الْأَعْمَى ۖ

وَمَا يَدْرِي كَلَّهُ يَرَى ۖ

أَوْ يَذَكُّرُ فَتْقَعَةُ الذِّكْرِ ۖ

أَمَّا مِنِ اسْتَغْنَى ۖ

فَأُنْتَ لَهُ تَصْدِي ۖ

وَمَا عَلِيْكَ أَلَا يَرَى ۖ

وَأَمَّا مِنْ جَاءَكَ يَسْعَى ۖ

وَهُوَ يَخْشِي ۖ

فَأُنْتَ عَنْهُ تَلَهِي ۖ

كَلَّا إِنَّهَا تَذَكَّرَةٌ ۖ

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ۖ

* इस अर्थ के लिए देखें “गरीबुल कुरआन”

सम्माननीय पृष्ठों में है । 14।

जो उच्च प्रतिष्ठा संपन्न, बहुत पवित्र
रखे गए हैं । 15।

लिखने वालों के हाथों में हैं । 16।

(जो) बहुत सम्माननीय (और) बड़े
नेक हैं । 17।

सर्वनाश हो मनुष्य का ! वह कैसा
कृतघ्न है । 18।

उसे उसने किस चीज से पैदा
किया ? । 19।

बीर्य से उसे पैदा किया, फिर उसे
सुव्यवस्थित किया । 20।

फिर उसके लिए रास्ते को आसान कर
दिया । 21।

फिर उसे मारा और क़ब्र में प्रविष्ट
किया । 22।*

फिर वह जब चाहेगा उसे उठाएगा । 23।

सावधान ! उसने उसे जो आदेश
दिया था, वह अभी तक पूरा नहीं
कर सका । 24।

अतः मनुष्य अपने भोजन की ओर
देखे । 25।

कि हमने ख़ूब पानी बरसाया । 26।

फिर हमने धरती को अच्छी प्रकार
फाड़ा । 27।

* आवश्यक नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति की एक क़ब्र बने । बहुत से लोग दूब जाते हैं अथवा जंगली
जानवरों की भेट चढ़ जाते हैं । अतः यहाँ क़ब्र से अभिप्राय उसके पुनरुत्थान से पूर्व का समय है
अर्थात प्रत्येक मनुष्य की आत्मा पर क़ब्र सदृश एक समय आएगा ।

فِي صَحْفٍ مُكَرَّمَةٍ

مَرْقُوْعَةٍ مُطَهَّرَةٍ

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ

كَرَامٍ بَرَّةٍ

قَتْلَ الْإِنْسَانَ مَا أَكْفَرَهُ

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ

مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ

شَرَّ السَّبِيلَ يَسِّرَهُ

شَرَّ أَمَاتَةً فَاقْبَرَهُ

شَرَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمْرَهُ

فَلِيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامَهُ

أَنَّا صَبَبَنَا الْمَاءَ صَبَّا

شَرَّ شَقَقَنَا الْأَرْضَ شَقَّا

फिर उसमें हमने अनाज उगाया । 128।

और अंगूर और सब्जियाँ । 129।

और जैतून और खजूर । 130।

और घने बाग । 131।

और भाँति-भाँति के फल और चारा । 132।

जो तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए लाभ का सामान हैं । 133।

अतः जब एक कड़कदार आवाज आएगी । 134।

जिस दिन मनुष्य अपने भाई से भी पलायन करेगा । 135।

और अपनी माता से भी और अपने पिता से भी । 136।

और अपनी पत्नी से भी और अपनी संतान से भी । 137।

उस दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति की एक ऐसी अवस्था होगी जो उसे (सबसे) निस्पृह कर देगी । 138।

कुछ चेहरे उस दिन उज्ज्वल होंगे । 139।

हँसते हुए, प्रसन्न चित्त । 140।

और कुछ चेहरे ऐसे होंगे कि उस दिन उन पर धूल पड़ी होगी । 141।

उन पर कालिमा छा रही होगी । 142।

यही वे कृतघ्न, दुराचारी लोग हैं । 143।

(रुकू ١)

فَأَنْبَتَنَا فِيهَا حَبَّاً

وَعَنْبَاؤْ قَضَبَا

وَرَيْشُونَا وَخُلَّا

وَحَدَّ آبِقَ غُلَبَا

وَفَاكِهَةَ وَأَبَّا

مَئَاعَ الْكَمْ وَلَا نَعَامَ كَمْ

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَةُ

يَوْمَ يَفِرُّ الْمُرْءُ مِنْ أَخِيهِ

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ

وَصَاحِبِهِ وَبَنِيهِ

لِكُلِّ اُمْرٍ مِنْهُمْ يَوْمٌ يُدْرِكُ شَانٌ يَعْنِيهِ

وَجُوهٌ يَوْمٌ يُدْرِكُ مُسْفِرَةً

صَاحِكَةً مُسَبِّرَةً

وَجُوهٌ يَوْمٌ يُدْرِكُ عَلَيْهَا غَبَرَةً

تَرْهُقُهَا قَتَرَةً

أُولَئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ

81 - सूरः अत-तक्वीर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं।

फिर एक बार कुरआन करीम संसार में घटित होने वाली वृहद घटनाओं की खबर देता है जो क्रयामत की घड़ी पर साक्षी ठहरेंगी और सूर्य को साक्षी ठहराया गया है जब उसे ढाँप दिया जाएगा। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश को उस युग के शत्रु मानव-जाति की भलाई के लिए नहीं पहुँचे देंगे और उनका धइयन्त्र और दुष्प्रचार बीच में बाधक बन जाएगा। और जब सहाबा रजि. के प्रकाश को भी शत्रु की ओर से मलिन कर दिया जाएगा और जिस प्रकार सूर्य के बाद सितारे किसी सीमा तक प्रकाश फैलाने का काम करते हैं, इसी प्रकार सहाबा का प्रकाश भी मनुष्य की दृष्टि से ओझल कर दिया जाएगा। यह वह युग होगा जबकि बड़े-बड़े पर्वत चलाए जाएँगे अर्थात् पर्वतों की भाँति बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ और हवाई जहाज़ भी यातायात करने और माल छुलाई के लिए व्यवहृत होंगे और ऊँटनियाँ उनके मुकाबले पर बेकार वस्तु की भाँति परित्यक्त कर दी जाएँगी। यह वह युग होगा जब अधिकता से चिड़ियाघर बनाए जाएँगे। स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में इसका कोई अस्तित्व नहीं था। वर्तमान युग के चिड़ियाघर भी इस बात की गवाही दे रहे हैं कि इन्हें बड़े-बड़े जानवर समुद्री जहाज़ों और हवाई जहाज़ों के द्वारा उनमें स्थानान्तरित किए जाते हैं। उस युग का मनुष्य इसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था।

फिर सम्भवतः: समुद्री युद्धों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कराया गया है, जब अधिकतापूर्वक समुद्रों में जहाज़ चलेंगे और इसके परिणाम स्वरूप दूर-दूर के लोग परस्पर मिलाए जाएँगे अर्थात् केवल जानवर ही इकट्ठे नहीं किए जाएँगे अपितु मनुष्य भी परस्पर मिलाए जाएँगे। वह दौर क्लानून का दौर होगा अर्थात् पूरे भू-मंडल पर क्लानून का राज होगा। यहाँ तक कि मनुष्य को यह भी अधिकार नहीं दिया जाएगा कि वह स्वयं अपनी संतान के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार कर सके। देखने में तो समग्र संसार पर क्लानून ही का राज है परन्तु अल्लाह तआला के क्लानून के इनकार के कारण संसार का क्लानून भी किसी देश से दंगा-उपद्रव को दूर नहीं कर सकता। यह दौर अधिक मात्रा में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार का दौर होगा और आकाश के रहस्यों की तलाश करने वाले मानों आकाश की खाल उधेंगे। उस दिन नरक को भी धधकाया जाएगा जो युद्ध रूपी नरक भी होगा और आकाशीय प्रकोप रूपी नरक भी होगा। इस के बावजूद जो लोग अल्लाह तआला की शिक्षा का पालन करेंगे और उस पर अङ्ग रहेंगे, उनके लिए स्वर्ग को निकट कर दिया जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञात हो जाएगा कि उसने अपने

लिए आगे क्या भेजा है ।

आयत सं. 16 और 17 में गुप्त रूप से कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वाली उन नौकाओं को साक्षी ठहराया गया है जो कार्यवाहियाँ करने के पश्चात अपने निश्चित अड्डों में जा छिपती हैं । इसको बार-बार इसलिए दोहराया गया है कि यहाँ अब आध्यात्मिक रूप से मनुष्य के मन पर आक्रमण करने वाले ऐसे शैतानी विचारों का वर्णन है जो आक्रमण करके फिर अदृश्य हो जाते हैं । और उस रात्रि को साक्षी ठहराया गया है कि जब वह अन्तिम स्वास ले रही होगी और प्रातोदय के लक्षण प्रकट हो जाएँगे और अन्ततः उस अंधेरी रात के बाद इस्लाम का सूर्योदय अवश्य होगा ।



سُورَةُ التَّكْوِينِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تَلَاقُونَ آيَةٌ وَ رُكْنُوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जब सूर्य को लपेट दिया जाएगा । 2।

إِذَا الشَّمْسُ كَوَرَتْ ۝

और जब नक्षत्र मलिन पड़ जाएंगे । 3।

وَإِذَا النَّجْوَمُ انْكَدَرَتْ ۝

जब पर्वत चलाए जाएंगे । 4।

وَإِذَا الْجِبَالُ سَيَرَتْ ۝

और जब दस माह की गाभिन
ऊँटनियाँ बिना किसी निगरानी के
छोड़ दी जाएंगी । 5।

وَإِذَا الْعِشَارُ عَظَلَتْ ۝

और जब जंगली जानवर इकट्ठे किए
जाएंगे । 6।

وَإِذَا الْوُحْشُ حَسِرَتْ ۝

और जब समुद्र फाड़े जाएंगे । 7।

وَإِذَا الْبَحَارُ سَجَرَتْ ۝

और जब जानें मिला दी जाएंगी । 8।

وَإِذَا النَّفُوسُ رَوَجَتْ ۝

और जब जीवित गाड़ दी जाने वाली
(अपने बारे में) पूछी जाएंगी । 9।

وَإِذَا الْمَوْءَدَةُ سَيَلَتْ ۝

(कि) किस पाप के बदले में (वह) वध
की गई है ? । 10।*

إِيَّٰ ذَٰبِقَتْ ۝

और जब ग्रन्थ प्रसारित किए जाएंगे । 11।

وَإِذَا الصَّحْفُ نُشِرتْ ۝

और जब आकाश की खाल उधेड़ी
जाएंगी । 12।

وَإِذَا السَّمَاءُ كَشَطَتْ ۝

* आयत सं. 9, 10 :- इन आयतों में भविष्य युगीन विकसित शासन तन्त्रों का वर्णन है जो अपने बच्चों
पर भी माता-पिता के प्रभुत्व को नकारेंगे । अपने विस्तृत अर्थों की दृष्टि से यह आयत इस शान के
साथ पूरी हुई है कि बच्चों का वध करना तो दूर, यदि यह प्रमाणित हो जाए कि माता-पिता अपने
बच्चों पर किसी प्रकार की ज्यादती करते हैं तो सरकारें उनके बच्चों को अपने संरक्षण में ले लेती हैं ।

और जब नरक को भड़काया
जाएगा ॥13॥

और जब स्वर्ग को निकट कर दिया
जाएगा ॥14॥

(तब) हर एक जान जो वह लाई होगी,
जान लेगी ॥15॥

अतः सावधान ! मैं क्सम खाता हूँ गुप्त
कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वालियों
की ॥16॥

अर्थात् नौकाओं की, जो छुपने के समय
(अथवा छुपने के स्थानों में) छुप जाती
हैं ॥17॥

और रात की, जब वह आएगी और पीठ
फेर जाएगी ॥18॥*

और सुबह की, जब वह साँस लेने
लगेगी ॥19॥

निःसन्देह यह एक (ऐसे) सम्माननीय
रसूल का कथन है ॥20॥

(जो) शक्ति वाला है । अर्श के अधिपति
के निकट उच्च पदस्थ है ॥21॥

बहुत अनुसरण करने योग्य (जो) वहाँ
(अर्थात् अर्श के अधिपति के समक्ष)
विश्वस्त भी है ॥22॥

और (निःसन्देह) तुम्हारा साथी पागल
नहीं ॥23॥

और वह अवश्य उसे उज्ज्वल क्षितिज
पर देख चुका है ॥24॥**

وَإِذَا الْجَهَنَّمُ سُعِرَتْ

وَإِذَا الْجَنَّةُ أَزْلَفَتْ

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَخْسَرَتْ

فَلَا أَقْسِمُ بِالْخَيْسِ

الْجَوَارِ الْكَنَّىْ

وَأَيْلِ إِذَا عَسَسَ

وَالصَّبْحِ إِذَا تَنَقَّسَ

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ

ذُنْقُوقٌ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكْيَنٌ

مَطْلَعٌ شَمَّ أَمْيَنٌ

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ

وَلَقْدَرَاهُ بِالْأَقْوَى الْمُبِينٍ

* अरबी में अस असल लैलु के अर्थ हैं : रात आई और पीठ फेर गई । मुकरदात इमाम राशिद रहि.

** आयत सं. 23, 24 : इससे तात्पर्य यह है कि हज़रत मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से बातें नहीं बनाई बल्कि बास्तव में उन्होंने जित्रील को एक उज्ज्वल क्षितिज पर देखा था ।

और वह अदृश्य के (वर्णन करने) में
कंजूस नहीं । 25।

और वह किसी धुतकारे हुए शैतान का
कथन नहीं । 26।

अतः तुम किधर जा रहे हो ? । 27।

वह तो समस्त लोकों के लिए एक बड़े
उपदेश के सिवा कुछ नहीं । 28।

उसके लिए, जो तुम में से (सन्मार्ग पर)
अडिग रहना चाहे । 29।

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते,
परन्तु वही जो समस्त लोकों का रब
अल्लाह चाहे । 30। (रुकू - $\frac{1}{6}$)

وَمَا هُوَ عَلَى النَّعِيْبِ بِضَنِيْنِ ۝

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَنٍ رَّجِيْمٍ ۝

فَأَيْنَ تَدْهِبُوْنَ ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَلَمِيْنَ ۝

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيْمَ ۝

وَمَا نَشَاءُوْنَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَلَمِيْنَ ۝

82- सूरः अल-इन्फितार

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ पर भी सितारों का वर्णन है परन्तु उनके मलिन पड़ने का नहीं बल्कि टूट जाने का वर्णन है। अर्थात् रात्रि के अंधकार में मनुष्य पूरी तरह सितारों के प्रकाश से भी बंचित कर दिया जाएगा। फिर समुद्र का वर्णन करते हुए यह बात दोहराई गई कि केवल समुद्रों में ही अधिकता पूर्वक जहाज़रानी नहीं होगी और उनके रहस्य को जानने के लिए उनको फाड़ा नहीं जाएगा बल्कि पुरातत्त्वविद् भू-भाग पर भी गड़ी हुई अतीत युगीन सभ्यताओं की कब्रों को उखोड़ेंगे। उस दिन मनुष्य को ज्ञात हो जाएगा कि इससे पहले लोग अपने आगे क्या भेजते रहे हैं और परवर्ती समय में आने वाले भी क्या आगे भेजेंगे।

इस सूरः के अन्त पर फिर परकालीन दिवस के वर्णन पर एक आयत में यह विषय वर्णन किया गया है कि संसार का वास्तविक स्वामित्व अस्थायी स्वामियों के पास नहीं है। बल्कि वास्तविक स्वामी तो अल्लाह तआला ही है जिसकी ओर परकालीन दिवस में प्रत्येक प्रकार का स्वामित्व लौट जाएगा और अन्य सभी को स्वामित्व विहीन कर दिया जाएगा।



سُورَةُ الْأَنْفَطَارِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ عَشْرُونَ آيَةً وَرُكْزَعُ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।
जब आकाश फट जाएगा । 12।

और जब सितारे झङ्ग जाएँगे । 13।
और जब समुद्र फाड़े जाएँगे । 14।
और जब कँवें उखेड़ी जाएँगी । 15।

हर एक जान को ज्ञात हो जाएगा कि
उसने क्या आगे भेजा है और क्या पीछे
छोड़ा है । 16।

हे मनुष्य ! तुझे अपने कृपाशील रब्ब
के बारे में किस बात ने धोखे में
डाला ? । 17।

वह जिसने तुझे पैदा किया । फिर तुझे
ठीक-ठाक बनाया । फिर तुझे
व्यवस्थित किया । 18।

जिस आकृति में भी चाहा तेरा सृजन
किया । 19।

सावधान ! तुम तो कर्मफल का ही
इनकार कर रहे हो । 20।

जबकि निश्चित रूप से तुम पर निरीक्षक
नियुक्त हैं । 21।

सम्माननीय लिखने वाले । 22।

वे जानते हैं जो तुम करते हो । 23।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا السَّمَاءُ انْقَطَرَتْ ②

وَإِذَا الْكَوَافِكُ اسْتَرَتْ ③

وَإِذَا الْبِحَارُ فَجَرَتْ ④

وَإِذَا الْقُبُوْرُ بَعْثَرَتْ ⑤

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَآخَرَتْ ⑥

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا عَرَّكَ بِرِبِّكَ
الْكَرِيمِ ⑦

الَّذِي خَلَقَكَ فَسُولَكَ فَعَدَلَكَ ⑧

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَبُّكَ ⑨

كَلَّا بْلَى تُكَذِّبُونَ بِالِّدِينِ ⑩

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحِفْظَنِ ⑪

كَرَامًا كَاتِبِينَ ⑫

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ⑬

निःसन्देह सदाचारी लोग अवश्य सुख-
समृद्धि में होंगे । 14।

और निःसन्देह दुराचारी अवश्य नरक में
होंगे । 15।

वे उसमें कर्मफल प्राप्ति के दिन प्रविष्ट
होंगे । 16।

और वे कदापि उससे बच न सकेंगे । 17।

और तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति
का दिन क्या है ? । 18।

फिर तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति
का दिन क्या है ? । 19।

जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान
के लिए किसी चीज़ का अधिकार नहीं
रखेगी । और उस दिन निर्णय करने का
अधिकार पूर्णरूपेण अल्लाह ही का
होगा । 20। (रुक् ।)

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

وَإِنَّ الْفُجَارَ لَفِي جَحْيٍ ۝

يَصْلُوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَافِلِينَ ۝

وَمَا أَذْرِكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝

لَمَّا مَا أَذْرِكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسُ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۝

وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

83- सूरः अल-मुतफ़िक़ीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 37 आयतें हैं।

इस सूरः में एक बार फिर से नाप-तौल की ओर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया है कि तुम तभी सफल हो सकते हो यदि न्याय पर डटे रहो। यह न हो कि लेने के मापदंड और हों और देने के मापदंड और। यहाँ वर्तमान काल के व्यापार का भी विश्लेषण कर दिया गया है। बड़ी-बड़ी धनवान जातियाँ जब भी निर्धन जातियों से सौदा करती हैं तो सर्वथा उस सौदे में निर्धन जातियों की हानि अवश्य होती है। अल्लाह ने कहा, क्या ये लोग सोचते नहीं कि एक बहुत बड़े हिसाब-किताब के दिन वे एकत्रित किए जाएँगे जिसमें उनके सांसारिक सौदों का भी हिसाब होगा। यह वह कर्मफल दिवस है जिसका वर्णन पिछली सूरः के अंत में हुआ है।

इसके बाद की आयतों में स्पष्ट रूप से कर्मफल दिवस का वर्णन करके चेतावनी दी गई है कि कर्मफल दिवस के अस्वीकारी पिछले युगों में भी विनष्ट कर दिए गए थे और अंत्युग में भी बुरे अंत को प्राप्त होंगे।

इसके बाद की आयतों में नरक और स्वर्ग निवासियों का तुलनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है और चेतावनी दी गई है कि वे लोग जिनसे ये संसार में उपहास करते हुए व्यंग करते और आँखों के इशारों से उनका अपमान करते हुए उन्हें काफिर कहते थे, उस दिन वे उन काफिरों पर हँसेंगे और उनसे पूछेंगे कि वताओं अब तुम्हारा क्या हाल है?



سُورَةُ الْمُطَفَّفِينَ مَكَيْهٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَ تَلَاثُونَ آيَةٍ وَ رَجُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

सर्वनाश है नाप-तौल में अन्याय करने
वालों के लिए । 12।

अर्थात् वे लोग जो कि लोगों से जब तौल
कर लेते हैं तो भरपूर (मापदंडों के साथ)
लेते हैं । 13।

और जब उनको नाप कर अथवा तौल
कर देते हैं तो कम देते हैं । 14।

क्या ये लोग विश्वास नहीं करते कि वे
अवश्य उठाए जाएँगे । 15।

एक बहुत बड़े दिन में (पेशी) के
लिए । 16।

जिस दिन लोग समस्त लोकों के रब्ब के
समक्ष खड़े होंगे । 17।

सावधान ! निःसन्देह दुराचारियों का
कर्मपत्र सिज्जीन में है । 18।

और तुझे क्या मालूम कि सिज्जीन क्या
है ? । 19।

एक लिखी हुई पुस्तक है । 10।

सर्वनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
लिए । 11।

जो कर्मफल दिवस को झुठलाते हैं । 12।

और उसे कोई नहीं झुठलाता परन्तु वही
जो सीमा से बढ़ा हुआ महापापी है । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَيْلٌ لِلْمُطَفَّفِينَ ①

الَّذِينَ إِذَا أَكْتَأَوْا عَلَى النَّاسِ
يَسْوَقُونَ ②

وَإِذَا كَانُوا هُمْ أَوْ وَرَأْتُهُمْ
يَخْسِرُونَ ③

أَلَا يَظْنُنَ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْغُوثُونَ ④

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ⑤

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ⑥

كَلَّا إِنَّ كِتْبَ الْقُجَارِ لَفِي سِجْنٍ ⑦

وَمَا أَذْرِكَ مَا سِجِّنُ ⑧

كِتْبٌ مَرْقُومٌ ⑨

وَيْلٌ يَوْمٌ مِنِ لِلْمَكَدِّيِّينَ ⑩

الَّذِينَ يَكْذِبُونَ يَوْمَ الدِّينِ ⑪

وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدِّ أَشِيمٌ ⑫

जब उस के समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, वह कहता है (ये) पहले लोगों की कहानियाँ हैं । 14।

सावधान ! वास्तविकता यह है कि उन कमाइयों ने उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया है जिन्हें वे अर्जित किया करते थे । 15।

सावधान ! निःसन्देह उस दिन वे अपने रब्ब से पर्दे में कर दिए जाएँगे (अर्थात् उसके दर्शन से वंचित कर दिए जाएँगे) । 16।

फिर अवश्य वे नरक में प्रविष्ट होंगे । 17।

फिर कहा जाएगा कि यही वह है जिसको तुम झुठलाया करते थे । 18।

सावधान ! निःसन्देह नेक लोगों का कर्मपत्र इल्लिघीन में अवश्य है । 19।

और तुझे क्या मालूम कि इल्लिघीन क्या है ? । 20।

एक लिखी हुई पुस्तक है । 21।

सान्निध्य प्राप्त लोग उसे (अपनी आँखों से) देख लेंगे । 22।

निःसन्देह नेक लोग सुख-समृद्धि में अवश्य होंगे । 23।

सुसज्जित पलंगों पर बैठे अवलोकन कर रहे होंगे । 24।

तू उनके चेहरों में सुख-समृद्धि की ताज़गी पहचान लेगा । 25।

إِذَا شَرِلَ عَلَيْهِ أَيْتَنَا قَالَ أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ⑩

كَلَّا لَأَبْلِ ۝ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا
يُكْسِبُونَ ⑪

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ
لَمْ يَحْمُجُوْبُونَ ⑫

لَمَّا إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَهَنَّمُ ⑬

لَمَّا يُقَالَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَكْذِبُونَ ⑭

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلْيَيْنَ ⑮

وَمَا آذِرْكَ مَا عِلْيَيْنَ ⑯

كِتَابٌ مَرْقُومٌ ⑰

يَشَهِدُهُ الْمَقْرَبُونَ ⑱

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيْمٍ ⑲

عَلَى الْأَرَآءِ يَنْظَرُونَ ⑳

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَصْرَةَ النَّعِيْمٍ ㉑

उन्हें एक मुहरबंद शराब में से पिलाया
जाएगा । 126।

उसकी मुहर कस्तूरी होगी । अतः इस
(विषय) में चाहिए कि मुकाबले की
इच्छा रखने वाले एक दूसरे से बढ़ कर
इच्छा करें । 127।

उसका गुण तस्नीम (मिश्रित) होगा । 128।

(जो) एक ऐसा स्रोत है, जिससे
सान्निध्य प्राप्त लोग पिएँगे । 129।

निःसन्देह जिन्होंने अपराध किए वे उन
लोगों से जो ईमान लाए, उपहास किया
करते थे । 130।

और जब उनके पास से गुज़रते थे तो
परस्पर इशारे करते थे । 131।

और जब अपने घर वालों की ओर लौटते
थे, व्यर्थ बातें बनाते हुए लौटते थे । 132।

और जब कभी उन्हें देखते थे कहते
थे, निःसन्देह यही हैं जो पक्के
पथभ्रष्ट हैं । 133।

हालाँकि वे उन पर निरीक्षक बना कर
नहीं भेजे गए थे । 134।

अतः वे लोग जो ईमान लाए आज
काफ़िरों पर हँसेंगे । 135।

सुसज्जित पलंगों पर विराजित होकर
अवलोकन कर रहे होंगे । 136।

क्या काफ़िरों को उसका पूरा
प्रतिफल दे दिया गया है जो वे किया
करते थे ? । 137। (रुक् $\frac{1}{8}$)

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحْيُقٍ مَّحْوُمٍ ۝

خَتَمَهُ مِسْكٌ ۝ وَ فِي ذَلِكَ فَلِيَتَّا فَيْسٌ
الْمُسْتَأْفِسُونَ ۝

وَ مِنَاجَةٌ مِنْ تَسْرِيمٍ ۝

عَيْنًا يَسْرَبُ بِهَا الْمُقْرَبُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الظَّالِمِينَ
أَمْتَوْا يَصْحَّحُونَ ۝

وَ إِذَا مَرُوا بِهِمْ يَتَعَامِزُونَ ۝

وَ إِذَا نَقْلَبُوا إِلَى أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا
فَكِيمِينَ ۝

وَ إِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هُوَ لَا
لَصَائِرُونَ ۝

وَمَا أَرْسَلُوا عَلَيْهِمْ حُفَّاظِينَ ۝

فَإِنِّيَوْمَ الَّذِينَ أَمْتَوْا مِنَ الْكُفَّارِ
يَصْحَّحُونَ ۝

عَلَى الْأَرَآءِ إِلَكِ يُشَطِّرُونَ ۝

هَلْ نُوبِ الْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

84- सूरः अल-इन्शिकाकः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 26 आयतें हैं।

पिछली सूरतों की वर्णन शैली को जारी रखते हुए एक बार फिर संसार में प्रकट होने वाले महान परिवर्तनों को परलोक के लिए साक्षी ठहराया गया है। एक बार फिर आकाश के फट जाने का वर्णन है जिसका एक अर्थ यह है कि भाँति-भाँति की विपत्तियाँ आएँगी।

इसके बाद धरती को फैला दिए जाने का वर्णन है। वैसे तो इस संसार में धरती फैलाई हुई दिखाई नहीं देती परन्तु कुरआन के समय में मनुष्य की जानकारी में केवल आधी धरती थी और आधी धरती अमेरिका इत्यादि की खोज से व्यवहारिक दृष्टि से फैला दी गई। और यही वह दौर है जिसमें धरती सबसे अधिक अपने दबे हुए रहस्यों को बाहर निकाल देगी, मानो खाली हो जाएँगी। विज्ञान का यह नवीन विकास-काल अमेरिका की खोज से ही आरम्भ होता है।

इसके बाद यह भविष्यवाणी है कि जब दिन अंधकार में परिवर्तित हो रहा होगा और फिर रात छा जाएँगी तब एक बार फिर इस्लाम का चन्द्रमा उदय होगा, उस दिन तुम क्रमशः अपनी उन्नति के अंतिम पड़ाव तय कर रहे होगे।



سُورَةُ الْإِنْسَاقِ مُكَيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَتُّ وَ عِشْرُونَ آيَةً وَ زُكْرُونَ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

जब आकाश फट जाएगा । 21।

और अपने रब्ब की ओर कान धरेगा और
यही उस पर अनिवार्य किया गया है । 3।
और जब धरती विस्तृत कर दी
जाएगी । 4।

और जो कुछ उसमें है (उसे वह) निकाल
फेंकेगी और खाली हो जाएगी । 5।

और अपने रब्ब की ओर कान धरेगी ।
और यही उस पर अनिवार्य किया गया
है । 6।

हे मनुष्य ! तुझे अवश्य अपने रब्ब की
ओर कठोर परिश्रम (करके जाने) वाला
बनना होगा । अतः (अवश्यमेव) तू
उसे आमने-सामने मिलने वाला है । 7।

अतः वह जिसे उसका कर्मपत्र उसके
दाहिने हाथ में दिया जाएगा । 8।

तो निःसन्देह उसका सरल हिसाब लिया
जाएगा । 9।

और वह अपने घरवालों की ओर
प्रसन्नचित होकर लौटेगा । 10।

और वह जिसे उसके गुप्त रूप से किए
हुए कर्मों का हिसाब दिया जाएगा । 11।

वह अवश्य (अपने लिए) विनाश की
दुआ माँगेगा । 12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ②

وَأَذَنَتْ لِرِبَّهَا وَمُخْتَثَتْ ③

وَإِذَا الْأَرْضُ مَدَّتْ ④

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ⑤

وَأَذَنَتْ لِرِبَّهَا وَمُخْتَثَتْ ⑥

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادْحُ إِلَى
رِبِّكَ كَذُحًا فَمَلِقْيُهُ ⑦

فَأَمَامَنْ أُوْتِيَ كِتْبَهُ بِيَمِينِهِ ⑧

فَسُوفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يُسِيرًا ⑨

وَيَنْقِلِبُ إِلَى أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑩

وَأَمَامَنْ أُوْتِيَ كِتْبَهُ وَرَاءَ ظَهِيرَهُ ⑪

فَسُوفَ يَدْعُوا ثَبُورًا ⑫

और भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा ॥13।

निःसन्देह वह अपने घरवालों में प्रसन्न था ॥14।

निःसन्देह उसने यह सोच रखा था कि वह कदापि उठाया नहीं जाएगा ॥15।*

क्यों नहीं ! निःसन्देह उसका रब्ब उस पर सदा गहन दृष्टि रखने वाला था ॥16।

अतः सावधान ! मैं संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता हूँ ॥17।

और रात को और उसे जो वह समेटती है ॥18।

और चन्द्रमा को जब वह प्रकाश से परिपूर्ण हो जाए ॥19।

निःसन्देह तुम अवश्य क्रमशः उन्नति करोगे ॥20।**

अतः उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते ? ॥21।

और जब उन के समक्ष कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदः नहीं करते ॥22।

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया, झुठला देते हैं ॥23।

وَيَصْلِي سَعِيرًا ﴿١﴾

إِنَّهُ كَانَ فِي آهِلِهِ مَسْرُوفًا ﴿٢﴾

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحْوَرُ ﴿٣﴾

بَلَى إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿٤﴾

فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿٥﴾

وَأَئِيلُ وَمَا وَسَقَ ﴿٦﴾

وَأَقْمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿٧﴾

لَتَرْكَبِنَ طَبَقًا عَنْ طَبَقِ ﴿٨﴾

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩﴾

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ

لَا يَسْجُدُونَ ﴿١٠﴾

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ﴿١١﴾

* इस प्रकार के अर्थ के लिए देखें मुफरदात इमाम रागिब रहि.

** आयत सं. 17-20 : अरबी शब्द फ़्ला से यहाँ यह अभिप्राय नहीं है कि मैं क्रसम नहीं खाता, बल्कि इससे तत्कालीन प्रचलित विचारधारा को नकारना है । अल्लाह तआला संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता है और फिर उसके पश्चात जब रात गहरी होने लगे उस समय भी अल्लाह तआला मनुष्य को प्रकाश से पूर्णतया वंचित नहीं करता बल्कि चन्द्रमा को सूर्य के प्रतिविवित करने के लिए भेज देता है । और चन्द्रमा भी एक साथ पूरे प्रकाश के साथ नहीं चमकता अर्थात् एक बार चौदहवीं का चाँद नहीं बन जाता बल्कि धरि-धरि उन्नति करता है । इसी प्रकार चौदहवीं शताब्दी में आने वाला मुज़हिद (धर्म-सुधारक) भी तेरह शताब्दियों के सुधारकों के पश्चात क्रमशः उन्नति करते हुए पूर्ण चन्द्रमा की भाँति प्रकट होगा ।

और अल्लाह सबसे अधिक जानता है जो वे इकट्ठा कर रहे हैं। 124।

अतः उन्हें पीड़जनक अज्ञाब का शुभ-समाचार देदे। 125।

सिवाय उन लोगों के, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए, उनके लिए एक अनंत प्रतिफल है। 126। (रुक् १७)

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَوْعَدُونَ^{١٢٤}

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ^{١٢٥}

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ

لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ^{١٢٦}

85—सूरः अल—बुर्खज

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं।

इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध है कि उसमें नए सिरे से इस्लाम के चन्द्रमा के उदय होने का वर्णन था। यह घटना कब घटेगी और इसका उद्देश्य क्या होगा? याद रहे कि आकाश के बारह नक्षत्र हैं अर्थात् बारह सौ वर्षों के पश्चात् इस भविष्यवाणी के प्रकट होने का समय आएगा और जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य की गवाही देता है इसी प्रकार एक आने वाला शाहिद (गवाही देने वाला) अपने महान मशहूद (जिसकी गवाही दी जाय) अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही देगा और इस गवाही में उसके सच्चे अनुयायी भी सम्मिलित होंगे। उनका इसके अतिरिक्त कोई अपराध नहीं होगा कि वे आने वाले पर ईमान ले आए परन्तु इसके बावजूद उनको घोर अत्याचारपूर्ण दंड दिये जायेंगे, यहाँ तक कि उन्हें अग्नि में जलाया जाएगा और देखने वाले आराम से उसका तमाशा देखेंगे। बिल्कुल इसी प्रकार की घटनाएँ पाकिस्तान में निष्ठावान अहमदियों के विरुद्ध लगातार घटित हो रही हैं।

इस सूरः के अन्त पर इस बात की कड़ी चेतावनी दी गई है कि पहली जातियों ने भी जब इस प्रकार के अत्याचार किए थे तो उन्हें उनके अत्याचारों ने घेर लिया था। अतः उस कुरआन की क़सम है जो सुरक्षित पट्टिका में है कि तुम भी अपने अपराधों का दंड अवश्य पाओगे।



سُورَةُ الْبَرْوَجِ مَكَّيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَ عَشْرُونَ آيَةً وَ رُكْنُعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

कसम है नक्षत्रों वाले आकाश की । 2।

और प्रतिश्रुत दिवस की । 3।

और एक गवाही देने वाले की और
उसकी जिसकी गवाही दी जाएगी । 4।

खाइयों वाले विनष्ट कर दिए जाएँगे । 5।

अर्थात् उस अग्नि वाले जो बहुत ईंधन
वाली है । 6।

जब वे उसके गिर्द बैठे होंगे । 7।

और वे उस पर साक्षी होंगे जो वे मोमिनों
से करेंगे । 8।*

और वे उनसे केवल इसलिए द्वेष रखते थे
कि वे पूर्ण प्रभुत्व वाले, स्तुति योग्य
अल्लाह पर ईमान ले आए । 9।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالسَّمَاءُ ذَاتُ الْبَرْوَجِ ②

وَالنَّيْمَ الْمَوْعُودِ ③

وَشَاهِدُوْ مَشْهُودِ ④

قُتِلَ أَصْحَابُ الْأَخْدُودِ ⑤

الثَّارِذَاتِ الْوَقُودِ ⑥

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قَعُودٌ ⑦

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَعْمَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ ⑧

شَهْوَدٌ ⑨

وَمَا أَنَقْمَوْا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ ⑩

الْعَزِيزُ الْحَمِيدُ ⑪

* आयत सं. 5 से 8 : इन आयतों में उन लोगों के विनाश की भविष्यवाणी की गई है जिन्होंने खाइ में आग जलाई थी और उसमें मोमिनों को फेंक कर बैठे उनका तमाशा देखते थे । इन आयतों में यह भविष्यवाणी निहित है कि यह घटना आगे आने वाले समय में भी घटेगी और वह समय मसीह मौऊद का युग होगा । अतः निश्चित रूप से यह भविष्यवाणी उन निर्दोष अहमदियों के ऊपर पूरी हुई, जिनको घरों में जिंदा जलाने का प्रयास किया गया । अरबी शब्द कुऊद बताता है कि लोग बैठे तमाशा देखते रहे और अत्याचारियों के विशद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई । अतः यह महान भविष्यवाणी इस रंग में कई बार पूरी हो चुकी है कि पुलिस की देख-रेख में दंगाइयों ने निर्दोष अहमदियों को जिंदा जलाने का प्रयास किया और कई बार सफल हो गए और कई बार असफल भी रहे ।

जिसका आकाशों और धरती में
शासन है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु
पर साक्षी है । 10।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने मोमिन पुरुषों
और मोमिन स्त्रियों को परीक्षा में डाला
फिर प्रायश्चित नहीं किया तो उनके
लिए नरक का अज्ञाब है और उनके लिए
अग्नि का अज्ञाब (निश्चित) है । 11।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और
नेक कर्म किए उनके लिए ऐसे स्वर्ग हैं
जिनके नीचे नहरें बहती हैं । यह बहुत
बड़ी सफलता है । 12।

निःसन्देह तेरे रब्ब की पकड़ बहुत कठोर
है । 13।

निःसन्देह वही आरम्भ करता है और
दोहराता भी है । 14।

जब कि वह बहुत क्षमा करने वाला और
बहुत प्रेम करने वाला है । 15।

अर्श का स्वामी और परम पूजनीय
है । 16।

जो चाहता है उसे अवश्य करके रहता
है । 17।

क्या तुझ तक सेनाओं का समाचार
पहुँचा है ? । 18।

फिर औन और समूद का । 19।

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे
झुठलाने में ही (लगे) रहते हैं । 20।

जबकि अल्लाह उनके आगे-पीछे से घेरा
डाले हुए है । 21।

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
لَئِنْ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلْحَنِيقٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلَاةَ لَهُمْ
جَنَاحٌ تَجْرِي فِيهِ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

إِنَّهُ مُهَبِّدٌ وَيَعِيدُ ۝

وَهُوَ الْعَفُورُ الْوَدُودُ ۝

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

فَعَالٌ لِّمَا يَرِيدُ ۝

هَلْ أَتَكَ حَدِيثُ الْجَنَوِيدُ ۝

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُّحِيطٌ ۝

बल्कि वह तो एक गौरवशाली
कुरआन है। 122।

और एक सुरक्षित पट्टिका में है। 123। ۱۴۵
(रुक् ۱/۱۰)

بِلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿۱۴۵﴾

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿۱۴۶﴾

86- सूरः अत-तारिकः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 18 आयतें हैं।

इसमें सूरः अल्-बुर्ज के विषयवस्तु को ही आगे बढ़ाया गया है और यह भविष्यवाणी की गई है कि उस अंधेरी रात में अल्लाह तआला अपने आकाशीय प्रहरियों को नियुक्त करेगा जो उन पीड़ित भक्तों की सहायता करेंगे। मनुष्य इस बात पर क्यों विचार नहीं करता कि वह एक उछलने वाला और डींगे मारने वाला जीव ही तो है। अतः अन्ततोगत्वा वह अवश्य अपने दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप पकड़ा जाएगा और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के इस दौर के अनुयायिओं को यह आदेश है कि ये लोग कुछ देर और शरारतें कर लें, अन्ततः ये पकड़े जाएँगे। अतः प्रतीक्षा करो और इनको कुछ ढील दे दो।



سُورَةُ الطَّارِقِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِي عَشَرَةِ آيَةٍ وَ رُكْونٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क़सम है आकाश की और रात को प्रकट
होने वाले की । 2।*

और तुझे क्या मालूम कि रात को प्रकट
होने वाला क्या है ? । 3।

बहुत चमकता हुआ नक्षत्र । 4।

कोई (एक) प्राणी भी नहीं जिस पर
कोई प्रहरी न हो । 5।

अतः मनुष्य ध्यान दे कि उसे किस चीज़
से पैदा किया गया । 6।

उछलने वाले पानी से पैदा किया
गया । 7।

जो पीठ और पसलियों के बीच से
निकलता है । 8।

निःसन्देह वह उसके वापस ले जाने पर
अवश्य समर्थ है । 9।

जिस दिन गुप्त बातें प्रकट की
जाएँगी । 10।

अतः न तो उसे कोई शक्ति प्राप्त
होगी और न ही कोई सहायक
होगा । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالسَّمَاءُ وَالظَّارِقُ ②

وَمَا أَذْرَكَ مَا الظَّارِقُ ③

النَّجْمُ الظَّاقِبُ ④

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلِمَهَا حَافِظٌ ⑤

فَلَيَنْظُرِ الْأَنْسَانُ مِمَّا خُلِقَ ⑥

خُلِقَ مِنْ مَا إِذَا فِي ⑦

يُخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصَّلْبِ ⑧

وَالثَّرَابِ ⑨

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ⑩

يَوْمَ شُبَّلَ السَّرَّايرُ ⑪

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٌ ⑫

* इस सूरः के आरम्भ में ही रात को आने वाले चिह्न की गवाही दी गई है । इससे आगे की आयतों से
यह स्पष्ट होता है कि वह चमकता हुआ नक्षत्र होगा । चमकते हुए नक्षत्र से यही प्रतीत होता है कि
आग बरसाने वाली लपटें आसमान से बरसेंगी ।

क्रसम है मूसलाधार वर्षा युक्त आकाश
की ॥12॥*

وَالسَّمَاءُ ذَاتٌ الرَّجْعِ^⑩

और हरियाली उगाने वाली धरती
की ॥13॥**

وَالْأَرْضُ ذَاتٌ الصَّدْعِ^{١١}

निःसन्देह वह एक निर्णायक वाणी
है ॥14॥

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ^{١٢}

और वह कदापि कोई अशिष्ट वाणी नहीं
है ॥15॥

وَمَا هُوَ بِالنَّهْرِ^{١٣}

निःसन्देह वे कोई चाल चलेंगे ॥16॥

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا^{١٤}

और मैं भी एक चाल चलूँगा ॥17॥

وَأَكِيدَ كَيْدًا^{١٥}

अतः काफिरों को ढील दे । उन्हें एक ^٦ समय तक ढील दे दे ॥18॥ (रुक् ।।)

* अरबी शब्द अर्रज्ज़ का अर्थ मूसलाधार वर्षा है । (अल मुन्जिद, अल अकरब)

** अरबी शब्द अस सदू़ का अर्थ धरती की हरियाली है । (अल अकरब)

87- सूरः अल-आ'ला

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं।

इस सूरः के आरम्भ में ही यह शुभ-समाचार दे दिया गया है कि अल्लाह तआला का नाम और अल्लाह वालों का नाम ही सर्वोपरि सिद्ध होगा। अतः यह आदेश दिया गया है कि उपदेश करते चले जाओ। यद्यपि उपदेश आरम्भ में असफल होता दिखाई देगा परन्तु अन्ततोगत्वा लाभजनक सिद्ध होगा। फिर मनुष्य को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम उपदेश से लाभहीन इस लिए होते हो कि तुम ने संसार के जीवन को परलोक के जीवन पर श्रेष्ठता दे दी है हालाँकि परलोक ही भलाई और चिरस्थायी घर है।



سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُونَ آيَةً وَ رُكْنَوْعَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اللّٰہ کے نام کے ساتھ جو انہن کڑپا
کرنے والा، بین مانگے دئے والा (اور)
بار-بار دیا کرنے والा ہے ॥۱॥

اپنے مہامہیم رب کے نام کا پ्रत्येक
اوغرุण سے پवیٹ ہونا ورنن کر ॥۲॥

جیسے پیدا کیا فیر ٹیک-ٹاک
کیا ॥۳॥

اور جیسے (भین-�ین تत्वोں کو)
میشریت کیا، فیر ہدایت دی ॥۴॥

اور جیسے جیون رکھا کے لیے
ہریوالی ٹغاہی ॥۵॥*

فیر اسے (انہادر کرنے والوں) کے لیے
کالا کوڈا-کرکٹ بننا دیا ॥۶॥

ہم اوہشی تੁझے پढنا سیخائے گے فیر تو
نہیں بھولے ॥۷॥

سیوا یہ اسکے جو اللّٰہ چاہے ।
نی: سندھ وہ پ्रکاشی کو جانتا ہے
اور اسے بھی جو اپرکاشی ہے ॥۸॥**

اور ہم تੁझے سرلتا پ्रداں کرے ॥۹॥

ات: عپدھ کر । عپدھ اوہشی لابھ
دےتا ہے ॥۱۰॥

جو درتاتا ہے، وہ اوہشی عپدھ گراہن
کرے ॥۱۱॥

* اس پ्रکار کے ارث کے لیے دیخی�: مुفرداں اسلام راجیب رہیں ।

** آیات سं. 7, 8 یہاں جیسے بھولنے کا ورنن ہے اس سے یہ تاپری نہیں کہ ہجرت موسیٰ مسلمان ساللہ علیہ
الصلوٰۃ والسلام کو راہیں بھول جاتے ہے । وسٹوٰ: اس سے اभیپریا یہ بھول-چوک ہے جو نماز میں
کوئی آن پاٹ کرتے ہوئے کई بار ہو جاتی ہے । جیسے لیے یہ آدھے ہے کہ یادی کوئی شबد انہن میں
میں بھول پڑا جائے تو پیछے چھڑے ہوئے نمازی اسے ٹیک کر دے ।

سَبِّحْ اسْمَرَبِّكَ الْأَعْلَىٰ ۖ

الَّذِي خَلَقَ فَسُوْيِ ۖ

وَالَّذِي قَدَرَ فَهْدَىٰ ۖ

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمُرْغَىٰ ۖ

فَجَعَلَهُ غَنَاءً أَخْوَىٰ ۖ

سَقَرِّكَ فَلَاتَّسَىٰ ۖ

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهَنَّمَ

وَمَا يَخْفِي ۖ

وَنِسِيرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ۖ

فَذَكِّرْ إِنْ تَقْعَدِ الْذِكْرِ ۖ

سَيِّدُكُمْ مَنْ يَخْتَىٰ ۖ

और बड़ा भाग्यहीन (व्यक्ति) उससे
बचेगा ॥12॥

जो सबसे बड़ी अग्नि में प्रविष्ट
होगा ॥13॥

फिर वह उसमें न मरेगा और न
जिएगा ॥14॥

जो पवित्र बना निःसन्देह वह सफल हो
गया ॥15॥

और अपने रब्ब के नाम का स्मरण किया
और नमाज़ पढ़ी ॥16॥

वास्तव में तुम तो सांसारिक जीवन को
श्रेष्ठता देते हो ॥17॥

हालाँकि परलोक उत्तम और चिरस्थायी
है ॥18॥

निःसन्देह यह पूर्ववर्ती ग्रन्थों में भी
है ॥19॥

इब्राहीम और मूसा के ग्रन्थों में ॥20॥*

﴿٦﴾

(रुपू. $\frac{1}{2}$)

وَيَتَجَبَّهَا الْأَشْقَى ۖ

الَّذِي يَصْلِي النَّارَ الْكُبْرَى ۖ

لَمْ لَا يَمُوتْ قِيمًا وَلَا يَخِيَّ ۖ

فَدَأْفَلَحَ مَنْ شَرِّي ۖ

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۖ

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۖ

إِنَّ هَذَا فِي الصُّحْفِ الْأَوَّلِي ۖ

صُحْفِ إِبْرِهِيمَ وَمُوسَى ۖ

* आयत सं. 19-20 : यहाँ कुरआन करीम के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसने पिछले ग्रन्थों की प्रत्येक उत्तम शिक्षा को अपने अन्दर एकत्रित कर लिया है। इब्राहीम अलै. के ग्रन्थ में से उत्तम शिक्षा इसमें मौजूद है और मूसा के ग्रन्थ में से भी।

88- सूरः अल-गाशियः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 27 आयतें हैं।

इस सूरः में लगातार आने वाले ऐसे अज्ञाबों का वर्णन है जो ढाँप देंगे और उस दिन कई चेहरे बहुत भयभीत होंगे और कठिन परिश्रम में पड़ेंगे और थक कर चूर हो जाएंगे। वे भड़कने वाली अग्नि में प्रविष्ट होंगे और उनका भोजन थूहर के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा जो न उन्हें हृष्ट-पुष्ट कर सकेगा न उनकी भूख मिटा सकेगा। यह एक आलंकारिक वर्णन है जो थूहर पर लगने वाले फल के प्रभाव की ओर संकेत कर रहा है जो दिखने में मीठे लगते हैं परंतु खाने वालों को अंततोगत्वा बहुत कष्ट पहुँचाते हैं।

इसके बाद अवशिष्ट सूरः परकालीन जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर के अन्त पर उस हिसाब का उत्तेख करती है जिसके लिए मनुष्य को अवश्य अल्लाह तआला के समक्ष पेश होना होगा।

इस सूरः की अन्तिम आयत पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का अनुसरण करते हुए सामुहिक नमाज में सम्मिलित सब नमाजी कुछ ऊँची आवाज़ में यह दुआ करते हैं कि “हे अल्लाह ! हमसे आसान हिसाब लेना ।”



سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَعَشْرُونَ آيَةً وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

क्या तुझे मतवाला कर देने वाली (घड़ी)
का समाचार पहुँचा है ? । । ।

कुछ चेहरे उस दिन अत्यन्त भयभीत
होंगे । । । *

(अर्थात् इससे पूर्व संसार की तलाश में)
कठोर परिश्रम करने वाले (और) थक
कर चूर हो जाने वाले । । ।

वह धधकती हुई अग्नि में प्रविष्ट
होंगे । । ।

एक खौलते हुए स्रोत से उन्हें पिलाया
जाएगा । । ।

उनके लिए थूहर से बने भोजन के
अतिरिक्त कुछ नहीं होगा । । ।

न वह हष्ट-पुष्ट करेगा और न भूख से
मुक्ति दिलाएगा । । ।

कुछ चेहरे उस दिन तरो-ताजा होंगे । । ।

अपने प्रयासों पर बहुत प्रसन्न । । ।

एक अत्युच्च स्वर्ग में । । ।

तू उसमें कोई अशिष्ट बात नहीं
सुनेगा । । ।

उसमें एक बहता हुआ स्रोत होगा । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

هَلْ أَتَشَكَّ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ②

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَائِشَةٌ ③

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ④

تَضْلِيلٌ نَّارًا حَامِيَةٌ ⑤

تَسْقِي مِنْ عَيْنٍ ازْيَةٌ ⑥

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ⑦

لَا يُشْمِنُ وَلَا يُعْنِي مِنْ جُوْعٍ ⑧

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ⑨

لِسْعِيهَا رَاضِيَةٌ ⑩

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ⑪

لَا تَسْمَعُ قِهَا لَا غِيَةٌ ⑫

قِهَا عَيْنُ جَارِيَةٌ ⑬

* अरबी शब्द खाशियतुन के इन अर्थों के लिए देखिए : ताज-उल-उरूस ।

उसमें ऊँचे बिछाए हुए पलंग होंगे ॥14॥

और (ढंग से) चुने हुए प्याले ॥15॥

और पंक्तिबद्ध लगाए हुए तकिए ॥16॥

और बिछाए हुए आसन ॥17॥

क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि कैसे
पैदा किए गए ? ॥18॥

और आकाश की ओर, कि उसे कैसे
ऊँचाई दी गई ? ॥19॥

और पर्वतों की ओर कि वे कैसे दृढ़ता
पूर्वक गाड़े गए ? ॥20॥

और धरती की ओर कि वह कैसे समतल
बनाई गई ? ॥21॥

अतः बहुत अधिक उपदेश कर । तू
केवल एक बार-बार उपदेश करने वाला
है ॥22॥

तू उन पर दारोगा नहीं ॥23॥

हाँ वह जो पीठ फेर जाए और इनकार
कर दे ॥24॥

तो उसे अल्लाह सबसे बड़ा अज्ञाब
देगा ॥25॥

निःसन्देह हमारी ओर ही उनका लौटना
है ॥26॥

निःसन्देह फिर हम पर ही उनका हिसाब
है ॥27॥ (रुकू ١/٣)

فِيهَا سُرُّ مَرْقُوعَةٌ ۝

وَأَكْوَابُ مَوْضُوعَةٌ ۝

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝

وَزَرَائِيْ مَبْتُوَةٌ ۝

أَفَلَا يُشَرِّفُنَّ إِلَى الْأَيْلِ
كَيْفَ خُلِقُتُ ۝

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتُ ۝

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتُ ۝

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتُ ۝

فَذِكْرٌ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكَّرٌ ۝

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُضِيِّطٍ ۝

إِلَّا مَنْ تَوَلَّ وَكَفَرَ ۝

فَيَعِذُّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابُ الْأَكْبَرُ ۝

إِنَّ رَبِّنَا إِلَيْهِمْ ۝

لَمَّا إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

89— सूरः अल-फ़ज्ज़

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं।

इस सूरः का नाम अल-फ़ज्ज़ (सवेरा) है और सवेरा के उदय होने पर दस रातों को साक्षी ठहराया गया है। फिर दो और एक को भी साक्षी ठहराया गया है जो कुल तेरह बनते हैं। ये तेरह वर्ष आरम्भिक मक्की दौर की ओर संकेत कर रहे हैं जिसके बाद हिजरत का सवेरा उदय होना था।

इन आयतों की और भी बहुत सी व्याख्याएँ की गई हैं जिनमें अंत्ययुगीनों के समय उदय होने वाले एक सवेरा का भी संकेत मिलता है। परन्तु प्रथमोक्त सवेरा का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है। इस लिए उसी के वर्णन को पर्याप्त समझते हैं।

इस सूरः की शेष आयतों में मानव जाति की सेवा करने की प्रेरणा दी गई है। वर्णन किया गया है कि निर्धनों और उत्पीड़ित जातियों को आज़ादी दिलाने के लिए जो भी प्रयास करेगा उसके लिए शुभ-समाचार है कि वह महान प्रतिफल पाएगा। सबसे बड़ा शुभ-समाचार अन्तिम आयत में यह दिया गया है कि वह इस अवस्था में मरेगा कि अल्लाह तआला उसकी आत्मा को यह कहते हुए अपनी ओर बुलाएगा कि हे वह आत्मा! जो मेरे बारे में पूर्णतया संतुष्ट हो चुकी थी, केवल संतुष्ट ही नहीं थी बल्कि मेरी प्रसन्नता भी उसको प्राप्त थी, अब मेरे भक्तों में शामिल हो जा और उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जो मेरे भक्तों का स्वर्ग है।



سُورَةُ الْفَجْرِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ اخْدَى وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कसम है सवेरा की । १।

وَالْفَجْرِ ①

और दस रातों की । ३।

وَالْيَالِ عَشِيرٍ ①

और युगल की और एकल की । ४।

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ①

और रात की जब वह चल पड़े । ५।

وَالْأَئِلِ إِذَا أَيَسِرٍ ①

क्या इसमें किसी बुद्धिमान के लिए कोई
कसम है ? । ६।*

هُلُّ فِي ذَلِكَ قَسْمٌ لِذِي حِجْرٍ ①

क्या तूने देखा नहीं कि तेरे रब्ब ने आद
(जाति) के साथ क्या किया ? । ७।

الْمُقْرَبُ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ①

(अर्थात् आद की शाखा) इरम के साथ,
जो बड़े-बड़े स्तम्भों वाले थे । ८।

إِرَمْ ذَاتِ الْعِمَادِ ①

जिन के जैसा निर्माण कुल देशों में कभी
नहीं किया गया । ९।

الَّتِي لَمْ يَخْلُقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ①

- * आयत सं. २ से ६ : इन आयतों में बुद्धिमानों के लिए एक भविष्यवाणी प्रस्तुत की गई है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवी होने का दावा करने के पश्चात आपका मक्की जीवनकाल तेरह वर्ष तक फैला रहा । अन्तिम दस वर्ष जिनमें विपत्तियों के अंधेरे बढ़ते चले गए जिनके बाद सवेरा निकलने का शुभ-समाचार दिया गया था । यह वह समय था जिसमें मक्का के काफिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अत्याचार करने में लगातार आगे बढ़ते रहे, यहाँ तक कि आप पर हिजरत का सवेरा प्रकट हो गया । इस विषयवस्तु को कुछ भाष्यकारों ने इस प्रकार भी वर्णन किया है कि युगल और एकल से अभिप्राय इस्लाम की प्रथम तीन शताब्दियाँ हैं । अर्थात सहाबा, तावयीन और तबअ् तावयीन का समय । इसके पश्चात दस रातें अर्थात नैतिक पतन के एक हज़रत वर्ष का समय इस्लाम पर बहुत अन्धकारमय युग आएगा और फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार इस्लाम का अनुयायी, शरीअत विहीन एक नवी ने प्रकट होना था । यह समय चौदहवीं शताब्दी हिजरी के आरम्भ तक फैला हुआ है जिसमें मसीह मौउद का आविर्भाव हुआ ।

और समूद (जाति) के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थीं ॥10॥

और फिर औन के साथ, जो कील-काँटों से लेस था ॥11॥

(ये) वे लोग (थे) जिन्होंने देशों में उपद्रव किया ॥12॥

और उनमें बहुत अधिक उपद्रव किया ॥13॥

अतः तेरे रब्ब ने अज्ञाब का कोड़ा उन पर बरसाया ॥14॥

निश्चित रूप से तेरा रब्ब घात में था ॥15॥

अतः मनुष्य का स्वभाव यह है कि जब उसका रब्ब उसकी परीक्षा करता है, फिर उसे सम्मान देता है । और उसे नेमत प्रदान करता है तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा सम्मान किया है ॥16॥

और इसके विपरीत जब वह उसकी परीक्षा करता और उसकी जीविका उस पर संकुचित कर देता है । तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा अपमान किया है ॥17॥

सावधान ! वास्तव में तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते ॥18॥

और न ही दरिद्र को भोजन कराने की एक दूसरे को प्रेरणा देते हो ॥19॥

और तुम सारे का सारा विरसा (उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति) हड्डप कर जाते हो ॥20॥

और धन से बहुत अधिक प्रेम करते हो ॥21॥

وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّحْرَ بِالْوَادِ

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأُوتَادِ

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْمِلَادِ

فَأَكَرَّرُوا فِيهَا الْفَسَادِ

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبِّكَ سَوْطَ عَذَابٍ

إِنَّ رَبَّكَ بِالْمِرْصَادِ

فَآمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ

وَنَعَمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ

وَآمَّا إِذَا مَا ابْتَلَهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ

فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ

كَلَابِلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتَمَّ

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ

وَتَأْكُلُونَ الْقَرَاثَ أَكْلًا لَمَّا

وَتَحْجُبُونَ الْمَالَ حَبَّاجَمًا

सावधान ! जब धरती कूट-कूट कर कण-कण कर दी जाएगी । 22।

और तेरा रब्ब आएगा और पंक्तिबद्ध फरिश्ते भी । 23।

और उस दिन नरक को लाया जाएगा। उस दिन मनुष्य उपदेश ग्रहण करना चाहेगा, परन्तु अब उपदेश प्राप्त करना उसके लिए कहाँ संभव होगा ? । 24।

वह कहेगा, काश ! मैंने अपने जीवन के लिए (कुछ) आगे भेजा होता । 25।

अतः उस दिन उस जैसा अज्ञाव (उसे) कोई और न देगा । 26।

और कोई उस जैसी मुश्कें नहीं बाँधेगा । 27।

हे संतुष्ट आत्मा ! । 28।

अपने रब्ब की ओर प्रसन्न होते हुए और (उसकी) प्रसन्नता पाते हुए लौट जा । 29।

अतः मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा । 30।

और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा । 31।*

हु

(रुक् 1/4)

كَلَّا إِذَا دَكَّتِ الْأَرْضُ دَكَّا دَكَّا ۝

وَجَاءَ رَبِّكَ وَالْمَالِكَ صَفَّاصَفًا ۝

وَجَاءَ يَوْمَئِنْ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِنْ
يَيْدَكَرِ الْإِنْسَانَ وَآتَيَ لَهُ الذِّكْرَ ۝

يَقُولُ يَا يَتَّنِي قَدَمْتُ لِحَيَاٰتِي ۝

فِي يَوْمِئِنْ لَا يَعْذِبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝

وَلَا يَوْقِنُ وَقَافَةً أَحَدٌ ۝

يَا يَتَّهَا النَّفْسُ الْمُظْمَئِنَةُ ۝

أَرْجُعِي إِلَى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَةً ۝

فَادْخُلُ فِي عَبْدِي ۝

وَادْخُلُ جَنَّتِي ۝

* आयत सं. 28-31 : इन आयतों में उन मोमिनों को शुभ-समाचार दिया गया है जिनको मृत्यु से पूर्व अल्लाह तआला की ओर से यह कहा जाएगा कि हे संतुष्ट आत्मा ! अपने रब्ब के समक्ष इस अवस्था में उपस्थित हो जाओ कि तुम उससे प्रसन्न हो और वह तुम से प्रसन्न हो । यद्यपि आयत सं. 28 में आत्मा के लिए नफ़स प्रयुक्त किया गया है जो अरबी में स्त्री लिंग शब्दरूप है । परन्तु आयत सं. 30 में पुलिंग शब्द इबादी (मेरे भक्तों) उल्लेख करके यह बताया कि वस्तुतः आत्मा न तो स्त्री है न पुरुष । इसी बात को कहा कि मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा और मेरे उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जिसे मैंने अपने विशेष भक्तों के लिए तैयार किया हुआ है ।

90 – सूरः अल-बलद

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और विस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं।

पिछली सूरः में मक्का की जिन रातों को साक्षी ठहराया गया था उसी मक्का का वर्णन इस सूरः में फिर से दोबारा आरम्भ कर दिया गया है। अल्लाह तआला हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मैं इस नगर को उस समय तक साक्षी ठहराता हूँ जब तक तू इसमें है। जब तुझे इस नगर के निवासी यहाँ से निकाल देंगे तब यह नगर शांतिदायक नहीं रहेगा।

इसके बाद आने वाली पीढ़ियों को साक्षी ठहराया गया है कि मनुष्य के भाग्य में लगातार परिश्रम करना लिखा है। जब उसे नुबुव्वत का प्रकाश प्रदान किया जाता है तो उसके सामने धार्मिक और सांसारिक उन्नति के दो मार्ग खोले जाते हैं। परन्तु मनुष्य परिश्रम का मार्ग अपना कर धार्मिक और सांसारिक ऊँचाइयों की ओर न चढ़कर ढलान का सरल मार्ग अपनाता है और पतन की ओर चला जाता है। यहाँ ऊँचाई पर चढ़ने के विषयवस्तु को खोल कर बता दिया गया कि इससे किसी पर्वत पर चढ़ना अभिप्राय नहीं बल्कि जब निर्धन जातियों को भूख सताए और कई जातियों को दास बना लिया जाए, उस समय यदि कोई उनको उस से मुक्त कराने के लिए प्रयास करे और भूख के मारों और निर्धनों को अपने पाँवों पर खड़ा करने के लिए प्रयत्न करे तो वही लोग ऊँचाइयों की ओर चढ़ने वाले हैं। परन्तु यह लक्ष्य ऐसा है कि एक दो दिन में प्राप्त होने वाला नहीं। उसके लिए निरन्तर धैर्य से काम लेते हुए धैर्य करने का उपदेश देना पड़ेगा और निरन्तर दया से काम लेते हुए दया का उपदेश देना पड़ेगा।



سُورَةُ الْبَلَدِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَةِ إِحْدَى وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكْنُوْعَ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

सावधान ! मैं इस नगर की क़सम खाता
हूँ । 12।

जबकि तू इस नगर में (एक दिन) उतरने
वाला है । 13।

और पिता की और जो उसने संतान पैदा
की । 14।

निःसन्देह हमने मनुष्य को एक लगातार
परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा
किया । 15।

क्या वह धारणा करता है कि उस पर
कदापि कोई प्रभुत्व नहीं पा सकेगा । 16।

वह कहता है मैंने ढेरों धन लुटा
दिया । 17।

क्या वह समझता है कि उसे किसी ने
नहीं देखा ? । 18।

क्या हम ने उसके लिए दो आँखें नहीं
बनाई ? । 19।

और जिहा और दो होंठ ? । 10।

और हमने उसे दो ऊँचे मार्गों की ओर
हिदायत दी । 11।

अतः वह अक़बः पर नहीं चढ़ा । 12।

और तुझे क्या मालूम कि अक़बः क्या
है ? । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لَا أَقِسْمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَأَنْتَ حَلْ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَوَالْدِقَّ مَا وَلَدَ ۝

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبِيرٍ ۝

أَيْحَسْبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَأَبْلَدَ ۝

أَيْحَسْبُ أَنْ لَمْ يَرِهِ أَحَدٌ ۝

أَلْمَرْجِعُ لِلَّهِ عَيْشِينَ ۝

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنَ ۝

وَهَدَيْنَةَ النَّجَدَيْنَ ۝

فَلَا اقْتَحِمَ الْعَقَبَةَ ۝

وَمَا أَذْرِكَ مَا الْعَقَبَةَ ۝

गर्दन (अर्थात् दास) मुक्त करना ॥14॥

अथवा एक साधारण भूख के दिन भोजन कराना ॥15॥

ऐसे अनाथ को जो निकट सम्पर्कीय हो ॥16॥

अथवा ऐसे दरिद्र को जो धूल-धूसरित हो ॥17॥

फिर वह उनमें से बन जाए जो ईमान ले आए और धैर्य पर डटे रहते हुए एक दूसरे को धैर्य का उपदेश करते हैं । और दया करने पर डटे रहते हुए एक दूसरे को दया का उपदेश देते हैं ॥18॥

ये ही दाहिनी ओर वाले हैं ॥19॥

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार कर दिया वे बाई ओर वाले हैं ॥20॥

उन पर (लपकने के लिए) एक बन्द की हुई आग (निश्चित) है ॥21॥

(रुक् ١٣)

فَكُرْقَبَةُ^{١٤}

أُو إِطْعَمُ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْعَةٍ^{١٥}

يَتَبَيَّنَ أَذَامَ قَرَبَةٍ^{١٦}

أُو مُسْكِينُّا ذَا مَتْرَبَةٍ^{١٧}

شَرَّ كَانَ مِنَ الظِّلِّينَ أَمْنُوا وَتَوَاصَوا

بِالصَّبَرِ وَتَوَاصَوا بِالْمَرْحَمَةِ^{١٨}

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ^{١٩}

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِإِيمَانِهِمْ^{٢٠}

أَصْحَابُ الْمَشَمَةِ^{٢١}

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤَصَّدَةٌ^{٢٢}

91—सूरः अश—शम्स

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 16 आयतें हैं।

इसमें एक बार फिर यह भविष्यवाणी की गई कि इस्लाम का सूर्य एक बार फिर उदय होगा और वह चन्द्रमा फिर चमकेगा जो इस सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होगा। फिर एक सवेरा उदय होगा और उसके पश्चात फिर एक अन्धेरी रात छा जाएगी। अर्थात् कोई सवेरा ऐसा नहीं हुआ करता जिसके पश्चात् अज्ञानता के अंधेरे मानवजाति को घेर न ले।

फिर यह घोषणा की गई है कि प्रत्येक जान को अल्लाह तआला ने न्याय के साथ पैदा किया है और उसे अपने अच्छे बुरे की पहचान बता दी गई है। जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को आगे बढ़ाया वह सफल हो जाएगा और जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को मिट्टी में गाढ़ दिया वह बर्बाद हो जाएगा।

इसके बाद समूद्र जाति और उसके रसूल की ऊँटनी का वर्णन है। संभव है इसमें उस ओर संकेत हो कि हज़रत सालेह अलै. जिस ऊँटनी पर सवार होकर संदेश पहुँचाने के लिए यात्रा किया करते थे, जब उस संप्रदाय के लोगों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट डालीं तो फिर उन पर बहुत बड़ी तबाही आई। अतः नवियों के शत्रु जब भी संदेश प्रसारण के इन साधनों को काटते हैं जिनके द्वारा हिदायत का संदेश पहुँचाया जाता है तो वे भी सदैव विनष्ट कर दिए जाते हैं।



سُورَةُ الشَّمْسِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكْنُهُ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क्रमम है सूर्य की और उसकी धूप
की । 2।

और चन्द्रमा की जब वह उसके पीछे
आए । 3।

और दिन की जब वह उस (अर्थात् सूर्य)
को खुब उज्ज्वल कर दे । 4।

और रात की जब वह उसे ढाँप ले । 5।

और आसमान की और जैसे उसने उसे
बनाया । 6।

और धरती की और जैसे उसने उसे
बिछाया । 7।

और प्रत्येक जान की और जैसे उसने उसे
ठीक-ठाक किया । 8।

अतः उसके दुराचारों और उसके
सदाचारों (की पहचान करने की क्षमता)
को उसकी प्रकृति में जमा दिया । 9।

जिसने उस (तक्वा) को उन्नत किया,
निःसन्देह वह सफल हो गया । 10।

और जिसने उसे मिट्टी में गाढ़ दिया वह
असफल हो गया । 11।

समूद (जाति) ने अपनी उद्घण्डता के
कारण झुठला दिया । 12।

जब उनमें से सर्वाधिक भाग्यहीन व्यक्ति
उठ खड़ा हुआ । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالثَّمَسِ وَصَحْمَهَا ۝

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَهَا ۝

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَهَا ۝

وَأَئِلِ إِذَا يَغْشَهَا ۝

وَالسَّمَاءَ وَمَا بَنَهَا ۝

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَهَا ۝

وَنَفْسِ وَمَا سُؤَلَهَا ۝

فَآلُهَمَاهَا فِجُورُهَا وَتَقْوِهَا ۝

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّهَا ۝

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّهَا ۝

كَذَّبَتْ نَمُوذِي طَغُونَهَا ۝

إِذَا بَعَثَ أَشْقَهَا ۝

तब अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा,
अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने
का अधिकार (याद रखना) ॥14॥

फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया और
उस (ऊँटनी) की कूँचें काट डालीं । तब
उनके पापों के कारण उनके रब्ब ने उन
(वस्ती) को समतल कर दिया ॥15॥

जबकि वह उसके अंत की कोई परवाह है
नहीं कर रहा था ॥16॥ (रुक् ١٦)

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ
وَسَقَيْهَا ۝

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۚ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ بِذَنِيهِمْ فَسَوْلَهَا ۝

وَلَا يَحْافَ غَفِيْرًا ۝

92- सूरः अल-लैल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 22 आयतें हैं।

सूरः अश-शम्स के बाद सूरः अल-लैल आती है जैसे दिन के बाद रात आया करती है। यह कोई साधारण रात नहीं बल्कि इस सूरः में रात के आध्यात्मिक पहलू को उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यह भी शुभ-समाचार दिया गया है कि जब रात आएगी तो फिर दिन भी अवश्य चढ़ेगा। फर्माया, जैसे दिन और रात के प्रभाव भिन्न-भिन्न होते हैं इसी प्रकार मनुष्य के प्रयास भी या तो रात की भाँति अन्धकारमय होते हैं अथवा दिन की भाँति उज्ज्वल। प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने कर्मों और दृष्टिकोण के अनुसार प्रतिफल दिया जाता है। अतः वे लोग जो अल्लाह का तक्कवा धारण करके उसके मार्ग पर और दरिद्र-कल्याण पर खर्च करते हैं और जब अच्छी बात उनके पास पहुँचे तो उसका समर्थन करते हैं, तो अल्लाह तआला उनके रास्ते सरल कर देगा। उसके मुकाबले पर वह व्यक्ति जो कंजूसी से काम ले और इस बात से बे-परवाह हो कि उसके क्या परिणाम निकलेंगे तथा जब भलाई की बात उसके पास पहुँचे तो उसको झुठला दे, तो हम उसकी जीवन-यात्रा कठिन बना देंगे।

इसी प्रकार सूरः के अन्त में दुराचारी व्यक्ति को, जिसके अवगुण ऊपर वर्णित हैं धधकती हुई अग्नि में डाले जाने से डराया गया है। इसी प्रकार वह व्यक्ति उस अग्नि से अवश्य बचाया जाएगा जिसने अपना धन नेक-कर्मों पर खर्च किया और तक्कवा को अपनाया।



سُورَةُ الْأَلْيَلِ مَكَّيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْسَّمْلَةِ النَّبَانِ وَ عَشْرُونَ آيَةً وَ رُكْوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

कसम है रात की जब वह ढाँप ले । 2।

और दिन की जब वह उज्ज्वल हो
जाए । 3।

और उसकी, जो उसने पुरुष और स्त्री
पैदा किए । 4।

तुम्हारा प्रयास निःसन्देह भिन्न-भिन्न
है । 5।

अतः वह जिसने (सन्मार्ग में) दान किया
और तकवा धारण किया । 6।

और सर्वोत्तम नेकी की पुष्टि की । 7।

तो हम उसे अवश्य बहुतायत प्रदान
करेंगे । 8।

और जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, जिसने
कंजूसी की और बे-परवाही की । 9।

और सर्वोत्तम नेकी को झुठलाया । 10।

तो हम उसे अवश्य तंगी में डाल
देंगे । 11।

और जब उसका धन नष्ट हो जाएगा
और (वह) उसके किसी काम न
आएगा । 12।

निःसन्देह हिदायत देना हम पर हर हाल
में अनिवार्य है । 13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَإِنِّي إِذَا يَغْشِي ②

وَإِنَّهُارِ إِذَا تَجْلِي ③

وَمَا حَلَقَ الدَّكَرُ وَالْأَنْثَى ④

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشׁُتٍ ⑤

فَآمَّا مَنْ أَعْطَى وَآتَى ⑥

وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى ⑦

فَسَيِّسَرَهُ لِلْيُسْرَى ⑧

وَآمَّا مَنْ بَخَلَ وَاسْتَغْنَى ⑨

وَكَذَبَ بِالْحُسْنَى ⑩

فَسَيِّسَرَهُ لِلْعُسْرَى ⑪

وَمَا يَعْنِي عَنْهُ مَا لَهُ إِذَا تَرَدَى ⑫

إِنَّ عَلَيْنَا الْهُدَى ⑬

और निःसन्देह अन्त और आदि भी
अवश्यमेव हमारे अधिकार में है ॥14॥

अतः मैं तुम्हें उस अग्नि से डराता हूँ जो
तेज़ भड़कने वाली है ॥15॥

उसमें बड़े भाग्यहीन व्यक्ति के सिवा
कोई प्रविष्ट नहीं होगा ॥16॥

वह जिसने झुठलाया और पीठ फेर
ली ॥17॥

जबकि सबसे बड़ा मुत्तकी व्यक्ति उससे
अवश्य बचाया जाएगा ॥18॥

जो पवित्रता चाहते हुए अपना धन देता
है ॥19॥

और जिसका (उसकी ओर से) प्रतिफल
दिया जा रहा हो उस पर किसी का
उपकार नहीं है ॥20॥

(यह) केवल अपने सर्वोच्च रब्ब की
प्रसन्नता चाहते हुए (खर्च करता
है) ॥21॥

और वह अवश्य प्रसन्न हो जाएगा ॥22॥

(रुक् ١٧)

وَإِنَّكَ لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَى ⑯

فَأَنْذِرْنِي كُمْ نَارًا تَلْظِي ⑯

لَا يَصْلِهَا إِلَّا الْأَشْقَى ⑯

الَّذِي كَدَبَ وَتَوَلَّ ⑯

وَسَيِّئَ جَبَاهَا الْأَنْقَى ⑯

الَّذِي يُؤْتَى مَالَهُ يَتَرَكُ ⑯

وَمَا إِلَّا حِدِّ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ بَجْزِي ⑯

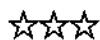
إِلَّا ابْتِغَاءً وَجْهَ رَبِّهِ الْأَعْلَى ⑯

وَلَسْوَفَ يَرْضِي ⑯

93- सूरः अज्ञ-जुहा

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

इस सूरः में फिर एक ऐसे दिन का शुभ-समाचार दिया गया है जो अत्यन्त उज्ज्वल हो चुका होगा और फिर एक रात का जो उसके पश्चात फिर आएगी । हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके यह कहा गया है कि घोर अन्धकारों और कठिनाइयों के समय में अल्लाह तआला तुझे अकेला नहीं छोड़ेगा । और बाद में आने वाला तेरा हर पल पहले से बेहतर होगा और फिर यह शुभ-समाचार है कि तुझे अल्लाह तआला बहुत कुछ प्रदान करेगा । अतः अनाथों से सद्-व्यवहार कर और याचक को ज्ञिइका न कर । और तुझे प्राप्त सुख-संपन्नता को समाप्त हो जाने की भय से मानव जाति से छुपा नहीं । जितना तू अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करता चला जाएगा अल्लाह तआला उसे और भी अधिक बढ़ाता चला जाएगा ।



سُورَةُ الْضُّحَىٰ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُشْرَىٰ عَشْرَةُ آيَةٍ وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क्रमम है दिन की जब वह अत्यंत
उज्ज्वल हो चुका हो । 2।

और रात की जब वह खूब अन्धकारमय
हो जाए । 3।

तुझे तेरे रब्ब ने न परित्याग किया है
और न घृणा की है । 4।

और निःसन्देह परवर्ती समय तेरे लिए
(हर) पहली (अवस्था) से उत्तम
है । 5।*

और तेरा रब्ब अवश्य तुझे प्रदान करेगा।
फिर तू संतुष्ट हो जाएगा । 6।

क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया था ?
फिर शरण दिया । 7।

और तुझे (सत्य की) तलाश में परेशान
(नहीं) पाया ? फिर हिदायत दी । 8।**

और तुझे एक बड़े कुटुम्ब वाला (नहीं)
पाया ? फिर धनवान बना दिया । 9।

अतः जहाँ तक अनाथ का सम्बन्ध है, तू
उस पर सख्ती न कर । 10।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

وَالصَّلٰوةُ عَلٰى الْمُصْلِحِ ①

وَالْأَيْلٰى إِذَا سَجَنَ ①

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ①

وَلِلْآخِرَةِ خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ ①

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضِيٰ ①

أَلْمُرِيدْكَ يَسِيمًا فَأُولَىٰ ①

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ①

وَوَجَدَكَ عَابِلًا فَأَغْنَىٰ ①

فَأَمَّا الْيَتِيمُ فَلَا تَقْهِرْ ①

* यहाँ जिस परवर्ती समय का पूर्ववर्ती समय से उत्तम होने का वर्णन किया गया है, इससे अभिप्राय यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन का हर आने वाला क्षण है जो हर बीते हुए क्षण से उत्तम था । क्योंकि आप सल्ल. हर पल अल्लाह तआला की ओर अग्रसर थे ।

** आयत सं. 8-9 इन आयतों में अरबी शब्द ज़ाल्लन् का अर्थ पथप्रस्त्रता नहीं है बल्कि इसका यह अर्थ है कि जो अल्लाह तआला के प्रेम में मानो खो गया हुआ है और शब्द आइलन (बड़े कुटुम्ब वाला) आप सल्ल. को आप के भारीसंब्ल्यक अनुयायियों के कारण कहा गया है । किसी नबी को इतने भारीसंब्ल्यक अनुयायी नहीं मिले जितने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिले ।

और जहाँ तक याचक का प्रश्न है, तू
उसे मत ज्ञिइक । 11।

और जहाँ तक तेरे रब्ब की नेमत का ^{۱۱}
सम्बन्ध है, तू (उसकी) अधिकता के ^{۱۲}
साथ चर्चा कर । 12।* (रुक् ۱۸)

وَأَمَّا اسْأَبِيلْ فَلَا شَهْرٌ

وَأَمَّا بِنْعَمَةِ رَبِّكَ فَحَتْ

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर्दीसों से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने जो उपकार और सांसारिक पुरस्कार आप सल्ल. को प्रदान किए थे उनको आपने मानव जाति से छुपाया नहीं बल्कि खुल कर प्रकट किया । जो आध्यात्मिक अनुकम्पा आप पर उतारी गई थी यदि अल्लाह का आप को यह आदेश न होता तो आप उसे अपने में ही गुप्त रखते । जो सांसारिक वरदान आप को दिये गए उसका वर्णन करना इस कारण आवश्यक था ताकि अभावग्रस्त लोग उसके वर्णन से आप सल्ल. की ओर लपकें और उनकी आवश्यकताएँ पूरी हो सकें । उनसे जो उपकारपूर्ण बर्ताव होगा वह ऐसा ही है जैसे अपने घरवालों से किया जाता है जिसके बदले में मनुष्य कोई आभार नहीं चाहता ।

94—सूरः अल्लम नश्रह

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं।

इस महान् सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदगुणों के वर्णन करने के पश्चात् आप सल्ल. से प्रश्न किया गया है कि क्या हमने तेरा दिल पूरी तरह खोल नहीं दिया ? और अमानत का जो बोझ तूने उठाया हुआ था, अल्लाह ने अपनी कृपा से उसे उतारने का सामर्थ्य प्रदान नहीं किया ? और तेरी चर्चा को उन्नत नहीं कर दिया ? अतः इस स्थायी सत्य को याद रख कि प्रत्येक कठिनाई के बाद एक सरलता उत्पन्न होती है। प्रत्येक कठिनाई के पश्चात् एक सरलता उत्पन्न होती है। अर्थात् सांसारिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है। अतः जब तू दिन भर की व्यस्तता से मुक्त हो तो रात को अपने रब्ब के समक्ष खड़े हो जाया कर और उसके प्रेम से मन की शांति प्राप्त कर।



سُورَةُ الْمَّشْرُحِ مُكَيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

व्या हमने तेरे लिए तेरे सीने को खोल
नहीं दिया ? । 2।

और तुझ पर से हमने तेरा बोझ उतार
नहीं दिया ? । 3।

जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी । 4।

और हमने तेरे लिए तेरे स्मरण को उन्नत
कर दिया । 5।

अतः निःसन्देह तंगी के साथ सुख-
संपन्नता है । 6।

निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-
संपन्नता है । 7।

अतः जब तू निवृत्त हो जाए तो तत्पर हो
जा । 8।

और अपने रब्ब ही की ओर मनोनिवेश ^{हूँ}
कर । 9। (रुक् । १९)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْمَشْرُحُ لَكَ صَدْرَكَ ②

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ③

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهَرَكَ ④

وَرَفَعْنَاكَ ذِكْرَكَ ⑤

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑥

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑦

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصُبْ ⑧

وَإِلَى رَبِّكَ فَارْجِبْ ⑨

95- सूरः अत-तीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं।

सूरः अल-इन्शिराह (अलम् नश्रह) के पश्चात् सूरः अत-तीन आती है जो वास्तव में आयत निस्सन्देह तंगी के साथ सुख-संपन्नता है। निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-संपन्नता है। की व्याख्या है।

इस सूरः में एक असीमित उन्नति का समाचार दिया गया है। इसमें अंजीर और ज़ैतून को साक्षी ठहराया गया है। अर्थात् आदम और नूह अलै. को और तूरे सीनीन अर्थात् हज़रत मूसा अलै. के उस पर्वत को जिस पर अल्लाह तआला की दीप्ति प्रकट हुई और फिर उस शांतिपूर्ण नगर (मक्का) को साक्षी ठहराया गया, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लक्ष्यस्थल था। इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से आध्यात्मिक उन्नति के साथ यह घोषणा कर दी गई कि इसी प्रकार हमने मनुष्य को निम्नावस्था से उन्नति देते हुए शिखर तक पहुँचाया है। परन्तु जो अभाग इससे लाभ न उठाये उसे हम निम्नावस्था की ओर लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे की ओर लौटा दिया करते हैं। इस प्रकार एक अन्तहीन उत्थान-पतन का वर्णन है। परन्तु वे जो ईमान लाएँ और नेक कर्म करें उनकी आध्यात्मिक उन्नतियाँ असीमित होंगी। अतः जो इसके बाद भी धर्म के मामले में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाएँ तो अल्लाह तआला उसका सर्वोत्तम निर्णय करने वाला है।



سُورَةُ التِّينِ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَ رُكْونٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कसम है अंजीर की और जैतून की । 12।

وَالثَّيْنِ وَالرَّيْتَمِ ②

और सिनाइ पर्वत शुखला की । 13।

وَظُورِ سِينِينَ ③

और इस शांति पूर्ण नगर की । 14।

وَهَذَا الْبَلْدَ الْأَمِينَ ④

निःसन्देह हमने मनुष्य को समुन्नत
अवस्था में पैदा किया । 15।*

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي
آخْرَتِنَ تَقْوِيمِ ⑤

फिर हमने उसे निचले दर्जे की ओर
लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे (की
ओर) लौटा दिया । 16।**

شَرَرَدَذْنَاهَسْفَلَ سَفَلِينَ ⑥

सिवाय उनके जो ईमान लाए और नेक
कर्म किए । अतः उनके लिए अक्षय
प्रतिफल है । 17।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ
فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مُمْنُونٍ ⑦

* तक्खीम शब्द के इस अर्थ के लिए देखें : मुफरदात इमाम रागिब और अल मुन्जिद ।

** आयत सं. 5, 6 : इन आयतों में मनुष्य के निरंतर विकास का वर्णन है कि किस प्रकार मनुष्य को निम्नावस्था से उठा कर सबसे उच्चतम पद पर आसीन किया गया । अरबी शब्द तक्खीम का शब्दकोशीय अर्थ यही है कि किसी वस्तु को ठीक-ठाक करते हुए उत्कृष्ट से उत्कृष्ट करते चले जाना है । इसके बाद फर्माया कि फिर हमने उसको उस अत्यन्त निकृष्ट अवस्था की ओर लौटा दिया जहाँ से उसने उन्नति आरम्भ की थी । इससे अभिप्राय केवल कृतञ्च और दुराचारी लोग हैं । वे मनुष्य होते हुए भी सृष्टि में सब से बुरे हो जाते हैं । सिवाय मोमिनों के जिनके लिए इसी सूरः में असीमित उन्नतियों का शुभ-समाचार दिया गया है ।

मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ होने के बावजूद सब से अधिक निकृष्ट बनने की संभावना के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस है कि आने वाले अत्यन्त बुरे युग में उन लोगों के धर्मज्ञ आकाश के नीचे सबसे बुरे जीव होंगे । (मिश्कात, किताबुल इन्म)

अतः इसके पश्चात् वह क्या है जो तुझे
धर्म के मामले में झुठलाए ? 18।

क्या अल्लाह सभी निर्णयकर्ताओं में
सर्वोत्कृष्ट निर्णयकर्ता नहीं है ? 19।

(रुक् ۱
۲۰)

فَمَا يَكْذِبُكَ بَعْدُ بِالِّتِينِ ۝

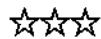
أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَكَمِينَ ۝

96- सूरः अल-अलकः

यह सूरः मक्की है और सर्वप्रथम अवतरित होने वाली सूरः है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं।

वहइ के अवतरण का आरम्भ इस सूरः से हुआ जिसमें अल्लाह तआला ने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने उस रब्ब के नाम के साथ पाठ करने का आदेश दिया है जिसने प्रत्येक वस्तु को सृष्टि किया और फिर दोबारा इक्का शब्द कह कर यह धोषणा की कि सबसे अधिक सम्माननीय उस रब्ब का नाम लेकर पाठ कर जिसने मनुष्य की समस्त उन्नति का रहस्य लेखनी में रख दिया है। यदि लेखनी और लेखन-कला का ज्ञान मनुष्य को नहीं दिया जाता तो किसी प्रकार की उन्नति संभव नहीं थी।

इसके पश्चात प्रत्येक उस मनुष्य को सावधान किया गया है जो उपासना करने के मार्ग में रोकें डालता है। उसको उस अन्त से डराया गया है कि यदि वह न रुका तो हम उसे उसके झूठे, अपराधी मस्तक के बालों से पकड़ लेंगे। फिर वह अपने जिस सहायक को चाहे बुलाए। हमारे पास भी कठोर दण्ड देने वाले नरक के फ़रिश्ते हैं।



شَوَّرَةُ الْعَلْقِ مَكَيْةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عَشْرُونَ آيَةً وَرُكْنَعْ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

अपने रब्ब के नाम के साथ पढ़, जिसने
पैदा किया । 12।

उसने मनुष्य को एक चिमट जाने वाले
लोथड़े से पैदा किया । 13।

पढ़, और तेरा रब्ब सबसे अधिक
सम्माननीय है । 14।

जिसने लेखनी के द्वारा सिखाया । 15।

मनुष्य को वह कुछ सिखाया जो वह
नहीं जानता था । 16।

सावधान ! निःसन्देह मनुष्य उद्दण्डता
करता है । 17।

(इस कारण) कि उसने अपने आप को
बे-परवाह समझा । 18।

निःसन्देह तेरे रब्ब की ओर ही लौट कर
जाना है । 19।

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो
रोकता है ? । 10।

एक महान भक्त को, जब वह नमाज़
पढ़ता है । 11।*

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि वह
(महान भक्त) हिदायत पर हो ? । 12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِقْرَا إِبْرَاهِيمَ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ②

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلْقٍ ③

إِقْرَا وَرَبِّكَ الْأَكْرَمِ ④

الَّذِي عَلِمَ بِالْقَلْمَوْنِ ⑤

عَلِمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ⑥

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى ⑦

أَنْ زَرَاهُ أَنْسَغَنِي ⑧

إِنَّ إِلَيْ رَبِّكَ الرُّجُعِي ⑨

أَرْعَيْتَ الَّذِي يَنْهَى ⑩

عَبْدًا إِذَا صَلَّى ⑪

أَرْعَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَى ⑫

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में इस्लाम के आरम्भिक युग का वर्णन है कि किस प्रकार कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ने से रोका करते थे और आप सल्ल. पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार करते थे ।

अथवा तक्वा का आदेश देता हो ? |13|

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि उस (नमाज़ से रोकने वाले) ने (फिर भी) झुठला दिया और पीठ फेर ली ? |14|

(तो) क्या वह नहीं जानता कि निःसन्देह अल्लाह देख रहा है ? |15|

सावधान ! यदि वह न रुका तो निःसन्देह हम उसे मस्तक के बालों से पकड़ कर खींचेंगे |16|

झूठे अपराधी मस्तक के बालों से |17|

अतः चाहिए कि वह अपनी सभा बालों को बुला कर देखे |18|

हम नरक के फ़रिश्तों को अवश्य बुलाएँगे |19|

सावधान ! उसका अनुसरण न कर और سजदः में गिर जा और निकटता

(प्राप्त करने) का प्रयास कर |20|

(रुकू ٢١)

أَوْ أَمْرَ بِالثَّقْوَى ﴿١﴾

أَرْعَيْتَ إِنْ كَذَبَ وَتَوَثَّى ﴿٢﴾

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى ﴿٣﴾

كَلَّا لِئِنْ لَمْ يَتَّهِ لَنَسْفًا بِالثَّاصِيَةِ ﴿٤﴾

نَاصِيَةً كَذَبَةً خَاطِئَةً ﴿٥﴾

فَلِيدُغُ نَادِيَةً ﴿٦﴾

سَنْدُغُ الرَّبَانِيَّةَ ﴿٧﴾

كَلَّا لَا تُطْغِي وَاسْجُدُوا اقْتَرِبُ ﴿٨﴾

97- सूरः अल-क़द्र

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं।

इस सूरः में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस कुरआन की वहइ का आरम्भ किया गया है वह प्रत्येक प्रकार की अंधेरी रातों को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखती है। अतः यहाँ हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की अत्यन्त अंधेरी रात का वर्णन किया गया है, जिसमें जल, स्थल चारों ओर बुराई फैल चुकी थी। परन्तु अल्लाह में लीन उस व्यक्ति की अंधेरी रातों की दुआओं के परिणाम स्वरूप एक ऐसा सवेरा उदय हुआ, अर्थात् कुरआन करीम का अवतरण हुआ जिसका प्रकाश क्यामत तक रहने वाला था। आयत हि य हत्ता मत्लङ्गल फ़ज्ज़ (यह क्रम उषाकाल के उदय होने तक जारी रहता है) का अभिप्राय यह है कि वहइ उस समय तक अवतरित होती रहेगी जब तक पूर्णरूपेण फ़ज्ज़ (सवेरा) उदित न हो जाय। और फिर यह घोषणा की गई कि एक व्यक्ति के जीवन भर के संघर्ष से उत्तम यह एक लैलतुल क़द्र (सम्माननीय रात्रि) की घड़ी है, यदि किसी को प्राप्त हो जाए।



سُورَةُ الْقَدْرِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

निःसन्देह हमने इसे कद्र की रात्रि में
उतारा है । 12।

और तुझे क्या मालूम कि कद्र की रात्रि
क्या है ? । 13।

कद्र की रात्रि हजार महीनों से श्रेष्ठ
है । 14।

उसमें फरिश्ते और रूह-उल-कुदुस
अपने रब्ब के आदेश से हर मामले में
बहुत अधिक उत्तरते हैं । 15।

सलाम है । यह (क्रम) उषाकाल के
उदय तक जारी रहता है । 16।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقُدْرِ ②

وَمَا أَذْرِيكَ مَا لِيْلَةُ الْقُدْرِ ③

لَيْلَةُ الْقُدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ④

تَنْزَلُ الْمَلِئَكَةُ وَالرُّوحُ قِيمًا

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ⑤

سَلَمٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ النَّفَجَرِ ⑥

(रुकू १/२२)

98- सूरः अल-बय्यिनः

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में वर्णन किया गया था कि लैलतुल क़द्र में उतरने वाली वह इसके प्रातोदय के समान प्रत्येक विषय को ख़ूब स्पष्ट कर देगी । अब इस सूरः में वर्णन है कि इसी प्रकार हमने पिछले नवियों को भी अपेक्षाकृत एक छोटी लैलतुल क़द्र प्रदान की थी अन्यथा वे केवल अपने प्रयासों के द्वारा समय के अंधकारों को सवेरा में परिवर्तित नहीं कर सकते थे ।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके कहा गया कि पिछले सब नवियों पर जो पुस्तकें उतारी गई थीं उन सभी का सारांश तेरी शिक्षा में सम्मिलित कर दिया गया है । उनकी शिक्षाओं का सारांश यह था कि वे अल्लाह तआला के लिए उसके धर्म को विशिष्ट करते हुए उसकी उपासना करें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें । यह ऐसा धर्म है जो स्वयं सदा क़ायम रहेगा और मानवजाति को भी सन्मार्ग पर स्थित करता रहेगा ।

इसके पश्चात काफ़िरों और मोमिनों को दोनों के बुरे और भले अंत की सूचना दी गई है कि जब दीन-ए-क़ब्यिम (अर्थात् क़ायम रहने वाला और क़ायम रखने वाला धर्म) आ जाए तो फिर प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है कि चाहे तो उसका अनुसरण करे और भले अंत को प्राप्त करे और चाहे तो उसका इनकार करके बुरे अंत को प्राप्त करे ।



سُورَةُ الْبَيْنَةِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَرُكْوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 11

अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, उनके निकट स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे, फिर भी वे कदापि रुकने वाले न थे । 12।

अल्लाह का रसूल पवित्र पृष्ठों का पाठ करता था । 3।

उनमें क्रायम रहने वाली और क्रायम रखने वाली शिक्षाएँ थीं । 4।

और वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई, उनके निकट उज्ज्वल प्रमाण आने के पश्चात ही उन्होंने मतभेद किया । 5।

और उन्हें इसके अतिरिक्त और कोई आदेश नहीं दिया गया कि वे धर्म को अल्लाह के लिए विशिष्ट करते हुए और सर्वदा उसकी ओर झुकते हुए, उसकी उपासना करें और नमाज़ को क्रायम करें और ज़कात दें । और यही क्रायम रहने वाली और क्रायम रखने वाली शिक्षाओं से परिपूर्ण धर्म है । 6।

निःसन्देह अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, नरक की अग्नि में होंगे । वे उसमें एक दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे । ये ही अत्यन्त निकृष्टम् सृष्टि हैं । 7।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لَمْ يَكُنْ أَذْنِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّرِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيهِمْ
الْبَيْنَةُ ②

رَسُولُ مِنَ اللَّهِ يَسْتَوْا صَحْفًا مَطَهَرَةً ③
فِيهَا كِتَابٌ قَيِّمَةٌ ④

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ بِالْبَيْنَةِ ⑤

وَمَا أَمْرَقَ إِلَّا لِيَغْبُدُ وَاللَّهُ مُحْلِصِينَ
لَهُ الدِّينُ ⑥ حَنَفاءٌ وَيَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُونَ الْزَكُوةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيمَةِ ⑦

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ حَلِيدِينَ قِبَّهَا
أُولَئِكَ هُمُ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ⑧

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । ये ही श्रेष्ठतम् सृष्टि हैं । १८।

उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास स्थायी स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे चिरकाल तक उनमें रहने वाले होंगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हो गए । यह उसके लिए है जो अपने रब्ब से डरता रहा । १९।

(रुकू १/२३)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِّيَّةِ ۝

جَزَّأُو هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتُ عَدْنٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ حَلِيلُّهُ
آبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ
ذَلِكَ لِمَنْ حَشِيَ رَبَّهُ ۝

99- सूरः अजः-जिल्जाल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस सूरः में अन्तिम युग में प्रकट होने वाले परिवर्तनों का वर्णन है जिनके परिणाम स्वरूप मनुष्य समझेगा कि उसने प्रकृति के नियमों पर विजय प्राप्त कर ली है हालाँकि उस समय जो कुछ धरती अपना रहस्य उगलेगी वह तेरे रब्ब के आदेश से ऐसा करेगी । उस दिन लोगों के लिए सांसारिक कर्मफल-प्राप्ति का भी एक समय आएगा जब वे देखेंगे कि उनकी सांसारिक उन्नतियों ने उनको कुछ भी न दिया । सिवाय इसके कि वे पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में पड़ कर तितर-बितर हो गए । अतः उस दिन प्रत्येक मनुष्य अपनी छोटी से छोटी भलाई का भी प्रतिफल पाएगा और छोटी से छोटी बुराई का भी प्रतिफल पाएगा ।

इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि धरती अपना बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और इसी क्रम में अंत पर कहा कि केवल बड़ी-बड़ी भलाई अथवा बुराई का ही हिसाब नहीं लिया जाएगा बल्कि यदि किसी ने भलाई का छोटे से छोटा अंश भी किया होगा तो वह उसका प्रतिफल पाएगा और यदि छोटी से छोटी बुराई भी की हो तो वह उसका दंड भोग करेगा ।



سُورَةُ الْزُّلْفَالِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَرُكْوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । । ।

जब धरती अपने भूकंप से हिलाई
जाएगी । । ।

और धरती अपना बोझ निकाल
फेंकेगी । । ।

और मनुष्य कहेगा कि इसे क्या हो गया
है ? । । ।

उस दिन वह अपने समाचार वर्णन
करेगी । । ।

क्योंकि तेरे रब्ब ने उसे वहाँ की
होगी । । ।

उस दिन लोग तितर-बितर होकर
निकल खड़े होंगे ताकि उन्हें उनके कर्म
दिखा दिए जाएँ । । ।

अतः जो कोई लेश-मात्र भी भलाई
करेगा वह उसे देख लेगा । । ।

और जो कोई लेश-मात्र भी बुराई करेगा
वह उसे देख लेगा । । । * (रुपू. $\frac{1}{24}$)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زُلْزَالَهَا ۝

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝

يَوْمَئِذٍ تُحَدَّثُ أَخْبَارَهَا ۝

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْلَى لَهَا ۝

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَأْنًا ۝

لَيَرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝

فَمَنْ يَعْمَلْ مُثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝

وَمَنْ يَعْمَلْ مُثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝

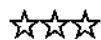
* आयत सं. ४-९ : इन दो आयतों से ज्ञात होता है कि जो कोई छोटी से छोटी भलाई अथवा छोटी से छोटी बुराई करेगा तो उसे उनका प्रतिफल दिया जाएगा । परन्तु अल्लाह तआला की क्षमा सर्वोपरि है । कुरआन करीम से पता चलता है कि यदि अल्लाह चाहे तो बड़े से बड़े पाप को भी क्षमा कर सकता है क्योंकि वह दिलों का हाल जानता है और यह भी जानता है कि कौन इस योग्य है कि उसके पाप क्षमा किए जाएँ ।

100 - सूरः अल-आदियात

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

सांसारिक कारणों से लड़े जाने वाले युद्धों के विवरण के पश्चात इस सूरः में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रजि. के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन किया गया है जो प्रत्येक दृष्टि से सांसारिक युद्धों से मिलन और सुखांत युक्त हैं। उन तेज़ रफतार घोड़ों को साक्षी ठहराया गया है जो तेज़ी से साँस लेते हुए इस प्रकार शत्रु पर झपटते हैं कि उनके खुरों से चिंगारियाँ निकलती हैं और वे सबेरे आक्रमण करते हैं, निशाक्रमण नहीं करते। यह उच्चकोटि के साहस का लक्षण है, अन्यथा भौतिकवादी जातियों की लड़ाई के प्रसंग में प्रत्येक स्थान पर यही वर्णन हुआ है कि वे छिप कर आक्रमण करते हैं।

फिर कहा गया है कि मनुष्य अपने रब्ब की बड़ी कृतघ्नता करता है और वह स्वयं इस बात पर साक्षी है। धन के मोह में वह बहुत लिप्त होता है। यहाँ इस ओर संकेत किया गया है कि संसार के सभी युद्ध धन के लिए लड़े जाते हैं। अतः क्या वह नहीं जानता कि जब धरती के समस्त रहस्य उद्घाटित किए जाएँगे और लोगों के सीनों में जो कुछ छुपी हुई बातें हैं वे प्रकट हो जाएँगी, उस दिन अल्लाह तआला उनकी हालतों से भली प्रकार अवगत होगा।



سُورَةُ الْعَادِيَاتِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ السَّتَّا عَشْرَةً آيَةً وَرُكْنَوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11

हाँफते हुए तेज़ रफतार घोड़ों की
क्रसम । 12

फिर चिंगारियाँ उड़ाते हुए आग उगलने
वालों की । 13

फिर उनकी जो प्रातःकाल छापा मारते
हैं । 14

फिर वे इस (आक्रमण) के साथ धूल
उड़ाते हैं । 15

फिर वे इस (धूल) के साथ एक भीड़ के
बीचों-बीच जा पहुँचते हैं । 16

निःसन्देह मनुष्य अपने रब्ब का बड़ा
कृतघ्न है । 17

और निःसन्देह वह उस पर अवश्य साक्षी
है । 18

और निःसन्देह वह धन के मोह में बहुत
बढ़ा हुआ है । 19

अतः क्या वह नहीं जानता कि जो कङ्गों
में है, जब उसे निकाला जाएगा ? । 20

और जो सीनों में है उसे प्राप्त किया
जाएगा । 21 *

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالْعَدِيلِ صَبِحًا

فَالْمُؤْرِيَاتِ قَذْحًا

فَالْمُغَيْرَاتِ صَبِحًا

فَأَثْرَنَ بِهِ نَقْعَدًا

فَوَسْطَنَ بِهِ جَمْعًا

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرِبِّهِ لَكَنُودٌ

وَإِنَّهُ عَلَى ذَلِكَ لَشَهِيدٌ

وَإِنَّهُ لِحَبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بَعْثَرَ مَا فِي الْقُبُورِ

وَحْصِلَ مَا فِي الصَّدُورِ

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में अन्तिम युग की उन्नतियों की भविष्यवाणियाँ हैं । जो कङ्गों में हैं, उसे निकाला जाएगा से यह तात्पर्य है कि धरती के नीचे दबी हुई सभ्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त होगी । इस में पुरातत्त्व विज्ञान (Archaeology) में असाधारण उन्नति की भविष्यवाणी है जो इस समय हमारी आँखों के सामने पूरी हो रही है । पुरातत्त्वविद् हज़ारों वर्ष पूर्व गुज़र चुके लोगों के अवशेषों से उनके बारे में आश्चर्यजनक रूप से जानकारियाँ प्राप्त कर लेते हैं । →

نِإِنْ رَبُّهُمْ بِهِمْ يَوْمٌ يُمْنَذِلُ حَسِيرٌ^{۱۷}
निःसन्देह उनका रब्ब उस दिन उनसे पूर्णरूप से अवगत होगा ।12।

(रुकू १/२५)

←आयत संख्या 7 और जो सीनों में है उसे प्राप्त कर लिया जाएगा आजकल मनोरोग-विज्ञान में इस बात पर बहुत बल दिया गया है कि मानसिक रोगी तब तक ठीक नहीं हो सकता जब तक उसके मन की हालतों की जानकारी प्राप्त न की जाए । उसे नीम बेहोशी का टीका लगा कर डाक्टर जो प्रश्न करता है उससे उसके मन के समस्त रहस्य उगलवा लिए जाते हैं ।

101 – सूरः अल-कारिअः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं।

यह सूरः पिछली सूरः की चेतावनी को ही दोहरा रही है कि कभी-कभी मनुष्य को लापरवाही से जगाने के लिए एक भयंकर ध्वनि उसका द्वार खटखटाएगी। यह खटखटाने वाली ध्वनि क्या है? फिर विचार करो कि यह ध्वनि क्या है? जब भयंकर युद्धों के विनाश के परिणाम स्वरूप मनुष्य टिड़ी दल की भाँति तितर-वितर हो जाएगा और मानो पर्वत भी धुनी हुई ऊन की भाँति कण-कण कर दिए जाएँगे। यहाँ पर्वतों से अभिप्राय बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ हैं। निश्चित रूप से यहाँ किसी परकालीन कथामत का वर्णन नहीं है। क्योंकि तब तो पर्वत कण-कण नहीं किए जाएँगे। उस समय जिन जातियों के पास अधिक शक्तिशाली युद्ध-सामग्री होगी वे विजयी होंगी और जिनकी युद्ध-सामग्री प्रतिपक्ष की तुलना में कमज़ोर होंगी वे युद्ध के नरक में गिराई जाएँगी। यह एक भड़कती हुई अग्नि है।



سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكَّيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَا عَشْرَةَ آيَةً وَ رُكْونٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(प्रमाद से जगाने वाली) भयंकर
ध्वनि । 12।

الْقَارِعَةُ ②

वह भयंकर ध्वनि क्या है ? । 13।

مَا الْقَارِعَةُ ③

और तुझे क्या मालूम कि वह भयंकर
ध्वनि क्या है ? । 14।

وَمَا أَذْرِيكَ مَا الْقَارِعَةُ ④

जिस दिन लोग तितर-बितर की हुई
टिड़ियों की भाँति हो जाएँगे । 15।

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ
الْمُبْتُوِثِ ⑤

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो
जाएँगे । 16।

وَتَكُونُ الْجِبالُ كَالْعُمَنِ الْمُنْفُوشِ ⑥

अतः वह जिसके वज़न भारी होंगे । 17।

فَأَمَّا مَنْ تَقْلَتْ مَوَازِيْنَهُ ⑦

तो वह अवश्य एक मनभावन जीवन में
होगा । 18।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ⑧

और वह जिसके वज़न हल्के होंगे । 19।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنَهُ ⑨

तो उसकी माँ नरक होगी । 10।

فَأَمَّهُ هَاوِيَّهُ ⑩

और तुझे क्या मालूम कि यह क्या
है ? । 11।

وَمَا أَذْرِيكَ مَاهِيَّهُ ⑪

(यह) एक धधकती हुई अग्नि है।
है॥१२॥* (रुक् १/२६)

نَارٌ حَامِيَّةٌ ۝

- * इस सूरः के विषयवस्तु इस संसार पर भी लागू होते हैं। युद्धों में युद्ध-सामग्री की दृष्टि से जिन जातियों का पलड़ा भारी हो वही विजयी होती हैं और अपनी जीत के द्वारा सुख-सम्पन्नता प्राप्त करती हैं। जिन जातियों का पलड़ा युद्ध-सामग्री की दृष्टि से हल्का हो उनका अन्त यह होता है कि उनको युद्ध की अग्नि में भून दिया जाता है।
- इस विषयवस्तु को कथामत पर लागू करें तो भावार्थ यह होगा कि जिन लोगों के नेक कर्मों का पलड़ा भारी होगा वे स्वर्ग में आनंद उपभोग करेंगे और जिनके कुकर्मों का पलड़ा भारी होगा वे नरकाग्नि का कष्ट भोग करेंगे।

102—सूरः अत-तकासुर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य को सचेत किया गया है कि वह धन के मोह के परिणाम स्वरूप क़ब्रों तक पहुँच जाएगा । इसमें एक ओर तो बड़ी जातियों को सावधान किया गया है कि इस दौड़ का परिणाम सिवाएँ विनाश के और कुछ नहीं होगा और कुछ कमज़ोर लोगों की अवस्था भी वर्णन की गई है कि वे अपनी धन-सम्पत्ति की लालसा और इच्छाओं को पूरा करने के लिए क़ब्रों के परिभ्रमण करने से भी पीछे नहीं हटेंगे । इसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अर्थात् भौतिकवादी जातियों को और कु-धारणा के अनुगामी धार्मिक सम्प्रदायों को भी सचेत किया गया है कि इसका अन्तिम परिणाम यह होगा कि तुम उस अग्नि का ज्ञान प्राप्त कर लोगे जो तुम्हारे लिए भड़काई गई है और फिर तुम उसे अपनी आंखों के सामने देख लोगे । फिर जब तुम उसमें ज्ञोंके जाओगे तो तुमसे पूछा जाएगा कि अब बताओ कि सांसारिक सुख-सुविधाओं की अंधा-धुंध चाहत ने तुम्हें क्या दिया ?



سُورَةُ التَّكَاثُرُ مَكَانٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تَسْعُ آيَاتٍ وَرُكْونٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

एक दूसरे से बढ़ जाने की होड़ ने तुम्हें
लापरवाह बना दिया । 12।

أَهْسَكْمُ التَّكَاثُرُ ②

यहाँ तक कि तुमने कब्रिगाहों का भी
परिभ्रमण किया । 13।

حَتَّىٰ رُزْتُمُ الْمَقَابِرَ ③

सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे । 14।

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④

सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे । 15।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ⑤

फिर सावधान ! यदि तुम विश्वासपूर्ण
ज्ञान की सीमा तक जान लो । 16।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑥

तो अवश्य तुम नरक को देख लोगे । 17।

لَتَرَوْنَ الْجَحِيمَ ⑦

फिर तुम अवश्य उसे आंखों देखे
विश्वास की भाँति देखोगे । 18।

ثُمَّ لَتَرَوْنَهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑧

फिर उस दिन तुम सुख-समृद्धि के बारे में ^{۱۷}
अवश्य पूछे जाओगे । 19। (रुक् ^۱/_{۲۷})

ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمًا مِّنْ عَنِ التَّعْيِيرِ ⑨

103- सूरः अल-अस्त्र

यह आरम्भिक मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं।

इस सूरः में यह वर्णन किया गया है कि पिछली सूरतों में जिस प्रकार के लोगों का वर्णन है और जिस सांसारिक चाहत से डराया गया है उसके परिणाम स्वरूप एक ऐसा समय आएगा कि जब सारा जग साक्षी होगा कि वह मनुष्य घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उन्होंने सत्य पर अटल रहते हुए सत्य की शिक्षा दी और धैर्य पर अटल रहते हुए धैर्य की शिक्षा दी।



سُورَةُ الْعَصْرِ مَكَّيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبُشْرَى أَرْبَعُ آيَاتٍ وَ رُكْنُهُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार देया करने वाला है । ॥

काल की कसम । २।

وَالْعَصْرِ ①

निःसन्देह मनुष्य एक बड़े घाटे में है । ३।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي حُشْرٍ ①

सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और
नेक कर्म किए और सत्य पर अटल रहते
हुए एक दूसरे को सत्य का उपदेश दिया
और धैर्य पर अटल रहते हुए एक दूसरे
को धैर्य का उपदेश दिया । ४।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ

وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّابِرِ ②

(रुक् १/२४)

104— सूरः अल—हुमजः:

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 10 आयतें हैं।

सूरः अल् अस्स के पश्चात् सूरः अल् हुमजः आती है जो धन के लालायित जातियों के लिए अब तक दी गई चेतावनियों में सबसे बड़ी चेतावनी है। अल्लाह ने कहा, क्या उस युग का धनवान् व्यक्ति यह विचार करेगा कि उसके पास इस प्रकार अधिकता से धन इकट्ठा हो चुका है और वह उसे बेधइक अपनी सुरक्षा पर खर्च कर रहा है, मानो अब उसे इस संसार में चिरस्थायी श्रेष्ठता प्राप्त हो गई है? सावधान! वह एक ऐसी अग्नि में झोंका जाएगा जो छोटे से छोटे कणों में बन्द की गई है और तुझे क्या पता कि वह कौन सी अग्नि है?

यहाँ यह प्रश्न स्वभाविक रूप से उठता है कि छोटे से कण में अग्नि कैसे बंद की जा सकती है? अवश्यमेव यहाँ उस अग्नि का वर्णन है जो परमाणु (Atom) के भीतर बन्द होती है। अरबी शब्द हुतमः और परमाणु में ध्वन्यात्मक समानता है। यह वह अग्नि है जो दिलों पर लपकेगी और उन पर आक्रमण करने के लिए उसे ऐसे स्तम्भों में बन्द की गई है जो खींच कर लम्बे हो जाएँगे।

इस सूरः का विषयवस्तु मनुष्य को समझ आ ही नहीं सकता जब तक उस आणविक युग की परिस्थितियाँ उस पर उजागर न हों। वह आणविक तत्त्व जिसमें यह अग्नि बन्द है वह फटने से पहले खींचकर लम्बे किए गए स्तम्भों का रूप धारण करता है अर्थात् बढ़ते हुए आन्तरिक दबाव के कारण फैलने लगता है और उसकी आग लोगों के शरीर को जलाने से पहले उनके दिलों पर लपकती है और हृदयगति बन्द हो जाती है। समस्त वैज्ञानिक साक्षी हैं कि परमाणु बम फटने से बिल्कुल इसी प्रकार के प्रभाव प्रकट होते हैं। परमाणु बम के ज्वलनशील तत्त्व मनुष्य तक पहुँचने से पूर्व ही अत्यन्त शक्तिशाली रेडियो तरंगे हृदय की गति को बन्द कर देती हैं।

इसका एक और अर्थ यह भी है कि मनुष्य शरीर की कोशिकाओं में भी एक अग्नि छिपी है। जब वह प्रकट होगी तो फिर मनुष्य के हृदय पर लपकेगी और उसे नाकारा बना देगी।



سُورَةُ الْهَمَرَةِ مَكِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عَشْرُ آيَاتٍ وَرُكْنُ عَدْوٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

हर चुगलखोर (और) छिद्रान्वेषी का
सर्वनाश हो । 12।

जिसने धन इकट्ठा किया और उसकी
गणना करता रहा । 13।

वह विचार किया करता था कि उसका
धन उसे अमरत्व प्रदान करेगा । 14।

सावधान ! वह अवश्य हुतमः में गिराया
जाएगा । 15।

और तुझे क्या पता कि हुतमः क्या
है ? । 16।

वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि
है । 17।

जो दिलों पर लपकेगी । 18।

निःसन्देह वह उनके विशद्व बन्द करके
रखी गई है । 19।

ऐसे स्तम्भों में, जो खींच कर लम्बे किए
गए हैं । 10। (रुक् ۱۲۹)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

وَيْلٌ لِكُلِّ هَمَرٍ لَمَزَقَ ۝

الَّذِي جَمَعَ مَا لَا وَعْدَدَهُ ۝

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝

كَلَّا لَيَنْبَدَأُ فِي الْحُكْمَةِ ۝

وَمَا أَذْرِكَ مَا الْحُكْمَةُ ۝

نَارُ اللَّهِ الْمُؤْقَدَةُ ۝

الَّتِي تَطَلِّعُ عَلَى الْأَفْدَدَةِ ۝

إِنَّهَا عَيْمَهُ مُؤْصَدَةٌ ۝

فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ۝

105- सूरः अल-फ़ील

यह आरम्भिक मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं।

सांसारिक जातियों की उन्नति अन्ततः उस चरम बिंदू पर समाप्त होगी कि वे सारी बड़ी शक्तियाँ इस्लाम को नष्ट-ब्रष्ट करने पर तुली होंगी। कुरआन करीम अर्थात् मक्का को बड़ी-बड़ी वैभवशाली जातियों ने नष्ट करने का प्रयास किया था। वे अस्हाब-उल-फ़ील अर्थात् बड़े-बड़े हाथियों वाले थे। परन्तु इससे पूर्व कि वे उन बड़े-बड़े हाथियों पर सवार होकर मक्का तक पहुँचते उन पर अबाबील नामक चिड़ियों ने जो समुद्री चट्टानों की गुफाओं में घर बनाती हैं, ऐसे कंकर बरसाए जिन में चेचक रोग के कीटाणु थे और पूरी सेना में वह भयंकर रोग फैल गया और पल भर में वे शवों के ऐसे ढेर बन गए जैसे खाया हुआ भूसा हो। उनके शवों को शवभक्षी पक्षी पटक पटक कर धरती पर मारते थे। अतएव भविष्य में भी यदि किसी जाति ने शक्ति के बल पर इस्लाम को अथवा मक्का को अपमानित करने या तबाह करने का इरादा किया तो वह भी इसी प्रकार विनष्ट कर दी जाएगी।



سُورَةُ الْفَيْلِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क्या तू नहीं जानता कि तेरे रब्ब ने हाथी
वालों के साथ कैसा बर्ताव किया ? । 12।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
بِإِصْبَحِ الْفَيْلِ ②

क्या उसने उनकी योजना को व्यर्थ नहीं
कर दिया ? । 13।

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ③

और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी (नहीं)
भेजे ? । 14।

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَايِلَ ④

वे उन पर कंकर मिश्रित शुष्क मिट्टी के
देलों से पथराव कर रहे थे । 15।

تَرْمِيهِمْ بِحَجَارَةٍ مِنْ سِجِيلٍ ⑤

अतः उसने उन्हें खाए हुए भूसे की भाँति
बना दिया । 16। (रुक् । ३०)

ع

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّا كُوِلِّ ⑥

106 - सूरः कुरैश

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं।

सूरः अल-फ़ील के तुरन्त पश्चात् इस सूरः में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस प्रकार इस घटना से पूर्व मक्का निवासियों के व्यापारिक दल गर्मियों और सर्दियों में यात्रा करते थे और प्रत्येक प्रकार के फलों के द्वारा उनको भूख और भय से मुक्त करते थे, यही क्रम आगे भी जारी रहेगा।



سُورَةُ قُرْيَشٍ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُ آيَاتٍ وَرُكْنُوْعٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कुरैश में परस्पर मेल-जोल उत्पन्न करने
के लिए । ॥

لَا يُلِفُ قُرَيْشٌ ۝

(हाँ) उनमें मेल-जोल बढ़ाने के लिए
(हमने) सर्दियों और गर्मियों की यात्राएँ
बनाई हैं । ॥

الْفَهْرُ رِحْلَةُ الشَّتَاءِ وَالصَّيفِ ۝

अतः वे इस घर के रब्ब की उपासना
करें । ॥

فَلَيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۝

जिसने उन्हें भूख से (मुक्ति देते हुए)
भोजन कराया और उन्हें भय से शांति
प्रदान की । ॥ (रुक् ३१)

غ

الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ ۝
وَأَمْنَهُمْ مِنْ حَوْفٍ ۝

107- सूरः अल-माऊन

यह आरभिक मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 8 आयतें हैं।

इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध प्रतीत होता है कि जब अल्लाह तआला मुसलमानों को बहुतात के साथ सुख-संपन्नता प्रदान करेगा तो वे उसके मार्ग में खर्च करने से पीछे नहीं हटेंगे और वह उपासना जिसे का'बा के रव्व ने सिखाई उसमें कदापि दिखावे से काम नहीं लेंगे। अन्यथा उनकी नमाजें उनके लिए विनाश का कारण बन जाएँगी क्योंकि ऐसी नमाजें दिखावे की होंगी। इसी प्रकार उनका खर्च भी दिखावे का हुआ करेगा। दशा यह होगी कि वे बड़े-बड़े खर्च करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप उनको ख्याति प्राप्त हो परन्तु निर्धनों को छोटी से छोटी आवश्यकता की वस्तु भी देने में टाल-मटोल करेंगे।

سُورَةُ الْمَاعُونَ مَكْيَةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَةِ تَمَارِي إِيَّاَتٍ وَ رُكْنَوْعَ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 1।

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो
धर्म को झुठलाता है ? । 2।

अतः वही व्यक्ति है जो अनाथ को
धुतकारता है । 3।

और दरिद्र को भोजन कराने की प्रेरणा
नहीं देता । 4।

अतः उन नमाज़ पढ़ने वालों का सर्वनाश
हो । 5।

जो अपनी नमाज़ से असावधान रहते
हैं । 6।

वे लोग जो दिखावा करते हैं । 7।

और दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं को
भी (लोगों से) रोके रखते हैं । 8।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَرَءَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالِّدِينِ ③

فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتَمَ ④

وَلَا يَحْضُرُ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ⑤

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّيِّنَ ⑥

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ⑦

الَّذِينَ هُمْ يَرَأُونَ ⑧

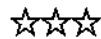
وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ⑨

108- सूरः अल-कौसर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।

सूरः अल-माऊन के तुरन्त पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी कौसर (हर चीज़ की बहुतात) प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया गया है जो कभी समाप्त नहीं होगी । इसका एक अर्थ तो यह है कि वह धन जिसे वे अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे, यदि वे उसे बिना सोचे समझे भी खर्च करें तब भी अल्लाह तआला और अधिक धन प्रदान करता चला जाएगा । और सबसे बड़ा शुभ-समाचार यह है कि आप सल्ल. को कुरआन प्रदान हुआ जिसके विषयवस्तु कभी न समाप्त होने वाले ख़ज़ाने की भाँति क्यामत तक मानव जाति के हित के लिए जारी रहेंगे । उसके विषयवस्तुओं के अन्त तक कोई पहुँच नहीं सकेगा ।

इसके पश्चात यह कहा गया है कि तू इस महान पुरस्कार प्राप्ति पर आभार व्यक्त करने के लिए उपासना कर और कुर्बानी दे । निःसन्देह तेरा शत्रु ही अब्तर रहेगा और तेरा उपकार कभी समाप्त होने वाला नहीं है ।



شَوَّرَةُ الْكَوْثَرِ مَكْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَرُكْنُهُ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

निःसन्देह हमने तुझे कौसर प्रदान किया
है । 12।

إِنَّمَا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ②

अतः अपने रब्ब के लिए नमाज़ पढ़ और
कुर्बानी दे । 13।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحِرُ ③

निःसन्देह तेरा शत्रु ही अब्दर है
रहेगा । 4। * (रुक् १३)

إِنَّمَا يَأْتِكَ مَوْلَاؤُ الْأَبْتَرِ ④

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मवक्का के काफिर अब्दर होने का व्यंग कसते थे अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई पुत्र-संतान नहीं । आप सल्ल. को यह शुभ-समाचार दिया गया कि वे जो पुत्र-संतान वाले हैं उनकी संतान भी आध्यात्मिक रूप से आपकी ओर सम्बन्धित होना अपने लिए गर्व समझेगी और अपने दुष्ट माता-पिता से अपना सम्बन्ध काट लेगी । अतः इस्लाम के शत्रु अबु-जहल के पुत्र इक्रमा रज़ि. के बारे में यह वर्णन उल्लेखित है कि उसके इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् किसी मुसलमान ने उस पर अबु-जहल के पुत्र होने का कटाक्ष किया तो उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इसकी शिकायत की और आप सल्ल. ने उस मुसलमान को उसे आगे अबु-जहल का पुत्र कहने से मना किया । (असदुल गाबा शब्द इक्रमा के अन्तर्गत) तो इस प्रकार अबु-जहल स्वयं अब्दर हो कर मरा और उसकी संतान आध्यात्मिक रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सम्बन्धित होने लगी ।

109 – सूरः अल-काफिरून

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं।

इस सूरः में काफिरों को फिर से चेतावनी दी गई है कि न कभी मैं तुम्हारे धर्म का अनुसरण करूँगा, न कभी तुम मेरे धर्म का अनुसरण करोगे। अतः तुम अपने धर्म पर चलते रहो और मैं अपने धर्म पर चलता रहूँगा।



سُورَةُ الْكَافِرُونِ مَكْيَّةٌ وَ هِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَ رُكْنُوْعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 1।

कह दे कि हे काफिरो ! 2।

मैं उसकी उपासना नहीं करूँगा जिसकी तुम उपासना करते हो । 3।

और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ । 4।

और मैं कभी उसकी उपासना करने वाला नहीं बनूँगा, जिसकी तुमने उपासना की है । 5।

और न तुम उसकी उपासना करने वाले बनोगे, जिसकी मैं उपासना करता हूँ । 6।

तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म । 7। (रुक् ३४)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكُفَّارُ ۖ ۱

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۖ ۲

وَلَا أَنْتُمْ عِبْدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ ۳

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُكُمْ ۖ ۴

وَلَا أَنْتُمْ عِبْدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ ۵

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِيَ دِيْنِي ۶

110- सूरः अन-नस्त्र

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं।

इस सूरः में वास्तव में कौसर ही का एक दूसरा रूप वर्णन किया गया है। अर्थात् जैसा कि कुरआनी पुरस्कार कभी समाप्त होने वाले नहीं, इसी प्रकार इस्लामी विजय-यात्राओं का क्रम भी असीमित होगा और वह समय अवश्य आएगा जब गिरोह के गिरोह लोग इस्लाम में शामिल होंगे। यह समय विजय शंख बजाने का नहीं बल्कि अल्लाह से क्षमायाचना करने का होगा। क्योंकि इन विजयों के परिणाम स्वरूप अहंकार उत्पन्न होना नहीं चाहिए बल्कि और भी अधिक विनम्रता पूर्वक इस विश्वास पर दृढ़ होना चाहिए कि यह केवल अल्लाह की कृपा से ही प्राप्त हुआ है। अतः ऐसे अवसर पर पहले से बढ़ कर क्षमायाचना में लगे रहना चाहिए और पहले से बढ़ कर अल्लाह का प्रशंसागान करना चाहिए।



سُورَةُ النُّصْرِ مَدْنَىٰ وَهِيَ مَعَ الْبُشْرَىٰ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَرُكْنُ عَوْنَىٰ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दिया करने वाला है । । ।

जब अल्लाह की सहायता और विजय
आएगी । । ।

और तू लोगों को देखेगा कि वे अल्लाह
के धर्म में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे
हैं । । ।

अतः अपने रब्ब की स्तुति के साथ
(उसका) गुणगान कर और उससे
क्षमायाचना कर । निःसन्देह वह बहुत
प्रायश्चित स्वीकार करने वाला है । । ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا جَاءَ نَصْرًا نَصَرَ اللَّهُ وَالْفَتْحُ ②

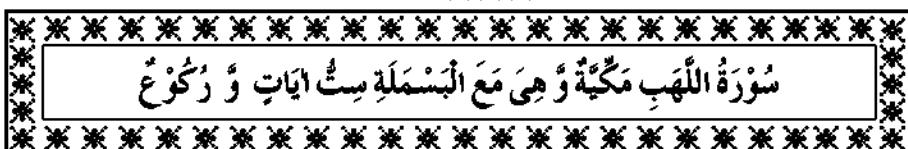
**وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي
دِيْنِ اللَّهِ أَفَوْاجَأَ ③**

**فَسَيِّدُ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ④
إِنَّهُ كَانَ تَوَابًا ⑤**

111- सूरः अल-लहब

यह आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं।

अबू-लहब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक चाचा का नाम था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध हर जगह घृणा फैलाता फिरता था और उसकी पत्नी भी इस काम में उसकी सहायत की थी। अल्लाह ने फर्माया : उसके दोनों हाथ काटे जाएँगे अर्थात् इस्लाम के विरुद्ध भविष्य में भी युद्ध के उन्माद भड़काने वालों को, चाहे वे दाहिने बाजू के हों अथवा वायें बाजू के हों, निन्दा, अपमान के अतिरिक्त उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा। और जो अधीनस्थ जातियाँ युद्ध का ईंधन जुटाने में उनकी सहायता करेंगी उनके भाग्य में तो फांसी के फंदे के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा।



अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 1।

अबू लहब के दोनों हाथ विनष्ट हो गए और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया । 2।

उसके धन और जो कुछ उसने कमाया, कुछ उसके काम न आया । 3।

वह अवश्य एक भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा । 4।

और उसकी पत्नी भी, इस अवस्था में कि वह बहुत ईंधन उठाए हुए होगी । 5।

उसकी गर्दन में खजूर की छाल का बटा हुआ सशक्त रस्सा होगा । 6।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَبَتْ يَدَا أَبْنِي لَهَبٍ وَ تَبَتْ

مَا أَغْلَى عَنْهُ مَا لَهُ وَ مَا كَسَبَ ②

سَيَضْلِي نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ③

وَ امْرَأَتُهُ حَمَالَةَ الْحَطَبِ ④

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ ⑤

112 – सूरः अल-इख्लास

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं।

यह एक बहुत छोटी सी सूरः है परन्तु इसमें उन महत्वपूर्ण विजयों का वादा दिया गया है जो ईसाइयत के विरुद्ध इस्लाम को प्राप्त होंगी और यह सूचना दी गई है कि न अल्लाह का कोई पिता था न उसका कोई पुत्र होगा। इस एक वाक्य से ईसाइयत का समूचा ढाँचा धराशाई हो जाता है। अर्थात् यदि अल्लाह का पिता नहीं तो उसमें पुत्र उत्पन्न करने के गुण कैसे आए? और ईसा अलै. जिन्हें अल्लाह तआला का काल्पनिक पुत्र कहा जाता है, उन्होंने अपने पिता से उन गुणों का अंश क्यों न लिया? और यदि पिता ने पुत्र पैदा किया था तो फिर आगे उनके पुत्र क्यों पैदा न हुए? इसके बाद यह कहा गया कि अल्लाह तआला का कोई समकक्ष नहीं है। इसलिए इस प्रकार की व्यर्थ बातें परम प्रशंसनीय अल्लाह की गुस्ताखी के अतिरिक्त और कुछ नहीं होंगी।



سُورَةُ الْإِخْلَاصِ مَكَّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ خَمْسُ آيَاتٍ وَرُكْنُهُ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है। 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि वह अल्लाह एक ही है। 12।

فَلَمْ يَوْمَ أَحَدٌ ②

अल्लाह को किसी की आवश्यकता नहीं
है। 13।

اللَّهُ الصَّمَدُ ③

न उसने किसी को जना और न वह जना
गया। 14।

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ④

और उसका कभी कोई समकक्ष नहीं
बना। 15। (रुकू ۳۷)

ع

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُواً أَحَدٌ ⑤

113- सूरः अल-फ़लकः

यह मदनी सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं।

इस सूरः में सचेत किया गया है कि प्रत्येक सुष्टि के परिणाम स्वरूप भलाई के अतिरिक्त अनिष्टता भी उत्पन्न होती है। अतः उनके अनिष्ट से अल्लाह की शरण माँगते रहो और उस अंधेरी रात के अनिष्ट से भी अल्लाह तआला की शरण माँगो जो एक बार फिर संसार पर छा जाने वाली है और उन जातियों के अनिष्ट से शरण माँगो जो मनुष्य को मनुष्य से और जातियों से जातियों को काट कर पृथक कर देती हैं। अर्थात् उनका सिद्धान्त ही यह है Divide and Rule कि यदि राज करना चाहते हो तो लोगों में फूट डाल दो। यह सब साम्राज्यवाद का सार है जिसने संसार पर कब्ज़ा करना था। इस के बावजूद इस्लाम अवश्य उन्नति करेगा। अन्यथा उसके नष्ट हो जाने पर तो उससे ईर्ष्या उत्पन्न नहीं हो सकती थी। ईर्ष्या का विषयवस्तु बताता है कि इस्लाम ने उन्नति करनी है और जब भी वह उन्नति करेगा, शत्रु उससे ईर्ष्या करेगा।



سُورَةُ الْفَلَقِ مَدْيَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि मैं (चीजों को) फाइ कर
(नई चीज़) पैदा करने वाले रब्ब की
शरण माँगता हूँ । 2।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ②

जो उसने पैदा किया, उसके अनिष्ट
से । 3।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ③

और अन्धेरा करने वाले के अनिष्ट से
जब वह छा चुका हो । 4।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ④

और गाँठों में फूंकने वालियों के अनिष्ट
से । 5। *

وَمِنْ شَرِّ النَّفَثَاتِ فِي الْعَقَدِ ⑤

और ईर्ष्या करने वाले के अनिष्ट से जब
वह ईर्ष्या करे । 6। (रुक् । ३४)

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑥

* इसका एक अर्थ तो यह किया जाता है कि जातू-टोनों के द्वारा आपसी सम्बन्धों की गाँठों में फूंकने वालियाँ । परन्तु वास्तव में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण भविष्यवाणी है और ऐसी जातियों से सम्बन्धित है जिनकी सत्ता Divide and Rule के सिद्धान्त पर होगी । अर्थात् जिन जातियों पर उन्होंने विजय प्राप्त करनी हो उनको परस्पर लड़ा कर शक्तिहीन कर देंगी और स्वयं शासक बन बैठेगी । विशेषकर पश्चिम वासियों ने सरे संसार पर इसी सिद्धान्त के द्वारा शासन किया है ।

114- सूरः अन-नास

यह मदनी सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं ।

यह सूरः यहूदियों और ईसाइयों के उन सभी सामुहिक प्रयासों को सारांशतः प्रस्तुत करती है जिनकी रूप-रेखा यह होगी कि वे मानव जाति के पालनहार होने का दावा करेंगे अर्थात् उनकी अर्थ-व्यवस्था के भी स्वामी बन बैठेंगे और उनकी राजनीति पर भी कब्ज़ा कर के उनके शासक बन बैठेंगे । इस प्रकार स्वयं उपास्य बन जाएँगे और जो उनकी उपासना करेगा उसको तो वे पुरस्कृत करेंगे और जो उनकी उपासना करने से इनकार करेगा वे उसको बर्बाद कर देंगे ।

उनका सबसे भयानक हथियार यह होगा कि वे ऐसे भ्रम उत्पन्न करने वाले की भाँति होंगे जो खुन्नास होगा अर्थात् लोगों के मन में भ्रम उत्पन्न करके स्वयं छुप जाएँगे । यही दशा इस युग की बड़ी शक्तियों अर्थात् पूजीवादियों की होगी और जन-शक्तियों अर्थात् साम्यवादियों की भी होगी । अतः जो भी इन सभी मामलों से अल्लाह तआला की शरण में आएगा अल्लाह तआला उसे बचा लेगा ।



سُورَةُ النَّاسِ مَدْبُوَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبُسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَرُكْزَعَ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा
करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और)
बार-बार दया करने वाला है । 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि मैं मनुष्यों के रब्ब की शरण
माँगता हूँ । 12।

فَلَأَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ②

मनुष्यों के सम्राट की । 13।

مَلِكِ النَّاسِ ③

मनुष्यों के उपास्य की । 14।

إِلَهِ النَّاسِ ④

अत्यधिक भ्रम उत्पन्न करने वाले के
अनिष्ट से, जो भ्रम डाल कर पीछे हट
जाता है । 15।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ⑤

वह जो मनुष्यों के दिलों में भ्रम डालता
है । 16।

الَّذِي يُوَسُّوْسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ⑥

(चाहे) वह जिन्नों में से हो (अर्थात् बड़े
लोगों में से) अथवा जन-साधारण में से
हो । 17।* (रुक् ۱۹)

۱۹

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑦

* आयत सं. 5 से 7 : यहाँ अंत्युग में यहूदियों और ईसाइयों की ओर से दूसरों के दिलों में भ्रांतियाँ
उत्पन्न करने की भविष्यवाणी की गई है । आयतांश अल् जिन्नति बन नासि से एक तो यह
अभिप्राय है कि बड़े लोगों के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी और छोटे लोगों अर्थात् जन-
साधारण के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी । अतः पूर्जीवादियों और साम्यवादियों के दिलों में
शैतान ने जो भ्रम डाला उसके कारण दोनों ही जाति नास्तिकता की ओर चली गई । दूसरा अभिप्राय
यह है कि यहूदी और ईसाइ दोनों भ्रम उत्पन्न करने वाले हैं । वे जिन लोगों पर शासन करते हैं उनके
ईमान में भी भ्रम उत्पन्न करके उनको दुर्बल कर देते हैं ।



कुरआन पढ़ने के बाद की दुआ

اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي بِالْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَاجْعَلْهُ لِي أَمَانًا وَنُورًا وَهُدًى وَرَحْمَةً.
اللَّهُمَّ ذِكْرِنِي مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعِلْمِنِي مِنْهُ مَا جَهَلْتُ وَارْزُقْنِي تَلَاقَتَهُ
أَيَّامَ الْأَيَّلِ وَأَيَّامَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِي حُجَّةً يَارَبُّ الْعَالَمِينَ.

“अल्लाहुम्रहम्नी बिल कुरआनिल् अज्जीम् । वजअल्हु ली
इमामव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रहमतन् । अल्लाहु म्म ज़क्किर्नी
मिन्हु मा नसीतु व अल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्जुक्नी तिलाव-
तहू आना अल्लैलि व आना अन्हारि वजअल्हु ली हुज्जतंय्या
रब्बल आलमीन ।”

हे मेरे अल्लाह ! महान कुरआन की वरकत से मुझ पर कृपा कर
और इसे मेरे लिए पथ-प्रदर्शक, प्रकाश, सन्मार्ग और करुणा स्वरूप
बना । हे मेरे अल्लाह ! पवित्र कुरआन में से जो कुछ मैं भूल चुका हूँ वह
मुझे याद दिला दे और जो कुछ मुझे नहीं आता वह मुझे सिखा दे । और
दिन-रात मुझे इसके पाठ करने की शक्ति प्रदान कर । और हे समस्त
लोकों के प्रतिपालक ! इसे मेरे हित में युक्ति स्वरूप बना दे ।



पारिभाषिक शब्दावली

- अल्लाह**
 - उस परम सत्ता का निजी नाम है जो समग्र सृष्टि का स्थाना और प्रतिपालक है। वास्तविक उपास्य अर्थात् ईश्वर। पवित्र कुर्�आन में अल्लाह के अनेक गुणवाचक नाम बताये गये हैं। अरबी भाषा में अल्लाह शब्द किसी अन्य वस्तु अथवा व्यक्ति के लिये तथा बहुवचन में कभी प्रयुक्त नहीं हुआ।
- अर्श**
 - सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।
- अहले किताब**
 - ग्रन्थधारी, यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रन्थ को ईशवाणी मानते हैं।
- अज्ञाब**
 - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।
- अरबी**
 - भाषाविशेष जो अरब प्रांत में बोली जाती है, जिसके शब्दावली अनेकार्थबोधक होते हैं।
- अजमी**
 - अरबी से इतर भाषाएँ।
- अनूसार**
 - सहयोगी। मदीना के वे लोग जिन्होंने मक्का से हिजरत करके आये हुये मुसलमानों की सहायता की थी।
- अरफ़ात**
 - मक्का से लगभग नौ मील की दूरी पर एक मैदान जहाँ हज्ज के महीना की नर्वी तिथि को सब हाजी एकत्रित होकर उपासना करते हैं। हर एक हाजी को यहाँ पहुँचना अनिवार्य है।
- अलैहिस्सलाम**
 - उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।
- अलैहस्सलाम**
 - उनपर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य किसी पुण्यवती स्त्री के नाम के बाद कहा जाता है।
- आयत**
 - पवित्र कुर्�आन की पंक्ति अथवा वाक्य। ईश्वरीय चि।
- आदम**
 - मानव-जगत की सुधार के लिये अल्लाह की ओर से आये हुए सर्वप्रथम अवतार।
- इंजील**
 - शुभ-समाचार। ईसाइयों का धर्मग्रन्थ।
- इमाम**
 - धार्मिक अगुआ। नबी, रसूल, पथ-प्रदर्शक तथा अनुकरणीय व्यक्ति।
- इहत**
 - एक मुसलमान स्त्री के विधवा होने अथवा तलाक पाने पर किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करने से पूर्व इस्लामी धर्मविधान के द्वारा निश्चित अवधि बिताने का नाम इहत है।
- इस्लाम**
 - आज्ञा पालन करना। इस्लाम वह धर्म है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने

| | |
|--------------------------|---|
| | लोगों के समक्ष पेश किया, जो अमन और शांति की शिक्षा देता है । |
| इस्लाईल | - अल्लाह का बीर या सैनिक । हज़रत याकूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को 'बनी इस्लाईल' (अर्थात् इस्लाईल की संतान) कहा जाता है । फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्लाईल रखा है । |
| इज़ज़त वाला महीना | - हुर्मत अर्थात् इज़ज़त वाले चार महीने, जो हिज्री संवत के जुल क्रमदः, जुल हज्ज़:, मुहर्रम और रजब हैं । इन महीनों में हज़ज़क्षेत्र में अनावश्यक रूप से किसी जीवधारी को मारना निषेध है । |
| इब्नीस ईमान | - जो अल्लाह की कृपा से निराश हो । शैतान । |
| उम्मत | - अर्थात् विश्वास और स्वीकार करना । जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना । |
| उम्मती नबी | - संप्रदाय । किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है । |
| उग्रा | - किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायिओं में से किसी का नबी पद प्राप्त करना । |
| उलेमा | - हज्ज के निश्चित दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में हज्ज के निश्चित उपासना-कर्म करना । |
| ए'तिकाफ़ | - इस्लामी धर्मज्ञ । |
| एहराम कलिमा | - रमज़ान के महीना की इक्कीसवीं तिथि से अंतिम तिथि तक अल्लाह की उपासना करने के लिये मस्जिद में एकांतवास करना । |
| क्रयामत कशफ़ | - हज्ज या उग्रा करते समय दो अनसिला चादरों वाला विशेष परिधान । |
| काफ़िर | - वचन । धर्मवाक्य । इस्लाम धर्म का मूलमन्त्र :- 'ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' (अल्लाह के सिवा अन्य कोई उपास्य नहीं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल हैं) |
| क़ायम करना क़ायम रहना | - महाप्रलय । मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन । |
| | - प्रकटित होना । जाग्रतावस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना । स्वप्न और कशफ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कशफ़ जागते में देखा जाता है । दिव्य-दर्शन । योगनिद्रा । |
| | - सज्जाई का इनकार करने वाला । इस्लाम धर्म का अस्वीकारी । |
| | - खड़ा करना । संभाल और संवार कर कोई काम करना । |
| | - अडिग रहना । चिरस्थायी । |

- किल्ला**
- आमने-सामने । जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । खाना का'बा मुसलमानों का किल्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं ।
- कुरआन**
- अल्लाह की वाणी जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है ।
- कुर्बानी**
- त्याग, बलिदान । ईदुज्जुहा के बाद तथा हज्ज करने के समय ज़िबह किया जाने वाला पशु ।
- कुर्बान गाह**
- कुर्बानी के लिये निश्चित स्थान ।
- कुफ़्**
- सच्चाई का अस्वीकार । इस्लाम का इनकार करना ।
- खलीफ़ा**
- उत्तराधिकारी । अधिनायक । नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला ।
- खाना का'बा**
- मक्का में स्थित एक चौकोर भवन । संसार में एक ईश्वर की उपासना-गृह के रूप में सर्वप्रथम इसका निर्माण हुआ था । हज़रत इब्राहीम अलै. और उनके पुत्र हज़रत इस्माईल अलै. ने इसका जीर्णोद्धार किया था । हज्ज के समय इस गृह की परिक्रमा की जाती है ।
- खिलाफ़त**
- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख खलीफ़ा कहलाता है ।
- ग़नीमत**
- युद्ध-लब्ध धन ।
- ज़कात**
- इस्लाम का वह आर्थिक कर जो धनवान मुसलमानों से निश्चित दर से लिया जाता है और निर्धारित में बाँट दिया जाता है । इसे राष्ट्रहित में भी खर्च किया जा सकता है ।
- जनाज़:**
- कफ़न में लपेटा हुआ शव । इस्लामी धर्मविधान के अनुसार मृतक के लिए जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसे नमाज़ जनाज़: कहते हैं ।
- ज़बूर**
- हज़रत दाऊद अलै. को अल्लाह की ओर से दिया गया धर्मग्रंथ ।
- जिज़या**
- वह कर जिसे गैर-मुस्लिम प्रजा से उनकी जान-माल और मान-सम्मान की सुरक्षा के लिए सैन्य सेवाओं के उद्देश्य से लिया जाता है ।
- जिन्न**
- छिपी रहने वाली सृष्टि । बड़े लोग, धनपति जो द्वारपालों और पद्मों के पीछे छिपे रहते हैं । बैकटीरिया, वायरस ।
- ज़िबह**
- अल्लाह का नाम लेकर भोजन के उद्देश्य से किसी जीव का गला काट कर वध करना ।
- जिब्रील**
- ईश्वराणी लाने वाला फ़रिशता ।
- जिहाद**
- प्रबल उद्यम करना । अपने को सुधारने के लिये तथा धर्मप्रचार के लिये

- जुंबी** प्रयत्न करना । सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना ।
- तक्कवा** - वीर्यस्खलित अपवित्र व्यक्ति । स्नान करने के उपरांत जुंबी-व्यक्ति पवित्र होता है ।
- तबअ ताबयीन** - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना । संयम, धर्मपरायणता ।
- तयम्मुम** - ताबयीन के अनुगामी । जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा ।
- तरका** - पानी न मिलने और बीमार होने के कारण वजू के बदले पवित्र मिट्टी पर हाथ मार कर उससे अपने मुँह और हाथों को मलना ।
- तलाक़** - मृत व्यक्ति की सम्पत्ति ।
- तहज्जुद** - छुटकारा । पति का विवाह-बंधन को तोड़ कर पत्नी को छोड़ने की घोषणा करना ।
- ताबयीन** - अर्धरात्रि के पश्चात और प्रातःकालीन नमाज़ से पूर्व पढ़ी जाने वाली नमाज़ ।
- तौरात** - अनुगमन कारी । वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहायियों को देखा ।
- दज्जाल** - झूठा । धोखेबाज । अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाली एक शक्ति ।
- दुर्स्वद व सलाम** - हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ ।
- नबी** - लोगों को सन्मार्ग प्रदर्शित कराने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अद्वृष्ट विषय से अवगत कराया जाता है । अवतार ।
- नमाज़** - इस्लामी उपासना । दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती है । जिनके नाम फ़त्त्र, जुहर, अस्त्र, मशरिब और इशा ।
- निकाह** - विवाह । कुछ निर्दिष्ट कुर्�आनी आयतों का पाठ करके पुरुष और स्त्री की सम्मति से लोगों की उपस्थिति में उनके विवाह की घोषणा करना ।
- तुबुव्वत** - नबी बनने की क्रिया । अवतारत्व ।
- नूर** - प्रकाश, ज्योति ।
- नेक** - सदाचारी ।
- नेमत** - अल्लाह की देन ।
- पारः (सिपारः)** - पवित्र कुर्�आन का भाग । पवित्र कुर्�आन को तीस भागों में बिभाजित किया गया है ।

| | |
|-----------------------|---|
| पैगम्बर | - अल्लाह का सदेशवाहक । नबी । रसूल । |
| फ़तवा | - धर्मदिश । किसी कर्म के उचित या अनुचित होने के संबंध में इस्लामी धर्माचार्य के द्वारा इस्लामी शास्त्रों के अनुसार दी गई व्यवस्था । |
| फ़रिश्ता | - देवदूत जो पुण्यवान और पापमुक्त होते हैं, अल्लाह जो आदेश देता है वे उसका पालन करते हैं । |
| फ़िक़्र: | - इस्लामी-विधान शास्त्र । |
| फ़िरदौस | - स्वर्ग । उद्यान । |
| फुर्कान | - सत्य और असत्य का प्रभेदक । पवित्र कुर्�आन । |
| बरकत | - बदोत्तरी । समृद्धि । |
| बनी इमार्झिल | - इमार्झिल की संतान । ('इमार्झिल' शब्द भी देखें) |
| बैअत | - बिक जाना । धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना । |
| बैतुल मुक़द्दस | - येरुशेलम में स्थित एक पवित्र उपासना स्थल जिसे मस्जिद-ए-अक्सा भी कहा जाता है । |
| मन्न | - तुरंजबीन । बिना परिश्रम के मिलने वाली चीज़ । अल्लाह की ओर से बनी इमार्झिल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में मिलने वाला खाद्यविशेष । |
| मशूर-ए-हराम | - मक्का का वह स्थान जहाँ पर हज्ज करने वालें कुर्बानी देते हैं, सिर मुँडवाते हैं और अल्लाह की उपासना करते हैं । |
| मसह | - मलना । तयम्मुम करते हुए पवित्र मिट्टी से हाथों और मुँह को मलना । |
| मस्जिद | - मुसलमानों का उपासना गृह । |
| मस्जिद-ए-अक्सा | - दूरवर्ती मस्जिद । येरुशेलम में स्थित पवित्र उपासना स्थल । |
| मस्जिद-ए-हराम | - सम्माननीय मस्जिद । खाना का 'बा जो मक्का में स्थित है । |
| मीकार्झिल | - एक फ़रिश्ता, जिस का काम प्रायः सांसारिक उन्नति के साधन उपलब्ध करना है । |
| मुश्रिक | - शिर्क करने वाला । अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति । |
| मुनाफ़िक | - कपटाचारी । वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसका अस्वीकार करने वाला हो । |
| मुत्तकी | - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति । धर्मपरायण । |

| | |
|--|---|
| मुखाहल: | - एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो ज्ञूठा है उस पर अल्लाह की लाभनत हो। |
| मुहाजिर में राज मोमिन | <ul style="list-style-type: none"> - स्वदेश को छोड़ कर अन्य स्थान में बसने वाला व्यक्ति। प्रवासी। - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई। - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रन्थों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति। |
| यहूदी याजूज-माजूज रङ्ग रहमान रहीम रसूल रज़ियल्लाहु अन्हु/ अन्हा | <ul style="list-style-type: none"> - हज़रत मूसा अलै. का अनुयायी। - अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ। - प्रतिपालक। अल्लाह का गुणवाचक नाम। - बिन मांगे देने वाला। अल्लाह का एक गुणवाचक नाम। - बार बार दया करने वाला। अल्लाह एक गुणवाचक नाम। - अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत। (देखें 'नबी' की परिभाषा भी) - अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहावियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हु' और महिला सहावियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हा' वाक्य प्रयुक्त होता है। |
| रहिमहुल्लाहु तआला राहिब रिसालत रुकू रुकू रुह रुह-उल-कुदुस रुह-उल-अमीन रोज़ः लाभनत | <ul style="list-style-type: none"> - उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के बाद प्रयुक्त होता है। - सन्यासी। वह ईसाई पुरुष जो सांसारिक सुखों से निवृत्त हो चुका हो। - अवतारत्व, दूतत्व, पैग़म्बरी। - झुकना। नमाज़ में घुटनों पर हाथ रखकर झुकने की अवस्था। - पवित्र कुर्�आन की सूरतों के अंतर्गत आयत समूहों भाग। कुर्�आन में कुल 540 रुकू हैं। - आत्मा। - पवित्रात्मा। ईश्वाणी लाने वाला फ़रिश्ता। - जिब्रील, जो ईश्वाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं। - उपवास। इस्लामी धर्म विधान के अनुसार पौ फटने से लेकर सूर्यास्त होने तक बिना खाये-पिये और वासनाओं को त्याग करके प्रार्थनाओं में समय बिताना। - अभिशाप, अमंगल कामना। |

| | |
|-------------------------|--|
| वसीयत | - इच्छापत्र, मृत्यु-लेख । आदेश । |
| वहइ | - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश या सूक्ष्म झशारा । ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वहई के द्वारा होता है । पवित्र कुरआन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वहइ के द्वारा ही उत्तरा है । |
| शरीयत | - इस्लामी धर्मविधान । |
| शहीद | - साक्षी । अल्लाह के लिए जान देने वाला । हर एक बात का ज्ञान रखने वाला, निरिक्षक । अल्लाह का एक गुणवाचक नाम । |
| शिर्क | - अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना । |
| शैतान | - पापों की प्रेरणा देने वाला, अल्लाह से दूर ले जाने वाला । |
| सब्त | - शनिवार । यहूदियों के साप्ताहिक उपासना का दिन । |
| सजदः | - आज्ञापालन करना । नमाज़ पढ़ते समय धरती पर माथा रखकर उपासना करने की दशा । |
| सफा-मरवा | - मक्का में खाना का'बा के पास की दो पहाड़ियाँ । हज्ज और उमरः करते समय इन दो पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाए जाते हैं । |
| सलाम | - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन । मुसलमान परस्पर “अस्सलामु अलैकुम” कहकर अभिवादन करते हैं जिसका अर्थ यह है कि तुम पर शांति अवतरित हो । |
| सलीब | - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था । |
| संगसार | - मृत्युदंड देने की एक विधि, जिसमें अपराधी की पत्थर मार-मार कर हत्या की जाती थी । |
| सल्लल्लाहु अलैहि | - उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के लिए मंगलकामना करते हुए आपके नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है । |
| व सल्लम | - वे अनुग्रहीत करते हुए आपकी संगति प्राप्त हुई । |
| सल्वा | - शहद । बटेर प्रजाति की एक पक्षी जो अल्लाह की ओर से बनी इस्लाईल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में भोजन के रूप में मिली थी । |
| सहाबी | - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुग्रामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई । |
| साबी | - नक्षत्र पूजक । धर्म का अस्वीकारी । |
| सामरी | - बनी इस्लाईल को धर्मग्रष्ट करने वाला एक व्यक्ति जिसे हज़रत मूसा अलै. ने अभिशाप दिया था । |
| सिद्दीकः | - अपने कर्म से अपनी बात को सत्य सिद्ध करने वाला । सत्यभाषी । |

- सूरः / सूरत** - पवित्र कुरआन का अध्याय | पवित्र कुरआन में 114 अध्याय हैं।
- हज़रत** - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।
- हक़ महर / महर** - स्त्रीधन । वह धन जिसे विवाह के समय पुरुष अपनी पत्नी को देने की प्रतिज्ञा करता है । यह धन स्त्री की निजी सम्पत्ति होती है । पुरुष की आय के अनुरूप हक़ महर तय होता है । निकाह के समय सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा की जाती है ।
- हराम** - इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार अवैध ।
- हलाल** - इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार वैध ।
- हज़ज** - इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ और एक विशेष उपासना । जिसे जुल्हज महीना की निश्चित तिथियों में मक्का में जाकर खाना का 'बा की परिक्रमा तथा अरफात मैदान आदि स्थानों में उपस्थित होकर पूरा किया जाता है ।
- हज़जे अकबर** - मक्का विजय के उपरांत इस्लामी अनुशासन के अधीन होने वाला पहला हज़ज ।
- हवायक** - सहायक, साथी । हज़रत ईसा अलै. के साथी ।
- हदीस** - हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उपदेशावली जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रन्थबद्ध किया गया । इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रन्थों को 'सहा सित्ता' कहा जाता है । इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रन्थ हैं ।
- हिजरत** - देशांतरण । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना आ जाने की घटना हिजरत के नाम से ख्यात है ।
- हिदायत** - सन्मार्प प्राप्ति ।

संक्षिप्त रूप

| | | |
|-------------|---|--------------------------|
| अलै. | - | अलैहिस्सलाम |
| अलैहा. | - | अलैहस्सलाम |
| रज़ि. | - | रज़ियल्लाहु अन्हु |
| रज़ि. अन्हा | - | रज़ियल्लाहु अन्हा |
| रहि. | - | रहिमहुल्लाहु तआला |
| सल्ल. | - | सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम |

विषय सूची

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|-----------------------------|-------------------------------|
| अ | | | |
| अल्लाह तआला | | | |
| मनुष्य की प्रकृति में ही अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण है | अल बक्रः अल आ'राफ लुकमान अल फ़ातिहः | 29 173 33 2-4 | 9 305 788 2 |
| अल्लाह के चार प्रमुख गुणवाचक नाम : रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का रब्ब), अर-रहमान (विन माँगे देने वाला), अर-रहीम (बार-बार दया करने वाला), मालिके यौमिदीन (कर्मफल दिवस का स्वामी) | | | |
| अल्लाह एक है | अल बक्रः आले इम्रान आले इम्रान अल इज्जलास अल अन्नाम | 164 19 63 2 164 | 42 89 99 1302 263 |
| अल्लाह का कोई साझीदार नहीं | अत तौबः अल फुकर्न अल हदीद | 31 3 4 | 341 672 1082 |
| वही आदि, वही अंत, वही प्रकाश्य, वही अप्रकाश्य है | अर रहमान अल फ़ातिहः अन नूर अल बक्रः | 27,28 5 36 256 | 1062 2 661 72 |
| केवल अल्लाह की सत्ता अनश्वर है | | | |
| केवल वही उपासना करने योग्य है | | | |
| अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है | | | |
| अल्लाह का साम्राज्य धरती और आकाश पर व्याप्त है | | | |
| सभी साम्राज्य उसीके अधीनस्थ हैं | अल मुल्क | 2 | 1144 |
| धरती और आकाश की प्रत्येक वस्तु अल्लाह को सजदः करती है | अर राद | 16 | 450 |
| प्रत्येक वस्तुत पर अल्लाह स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है | अल बक्रः | 21 | 7 |
| अल्लाह अपने निर्णय पर सामर्थ्य रखता है | यूसुफ़ | 22 | 424 |
| अल्लाह जो चाहता है करता है | अल हज्ज | 15 | 620 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|------------------------------------|--|
| अल्लाह के “ज़िल मआरिज” (ऊँचाइयों वाला) होने की आवश्यकता | सूरः परिचय | | 1161 |
| वह धरती और आकाश की सृष्टि से नहीं थकता अल्लाह की कृपा प्रत्येक वस्तु पर छाई है अल्लाह स्वयं अपने रास्तों की ओर मार्गदर्शन करता है | अल अहकाफ़ अल आ’राफ़ अल अन्कबूत | 34 157 70 | 992 300 764 |
| अल्लाह की ओर जाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता | अल इन्शिकाक | 7 | 1235 |
| अल्लाह रसूल चुनता रहता है अल्लाह और उसके रसूल सदा विजयी होते हैं अल्लाह मोमिनों की अवश्य सहायता करता है अल्लाह के रहमान गुणवाचक नाम के संपूर्ण द्योतक हज़रत मुहम्मद सल्ल. हैं सब सुंदर नाम अल्लाह ही के हैं | अल हज्ज अल मुजादलः अर रूम सूरः परिचय अल आ’राफ़ अल हश्र | 76 22 48 596 181 25 | 632 1096 775 596 306 1105 |
| अल-हय्यु (सदा जीवित रहने वाला), अल-क़ल्यूम (स्वयं पतिष्ठित) | अल बकरः | 256 | 72 |
| मलिक (सम्राट), कुदूस (पवित्र), सलाम (सलामती), मु’मिन (शांतिदायक), मुहैमिन (निरीक्षक), अजीज (पूर्ण प्रभुत्व वाला), जब्बार (बिंगड़े काम बनाने वाला) और मुतक़ब्बिर (महिमावान) | अल हश्र | 24 | 1104 |
| खालिक (सृष्टिकर्ता), बारी (सृष्टि का आरंभ करने वाला), और मुस़ब्बिर (आकृतिदाता) केवल ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता को ही जोड़े की आवश्यकता नहीं अन्यथा सारी सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है | अल हश्र सूरः परिचय | 25 846 | 1105 |
| अल्लाह अकेला, उसको किसी की आवश्यकता नहीं, न उसने किसी को जना और न वह जना गया, उसका कोई समकक्ष नहीं | अल इज़लास | 2-5 | 1302 |
| अल्लाह जैसा कोई नहीं | अश शूरा | 12 | 944 |
| अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन नहीं होता | बनी इस्माईल फ़ातिर | 78 44 | 529 844 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------|
| अल्लाह को आँखें पा नहीं सकतीं, हाँ वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है | अल अन्नाम | 104 | 248 |
| अल्लाह मनुष्य के प्राणस्नायु से अधिक निकट है | क़ाफ़ | 17 | 1023 |
| अल्लाह दुआ सुनता है | अल बक़ऱ: | 187 | 49 |
| ज्ञान के बल पर अल्लाह के अंत को नहीं पाया जा सकता | ताहा | 111 | 590 |
| केवल अल्लाह ही अदृश्य ज्ञाता है | अन नम्ल | 66 | 724 |
| वह दृश्य अदृश्य का ज्ञाता है | अल हश्र | 23 | 1104 |
| वह दिल के रहस्यों और धरती और आकाशों के रहस्यों को जानता है | आले इम्रान | 30 | 92 |
| उससे कण भर कोई वस्तु छुपी नहीं रहती | यूनुस | 62 | 381 |
| जीवन और मरण केवल अल्लाह के अधीन है | अल हिज्र | 24 | 475 |
| समग्र सृष्टि को अल्लाह ही जीविका प्रदान करता है | अल अन्कबूत | 61 | 762 |
| मनुष्य के बदले नई सृष्टि लाने पर अल्लाह समर्थ है | इब्राहीम | 20 | 464 |
| अल्लाह की विवेकशीलता और कुदरत कोई लिपिबद्ध नहीं कर सकता | सूरः परिचय | | 780 |
| अल्लाह प्रत्येक दोष से पवित्र है | अल बक़ऱ: | 31 | 10 |
| | अल बक़ऱ: | 33 | 10 |
| अल्लाह संतान (की आवश्यकता) से पवित्र है | बनी इस्माईल | 44 | 523 |
| | अल बक़ऱ: | 117 | 31 |
| | अन निसा | 172 | 182 |
| अल्लाह प्रजनन व्यवस्था से पूर्णतः पवित्र है | अल अन्नाम | 101 | 247 |
| उसकी न कोई पत्ती है न कोई पुत्र | सूरः परिचय | | 536 |
| अल्लाह तआला न भटकता है न भूलता है | अल जिन्न | 4 | 1175 |
| अल्लाह को न ऊँध आती है न नींद | ताहा | 53 | 581 |
| अल्लाह थकान से पवित्र है | अल बक़ऱ: | 256 | 72 |
| | अल बक़ऱ: | 256 | 73 |
| अल्लाह को भोजन की आवश्यकता नहीं | क़ाफ़ | 39 | 1025 |
| अनेकेश्वरवाद | अल अन्नाम | 15 | 227 |
| (अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों का खंडन) | | | |
| अल्लाह का साझीदार ठहराने वालों को वह कदापि क्षमा नहीं करता | अन निसा | 49, 117 | 149,168 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-----------------------|------------|------------|
| अल्लाह के सिवा जिनकी उपासना की जाती है वे कुछ पैदा नहीं कर सकते बल्कि स्वयं पैदा किए गए हैं और वे मुर्दे हैं | अन नह्ल अल फुर्कान | 21,22 4 | 491 672 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य कहीं से कोई जीविका प्रदान करने की शक्ति नहीं रखते | अन नह्ल अल अन्कबूत | 74 18 | 500 754 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य और उनके उपासक नरक के ईंधन हैं | अल अम्बिया | 99 | 611 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों के बारे में कोई भी तर्क नहीं है | अल हज्ज | 72 | 631 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य एक मकड़ी तक पैदा नहीं कर सकते बल्कि मकड़ी से भी अधिक असहाय हैं | अल हज्ज सूरः परिचय | 74 - | 631 616 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य मकड़ी के जाले के समान कमज़ोर हैं | अल अन्कबूत | 42 | 758,759 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी चीज़ के भी स्वामी नहीं | सबा | 23 | 825,826 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य अल्लाह के इरादे को बदल नहीं सकते | अज़ जुमर | 39 | 898 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य क्यामत तक किसी बात का उत्तर नहीं दे सकते | अल अहकाफ अर राद | 6 15 | 985 450 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य स्वयं अपनी सहायता करने भी मैं समर्थ नहीं | अल अम्बिया | 44 | 603 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य वस्तुतः कुछ काल्पनिक नाम हैं | यूसुफ | 41 | 429 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी का कष्ट निवारण नहीं कर सकते | बनी इस्माईल | 57 | 525 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य मिथ्या के सिवा कुछ नहीं | अल हज्ज लुक्मान | 63 31 | 629 787 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य खज्जूर की गुठली की झिल्ली के भी स्वामी नहीं | फ़ातिर | 14 | 838 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी बात का निर्णय नहीं कर सकते | अल मु'मिन | 21 | 912 |
| अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य क्यामत के दिन | अल मु'मिन | 74,75 | 922 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-----------------------------------|----------------|---------------------|
| अपने उपासकों से खो जाएँगे अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी लाभ-हानि पहुँचाने की शक्ति नहीं रखते | अल माइदः अल अन्याम यूनुस | 77 72 19 | 209 240 372 |
| अर्श | | | |
| अर्श पर स्थित होने का अर्थ फरिश्ते उसके अर्श के बातावरण को घेरे हुए हैं कथामत के दिन आठ फरिश्तों ने अर्श को उठाया हुआ होगा | अल हदीद अज़ जुमर अल हाक़क़ः | 5 76 18 | 1082 906 1157 |
| पानी पर अर्श स्थित होने से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद सल्ल. का निर्मल हृदय अल्लाह का वास स्थान है | हूद सूरः परिचय | 8 टीका | 395 907 |
| फरिश्तों का अर्श को उठाने का तात्पर्य | टीका | | 907 |
| अदृश्य विषय (गैब) | | | |
| अल्लाह अपने रसूलों पर ही अदृश्य विषय प्रकट करता है | आले इम्रान | 180 | 126 |
| ब्रह्माण्ड के गुप्त रहस्यों पर से सर्वज्ञ अल्लाह ही पर्दा उठा सकता है | अल जिन्न | 27,28 | 1178 |
| अतीत के बारे में जानकारी | सूरः परिचय | | 445 |
| अवतरण (नुजूल) | सूरः परिचय | | 419 |
| ‘नुजूल’ शब्द का जो अनुवाद लोग करते हैं उसकी दृष्टि से यह मानना पड़ेगा कि लोहा आकाश से बरसा है | | | 1080 |
| लोहा का उतारा जाना | अल हदीद | 26 | 1088 |
| कुरआन का उतारा जाना | अद दहर | 24 | 1199 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अनुस्मारक और रसूल के रूप में अवतरण | अत तलाक | 11,12 | 1134 |
| मवेशियों का उतारा जाना | अज़ जुमर | 7 | 892 |
| वस्त्र का अवतरण | अल आ'राफ़ | 27 | 272 |
| अंत्ययुगीन | | | |
| अंत्ययुगीनों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आविर्भाव | अल जुमुअः टीका सूरः परिचय | 4 | 1118 1126 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------------------|--------------|-------|
| अंत्युगीनों के एकत्र होने का दिन खरे-खोटे में प्रभेद करने का दिन होगा | सूरः परिचय | | 1126 |
| धर्मसेवा के लिए अत्यधिक अर्थदान करने का समय पीड़ित अहमदियों को आग में जलाये जाने के बारे में भविष्यवाणी | सूरः परिचय सूरः परिचय | 1126 1238 | |
| अंत्युगीन मुसलमानों की भारी संख्या की मुनाफिकों के साथ समानता | सूरः परिचय | | 1122 |
| परवर्ती काल के मुसलमानों के बारे में भविष्यवाणी कि व्यापार के लिए वे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम को अकेला छोड़ देंगे | सूरः परिचय | | 1117 |
| अहले किताब | | | |
| अहले किताब को ईमान लाने का निर्देश | अन् निसा | 48 | 149 |
| अल्लाह और उसके रसूल तथा उसकी शिक्षाओं पर कई अहले किताब का ईमान लाना | आले इम्रान | 200 | 131 |
| कई अहले किताब का रात्रि के समय उपासना करना | आले इम्रान | 114 | 111 |
| कई अहले किताब का पुण्यकर्म करना | आले इम्रान | 115 | 111 |
| कई अहले किताब का अमानतदार होना और कइयों का बर्दीमान होना | आले इम्रान | 76 | 102 |
| अहले किताब से दृढ़ वचन लिया गया है कि अपनी पुस्तकों की सच्चाइयों को न छुपायें | आले इम्रान | 188 | 128 |
| अहले किताब के प्रत्येक संप्रदाय में से कुछ लोग मसीह की मृत्यु से पूर्व उन पर अवश्य ईमान लायेंगे | अन निसा | 160 | 179 |
| अहले किताब को साँझा सिद्धांत पर सहमत होने का आहान | आले इम्रान | 65 | 100 |
| अहले किताब पर कुरआन अवतरण के प्रभाव | अल् बर्यिनः | 2-6 | 1278 |
| अहले किताब की तुलना में यह नबी और इसके अनुयायी इब्राहीम अलै. के अधिक निकट हैं | आले इम्रान | 69 | 101 |
| नवियों से अहले किताब की अनुचित माँगें | अन निसा | 154 | 177 |
| अहले किताब का ऐसी कुर्बानी का चिह्न माँगना जिसे आग खा जाये | आले इम्रान | 184 | 127 |
| अहले किताब का कर्म और विश्वास | | | |
| अहले किताब का धर्म में अतिशयोक्ति और भूल विश्वास | अन निसा | 172 | 182 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------|---------|---------|
| सत्य को मिथ्या के साथ मिलाकर सत्य को छिपाना | आले इम्रान | 72 | 101 |
| अल्लाह के चिह्नों का इनकार | आले इम्रान | 71 | 101 |
| अहले किताब के बड़े अपराध | अन निसा | 156-158 | 177,178 |
| अहले किताब का इस्लाम के विरुद्ध घट्यंत्र | | | |
| मुसलमानों को कोई भलाई मिलने को अप्रिय जानना | अल बक्रः | 106 | 28 |
| लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकना | आले इम्रान | 100 | 108 |
| मुसलमानों को पथभ्रष्ट और विधर्मी बनाने का घट्यंत्र | अल बक्रः | 110 | 29 |
| | आले इम्रान | 70 | 101 |
| | आले इम्रान | 71 | 101 |
| अहले किताब के साथ व्यवहार | | | |
| अहले किताब की महिलाओं से विवाह करने की अनुमति | अल माइदः | 6 | 189 |
| अहले किताब के हाथ का पका हुआ भोजन खाने की अनुमति | अल माइदः | 6 | 189 |
| गैर मुस्लिम प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सद-व्यवहार की शिक्षा | अल मुम्तहिनः | 9 टीका | 1109 |
| अर्थ-व्यवस्था | | | |
| तुम्हारे धन में माँगने वालों और न माँगने वाले ज़रूरतमंदों का भी हक्क है | अज़ ज़ारियात | 20 | 1030 |
| धन केवल धनिकों के बीच चक्कर न खाता रहे ब्याज लेने से बचने की शिक्षा | अल हश्र | 8 | 1100 |
| | अल बक्रः | 279 | 80 |
| | अर रूम | 40 | 774 |
| | आले इम्रान | 131 | 115 |
| जुआ, मूर्तिपूजा और तीर चलाकर भाग्य जानने की मनाही | अल माइदः | 91 | 213 |
| व्यापार के द्वारा लाभ कमाना उचित है | अन निसा | 30 | 143 |
| वर्तमान कालीन व्यापार का विश्लेषण | सूरः परिचय | | 1230 |
| खर्च करने में मध्यमार्ग अपनाने की शिक्षा | अल फुर्कन | 68 | 682 |
| धन के प्रति लालायित लोगों के लिये चेतावनी | सूरः परिचय | | 1291 |
| दूसरों की धन-संपत्ति को हथियाने के लिये अधिकारियों को रिश्वत देने की मनाही | अल बक्रः | 189 | 50 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-----------------|----------|-----------|
| अहंकार | | | |
| अहंकारी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा | अल आ'राफ़ | 41 | 275 |
| इब्लीस अहंकार के कारण आदम के लिए सजदः नहीं किया | अल बक्रः साद | 35 75 | 10 887 |
| अहंकार के कारण नबियों का इनकार किया जाता है | अल आ'राफ़ | 37 | 274 |
| अहंकार के कारण बनी इस्माईल ने नबियों का इनकार किया | अल बक्रः | 88 | 23 |
| फिरौन का अहंकार | अल क़सास | 40 | 739 |
| अहंकारियों का ठिकाना नरक है | अन नहल | 30 | 492 |
| अहंकारियों के दिलों पर अल्लाह की मुहर | अज़ ज़ुमर | 73 | 905 |
| अनाथ | | | |
| अनाथ पर सख्ती न की जाये | अल मु'मिन | 36 | 916 |
| निकट-सम्पर्कीय अनाथ की विशेष रूप से खबरगीरी करने का आदेश | अज़ ज़ुहा | 10 | 1265 |
| अनाथ स्त्रियों से विवाह | अल बलद | 15,16 | 1257 |
| अनाथों के अधिकार और संपत्तियों को वापस करें | अन निसा | 4 | 133 |
| अमानत और ईमानदारी | | | |
| अमानत को उसके हकदार के सुपुर्द करना चाहिए | अल बक्रः | 284 | 83 |
| मोमिन अपनी अमानतों का ध्यान रखते हैं | अन निसा | 59 | 151 |
| अल्लाह ख़्यानत करने वालों से प्रेम नहीं करता | अल मआरिज | 33 | 1165 |
| माप-तौल सही होना चाहिए | अल मु'मिनून | 9 | 636 |
| लोगों को उनके प्राप्य से कम चीज़ें न दिया करो | अल अन्फ़ाल | 59 | 327 |
| अनाथों के अच्छे धन को निकृष्ट धन से न बदलो | अन निसा | 108 | 166 |
| परस्पर धोखाधड़ी करके एक दूसरे के धन को न खाओ | बनी इस्माईल | 36 | 522 |
| आ | | | |
| आज्ञाकारिता | | | |
| अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारिता | अल अन्फ़ाल | 47 | 325 |
| रसूल इस उद्देश्य से भेजे जाते हैं कि अल्लाह के | अन निसा | 65 | 153 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|---|--|
| आदेशानुसार उनकी आज्ञा का पालन किया जाये हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन वास्तव में अल्लाह की आज्ञा का पालन करना है | अन् निसा | 81 | 157 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन करना अल्लाह के प्रेमपात्र बनने का माध्यम है | आले इम्रान | 32 | 92 |
| रसूल का आज्ञापालन हिदायत पाने का माध्यम है अल्लाह और इस रसूल के आज्ञापालन के फलस्वरूप सालेह (सदाचारी), शहीद और सिद्धीक (सत्यनिष्ठ) यहाँ तक कि नवी की उपाधि भी मिल सकती है अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करने वाले ही सफलता प्राप्त करेंगे | अन नूर अन निसा | 55 70 | 665 154 |
| अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के फलस्वरूप परकालीन पुरस्कार, और अवज्ञा करने के फलस्वरूप दंड मिलेगा | अन नूर | 53 | 665 |
| अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के पश्चात् शासकों का आज्ञापालन | अन निसा | 14, 15 | 137, 138 |
| आत्मा (रुह) | | 60 | 151 |
| आत्मा संचार अल्लाह के आदेश से होता है आत्मा के बारे में मनुष्य का ज्ञान बहुत कम है आत्मा ईश्वरादेश के सिवा कुछ नहीं आत्मा (वाणी) संचार | बनी इस्माईल बनी इस्माईल सूरः परिचय अल हिज्र साद | 86 86 514 30 73 | 530 530 476 887 |
| लैलतुल क़द्र में रुह-उल-कुदुस (पवित्र आत्मा) का अवतरण रुह-उल-अमीन/रुह-उल-कुदुस ने कुरआन करीम को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उतारा है रुह-उल-कुदुस के द्वारा मरियम के पुत्र मसीह का समर्थन रुह-उल-कुदुस के द्वारा सहावा का समर्थन अपनी जान को मारने का अभिप्राय मनुष्य-आत्मा की तीन अवस्था :- नफ़से अम्मारा (पाप की ओर प्रवृत्त आत्मा) | अल क़द्र अन नह्ल अश शुअरा अल बक़रः अल माइदः टीका अल बक़रः यूसुफ़ | 5 103 194 88, 254 111 55 54 | 1276 506 704 23, 72 219 1097 14 433 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------------|---------|--------|
| नफ्से लब्वामा (कुकर्म पर स्वयं को धिक्कारने वाली आत्मा) | अल कियामः | 3 | 1192 |
| नफ्से मुत्मझ्ना (अल्लाह से संतुष्ट आत्मा) | अल फ़ज़्र टीका | 28-31 | 1254 |
| आत्मा की शुद्धि के फलस्वरूप सफलता प्राप्ति आरोप | अश शम्स | 10,11 | 1259 |
| बैअत के समय महिलायें प्रतिज्ञा करें कि वे मिथ्यारोप नहीं लगायेंगी | अल मुम्तहिनः | 13 | 1111 |
| सतवंती स्त्रियों पर मिथ्यारोपण करने वाला यदि चार साक्ष्य प्रस्तुत न कर सके तो उसका दंड अस्सी कोड़े हैं | अन नूर | 5 | 653 |
| मिथ्यारोप लगाने वालों के लिए इहलोक और परलोक में लान्त और अजाब है | अन नूर | 24 | 657 |
| हज़रत मरियम पर यहूदियों का आरोप आवागमन | अन निसा | 157 | 178 |
| अनस्तित्व से अस्तित्व में आना | सूरः परिचय | | 446 |
| मनुष्य अपने जन्म से पूर्व कुछ भी न था | अद दहर | 2 | 1197 |
| | मरियम | 10 | 562 |
| | मरियम | 68 | 570 |
| आचरण | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. सर्वोत्तम आचरण के धनी थे | अल क़लम | 5 | 1150 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने अनुयायियों के लिए उत्तम आदर्श हैं | अल अहज़ाब | 22 | 804 |
| इ इज़ज़त वाले महीने | | | |
| अल्लाह के निकट इज़ज़त वाले महीने चार हैं | अत तौबः | 36 | 342 |
| सम्माननीय महीनों का अपमान न करो | अल माइदः | 3 | 187 |
| इज़ज़त वाले महीनों में युद्ध करना घोर अपराध है | अल बक़रः | 218 | 57, 58 |
| इज़ज़त वाले महीनों में प्रतिरक्षात्मक युद्ध की अनुमति | अल बक़रः | 195 | 51 |
| इस्लाम | | | |
| इस्लाम की वास्तविकता | अल बक़रः | 113 | 30 |
| | अल अन्झाम | 163,164 | 263 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------------------------------|-----------|-----------------|
| अल्लाह के निकट वास्तविक धर्म इस्लाम ही है अब इस्लाम ही स्वीकार्य धर्म है | आले इम्रान | 20 | 89 |
| इस्लाम से बेहतर और कोई धर्म नहीं शरीअत (धर्म-विधान) की पूर्णता | आले इम्रान अन निसा | 86 126 | 105 169 |
| अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है उसे इस्लाम स्वीकार करने के लिए हार्दिक संतुष्टि प्रदान करता है इस्लाम धर्म चिरकाल तक जीवित रहेगा और मानव समाज को सीधे रास्ते पर स्थित करता रहेगा | सूरः परिचय अल अन्आम | 3 126 | 3 253 |
| जिसने इस्लाम (अर्थात् आज्ञाकारिता) स्वीकार किया वही हिदायत पाने का हक़दार है इस्लाम स्वीकार करना वास्तव में एक सशक्त कड़े को पकड़ना है | सूरः परिचय | | 1277 |
| जो इस्लाम स्वीकार करता है वह अल्लाह की ओर से प्रकाश पर स्थित होता है इस्लाम स्वीकार करने की अवस्था में मरने का अर्थ इस्लाम में पूर्ण रूप से प्रवेश करने का आदेश | आले इम्रान अल बक़रः | 21 15 | 90 1177 |
| इस्लाम में प्रवेश करना वास्तव में स्वयं का उपकार करना है पूर्वतीं नवियों का भी धर्म इस्लाम ही था | लुकमान अज़ जुमर | 23 | 786 896 |
| इस्लाम की विशेषता | | | |
| इस्लाम एक संपूर्ण धर्म है इस्लाम विश्वव्यापी धर्म है | अल माइदः अल आ'राफः | 4 159 | 188 301 |
| इस्लाम जाति और वर्ण भेद को समाप्त करता है इस्लाम में खिलाफ़त का वादा | सबा टीका | 29 | 827 661 |
| इस्लाम में विचार-विमर्श व्यवस्था | अल हुजुरात | 14 | 1018 |
| नेकी और तक़वा में सहयोग करना चाहिए सुंदरता और पवित्रता हराम नहीं | अन नूर अश शूरा | 56 39 | 666 951 |
| इस्लाम के मौलिक विश्वास | आले इम्रान | 160 | 122 |
| इस्लाम के मौलिक विश्वासों का उल्लेख सूरः अल बक़रः में है | अल माइदः अल आ'राफः सूरः परिचय | 3 33 | 187 273 3 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------------------|-----------|------------|
| अल्लाह, फरिश्ते, सब नवियों और समस्त पुस्तकों पर विश्वास करना | अल बक्रः | 286 | 84 |
| परलोक पर विश्वास | अल बक्रः | 5 | 4 |
| प्रत्येक देश और जाति में अल्लाह के रसूल आये हैं | यूनुस फ़ातिर | 48 25 | 379 839 |
| धर्म के मामले में जबरदस्ती करना अनुचित है | अल बकरः अल आ'राफ़ | 257 89 | 73 287 |
| शत्रु से भी न्याय करने की शिक्षा | यूनुस हूद | 100 29 | 389 399 |
| दूसरे धर्मानुयायिओं से न्याय करने की शिक्षा | अल कहफ़ | 30 | 544 |
| शांतिप्रिय गैर मुस्लिमों से न्याय करने की शिक्षा | अल माइदः | 9 | 191 |
| अन्यायपूर्ण युद्धों का उन्मूलन | अल अन्झाम | 109 | 249 |
| 'मुसलमान' नाम स्वयं अल्लाह ने रखा है | अल मुम्तहिनः | 9 | 1109 |
| 'मुस्लिम' शब्द पर किसी का एकाधिकार नहीं | अल मुम्तहिनः | 9 | 1109 |
| तुम्हें सलाम कहने वाले को काफिर न कहो | अल हज्ज़ | 79 | 632 |
| कोई जान किसी और का बोझ नहीं उठायेगी | टीका | | 633 |
| जो निष्ठापूर्वक अल्लाह को दूँढ़ेगे चाहे वे किसी भी | अन निसा | 95 | 162 |
| धर्म के अनुयायी हों अंततोगत्वा अल्लाह उनका | अल अन्झाम | 165 | 263 |
| इस्लाम और सन्मार्ग की ओर मार्गदर्शन करेगा | सूरः परिचय | | 750 |
| यदि मुश्किल शरण माँगे तो उसे शरण दी जाये | अत तौबः | 6 | 335 |
| जातियों में मतभेद होने की स्थिति में उनमें संधि कराने की व्यवस्था | सूरः परिचय | | 1013 |
| अपनी सुरक्षा करने का निर्देश | अन निसा | 72 | 155 |
| मोमिनों को छोड़कर काफिरों को मित्र बनाना | अन निसा | 145 | 175 |
| उचित नहीं | | | |
| अल्लाह की आयतों के साथ उपहास करने वालों के साथ न बैठो | अन निसा | 141 | 173 |
| इस्लामी शिक्षा की विशेषता कि जीविका केवल हलाल ही नहीं अपितु पवित्र भी होनी चाहिए | अल अन्झाम | 69 | 238 |
| युद्ध-लब्ध धन का वैधीकरण | अल बक्रः | 169 | 44 |
| अनुचित प्रश्न नहीं करना चाहिए | अल माइदः अल अन्फ़ाल | 89 70 | 212 330 |
| | अल माइदः | 102 | 216 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|-------|
| इस्लाम की विश्वविजय | अत तौबः | 33 | 341 |
| | अर राद | 42 | 457 |
| | अल फ़त्ह | 29 | 1011 |
| | अस सफ़क | 10 | 1114 |
| इस्लाम के विरुद्ध युद्ध के उन्माद भड़काने वालों के हाथ काटे जाएँगे | सूरः परिचय | | 1301 |
| इस्लाम या मक्का का अपमान अथवा विनाश का इरादा रखने वालों का अंत “अस्हाब-उल-फ़ील” की भाँति होगा | सूरः परिचय | | 1293 |
| इस्लाम ने उन्नति करनी है, इसलिए शत्रु का उससे ईर्ष्या करना स्वभाविक है | सूरः परिचय | | 1303 |
| भविष्य में इस्लामी विजय का क्रम अन्तहीन होगा | सूरः परिचय | | 1300 |
| इस्लाम एक मध्यमार्गी धर्म है | अल बक़रः | 144 | 38 |
| इस्लाम सहज धर्म है | अल् बक़रः | 186 | 48 |
| | अल माइदः | 7 | 190 |
| | अल हज्ज़ | 79 | 632 |
| इस्लाम अल्लाह तक पहुँचने का सीधा रास्ता है | अल अन्नाम | 154 | 261 |
| अंत्ययुगीनों के समय इस्लाम की अवस्था | | | |
| पुनर्वार इस्लाम के सूर्योदय की भविष्यवाणी | सूरः परिचय | | 1258 |
| इस्लाम के पूर्ववर्ती युग और उत्तरवर्ती युग में कुर्बानियाँ करने वालों की तुलना | सूरः परिचय | | 1069 |
| ई ईर्ष्या | | | |
| | अल फ़लकः | 6 | 1304 |
| | अन निसा | 55 | 150 |
| | अल बक़रः | 110 | 29 |
| ईसाई मत | | | |
| ईसाईयों के कई समूहों में बँटने की भविष्यवाणी हवारियों का नेमतों का थाल माँगना | सूरः परिचय | | 185 |
| माइदः (भोज्य वस्तुओं का थाल) की वास्तविकता हज़रत मूसा अलै. और हज़रत ईसा अलै. की आध्यात्मिक यात्रा | अल माइदः | 113 | 220 |
| आरंभिक ईसाई एकेश्वरवाद की सुरक्षा के लिए जनपदों को छोड़कर गुफाओं में चले गये | सूरः परिचय | | 185 |
| | | | 536 |
| | | | 536 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|----------------------------|----------------------------|
| मसीह अलै. के जीवन काल में ईसाई नहीं बिगड़े ईसाइयों का कुत्तों से प्रेम करने का कारण ईसाइयों का दावा कि उनके सिवा कोई स्वर्ग में नहीं जाएगा | अल माइदः अल कहफ अल बक्रः | 118 टीका 23 टीका 112 | 222 543 30 |
| यहूदी और ईसाई मत की सामुहिक चेष्टाओं का सार ईसाई मत का पतन ईसाइयों के उत्थान और पतन के कारण वस्तुतः आज काल्पनिक saints को ईश्वरत्व का दर्जा दिया जाता है | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | | 1305 1302 537 537 |
| मसीह का ईश्वरत्व | अल माइदः | 73-77 | 208-210 |
| | अल माइदः | 117 | 221 |
| | अल माइदः | 74 | 209 |
| मसीह को ईशपुत्र मानना | अत तौबः | 30,31 | 341 |
| ईसाई अपनी शिक्षाओं का एक भाग भूल गये | अल माइदः | 15 | 192 |
| इनकी यहूदियों के साथ शत्रुता क्र्यामत तक रहेगी | अल माइदः | 15 | 192 |
| कई ईसाइयों का सच्चाई को पहचानना | अल माइदः | 84 | 212 |
| मोमिनों से प्रेम करने में ईसाई अधिक निकट | अल माइदः | 83 | 211 |
| इंजील के अनुयायी इंजील के अनुसार निर्णय करें | अल माइदः | 48 | 202 |
| सूरः अल इख्लास में ईसाई मत की भूल आस्थाओं का खंडन | सूरः परिचय | | 1302 |
| उ | | | |
| उत्तराधिकार (विरासत) | | | |
| उत्तराधिकार बंटन के नियम अल्लाह की ओर से निश्चित किये गये हैं | अन निसा | 8 | 135 |
| उत्तराधिकार में पुरुष और स्त्री दोनों शामिल हैं | अन निसा | 8 | 135 |
| महिलाओं से जबरदस्ती उत्तराधिकार छीनने की मनाही | अन निसा | 20 | 139 |
| मृत्यु के समय माता-पिता और सगे संबंधियों के लिए विशेष वसीयत | अल बक्रः | 181 | 47 |
| किसी की वसीयत में परिवर्तन करना पाप है | अल बक्रः | 182 | 47 |
| वसीयत करने वाले की भूल को सुधारना उचित है | अल बक्रः | 183 | 47 |
| मृतक की वसीयत उसके ऋण चुकाने के बाद बाँटी जाएगी | अन निसा | 12,13 | 136,137 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|----------------|---------|---------|
| उत्तराधिकार-बंटन के समय गरीबों, सगे-संबंधियों, अनाथों और दीन हीनों को भी कुछ देने का निर्देश | अन निसा | 9 | 135 |
| उत्तराधिकार बंटन का विवरण | अन निसा | 12,13 | 136,137 |
| | अन निसा | 177 | 183 |
| उपहास | | | |
| किसी जाति या व्यक्ति का उपहास मत करो | अल हुजुरात | 12 | 1017 |
| दूसरों के बुरे नाम रखना | अल हुजुरात | 12 | 1017 |
| चाटुकारिता | अल क़लम | 10 | 1150 |
| उम्मत | | | |
| (किसी धर्मानुयायिओं का समूह, समुदाय, संप्रदाय) | | | |
| पहले लोग एक ही संप्रदाय के रूप में थे | अल बक्रः | 214 | 56 |
| | यूनुस | 20 | 372 |
| यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को एक ही समुदाय बना देता | अल माइदः | 49 | 202 |
| प्रत्येक समुदाय के लिए एक समय निर्धारित है | अल आ'राफः | 35 | 274 |
| प्रत्येक संप्रदाय का निर्णय उसकी अपनी पुस्तक | अल जासियः | 29 | 982 |
| अर्थात् धर्म विधान के अनुसार किया जाएगा | | | |
| इब्राहीम अलै, अपने आप में एक समुदाय स्वरूप थे | अन नहल | 121 | 509 |
| प्रत्येक संप्रदाय में अल्लाह के रसूल आये हैं | यूनुस | 48 | 379 |
| प्रत्येक समुदाय में सतर्ककारी आये हैं | फ़ातिर | 25 | 839 |
| उम्मत-ए-मुहम्मदिय्या | | | |
| उम्मतों में सर्वश्रेष्ठ उम्मत | आले इम्रान | 111 | 110 |
| मध्यमार्गी संप्रदाय अर्थात् सर्वश्रेष्ठ उम्मत | अल बक्रः | 144 | 38 |
| उम्मते मुहम्मदिय्या पर अल्लाह की बड़ी अनुकंपा | आले इम्रान | 104 | 109 |
| उम्मत में वहइ और ईशवाणी सदा जारी रहेंगी | हामीम अस सज्दः | 31,32 | 933 |
| अल्लाह और हज़रत मुहम्मद सल्ल.के आज्ञापालन करने के फलस्वरूप अल्लाह के द्वारा पुरस्कृत लोगों की चार उपाधि | अन निसा | 70 | 154 |
| उम्मते मुहम्मदिय्या के लिए खुशखबरी कि आध्यात्मिक मुर्दे पुनः जीवित किये जाएँगे | सूरः परिचय | | 1143 |
| उम्मते मुहम्मदिय्या में नुबुव्वत का वरदान | आले इम्रान | 180 | 126 |
| | अन निसा | 70 | 154 |
| | अल आ'राफः | 36 | 274 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|---------------------------------|--------------------------------|
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप के सत्यापक के आने की भविष्यवाणी | अल जिन्न हूद अल बुरूज सूरः परिचय | 8 18 4 56-58 | 1175 397 1239 1238 |
| उम्मते मुहम्मदिया के लिए खिलाफत का बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुनरागमन अर्थात् प्रतिश्रुत महदी के आने की सूचना | अन नूर अल जुमुअः टीका अस सफ़ू | 4 666-667 | 1118 1119 |
| उम्मते मुहम्मदिया में मरियम के पुत्र ईसा के प्रतिरूप के आगमन पर शोर उठना | अज़ जुखरूफ़ | 58 | 1114 |
| उम्मते मुहम्मदिया को विभेदायन से बचने का आदेश उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने मूसा अलै. को कष्ट दिया | आले इम्रान अल अह़ज़ाब | 104 70 | 109 816 |
| यहूदियों और ईसाइयों की प्रतिज्ञा भंग करने जैसी त्रुटियों के बारे में उम्मते मुहम्मदिया को चेतावनी उम्मत को अत्यधिक प्रश्न करने की मनाही | सूरा परिचय | | 185 |
| जिन्हों का ईमान लाना अल्लाह की ओर आहान करने का निर्देश उम्मत पर विपत्तियों का आना ज़रूरी है | अल बक़रः अल माइदः अल अहकाफ़ आले इम्रान अल अन्कबूत | 109 102 31 105 3 | 29 216 992 109 751 |
| ऋ ऋण | | | |
| ऋण वापस लेते हुए व्याज न लो ऋणी व्यक्ति निर्धन हो तो उसे ढील देनी चाहिए ऋण-पत्र में दो गवाहों के हस्ताक्षर ज़रूरी हैं ऋण पत्र लिखने वालों और गवाहों के लिए दिशानिर्देश ऋण लेते हुए यदि ऋण पत्र न लिखा जा सके तो कोई वस्तु गिरवी रखनी चाहिए | अल बक़रः अल बक़रः अल बक़रः अल बक़रः अल बक़रः | 279 281 283 283 284 | 80 81 82 82 83 |
| ए एकेश्वरवाद | | | |
| अल्लाह एक है उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं | अल बक़रः आले इम्रान | 164,254 3,7, | 42,72 86,86, |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--------|----------------|---------|----------|
| | आले इम्रान | 19,63 | 89,99 |
| | अन निसा | 88,172 | 159,182 |
| | अल माइदः | 74 | 209 |
| | अल अन्झाम | 20,103, | 228,248, |
| | | 107 | 248 |
| | अल आ'राफः | 60,66, | 280,281, |
| | | 74,86, | 283,285, |
| | | 159 | 301 |
| | अत तौबः | 31,129 | 341,366 |
| | हूद | 15,51, | 397,404, |
| | | 62,85 | 406,410 |
| | अर राद | 31 | 454 |
| | इब्राहीम | 53 | 470 |
| | अन नह्ल | 3,23, | 488,491, |
| | | 52 | 496 |
| | अल कहफः | 111 | 558 |
| | ताहा | 9,15, | 576,577, |
| | | 99 | 588 |
| | अल अम्बिया | 26,88, | 600,609, |
| | | 109 | 613 |
| | अल हज्ज | 35 | 624 |
| | अल मु'मिनून | 24,33, | 638,640, |
| | | 92,117 | 647,649 |
| | अन नस्त | 27, | 716, |
| | | 61-65 | 723-724 |
| | अल कसस | 71,89 | 744,748 |
| | फ़ातिर | 4 | 835 |
| | साद | 66 | 886 |
| | अज़ जुमर | 7 | 892 |
| | अल सु'मिन | 4,63, | 909,920, |
| | | 66 | 921 |
| | हामीम अस सज्दः | 7 | 928 |
| | अज़ जुख्रुफ़ | 85 | 967 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|--|---|
| अल्लाह के साथ पुत्र जोड़ने वाले भयानक युद्ध का सामना करेंगे | अद दुखान मुहम्मद अत तूर अल हश्र अत तगाबुन अल मुज़्ज़म्मिल अन नास सूरः परिचय | 9 20 44 23,24 14 10 2-4 560 | 970 999 1041 1104 1129 1181 1306 560 |
| अल्लाह के अद्वितीय होने का विषय नवियों पर बारिश के समान उत्तरता है | सूरः परिचय | | 709 |
| अल्लाह के सिवा अन्य को उपास्य बनाने वालों और उन के अनुगामियों की मूर्खता | अल अन्कबूत | 42 | 758 |
| अल्लाह के सिवा कोई उपास्य न बन सकने के महान तर्क | अल अम्बिया | 23 | 599 |
| दो अल्लाह न बन सकने के तर्क | सूरः परिचय | | 595 |
| ए'तिकाफ़ (एकांत उपासना) | अल बक़रः | 188 | 49 |
| क | | | |
| कंजूसी | अन निसा अल हदीद अल हश्र अत तगाबुन मुहम्मद | 38 25 10 17 39 | 146 1087 1101 1130 1002 |
| क़ब्र | | | |
| आयत : “फिर उसे मारा और कब्र में प्रविष्ट किया” का अर्थ | अ ब स | 22 | 1220 |
| अंत्ययुग में कब्रें उछेड़ी जाएँगी | अल इन्फितार | 5 | 1228 |
| कब्रों में गड़े रहस्य मालूम किये जाएँगे | सूरः परिचय | | 1227 |
| आयत : “यहाँ तक की तुम ने कब्रगाहों का भी परिभ्रमण किया” की व्याख्या | अल आदियात | 10 | 1283 |
| क़यामत | सूरः परिचय | | 1288 |
| क़यामत के आने में कोई सन्देह नहीं | अन निसा | 88 | 159 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|-------|
| क्रयामत में समस्त मानव जगत को इकट्ठा किया जाएगा | अन निसा | 88 | 159 |
| क्रयामत के दिन लोगों की पृथक-पृथक खेशी होगी | अल अन्आम | 129 | 253 |
| क्रयामत के भिन्न-भिन्न प्रकटन | अल अन्आम | 95 | 245 |
| क्रयामत के इनकार का कारण | मरियम | 96 | 573 |
| क़िब्ला | सूरः परिचय | | 267 |
| क़िब्ला बदलने का आदेश | सूरः परिचय | | 1190 |
| कुरआन | अल बक्रः | 143 | 38 |
| महान रात्रि में कुरआन का अवतरण | अल क़द्र | 2 | 1276 |
| रूह-उल-अमीन ने इसे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उतारा है | सूरः परिचय | | 1275 |
| अल्लाह की ओर से कुरआन की शब्द-सुरक्षा और अर्थ-सुरक्षा का वादा | अश शुअरा | 194 | 704 |
| कुरआन सुरक्षित पट्टिका में है | अन नहल | 103 | 506 |
| कुरआन सम्माननीय और पवित्र पृष्ठों में लिखित है | अल हिज्र | 10 | 474 |
| उन में क्रायम रहने वाली और क्रायम रखने वाली शिक्षाएँ हैं | अल बुरूज | 23 | 1241 |
| पूर्वकालीन धर्मग्रंथों की उत्कृष्ट शिक्षा इस में संकलित है | अ ब स | 14,15 | 1220 |
| कुरआन एक छुपी हुई पुस्तक में है | अल बियनः | 4 | 1278 |
| कुरआन एक लिखी हुई पुस्तक है | अल आ'ला | 19,20 | 1247 |
| कुरआन सत्यासत्य में प्रभेदक है | अल वाकिअः | 79 | 1077 |
| कुरआन मंगलमय अनुस्मारक-ग्रंथ है | अत तूर | 3 | 1037 |
| कुरआन के अर्थ और अभिप्राय समय की आवश्यकतानुसार उत्तरते रहते हैं | अल फुर्कान | 2 | 672 |
| कुरआन के गूढ़ार्थ उन्हीं पर खुलते हैं जिन को अल्लाह ने पवित्र ठहराया है | अल अम्बिया | 51 | 604 |
| कुरआन ऐसे लोगों के हाथ में है जो सम्माननीय और नेक हैं | अल हिज्र | 22 | 475 |
| कोई बात कुरआन से बाहर नहीं रखी गई | अल वाकिअः | 80 | 1077 |
| कुरआन अपने अर्थों को खूब स्पष्ट करने वाला है | अ ब स | 16,17 | 1220 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|-----------------------|---------------------------|
| कुरआन का एक बिंदु भी निरसित नहीं है कुरआन में निश्चायक और अनेकार्थक आयतें हैं कुरआन करीम में कोई विभेद नहीं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहना कि सूरः हूद ने मुझे बूढ़ा बना दिया कुरआन की सर्वोत्तम कहानी हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हार्दिक प्रसन्नता का कारण है सूरः अल जुम्अः में एकत्रिकरण के सभी अर्थों का वर्णन | अल बक़रः आले इम्रान अन निसा सूरः परिचय | 107 8 83 392 | 28 87,88 158 419 |
| सूरः अल फ़ज़्र में तेरह वर्षीय आरंभिक मूककी दौर की ओर संकेत है कुरआन के आध्यात्मिक ख़ज़ानों के सदृश मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक भौतिक ख़ज़ाने भी अंतहीन हैं कुरआन के धर्म-विधान की परिधि से बाहर निकलने का परिणाम | सूरः परिचय | 1251 | 471 |
| कुरआन बनी इस्लाईल के पारस्परिक विवादित बातों के बारे में उचित मार्गदर्शन करता है 'अह्ले कुरआन' संप्रदाय का खंडन | अन नम्ल अन निसा टीका | 77 151 176 | 266 725 |
| कुरआन की सुरक्षा कुरआन की सुरक्षा के बारे में अल्लाह तआला का दृढ़वचन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दासों में से ऐसे लोग होते रहेंगे जो कुरआन की सुरक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे | सूरः परिचय | 471 | 671 |
| कुरआन की सुरक्षा का एक पक्ष एक निरक्षर व्यक्ति पर तेईस वर्षों में उतरने वाला कुरआन सुरक्षा पूर्वक इकट्ठा किया गया कुरआन का धीरे-धीरे उतरना एक महानतम चमत्कार है | सूरः परिचय | 1191 | 671 |
| कुरआन की भाषाशैली कुरआन सरल और शुद्धभाषा संपन्न होकर उतरा है | सूरः परिचय | 926 | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------------|---------|-------|
| कुरआन की काव्यशिष्टता से प्रभावित होकर अनेक कविओं ने काव्यरचना छोड़ दी | सूरः परिचय अर राद | 38 | 456 |
| कुरआन पाठ की विधि | सूरः परिचय | | 686 |
| कुरआन पाठ करने से पूर्व अल्लाह की शरण माँगना | अन नह्ल | 99 | 506 |
| कुरआन चुपचाप सुनना चाहिए | अल आ'राफ | 205 | 311 |
| कुरआन को पवित्र होकर छूना चाहिए | अल बाकिअः | 80 | 1077 |
| प्रातःकाल कुरआन पाठ का विशेष महत्व है | बनी इस्माईल | 79 | 529 |
| एक समय मुसलमानों का कुरआन को छोड़ देने की भविष्यवाणी | अल फुर्कान | 31 | 677 |
| कुरआन के उदाहरण | | | |
| मच्छर का उदाहरण देने की वास्तविकता | अल बक्रः | 27 | 8 |
| मुनाफ़िकों का उदाहरण | अल बक्रः | 18 | 6 |
| इस्लाम और अन्य धर्मों का उदाहरण | इब्राहीम | 25-27 | 465 |
| मुश्किल और मोमिन का उदाहरण | अन नह्ल | 76 | 501 |
| मरियम और फ़िरअौन की पत्नी के साथ मोमिनों का उदाहरण | अज़ ज़ुमर | 30 | 897 |
| नूह और लूत की पत्नियों के साथ काफिरों का उदाहरण | अत तह्रीम | 12,13 | 1141 |
| मरियम-पुत्र के पुनरागमन का उदाहरण | अज़ ज़ुखरुफ | 58 | 964 |
| झूठे उपास्यों का उदाहरण | अल हज्ज | 74 | 631 |
| सत्य और असत्य का उदाहरण | अर राद | 18 | 451 |
| दो दासों के उदाहरण की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 485 |
| दो बासों का उदाहरण | सूरः परिचय | | 536 |
| पवित्र वाक्य और अपवित्र वाक्य का उदाहरण | इब्राहीम | 25-27 | 465 |
| दो प्रकार से काफिरों का उदाहरण | सूरः परिचय | | 651 |
| नवियों के शत्रुओं का एक उदाहरण | सूरः परिचय | | 845 |
| कु-धारणा | अल हुजुरात | 13 | 1017 |
| कृतज्ञता | बनी इस्माईल | 37 | 522 |
| नेमत प्राप्त करके कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य के | अन नम्ल | 41 | 718 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|---|--|
| लिए लाभदायक होता है नेमत पाकर कृतज्ञता प्रकट करने से और अधिक पुरस्कार मिलता है और कृतज्ञता करने पर अज्ञाब मिलता है | इब्राहीम | 8 | 461 |
| नेमत पाकर कृतज्ञता प्रकट करने की सामर्थ्य प्राप्ति के लिए दुआ कृतज्ञता प्रकट करना अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति का साधन है | अन नम्ल अल अहकाफ अज़ जुमर | 20 16 39 | 715 988 898 |
| हज़रत लुक्मान अलै. को दी गई विवेकशीलता का केन्द्रविदु कृतज्ञता प्रकट करना है | सूरः परिचय | | 780 |
| कौसर (अक्षय स्रोत) हज़रत मुहम्मद सल्ल. को ऐसा कौसर मिलने की खुशखबरी जो कभी समाप्त नहीं होगा | सूरः परिचय | | 1297 |
| क्ष क्षमा क्रोध को पी जाना और लोगों को क्षमा करना क्षमा करने वालों का अल्लाह के निकट प्रतिफल है अल्लाह से क्षमायाचना (इस्तिग़फ़ार) मोमिनों को अल्लाह से क्षमायाचना करने का आदेश भूल हो जाने पर अल्लाह से क्षमायाचना करना मुत्तकी सदैव अल्लाह से क्षमायाचना करते हैं फरिश्ते मोमिनों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करते हैं मोमिनों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने का हज़रत मुहम्मद सल्ल. को आदेश अल्लाह से क्षमायाचना करना ईश्वरीय अनुकंपा को प्राप्त करने का साधन है | अन नूर आले इम्रान अश शूरा अल मुज्जम्मिल आले इम्रान अज़ ज़ारियात अश शूरा अल मु'मिन अन नूर हूद नूह अन निसा अल अन्काल | 23 135 41 21 136 19 6 8 63 4,53 11-13 65,111 34 | 657 115 951 1183 115 1030 943 910 669 393,404 1170 153,166 320 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|-----------------------------------|--|
| नबी और मोमिनों को मुश्किलों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने की मनाही हज़रत इब्राहीम अलै. का अपने पिता के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने का वादा हज़रत इब्राहीम अलै. का अपने पिता के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करना एक वादा के कारण था मुनाफ़िकों के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह से क्षमायाचना करना उन्हें कोई लाभ नहीं देगा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह से क्षमायाचना की वास्तविकता विजय प्राप्ति के समय अल्लाह से क्षमायाचना करने में मग्न रहना चाहिए | अत तौबः मरियम अत तौबः अत तौबः अल मुनाफ़िकून टीका सूरः परिचय | 113 48 114 80 7 | 362 567 362 353 1124 1005 1300 |
| ख | | | |
| ख्यानत (ग्रन) | | | |
| अल्लाह ख्यानत करने वालों को पसंद नहीं करता आँखों की ख्यानत ख्यानत करने वालों का पक्ष लेने की मनाही | अन् निसा अल मु'मिन अन निसा | 108 20 106 | 166 912 165 |
| खिलाफ़त (नवियों का उत्तराधिकार) | | | |
| खलीफा के कर्तव्य खिलाफ़त की ब्रकतें अल्लाह का हज़रत आदम अलै. को धरती में खलीफा बनाना हज़रत मूसा अलै. का अपनी अनुपस्थिति में हज़रत हारून अलै. को अपना उत्तराधिकारी बनाना अल्लाह का हज़रत दाऊद अलै. को धरती में खलीफा बनाना हज़रत मुहम्मद सल्ल. के अनुयायियों में सत्कर्म करने वाले मोमिनों से खिलाफ़त का वादा | साद अन् नूर अल बक्रः अल आ'राफ़ साद अन नूर | 27 56 31 143 27 56 | 880 666 9 296 880 666 |
| ग | | | |
| गवाही (साक्ष्य) | | | |
| गवाही देने में पूर्ण रूपेण न्याय पर स्थित रहने की शिक्षा | सूरः परिचय | | 185 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|--------------------------------------|-------------------------------------|
| अल्लाह के लिए न्याय के अनुरूप गवाही दो, चाहे स्वयं अपने या अपने सगे-संबंधियों के विरुद्ध ही हो गवाही को न छिपाओ | अन निसा अल अन्आम अल बक्रः अल बक्रः अन निसा अल बक्रः | 136 153 141 284 7 283 | 172 261 37 83 135 81 |
| अनाथों के धन उनको लौटाने पर गवाह बनाओ कर्जों और लेन-देन के मामले लिखित में लाने का आदेश और गवाही देने का ढंग | अन निसा अल बक्रः | 107- 109 | 218-219 |
| मृत्यु से पूर्व वसीयत करते हुए गवाह बनाना आवश्यक है | अल माइदः | 283 | 82 |
| बड़े-बड़े सौदे करते समय लिखित रसीद के साथ साथ गवाह बनाने का आदेश | अन नूर | 5 | 653 |
| व्यभिचार का आरोप सिद्ध करने के लिए चार गवाहों की शर्त | अन नूर | 7 | 654 |
| पत्नी पर व्यभिचार के आरोप के साक्ष्य न होने पर क्रसम खाना | अन निसा | 16 | 138 |
| अश्लीलता करने वाली महिलाओं पर चार गवाहों की आवश्यकता | | | |
| अल्लाह का गुणकीर्तन (तस्बीह) | | | |
| अल्लाह के गुणकीर्तन करने का आदेश | अल वाकिअः अल हावकः ता हा अल मु'मिन | 75 53 131 56 | 1077 1160 593 919 |
| प्रातः और सायं गुणकीर्तन करने का निर्देश | क़ाफ़ आले इम्रान अल अहज़ाब अल फ़त्ह सूरः परिचय | 40 42 43 10 | 1025 94 810 1006 1126 |
| सभी गुणकीर्तनकारियों से बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने अल्लाह का गुणकीर्तन किया | अल हश्र | 25 | 1105 |
| धरती और आकाश की प्रत्येक वस्तु अल्लाह का गुणकीर्तन करती है | अल हदीद अस सफ़ूर बनी इस्माईल अल जुमुअः | 2 2 45 2 | 1082 1113 523 1118 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|--|---|
| फरिश्ते अल्लाह का गुणकीर्तन करते हैं | अत तशाब्बुन अल बक्रः अल अम्बिआ अज़ जुमर अर राद अल मु'मिन अश शूरा अर राद अल अम्बिया साद अन नूर अस साफ़ात | 2 31 21 76 14 8 6 14 80 19 42 144 | 1127 9 599 906 450 910 943 450 608 879 663 873 |
| घन-गर्जन के साथ बिजली का गुणकीर्तन करना पहाड़ों का गुणकीर्तन करना | | | |
| पक्षियों का गुणकीर्तन करना | | | |
| यदि हज़रत यूनुस अलै. अल्लाह का गुणकीर्तन करने वाले न होते तो सदा के लिए मछली के पेट में रहते | | | |
| ग्रहण | | | |
| सूर्य और चन्द्र ग्रहण | अल कियामः सूरः परिचय | 9,10 1190 | 1192 1190 |
| घ | | | |
| घड़ी (क़्यामत) | | | |
| निश्चित घड़ी के आने की जानकारी केवल अल्लाह को है | अल आ'राफ लुक्मान अल अहज़ाब | 188 35 64 | 307 788 815 |
| निश्चित घड़ी सन्निकट है | अश शूरा | 18 | 947 |
| निश्चित घड़ी का आना अवश्यम्भावी है | अल क़मर ता हा | 2 16 | 1052 577 |
| क्रांति की घड़ी का अर्थ | अल मु'मिन सूरः परिचय | 60 | 920 1051 |
| घोड़ा | | | |
| हज़रत सुलैमान अलै. का घोड़ों से प्रेम | साद सूरः परिचय | 33 टीका | 881 876 881 |
| आयतांश “‘फिर वह उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर (प्रेम पूर्वक) हाथ फेरने लगा’” का अर्थ | | | |
| जिहाद के लिए तैयार किये गये घोड़ों के मस्तकों | सूरः परिचय | | 876 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|--|---|
| में क्यामत तक ब्रक्त रखी गई है जिहाद में भाग लेने वाले घोड़ों का वर्णन शत्रु के विरुद्ध बुझेना की छावनियाँ बनाने का निर्देश घोड़े सांसारिक मान-मर्यादा के भी चिह्न हैं घोड़े सवारी और सौदर्य के साधन हैं | अल आदियात अल अन्काल आले इम्रान अन नह्ल | 2 6 61 15 9 | 1283 327 88 489 |
| च | | | |
| चन्द्रमा | | | |
| सूर्य चन्द्रमा का अल्लाह के लिए सज्दः में पड़े रहना चन्द्र और सूर्य अल्लाह के चिह्न हैं चन्द्रमा का घटना और बढ़ना चन्द्रमा समय जानने का साधन है चन्द्र और सूर्य मनुष्य को गिनती सिखाने के साधन हैं | अल हज्ज हासीम अस सज्दः या सीन अल बकरः अल अन्नाम अर रहमान अल क़मर अल क़ियामः यूनुस | 19 38 40 190 97 6 2 10 6 | 620 935 852 50 246 1060 1052 1192 369 |
| चन्द्रमा के फट जाने का चमत्कार अंत्ययुग में सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण सूर्य का प्रकाश निजी है और चन्द्रमा की ज्योति माँगी हुई है चन्द्र और सूर्य परस्पर नहीं टकरा सकते चन्द्रमा से अभिप्राय अरबवासियों का साम्राज्य काल मुश्कियों का चन्द्रमा को दो भागों में बँटते हुए देखना | या सीन सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय अश शम्स | 41 10 6 | 852 1051 1051 1051 1259 |
| चन्द्र-भंग का यथार्थ प्रकाशमय सूर्य के बाद अंत्ययुग में चन्द्रोदय चुगलखोरी | | | |
| चुगलखोर के लिए सर्वनाश निश्चित है छिद्रान्वेषी और चुगलखोर की बात नहीं माननी चाहिए तुम मैं कोई किसी की चुगली न करे | अल हुमज़ः अल क़लम अल हुजुरात अल माइदः | 2 11,12 13 39 | 1292 1150 1017 198 |
| चोरी | | | |
| चेतावनी | | | |
| अज्ञाब की चेतावनी कभी-कभार प्रायश्चित और क्षमा प्रार्थना से टल जाती है | यूनुस सूरः परिचय | 99 367 | 388 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| ज ज़कात | | | |
| ज़कात की अनिवार्यता | अल बकरः | 44 | 12 |
| | अल बकरः | 84 | 22 |
| | अल बकरः | 111 | 29 |
| | अल बय्यिनः | 6 | 1278 |
| | अल बकरः | 178 | 46 |
| ज़कात आत्मशुद्धि और धनशुद्धि का साधन है केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ज़कात देनी चाहिए | अत तौबः | 103 | 359 |
| व्यापार करना आदर्श मोमिनों को ज़कात देने से रोक नहीं पाता | अर रूम | 40 | 774 |
| ज़कात के उपयोग | अन् नूर | 38 | 662 |
| अर्थदान के उपयोग | अल बकरः | 274 | 79 |
| | अत तौबः | 60 | 348 |
| जबरदस्ती | | | |
| हथियार के बल पर लोगों का धर्मातरण करना दुनिया का सबसे बड़ा उपद्रव है | सूरः परिचय | | 313 |
| जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती | सूरः परिचय | | 186 |
| धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं | अल बकरः | 257 | 73 |
| जो चाहे ईमान ला सकता है और जो चाहे इनकार कर सकता है | अल कहफः | 30 | 544 |
| तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म और हमारे लिए हमारा धर्म यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को स्वयं हिदायत दे देता | अल काफिरून | 7 | 1299 |
| | अल अन्झाम | 150 | 260 |
| जन्म-निरोध | | | |
| गरीबी के भय से जन्म-निरोध उचित नहीं | अल अन्झाम | 152 | 260 |
| | बनी इस्साईल | 32 | 521 |
| जाति / लोग | | | |
| अल्लाह की कृपा से ही लोगों में भाईचारा और एकता पैदा होती है | आले इम्रान | 104 | 109 |
| जाति को परस्पर के प्रति सद्य और विरोधियों के प्रति कठोर होना चाहिए | अल फत्ह | 30 | 1011 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|-------|
| आपसी मतभेदों से जाति का रोब समाप्त हो जाता है | अल अन्काल | 47 | 325 |
| मतभेद का मौलिक कारण | सूरः परिचय | | 1013 |
| जातियों के मतभेद की दशा में उनमें संधि कराने की व्यवस्था | सूरः परिचय | | 1013 |
| जिन्न | | | |
| जिन्न और मनुष्य को अल्लाह ने अपनी उपासना के लिए उत्पन्न किया है | अज जारियात | 57 | 1034 |
| इब्लीस जिन्नों में से था | अल कहफ | 51 | 548 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भेट करने के लिए जिन्नों के एक प्रतिनिधिमंडल का आगमन | अल अहकाफ | 30 | 991 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के निकट उपस्थित होकर जिन्नों का कुरआन सुन कर प्रभावित होना | अल जिन्न | 2 | 1175 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भेट करने वाले जिन्न अपनी जाति के बड़े लोग थे | सूरः परिचय | | 1173 |
| जिन्नों का अपनी जाति को हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर ईमान लाने की प्रेरणा देना | अल अहकाफ | 32-33 | 992 |
| जिन्न भी यह विश्वास रखते थे कि अब अल्लाह तआला किसी को नहीं भेजेगा | अल जिन्न | 8 | 1175 |
| जिन्न और मनुष्य समाज | अर रहमान | 34 | 1063 |
| जिन्नों से बचने की दुआ | अन नास | 7 | 1306 |
| हज़रत दाऊद अलै. के अधीनस्थ जिन्न | अन नम्ल | 40 | 718 |
| हज़रत सुलैमान अलै. के अधीनस्थ जिन्न | सबा | 13 | 822 |
| जिन्नों और मनुष्यों के पारस्परिक संबंध | अल अन्ताम | 129 | 253 |
| जिन्न अत्यधिक गर्म हवा युक्त अग्नि से पैदा किये गये हैं | अल हिज्र | 28 | 476 |
| जिन्नों से अभिप्राय बैकटीरिया और वायरत भी हो सकते हैं | सूरः परिचय | | 1058 |
| जिन्नों से अभिप्राय परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ हैं | अन नम्ल | 40 टीका | 718 |
| जीविका | | | |
| जीवन व्यवस्था पहाड़ों पर निर्भर है | सूरः परिचय | | 484 |
| पहाड़ खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के साधन हैं | अन नहल | 16 | 490 |
| | अल अम्बिया | 32 | 601 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|--|--|
| आकाश को तुम्हारे अस्तित्व का आधार बनाया जीविका के सभी साधन आकाश से उतरते हैं जीविका की कर्मी के भय से जन्म-निरोध करना उचित नहीं जीविका में बढ़ती और घटती पैदा करना अल्लाह के हाथ में है | लुकमान हामीम अस सज्दः अल बक्रः सूरः परिचय अल अन्‌आम बनी इस्साईल अर राद बनी इस्साईल अल क़सस अल अन्कबूत अल बक्रः | 11 11 23 सूरः परिचय 152 32 27 31 83 63 262 | 783 929 7 1027 260 521 453 521 747 763 76 313 1028 |
| आवश्यकतानुसार अनाज में सात सौ गुना तक वृद्धि संभव है हिजरत के फलस्वरूप जीविका में बढ़ोत्तरी मनुष्य और फरिशताओं को किसी न किसी प्रकार से जीविका की आवश्यकता है जीविका के संकुचन और प्रसारण का सिद्धांत मनुष्य जीवन की आवश्यकीय वस्तुओं का खजाना अतंहीन है धरती में भोजन व्यवस्था का चार युगों में संपूर्ण होना और पहाड़ों की इस में प्रमुख भूमिका तथा फलों और फसलों के पकने की व्यवस्था | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | 941 471 926 | |
| झ झूठ की निन्दा | | | |
| झूठ बोलने से बचो मोमिन झूठी गवाही नहीं देते झूठे लोगों को अल्लाह हिदायत नहीं देता सत्य और असत्य को गड़-मड़ न करो | अल हज्ज अल फुर्कान अल मु'मिन अल बक्रः आले इम्रान अल बक्रः सबा | 31 73 29 43 72 189 50 | 623 683 914 12 101 50 831 |
| झूठ का सहारा लेकर एक दूसरे का धन न खाओ झूठ से किसी चीज़ का आरम्भ नहीं हो सकता और न उसे बार-बार दोहराया जा सकता है झूठ के सहारे सत्य को टुकराने वाले दंडित होते हैं झूठ को अल्लाह मिटा दिया करता है | अल मु'मिन अश शूरा | 6 25 | 909 948 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|--|
| त | | | |
| तक्वा | | | |
| तक्वा धारण करने का निर्देश | अन निसा अल बक्रः आले इम्रान अल माइदः अल आ'राफ सूरः परिचय | 2 283 201 12 27 सूरः परिचय | 133 81 131 191 272 313 |
| तक्वा का वस्त्र सर्वोत्कृष्ट है सच्चों और झूठों के बीच स्पष्ट प्रभेद कर देने वाला हथियार तक्वा है | | | |
| तहज्जुद | | | |
| (आधी रात के बाद की नमाज़) | | | |
| तहज्जुद की नमाज़ इन्द्रियनिग्रह का सर्वोत्तम उपाय | सूरः परिचय | | 1180 |
| तौरात | | | |
| तौरात के अनुयायिओं को इस्लाम स्वीकार करने का आमंत्रण | अल माइदः | 16-20 | 193-194 |
| तौरात केवल बनी इस्लाईल के लिए पथप्रदर्शक था तौरात अपने समय में अगुआ और कृपा स्वरूप था | बनी इस्लाईल अल अहकाफ हूद | 3 13 18 | 515 987 397 |
| तौरात में नूर और हिदायत थी तौरात अपने समय के लिए संपूर्ण धर्म-विधान था बनी इस्लाईल के नबी तौरात के द्वारा फैसले किया करते थे | अल माइदः अल अन्आम अल माइदः | 45 155 45 | 200 261 201 |
| यहूदियों ने तौरात में परिवर्तन किया | अल बक्रः अन निसा अल माइदः अल माइदः अल आ'राफ अल फत्ह अल हश्र | 76 47 14 42 158 30 10 | 20 148 192 199 300 1011 1101 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में तौरात में भविष्यवाणी | बनी इस्लाईल | 34 | 521 |
| त्याग | | | |
| द | | | |
| दंड विधान | | | |
| हत्या | | | |
| हत्या का निषेध | बनी इस्लाईल | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|------------------------------|-------------------------------|
| एक जीवन की हत्या करना पूरी मानवता की हत्या करना है | अल माइदः | 33 | 197 |
| बदला हत्या किये गये व्यक्ति का बदला लेना आवश्यक है हत्या किये गये व्यक्ति के परिजन हत्यारे को क्षमा कर सकते हैं भूल से हत्या हो जाने पर हत व्यक्ति के परिजनों को मुवावज़ा दी जाये हत व्यक्ति के परिजन क्षतिपूर्ति क्षमा कर सकते हैं देश में फ़साद और अशांति फैलाने वाले को परिस्थिति के अनुसार मृत्युदंड, सूली, निर्वासन अथवा हाथ पांच काटने का दंड दिया जा सकता है | अल बकः अल बकः अन निसा अन निसा अल माइदः | 179 179 93 93 34 | 46 46 161 161 197 |
| व्यभिचार व्यभिचार की मनाही और उसका दंड व्यभिचारिणी दासी के लिए आधा दंड सब के सामने दंड दिया जाये | अन नूर अन निसा अन नूर | 3,4 26 3 | 653 143 653 |
| आरोप सतवंती स्त्रियों पर दुष्कर्म का आरोप लगाने वालों पर इहलोक और परलोक में लान्त और अज्ञाब चार गवाह पेश न कर सकने पर आरोप लगाने का दंड अस्सी कोड़े हैं आरोप लगाने वाले अपराधी की गवाही कभी स्वीकार नहीं की जाएगी | अन नूर अन नूर अन नूर | 24 5 5 | 657 653 653 |
| चोरी अभ्यस्त चोर का दंड हाथ काटना है | अल माइदः | 39 | 198 |
| अश्लीलता दो पुरुष परस्पर अश्लीलता करें तो उनके लिए परिस्थिति के अनुकूल दंड निश्चित किया जाये अश्लीलता करने वाली स्त्री पर घर से बाहर जाने की पाबंदी अश्लीलता प्रचार का दंड इहलोक में भी मिलता है | अन निसा अन निसा अन नूर | 17 16 20 | 138 138 656 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|--|--|
| दज्जाल सुरः अद दुखान की भविष्यवाणी का 'दज्जाल' के युग से संबंध | सूरः परिचय | | 969 |
| दान अल्लाह के रास्ते में प्रकाश्य और अप्रकाश्य रूप से खर्च करना खुशहाली और तंगी में भी अल्लाह के रास्ते में अर्थदान होना चाहिए अर्थदान का दार्शनिक विवेचन स्व-अर्जित पवित्र धन में से अर्थदान किया जाये प्रियतम वस्तु अल्लाह के रास्ते में दान दिया जाये केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए अर्थदान किया जाये धर्म की सहायतार्थ अधिकता पूर्वक अर्थदान करने का समय अंत्ययुग होगा | अर राद आले इम्रान सूरः परिचय अल बक्रः आले इम्रान अद दहर | 23 135 85 268 93 9,10 | 452 115 85 78 107 1198 |
| दाब्बतुल अर्ज़ 'दाब्बतुल अर्ज़' का अर्थ 'दाब्बतुल अर्ज़' का हज़रत सुलैमान अलै. की मृत्यु का समाचार देना | सूरः परिचय अन नम्ल सूरः परिचय सबा | | 1126 726 711 824 |
| दुआ मनुष्य पर दुआ करना अनिवार्य है अल्लाह की ओर से दुआ स्वीकार करने का वादा आतुर व्यक्ति की दुआ नमाज़ और दुआ का ढंग सुखांत होने की दुआ नरक से बचने की दुआ नेक लोगों की संगति और स्वर्ग प्राप्ति की दुआ मोमिनों के लिए फरिश्तों की दुआ अल्लाह की शरणागति के लिए व्यापक दुआएँ हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआएँ | अल फुर्कान अल मु'मिन अन नम्ल बनी इस्माईल यूसुफ आले इम्रान अल फुर्कान अश शुअरा अल मु'मिन अल फ़लक अन नास अश शुअरा | 78 61 63 111 102 192 66 84 86 8, 9 1-6 1-7 84 | 684 920 723 535 442 129 682 695 910 1304 1306 695 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|-------|
| नूह की जाति के लिए अज्ञाब की दुआ | नूह | 27 | 1172 |
| हज़रत याकूब अलै. की दुआ “मैं तो अपने दुःख दर्द की फ़रियाद केवल अल्लाह से करता हूँ” | यूसुफ़ | 87 | 439 |
| हज़रत यूसुफ़ अलै. की दुआ “मुझे आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु दे और मुझे सदाचारियों के वर्ग में शामिल कर” | यूसुफ़ | 102 | 442 |
| फिरअौन की पल्नी की दुआ | अत तहरीम | 12 | 1141 |
| हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआओं का फल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है | सूरः परिचय | | 459 |
| बद्र युद्ध के समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ | सूरः परिचय | | 312 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. को सिखाई गई कुछ दुआएँ | आले इम्रान | 27 | 91 |
| | बनी इस्राईल | 25 | 520 |
| | बनी इस्राईल | 81 | 530 |
| | ताहा | 115 | 591 |
| | अल मु'मिनून | 98 | 647 |
| | अल मु'मिनून | 119 | 650 |
| हुनैन युद्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं के कारण विजय प्राप्त हुई थी | सूरः परिचय | | 332 |
| पापियों की क्षमा के लिए दुआ | अल माइदः | 119 | 222 |
| काफ़िरों की दुआ बेकार जाती है | अर राद | 15 | 450 |
| कुछ दुआएँ | | | |
| संपूर्ण और सारांशक दुआ | अल फ़ातिहः | 1-7 | 2 |
| धार्मिक और लौकिक भलाई प्राप्ति की दुआ | अल बक़रः | 202 | 54 |
| अल्लाह की पर्याप्तता पाने की दुआ | अल आ'राफ़ | 157 | 300 |
| शुभ-प्रवेश और शुभ-प्रस्थान के लिए दुआ | आले इम्रान | 174 | 125 |
| भलाई पाने की दुआ | बनी इस्राईल | 81 | 530 |
| हिदायत पर अटल रहने की दुआ | अल क़सास | 25 | 736 |
| विशालहृदयता पाने की दुआ | आले इम्रान | 9 | 87 |
| ज्ञानवृद्धि की दुआ | ताहा | 26-29 | 578 |
| दृढ़निश्चयी बनने की दुआ | ताहा | 115 | 591 |
| | अल बक़रः | 251 | 70 |
| | आले इम्रान | 148 | 118 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|-------|
| माता-पिता के लिए दुआ | अल आ'राफ़ | 127 | 293 |
| | बनी इस्साईल | 25 | 520 |
| | नूह | 29 | 1172 |
| | इब्राहीम | 41-42 | 468 |
| सदाचारी संतान प्राप्ति के लिए दुआ | आले इम्रान | 39 | 94 |
| | अल अम्बिया | 90 | 610 |
| | अस साफ़कात | 101 | 868 |
| घर-परिवार के आँखों के ठंडक बनने की दुआ | अल फुर्कान | 75 | 683 |
| संतान के सुधार के लिए दुआ | अल अहकाफ़ | 16 | 988 |
| सदाचारी बनने की दुआ | अन नम्ल | 20 | 715 |
| अल्लाह की कृपा प्राप्ति और स्वर्कर्म में सरलता के लिए दुआ | अल कहफ़ | 11 | 539 |
| अल्लाह से क्षमायाचना के लिए दुआ | अल बक्रः | 287 | 84 |
| | आले इम्रान | 194 | 130 |
| | अल आ'राफ़ | 24 | 271 |
| | अल आ'राफ़ | 156,157 | 300 |
| अपने और अपने बड़ों के लिए अल्लाह से क्षमाप्राप्ति और मन से द्वेष दूर होने की दुआ | अल हश्र | 11 | 1101 |
| आध्यात्मिक उन्नति और अल्लाह से क्षमायाचना की दुआ | अत तह्रीम | 9 | 1140 |
| आरोग्य प्राप्ति की दुआ | अल अम्बिया | 84 | 609 |
| विपत्ति से मुक्त होने की दुआ | अल अम्बिया | 88 | 609 |
| विपत्ति के समय मोमिनों की दुआ | अल बक्रः | 157 | 41 |
| पराभूत अवस्था में दुआ | अल क़मर | 11 | 1053 |
| शैतानी भ्रम से बचने की दुआ | अल मु'मिनून | 98-99 | 647 |
| उपासना और प्रार्थना स्वीकृत होने की दुआ | अल बक्रः | 128 | 34 |
| दिवस | | | |
| हार-जीत का दिन | अत तशाबुन | 10 | 1128 |
| कर्मफल दिवस के अस्वीकारियों की तबाही | सूरः परिचय | | 1230 |
| जातियों के लिए कर्मफल दिवस इस जगत में भी आता है | सूरः परिचय | | 1027 |
| निर्णय दिवस | अस साफ़कात | 22 | 862 |
| | अद दुखान | 41 | 973 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------|---------|---------------|
| | अल मुर्सलात | 14-15, | 1204 |
| | | 39 | 1205 |
| | अन नवा | 18 | 1209 |
| धरती | | | |
| धरती की सृष्टि छः दौर में हुई | हूद | 8 | 395 |
| धरती की सृष्टि दो दौर में हुई | अस सज्जः | 5 | 791 |
| धरती गतिहीन नहीं बल्कि गतिशील है | हामीम अस सज्जः | 10 | 929 |
| धरती अपने कक्ष में गतिशील है | अन नम्ल | 89 | 727 |
| धरती को फैला दिये जाने की भविष्यवाणी | अल अम्बिया | 34 | 601 |
| सात आकाश की भाँति धरती भी सात है | अल इन्शिकाक | 4 | 1235 |
| अंत्ययुग में धरती अपने रहस्य उगलेगी | सूरः परिचय | | 1234 |
| धरती और आकाश की सृष्टि | सूरः परिचय | | 1131 |
| धरती और आकाश तथा जो कुछ इनके बीच है | अज़ ज़िल्जाल | 3 | 1281 |
| खेल-तमाशा के रूप में नहीं बनाया गया | अल अम्बिया | 17 | 599 |
| अल्लाह की सृष्टि और मनुष्य की सृष्टि में प्रभेद | अल वाकिअः | 58-74 | 1076, 1077 |
| धरती और आकाश की सृष्टि से अल्लाह थकता नहीं | सूरः परिचय | | 1069 |
| इस ब्रह्मांड के सदृश और ब्रह्मांडों के निर्माण करने पर अल्लाह सक्षम है | अल अहकाफ़ | 34 | 992 |
| सात आकाश और सात धरती | सूरः परिचय | | 984 |
| सृष्टि की प्रारंभिक अवस्था | बनी इस्माईल | 100 | 533 |
| अनस्तित्व से अस्तित्व में आना | या सीन | 82 | 857 |
| प्रारंभ में ब्रह्मांड ढूँढ़ता पूर्वक बंद किया हुआ गेंद के समान था | अत तलाक | 13 | 1135 |
| ब्रह्मांड निरंतर विस्तारशील है | अल अम्बिया | 31 | 601 |
| अदृश्य स्तंभों पर सृष्टि-व्यवस्था स्थित है | हामीम अस सज्जः | 12 | 929 |
| | सूरः परिचय | | 446 |
| | अल अम्बिया | 31 | 601 |
| | अज़ ज़ारियात | 48 | 1033 |
| | लुकमान | 11 | 783 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|----------------|---------|-------|
| सप्त आकाश की कई परतों में उत्पत्ति | अल मुल्क | 4 | 1144 |
| छः युगों में सुष्टि रचना | नूह | 16 | 1170 |
| | अल आ'राफ़ | 55 | 279 |
| | यूनुस | 4 | 368 |
| | हूद | 8 | 395 |
| | अल फुर्कान | 60 | 681 |
| | अस सज्दः | 5 | 791 |
| | अल हदीद | 5 | 1082 |
| सप्त आकाश की दो युगों में उत्पत्ति | हामीम अस सज्दः | 13 | 929 |
| धरती की उत्पत्ति के दो युग | हामीम अस सज्दः | 10 | 929 |
| दीपकों और सुरक्षा सामग्रियों से आकाश की सजावट | हामीम अस सज्दः | 13 | 929 |
| भू-लोक के निकटवर्ती आकाश को नक्षत्रों से | अस साफ़ात | 7 | 860 |
| सुसज्जित किया गया है | अल मुल्क | 6 | 1144 |
| आकाशीय पिंडों की उत्पत्ति | अल अम्बिया | 31 | 601 |
| आकाशीय पिंडों की परिक्रमण-व्यवस्था | या सीन | 41 टीका | 852 |
| आकाश में रास्ते होने की भविष्यवाणी | अज़ ज़ारियात | 8 | 1029 |
| आकाश में सात रास्ते | सूरः परिचय | | 1027 |
| सूर्य-चन्द्रमा और दिन रात की उत्पत्ति | अल मु'मिनून | 18 | 637 |
| अंधकार और प्रकाश की उत्पत्ति | अल अम्बिया | 34 | 601 |
| दिन रात के अदलने बदलने में बुद्धिमानों के लिए | अल अन्नाम | 2 | 225 |
| चिह्न | अल बक़रः | 165 | 42 |
| | आले इ़प्रान | 191 | 129 |
| | यूनुस | 7 | 369 |
| जीविका का आकाश के साथ संबंध | यूनुस | 32 | 375 |
| आसमानों का खुलना | अन नबा | 20 | 1209 |
| आसमानों में छेद | अल मुर्सलात | 10 | 1203 |
| आसमानों का फटना | अल इन्कितार | 2 | 1228 |
| आकाश की खाल उतारे जाने की वास्तविकता | अत तक्वीर | 12 | 1225 |
| | सूरः परिचय | | 1222 |
| आकाश पर धुआँ प्रकट होगा जो लोगों को ढाँप लेगा | अद दुखान | 11,12 | 971 |
| आकाश घोर प्रकंपित होगा | अत तूर | 10 | 1037 |
| नक्षत्रों वाला आकाश | अल बुरूज | 2 | 1239 |
| मूसलाधार बारिश वाला आकाश | अल अन्नाम | 7 | 226 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|-------------------|--|
| प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति के साथ ही उसकी क्षमताएँ भी निश्चित की गईं | अत तारिक अल फुर्कन | 12 3 | 1244 672 |
| समस्त जीवन का आधार पानी पर रखा गया है अल्लाह के निकट महीनों की गिनती बारह है इतने विशाल ब्रह्मांड में कोई भी त्रुटि नहीं है | हूद अत तौबः अल मुल्क सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | 8 टीका 36 4 | 395 342 1144 1143 595 1020 223 |
| सृष्टि के रहस्य वैज्ञानिकों पर उनकी खोज के परिणाम स्वरूप तथा नवियों पर ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा प्रकट किये जाते हैं | सूरः परिचय | | 445 |
| सृष्टि के गुप्त रहस्यों पर से निश्चित रूप से सर्वज्ञ अल्लाह ही पर्दा उठा सकता है | सूरः परिचय | | 1070 |
| ब्रह्मांड का फैलाव ब्रह्मांड के छोर पर स्थित आकाशगंगाएँ (Galaxies) भी मनुष्य पर प्रभाव डालती हैं | सूरः परिचय सूरः परिचय | | 780 |
| ब्रह्मांड की आयु का रहस्य कुरआन में है वर्तमान उपस्थित ब्रह्मांड की आयु | सूरः परिचय सूरः परिचय | | 789 |
| सृष्टि की हर चीज़ नष्ट होने वाली है यह सृष्टि एक बार अनस्तित्वता में समा जाएगी, फिर इस से नई सृष्टि उत्पन्न की जाएगी | अर रहमान सूरः परिचय | 27 | 1161 1062 596 |
| अल्लाह के दाहिने हाथ पर ब्रह्मांड को लपेटे जाने की वास्तविकता | अज़ जुमर | 68 टीका | 904 |
| धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं | सूरः परिचय | | 834 |
| फरिश्तों के चार परों से तात्पर्य पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन | सूरः परिचय | | 833 |
| सृष्टि की प्रत्येक वस्तु जोड़ा जोड़ा है पदार्थ के भी जोड़े होते हैं | या सीन सूरः परिचय | 37 | 851 846 |
| रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया जिसे वैज्ञानिक कार्बन आधारित जीवन कहते हैं | सूरः परिचय | | 833 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|-----------------|---------------------------|
| ब्रह्मांड में चलने फिरने वाले जीव हैं जो किसी समय धरती पर स्थित जीवों के साथ एकत्रित कर दिये जाएँगे | अश शूरा सूरः परिचय | 30 | 949 942 |
| आकाश और समुद्र के बीच पानी जारी किया जाना धरती पर पानी की सुव्यवस्था धरती से पानी समाप्त होने के दो कारण जीवन का प्रत्येक रूप आकाश के वर्षा जल से लाभान्वित होता है | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | | 1036 445 634 833 |
| ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण व्यवस्था एक से अधिक पूर्वी दिशा | सूरः परिचय अल मआरिज | 41 | 445 1166 |
| सुष्टि के आरंभ में विषाणु (वायरस) और जीवाणु (बैक्टीरिया) आकाश से बरसने वाली रोडियो तरंगों के कारण उत्पन्न हुए | सूरः परिचय | | 858 1058 |
| धैर्य | | | |
| धैर्य के साथ सहायता माँगना | अल बकरः | 46 | 13 |
| विपत्ति में धैर्य धरने वालों को खुशखबरी विपत्तियों और युद्धों में धैर्य | अल बकरः | 154 | 41 |
| अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए धैर्य हज़रत अय्यूब अलै. का धैर्य | अल बकरः | 157,158 | 41 |
| हज़रत अय्यूब अलै. का धैर्य हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धैर्य का एक बड़ा भाग दिया गया | अर राद साद | 178 23 45 | 46 452 883 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ उसके लिए जिस धैर्य की आवश्यकता थी वह मूसा अलै. के पास नहीं था शत्रु के व्यंग-उपहास पर हज़रत मुहम्मद सल्ल. को धैर्य धरने का निर्देश | सूरः परिचय | | 927 536 |
| धर्म त्याग | | | |
| धर्मत्यागी अल्लाह के धर्म को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते | आले इम्रान | 145 | 117 |
| एक धर्मत्यागी के बदले अल्लाह से प्रेम करने वाली एक जाति का वादा | अल माइदः | 55 | 204 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| धर्मत्यागी की हत्या करना, रसूलों के इनकार करने वालों का संज्ञा सिद्धान्त था | सूरः परिचय | | 458 |
| धर्मत्यागी का दंड हत्या नहीं | अल बक्रः | 218 | 58 |
| | आले इम्रान | 91 | 105 |
| | अन निसा | 138 | 173 |
| | टीका | | |
| | अल माइदः | 55 टीका | 204 |
| | अन नहल | 107 | 507 |
| न | | | |
| नमाज़ | | | |
| नमाज़ क्रायम करने का आदेश | अल बक्रः | 44 | 12 |
| | अल बक्रः | 111 | 29 |
| | इब्राहीम | 32 | 466 |
| नमाज निश्चित समय पर पढ़ना अनिवार्य है | अन निसा | 104 | 165 |
| मुत्तकी नमाज़ क्रायम करते हैं | अल बक्रः | 4 | 4 |
| नमाज़ क्रायम करना बहुत बड़ी नेकी है | अल बक्रः | 178 | 46 |
| मध्यवर्ती नमाज़ की सुरक्षा करने की ताकीद | अल बक्रः | 239 | 66 |
| नमाज़ का उद्देश्य ईश्वर स्मरण | ताहा | 15 | 577 |
| धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता माँगो | अल बक्रः | 46 | 13 |
| | अल बक्रः | 154 | 41 |
| वास्तविक नमाज़ निर्लज्जता और प्रत्येक अप्रिय बात से रोकती है | अल अन्कबूत | 46 | 760 |
| मोमिन का आध्यात्मिक जीवन नमाज़ के क्रायम करने पर ही टिका है | सूरः परिचय | | 780 |
| सच्चे मोमिन का एक चिह्न :- नमाज़ निरंतरता से पढ़ना | अल मआरिज | 24 | 1164 |
| मोमिन अपनी नमाजों की सुरक्षा करते हैं | अल मु'मिनून | 10 | 636 |
| मोमिन अनुनय-विनय पूर्वक नमाज़ पढ़ते हैं | अल मु'मिनून | 3 | 636 |
| महान पुरुषों को व्यापार करना नमाज़ से लापरवाह नहीं करता | अन नूर | 38 | 662 |
| मदहोशी की हालत में नमाज़ पढ़ने की मनाही | अन निसा | 44 | 147 |
| सब नबियों को नमाज़ क्रायम करने का | अल अम्बिया | 74 | 607 |
| आदेश | | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|--|---|
| हज़रत इब्राहीम अलै. की अपनी संतान के लिए नमाज़ कायम करने की दुआ | इब्राहीम | 38,41 | 468 |
| बनी इस्लाम से नमाज़ कायम करने का वचन लिया जाना | अल माइदः यूनूस | 13 88 | 191 386 |
| शैतान नमाज़ से रोकने की चेष्ठा करता है विनयी व्यक्तियों के सिवा दूसरों पर नमाज़ पढ़ना भारी होता है | अल माइदः अल बक़रः | 92 46 | 213 13 |
| नमाज़ में सुस्ती मुनाफ़िक़ का लक्षण है | अन निसा अत तौबः | 143 54 | 174 347 |
| अहले किताब का मुसलमानों की अज्ञान का खिल्ली उड़ाना | अल माइदः | 59 | 205 |
| बे-नमाज़ी नरक का ईंधन बनेंगे नमाज़ों से लापरवाही करने वालों और दिखावा करने वालों के लिए तबाही की चेतावनी | अल मुहास्सिर अल माझन | 43, 44 5-7 | 1188 1296 |
| दैनिक नमाज़ों का समय | | | |
| सूर्य ढलने से रात छा जाने तक नमाज़ का आदेश दिन के दोनों छोर और रात के कुछ भागों में नमाज़ पढ़ने का आदेश | बनी इस्लाम हूद | 79 115 | 529 416 |
| दिन रात की सभी नमाज़ों का वर्णन | सूरः परिचय | | 575 |
| नमाज़ के अन्यान्य प्रसंग | | | |
| नमाज़ से पूर्व वुजू करने का निर्देश नमाज़ के स्तंभ :- खड़ा होना, झुकना, सजदः करना | अल माइदः अल हज्ज | 7 27 | 190 622 |
| कुछ विशेष परिस्थितियाँ जिन में नमाज़ से पूर्व स्नान करना आवश्यक है | अन निसा | 44 | 148 |
| मजबूरी की अवस्था में तयम्मुम की अनुमति | अल माइदः | 7 | 190 |
| यात्रा के समय नमाज़ छोटी पढ़ने की अनुमति युद्ध और भय की अवस्था में नमाज़ की स्थिति जुम्मा की नमाज़ की अनिवार्यता तहज्जुद की नमाज़ और उसका निर्देश | अन निसा अन निसा अन निसा अल जुम्मा: बनी इस्लाम अल मुज़ज़म्मिल | 44 7 102 103 10 80 3-9 | 148 164 164 164 1120 529 1181 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|--------------|
| नबी और रसूल | | | |
| नबी और रसूल एक ही व्यक्तित्व के दो पद हैं | मरियम | 55 | 568 |
| नबी की आवश्यकता | अल क़सस | 48 | 740 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल और 'खातमुन्नबियीन' (नबियों के मुहर) हैं | अल अह़ज़ाब | 41 | 809 |
| 'खातमुन्नबियीन' की व्याख्या | सूर: परिचय | | 796 |
| नुबुव्वत समाप्त होने की विचारधारा युक्तिसंगत नहीं | सूर: परिचय | | 1173, 908 |
| अल्लाह बेहतर जानता है कि रसूल का चुनाव कहाँ से करे | अल अन्याम | 125 | 253 |
| नबी अल्लाह के आदेशानुसार कर्म करते हैं | अल अम्बिया | 28 | 600 |
| नबी और रसूल अल्लाह की बात से एक शब्द भी अधिक नहीं कहते | अल माइद: | 118 | 221 |
| अल्लाह अपने निर्वाचित रसूलों के द्वारा ही अदृश्य विषय प्रकट करता है | अन नज्म | 4 | 1045 |
| रसूल को अधिक मात्रा में अदृश्य का ज्ञान दिया जाता है | आले इम्रान | 180 | 126 |
| नबी को उसकी जातीय भाषा में वहइ की जाती है | अल जिन्न | 27,28 | 1178 |
| रसूल के ज़िम्मे केवल संदेश पहुँचाना होता है | इब्राहीम | 5 | 460 |
| नबी और रसूल लोगों से किसी प्रकार बदला नहीं चाहते | अल माइद: | 100 | 216 |
| हर जाति में रसूल आये हैं | हूद | 30,52 | 399,404 |
| हर जाति में अल्लाह के पथ-प्रदर्शक और सतर्ककारी आते रहे हैं | अन नह्ल | 37 | 494 |
| शरीयत विहीन नबी जो पूर्ववर्ती शरीयत के अनुसार निर्णय करते रहे हैं | अर राद | 8 | 448 |
| नबियों और रसूलों की एक दूसरे पर श्रेष्ठता | फ़ातिर | 25 | 839 |
| कुरआन में केवल कुछ नबियों का वर्णन है | अल माइद: | 45 | 200 |
| नबी और रसूल मनुष्य होते हैं | अल बक़र: | 254 | 72 |
| | बनी इस्माईल | 56 | 525 |
| | अन निसा | 165 | 180 |
| | अल मु'मिन | 79 | 923 |
| | इब्राहीम | 12 | 462 |
| | बनी इस्माईल | 94 | 532 |
| | अल कहफ | 111 | 558 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|---|--|
| नबी और रसूल मानवीय आवश्यकताओं से परे नहीं होते | अल अम्बिया अर राद अल फुर्कान अल फुर्कान | 9 39 8 21 | 598 456 673 675 |
| रसूलों पर सलाम नवियों के आगे और पीछे रक्षक फरिश्ते होते हैं नवियों और रसूलों को ईश्वरीय सहायता प्राप्त होती है | अस साफ़कात अल जिन अस साफ़कात | 182 28 173 | 875 1178 875 |
| अंततोगत्वा रसूल विजयी होते हैं वे अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते नवियों की हत्या अथवा घोर विरोध की वास्तविकता | अल मुजादल: अस साफ़कात अल अहज़ाब अल बक़र: आले इम्रान अन निसा | 22 174 40 62 22,113 156 | 1096 875 809 16 90,111 177 |
| रहमान अल्लाह रसूल पद प्रदान करता है नबी होने का दावा करने वालों का मामला अल्लाह पर छोड़ देना चाहिए नवियों को भी पूछा जाएगा कि उन्होंने किस सीमा तक अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाया नवियों की कथाओं के वर्णन का उद्देश्य ज़रूरी नहीं कि नबी के जीवन में ही उसकी सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो जायें मनुष्य और जिन रूपी शैतान हर नबी के शत्रु होते हैं शैतान को रसूलों के निकट फटकने की भी अनुमति नहीं हर नबी को झुठलाया जाता है नबी और रसूलों का उपहास किया जाता है सभी रसूलों पर एक प्रकार की आपत्तियाँ होती हैं नवियों के शत्रुओं को अल्लाह के छूट देने का अर्थ | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय यूनस अल अन्याम सूरः परिचय अश शुअरा अल मु'मिनून अल अम्बिया या सीन अज़ जु़ुरुफ हामीم अस सज्दः अज़ ज़ारियात आले इम्रान | 574 908 265 392 47 टीका 113 211-213 45 42 31 8 44 53, 54 179 | 685 705 641 602 850 957 936 1034 126 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|--------------------------------------|-------------------------------------|
| नवियों के प्रचार माध्यमों को तोड़ने वाले शत्रुओं का विनाश | अल क़लम अल आ'राफ सूरः परिचय | 45,46 184 सूरः परिचय | 1154 307 1258 |
| नवियों के विरोधियों की तबाही और पुरातत्त्वविदों के द्वारा उनके अवशेषों को ढूँढ़ निकालना | सूरः परिचय | | 749 |
| शीया संप्रदाय की अशुद्ध व्याख्या कि इमाम का दर्जा नबी से बढ़कर है | अल बकरः टीका | 125 आले इम्रान | 33 81 |
| किसी नबी के लिए संभव नहीं कि वह स्वयं को अथवा फ़रिश्तों को रब्ब बनाने की शिक्षा दे | आले इम्रान | 81 | 103 |
| अंत्युग में सभी रसूलों के आविर्भाव होने की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 1201 |
| नवियों की प्रतिज्ञा | | | |
| नवियों की प्रतिज्ञा का वर्णन | आले इम्रान सूरः परिचय | 82 टीका | 104 85 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भी प्रतिज्ञा ली गई | अल अह़ज़ाब | 8 | 801 |
| बनी इस्लाईल से भी प्रतिज्ञा ली गई | सूरः परिचय अल बकरः | 796 94 | 25 |
| नरक | | | |
| नरक विरस्थायी नहीं है | हूद | 108 | 415 |
| नरक दिलों पर लपकने वाली आग है | अल हुमज़ः | 7,8 | 1292 |
| नरक का ईंधन आग और पत्थर होंगे | अल बकरः | 25 | 8 |
| झूठे उपास्य और उनके उपासक नरक का ईंधन होंगे | अल अम्बिया | 99 | 611 |
| नरक वासियों का भोजन और उसके गुण | अल गाशियः सूरः परिचय अर रहमान अल वाकिअः अल अन्आम | 7 सूरः परिचय 45 53-56 71 | 1249 1248 1065 1075 239 |
| | मुहम्मद अल हाक़कः अन नबा | 16 37 25,26 | 998 1159 1209 |
| नरक के उनीस फ़रिश्तों की वास्तविकता | अल मुद्दस्सिर | 31,32 | 1187 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|----------------------------|--|
| प्रत्येक व्यक्ति के नरक में प्रविष्ट होने का तात्पर्य नेक लोग उसकी सरसराहट तक नहीं सुनेंगे नरकगामी न मरेगा न जियेगा नरकवासियों और स्वर्गवासियों का तुलनात्मक वर्णन | सूरः परिचय मरियम अल अम्बिया अल आ'ला अल मुतफ़िक़फ़ीन | 72 103 14 8-37 | 570 612 1247 1233 1230 1080 1080 |
| स्वर्ग और नरक की स्थूल कल्पना सही नहीं यदि समग्र बहांड में स्वर्ग व्याप्त हो तो नरक कहाँ होगा हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उत्तर नरकवासियों का उपमा स्वरूप वर्णन नरक का उपमा स्वरूप वर्णन अधर्मी लोग नरक का ईंधन बनने वाले हैं उस पर उन्नीस निरीक्षक नियुक्त होने का अर्थ | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | | 1184 612 1231- 1233 1230 1080 1080 |
| नींद नींद भी अल्लाह के चिह्नों में से एक चिह्न है नींद आराम का साधन है | अर रूम अल फुर्कान अन नबा अज़ जुमर | 24 48 10 43 | 770 679 1208 899 |
| नूह की नौका अल्लाह की वहइ के अनुसार नौका निर्माण पुरातत्त्वविदों का कहना है कि वे एक दिन नूह की नौका को खोज निकालेंगे अंत्ययुग में एक नूह की नौका निर्मित की जाएगी | हूद अल मु'मिनून सूरः परिचय | 38 28 749 | 401 639 749 |
| न्याय अल्लाह न्याय करने का आदेश देता है अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है न्याय करो, चाहे सगे संबंधियों के विरुद्ध ही करना पड़े किसी जाति की शत्रुता तुम्हें न्याय से न रोके न्याय पर डटे रहना ही सफलता की ज़मानत है न्याय और उपकार करने का आदेश | अन नह्ल अल हुजुरात अल अन्झाम अल माइदः सूरः परिचय अन नह्ल | 91 10 153 9 91 | 504 1017 261 191 1230 504 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------------|----------|------------|
| न्याय से अगला चरण उपकार न्याय और उपकार के बाद अगला चरण सगे संबंधियों की सहायता करना है | अन नह्ल अन नह्ल | 91 91 | 504 504 |
| प पूँजीवाद पूँजीवादी व्यवस्था 'खन्नास' है पक्षी | सूरः परिचय | | 1305 |
| पक्षियों की विचित्र बनावट | सूरः परिचय | | 486 |
| पक्षियों की उपासना और स्तुति करना | अन नूर | 42 | 663 |
| आध्यात्मिक पक्षियों का वर्णन | सूरः परिचय | | 1143 |
| हज़रत इब्राहीम अलै. को चार पक्षी सिधाने का निर्देश | अल बक्रः | 261 | 75 |
| हज़रत ईसा अलै. का पक्षी सृजन करने का तात्पर्य | आले इम्रान | 50 | 96 |
| हज़रत दाऊद अलै. के लिए पक्षियों को सेवाधीन किया जाना | अल माइदः | 111 | 219 |
| हज़रत सुलैमान अलै. की पक्षियों की सेना | साद | 20 | 879 |
| पक्षियों की भाषा की वास्तविकता | अल अम्बिया | 80 | 608 |
| खाना का'बा की सुरक्षा के लिए झुण्ड के झुण्ड | अन नम्ल | 18 | 714 |
| पक्षियों का भेजा जाना | सूरः परिचय | | 708 |
| स्वर्गवासियों के लिए पक्षियों का माँस | अल फील | 4 | 1294 |
| परलोक | अल वाकिअः | 22 | 1073 |
| प्रत्येक नबी ने मृत्योपरांत पुनर्जीवित होने पर ईमान लाने की शिक्षा दी है | टीका | | 993 |
| परलोकीन जीवन की आवश्यकता | यूनुस | 5 | 368 |
| परलोकीन जीवन का एक प्रमाण | सूरः परिचय | | 1202 |
| परलोकीन जीवन ही वास्तविक जीवन है | अल अन्कबूत | 65 | 763 |
| इहलोक से परलोक उत्तम है | अन निसा | 78 | 156 |
| | बनी इस्साईल | 22 | 519 |
| | यूसुफ़ | 110 | 444 |
| परलोक में अल्लाह का दर्शन | अल कियामः | 24 | 1193 |
| प्रत्येक कर्म का प्रतिफल मिलेगा | अल कहफ़ | 50 | 548 |
| | ता हा | 16 | 577 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|--|--------------------------------------|
| उस दिन सत्य ही भारी सिद्ध होगा धरती और आकाश विनाश के ब्लेकहॉल में प्रविष्ट कर दिये जाएँगे | अल आ'राफ टीका | 9 904 | 269 904 |
| इहलोक में जो ज्ञान-दृष्टि से वंचित है वह परलोक में भी ज्ञान-दृष्टि से वंचित होगा | बनी इस्साईल | 73 | 528 |
| परलोकीन उत्थान के बारे में बाह्य शब्दावली को ज्यों का त्यों घटित होना नहीं समझना चाहिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्म-पत्र उसके गले में टंगा होगा मनुष्य के अंग-प्रत्यंग भी गवाही देंगे | सूरः परिचय | | 1069 |
| कान, आँखों और चर्म की गवाही कथामत के दिन भौतिक शरीर नहीं बल्कि आध्यात्मिक शरीर इकट्ठे किये जाएँगे | बनी इस्साईल या सीन हामीम अस सज्जः | 14 टीका 66 21-23 | 518 855 931 |
| मृत्योपरांत पुनर्जीवित होने तक के समय की दीर्घता | सूरः परिचय | | 1190 |
| पुनर्जीवित होने वालों के साथ एक हाँकने वाला और एक गवाह होगा | काफ़ | 22 | 635 1023 |
| हश्र (कर्म-फल प्राप्ति) के दिन अपराधियों में से अधिकतर नीली आँखों वाले होंगे | सूरः परिचय ता हा | 103 | 1020 589 |
| परलोक के अस्वीकारियों का खंडन | अल अन्‌आम अन् नहल बनी इस्साईल या सीन अ ब स | 30-32 39-41 50-53 79,80 23 | 230-231 494 524 857 1220 |
| पर्दा | | | |
| आँखें नीची रखना पुरुष और स्त्री दोनों के लिए अनिवार्य है | अन नूर | 31,32 | 659 |
| मुसलमान महिलाओं के लिए चादर का पर्दा | अल अहजाब | 60 | 814 |
| वक्षःस्थल पर ओढ़नी डालने का निर्देश | अन नूर | 32 | 659 |
| अधिक आयु वाली महिलाओं के लिए पर्दा में हील पर्दे के तीन समय | अन नूर | 61 | 667 |
| परपुरुष के समक्ष सौन्दर्य प्रकट करने की मनाही | अन नूर | 59 | 667 |
| पहाड़ | | | |
| पहाड़ स्थिर नहीं बल्कि क्रमशः चलायमान है | अन नम्ल | 32 89 | 659 727 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|--|---|
| जीवन रक्षा की व्यवस्था पहाड़ों पर निर्भर है पहाड़ मनुष्य और पशुओं के भोजन का साधन हैं | सूरः परिचय अन नहल अन नाज़ियात अल अम्बिया लुकमान हामीम अस सज्दः हामीम अस सज्दः | 484 16 33,34 32 11 11 11 | 490 1216 601 783 929 929 |
| पहाड़ों के द्वारा खाने पीने के सामान चार युगों में पूरे किये गये | | | |
| सफ़ा और मरवा पहाड़ी अल्लाह के चिह्नों में से हैं जूदी पर्वत जहाँ तूफ़ान के बाद नूह की नौका ठहर गई | अल बक़रः हूद | 159 45 | 41 403 |
| तूरे-सैना और तूरे-सीनीन पर्वत शुंखला | अल मु'मिनून अत तूर अत तीन | 21 2 3 | 638 1037 1270 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशाल पर्वत के समान श्रेष्ठता | सूरः परिचय | | 459 |
| अमानत का जो बोझ हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर डाला गया पहाड़ भी उसको उठाने से डर गये | अल अहज़ाब | 73 | 816 |
| पहाड़ से अभिप्राय कठिन परिश्रमी जातियाँ पहाड़ों से अभिप्राय बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ हज़रत दाऊद अलै. के लिए पहाड़ सेवाधीन किये गये | सूरः परिचय सूरः परिचय अल अम्बिया साद | | 818 1285 608 879 |
| हज़रत दाऊद अलै. के साथ पहाड़ों का स्तुतिगान करना | सबा | 11 | 822 |
| पहाड़ों को टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा आने वाले युग में पहाड़ रेत के समान हो जाने का तात्पर्य | ता हा | 106 | 589 |
| अंत्युग में पहाड़ धुनकी हुई उन की भाँति हो जाएँगे | सूरः परिचय अल मआरिज अल क़ारिअः | | 574 1163 1286 |
| पानी | | | |
| पानी पर अल्लाह का सिंहासन होने का अर्थ धरती पर पानी की व्यवस्था | हूद सूरः परिचय | 8 टीका | 395 445 |
| आकाश और समुद्र के बीच पानी को जारी करना | सूरः परिचय | | 1036 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|-----------------------------|--------------------------------|
| अल्लाह इस पानी को लुप्त करने पर समर्थ है धरती से पानी लुप्त होने के दो कारण पानी से प्रत्येक जीवधारी का जन्म | अल मु'मिनून सूरः परिचय अल अम्बिया अन नूर | 19 31 46 | 637 634 601 664 |
| पानी से मनुष्य की उत्पत्ति पानी से प्रत्येक प्रकार के अंकुरण की उत्पत्ति पानी जीविका का आधार है समुद्रों के द्वारा यात्रा की सुविधायें समुद्र खाद्य सामग्री के माध्यम हैं | अल फुर्कान अल अन्नाम अल बकरः अल जासियः अन नह्ल | 55 100 23 13 15 | 680 247 7 978 490 |
| प्रतिज्ञा प्रतिज्ञापालन करने वाले नेक लोग होते हैं मोमिन अपनी प्रतिज्ञा की निगरानी करते हैं अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा को पूरी करो | अल बकरः अल मु'मिनून अन नह्ल अल माइदः बनी इस्साईल | 178 9 92 2 35 | 46 636 504 187 522 |
| प्रतिज्ञा पालन करने वालों को शुभ-समाचार प्रतिज्ञा पूरी करने वालों का दर्जा समझौता भंग करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही | अत तौबः आले इम्रान अल अन्फाल | 111 77 57-60 | 361 102 327 |
| प्रतिकार (किसास) हत्या किये गये व्यक्ति का प्रतिकार आवश्यक है 'किसास' जीवन की ज़मानत है | अल बकरः अल बकरः | 179 180 | 46 47 |
| प्रायश्चित (तौबः) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा प्रायश्चित स्वीकार करे मृत्यु के समय प्रायश्चित स्वीकार्य नहीं होगा अज्ञानता के कारण कुर्कम करने वाले का प्रायश्चित अवश्य स्वीकृत होता है | अन निसा अन निसा अन निसा | 28 19 18 | 143 139 139 |
| विशुद्ध प्रायश्चित अल्लाह जिस का चाहे प्रायश्चित स्वीकार करता है प्रायश्चित करने वालों की बुराइयों को अल्लाह नेकियों में परिवर्तित करता है | अत तह्रीम अत तौबः अल फुर्कान | 9 27 71 | 1140 340 683 |
| प्रायश्चित करने वाले स्वर्ग में प्रविष्ट किये जाएँगे | मरियम | 61 | 569 |
| प्लेग धरती का जीव (दाव्वतुल अर्ज) प्लेग का कारण है | अन नम्ल | 83 | 726 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|----------------|---------|-------|
| फ | | | |
| फरिश्ते | | | |
| (देवदूत) | | | |
| फरिश्तों पर ईमान लाना अनिवार्य है | अल बक्रः | 178 | 46 |
| फरिश्तों का इनकार करना पथभ्रष्टता है | अन निसा | 137 | 173 |
| फरिश्ते अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते | अत तह्रीम | 7 | 1140 |
| फरिश्ते अल्लाह की सृष्टि हैं | अस साफ़कात | 151 | 873 |
| फरिश्ते भौतिक आँख से नहीं दिखते | अल अन्आम | 9,10 | 226 |
| फरिश्तों का कोई लिंगभेद नहीं है | अस साफ़कात | 151 | 873 |
| फरिश्ते असंख्य हैं | अल मुद्दस्सिर | 32 | 1187 |
| जितना अल्लाह बताता है फरिश्तों को केवल | अल बक्रः | 33 | 10 |
| उतनी ही जानकारी होती है | | | |
| फरिश्ते विभिन्न योग्यताओं के अधिकारी हैं | फ़ातिर | 2 | 835 |
| फरिश्तों के चार परों से अभिप्राय पदार्थ के चार | सूरः परिचय | | 833 |
| मौलिक संयोजन क्षमता | | | |
| जिब्रील, मीकाईल | अल बक्रः | 98,99 | 26 |
| रूह-उल-अमीन | अश शुअरा | 194 | 704 |
| फरिश्ते अल्लाह की स्तुति और गुणगान करते हैं | अज़ जुमर | 76 | 906 |
| फरिश्तों का अल्लाह के समक्ष सज्दः किये रहना | सूरः परिचय | | 484 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर | अल अह़ज़ाब | 57 | 813 |
| फरिश्तों का दुर्ल भेजना | | | |
| फरिश्तों का मोमिनों के लिए क्षमा-प्रार्थना करना | अल मु'मिन | 8 | 910 |
| फरिश्तों का अर्श को उठाना | अल मु'मिन | 8 | 910 |
| अर्श को उठाने का अभिप्राय | सूरः परिचय | | 907 |
| कथामत के दिन अर्श को उठाने वाले फरिश्तों की | अल हाकः | 18 | 1157 |
| संख्या दोगुनी होगी | | | |
| कठोर और सशक्त फरिश्ते | अत तह्रीम | 7 | 1140 |
| मृत्यु का फरिश्ता | अस सज्दः | 12 | 792 |
| फरिश्तों का कर्मलेखन करना | अल इन्कितार | 11-13 | 1228 |
| फरिश्तों को सदेश वाहक के रूप में चुना जाना | अल हज्ज | 76 | 632 |
| मोमिनों को शुभ-समाचार देना | हामीم अस सज्दः | 31,32 | 933 |
| नबी और उनके अनुयायिओं की सहायता करना | आले इम्रान | 125 | 114 |
| नवियों के विरोधियों पर अज़ाब उतारना | अल अन्आम | 159 | 262 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|--|--|
| फरिश्तों को आदम के लिए सजदः करने का आदेश | अल बकरः अल आ'राफ बनी इस्माईल अल कहफ अल आ'राफ बनी इस्माईल अल फुर्कान | 35 12 62 51 32 27 68 | 10 269 526 548 273 520 682 |
| फ़िज़्रूल खर्ची | | | |
| | | | |
| ब | | | |
| बेरी वृक्ष (सिद्रः) | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अंतिम सीमा पर स्थित बेरी वृक्ष (सिद्रतुल मुंतहा) तक पहुँचना सिद्रतुल मुंतहा की वास्तविकता | अन नज्म सूरः परिचय | 15 | 1046 1044 |
| बैअत | | | |
| जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल. की बैअत करते हैं वास्तव में वे अल्लाह की बैअत करते हैं “‘बैअत-ए-रिज़वान’” करने वालों को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति की खुशखबरी महिलाओं की बैअत की प्रमुख बातें | अल फत्ह अल फत्ह अल मुम्तहिनः | 11 19 13 | 1006 1009 1110 |
| ब्याज | | | |
| ब्याज की मनाही ब्याज अल्लाह के निकट नहीं बढ़ता ब्याज को न छोड़ना अल्लाह और रसूल से युद्ध की घोषणा करने के समान है यहूदियों के ब्याज खाने का दुष्परिणाम | अल बकरः अर रूम अल बकरः अन निसा | 279 40 280 161,162 | 80 774 81 179 |
| भ | | | |
| भरोसा | | | |
| | इब्राहीम अत तलाकः अल फुर्कान | 13 4 59 | 462 1133 681 |
| भविष्यवाणियाँ | | | |
| कुरआन की भविष्यवाणियाँ अवश्य पूरी होंगी नबी के जीवनकाल में ही उसकी सभी भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं होतीं | सूरः परिचय यूनुस | 47 टीका | 1020 379 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| कुरआन करीम की अनगिनत ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहांत के बाद पूरी होनी शुरू हुई हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हिजरत और सफल प्रत्यावर्त्तन | यूनस | 47 टीका | 379 |
| अहज़ाब युद्ध में विजय की भविष्यवाणी | अल क़सस | 86 | 748 |
| | अल बलद | 3 | 1256 |
| | सूरः परिचय | | 1255 |
| | अल अहज़ाब | 23 | 804 |
| | साद | 12 | 878 |
| | अल क़मर | 46 | 1057 |
| रोमवासी ईरान पर विजयी होंगे रोमवासियों के विजय के साथ मोमिनों के लिए भी खुशी का सामान (अर्थात बद्र युद्ध में विजय प्राप्ति) ‘कैसर’ और ‘किसा’ (अर्थात रोम और ईरान) के साम्राज्यों का रेत की भाँति हो जाने का अर्थ अंत्ययुग में बिखरे हुए यहूदियों को फिलिस्तीन में एकत्रित किया जाएगा क्यामत तक ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे जो यहूदियों को दंडित करते रहेंगे यहूदी धरती पर दो बार उपद्रव करेंगे भविष्य में मुसलमानों की विजयप्राप्ति की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अंत्ययुगीनों में पुनरागमन एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी जो सूर्य के पश्चात् उसका अनुगमन करते हुए निकलेगा समस्त नबियों का द्योतक आविर्भूत होगा ‘याजूज़’ और ‘माजूज़’ का प्रभुत्व Genetic Engineering (आनुवंशिकी इंजीनियरिंग) के आविष्कार की भविष्यवाणी आने वाले युग में पुरातत्त्वज्ञान की महत्वपूर्ण उन्नति और मनोविज्ञान की जानकारी पर ज़ोर | सूरः परिचय | 574 | |
| | बनी इस्राईल | 105 | 534 |
| | अल आ’राफ़ | 168 | 303 |
| | बनी इस्राईल | 5 | 516 |
| | अल अहज़ाब | 28 | 806 |
| | अल जुमउः | 4 टीका | 1118 |
| | अश शम्स | 3 | 1259 |
| | सूरः परिचय | | 1184 |
| | अल मुर्सलात | 12 | 1203 |
| | सूरः परिचय | | 1201 |
| | अल अम्बिया | 97 | 611 |
| | अल कहफ | 95 | 556 |
| | अन निसा | 120 | 168 |
| | टीका | | |
| | अल आदियात | 10-11 | 1283 |
| | टीका | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---------------|---------|-------|
| खगोल विज्ञान की उन्नति | अत तक्वीर | 12 | 1225 |
| धरती की सीमाएँ फैलेंगी | अर रहमान | 38 टीका | 1064 |
| दो पूर्वी दिशाओं और दो पश्चिमी दिशाओं का वर्णन और आने वाले युग की महत्वपूर्ण खोज के संबंध में भविष्यवाणी | अल इन्शिकाक | 4 | 1235 |
| मनुष्य इस ब्रह्माण्ड को लांघने का प्रयास करेगा | अर रहमान | 18 टीका | 1061 |
| समुद्रों को परस्पर मिलाया जाएगा | अर रहमान | 34 | 1063 |
| प्रशांत महासागर और अतलांतिक महासागर की मध्यवर्ती रोक को हटाया जाएगा | अल फुर्कान | 20 | 1062 |
| सुएज़ नहर बनाये जाने की भविष्यवाणी | अल फुर्कान | 54 टीका | 680 |
| भू-गर्भ विज्ञान की उन्नति | अर रहमान | 20-23 | 1062 |
| कब्रों में गड़े रहस्य ज्ञात किये जायेंगे | टीका | | 1062 |
| धरती अपना ब्रोज़ (खज्जाना) उगल देगी | अल इन्शिकाक | 5 | 1235 |
| नूह की नौका सुरक्षित है और समय आने पर निकाल ली जाएगी | सूरः परिचय | | 1234 |
| पहाड़ों के समान समुद्री जहाज़ बनेंगे | अल इन्कितार | 5 | 1228 |
| समुद्रों में जहाजरानी बहुत होगी | अल आदियात | 10 | 1283 |
| युद्धों में पनडुब्बियों के प्रयोग की भविष्यवाणी | अज़ ज़िल्ज़ाल | 3 | 1281 |
| ऊँट बेकार हो जाएंगे | अल कमर | 14-16 | 1053 |
| अधिक संख्या में पुस्तकों का प्रकाशन होगा | अर रहमान | टीका | 1062 |
| कुरआन अधिकता पूर्वक लिखा जाएगा | अश शूरा | 25 | 950 |
| आने वाले युग की सभ्य जातियों का वर्णन | सूरः परिचय | | 1222 |
| पीड़ित अहमदियों के बारे में भविष्यवाणी कि उनके घर जलाये जाएंगे | सूरः परिचय | | 1212 |
| लड़कियों को ज़िंदा गाइने की प्रथा समाप्त होने की भविष्यवाणी | अत तक्वीर | 5 | 1224 |
| चिड़ियाघरों का रिवाज | अल बुरूज | 9-8 | 1239 |
| | | टीका | 1222 |
| | अत तक्वीर | 9 | 1224 |
| | सूरः परिचय | | 1222 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|--------------|----------------------|
| संसार की सभी जातियों का परस्पर संबंध आसमानों पर चलने फिरने वाली सृष्टि धरती की सृष्टि के साथ एक दिन एकत्रित कर दी जाएगी | अत तक्वीर अत तक्वीर अश शूा | 6 8 30 | 1224 1224 949 |
| धरती पर अवस्थित कुछ ईश्वरीय साक्षों का वर्णन | सूरः परिचय | | 1036 |
| भविष्य में ऐसी जातियाँ होंगी जिन का शासन Divide and Rule (फूट डालो और राज करो) के सिद्धांत पर आधारित होगा | अल फलक सूरः परिचय | 5 टीका | 1304 1303 |
| अंत्ययुग में यहूदियों और ईसाइयों का भ्रम उत्पन्न करना | अन नास | 5-7 | 1306 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया कि सूरः अद दुखान की भविष्यवाणियों का प्रकटन दज्जाल के युग में होगा विश्वयुद्धों का विवरण | सूरः परिचय | | 969 |
| आकाश से अग्निवर्षा | अर रहमान | 40 टीका | 1064 |
| परमाणु आक्रमणों की भविष्यवाणी | अर रहमान | 36 | 1063 |
| परमाणु धूएँ की ओर इशारा | अल मआरिज | 9,10 | 1163 |
| परमाणु युद्ध में आकाश रेडियो तरंगों का विकिरण करेगा | सूरः परिचय अद दुखान | 11 | 969 971 |
| आकाश घोर प्रकंपित होगा | सूरः परिचय | | 1202 |
| नयी सवारियाँ आविष्कार होंगी | अन नहल | 9 | 1036 489 |
| आकाश पर उड़ने वाले जहाजों के संबंध में भविष्यवाणी | सूरः परिचय | | 1070 |
| लड़ाकू विमानों की भविष्यवाणी | सूरः परिचय | | 858 |
| लड़ाकू विमान शत्रुओं पर बहुत पर्चे गिरायेंगे जिन पर संदेश लिखे होंगे | सूरः परिचय | | 858 |
| द्रुतगामी जहाजों की भविष्यवाणी | अल मुर्सलात | 3 | 1203 |
| तीन विभागों वाली अग्नि का तात्पर्य | सूरः परिचय अल मुर्सलात सूरः परिचय | 31 | 1201 1205 1201 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|----------------|---------|-------|
| म मकड़ी | | | |
| मकड़ी के जाले का उदाहरण | अल अन्कबूत | 42 | 759 |
| मकड़ी के जाले का उदाहरण देने का निहितार्थ | सूरः परिचय | | 750 |
| मकड़ी के धागे में और जाल में शक्तिहीनता | सूरः परिचय | | 750 |
| मक्का-विजय | | | |
| मक्का-विजय के बारे में समय से पूर्व भविष्यवाणी | अल कसस | 86 | 748 |
| | अल बलद | 3 | 1256 |
| | अन नस्स | 2,3 | 1300 |
| मधु / मधुमक्खी | | | |
| मधुमक्खी की ओर वहइ | अन नह्ल | 69 | 499 |
| मधुमक्खी के उदाहरण से वहइ की महत्ता का वर्णन | सूरः परिचय | | 485 |
| मधु में आरोग्य तत्व है | अन नह्ल | 70 | 499 |
| मधुमक्खी और उसके मधु में सोच-विचार करने वालों के लिए अनेक चिह्न हैं | अन नह्ल | 70 | 499 |
| मधुमक्खी ऐसे दास के समान है जिसे उत्तम जीविका दी गई हो जिसे वह आगे भी बाँटे | सूरः परिचय | | 485 |
| मनुष्य | | | |
| अल्लाह ने मनुष्य को अपनी प्रकृति के अनुरूप पैदा किया है | अर रूम | 31 | 772 |
| मनुष्य जन्म का उद्देश्य | अज़ जारियात | 57 | 1034 |
| मनुष्य से उत्कृष्ट सृष्टि पैदा करने पर अल्लाह सक्षम है | अल मआरिज | 41,42 | 1166 |
| प्रत्येक मनुष्य से वचन लिया गया है कि वह अपने रब पर ईमान लाये | अल हर्दाद | 9 | 1083 |
| मनुष्य में दुराचारों और सदाचारों में प्रभेद करने की क्षमता | अश शम्स | 9 | 1259 |
| दो ऊँचे रास्तों की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन | अल बलद | 11 | 1256 |
| | सूरः परिचय | | 1255 |
| मनुष्य अपने कर्म में स्वतंत्र है | हामीम अस सज्दः | 41 | 935 |
| मनुष्य की बड़ाई और सम्मान | बनी इस्साईल | 71 | 528 |
| अल्लाह ने मनुष्य को जन्म देकर उसे अभिव्यक्त करने की शक्ति प्रदान की | अर रहमान | 4,5 | 1060 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|---------------------------------|---|
| अल्लाह मनुष्य पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता | अल मुमिनून अत तलाक अल बक्रः फ़ातिर | 63 8 234,287 33 | 643 1134 64,84 841 |
| मनुष्य की तीन श्रेणी 1. स्वयं पर अत्याचारी 2. मध्यमार्गी 3. नेकियों में अग्रगामी | | | |
| मनुष्य स्वयं के बारे में भली-भाँति जानता है मनुष्य को वही प्राप्त होता है जिसके लिए वह प्रयास करता है | अल क़ियामः अन नज्म | 15 40 | 1193 1048 |
| मनुष्य को परिश्रम करने से छुटकारा नहीं मनुष्य भलाई माँगने से नहीं थकता | अल बलद हामीم अस सज्दः | 5 50 | 1256 938 |
| मनुष्य को कष्ट पहुँचता है तो वह बहुत दुआयें करता है | यूनस अज़ जुमर | 13 9,50 | 370 893,901 |
| मनुष्य पर जब नेमत उत्तरती है तो वह मुँह फेरने लगता है | हामीम अस सज्दः हामीम अस सज्दः | 52 52 | 939 938 |
| मनुष्य बुराई को ऐसे माँगता है जैसे भलाई माँग रहा हो | बनी इस्साईल | 12 | 517 |
| मनुष्य की प्रकृति में उतावलापन है मनुष्य को लालची पैदा किया गया है | अल अम्बिया अल मआरिज | 38 20 | 602 1164 |
| मनुष्य बड़ा कंजूस बना है मनुष्य का जन्म, मरण और पुनरुत्थान इसी धरती से संबद्ध होने का तात्पर्य | बनी इस्साईल ताहा | 101 56 टीका | 533 581 |
| मनुष्य की सृष्टि और विकास | | | |
| मनुष्य जन्म से सूर्व कुछ न था जल से मनुष्य की उत्पत्ति | मरियम अन नूर अल फुर्कान अल मुर्सलात अत तारिक आले इम्रान | 68 46 55 21 7 60 | 570 664 680 1204 1243 99 |
| मिट्टी से मनुष्य की उत्पत्ति | अल हज्ज अर रूम | 6 21 | 617 770 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|--------------------------|---------------------------------|
| गीली मिट्टी से मनुष्य की उत्पत्ति | फ़ातिर अल मु'मिन अल अन्नाम अस सज्दः साद | 12 68 3 8 72 | 837 921 225 792 887 |
| चिमट जाने वाली मिट्टी से उत्पत्ति | अल मु'मिनून | 13 | 637 |
| गले सड़े कीचड़ से उत्पत्ति | अस साफ़कात अल हित्र अल हित्र | 12 27 34 | 861 476 477 |
| शुष्क खनकती हुई मिट्टी से उत्पत्ति | अल हित्र अर रहमान | 27 15 | 476 1061 |
| वीर्य से मनुष्य की उत्पत्ति | अन नहल या सीन अल कियामः अ ब स | 5 78 38 19,20 | 488 856 1194 1220 |
| मिश्रित वीर्य से उत्पत्ति | अद दहर | 3 | 1197 |
| चिमट जाने वाले लोथड़े से मनुष्य की उत्पत्ति | अल अलकः | 3 | 1273 |
| मनुष्य पर वानस्पत्य युग | नूह टीका टीका | 18 | 1170 1171 945 |
| गर्भाशय में मनुष्य उत्पत्ति के विभिन्न चरण | अल हज्ज अल मु'मिनून सूरः परिचय | 6 13-15 | 617 637 780 |
| तीन अंधकारों में उत्पत्ति | अज़ ज़ुमर सूरः परिचय | 7 | 892 889 |
| गर्भाशय में मनुष्य उत्पत्ति का अन्तिम चरण | अल मु'मिनून | 15 | 637 |
| एक जान से जोड़ा बनाना | अन निसा | 2 | 133 |
| मनुष्य की पुरुष और स्त्री के रूप में उत्पत्ति | अन नज्म | 46 | 1049 |
| मनुष्य उत्पत्ति के तीन चरण :- उत्पत्ति, बराबर करना और व्यवस्थित करना | अल इन्फितार | 8 | 1228 |
| मनुष्य के क्रमबद्ध रूप से विकास का वर्णन | सूरः परिचय अत तीन टीका | | 1269 5,6 1270 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|--|--|
| ‘नीच बंदर’ मनुष्य विकास सिद्धांत के संबंध में कुरआन की सच्चाई का एक चिह्न प्रारंभिक विकास के युग का वर्णन विकास के क्रम में सर्वप्रथम श्रवणशक्ति फिर दृष्टिशक्ति और फिर हृदय प्रदान किया जाना मनुष्य उत्पत्ति का महत्वपूर्ण युक्ति और गूढ़ रहस्य मनुष्य के DNA (डी.एन.ए.) में कंप्यूटरीकृत प्रोग्राम क्लोरोफिल (हरितकी) का मनुष्य उत्पत्ति से संबंध आकाश गंगाये (Galaxies) भी मनुष्य जीवन पर प्रभाव डालती हैं धरती पर यदि प्राणीवर्ग न होते तो मनुष्य का जीवित रहना असंभव था प्रत्येक जान को अल्लाह ने न्यायपूर्वक उत्पन्न किया है मनुष्य में भले-बुरे में भेद करने की शक्ति वही और ईश्वारी की देन है मनुष्य-उन्नति का युग लेखनी के आधिपत्य से आरंभ होता है प्रारंभ में एक ही भाषा थी और सभी मनुष्यों का रंग भी एक था मनुष्य ‘लघुब्रह्मांड’ (Micro Universe) है प्रत्येक मनुष्य के आगे पीछे उसके गुप्त रक्षक मौजूद हैं (एक विज्ञान संबंधी विषय) | अत तशाबुन नूह अल बकरः सूरः परिचय अल मु'मिनून सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय अश शम्स सूरः परिचय टीका सूरः परिचय सूरः परिचय | 4 15-19 66 टीका 79 79 79 79 62 9 | 1127 1170 17 1196 645 1058 1070 224 780 485 498 1258 1259 1149 770 976 445 |
| मस्जिद मस्जिदें विशुद्ध रूप से अल्लाह की उपासना के लिए होती हैं मस्जिद और अन्य पूजास्थलों का सम्मान मस्जिद जाने की विधि मस्जिद को स्वच्छ और पवित्र रखा जाए मस्जिद से रोकना सब से बड़ा अत्याचार है | अल जिन अल हज्ज अल आ'राफ अल बकरः अल बकरः | 19 41 32 126 115 | 1177 625 273 33 30 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक्सा की ओर रात्रि-विचरण | बनी इस्लाईल | 2 | 515 |
| कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से निर्मित मस्जिद को गिराने का निहितार्थ | अत तौबः | 107 | 360 |
| मुनाफ़िकः | | | |
| मुनाफ़िक का परिचय | अन निसा | 144 | 175 |
| मुनाफ़िक आज्ञापलन का दावा केवल मुँह से करता है | अन निसा | 82 | 157 |
| मुनाफ़िकों के दिल की हालत से अल्लाह अवगत है | अन निसा | 64 | 153 |
| मुनाफ़िकों की अल्लाह और रसूल से घृणा | अन निसा | 62 | 152 |
| मुनाफ़िकों की मुसलमानों को धर्मभ्रष्ट करने की चेष्टा | अन निसा | 90 | 160 |
| मुनाफ़िकों का अफवाह फैलाना | अन निसा | 63 | 153 |
| मुनाफ़िकों की उपासना में सुस्ती | अन निसा | 143 | 174 |
| मुनाफ़िकों के लिए पीड़ाजनक अज्ञाब है | अन निसा | 139 | 173 |
| | अन निसा | 146 | 175 |
| मुनाफ़िकों की ओर से हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर ख्यानत और बेर्इमानी का आरोप | सूरः परिचय | | 332 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मुनाफ़िकों की नमाज़-जनाज़: पढ़ने और उनके लिए दुआ करने की मनाही | अत तौबः | 84 | 354 |
| मुनाफ़िकों का भय कि कहीं उनके बारे में कुरआन में आयत न उतर जाये | अत तौबः | 64 | 349 |
| मुबाहलः | | | |
| (एक दूसरे के विरुद्ध अमंगल की प्रार्थना करना) | | | |
| ईसाइयों को मुबाहलः की चुनौती | आले इम्रान | 62 | 99 |
| यहूदियों को मुबाहलः की चुनौती | अल जुमुअः | 7 | 1120 |
| मुश्किल | | | |
| कृत्रिम उपास्यों के मुक्ति-माध्यम होने का खंडन | सूरः परिचय | | 889 |
| अपवित्रता से अभिप्राय मक्का के मुश्किल | सूरः परिचय | | 1184 |
| मुश्किल भी शरण मांगें तो उन्हें शरण दो | अत तौबः | 6 | 335 |
| शिर्क की अवस्था में मृत्यु प्राप्त करने वाले मुश्किलों के लिए नबी और मोमिन क्षमा-प्रार्थना न करें | अत तौबः | 113 | 362 |
| मूर्तिपूजा का खंडन | | | |
| मूर्तिपूजा करना मूर्खता है | अल आ'राफ़ | 139 | 295 |
| मूर्तिपूजा से बचने की दुआ | इब्राहीम | 36 | 467 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|---------|
| मूर्तिपूजा करना पश्चाट्टा है | अल अन्आम | 75 | 240,241 |
| मूर्तिपूजा के विरुद्ध तर्क | अश शुअरा | 71-78 | 694 |
| मूर्तिपूजा की वास्तविकता को उजागर करने के लिए हज़रत इब्राहीम अलै. का अनूठा उपाय | अल अम्बिया | 59-64 | 605 |
| मूर्तियों की अपवित्रता से बचने का निर्देश | टीका | | |
| मूर्तिपूजा से परहेज करने का निर्देश | अल हज्ज | 31 | 623 |
| मूर्तिपूजा करना वस्तुतः झूठ गढ़ना है | अन नह्ल | 37 | 494 |
| कथामत के दिन मूर्तिपूजक परस्पर ला'नत डालेंगे और उनका ठिकाना आग होगा | अल अन्कबूत | 18 | 753,754 |
| मूर्तिपूजकों पर अल्लाह की ला'नत | अल अन्कबूत | 26 | 755 |
| मूर्तिपूजा से परहेज करने और अल्लाह की ओर झुकने वालों के लिए शुभ समाचार | अन निसा | 52,53 | 150 |
| मूर्ति अल्लाह तक पहुँचाने का माध्यम कदापि नहीं | अज़ जुमर | 18 | 895 |
| मूर्तिपूजा वस्तुतः शैतान की उपासना है | सूरः परिचय | | 889 |
| | अन निसा | 118 | 168 |
| मृत्यु | | | |
| प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु अनिवार्य है | अन निसा | 79 | 157 |
| मरने के बाद मनुष्य इस लोक में नहीं आ सकता दो मृत्यु और दो जीवन का तात्पर्य | अल अम्बिया | 35 | 601 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा आध्यात्मिक मुर्दों को जीवनदान | अल मु'मिनून | 101 | 648 |
| हज़रत ईसा अलै. का आध्यात्मिक मुर्दों को जीवित करना | अल मु'मिन | 12 | 911 |
| नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है | अल अन्काल | 25 | 318 |
| वैज्ञानिक मुर्दों को जीवित नहीं कर सकेंगे | आले इम्रान | 50 | 96 |
| निश्चित अवधि के पूर्व या बाद की मृत्यु | सूरः परिचय | | 890 |
| मृत्यु के बाद जी उठने तक के समय की दीर्घता | सूरः परिचय | | 596 |
| | अल अन्आम | 3 टीका | 225 |
| | सूरः परिचय | | 635 |
| मृत्यु के बाद जीवन | | | |
| अल्लाह ही मृत्यु के बाद जीवित करने पर समर्थ है | अल क़ियामः | 41 | 1195 |
| | या सीन | 13 | 848 |
| | अश शूरा | 10 | 944 |
| अल्लाह ही जीवित करता है और मृत्यु देता है | अल बक्रः | 259 | 74 |
| | आले इम्रान | 157 | 121 |

| शीर्षक | संदर्भ | आचत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|---------|
| | अल आ'राफ़ | 159 | 301 |
| | यूनुस | 57 | 380 |
| | अल हित्र | 24 | 475 |
| | अल हज्ज | 7 | 618 |
| | काफ़ | 44 | 1025 |
| | अन नज्म | 45 | 1049 |
| | अल अम्बिया | 96 | 611 |
| | या सीन | 32 | 850,851 |
| मरने वाले जीवित होकर इस लोक में नहीं लौटते | अल अन्नाम | 123 | 252 |
| मृत्यु के बाद जीवित होने की वास्तविकता | अल बक्रः | 261 | 75 |
| मृत्यु के बाद जीवित होने की वास्तविकता को | टीका | | |
| ज्ञानने के लिए हज़रत इब्राहीम अलै. की जिज्ञासा | अल अन्काल | 25 टीका | 318 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के द्वारा पुनरुज्जीवन | सूरः परिचय | | 1143 |
| मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण शुभ समाचार | आले इम्रान | 50 | 96 |
| हज़रत ईसा अलै. का आध्यात्मिक मुद्दों को | अल अन्काल | 43 | 323 |
| जीवित करना | परिचय | | |
| स्पष्ट युक्ति के द्वारा आध्यात्मिक मुद्दों का | अन् नहल | 98 | 505 |
| पुनरुज्जीवन | अल मु'मिन | 12 | 911 |
| पवित्र जीवन प्राप्ति के उपाय | अल हज्ज | 67 | 630 |
| दो बार मरना और दो बार जीवित होना | अल बक्रः | 260 | 74 |
| परलोक में पुनः जीवन प्राप्ति | | | |
| एक व्यक्ति को सौ वर्ष तक मृत्यु देने के पश्चात | | | |
| पुनर्जीवित करने का तात्पर्य | | | |
| मे'राज | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का मे'राज | अन नज्म | 14 | 1046 |
| मे'राज आध्यात्मिक था | अन नज्म | 12 | 1045 |
| | सूरः परिचय | | 1044 |
| य | | | |
| यहूदी मत | | | |
| यहूदियों की बुराइयाँ जो उनमें उनकी निर्दयता के | सूरः परिचय | | 512 |
| दिनों में घर कर गई थीं | | | |
| 'अभिशप्त वृक्ष' से अभिप्राय यहूदी | सूरः परिचय | | 513 |
| यहूदियों की प्रतिज्ञा की तुलना में नवियों की | सूरः परिचय | | 85 |
| प्रतिज्ञा का वर्णन | टीका | | 104 |

| शीर्षक | संदर्भ | आचत सं. | पृष्ठ |
|---|------------------------|-----------------|-------------|
| अंत्ययुग में यहूदियों का फ़िलिस्तीन पर अधिकार और फिर वहाँ से निकाले जाने की भविष्यवाणी यहूदियों का दावा कि उनके अतिरिक्त कोई स्वर्ग का अधिकारी नहीं | सूरः परिचय | | 512 |
| यहूदियों के ब्याज खाने और लोगों के धन हरण करने और अत्याचार करने का दंड | अल बक्रः | 112 | 30 |
| प्रथम एकत्रिकरण के समय यहूदियों को दंड यहूदियों की ईसाइयों के साथ क्रयामत तक शत्रुता रहेगी | अन निसा 162 | 161, 179 180 | |
| यहूदियों और ईसाइयों की सामुहिक चेष्टाओं का सार | सूरः परिचय अल माइदः | 15 | 1098 192 |
| याजूज माजूज | सूरः परिचय | | 1305 |
| याजूज माजूज के आक्रमणों से बचाव के लिए जुल-कर्नेन का प्राचीर निर्माण | अल कहफ | 95-97 | 556 |
| याजूज और माजूज का विजयारंभ | अल अम्बिया | 97 | 611 |
| याजूज और माजूज के आपसी युद्ध | अल कहफ | 100 | 557 |
| याजूज माजूज के युग में वैज्ञानिक मुर्दों को जीवित करने में सफल नहीं हो पायेंगे | सूरः परिचय | | 596 |
| युद्ध/जिहाद | | | |
| केवल प्रतिरक्षात्मक युद्ध उचित है | अल बक्रः | 191,192 | 50-51 |
| युद्ध का उद्देश्य धार्मिक स्वतंत्रता की स्थापना है युद्ध में किसी प्रकार का अत्याचार उचित नहीं | अल हज्ज | 40 | 625 |
| युद्ध में समझौतों का पालन करना अनिवार्य है | अल बक्रः | 194 | 51 |
| युद्ध में शत्रु से भी न्याय करना आवश्यक है | अल बक्रः | 191 | 50 |
| यदि शत्रु संधि की ओर आगे बढ़े तो संधि कर लेनी चाहिए | अन नह्ल | 127 | 510 |
| भयभीत होकर संधि करने की मनाही | अत तौबः | 4 | 334 |
| दो जातियों के युद्ध को रोकने के लिए सामुहिक प्रयास करने का निर्देश | अल माइदः | 9 | 191 |
| खूनी युद्ध के बिना युद्धबंदी बनाना उचित नहीं | अल अन्फाल | 62 | 328 |
| युद्धबंदियों को मुक्तिमूल्य लेकर अथवा दया पूर्वक छोड़ दिया जाये | मुहम्मद | 36 | 1002 |
| | अल हुजुरात | 10 | 1016 |
| | | | 1017 |
| | अल अन्फाल | 68 | 329 |
| | मुहम्मद | 5 | 995 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|-------|
| राष्ट्रीय सीमाओं पर छावनियाँ बनाने का निर्देश यथाशक्ति युद्ध की तैयारी रखनी चाहिए | आले इम्रान | 201 | 131 |
| मुकाबला पूरे ज़ोर और वीरता के साथ करनी चाहिए अल्लाह के रास्ते में युद्ध में मरने वाले शहीद होते हैं अल्लाह के रास्ते में युद्ध के लिए धैर्य अत्यावश्यक है | अल अन्फ़ाल | 61 | 327 |
| अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वालों का दर्जा | अल अन्फ़ाल | 58 | 327 |
| शत्रु के साथ भीषण युद्धों और उनके परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का समाधान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबियों के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने का आदेश अंतरात्मा के साथ जिहाद (अर्थात् प्रयत्न) और उसके फलाफल | आले इम्रान | 141 | 116 |
| कुरआन के द्वारा जिहाद करना बड़ा जिहाद है धन के द्वारा जिहाद तलवार के द्वारा जिहाद | आले इम्रान | 142 | 117 |
| युद्ध की अनिवार्यता | अल बक़रः | 155 | 41 |
| अल अन्फ़ाल | आले इम्रान | 170 | 124 |
| सूरः परिचय | | | 132 |
| कुरआन के द्वारा जिहाद करना बड़ा जिहाद है धन के द्वारा जिहाद तलवार के द्वारा जिहाद | सूरः परिचय | | 1282 |
| अल हज़ज़ | अल हज़ज़ | 79 | 632 |
| अल अन्कबूत | अल अन्कबूत | 70 | 764 |
| अल फुर्क़ान | अल फुर्क़ान | 53 | 680 |
| अल अन्फ़ाल | अल अन्फ़ाल | 73 | 330 |
| अल हज़ज़ | अल हज़ज़ | 40 | 625 |
| सूरः परिचय | | | 615 |
| अल बक़रः | अल बक़रः | 217 | 57 |
| अल हज़ज़ | अल हज़ज़ | 79 | 632 |
| अत तौबः | अत तौबः | 73 | 351 |
| अस सफ़़र | अस सफ़़र | 5 | 1113 |
| अल आदियात | सूरः परिचय | | 876 |
| जिहाद के लिए तैयार किये गये घोड़ों के माथों में कथामत तक के लिए बरकत | अल आदियात | 2-6 | 1283 |
| जिहाद में भाग लेने वाले घोड़ों का वर्णन युद्ध में बंदी होने वालों के अधिकार मोमिनों को ज़बरदस्ती धर्मच्युत करने वालों के विरुद्ध युद्ध की अनुमति | अन नूर | 33,34 | 660 |
| अल बक़रः | अल बक़रः | 194 | 51 |
| टीका | टीका | | |
| अल बक़रः | अल बक़रः | 218 | 58 |
| अल अन्फ़ाल | अल अन्फ़ाल | 40 टीका | 322 |
| अल बक़रः | अल बक़रः | 195,218 | 51,58 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|-----------------------------|---|
| मस्जिद-ए-हराम में युद्ध दरिद्रता के बावजूद सहाबियों का जिहाद में सम्मिलित होने का उत्साह बीमार और अपाहिज को युद्ध में शामिल न होने की छूट हज़रत मुहम्मद सल्ल. के इनकार के परिणाम स्वरूप भीषण युद्ध होंगे | अल बकरः अत तौबः अल फत्ह | 192 92 18 | 51 356 1008 |
| दुनिया के सभी युद्ध धन के कारण लड़े जाते हैं एक विश्वयुद्ध के बाद अगला विश्वयुद्ध नई तबाही लेकर आयेगा इस्लाम के विरुद्ध युद्ध भड़काने वाले अपमानित होंगे हज़रत मुहम्मद सल्ल. और आपके साथी कदापि युद्ध नहीं करते यदि युद्ध के द्वारा उनका धर्म परिवर्तित करने की चेष्टा न की जाती | सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय | | 614 1282 969 1301 313 |
| युद्धलब्ध धन का विवरण बद्र युद्ध बद्र युद्ध के समय मुसलमान बहुत कमज़ोर थे इस अवसर पर मुनाफ़िकों का आचरण मोमिनों को काफ़िर अल्प संख्या में दिखाये जाने का यथार्थ बद्र युद्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं के फलस्वरूप विजय मिली | अल अन्फ़ाल आले इम्रान अल अन्फ़ाल अल अन्फ़ाल | 42 124 50,51 44,45 | 323 113 325 326 323 324 |
| उहद युद्ध हज़रत मुहम्मद सल्ल. का सहाबियों को रणक्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थानों पर बैठाना उहद युद्ध में हज़रत इस्माईल अलै. की कुर्बानी की याद ताजा हुई युद्ध के समय सहाबियों के मतभिन्नता का नुकसान खंदक / अहज़ाब युद्ध काफ़िरों ने चारों ओर से आक्रमण किया आंधी का चलना काफ़िरों की पराजय का कारण बना अल्लाह की चमत्कारिक सहायता अहज़ाब युद्ध में विजय की भविष्यवाणी | सूरः परिचय आले इम्रान आले इम्रान अल अहज़ाब | | 312 113 85 119 802 802 797 804 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--------------|---------|-------|
| तबूक युद्ध | साद | 12 | 878 |
| हुनैन युद्ध | अल क़मर | 46 | 1057 |
| अल्लाह की सहायता | टीका | | 363 |
| रसूल और मोमिनों पर शांति वर्षण | अत तौबः | 25 | 339 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की | अत तौबः | 26 | 339 |
| दुआ के कारण विजय मिली | سُورः پاریچय | | 332 |
| भविष्यकालीन युद्ध | | | |
| भविष्य में होने वाले युद्धों को साक्षी ठहराना | अज ज़ारियात | 2-4 | 1029 |
| भविष्य के युद्धों में पनडुब्बियों का उपयोग होगा | अन नाज़ियात | 2-5 | 1214 |
| | سُورः پاریچय | | 1212 |
| परमाणु युद्धों में आकाश से रेडियो तरंगें विकिरण होंगी | سُورः پاریچय | | 1202 |
| भविष्य के युद्ध तीन प्रकार के होंगे | अल मुर्सलात | 31 | 1205 |
| | سُورः پاریچय | | 1201 |
| र | | | |
| रहबानियत | | | |
| (आजीवन बहाचारी रहना) | | | |
| रहबानियत अप-संस्कार है | अल हरीद | 28 | 1088 |
| रोज़ा (उपवास) | | | |
| रमज़ान की महिमा | अल बक़रः | 186 | 48 |
| रमज़ान के रोज़े अनिवार्य हैं | अल बक़रः | 184 | 47 |
| रमज़ान के रोज़े पूरे एक माह रखने अनिवार्य हैं | अल बक़रः | 186 | 48 |
| रोज़े का समय | अल बक़रः | 188 | 49 |
| रोज़े रखना भलाई का कारण है | अल बक़रः | 185 | 48 |
| बीमार और यात्री के लिए छूट | अल बक़रः | 186 | 48 |
| रोज़े की क्षतिपूर्ति : एक दरिद्र को भोजन कराना | अल बक़रः | 185 | 48 |
| रोज़ों की रातों में पत्नी-संसर्ग की अनुमति | अल बक़रः | 188 | 49 |
| ए'तिकाफ़ में पत्नी-संसर्ग वर्जित है | अल बक़रः | 188 | 49 |
| ल | | | |
| लेखनी | | | |
| लेखनी और दवात की क़सम | अल क़लम | 2 | 1150 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------|---------|-------|
| अल्लाह तआला ने लेखनी के द्वारा ज्ञान प्रदान किया | अल अलक | 5 | 1273 |
| मनुष्य की उन्नति का रहस्य लेखनी में है | सूरः परिचय | | 1272 |
| मनुष्य की सभी उन्नतियों का दौर लेखनी के प्रभुत्व से आरंभ होता है | सूरः परिचय | | 1149 |
| यदि दुनिया के सारे पेड़ लेखनी बन जायें तो भी अल्लाह के वाक्य लिखित में नहीं लाये जा सकते | अल कहफ | 110 | 558 |
| लैल-तुल कङ्द्र (मंगलमयी रात्रि) | | | |
| लैल-तुल-कङ्द्र का एक अर्थ कुरआन अवतरण का युग | अल कङ्द्र | 2 | 1276 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की सर्वाधिक अंधकारमय रात्रि का वर्णन | सूरः परिचय | | 1275 |
| लैल-तुल-कङ्द्र हज़ार महीनों से बेहतर है | अद दुखान | 4 | 970 |
| उषाकाल के उदय तक फ़रिश्तों का अवतरण | सूरः परिचय | | 1275 |
| ब | | | |
| वहइ और इल्हाम | | | |
| मनुष्य के साथ ईश्वरीय वार्तालाप की तीन स्थितियाँ | अश शूरा | 52 | 953 |
| मनुष्य में भले-बुरे में प्रभेद करने की क्षमता | सूरः परिचय | | 942 |
| उसकी प्रकृति में रख दी गई है | अश शास्त्र | 8,9 | 1259 |
| वहइ और इल्हाम सदा जारी रहेंगे | हामीम अस सज्दः | 31-32 | 933 |
| मूसा अलै. की माँ की ओर वहइ | ताहा | 39,40 | 579 |
| हवारियों की ओर वहइ | अल क़सस | 8 | 732 |
| मधुमक्खी की ओर वहइ | अल माइदः | 112 | 220 |
| आसमानों की ओर वहइ | अन नह्ल | 69 | 499 |
| धरती की ओर वहइ | हामीम अस सज्दः | 13 | 929 |
| अल्लाह की वहइ में शैतान हस्तक्षेप नहीं कर सकता | अज़ ज़िल्ज़ाल | 6 | 1281 |
| विज्ञान | | | |
| सृष्टि का आरंभ | सूरः परिचय | | 595 |
| यह ब्रह्मांड हर क्षण विस्तारशील है | अज़ ज़ारियात | 48 टीका | 1033 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|----------------|---------|-------|
| प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा उत्पन्न किया गया है | अज्ञ ज्ञारियात | 50 | 1033 |
| समग्र सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है | सूरः परिचय | 446 | |
| पदार्थ का हर कण जोड़ा-जोड़ा बनाया गया है | या सीन | 37 | 851 |
| जीवधारियों और उद्दिदों के जोड़े होने के साथ- | सूरः परिचय | 845 | |
| साथ अणु परमाणुओं के भी जोड़े हैं | टीका | 945 | |
| अणु और परमाणु के भी जोड़े-जोड़े होते हैं | सूरः परिचय | 446 | |
| द्रव्य (Matter) का जोड़ा प्रतिद्रव्य (Anti-matter) है | सूरः परिचय | 846 | |
| ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण | सूरः परिचय | 445 | |
| वर्तमान कालीन ब्रह्मांड की आयु | सूरः परिचय | 1161 | |
| पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन | सूरः परिचय | 789 | |
| क्लोरोफिल (Chlorophyll) का मनुष्य जन्म से | सूरः परिचय | 833 | |
| संबंध | सूरः परिचय | 224 | |
| पक्षियों की आश्चर्यजनक बनावट | सूरः परिचय | 486 | |
| धरती के लिए पानी की उपलब्धता की विचित्र | सूरः परिचय | 445 | |
| व्यवस्था | | | |
| धरती से पानी लुप्त होने की दो स्थिति | सूरः परिचय | 634 | |
| हरे-भरे पेड़ों से भी आग उत्पन्न हो सकती है | सूरः परिचय | 846 | |
| नये आविष्कारों के द्वारा फ़रिश्तों के रहस्य को | सूरः परिचय | 858 | |
| जानने की मनुष्य की चेष्टा | | | |
| रेडियो तरंगों प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर देती हैं | सूरः परिचय | 984 | |
| मकड़ी के धागे की शक्ति और उससे निर्मित जाल | सूरः परिचय | 750 | |
| की कमज़ोरी | | | |
| मुर्दों को जीवित करने में विज्ञान सफल नहीं होगा | सूरः परिचय | 596 | |
| छोटे से कण में आग के बंद होने का वर्णन | सूरः परिचय | 1291 | |
| परमाणु बम विस्फोट से निकलने वाली रेडियो | सूरः परिचय | 1291 | |
| तरंगों हृदय गति बंद कर देती हैं | | | |
| क्रयामत तक समाप्त न होने वाली उर्जा | सूरः परिचय | 471 | |
| परमाणु युद्ध की भविष्यवाणी, जब आकाश रेडियो | सूरः परिचय | 969 | |
| तरंगों बरसाएगा | | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-----------------|---------|---------|
| ‘दुखान’ (धुआँ) से तात्पर्य परमाणु धुआँ अमेरिका की खोज से नये विज्ञान युग का आरंभ गुप्त कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वाली नौकाओं को गवाह ठहराना | सूर: परिचय | | 969 |
| अत्ययुगीनों के समय की वैज्ञानिक प्रगति को गवाह ठहराना | सूर: परिचय | | 1234 |
| एक ही स्थान पर होते हुए आयाम बदल जाने से दो वस्तुओं का परस्पर कोई संबंध नहीं रहता | सूर: परिचय | | 1223 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सापेक्षतावाद (Relativity) की कल्पना थी | सूर: परिचय | | 1201 |
| सूर्य और चंद्रमा की परिक्रमा से मनुष्य को गिनती का ज्ञान हुआ | अर रहमान | 6 टीका | 1080 |
| आकाशीय पिंडों के बारे में जानकारी | या सीन | 39-41 | 1060 |
| उल्का पिंडों और आकाश पर राकेटों के पहुँचने का वर्णन | अस साफ़ात | टीका | 851, |
| राकेटों के द्वारा अंतरिक्ष को लांघते समय अग्निशिखाओं और धुओं की बौछार | 7-9 | टीका | 852 |
| जब तक वैज्ञानिक आकाशीय पिंडों की शिलावृष्टि के लिए प्रतिरक्षात्मक उपाय न करें वे राकेटों में बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा नहीं कर सकते | अर रहमान | 36 टीका | 1064 |
| धरती और आकाश में प्रविष्ट होने और बाहर निकलने वाली वस्तुओं और किरणों का वर्णन | सूर: परिचय | | 1059 |
| बैक्टीरिया (अर्थात जिन्नों) की उत्पत्ति का वर्णन सृष्टि के आरंभ में आकाश से बरसने वाली रेडियो तरंगों के फलस्वरूप वायरस और बैक्टीरिया का जन्म | अल हदीद | 5 | 1082 |
| वायरस और बैक्टीरिया भी जिन्न हैं | अल हिज्र | 28 | 476 |
| आयतांश “जो उसके ऊपर हो” का तात्पर्य मलेरिया के कीटाणु | सूर: परिचय | | 1058 |
| पक्षियों की विशेष बनावट की ओर संकेत कुरआन में आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) के बारे में शिक्षा | अल बक्र: | 27 टीका | 1058 |
| | हामीम अस सज्ज़: | 21-23 | 931,932 |
| | टीका | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------------|-----------|-------------|
| प्रकाश स्वतः आँख तक पहुँचता है जिसके कारण आँख देखती है | अल अन्नाम टीका | 104 19 | 248 785 |
| विनम्रता रहमान के भक्त धरती पर विनम्रता पूर्वक चलते हैं | लुकमान अल फुर्कान | 64 | 682 |
| विवाह प्रसंग | | | |
| निकाह (विवाह) | | | |
| निकाह का उद्देश्य पवित्रता प्राप्ति है | अन निसा | 25 | 142 |
| विधवाओं और दासियों के निकाह करवाने का आदेश | अन नूर | 33 | 660 |
| जिन स्त्रियों से निकाह करना मना है | अन निसा | 23-25 | 140-142 |
| अनाथ लड़की से न्याय न कर पाने की अवस्था में उससे निकाह न करो | अन निसा | 4 | 133 |
| चार स्त्रियों तक से विवाह करने की अनुमति आजीवन अविवाहित रहना एक कु-संस्कार है | अन निसा अल हदीद | 4 28 | 133 1088 |
| हक्क महर | | | |
| निकाह में हक्क महर देना अनिवार्य है | अन निसा | 25 | 142 |
| प्रसन्नता पूर्वक हक्क महर देना चाहिए | अन निसा | 5 | 134 |
| स्त्री अपनी इच्छा से हक्क महर छोड़ सकती है | अन निसा | 5 | 134 |
| स्त्री को स्पर्श करने से पूर्व तलाक देने पर हक्क महर आधा देना होगा | अल बक्रः | 238 | 66 |
| यदि हक्क महर निश्चित नहीं हुआ था तो पति की आर्थिक स्थिति के अनुसार होगा | अल बक्रः | 237 | 65, 66 |
| तलाकः | | | |
| तलाक देने का सही ढंग | अल तलाकः | 2 | 1132 |
| दो बार तलाक देकर प्रत्यावर्तन हो सकता है, तीसरी बार या तो प्रत्यावर्तन करना होगा अथवा उपकार पूर्वक विदा करना होगा और दिये गये धन को वापस नहीं लेने चाहिए | अल बक्रः | 230 | 62 |
| तीसरी तलाक के बाद स्त्री उस पति से निकाह नहीं कर सकती जबतक दूसरे पुरुष के साथ निकाह के बाद उससे तलाक न हो जाये या फिर विधवा न हो जाये | अल बक्रः | 231 | 62 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|-------|
| स्त्री को छूने से पहले तलाक देने का औचित्य खुलअ (स्त्री की ओर से तलाक) | अल बकर: | 237 | 65 |
| यदि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमा की रक्षा न कर सकें तो पृथक होने की विधि इहत (पुनर्विवाह न करने की समय सीमा) | अल बकर: | 230 | 62 |
| तलाक शुदा स्त्री के लिए इहत विधवा के लिए इहत रजोनिवृत्त स्त्री के लिए इहत | अल बकर: | 229 | 61 |
| इहत में सांकेतिक रूप से निकाह की पेशकश की जा सकती है, परन्तु निकाह नहीं हो सकता | अल बकर: | 235 | 65 |
| स्तन-पान शिशु को स्तन-पान कराने की समय सीमा | अत तलाकः | 5 | 1133 |
| तलाकशुदा पत्नी से शिशु को स्तन-पान कराने का नियम | अल बकर: | 236 | 65 |
| स्तन्य-दात्री माता और उसके स्तन से दूध पी हुई लड़की से निकाह करने की मनाही | अन निसा | 24 | 140 |
| ईला (क्रसम) पलियों से संबंध स्थापित न करने की क्रसम खाने वालों के बारे में आदेश | अल बकर: | 227 | 61 |
| ज़िहार (पत्नी को माँ कहना) पत्नी को माँ कहने का प्रायश्चित्त | अल अहजाब | 5 | 800 |
| माँ और पुत्र का संबंध तो अल्लाह के बनाये हुए नियम के अनुसार होता है | अल मुजादलः | 3-5 | 1091 |
| लिआन (एक दूसरे को अभिशाप देना) पति की ओर से पत्नी पर दुष्कर्म का आरोप लगाये जाने पर धमदिश | अल मुजादलः | 3-5 | 1091 |
| व्यर्थ बातों से परहेज़ मोमिन व्यर्थ बातों से विमुख होते हैं रहमान के भक्त व्यर्थ बातों से परहेज़ करते हैं | अन् नूर | 7 | 654 |
| व्यापार व्यापार में उभय पक्ष की सहमति आवश्यक है | अल मु'मिनून | 4 | 636 |
| | अल फुर्कान | 73 | 683 |
| | अन निसा | 30 | 143 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------------|
| परस्पर क्रय विक्रय करते हुए किसी को साक्षी बनाया जाये और समझौते को लिखित में लाया जाये | अल बक्रः | 283 | 81, 82 |
| व्यापार करना आध्यात्मिक व्यक्तियों को नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से बेपरवाह नहीं करता | अन नूर | 38 | 662 |
| लाभप्रद व्यापार | फ़ातिर | 30 | 840 |
| | अस सफ़्क | 11,12 | 1115 |
| वर्तमान युग के व्यापार का विवेचन | सूरः परिचय | | 1230 |
| लेन-देन में नाप-तौल सही रखा जाये | अल अन्जाम | 153 | 261 |
| | अल आ'राफ़ | 86 | 285 |
| | बनी इस्माईल | 36 | 522 |
| | अश शुअरा | 182,183 | 703 |
| | अर रहमान | 9,10 | 1060, 1061 |
| श | | | |
| शराब और नशे की बुराई | | | |
| शराब का पाप उसके लाभ से बढ़कर है | अल बक्रः | 220 | 58 |
| शराब पीना अपवित्र और शैतानी कर्म है | अल माइदः | 91 | 213 |
| शराब के द्वारा शैतान लोगों के मध्य शत्रुता और द्वेष उत्पन्न करना चाहता है | अल माइदः | 92 | 213 |
| नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने की मनाही | अन निसा | 44 | 147 |
| शिष्टाचार | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के प्रति शिष्टाचार | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की महत्ता को ध्यान में रखकर अत्यन्त शिष्ट आचरण करने का आदेश | सूरः परिचय | | 799 |
| आप सल्ल. को साधारण व्यक्ति के सदृश न बुलाया जाये | अन नूर | 64 | 669 |
| आप सल्ल. के समक्ष बढ़-बढ़ कर बातें करने की मनाही | अल हुज़रात | 2 | 1015 |
| आप सल्ल. के समक्ष स्वर ऊँचा करने की मनाही नबी सल्ल. से विचार-विमर्श करने से पूर्व दान करना रसूल के बुलावे को अविलंब स्वीकार करना चाहिए | अल हुज़रात | 3 | 1015 |
| | अल मुजादलः | 13,14 | 1094 |
| | सूरः परिचय | | 652 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------|---------|-------|
| सामाजिक शिष्टाचार | | | |
| आवाज़ धीमी रखें | लुकमान | 20 | 785 |
| लोगों से अच्छी बात कहें | अल बक्रः | 84 | 22 |
| बात-चीत न्याय पूर्वक करो | अल अन्आम | 153 | 261 |
| सर्वोत्कृष्ट ढंग से अपनी प्रतिरक्षा करें | हामीम अस सज्दः | 35 | 934 |
| किसी व्यक्ति या किसी जाति का उपहास न करें | अल हुजुरात | 12 | 1017 |
| चलने-फिले के शिष्टाचार | लुकमान | 20 | 785 |
| रहमान के भक्त धरती पर विनम्रता पूर्वक चलते हैं | अल फुर्कान | 64 | 682 |
| गृह प्रवेश के शिष्टाचार | अल बक्रः | 190 | 50 |
| | अन् नूर | 28,29 | 658 |
| सभाओं में बैठने के शिष्टाचार | अल मुजादलः | 12 | 1094 |
| खाने-पीने में मध्यमार्ग को अपनायें | अल आ'राफः | 32 | 273 |
| उपहार लेने और देने के शिष्टाचार | अन निसा | 87 | 159 |
| यात्रा करने के शिष्टाचार | | | |
| यात्रा करने से पूर्व पथेय की चिंता करनी चाहिए | अल बक्रः | 198 | 53 |
| सवारी पर सवार होने की दुआ | अज़ जुख्रूफ़ | 14,15 | 958 |
| जहाज़ या नौका पर सवार होने की दुआ | हूद | 42 | 402 |
| शैतान | | | |
| शैतान का नरकगामी होना | अल आ'राफः | 13 | 269 |
| शैतान मनुष्य का शत्रु है | बनी इस्साईल | 54 | 525 |
| | फ़ातिर | 7 | 836 |
| शैतान का आदम को फुसलाना | अल बक्रः | 37 | 11 |
| हर एक पक्के झूठे पर शैतान उतरते हैं | अश शुअरा | 222-225 | 706 |
| अल्लाह की वहइ में शैतान हस्तक्षेप नहीं कर सकते | अश शुअरा | 211-213 | 705 |
| शैतान काफिरों के मित्र हैं | अल बक्रः | 258 | 73 |
| अहले किंताब शैतान पर ईमान लाते हैं | अन निसा | 52 | 150 |
| काफिर शैतान के रास्ते में युद्ध करते हैं | अन निसा | 77 | 156 |
| मुनाफ़िक शैतान से फैसले करवाना चाहते हैं | अन निसा | 61 | 152 |
| स | | | |
| संतुलन | | | |
| हर ऊँचाई को संतुलन की आवश्यकता है | सूरः परिचय | | 1058 |
| सृष्टि रचना में संतुलन | अल मुल्क | 4 | 1144 |
| | सूरः परिचय | | 1143 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| संधि | | | |
| हुदैबिया संधि एक स्पष्ट विजय | अल फ़त्ह | 2 | 1005 |
| हुदैबिया संधि के अवसर पर बैअत-ए-रिज्वान | अल फ़त्ह | 19 | 1009 |
| स्त्री | | | |
| स्त्री और पुरुष एक जान या वर्ग से ही पैदा किये गये हैं | अन निसा | 2 | 133 |
| | अन नह्ल | 73 | 500 |
| | सूरः परिचय | | 132 |
| पुण्य प्राप्ति में स्त्री पुरुष दोनों समान हैं | आले इम्रान | 196 | 130 |
| स्त्रियों को उसी प्रकार अधिकार प्राप्त हैं जिस प्रकार उन पर ज़िम्मेदारियाँ हैं | अल बक़रः | 229 | 62 |
| स्त्री पुरुषों के परिधान और पुरुष स्त्रियों के परिधान हैं | अल बक़रः | 188 | 49 |
| स्त्री को खेती कहने का तात्पर्य | अल बक़रः टीका | 224 टीका | 60 |
| स्त्री की कमाई पर उसी का अधिकार है | अन निसा | 33 | 144 |
| माँ-बाप और सगे संबंधियों के छोड़े हुए धन में स्त्रियों का अधिकार है | अन निसा | 8 | 135 |
| स्त्रियों से बलपूर्वक उत्तराधिकार छीनने की मनाही अंत्ययुग में स्त्री के अधिकारों की ओर ध्यान कन्या-जन्म पर अनुचित प्रथाओं की निंदा केवल कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से तलाकशुदा स्त्रियों को निकाह करने से न रोका जाये स्त्रियों की बैअत के विशेष बिंदु हज़रत मुहम्मद सल्ल. की पत्नियों को अन्य मुसलमान स्त्रियों से अधिक पवित्रता अपनाने की ताक़ीद | अन निसा अत तक्वीर अन नह्ल अल बक़रः अल मुम्तहिनः अल अह़ज़ाब | 20 10 टीका 59,60 232 13 33 | 139 1224 497 63 1110 807 |
| संधि, मेल-मिलाप | | | |
| मेल-मिलाप सर्वथा उत्तम है | अन निसा | 129 | 170 |
| यदि शत्रु संधि करने की ओर झुके तो संधि कर लेनी चाहिए | अल अन्फ़ाल | 62 | 328 |
| सच्चाई | | | |
| सच्चे पुरुषों और सच्ची महिलाओं के गुण मोमिन झूठी गवाही नहीं देते | अल अह़ज़ाब अल फुर्कान | 36 73 | 807 683 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---------------|---------|-------|
| साफ-सीधी बात किया करो | अल अहङ्कार | 71 | 816 |
| | अन निसा | 10 | 135 |
| अल्लाह सत्य को सिद्ध करता है और असत्य का खंडन करता है | अल अन्काल | 9 | 315 |
| सच्चाई के सामने झूठ टिक नहीं सकता | बनी इस्माईल | 82 | 530 |
| सच्चाई झूठ को कुचल डालता है | अल अम्बिया | 19 | 599 |
| अल्लाह सत्य के द्वारा असत्य पर प्रहर करता है | सबा | 49 | 831 |
| अल्लाह सत्य को अपने वाक्यों से सिद्ध करता है | अश शूरा | 25 | 948 |
| झूठ से परहेज़ करता चाहिए | अल हज्ज | 31 | 623 |
| सतीत्व | | | |
| सतीत्व की रक्षा | अल मु'मिनून | 6-8 | 636 |
| | अन नूर | 61 | 667 |
| | अल मआरिज | 30 | 1165 |
| व्यभिचार के निकट भी न जाओ | बनी इस्माईल | 33 | 521 |
| विवाह की शक्ति न रखने वाले व्यक्ति स्वयं को बचाये रखें | अन नूर | 34 | 660 |
| मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्री नज़रें नीची रखें | अन नूर | 31, 32 | 659 |
| सौंदर्य हराम नहीं है | अल आ'राफ | 33 | 273 |
| महिलायें अपना सौंदर्य अनुचित ढंग से प्रकट न करें | अन नूर | 32 | 659 |
| सफाई और पवित्रता | | | |
| वस्त्र की स्वच्छता | अल मुद्दस्सिर | 5 | 1185 |
| अपवित्रता से परहेज़ | अल मुद्दस्सिर | 6 | 1185 |
| मस्जिदों को स्वच्छ और पवित्र रखने की शिक्षा | अल बक्रः | 126 | 33 |
| | अल हज्ज | 27 | 622 |
| अल्लाह पवित्र व्यक्तियों को पसंद करता है | अत तौबः | 108 | 360 |
| मस्जिदों में जाते हुए सौंदर्य अपनाने का अर्थ | अल आ'राफ | 32 | 273 |
| मैथुन के पश्चात शुद्ध-पूत होना आवश्यक है | अल माइदः | 7 | 190 |
| समय/दिन | | | |
| दिन (रात के विपरीत अर्थ में) | सबा | 19 | 825 |
| | अल हाकः | 8 | 1156 |
| दिन अर्थात् दिन और रात | आले इम्रान | 42 | 94 |
| | अल हज्ज | 29 | 622 |
| दिन, सीमित समय के अर्थ में | अल हाकः | 25 | 1158 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------|---------|-------|
| दिन, एक हजार वर्ष के अर्थ में | अल हज्ज | 48 | 627 |
| | अस सज्दः | 6 | 791 |
| दिन, पचास हजार वर्ष के अर्थ में | अल मआरिज | 5 | 1163 |
| दिन, अवधि / दीर्घ काल के अर्थ में | अल फुर्कान | 60 | 681 |
| | हामीम अस सज्दः | 11 | 929 |
| | अस सज्दः | 5 | 791 |
| | हूद | 8 | 395 |
| अल्लाह के निकट एक वर्ष बारह महीने का है | अत तौबः | 36 | 342 |
| 'नसी' अर्थात् सम्माननीय महीनों को आगे पीछे | अत तौबः | 37 | 342 |
| करना कुफ्र है | | | |
| सहाबा | | | |
| (हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बे | | | |
| अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई) | | | |
| संपन्नता और विष्णवता में सहाबा ने हजरत | अत तौबः | 117 | 363 |
| मुहम्मद सल्ल. का साथ निभाया | | | |
| वह कपड़े जिन को नवी अपने साथ चिमटा कर | सूरः परिचय | | 1184 |
| रखता है, वे सहाबा हैं | | | |
| गरीबी के बावजूद त्याग का अनूठा उत्साह | अत तौबः | 92 | 356 |
| मदीना के अन्सारियों का आदर्शमय त्याग | अल हश्र | 10 | 1101 |
| मुहाजिरों से प्रेम | अल हश्र | 10 | 1101 |
| सहाबा परस्पर भाई भाई बन गये थे | आले इम्रान | 104 | 109 |
| सहाबा का प्रारस्परिक प्रेम | अल फत्ह | 30 | 1011 |
| सहाबा का परस्पर ईर्ष्या से पवित्र होना | अल हिज्र | 48 | 478 |
| सहाबा के गुण | अल फत्ह | 30 | 1011 |
| सहाबा की श्रेष्ठता | सूरः परिचय | | 266 |
| कुर्बानियों की भाँति सहाबा को ज़िबह किया गया | सूरः परिचय | | 859 |
| उहद युद्ध में सहाबा भेड़ बकरियों के समान ज़िबह | सूरः परिचय | | 85 |
| किये गये परन्तु हजरत मुहम्मद सल्ल. का साथ न | | | |
| छोड़ा | | | |
| हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और | सूरः परिचय | | 1282 |
| सहाबा के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन | | | |
| बद्र युद्ध के समय सहाबा के लिए हजरत मुहम्मद | सूरः परिचय | | 312 |
| सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आतुर दुआ | | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------------|-----------|-------------|
| मुहाजिर अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं | अल हश्र | 9 | 1101 |
| अल्लाह तआला ने मुहाजिरों और अन्सारियों पर दयादृष्टि डाली | अत तौबः | 117 | 363 |
| अल्लाह उन से प्रसन्न और वे अल्लाह से प्रसन्न हैं बैअत-ए-रिज्वान में शामिल सहाबा से अल्लाह प्रसन्न हुआ | अत तौबः अल फत्ह | 100 19 | 358 1009 |
| सहाबा को अल्लाह का समर्थन प्राप्त था | अल मुजादलः | 23 | 1096 |
| जब वे गुफा में थे वह उन दोनों में से एक था व्यापार करना सहाबा को ईश्वर स्मरण से विस्मृत नहीं करता था | अत तौबः अन नूर | 40 38 | 344 662 |
| यह कहना कि व्यापार के उद्देश्य से सहाबा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देते थे, केवल एक मिथ्यारोप है | सूरः परिचय | | 1117 |
| मोमिनों के लिए आवश्यक है कि वे ईमान में आगे बढ़े हुए सहाबा के लिए क्षमा की दुआ करें और उनसे कोई देष न रखें | अल हश्र | 11 | 1101 |
| अंत्ययुग में सहाबा के प्रकाश को मलिन कर दिये जाने की भविष्यवाणी | सूरः परिचय | | 1222 |
| अंत्ययुगीनों में सहाबा के समरूप | अल जुमाः | 4 टीका | 1118 |
| सहन शक्ति | | | |
| क्रोध पर नियंत्रण | आले इम्रान | 135 | 115 |
| सहानुभूति / उपकार | | | |
| निकट संबंधियों से सहानुभूति | बनी इस्साईल | 27 | 520 |
| प्रकाश्य और अप्रकाश्य रूप से भलाई की जाये | अर राद | 23 | 452 |
| अपनी पसंदीदा चीज़ें दी जायें | आले इम्रान | 93 | 107 |
| उपकार करने वालों से अल्लाह प्रेम करता है | अल् बक्रः | 268 | 78 |
| उपकार जताया न जाये | अल् बक्रः | 196 | 52 |
| उपकार से पूर्व न्याय आवश्यक है | अन् नह्ल | 265 | 76 |
| नेकी और तक़वा में सहयोग करो | अल माइदः | 91 | 504 |
| सगे संबंधियों से सहानुभूति | अर राद | 3 | 187 |
| | अल बक्रः | 22 | 452 |
| | अल बक्रः | 178 | 46 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---------------------------------------|---|
| माता-पिता से सद्व्यवहार | अर रूम बनी इस्साईल अन निसा बनी इस्साईल लुकमान अल अन्कबूत अल अहकाफ | 39 27 37 24 15 9 16 | 773 520 146 520 784 752 988 |
| माता-पिता के लिए दुआ करने का आदेश | बनी इस्साईल अल अहकाफ | 25 16 | 520 988 |
| दरिद्रों की देखभाल भूखों को भोजन उपलब्ध कराना | अज़ ज़ारियात अल बलद अद दहर अन निसा | 20 15 9,10 37 | 1030 1257 1198 146 |
| पड़ोसी और अधीनस्थों से सद्व्यवहार यात्रियों से सद्व्यवहार | अल बकरः बनी इस्साईल अर रूम | 178 27 39 | 46 520 773 |
| साम्यवाद | | | |
| जन-शक्ति अर्थात् साम्यवाद का 'खन्नास' होना | सूरः परिचय टीका | | 1305 1306 |
| सिफारिश | | | |
| अल्लाह को छोड़ कोई सिफारिश करने वाला नहीं सिफारिश (का विषय) अल्लाह के अधिकार में है सिफारिश केवल अल्लाह की अनुमति से होगी | अस सज्दः अज़ जुमर यूनुस अन नबा | 5 45 4 39 | 791 900 368 टीका 1211 |
| सिफारिश का अधिकार केवल उसी को प्राप्त है जिसने रहमान (अल्लाह) से वचन ले रखा है | मरियम | 88 | 572 |
| सिफारिश का अधिकार केवल उसी को प्राप्त है जो 'सत्य' की गवाही दे | अज़ जुख्रुफ | 87 | 968 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का विस्तृत सिफारिश क्षेत्र कुरआन के सिवा कोई सिफारिश करने वाला नहीं होगा | सूरः परिचय अल अन्आम | | 367 235 |
| सिफारिश उसी को लाभ देगी जिसके लिए रहमान अल्लाह अनुमति दे | ताहा सबा | 110 24 | 590 826 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| कथामत के दिन कोई दोस्ती और सिफारिश काम नहीं आयेगी | अन नज्म अल मुद्विसिर अल बक्रः | 27 49 49,124, | 1047 1188 13,32, |
| कल्पित उपास्यों में से कोई सिफारिश करने वाला नहीं होगा | 255 | 72 | |
| कल्पित उपास्यों की सिफारिश काम नहीं आयेगी अत्याचारियों और इनकार करने वालों के लिए कोई सिफारिश करने वाला नहीं होगा | अल अन्नाम अर रूम या सीन अल आ'राफ अल मु'मिन अश शुअरा अन निसा | 95 14 24 54 19 101 86 | 245,246 769 850 278 912 696 159 |
| सांसारिक कार्यों में अच्छी सिफारिश | | | |
| सुधार-कर्म | | | |
| लोगों का सुधार | अन निसा | 115 | 167 |
| अच्छी बातों का आदेश देना और बुरी बातों से रोकना | आले इम्रान | 111 | 110 |
| लोगों से अच्छी बात करो | अल बक्रः | 84 | 22 |
| परस्पर सुधार करो | अल अन्काल | 2 | 314 |
| सु-धारणा | | | |
| स्वर्ग | अल हुजुरात | 13 | 1017 |
| स्वर्ग चिरस्थायी और अबाधित है | हूद | 109 | 415 |
| स्वर्ग और नरक की भौतिक कल्पना सही नहीं | सूरः परिचय | | 1080 |
| स्वर्ग आकाश के ऊपर किसी पृथक स्थान पर नहीं है | आले इम्रान टीका | 134 | 115 |
| यदि समग्र ब्रह्मांड में स्वर्ग ही फैला हुआ है तो नरक कहाँ है ? हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उत्तर | सूरः परिचय | | 1080 |
| अहंकारी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे | अल आ'राफ | 41 | 275,276 |
| स्वर्ग से निकलने का वास्तविक अर्थ | सूरः परिचय | | 266 |
| स्वर्ग और नरक वासियों का तुलनात्मक वर्णन | सूरः परिचय | | 1230 |
| स्वर्गवासियों के विशेष गुण | सूरः परिचय | | 1196 |
| स्वर्गवासियों का आलंकारिक वर्णन | सूरः परिचय | | 1069 |
| स्वर्ग का आलंकारिक वर्णन | सूरः परिचय | | 1059 |
| अंत्ययुग में स्वर्ग को मुक्तकियों के निकट कर दिया जाएगा | काफः | 32 | 1024 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|----------|-------|
| ह | | | |
| हज्ज | | | |
| समर्थ व्यक्ति के लिए हज्ज की अनिवार्यता | आले इम्रान | 98 | 108 |
| निर्धारित महीना की निर्दिष्ट तिथियों में हज्ज होता है | अल बकर: | 198 | 53 |
| हाजी को जिन बातों से बचना चाहिए | अल बकर: | 198 | 53 |
| हज्ज के धार्मिक कृत्य | | | |
| सफा और मरवा पहाड़ की परिक्रमा | अल बकर: | 159 | 41 |
| अरफात से लौटे हुए मशअर-ए-हराम में रुकना | अल बकर: | 199 | 53 |
| चाहिए | | | |
| जब तक कुर्बानी अपने स्थान तक न पहुंचे सिर न मुंडवाया जाये | अल बकर: | 197 | 52 |
| हज्ज से रोके जाने वाले के लिए कुर्बानी | अल बकर: | 198 | 53 |
| कुर्बानी के बाद सिर के बाल मुंडवाये भी जा सकते हैं और काटे भी जा सकते हैं | अल फत्ह | 28 | 1011 |
| कुर्बानी देने से पूर्व सिर मुंडवाने पर प्रायश्चित्त | अल बकर: | 197 | 52 |
| उम्रा करना | अल बकर: | 197 | 52 |
| हज्ज के साथ उम्रा को मिला कर करना | अल बकर: | 197 | 52 |
| हज्जे-अकबर (बड़े हज्ज) से अभिप्राय | अत तौब: | 3 | 334 |
| एहराम की अवस्था में शिकार करना मना है | अल माइद: | 96 | 214 |
| एहराम खोलने के बाद शिकार की अनुमति | अल माइद: | 3 | 187 |
| हत्या | | | |
| एक व्यक्ति की हत्या समूची मानवता की हत्या | अल माइद: | 33 | 197 |
| करना है | | | |
| जान-बूझ कर हत्या करने का दंड | अल बकर: | 179 | 46 |
| मोमिन के जान-बूझ कर हत्या करने का | अन निसा | 94 | 162 |
| परकालीन दंड | | | |
| मोमिन को भूल से हत्या करने का दंड | अन निसा | 93 | 161 |
| जीविका की कमी के कारण संतान की हत्या न करो | अल अन्आम | 152 | 260 |
| | बनी इस्लाईल | 32 | 521 |
| हलाल और हराम | | | |
| खाने पीने में हलाल और हराम | | | |
| हराम और हलाल का एक स्थायी सिद्धांत | अल बकर: | 220 टीका | 59 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|---------|
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने अनुयायियों के लिए पवित्र वस्तुओं को हलाल और अपवित्र वस्तुओं को हराम ठहराते हैं चौपाये हलाल हैं | अल आ'रफ़ | 158 | 300 |
| समुद्री शिकार और उसका भोजन करना हलाल है भोजन केवल हलाल ही नहीं पवित्र भी हो सधाये हुए कुत्तों के द्वारा किया गया शिकार हलाल है | अल माइद़ | 2 | 187 |
| सभी पवित्र वस्तु हलाल हैं | अल हज्ज | 31 | 623 |
| मुर्दार, खून, सूअर का माँस और देवताओं के आस्थानों पर ज़िबह होने वाले पशु हराम हैं | अल माइद़ | 97 | 215 |
| एहराम की अवस्था में शिकार करना हराम है | अल माइद़ | 89 | 212 |
| अहले किताब का बनाया हुआ (पवित्र) भोजन हलाल है | अल माइद़ | 5,6 | 189 |
| हलाल वस्तुओं को हराम न ठहराओ | अल माइद़ | 5 | 189 |
| उक्त वस्तुओं के अतिरिक्त रसूल किसी और वस्तु को अपनी ओर से हराम घोषित नहीं कर सकता | अल अन्नाम | 146 | 258 |
| खाने-पीने में मध्यमार्ग अपनाने की शिक्षा | अल आ'रफ़ | 32 | 273 |
| बनी इस्साइल के लिए हलाल और हराम की शिक्षा हज़रत याकूब अलै. (इस्साइल) ने अपने लिए कुछ वस्तुओं को हराम ठहराया था | आले इम्रान | 94 | 107 |
| यहूदियों पर दंड स्वरूप कुछ वस्तुओं को हराम ठहराया गया था | आले इम्रान | 94 | 107 |
| शिष्टाचार संबंधी हलाल और हराम का वर्णन | सूरः परिचय | | 224 |
| निकाह में हराम | | | |
| जिन महिलाओं से निकाह करना मना है | अन निसा | 23-25 | 140-142 |
| हिजरत (देशांतरण) | | | |
| हिजरत करने के कारण और बरकतें | सूरः परिचय | | 313 |
| हिजरत करने वालों का परकालीन प्रतिफल | आले इम्रान | 196 | 130 |
| हिजरत के सांसारिक फलाफल | अन निसा | 101 | 163 |

नाम सूची

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|---------|
| अ | | | |
| हजरत अबूबकर रजि. | सूरः परिचय | | 312 |
| इमाम अबू हनीफा रहि. | टीका | | 340 |
| अबू जहल | टीका | | 1298 |
| अबू लहब | | | |
| अबू लहब के मारे जाने की भविष्यवाणी | अल लहब | 2 | 1301 |
| असहाब-उल-फ़ील (हाथी वाले) | | | |
| इनका खाना का'वा पर आक्रमण करना और इसमें असफल होना | अल फ़ील | | 1294 |
| हजरत अल यसआ अलै. | साद | 49 | 884 |
| | अल अन्नाम | 87 | 243 |
| हजरत अय्यूब अलै. | साद | 45 | 883 |
| | अन निसा | 164 | 180 |
| | साद | 42 | 883 |
| एक महान धैर्यशील नबी | सूरः परिचय | | 876 |
| दुःख निवारण के लिए अल्लाह के निकट दुआ | अल अम्बिया | 84 | 609 |
| हजरत अय्यूब अलै. की दुआ स्वीकृत होना और उनकी परीक्षा की घड़ी समाप्त होना | अल अम्बिया | 85 | 609 |
| हजरत अय्यूब अलै. को हिजरत करने का आदेश | साद | 43 | 883 |
| हजरत अय्यूब अलै. को एक विशेष पानी से आरोग्य-लाभ | साद | 43 | 883 |
| घर-परिवार का फिर से मिलना और उन पर कृपावतरण | साद | 44 | 883 |
| हजरत अय्यूब अलै. नूह की संतान में से थे | अल अन्नाम | 85 | 243 |
| अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सुलूल | | | |
| मुनाफ़िकों का मुखिया | सूरः परिचय | | 1122 |
| आ | | | |
| हजरत आइशा सिद्दीका रजि. अन्हा | | | |
| आरोप लगना और आरोपमुक्त होना | अन नूर | 12-17 | 655,656 |
| आद जाति | | | |
| आद जाति की ओर हूद अवतरित हुए | अल आ'राफ | 66 | 281 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|---|-----------------------------|--------------------------------|
| आद जाति के निवास स्थान रेतीले टीलों वाले क्षेत्र में थे | हूद अल अहकाफ़ | 51 22 | 404 990 |
| आद जाति के लोग भवन और दुर्ग निर्माण में निपुण आद और समूद के अवशेष इस्लाम के आरंभ के समय विद्यमान थे | अश शुअरा अल अन्कबूत | 129,130 39 | 698 757 |
| आद जाति के लोग मूर्तिपूजक थे | हूद | 54 | 405 |
| रसूलों के अस्वीकारी | अश शुअरा | 124 | 698 |
| उन्होंने अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया | हूद | 60 | 406 |
| धरती में अहंकार किया | हामीम अस सज्दः | 16 | 930 |
| आद जाति पर तर्क पूरा हो गया | हूद | 58 | 405 |
| हूद अलै. से अज्ञाब की माँग | अल आ'राफ़ | 71 | 282 |
| प्रचंड आंधियों से उनकी तबाही | अज़ जारियात | 42 | 1032 |
| प्रथम आद जाति की तबाही | अन नज्म | 51 | 1049 |
| हज़रत आदम अलै. | | | |
| आदम का जन्म रहमानियत (अल्लाह की दयाशीलता) के कारण हुआ | सूरः परिचय | | 575 |
| धरती पर प्रथम उत्तराधिकारी | अल बक़रः | 31 | 9 |
| अल्लाह ने जब आदम में अपनी रुह फूँकी तो फिर मानव जगत को उसका आज्ञापालन करने का आदेश दिया | सूरः परिचय | | 265 |
| फरिश्तों को आदम के लिए सजदः करने का आदेश | अल बक़रः अल आ'राफ़ बनी इस्राईल अल कहफ़ ताहा | 35 12 62 51 117 | 10 269 526 548 591 |
| इब्लीस का आदम को सजदः करने से इनकार करना हज़रत आदम को अल्लाह ने अपनी शक्ति के दोनों हाथों से पैदा किया | अल बक़रः साद | 35 76 | 10, 11 887 |
| समग्र सुष्टि पर आदम की संतान की श्रेष्ठता आदम को सिखाये गये नाम | बनी इस्राईल अल बक़रः | 71 32 | 528 10 |
| आदम की शरीयत के चार मौलिक पक्ष | ताहा | 119,120 | 591 |
| आदम से वचन लिया गया था | ताहा | 116 | 591 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------|---------|----------|
| अपने साथी (पत्नी) के साथ स्वर्ग में निवास करने और वृक्षविशेष से दूर रहने का आदेश | अल बक्रः | 36 | 11 |
| आदम को बताया गया कि शैतान तेरा शत्रु है | अल आ'राफ़ | 20 | 270 |
| शैतान का आदम से वार्तालाप | ता हा | 118 | 591 |
| हज़रत आदम से भूल हो गई। पाप का इरादा नहीं था | ता हा | 121 | 591 |
| आदम और उनकी पत्नी का स्वर्ग के पत्तों से अपने आप को ढाँपना | ता हा | 116 | 591 |
| पत्तों के वस्त्र से अभिप्राय तक़वा का वस्त्र | अल आ'राफ़ | 23 | 271 |
| आदम पर उस के रब्ब का दयाशील होना | सूरः परिचय | | 266 |
| आदम को हिजरत का आदेश | अल बक्रः | 38 | 11 |
| आदम के दो पुत्रों का कलह | अल बक्रः | 37 | 11 |
| हाबील की हत्या करने पर क़ाबील को पश्चाताप | अल बक्रः | 39 | 11 |
| एक ही आदम की संतान के रंगों और भाषा में प्रभेद के चिह्न | अल माइदः | 28 | 196 |
| आदम से हज़रत ईसा अलै. की समानता | अल माइदः | 32 | 196, 197 |
| आसिया | सूरः परिचय | | 834 |
| इ | अर रूम | 23 | 770 |
| हज़रत इब्राहीम अलै. | आले इम्रान | 60 | 99 |
| इब्राहीम हज़रत नूह अलै. के अनुयायिओं में से थे | टीका | | 914 |
| इब्राहीम न यहूदी थे न ईसाई | अस साफ़कात | 84 | 867 |
| इब्राहीम अलै. की हिजरत | आले इम्रान | 68 | 100 |
| अल्लाह से मुर्दों को जीवित करने की वास्तविकता समझना | अस साफ़कात | 100 | 868 |
| लोगों में हज़ ज की घोषणा करने का ईश्वरीय आदेश | अल बक्रः | 261 | 75 |
| इब्राहीम के ग्रन्थों की उत्कृष्ट शिक्षा कुरआन में मौजूद है | अल हज़ | 28 | 622 |
| अल्लाह के उपकारों का वर्णन | अल आ'ला | 19, 20 | 1247 |
| इब्राहीम अलै. का दर्जा | अश शुअरा | 79-83 | 694-695 |
| उनका पूरा ध्यान अल्लाह की ओर था | अल अन्ताम | 80 | 242 |
| अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र घोषित किया है | अन निसा | 126 | 169 |
| उनकी सभी मित्रता और शत्रुता अल्लाह के लिए थीं | अल मुम्तहिनः | 5 | 1108 |
| | सूरः परिचय | | 1106 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| धरती और आकाश की राजसत्ता आपको दिखाई गई अल्लाह की ओर अवनत इब्राहीम | अल अन्याम अल बक्रः आले इम्रान आले इम्रान अन नहल सूरः परिचय | 76 136 68 96 121 509,510 | 241 36 100 107 509,510 487 |
| अपने-आप में समुदाय होने का अर्थ | | | |
| इब्राहीम अलै. अच्छे आदर्श के प्रतीक थे | अल मुम्तहिनः अल बक्रः अन नज्म अत तौबः अस साफ़कात | 5 125 38 114 85 | 1108 33 1048 362 867 |
| निष्ठापूर्ण प्रतिज्ञा-पालनकारी | | | |
| इब्राहीम अत्यंत कोमल-हृदयी और सहनशील थे | अन नज्म | 38 | 1048 |
| इब्राहीम निष्कपट-हृदयी | अत तौबः | 114 | 362 |
| इब्राहीम के समान अपनी नमाजों का दर्जा बनाओ | अस साफ़कात | 85 | 867 |
| इब्राहीमी-धर्म | अल बक्रः | 126 | 33 |
| इब्राहीम का धर्म क्रायम रहने वाला धर्म है | अल अन्याम | 162 | 263 |
| इब्राहीमी धर्म के अनुसरण का आदेश | आले इम्रान | 96 | 107 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इब्राहीमी धर्म के अनुगमन का आदेश | अन निसा अन नहल | 126 124 | 169 510 |
| इब्राहीम अलै. के साथ निकट संबंध रखने वाले | आले इम्रान | 69 | 101 |
| इब्राहीमी धर्म से विमुख होना मूर्खता है | अल बक्रः | 131 | 35 |
| अपनी संतान को इब्राहीम अलै. का उपदेश | अल बक्रः | 133 | 35 |
| इब्राहीम अलै. का धर्मप्रचार | | | |
| जाति को अल्लाह की उपासना करने की शिक्षा | अल अन्कबूत | 17 | 753 |
| अल्लाह के अस्तित्व के बारे में एक व्यक्ति का बहस करना और उसको मुँह तोड़ जवाब देना | अल बक्रः | 259 | 74 |
| अपने पिता आज़र के साथ धर्मचर्चा | अल अन्याम मरियम | 75 43-46 | 240 566,567 |
| आज़र की नाराज़गी और इब्राहीम को संगसार करने की धमकी | मरियम | 47 | 567 |
| आज़र के लिए क्षमा प्रार्थना | मरियम | 48 | 567 |
| आज़र के लिए क्षमा-प्रार्थना एक वादा के कारण था | अत तौबः | 114 | 362 |
| जाति के समक्ष मूर्तियों से विरक्त होने की घोषणा | अज़ जुखरूफ़ | 27 | 960 |
| मूर्तियों को तोड़ना | अल अम्बिया | 59 | 605 |
| इब्राहीम अलै. को आग में डाला जाना | अल अम्बिया | 69 | 606 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--------------------------|-----------|------------|
| आग का इब्राहीम के लिए सलामती का कारण बन जाना | अस साफ़कात अल अम्बिया | 98 70 | 868 606 |
| जाति की असफलता | अस साफ़कात | 99 | 868 |
| इब्राहीम पर सलामती के लिए ईश्वरीय सुसमाचार अल्लाह के दूतों का इब्राहीम के निकट शत्रुओं की तबाही के समाचार लाना | अस साफ़कात अल अन्कबूत | 110 32 | 870 756 |
| फरिश्तों का इब्राहीम के निकट मनुष्य के रूप में आना | सूरः परिचय | | 1028 |
| इब्राहीम का अतिथि-सत्कार | हूद | 70 | 408 |
| लूट अलै. की जाति के लिए सिफारिश करने से इब्राहीम अलै. को मना किया जाना | हूद | 77 | 409 |
| इब्राहीम अलै. की संतान | | | |
| नेक संतान प्राप्ति के लिए दुआ | अस साफ़कात | 101 | 868 |
| एक ज्ञानवान पुत्र का शुभ-समाचार | अल हिज्र | 54 | 478 |
| इसहाक का शुभ-समाचार | अस साफ़कात | 113 | 870 |
| इसहाक के शुभ-समाचार पर इब्राहीम अलै. की पत्नी का विस्मय | हूद | 73 | 408 |
| बुद्धापे में इस्माईल और इसहाक के प्राप्त होने पर अल्लाह के प्रति कृतज्ञता | इब्राहीम | 40 | 468 |
| इसहाक के पश्चात याकूब की शुभ-सूचना | हूद | 72 | 408 |
| एक सहनशील पुत्र का सुसमाचार | अस साफ़कात | 102 | 868 |
| पुत्र को ज़िबह करने के बारे में इब्राहीम का स्वप्न | अस साफ़कात | 103 | 869 |
| इस्माईल अलै. को ज़िबह करने के लिए माथे के बल लिटाना | अस साफ़कात | 104 | 869 |
| ‘महान ज़िबह’ की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 859 |
| पुत्र को ज़िबह करने की परीक्षा में इब्राहीम अलै. की सफलता | अस साफ़कात | 106 | 869 |
| इब्राहीम अलै. की संतान को नुबुव्वत, पुस्तक और तत्वज्ञान प्रदान किया जाना | अन निसा अल अन्कबूत | 55 28 | 150 755 |
| खाना का बा का जीणोंद्वार | | | |
| इब्राहीम अलै. का अपनी संतान को अन्न-जल विहीन घाटी में बसाना | इब्राहीम | 38 | 468 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--------------|----------|---------|
| खाना का'बा की नींव पक्की करना | अल बक्रः | 128 | 34 |
| खाना का'बा को स्वच्छ और पवित्र रखने का निर्देश | अल बक्रः | 126 | 33 |
| इब्राहीम अलै. की दुआएँ | | | |
| इब्राहीम अलै. की दुआएँ | अश शुअरा | 84-88 | 695 |
| मक्का के शांतिमय नगर बनने की दुआ | इब्राहीम | 36 | 467 |
| | अल बक्रः | 127 | 33, 34 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आविर्भाव के लिए दुआ | अल बक्रः | 130 | 34 |
| हज़रत इद्रीस अलै. | | | |
| इद्रीस अलै. वैर्यशील थे | अल अम्बिया | 86 | 609 |
| इरम | | | |
| आद जाति की एक शाखा | अल फ़ज़्र | 8 | 1252 |
| हज़रत इसहाक अलै. | | | |
| हज़रत इब्राहीम अलै. को संतान का शुभ समाचार | हूद | 72 | 408 |
| | अस साफ़कात | 113 | 870 |
| | अज़ ज़ारियात | 29 | 1031 |
| इसहाक अलै. पराक्रमी और ज्ञानी पुरुष थे | साद | 46 | 884 |
| ऐसे इमाम थे जो अल्लाह के आदेश से हिदायत देते थे | अल अम्बिया | 74 | 607 |
| हज़रत इस्माईल अलै. | | | |
| अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का निर्देश देते थे | मरियम | 56 | 568 |
| इस्माईल अलै. ज़बीह-उल्लाह थे न कि इसहाक अलै. 'महान ज़िबह' की वास्तविकता | अस साफ़कात | 103-108 | 869-870 |
| | सूरः परिचय | | 859 |
| | अस साफ़कात | 108 टीका | 870 |
| इब्राहीम अलै. के साथ खाना का'बा का निर्माण | अल बक्रः | 128 | 34 |
| इस्माईल की विनप्रता एवं संतुष्ट स्वभाव | अस साफ़कात | 103 | 869 |
| परवर्ती युगीन जातियों में इस्माईल अलै. की कुर्वानी को सदा याद किया जाएगा | अस साफ़कात | 109 | 870 |
| इस्माईल अलै. की भौतिक और आध्यात्मिक संतान में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का जन्मलाभ | सूरः परिचय | | 472 |
| हज़रत इल्यास अलै. | अल अन्झाम | 86 | 243 |
| | अस साफ़कात | 124 | 871 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|-------|
| हज़रत इक्रमा रजि. | टीका | | 1298 |
| इम्रान (हज़रत मरियम के पिता) | अत तहरीम | 13 | 1141 |
| इम्रान की पत्नी का अल्लाह के समक्ष भेट प्रस्तुत करना | आले इम्रान | 36 | 93 |
| इम्रान के परिजनों की महत्ता | आले इम्रान | 34 | 92 |
| इआन विल्सन (Ian Wilson) | टीका | | 387 |
| इब्लीस | | | |
| इब्लीस जिन्नों में से था | अल कहफ | 51 | 548 |
| आदम को सजदः करने से इनकार | अल बक्रः | 35 | 10 |
| | अल आ'राफः | 12 | 269 |
| | अल हिज्र | 32 | 476 |
| | बनी इस्माईल | 62 | 526 |
| | अल कहफ | 51 | 548 |
| | ता हा | 117 | 591 |
| | साद | 75 | 887 |
| ई | | | |
| हज़रत ईसा अलै. | | | |
| हज़रत मरियम को ईसा का शुभ-समाचार | आले इम्रान | 46 | 95 |
| ईसा और उनकी माँ को पुरस्कृत किया जाना | अल माइदः | 111 | 219 |
| बिन बाप जन्म | आले इम्रान | 48 | 96 |
| | मरियम | 21,22 | 563 |
| झरनों वाले पहाड़ी क्षेत्र में जन्म | मरियम | 25 | 564 |
| खजूरों के पकने के मौसम में जन्म | मरियम | 26 | 564 |
| पालने में बात करने का तात्पर्य | आले इम्रान | 47 टीका | 95 |
| ईसा अलै, अल्लाह के रसूल और उसके कलिमा हैं | आले इम्रान | 46 टीका | 95 |
| | टीका | | 182 |
| रुह-उल-कुदुस (पवित्र-आत्मा) के द्वारा समर्थित | अल बक्रः | 88 | 23 |
| | अल बक्रः | 254 | 72 |
| | अल माइदः | 111 | 219 |
| इहलोक और परलोक में सम्मानित होना | आले इम्रान | 46 | 95 |
| ईसा अलै, एक सच्चे एकेश्वरवादी रसूल थे | टीका | | 182 |
| ईसा अल्लाह के भक्त और उसके नबी थे | अल माइदः | 117,118 | 221 |
| | मरियम | 31 | 565 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-----------------------------------|--------------------|-------------------|
| नुबुव्वत बचपन में नहीं बन्कि अधेड़ आयु में मिली ईसा अलै. केवल वनी इसाईल के लिए रसूल थे बनी इसाईल के सब नवियों के अंत में ईसा अलै. का आविभाव | आले इम्रान अस सफ़क अल माइद़ | 47 टीका 7 47 | 95 1113 201 |
| यहूदियों के तेहतरवें मुक्तिगामी संप्रदाय की नींव रखी | सूरः परिचय | | 185 |
| आदम से समानता | आले इम्रान | 60 | 99 |
| तौरात का ज्ञान दिया गया था | आले इम्रान अल माइद़ | 49 111 | 96 219 |
| तौरात की भविष्यवाणी के पात्र और उसके सत्यापक | आले इम्रान | 51 | 97 |
| पक्षियों का सृजन, श्वेतकुष्ठों और अंधों को आरोग्य प्रदान करना | आले इम्रान अल माइद़ | 50 111 | 96 219 |
| ईसा अलै. को इंजील (शुभ-समाचार) दिया जाना अपने बाद 'अहमद' रसूल की शुभ-सूचना देना | अल हदीद अस सफ़ك | 28 7 | 1088 1114 |
| ईसा अलै. की शिक्षा के विशेष पक्ष | मरियम | 32,33 | 565 |
| अल्लाह की ओर से ईसा अलै. को मृत्यु देने, उत्थित करने और पवित्र करने का समाचार | आले इम्रान | 56 | 98 |
| ईसा अलै. से हवारियों का माइदा (नेमतों से पूर्ण थाल) उतारने की माँग | अल माइद़ | 113- | 220 |
| माइदा उतारने के लिए ईसा अलै. की दुआ हवारियों से ईसा का यह कहना कि "अल्लाह के लिए कौन मेरा सहयोगी है" | अल माइद़ आले इम्रान | 114 53 | 220 97 |
| माँ के साथ एक ऊँचे स्थान की ओर चले जाना शत्रुओं से बचकर कश्मीर घाटी में जाना | अस सफ़ك सूरः परिचय | 15 51 | 1116 642 |
| यहूदियों का दावा कि उन्होंने मरियम के पुत्र ईसा की हत्या कर दी | अन निसा | 635 | 178 |
| अहले किताब के हर समुदाय के लोग ईसा की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान लाएँगे | अन निसा | 158 | 179 |
| अल्लाह के पुत्र होने का खंडन | अत तौबः | 160 | 341 |
| ईसा अलै. के ईश्वरत्व का खंडन | सूरः परिचय | | 595 |
| ईसा अलै. के विरुद्ध षड्यंत्र में यहूदियों की असफलता | आले इम्रान | 55 | 98 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--------------------|---------|------------|
| फिलिस्तीन से प्रस्थान के बाद सेंट पॉल ने ईसा को आराध्य बना दिया | टीका | | 222 |
| ईसा अलै. की मृत्यु | आले इम्रान | 56 | 98 |
| | अल माइदः | 76 | 209 |
| | अल माइदः | 118 | 221,222 |
| कथामत के दिन अल्लाह और ईसा अलै. का कथोपकथन | अल माइदः | 117,118 | 221 |
| बनी इसाईल के काफिरों पर ईसा के मुँह से ला'नत | अल माइदः | 79 | 210 |
| ईसा को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जाने पर लोगों का शोर | अज़ जुख्रुफ़ | 58 | 964 |
| हज़रत ईसा अलै. का अवतरण | सूरः परिचय टीका | | 956 892 |
| उ | | | |
| हज़रत उस्मान रजि. | टीका | | 1101 |
| हज़रत उज़ैर अलै. | | | |
| यहूदी उज़ैर को अल्लाह का पुत्र कहते थे | अत तौबः | 30 | 341 |
| हज़रत उमर रजि. | टीका | | 1101 |
| ए | | | |
| एलिया (देखें 'इल्यास' शीर्षक भी) | टीका | | 871 |
| क | | | |
| क़ारून | | | |
| मूसा की जाति का एक विद्रोही व्यक्ति था | अल क़सस | 77 | 745 |
| क़ारून पर भौतिकवादियों का गर्व | अल क़सस | 80 | 746 |
| क़ारून का बुरा अंत | अल क़सस | 82 | 747 |
| अल्लामा कुर्तुबी | टीका | | 563 |
| कुरैश | | | |
| कुरैश की दिलजोई के साधन | कुरैश | 2-5 | 1295 |
| कैसर (रोमन सम्राट) | | | |
| कैसर और किसा के साम्राज्यों की तबाही का समाचार | सूरः परिचय | | 574 |
| कैसर का किसा से पराजित होना और कुछ वर्षों बाद पुनः विजयी होना | अर रूम | 3,4 | 767 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|--------------------|-------------------------|
| किसा (ईरानी सम्राट) किसा और कैसर के साम्राज्यों की तबाही का समाचार कैसर को पराजित करना और कुछ वर्षों बाद उससे पराजित होना | सूरः परिचय अर रूम | 3, 4 | 574 767 |
| ख खिज्ज लोगों में मशहूर खिज्ज से अभिप्राय हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है | सूरः परिचय | | 536 |
| खोरस (फारस का सम्राट Cyrus) | टीका | | 555 |
| ग गालिब (प्रसिद्ध कवि असदुल्लाह खाँ गालिब) मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी अलै. इल्हाम “मुझे आग से मत डराओ क्योंकि आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है” सूरः अज़-जुमर की आयत “अलैसल्लाहु बिकाफिन् अब्दहू” (क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं) का इल्हाम होना | टीका | 855 | |
| ज हजरत ज़करिया अलै. मरियम का पालन पोषण करना ज़करिया की दुआ ज़करिया के घर चमत्कारिक पुत्रोत्पत्ति यह्या नामक पुत्र का सुसमाचार | आले इम्रान अल अम्बिया सूरः परिचय मरियम | 38 90 8 | 93 610 559 561 |
| जालूत तालूत (अर्थात हजरत दाऊद अलै.) की सेना से जालूत का मुकाबला जालूत से मुकाबला के समय दाऊद अलै. की सेना की दुआ दाऊद का जालूत की हत्या करना | अल बकरः | 250 251 252 | 69, 70 70 70 |
| हजरत जिद्दील (रुह-उल-अमीन) अलै. | अत तहरीم अश शुअरा अल बकरः | 5 194 98, 99 | 1139 704 26 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|--------|
| जुल कर्नेन | | | |
| जुल कर्नेन से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्ल. भी हैं | सूर: परिचय | | 537 |
| जुल कर्नेन से अभिप्राय फ़ारस सम्राट 'खोरस' (Cyrus) भी हो सकता है | टीका | | 555 |
| जुल कर्नेन की पश्चिम की ओर यात्रा | अल कहफ | 87 | 554 |
| पूर्व की ओर यात्रा | अल कहफ | 91 | 555 |
| याजूज और माजूज की रोकथाम के लिए प्राचीर निर्माण | अल कहफ | 95 | 556 |
| हज़रत जुल किफ़्ल अलै. | | | |
| | साद | 49 | 884 |
| | अल अम्बिया | 86 | 609 |
| जुन नून (देखें 'यूनुस' शीर्षक भी) | | | |
| 'नून' से अभिप्राय जुन नून मछली वाले अर्थात् हज़रत यूनुस अलै. | सूर: परिचय | | 1149 |
| हज़रत यूनुस अलै. का गुस्से में जाति को छोड़ कर चले जाना | अल अम्बिया | 88 | 609 |
| हज़रत ज़ैद रज़ि. | | | |
| हज़रत जैनब रज़ि. से ज़ैद रज़ि. का अलगाव | अल अहज़ाब | 38 | 809 |
| इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन | | | |
| | टीका | | 1101 |
| त | | | |
| तालूत | | | |
| तालूत से तात्पर्य दाऊद अलै. ही हैं | टीका | | 71 |
| तालूत को बनी इस्लाईल का राजा बनाया गया | अल बक़र: | 248 | 69 |
| जालूत पर आक्रमण | अल बक़र: | 250 | 69, 70 |
| धैर्य और स्थिरता के लिए दुआ | अल बक़र: | 251 | 70 |
| जालूत को पराजित करना | अल बक़र: | 252 | 70 |
| तुब्बा (यमन की एक जाति) | | | |
| | क़ाफ | 15 | 1022 |
| | अद दुखान | 38 | 973 |
| द | | | |
| हज़रत दाऊद अलै. | | | |
| दाऊद अलै. हज़रत नूह अलै. की संतान में से थे अल्लाह की ओर से धरती में उत्तराधिकारी | अल अन्याम | 85 | 243 |
| दाऊद अलै. को ज़बूर दी गई | साद | 27 | 880 |
| | अन निसा | 164 | 180 |
| | बनी इस्लाईल | 56 | 525 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------------------------|-------------------|-------------------|
| दाऊद अलै. को पक्षियों की भाषा सिखाई गयी सुलैमान दिया गया | अन नम्ल साद | 17 31 | 714 881 |
| दाऊद का उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ | अन नम्ल | 17 | 714 |
| दाऊद को साम्राज्य प्रदान किया गया | अल बकरः साद | 252 21 | 70 879 |
| दाऊद को कृपा प्रदान की गई | सबा | 11 | 822 |
| दाऊद बड़े शक्तिशाली थे | साद | 18 | 879 |
| दाऊद के लिए पहाड़ और पक्षी सेवा में लगाये गये थे | सबा सूरः परिचय अम्बिया | 11 80 | 822 608 |
| दाऊद के लिए लोहा नरम किये जाने का अर्थ युद्ध-क्वच बनाने में निपुण | साद सबा अल अम्बिया | 19 11,12 81 | 879 822 608 |
| जालूत को वध करना | अल बकरः | 252 | 70 |
| दाऊद के घरवालों को कृतज्ञता प्रकट करने का निर्देश | सबा | 14 | 823 |
| दाऊद अलै. और सुलैमान अलै. का एक खेती के बारे में फैसला करना | अल अम्बिया | 79 | 607 |
| दाऊद के एक 'कश्फ' की वास्तविकता बनी इसाईल के काफिरों पर दाऊद के मुँह से ला'नत | सूरः परिचय अल माइदः | 79 | 876 210 |
| न | | | |
| नबूकद नज़र (Nabuchadnazar) | टीका | | 517 |
| हज़रत नूह अलै. | | | |
| नवियों की प्रतिज्ञा में शामिल | अल अहज़ाब | 8 | 801 |
| इस्लाम धर्म की मौलिक शिक्षाएँ वही हैं जो नूह अलै. को दी गई थीं | अश शूरा | 14 | 945 |
| नूह अलै. की आयु | अल अन्कवूत | 15 | 753 |
| अपनी जाति को धर्म प्रचार | नूह | 3-13 | 1169, 1170 |
| जाति की ओर से झुठलाना | अल आ'राफ | 65 | 281 |
| नूह की जाति ने दूसरे नवियों को भी झुठलाया | अश शुअरा | 106 | 696 |
| नूह अलै. को विरोधियों की चेतावनी | अश शुअरा | 117 | 697 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---------------------------------|----------------|----------------------|
| नूह अलै. के मनुष्य होने पर आपत्ति स्वजाति का नूह अलै. को पागल और धुतकारा हुआ कहना | हूद अल कमर | 28 10 | 399 1052, 1053 |
| विरोधियों का कहना कि तूने हमारे साथ बहुत तर्क-वितर्क किया है | हूद | 33 | 400 |
| मुखियाओं का उपहास करना | हूद | 39 | 401 |
| नूह अलै. के अनुयायियों को विरोधियों की ओर से निकृष्ट कहना | हूद | 28 | 399 |
| जाति की ओर से अज्ञाब की माँग | हूद | 33 | 400 |
| नूह अलै. की दुआएँ | हूद हूद हूद अल अम्बिया | 46 49 77 | 403 403 607 |
| जाति के लिए अज्ञाब की दुआ | नूह | 22-27 | 1171, 1172 |
| तूफान (जलप्लावन) | | | |
| तूफान आना | हूद | 41 | 402 |
| आवश्यक जानवरों को नौका में सवार करने का आदेश | हूद | 41 | 402 |
| नूह अलै. की नौका तछतों और कीलों वाली थी | अल कमर | 14 | 1053 |
| नूह अलै. का अपने पुत्र को बुलाना | हूद | 43 | 402 |
| नूह अलै. के पुत्र का नौका पर सवार होने से इनकार और उसकी तबाही | हूद | 44 | 402 |
| पुत्र असदाचारी होने के कारण नूह अलै. के परिवार में से नहीं था | हूद | 47 | 403 |
| नूह अलै. और उनके अनुयायियों का तूफान से बच जाना | यूनुस | 74 | 384 |
| तूफान थम जाने के बाद नूह अलै. को सकुशल उत्तरने का निर्देश | हूद | 49 | 403, 404 |
| नूह अलै. की पत्नी के साथ काफिरों का उदाहरण | अत तहरीम | 11 | 1141 |
| नूरुद्दीन | | | |
| हज़रत ख्वालीफतुल मसीह प्रथम रजि. कुरआन की महरी समझ | सूर: परिचय | | 845 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|----------------|----------|-------|
| फ | | | |
| फिरऔन | | | |
| फिरऔन की पत्नी का मूसा को पुत्र स्वरूप पालना | अल कसस | 9,10 | 732 |
| मूसा और हारून अलै, को फिरऔन और उसके | यूनुस | 76 | 384 |
| सरदारों की ओर भेजा जाना | अल मु'मिनून | 47 | 642 |
| फिरऔन की जाति के लिए मूसा के नौ चिह्न | अन नम्ल | 13 | 713 |
| फिरऔन का अहंकार | यूनुस | 84 | 385 |
| जनता में फूट डाल कर शासन करता था | अल कसस | 5 | 731 |
| रसूल की अवमानना करना | अल मुज़ज़म्मिल | 17 | 1182 |
| चिह्न माँगना | अल आ'राफ़ | 107 | 290 |
| मूसा को 'जादू से प्रभावित' कहना | बनी इस्माईल | 102 | 533 |
| मूसा की हत्या करने का इरादा | अल मु'मिन | 27 | 913 |
| बनी इस्माईल का पीछा करना | यूनुस | 91 | 387 |
| जादुगरों को इकट्ठा करना | अल आ'राफ़ | 113 | 291 |
| फिरऔन से जादुगरों का बदला माँगना | अल आ'राफ़ | 114 | 291 |
| जादुगरों के ईमान लाने पर फिरऔन की झिझकी | अल आ'राफ़ | 124 | 292 |
| फिरऔन और उसकी जाति के लिए मूसा की | यूनुस | 89 | 386 |
| अमंगल प्रार्थना | | | |
| फिरऔन के परिजनों पर विभिन्न प्रकार के संकट | अल आ'राफ़ | 131 | 293 |
| | अल आ'राफ़ | 134 | 294 |
| फिरऔन के परिजनों से बनी इस्माईल की मुक्ति | अल बक़रः | 50 | 13 |
| फिरऔन की जाति के निर्माण कार्यों की तबाही | अल आ'राफ़ | 138 | 295 |
| परलोक में फिरऔन के परिजनों के लिए दंड | अल मु'मिन | 47 | 918 |
| फिरऔन के परिजनों में मोमिन लोग | अल मु'मिन | 29 | 914 |
| फिरऔन के परिजनों का दूबना | अल बक़रः | 51 | 13 |
| दूबते समय फिरऔन का ईमान लाना | यूनुस | 91 | 387 |
| फिरऔन के शरीर को बचाने का वादा | यूनुस | 93 | 387 |
| फिरऔन के शव को शिक्षा के उद्देश्य से 'मरी' | सूरः परिचय | | 1212 |
| बना कर सुरक्षित किया जाना | | | |
| फिरऔन की पत्नी की दुआ | अत तह्रीम | 12 | 1141 |
| फिरऔन की पत्नी की मोमिनों के साथ समानता | अत तह्रीम | 12 | 1141 |
| ब | | | |
| बलअम बाऊर | अल आ'राफ़ | 177 टीका | 306 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------|
| बनू नज़ीर (मदीना का एक यहूदी समुदाय) बनू नज़ीर के निर्वासित होने की घटना | अल हश्र | 3 टीका | 1099 |
| बनी इस्माईल | बनी इस्माईल | 3 | 515 |
| मूसा की पुस्तक केवल बनी इस्माईल के लिए हिदायत थी | अल बक़रः | 84,94 | 22,25 |
| अल्लाह ने उनसे प्रतिज्ञा ली | अल माइदः | 13,14 | 191,192 |
| उनमें से एक ने अपने समरूप के पक्ष में गवाही दी थी | अल अहकाफः | 11 | 986,987 |
| ईश्वरीय पुरस्कार | अल बक़रः | 41,48, | 12,13, |
| | | 123 | 32 |
| फिर औन से मूसा की माँग कि बनी इस्माईल को उसके साथ मिस्र से भिजवाया जाये | यूनुस | 94 | 388 |
| बनी इस्माईल को समुद्र पार करवा कर फिर औन से मुक्ति दिलाया जाना | अल आ'राफः | 106 | 290 |
| अपमान जनक दंड से मुक्ति | ता हा | 48 | 580 |
| दो बार धरती में उपद्रव करेंगे | यूनुस | 91 | 387 |
| उनमें से काफिरों पर हज़रत दाऊद अलै. और ईसा अलै. के मुँह से ला'नत | अद दुखान | 31 | 972 |
| रसूलों के संबंध में बनी इस्माईल का आचरण | बनी इस्माईल | 5 | 516 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का और कुरआन का इनकार | अल माइदः | 79 | 210 |
| बनी इस्माईल का अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से देखने की माँग | अल बक़रः | 89 | 23 |
| बनी इस्माईल को नमाज़ और ज़कात का निर्देश | अल बक़रः | 88 | 23 |
| अवज्ञा करने पर नीच बंदर बन जाना | अल बक़रः | 90 | 24 |
| जिब्रील से उनकी शत्रुता | अल बक़रः | 56 | 14 |
| जीवन के प्रति सर्वाधिक लालायित | अल माइदः | 13 | 191 |
| बनी इस्माईल को मुबाहलः की चुनौति | अल आ'राफः | 167 | 303 |
| सब्त के प्रसंग में उनकी परीक्षा | अल बक़रः | 66 | 17 |
| उनके धार्मिक विद्वानों में बुराई | अल बक़रः | 98 | 26 |
| उनमें से अधिकतर काफिरों को मित्र बनाते हैं | अल बक़रः | 97 | 25 |
| | अल आ'राफः | 95 | 25 |
| | अल आ'राफः | 164 | 302 |
| | अत तौबः | 34 | 341,342 |
| | अल माइदः | 81 | 210 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-----------------|---------|---------------|
| यहूदियों और ईसाइयों का शिर्क करना | अत तौबः | 30,31 | 341 |
| यहूदियों और ईसाइयों को एकेश्वरवाद की शिक्षा | अत तौबः | 31 | 341 |
| बनी इस्लाइल से प्रतिज्ञा लिया जाना | अल बक़रः | 94 | 25 |
| बनी इस्लाइल पर अपमान, गरीबी और प्रकोप की मार | अल बक़रः | 62 | 16 |
| बनी इस्लाइल को एक निश्चित गाय ज़िबह करने का आदेश | अल बक़रः | 68 | 18 |
| बनी इस्लाइल के लिए हलाल और हराम की शिक्षा | आले इम्रान | 94 | 107 |
| बनी इस्लाइल का बारह समुदायों में बंटना | अल अन्याम | 147 | 258 |
| उनके बारह सरदार नियुक्त किये गये | अल आ'राफः | 161 | 301 |
| उनका विभिन्न देशों में फैल जाना | अल माइदः | 13 | 191 |
| हज़रत ईसा केवल बनी इस्लाइल की ओर आविर्भूत हुए थे | अल आ'राफः | 169 | 303 |
| ईसा अलै. को उनके लिए अनुकरणीय उदाहरण बनाया गया | आले इम्रान | 50 | 96 |
| बनी इस्लाइल के एक वर्ग का ईसा मसीह पर ईमान लाना | अस सफ़क | 7 | 1113, 1114 |
| कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का नाम | अज़ जुख्रूफ़ | 60 | 964, 965 |
| मुहम्मद केवल एक रसूल है | अस सफ़क | 15 | 1116 |
| मुहम्मद तुम में से किसी पुरुष के पिता नहीं | | | |
| मुहम्मद पर जो कुछ उतारा गया है उस पर ईमान लाओ | मुहम्मद | 3 | 995 |
| मुहम्मद अल्लाह के रसूल है | अल फ़त्ह | 30 | 1011 |
| कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उपाधियाँ | | | |
| 'ता हा' (पवित्र और पथ प्रदर्शक) | ता हा | 2 | 576 |
| 'या सीन' (सरदार) | या सीन | 2 | 847 |
| 'अल मुज़्ज़म्मिल' | अल मुज़्ज़म्मिल | 2 | 1181 |
| 'अल मुइस्सिर' | अल मुइस्सिर | 2 | 1185 |
| 'अब्दुल्लाह' | अल जिन | 20 | 1177 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| ‘अल इन्सान’ (संपूर्ण मानव) | अल अहज़ाब | 73 | 816 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की महिमा | | | |
| आप सल्ल. का आना अल्लाह का आना था | सूरः परिचय | | 1003 |
| आप सल्ल. का काम अल्लाह का काम है | अल अन्काल | 18 | 317 |
| आप सल्ल. की बैत अल्लाह की बैत है | अल फृत्ह | 11 | 1006 |
| आप सल्ल. का आज्ञापालन वस्तुतः अल्लाह का | अन निसा | 81 | 157 |
| आज्ञापालन है | | | |
| आप सल्ल. का निर्मल हृदय अल्लाह का अर्थ | सूरः परिचय | | 907 |
| अर्थात् सिंहासन है | | | |
| ‘काबा-कौसेन’ (दो धनुषों की प्रत्यंचा) का पद | अन नज्म | 10 | 1045 |
| ‘काबा-कौसेन’ के पद की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 1043 |
| सिर से पाँव तक प्रकाशमय | अन निसा | 175 | 183 |
| | अल माइदः | 16 | 193 |
| अल्लाह की ज्योति के महान द्योतक | सूरः परिचय | | 651 |
| | अन नूर | 36 | 661 |
| महान अनुस्मारक | अत तलाकः | 11 | 1134 |
| | सूरः परिचय | | 1081 |
| ‘सिराज-ए-मुनीर’ (प्रकाशकर सूर्य) | अल अहज़ाब | 47 | 810 |
| प्रशंसनीय पद पर प्रतिष्ठित होना | बनी इस्माईल | 80 | 529 |
| प्रशंसनीय पद की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 513 |
| मुहम्मद अल्लाह के रसूल और नवियों के मुहर हैं | अल अहज़ाब | 41 | 809 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में नवियों की प्रतिज्ञा | आले इम्रान | 82 | 103 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन सालेह | अन निसा | 70 | 154 |
| (सदाचारी) शहीद, सिद्धीक (सत्यनिष्ठ) और नबी | | | |
| पद दिला सकता है | | | |
| हज़रत मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि व सल्लम का | आले इम्रान | 32 | 92 |
| अनुगमन ईश्वरेम-प्राप्ति का कारण है | | | |
| अल्लाह की निकटता का माध्यम | अल माइदः | 36 | 198 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का व्यक्तित्व लोगों के लिए | अल अन्काल | 34 | 320 |
| कवच स्वरूप है | सूरः परिचय | | 1255 |
| मुर्दों को जीवित करने का अर्थ | अल अन्काल | 25 | 318 |
| अल्लाह और फरिश्तों का हज़रत मुहम्मद सल्ल. | अल अहज़ाब | 57 | 813 |
| पर दुर्लद और सलाम भेजना | | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| सब नवियों के सरदार | सूरः परिचय | | 266 |
| समग्र जगत के प्रति कृपाशील | अल अम्बिया | 108 | 613 |
| समग्र जगत के प्रति रहमान अल्लाह के द्योतक | सूरः परिचय | | 596 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. सार्वभौमिक नबी हैं | अल आ'राफ़ | 159 | 301 |
| | सबा | 29 | 827 |
| | सूरः परिचय | | 614 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. पूर्व और पश्चिम के अकेले रसूल | अन नूर | 36 टीका | 661 |
| आदियुगीनों और अंत्ययुगीनों को इकट्ठा करने का माध्यम | सूरः परिचय | | 1117 |
| परलोक में सभी उम्मतों पर गवाह के रूप में आना | अन निसा | 42 | 147 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आविर्भाव का उद्देश्य | अत तौबः | 33 | 341 |
| सभी धर्मों पर इस्लाम को विजयी करना | | | |
| इस्ला (रात्रि विचरण) | बनी इस्लाईल | 2 | 515 |
| उच्चतम पद तक पहुँचना | सूरः परिचय | | 1044 |
| मे'राज | अन नज्म | 9-15 | 1045, |
| | | | 1046 |
| मे'राज वाला कश्फ सत्य है | अन नज्म | 12 | 1045 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. को समग्र जगत की आध्यात्मिक राजसत्ता प्रदान की गई | सूरः परिचय | | 819 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उपकार समाप्त होने वाला नहीं | सूरः परिचय | | 1297 |
| मानव-जगत को सर्वाधिक भलाई पहुँचाने वाला व्यक्तित्व | सूरः परिचय | | 1081 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की सिफारिश की परिधि | सूरः परिचय | | 367 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आविर्भाव | | | |
| आध्यात्मिक दृष्टि से घोर अंधकार युग में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आविर्भाव हुआ | सूरः परिचय | | 1275 |
| जल-स्थल में उपद्रव फैल जाने पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आविर्भाव हुआ | अर रूम | 42 | 774 |
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आविर्भाव के लिए इब्राहीम अलै. की दुआ | अल बकरः | 130 | 34 |
| इब्राहीम अलै. की दुआ का फल | सूरः परिचय | | 459 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आविर्भाव मोमिनों पर एक उपकार है रसूलों के आविर्भाव में लम्बे अंतराल के बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आविर्भाव सब नवियों के द्योतक निरक्षरों में आविर्भाव हज़रत मूसा अलै. से समानता जिन नुबुव्वतों की समाप्ति फ़िलिस्तीन में हुई, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यात्रा वहीं से आरंभ हाती है मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्ल. की भेट एक महात्मा के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आविर्भाव जिसे लोग खिज़ा कहते हैं हज़रत मुहम्मद सल्ल. को जो तत्त्वबोध प्राप्त था उस तक पहुँचने के लिए जिस धैर्यशक्ति की आवश्यकता थी वह मूसा के भाग्य में नहीं था मुहम्मद सल्ल. 'ज़ुल क़र्नैन' हैं तौरात और इंजील में मुहम्मद सल्ल. का उल्लेख मुहम्मद सल्ल. और उनके सहायियों का इंजील में वर्णन 'अहमद' सल्ल. के बारे में मरियम के पुत्र ईसा की शुभ-सूचना सच्चे अहले किताब मुहम्मद सल्ल. को खूब पहचानते हैं ईसाइयों के एक समुदाय ने मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई को पहचान लिया हज़रत मुहम्मद सल्ल. तौरात और पूर्ववर्ती पुस्तकों की भविष्यवाणियों को पूरा करने वाले हैं हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उत्तम आधारण उत्तम आचरण के पद पर अधिष्ठित मुहम्मद सल्ल. की पत्नियाँ मोमिनों की माँ हैं कोमल हृदयी, मृदु भाषी मुहम्मद सल्ल. ज़बरदस्ती करने वाले नहीं | आले इ़म्रान अल माइद: सूर: परिचय अल जुमाः अल मुज़ज़म्मिल सूर: परिचय अस सज्द: सूर: परिचय सूर: परिचय सूर: परिचय सूर: परिचय अल आ'राफ अल फ़त्ह अस सफ़क अल अन्झाम अल माइद: अल बक़र: अल क़लम अल अह़ज़ाब आले इ़म्रान क़ाफ | 165 20 3 16 24 टीका 158 30 7 21 84 102 5 7 160 46 | 123 194 994 1118 1182 512 794 536 536 537 300 1012 1114 228 212 26 1150 801 121 1026 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|--|---------------------------------------|--|
| मोमिनों के प्रति अत्यंत कृपालु और बार-बार दया करने वाला | अत तौबः | 128 | 366 |
| मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हृदय दयालु और कृपालु अल्लाह का जीवंत उदाहरण है सृष्टि के प्रति मुहम्मद सल्ल. की करुणा | सूरः परिचय | | 333 |
| ईशकोपग्रस्तों के लिए मुहम्मद सल्ल. की वेदना मुहम्मद सल्ल. लोगों के ऊपर दारोगा नहीं हैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निरंतर उपदेश करने का निर्देश क्षमा का अनुपम दृष्टांत | अल कहफ अश शुअरा फ़ातिर | 7 4 9 | 538 687 836 |
| मुहम्मद सल्ल. के सद्गुणों का वर्णन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर अल्लाह की अनुकंपा हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर अल्लाह की अनुकंपा अल्लाह की इच्छा को समझने वाले मुहम्मद सल्ल. को फुर्कान अर्थात् महान कसौटी दी गई सात बार-बार दोहराई जाने वाली आयतें और महानतम कुरआन का दिया जाना मुहम्मद सल्ल. का हर आने वाला क्षण पहले क्षण से बेहतर है ईश्वरीय सुरक्षा का वादा | सूरः परिचय अल मुनाफ़िकून सूरः परिचय अन निसा सूरः परिचय सूरः परिचय अल हिज्र | 23 114 7 | 392 1250 1036 1122 1124 1267 |
| अल्लाह ने आप सल्ल. से कभी घृणा नहीं की हिजरत (देशांतरण) | अज्ज जुहा | 5 | 1265 |
| मदीना हिजरत के समय शांति का अवतरण मुहम्मद सल्ल. कवि नहीं थे हज़रत मुहम्मद सल्ल. की निरक्षरता | अल माइदः अत तूर अज्ज जुहा अत तौबः मुहम्मद अत तौबः अत तूर | 68 49 4 40 14 40 31 | 207 1041 1265 344 997 344 1039 |
| | अल आ'राफ़ अल आ'राफ़ | 158 159 | 300 301 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|--|--|--|
| रसूल होने की ज़िम्मेदारियाँ | अल अन्कबूत अश शूरा | 49 53 | 760 953 |
| मुहम्मद सल्ल. की रिसालत के प्रमुख कर्तव्य | अल बकरः अल जुमउः अल मुज्जम्मिल अल अहजाब | 130 3 6 73 | 34 1118 1181 816 |
| आप सल्ल. पर बहुत भारी ज़िम्मेदारियाँ डाली गई हैं | अल अहजाब | 73 टीका | 816 |
| मुहम्मद सल्ल. पर डाली जने वाली अमानत के भार के भय से पहाड़ भी टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे | | | |
| मुहम्मद सल्ल. का स्वयं पर अत्याचार करने और अनजान होने का अर्थ | | | |
| अल्लाह की ओर बुलाने का आदेश (धर्म प्रचार) | अल हज्ज अल हिज्ज अल माइदः अल बकरः अश शुअरा अन निसा अश शुअरा अल हिज्ज हूद सूरः परिचय आले इम्रान सूरः परिचय अल अहजाब | 68 95 68 120 215 85 216 86 113 392 160 797 8 | 630 482 207 32 706 158 706 481 416 122 801 |
| अल्लाह के पथ में युद्ध करने का निर्देश | | | |
| मोमिनों से प्रेम और दयापूर्ण बर्ताव करने का आदेश | | | |
| क्षमा करने को दिनचर्या का अंग बनाने की शिक्षा | | | |
| स्वयं को तथा सहाबा को दृढ़ बनने का निर्देश | | | |
| ज़िम्मेदारियों की चिंता से बूढ़ा हो जाना | | | |
| सहाबा से परामर्श करने का आदेश | | | |
| मुहम्मद सल्ल. से भी नवियों की सहायता करने की प्रतिज्ञा ली गई | | | |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अदृश्य ज्ञान | | | |
| मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अदृश्य विषय की बहुत जानकारी दी गई | यूसुफ सूरः परिचय सूरः परिचय सूरः परिचय अल तबवीर | 103 1174 445 1136 25 | 443 1174 445 1136 1226 |
| मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अदृश्य विषय को बताने में कंजूसी नहीं करते थे | | | |
| निजी इच्छा से बात नहीं करते थे | अन नज्म | 4,5 | 1045 |
| स्वयं अदृश्य विषय के जानकार नहीं थे | अल अन्आम अल आ'राफ़ | 51 189 | 234 308 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------|
| अतीत के अज्ञात विषयों की जानकारी प्राप्त होना मुहम्मद सल्ल. को उस युग में सापेक्षतावाद (Relativity) का सिद्धांत समझाया गया | अल अम्बिया | 110 | 613 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का मनुष्य होना | अल अह़ज़ाब | 64 | 815 |
| अनाथ अवस्था | सूरः परिचय | | 419 |
| मानवीय आवश्यकताओं का पाया जाना | सूरः परिचय | | 1080 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की आराधना और दुआएँ | अज़ जुहा | 7 | 1265 |
| अल्लाह ने मुहम्मद सल्ल. को आदर्श भक्त घोषित किया है | अल फुर्कान | 8 | 673 |
| मुहम्मद सल्ल. की उपासनाओं का वर्णन | अल आ'राफ़ | 189 | 308 |
| बद्र युद्ध के समय अनुनय विनय पूर्वक दुआ | आले इम्रान | 145 | 117 |
| मुहम्मद सल्ल. की दुआओं के कारण मुसलमानों को विजयलाभ | बनी इस्खाईल | 111 | 535 |
| मुहम्मद सल्ल. को सिखाई जाने वाली कुछ दुआएँ | अल जिन | 20 | 1177 |
| बनी इस्खाईल | अल अलक़ | 11 | 1273 |
| ता हा | सूरः परिचय | | 1173 |
| अपने रब्ब का संपूर्ण आज्ञाकारी होने का वर्णन | सूरः परिचय | | 312 |
| अल्लाह के निकट सबसे महान सजदः आप सल्ल. ने किया | सूरः परिचय | | 332 |
| अल्लाह के गुणगान करने वालों में सबसे बढ़कर गुणगान करने वाले | बनी इस्खाईल | 81 | 530 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. का विरोध | बनी इस्खाईल | 25 | 520 |
| विरोधियों का नमाज़ से रोकना | ता हा | 115 | 590,591 |
| विरोधियों के झरादे | अल मु'मिनून | 119 | 650 |
| मुनाफ़िकों के षड्यंत्र | अल मु'मिनून | 98 | 647 |
| विरोधियों की अनुचित माँगें | सूरः परिचय | | 224 |
| | सूरः परिचय | | 265 |
| | सूरः परिचय | | 1126 |
| विरोधियों का नमाज़ से रोकना | अल अलक़ | 10,11 | 1273 |
| विरोधियों के झरादे | अल अन्काल | 31 | 320 |
| मुनाफ़िकों के षड्यंत्र | अन निसा | 82 | 157 |
| विरोधियों की अनुचित माँगें | अल अन्आम | 9 | 226 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|---------|
| इनकार करने वालों का आप सल्ल. को पागल कहना | बनी इस्साईल | 91-94 | 531,532 |
| काफिरों का आरोप कि मुहम्मद सल्ल. को कोई सिखाता है | अल क़स्स | 49 | 740 |
| विरोधियों के द्वारा किये गये उत्पीड़न के प्रति ध्यान न देने का आदेश | अल हिब्र | 7 | 473 |
| शत्रु के कटाक्ष को धैर्यपूर्वक सहने का निर्देश | अल मु'मिनून | 71 | 644 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई | अन नहल | 104 | 506 |
| यहूदियों को मुबाहल: करने की चुनौती | अल अहजाब | 49 | 810 |
| ईसाइयों को मुबाहल: करने की चुनौती | सूरः परिचय | | 1020 |
| मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई की एक बुद्धिसंगत दलील | अल जुम्अः | 7 | 1120 |
| मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई का एक मापदंड | आले इम्रान | 62 | 99 |
| मुहम्मद सल्ल. के बाद उनका एक साक्षी आयेगा | यूनस | 17 | 371 |
| मुहम्मद सल्ल. के आगमन का मूसा अलै. के द्वारा भविष्यवाणी | सूरः परिचय | | 1155 |
| मुहम्मद सल्ल. के मक्का वापस आने की भविष्यवाणी | हूद | 18 | 397 |
| मुहम्मद सल्ल. का एक महान चमत्कार | सूरः परिचय | | 1238 |
| मुहम्मदीम | अस सफ़ | 7 | 1114 |
| हज़रत मरियम अलैहा. | अल क़स्स | 86 | 748 |
| मरियम के पिता का नाम इम्रान था | सूरः परिचय | | 1191 |
| माता के द्वारा मरियम को उत्सर्ग किया जाना और अल्लाह का स्वीकार करना | टीका | | 871 |
| माँ ने आपका नाम मरियम रखा | अत तह्रीम | 13 | 1141 |
| हज़रत ज़करिया के द्वारा लालन-पालन और प्रशिक्षण | आले इम्रान | 36 | 93 |
| अपने समय की सभी नारियों में से अन्यतम | आले इम्रान | | 93 |
| एक सम्मानित, निकटता प्राप्त और पवित्र पुत्र की शुभ-सूचना | आले इम्रान | | 95 |
| पुत्र प्राप्ति की सूचना से विस्मित होना | मरियम | 46 | 95 |
| | आले इम्रान | 20 | 563 |
| | मरियम | 48 | 96 |
| | मरियम | 21 | 563 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------------------|---------|------------|
| यहूदियों का मरियम पर आरोप लगाना | अन निसा | 157 | 178 |
| | मरियम | 29 | 564 |
| एक ऊँची पहाड़ी क्षेत्र की ओर हजरत ईसा अलै. के साथ हिजरत करना | अल मू'मिनून | 51 | 642 |
| मोमिनों का उदाहरण मरियम के समान मरियम की पवित्रता के कारण ज़करिया अलै. के मन में पवित्र संतान की इच्छा उत्पन्न हुई | अत तह्रीम सूरः परिचय | 13 | 1141 85 |
| मरियम में यह क्षमता थी कि बिना शारीरिक संबंध के उन से संतानोत्पत्ति हो सके | टीका | | 93 |
| मारूत् (एक देवतुल्य व्यक्ति) | अल बक़रः | 103 | टीका 27 |
| मीकाईल (एक फ़रिश्ता) | अल बक़रः | 99 | 26 |
| हजरत मूसा अलै. | | | |
| मूसा अलै. इब्राहीम अलै. की संतान में से थे | अल अन्झाम | 85 | 243 |
| मूसा की माँ को वहइ | अल क़सस | 8 | 732 |
| माँ का मूसा को नदी में बहाना | ता हा | 40 | 579 |
| | अल क़सस | 8 | 732 |
| फिरअौन के घरवालों का मूसा को नदी से निकालना | अल क़सस | 9 | 732 |
| अपनी माँ के पास वापस लौटाया जाना | ता हा | 41 | 579 |
| मद्यन वासियों में कई वर्ष रहना | ता हा | 41 | 580 |
| मूसा के हाथों एक व्यक्ति का वध | अल क़सस | 16 | 733 |
| मूसा अलै. दर्जा | | | |
| मूसा अलै. के साथ विशेष रूप से अल्लाह का वार्तालाप | अन निसा | 165 | 180 |
| हजरत मुहम्मद सल्ल. के साथ समानता | अल मुज़्ज़म्मिल | 16 | 1182 |
| तूर पर्वत पर अपने से बड़े रसूल हजरत मुहम्मद सल्ल. की सूचना मिली | सूरः परिचय | | 1036 |
| मूसा ने भी आध्यात्मिक ऊँचाइयों को प्राप्त किया परन्तु हजरत मुहम्मद सल्ल. की ऊँचाई मूसा से बढ़कर थी | सूरः परिचय | | 512 |
| ज्ञान और विवेकशीलता प्रदान किया जाना | अल क़सस | 15 | 733 |
| पुस्तक और फुर्कान दिया जाना | अल बक़रः | 54 | 14 |
| मूसा अलै. का एक 'कश्फ' | अल क़हफ | 61-83 | 550-554 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------|
| तूर पर्वत के किनारे आग देखना | ता हा | 11 | 576 |
| | अल क़स्स | 30 | 737 |
| | अन नम्ल | 8 | 712 |
| पवित्र घाटी से मूसा को पुकारा जाना | ता हा | 12 | 577 |
| | अन नाज़ियात | 17 | 1215 |
| मूसा अलै. का आविर्भाव | | | |
| फिरअौन की और आविर्भाव | अल आ'राफ | 104 | 290 |
| हज़रत हारून को सहयोगी बनाने का निवेदन | ता हा | 30 | 578 |
| | अल क़स्स | 35 | 738 |
| हारून के लिए किया गया निवेदन स्वीकृत हुआ | ता हा | 37 | 579 |
| मूसा और हारून अलै. को फुर्कान दिया गया | अल अम्बिया | 49 | 604 |
| मूसा और हारून अलै. पर सलाम | अस साफ़कात | 121 | 871 |
| मूसा और हारून पर अल्लाह की कृपा | अस साफ़कात | 115 | 870 |
| फिरअौन की जाति का दुआ के लिए निवेदन | अल आ'राफ | 135 | 294 |
| मिस्र वासियों का मूसा को अमंगल सूचक मानना | अल आ'राफ | 132 | 294 |
| फिरअौन का मूसा को जादुग्रस्त कहना | बनी इस्साईल | 102 | 533 |
| मूसा की हत्या के लिए विचार-विमर्श | अल क़स्स | 21 | 734 |
| फिरअौन की जाति के थोड़े ही युवक मूसा पर | यूनुस | 84 | 385 |
| ईमान लाये | | | |
| मूसा अलै. के चिह्न | | | |
| मूसा को चिह्न और प्रबल प्रमाण दिये गये | अल मु'मिन | 24 | 913 |
| फिरअौन के लिए मूसा को नौ चिह्न दिये गये | बनी इस्साईल | 102 | 533 |
| | अन नम्ल | 13 | 713 |
| | अल आ'राफ | 134 | 294 |
| हाथ सफेद होने का चिह्न | अल आ'राफ | 109 | 290 |
| | ता हा | 23 | 578 |
| | अन नम्ल | 13 | 713 |
| | अल क़स्स | 33 | 737 |
| फिरअौन के राजदरबार में जादुगरों से मुक़ाबला | अल आ'राफ | 116-122 | 291-292 |
| मूसा की लाठी ने जादुगरों का सब कुछ निगल लिया | अश शुअरा | 46 | 691 |
| जादुगरों का ईमान लाना | अल आ'राफ | 122 | 292 |
| | ता हा | 71 | 583 |
| | अश शुअरा | 48 | 691 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|-------|
| मूसा की लाठी के साँप बनने की वास्तविकता | अल आ'राफ़ | 108,109 | 290 |
| मूसा अलै. की पुस्तक | | | |
| मूसा अलै. की पुस्तक केवल बनी इस्लाम के लिए हिदायत थी | बनी इस्लाम | 3 | 515 |
| मूसा की पुस्तक मार्गदर्शक और कृपा स्वरूप थी | हूद | 18 | 397 |
| अपने युग के लिए मूसा की शरीअत संपूर्ण थी | अल अहकाफ़ | 13 | 987 |
| मूसा अलै. की जाति (बनी इस्लाम) | अल अन्झाम | 155 | 261 |
| मिस्र में बनी इस्लाम के गृह निर्माण की शैली | यूनस | 88 | 386 |
| बनी इस्लाम को मिस्र से निकाल कर ले जाने का निर्देश | ता हा | 78 | 585 |
| लाठी को समुद्र पर मारने का आदेश | अश शुअरा | 53 | 692 |
| मूसा और उनके सब साथियों का बचाया जाना | अश शुअरा | 64 | 693 |
| मूसा के साथियों का शत्रु-सेना को देख कर घबरा जाना | अश शुअरा | 66 | 693 |
| जाति के लिए पानी की माँग | अश शुअरा | 62 | 693 |
| जाति को अल्लाह से सहायता माँगने की शिक्षा | अल बक्रः | 61 | 15 |
| चालीस दिन के लिए तूर पहाड़ पर बुलाया जाना | अल आ'राफ़ | 129 | 293 |
| अल्लाह को प्रत्यक्ष दृष्टि से देखने की इच्छा और ईश्वरीय दीप्ति को देखकर मूर्छित हो जाना | अल आ'राफ़ | 143 | 296 |
| जाति के सत्तर व्यक्तियों का चयन | अल बक्रः | 52 | 14 |
| बनी इस्लाम का अल्लाह को देखने पर ज़ोर देना | अल आ'राफ़ | 144 | 296 |
| बनी इस्लाम की मूसा से अनुचित माँगे | अल आ'राफ़ | 156 | 299 |
| जाति के शिर्क करने पर मूसा का क्रोध और खेद | अल बक्रः | 56 | 14 |
| मूसा का अपनी जाति को पवित्र भूमि (फ़िलिस्तीन) में प्रवेश करने का आदेश | अल आ'राफ़ | 139 | 295 |
| जाति का प्रवेश करने से इनकार | अल आ'राफ़ | 151 | 298 |
| मूसा के बाद एक के पीछे एक रसूल आये | ता हा | 87 | 586 |
| मूसा की जाति के एक वर्ग का सत्य समर्थक होना | अल माइदः | 22-27 | 195 |
| य | | | |
| हज़रत यह्या अलै. | अल माइदः | 25 | 195 |
| यह्या हज़रत ज़करिया अलै. की दुआओं के फल थे | अल बक्रः | 88 | 23 |
| | अल आ'राफ़ | 160 | 301 |
| | अल अम्बिया | 91 | 610 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| हज़रत ज़करिया को यह्या का शुभ समाचार मिलना | आले इम्रान | 40 | 94 |
| यह्या के जन्म होने की शुभ सूचना पर ज़करिया अलै. का विस्मय प्रकट करना | मरियम | 8 | 561 |
| यह्या अलै. से पूर्व इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं था यह्या को बचपन में ही तत्त्वज्ञान दिया गया | आले इम्रान | 41 | 94 |
| यह्या का तक्कवा और पवित्रता | मरियम | 9 | 562 |
| माता-पिता से सद् व्यवहार | मरियम | 8 | 561 |
| यह्या अतीत की कुछ भविष्यवाणियों के प्रमाण और पुष्टिकर्ता थे | मरियम | 13 | 562 |
| यह्या का तक्कवा और पवित्रता | मरियम | 14 | 562 |
| माता-पिता से सद् व्यवहार | मरियम | 15 | 562 |
| यह्या अतीत की कुछ भविष्यवाणियों के प्रमाण और पुष्टिकर्ता थे | आले इम्रान | 40 | 94 |
| जन्म, मृत्यु और पुनरुत्थान के समय यह्या पर सलामती | मरियम | 16 | 562 |
| यह्या अलै. को वध नहीं किया गया | सूरः परिचय | | 560 |
| यहूदी | | | |
| यहूदियों में से कई पक्के ज्ञान रखने वाले मोमिन हैं उनमें से कई ईमानदार और कई ख्यानत करने वाले हैं | अन निसा | 163 | 180 |
| यहूदी दो बार धरती में फ़साद करेंगे | आले इम्रान | 76 | 102 |
| पवित्र-भूमि (फ़िलिस्तीन) से यहूदियों का निकाला जाना | अल माइदः | 14 | 192 |
| अंत्ययुग में उन्हें पवित्र-भूमि में इकट्ठा किया जाएगा | बनी इस्राईल | 5 | 516 |
| क्रायमत तक ऐसे व्यक्ति पैदा होंगे जो उन्हें पीड़िजनक अज़ाब पहुँचाएँगे | बनी इस्राईल | 5 | 516 |
| प्रकोपग्रस्त बनने के कारण | बनी इस्राईल | 105 | 534 |
| हज़रत मरियम अलै. पर आरोप लगाना | अल आ'राफः | 168 | 303 |
| हज़रत ईसा अलै. को अस्वीकार करने का दंड | अन निसा | 156-158 | 178 |
| हज़रत ईसा अलै. को मारने में यहूदी असफल रहे | अन निसा | 157 | 178 |
| अल्लाह ने हज़रत ईसा को यहूदियों से सुरक्षित रखा | अन निसा | 61 | 152 |
| यहूदियों को मुबाहलः करने का न्योता | अन निसा | 158 | 178 |
| अह़ज़ाब युद्ध में गढ़ारी | अल माइदः | 111 | 220 |
| बनू-नज़ीर का मरीना से निर्वासन | अल जुमुअः | 7 | 1120 |
| | अल अह़ज़ाब | 27 टीका | 805 |
| | अल हश्र | 3 टीका | 1099 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|---------|
| मोमिनों को ताकीद कि यहूदियों और ईसाइयों को अंतरंग मित्र न बनाएँ | अल माइद: | 52 | 203 |
| यहूदियों पर अल्लाह की ला'नत और प्रकोप | अल माइद: | 61 | 205 |
| | अन निसा | 47 | 149 |
| यहूदी विद्रोनों के कुर्कम | अल माइद: | 64 | 206 |
| यहूदियों का कथन कि अल्लाह का हाथ बंद किया हुआ है | अल माइद: | 65 | 206 |
| क्यामत तक यहूदियों की ईसाइयों से शत्रुता और द्वेष | अल माइद: | 65 | 206 |
| यहूदियों का काम दुनिया में फ़साद करते फ़िरना मोमिनों से शत्रुता करने में सर्वाधिक कटूर यहूदी और मुश्टिक हैं | अल माइद: | 65 | 206 |
| यहूदियों को हलाल और हराम की शिक्षा | अल माइद: | 83 | 211 |
| यहूदी जूठ को ध्यान पूर्वक सुनते हैं | अल अन्नाम | 147 | 258-259 |
| यहूदी बढ़-चढ़ कर अवैध (हराम) धन खाते हैं | अल माइद: | 42 | 199 |
| यहूदी वाक्यों में परिवर्तन करते हैं | अल माइद: | 43 | 200 |
| यहूदियों का मन कठोर होना उन पर अल्लाह की ला'नत के कारण है | अन निसा | 47 | 148 |
| सब्ल के विषय में सीमा का उल्लंघन करने की मनाही | अल माइद: | 14 | 192 |
| यहूदियों का अल्लाह को साक्षात रूप से देखने की मांग | अल माइद: | 14 | 192 |
| हजरत याकूब अलै. | | | |
| याकूब अलै. के जन्म का शुभ समाचार | हूद | 72 | 408 |
| इब्राहीम अलै. का पौत्र | अल अम्बिया | 73 | 607 |
| याकूब अलै. का नाम इस्साइल | आले इम्रान | 94 | 107 |
| अपनी संतान को एकेश्वरवाद पर अटल रहने का उपदेश | अल बक्रः | 133, | 35 |
| याकूब के परिवार वालों पर नेमतों का पूरा होना | यूसुफ़ | 134 | |
| यूसुफ़ अलै. को अपना स्वप्न बताने से रोकना | यूसुफ़ | 7 | 422 |
| यूसुफ़ की जुदाई के शोक में आँखों के सफेद होने का अर्थ | यूसुफ़ | 6 | 421 |
| | यूसुफ़ | 85 टीका | 439 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|---------|
| अपनी सारी संतान के साथ मिस्र में आकर हज़रत यूसुफ अलै. के साथ बस जाना। | यूसुफ | 101 | 442 |
| याजूज और माजूज | | | |
| धरती में उपद्रव करने का कारण | अल कहफ | 95 | 556 |
| | अल अम्बिया | 97 | 611 |
| हज़रत यूसुफ अलै. | | | |
| यूसुफ अलै. को ज्ञान और विवेकशक्ति दिया जाना | यूसुफ | 23 | 425 |
| स्वप्न-फल का ज्ञान प्राप्त होना | यूसुफ | 38 | 428 |
| यूसुफ अलै. के बचपन का एक स्वप्न | यूसुफ | 5 | 421 |
| यूसुफ अलै. सत्यवादी के रूप में प्रसिद्ध थे | यूसुफ | 47 | 430 |
| भाइयों की ओर से हत्या का घट्यन्त्र | यूसुफ | 10 | 422 |
| कुएँ के अंधकारमय तल में फेंका जाना | यूसुफ | 16 | 423 |
| कुएँ से बाहर निकाल लिया जाना | यूसुफ | 20 | 424 |
| मिस्र के अज़ीज़ के द्वारा खरीदा जाना | यूसुफ | 22 | 424 |
| अज़ीज़ की पत्नी के द्वारा फुसलाने की चेष्टा | यूसुफ | 24 | 425 |
| मिस्र की महिलाओं के हाथ काटने की वास्तविकता | यूसुफ | 32 | 427 |
| कारागार में धर्म प्रचार | यूसुफ | 40 | 429 |
| कारागार से बाहर निकल कर मिस्र के राजकोषों पर नियुक्त होना | यूसुफ | 55, 56 | 433 |
| मिस्र देश में यूसुफ अलै. को प्रतिष्ठा प्राप्त होना | यूसुफ | 22 | 424 |
| | यूसुफ | 57 | 433 |
| अपना कुर्ता अपने पिता की सेवा में भेजना | यूसुफ | 94 | 441 |
| अपने भाइयों को क्षमा करना | यूसुफ | 93 | 441 |
| माता-पिता का स्वागत और सत्कार | यूसुफ | 100 | 442 |
| यूसुफ अलै. की दुआ | यूसुफ | 102 | 442 |
| यूसुफ अलै. के अनुयायिओं का यह मानना कि यूसुफ अलै. के बाद कोई नवी नहीं आयेगा | अल मु'मिन | 35 | 915 |
| हज़रत यूनुस अलै. | | | |
| (देखें 'जुन नून' शीर्षक भी) | | | |
| एक लाख से अधिक लोगों की ओर यूनुस अलै. भेजे गये थे | अस साफ़कात | 148 | 873 |
| यूनुस अलै. की जाति का प्रशंसा योग्य नमूना | यूनुस | 99 | 388,389 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|-------|
| यूनुस अलै. को समझाया गया कि प्रकोप की चेतावनी कभी कभार प्रायश्चित और धमा याचना से टल जाती है | सूरः परिचय | | 1149 |
| जाति को छोड़ कर चले जाना | अस साफ़कात | 141 | 872 |
| समुद्र में फेंके जाने पर मछली के द्वारा निगले जाना | अस साफ़कात | 142,143 | 872 |
| मछली का यूनुस अलै. को उगल देना | अस साफ़कात | 146 | 873 |
| यदि यूनुस अलै. अल्लाह की स्तुति करने वाले न होते तो सदा के लिए मछली के पेट में रहते | अस साफ़कात | 144,145 | 873 |
| 'जुन नून' मछली वाला अथवा 'नैनवा' का निवासी | अल अम्बिया | 88 | 609 |
| 'नून' से अभिप्राय 'जुन नून' अर्थात् यूनुस अलै. हैं | सूरः परिचय | | 1149 |
| र | | | |
| इमाम फ़खरदीन राज़ी रहि. | टीका | | 178 |
| ल | | | |
| हज़रत <u>लुक्मान</u> अलै. | | | |
| लुक्मान अलै. को तत्त्वज्ञान प्रदान किया गया | लुक्मान | 13 | 783 |
| जो तत्त्वज्ञान दिया गया उसका केन्द्रबिंदु अल्लाह की कृतज्ञता को प्रकट करना है | सूरः परिचय | | 780 |
| लुक्मान अलै. का अपने पुत्र को उपदेश | लुक्मान | 14 | 784 |
| हज़रत <u>लूत</u> अलै. | | | |
| हज़रत इब्राहीम अलै. पर ईमान लाना | अल अन्कबूत | 27 | 755 |
| जाति के विरुद्ध अपनी सहायता के लिए दुआ | अल अन्कबूत | 31 | 756 |
| लूत अलै. के लिए ईश्वरीय सहायता | अल अम्बिया | 78 | 607 |
| जाति के आचरण से विरक्ति | अश शुअरा | 169 | 702 |
| जाति को अश्लीलता से रोकने की चेष्टा | अन नम्स | 55,56 | 721 |
| | अल अन्कबूत | 29 | 756 |
| | अश शुअरा | 166 | 701 |
| जाति दुराचारिणी थी | अल अम्बिया | 75 | 607 |
| आपकी जाति का चेतावनी को ठुकरा देना | अल क़मर | 34 | 1055 |
| जाति के बाहर के लोगों को लूत के पास आने से रोकना | अल हिज्र | 71 | 480 |
| लूत अलै. के निकट अतिथियों के आगमन से जाति का क्रोध | हूद | 79 | 409 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|-------|
| अपनी जाति को अपनी पुत्रियों के सम्मान का वास्ता देना | हूद | 79 | 409 |
| लूट को निर्वासित करने की धमकी | अल हिज्र | 72 | 480 |
| जाति का अपने लिए अज्ञाब की माँग हज़रत इब्राहीम अलै. को लूट की जाति की तबाही की सूचना दी गई | अश शुअरा | 168 | 702 |
| लूट की जाति को तबाही से बचाने के लिए अल्लाह के निकट इब्राहीम अलै. का निवेदन रातों रात बस्ती से निकल जाने और मुड़ कर न देखने का निर्देश | अल अन्कबूत | 30 | 756 |
| लूट की जाति की तबाही | अल अन्कबूत | 32 | 756 |
| लूट की जाति पर पत्थरों की बारिश वाला अज्ञाब | हूद | 75,76 | 409 |
| पत्नी पर विपत्ति आने की सूचना | हूद | 82 | 410 |
| काफ़िरों का उदाहरण नूह और लूट की पत्नी के समान | अल हिज्र | 66 | 480 |
| व | अल अम्बिया | 78 | 607 |
| वलीउल्लाह शाह (मुहम्मद देहलवी) | हूद | 83 | 410 |
| श | अल क़मर | 75 | 480 |
| हज़रत शुएब अलै. | अश शुअरा | 174 | 702 |
| शुएब अलै. का मदयन वासियों की ओर आविर्भाव | अन नस्ल | 59 | 722 |
| जाति को तकवा अपनाने की शिक्षा दी | अश शुअरा | 170 | 702 |
| जाति को माप-तौल पूरा देने का निर्देश | अल हिज्र | 60 | 479 |
| | अल अम्बिया | 72 | 606 |
| | अल अन्कबूत | 33,34 | 757 |
| | हूद | 82 | 410 |
| | अत तह्रीम | 11 | 1141 |
| | टीका | | 29 |
| | अल आ'राफ़ | 86 | 285 |
| | हूद | 85 | 410 |
| | अल अन्कबूत | 37 | 757 |
| | अश शुअरा | 178 | 702 |
| | अल आ'राफ़ | 86 | 285 |
| | हूद | 86 | 411 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-------------|---------|---------|
| विरोधियों का लोगों को शुएब के अनुसरण करने से रोकना | अल आ'राफ़ | 91 | 287 |
| विरोधियों की धमकियाँ | अल आ'राफ़ | 89 | 287 |
| शुएब की जाति की तबाही | अल आ'राफ़ | 92 | 287 |
| शुएब और उनके साथियों का सुरक्षित रहना | हूद | 95 | 413 |
| स | | | |
| समूद जाति | | | |
| ये लोग आद जाति के उत्तराधिकारी थे | अल आ'राफ़ | 75 | 283 |
| इनकी ओर हज़रत सालेह अलै. का आविर्भाव हुआ था | अल आ'राफ़ | 74 | 283 |
| ये पत्थर तराश कर मकान बनाते थे | अल हिज्र | 83 | 481 |
| समूद जाति का नबियों का इनकार करना | अश शुअरा | 142 | 699 |
| | अल क़मर | 24 | 1054 |
| | क़ाफ़ | 13 | 1022 |
| हज़रत सालेह अलै. की ऊँटनी उनके लिए चिह्न स्वरूप थी | बनी इस्माईल | 60 | 526 |
| ये असहाब-उल हिज्र भी कहलाते हैं | अल हिज्र | 81 | 481 |
| | सूरः परिचय | | 472 |
| इनकी तबाही | हूद | 68,69 | 407,408 |
| सबा जाति | | | |
| सबा जाति की खुशहाली | अन नम्ल | 23 | 715 |
| हज़रत सलमान फ़ारसी ऱज़ि. | सबा | 16 | 824 |
| | टीका | | 1119 |
| सामरी | | | |
| सामरी का बनी इस्माईल को पथभ्रष्ट करना | ता हा | 86 | 586 |
| सामरी से हज़रत मूसा की पूछताछ | ता हा | 96 | 587 |
| सामरी को कुछरोग हो गया | ता हा | 98 | 588 |
| हज़रत सालेह अलै. | | | |
| समूद जाति की ओर आविर्भाव | अल आ'राफ़ | 74 | 283 |
| | हूद | 64 | 407 |
| | अन नम्ल | 46 | 720 |
| नबी होने का दावा करने से पूर्व जाति के लिए आशाकेन्द्र थे | हूद | 63 | 406 |
| जाति को अल्लाह से क्षमा याचना करने का उपदेश | हूद | 62 | 406 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|---------|
| सालेह अलै. का जाति को संदेश पहुँचा देना | अल आ'राफ | 80 | 284 |
| जाति के लोगों की ईश प्रकोप कामना करना | अल आ'राफ | 78 | 284 |
| सालेह अलै. के शहर में नौ व्यक्ति उपद्रव करने वाले थे | अन नम्ल | 49 | 720 |
| रात को सालेह अलै. पर आक्रमण करने का घड़यंत्र | अन नम्ल | 50 | 721 |
| ऊँटनी रूपी चिह्न | अश शुअरा | 156 | 701 |
| | अल आ'राफ | 74 | 283 |
| | हूद | 65 | 407 |
| विरोधियों ने उनकी ऊँटनी की कूँचें काट डालीं | अल आ'राफ | 78 | 284 |
| | अश शुअरा | 158 | 701 |
| कूँचें काटने का भावार्थ | सूरः परिचय | | 1258 |
| जाति की तबाही | अश शास्त्र | 15 | 1260 |
| सालेह अलै. और उनके अनुयायियों की मुक्ति | हूद | 67 | 407 |
| हज़रत सुलैमान अलै. | | | |
| सुलैमान अलै. दाऊद अलै. के उत्तराधिकारी हुए | अन नम्ल | 17 | 714 |
| सुलैमान बार-बार अल्लाह की ओर झुकने वाले थे | साद | 31 | 881 |
| इन्हें पक्षियों की भाषा सिखायी गई थी | अन नम्ल | 17 | 714 |
| पक्षियों की भाषा सिखाये जाने की वास्तविकता | सूरः परिचय | | 708 |
| हवाओं को सेवा में लगाया गया था | सबा | 13 | 822 |
| | अल अम्बिया | 82 | 608 |
| | साद | 37 | 882 |
| सुलैमान अलै. के लिए मनुष्यों, जिन्नों और | अन नम्ल | 18 | 714 |
| पक्षियों की सेना इकट्ठी की गई | | | |
| जिन्नों के द्वारा आप का आज्ञापालन | अन नम्ल | 40 | 718 |
| सुलैमान अलै. के युग में तांबे के उपकरण बनाने | सबा | 13 | 822 |
| के कारखाने | | | |
| सुलैमानी सेना का नम्ल घाटी में आगमन | अन नम्ल | 19 | 714 |
| घोड़ों से प्रेम | साद | 32-34 | 881 |
| घोड़ों से प्रेम की एक भूल व्याख्या का खंडन | टीका | | 881,882 |
| हुद्दुहुद की अनुपस्थिति पर सुलैमान के द्वारा | अन नम्ल | 21 | 715 |
| पूछताछ | | | |
| महारानी सबा को एकेश्वरवाद के आमंत्रण पर | अन नम्ल | 29-32 | 716, |
| आधारित पत्र | | | 717 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|------------|---------|---------|
| महारानी सबा की ओर से हज़रत सुलैमान अलै. के लिए उपहार | अन नम्ल | 36 | 717 |
| महारानी सबा के सिंहासन की भाँति सिंहासन बनवाना | अन नम्ल | 39-42 | 718,719 |
| महारानी सबा को धर्मशिक्षा देने के लिए महल निर्माण | अन नम्ल | 45 | 719 |
| हज़रत सुलैमान अलै. के द्वारा महारानी सबा का अल्लाह पर ईमान लाना | अन नम्ल | 45 | 720 |
| हज़रत सुलैमान अलै. और हज़रत दाऊद अलै. का एक खेती के बारे में फैसला | अल अम्बिया | 79 | 607 |
| अयोग्य पुत्र के रूप में उत्तराधिकारी और साम्राज्य का पतन | सबा | 15 | 824 |
| सुलैमान अलै. ने इनकार नहीं किया | साद | 35 टीका | 882 |
| सेंट पॉल (Saint Paul) | अल बक़र: | 103 | 27 |
| | टीका | | 222 |
| ह | | | |
| हामान | | | |
| (फिरअौन का एक विशिष्ट सभासद और सेनापति) | | | |
| फिरअौन का हामान को महल-निर्माण का आदेश | अल क़सस | 39 | 739 |
| हामान अपराधी था | अल मु'मिन | 37 | 916 |
| हारून (बाबिल नगर का एक पुण्यात्मा व्यक्ति) | अल क़सस | 9 | 732 |
| हज़रत हारून अलै. | अल बक़र: | 103 | 27 |
| हारून अलै. माँ की ओर से मूसा अलै. के भाई थे | अल आ'राफ़ | 151 | 298 |
| हज़रत मूसा अलै. की दुआ, हारून को उनका सहायक बनाया जाये | ता हा | 95 | 587 |
| हारून के संबंध में मूसा की दुआ कुबूल होना | ता हा | 30 | 578 |
| हारून अलै. को नुबुव्वत मिली | अश शुअरा | 14 | 688 |
| हारून और मूसा अलै. को फुर्कान और प्रकाश दिये गये | अल क़सस | 35 | 738 |
| हारून अलै. और मूसा अलै. पर अल्लाह की कृपा | ता हा | 37 | 579 |
| | अल फुर्कान | 36 | 678 |
| | मरियम | 54 | 568 |
| | अल अम्बिया | 49 | 604 |
| | अस साफ़कात | 115 | 870 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|-----------|---------|-------|
| तूर पहाड़ पर जाने के दिनों में मूसा अलै. ने हारून अलै. को बनी इस्माईल में अपना कार्यवाहक नियुक्त किया | अल आ'राफ़ | 143 | 296 |
| हारून से मूसा की नाराजगी | ता हा | 93 | 587 |
| जाति में शिर्क फैलने पर मूसा अलै. का क्रोधित होना | अल आ'राफ़ | 151 | 298 |
| बनी इस्माईल को हारून अलै. का उपदेश हारून अलै. के लिए मूसा अलै. की दुआ हारून अलै. के कुटुम्ब का उत्तराधिकार | ता हा | 93 | 587 |
| हज़रत हूद अलै. | ता हा | 91 | 587 |
| आद जाति की ओर का आविर्भाव हूद अलै. की जाति कारखानों और स्मारकों के निर्माण में निपुण थी | अल आ'राफ़ | 152 | 299 |
| आद जाति को तक्राव धारण करने का उपदेश इनकार करने वालों का कहना कि हूद अलै. कोई स्पष्ट चिह्न नहीं लाये | अश शुअरा | 129- | 698 |
| जाति को सत्यवार्ता पहुँचा देना | हूद | 130 | 698 |
| हूदहूद | हूद | 54 | 404 |
| हज़रत सुलैमान अलै. का एक सेनापति | हूद | 58 | 405 |
| | अन नम्ल | 21 | 715 |

स्थान सूची

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| अतलांतिक महासागर | टीका | | 680 |
| अफ़ग़ानिस्तान | सूरः परिचय | | 132 |
| कश्मीर जाते हुए हज़रत ईसा अलै. का यहाँ से गुज़रना | अल जिन्न | 2-10 | 1175- |
| अफ़ग़ानिस्तान में बसे बनी इस्लाईल शिष्टमण्डल का हज़रत मुहम्मद सल्ल. से मिलने के लिए आना | टीका | | 1176 |
| अरफ़ात | अल बक्रः | 199 | 53 |
| अहक़ाफ़ | अल अहक़ाफ़ | 22 | 990 |
| (टीला क्षेत्र, आद जाति का निवास स्थान) | | | |
| इरम | अल फ़ज़्र | 8 | 1252 |
| (प्रथम आद जाति का एक नगर) | | | |
| इराक़ | टीका | | 1101 |
| उम्मुल कुरा (देखें 'मक्का' शीर्षक भी) | सूरः परिचय | | 955 |
| कश्मीर | | | |
| हज़रत ईसा अलै. का आगमन | सूरः परिचय | | 132 |
| हज़रत ईसा अलै. और उनकी माँ को कश्मीर में शरण दी गई | सूरः परिचय | | 635 |
| काकेशिया पर्वत | टीका | | 556 |
| कैसपियन सागर | टीका | | 556 |
| जूदी पर्वत | | | |
| तूफ़ान के बाद नूह अलै. की नौका का यहाँ पर लंगर डालना | हूद | 45 | 403 |
| तुर्की | टीका | | 556 |
| तूर | अल बक्रः | 64 | 17 |
| तूर की छाया में बनी इस्लाईल से प्रतिज्ञा लिया जाना | अल बक्रः | 64,94 | 17,25 |
| तूर की क़सम | अत तूर | 2 | 1037 |
| तूर की दाहिनी ओर बनी इस्लाईल से समझौता | ता हा | 81 | 585 |
| तूर की ओर हज़रत मूसा अलै. का आग देखना | अल क़सस | 30 | 737 |
| तूरे सीना में त्रैतून की खेती | अल मु'मिनून | 21 | 638 |
| दरबंद | टीका | | 556 |
| तुर्की और रूस के बीच दरबंद की दीवार | | | |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|-------------|---------|-------|
| नम्ल (सबा जाति के शासनाधीन एक घाटी) | अन नम्ल | 19 | 714 |
| नागासाकी | | | |
| परमाणु बम से तबाही | सूरः परिचय | | 984 |
| नील नदी | टीका | | 693 |
| प्रशांत महासागर | टीका | | 680 |
| फ़िलिस्तीन | | | |
| हज़रत ईसा अलै. का यहाँ से देशांतरण | अल माइदः | 118 | 222 |
| अंत्युग में यहाँ पर यहूदी इकट्ठे किये जाएँगे और | बनी इस्माईल | 8 | 516 |
| यहाँ से एक बार फिर निकाले जाएँगे | | | |
| फ़साद के कारण यहूदियों का यहाँ से निकल जाना | बनी इस्माईल | 5 | 516 |
| अंत्युग में यहाँ पर यहूदी इकट्ठे किये जाएँगे | बनी इस्माईल | 105 | 534 |
| पवित्र-भूमि के वास्तविक उत्तराधिकारी | अल अम्बिया | 106 | 612 |
| बक्का | | | |
| मक्का घाटी का पुरातन नाम | आले इम्रान | 97 | 107 |
| बद्र | आले इम्रान | 124 | 113 |
| बाबिल | अल बक्रः | 103 | 27 |
| फरात नदी के तट पर बसा ईसापूर्व इवकीसर्वी | | | |
| शताब्दी का एक नगर | | | |
| बैतुल्लाह / खाना का'बा | | | |
| खाना का'बा का सर्वप्रथम निर्माण मनुष्य को | आले इम्रान | 97 टीका | 107 |
| सम्भता और आचार-व्यवहार सिखाने का साधन बना | | | |
| बैतुल्लाह के बारे में भविष्यवाणी, वह मुत्क्री | सूरः परिचय | | 1036 |
| व्यक्तियों और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होगा | | | |
| मस्जिद-ए-हराम के वास्तविक अधिकारी मोमिन | अल अन्काल | 35 | 320- |
| ही रहेंगे | | | 321 |
| धार्मिक और आर्थिक स्थिरता का माध्यम | अल माइदः | 98 | 215 |
| मक्का | | | |
| मक्का की आबादी के लिए हज़रत इब्राहीम अलै. | अल बक्रः | 127 | 33-34 |
| की दुआएँ | | | |
| मक्का का पुरातन नाम बक्का है | आले इम्रान | 97 | 107 |
| उम्मल कुरा (बस्तिओं की जननी) | अल अन्आम | 93 | 245 |
| बलदुल अमीन अर्थात् शांतिपूर्ण नगर | अत तीन | 4 | 1270 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| मक्का वासियों को भूख और भय से मुक्ति देने के लिए यात्रीदलों की आवाजाही आगे भी रहेगी | सूरः परिचय | | 1295 |
| मक्का के अपमान या तबाही का इरादा करने वालों का अंत असहाब-उल-फील (हाथी वालों) के समान होगा | सूरः परिचय | | 1293 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल. की मक्का से हिजरत और पुनः वापसी की भविष्यवाणी | बनी इस्लाईल अल क्रस्स अल बलद अल आ'राफ हूद अल अन्कबूत हूद अल क्रस्स | 81 86 3 86 96 37 96 23 | 530 748 1256 285 413 757 413 735 |
| मद्यन | | | |
| हज़रत शुएब अलै. की जाति का निवास स्थल | ता हा | 41 | 580 |
| मद्यन वासियों की तबाही | अत तौबः अल मुनाफिकून अल अहज़ाब | 101 9 61 | 358 1124 814 |
| हज़रत मूसा अलै. का मिस्र से निकल कर मद्यन पहुँचना | | | |
| हज़रत मूसा अलै. का यहाँ कुछ वर्ष तक रहना | | | |
| मदीना (देखें 'यसिब' भी) | | | |
| मदीना के मुनाफिकों के क्रिया-कलाप | | | |
| मर्वा (मक्का के निकट एक पहाड़ी) | | | |
| अल्लाह के चिह्नों में से है | अल बक्करः | 159 | 41 |
| मश्‌अर-ए-हराम | | | |
| अरफ़ात मैदान से मक्का की ओर अगला पड़ाव | अल बक्करः | 199 | 53 |
| मिस्र | | | |
| हज़रत यूसुफ अलै. को मिस्र के एक व्यक्ति ने खरीदा | यूसुफ | 22 | 424 |
| हज़रत यूसुफ अलै. के परिवार का मिस्र में आना | यूसुफ | 100 | 442 |
| फिर औन के द्वारा शासित | अज़ जुख्रूफ | 52 | 963 |
| बनी इस्लाईल के लिए मिस्र में घरों का निर्माण | यूनुस | 88 | 386 |
| मृत सागर | टीका | | 1053 |
| यसिब (मदीना का पुरातन नाम) | अल अहज़ाब | 14 | 802 |
| रूम | अर रूम | 3 | 767 |
| रूम सागर | टीका | | 1062 |
| रूस | टीका | | 556 |

| शीर्षक | संदर्भ | आयत सं. | पृष्ठ |
|--|------------|---------|-------|
| लाल सागर सफ़ा (मवक्का के निकट एक पहाड़ी) अल्लाह के चिह्नों में से है | टीका | | 1062 |
| हिज्र (हज़रत सालेह अलै. की जाति का निवास स्थान) | अल बकरः | 159 | 41 |
| हिरोशीमा परमाणु बम से तबाही | अल हिज्र | 81 | 481 |
| हुदैबिया | सूरः परिचय | | 984 |
| हुनैन | सूरः परिचय | | 1003 |
| | अत तौबः | 25 | 339 |
| | सूरः परिचय | | 332 |